अपने सेवकों और मुसाहिबों समेत समरक़न्द से चला और अपने
ेरे में जो मंत्री के डेरे के निकट था पहुँचकर मंत्री के साथ बार्ता
करनेलगा। जब आधीरात बीती तो उसने बिचारा कि एक बार
ानी से फिर मिलआऊँ निदान वह अकेला वहां सबसे छिपकर
या पर रानी को राजा के लौट आनेका कुछ भी संदेह न था; वह
क नीच और कुरूप अनुचर को बुलवाकर उसके साथ सोरहीथी।
ाहज़मां तो इस बिचार में था कि, रानी मेरी अन्तिम भेंट से अति
र्षित होगी पर दूसरे मनुष्य को उसके साथ सोते देखकर वह
ातिविस्मित हो एक घड़ी तक मूर्च्छित रहा। जब होश आया तो
ाचारनेलगा कि, कदाचित् मुझे भ्रम न होगया हो। फिर अच्छीतरह
देखकर निश्चय किया और पछितानेलगा कि, बड़ा अनर्थ है कि,
अभी मैं समरक़ंदकी शहरपनाह से बाहर भी नहीं निकला और
ऐसे कुकर्म होनेलगे। यह शोच वह अत्यन्त क्रोधित हुआ और
उसी कोपाग्नि से खांड़ा हाथ में ले एक हाथ ऐसा मारा कि, दोनों
के शिर धड़ से अलग होकर शय्या से नीचे गिरपड़े। फिर उन दोनों
की लोथों को पिछवाड़े की खिड़की से गढ़े में फेंक अपने डेरे को
लौटा और किसीसे रात्रि का यह समाचार न कहा। दूसरे दिन भोर
होतेही वहांसे यात्रा की मार्ग में सेना के सब लोग तो प्रसन्न थे परन्तु
ाहज़मां रानी के उस अनुचितकर्म की सुधि करके अतिदुःखित
ौर उदास था और दिन प्रतिदिन उसका मुँह पीला होताजाता था
सीतरह उसको सम्पूर्ण मार्ग बड़े कष्टसे कटा। जब वह हिन्दुस्तान
ी राजधानी के निकट पहुँचा तब शहरयार उसके पहुँचने का समा-
ार सुन सम्पूर्ण दरबारियों को साथले अगवानी के वास्ते आया।
जब दोनों की सवारी निकट पहुँची तो दोनों राजा अपने घोड़ों से
उतरकर परस्पर मिले और एक दूसरे की भेंट से प्रसन्न होकर देर-
तक कुशलक्षेम पूछ फिर बड़ी धूमधाम से रवाना हुये। शहरयार
ने उसे उस मकान में जो उसने पहिले से बनवाकर सजवा रक्खा
था और जहांसे फुलवाडी देखपड़ती थी लेजाकर उतारा। वह
मकान ऐसा बड़ा और सजा हुआ था कि, उसमें राजाओं की पहुनई

अच्छीतरह से होसक्तीथी । फिर शहरयार ने अपने भाई को स्नान कर कपड़े बदलने की आज्ञादी और जब वह स्नान करचुका तब वे दोनोंभाई महल के चौबारे में बैठकर परस्पर वार्तालाप करते रहे और दरबारीलोग दोनों राजाओं के सन्मुख अपने २ यथोचित स्थानों पर खड़े थे। निदान वे दोनों भाई भोजनकर फिर वार्ता करने लगे । जब शहरयार ने देखा कि, बहुत रात्रि आगई तो वह उसे सोने के लिये अकेला छोड़कर बिदाहुआ । शाहजमां अत्यन्त शोक में रोता हुआ अपनी शय्या पर लेटरहा और अपने कष्ट को भाई के सामने छिपाये था । उसके उठने के उपरान्त वही चिन्ता उसपर फिर सवार हुई और उसके जी में ऐसी पीड़ा थी कि मानो प्राणान्त होता है । अपनी रानी का अनुचित कर्म उसके हृदय से कभी न भूलता था। वह बहुधा हा ! हा ! खाता और ठंढी सांसें लिया करता था और रातों में उसे निद्रा न आती थी । इसी शो.. और क्रोध में वह घुला जाता था; यहांतक कि, धीरे धीरे दुर्बल होने लगा । शहरयार ने उसका यह हाल देखकर विचार किया कि, मैं तो शाहजमां से बड़ी प्रीति रखता और उसका भलीभांति सन्मान करताहूं तो भी सदैव इसे शोक में ही मग्न देखताहूं । नहीं मालूम कि वह निजदेश की चिन्ता में पड़ा है अथवा अपनी प्रियरानी के बियोग में दुःखित रहताहै । मैंने इसको बुलाकर वृथा शोक.. में डाला । अब यही उचित है कि इसको अच्छी २ सौग़ात दे.. और समझा बुझाकर यहां से समरक़न्द को भेजैं जिससे इस.. दुःख मिटे । यह शोचकर उसने उत्तम २ बहुमूल्य वस्तु हिन्दुस्तान की किश्तियों में लगाकर भेजीं और उसकी प्रसन्नता के लिये नाना प्रकार के नाच तमाशे कराये परन्तु वे सब उसके शोक को अधिक.. बढ़ानेवाले हुये और उसका मन कभी प्रसन्न न हुआ । इसी अवसर में शहरयार ने दरबारियों को आज्ञादी कि, मैंने सुना है यहां से दो दिन की राहपर एक बन है जिसमें बहुत से मृगआदि पशु हैं इस लिये मैं वहां शिकार को जाऊँगा, तुम भी शीघ्रही तैयारहो और मेरे भाई से भी कहो कि, वह भी मेरे साथ चलें शिकार में उनका जी लगेगा

और प्रसन्नता प्राप्तहोगी। शाहज़मां ने निवेदन किया कि, महाराज! मेरा चित्त अच्छा नहीं है इस कारण मैं न जाऊंगा। शहरयार ने कहा कि, अच्छा यदि तुम यहीं रहने में प्रसन्नहो तो रहो पर मैं तो अपने सेवकों समेत शिकार को जाताहूं। शाहज़मां ने उसे बिदा कर अपने मकान के भीतर के किवाड़ बन्द करलिये और एक खिड़की में जहांसे राजा की फुलवाड़ी देखपड़ती थी जाबैठा कि, पक्षियों की मधुरबाणी और सुन्दरपुष्पों की सुगन्धसे अपने हृदय का शोक दूरकरे। कभी उस मकान की सजधज और बनावट को देखकर अपने जी को बहलाता और कभी रानी के अनुचित कर्म का स्मरण कर नखरूपी शोक से हृदय को चीरता। जब सन्ध्या हुई तो क्या देखताहै कि, राजमन्दिर का चोरदरवाज़ा खुलगया और उससे २० स्त्रियां जिनके बीच में इक्कीसवीं रानी थी दिव्यबस्त्र और आभूषण पहिने निकलकर बाग़ में आईं। उन सबको निश्चय था कि राजा शिकार खेलनेगये हैं। शाहज़मां इस युक्ति से खिड़की में बैठा था कि, छिपकर उन सबको देखे कि, वे क्या करती हैं। लौंड़ियों ने अपने बड़े और लम्बे कपड़ों को जो वे पहिनकर महल से निकली थीं उतारडाला और उनकी सूरत स्पष्ट मालूम होनेलगी। शाहज़मां यह हाल देखकर बड़ा आश्चर्यवान् हुआ कि, उन बीसों में जिनको वह स्त्री जानता था दश हब्शी थे। हरएक ने पहिचान २ कर एक २ स्त्री का हाथ पकड़लिया; केवल रानी बिना पुरुष के रहगई तब उसने मसऊद २ कहके पुकारा और एक अति हृष्टपुष्ट महातरुण सीदी जो उसके शब्द के ताक पर था पेड़ से उतरकर उसकी ओर दौड़ा और रानी का हाथ पकड़लिया। अब मुझे उनका हाल वर्णनकरते लज्जाआती है कि; उन ११ हब्शियों ने उन दशों स्त्रियों और ग्यारहवीं रानी के साथ क्या किया। इसीतरह वे अर्धरात्रि तक उस बाग़ में रहे और फिर तालाब में स्नानकर और अपने २ बस्त्र पहिन उसी चोरदरवाज़े से राजमन्दिर में चलीगईं और मसऊद भी बाग़ की दीवार फांदकर चलागया। शाहज़मां को यह घटना देखकर कुछ धैर्यहुआ और शोचा कि, मुझको तो दुःख

थाही परन्तु मेरे भ्राता को मुझसे भी अधिक दुःख है । यदि वह अत्यन्त तेजस्वी और प्रतापवान् है परन्तु उससे इस बुरेकाम की रक्षा न होसकी—अब मुझे इतना शोक न रखना चाहिये। अब मुझे अच्छी तरह बिदित होगया कि, ऐसा कुत्सितकर्म संसार में बहुधा होता है तो अपने को शोकसमुद्र में डुबाना बृथा है । यह शोच उसने सब चिन्ता त्यागदी और पूर्व में जो उसे भूख और प्यास न लगतीथी सो फिर क्षुधा लगनेलगी और नानाप्रकार के भोजन मँगवाकर रुचिपूर्वक खाने और गाना बजाना सुननेलगा । भाई के लौटआने के समाचार पाकर अतिहर्षित हुआ और उससे भेंट की राजा ने शिकार कियेहुये बहुत से मृग आदि उसे दिये और कहा कि, पश्चात्ताप है जो तुम शिकार को न चले वहां अत्यन्त आश्चर्य था । शाहज़मां राजा को हर प्रश्न का उत्तर हर्ष सहित देताथा । शहरयार जानता था कि अबभी शाहज़मां को उसी शोक में पाऊँगा पर अपने विचार के बिपरीत उस को हर्षित और प्रसन्नतायुक्त पाकर बोला, हे भाई ! परमेश्वर का धन्यबाद है कि, मैंने तुझे थोड़ीही अवधि में नीरोग और प्रसन्न पाया । अब मैं तुमसे एकबात सौगन्द देकर पूछताहूं उसको तुम अवश्य बताना शाहज़मां ने कहा कि, जो बात आप मुझसे पूछेंगे ज़रूर बताऊंगा शहरयार ने कहा कि, जब तुम अपनी राजधानी से यहां आये थे तो मैंने तमको शोकसमुद्र में डूबाहुआ पायाथा और मैंने तुम्हारे दुःख के निवारणार्थ बहुत उपाय किये और तमाशे दिखाये परन्तु तुम उसी अवस्था में रहे । मैंने कितनाही विचार किया कि, इस शोक का कारण मालूमकरूं परन्तु केवल प्रियरानी और निजदेश के बियोग के बिशेष कोई कारण मेरे बिचार में न आया । अब क्या हुआ जो एकाकी तुम्हारा हाल बदलागया ? शाहज़मां ये बातें सुनकर चुप होरहा और जब शहरयार ने बहुतही जिद की तो बोला कि, आप मेरे बड़े और स्वामी हैं, इसका उत्तर मैं आपको नहीं देसक्ता क्योंकि, इसमें अति ढिठाई और निर्लज्जता है । शहरयार ने कहा कि, इसबात के बिना मालूमकिये मेरे मनको धीरज न होगा निदान

शाहज़मां ने लाचारहो प्रथम तो अपनी रानी का अनुचित कर्म बिस्तारसहित बर्णनकिया और कहा कि, यहीहेतु मेरे दुःखका था। शहरयार ने कहा, हे भ्राता! तुमने तो बड़े आश्चर्य और अचम्भे की बात सुनाई अच्छा किया कि तुमने ऐसी कुकर्मिणी को उसके जार समेत मारडाला। इस बिषय में तुमको कोई अन्यायी न कहेगा। यदि मैं होता तो बिना सहस्र स्त्रियों के मारे एक स्त्री के मारने से मुझे संतोष न होता। अब मुझको तुम्हारे शोक का हाल अच्छी तरह बिदित हुआ बास्तव में इस बिषय में तुम जितना शोक करते उचित था। अब यह बतलाओ कि मेरे पश्चात् यह शोक निबृत्त क्योंकर हुआ उसने कहा कि उसका कारण बर्णन करते मैं भयभीत होता हूं कि; ऐसा न हो जो कहीं तुमको मुझसे भी अधिक कष्टहो! शहरयार ने कहा कि, हे भ्राता! तुमने ऐसी बात कही है कि; जिसके सुनने से मैं अत्यंत बिह्वल और ब्याकुल हूं। ईश्वर के लिये यह हाल मुझसे बिस्तारपूर्वक कहो। शाहज़मां ने लाचारहो मसऊद, दशों स्त्रियों, हब्शियों और रानी का सब भेद बर्णन किया और कहा कि यह घटना मैंने अपने नेत्रों से देखी है और यह समझा है कि, सम्पूर्ण स्त्रियों की प्रकृति बुराइयों से सम्पन्न है इसलिये मनुष्य को चाहिये कि, उनका भरोसा न रक्खे। मुझे इसी हाल के देखने से तसल्ली हुई है और उस समय से मैं प्रसन्न और नीरोगहूं शहरयार को यह हाल सुनकर भी अपने भाई के कहने का बिश्वास न आया और क्रोधित होकर बोला कि, क्या हिंदुस्तान की सब रानी ब्यभिचारिणी हैं; मुझको तुम्हारे कहने का निश्चय नहीं आता जबतक मैं आप अपने नेत्रों से न देखलूं क्योंकि कदाचित् तुमको भ्रम हुआहो? शाहज़मां ने कहा कि, हे भाई! यदि तुम यह अपने नेत्रों से देखा चाहते हो तो फिर मृगया के वास्ते आज्ञाकरो और हम तुम दोनों शहर से सेना समेत कूचकरके बाहर को चलें दिनभर तो डेरों में रहैं और रात्रि को चुपकेसे इस मंदिर में आकर बैठें तो निश्चय है कि, आपभी वह सम्पूर्ण वृत्तांत जो मैंने कहाहै अपने नेत्रों से देखेंगे। शहरयार ने यह बात मान दरबारियों को आज्ञादी कि, कल मैं

फिर शिकार को जाऊँगा। निदान दूसरे दिन भोर होतेही दोनों भाई शिकार को चले और शहर के बाहर पहुँचकर डेरों में ठहरे। जब रात्रि हुई तो शहरयार ने अपने मंत्री को बुलाकर आज्ञादी कि, मैं किसी कार्य के निमित्त जाताहूं तुम मेरे किसी मनुष्य को सेना से बाहर न जाने दीजियो। निदान वह दोनों घोड़ों पर सवार होकर छिपे २ नगर में आये और शाहज़मां के महल में जाकर प्रभात होने के पहलेही उसी खिड़की में जाबैठे जहां से शाहज़मां ने उन हब्शियों और बांदियों को रानी समेत देखा था। सूर्य न निकले थे कि, एकबारगी महल का चोरदरवाज़ह खुला और थोड़ी देर पीछे रानी उन्हीं अपने हब्शियों समेत जो स्त्री बनेथे निकलकर बाग़ में आई और मसऊद को पुकारा शहरयार वह सब समाचार जो कहने और सुनने के योग्य न था देखकर मनमें कहनेलगा कि, हे परमेश्वर! यह क्या अनर्थ है कि; इतने बड़े बादशाह की स्त्री ऐसा ब्यभिचार करै! फिर शाहज़मां से बोला कि, उत्तमहै कि; हम इस अनित्य संसार को जो एक क्षण में प्रसन्न करता और दूसरे क्षण दुःख में डालता है परित्यागकरें और अपने देश और सेना से अलग होकर दूसरे देशों में अपना जन्मकाटें और इस निर्लज्जता को किसी से न कहैं। यदि शाहज़मां को यह बात अंगीकार न थी परंतु अपने भाई को अत्यन्त अधीर देखकर अन्यथा उत्तर देना उचित न समझ बोला; भाई! मैं तुम्हारा अनुचर हूं और आपकी आज्ञा को मन बच से मानूंगा परंतु एक शर्त से तुम्हारा साथ दूंगा कि; जब तुम किसी और मनुष्य को अपने से अधिक इस व्यथा में पाना तो अपने देश को लौटआना शहरयार ने कहा मुझे आपकी यह प्रतिज्ञा अंगीकार है परंतु मैं अनुमान करताहूं कि, संसार में कोई मनुष्य हमारे समान इस दुःख में ग्रसित न होगा। शाहज़मां ने कहा कि; थोड़ेही सफ़रकरने में आपको इसका हाल अच्छीतरह बिदित होगा। निदान वे दोनों छिपकर अप्रसिद्ध रास्ते से एकओर को चले और दिनभर चलकर रात को पेड़ के नीचे सोरहे। दूसरे दिन प्रभात को वहांसे भी आगे चले और चलते २ एक शोभाय-

चित्रदेव का सुन्दर स्त्री को सन्दूक़ से निकालना और उसके घुटने पर सो रहना

स्थान फुलवाड़ी में पहुँचे जो अति उत्तम और नदी के तटपर थी और जिसमें दूर तक बड़े २ और उत्तम २ सघनबृक्ष लगे थे। वहां वे एक तरु के नीचे सुस्ताने को बैठगये और आपस में बात चीत करनेलगे पर थोड़ीदेर न बीतीथी कि, एक भयानक शब्द सुन दोनों अति भयभीत और कम्पायमान हुये। इतने में नदीका जल फटा और उसमें से एक कालाखम्भा निकलने लगा जो इतना ऊंचा हुआ कि; बादल में पहुँचकर गुप्त होगया। उसे देखकर वे दोनों बहुत डरे और वहां से भागकर एक ऊंचेबृक्ष की डाली और पत्तियों में जाछिपे तो क्या देखते हैं कि; वही कालाखम्भा उस स्थान से नदी के कूलपर आया और तुरन्त एक महाबिकट पिशाच होगया और शिरपर एक सीसेका अत्यन्तदृढ़ संदूक धरेहुये जिसमें पीतल के चार ताले लगेहुये थे उसी बृक्ष के नीचे आया और उस संदूक को उतारकर चारों कुंजियों से जो उसकी कमर में लटकती थीं खोला तो उस में से एक अतिसुन्दरी स्त्री उत्तम भूषणों और बस्त्रों से अलंकृत निकलकर बाहर आई। फिर उस जिन्न ने उस स्त्री को अपनेपास बैठाकर प्रीतिकी दृष्टि से देखा और कहा कि, हे प्यारी! तू अपनी सुन्दरता में एकही है। बहुत दिनहुये कि, मैं तुझको बरात की राति को लायाथा और तेरी अनूप छबि को देख मोहित हुआ उस दिन से तुझे निष्पाप पाताहूं। इस समय मुझको निद्राका अति ही वेग है इसलिये चाहता हूँ कि, तेरे पास सोरहूं। यह कहके वह महाकुरूप पिशाच उसकी जांघपर अपना शिर रखकर सो रहा। उसके पांव इतने बड़े थे कि नदीतक पहुँचे और उसके श्वास का शब्द बादल के शब्द के समान सारी नदी में गूंजरहा था दैवयोग से उस स्त्रीने जो ऊपरकी ओर देखा तो उसकी दृष्टि उन दोनोंपर पड़ी और उसने उनको सैनसे बुलाया कि, चुपके से नीचे उतर आओ। वे उसके अभिप्राय को समझकर भयभीत हुये और उस से सैनसे कहा कि कृपाकर हमैं यहीं बैठेरहने दो। उसने धीरेसे उस पिशाच का शिर अपनी गोद से उतार पृथ्वीपर रखदिया और उठ के उनको धीरज देकर बोली कि तुम दोनों शीघ्रही पेड़से उतर कर

मेरे समीप आओ यदि तुम मेरा कहना न मानोगे तो मैं पिशाच को जगादूंगी और वह उसी समय तुम दोनों को मारडालैगा । इस बात को सुनकर वे बहुत डरे और चुपके से वृक्ष परसे उतर आये। वह सुन्दरी मुसकराती हुई उन दोनों का हाथ पकड़कर थोड़ी दूर वृक्ष के नीचे लेगई और अपने साथ भोग करनेकी इच्छा प्रकटकी प्रथम तो उन्होंने इन्कार किया पर पीछेसे डरकर उसकी इच्छा पूर्ण की। फिर उस स्त्री ने उनसे दो अंगूठी मांगलीं और एक छोटासा सन्दूक निकाल जिसमें बहुत तरह की अंगूठियां थीं उन दोनों को दिखलाया और पूछा कि तुम जानतेहो यह क्या वस्तु है और किस वास्ते है ? उन्होंने कहा कि, हम नहीं जानते, हमको बतलादो उस मृगनयनी ने कहा कि, यह उनलोगों के चिह्न हैं कि, जिनको मैंने तुम्हारे समान उस कार्य में उद्यत किया था। यह ९८ अंगूठी हैं और अब तुम्हारी २ मिलने से सौ होगईं । जिन्न की इतनी रक्षा और प्रबन्धसे भी मैंने सौवेर अपना मन प्रसन्नकिया है। यह दुरा-चारी जिन्न जो मुझपर मोहित है और अपने तीर से क्षणमात्र भी अलग नहीं करता, एवम् अतिप्रबन्ध से इस सन्दूक में बन्दकर समुद्र में छिपाकर रहताहै पर इतनी चातुर्यता और रक्षा से भी मेरा जो मन चाहता है मैं करती हूं और उसकी रक्षा कुछ काम नहीं आती। मेरे हालसे तुम समझलो कि, जब स्त्री पुंश्चली होती है तो उसको कोई भी दुष्टकर्म से नहीं बचासक्ता। बहुधा मनुष्य स्त्रियों के निष्पाप होनेपर बिश्वास रखते हैं पर उनके बिचारके विपरीत वे कुकर्मिणी होती हैं। निदान वह उनकी अंगूठी ले वहीं जा बैठी और जिन्न के शिर को उठा अपने घुटनेपर रख सैनसे कहा कि, तुम यहांसे चलेजाओ। वह दोनों वहां से चले और जब बहुत दूर नि-कलगये तो शाहज़मां ने अपने भाई शहरयार से कहा कि, देखो इतनी रक्षा और प्रबन्ध करनेपर भी वह स्त्री मनमानता काम करती है पर जिन्न को उसपर कितना विश्वास है और उसके निष्पाप होनेकी कितनी प्रशंसा करता था। अब आप न्याय से कहिये कि, इस जिन्न पर हमसे अधिक कष्ट है वा नहीं हम जिस बातकी खोज

में थे उसको पाया और अब हमें उचितहै कि, अपने देशों को चलें और कभी किसी स्त्रीसे बिवाहही न करें क्योंकि, इस समय में निष्पाप स्त्री का मिलना कठिन है निदान शहरयार ने अपने भ्राता के कहने अनुसार किया और वहांसे अपने नगर की ओर चला। तीनरात्रि पीछे वे दोनों अपनी सेना में पहुँचे। शहरयार ने फिर आगे जाने की इच्छा न की और अपनी राजधानी को फिर आया। महल में जा-कर मंत्री को आज्ञादी कि, इसीसमय रानी को मारने के वास्ते लेजा और मंत्री ने आज्ञानुसार उसको मारडाला। फिर राजा ने रानीकी दासियों को अपनेहाथसे मार बिचारकिया कि; ऐसा उपाय कियाजाय कि; विवाहकरने के पीछे स्त्री बुरेकर्म करने का समय न पासके। इस लिये उसने यह ठहराया कि, रात को बिवाह किया करूं और भोर होतेही उसे मरवाडालूं। इसके उपरान्त उसने अपने भाई शाहज़मां को बिदाकिया और वह उत्तम २ बस्तु, सेना आदि साथ लेकर अ-पनी राजधानी समरक़ंदको चलागया। शाहज़मां के चलेजाने के पीछे शहरयार ने अपने बड़ेमंत्री को आज्ञाकी कि, किसी बड़ेसरदार की बेटी मेरेसाथ बिवाह के वास्तेला। मन्त्री ने बादशाहकी आज्ञा-नुसार एक बड़े अमीर की पुत्री लादी और बादशाह उसकेसाथ बि-वाहकर रातभर उसके साथ रह भोरहोतेही मन्त्री को आज्ञादी कि इसीसमय इसे मारडाल और रात को दूसरी नवीन सुन्दर कन्या लाइयो। मन्त्री ने उस दुलहिन को मारडाला और रात के वास्ते और किसी अमीर की लड़की लाया और बादशाह ने भोरहोतेही उसेभी मरवाडाला। इसीतरह उसने बहुत दिनोंतक सैकड़ों अमीरों और बादशाहों की लड़कियां बिवाहीं और मरवाडालीं। जब नगर की लड़कियों की पारी आई और इस अन्याय का समाचार सारे संसार में फैलगया तो नगरभर में अत्यन्त भय, कोलाहल और रोना पीटनापड़ा। कहीं तो पिता अपनी पुत्री के वास्ते आठ आठ आंसू रोताथा और कहीं माता अपनी प्यारी पुत्री के वास्ते हाहाखा बिलापकरती थी जो कन्या बचरहीथीं उनके माता, पिता और स-म्बन्धी अत्यन्त भय में रहतेथे दुःखितहो देश छोड़ अन्य देश में जा

बसे निदान वहांके मन्त्री की दो पुत्रियां अनव्याहीथीं वड़ी का नाम शहरज़ाद और छोटी का नाम दुनियाज़ाद था शहरज़ाद अपनी छोटी बहन और बराबर वालियोंसे समझ और बुद्धि में अधिक थी। जिस बात को वह श्रवण करती वा पुस्तक में देखती फिर कभी विस्मरण न करती औरवाचालता में भी अतिप्रवीण थी। उसे बहुत से प्राचीन महात्माओं के काव्य और अपूर्व दृष्टान्त यादथे और आपभी रचनेकी शक्ति में अत्यन्त निपुण थी, सिवा इसके सुन्दरता में भी अद्वितीय थी। एक दिन उसने अपने पिता से कहा कि, मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं उसे अङ्गीकार कीजिये। मन्त्री ने कहा कि, यदि तेरी बात माननेयोग्य होगी तो मैं अवश्य मानूंगा। शहरज़ाद ने कहा कि, मेरा विचारहै कि, मैं बादशाह को इस अन्याय से हटाऊं और जो लड़कियां उसके मारने से बचरही हैं उनके माता पिता को निश्चिन्त करदूं। मन्त्री ने कहा, हे पुत्री! तुम इस विषय को किसतरह रोकसक्तीहो और उसके बन्द करने के लिये कौन सा उपाय शोचाहै? शहरज़ाद ने कहा कि, इसका उपाय तुम्हारे हाथ है। तुमको मेरी सौगन्द है कि, मेरा विवाह बादशाह के साथ करो। मन्त्री यह बात सुनकर कम्पायमानहो बोला, हे बेटी! तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है कि, मुझसे ऐसी अनुचित इच्छा करती है। क्या तुझे बादशाह का प्रण विदित नहीं है? विचारपूर्वक मुख से बात निकाल; तू क्यों वृथा अपनी जानदेगी और किसप्रकार उसे रोकेगी। लड़की ने कहा कि; मैं बादशाह का वृत्तान्त भलीभांति जानतीहूं पर इस इच्छा को न छोड़ूंगी। यदि और लड़कियों के सदृश मैं भी मारीगई तो इस असार संसार से छूटूंगी और जो मैंने बादशाह को इस अन्याय से हटादिया तो अपने नगरवालों का बड़ास्वार्थ करूंगी। मन्त्री ने कहा कि, मैं किसीतरह तेरी इच्छा अङ्गीकार नहीं करसक्ता और तुझको जानबूझकर ऐसी बला में न डालूंगा। बड़े आश्चर्य की बात है कि, मैं ऐसा खड्ग तेरे हृदय में मारूं; किसी पिता से अपने प्रियसन्तान के निमित्त ऐसा कर्म न होगा। चाहे तू अपने प्राण को प्यारा न समझ परन्तु मुझसे यह न होगा कि,

अपने हाथों को तेरे रुधिर से भरूं। शहरज़ाद ने कहा कि, हे पिता! किसी तरह तो मेरी प्रार्थना को अंगीकार कर। मंत्री ने उत्तर दिया कि, तेरा बाद इस विषय में मेरे क्रोध को अधिक करता है; तू क्यों अपनी मृत्यु चाहती है और क्यों अपने प्राण से अप्रसन्न है? जो कोई किसी कार्य को बिनाबिचारे करता है वह पीछे लज्जा उठाता है। मैं डरता हूं कि, तेरा हाल उस गर्दभ के समान न हो जो सुखसे रहता था पर अज्ञानबश दुःख में पड़ा शहरज़ाद ने कहा कि, यह कथा क्योंकर है? मन्त्री गधेका हाल कहनेलगा॥

गधे बैल और उनके पालक की कहानी॥

एक बड़ा व्यापारी था जिसके गांवमें अनेक घर और कारख़ाने थे जिनमें नानाप्रकार के पशु रहते थे। दैवयोग से वह एक दिन कारख़ानों के देखने को अपने कुटुम्बसहित गांव में गया और पशु-शालामें जहां वह गधा और बैल बांधा था जाकर देखा कि, वे दोनों पशु परस्पर वार्त्ता करते हैं। वह व्यापारी जो हरएक पशु पक्षी की बोली समझता था ध्यान देकर उनकी वार्त्ता सुननेलगा। बैल ने गधे से कहा कि, तू बड़ा भाग्यवान् है कि, सदा सुख से रहता है। पालक सदा तेरी ख़बर लेता है; मलदल के दोनों समय तुझे यव खिलाता और नवीन जल पिलाताहै। इस पालन के सिवा तेरा काम केवल इतनाहीहै कि, जब कभी काम पड़ता है तो तेरा मालिक तुझ पर सवार होके थोड़ी दूरतक जाताहै और तू सदैव दानाघास खाता और चैन करता है। निदान जितना तू भाग्यवान् है उतनाही मैं प्रारब्धहीन हूं। भोरसेही मेरी पीठ पर हल रखकर दिनभर पृथ्वी जोतते हैं हरवाहा चाबुक से मारकर हांकताहै और हलकेभार और रगड़से मेराकन्धा छिलगयाहै। प्रभात से राततक ऐसा कठिन श्रम लेकर सूखा और सड़ा भूसा मेरे आगे डालते हैं जिसको मैं खा नहीं सक्ता और रातभर भूखा प्यासा अपने मूत और गोबर में पड़ारहता और तेरी चैनपर ईर्षा करताहूं गधे ने यह सुन उत्तर दिया कि भाई जो कुछ तूने कहा सो सच है और वास्तव में तुझपर ऐसाही कष्टहै परन्तु तू तो इसी में प्रसन्न है और आपही नहीं चाहता कि अपने को

सुख में रक्खे । यदि तू श्रम करते २ मरभीजाय तौभी यह लोग तेरे हालपर कभी तरस न करेंगे इसलिये एक उपायकर तो वे तुझसे इतनी मेहनत न लेंगे और तूभी सुखपूर्वक रहेगा बैल ने पूछा कि; वह कौनसा उपाय है ? गधे ने कहा कि; तू अपने को रोगी बनाकर रात को दाना भूसा न खा और थानपर चुपचाप पड़ारह । बैल ने यह सब बातें सुनकर कहा कि; अच्छा ऐसाही करूँगा। तूने यह उपाय बहुत अच्छा बताया है परमेश्वर तुझे आनन्द में रक्खे। इतना कह वे दोनों चुप होरहे। दूसरे दिन भोर होतेही हरवाहे ने चाहा कि; बैल को और दिनों की तरह हल में जोतके खेत की ओर लेजावें तो क्या देखा कि; रात्रि की सानी वैसीही रक्खी है बैल पृथ्वी पर पड़ा हँफरहा है; नेत्र उसके बन्दहैं और पेट फूलरहा है । हरवाहे ने उसको रोगी जानकर हलमें न जोता और व्यापारी से जाकहा कि, आज बैल रोगी होगया है। व्यापारी यह सुनकर समझगया कि, बैल ने गधे की शिक्षापर अपने को रोगी बनाया है इसलिये हरवाहेसे कहा कि, आज गधेसे हल का कामलो। निदान हरवाहे ने गधेको जोत सारेदिन काम लिया। गधा जिसे उस काम का अभ्यास न था बहुत थकगया और उसके हाथपांव ठंढे होगये। सिवाय श्रम के उसने इतनी मार खाई कि, सन्ध्या को लौटती समय चल न सक्काथा । इधर बैल उस दिन बहुत सुखसे रहा और जो कुछ नांदमें था आनन्दसे खा गधेको आशीर्वाद देतारहा जब गधा थकितहो खेत से आया तो बैलने कहा भाई तुम्हारे उपदेशसे मैं आज बहुत अच्छीतरह रहा । गधा मांदगी के कारण उत्तर न देसका और आतेही अपने थानपर गिरपड़ा। वह मन में अपने को बुरा भला कहनेलगा कि; हे अभागे ! तूतो बहुत सुखसे रहा करता था तूने बृथा बैल को ऐसी शिक्षा देकर अपने को कष्ट में डाला। मंत्रीने इतनी कहानी अपनी बेटीको सुनाकर कहा कि; हे पुत्री! इस सुख और आराम में तू क्यों चाहती है कि; अपने को गधे के समान कष्ट में डाले। शहरज़ाद ने अपने पिता से कहा कि; इस दृष्टांत पर अपनी इच्छा से न हटूंगी और जबतक तुम मेरा बिवाह बादशाह से न करोगे इसी प्रकार प्रार्थना करती रहूंगी । मंत्री ने

कहा कि; जो तू हठबश इस बात का पीछा नहीं छोड़ती तो मैं तुझे वही दण्ड दूगा जो उस ब्यापारी ने अपनी स्त्री को दिया था। शहरज़ाद ने पूछा कि उसने क्यों अपनी स्त्री को दण्ड दिया था? और उस बिचारे गधे और बैल का क्या हुआ? मन्त्री ने कहा दूसरे दिन वह ब्यापारी रात्रि को भोजन से निश्चिन्तहो अपनी स्त्री समेत उन दोनों पशुओं के पास जाबैठा और सुना कि, गधा उस बैल से पूछता है कि; कहो भाई कल भोर को जब हरवाहा तुम्हारे वास्ते दाना घास लावेगा तब तुम क्या करोगे? बैल ने कहा जैसा तुमने मुझे उपदेश कियाहै वैसाही करूंगा। गधे ने कहा कहीं ऐसा काम भी न कीजियो नहीं तो जानसे मारेजावगे कल सन्ध्याको फिरते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने गोईं बनानेवाले से कहता था कि भोर होतेही क़साई और चर्मकार को बुलालाना और बैल जो कल से बीमार है उसे मारकर उसका चर्म और मांस उनके हाथ बेच डालना मैंने जो सुनाथा मित्रता की राहसे तुझसे कहा अब मेरे बिचार में तेरे लिये यही उत्तम होगा कि, सबेरे जब चारा तेरे आगे डालाजाय तो शीघ्र उठकर खाना और नीरोग बनजाना; बस स्वामी तुझे नीरोग जानकर तेरे मारनेका उपाय न करेगा। यह बात सुन बैल भयभीत हो बोला कि; भाई! परमेश्वर तुझे आनन्द रक्खे, तूने मेरे प्राण बचाये। अब मैं वही करूंगा जो तूने शिक्षा की है ब्यापारी गधे और बैल की बार्त्ता सुन ठट्ठामारके हँसा और उसकी स्त्री उसके एकाएकी हँसनेपर आश्चर्यवान् हुई और पूछनेलगी कि; बिना प्रयोजन तुम क्यों हँसे उसने कहा वह बात बताने की नहीं है पर इतना कह सक्ताहूं कि; मैं गधा और बैल की बात सुनकर हँसा। स्त्री ने कहा कि; यह भेद बताओ तो मैं भी पशुओं की बार्त्ता समझूं पर जब ब्यापारी ने न बताया तो स्त्री ने कहा कि; तुझे इस विद्या के बताने में क्या शोच है? ब्यापारी ने कहा कि; इस भेद के बताने से मैं न जीऊंगा वह बोली कि; तू मुझे धोखा देताहै; क्या जिसने तुझे सिखायाथा वह मरगयाथा जो तू भी कालबश होगा? यह तेरा कहना असत्यहै; जिसतरह होसके मुझे इस भेद को सिखा

और यदि तू मुझे न बतायेगा तो मैं अपने प्राण तजदूंगी । यह कह वह स्त्री अपने घर को चलीगई और कोठरी का किवाड़ मूंदकर बैठी और रातभर क्रोधितहो चिल्लातीरही । व्यापारी रात को तो सोरहा पर दूसरे दिनभी उसे उसी दशा में देख समझाने लगा कि तू किस शोचमें पड़ीहै वह बात तेरे सीखनेयोग्य नहीं । स्त्री ने कहा कि; जबतक तू मुझे यह भेद न बतावेगा मैं अन्न पानी न करूंगी और इसीबिधि चिल्लाती और रोती रहूंगी । व्यापारी ने कहा कि; यदि मैं तेरी मूढ़तापर चलूं तो अपने प्राण से हाथधोऊं वह बोली मेरी बला से तू जी या मर पर मुझको यह बिद्या बता कि मैं पशुओं की बोली समझूं । व्यापारी ने उस महामूर्ख स्त्री को उसी हठमें देख कर अपने और उसके नातेदारों को बुलाया और कहा कि; तुम इस मूर्खा को समझाओ कि; इस बिचार में न पड़े निदान कितनाही उन सबों ने उसे समझाया परन्तु वह अपनी हठ से न हटी और अपने पति के मरनेपर प्रसन्न हुई । छोटे लड़के उसकी बिह्वलता और व्याकुलता देख रोने और हाहाकार करनेलगे । व्यापारी से कोई उपाय न बनपड़ताथा कि; अपनी स्त्रीको समझाये और उसको इस बिद्या के पूछने से हटारक्खे । निदान वह बड़े संशय में पड़ा कि; यदि मैं यह भेद बताताहूं तो मेरी जानजातीहै और जो नहीं बताता तो स्त्री मरतीहै । इसी शोच बिचार में वह अपने घर के बाहर जाबैठा तो क्या देखताहै कि उसका कुत्ता मुर्ग को मुर्गियों से भोगकरते देख भूंका और क्रोधितहोकर कहनेलगा कि, तुझे धिक्कारहै जो आजदिन बिशेषकर ऐसे समय में भी तू इस कार्य से अलग नहीं रहता मुर्ग ने पूछा कि क्या कारणहै जो मैं अपनी प्रसन्नतासे हटूं ? कुत्ते ने कहा कि; क्या तुझे मालूम नहीं कि; आज हमारा स्वामी अति चिन्तावान् और व्याकुल है; उसकी महामूर्ख स्त्री ऐसे भेद को पूछती है कि; जिसके बताने से वह तुरन्तही मरजावे और यदि न बतावे तो स्त्री मरजावेगी । इसकारण उसके घर के सम्पूर्ण स्त्री पुरुष रोदन करते हैं और तेरे सिवा हम सब भी अपनी स्त्रियों से शोकवान् हैं मुर्ग ने उत्तरदिया कि; हमारा स्वामी मूर्ख है जो केवल एक स्त्री

रखता है सो भी उसके आधी नहीं। मैं पचास मुर्गियां रखताहूं और सब मेरे आधीन हैं यदि वह एक उपाय करे तो अभी उसका शोक दूरहो वे। कुत्ते ने पूछा कि वह कौनसा यत्न करे कि जिससे उसकी स्त्री हठछोड़े ? मुर्ग ने कहा कि; वह उस मकान में जाय जहां उसकी स्त्री है और उस कोठेका किवाड़ बन्दकर उसे एक लकड़ी से अच्छी तरह मारे तो इस दण्ड से व उसी समय हठ छोड़देगी और फिर कभी उस बात का नाम न लेगी। व्यापारी मुर्गकी यह बात सुनकर उठा और एक लकड़ी लेकर जिस स्थानपर उसकी स्त्री रुदन करती थी जा उसे मारनेलगा और यहांतक मारा कि; उस स्त्री ने अपनी हठ छोड़ने के सिवा कुछ न बन आया वह घबराकर अपने पति के चरणों पर पड़ी और कहने लगी कि; बस अब न मार मैंने अपनी हठ छोड़ी और फिर कभी ऐसी हठ न करूंगी। मन्त्री ने यह कहानी कह शहरज़ाद से कहा कि; यदि तू अपनी हठ न छोड़ेगी तो मैंभी तुझे वैसाही दण्डदूंगा जैसा कि; सौदागर ने अपनी स्त्री को दिया था। शहरज़ाद ने उत्तर दिया कि जो कुछ आपने कहा सो ठीक है परन्तु मैं यह हाल सुनकर अपनी चाहना को न छोड़ूंगी। मुझको अपने अभिप्राय की सिद्धि के बहुतसे इतिहास और दृष्टान्त मालूम हैं पर उनका कहना निष्फल है यदि तुम मेरी इच्छा पूर्ण न करोगे तो मैं तुम्हारी आज्ञा के बिनाही राजाकी शरण जाऊंगी। निदान मन्त्री ने लाचारहो उसके कहने को अङ्गीकार किया और अत्यन्त शोकवान् हो बादशाह के पास जा बिनय की कि; मेरी पुत्री आपसे बिवाह किया चाहती है। बादशाह को मन्त्री के इस कहनेपर बड़ा आश्चर्य हुआ उसने पूछा कि तूने अपनी पुत्री के वास्ते जानबूझकर क्यों यह बात ठहराई ? मन्त्री ने बिनय की कि; उस लड़की ने आपही मुझसे इस बात को चाहा है और उसे इस बात में अत्यन्तहर्ष और प्रसन्नता है कि; एक रात आपकी दुलहिन होकर भोर को मारीजावे। बादशाहने कहा कि, तू यह बिचार न करना कि, मैं तेरा पक्षकरके अपने प्रण को छोड़ूंगा; भोरहोतेही शहरज़ाद मारीजाने के लिये तुझे सौंपीजावेगी। यदि तू उसके मारने

में अपने प्यार से बिलम्ब करेगा तो तूभी उसके साथ माराजावेगा मन्त्री ने विनयकी कि, मैं आपका आज्ञापालक हूँ; यद्यपि वह मेरी पुत्री है और उसके मारने में मुझे क्लेश होगा तदपि आपकी आज्ञा को अवश्य पालन करूंगा। बादशाह ने मन्त्री से यह सुनकर उसकी चाहना अंगीकार की और कहा कि, इस दशा में कुछ हर्ज नहीं; आजही की रातको अपनी बेटी को लाकर मेरेसाथ बिवाहदे। मन्त्री ने बादशाह से बिदामांग इस बृत्तान्त को शहरज़ाद से जाकर कहा। वह सुनकर प्रसन्नहुई और अपने पिता की कृतज्ञता प्रकाश करने लगी धैर्य देकर वह अपने पिता से कहनेलगी कि, तुम मेरा बिवाह करके पश्चात्ताप न करना परमेश्वर चाहेगा तो यह शुभकार्य तुम को जीवनपर्यन्त हर्षका देनेवाला होगा फिर उसने कपड़े पहिने और अपनी छोटी बहन दुनियाज़ाद को बुलाकर अलग लेगई और कहा कि बहन मैं तुझसे एक बात में सहायता चाहतीहूँ मुझे निश्चय है कि तू उस बातसे इन्कार न करेगी पिता मुझे बादशाह के साथ विवाह करनेको अब लियेजाता है तू इस काम में शोकवान् न हूजियो और मैं जो कहूँ सो तू अवश्य करना जिस समय कि बाद-शाह के पास मैं जाऊंगी और कहूँगी कि तुझे बुलवाके मेरे पास बिवाहके मकान में सुलवाये कि मैं तुझसे बातचीत करके बिदाहूँ तू तुरन्तआइयो और तू अच्छीतरह स्मरणरख कि जब भोरहोने को एक घड़ी रहजावे तो मुझे नींद से जगाके कहना कि बहन तुम जागतीहो तो कोई कहानी अच्छी जो तुम्हें यादहो सो कहो कि जिसमें मेरा जी लगे मैं उसी समय कहानी कहनेलगूँगी मुझे बिश्वास है कि इस उपाय से मेरी जान बचजावेगी दुनियाज़ाद ने यहबात अंगीकार की और कहा बहन तुम धीरज रक्खो मैं बादशाह के बुलाते ही उसी समय आजाऊँगी और तेरी आज्ञानुसार करूंगी फिर मन्त्री शहरज़ाद को राजमहल में लेगया और रीत्यनुसार बिवाहकर उसे राजमहल में छोड़कर आप बिदाहुआ एकान्त में बादशाह ने शहर-ज़ाद को आज्ञादी कि अपने मुखपर से बस्त्र उठा ज्योंहीं उसने मुख पर से परदा उठाया त्योंहीं उसके रूप मनहरण को देखकर मोहित

हुआ और उसके नेत्रों से अश्रु बहते देखकर पूछा कि तू रुदन क्यों करती है शहरज़ाद ने बिनयकी कि एक मेरी छोटी बहन है जिसको मैं बहुत चाहती हूँ और वह भी मुझसे प्रीति करती है चाहती हूँ कि वहभी आजकी रात इसी कमरे में आकर रहे कि सूर्योदयपर हम दोनों परस्पर अखीरी भेंटकरलें जो आपकी आज्ञाहो तो मैं बुलवालूं और उसको प्यारकरके धैर्यदूं शहरयार ने उसे अङ्गीकार किया और उसके बुलानेकी आज्ञादी दुनियाज़ाद बादशाह के बुलाने के अनुसार राजमहल में आई शहरयार शहरज़ाद को लेकर एक बड़ीऊँची शय्यापर कि उस समय के बादशाहों की यही रीति थी सोया और दुनियाज़ाद शय्या के निकटही सोई दुनियाज़ादने एक घड़ी प्रभातके पहिले जागकर कहा हे मेरी प्रिय बहन! मुझे इस समय चिन्ता के कारण कि तुम्हारी तरफ़ से मेरे चित्त में है निद्रा नहीं आती मैं बहुत बेचैन हूँ जो तुम जागती हो तो जो कोई कहानी अच्छी यादहो सो कहो तो मैं तुमसे इस पिछले समय में सुनूँ कि यह मेरे चिन्ता की निबृत्ति का कारणहो शहरज़ाद ने इसके उत्तर देने के पूर्व बादशाह से बिनयकी कि जो आपकी आज्ञा हो तो मैं अपनी बहन को प्रसन्नकरूं और उसकी चाहना के अनुसार कोई कहानी कहूँ बादशाह ने उसे प्रसन्नहो कहनेकी आज्ञादी॥

व्यापारी और पिशाच की कहानी॥

शहरज़ाद ने कहा अगले समय में एक अतिधनी ब्यापारी ब्यापार की बहुत बस्तु रखता था। यद्यपि कारबारी कोठियां गुमाश्ते और सेवक जगह २ पर नियत थे तदपि आपभी प्रायः ब्यापार के वास्ते देश बिदेश जायाकरता था। एकबेर उसे किसी बड़े कार्य के निमित्त एक दूरदेश को जानापड़ा तो अकेलाही घोड़ेपर सवार होकर चला। जहां उसे जाना था वहां किसीभांति की खाने की बस्तु न मिलती थी इस वास्ते उसने एक खुरजी में कुलचे और छुहारे भरलिये और वहां पहुँचकर काम करचुकने के पीछे लौटा और चौथे दिन भोरके समय अपनी रास्ता छोड़कर किसी पेड़ की छाया में ठहर विश्रामकी इच्छा की। निदान दूरसे रमणीय सघन बृक्षों के नीचे

एक सुन्दर निर्मल नीरमयी कुण्ड देख घोड़े से उतरा और उसे एक वृक्ष से बांध उसी कुण्ड के कूलपर जा बैठा और कुलचे और छुहारे थैली से निकालकर खानेलगा। जब पेट भरगया तो छुहारे की गुठलियां इधर उधर फेंकदीं और अपने परमेश्वर की वन्दना करनेलगा कि इतने में उसने एक बड़ा विकट पिशाच देखा जो हाथ में खड्ग लिये उसकी ओर झपटकर आया और अत्यन्त क्रोध से ललकार बोला इधरआ कि; तुझे मारूं। व्यापारी उसका विकरालरूप और भयमान बातें सुनकर भयभीतहुआ और कम्पायमान होकर बोला; हे स्वामी! मैंने आपका कौनसा अपराध किया कि, जिससे आप मुझे मारते हैं? पिशाच ने कहा, तूने मेरे पुत्र को मारा है उसके बदले में तुझे मारताहूँ। व्यापारी ने कहा कि, मैंने तुम्हारे पुत्र को क्योंकर मारा; मैंने तो उसे देखाभी नहीं? पिशाच ने कहा कि, क्या तू अपना रास्ता छोड़कर नहीं बैठा? अपनी झोली से छुहारे निकालकर तूने भोजन नहीं किये और उनकी गुठलियां चारोंओर नहीं फेंकीं? व्यापारी ने कहा, यह सब सच है; मैं इन बातों को झूँठ नहीं मानता। पिशाच ने कहा कि, जब तू छुहारे की गुठलियां चारों ओर फेंकता था तब एक गुठली मेरे पुत्र की आंख में इस वेग से लगी कि, वह उसी समय कालवश हुआ इस लिये अब मैं तुझे उसके बदले वध करताहूँ। व्यापारी ने कहा कि, हे स्वामी! प्रथम तो मैंने तुम्हारे पुत्र को जानबूझकर नहीं मारा और जो मुझसे अज्ञानता में अपराधभी हुआ तो आप कृपाकरके क्षमा कीजिये। पिशाच ने कहा; न तो मैं क्षमा करना चाहताहूँ और न तरसकरना; क्या तुम्हारे धर्मशास्त्र में बधके बदले बध नहीं लिखा है? मैं तुझे अवश्य मारूंगा। यह कहके उस व्यापारी की बांह पकड़ उसे पृथ्वी पर गिरादिया और मारडालनेपर उद्यतहुआ व्यापारी अपने स्त्री पुत्रों को स्मरणकर रुदन करनेलगा और परमेश्वर और देवताओं की सौगन्द दिलानेलगा कि, मुझे छोड़दे। पिशाच ने उसका रोनापीटना सुनकर अपना हाथ रोकलिया और चाहा कि, जब यह चुप हो तो उसे मारैं पर व्यापारी ने रोनापीटना

चित्र व्यापारी का जिन्न की ख़ुशामद करते हुये जो मारने पर तैयार था ॥
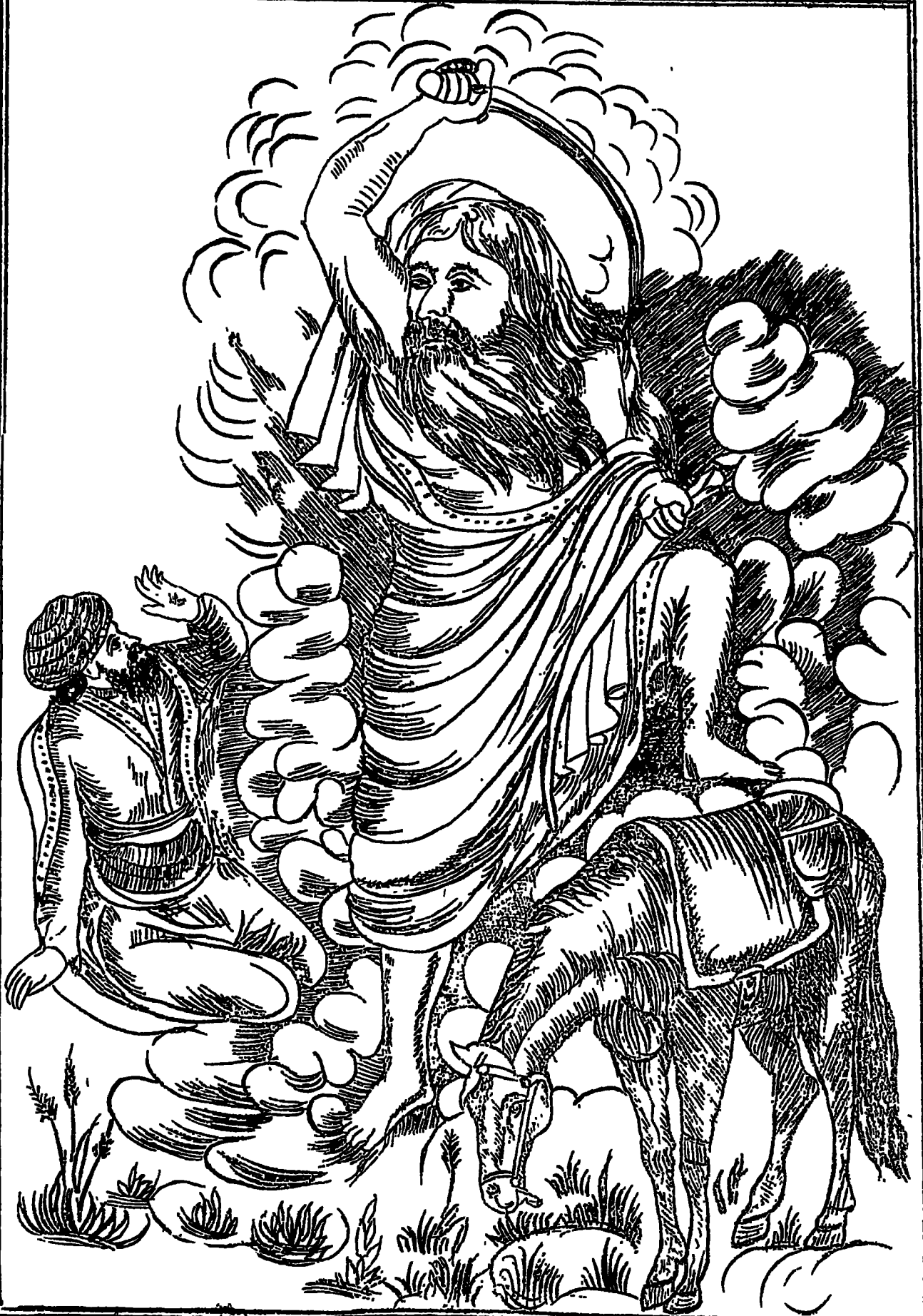
न छोड़ा और हाहा करके महाविलाप करतारहा। पिशाच ने कहा जो तू अश्रु के बदले रुधिर भी अपने नेत्रों से बहावेगा तौभी मैं तुझे न छोड़ूँगा। व्यापारी ने कहा कि पश्चात्ताप है जो; तुमको किसी तरह दया नहीं आती अन्याय से एक दीन निष्पाप मनुष्य को मारतेहो और मेरे रोनेपर विचार नहीं करते। क्या वास्तव में मुझे मारहीडालोगे ? पिशाच ने कहा, हां; मेरी यही इच्छा है। इतने में भोरहोगया, शहरज़ाद इस कहानी को यहांतक कहके चुपहोरही और विचारकिया कि; अब बादशाह के निमाज़ पढ़ने का समय है और उसके बाद दरबार में जावेगा। दुनियाज़ादने कहा कि, बहन यह क्याही अच्छी कहानी थी ? शहरज़ाद ने कहा कि, क्या तुमको यह कहानी पसन्द आई ? जो आगे सुनोगी तो तुमको और भी हर्ष प्राप्त होगा और आश्चर्य करोगी। जो महाराज ने आज मुझे प्राण दान दिये और फिर कहने की आज्ञादी तो कल रात्रि को मैं बाक़ी कहानी वर्णन करूंगी। शहरयार भी इस कहानी को सुनके अतिप्रसन्न हुआ था, अपने चित्त में विचारने लगा कि; सम्पूर्ण कहानी के पूरेहोने तक शहरज़ाद को न मारना चाहिये। निदान उस दिन उसने उसे न मारा और शय्या से भोर की निमाज़ पढ़ने के वास्ते उठा। निमाज़ के उपरांत सभामें गया। मन्त्री जो अपनी पुत्री के शोक में रात्रिभर सोया न था और लाचारी से अपनी लड़की का मारनेवाला बनाथा भोर को राजा की अनीति की आज्ञा न पाकर अतिआश्चर्यवान् हुआ। बादशाह दिनभर तो राजकाज में तत्परहा और रात को फिर शहरज़ाद के साथ कमरे में जाके सो रहा। भोरहोने के पहिले फिर दुनियाज़ाद ने जागकर कहा कि; हे मेरी प्रिय बहन ! जो तुम जागती हो तो उस कहानी को सबेरे तक कहो और उसे पूराकरो। इतने में शहरयार ने भी आज्ञादी कि, पिशाच और व्यापारी की कहानी पूर्णकर मैं उसके सुनने की अति लालसा रखताहूँ। शहरज़ाद ने इसप्रकार कहना आरम्भ किया कि, हे स्वामी ! जब व्यापारी ने देखा कि, यह पिशाच मुझे अवश्यही मारेगा तो कहनेलगा कि, हे दयालु ! यदि मैं तुम्हारे हाथ से

मारने योग्य हूँ और तुम मुझे किसी प्रकार वेमारे न छोड़ोगे तो मैं इच्छा करता हूँ कि, आप इतना अवसर मुझे दीजिये कि, मैं अपने स्त्री पुत्रों से विदा होआऊँ और अपना माल मता अपने परिवार के नाम लिख बांटिआऊँ कि; मेरे मरने के पीछे परस्पर विरोध और झगड़ा न हो। मैं प्रण करताहूं कि; इन सब कामों के करचुकने के पश्चात् मैं इसी स्थान पर फिर आके मिलूंगा उस समय जो चाहिये कीजियेगा पिशाच ने कहा कि, जो मैं तुझको इतना अवकाशदूं और तू न आवे? व्यापारी ने कहा कि,जो मेरे कहने पर तुझको विश्वास न हो तो मैं उस परमेश्वर की जिसने आकाशादि सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को रचा है सौगन्द खाकर कहता हूं कि; अपने सम्पूर्ण कामों के करने के उपरान्त मैं शीघ्रही आजाऊंगा। पिशाच ने कहा कि, तुझे कितना समय चाहिये? व्यापारी ने कहा केवल एक वर्ष कि; जिसमें मैं अपने सर्व कामों को सुधारकर आसकूं और कोई वाञ्छा मेरे चित्त में न रहै। आपसे मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि, एक वर्ष के उपरान्त इसी दिन मैं अपने को तुम्हारे शरण में अर्पण करूंगा पिशाच ने कहा कि; अपने इस प्रणपर परमेश्वर को साक्षी दे और व्यापारी ने शपथ खाकर परमेश्वर को साक्षी किया। इस परस्पर प्रणपर वह पिशाच व्यापारी को उसी कुण्ड के निकट छोड़ अन्तर्धान होगया और व्यापारी उस अकस्मात् दुःख से छूट घोड़ेपर सवारहो अपने घर की ओर चला। रास्ते में कभी वह अपने छूटजाने से प्रसन्न और कभी उस पिशाच के कठिन प्रण को स्मरणकर शोकवान् होता। निदान वह अपने घर पहुँचा और उसकी स्त्री और नातेदार उसे देख अतिप्रसन्न हुये और उसकी भेंट को दौड़े पर व्यापारी किसीसे न मिला और रुदन करने लगा उसकी यह दशा देखवे समझे कि, व्यापार में कुछ टोटाहुआ अथवा किसी और प्रकार की हानि हुई कि, जिस कारण यह इतना रुदन करता है। जब उसका रोना बन्दहुआ तो उसकी स्त्री ने पूछा कि; हम सब तो तुम्हारे आने से प्रसन्न हुये परन्तु तू क्यों रोता है? व्यापारी ने उत्तर दिया कि, मैं रुदन क्यों न करूं? केवल

एक वर्ष में जीऊंगा। फिर उसने सम्पूर्ण अपना और पिशाच का वृत्तान्त वर्णन किया तो वे इस हाल को सुन बहुत रोये विशेषकर उसकी स्त्री शिरपीटने और बाल खसोटनेलगी और लड़केवाले बड़े शब्द से रुदन करनेलगे। वह दिन तो उनको रोनेपीटने में कटा और दूसरे दिन संसारी कार्य में लगा। सब कामों के प्रथम उसने अपना सब ऋण चुकाया, फिर अपने मित्रों को अच्छी २ वस्तुएँ दीं; याचकों को बहुतसा धनदिया; दासी-दासों को बंधन से छुड़ाया; समस्त धन अपनी सन्तान को बांटदिया; असमर्थ सन्तानों के हेतु रक्षक नियत किये और अपनी स्त्री को भी बहुतसा धन दिया। इस समयान्तर में एक वर्ष भी पूरा होगया और लाचार होकर वह चलने को उद्यत हुआ। विदा होने के समय उसने क़फ़न के वास्ते कुछ द्रव्य अपनी खुरजी में धरली। उस समय सम्पूर्ण परिवार में महाविलाप मचा और सब उसको लिपटकर चाहते थे कि उसके साथ जाकर अपना प्राण दें परन्तु उसने अपने चित्त को स्थिरकर और उन्हें धैर्य दे विदा किया और कहा कि; मैं परमेश्वर की इच्छा पर प्रसन्न हूं; तुम सब भी धैर्य रक्खो और समझो कि, एक दिन मरना अवश्य है; मृत्यु से किसी का वस नहीं चलता निदान व्यापारी अपने को उन सबसे छुड़ाकर चला और उसी स्थान पर पहुँच जहां पिशाच से भेंट हुई थी घोड़े से उतरा और उसी कुंडके निकट जा अत्यन्त शोकयुक्तहो पिशाच की राह देखनेलगा। इतने में एक वृद्ध पुरुष एक हरिणी लिये उसके पास आया और पूछने लगा कि ऐसे निर्जन वन में जहां विकट पिशाच रहते हैं तुम्हारा आना क्योंकर हुआ? बहुधा मनुष्य इस वृक्ष के तले जाने से धोखा खाकर जानते हैं कि; यह विश्राम का स्थान है; यही समझ कर वे इसकी छाया में आ बैठते हैं और पिशाचों के हाथ से दुःख पाते हैं। व्यापारी ने उस वृद्ध मनुष्य को उत्तर दिया कि, तुम सत्य कहते हो; मैं इसी धोखे में पड़कर पिशाच के हाथ से दुःखित हूं। फिर उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे वर्णन किया और उस वृद्ध ने उसे सुन बड़ा आश्चर्य किया। उसने कहा कि, संसार में

इससे विचित्र कोई बृत्तान्त न होगा; तूने जो परमेश्वर की सौगन्द खाईथी उसे पूरी की। तू बड़ा सत्यवान् है और तेरी सत्यता पर धन्य है। अब मैं बिना यह देखे कि, वह पिशाच तेरे साथ क्या करता है यहांसे न जाऊंगा। यह कहकर वह बृ‌‌ उस व्यापरी के निक बैठगया और ‌ोनों परस्पर वार्त्ता क‌ नेलगे। इतने में एक दूसरा ‌द्ध मनुष्य जिसके साथ ‌ो काले कुत्ते रस्सी में बँधेहुये थे आया और उन दोनों का समाचार पूछनेलगा। पहले बूढ़े ने व्यापारी क सम्पूर्ण स‌ाचार वर्णन किया और क‌ा कि, मैं भी यह हाल देखने के लिये यहां बैठाहूं। वह दूसरा बृद्ध भी इस बृत्तान्त को आश्चर्य मान उनदोनों के पास यह घटना देखने के लिये बैठगया और बातें करनेलगा। उसे थोड़ीदेरहुई थी कि, एक तीसराबूढ़ा खच्चर लियेहुये आया और उन दोनों बूढ़ों से पूछनेलगा कि, यह व्यापारी क्यों इतना शोकयुक्त तुम्हारे ढिग बैठा है? उन दोनोंने उस व्यापारी का सम्पूर्ण बृत्तान्त वर्णनकिया तब तीसरे बृ‌ ने भी इच्छाकी कि, वहां ठहरकर देखें कि, ‌उस पिशाच और व्यापारी में क्या होता है। निदान व‌ भी वहां बैठगया पर अभी उसने दमभी न लिया था कि, उन सबने अपने सन्मुख वन में एक बड़ा धुन्धकार धुवां उठता हुआ देखा जो उनके निकट पहुँचकर एकबारगी दृष्टि से छिपगया और आंखों की झिलमिलाहट में उन्होंने देखा कि, एक अतिउग्र स्व‌ प पिशाच हाथ ‌ें खड्ग लिये व्यापारी के निकट आया और उससे बोला उठ। तुझेमैं वधकरूं; तूने मेरे पुत्र को माराहै। पिशा की य‌ बात सुनकर व्यापारी और तीनों बृद्ध कम्पायमान हुये और रुदन करने लगे; यहां तक कि, उनके रोने से उस बन में अतिशब्द हुआ। उस बृद्ध ने जिसके पास हरिणी थी क्या देखा कि, पिशाच व्यापारी का हाथ पक‌ कर एक ओर को लेगया और उसको निर्दयतासे मारडालता है। वह उठा पिशाच के चरणों पर गिरपड़ा और अति अधीनता से बोला कि, हे पिशाच! मैं कुछ बिनय करता हूँ आप क्रोध थांभकर श्रवणकीजिये। मैं इच्छा करताहूँ कि, अपना और इस हरिणी का समाचार कहूँ; जो यह बृत्तान्त व्यापारी की

दृश से अद्भु हो तो आशावान् हूं कि, इसका तिहाई अपराध क्षमाहो। पिशाच ने कुछबिचारकर कहा कि, मैंने अंगीकार किया॥

वृद्ध मनुष्य औ उसकी हरिणी की कहानी॥

वृद्ध ने कहा हे पिशाचाधिपति! ध्यान देकर मेरा वृत्तान्त सुनो यह हरिणी मेरे चचा की लड़की और मेरी स्त्री है जब इसके साथ मेरा बिवाह हुआ था द्वादशवर्ष की थी मेरी अत्यन्त आज्ञापालक और पतिव्रता थी जब विवाह हुये ३० वर्ष व्यतीत हुये और सन्तान इस से न हुई मैं सन्तान की कामना अत्यन्त रखताथा इसकारण मैंने एक बांदी मोलली उससे बहुत दिनों के पश्चात् एक पुत्र उत्पन्न हुआ तब मेरी स्त्री उस लड़के और उसकी माता से गुप्तडाह और बैर करने लगी अतिपश्चात्ताप है कि उसके डाह का हाल मुझे बहुत दिनों के पीछे विदितहुआ संयोगवश मुझे किसी देशको जाना अवश्य पड़ा तो मैंने उस दासी और उसके पुत्र के हेतु अपनी स्त्री से ताकीद कर कहा जबतक मैं लौट न आऊं इन दोनों की रक्षा करना और अच्छी तरह से रखना परमेश्वर चाहे तो एक वर्ष के पश्चात् मैं लौट आऊंगा और तभी से उसने अधिक बैर करना आरम्भ किया जादू भी सीखती थी इस समय तक वह जादू की विद्या में अतिनिपुण होगई उस अभागी ने मेरेजाने के उपरान्त लड़के को जादू का बछड़ा बनाडाला और अहीर को जो मेरा नौकर था बुला कर कहा कि इस बछड़े को मैंने मोललिया है अपने घर लेजाकर रख और इसको खिला पिलाकर हृष्टपुष्टकर और बांदी को भी गौ बनाकर अहीर के घर भेजदिया मैंने आकर अपनी स्त्री से अपने पुत्र और उसकी माता का समाचार पूछा कि दोनों कहां हैं उसने कहा कि बांदी तुम्हारी मरगई और तुम्हारे पुत्र को दो मास से मैं नहीं देखती मालूम नहीं कि वह क्या हुआ मैं यह वृत्तान्त सुनकर लौंड़ी से तो निराशहुआ और पुत्र के खोजाने पर आशा की कि कभी न कभी वह मेरे हाथ लगेगा इसको आठमास व्यतीत हुये कि मैंने उस पुत्र को न पाया यहांतक कि ईद का दिन आया मैंने इच्छा की किसी पशु का बलिदान करूं अहीर को बुलाकर कहा कि एक गौ

रुष्टपुष्ट लेआ। संयोगवश वह मेरीही बांदी को लेआया और मैंने जो भेंट के वास्ते उसके हाथ पांव बांधे तो वह अत्यन्त दीनता से बोलनेलगी और उसके नेत्रों से आंसूकी धारा बहनेलगी। उसका यह हाल देखकर मुझे या आई औ मुझ उसके गलेपर छुरी न चलसकी तब मैंने अपने नौकर से कहा कि, इसे लेजा और दूसरी गौ मेरे वास्तेला। स बात को सुन मेरी स्त्री अतिक्रोधित हुई और दुर्वचन कहके बोली कि, तू इसी गौ को भेंटदे, इससे उत्तम और कोई रुष्टपुष्ट और भेंट के योग्य तेरे अहीर के निकट नहीं है। उसके कहने सुनने से फिर मैं छुरी हाथ में लेकर मारने को उद्यत आ और वह गाय और भी रोने और चिल्लाने लगी। उस समय मैंने निरुपाय हो अहीर को छुरी देकर कहा कि; तूही इस गौ को मार। उसके चिल्लाने और रोनेसे मेरा हाथ उसपर नहीं चलता। अहीर ि दयी था गौ को उसने बध करडाला और जब उसकी खाल उधेड़ी गई तब हड्डियों के सिवा उसके शरीर में मांस कुछ भी न पाया क्योंकि, वह टो माय के कारण दृष्टि में अत्यन्त र ष्टपुष्ट विदित होतीथी। मैं उस रखवालेपर क्रोधितहुआ और उस मरीहुई गौ को उसे देके बोला कि, इसको तूही लेजाकर अपने खर्च में ला या जिसे तेरा जी चाहे देदे पर जो तेरे पास कोई रुष्टपुष्ट बछड़ाहो तो इस गौके बदले भेंटदेनेके लिये शीघ्रहीलेआ। वह शीघ्रही एक ब मोटा और ताज़ा बछड़ा जो देखने में भी अतिसुन्दर था ले आया। मुझको उस बछड़े का ुछ बृत्तान्त मालूम न था कि, यह मेराही पुत्र है तौभी मेरे चित्तमें उसकी ओर देखते ी अतिप्रीति उत्पन्नहुई और वह भी मुझे देखतेही बड़ीप्रीति से रस्सी तोड़ मेरे रणोंपर आगिरा। इस घटना से मेरे हृदय में और भी अधिक प्रीतिहुई और प्रेम के कारण मैंने बिचारा कि, क्या इसको मारूं। इस प्रीति से मैं अत्यन्त शोकवान् हुआ और उस बछड़े के नेत्रों से आंसू बहनेलगे इससे मेरी प्रीति और अधिक उमँगी। फिर मैंने उस अहीर से कहा कि इस बछड़े को लेजाकर रक्षापूर्वक रख और इसके बदले दूसरा पशु भेंट के वास्ते लेआ। इस बातको फिर मेरी स्त्री ने सुनकर कहा कि,

हे पति! ऐसे मोटे बछड़े को भेंट क्यों नहीं देते? मैंने कहा कि, यह बछड़ा मुझे अच्छा मालूम होता है और मेरा मन नहीं चाहता है कि, मैं इसको मारूं; तू इस बात में कुछ न कह। उस कर्कशा स्त्री ने इस बिषय में बहुत तकरार की और डाह से बेर २ उसके मारने को कहतीथी। मैं फिर निरुपायहो पैनीछुरी ले अपने पुत्रका गला काटने चला पर उसने फिर मेरी ओर देखा और मैं उसके नेत्रों से आंसू बहते देखकर दया और प्रीति से विह्वल होगया और छुरी हाथसे गिरपड़ी। तब मैंने स्त्री से कहा कि; दूसरा बछड़ा मेरे पास है उसे मैं भेंट देताहूं पर वह अभागी डाह से उसीके मारने के हेतु हठकिये गई। मैंने उसके बकनेपर बिचार न किया पर उसके धैर्य के वास्ते प्रण किया कि, मैं इस बछड़े को ईदुज्जुहा के दिन भेंट करूंगा। अहीर उसे अपने घरलेगया और भोर होतेही आकर एकान्त में मुझ से बोला कि, मैं कुछ कहा चाहताहूँ और मुझे बिश्वास है कि, तुम सुनकर प्रसन्नहोगे। मेरी लड़की जादू की बिद्या में अतिप्रबीण है, कल जो मैं उस बछड़े को लौटाकर लेगया तो वह उसे देखकर हँसी और रोई। मैंने उससे दोनों बिपरीत बातों का कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि; हे पिता! यह बछड़ा जिसको तुम लौटाकर लाये हो हमारे स्वामी का पुत्र है इसलिये मैं इसे जीता देखकर प्रसन्न हुई और मुसकराई और कलके दिन जो उसकी गौरूपी माता मारीगई उसे स्मरणकर रोई। इन दोनों मा बेटोंको हमारे स्वामी की स्त्री ने सवतियाडाह के कारण जादू से गौ और बछड़े के शरीर में बनादिया था। मैंने जो यह बात अपनी पुत्री से सुनी थी तुमसे यथार्थ कहदी। हे पिशाचपति! मेरी उस समय की दशा को समझो कि; इन बातों को सुनकर कितना शोक और दुःख मेरे चित्तमें हुआ होगा। इतनी कहानी कहकर उस बृद्ध ने पिशाच से कहा कि, फिर मैं उस रखवाले के साथ हुआ और उसकी लड़की के निकटगया कि, इस बात को उसके मुखसे सुनूं। पहले मैं उसके गृह में पहुँचकर पशुशाला में जहां मेरा पुत्र था गया। अभी मैंने उसके निकट जाकर उसे प्यार भी नहीं किया था कि, उसने मुझसे इतनी प्रीति की

कि, मैंने जाना कि; वह वास्तव में मेराही पुत्र है फिर मैंने उस हाल को जो सुनाथा उसकी लड़की से भी श्रवणकर पूछा कि; किसी प्रकार तू इस बछड़े को मनुष्य के शरीर में लासक्ती है ? उसने कहा निस्सन्देह लासक्तीहूं । मैंने कहा जो तू ऐसा करे तो मैं तुझे अपना सब धन और वस्तु दूं ? उस लड़की ने मुसकराके उत्तर दिया कि, तुम हमारे स्वामी हो और हम तुम्हारे सेवक हैं इसलिये दो शर्तों पर मैं तुम्हारे पुत्र को उसके पहले स्वरूप में लासक्तीहूं—एक तो यह कि, तुम उसका बिवाह मेरे साथ करो और दूसरे यह कि; जिसने इसका बछड़े का स्वरूप बनाया है उसको थोड़ा सा दण्डदो । मैंने उत्तर दिया कि; पहली शर्त को तो मैंने अङ्गीकार किया कि; तेरा बिवाह उसके साथ करदूंगा और तुम दोनों को इतना कुछ दूंगा कि; फिर कभी तुमको द्रव्य की कांक्षा न रहेगी और दूसरी शर्त में तेरी इच्छा है जो दण्ड चाहे दे वह दुष्टा निरशङ्क दण्ड के योग्यहै पर उसे मार न डालियो । उस लड़की ने उत्तर दिया कि, जैसा उसने तेरे पुत्रके साथ किया है वैसाही मैं भी उसको दण्डदूंगी । यह प्रतिज्ञाकर उसने एकप्याला जलसे भरकर उसपर कुछपढ़ उस बछड़े के सम्मुख हो कहा, हे परमेश्वर के जीव ! जो तू वास्तवमें मनुष्यहै और जादूके कारण बछड़ा बना है तो उस परमेश्वर की अनुग्रह से फिर जैसाथा वैसाही बन । इतना कह ज्योंही उसने उस मन्त्रित जलको उसपर छिड़का कि, उसके पड़तेही वह तुरन्त मनुष्य बनगया । मैंने उसे प्रीतिपूर्वक हृदय से लगाया और अत्यन्त प्रसन्नहो उससे कहा कि, परमेश्वर ने इस लड़की के द्वारा तुझे इस कष्ट से छुड़ाया, तू इसका कृतज्ञहो और इसके साथ अपना बिवाहकर क्योंकि; मैंने इसके साथ प्रण किया है । मेरे पुत्र ने इस बात को हर्ष से अङ्गीकार किया और उस लड़की ने मेरी स्त्री को जादू से हरिणी बनाडाला । निदान मेरे पुत्र ने उस लड़की के साथ बिवाह किया पर थोड़े दिन पीछे वह कालवश हुई इससे मेरा पुत्र कहीं देशान्तर को चलागया और बहुत दिनहुये मुझे उसका कुछ समाचार नहीं मिला इसलिये मैं उसे ढूंढ़ता फिरता हूं । मुझे किसीपर भरोसा न था कि; हरिणी

रूपी अपनी स्त्री को उसकेपास छोड़ अपने पुत्रको ढूंढ़ने जाता इस लिये मैं उसे अपने साथलिये फिरताहूं। यही मेरी और इस हरिणी की कहानी है। इस कहानी को बिचार कीजिये कि, यह अद्भुत है वा नहीं। पिशाच ने कहा कि, यह कहानी निस्सन्देह विचित्र है मैंने इस व्यापारी के अपराध का तृतीयांश क्षमाकिया। फिर शहरज़ाद ने शहरयार से बिनयकी कि, हे स्वामी! जब पहिला वृद्ध अपनी कहानी कहिचुका तो दूसरा वृद्धमनुष्य जो अपने साथ दो कालेश्वान लिये फिरता था पिशाच से कहनेलगा कि, मैं भी अपना और इन दोनों कुत्तों का इतिहास आपसे विनय करताहूं जो वह पहली कहानी से अधिक उत्तमहो तो आशा करताहूं कि, उसे श्रवण कर व्यापारी के अपराध का तीसराभाग क्षमाकीजिये। पिशाच ने कहा कि, जो तेरा हाल इस हरिणी की कहानी से सुन्दर होगा तो मैं इसके अपराध का तीसरा हिस्सा अवश्य क्षमाकरूंगा॥

दूसरे वृद्ध की कहानी जिसके साथ दो कालेश्वान थे॥

दूसरे वृद्धने कहा कि; हे पिशाचाधीश! यह दोनों कालेश्वान मेरे सहोदरभाई हैं। हमारे पिता ने मरने के समय तीनहज़ार मुद्रा हम तीनों भाइयों को दिये थे और हम तीनों उन्हीं मुद्राओं से व्यापार करने लगे। मेरे बड़ेभाई को देशान्तरों के व्यापार की इच्छाहुई इसहेतु उसने अपनी सम्पूर्ण वस्तु बेचडाली और जो वस्तुएँ अन्य देशोंमें महँगी बिकती थीं मोल लेचला। उसे गये जब अनुमान एकबर्ष के व्यतीत हुआ तब एक भिक्षुक मेरी दूकान पर आकर बोला परमेश्वर तेरा भलाकरे। मैंने कहा ईश्वर तेराभी भलाकरे। वह बोला क्या तुम मुझे नहीं जानते? तब मैंने उसे ध्यानपूर्वक देखके पहिंचाना और गले मिल अतिपश्चात्ताप किया। मैंने विनयकिया कि, हे भाई! मैं तुझे इसहालतमें क्योंकर पहिंचानता? फिर मैंने परदेशका समाचार पूछा तो उसने कहा कि, मुझे इस हाल में देखकर भी क्या पूछते हो? निदान मेरे फिर विनय करने से उसने सम्पूर्ण दुःख जो उस वर्ष में उसपर पड़े थे संक्षेप में कह सुनाये और बोला कि; इससे अधिक कहना दोनों के दुःखका कारण है। उसका हाल सुनकर मुझे सब

कार्य निस्सरण होगये और शीघ्रही उसे स्नानकरा और उत्तम उत्तम वस्त्र मँगाकर पहिनाये। फिर मैंने अपने हिसाब किताव को देख मालूम किया कि; मेरे पास अवतक छः हज़ार रुपये हैं इसलिये मैंने तीन हज़ार रुपये अपने भाई को दिये और कहा कि, हे भाई! अपनी पहिले की हानिको भुलादो और अब इस तीन हज़ार रुपये से अपना व्यापारादि करो। उसने अतिहर्ष से वह रुपये लेलिये और नये सिरसे व्यापार करनेलगा। निदान हम दोनों आगे की तरह रहनेलगे। इसके बाद मेरे छोटे भाई की भी इच्छाहुई कि, अपने वड़े भाई के समान अन्यदेशों में जा व्यापारकरे। मैंने उसे बहुत मना किया पर उसने न माना और अपनी सम्पूर्ण बस्तु वेच कर वह बस्तु मोलली जो दूसरे देशों में महँगी बिकती थी। फिर मुझसे बिदा होकर वह एक गोल के साथ जो उधर को जाताथा चलागया और एक बर्ष के उपरांत वहभी बड़े भाई के समान अपना सम्पूर्ण मालमता खोकर योगीरूप से मेरे पास आया। मैंने भी उसी प्रकार उसका हाथ पकड़ा और तीनहज़ार रुपये जो मुझे उस साल लाभ हुये थे उसे दिये और वह एक दूकान मोलले उसी नगर में व्यापारादिक करनेलगा। थोड़े दिनों के पश्चात् मेरे दोनों भाइयों ने आकर मुझे यह सम्मत दिया कि, मैं भी उनके साथ किसी अन्य देशमें व्यापार के वास्ते जाऊं। पहिले मैंने न माना और कहा कि, तुम्हें सफ़र करने से क्या प्राप्तहुआ जो मुझे चलने को कहते हो तब तो उन दोनों ने मुझे इसप्रकार उपदेश करना आरम्भ किया कि, क्या जाने तेरे ही प्रताप और उपाय से हमारे चित्त की अभिलाषा के अनुसार सर्व कार्य सिद्ध हों। उनको इसी अभिलाषा में कहते कहते पांच वर्ष व्यतीत हुये और उन्होंने इस समयान्तर में बहुत कुछ कहा तब लाचार हो मैं सफ़र के वास्ते उद्यत हुआ और व्यापार की सम्पूर्ण बस्तु मोलली। उसी समय मुझे यह विदित हुआ कि, वह सम्पूर्ण धन जो मैंने उनको दिया था उन्हों ने खर्च करडाला परन्तु मैंने उस विषय में उनसे कुछ भी न कहा और उस समय मेरे पास जो १२००० रुपये थे उनमें से आधे उनको देकर

कहा कि, भाइयो! अग्रशोची और बुद्धिमानी यह है कि; हम अपने आधे धन को व्यापार में लगावें और आधा घर में रक्खें क्योंकि, परमेश्वर न करे जो तुम्हारे समान सफ़र में किसी प्रकार की हानि होगी तो उस समय वह अर्धधन हमारे काम आवेगा और उससे हम फिर व्यापार कर अपना काम चलावेंगे। निदान मैंने उनको तीन तीन हज़ार रुपये दे उतनेही आपभी लिये और तीन हज़ार अपने कुयें में गाड़ दिये। तदनन्तर हमने व्यापार की सम्पूर्ण वस्तु मोललीं और जहाज़ पर सवार होकर किसी देशको सिधारे। एक महीने में हम क्षेम कुशल से एक ऐसे नगर में पहुँचे कि, जहां हमारे व्यापार में अत्यन्त लाभ हुआ और हमने उस स्थान की बहुत सी वस्तु अपने शहरके रास्ते मोललीं। जब हम उस स्थानपर लेनदेन करचुके और जहाज़ पर सवार होने की तैयारी करनेलगे कि, एक अतिरूपवती स्त्री बहुत मलिन वस्त्र पहिने मेरे सन्मुख आई और समीप आ, दण्डवत्कर और मेरे हाथ को चूंब मुझसे बिवाह करने की इच्छा करनेलगी मैं इस बात को अनुचित समझ उसके सन्मुख न हुआ पर जब उसने अत्यन्त दीनता से मेरी बिनती की तो मुझे उसकी ग़रीबी पर दया उपजी और मैंने उसकी अभिलाषा स्वीकार कर उसके साथ विवाह किया और उसे जहाज़ पर चढ़ाया जब वहांसे आगे चले तो रास्ते में उसे चतुर और बुद्धिमान् पाकर मैं उससे अधिक प्रीति करनेलगा पर मेरे दोनोंभाई डाहकर मुझसे गुप्तवैर करनेलगे, यहांतक कि; एक रात्रि को उन दोनों ने हम दोनों को निद्राबश देखकर समुद्र में डाल दिया। मेरी स्त्री जो वास्तव में अप्सरा थी उसको किसी प्रकार का दुःख न पहुँचा और उसने मुझे डूबने से बचालिया अर्थात् गिरतेही वह मुझे एक द्वीप में लेगई। जब भोरहुआ तो उसने मुझसे कहा कि; मैंने तेरे प्राण बचाये। मैं अप्सरा हूं, उस दिन जब तू जहाज़ पर चढ़नेलगा था तो मैं तुझे तरुण और सुन्दर देख तुझपर मोहित हुई और तेरे साथ बिवाह करने की इच्छा की पर मैंने बिचारा कि, तेरी परीक्षा लूं इस हेतु ग़रीबों का बेषधर और मलिनवस्त्र पहिन तेरे सन्मुख हुई और

ने मेरी इच्छा पूर्णकी इससे मैं अतिप्रसन्नहुई। अब मेरी इच्छा है कि, तेरे उस उपकार से उऋण होजाऊं परन्तु तेरे भाइयों से मैं अप्रसन्नहूं और मेरा विचार है कि उनको मारडालूं मैं उसकी बातें सुनकर आश्चर्यित हुआ और उसका अतिउपकृत हो दीनता से बोला कि, "मेरे भाइयों को प्राण से न मार। यदि उनके हाथों मेरे प्राणों को कष्ट पहुँचा है पर मैं उनको इतना कठिन दण्ड नहीं दिया चाहता परन्तु जितना मैं अपने भाइयों के वास्ते सिफ़ारिश करता था उतनाही उसे क्रोध चढ़ता जाता था। फिर उसने कहा कि, मैं यहां से उडकर उन दुष्टों को जहाज़ समेत डुबादूंगी"। मैंने उसे परमेश्वर की सौगन्द दी और कहा कि, ऐसा न करना; बुराई के बदले भलाई करना अच्छा है। अपने क्रोध को ठंढा करो और मारडालने के सिवाय दूसरा जो दण्ड तुम्हारे विचार में हो दो। निदान मैंने ऐसी २ बातें कह उसे ठंढा किया पर मैं यह बातें कररहा था कि, उसने मुझे वहां से लेजाकर मेरे घर की छतपर बैठा दिया और आप गुप्त होगई। मैं कोठे से उतर घर में आया और कोठरी का दरवाज़ा खोल और तीन हज़ार रुपये कुयें से निकाल अपनी दूकान पर जा बैठा और कारवार करने लगा। जब मैं दूकान से घर आया तो दो काले कुत्तों को अपने भवन में देखकर बड़ा आश्चर्यित हुआ वह कुत्ते मुझे देख अपनी पूंछ हिलाकर मेरी ओर दौड़े और अपना शिर मेरे चरणों पर रखनेलगे कि, उसी समय वह अप्सरा भी मेरे भवन में आई और मुझसे कहने लगी कि, हे पति! इन दोनों कुत्तों को अपने घर में देख मत घबराना यह दोनों तेरे भाई हैं यह सुन मेरा रुधिर सूखगया और घबराकर मैंने उस अप्सरा से पूछा कि यह दोनों कुत्ते क्योंकर बनगये? उसने कहा, मेरी एक बहन है जिसने मेरे कहने से तुम्हारे जहाज़ पर की सम्पूर्ण वस्तु को समुद्र में डुबादिया और तुम्हारे भाइयों को दश बर्ष के वास्ते कुत्ता बनाडाला। यह कह वह तो अन्तर्धान होगई और जब दश बर्ष बीतगये तब मैं उसको ढूंढ़ते २ इस ओर आनिकला और इस व्यापारी और उस वृद्ध मनुष्य को जिसके पास हरिणी है यहां

नम्बर ६ मुतअल्लिके सफ़े ३२ प्र. भा.

चित्र स्त्री का बादशाही रसोईख़ाने की दीवार से फटकर निकलना और मछ-
लियों का जाना और पकाने वाले का आश्चर्य्य

देखकर डरगया । हे पिशाचाधिपति! यही मेरी कहानी है जिसे आपने सुना—बिचित्र है वा नहीं? पिशाच ने कहा कि, सचमुच तेरा प्रसङ्ग अद्भुत है मैंने उसके अपराध का तीसराभाग क्षमा किया। इतने में तीसरे ने औरों के सदृश पिशाच से कहा कि, अब अपना वृत्तान्त आपसे कहताहूँ जो तुम उसे और कहानियों से अद्भुत पाओ तो कृपा करके व्यापारी के अपराध का तिहाईभाग भी क्षमा करना । पिशाच ने अंगीकार किया तब तीसरा वृद्ध अपना वृत्तांत कहनेलगा ॥

तीसरे वृद्धका वृत्तांत जिसके साथ एक खच्चर था ॥

हे पिशाचों के बादशाह! यह खच्चर मेरी स्त्री है; संयोगवश मैं परदेश को गया और वहां से एक वर्ष पीछे लौटकर रातको घरमें आया तो क्या देखताहूँ कि, मेरी स्त्री एक हब्शीगुलाम के पास बैठी हुई हास्य कररही है और अपने प्यारे से प्रीति की बातें करती है। यह देख मैं अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और चाहा कि, उसे दण्ड दूं कि, इतने में वह एक पात्र जल का उठालाई और किसी मन्त्र से उसे मन्त्रित कर मुझपर छिड़कदिया जिससे मैं कुत्ता बनगया; फिर उसने मुझे घर से निकाल दिया और चित्त में अतिप्रसन्न हुई। मैं फिरते फिरते व्याकुल हो एक क़साई की दूकान पर पहुँचा और उस दूकान की हड्डियां उठा खानेलगा। एक दिन मैं उस क़साई के घर जानिकला तो क्या देखा कि, उसकी पुत्री मुझे देखते ही परदे में जा बैठी और देरतक न निकली; तब क़साई ने आश्चर्य-वान् हो पूछा कि, तू बाहर क्यों नहीं आती? उसने कहा कि, क्या मैं परपुरुष के सम्मुख आऊं? तब क़साई इधर उधर देख बोला कि, यहां तो कोई भी दूसरा मनुष्य नहीं है? पुत्री ने कहा कि, हे पिता! यह कुत्ता जो घर में आया है इसका वृत्तांत तुझे बिदित नहीं है; यह पुरुष है और उसकी स्त्री जादू की बिद्या में अतिप्र-वीणहै। यह उसी की मन्त्रबिद्या से कुत्ता बनगया है पर जो तुझे बि-श्वास न हो तो मैं इसी समय इसको मनुष्य बनासक्ती हूँ। क़साई ने कहा कि, परमेश्वर के वास्ते तू इसको शीघ्रही इस कष्ट से छुड़ा

कि, जिसमें इसके लोक और परलोक का धर्मरहे। यह बात सुन उसने थोड़ा सा जल मन्त्रित कर और उसपर छिड़क कहा कि,"यह चोला छोड़ और अपनी निजयोनिको प्राप्त होजा"। यह कहतेही मैं मनुष्यरूप बनगया और वह स्त्री फिर परदे में चलीगई। तब मैंने उसकी कृतज्ञताकर यह आशीर्वाद दिया कि, हे भाग्यवती! तुझे दोनों लोकों की प्रसन्नता प्राप्तहो। मैं इच्छा करताहूं कि, मेरी स्त्री को भी दण्ड दियाजावे। यह सुन उसने थोड़ा जल मन्त्रितकर एक पात्र में अपने पिता के हाथ बाहर भिजवादिया और कहा कि; इस जल को उसके ऊपर छिड़क जिस रूप में उसे रखने की इच्छा हो उसका नाम अपने मुखसे उच्चारण करना कि; "तू अपना स्वरूप छोड़ अमुक स्वरूपमें आ;" परमेश्वर चाहेगा तो उसका वैसाही रूप होजावेगा। मैं उस जल को हर्ष से उठा घर लेआया और अपनी स्त्री को सोताहुआ पाकर उस जल के कई छींटे उसपर मारे और खच्चर के रूपमें उसे ले आया। हे राजन्! जब तीसरा बृद्ध अपना बृत्तांत कहचुका तब पिशाच ने आश्चर्यवान् हो खच्चर से पूछा कि; क्या यह बात यथार्थहै? उसने शिरहिलाकर कहा कि; हां! यथार्थ है। तब पिशाच ने व्यापारी के अपराध के अंतिम तिहाई भाग को भी क्षमा किया और छोड़नेके पीछे व्यापारी से कहा कि; तुझे उचितहै कि; इन तीनों बृद्धों का जिनके कारण तेरे प्राण बचे हैं कृतज्ञहो। यदि वे तेरी सहायता न करते तो कदाचित् तेरे प्राण न बचते। यह कह वह पिशाच गुप्त होगया और व्यापारी उन तीनों का अत्यन्त कृतज्ञ हुआ वे तीनों बृद्ध व्यापारी के प्राणबचने से अतिप्रसन्न होकर अपने २ गृह को सिधारे और वह व्यापारी वहां से अपने घर में आ अपने स्त्री पुत्रोंसे मिला और शेष आयु अतिहर्ष से अपने कुटुम्ब में व्यतीत की। शहरज़ाद ने व्यापारी और पिशाच का यह बृत्तान्त कहकर शहरयार से बिनय की कि; जो कहानी मैं कहचुकी वह धीमर की कहानी से उत्तम नहीं है। इतनी कहानी सुन दुनियाज़ाद ने बादशाह को चुप देखकर कहा कि; हे बहिन! अभी कुछ रात्रि शेषहै धीमर की कहानी भी आरम्भकर, मुझे बिश्वासहै कि; बादशाह उस कहानी को

नम्बर ४ मुतअ़ल्लिके सफ़े ३४ प्र·भा·

चित्र तीन वृद्धों का ब्यापारी और पिशाच से बिदा होना ॥

चित्र हकीम दूबाँ और बादशाह ग्रीक का गेंद खेलते हुये
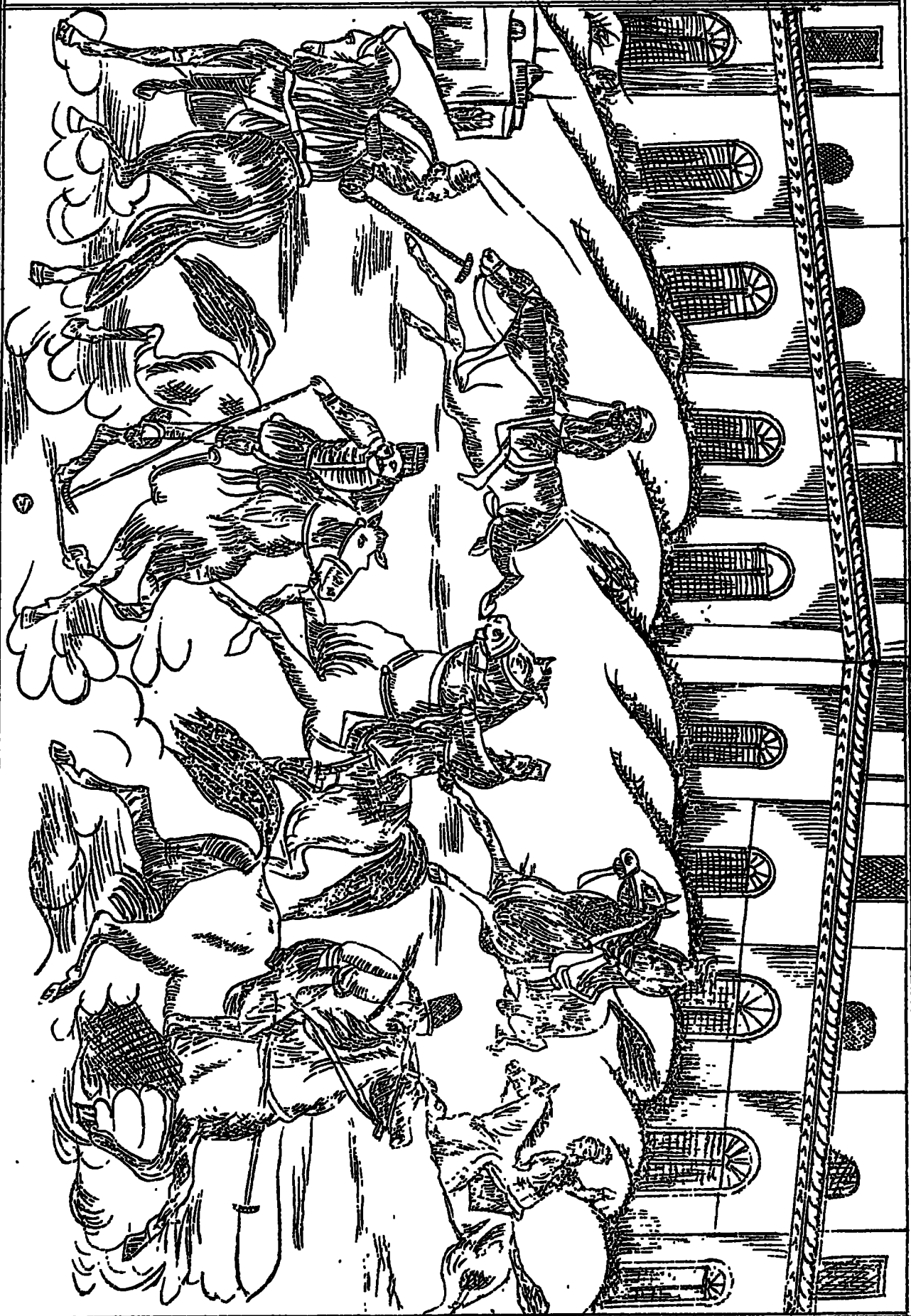
सुन प्रसन्न होंगे। शहरयार उसके सुनने पर राज़ी हुआ और शहर- ज़ाद ने धीमर की कहानी इसप्रकार बर्णन करनी आरम्भ की॥

धीमर की कहानी॥

हे स्वामी! एक अति धर्मनिष्ठ और बृद्ध मुसल्मान धीमर बड़े श्रम से अपने स्त्री पुत्रों का पालन करताथा। वह प्रतिदिन नियमसे भोर को उठ नदी पर जाता और चार बेर अपना जाल नदी में डा- लता। एक दिन बड़े सबेरे उसने उठ और नदी के तटपर जा जाल को नदी में डाला और निकालते समय उसे भारी पाकर अति प्र- सन्न हुआ कि, इसमें कोई बड़ा मत्स्य फँसआया है परन्तु जब उसे बाहर निकाला तो मछली के बदले एक मरा गधा पाया और उसे देख अति अप्रसन्न हुआ। फिर उसने अपने जाल को जो गधे की लाश के बोझे से कई जगह फटगया था सम्हालकर दूसरी बार नदी में फेंका पर इस बार उसमें कीचड़ और मिट्टी फँस आई; तब वह अत्यन्त शोकित हो अपने भाग्य की निन्दाकर कहनेलगा कि; मैं अपने स्थान से जीविका के वास्ते निकला था और दो बेर जाल में कुछ न आया। मैं तो इस उद्यम के सिवाय और कोई काम भी नहीं करता कि, जिससे जीविका प्राप्तकरूं। निदान उसने फिर जाल को कीचड़ से धो तीसरी बेर नदी में फेंका और इसबेर भी जालमें कं- कर गुठलियां आदि निकलीं जिन्हें देख वह अत्यन्त अप्रसन्न और शोकवान् हुआ। इतने में भोरभी होगया तब धीमर ने परमेश्वर का आराधन कर इसप्रकार प्रार्थना की कि, हे सर्वज्ञ! और दीन- दयाल! तुझे विदित है कि, मैं प्रतिदिन केवल चार बेर नदी में जाल फेंकताहूँ और आज तीनबेर फेंकचुकाहूँ पर अबतक उसमें कुछ न आया मेरा सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ हुआ; अब एक बेर फेंकना और रहगया है इसलिये तू इस नदी को मुझ पर ऐसा सन्तुष्ट कर जैसी कृपा तूने पहिले समय में मूसापर की थी। यह कह उसने फिर चौथी बेर जाल को नदी में डाला और उसे बहुत भारीपा समझा कि, अबकी बेर तो अवश्य मछलियां आई हैं। निदान अति कष्ट से उसे खींचा तो इस बेर पीतल के लोटे के सिवाय और कुछ न

आया। लोटे को भारी देख वह समझा कि, इसमें कोई वस्तु भरी हुई है। उसका मुख सीसेसे अति दृढ़ता से बन्द था और उसपर मोहरथी। फिर धीमर ने विचारा कि, यदि इसमें से कुछ भी न निकला तो इस लोटे को बेंचकर थोड़ा बहुत अन्न ले आजका दिन व्यतीत करूंगा। फिर उसने उस लोटे को चारों ओरसे उलट पुलट कर अच्छेप्रकार से देखा कि; इसमें कौनसी वस्तु है पर उसमें से तनक भी शब्द न आया तब वह छुरी से उसका मुख खोल शिर नीचे को कर देखनेलगा पर जब उसमें से कुछ भी न निकला तो बहुत आश्चर्य में आ उस लोटेको हाथों से फेंकदिया फेंकतेही क्या देखा कि; उसमेंसे धुन्धाकार धुवां निकलताहै; वह यह देख भयभीत हो कुछ पीछे हटकर खड़ाहुआ और वह धुवां आकाशतक पहुँच कर नदीपर फैलगया। फिर थोड़ीदेर में एक जगह सिमटगया और एक अति बिकटस्वरूप पिशाच देखपड़ा। धीमर ने ऐसा बिकराल रूप कभी न देखा था इसलिये वहांसे भागने की इच्छा की परन्तु भय से भाग न सका। इतने में उसने सुना कि, वह पिशाच कहताहै कि, हे सुलेमान! मेरा अपराध क्षमाकर, फिर कभी मैं आपकी आज्ञा भंग न करूंगा और तुम्हारा सदैव आज्ञापालक और भक्त रहूंगा। धीमर ने पिशाचसे यह बात सुन और अपने चित्तको दृढ़ कर पिशाच से कहा कि; हे पिशाच! तू क्या झूठ बकताहै; सुलेमान को तो मरे १८०० वर्ष से अधिक हुये। तू अपना वृत्तांत कह कि, तू कौन है और किस कारण इस पीतल के लोटेमें बन्दथा? पिशाच ने घृणा की दृष्टि से धीमर की ओर देख कहा कि; तू ढिठाई से बात करता है और मुझे भूत पिशाच कह पुकारता है। धीमर ने कहा तो क्या मैं तुझे गधा कहके पुकारता तो उचित था? पिशाच ने कहा चौकस रह कि; जबतक मैं तुझे मार न डालूं, मुझसे मुख सम्हाल बात चीतकर धीमर ने कहा तू मुझे क्यों मारेगा? तू क्या इस बात को भूलगया कि, अभी तुझे मैंने इस बन्धन से छुड़ाया? पिशाच ने उत्तर दिया कि, यह बात मुझे अच्छेप्रकार स्मरण है परंतु उससे तू बच नहीं सक्ता पर एक उपकार तेरे साथ करता हूं कि;

जिसप्रकार तू मरने पर प्रसन्नहो उसीप्रकार तुझे मैं मारूं। धीमर बोला, हे अन्यायी! मैंने कौनसा तेरा ऐसा अपराध किया है जिसके कारण तू मुझे बध करना चाहता है; क्या बन्धन छुड़ाने का बदला यही है? पिशाच ने कहा कि; तेरे मारने का दूसरा कारण है सो भी मैं वर्णन करता हूँ। तू उसे ध्यान देके सुन। मैं उन पिशाचों में से हूँ जो नास्तिक थे; पिशाच प्रथम समझते थे कि; सुलेमान परमेश्वर का पैग़म्बर है और सब उसकी आज्ञा में रहते थे परन्तु मैं और साकर नामक पिशाच ने उसकी आज्ञा न मानी तब उस बादशाह ने क्रोधित होकर अपने बड़े मन्त्री आसफ़बनवरहया को आज्ञा दी कि, इसे पकड़कर मेरे निकट ला। मंत्री यह आज्ञा पा मुझे उसके सम्मुख पकड़ लेगया तब सुलेमानने चाहा कि, मैं मुसल्मान होकर उसको पैग़म्बर कहूं और उसकी आज्ञापर चलूं; परन्तु मैंने अहंकारसे इस बात को अंगीकार न किया और उसने मुझे दण्ड देने के वास्ते इस पीतल के लोटे में मुझे बन्दकर इसके मुख को सीसे से बन्दकर मंत्रित किया और फिर एक पिशाचको आज्ञा दी कि; इसे नदी में डालदो सो वह मुझे नदीमें डालगया। तब मैंने प्रण किया कि, जो कोई मुझे पहली सौ बर्ष की अवधि में नदी से निकालेगा तो मैं उसे इतना धन दूँगा कि, वह जन्मभर आनन्द में रहेगा और उसके मरने के पीछे बहुतसा धन उसकी सन्तान के वास्ते रहजावेगा। परन्तु हे मनुष्य! किसी ने मुझे इस अवधि तक न निकाला तब मैंने यह प्रतिज्ञा की जो मनुष्य दूसरी सौबर्ष की अवधि में मुझे निकालेगा उसे मैं सम्पूर्ण पृथ्वी के कोष दिखा दूँगा पर फिर भी मुझे किसी ने न निकाला। फिर मैंने प्रण किया कि, जो मुझे तीसरे सौ बर्ष में निकालेगा उसे मैं बहुत बड़ा बादशाह बनादूँगा और उसके पास जाकर हरदिन उसकी तीन इच्छा पूर्ण किया करूंगा। इस अवधि में भी जब किसी ने मुझे न निकाला तब मैंने अति झुँझलाकर प्रण किया कि जो मुझे इस चौथी सौ बर्ष की अवधि में निकालेगा उसे मैं बड़ी निर्दयता से बध करूंगा परन्तु इतना सलूक उससे करूँगा कि; जिस प्रकार वह अपनी मृत्यु

चाहेगा उसीप्रकार मारूँगा। निदान इतनी अवधि के पीछे आज तू यहां आ निकला और मुझे निकाला इस से अब तू बता किस प्रकार तुझे बधकरूँ? धीमर यह बात सुन और अति आश्चर्यित हो शोचनेलगा कि, मैं कैसा अभागाहूँ कि, ऐसे उपकार के बदले मरने के दण्ड योग्य हुआ और पिशाच से बिनयपूर्वक बोला कि; तू अपनी प्रतिज्ञा को छोड़ मेरे परिवार पर दया कर और मेरा अपराध जो तेरे विचार में है क्षमाकर तो परमेश्वर तेरा भी अपराध क्षमा करेगा। पिशाच ने कहा कि, मैं तुझे जीता न छोड़ूँगा; अब तू यह बता कि, किस प्रकार तुझे मारूँ। धीमर पिशाच को अपने मारने पर उद्यत देख बहुतडरा और अपने मारे जाने और स्त्री पुत्रों को स्मरणकर बहुत व्याकुलहुआ। उसने पिशाच के क्रोध शान्ति के लिये बिनयपूर्वक कहा कि, हे पिशाचों के बादशाह! इस उपकार के बदले जो मैंने तेरे साथ किया है मुझपर दयाकर। पिशाच ने उत्तर दिया कि; यही उपकार तेरे मारने का कारण हुआ। धीमर ने कहा कि; यह बड़े आश्चर्य की बात है कि; भलाई के बदले तू बुराई करता है। यह दृष्टान्त जो विख्यात है कि; जो कोई बुरों से भलाई करता है उसका बदला बुराई पाता है सो मैं इसे तुझपर ठीक पाता हूँ। पिशाच ने कहा कि, इन प्रश्नोत्तर और दृष्टान्तों को छोड़ मैं तेरे मारने से न हटूँगा। धीमर ने एक यत्न अपने चित्त में शोच पिशाचसे कहा कि, अब मैं किसी प्रकार तेरे हाथ से बच नहीं सक्ता और परमेश्वरकी यही इच्छाहै तो मैं प्रसन्नहूँ; परन्तु मैं जबतक अपने मरनेका उपाय न विचारलूं तुझे उसी पवित्र नामकी सौगन्द है कि, जिसको सुलेमानने अपनी मुहर में खोदाथा मेरे एक प्रश्न का उत्तरदे। पिशाच ऐसी बड़ी सौगन्दसे निरुपायहो कम्पायमान हुआ और धीमर से बोला कि, तू प्रश्न कर मैं उसका उत्तर दूँगा। धीमरने कहा मुझे बड़ा आश्चर्य है कि; तू इतना लम्बा चौड़ा डील रखकर इतने छोटे से लोटे में क्योंकर समाया? पिशाचने उत्तरदिया कि; मैं उसी पवित्रनाम की सौगन्द खाकर कहता हूँ कि; मैं उसी में था। धीमरने कहा मुझको तेरी बातका बिश्वास नहीं आता; इस लोटेमें तो

तेरा एक पांवभी नहीं समासक्ता फिर तू किसप्रकार अपने सम्पूर्ण डील से इसमें समायाहोगा ? पिशाच ने कहा कि; ऐसी सौगन्द खाने से भी तुमको विश्वास नहीं आता? धीमर ने कहा कि, मुझको तो कभी विश्वास न आवेगा जबतक कि; मैं तुमको इस लोटे के भीतर अपनी आंखों से न देखूं और बातें करतेहुये न सुनूँ। इतना सुन वह पिशाच धुवां होगया और सम्पूर्ण नदी और उसके कूलों पर फैलगया; फिर एक स्थानपर इकट्ठाहो उस लोटे में प्रवेश करने लगा और धीरेधीरे उसमें भरगया। जब कुछ भी शेष न रहगया तो उसमें से एक शब्द निकला कि; हे धीमर! अब तो तुझको विश्वास हुआ कि; मैं सम्पूर्ण इस लोटे के अन्दरहूँ ? धीमर ने उत्तर देने के बदले उस लोटे का ढकना उठाकर लोटे केमुखमें रक्खा और अच्छी तरह बंद करके बोला कि, हे पिशाच! अब तेरी पारी है कि तू मुझसे अपना अपराध क्षमाकरा और अपनी मृत्यु का उपाय बिचार कि; तुझे मैं किसप्रकार मारूं। अब मुझे उचितहै कि; मैं तुझको फिर इसी नदी में डालूं और कूलपर घर बनाकर रहाकरूं कि; जो धीमर इस स्थान मेंजाल डालनेको आवे उसको बतलादियाकरूं कि, इस स्थान पर एक बिकराल पिशाच है उसे न निकालियो क्योंकि, उसने यह सौगन्द खाई है कि, जो मुझे निकालेगा मैं उसे बध करडालूंगा पिशाच इस बात को सुन अतिब्याकुल हुआ और किसीप्रकार अपनेको उस लोटेसे फिर निकाला चाहता था परन्तु उसमेंसे निकलना अतिकठिन था क्योंकि सुलेमान की मुहर उसे निकलने न देती थी। निदान वहअपना निकलना कठिन समझकर अपने क्रोध को पीगया और बड़ी अधीनता से बोला कि हे धीमर! चैतन्य रह ऐसा काम न कीजियो कि, कहीं मुझे फिर नदी में डालदे। मैं तुझ से हँसताथा और यह बातें केवल तुझसे छेड़ने और हास्य के लिये करता था पर पश्चात्ताप है कि; तूने वह बातें सत्य समझीं। धीमर ने कहा, ऐ पिशाच! तू इस लोटेके बाहर बहुत बड़ा पिशाचों का सरदार मालूम होता था और अब तू इसके भीतर अपने को अत्यन्त अधीन और तुच्छ बताता है। अब तू अवश्य इस नदी में

फेंकाजायगा और प्रलयतक इस बन्धन से तेरा छुटकारा न होगा। पिशाच ने कहा, परमेश्वर के वास्ते मुझपर दयाकरके नदी में फेंकने का इरादा न कर। इसी प्रकार पिशाच ने अतिदीन हो और बहुत विनयकर चाहा कि, धीमर को अपने ऊपर प्रसन्न करे परन्तु धीमर प्रसन्न न हुआ तब उसने कहा कि; यदि तू मुझे इस बन्धन से छुड़ायेगा तो मैं इसके बदले तेरे साथ बड़ासलूक करूंगा। धीमर ने उत्तर दिया कि, तू बड़ा धूर्त है मैं क्योंकर तेरी बातपर विश्वासकरूं। यदि मैं तुझे छोड़ूं तो दूसरीबेर फिर तुझे अपने मारनेपर उद्यतकरूं और तू मेरे साथ अपकार करे जैसा ग्रीक के बादशाह ने दूबांबैद्य के साथ कियाथा इसलिये अब तू उस कहानी को सुन मैं कहता हूं॥

बादशाहग्रीक और दूबांबैद्य की कहानी॥

पारसदेश में एक रूमा नगर था और ग्रीक नाम उस नगर का बादशाह था भाग्यवश उसके शरीर में कुष्ठ रोग होगया इस कारण वह रात्रि दिन व्याकुल रहा करता था यद्यपि वहां के बैद्यों ने सब प्रकार की औषध और उपाय किये तथापि वह आरोग्य न हुआ संयोगवश एक बड़ा बुद्धिमान् बैद्यक विद्या में अद्वितीय प्रत्येक देश अर्थात् ग्रीक, फ़ारसी, अरबी आदि भाषाओं का जाननेवाला व जड़ी बूटी आदि का अच्छे प्रकार पहिंचाननेवाला दूबांनामी बैद्य उस नगर में आकर उतरा तो उसको यह विदित हुआ कि यहां के बादशाह के शरीर में कुष्ठरोग है जिसकी औषध यहां के सब बैद्य करचुके परन्तु वह किसी से अच्छा न हुआ तब तो उसने अपने आगमनकी ख़बर बादशाह को दी और स्वेच्छानुसार उसकी आज्ञा पाय उसके पास जाय प्रणामकर विनय की कि मैंने सुनाहै कि इस नगर के समस्तबैद्य औषध करके हारगये परन्तु आपके रोग की उपयोगिक न हुई। इस कारण मैं यह चाहताहूं कि यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं खिलाने व मर्दन करने के बिनाही परमेश्वर की कृपा से आपको अच्छा करदूं। बादशाह ने यह सुनकर बैद्य से कहा कि जो तू मुझे इसीतरह से चंगा करदेगा तो मैं तेरे साथ बड़ा उपकार करूंगा। दूबां बैद्य ने विनय की कि ईश्वरकी कृपा

से मैं आपको इसी प्रकार से नीरोग करूंगा और कलसे अवश्य आपकी औषध करूंगा यह कह फिर वह बैद्य बादशाह से बिदा होकर अपने स्थानपर आया और उसी समय कुष्ठरोगनाशक ओषधियों का एक गेंद और लकड़ी की थपकी बनवाई और दूसरे दिवस उन्हें लेकर बादशाह के पासगया और रीत्यनुसार दण्डवत् कर बिनयकी कि आप अपने घोड़ेपर सवार हूजिये और गेंदखेलनेके लिये गेंदघर चलिये बादशाह बैद्य के कहने के अनुसार घोड़े पर सवार होकर गेंदघर में गया बैद्य ने वह गेंद और थपकी बादशाहके हाथ में देकर कहा कि इस गेंद और थपकी से आप गेंद खेलिये खेलते २ जब आपका शरीर पसीने से भरजाय तो यह सम्पूर्ण औषधें जोकि इन दोनों में भरी हैं वह आपके सर्वशरीर में प्रवेश करजायँगी और फिर जब सब शरीर में अच्छे प्रकार से पसीना आजावे तब उष्ण जल से स्नानकरना तत्पश्चात् आपके शरीर में अच्छे प्रकारसे नाना भांति के दिव्य २ औषधमयी तैलमर्दन किये जावेंगे फिर उसके पीछे आप सोरहैं तो आशा है कि दूसरे दिन अवश्य नीरोग होजावेंगे यह सुन बादशाह उस गेंद को हाथ में ले घोड़े पर चढ़ा हृदय में उत्साह बढ़ाकर अपने सेवकों के साथ गेंद खेलने लगा इधर से बादशाह गेंद को थपकी से मारता था और उधर से वह सब गेंद को बादशाह की ओर फेंकते इसीप्रकार बड़ी देरतक गेंद का खेलरहा यहांतक हुआ कि गरमी के कारण बादशाह के शरीर से पसीना टपकने लगा और ओषधियों का गुण सम्पूर्ण शरीर में प्रवेश करगया उसके बाद बादशाह ने उत्साह के साथ गरम जल से मलमलकर भली भांति स्नान किया फिर जो जो बिधान और भी स्नानआदि करने के बैद्य ने बतायेथे सो सब किये दूसरे दिवस बादशाहने अपने शरीरको देखा तो नीरोग पाया और ऐसा उज्ज्वल देखा कि मानो कदापि रोग न हुआथा बादशाह इस उपाय और औषध से अतिआश्चर्यवान् हुआ और अत्यन्त हर्षसे उत्तम २ वस्त्र पहनकर बड़ीसजधजसे अपनी सभा में आनकर बैठा कि इतनेही में सभासद्लोगभी आकर उपस्थितहुये और दूबां बैद्य भी उसीसमय

बादशाह के सन्मुख आनकर प्राप्तहुआ और बादशाह के सब अंग अनंगके से चमचमातेहुये देख उमंग में आकर और राजसिंहासन को चूमनेलगा बादशाह ने उसको अपने समीप सिंहासनपर बैठा कर उसी सभा में जहां कि नानाप्रकार के सभासद् लोग वर्तमान थे उसकी बहु प्रशंसा की और यहांतक उसके नेहरूपी मेह से भीजा कि भोजन के समय भी दूबां वैद्य को अपने साथही खिलाया जब संध्या को सब सभासद् और दरबारी बिदा होकर चले गये तो उसने एक बड़ा उत्तम जड़ाऊ वस्त्र जैसे कि बड़े २ सरदार पहनकर बादशाह के दरबार में जाया करते थे वह और ६०००० हज़ाररुपया उसे पारितोषिक दिये और प्रतिदिन उसकी अधिक से अधिक प्रतिष्ठा करनेलगा परन्तु तिसपर भी हर समय यही बिचारता रहता था कि ऐसे कामकी अपेक्षा वैद्य को मैंने कुछ नहीं दिया और उसके गुणके आगे मुझसे उसका आदर न बनपड़ा कुछ दिन तक इसीप्रकार बादशाह सोच २ कर पारितोषिक आदि से उस का सन्मान करतारहा कि इतने में बादशाह का मन्त्री बादशाह का ऐसा प्रेम उस वैद्य के ऊपर देखकर उससे डाह और बैर रखनेलगा और यह इच्छा की कि किसीप्रकार इस वैद्य को बादशाह की दृष्टि से गिरादें और बादशाह का चित्त उससे अप्रसन्न करें यह मन में ठान ठानकर एकदिन बादशाह से एकान्त में विनय की कि मुझे कुछ आपसे कहना है बादशाह ने कहा कहो मन्त्री ने कहा कि ऐसे दूसरे शहर के मनुष्य को कि जिसका हाल कुछ भी विदित नहीं उसका ऐसा विश्वास करना नीति के बिपरीत है आपने जो इतनी कृपा दूबां वैद्यपर की है यह सभासदों का सम्मत नहीं काहे से कि वह वैद्य महाधूर्त है चाहता है कि आपके बैरियों को मारडालें इसी वास्ते उसने आपके मन में जगह की है बादशाहने उत्तर दिया कि हे मन्त्री! तुझे क्या हुआ जो तू ऐसी बातें उसके वास्ते कहता है और उसको अपराधी बनाता है मन्त्रीने बिनयकी कि हे स्वामिन्! मैंने इस बातको अच्छे प्रकार से निश्चय करलियाहै तब आपसे बि-नय की है अवश्य वह मनुष्य विश्वास योग्य नहीं यदि आप सोतेहों

तो चैतन्य होजायँ क्योंकि मैं फिर कुछ विनय करताहूँ यह कि दूबांवैद्य अपने ग्रीक देश से यहां यही इच्छा करके आया है जो कि मैंने आपसे वर्णन किया बादशाह ने कहा वह कदापि ऐसा मनुष्य नहीं जैसा कि तू बताता है मैंने तो उसको बुद्धिमान् और गुणवान् पाया उसके समान दूसरा मनुष्य नहीं क्या तूने नहीं देखा कि मेरे रोग को उसने किस उपाय से नाश किया यदि इस औषध और उपाय को आश्चर्य कर्म कहैं तो उचित है और जो कदाचित् उसकी इच्छा मेरे मारने की होती तो ऐसे कठिनरोग को क्यों बिनाश करता उसके वास्ते ऐसा बिचार न करना चाहिये अब मैं तीन हज़ार रुपये उसका मासिक नियत करताहूँ काहे से कि सज्जन मनुष्यों का यही धर्म है कि जो कोई किंचितमात्र भी अपने साथ उपकार करे उसको जन्मभर न भूले जैसे कि केवल जानकीजी का संदेशही लानेसे श्रीरामचन्द्रजी ने हनुमानजी को अयोध्या की राज्यभी देना तुच्छ समझी और नम्रीभूत होकर यह कहा कि इस तुम्हारे ऋण से हम कदापि उऋण न होंगे ऐसेही जो मैं अपना सम्पूर्ण धन भी उसे देडालूं तो वह भी थोड़ा है उसके केवल इतनेही सत्कार और पारितोषिक पर तू क्यों डाह करता है यह बिचार मत कर तेरे इस निन्दा करने से मैं उसके साथ अपकार नहीं करूंगा मुझको वह कहानी स्मरण है कि बादशाह सिन्दबाद को उसके मंत्री ने बेटे के मारने से मना किया था मन्त्री ने पूछा कि वह कहानी क्योंकर है बादशाह ग्रीक ने कहा कि बादशाह सिंदबाद की सास ने इस इच्छा से उसके पुत्र को किसी प्रकार का अपराध लगाया कि जिसमें बाद-शाह अपने पुत्रको मारडाले और उसी प्रकार बादशाह ने बे समझे बूझे उसके छलमें पड़कर अपने पुत्र के बध करने की आज्ञा दी उसके मन्त्री ने बिनय की कि हे बादशाह! इस आज्ञा के देने में शीघ्रता न कीजिये और यह सोच लीजिये कि किसी काम में शीघ्रता करना अच्छा नहीं इसके विषय में शास्त्रों ने भी प्रमाण दिया है कहीं ऐसा न हो कि शीघ्रता के कारण फिर आपको पश्चात्ताप हो जैसा कि एक सत्पुरुष को शीघ्रता के करनेमें दुःख हुआ था बादशाह

सिन्दबाद ने पूछा कि किस तरह तब मन्त्री ने उस पुरुषकी कहानी इस प्रकार बर्णन की ॥

स० अष्टमते अतिरोचक है यह शोच समोचक नौमकहानी।
है इक सज्जन औ शुकको शुभवृत्त जो बोलत थो नरबानी ॥
नारिछिनारिके कर्मनते पुनि जाविधि नाश भयो शुकज्ञानी।
बंदि अनंदित साथ सो भजिके भवभंजन शंभुभवानी ॥

सत्पुरुष और तोतेकी कहानी ॥

पूर्व समय में एक बड़ा नेकमर्द मनुष्य किसी ग्राम में रहता था उसकी स्त्री भी परम सुन्दरी थी उससे वह अत्यन्त प्रीति करता था यदि एक घड़ीभी वह स्त्री उसकी दृष्टि से बिलग होतीथी तो वह व्याकुल होजाता था दैवयोग से एक दिन वह किसी आवश्यक कार्य के निमित्त एक नगर को गया तो वहांपर एक जगह नानाप्रकार के चित्र बिचित्र पक्षी बिकरहे थे उसने भी एक बोलता हुआ तोता मोल लिया जोकि बातचीत करनेपर हरएक प्रश्न का उत्तर मनुष्यों की भांति देताथा और वार्त्ता के बिशेष उसमें एक यह गुण और भी था कि जिसके घर में वह रहता तो उसके जाने के पश्चात् जो कोई बात उसके घर में होती वह अपने स्वामी को बतादेता था संयोगबश थोड़े दिनों के पीछे वह मनुष्य परदेश जानेको उद्यत हुआ तो उसने शुक का पिंजरा अपनी स्त्री को सौंपकर कहा कि जबतक मैं परदेश से लौटकर न आऊं इसकी रक्षा तू करना इतना कह वह फिर परदेश को चलागया और कुछ दिन बीतने के बाद जब वह परदेश से लौटकर आया तो उसने एकान्त में बैठकर तोते से पूछा कि मेरे पीछे घर में क्या हाल हुआ था तोते ने सम्पूर्ण वृत्तान्त जो उसके पीछे हुआ था बर्णन करदिया तो उसने अपने जी में अपनी स्त्रीको किसी २ बात में ताड़ना की स्त्री ने सोचा कि मेरे इस भेदको इससे किसी बांदी ने कहा होगा यह सोच उनको ताड़ना करनेलगी उन्हों ने सौगन्द खाकर कहा कि हमने तुम्हारा भेद किसी से नहीं कहा तब तो वह स्त्री बांदियों को निर्दोष समझकर यह जानगई कि बस इस तोते नेही मेरी चुगली की है यह बिचारकर उस स्त्री ने अपने जी में यह सोचा कि

किसी प्रकार इस तोते को झूठा करना चाहिये जिसमें मेरा भर्ता आगेको उसपर विश्वास न करे और वह संदेह जोकि उसके मनमें है मेरी ओर से निवृत्तहो इतने में उसका पति एक दिन के वास्ते कहीं को गया तो उसने अपनी बांदियों को आज्ञा दी कि तुममें से एक इस तोते के पिंजरेके नीचे सारीरात चक्की पीसै और एक उसके ऊपर वर्षाकी भांति जलडाले और तीसरी बांदी दर्पण को हाथ में लेकर दिये के प्रकाश में उस तोते के मुख के आगे घुमावे स्त्री की यह आज्ञा सुन वह बांदियां रातभर इन सब कार्यों को करतीरहीं और प्रातःकाल होतेही बंदकरदिया दूसरे दिन जब वह मनुष्य घरमें आया तो पूर्ववत् उस तोते से एकान्त में पूछा कि आज रात में क्या हुआथा तोतेने कहा कि हे स्वामिन्! आजरातभर मुझपर जलबर्षतारहा और बिजली चमकतीरही बादल गर्जतारहा इससे मैं अत्यन्तदुःखित रहा उसने बिचारा कि रातको न बादल था और न मेह बरसा यह असत्य कहताहै और मुझसे सदैव इसीप्रकार झूठी बातैं कहा करता है और जो कुछ मेरी स्त्री का हाल कहा सो सब झूठथा फिर तोते से अप्रसन्न होकर पिंजरे से निकाल पृथ्वीपर पटक मारडाला फिर कितने दिनके पश्चात् उस पुरुष ने अपने परोसियों से अपनी स्त्रीकी वही बुरीबातें सुनीं और उनकी बातें तोते के कहनेके अनुकूल पाकर उसके मारडालने से अतिलज्जित हुआ इतना कह धीमर ने पिशाच से कहा कि बादशाह ग्रीकने इस कहानी को कह अपने मंत्री से कहा कि तू डाहसे चाहताहै कि दूबांबेय जिसने तेरेसाथ किसीप्रकारकी बुराई न की मेरे हाथसे निरपराध मरवाडालें सो मैं उक्तमनुष्यके समान बेसमझ नहीं कि तोते को बिना अपराधमारा मंत्रीने बादशाह से कहा कि हे स्वामिन्! उस तोतेका निर्दोष माराजाना तो कुछ बड़ीबात नथी और यह जो मैंने आपसे बिनयकी है बहुत बड़ीबातहै इसका सोच बिचार और उपाय अवश्यहै यदि आपके जीवनकेलिये एक मनुष्य बिना अपराध भी माराजावे तो कुछ पश्चात्ताप की जगह नहीं और क्या यह उसका अपराध थोड़ासा है कि सब यही कहते हैं कि यह भेदिया तुम्हारे मारनेके निमित्त आयाहै मुझे कुछ उससे डाह वा बैर नहीं कि जैसा

आपके विचार में है मैंने तो केवल आपका हितही कहाहै मुझको उसके बुरे व भलेहोने से कुछ काम नहीं आपकी आयु चाहताहूं यदि यह बात असत्यहो तो मैं वही दण्डपाऊं जैसे उस मन्त्री ने दण्डपायाथा और मारागयाथा बादशाहग्रीक ने पूछा उस मन्त्री ने कौनसा कर्म कियाथा कि जिसकारण वह मारागयाथा मन्त्री ने विनय की जो आप ध्यानधर सुनें तो इस कहानी को वर्णनकरूं बादशाह ने कहा कह ॥

मन्त्री की कहानी ॥

कोई समय में किसी शाहज़ादे को आखेट का व्यसन था और उसका पिता उससे प्रीतिकरता और जिस बात में उसकी प्रसन्नता होती उसे कभी न टुलकता इसीहेतु मंत्री से ताकीद करके कहा कि आखेट में कभी उससे न्यारा न हूजियो एक दिन भोरहोतेही वह शाहज़ादा शिकार को गया बहेलियों और शिकार खिलानेवालों ने जो उसके साथ थे एक बारासिंहा उस बनसे निकाला शाहज़ादे ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया कईकोसतक उसका पीछा किया फिर थकितहो ठहरगया और इच्छा की कि वहांसे लौट उसी स्थान पर आजावे जहां से उसने घोड़ा दौड़ायाथा और मंत्री से कि उसने उसे अकेला छोड़ दियाथा आनकर मिले परन्तु राह भूल वहां न पहुँचा कितनाही उसने चारोंतरफ़ देख रास्ताढूंढ़ा परन्तु न पाया दैवयोगसे उसने क्या देखा कि एक स्त्री अतिसुन्दरी रुदन कररही है उसने अपने घोड़े को थांभ उससे पूछा कि तू कौन है और क्यों बैठी रोरही है स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं हिन्दुस्तान के बादशाह की पुत्रीहूं मैं घोड़ेपर सवार होकर जातीथी कि मुझे नींद घराई और अकस्मात् घोड़ेपर से गिरपड़ी और घोड़ा मेरा बन में किसी ओर भागगया मुझे नहीं मालूम कि वह किस ओरको चलागया कुँवर को उसका वृत्तान्त सुन अतिदया उपजी और अपने आगे घोड़े पर चढ़ालिया और वहां से चला जब एक उजाड़ बन के निकट पहुँचा उस स्त्री ने बहाने से उतरने की इच्छा की शाहज़ादे ने उसे उतारदिया और आपभी उतर उस बन की ओर चला परन्तु स्त्री की इस बात को सुन अतिआश्चर्य किया कि वह स्त्री एक मकान की चार-

दीवारी के बीचमें जा पुकारकर कहनेलगी कि हे बच्चो! प्रसन्न हो मैं तुम्हारे वास्ते एक यह तरुण रुष्ट पुष्ट मनुष्य शिकार कर लाई हूं प्रति उत्तर में एक शब्द सुनाई दिया कि हे मातः! वह कहां है उसे शीघ्रही हमें खानेको दे हम बहुत भूखे हैं शाहज़ादा इस बार्त्ता को सुन अतिभयभीत हुआ और समझा कि यह स्त्री बनबासियों में से है जो इस उजाड़में परदेशियों को पकड़ धोखादे मारकर खाजाती है इस भय से वह कम्पायमानहो शीघ्रही अपने अश्वपर सवारहुआ फिर उस स्त्री ने बाहर आ देखा तो वह शिकार हाथ से जातारहा शाहज़ादे से कहा तू भयमान न हो तू मुझे बता कि तू कौन है और किस को ढूंढ़ता है शाहज़ादे ने कहा कि मैं अपनी राह ढूंढ़ताहूं स्त्री ने कहा कि जो तू राह भूलगया है तो तू परमेश्वरपर भरोसा रख वह तेरी कठिनता दूरकरेगा शाहज़ादे को बिश्वास न हुआ कि स्त्री प्रीति से यह बात कहती है ऐसा न हो कि इसमें धोखाहो फिर उसने अपने दोनों हाथोंको उठा परमेश्वर से बिनयकी कि हे ईश्वर! जो तू सबपर बलवान्‌है तो मुझे बचा और कठिन बैरीसे छुड़ा इस प्रार्थना के करते ही वह मनुष्य भक्षिणी उजाड़ बनकी ओर चलीगई और शाह-ज़ादे को मार्ग दिखलाई दिया जिससे वह निज स्थान को शीघ्रही पहुँचगया और अपने पिता से रास्ते का सम्पूर्ण समाचार उस मनुष्य भक्षिणी आदि का कि मन्त्री के अलग होने से हुआथा कह सुनाया बादशाह यह सुन मन्त्री से अतिअप्रसन्नहुआ उसे प्राणसे मरवाडाला शहरज़ाद इतनीबात कह बोली हे स्वामिन्! मन्त्री इसको कहकर फिर बैद्य दूबांकी बातें बादशाह ग्रीकसे कहनेलगा कि मैंने यह अच्छेप्रकार सुना है कि वह भेदिया है आपके किसी बैरी ने इसे भेजा है यदि आपको इसने उपाय से नीरोग किया है परन्तु उस औषध के गुण से ऐसा दुःख पहुँचेगा कि आपके प्राणपर आबनेगी बादशाह निर्बुद्धिथा मन्त्री के बैर और डाहका कारण यथार्थ प्रतीत न करसका और मन्त्री के बहकानेसे उसका चित्त दूबांबैद्यसे फिरगया और कहनेलगा कि हे मन्त्री! तू सत्य कहता है वह बैद्य मेरे मारनेको आया है किसी समय मुझे कोई ऐसी औषध सुंघावेगा कि जिससे

मेरे प्राणान्त होजावेंगे मेरेचित्तमें भी यह बात दृढ़होगई जब मन्त्री ने यह देखा कि मेरा मन्त्र चलगया बादशाह से कहा कि अपने बचा के वास्ते शीघ्रही दूबांवैद्य को बुलवाकर मारने की आज्ञा दो बादशाह ने कहा कि अच्छा मैं अभी मरवाडालताहूं यह कह किसी सरदार को आज्ञा दी कि शीघ्रही दूबां को बुलवाभेजो उसने बुलवा भेजा जब दूबां आया तब बादशाहने कहा कि तू जानताहै कि मैंने तुझे क्यों बुलवायाहै उसने विनयकिया मुझे मालूम नहीं आप मुझे आज्ञाकीजिये बादशाह ने कहा कि मैंने तुझे इसवास्ते बुलायाहै कि तुझे मारकर तेरे मारसे छूटूं वैद्य इस बात को सुन अतिआश्चर्यित हुआ और बादशाहसे बिनय किया कि हे स्वामिन्! मेरे बध करनेका क्या कारण है बादशाहने कहा कि तू जासूस अर्थात् भेदिया है और मेरे मारने के वास्ते आयाहै यदि तू मुझे सायङ्कालको मारनेकी इच्छा करे मुझे उचित है कि मैं तुझे भोरही को मारूं यह कह बादशाह ने किसी सरदारको आज्ञा दी कि इसे अभी मार कि मैं इसके हाथ से बचूं कि मेरे मारने के वास्ते यह आयाहै दूबां बादशाह के चित्त को एकही दिनमें ऐसा फिराहुआ देख सोचा कि बादशाह को लोगों ने डाहसे बहकाकर मेरा वैरी किया अत्यन्त पश्चात्ताप करनेलगा कि मैंने क्यों बादशाह को आरोग्य किया और चिरकालतक अपनी निर्दोषताको बादशाहसे कहतारहा बादशाहने कुछ न सुनकर दूसरीबेर उसके बध करनेकी आज्ञादी फिर उस बैद्यने बादशाह से बिनय की कि हे स्वामिन्! यदि निर्दोष मारोगे तो परमेश्वर से बदला पाओगे इतनाकह धीमर ने पिशाचसे कहा जो ग्रीक और बैद्यमें हुई वही बात तेरे और मेरे में है जिस समय बधिक अपने स्वामी की आज्ञानुसार नेत्रों में पट्टी बांध मारनेलगा सभासदों ने उसे निरपराध समझ बादशाह से बहुतसी प्रार्थना की बादशाह ने उन सबको झिड़क ऐसा उत्तर दिया कि फिर उनको इस विषय में कहने की शक्ति न रही बैद्य दूबां ने जब देखा कि मैं बिना अपराध जान से माराजाताहूं बादशाह से बिनय की कि हे स्वामिन्! मुझे इतना अवकाश दीजिये कि अपने घरपर जाकर अन्तिम शिक्षा करआऊं

और अपनी पुस्तकें किसी अधिकारी मनुष्य को दे आऊं और उन पुस्तकों में से एक पुस्तक जो अपूर्व है आपके पुस्तकालय के वास्ते देजाऊं बादशाह ने कहा कि वह कौनसी पुस्तक है कि जिसकी तू इतनी प्रशंसा करताहै वैद्य ने कहा उसमें बहुत भेद की बातें हैं उसमेंसे एक यहबातहै कि जब मेरा शिर काटाजावे तब पुस्तक को खोल छठे पृष्ठके बायें सफ़े की तीसरी पंक्ति को पढ़कर जो प्रश्न आप करेंगे उसी समय मेरा शिर उत्तर देगा बादशाह यह बातसुन अतिआश्चर्य में हुआ और बिचारा कि ऐसी अपूर्व बस्तु को देखना अवश्य है यह बिचार आज्ञा दी कि आज इसे रक्षापूर्वक पहरे में करके घर लेजावो जब वैद्य को उसके घर लेगये उसने एकही दिन में सब कार्यकर एक बड़ी पुस्तक बस्त्र में बँधीहुई बादशाह को दे बिनय की जब मेरा शिर काटाजावे उसे तश्तरी में इस पुस्तक के बँधनेपर रखना रखतेही रुधिर बन्द होजायगा इसके उपरान्त जो तुम उस शीश से पूछोगे उत्तर ठीक पावोगे फिर उस समय भी बादशाह से कहा कि हे स्वामिन्! मैं निर्दोष मारा जाताहूं क्षमा कीजिये बादशाह ने कहा अब मैं तेरी बात नहीं सुनता तेरे मारेजाने के पश्चात् तेरे शिरसे सुनूंगा यहकह बादशाह ने उसके हाथ से वह पोथी लेली और बधिक को उसके मारने की आज्ञा दी हिंसक ने दूबांवैद्य का शिर काट उसी तश्तरी में रक्खा और शिरको उस पुस्तक के बँधनेके बस्त्र पर रक्खा उसीसमय रुधिर शिरसे निकलना बन्दहोगया बादशाह और सभासदों ने यह देख बड़ा आश्चर्य किया फिर उस शिरने नेत्र खोल बादशाहसे कहा अब इस पुस्तकको खोल बादशाह ने छठेपृष्ठ को गिनकर उलटनाचाहा कि दूसरे सफ़े की तीसरी पंक्ति को बांचें परन्तु वह पत्रे एक दूसरे से ऐसे चिपकेथे कि बादशाह उनको सुगमता से उलट न सका सो वह थूक लगालगाकर पत्रे उलटनेलगा जब छठेपृष्ठपर पहुँचा बादशाह ने उस स्थान पर कि जहां वैद्यने पढ़ने को कहाथा कुछ न पाया तो उसने वैद्य के शिरसे कहा कि वहां तो कुछ भी नहीं लिखा है शिर ने उत्तर दिया कि और पत्रों को उलटकर देखो बादशाह प्रतिक्षण अपनी अंगुली में मुँह से पानी लगा उलटनेलगा

यहांतक कि विष जो पुस्तक के प्रतिपृष्ठपर लगाथा मुख में प्रवेश करगया इसीवास्ते कि कई बेर मुख में अंगुली लगाने को लेगया था और इसीप्रकार क्षण क्षण में उसका हाल बदलता गया और दृष्टि भी उसकी जाती रही निदान व्याकुलहो सिंहासन के नीचे पृथ्वी पर गिरपड़ा जब वैद्य के शिर ने देखा कि बादशाह को विष की ज्वाला अच्छे प्रकार व्यापगई और पलमात्रही जीता रहेगा बड़े शब्द से कहा कि हे अन्यायी और निर्दयी! निर्दोष के मारने का यह फल तूने देखा इतना सुनतेही बादशाह मरगया और अपने दण्ड को पहुँचा इतना कह रानी शहरज़ाद ने शहरयार से बिनय की कि यह कहानी बादशाह ग्रीक और दूबां वैद्य की थी सो तूने सुनी अब मैं फिर धीमर और पिशाच की कहानी कहतीहूँ जब वह धीमर यह कहानी कहचुका तो पिशाच से कहने लगा कि हे पिशाच! यदि बादशाह ग्रीक दूबांवैद्य को न मारता तो परमेश्वर उसका भला करता परन्तु जब उसके रोने पीटने पर दृष्टि न की परमेश्वर ने उसे वैसाही दण्ड दिया हे पिशाच! तेरा भी ऐसाही हालहै यदि तूभी मेरे मारने की इच्छा न करता तो इस बन्धन में न पड़ता तूने तो बन्धन से छूटतेही मेरे मारने की इच्छा की अब मैं तुझे क्योंकर इस बन्धन से छुड़ाऊं और तुझपर दयाकरूं अब अवश्य है कि तुझे इस लोटे समेत इस नदीमें डालदूं कि तू प्रलय पर्यन्त इसी बन्धन में पड़ारहै पिशाच ने कहा कि हे मेरे मित्र! फिर मुझसे ऐसा अपराध न होगा यह समझो कि बुराई के बदले भलाई करना अच्छीबात है तू मेरे साथ ऐसी भलाई कर कि जैसी इम्मा ने अतीका के साथ की थी धीमर ने पूछा उसकी कहानी किस प्रकार पर है पिशाच ने कहा जो तुम इस कहानी को सुना चाहते हो तो मुझे छोड़दो मैं सुगमता से इस लोटे में से वार्त्ता नहीं कर सक्ता और यह कहानी क्या वस्तु है मैं बहुत उत्तम वृत्तान्त और कहानियां तुमको सुनाऊंगा कि जिससे तुम प्रसन्न होगे धीमर ने कहा मैं तेरी कहानी को नहीं सुनाचाहताहूं मुझे तेरा बिश्वास नहीं यही उत्तम है कि फिर तुझे इस नदी में डालदूं पिशाच ने कहा

हे धीमर ! तू मुझे छोड़दे मैं तुझे एक बात ऐसी बताऊंगा जिससे तू अतिधनी होजायगा धीमर ने कहा कि मुझको तेरे कहने का कुछ भी विश्वास नहीं यदि तू इस्मआज़म की सौगन्द खाये कि तेरे साथ अपने छूटने के पीछे धोखा न करके अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा तो छोड़दूं पिशाच ने सौगन्द खाई धीमरने लोटे के मुखसे ढकने को उठालिया और उस लोटे में से धुवां निकला और फैल कर पिशाच का रूप होगया और लोटे को ठोकरमार नदी में फेंकदिया धीमर इस बात को देख अत्यन्त भयभीत हुआ और कहा हे पि　! तूने यह क्या किया तू अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर नहीं और वह प्रण जो तूने मेरे साथ किया है पूरा नहीं करेगा मैंने तो तेरे साथ वही भलाई की है कि जो दूबांनेंद्य ने बादशाह ग्रीक के साथ कीथी धीमर के डरने से पिशाच हँसा और कहा धैर्य रख कि मैं अपनी उसी प्रतिज्ञा पर हूं अब तू अपना जाल ले मेरे पीछे चला आ फिर दोनों नगर के अन्दर होके एक पहाड़ की चोटी पर चढ़गये और वहांसे उतर एक बड़े लम्बे चौड़े मकान में गये जिसमें उनको एक तालाब जिसके चारोंओर चार टीलेथे देखपड़ा जब उस तालाब के तटपर पहुँचे पिशाच ने धीमर से कहा कि इस तालाब में जाल डाल मछलियां पकड़ वह मछुआ बहुत से मत्स्य उसमें देख प्रसन्नहुआ कि बहुतसी मछलियां पकड़ूंगा और उन मछलियों को रंग बरंगी देख आश्चर्यित हुआ और अपना जाल उसमें डाल खींचा तो उसमें से केवल चार मछलियां चार रङ्ग की श्वेत, लाल, पीली और काली आईं पिशाच ने कहा कि इनको बादशाह के पास लेजा वह तुझे इतना द्रव्य देवेगा कि तुझे जन्म भर इतना न मिला होगा इस तालाब में केवल एकबेर जाल डालना इसके बिपरीत न करना नहीं तो दण्ड पावेगा इतनी बात उस पिशाच ने उसे बुझा पृथ्वी में ठोकर मारी धरती फटगई और आप उसमें समागया फिर वह पृथ्वी बराबर होगई धीमर मछलियां बादशाह के निकट लेगया इतना कह शहरज़ाद ने शहरयार से कहा कि मैं कुछ बर्णन नहीं करसकी कि वह उन मछलियों को देखके

कितना प्रसन्नहुआ मन्त्री से कहा कि इन मछलियों को लेजा उस रसोइन को जिसे ग्रीक बादशाह ने मेरे लिये सौगात समझकर भेजाथा जाकर दे मैं जानताहूं कि वो इनको अच्छे प्रकार से बनावेगी मन्त्री ने चारों मछलियां लेजाकर उस चेरी को दीं और कहा कि इनको अच्छेप्रकार से तैयारकर बादशाह ने तुमको वास्ते तैयार करने के आज्ञादीहै जब मन्त्री उन मछलियों को देकर बादशाह के निकट गया त तो बादशाह ने उससे चारसौ ४०० मोहरें उन धीमर को पारितोषिक दिलवाई धीमर उन अशरफियों को पाकर इतना प्रसन्नहुआ कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता फिर शहरजाद ने शहरयार से कहा अब उस रसोईदारिन का हाल सुनिये कि उसका क्या हाल हुआ कि जिसके कारण वह महाव्याकुल हुई जिस समय उसने उन मछलियों को का और साफकरके गर्म तैल में भुननेके लिये छोडा और एकओरसे वह मछलियां पक्के लाल होगई तो ज्योंही दूसरी ओर उलटा त्योंही एक अद्भुत बात देख पड़ी तत्काल पाकागार की दीवार फटगई उसमें से एक स्त्री अति रूपवती बड़े टीपटाम और तमक से निकल आई और वस्त्र आभूषणादिक से बहुत सजीहुई थी मनो मिश्रदेशाही रे आई थी और कान में बाले और गले में बड़े २ मोतियों की माला और सोनहरे बाजूबन्द जिसमें लाल जड़ेहुये थे बिशेष इसके नानाभांति का बहुमोल गहना पहनेहुये एक समछड़ी हाथ में लेकर उस पात्र के समीप कि जिसमें मछलियां तलीजाती थीं आय खड़ीहुई और एक मछली को छड़ी से मार बोली हे मछली! हे मछली! तू अपने प्रण पर स्थिर है वह कुछ न बोली उस स्त्री ने फिर उस बात को दुहरा के कहा तब वह चारों मछलियां उठकर एकहीबार बोलीं कि सत्य है जो तुम हमें मानोगी तो हम तुम्हें मानैंगे जो तुम अपना ऋण दो तो हम अपना ऋणदेंगे यह कहतेही उस स्त्रीने उस पात्र को कि जिसमें मछलियां तलीजातीथीं उलटदिया और आप उस फटी हुई दीवार में चलीगई फिर वो दीवार वैसीकी वैसीही होगई रसोईदारिन इस अद्भुत दशा को देख मूर्च्छित होगई जब सुधि सम्हाली तो

अत्यन्त आश्चर्यवान् हुई और उन मछलियों के उठाने को जो चूल्हे की गर्मराखपर गिरीथीं गई तो उन्हें जलेहुये कोयले के समान कालापाया व्याकुल होकर रुदनकरनेलगी और सोचनेलगी यदि यह बात जो मैंने अपने नेत्रों से देखीहै बादशाह से कहूं तो उसे बिश्वास न आवैगा इसीचिन्ता में थी कि मन्त्री ने आकर उससे पूछा कि वह मछलियां पकचुकीं रसोईदारिन ने उस हाल को मन्त्री से बर्णन किया मन्त्री यह सुनकर अति अचम्भितहुआ और उससमाचार को बादशाह से न कहकर कोई दूसरीबात बनाकर उससे कही और शीघ्र ही उस धीमर को बुलवाया जब वह आया उससे कहा कि तू शीघ्रही उसी भांतिकी चार मछलियां कि जैसी पहिले लायाथा लेआ धीमर ने वह वार्त्ता कि जो पिशा ऐ हुईथी न कह दूसरी बात कही कि आज वैसी मछलियां नहीं लासक्ता कल अवश्य लाऊंगा दूसरे दिन धीमर उसी तालावपर गया और जालडालकर वही चाररंग की मछलियां कि जैसी पहिले दिन जाल में आईथीं पकड़ीं और शीघ्रही मन्त्री के सन्मुख लेआया मंत्री उनको पाकागार में लेगया किवाड़ को भीतर से बन्द करलिया और रसोईदारिन को आज्ञादी कि मेरे सन्मुख इनको पका उसने मछलियों को साफ़कर पहिले दिवस के सदृश तैल में डाला फिर उसीप्रकार उलटती समय दीवार वहांकी तड़क गई और वही स्त्री छड़ी हाथ में लियेहुये दीवार से प्रकट हुई और उसी मछलीतवे के निकट आकर एक मछली को छूकर वही बात कही कि जो पहिले कहीथी फिर उन सब मछलियों ने अपने शिरों को उठा और पूंछ केबल खड़ीहोकर वही उत्तरदिया फिर उस स्त्री ने उसी पात्र को उलट वह मछलियां फेंकदीं और आप उसी फटीहुई दीवार में गुप्तहोगई मंत्रीने इस सारे समाचार को अपने नेत्रों से देख चित्तमें बिचारा यह तो अतिअद्भुत चरित्र है और इसे बादशाह से अवश्य कहनाचाहिये तदनन्तर बादशाह के निकट जाय इस बात को ज्योंका त्योंही कह सुनाया बादशाह सुन अतिआश्चर्यित हुआ उसने इस बिचित्र चरित्र को निजनयनों से देखनाचाहा और धीमर को बुलवाकर कहा कि हे मित्र ! वैसेही चार रंगकी मछलियां फिर भी लासक्के

हो धीमर ने विनय की कि मैं तीन दिन के पश्चात् लासक्काहूं तीन दिन के पीछे धीमर मछलियां पकड़ बादशाह के सन्मुख लेगया बादशाह उनको देख अतिआनन्दित हुआ और चारसौ अशरफ़ियां उसी धीमर को अपने कोष से दिलवादीं और एकान्त स्थान में जाय सब सामग्री पकाने की मँगवाय मंत्री को आज्ञादी कि तू मेरे सन्मुख इन मछलियों को भून मंत्री ने किवाड़ उस मकान के बन्दकर आपही उन मछलियों को पकाना आरम्भ किया जब तलने के पात्र में उन मछलियों को डाला और वह एक ओर से लालहोगईं उसने उनको दूसरी ओर पलटा पलटतेही दीवार उस एकान्तस्थल की फटगई और उस में से उस सुन्दरी की जगह एक हब्शी सेवकों के समान और हरी भरी छड़ी लेकर उस दीवार से निकला और उस पात्र के पास कि जिसमें मछलियां तलीजाती थीं उसी छड़ी से छूकर बड़े भयवान् शब्द से बोला हे मछलियो! हे मछलियो! तुम अपने बचनपर स्थिर हो उन मछलियों ने अपने शिरों को उठाकर कहा कि हम तो उसी बातपर हैं इतनी बात कहतेही उस हब्शी ने उस पात्रको उलट मछलियां फेंक दीं और नष्टकरदीं और आप उसी फटी दीवार में जाय गुप्त हुआ बादशाह ने यह समाचारदेख मंत्री से कहा कि यह अपूर्वहाल जो मैंने अपने नेत्रों से देखा बिना भेद के नहीं है और मछलियां भी कुछ चिह्न जान पड़ती हैं मैं चाहता हूं कि इस भेद को विदित करूं फिर उस धीमर को बुलवाकर पूछा कि उन मछलियों का तो मैंने अद्भुत चरित्र देखा मुझे बता तू यह रंगीन मछलियां कहां से लाया था उसने उत्तर दिया मैं उनको उस तालाब से जो चारोंओर टेकड़ों से घिरा है पकड़ लाया था बादशाह ने उस मन्त्री से पूछा कि तूने वह तालाब देखा है मन्त्री ने कहा कि मैंने तो सुना भी नहीं यद्यपि मैं पहाड़ के चारों ओर साठ बर्ष से शिकार खेलने को जाया करताहूं परन्तु मैंने वहां कोई भी तालाब नहीं देखा फिर बादशाह ने धीमर से पूछा कि वह तालाब यहांसे कितनी दूरपरहै उसने उत्तरदिया कि यहां से तीनघड़ीके रास्तेपरहै बादशाहने यह बातसुन उसीसमय कि थोड़ा दिन शेष रहगयाथा अपने सभासदों को आज्ञादी कि शीघ्र तैयार

हो तदनन्तर वह सवारहो धीमर के पीछे होलिया और उन्हीं पहाड़ों पर चढ़गया ज दूसरीओर उस पहाड़ के उतरा तो वहां एक बहुत बड़ा बन दृष्टि पड़ा कि कभी उसको किसीने न देखाथा फिर बादशाह अपनी सेना औ सभासदों सहित सरीओर उस बनके जाय एक तालाब जिसमें चारोंओर चारटेकड़े कि जैसा धीमर ने कहा था देखा और जल उसका ऐसा निर्मल था कि जिसमें से चाररङ्की मछलियां उसी प्रकारकी कि जैसी धीमर बादशाह के निकटलेगया था बहुतसी देखीं बादशाह उसी तालाब के तटपर उतरा और उन मछलियोंको देख अतिबिस्मित हुआ और अपने सभासदों और सरदारों से पूछा तुमने औरभी कभी यह तालाब देखाथा उन सबोंने विनय की कि हमने तो कभी भी इस तालाब को नहीं देखा और न सुनाथा बादशाह ने कहा कि जबतक मैं इस तालाब और चाररङ्ग की मछलियों का वृत्तांत अच्छेप्रकार से न जानूंगा यहां से न जाऊंगा यह कह आज्ञाकी कि सब मनुष्य इस तालाब के चारोंओर उतरें सो डेरा उस तालाब के तटपर खड़ा कियागया जब सायंकाल हुआ बादशाह अपने डेरे में आया और मन्त्री को आज्ञादी कि मैं इस विषय में अतिबिस्मित हूं कि एकही बेर यह तालाब किस प्रकार देखपड़ा और उस वशी का मेरे एकान्त स्थल में आना और मछलियों का बोलना किस वास्ते था अतिआश्चर्य की बात है चित्त मेरा इसबातसे अतिव्याकुल है इसलिये मैंने यह सोचाहै कि अपनी सेनाको छोड़ अकेलाजाऊं और तू डेरों में रह मेरेजाने को किसी से न कहना भोर होतेही जब सब सभासद् और दरबारी मेरी सभा में आवें तू उनसे कहियो कि बादशाह कुछ रोगी हैं यह कह उन सबको बिदा करदीजियो और जबतक मैं इस स्थानपर लौट न आऊं तू यहीं ठहरारहियो यहां रह मेरेकहनेको कीजियो मन्त्रीने बादशाहको बहुत समझाया कि इस विषय में अत्यन्त भयहै क्या आश्चर्य है कि श्रम के पश्चात् भी यह भेद आपको विदित न हो क्यों इतने श्रम और भयमें पड़तेहो परन्तु बादशाह ने कुछ उसकी बात न मानी और राजसीवस्त्र उतार शिकार के बसन पहन खड्ग हाथ में ले रात को ऐसे

समयमें कि सम्पूर्ण सेनाके मनुष्य बेसुधि सोरहेथे डेरेसे निकल एक पहाड़की ओर चला और अत्यन्त सुगमता से उसपर चढ़ दूसरी ओर उतरगया और एकओर जिधर एक बड़ा बन कि जिसका वारा-पार न था चला इतनेमें भोरहुआ सूर्यके प्रकाशमें उसने दूरसे ए घर अतिउत्तम और बहुत बड़ा देखा बहुत प्रसन्न हुआ कि वहां के जानेसे इस बातका भेद अवश्य मिलेगा ज उसके निकट पहुँचा तो उसे ब. भारी राजमन्दिरके समान अतिविशाल काले पत्थर से बनाहुआ पाया और नीचेसे ऊपरतक उसके लोहेके पत्तर अति उत्तम और साफ़ ऐसे सिकल कियेहुये जड़े थे कि दर्पणके समान चमकते थे उसे देख बादशाह को कुछ धैर्य हुआ कि यहां से मेरी अभिलाषा अवश्य सिद्ध होगी फिर बहुत बेरतक देखा किया फिर उस गढ़के पासजाय खड़ाहुआ यद्यपि उसे विदितथा कि उस गृह का दरवाज़ा अन्दरसे खुलाहुआहै परन्तु फिरभी उसने ताली बजाई और बहुत बेरतक राह देखतारहा कि कोई ताली सुनकर आवेगा जब कोई भी बाहर न आया तो उसने बिचार किया कि किसी ने न सुना होगा फिर उसने किवाड़को बलसे खटखटाया तौभी किसी ने उत्तर न दिया तब अतिबिस्मित और आश्चर्य में हो चित्त में बि-चारा कि बड़ा पश्चात्ताप है ऐसा उत्तम भवन बनाहुआ निर्जन रहे इसमें तो एक भी जीव नहीं जो बाहर आय मुझे उत्तर देवे और उससे कुछ इस स्थानका समाचार विदितहो अब तू कबतक ठहरा रहेगा बिना सोच बिचार चल जो कोई तेरे सन्मुख आवे अपने को बचाना फिर वह उस मन्दिर के बीच चलागया औ ड्योढ़ी में पहुँच बड़े शब्दसे कहा कि इसके भीतर को मनुष्य है कि अतिथिको रहने के वास्ते कोई स्थानदे उसके उत्तर में कोई शब्द न सुनप ा अधिक आश्चर्यित हुआ ड्योढ़ी के अन्दर जादेख ा तो बड़ाभारी गृह है परन्तु उजाड़ और निर्जन है फिर वह बड़े चौगान को लांघकर दा-लान में गया जिसमें रेशमी क़ालीन बिछाहुआ था और चारोंओर से वह कान कालेवस्त्र से मढ़ाहुआ था और दरवाज़ोंके परदे जड़ाऊ मखमल के कि जिसमें सुनहरी और रुपहरी बूटे कढ़ेहुये लटकरहे थे

और उसकी बारहदरीमें एककुण्डथा जिसके चारोंकोनों ... ार शेर सुनहले बनेहुयेथे और उनके मुख से फुहारे छूटते थे जब उनका जल संगमरमरके फर्शपर गिर ा था तो सहस्रोंटु ड़े हीरे के और असंख्य मणिमाणिक दृष्टि पड़ते थे और उस कुण्ड के बीच में एक फ़व्वारह इतनाऊँचा उठताथा कि बारहदरीकी छततक पहुंचताथा और उसमें कुछ अरबी अक्षरोंमें खुदाहुआथा और उस स्वच्छभवन में तीन उत्तमबाग कि जिसमें नान प्रकारके उत्तमफल और सुगंधित पुष्प और अनेकउत्तमवस्तु अपने उचित २ स्थानोंपर रक्खी हुई थीं कि जिनसे वह बाग अत्यन्त शोभायमान और चित्तके आनन्द देनेवाला विदित होताथा और नानाप्रकारके पक्षी वृक्षोंपर प्रियबाणी बोलरहे थे और उन्हीं में रात्रिदिन रहते थे क्योंकि उन वृक्षों पर चारों ओर जालपड़ेहुये थे कि जिससे कोई भी पक्षी ाहर न जासक्ता ा बादशाह एक मकान से दूसरे में जाता और सैरकरता और हर एक उत्तमवस्तु को देखकर प्रसन्नहोता इतना उन मकानों में फिरा कि थकितहुआ तदनन्तर एक मकान में बैठ बागका तमाशा देखने लगा दैवयोग से एक दुःखित शब्द सुनपड़ा कई बेर उसने ध्यान धर सुना कि कोई मनुष्य अति दुःखसे अपनी व्यथा का हाल कह रहा है और अपने बुरे भाग्यपर धिक्कार देरहा है बादशाह ने उस के क्लेश का वृत्तान्तसुन उस मकान का परदा उठाया और देखा कि एक जवान रूपवान् बादशाही वस्त्र पहिनेहुये एकऊंची चीज़पर जो सिंहासन ... मान विदित होती है बैठाहुआ अतिविलाप करताहै बादशाहने उसके निकटजाकर प्रणाम किया उसने कहा मुझे क्षमा कीजिये कि मैंने उठके तुम्हारा आगतस्वागत न किया मैं लाचार हूं तुम कुछ बुरा न मानना बादशाहने कहा कि मैं तुम्हारे इसशील से अत्यन्त प्रसन्नहुआ कोई ऐसाकारण होगा कि आप नहीं उठसके परन्तु तुम्हारे क्लेशका हाल सुन मुझे अति दुःख हुआ मैं केवल तुम्हारी सहायता के वास्ते यहं आयाहूं अपने दुःख से मुझे शीघ्र ही विदित कीजिये कि मैं उसका उपायकरूं मुझे बिश्वासहै कि तुम अपना वृत्तान्त अवश्य कहोगे पहिले तुम उस तालाबका हाल जो

यहां से समीप है और उसमें चाररंग की मछलियां हैं वर्णन करो फिर इस मन्दिरका बृत्तान्त कि किसने बनाया है और तुम इसहाल से अकेले इसस्थानपर क्यों हो वह यह बात सुन रोया और कहने लगा कि अपने बृत्तान्त को क्या वर्णनकरूं अपना वस्त्र ऊपर उठाया बादशाह ने देखा कि वह शिर से नाभितक आदमी है और कमरसे चरणतक कालेपत्थरका बनाहुआ है यह देख अति विस्मित हुआ और उस मनुष्य से कहा कि मैं तो यहां की बहुत सी वस्तु देख चिन्ता करता था परन्तु तुमने मुझे यह हाल दिखलाकर अति बिस्मित और विह्वल किया परमेश्वर के वास्ते अपना बृत्तान्त शीघ्र ही कहो मालूम होता है वह रंगबरंगी मछलियां इसी बृत्तान्त से सम्बन्धित हैं आप मुझसे अवश्य कहिये जब कोई दुःखित मनुष्य अपने क्लेशको वर्णन करता है उससमय उसे धैर्य प्राप्तहोता है उस ने कहा यद्यपि मुझे अपने बृत्तान्त कहने की सामर्थ्य नहीं परन्तु आपकी आज्ञानुसार कहताहूं॥

कालेद्वीपों के बादशाह की कहानी॥

उस पुरुष ने अपना बृत्तान्त इसप्रकार कहना आरम्भ किया कि मेरा पिता महमूदशाह कालेद्वीपों का बादशाह था जो विख्यात चार पहाड़ हैं और राजधानी उस स्थानपर थी कि जहां अब वह तालाबहै अब जो मैं कहताहूं इस बृत्तांत से तुमको इन सबका हाल ब्यौरेवार विदित होजावेगा हे बादशाह! जब मेरा पिता ७० वर्ष का होकर मरगया उसकी जगह मैं सिंहासनपर बैठा मैंने अपने चाचाकी पुत्री के साथ विवाह किया वह स्त्री मुझ से बहुत प्रीति करती थी उसीप्रकार मैं भी उसे चाहता था पांचवर्षतक हम प्रीति-पूर्वक रहे इसके पश्चात् मैंने प्रीति में कुछ अन्तर पाया एक दिन भोर के भोजन के पश्चात् वह स्नान करनेगई मैं जाकर एक कमरे में लेटरहा और दो बांदियां जो उस रानी के पंखा हिलानेके वास्ते नियत थीं मेरे पास आकर एक शिरकी ओर एक पांव के निकट बैठगईं और मेरे आनन्द के हेतु पंखा करनेलगीं और मुझे सोता जान परस्पर वार्त्ता करनेलगीं और मैं भी कि जागताथा अपनेको

सोयाहुआ बनाकर उनकी बातें सुनने लगा एक ने दूसरी से कहा कि हमारी रानी अति निर्दयी है कि ऐसे रूपवान् और कोमल बादशाह को प्यार नहीं करती दूसरी ने यहसुनकर उत्तरदिया कि तू सत्य कहती है नहीं जा पड़ता कि रानी इसे अकेलाछोड़ रात्रि को कहांजाती है और इसको यहबात मालूम नहीं पहिली चेरी ने कहा इस गरीबको उसके जाने का हाल किसप्रकार विदित हो रानी तो प्रतिरात्रि उसे शर्बत में नशा मिलाकर पिलाती है उसके नशे में वह ऐसा बेसुरत होजाता है कि उसे कुछ भी सुधि नहीं रहती और वह यह अवकाश पा ज ां चाहती है चली जाती है और भोर को बादशाह को कोई सुगन्धित वस्तु सुंघा चैतन्य करती है हे प्रिय मित्र! मुझे यह बात सुन इतना खेदहुआ जिसका वर्णन नहीं कर सक्ता उस समय ो मैंने अपने क्रोध को थांभा और इस उपाय से उठा कि मानों सचमुच सोताही था फिर वह रानी स्नानकरके आई और रात्रिको भोजनकर मैंने शयन करने की च्छा की वह रानी प्याला कि सदैव ला पिलातीथी मेरे पिलानेको लाई मैंने उसे उसके हाथ से ले और उसकी दृष्टि बचा खिड़की से पृथ्वी पर फेंक दिया और खाली प्याला उसके हाथ में दिया कि वह जानले कि मैंने वह पीलिया तदनन्तर हम दोनों शय्यापर सोगये रानी मुझे सोताजान शय्यापरसे उठी उसने एक मंत्र ऊंचे शब्द से पढ़ा और मेरे ओर मुखकर हा कि ऐसा बेसुध सो कि कभी न जागे फिर शीघ्रही वस्त्र पहिन उसकमरे से बाहर आई उसके बाहर निकलतेही मैं भी उठा और तत्कालही वस्त्र पहिन खड्ग ाथ में े उसके पीछे चला इतना पास और मिलाहुआ उसके साथ जाता था कि उसके पैरों का शब्द मुझे सुनपड़ता था और मैं उसके पैरों के चिह्नपर पैर रखताहुआ बड़े बिचार से उसके पीछे दबे पैरों जाता था कि उसे मेरे चलने का शब्द न सुनपड़े वह कई दरवाज़ों से कि जिनमें ताला दियाहुआ था होकर निकली और वह दरवाज़े उसकी जादूसे आपही आप खुलते जाते थे जब वह सबसे पिछले दरवाज़ेपर कि उसओ बाग़ था और उसमेंसे होकर अन्दरको चली मैं उसदरवाज़े में लगके खड़ा

होरहा कि मुझे वह देख न ले और वहांसे उसीको देखतारहा वह एकपुष्पवाटिका से आगे बढ़ी जाते २ एकछोटे से बनमें कि जिसका रास्ता चारों ओर से घिराहुआ और सघनवृक्षों से बन्दथा चली गई मैं भी और रास्तेसे वहां पहुंचकर एकझाड़ी के अन्दर छिपकरखड़ा रहा और वहांसे उसको देखा कि एक पुरुषके साथ टहलतीहुई बार्त्ता करती जातीहै मैंने ध्यानधर उन बातों को सुना कि कहती थी कि मैं तुमको प्राण से अधिक प्यार करती हूं और रात्रिदिन तुमपर मोहित रहतीहूं परन्तु तुम मुझे सदैव बुराभला कहते और धिक्कारदियाकरते हो इसका कारण मुझे जानपड़ता यदि तुमको मेरी परीक्षालेनी स्वीकारहो कि तुम्हारी प्रीति मैं कितनी रखती हूं तो अभी उद्यत और तुमको मेरी सामर्थ्य भी अच्छेप्रकार विदित है कि मैं क्या कामकरसक्तीहूं यदि तुम्हारी इच्छाहो तो मैं सूर्योदयके पहिले इस बड़े और सुन्दर नगर और उत्तम २ गृहों को मैदान करदूं कि जिसमें भेड़िये और उल्लू रहने लगें और पत्थरों को कि जिनसे दीवारें अतिदृढ़ बनी हुई हैं कोहकाफ़ पहाड़ के ओर फेंकदूं और बिनाश करडालूं केवल तुम्हारी आज्ञा चाहतीहूं रानी यह बात कहती हुई अपने प्यारे के साथ में हाथ दियेहुये टहलती थी उसझाड़ी के निकट कि जिसमें मैं छिपाहुआ खड़ाथा आई और वह वहांसे न लौटे और जब उसका प्यारा मेरे निकटसे होके निकला मैंने खड्ग मियान से निकाल ऐसा उसकी गर्दनपर मारा कि वह लगतेही लड़खड़ाय गिरपड़ा और मुझे विश्वासहुआ कि वह नाशहुआ और रानी जो मेरे चचाकी पुत्री थी इसी वास्ते मैंने उसे छोड़दिया और तत्काल वहांसे दबे पैरों लौटा कि रानीको यहबात न मालूमहुई यदि उसके प्यारे को बहुत भारीघाव लगाथा परन्तु इस रानीने मंत्र-विद्या की सामर्थ्य से सम्हाला फिरभी वह खड्ग लगने के कारण ऐसा होगया था कि न तो जीतों में गिनाजाता था और न मृतकों में मैंने लौटती समय रानी को सुना कि अपने प्यारेके घायल होनेसे रोती और पीटती है मैं उसके रुदनकरनेपर कुछ बिचार न कर उसे अकेला वहीं छोड़ निजगृह में आया और कमरे में शय्यापर जा लेटा

उसके मारने से अत्यन्त धैर्य हुआ और मैं सोरहा और निश्चिन्त हो भोरहोतेही रानीको अपने समीप सोतादेखा परन्तु अच्छेप्रकार जान न पड़ा कि वह सोती न थी बहाना कियेहुयेथी मैं उसे इसीदशा में छोड़के उठखड़ाहुआ और राजसीवस्त्र पहिनलिये फिर राजसभा में गया जब दरबार से निजमन्दिर में आया रानी को गमी के काले वस्त्र पहिने देखा उसने शिरकेबाल नोच खसोट मुझसे कहा कि हे पति! मुझे शोककी दशा में देखके अप्रसन्न न होना मैंने तीन बुरे समाचार बराबर सुने हैं इसीकारण मेरी यह दशा है मैंने पूछा हे प्रिया! वह तीन कौन से बुरे समाचार हैं उसने कहा एक तो यह कि मेरी प्यारी माता मरगई दूसरा यह कि मेरा पिता युद्ध में मारागया तीसरा यह कि मेरा भाई ऊंचेपर से गिर कालबश हुआ मैंने यह सब सुन कुछ शोक न किया किसवास्ते कि मैं सब भेद उसका जानता था उसके वर्णन से मुझे सूचितहुआ कि उसे उसके यारके मेरे हाथ से मारेजाने का हाल विदित नहीं उससे कहा यह बात कुछ अप्रसन्नता की नहीं, किन्तु जो तुम ऐसे अशुभ समाचार को सुन शोक न करतीं तो निरसन्देह मैं बिलगमानता तदनन्तर वह अपने कमरे में जाकर रोने पीटनेलगी और एक वर्षतक इसीप्रकार रात्रि दिन अपने प्यारे के दुःख में रोती पीटतीरही इसके पश्चात् उसने मुझसे कहा कि मैं एक मक़बरा बनवाकर उसमें रहा करूंगी मैंने उसको इस बिषय में भी न रोका फिर उसने एक बड़ाभारी मन्दिर गुम्मज़दार बनवाया जो यहां से दिखाई देता है और उसका नाम शोकागार रक्खा जब वह गृह बनचुका तब वह अपने प्यारे सहित उस में आकर रहनेलगी और कोई ऐसी औषध अपने बिचार से उसे खिलाती कि इतना घायलहोने परभी वह न मरा और वह प्रति दिवस एक नियत समय में उस शोकागार में अवश्य औषध खिलाने जाती परन्तु वह इतने मन्त्र और उपाय करनेपर भी न खड़ा होसक्काथा और न उसमें चलने की सामर्थ्य थी और बातेंभी न करसक्का केवल देखा करता था रानीको उसके देखने से धैर्य होता था और उससे प्यार और प्रीति की बातेंकर अपने चित्तको धैर्यदिया

करतीथी दिनमें दोबेर उसकेसमीपजाती और बहुत देरतक वहांरहती थी यदि रानी का यह वृत्तान्त मुझे अच्छेप्रकार विदित था परन्तु मैं अनजान बनारहा और प्रतिकार्य में जानबूझ अनजान रहता एक दिन उस शोकागार में जाय ऐसे स्थानपर छिपकरबैठा कि जहां सब कुछ मैंने सुना और रानीने मुझे न देखा वह अपने प्यारे से कहती थी कि बड़ा अनर्थ है कि मैं तुझे ऐसी दुःखितदशा में देखूं और तुझे देख मुझे इतना क्लेश होताहै कि तेरे से मेरी अधिक बुरीदशा होजाती है हे मेरेप्राण! हे मेरेप्यारे! मैं प्रतिदिन तेरेनिकट आकर घड़ियों बार्त्ता करतीहूं तूने तो कभीभी मेरी एकबातका उत्तर न दिया मैं इसी चिन्ता में मरतीहूं कि कबतक चुपरहोगे यदि मुझसे एकभी बातकरो तो मुझे अत्यन्त धैर्यहो जबतक मैं तेरे निकट बैठीरहती हूं मेरेचित्त में धैर्य रहता है और केवल तेरे देखनेही से मैं प्रसन्नरहतीहूं इसीप्रकार अपने प्यारे से कहती और रुदन करतीथी मैं इतनी विह्वलता और व्याकुलता देख धैर्य न रखसका जब वहां से अपने पहिले गृह में कि जहां मैं रहाकरता था वह आई तब मैंने कहा कि हे सुन्दरी! तुम ने अति चिन्ता और शोककिया तुमको उचितहै कि अब तुम उसे त्यागदो सदैव इस शोक में रहना तुमको उचित नहीं रानी ने कहा कि हे स्वामी! तुम इस विषय में कुछ नबोलो मुझे इसीदशा में रहने दो मेरे चित्त से अभीतक शोक नहीं गया और न कुछ कमहुआ मैंने कितनाही उसे समझाया परन्तु न माना और मेरा समझाना उसके शोक के अधिक करनेवाला हुआ फिर मैंने उसे कुछ न कहा और उसको उसी दशा में छोड़दिया यहांतक कि उसे इसी दशा में दो वर्ष व्यतीतहुये फिर मैं दूसरी बेर उसी शोकागार में गया और छिपके ऐसे स्थान में बैठा कि जहां से उसकी सब बातें सुनाईदें रानी अपने प्यारे के निकट बैठीहुई कहती थी कि अब तीसरा बर्ष आरंभ हुआ तूने मुझसे एकबातभी न की और रुदन करने, चिल्लाने, हाहाकरने और अधीरता से तुझे थोड़ा भी विचार नहीं तू अबलता व असमर्थता के कारण वा मुझे तुच्छ समझ मुझ से नहीं बोलता हे प्यारे! बड़ा पश्चात्ताप है कि मेरी प्रीति तेरे चित्त में

किंचित् प्रवेश नहीं करती सदैव अपने नेत्रों के कि जिनसे मैं निहाल होतीहूं और मेरे जी न का कारण हैं बन्द किये रहताहै परमेश्वर के वास्ते इनको खोलकर मेरी ओर देख मैं रानीकी यहबातें सुन अति अप्रसन्नहुआ और क्रोध में आकर उसस्थान से बाहर निकलआया और पुकार के गुम्मज़की ओर कहा कि हे गुम्मज़ ! तू किस वास्ते इस स्त्री सहि देवको जो मनुष्य के बेष में है निगलनहीं जाता इतना कहतेही रानी कि उस अपने हब्शी प्यारे के निकट बैठी थी वहां से क्रोध में बाव के समान झपटकर मेरे निकट आई और कहने लगी कि हे दुष्ट, भाग्यहीन ! तूही मेरे इस दुःख और शोकका कारण है और तेरेही अन्याय से मेरे प्यारेकी यह दशाहुई कि जिससे वह अबतक घायलहै मैंनेक ा हां मैंने सदेवको मारा है और वह इसी दण्डके योग्यथा और तूभी इसीदण्डके योग्यहै किसवास्ते कि तूनेही मेरी प्रतिष्ठा भंगकी यह कह मैंने खड्ग निकाल चाहा कि उसे बध करूं परन्तु उसकी जादूकी सामर्थ्य से मेराहाथ ऐसा बन्दहोगया कि मैं खड्ग न चलासका सने तत्का ही कुछ मंत्रपढ़ना आरम्भ किया जिसको मैं कुछभी न समझताथा जब वह मंत्र पढ़चुकी तब उसने यहकहा कि मैं मंत्रके बलसे कहतीहूं कि तू नीचेके धड़से पत्थरहोजा और ऊपर के धड़ से मनुष्य बनारह उसके इतना कहते ही जैसा कि देखतेहो बनगया तब से न तो मैं जीतोंमें हूं न मृतकों में फिर उसने मुझे उस शोकागार से उठाय इस गृह में लारक्खा और मेरे नग को झील और तालाब बना दिया और निर्जन कर दिया कि जैसा तुमने देखा सब मेरे रबारियों और सभासदों और प्रजाको चाररंगकी मछलियांबना उस तालाब में कैदकररक्खा है सफ़ेदमछलियां मुसल्मान हैं लालरंगकी अग्निपूजक काली अंगरेज़ पीली यहूदी और चार बड़े द्वीप कि मेरे राजधानीसे सम्बन्धित थे उनको चार पहाड़ियां बना तालाब के चारों ओर रक्खा और मुझे आधे धड़से पत्थर का बनारक्खा है और सम्पूर्ण देश निर्जन और उजाड़ करदिया फिरभी उसका क्रोध और अन्याय कमनहीं हुआ यहां प्रति दिवस आकर सौ कोड़े मेरेकन्धों और पीठपर मारती है कि हरएक

कोड़े की चोट से मेरे शरीर से रुधिर निकलता है फिर मारपीटकर एक मोटीकाली बकरी के बालोंकी बुनीहुई कमरी मेरे ऊपर डाल और उस के ऊपर बहुतभारी सुनहला बस्त्र पहनाती है वहभी मेरीप्रतिष्ठा के हेतु नहीं बिशेषकर मेरी अप्रतिष्ठा के निमित्त है और कहती है कि यहदुष्ट कि बहुत बड़ा कालेद्वीपोंका बादशाह है अपने को इस मार पीट और अनादर से बचा नहींसक्ता इतनाकह शहरज़ाद ने कहा फिर वह अपने नेत्रोंको ऊपर की ओर कर परमेश्वर से इसप्रकार से प्रार्थना करनेलगा कि हे सामर्थ्यवान् परमेश्वर! और हे सबके उत्पन्न करनेवाले! तेरेही न्याय से आशा रखताहूं यदि तेरी इच्छा और प्रसन्नता इसी में है कि मुझपर इसीप्रकार अन्याय और अनर्थ हुआ करे तो मैं भी इसपर राज़ी हूं और धन्यवाद करता हूं मुझे तेरीही पूर्णकृपापर बिश्वास है कि एक न एकदिन अवश्यही मुझे इसदुःखसे छुड़ावेगा जब उस बादशाह ने यह अद्भुत बृत्तांत सुना तो अत्यन्त चिन्ता करनेलगा और चाहा कि इस बादशाह का कि जिसपर अन्याय हुआहै रानी से बदलाले तब पूछा कि वह निर्लज्ज जादूगरनी कहां रहती है और वह अभागा प्यारा उसका कहां रहता है कि जिस के पास वह प्रतिदिन जाया करती है बादशाह ने कहा कि मैंने पहिले आपसे नहीं कहा कि वह शोकागार में जिसे गुम्मज़ के रूप बनाया है पड़ा रहता है और वह शोकागार इसी भवन से सम्बन्ध रखता है कि उसकी राहभी इसी मकान में आईहै और उस जादूगरनी के रहने का स्थान मुझे बिदित नहीं परन्तु वह भोर के समय प्रति दिवस मेरे दण्ड देने के उपरान्त अपने प्यारे के समीप जाय किसीप्रकार का अरक़ पिलाती है जिससे वह अबतक जीतारहा बादशाहने कहा कि कोई मनुष्य तुमसे अधिकदया के योग्य न होगा और यह अद्भुत बृत्तांत इतिहास और समाचार की तरह लिखाजावे फिर उस बादशाह ने उस दुःखित बादशाह को अपनी इच्छा जतलाकर धैर्य दिया और रात्रि होजाने के हेतु वहीं सोरहा वह बेचारा बादशाह उसीप्रकार बैठा जगा किया कि वह जादू के असरसे लेटने और सोनेके योग्य न था फिर दूसरे दिन वह बादशाह

छिपकर उस शोकागार में गया कि जहां उत्तम सैकड़ें सु हरे दीपक ज ते थे और उस गृह को सजाहुआ देखकर अति आश्चर्यित हुआ ि र जहां वह हब्शी पड़ाहुआथा गया और एक हाथ खांड़े का ऐसा मारा कि वह हब्शी अर्धमृतक मरगया और लोथ उसकी खैं कर कुयें में डालदी और आप उस जगहपर हां वह हब्शी पड़ा रहता था ख ले लेटरहा इस विचार से कि सम पाय उस जादूगरनी को वध करडाले जब वह जादूगरनी उस मकान में आई पहले वह वहीं गई जहां काले ीपों का बादशाह था और उस बेचारे को बहुतही मारना आरम्भ किया यहांतक कि उसके चिल्लाने और रुदन कर से सारामकान कॅप ज ा वह बेचारा कितनाही उसे मौ-गन्ददे कहताथा कि मुझपर दयाकर परन्तु वह दुष्टा और अभागी बिना सौ चाबुक मारे न र ी फिर उसपर कम्बलडाल सुनहरा बस्त्र पहनाय फिर शोकागार में गई और अपनी प्रीति और विरह का हाल वर्णन करना आरम्भ किया और उस मकानके समीप जिसमें उसका प्यारा पड़ा रहता था जाकर कहनेलगी क्या अनर्थ है कि तूने अपनी अप्रीति से मेरा चैन खोदिया हे मेरे प्यारे! इतने अ-न्याय होने पर भी मुझे बुरा भला कहा करता है कि मैं अत्यन्त निर्दयीहूं जब मैं तुझे इस दशा में देखतीहूं मुझे ोध बहुत होता है और चाहतीहूं कि इससे अधिक ेश बदलालूं और तेरे बैरी को इससे अधिक माराकरूं और बादशाहके आगे कि हब्शी की जगह में था जाय कहा अब तू इस चुप और न बो ने से चाहता है कि मैं तड़पकर मरजाऊं परमेश्वर के वास्ते ए बात तो मुझ से कर कि मुझे धैर्य हो बादशाह ने अपने को ऐसा बनाया कि जैसे कोई निद्रा से जगे फिर हब्शियों के शब्दके समान उस रानी को उत्तरदिया कि सिवाय परमेश्वर के जो सर्वोपरि है किसीको सामर्थ्य और ब नहीं जादूगरनी इस बात को कि जिसकी उसे आशा न थी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न और हर्षयुक्तहुई और बोली कि हे स्वामिन्! यह तुमने जो उत्तर दिया कुछ मुझे धोखापड़ा बादशाह ने कहा कि हे दुष्ट स्त्री! या तू इस योग्यहै कि तेरे प्रश्नका कोई उत्तरदे रानी ने

कहा कि हे मेरे प्रिय पीतम! मुझसे ऐसा कौन अपराध हुआ जो तुम ऐसा कहतेहो उसने कहा कि तेरे भर्ता के चिल्लाने से कि जिसको तू प्रतिदिन मारा करतीहै मेरा सोना और आरम्भ करना बन्द होगया है मैंतो बहुतदिनों से अच्छा और नीरोग होगया होता और बार्त्ता करने की भी सामर्थ्य अच्छेप्रकार आजाती परन्तु तूने उसपर जादू कररक्खा है और उसे प्रतिदिन मारा करती है उस तेरे अन्याय से मेरा जी नहीं चाहता कि तुझसे बोलूं और तेरी बात का उत्तर दूं जादूगरनी ने कहा जो तुम्हारी प्रसन्नता इसीमें है कि मैं उसे दण्ड देना छोड़दूं और उसे पहिले स्वरूप में लाऊं तो मैं अभी ऐसा कर सक्ती हूं बादशाह ने कहा हां मैं यही चाहताहूं कि अभी तू जाकर उसे दुःखसे छुड़ादे कि मेरे आनन्द में उसके रोने पीटने से बिघ्न न हो रानी तत्कालही उसी शोकागार में गई और एक प्याले में जल भर कुछ पढ़ा जिससे वह पानी उछलने लगा फिर उस दालान में कि जहां उसका पति था गई और उसपर वही जल डाल कहा यदि परमेश्वर ने तेरा स्वरूप ऐसाही बनाया है और वह तुझ से अप्रसन्न है तो तू इसी दशा में रह जो तेरा यह स्वरूप नहीं तो तू मेरे जादू से जैसा कि पहिले था वैसाही होजा इतना कहतेही वह बादशाह अपने पहिले स्वरूपमें आगया और अतिप्रसन्नता से उठखड़ा हुआ और परमेश्वर का धन्यवाद किया जादूगरनी ने उससे कहा कि इस भवन से शीघ्रही निकलजा फिर यहां कभी न आइयो नहीं तो माराजायगा वह इसका उत्तरदिये बिना चुपके वहांसे चलदिया और किसी मकान में जाय छिपके बैठरहा और इस अद्भुत चरित्र के देखनेकी लालसा रख परमेश्वर का स्मरण करनेलगा उसे बिश्वास था कि बादशाह सब कार्यों को कर मेरे ढूंढ़ने को अवश्य आवेगा फिर वह जादूगरनी वहांसे शोकागार में आई और बादशाह से कि जिसको हब्शी जानती थी कहा कि मैंने तुम्हारी आज्ञानुसार उस को अच्छा करदिया अब तुम उठो जिससे मुझको भरोसा हो बादशाह ने फिर हब्शियों के समान ऊंचेस्वर से कहा कि यह जो तूने किया मेरे आनन्द और नीरोग होनेके वास्ते पूरा नहीं है अभीतक तेरा

अन्यायपन दूर नहीं हुआ उसने कहा हे मेरे प्रिय हब्शी! आपका क्या प्रयोजन है बादशाह ने कहा कि तू सम्पूर्ण नगर को रहनेवालों समेत कि जिसे तूने अपने जादू से उजाड़ कररक्खा है उनको अपनी २ योनि में ला प्रतिदिन अर्धरात्रि को सब मछलियां शिर निकाल हम दोनों को शाप देती हैं इसी कारण मैं नीरोग नहीं होता शीघ्र जा और सबको उनके पहिले स्वरूप में ला जब ये काम कर आवेगी तो मैं अपना हाथ तुझको दूंगा उस समय तू मुझे सहारादेके उठाइयो रानी ने अपने प्यारे से यह बातें सुन अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा बहुत अच्छा ऐसाही करूंगी फिर उसने तत्कालही तालाब के तटपर जाकर थोड़ाजल ले मन्त्रपढ़ तालाब पर छिड़का जल छिड़कतेही वह सम्पूर्ण मछलियां अपने मुख्य स्वरूप में आगईं और सब उसके जादू से छूटे गृह दूकानें आदमियों से पूर्ववत् बसगये उन्होंने अपनी वस्तु जहां छोड़ीथी ज्योंकीत्यों पाई बादशाह की सभा और सरदार कि जो नगर के निकट उतरे थे बहुत दूर होगये अपने को बस्ती के बीच देखके अत्यन्त आश्चर्यित हुये फिर वह जादूगरनी सबको अपने २ स्वरूप में लाकरके शीघ्रही शोकागार को गई कि इस परिश्रम के बदले अपने प्यारे से मिल हर्ष को प्राप्तहो जातेही बड़ेशब्द से कहनेलगी कि हे प्राणप्यारे! मैंने तेरी आरोग्यता और जीवन के निमित्त सबको अपने पहिले स्वरूप में करदिया अब उठो और अपना हाथ मुझको दो बादशाह ने उससे हब्शियों की बाणी से कहा आगे आ वह आगेगई फिर उसने कहा कि और आगे आ रानी और आगे गई फिर उस बादशाह ने एकही बेर उठ शीघ्रता से उसकी बांह पकड़ इतना अवकाश उस जादूगरनी को न लेने दिया कि वह बचे बड़े बल से खांड़ा मारा कि दो टुकड़े होकर गिर पड़ी फिर उसकी लोथ उसी कुयें में डालदी और कालेद्वीपोंके बादशाह के ढूंढ़ने में कि वहभी उसकी राह देखता था गया और उसे धैर्यदिया कि अब अपने शत्रु का डर मतकरो कालेद्वीपों के बादशाह ने उसको धन्यबाददिया और सहस्रों आशीर्बाद दिये बादशाह ने कहा क्या तुम अपने नगर को जावोगे उसने कहा हां तुमभी हमारे

साथ चलो कुछ थोड़ासा भोजनकरो फिर अपने नगरमें चलेजाना कालेद्वीपों के बादशाह ने कहा कि तुम अपने नगर को यहां से निकट समझतेहो उसने कहा निस्सन्देह निकट समझताहूं मैं अपने देश से यहां चारपांच घड़ी के समयान्तर में आयाथा कालेद्वीपों के बादशाह ने कहा आपका देश यहां से पूरे एक बर्ष के मार्ग पर है यहां इतनी देर में इसकारण आये होगे कि उस जादूगरनी ने मेरे देश को मन्त्र के बल से तुम्हारे देशके निकट करदियाथा निश्चय वह एकही बर्ष की राहपर है और हे भाई! दूर और पासपर कुछ बात नहीं मैं आप के साथहूं तुम मेरे उपकारी हो और तुमने मेरे साथ इतना बड़ा उपकार किया है कि मैं सम्पूर्ण आयुमें भी उसका धन्यबाद न करसकूंगा वह बादशाह अपने देश को इतनी दूर सुन अति आश्चर्य में हुआ और कुछ न समझसका कि क्यों इतनी दूर होगया द्वीपों के बादशाह ने कहा इस बिषय में कुछ अचम्भा न समझिये बादशाह ने कहा कि यदि इन दोनों देशों में इतनी दूरीहै तो आपको चलना अवश्य नहीं परन्तु मैं अपुत्रहूं इसवास्ते मैंने तुम को अपना पुत्र और युवराज नियत किया कि पीछे मेरे सिंहासनपर बैठियो इतना परस्पर प्रणकर द्वीपों के बादशाह ने प्रवेश की सामग्री लाय इकट्ठी की तीन सप्ताह के पीछे अपनी सेना कोष धन ले बादशाह के साथहुआ और उन दोनों बादशाहोंने धनआदिसे सौ ऊंट भर और बहुमूल्य बस्तु कि जो कालेद्वीप के बादशाह के कोष में थी अपने साथ लिये और ५० सरदार अति बीर अपने साथ इस यात्रा के लिये नियत किये फिर बादशाह ने आगे से हरकारों को अपने देश भेज अपने चलने का समाचार कहला भेजा जब वह अपने शहर के निकट पहुँचा सम्पूर्ण नगर के सरदार और सभासद् अगवानी के लिये आये और बादशाह से बिनय की कि आपके प्रताप और परमेश्वर की अनुग्रह से अबतक सारेनगर में कुशलक्षेम है और प्रजा भी आनन्द से है फिर जब नगर में पहुँचा सब नगर के बासी उसकी अगवानीको आये और बड़े शब्दसे उस के आनेका धन्यबाद किया दूसरे दिवस सब दरबारियों को इकट्ठाकर

काले द्वीपों के बादशाह का अद्भुत बृत्तान्त विस्तारपूर्वक बर्णन किया और कहा इसीकारण मेरे आनेमें देरहुई फिर कालेद्वीपों के बादशाह को अपना पुत्र बनाया और थोड़ेदिनों के पीछे उसको अपना युवराज कर सम्पूर्ण राज्य अपना उसके सुपुर्द करदिया और सब सरदारों ने आकर कालेद्वीपों के बादशाहों को भेंटेंदीं और राज्य के प्रबन्ध में उद्यत रहनेलगे फिर बादशाह ने उस धीमर को जो पहले सबके उस कालेद्वीपों के बादशाह को छुड़ाने का कारण हुआ था बुलाभेजा और उसको पारितोषिकआदि से धनी बनादिया॥

तीन योगी रूप राजकुंवर और पांच स्त्रियों की कहानी॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीद के राज्याधिकार में एक मज़दूर बुग़दाद का वासीथा वह बड़ाठठोल और बाचाल था एकदिन भोर को वह बाज़ार में अपने सम्मुख बड़ा टोकरा रक्खे इस आशापर खड़ाथा कि कोई उसे भार उठाने के लिये बुलाये संयोगवश एक स्त्री परमसुन्दरी जाली का वस्त्र अपने मुख पर डालेआई और उसने उससे मुसकराय कहा अपना टोकरा उठा और मेरेसाथ चल वह मज़दूर उस स्त्री की मीठी मीठीबातें सुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और टोकरे को अपने शिरपर रख उसके पीछे होलिया और चित्त में यह कहताहुआ चला आज का दिन क्या उत्तमहै कि ऐसी अच्छी स्त्री से कामपड़ा उस स्त्रीने आगे बढ़ एक बन्ददरवाज़े पर जाकर ताली बजाई थोड़ी देर पश्चात् एक बृद्ध लम्बी और श्वेत दाढ़ीवाले नसरानी ने आकर दरवाज़ा खोला उस स्त्री ने कुछरुपये उसके हाथ में रखदिये नसरानी ने उसका अभिप्राय समझ घर से एक बड़ी ठिलिया उत्तम मदिरा की लादी स्त्री ने मज़दूर से कहा कि इसे ले अपने टोकरेमें रख उसने रखली फिर वहांसे मज़दूरके साथ बाज़ारमें आई और उत्तम२ फल, सेब, नाशपाती आदि और नानाप्रकार के रङ्गके अतिसुगन्धित पुष्प, अतर, स्वादिष्ठ अचार, मुरब्बा, मांस और सूखाहुआ मसाला हरएक दूकानदार से इतनी सामग्री मोल़ली कि मज़दूर के टोकरे में जगह न रही मज़दूर ने कहा जो मुझे मालूम होता कि आप इतनी बस्तु लेंगी तो मैं एक घोड़ा या ऊंट अपने साथलेआता निदान वह मज़दूर टोकरा उठाकर उसके

साथहुआ जाते २ एक बड़े मन्दिर के दरवाज़े पर कि जिसका शिरा पीलपात्रों से सजाहुआ था और किवाड़े हाथीदांत से जटित थे वह दोनों पहुँचे स्त्री ने ठहरकर ताली बजाई जबतक कि दरवाज़ाखुला मज़दूर बड़े बिचारमें रहा कि यह स्त्री सौदासुलफ़ लेनेवाली बांदी है या घरकी मालिकहै परन्तु उसकी सजधज देखने से बांदी बिदित न होतीथी इतनेमें एक स्त्री ने आकर द्वारखोला मज़दूर उसके अनूपरूप और हावभाव को देख बिह्वलहोगया और उस बिह्वलता में उसके शिरपर से भार गिरनेलगा वह स्त्री जो अपने साथ उसे लाई थी उसकी बेसुधि का तमाशा देखनेलगी दूसरी स्त्री ने कहा कि यह बेचारा मज़दूर भार से दबाजाताहै घर में शीघ्रलेजा उतरवाले तदनन्तर मज़दूर के घुसने के पीछे पहली स्त्री ने किवाड़ अन्दर से बन्द करलिये फिर वह दोनों स्त्रियां मज़दूर सहित एक बड़े मकान में गईं जिसके चारों ओर बरामदे पीलपात्रों के बने हुये थे और उसके बीच में बड़ाभारी दालान था इसके बिशेष एक ओर बैठने का उत्तमस्थान उत्तम २ बस्तु और बर्तनों से सजाहुआ था उसमें एक सुन्दर सिंहासन सन्दल व ऊद की लकड़ी का बिछाथा और बिछौना अतिसुन्दरता से कि जिसके चारों ओर उत्तम २ मणि माणिक जटितथे बिछाथा और हौज़ संगमरमर का जिसमें फ़व्वारे छूटरहेथे यदि मज़दूर भार उठाने के कारण थकित होगया था परन्तु उत्तममकान और सामग्री बर्तन जो उचित उचित स्थानपर रक्खेहुये थे देख अतिप्रसन्न हुआ मुख्य तीसरी स्त्री को कि उस सिंहासनपर बड़े सजधज से बैठीहुई थी देख अपना श्रम भूलगया फिर उसको बिदितहुआ कि इस तीसरी स्त्रीका नाम ज़ुबैदा है और इस घरकी स्वामिनी यही है और दूसरी स्त्रीका नाम साफ़ी और वह स्त्री कि सब सामग्री खरीदकर लाई उसका नाम अमीना है ज़ुबैदा ने कहा हे बीबियो ! इस बेचारे मज़दूर के शिरसे शीघ्रही भार उतारो कि वह दमलेकर हलकाहो उसके कहनेसे साफ़ी और अमीना ने टोकरे को थांभ भार उसके शिरसे उतारा और टोकरा बस्तुओं से खाली करनेलगी ज़ुबैदा ने द्रव्य कि उसकी मज़दूरी से

कहीं अधिकथ मज़दू को दिया उसने वह द्रव्यपाय अत्यन्तप्रसन्न हो जानेकी इच्छाकी परन्तु उन सुन्दरस्त्रियों के देखनेसे उसका चित्त न अघात था अबतक वहां से चला न था कि अमीना ने अपने मुख से वस्त्र उतारा मज़दूर तो केवल उसकी छबीली चाल और कोमल अङ्गपर मोहित था अब वह उसके रूप छबि अनूप को देख कर वहीं खड़ारहगया और आश्चर्य यह था कि इस गृह में तीन स्त्रियोंके सिवाय चौथा न था परन्तु खाने पीनेकी सामग्री इतनी खरीदी थी कि ३० मनुष्यों को पूर्णहो ज़ुबैदा उसके खड़े रहनेसे समझी कि थकगया होगा सुस्तानेके वास्ते ठहरगया जब वह चिरकाल तक ठहरारहा उसकी ओर देखकर कहा क्या तू कुछ और चाहताहै क्या तूने मज़दूरी अपनी इच्छानुसार नहीं पाई फिर उसने अमीना से कहा कि इसको कुछ और दे विदा करो मज़दूर ने कहा हे स्वामिनि! मैंने मज़दूरी अधिक पाई है परन्तु कुछ विनय किया चाहताहूं यदि तुम्हारे सन्मुख ऐसी विनय करनी अतिढिठाई और अपराध का कारण है आशारखताहूं कि उसे क्षमा कीजियेगा यह कहकर कहा कि किसी स्त्री को तुम्हारे समान रूपवान् और सुन्दर नहीं पाता इससे मैं अत्यन्त आश्चर्यितहूं और स्त्रियोंके बीचमें पुरुष का न होना यह भी आश्चर्य है जैसा मर्दों में स्त्री का न होना इस विषय में मज़दूर ने उत्तम २ दृष्टान्त कहे और वह दृष्टान्त भी जो बग़दाद नगर में ख्यात थे कहे अर्थात् जबतक चार मनुष्य इकट्ठे होकर भोजन न करें वह भोजन वेस्वाद है तबतक खानेवाले अघाते भी नहीं ऐसे दृष्टान्तों से उसका अभिप्राय यह था कि उन तीन स्त्रियोंमें भोजनके समय चौथे पुरुष का होना अवश्य है ज़ुबैदा मज़दूर की ये बातें सुन बहुत हँसी और कहा मज़दूर तू अपनी निर्बुद्धिता की बातें अपने पास रख केवल हम तीन बहिनें हैं हम तीनों अपने कार्य को अच्छे प्रकार सिद्ध करलेती हैं कि कोई दूसरा मनुष्य उसे न जाने और विचार रखती हैं कि कोई हमारा भेद न जाने मज़दूर ने कहा कि हे स्वामिनि! तुम बड़ी बुद्धिमती हो मुझे बहुत कुछ स्मरण और मालूम है परन्तु अपनी दुर्भाग्यता से लाचारहूं कि मज़दूरी करताहूं यदि

मेरा कार्य अतितुच्छ है परन्तु चैतन्यहूं और मैंने बहुतसी पुस्तकें इतिहास आदि की देखी हैं यदि आज्ञाहो तो कोई कहानी सुनाऊं बुद्धिमान् अपने भेद को चतुर से गुप्त न रक्खे क्योंकि वह भेद गुप्तरखना भली भांति जानता है मुझसे भेद कहना इसप्रकार है कि जैसे किसी बस्तु को किसी गृह में बन्दकरदिया और उसकी कुंजी खोगई है जुबैदाको मालूम हुआ कि यह मज़दूर बड़ायोग्य और समझदार और सत्संग करने के योग्य है इसको अपने साथ भोजन कराना अवश्य है हास्य से कहा कि तू जानता है कि हमने अपने हाथों इस भोजन को अत्यन्तश्रम और द्रव्य ख़र्चकर बनाया है तूने तो ख़र्च नहीं किया इसवास्ते हम तुझे अपने साथ खिला नहीं सक्कीं साक़ी ने भी मज़दूर से कहा यह दृष्टान्त नहीं सुना (छूछा किन पूछा मज़दूर) वह बिचारा उत्तर उसका न दे सका और वहांसे चलेजानेकी इच्छाकी अमीना ने उसकी ओर से ज़ुबैदा और साक़ी अपनी बहिनों से कहा कि इसको यहां रहने दो यह हमको अपनी बाचालता से बहुत प्रसन्न करेगा और हँसायेगा तुम जानती हो कि यह बड़ाहँसोड़ा और प्रसन्नचित्त है राहभर अपनी हँसीमुख और मसखरहपन से मुझे हँसाता खिलाता आया है मज़दूर अमीना के पक्ष से बहुत प्रसन्नहुआ और नम्र होकर उन तीनों स्त्रियों से बिनय की कि मैं ऐसा मनुष्य नहीं कि तुम सबके उपकार को भूल तुम्हारी इच्छा के बिपरीत करूं यह कह उसने वही द्रव्य जो मज़दूरी में पायाथा उनको देदिया ज़ुबैदा ने मुसक़राय वह द्रव्य फेरदिया और कहा कि एक शर्त से तू हमारे साथ रह सक्का है जो बात हम तेरे सन्मुख करैं उसको न पूछियो ज़बतक कि ज़ुबैदा मज़दूर से यह बातें कहरही थी अमीना ने चलने फिरने के बस्त्र उतार अपने बस्त्र का दामन बांधलिया और मांस, क़ीमा, क़लिया, क़ोरमा, कोफ़्ता और भुनाहुआ मांस और सबप्रकारके मांस और नानाप्रकारके भोजन और मदिरा के शीशे लाय उचित२ स्थानों पर रखदिये और वह स्त्रियां उस भोजन के चारोंओर आय बैठीं और मज़दूर को भी एकओर बैठने की आज्ञादी मज़दूर इस बातकी

आशा न रखताथा अत्यन्त प्रसन्नहोय फूला न समाया कुछ थोड़ासा भोजन किया था कि अमीना ने मदिरा की बोतल को उठा एक गिलास भरा और अपने देशकी रीत्यनुसार सब के पहिले आप पिया फिर अपनी बहिनों को दिया फिर चौथा गिलास मज़दूर को दिया उसने उसके हाथ चूंब पीने के पहिले इस बिषय का एक गीत गाया अर्थात् (कि जिस प्रकार अतर बायु से सुगन्ध पहुँचाता है उसी विधि उत्तम शराब पिलानेवाले के द्वारा यह स्वच्छ मद्य सुगन्ध देती है) इस राग के सुनने से वह सब स्त्रियां अत्यन्त प्रसन्नहुईं और उन्हों ने शराब के नशे में पारी २ से गीत और राग गाये इसमें बहुत समय व्यतीत हुआ रात्रि होगई साक़ी ने अपनी बहिनों से कहा कि अब मज़दूर का कुछ काम नहीं इससे कहो कि अपने घरजावे मज़दूर को ऐसासंग छोड़ने से अप्रसन्नता हुई सब से बिनयकी बड़ा पश्चात्ताप है कि ऐसे समय में मुझको निकालते हो इस शराब के नशे में अपने घरतक किस प्रकार पहुँचूंगा यहीं पर किसी कोने में पड़ा रहूंगा अमीना ने फिर उसका पक्षकर कहा यह बेचारा सत्य कहता है अँधेरे में कहां ठोकरें खाता जायगा पहले उसको हम सब रहने की आज्ञा दे,चुकी हैं अब इसको निराश न करो कृपाकर रहने दो ज़ुबैदा ने अमीना के कहने के अनुसार मज़दूरको रहने की आज्ञा दी और कहा तू एक शर्त से यहां रहसक्ता है कि जो हम तेरे सन्मुख अच्छा वा बुरा करें पूछियो नहीं मज़दूर ने कहा कि मैं अपना मुख बन्द रक्खूंगा और नेत्रों से दर्पण के समान कि उनका काम केवल देखना है देखाकरूंगा ज़ुबैदा ने कहा कि यह बात जो हम तुझसे चाहती हैं नई नहीं देखो क्या लिखा है मज़दूर ने दरवाज़े की ओर उसके भीतर ज़ाकर पढ़ा कि उसमें सुनहली मोटीक़लम से लिखा था कि जो मनुष्य भीतर जायगा उस बिषय में जिसमें उसको सम्बन्ध नहीं पूछेगा तो वह अनुचित शब्द सुनैगा और अत्यन्त व्यथा को प्राप्तहोगा कि ज़िससे वह पछितावेगा मज़दूर ने उसको पढ़ कहा कि मैं तुम्हारी किसी बात में न बोलूंगा तुम धैर्य रक्खो फिर अमीना रात को भोजन लाई और उस जगह सुगन्ध और

दीपक जलाये कि जिससे सम्पूर्ण गृह सुगन्धित होगया फिर वह स्त्री अपनी बहिनों और मज़दूरसहित भोजन पर बैठे और सबने कुछ खा पी अपनी भाषा की काव्य और बिचित्र राग गाये कि इतने में उन स्त्रियों ने सुना कि कोई मनुष्य दरवाज़ह खुलवाता है खड़ी होगईं सो साक़ी कि जिसका यही कार्य था दौड़के सबके आगे बढ़गई और किवाड़ खोलके फिर आई और ज़ुबैदा से आकर कहा कि तीन योगी एकही स्वरूप के दरवाज़े पर खड़े हैं और तीनों दाहिनी आंखों से काने हैं तुम उनको देख बहुत हँसोगी उनके शिर, डाढ़ी, मूछें, भवें सब मुड़ी हैं और इसीसमय बग़दाद नगर में उतरा चाहते हैं और कहते हैं कि एक रात्रि के निमित्त हमको स्थानदो कि जहां पड़कर सोरहें भोर को चलेजावेंगे हे बहिन! उनको आने दो वह हम सबको रातभर प्रसन्नकरेंगे और हमको किसी प्रकार का कष्ट न देंगे ज़ुबैदा ने साक़ी के कहने के अनुसार कहा कि यदि तेरी इच्छा यही है तो उनको जा लेआ परन्तु सब बातें उनको समझादीजियो कि हमारे कार्य में न बोलें और जो किवाड़ के पाटपर लिखाहै पढ़लें साक़ी उस बात को सुन प्रसन्नहोकर किवाड़ खोलने दौड़ीगई और शीघ्रही उन तीनों योगियों को अपने साथ लिवालाई योगियों ने ज़ुबैदा और अमीना को झुककर प्रणाम किया उन्होंने प्रणाम का उत्तर दे कुशल क्षेम पूछी और भोजन करने में अपने साथ बैठाया योगियों ने मज़-दूर को देख पूछा कि यह मनुष्य अरब का रहनेवाला जान पड़ता है परन्तु धर्म के बिपरीत मदिरा पान करता है मज़दूर ने इस बात में अत्यन्त अप्रसन्नहो उत्तर दिया कि तुम आपही अधर्मीहो कि डाढ़ी और मूछ मुड़वाकर अन्यों को उपदेश करतेहो इसीप्रकार जब मज़दूर और योगियों की इस प्रकार की बातें स्त्रियों ने सुनीं तो उस परस्पर के झगड़ा दूरकरने को योगियों को बैठा मदिरा पिलाई जब वह मदिरा में उन्मत्तहुये तो उन्होंने कहा कि यदि कोई बाजाहोता तो हम बजाते साक़ीने बाजा और बांसुरी आदि लादिये योगीलोग उन बाजोंको प्रसन्नहोकर बजानेलगे और उन तीनों स्त्रियों ने बाजोंसे अपना स्वर मिलाकर मीठे स्वरों से गाना आरम्भ किया और कभी

नम्बर७ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ै ७४प्र-भा-

चित्र तीन योगियों का जो काशी थे ॥

नम्बर ८ मुतअल्लिके सफ़े ७५ प्र० भा०

चित्र अमीना ज़ुबैदा साफ़ी मजदूर आदि का गाना सुनते हुए ॥
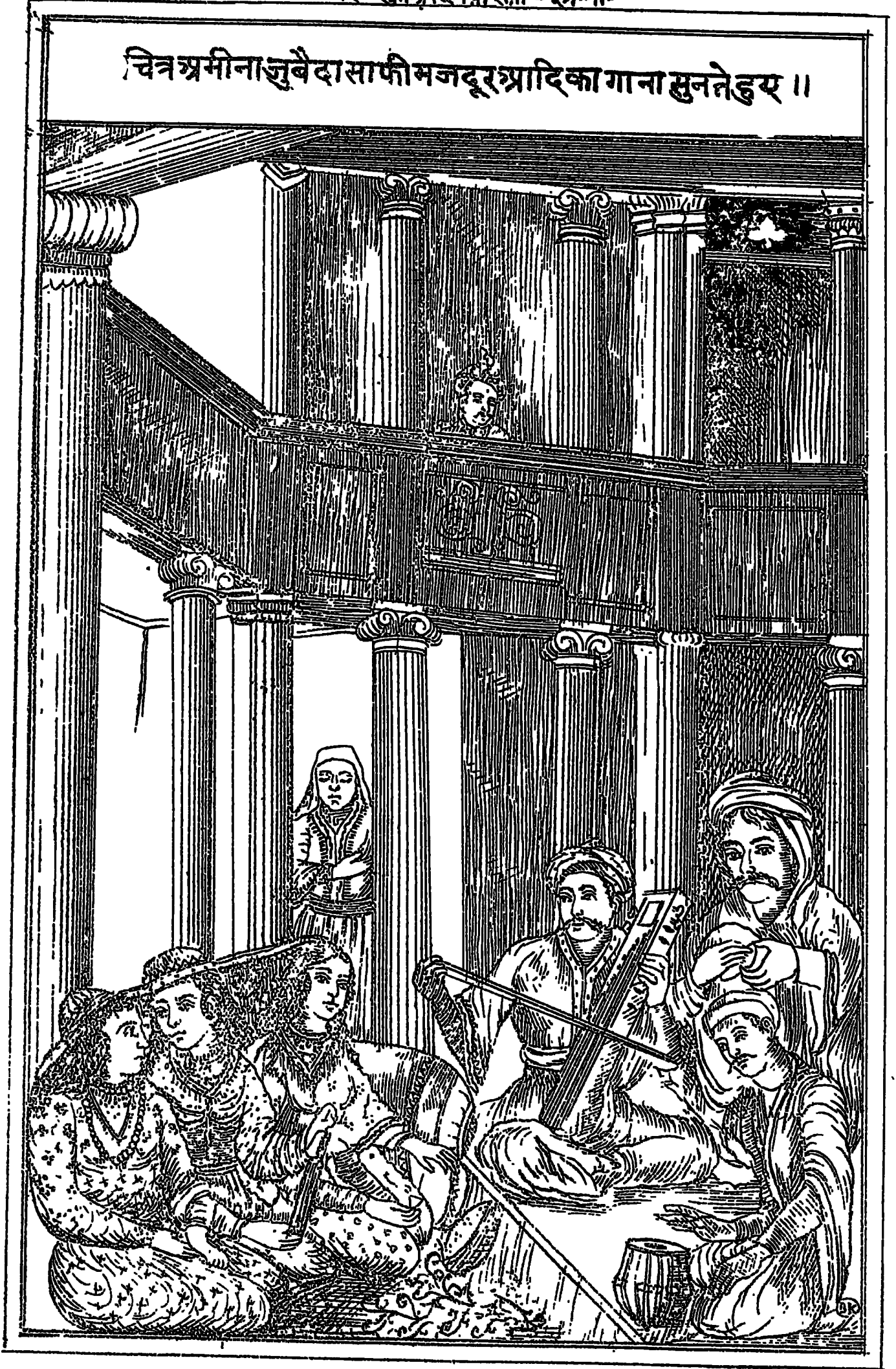
परस्पर हँसते और कभी वाह २ करते उस बाजे के बजने और गाने और ठट्ठेसे बड़ा शब्द हुआ सम्पूर्ण भवन गूंजउठा इसी समयान्तर में उन्होंने सुना कि कोई मनुष्य दरवाज़े पर ताली बजाताहै साफ़ी गाना छोड़ दौड़ीगई कि मालूमकरै कि दरवाज़े पर कौन है रानी शहरज़ाद ने शहरयार से कहा कि इस स्थान पर मुझे अवश्य है कि मैं तुम्हें यह बात बतलाऊं कि किस मनुष्य ने दरवाज़े पर आकर ताली बजाई ख़लीफ़ा हारूंरशीद का सदैव यह नियम था कि रात्रि को अपना वेष बदलकर सम्पूर्ण नगर में अपनी प्रजा का हाल मालूम करने के हेतु फिराकरता सो वह अपने बड़े मन्त्री ज़ाफ़र और खोजियों के सरदार मसरूर नामक सहित नगर में निकला था वह तीनों ब्योपारियों का बेष बनाय दैवयोग से कि जिस स्थान पर वह तीनों स्त्रियां रहतीथीं होकर निकले ख़लीफ़ा ने रागों का शब्द और हास्य ठठोल का शोर सुन ज़ाफ़र से कहा कि इस गृह का किवाड़ खुलवा मैं इसके अंदर जाकर इस शब्द का बृत्तांत मालूमकरूं मंत्री ने ख़लीफ़ा से कहा कि यहां तो स्त्रियों का गाना सुनाई पड़ता है कि उन्हों ने भोजनकर मदिरा पी है उसके नशे में गाय बजाय रही हैं आपको उचित नहीं कि उनके हास्य में कुछ बिघ्नकरो ऐसा न हो कि वह कुछ बुरा भला कह उठें ख़लीफ़ा ने मंत्री की यह बात स्वीकार न की और आज्ञा दी कि तू शीघ्र जाकर उनके किवाड़ खुलवा यह आज्ञा पाय ज़ाफ़र ने उस दरवाज़े पर ताली बजाई साफ़ी ने किवाड़ खोला मन्त्री उसके रूप को दीपक के प्रकाश में कि वह अपने हाथ में लेकरगई थी देख आश्चर्यित हुआ और एक उपाय अपने चित्त में ठहरा कहा कि हे मृगनयनी! हम तीन व्यापारी नगर मवस्सल के बासी हैं तीन दिन व्यतीतहुये कि बहुमूल्य बस्तु ब्यापार की ले इस नगर में आये हैं और एक सराय में उतरे हैं आज की रात इस नगर के एक ब्यापारी ने हम को न्योतादिया था सो हम उसके गृह गये उसने उत्तमब्यञ्जन खिलाये और मदिरा पिलाई जब हम मतवाले हुये तब उसने नृत्य के वास्ते आज्ञादी इसमें रात्रि बहुत ब्यतीतहुई और सभा में बाजे और नृत्य आदि से बड़ा शब्द होनेलगा संयोगबश कोतवाल ने अपनी रौंद

साथ लेकर वहांआ उसगृह का किवाड़ खुलवाया उस सभाके बहुतसे मनुष्योंको क़ैद करलिया हम भाग्यवश बचगये कि दीवारचढ़ बाहर कूदपड़े इतनाकह फिर मंत्री ने कहा कि हम इस नगर में अजानकार भयभीत हैं ऐसा न हो कि हम फिर कहीं राह में दूसरी रौंद या उसी कोतवाल के हाथ से पकड़े जावें और उस सरायतक कि जिसमें हम उतरे थे पहुँचने न पावें यदि वहां पहुँचे भी तो सराय के किवाड़ बन्द पावेंगे जो विना भोर हुये नहीं खुलता तो भोर होने तक हम इधर उधर फिरते रहें सो हे सुन्दरी! यहां हमने गाने बजाने का शब्द सुन जाना कि इस गृह के मनुष्य अभी नहीं सोये सब जागते हैं किवाड़ को खड़का या अब हम आशा रखते हैं कि कोई मकान हमको बतादो कि हम उसमें पड़रहें यदि हमको संगति के योग्य जानो तो इस गीत नृत्यमें भी मिलाओ क्योंकि तुम सब अच्छेप्रकार गाते बजातेहो और हमभी तुम्हारी इस बिषय में सहायता करसक्के हैं उसने उत्तर दिया कि मैं इस गृहकी स्वामिनी नहींहूं यदि थोड़ीदेर ठहरो तो मैं तुम्हारी बात का उत्तर लादूं साक़ी ने यह सम्पूर्ण बृत्तान्त जो मन्त्री से सुनाथा अपनी बहनों के सम्मुख जाय वर्णन किया उन्हों ने कुछ शोचबिचार अतिथिपोषण की राहसे साक़ी को आज्ञादी कि तू जा उन तीनों व्यापारियों को भी अन्दरलेआ सो खलीफ़ा और मंत्री ज़ाफर और मसरूर सहित अंदर आये और बड़ी अधीनता सेउन स्त्रियों और योगियों को प्रणाम किया उन्होंने उनको व्यापारी समझ उसीप्रकार से उनके प्रणाम का उत्तर दिया ज़ुबैदा ने कि सब से बड़ी और बुद्धिमान् थी उनसे कुशलक्षेम पूछी और कहा जो हम तुमसे प्रश्नकरें तुम बुरा न मानना मन्त्री ने कहा वह कौनसी बात है कि तुम ऐसी सुन्दरियों के कहने से बुरी जानपड़े ज़ुबैदा ने कहा जो यही बातहै तो जो कुछ तुम देखो किसीबात में प्रश्न न करना और और जो बिषय तुमसे सम्बन्धित नहीं उसका बृत्तान्त न पूछना नहीं तो तुम्हारी अप्रसन्नता का कारण होगा मन्त्री ने कहा हे सुन्दरी! हम तुम्हारी आज्ञानुसार करेंगे हमें किसी व्यर्थ बिषय को पूछना अवश्य नहीं यह परस्पर प्रतिज्ञाकर हर मनुष्य को भोजन कराये और

मदिरा पिलाई जबतक मंत्री ज़ुबैदासे बार्त्ता करतारहा ख़लीफ़ा उन स्त्रियों के रूप छबि अनूप और बुद्धिमानी को देख अति आश्चर्यित हुआ बिशेषकर उन तीन योगियों को कि तीनों दाहिनी आंख से काने थे बहुत चाहताथा कि इस अद्भुत चरित्र को उनसे पूछें परन्तु उसके साथियों ने पूछने न दिया इसके बिशेष रुपहरी और सुनहरी सामग्री और गृह की सजधज देख चित्त में कहता था यह सब बस्तु जादू और मंत्रबिद्या से अवश्य सम्बन्ध रखती है इतने में एकयोगी ने अपने देश की रीतिपर नृत्य करना आरम्भ किया स्त्रियों ने उस का नाच अत्यन्त प्रसन्न किया और उन सब योगियों से अधिक प्रसन्न हुईं ख़लीफ़ा और उसके साथियों ने भी अत्यन्त प्रशंसा कर धन्यवाद किया जब योगियों का नृत्य होचुका ज़ुबैदा अपने स्थान से उठी और अमीना का हाथ पकड़ कहा कि हे बहिन! तुम जानती हो कि ये सम्पूर्ण सभासद् हमारे अधीन हैं इनका होना हमारे कार्य में विघ्न नहीं करसक्ता हम अपने कार्य को न करें अमीना इस बात के सुनतेही उसके अभिप्राय को समझ गई फिर उसने शीघ्रही मदिरा की बोतलें और भोजन के पात्र और गाने बजाने की सामग्री जिनको योगी बजाते थे उठाई साफ़ी ने भी अपनी अमीना बहिन के साथहो उस कमरे को साफ़ किया और प्रति बस्तु को सँवार के रख दियों के गुल काटे और चन्दन और सुगन्धित तेल की बत्तियां जलाईं और फिर तीनों योगियों और ख़लीफ़ा आदि को एक ओर दालान में बिठलाया और मज़दूर से कहा उठकर कामकर तुझ ऐसे बलवान् को उचित नहीं कि निकम्मा बैठा रहे मज़दूर ऊँघता था और विवेक के कारण से उस हास्य ठट्ठे में उद्यत न था तत्काल उठ खड़ा हुआ और पहिरने के बस्त्र को कमर में लपेट कहा मैं तत्पर हूं क्या आज्ञा है साफ़ी ने उत्तर दिया कि आस्तीन भी ऊपर चढ़ा लो फिर थोड़ी देरके पश्चात् अमीना ने एक चौकी दालान में बिछाई और मज़दूर को अपने साथ लेजाकर एक कोठरी से दो काली कुतियां निकाललाई प्रत्येक कुतिया के गले में पट्टे बँधे हुये थे फिर मज़दूर उन दोनों को खींच दालान में लेगया ज़ुबैदा कि वहीं बैठी

थी उन्हें देख बड़ी तमक से उठी और उस मज़दूर के समीप गई और ठंढी सांसें भर आस्तीन ऊपर को चढ़ाई और चाबुक को साक़ी के हाथ से ले मज़दूर से कहा एक कुतिया मेरी बहिन अमीना को दे और दूसरी मेरे पास ला मज़दूर ने उसकी आज्ञानुसार किया कुतिया लातेही चिल्लाने और मुंह फेरके ज़ुबैदा की ओर देखने और उसके चरणों पर शिर रखके मलनेलगी ज़ुबैदा ने उसके रुदन करने और चिल्लाने पर बिचार न कर चाबुक मारना आरम्भ किया और यहां तक कि मारते मारते उसका श्वास चढ़गया और जब थकगई तो मारना छोड़दिया और ज़ंजीर मज़दूर के हाथ से ले उसके अगले पंजे पकड़ खड़ाकिया और अति पश्चात्तापकर एक दूसरे को देख रोईं फिर रुमाल से उस कुतिया के आंसू पोंछ प्यारकिया और मुख चूमा और मज़दूर को देकर कहा इसको लेजा और दूसरी को ला मज़दूर ने उस कुतिया को जो मारीगई थी मकान में लेजा बांधा और दूसरी अमीना के हाथ से ले ज़ुबैदा के निकटलाया ज़ुबैदा ने कहा इसे तू पकड़े रह फिर उसको भी उसीप्रकार मारा जैसे पहिली कुतिया को मारा था फिर उसके आंसू पोंछ मुख चूम मज़दूर को दिया मज़दूर उसको भी मकान में लेजा बांधआया वह तीनों योगी और ख़लीफ़ा और उसके साथी इस बृत्तान्त को देख अतिबिस्मित हुये और अपने २ चित्तमें कहनेलगे ज़ुबैदा क्यों इतने कठोरपनसे उन कुतियों को मार उनके साथ रोई ये पशु मुसल्मानों के बिचार में अपवित्र हैं उनके आंसू पोंछ और मुंह चूमा इसीप्रकार वह सब परस्पर हौले २ इसकी बार्त्ता करते थे बिशेषकर ख़लीफ़ा इस अद्भुतचरित्र के मालूम करने की अतिलालसा रखताथा मन्त्री से सैन की मन्त्री सुनी अनसुनी बातकर दूसरी ओर देखनेलगा फिर राजा ने सैन से पूछा उसने सैनसे बिनय की कि ये समय पूछने का नहीं फिर ज़ुबैदा उन दोनों कुतियोंको मारने के पश्चात् थोड़ी देर सुस्ताने को बैठी जब सुस्ता चुकी साक़ी ने उससे कहा हे मेरी प्यारी बहिन! तुम अपने स्थानपर आबैठो तो हम अपना कार्यकरें ज़ुबैदा ने कहा अच्छा फिर वह सभा में आय इस प्रकार से आ बैठी कि ख़लीफ़ा और

उसके साथी दाहिनी ओर और तीनों योगी और मज़दूर बाईं ओर बैठे एक घड़ी तक वह चुपकी थी कि साक़ी उस चौकी पर जो दालान में बिछीहुई थी आय बैठगई और अमीना से कहा बहिन उठो तुम हमारे अभिप्राय को जानतीहो इस बात को सुन अमीना उठी और दूसरी कोठरी में गई और वहां से एक संदूक़ उठालाई जो पीली साटन से मढ़ाहुआ था और गिलाफ़ उसका हरी कारचोबी का था उसने उसे खोल एक नली निकाल अपनी बहिन को दी साक़ी ने उसके शब्द में वियोग और बिरहमयी राग गाना आरम्भ किया जिसको ख़लीफ़ा आदि सभासद् सुन अतिहर्षयुक्त हुये जब उसने देरतक गाय बजाय सबको प्रसन्न किया बांसुरी अमीना को देकर कहा हे बहिन ! मैं थकगई अब तुम इसे ले बजावो और सभा को अपने गानेसे प्रसन्न करो अमीना ने उस नलीको लेकर थोड़ी देरतक उसका स्वर मिलाया फिर एक उत्तम राग बजाया निदान उस अपूर्व राग में मूर्च्छित होगई और ज़ुबैदा ने उसके गानेबजाने की अत्यन्त प्रशंसा की और कहा अब तुम्हारी दशा चिन्तासे बदलीहुई मालूम होती है अमीना बिह्वलता से उसके प्रश्न का उत्तर न देसकी और उसकी ऐसी दशा होगई कि बेसुध होय गिरपड़ी और उसने उसी दशा में अपने पहिरने के बस्त्रको उतार फेंकदिया और उसके कन्धे जो दाग़ों से काले होगये थे सब लोगों को दिखाई पड़े जैसा किसीने उसे मारा है और दाग़ पड़गये हैं सब देख अतिआश्चर्यित हुये कि ऐसी सुन्दरी कोमलांगी को किसने मारा है उसके कन्धे और बाहें दाग़ों से काले होगये हैं और क्यों इस दशाको प्राप्तहुई जब अमीना बेसुध होय गिरपड़ने पर हुई ज़ुबैदा और साक़ी ने दौड़कर थांभा तब एक योगी ने कहा यदि हम बन में पड़ेरहते और रात्रिको बृक्ष के नीचे ब्यतीत करते तो इससे बहुत उत्तम था कि हम इस बृत्तान्त को देखते और उसका कारण पूछ नहीं सके ख़लीफ़ा ने इस बात को सुन उसके समीप आके पूछा कि तुमको इस स्त्री का और कुतियों के मारेजाने का बृत्तान्त मालूम है योगी ने उत्तर दिया हम इस बृत्तान्त को नहीं जानते और पहिले कभी इस घर में नहीं आये केवल

आजहीकी रात को तुम्हारे आनेके दो चार घड़ी पहिले आये हैं इस बात के सुनतेही खलीफ़ा औ भी अधिक आश्चर्यित हुआ और उस योगी से कहा कि यह जो मनुष्य तुम्हारे साथ है कुछ इसे हाल मालूम हुआ होगा उस योगी ने मज़दूर को सैन से अपने निकट बुलाय पूछा तू कुछ जानता है किसवास्ते वे दोनों कु यां मारीगई और अमीना के कन्धोंपर क्यों दागहैं मज़दूर ने सौगन्द खाकर कहा कि मैं इस बृत्तान्त को नहीं जानता आज के दिन के सिवाय कभी इस घर में नहीं आया और मैं इस घर के रहनेवालों से जैसा कि तुम समझते हो नहीं इस घरमें केवल तीन स्त्रियांहैं वह सब जानतेथे कि मज़दूर इन स्त्रियों का सेवक होगा जब बिदितहुआ कि मज़दूर भी हमारे समान बेगाना है तब खलीफा ने कहा हम सात पुरुष हैं और वे केवल तीन स्त्रियां हैं सब मिलके उनसे इस भेद को पूछें यदि उन्हों ने प्रसन्न होकर बताया तो उत्तम है नहीं तो ह ज़ोर से पूछेंगे ज़ाफ़र मन्त्री ने जो इस सलाह में न था सुन खलीफ़ा के कान में कहा कि हम सबको इस सभा से अतिप्रसन्नता हुई और अबतक बड़े आनन्द में हैं और आपको अच्छी तरह मालूम है कि इन स्त्रियों ने किस प्रतिज्ञा से हमको अपना अतिथि बनाया है और हमने उस प्रतिज्ञा को स्वीकार किया है इस पूछने से वे क्या कहेंगी जो परमेश्वर न चाहै इस प्रण के तोड़ने से किसीप्रकार का दुःख पहुँचे तो अत्यन्त लज्जा प्राप्त होगी और इसको भी बिचारिये कि उन्होंने जो हम सब से ऐसा दृढ़ प्रण किया है तो हम सब मनुष्यों को अच्छी तरह दण्ड न दे सकैंगी उन्होंने भी तो कुछ समझा होगा जो हमसे ऐसा प्रण किया फिर ज़ाफ़र मन्त्री ने यहां तक खलीफ़ा से कहा कि रात बहुत थोड़ी है जो आप इस समय चुप रहैं तो भोर को मैं इन तीनों स्त्रियों को आपके सन्मुख ले आऊंगा उस समय जो आपको पूछना है उनसे पूछ लीजियेगा यद्यपि यह बात बहुत अच्छी थी परन्तु बादशाह ने उसे न माना और मन्त्री से कहा कि चुप रह मैं प्रभात पर्यन्त ठहर नहीं सक्ता इसी समय इस बात को सूचित किया चाहता हूं पहिले उसने योगियों

से कहा कि तुम जाकर उनसे पूछो उन्होंने न माना फिर सब ने मज़-
दूर को पूछनेके लिये तैयार किया ज़ुबैदा ने उन सम्पूर्ण मनुष्यों को
बातचीत करते सुन पूछा तुम परस्पर क्या बार्त्ता कररहेहो मज़दूर
ने कहा कि हे सुन्दरी ! सब यही चाहते हैं कि आप कृपाकरके इस
बात को बतलाइये कि तुम कुतियों को निर्दयता से मारकर क्योंरोईं
और जिस स्त्री ने मूर्च्छा खाई उसके कंधों पर कालेदाग़ कैसेहैं ज़ुबैदा
अत्यन्त क्रोधित होकर ख़लीफ़ा आदिकसे कहनेलगी क्या यह बात
सत्यहै कि तुमने इस बात के पूछने को इस मनुष्य से कहा था सबने
एकमत होकर कहा कि सत्य है केवल ज़ाफ़र मन्त्री नहीं पूछना
चाहता ज़ुबैदा ने अत्यन्त कोपित होकर कहा कि तुमने अपनी प्र-
तिज्ञा अच्छी निबाही हमने दया से तुमको अपने घर में रहने को
जगह दी और तुम्हारा यथाबिधि सन्मान किया और पहिले प्रतिज्ञा
करली थी कि तुम किसी हमारी बात को न पूछना परन्तु तुमने
अपना प्रण भंगकिया और इसमें कुछभी भय न किया अब तुम्हारी
प्रतिष्ठा हमारी दृष्टि में नहीं इतना कह ज़ुबैदा ने पांव धरती पर
मारे और तीनबेर ताली बजाकर कहा तुरन्त आवो इतना कहतेही
एक किवाड़ खुलगया उसमें से सात हब्शी अतिबलवान् और
हृष्टपुष्ट नंगीतलवारें लियेहुये निकले और हर एक ने एक २ को
पृथ्वी पर पछाड़ा और उसी दालान के भीतर मारडालनाचाहा
अब समझनाचाहिये कि ख़लीफ़ाको कितनीलज्जा और ब्याकुलता
मन्त्रीके उपदेश न सुननेसे हुईहोगी इतने में एक हब्शी नें ज़ुबैदा
आदिक से पूछा हे सुंदरियो ! तुम्हारी आज्ञाहै कि हम इनको मार
डालें ज़ुबैदा ने उत्तरदिया ज़रा ठहरजाओ पहिले इनसे इतना हाल
पूछलें फिर हरएक से हाल पूछनेलगी सबके पहिले मज़दूर ने कहा
ईश्वर के वास्ते मुझ निर्दोष को न मारो मैं निपट निर्दोषहूं वे सब
अपराधी हैं और रोकर कहनेलगा कि बड़ापछतावा है कि मैं किस
चैन में था इन योगियों के कारण इस दुःख में पड़ा इनके कुरूप और
कुशकुनचरणों से बहुत से नगर निर्जन होगये होंगे मुझपर दया
कीजिये ज़ुबैदा उसका रोनापीटना सुन हँसपड़ी और कहा कि हर

एक मनुष्य अपना ठीक २ हाल कहे अर्थात् कौनहै और कहां से आया है और क्या २ गुण रखताहै और यहां आनेका क्या कारणहै यदि थोड़ा भी झूठ बोलेगा तो निस्संदेह उसकी गर्दन मारीजावेगी बादशाह औरों से अधिक ब्याकुल हुआ कि उस कुपित स्त्री से बचना कठिनहै इसी ब्याकुलता में शोचा यदि यह मेरी पदवी मालूम करेगी तो निश्चय मुझको छोड़ देवेगी तदनन्तर उसने मंत्री से जो उसके समीप था उससे पूछा परंतु उस बुद्धिमान् मंत्री ने चाहा कि अपने स्वामीकी प्रतिष्ठा न खोवे कोई और बहानाकरे इतने में ज़ुबैदा ने उन तीनों योगियोंको जो एकआंख से काने थे पूछा क्या तुम तीनों भाई २ हो उनमें से एकने कहा नहीं एक बेष अवश्य हैं और इसी बिधि अपना जन्म काटते हैं फिर उसने योगियों से पूछा कि क्या अपनी माता के उदर से काने उत्पन्न हुयेथे एकने कहा नहीं एक दुःख के कारण हमारे नेत्र जातेरहे कि वह लिखनेके योग्यहै और उससे हर मनुष्य को उपदेशहो उस आपत्ति के उपरांत हमने अपनी डाढ़ी मूछें और भवें मुड़वा डालीं और योगी बनगये ज़ुबैदा ने दूसरे योगीसे भी पूछा उसनेभी वही उत्तरदिया और तीसरे ने भी यही कहा किन्तु उसने अधिक हाल बर्णन किया यदि आप हमपर दया करें तो हम अपने २ बृत्तान्त को बर्णन करें हमतीनों शाहज़ादे हैं आज सन्ध्या को हम में परस्पर भेंट हुई थी हम परदेशी हैं और बिश्वासकर जानिये कि वे बादशाह जिनके हम तीनों पुत्र हैं बड़े नामवर इस संसार में हैं और हममें से प्रति मनुष्य अपने अपने दुःखका बृत्तान्त जो हमपर पड़ा है बिस्तारपूर्वक बर्णन करेगा ज़ुबैदा का क्रोध इन बातों को सुन कुछ शांतहुआ और उन हब्शी ग़ुलामों को आज्ञादी कि इनके हाथ पैर छोड़दो कि वह अपनी २ जगहपर बैठकर अपना २ बृत्तान्त और इस घरमें आनेका कारण बर्णन करें जब अपना बृत्तान्त कहचुकें तब उनको छोड़दो जिधर को चाहें उधर चले जायँ और जो अपना बृत्तान्त न कहे उसको बध करडालो फिर तीनों योगी और ख़लीफ़ा अपने साथियों और मज़दूरों सहित दालान में क़ालीन पर आबैठे और प्रतिमनुष्य के

शिरपर एक २ हब्शी तलवार नंगी लिये खड़ाहुआ था कि ज़ुबैदा का हुक्म पाय उनको बधकरे सबके पहिले मज़दूर ने अपना इस प्रकार से बृत्तान्त कहना शुरू किया ॥

मज़दूर की कहानी जो उसने संक्षेप में बर्णन की ॥

मज़दूर ने कहा हे सुन्दरी! तुम्हारे घर में आने का कारण यह हुआ कि आजभोर को मैं बाज़ार में अपना टोकड़ा लियेहुये इस आशापर खड़ा था कि कोई मुझे मज़दूरी के निमित्त बुलाये कि मैं उसका कार्य कर अपने निमित्त जीविका प्राप्तकरूं इतने में तुम्हारी बहिन ने मुझे बुलाया और अपने साथ लियेहुये कलवार की दूकान पर गई और वहां से कुँजड़े की दूकान से तरकारी मोलले फिर वहां से फल बेंचनेवाले के निकटगई और वहां से उत्तम २ बस्तु ख़रीद और टोकड़े में भर मेरे शिरपर रख घर में लाई और तुमने कृपाकर मुझको अबतक यहां रहनेदिया इस तुम्हारे उपकार को बिस्मरण न करूंगा मेरा यह बृत्तान्त है जिसको मैंने बिनय किया जब मज़-दूर ने अपनी कहानी को शीघ्र छूटजाने के हेतु पूरा किया ज़ुबैदा ने उससे कहा अपने घर चलाजा फिर मेरे सन्मुख कभी मत आइयो मज़दूर ने बिनयकी यदि मुझे आज्ञाहो तो मैं ठहरके इनलोगों की भी कहानी सुनूं जैसा कि इन्होंने मेरा बृत्तान्त सुना है फिर वह ज़ु-बैदा की आज्ञानुसार दालान के एक कोने में जाखड़ाहोरहा फिर ज़ुबैदा ने उन तीनों योगियों से कहा कि अब तुमभी अपना २ बृ-त्तान्त बर्णन करो सो एक ने अपनी कहानी को इस प्रकार कहना आरम्भ किया ॥

पहिले योगी की कहानी ॥

पहिले योगी ने घुटने के बल खड़े हो ज़ुबैदा से कहा कि हे सुन्दरी! मैं यह बर्णन करता हूं कि मेरी दाहनीआंख क्यों गई और क्यों मैंने अपने को योगियों के समान बनाया मैं एक बड़े बादशाह का पुत्र था और उसका एक बड़ा भाई भी उसी बादशाह के स-मान ऐश्वर्यवान् उसके नगर के समीप रहता था उसके दो स-न्तान थे एक पुत्र मेरे बराबर का था और दूसरी पुत्री थी मैं प्रति

बर्ष में एकबेर अपने पिता की आज्ञानुसार अपने चचा की भेंट को जाता वहां एक दो मास रह फिर अपने देश में लौट आता इस आने जाने से मुझ में और चचा के लड़केमें अत्यन्त प्रीति होगई एक दिनकी भेंट में मैंने उसे अधिक प्रसन्न पाया और उसने पहिले से अधिक मुझ से प्रीति की और अत्यन्त प्रतिष्ठाकर मुझे भोजन कराया और अद्भुत तमाशे दिखलाये और बहुतदेर तक वे तमाशे देखाकिये फिर मैंने और उसने मिलकर भोजन किया उसके पश्चात् उसने मुझसे कहा मैंने कितना अच्छा और कितनी जल्दी तुम्हारे जानेके पीछे बहुत से कारीगर लगाकर एक मकान बनवाया सो वह घर बनचुका है अब मेरी इच्छा रात्रि के शयन करने की है जो उस घर को देखोगे तो बहुत प्रसन्न होगे परन्तु प्रथम तुमको क़समखाना अवश्य है कि इस भेद को किसीसे बर्णन न करना यह केवल दो बातैं तुमसे मित्रता और पुरातन प्रीति के कारण कहताहूं मैं उससे इन्कार न करसका तुरन्त मैंने उससे सौगन्द खाई फिर उसने मुझसे कहा कि तुम ठहरो मैं अभी आताहूं फिर थोड़ीदेर के पीछे एक स्त्री परमसुन्दरी अपने साथ लेकर आया न तो उसने मुझ से बताया कि वह स्त्री कौनहै और न मैंने उस स्त्री का बृत्तान्त पूछना उचित समझा तदनन्तर हम दोनोंभाई और वह स्त्री बैठकर इधर उधर की वार्त्ता करनेलगे और गिलास भर २ मदिरा पीते रहे यहांतक कि शाहज़ादे ने कहा अब यहां अधिक न ठहरनाचाहिये यह कह उठा और मुझसे कहा कि तुम इस सुन्दरी को अपने साथले इसमार्ग से उस श्मशान में जाओ और जहांकहीं नवीनक़बर गुम्बद के समान देखना तो जानना कि यही दरवाज़ा उस घर का है जिसको कि मैंने अभी तुमसे बर्णन किया था तुमदोनों उस घर के भीतर जाय मेरे आनेकी राह देखना मैं तुरन्त वहां आऊंगा फिर मुझसे कहा हे भाई! परमेश्वर के वास्ते इस भेदको किसीसे-बर्णन न करना फिर मैंने अपना हाथ उस स्त्री के हाथ में दे उसी चिह्न और पतेपर कि जिसे मेरे चचेरे भाई ने बताया था चला और मार्ग के भूलने बिना चन्द्रमा की चांदनीमें बहुतआनन्दसेउसी सुंदरी को लेके पहुँचा क्या

देखा कि वह शाहज़ादा भी पानी का लोटा भराहुआ और चूनेकी टोकड़ी लियेहुये वहां पहिले पहुँचा और फड़ुहे से मिट्टी भरी हुई निकाली और पत्थरों को वहां से ‍उठाय एकओर लगाया जब सब पत्थर उससे निकाल चुका पृथ्वी में छिद्र किया कि वहां हमें एक दरवाज़ा देखपड़ा उसने उसे खोला कि उसमें एक सीढ़ी लकड़ी की थी उससमय मेरे चचेरे भाईने उस सुन्दरीसे कहा कि यही मार्ग उस ‍ार का है जिसका कि मैंने तुमसे बर्णन किया था वह सुन्दरी इस बा‍ के सुनतेही व‍ां आई और सीढ़ी के मार्ग से नीचे उतरगई और शाहज़ादा भी उसी के पीछे चलागया और उस मकान में उतरने के पहिले मुझसे कहा कि मैं इस बड़े श्रमसे जो मेरे कारण तुमने उठाये हैं तुम्हारा धन्यवाद करताहूं अब मैं तुमसे बिदा होता हूं तुम्हें परमेश‍्‍र को सौंपा कितनाही मैंने उससे पूछा कि तुम कहां जातेहो और यह सब कार्य क्या है उसने कुछ न बताया परन्तु इतना कहा कि ‍‍रवाज़े पर मिट्टी डाल बराबर करदेना और जिस मार्ग से आये थे उसी मार्ग से चले‍ाओ मैं लाचार होकर दरवाज़े पर मिट्टी डाल और वहां से बिदा होकर अपने चचाके मन्दिर पर आया और शिर की पीड़ा के कारण कि मदिरा के नशे से होतीथी अपने मकान पर जाय सोयरहा ज‍ प्रभात को उठा रात्रिकी बात को स्मरणकर चिन्तायुक्त हुआ फिर मैंने उन सब बातों को बिचारा कि स्वप्न था या सचमुच फिर मैंने अपने सेवक से कहा कि तू तुरन्त जा मेरे भाई शाहज़ादे का समाचार ला कि उसने जगकर बस्त्र बदले हैं या शयन करते हैं उसने वहां से लौटकर कहा कि रात्रि में वह अपने स्थान पर न थे और यह भी कोई नहीं जानता कि वह कहां हैं और किधर गये इस कारण सब उनके सेवक चाकर और घर के मनुष्य अति विस्मित और चिन्ता में हैं मैंने बिचार किया अवश्य उसी घर में होगा मुझको उसके न होने और न देखने से अतिचिन्ता हुई फिर छिपकर उसी श्मशान में गया और सम्पूर्ण दिवस उस गृह के ढूंढ़ने में ब्यतीत किया परंतु उस घर का कुछ भी चिह्न न पाया इसी प्रकार चार दिनतक उसकी ढूंढ़ में भटकतारहा परन्तु कहीं ठिकाना

और पता उसका न लगा हे सुंदरियो! मुझे उचित है कि इस बातको तुम्हें बतादूं कि उन्हीं दिनों में मेरा चचा आखेट को कई दिनसे बाहर गया हुआ था और मैं उसके आगमन की देरी में अतिदुःखित हुआ निदान अपने पिताके पास जानेकी इच्छा की और मंत्री से यह कहा कि मैं अबकी बेर आगेसे अधिकरहा मे⁻ा पिता मेरी ओरसे चिन्ता युक्तहोगा जब चचाजी आखेट से लौट आवें मेरी ओर से प्रणाम कहने के पश्चात् वही बात कहदेना परन्तु मैंने मंत्री को शाहज़ादे के खोजाने से अत्यन्त व्याकुल और चिंतायुक्त पाया और मैं शाहज़ादे का बृत्तान्त उसी सौगन्द के कारण न कहसक्राथा फिर मैं वहां से अपने पिताकी राजधानी में आया और वहां तो मैंने घरके दरवाज़े पर बहुतसी सेना का पहरा देखा उन्होंने मुझे देखतेही क़ैदकरलिया मैंने कारण पूछा तो एक सेनापति ने उत्त⁻दिया कि हे शाहज़ादे! यह सेना बड़े मन्त्री की है उसने तुम्हारे पिता के स्वर्गबासके पश्चात् इस मंत्री को अपनी जगह बादशाह किया है अब उस नवीन बादशाह ने तुम्हारे पकड़ने के निमित्त हमें आज्ञादी थी कि जहां कहीं पावो शाहज़ादे को पकड़लावो सो तुम्हारे ढूंढ़ने को सेना चारोंओर गई है आज तुम हमारी भाग्यसे आपही यहां आगये इसवास्ते तुमको पक⁻लिया यह कहतेही एक सेनापति मुझे उस अन्यायी के निकट लेगया हे सुन्दरी! उस समय के मेरे कष्ट और दुःखको समझना चाहिये ⁻ह दुष्ट पहिले से अपने चित्तमें बैर रखता था उसके बैरका यह कारण था मुझको बालकपन में गुलेलखेलने का बड़ा व्यसन था सो एकदिन मैं गुलेल लियेहुये अपने घरकी छतपर खड़ा था कि एक चिड़िया उड़तीहुई मेरे सम्मुख आई मैंने एक गुलेल उसकी ओर चलाई संयोग बश वह उस मन्त्री के नेत्र पर कि अपने घरके कोठेपर टहलताथा लगी उससे उसकी आंख फूट गई मैं इस हालको जानकर आप उसके निकट गया और बिनती की फिर भी उसके चित्तमें मेरी ओ⁻से बैर रहा और चाहता था कि समय पाय उसका बदला मुझ से ले जो कि अब उसने मुझे दीन और असहाय पाया मेरे उस विषय को कि भूल से हुआ था स्मरणकर मुझे देखते ही दौड़ा और

अत्यन्त क्रोध से अपनी अंगुली डाल मेरी दाहिनी आंख निकाल डाली यही मेरी दाहिनी आंख फूटने का कारण हुआ और उस अन्यायी ने एक पिंजरे में मुझे कैद किया और बधिक को आज्ञा दी कि इसको नगर के बाहर लेजाके बधकर और इसका मांस काट पशु पक्षियों को खिलादे बधिक घोड़ेपर चढ़ और बहुत से मनुष्य अपने साथले मुझे नगर के बाहर लेगया जब मेरे बध करने की इच्छा की मैंने बहुत रोदनकर बधिक से बिनती की तब उसको मुझ पर दया आई और मुझको छोड़दिया और कहा कि इस देश से निकलजा और चैतन्यरह फिर कभी इधर मुख न करना और जो आवेगा तो हम और तू दोनों मारे जायँगे यह सुन मैंने अत्यन्त धन्यवाद किया और प्राण के बचने से आंख का जाना अच्छा मालूम हुआ कि आंखही के जानेसे परमेश्वर ने भलाई की भला प्राण तो बचे आंख गई तो गई उस दिन तो मैंने चलने की सामर्थ्य थोड़ी भी न पाई दिनभर छिपारहा रात्रि को गुप्तमार्गों से अपने बल के अनुसार थोड़ा २ चल चचाके नगर में पहुँचा और उसके निकट जाकर सम्पूर्ण बृत्तांत अपने दुःख और तुरन्त लौटआने का वर्णन किया चचा ने हाहा खा कहा बड़ा पश्चात्ताप है कि बुरे समय ने मेरे पुत्र के खोजाने पर भी मुझे अपने भा के मरने का समाचार सुनाया कि जिसको मैं अपने प्राण से भी अधिक रखता था और मुझको इस दुःख में पाया कितना ही उसने अपने पुत्रको ढूंढ़ा परंतु उसका कहीं चिह्न न पाया निदान अपने पुत्र को यादकर रोया करता था मैं अपने चचा को ऐसी बुरीदशा में न देखसका और उसके रोने पीटने पर और भी अधिक दुःखित हुआ धैर्य न करसका और उस वाक्य के प्रतिपालन की मुझमें शक्ति न रही निदान मैंने वह सम्पूर्ण बृत्तान्त जो मेरे नेत्रों के सम्मुख हुआ था अपने चचा से कहा इस हाल को सुन उसे धैर्य हुआ और मुझसे कहा भतीजे तू ने सत्य कहा तेरे कहने से मुझे उसके मिलने की आशा है मुझे आगे से बिदितहै कि उसने एक क़बर यहां से समीप बनवाईहै उस में अवश्य होगा फिर मैं और चचा दोनों बेष बदल कि कोई अन्य

मनुष्य उस शाहज़ादे का भेद न जाने बाग़ के दरवाज़े से कि बन की ओर था निकलकर चले थोड़ीदूर गयेथे कि वह क़बर मिलगई मैंने तुरन्त उसे पहिचान लिया जब हम उस गुम्मज़ के अन्दर गये तो उस लोहे के किवाड़ को जिसके साथ सीढ़ी लगीहुई थी बड़ी कठिनता से खोला क्योंकि शाहज़ादे ने उसको भीतरकी ओरसे गच और चूना लगा बन्दकिया था जब हमने उस किवाड़ को खोला तो प्रथम चचा उस घरमें उतरे उनके पीछे मैंने जाकर देखा तो उस घर की डेवढ़ी धुयें की बुरी सुगन्ध से भरीहै वहां फिर बैठने की जगह में गये जहां अतिस्वच्छ दीपक जलते थे वहां एक छोटा तालाब दृष्टपड़ा कि जिसके चारों ओर खाने पीने की सामग्री बहुत रक्खी थी हम किसी मनुष्य को वहां न देख अत्यन्त बिस्मित हुये फिर अपने सम्मुख कुछ ऊँचे पर बैठने का स्थान और देखा कि जिसके किवाड़ों में पर्दे पड़ेहुये थे चचा सीढ़ी के द्वारा उस बैठने की जगह पर चढ़गये और पर्दा उठा अपने पुत्र और एक स्त्री को एक शय्या पर इकट्ठे देखा परन्तु वह दोनों परमेश्वर की क्रोधरूपी अग्नि से दग्धहो कोयले के समान काले होगये थे कि जैसा कोई उनको ज्व- लित अग्नि में डाले और राख होने के पहिले निकाले इस वृत्तान्त को देख मैं अत्यन्त भयभीतहुआ और पश्चात्ताप किया परन्तु मेरा चचा कुछ भी बिस्मित न हुआ और न इस बिषय को देख कुछ पश्चात्ताप किया उसने उस जले हुये शाहज़ादे के मुख पर थूक दिया और क्रोधित हो कहा देख इस लोक में तूने कितना दुःख पाया और परलोक में इससे भी अधिक पावेगा इस थूकने और कहनेसे भी उसका बोध न हुआ फिर उसने पांव से जूती उतार उसके मुख पर कई मारीं इस बात से मैं अत्यन्त शोकवान् और बिस्मित हुआ कि उसने क्यों अपने मृतक पुत्र से ऐसा अनुचित किया मैंने क्रोध कर उससे कहा एक तो मुझे शाहज़ादे की यह दशा देखने से शोक हुआ उससे अधिक आपके इस कर्म पर पश्चात्ताप है आप मुझ से यह कहिये कि इस मृतक शाहज़ादे से ऐसा बड़ा कौनसा अप- राध हुआ कि जो आपके ऐसे क्रोध का कारण हुआ चचा ने उत्तर

दि... कि हे भतीजे ! तू इस वृत्तान्त को नहीं जानता ये अधिक धिक्कार और दण्ड के योग्य हैं क्योंकि यह शाहज़ादा बाल्यावस्था से अपनी बहिन को प्यार कि.. करता था मैंने बाल्यावस्था के कारण कुछ अनुचित कर्म का विचार न किया जब वह दोनों बड़ेहुये और बुरा भला समझने लगे और दोनों में प्रीति भी अधिक बढ़ी तब मैंने इ..की बहुत रक्षा की और घर में .. ह्लादी कि ये दोनों बहिन भाई सन्मुख न होवें परन्तु वह अभागी लड़की भी उससे बड़ी प्रीति रखती थी यदि मेरे मनाकरने के कारण परस्पर भेंट न करसक्के और सन्मुख न होते थे परन्तु हृदय में एक दूसरे पर मोहित रहते यहांतक कि मेरे पुत्र ने उसको अपनी ओर पा यह घर मुझसे छिपा इस आशा से बनवाया कि समय पाय उसके समेत इस घर में रहै निदान जब मैं आखेट को गया तब शाहज़ादा उसको किसी प्रकार राजभ..न से निकाल इस घर में लाया और आपभी उसके साथ रह इस महल को बन्दरक्खा और पहिले से उसने नानाप्रकार के खाने पीने आदि की वस्तु यहां ला रक्खी थी एक अवधितक उसके साथ आनन्दपूर्वक यहां रहा परन्तु परमेश्वर ने शीघ्रही उन दोनों को ऐसे बड़े पाप का दण्डदिया जब ..दशाह इस वृत्तान्त को कह चुका तब हाहाकर बहुत रोया और मैं भी उसके साथ रोया फिर उसने रोधोकर मेरी ओर देखा और मुझे हृदय से लगाय कहा कि परमेश्वर की इच्छा योंही थी जो ..ह मरगया तो कुछ परवाह नहीं परमेश्वर तुझे ..ता रक्खै अब तूही उसके बदले मेरा पुत्र और युवराज है उसके पश्चात् मैं और वह बादशाह शाहज़ादे और उसकी बहिन के वास्ते बहुत रोये और वह ..सी सीढ़ी से ऊपर को चढ़आये और व.. किवाड़ बन्दकर ऊपर उसके मिट्टीआदि डाल छिपादिया फिर हम दोनों वहां से राजमहल की ओर चले वहां के पहुँचने के पहिले युद्ध के ढोलआदि सुनाई दिये और धूर आकाश की ओर चढ़ीहुई देखी कि वही राजमन्त्री जो मेरे पिता का राज्य छीन सिंहासन पर बैठाथा अब मेरे चचा के राज्यलेने के लिये बड़ी सेना को साथ लेआयाहै मेरा चचा कि थोड़ी सेना रखताथा उसका

सामना न करसका निदान उसने शहर को लेलिया और सेना उस की सुगमता से राजभवन पर चली आई मेरे चचा ने कुछ देरतक उनका सामना किया फिर अपने बैरी के हाथ से मारागया उसके पश्चात् एक दो घड़ी मैंने भी उनका सामना किया और बैरी से लड़तारहा जब चारोंओर से घिरगया और बदलालेनेकी सामर्थ्य न पाकर वहांसे भागा तब उस मन्त्री के एक सरदार ने मुझपर दया कर उस नगर से जीताजागता निकालदिया मैं अपने प्राण की रक्षा के लिये कि मुझे कोई न पहिचाने भौंह दाढ़ी मूंछ मुड़वा योगियों के स्वरूप बनगया और बड़ी कठिनता से गुप्तमार्गों से होकर अपने चचा के देश से निकला और बहुत से नगरों में भटकता हुआ फिरा अब अतिप्रतापवान् धीमान् अतिदयालु कृपालु दीनपोषक खलीफ़ाहारूंरशीद के राज्य में आ बुग़दाद में पहुँचा और इच्छा की कि उसी उदार बादशाह के चरणशरण में पडूं वह मेरी आपत्ति को सुन अवश्य कृपा करेगा सो कई मास के पश्चात् इस नगर के दरवाज़े पर पहुँचाथा कि सूर्य अस्त होगये चाहा कि किसी स्थान पर जाय रात्रि व्यतीतकरूं कि जिसमें कुछ सावधानता प्राप्त हो यह इच्छाकर थोड़ी दूर चला था कि इतने में दूसरा योगी जो मेरे निकट बैठाहै आया और मुझे प्रणाम किया मैंने उसे प्रणाम का उत्तर दे कहा तुम भी मेरे समान अन्यदेश के बासी जानपड़ते हो उसने उत्तरदिया कि तुम सत्य कहतेहो मैं इस नगर में अभी पहुँचा हूं यह बार्त्ता पूरी न होचुकी थी कि इतनेमें तीसरा योगी आय पहुँचा और प्रणाम कर कहा मैं भी अन्यदेश का बासी हूं फिर हम तीनों ने एकहीरूप और प्रकार के कारण भाइयों केसमान परस्पर मिल अलग होनेकी इच्छा न की हम सब इसी बिचार में थे कि रातको कहां रहेंगे क्योंकि पहिले कभी इस नगर में न आये थे और न किसी स्थान और नगर के बासी को जानने थे कि जहां जाय रात्रि व्यतीत करें निदान अपने अच्छे भाग्य से हम तुम्हारे दरवाज़े पर आये तुमने आतिथ्य के भांति पालनकर हमको अपने स्थान पर रख अति आनन्द दिया कि हम उसका धन्यवाद नहीं करसक्ते हे सुन्दरी! यह

वृत्तान्त है जो मैं आपकी आज्ञानुसार बर्णन करचुका जुबैदा ने कहा तेरा अपराध क्षमाकिया यह सुन उस योगी ने बिनती की कि यदि मुझे आज्ञाहो तो यहां ठहर दोनों अपने साथियों और तीन उन मनुष्यों का वृत्तान्त जो बर्तमान हैं सुनूं फिर मैं चलाजाऊंगा जुबैदाने उस आज्ञादी वह एक ओर जा बैठा यह पहिले योगी की था सबको अद्भुत अपूर्व जानपड़ी फिर दूसरे योगी ने जुबैदा से अपने वृत्तान्त को इस प्रकार कहना आरम्भ किया॥

दूसरे योगी की कहानी॥

दूसरे योगी ने पहिले योगी के समान जुबैदा के सम्मुख अपने वृत्तांत को इसप्रकार पर कहना आरम्भ किया कि हे सुन्दरी! आपकी आज्ञानुसार अपनी आंख का फूटना और उस कहानी में अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आपके सम्मुख बर्णन करताहूं सुनिये बाल्यावस्था से मेरे पिता ने मुझको विद्या में आरूढ़प्राय बहुत दूर २ के देशों से विद्वान् और शिल्पकर्म के जाननेवाले मेरे पढ़ाने के वास्ते इकट्ठा किये थोड़े समय में मैंने लिखना पढ़ना सीख कलामुल्ला याद कर लिया और सिवाय इसके स्मृति शास्त्रादिक अपने गुरुओं से पढ़ लिये और प्रत्येक शिल्पविद्या और इतिहास पहेली और काव्य और सरसवार्तिक अच्छे प्रकार सीखलिये और काव्यादिक विद्या और गणित विद्या आदि पढ़ अद्वितीय होगया और सिपाहगरी कि जो शाहज़ादे को अवश्य चाहिये प्राप्त की और सात प्रकार का लिखना सीखा कि मेरे समान उस समय में दूसरा कोई न लिखता था इस विद्या और गुण के होने पर भी ईश्वर ने मेरे प्रारब्ध की चिट्ठी ऐसी बुरी लिखी कि मेरी विद्या कुछ काम न आई और इस दशा को पहुंचाया कि जो वर्तमानहै हे सुन्दरी! मैं अपने पिता के सम्पूर्ण राज्य में बहुत विद्या होनेके कारण विख्यातथा इसमें हिन्दुस्तान का बादशाह मेरे देखने की इच्छा करनेलगा और एक दूत को बहुमूल्य उत्तम २ वस्तु सहित भेज मुझे बुलवाया मेरे पिता इस बात से अत्यन्त प्रसन्न हुये और समझे कि शाहज़ादे को देशों की सैर करना और देखना और बड़े २ बादशाहों की सभा में जाना भी अवश्य है

और इसका जाना हिन्दुस्तान और हमारे में अधिक प्रीति और मित्रता का कारण होगा सो मैं अपने पिता की आज्ञानुसार कुछ सेवक और बस्तु साथले दूत के साथ चला क्योंकि इतने दूर सफ़र में अधिक बस्तु और आदमियों का लेजाना कठिनता का कारण था चलते चलते ५० सवार शस्त्रसहित राह लूटनेवाले दिखलाईदिये और हम सबको घेरलिया मेरे साथ दश घोड़े कि जिनपर उत्तम २ बस्तु और सामग्री लदीथी जो अपने पिता के नाम से हिन्दुस्तान के बादशाह के निमित्त लिये जाताथा यदि मेरे सेवकों ने प्रथम उनका सामना किया परन्तु पराजितहुये तब हमने उन ठगों से कहा कि हम बादशाह हिन्दके दूतहैं हमें बिश्वास था कि ऐसे बड़ेभारी बादशाह का नाम सुन तुम हमसे कुछ न कहोगे और इसी कारण से हमारे प्राण और धन की हानि न होगी यह सुन मार्ग लूटनेवालों ने बड़ी ढिठाई से उत्तर दिया कि हम हिन्द के बादशाह को क्या सम-झते हैं न तो हम उसके नौकर और न उसके देश में रहते हैं इतना कह उन्होंने हमको चारों ओरसे घेरलिया यदि मैंने अपनी सामर्थ्य भर अपनी रक्षाकी निदान घायलहुआ और देखा कि वह दूत और सब मेरे संगी मारेगये तब मैं अपने घोड़े समेत कि वह भी घायल होचुका था वहां से अपने प्राण की रक्षाके हेतु भागा और घोड़ा दौड़ाकर लुटेरोंसे बहुत दूर निकलगया घोड़ा कि वहभी घायल था और दौड़ने के कारण थकगया था गिरकर मरगया उस समय मैंने बहुत ढाढ़स किया और समझा कि ठगों ने इतना द्रव्य लूटकर पाया है उसको छोड़ मेरा पीछा न करैंगे हे सुन्दरी! उस समय मेरे अकेलेपन और दीनता पर ध्यान कीजिये कि एक तो मैं कई दिनों का थका था दूसरे घायल तीसरे अकेला और उस ग्राम में मुझे कोई नहीं जानताथा कि मेरी सहायता करता इसके बिशेष यह भय था कि फिर मुझे ठग देख पहिचान न लें और मारडालें सो मैं अपना घाव बांध एक ओर को चला सायङ्काल को एक पहाड़ के नीचे पहुँचा और उसकी कन्दरा में सोरहा भोर को उस गढ़ेसे बाहरनिकला और क्षुधा से दुःखित हो बन के फल जो दिखाई पड़े तोड़कर खाये जब मेरे

शरीरमें सामर्थ्य आई तब वहांसे आगे चला इसीप्रकार भटकते २ कई मंज़िलें इस आशा पर पूरीकीं कि कहीं बस्ती दिखाईदे कि वहां जा श्रम दूरकरूं निदान कई एक मास के पश्चात् एक बहुत बड़े नगर में पहुँचा कि बहुत बसाहुआ था और उसका जल और बायु अति उत्तम था और खेती बाड़ी भी अच्छी थी और उसके चारों ओर बहुत सी नदी थीं इसकारण वह सदैव हरा और उत्तम रहता था उसकी उत्तम बायु और जल देख मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सम्पूर्ण दुःख और क्लेश कि मुझपर पड़ेथे भूलगया तब हे सुन्दरी! उस समय मेरी यह दशा थी कि वस्त्रफटे नङ्गेपांव और धूप से जल-कर काला होगया था इसी दशामें मैं उस नगर के बीच में गया कि मालूमकरूं इस नगर में कौनसी भाषा है और मेरा देश इस स्थान से कितनीदूर है यह बिचार एक सूचीकार के निकट गया उसने मुझे देख अपने समीप बैठाया और पूछा कि तुम कौन हो और कहांसे आये मैंने उससे अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त बताया सूचीकार ने मेरे बृत्तान्त को चित्तदे सुना और जब मैं सब अपना बृत्तान्त कहचुका तब उसने धीरज देनेके बिपरीत और मुझे अधिक डराकर कहा कि यह अपनी कहानी यहांके किसी रहनेवाले से न कहना और उस से भलाई का बिश्वास न रखना क्योंकि यहांका बादशाह तेरे पिता का बैरी है जो वह तेरे आनेका बृत्तान्त सुनेगा तो तेरे साथ अवश्य अनुचित करेगा सूचीकार से मैंने यह बृत्तान्त सुन जाना कि इसने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है धन्यबाद किया और कहा कि तुमने मुझको इस बातसे चैतन्य किया मैं किसी से अपना बृत्तान्त बर्णन न करूंगा हे सुन्दरी! फिर मैंने वहां के बासियों से अपना बृत्तान्त और अपना और अपने पिता का नाम न कहा फिर वह सूचीकार मुझे भूखा जान मेरे लिये खानेको लाया और अपने घरमें लेजाय रहने के वास्ते स्थान दिया मैं उसमें रहने लगा जब सूचीकार ने देखा कि इसकी थकावट दूर होगई पूछा कि तुम्हें कोई बिद्या ऐसी आती है कि जिससे तुम अपनी जीविका प्राप्त करो मैंने कहा मैं अपनी बिद्या और ब्याकरण और लेखकी और काब्य आदि में

अद्वितीयहूं सूचीकार ने कहा इन सब से कि जिनका तुम ने नाम लिया इस नगर में एक ग्रास भी न प्राप्त करसकोगे इस नगर में विद्या की कुछ पूछ नहीं जो मेरा कहना मानो तो तुम बलवान् और सामर्थ्यवान् विदित होते हो एक जांघिया बनवाकर पहिनलो और बनसे जलाने के वास्ते काष्ठ लाके इस शहर के बाज़ार में बेंचाकरो तुम्हें इतना होगा कि दूसरे मनुष्य की सहायता बिना अपनी जीविका प्राप्त होगी थोड़ेदिन इसी श्रम से अपना कालक्षेप करो परमेश्वर तुमपर दयाकरैगा और ये दुःख जो तुमपर आयरहा है निवृत्त होगा तुमको मैं एक कुल्हाड़ी और एक रस्सी मँगवादूंगा हे सुन्दरी! मैंने जीविका के हेतु इस नीचकर्म को अङ्गीकार किया सूचीकार ने दूसरे दिन मेरे वास्ते कुल्हाड़ी और रस्सी और घुटन्ना मोल ले दिया और मुझे उन मनुष्यों को सौंपा जिनकी जीविका लकड़ी बेंचनेपर थी और उनसे कहा कि इस मनुष्य को अपने साथ लकड़ी काटने को बन में लेजाया करो मैं उन लकड़िहारों के साथ बन में जाता और बड़ा गट्ठा काष्ठ का काटलाता और उसे बाज़ार में ले जाकर एक सोने के टुकड़ेको कि चलन उस शहरका यही था बेंचता यदि काष्ठ का बन उस नगरसे बहुत दूर न था परंतु लकड़ी वहां बहुत महँगी बिकती थीं क्योंकि वहांके बासी आलस्य से इस कार्य को न करते थे कि जंगलमें जावें और लकड़ियोंको काटें और अपने शिर पर लावें थोड़ेदिनों में मैंने बहुतसा सुवर्ण इकट्ठा किया और उसमें से थोड़ासा उस सूचीकारके उपकार के बदले में जो मेरे साथ किया था उसको दिया इसीप्रकार मुझे एक पूरा वर्ष व्यतीत हुआ एक दिन उस बनसे मैं और आगे बढ़गया और वह स्थान मुझे बहुत अच्छा मालूमहुआ मैं काष्ठ काटने में लगा जब एक वृक्ष ऊपर से काटचुका और जड़ उसकी काटनेलगा तो दैवयोग से उस जड़के नीचे मुझे एक कड़ा जो लोहेके दरवाज़े में लगाथा देखपड़ा मैं तुरन्त वहांकी मिट्टी हटा कुल्हाड़ी और रस्सीसहित नीचे उतरगया तो अपनेको एक बड़े भारी घरमें पाया और उसमें पृथ्वीके सदृश प्रकाश था फिर मैं आगे गया वहां एकबड़ालम्बा दालान पाया जिसके पाये मूसापत्थरके और

खम्भे ऊपर से नीचेतक सु र्ण के बनेहुये थे उसमें एक सुन्दरी परम रूपवती मेरी दृष्टिपड़ी कि जिसके देखतेही मैंने दूसरी ओर न देखा मैं उसके सम्मुख या और प्रणाम किया उस सुन्दरी ने मुझसे पूछा तू कौन है मनुष्य है वा पिशाच है मैंने अपना शिर उठाके कहा हे सुन्दरी! मैं मनुष्य हूं पिशाच नहीं उस स्त्री ने ठंढीश्वास ले कहा तू यहां क्योंकर आया मुझे पच्चीस वर्ष से अधिक व्यतीत हुये कि यहां रहतीहूं परन्तु सिवाय तेरे अन्य मनुष्यको नहीं देखा उस स्त्रीके रूप अनूप और नम्रता और उसकी छ और कोमल वचन पर मैं ऐसा मो तहुआ कि मुझे बोलनेकी सामर्थ्य न रही निदा उसकी प्रिय वाणी से थो ी देर के पश्चात् मुझे वात कहने की सामर्थ्य हुई तब ने विनती की कि वृत्तान्त मालूम होजाने के पहिले केवल तुम्हारे देखनेही से मैं प्रसन्न और हर्षयुक्त हुआ और अपने सब दुःख और क्लेश को भूलगया और ताहूं कि तुम्हें इस बुरी दशा से छु . हूं फिर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णन किया और कहा मैं तुमको इस दशा में देख नहीं सक्ता उस स्त्री ने श्वास भर कहा हे शाह-जा ! तू सत्य कहता है इ धन औ वस्तु के होनेपर भी मुझे इस हू के स्थान में भी रहना अच्छा नहीं लगता तुमने सुनाहोगा कि अबूतैसरस नाम बड़ा बादशाह आबोनी द्वीपों का है जहां आब-नूस की लकड़ी पैदा होती है मैं उसी बादशाह की पुत्री हूं मेरे पिता ने मुझको अपने भतीजे के साथ कि वहभी शाहज़ादा था विवाह करदिया जब कि अपने पतिके घर जानेलगी तब एक दुष्ट पिशाच मुझको लेकर वहां से उड़ा मैं उसी समय में बेसुधि होगई तीनपहर के पश्चात् ब मैंने सुधि सँभाली तो अपने को इस घर में पाया तभी से मैं इस घर में रहतीहूं और इस पिशाच के निकट मेरा उठना बैठना है इस धन और वस्तु से जो यहां वर्तमान है मुझे कुछ हर्ष हीं केवल सामग्री और सजध से धैर्य नहीं होता दशवें दिन वह पिशाच यहां आता और केवल एक रात मेरे पास रहता है उस का विवाह किसी और स्त्री के साथ हुआ है इसलिये अपनी स्त्री के भय से सदैव नहीं रहसक्ता और यदि दश दिन के मध्य में कभी

मुझे उस पिशाच का बुलाना स्वीकार हो तो केवल जादू की बस्तु के छूनसे कि वह मेरे शयनस्थान के समीप बनाहुआ है उसके स्पर्श से वह आजाताहै उसको यहां से गये चार दिन व्यतीतहुये हैं छः दिन के पश्चात् वह फिर यहां आवेगा जो तुम्हें मेरा संग और यहांका रहना अंगीकार हो तो पांच दिवस तक यहां रहो मैं तुम्हारी भली भांति प्रतिष्ठाकरूंगी य बचन सुन मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और इच्छारखताथा कि किसी प्रकार उस घर में ऐसी स्वरूपवान् स्त्री के निकटरहूं मुझे अंगीकार करतेही वह मुझे एक सुन्दर स्नानागार में लेगई जब मैं स्नानकर बाहर आया तो उत्तम २ सोनहरी पहिरने के बस्त्र दिये उनको मैंने पहिना कि जिनके पहिनने से और भी उसकी दृष्टि में अच्छा बिदित होनेलगा तदनन्तर हम दोनों एक बड़े सुन्दर दालान में मसनद पर जो कि सुनहली कीमखाब से सजा हुआ था बैठे उसने मेरे आगे नानाप्रकार के स्वादिष्ठ व्यञ्जन लायधरे और मेरे साथ बैठ भोजन किया जब रात्रि हुई मुझे अपने शयनस्थानपर लेजाय सुलाया दूसरे दिन भोर को उत्तम २ पाक बनाये और भोजन के विशेष मेरी प्रसन्नता के अर्थ पुराने मदिराकी बोतल लाई और कई गिलास मुझको पिलाये जिसके पीतेही मैं मस्तहुआ उसी दशा में मैंने उससे कहा हे प्यारी! तुम बहुत वर्षों से इस पृथ्वीमें बन्दहो मानो जीतेही क़बर में हो अब तुम मेरे साथ चलो और संसार की हवा खाओ कि जिससे तुमको प्रसन्नता हो और इस थोड़े उजियाले को जो केवल जादू से ही है परित्याग करो यह सुन उस सुन्दरी ने कहा ऐसी अनुचित बार्त्ता मत करो मुझे सूर्य का उजियाला जो तुम कहतेहो न चाहिये मुझको यहीं रहनेदो नव दिन तुम यहीं रहाकरो दशवां दिन उस पिशाच को छोड़दो मैंने कहा तुम पिशाच से बहुत डरतीहो मैं अपने प्राण के वास्ते कुछभी नहीं डरता उसकी जादू की बस्तुको तोड़ और जादू जो कि उसपर कुछ लिखी है बिनाश करदूंगा उसको आनेदो देखूं वह कैसा बलवान् और बिकराल स्वरूप है उसके लिये एक हाथ मेरा बहुत है मैंने प्रण किया है कि सब पिशाचों को संसार से नष्ट करदूं और सब

के प्रथम इस पिशाच को मारूं वह स्त्री इस अनुचित कर्म के फल
को अच्छी तरह जानती थी मुझको सौगन्द देकर कहनेलगी कि
चैतन्यरह इससें हाथ न लगाना नहीं तो हम तुम दोनों मारेजायँगे
मैं पिशाचों के हाल और सामर्थ्य को अच्छी तरह जानती हूं मैंने
मदिरा के नशे में उसका उपदेश कुछ न सुना और उस जादू की वस्तु
को तोड़डाला इतने में बड़े ज़ोर से वह महल हिलनेलगा और उसके
साथ एक भयानक शब्द बादल के गर्जने के समान हुआ और चारों
ओर अँधेरा होगया बिजली के समान प्रकाश होनेलगा इस अद्भुत
और भयानक दशा को देख नशा मेरा जातारहा और सुधिसँभाल
शोचा तूने बड़ा अनर्थ किया फिर मैंने उस स्त्री से पूछा अब क्या
किया चाहिये वह अपने प्राण का डर न कर मेरे वास्ते बहुत कुढ़ी
और पश्चात्तापकर उत्तर दिया कि तुम इस आफ़त को आपही अ-
पने शिरपर लाये अब यहां से भागो और अपने को बचाओ यह सुन
मैं वहां से ऐसा घबड़ाकर भागा कि अपनी कुल्हाड़ी और रस्सी को
वहीं छोड़दिया और शीघ्रही उठते बैठते उसी सीढ़ीतक कि जिससे
उस मकान में उतराथा पहुँचा इतने में वह पिशाच भी क्रोधितहो
वहां आनपहुँचा और उस सुन्दरी से अतिक्रोधितहो पूछा तूने
मुझको क्यों बुलाया उसने भययुक्त और कम्पायमान होकर कहा
मैंने इस बोतल से थोड़ी सी मदिरा पी थी जिसको तुम देखते हो
सो नशे में मेरा पांव इसपर अनजाने से लगा सो यह टूटगया इस
से तुमको खबर हुई मैंने तुमको नहीं बुलाया यह सुनतेही पिशाच
ने आगबबूला हो उस सुन्दरी से कहा तू कुकर्मिणी और दुष्ट है इस
कुल्हाड़ी और रस्सी को यहां कौन लाया स्त्री ने कहा मैंने अबतक
इसे नहीं देखा जल्दी से तुम आये हो तुम्हारे हाथ से लगी हुई
चलीआई होगी तुमने मार्ग में इसे न देखाहोगा पिशाच ने उस स्त्री
को बुरा भला कह बहुत मारा जिससे वह तड़पने और रोनेलगी
उसके रोनेके शब्द न सुनेजाते थे और वह मारधाड़ कि जो उसपर
पड़ती थी और चिल्लाना उसका सुनकर वह मेरी दशाहुई कि जिस
का वर्णन नहीं होसक्ता निदान मैं वह वस्त्र जो कलके दिन स्नानकर

पहिने थे उतार निजवस्त्र पहिन उस सीढ़ी से ऊपर चढ़आया और अपने बुराभला कहनेलगा बड़ा पश्चात्तापहै कि मेरे अज्ञानपन और निर्बुद्धिता से यह दुःख उस स्त्री पर रहा है यदि वह २५ बर्ष से उस घर में बन्दहै परंतु कभी ऐसा दुःख इस पिशाच के हाथ से न हुआ होगा फिर मैंने उस लोहे के किवाड़को मिट्टी से बन्दकर छिपादिया और बोझा लकड़ियों का कि आगे से इकट्ठाकर रक्खा था शिर पर रख उस नगर में आया और बिचारता था कि देखिये इस कर्म से मुझे क्या दुःख पहुँचता है अत्यन्त क्लेशित था जब मैं अपने स्थान पर आया वह सूचीकार मुझे देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ और कहनेलगा कि तुम्हारे कल के न आनेसे मुझे अत्यन्त चिन्ता थी कि ऐसा न हो तुम्हारा पुराना बृत्तान्त सुन यहांके अधिपति ने क़ैद किया हो परमेश्वर का धन्यवाद है कि तुम जीते जागते फिर आये मैंने उसकी प्रीति पर धन्यवाद किया परन्तु वह कर्म कि जो मुझसे हुआ था उससे न कहा और अपने मकान में जाकर अपनी अज्ञानता पर धिक्कार देतारहा कि जो मैं उस जादू की बस्तु को न तोड़ता तो वह राजपुत्री इस दुःख में न पड़ती और मैं नौ दिनतक अच्छे प्रकार रहता इसी चिन्ता में था कि उस सूचीकार ने मेरे निकट आय कहा कि एक बृद्ध जिसे मैं नहीं जानता तुम्हारी कुल्हाड़ी और रस्सी हाथ में लेकर आयाहै और कहता कि मैंने इन दोनों बस्तुओं को मार्ग में पाया है कोई तुम्हारे साथियों से कि जिनके साथ तुम लकड़ी काटने जाया करतेहो उनकी जानपड़ती है चलके अपनी बस्तुको पहिचानकर लेआओ वह बिना तुम्हारे न देगा इस बात के सुनतेही मेरा मुख बदल गया और शिरसे पैरतक कांपनेलगा सूचीकार मुझसे भय का कारण पूछनेलगा अभी मैंने उसे उत्तर न दिया था कि एकही बेर मेरे कोठे की धरती फटगई और वह पिशाच मेरे आनेतक की राह न देखकर कुल्हाड़ी और रस्सी लिये प्रकटहुआ और सचमुच वह बृद्ध पिशाच था फिर उसने कहा मैं पिशाचहूं नवासा इबलीस का जो पिशाचों का बादशाह है और उस कुल्हाड़ी और रस्सी को दिखलाकर कहा यह तेरीहै या नहीं उसने मुझे

उत्तर देनेका अवकाश न दिया यदि मुझको उस विकराल स्वरूप दे-
खनेसे उत्तर देनेकी सामर्थ्य नहींथी और बेसुधहोगयाथा कमरसे मुझे
पकड़ बाहर खींचलाया और एकहीबेर आकाश की ओर एक पल में
तने ऊंचे ले उड़ा कि जिसके चढ़ने में कई मास व्यतीत होते फिर
उसने धरती पर उत एक ठोकर मारी जिससे धरती फटगई वह मुझ
को लियेहुये समागया एक घड़ीके पीछे मैंने अपनेको उस जादूके घर
में उसी राजपुत्री के सम्मुख पाया परन्तु बड़ा पश्चात्ताप है कि उसको
नग्न लोहू लुहान अध री तड़पती हु पृथ्वी पर लोटती देखा फिर
उस पिशा ने मुझको उस राजपुत्री का हाल दिखलाकर कहा कि
निर्लज्ज यही तुझपर मोहित है उसने ढीलीदृष्टि देख कहा मैं इसको
नहीं जा ती इस समय के सिवाय और कभी मैंने इसको नहीं देखा
पिशाच ने कहा क्या तू सत्य कह ती है कि इसको कभी नहीं देखा यही
मनुष्य तेरे बध क ने का कारणहुआ राजपुत्रीने कहा तू चाहताहै कि
मैं असत्य कहूं कि मैंने देखाहै कि तू उसे मारडाले फिर पिशाच ने
खड्ग राजपुत्री को दे कहा जो तूने इसको आगे नहीं देखाहै तो इस
खड्गसे इसका शिर काट राजपुत्री ने कहा मुझमें इतनी सामर्थ्य कहां
है कि खड्ग को उठासकूं और इसके सिवाय मैं एक निर्दोष मनुष्य को
क्यों मारूं पिशाच ने कहा तेरे इन्कार से पापस्पष्ट जान पड़ता है फिर
पिशाच ने मुझसे कहा तू इस को जानता है और इसको आगे देखा
है मैंने विचारा जब इस राजपुत्री ने कि व स्त्री होकर इतना और
पास मेरा किया यदि मैं उस बात को प्रकटकरूं तो अत्यन्त अशी-
लता है मैंने भी इन्कार किया कि केवल मैंने इसी समय देखाहै उसने
कहा जो तू सत्य कहता है तो खड्ग ले उसका शिर काटडाल मैं तुझको
छोड़दूंगा और जानूंगा तू सच्चाहै मैंने खड्गको पिशाचके हाथसे लेकर
अपने मन में बिचारा कि बड़ा शोच है कि इस निर्दोष सुन्दरी को जो
मेरेही अपराध से अपराधी होकर इस दुःख में पड़ी है उसे मैं मारूं
और अपने प्राण बचाऊं यह मुझसे कभी न होगा और उस स्त्री ने
मेरी ओर देख और मेरी चेष्टा से मेरे मनकी बात मालूमकर सैन से
कहा कि मैं तो मरने के निकटहूं अपने प्राण बचाने वास्ते मुझको

मारडाल मैं इसमें प्रसन्न॑ तदनन्तर मैंने पीछे को हट और खड्ग को हाथसे फेंक पिशाच से कहा मैं नपुंसक नहीं कि उसको जिसे नहीं जानता मारूं इसके सिवाय ऐसी सुन्दरी कि घड़ी पल की होरही है अब जो तेरा मन चाहे वह कर मैं तेरे आधीनहूं परन्तु यह काम मुझसे कदाचित् न होगा पिशाच ने कहा तुम दोनों ने मेरे क्रोध को बढ़ाया और तू जानता है कि मुझमें कितनी सामर्थ्य है इतना कह उस दुष्ट ने दोनों हाथ उस स्त्री के काटडाले सो उसने उसी समय देह त्यागदी क्योंकि पहिले घावों से सम्पूर्ण रुधिर उसके शरीर से निकल गया था इस दशाको देख मुझे मूर्च्छा आगई जब चैतन्य हुआ तो महाव्याकुल हुआ और पिशाच से क॰ा अब तुरन्त मुझे भी वधक॰ यह सुन उसने कहा हमारी यह रीति है कि जब किसी स्त्री पर व्यभिचार का संदेह होता है तो उसे प्राण से मारडालते हैं तुझको कि केवल सं॰ह है और तू परदेशी है इसलिये मार नहीं सक्ता तुझे यही दण्ड है कि कुत्ता वा गधा वा सुअर अथवा कोई पशु पक्षी बनाकर छोड़दूं अब जिसकी योनि चाहे उसी शरीर में तुझे बना दूं मैंने इन बातों से तनक उसको ठंढा पाकर कहा हे बलवान् पिशा॰! जैसे तूने मुझे प्राणदान दिये हैं आशावान् हूं कि मुझको इसी योनि में रहने दे यदि तू मे॰ा अपराध क्षमा करेगा तो मैं तेरा कृतज्ञ हूंगा जैसा कि एक सत्पुरुष ने अपने पड़ोसी का कि उसने उसके साथ बुराई की थी अपराध क्षमा करके उसके साथ बड़ा उपकार किया था पिशाच ने पूछा उन दोनों पड़ोसियों में क्या हुआ था मैंने उस से कहा कि ध्यान धरके सुनिये ॥

ईर्षा और सत्पुरुष की कहानी ॥

एक बड़े नगर में दो मनुष्य रहते थे और दरवाज़ा एक के घर का दूसरे के दरवाज़ा से समीप था उनमें एक मनुष्य अपने पड़ोसी से ईर्षा रखता था दूसरे सत्पुरुष को उसके बैर करने से इच्छाहुई कि इस घर को छोड़ अनत जायरहें कि यह बैर निकट रहने के कारण रखता है इससे दूसरे होजावें यदि यह ईर्षा के साथ सदैव उपकार करता परन्तु वह अपने बैर को न छोड़ता यहां तक कि उस सत्पु-

नम्बर ९ मुतअ़ल्लिक़ सफ़े १०० प्र.भा.

चित्र जिन की औरत हसीना को क़तल करके मर्द से मुख़ातिब होना ॥

रुष ने सम्पूर्ण निज बस्तु और घर बेंच दूसरे नगर में जो वहां से डेढ़ कोस दूर था ए उत्तम घर जिसमें एक उत्तम बाग और एक अन्धा कुवां था मोल लिया और रहनेलगा फिर वह सांगोपांग योगियों के वस्त्र पहिन सन्त बनगया कि अवस्था हरिभजन से आनन्द में ब्यतीत हो और कई मकान अपने घर में बनवाये जिन में सन्तों को रख सदैव भण्डारा किया करता यह समाचार नगर में ख्यात होगया और बहुधा मनुष्य उसकी भेंट को आते और उसके सत्संग से प्रसन्न होते इसी प्रकार उसका नाम सुन दूर २ से मनुष्य आनेलगे और उसे परमहंस समझ अपने अभिप्राय को कहना और उससे बरकी आशा रखनी आरम्भ की यहांतक कि उसकी बड़ाई और सिद्धता का समाचार उस नगर में जिसे छोड़ कर यहां आया था पहुँचा इससे उसके ख्यात का समाचार सुन ईर्षी को बड़ी दाह उत्पन्नहुई और उसके बध करने को सम्पूर्ण निजकाम छोड़ वहां गया और मन्दिर में जाय उससे मिला तो वह सत्पुरुष अपने प्रथम के पड़ोसी को पहिचान प्रतिष्ठापूर्वक मिला ईर्षी ने मक्कर और धोखा अपने चित्त में बिचार उससे कहा मुझे एक कठिन कार्य आय पहुँचा है जिस कारण इस नगर में आयाहूं जो तुम कहो तो उसको तुमसे एकान्त स्थल में प्रकटकरूं कि और कोई उसे न सुने और उस समय अपने सन्तों से कहदेना कि कोई अपने घर से बाहर न निकले उस सिद्ध ने उसके अभिप्राय के अनुसार किया जब उस ईर्षी ने उस उत्तम मनुष्यको एकान्तमें पाया तो अपने आनेका कारण झूठमूठ चित्तसे बनाय उससे कहना आरम्भ किया और वार्त्ता में लगाय टहलताहुआ इधर उधर जाय उस कुयें के समीप लेगया और वहां पहुँचतेही सिद्ध को कुयें में ढकेलदिया उस समय वहां कोई न था कि इस समाचार को देखता निदान ईर्षी अपना कार्य कर और मन्दिर का दरवाज़ा बन्दकर चुपके से भाग गया और इस कार्य के पूर्ण होने से अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कहा कि अब इस मनुष्य की ओरसे जिसकी बढ़ती और भलाई को मैं न देखसका था मुझे धैर्य हुआ वह ईर्षी इस विचार से धोखे

में पड़ा वह सिद्ध तो भाग्यवान् था परियां जो उस कुयें में रहती थीं हाथोंहाथ उसको लिया जिससे उसको किसी प्रकार का दुःख न पहुंचा और ुयें के अन्दर बैठादिया वह सिद्ध ईश्वर का धन्यबाद कर शोचा कि इस कुयें के गिरने में भी मेरे वास्ते कुछ भलाई होगी फिर उसने चारों ओर दृष्टि की तो कोई वहां दिखाई न दिया थोड़ी देर के पश्चात् उसने एक शब्द सुना कि कोई मनुष्य कहता है कि तुम इसको जानतेहो कि यह कौन है दूसरा शब्द सुनाई दिया कि हम इसको नहीं जानते फिर पहिले कहनेवाले ने कहा मैं तुमको इसका बृत्तान्त जनाताहूं यह मनुष्य अतिशीलवान और सिद्ध है अपना नगर छोड़ यहां रहना अंगीकार किया कि अपने पड़ोसीके बैर से अलग हो इस नगर में ईश्वर ने उसकी सिद्धता बढ़ादी इस कारण उसकी सब प्रतिष्ठा करते हैं ईर्षी ने यह समाचार सुन अधिक बैर किया और उसे मार डालने का बिचारकर इस नगर में आया और यहां आयके उसको इस कुयें में डाल दिया यदि हम उसकी सहायता न करते तो मरजाता क इस नगर का बाद-शाह इसके निकट आय अपनी पुत्री के अच्छे होने के आशीर्बाद की चाहना करैगा दूसरे ने पूछा कि उस शाहज़ादी को कौनसा रोग है पहिले शब्द के कहनेवाले ने उत्तर दिया कि शाहज़ादी पर मैमूं पिशाच का पुत्र डिमडिम मोहित हुआहै कि जिससे वह सदैव रोगी और बेसुध रहाकरती है और मुझे उस पिशाच के हटाने का उपाय बिदित है वह अतिसुगम है मैं उसे बताताहूं इस योगी के घर में एक काली बिल्ली है कि जिसके पूंछ के सिरे पर श्वेत चिह्न है उसी श्वेत चिह्नके स्थानसे यह सिद्ध सात बाल उखाड़ अपने पास रक्खे और समय पर उन बालों को अग्नि में जला उसकी धूनी शाह-ज़ादी की नाक में दे धुआं नासिका में पहुँचतेही वह निरोग होजा-यगी और वह पिशाच उसके निकट कभी न आवेगा सत्पुरुष ने यह सब बार्त्ता जो परियों और जिन्दों में हुई थी अच्छे प्रकार स्मरण रक्खी जब भोर हुआ और उस कुयें में सूर्य के प्रकाश से देखा तो खन्दाने खुदेहुये पाये उनमें पांव रखताहुआ सुगमता

से ऊपर आया सम्पूर्ण संत जो कि ढूंढ़ते फिरते थे सिद्ध को देख अत्यन्त प्रसन्नहुये सत्पुरुष भी सब हाल अपने चेलों से प्रकटकर अपने घर में गया थोड़ी देर न हुई थी कि काली बिल्ली जिसका परियों और जिन्नों ने बर्णन किया था आई उस सिद्ध ने उसको पकड़ सात बाल श्वेत उखाड़े और अपने पा रखछोड़े सूर्य न उदय हुयेथे कि उस नगर का बादशाह उस सिद्ध के भवन पर आया और मन्दिर के दरवाजे पर निज सेना छोड़ कुछ सरदारों सहित अन्दर गया वह सिद्ध उसकी अगवानी कर उसे अपने भवन में लेगया बादशाह ने उससे कहा कि हे अन्तर्यामी! तुझको मेरे आगमन का हाल विदित हुआ होगा योगी ने कहा कि तुम शाहज़ादी के रोगयुक्त होने के कारण आये होगे और मुझ अयोग्य को अपने चरणों से कृतार्थ किया बादशाह ने कहा सत्य है मैं इसीवास्ते आया हूं जो तुम्हारे आशीर्बाद से मेरी बेटी अच्छी होजाय तो मेरा जीवन सफलहो उस सिद्ध ने उत्तरदिया जो आप शाहज़ादी को यहांपर बुलवाभेजें तो मैं परमेश्वर के अनुग्रह और अनुकम्पा से अच्छा करदूं बादशाह यह सुन अतिप्रसन्न हुआ और अपनी बेटीको तुरन्त लौंड़ियों सहित बुलवाया बांदियों ने उसका मुख इसतरह छिपाया था कि किसीकी दृष्टि उसपर न पड़े योगी ने एक चादर से शाहज़ादी का शिर इसतरह से घेरा कि जिससे धुआं बाहर न निकलसके फिर वे बाल तुरन्त अग्नि पर रख उसकी धूनी शाहज़ादी को दी इतना करतेही मैमूं पिशाच का पुत्र डिमडिम चिल्लाया और बड़ा शब्द कर उसने शाहज़ादी को छोड़दिया शाहज़ादी अच्छी हुई और सुधि सँभाली और शीघ्रही अपने हाथ से बस्त्र डाल मुख अपना छिपा लिया और पूछनेलगी कि मैं कहां और मुझे इस स्थान पर कौन लाया बादशाह ने अत्यन्त हर्षयुक्त हो शाहज़ादी को अपने कण्ठ से लगालिया और नेत्र चूमे फिर योगी के हाथ चूमे और अपने सरदारों से पूछा कि इस योगी के साथ कौनसा उपकार करूँ सरदारों ने एक मत हो कहा हमारे विचार से यह उचित है कि इस शाहज़ादी का विवाह इस योगी के साथ करदो बादशाह ने कहा कि मेरा भी यही

बिचार था फिर उसने उसका विवाह उस योगी के साथ करदिया थोड़े दिनों के पश्चात् वहां का बड़ा मन्त्री मरगया बादशाह ने उसयोगी को बड़ा मन्त्री नियत किया फिर वह बादशाह भी मरगया और वह शाहज़ादी के सिवाय कोई युवराज न रखता था सो वह योगी सेना और सरदारों के सम्मत से अपने श्वशुर के स्थान पर बादशाह होगया एक दिवस वह अपने सरदारों सहित सवार होके जाता था संयोगवश उसने अपने बैरी को बहुत से मनुष्यों के यूथ में देखा उस योगी ने कि अब बादशाह हुआ था अपने मन्त्री के कान में कहा कि उस मनुष्यको प्रतिष्ठापूर्वक सधैर्य्य जिसमें वह किसी प्रकारका भय न करै मेरे निकट लेआ मन्त्री तत्काल उस मनुष्यको बादशाहके सम्मुख ले आया बादशाह ने उस अपने ईर्षी से कहा हे मित्र! मैं तुझ को देख अतिप्रसन्न हुआ फिर उसने एक हज़ार अशर्फ़ी और बीस गठरी वस्त्र मँगाके उस ईर्षी को दिये और एक पहरा सिपाहियों का उसके साथ किया कि वह उसको रक्षापूर्वक उसके घर पहुँचादे हे सुन्दरी! जब मैं इस कहानी को पूरा करचुका तो अपने छूटने के वास्ते पिशाच से कहा हे पिशाच! देख तो उस शीलवान् बादशाह ने कैसा सलूक अपने बैरी के साथ किया था और कितनाही मैंने उससे बिनती की कि अपनी इच्छा से हटजावे और मुझे दण्ड न दे परन्तु उस बिकरालरूप पिशाच ने मुझ पर दया न कर कहा कि तुझे प्राण से न मारूंगा परन्तु दण्ड दिये बिना न छोड़ूंगा अब देख जादू से तेरे साथ क्या करता हूं यह कह उसने मुझे पकड़ा और उस भवन से जो पृथ्वी के अन्दर उसके आने से खुल गया था लेकर ऊपर को इतने ऊँचे उड़ा कि जहांसे धरती बादलके टुकड़े के समान दीखती थी फिर उस ऊँचे से शीघ्रही बिजलीके समान एक पहाड़ की चोटी पर लेउतरा और वहां से एक मुट्ठी मिट्टी की ले कुछ उसपर मन्त्र पढ़े कि जिसका अर्थ मैंने कुछभी न समझा फिर उसको मेरे ऊपर डाल कहा कि मनुष्य का चोला छोड़ बन्दर का स्वरूप बनजा यह जादू मुझ पर कर वह पिशाच गुप्त होगया और मैं अपने चोले को बन्दर के चोले में देख अत्यन्त दुःखित और चिन्तायुक्त हुआ

और कुछ नहीं जानता कि मैं किस जगह हूँ और वहांसे मेरे पिता का देश किसओर और कितनी दूर पर है और उस जगह से अन-जान हूँ कहां जाऊं और क्या करूं निदान उस पहाड़ से उतर एक देश में कि जिसकी पृथ्वी धरातल थी बराबर एक मास तक उसमें चलतारहा निदान एक समुद्र के तट पर कि जिसका जल कुछ भी न हिलता था गया और उसके कूल पर एक जहाज़ देखा चाहा कि किसीप्रकार वहांतक पहुँचूं इस वास्ते एक वृक्ष से टहनियां तोड़ घसीटताहुआ समुद्र के तट पर लेगया और उसको समुद्र में डाल उसपर चढ़बैठा और दोनों हाथों से दो टहनियां पकड़ तैरनेलगा और इसी प्रकार जहाज़ की ओर चला जब उसके समीप पहुँचा तो जहाज़ के मनुष्य मुझको देख अतिविस्मित हुये मैं जहाज़की रस्सी पकड़ उसपर चढ़गया जहाजी मुझे बन्दर के रूप में देख अत्यन्त आश्चर्य में हुये यदि मुझमें वाचालशक्ति न थी इस कारण मैं अ-पना वृत्तान्त किसीसे कह न सका और आश्चर्य से सबकी ओर देखता था और यह आपत्ति उस दुःख से कि जिसके फन्दे में पड़ा था न्यून न थी उस जहाज़ के सम्पूर्ण व्यापारी नानाप्रकार के वि-चार करते और मेरा जहाज़ पर रहना कुलक्षण समझते इसहेतु मेरे निकालदेने का विचार करनेलगे एक ने कहा अभी एक लठ मार मारडालता हूं दूसरे ने कहा रहजा इसे मैं तीर से मारेडालता हूं तीसरा बोला मैं इसे समुद्र में डाले देता हूं इसी प्रकार वो सब मेरे मारनेको उद्यत थे इतने में मैं दौड़कर जहाज़ के कप्तान के नि-कटगया और उसके चरणों पर गिर उसका वस्त्र पकड़लिया और सैनसे कहा मैं तुम्हारे शरण हूं मुझे बचावो और मेरे नेत्रों से आंसू चले कप्तान ने मुझपर दया कर मेरी ओर हो सबको मेरे दुःख देने से हटादिया और कहा इस बानर से कोई न बोलै और इसे कुछ दुःख न पहुँचावे फिर उसने मेरी ऐसी रक्षा की कि मुझको कुछभी दुःख न पहुँचा यदि मैं बात न करसक्ता था परन्तु सैनसे उससे बात क-रताथा और वह मेरी सैन समझ अत्यन्त प्रसन्न और हर्षयुक्त रहता और उस समय से अन्य मनुष्य भी मुझपर प्रसन्न होगये इसी

प्रकार ५० दिन तक चला किये यहांतक कि वह जहाज़ बहुत बड़े व्यापारस्थान में पहुँचा जिसमें बहुतसी बस्ती थी और उसमें घर भी उत्तम २ थे जहाज़ीलोगों ने जहाज़ को नगर के निकट ठहराया और वह नगर बड़े ऐश्वर्यवान् बादशाह की राजधानी थी जहाज़ में लङ्गर करतेही बहुत से मनुष्य जो उन व्यापारियों के मित्र थे नावों पर सवार हो धन्यबाद देने को आये और जहाज़ को चारों दिशा से घेरलिया प्रत्येक मनुष्य अपने २ मित्र से मिल सफ़र और समुद्र का बृत्तान्त पूछता क्योंकि वह जहाज़ दूर २ के देशों और नगरों में गया था उस नगर के बासियों में कोई बादशाह के सरदार भी थे उन व्यापारियों को बादशाह की ओर से कहते थे कि हमारा बादशाह तुम्हारे आने से अत्यन्त प्रसन्नहुआ और कहता है कि जो तुम में से कोई मनुष्य लिखने पढ़ने में ऐसा योग्यहो कि इस कागज़ पर कि मिस्तर कियाहुआ हमारे पास है लिखै कि उसकी इबारत और लिखने की परीक्षाकरे और कारण इसका यहहै कि यहांका मन्त्री मरगयाहै और वह मन्त्री अन्य गुणों के विशेष इबारत अच्छी लिखता था और लिखने में अद्वितीय था और यहां का बादशाह गुणग्राहक है उसके मरजाने से अत्यन्त शोकयुक्त रहता है और सौगंद खाई है कि जो मनुष्य पहिले मन्त्री के समान अच्छा लिखनेवाला मिलेगा उसी को मन्त्री बनाऊंगा बहुत ढूंढ़ने पर भी अबतक अपने सम्पूर्ण देश में ऐसा कोई मनुष्य न पाया कि जिसे वह अपना मन्त्री बनावे सो इस कागज़ को तुम्हारे निकट भेजा है कि जो कोई तुममें से इसके योग्यहो और उसे मन्त्री का स्थान लेनेकी इच्छाहो तो इस कागज़ पर पंक्तिलिखे जब सरदार इतना कहचुका तो मैंने आगे बढ़ उस कागज़ को उसके हाथ से लेलिया इससे सब जहाज़ के मनुष्य विशेष वह व्यापारी जो लिखे पढ़े थे चिल्लाने और बड़ा शब्द करने लगे कि अभी यह बन्दर इस कागज़ को चीरफाड़ डालेगा वा समुद्र में फेंकदेगा परन्तु जब उन्होंने देखा कि मैंने कागज़ को अच्छे प्रकार पकड़ा और सैन से पूछा कि मैं इसपर लिखूं सबने चिल्लाना बन्द किया क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण आयु में कभी किसी बन्दर को

लिखते नहीं देखा था और मेरी योग्यता को नहीं जानते थे चाहा कि इस कागज़ को मेरे हाथ से छीनलें परन्तु कप्तान ने मेरी ओर हो कहा कि ठहरो इसकी परीक्षा लेने दो यदि उसने कागज़ को ख़राब किया तो मैं तुमसे प्रण करताहूं कि उसको उचित दण्डदूंगा और जो उसने मेरे बिचारके अनुसार अच्छा लिखा तो उत्तम है मैं उसे अपने पुत्र के समान पालन करूंगा मुझको बिदित है कि वह कागज़ को ख़राब न करेगा मैं और बन्दरों की अपेक्षा उसे अत्यन्त समझदार और बुद्धिमान् पाताहूं जब मैंने देखा कि मुझको अब कोई नहीं मना करता लेखनी ले चारप्रकारके चार काव्य ऐसे लिखे कि न कोई व्यापारी और न कोई उस नगर का बासी लिखसक्ताथा जब मैं लिखचुका तो सरदार जाय उस कागज़ को बादशाह के सन्मुख लेगया बादशाह ने मेरे लिखने और काव्य को पसन्द किया व अपने सरदारों से कहा कि एक बड़ाभारी खिलत लेजाय उस मनुष्य को देव जिसने इस कागज़ को लिखाहै पहिनाके और एक अश्व हमारे अश्वशालासे लेजावो और उसे सवार कराय लेआवो यह आज्ञा पातेही वह सरदार मुसुकराया जिससे कि बादशाह अत्यन्त क्रोधित हुआ और दण्ड देनेकी आज्ञादी उसने बिनती की कि हे स्वामी! हमारा अपराध क्षमाकरो लिखनेवाला इसका मनुष्य नहीं किन्तु बानरहै बादशाहने कहा क्या ये पंक्ति मनुष्य की लिखी नहीं एक ने उन सरदारों से बिनयकी कि हे स्वामी! हमने अपनी आंखों से देखा कि इसको बन्दर ने लिखा है बादशाह इस बात से आश्चर्यित और बिस्मित हुआ और मेरे देखने की अत्यन्त लालसा की और उन सरदारों से कहा कि शीघ्रही ऐसे अपूर्व बन्दर को सवारकर मेरे सन्मुख लेआवो सरदार जहाज़पर फिरगये और बादशाह की आज्ञा कप्तान से कही उसने कहा बहुत अच्छा मैं इसे भेजताहूं फिर मुझे कारचोबी बस्त्र पहिना समुद्र के तट पर लेआये और घोड़ेपर मुझे सवार किया इधर बादशाह अपने सभासदों सहित मेरे आगमन की राह देखते रहे और मेरी अगवानी को सब प्रकार के मनुष्य इकट्ठा किये और नगर के छोटे बड़े मनुष्य और

स्त्रियां मेरे देखने को कोठों और मार्ग में इकट्ठा हुये क्योंकि यह वृत्तान्त अर्थात् बादशाह ने एक बन्दर को अपना मन्त्री बनाया है सम्पूर्ण नगर में ख्यात होगया था लोग मुझे देख हँसते और चिल्लाते जब मैं बादशाही मकान में पहुँचा बादशाह को राजसिंहासन पर बैठे देखा और उसके सिंहासन के चारों ओर मंत्री और उस बादशाह के सम्पूर्ण भृत्य इकट्ठा थे मैं तीनबार प्रणाम कर हाथजोड़ खड़ाहुआ और वहां जितने बर्तमान थे इस अपूर्व वृत्तान्तको देख आश्चर्यित हुये कि हमने आजतक ऐसा बन्दर नहीं देखा इसीप्रकार बादशाह भी इस बात से अत्यन्त विस्मित हुआ फिर बादशाह ने सम्पूर्ण सभासदोंको बिदा किया केवल मैं और दारोगा जो अत्यन्त बृद्ध था बादशाह के पास रहगये फिर बादशाह ने सभा से घर में जाय नानाप्रकार के व्यंजन मँगाये और मुझे सैन से खाने को बुलाया मैं प्रणाम कर बैठगया और बड़ी तमीज़ से खाना आरम्भ किया जब भोजन करचुके और बरतन वहांसे उठगये मैंने एक क़लमदान देख उसे सैन से मँगाया जब वह क़लमदान मेरे सन्मुख आया मैंने उसमें से एक बड़ा कागज़ ले बादशाह के धन्यबाद का काव्य बनाय बादशाह के सन्मुख किया बादशाह उसे पढ़ अत्यन्त आश्चर्यित हुआ और पहिले से अत्यन्त प्रसन्न हुआ और इसके पश्चात् बादशाह ने सेवकों को सैनदी कि इसे भी मदिरा पिलाओ सो उन्होंने एक गिलास मुझे भी दिया मैंने उसे पी एक नयेप्रकार का काव्य इस विषय का अपने सम्पूर्ण आपत्ति और उस बादशाह की गुणग्राहकतासे जो आनन्द और चैन प्राप्तहुआ लिखा बादशाह ने उसे पढ़ चित्त में कहा कि इस बन्दर के समान कोई भी संसार में नहीं फिर उसने सतरंज मँगाई और मुझसे सैनसे पूछा यह खेल जानते हो इस समय खेलनेको जी चाहताहै उसके उत्तर में मैंने धरती को चूम अपना हाथ शिरपर रक्खा अर्थात् मैं खेलने को तत्पर हूं पहिली बाज़ी बादशाह जीता और दूसरी तीसरी मैं जीता बादशाह को दो बाज़ीके हारनेसे कुछ ग्लानताहुई इसके धीरजके वास्ते मैंने काव्य इस विषय का लिखकर दिया अर्थात् दो योद्धाओं ने

परस्पर दिनभर युद्धकर साथ नल को मेल किया और रात्रि को उसी युद्धस्थान में आनन्द से सोरहे बादशाह इसकी बुद्धिमत्ता को देख अति आश्चर्यित हुआ और सभा दों से कहा कि मैंने किसी बन्दरको ऐसा योग्य औ हाज़िरजवा न देखा और न सुना फि चाहा कि ऐसा अपूर्व और अद्वितीय बन्दर अपनी पुत्री मलिका हसन को दिखावे उसने ख़्वाजेसराओं के दारोग़ा को आज्ञादी कि तू अपनी बीबी को यहांप बुलाला कि व भी इस चरित्र को देखे दारोग़ा राजद्वार से राजपुत्री को बुलालाया शाहज़ादी वहांसे बाद-शाह के सन्मुख मुख खोलेगई और वहां मुझे देखतेही उसने तुरन्त अपने मुख को ढांपलिया और बादशाह से बिनयकी कि आपको क्या होगया कि आप मुझको बिराने मनुष्य के सन्मुख बुलाते हैं बादशाह ने उत्त दिया मुझको जानपड़ताहै कि तुम बेहोशी से बातें करतीहो इस स्थान पर मेरे व तुम्हारे ख़्वाजेसराय के सिवाय और कोई नहीं तुम जो सदैव मुख खोले मेरे सन् ख आया करतीहो इस समय क्यों अपने मुँह पर वस्त्रडाले आई हो और इस के परीत तुम्हें मेरे भूल का विचारहै शाहज़ादी ने बादशाह से बिनयकी कि आप अच्छेप्रकार जानलें कि मेरी कुछभी भूल नहीं मैं सच कहती हूं कि यह बन्दर सचमुच मनुष्य और बड़े बादशाहका पुत्र है जादू के कारण बन्दर होगया इबलीस के पुत्र ने बादशाह अबूतैमुरस ख़्बोनीद्वीप की शाहज़ादी के मारने के पश्चात् इस शाहज़ादे को जादूसे बन्दर बनाडाला है ादशाह यह बात सुन अत्यन्त बिस्मित हुआ और मुझसे पूछ कि यह बात सच है मैंने अपना हाथ शिर पर रख सैनसे कहा जो इस शाहज़ादी ने कहा सो ठीकहै फिर बाद-शाह ने अपनी शाहज़ादी से पूछा तुझे क्योंकर बिदित है कि यह शाहज़ादा बन्दर होगया शाहज़ादी ने उत्तर दिया आपको स्मरण होगा कि जब दूध मेरा छुड़ाया गयाथा मेरे पालन और उपदेश के अर्थ जो वृद्धाथी वह जादू की बिद्या में अतिनिपुणथी से मुझ को सत्तर पर्व मन्त्रबिद्या के सिखलाये जिससे मुझ में इतनी शक्ति है कि तुम्हारे सम्पूर्ण देश को यहां से उठा समुद्र में डालदूं मुझको

उन मनुष्यों का हाल जो जादू के कारण अन्य योनि में प्राप्त हों अच्छेप्रकार बिदितहै देखतेही जानलेतीहूं कि इस मनुष्यपर किसी ने जादू कियाहै और इस कारण उसपर जादू हुआ और जिस मनुष्य ने इस पर जादू किया मैंने एकही बेर के देखने में पहिचान लिया जिसको आप बन्दर जानते हैं बादशाह ने कहा हे शाहज़ादी! मैं तुझे ऐसी गुणवती न जानता था शाहज़ादी ने कहा हे पिता! यह भेद है हरएक मनुष्य को सीखना उचित नहीं मैं कुछ इसमें झूठ नहीं कहती बादशाह ने अपनी शाहज़ादी से कहा तुम्हें इतनी सामर्थ्य है इस शाहज़ादे की जादू दूरकर फिर उसको अपने स्वरूप में बना दो शाहज़ादी ने कहा निस्सन्देह मैं बनासक्तीहूँ बादशाह ने कहा कि तुम इसको पहिली सूरतमें लाओ तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा और इसको अपना मन्त्री कर तेरे साथ बिवाह करदूँगा शाहज़ादी ने कहा बहुत अच्छा इतना कह मलिकाहसन अपने भवन से एक छड़ीलाई जिसमें इबरानी अक्षर लिखेथे और कहा कि आप ख़्वाजेसराय और बन्दर सहित एक भवन में रक्षापूर्वक छिप कर बैठें फिर हम तीनों बरामदे में कि चारोंओर उस मकान के बना था बैठे उसने उस बरामदे में एक बड़ा घेरा पृथ्वी में खैंचा और कुछ इबरी और कलपतरी शब्द पढ़ने का आरम्भ किया जब पढ़ चुकी और बिचारानुसार घेरा भी बनालिया तब उस घेरेके अन्दर जाय क़ुरान का पढ़ना आरम्भ किया इतने में चारो ओर रात्रि के समान अँधेरा छागया और प्रलयके चिह्न दिखाई देनेलगे यह दशा देख हम सब भयभीत हुये और घड़ी घड़ी पर हम को डर अधिक होताजाताथा हमने क्या देखा दुश़्तरइबलीस का पुत्र बड़े उग्र और भयंकर शेर के स्वरूप में प्रकटहुआ शाहज़ादी उसके सन्मुख कहने लगी अय कूकर! तुझे चाहिये था कि तू मेरी बिनती करता बिपरीत इसके मेरे डराने को ऐसा भयवान् रूप धर आया तूने बड़ी ढिठाईकी शेरने उत्तरदिया तूने उस प्रणको जो पिशाचों और मनुष्यों में हुआथा तोड़ दिया और उसपर कठिन २ सौगंदें दीगई थीं कि कोई एक दूसरे को दुःख न दे शाहज़ादी ने कहा अय मलिनरूप!

नम्बर१० मुतअल्लिके सफ़े ११९ प्र.भा.

चित्र बादशाहकी लड़की और पिशाचकी
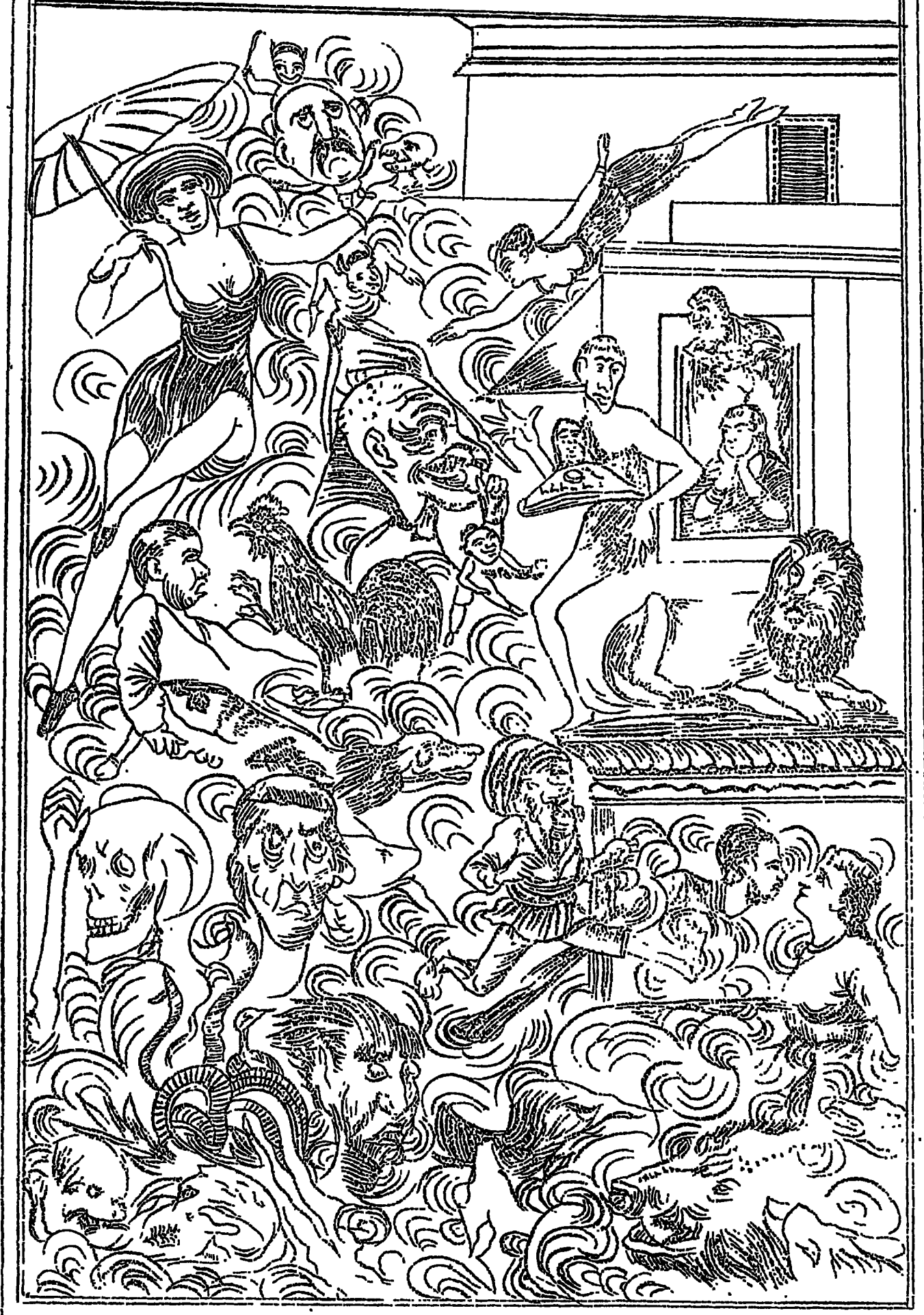
तू प्रणभङ्गी है मुझे चाहिये कि इस विषय में तुझे बुरा भला कहूं शेर ने कहा तूने बड़ी ढिठाईकी मुझे यहां आने का श्रम दिया यह कह उसने अपने मुख को फैलाया और इच्छाकी कि शाहज़ादी को निगलजायँ परन्तु वह अत्यन्त बुद्धिमती और चैतन्यथी पीछे की ओर कूदकर हटगई और अपने शिर का एक बाल उखाड़ के उस पर दोचार अक्षर पढ़े तो बाल खड्ग के समान बनगया शाहज़ादी ने उस खड्ग से उस सिंह को दो फांक कर उस दालान में डालदिया और वह टुकड़े शेर के गुप्त होगये जो शिर उसका रहगया था बिच्छू बनगया शाहज़ादी उसी समय सर्प बनके उससे युद्ध करने लगी वह बिच्छू सामना करने की सामर्थ्य न रखकर उक़ाब बनके उड़गया फिर वह सर्पभी काला उक़ाब बन पहिले उक़ाबका पीछा किया यहां तक कि वे दोनों उक़ाब हमारी दृष्टि से छिपगये थोड़ी देर के पश्चात् हमारे सन्मुख पृथ्वी फटगई और उसमें से दो बिल्लियां श्वेत और काली निकलीं और दुम के बाल खड़ेकर परस्पर चिल्लानेलगीं फिर वह काली बिल्ली काला भेड़िया बन दूसरी बिल्ली की ओर दौड़ी वह बिल्ली अवकाश न पाय निरुपाय हो कीड़ा बनगई और उस कीड़े ने एक अनार के बीच में जो उसी समय वृक्ष से नहर के किनारे गिरपड़ा था अपने को छिपाया यह अनार बढ़नेलगा यहांतक कि बढ़ते २ बड़े मटके के समान होगया और वायुपर उड़ा और बरामदे की ऊँचाई तक जाय कभी आगेकी ओर कभी पीछेको हिलता था इसीप्रकार इधर उधर जाय पृथ्वी पर गिर फटगया और बहुत टुकड़े उसके होगये वह भेड़िया तत्काल मुर्गा बन अनार के दाने चुननेलगा और शीघ्रही एक २ दाना निगलना आरम्भ किया जब सब दाने अनार के खाचुका तब वह पंख फैला हमारे निकट आया और बड़ा शब्द किया अर्थात् वह पूछताहै कि कोई दाना शेष तो नहीं रहगया और चारों ओर ढूंढ़ता फिरता था कि संयोगवश उसने एक दाना जो नहर के तटपर पड़ाहुआथा देख दौड़कर चाहा कि उसको भी खालें इतने में वह दाना लुढ़कता हुआ नहर में चलागया और छोटी मछली बनगया और वह मुर्गा भी मछली के खाने को

नहर में गया वह मछली और मुर्गा दो घड़ी तक उस नहर के भीतर रहे हमें उनका वृत्तान्त कुछभी विदित न हुआ कि वे दोनों क्या होगये फिर थोड़ीदेर के पश्चात् हमने एक भयानक शब्द चिल्लाने का सुना कि जिसके सुनने से हम डरे फिर उस पिशाच और शाहज़ादी को देखा कि वे दोनों अग्नि होगये और प्रत्येक अपने मुखसे लाटें निकाल दूसरे की ओर फेंकता और निकट हो हो एक दूसरे पर चढ़ाई करता है यहांतक कि अग्नि ने सबको घेरलिया तो यह आश्चर्य देख हम कम्पि[illegible] हुये कि इस अग्नि[illegible] सम्पूर्ण राज्य अभी जल जायगी इस समयान्तर में हमारे भयका एक और कारण हुआ कि वह पिशाच शाहज़ादी के सन्मुखसे हट हमारी ओर आया जहां हम सब बैठेथे और अपने मुखसे लाटें निकाल हमारी ओर फेंकनेलगा चाहता था कि यह जलकर भस्महोजावे इतने में शाहज़ादी दौड़कर आई और हमें उसके हाथ से बचाकर उसको वहांसे दूर भगाया शाहज़ादी के रक्षाकरने पर भी बादशाह का मुख झुलसगया और ख्वाजहसराय का दारोग़ा जलभुनकर भस्म का ढेर होगया और एक चिनगारी उड़कर मेरे दाहिने नेत्र में लगी कि जिससे मैं काना होगया और हम दोनों अर्थात् बादशाह और मैं इससे अतिदुःखित थे इतने में ज[illegible] का शब्द हमने सुना और वह मलिकाहस[illegible] निज योनि में बन हमारे [illegible]िकट आई और वह पिशाच जल के भस्म का ढेर होगया फिर शाहज़ादी [illegible] एक छोटे नौकर से जल मँगवाया और उस पर कुछ मन्त्र पढ़ थोड़ा उसमें से [illegible]झपर छिड़का और कहा जो तू जादू से बन्दर बनगया तो निज [illegible]ोनि को प्राप्तकर और मनुष्य के स्वरूप में जैसा पहिले था वैसा बनजा इतना कहतेही मैं मनुष्य बनगया दाहिने नेत्र के सिवाय जो प्रथम से जातारहा था और किसी जोड़ में हानि न पहुँची मैंने चाहा कि उस शाह[illegible]ादी का धन्यवाद करूं परन्तु उसने मुझको सावकाश न दिया बादशाह से कहा यदि मैंने पिशाच को पराजय किया परन्तु इसके साथ मेरा भी काम तमाम होगया अर्थात् इस पावकयुद्ध ने भी मेरे शरीर को जलादिया कोई क्षण में मुझे भी भस्म करडालेगी यदि एक दाना

नाड़िम का भी जिल समय कि मैं पक्षी बनी थी न छूटता और उसको भी खाजाती तो फिर मुझको कुछ भी दुःख न पहुँचता और वह पिशाच उसी समय माराजाता परन्तु उस दाने के बचने से फिर उसे मेरे साथ युद्ध की सामर्थ्य हुई तब मैं लाचार होकर अग्निसंग्राम करने लगी उस समय धरती से आकाश पर्यन्त अग्नि होगई तब उस पिशाच को मालूमहुआ कि मैं जादूकी विद्या में अति निपुणहूँ और मेरी विद्या कहीं उससे अधिक है निदान मैंने उसको जलाकर भस्म करडाला परन्तु मैं भी उस आग से बच नहीं सकी बादशाह ने शोचित होय उत्तर दिया कि तुम अपने पिता का भी हाल देखो यदि मैं जीताहूँ परन्तु मुख मेरा झुलसगया है और तुम्हारा ख्वाजहसराय जलकर भस्म होगया और यह शाहज़ादा जिसका तुमने जादू दूर किया है दाहिने नेत्र से काना होगया है यह कहकर बादशाह और मैं इस हाल में रोते पीटते और हाहाकरते थे कि इतने में शाहज़ादी पुकारनेलगी कि जली २ फिर वह तत्कालही उस अग्नि में जलकर उस पिशाच के समान भस्म का ढेर होगई हे शहरयार! उस स्थान में उस दूसरे योगी ने हाहाखाय जुबैदा से कहा कि उस समय का दुःख जो मुझ पर हुआ कुछ बर्णन नहीं करसका मैंने उस मलिकाहसन को इस दशा में देख अपने चित्त में कहा कि यदि मैं बन्दर किन्तु श्वान सम्पूर्ण आयुभर बनारहता तो उत्तम था इससे कि शाहज़ादी जिसने कि मुझसे इतना उपकार किया था इसप्रकार बध होजाय और इधर बादशाह अपनी शाहज़ादी के मरजाने से शोकवान् हो रोने पीटनेलगा यहांतक कि वह मूर्च्छित होगया और मुझे बादशाह की ओर से अत्यन्त भय और डर हुआ कि ऐसा न हो वह अपनी शाहज़ादी के दुःख से कहीं मरजाय उस समय रोने पीटने से प्रलय होगया बादशाही मकान में बादशाह की यह दशा सुन सम्पूर्ण सरदार और नौकर दौड़े और बहुत उपायसे उसे फिर सुधि में लाये मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे वर्णनकिया फिर वह लोग बादशाह को उठाय उसके निज कोठे में लेगये यह वृत्तान्त सम्पूर्ण नगर में ख्यात होगया और चारों ओर से शाहज़ादी के नाम पर

रोने पीटने का शब्द सुनाई देता था सात दिन तक उन्होंने शाहज़ादी का शोक और रोना पीटना किया और अपनी रीत्यनुसार सम्पूर्ण शोक की रीतें भी कीं फिर पिशाचकी भस्म का ढेर उन्होंने वायु पर उ ादिया और शाहज़ादी की भस्म को एक बहुमूल्य वस्त्र की थैली में भर वहीं गाड़दी और उसपर एक बड़ा भारी मकबरा बनवाया बादशाह अपनी शाहज़ादी के शोक में एक मास तक रोगयुक्त रहा अभी वह अच्छा हुआ था कि उसने मुझे बुलाकर कहा हे शाहज़ादे! तेरे आगमन से नाना प्रकार के दुःख और शोक मुझ पर पड़े और मेरी शाहज़ादी तेरेही कारण भस्महुई और दारोगा भी जलकर मर गया और मैं मरते २ बचा यह सब तेरी अभाग्यता है तू अशकुन है अब मैं तुझे देख नहीं सक्ता इससे तू यहां न रह तुरन्त यहां से चलाजा यदि तू यहां रहेगा तो तेरेवास्ते अच्छा न होगा और मैं तुझे दण्ड दूंगा इसीप्रकार बादशाह ने क्रोध में यह सब बातें कहीं कि जिनका मैं उत्तर न देसका और तत्काल बादशाह के सन्मुख से चलागया और जिधर को जाता था उधर को मनुष्य मेरे मारने का इरादा करते थे निदान मैं निरुपाय हो उस नगरके निकलनेसे पहिले भौंहें और मूछें और डाढ़ी मुड़वाय और योगियों के वस्त्र पहिन वहां से चला और अपने जन्मभर बुरा भला कर कहताथा कि बड़ा पश्चात्ताप है कि तेरे कारण से ऐसी स्वरूपवती दो शाहज़ादियां मारीगईं फिर बहुत दिनोंतक नगर २ और देश २ फिराकिया निदान सोचा कि बग़दाद नगर में जाय अपने दुःख और शोक को खलीफ़ा हारूंरशीद से बिनय करूं उक्त महाशय मेरे वृत्तान्त को सुन मुझपर अवश्य दया करेंगे और इस दुःखसे छुड़ादेंगे आज सायंकाल के समय मैं वहां पहुंचा और पहिलेपहिल योगी से कि जिसने अभी अपना वृत्तान्त वर्णन किया है भेंट हुई और मेरे यहां आने का कारण आपके सन्मुख पहिला योगी तो कहचुका उसका प्रकटकरना अवश्य नहीं इसप्रकार जब दूसरा योगी भी अपना वृत्तान्त कह चुका तो ज़ुबैदा ने उससे कहा कि तेरा अपराध क्षमा किया जिधर को तेरा जी चाहै चला जा तब वह भी ज़ुबैदा से आज्ञाले पहिले योगी

के निकट बैठगया फिर तीसरा योगी अपना बृत्तान्त कहनेपर उद्यत हुआ और ज़ुबैदा के सन्मुख जाय इसप्रकार अपना बृत्तान्त कहना आरम्भ किया ॥

तीसरे योगी की कहानी ॥

हे दयावान् सुन्दरी! मेरा बृत्तान्त अतिबिचित्रहै इन दोनों शाहज़ादों की आंख तो बेबशीके कारण से गई और मेरी आंख अपनेही अपराध और निर्बुद्धिता से फूटी सो आपको मेरे बर्णन में बिदित होगा मेरा नाम अजब है और मैं महाऐश्वर्यवान् बादशाह कि सब का बेटा हूं जब मेरा पिता स्वर्गबासी हुआ मैं तख़्त पर बैठा और उसी नगर में जिसे मेरे पिता ने राजधानी बनाया था रहा वह नगर नदी के तट पर बसा था और उसकी रक्षा के निमित्त डेढ़सौ जहाज़ तैयार रहते थे और पचास जहाज़ मुख्य ब्यापार के हेतु रहते थे और अनेक जहाज़ सैर और तमाशे के अर्थ प्रतिसमय समुद्र के तटपर लंगर किये रहाकरते और इस राजधानी से बहुत अच्छे २ नगर और बसेहुये द्वीप सम्बन्धित थे सब कामों से प्रथम मैंने यह इच्छा की कि सम्पूर्ण नगरों और द्वीपों को जो इस राजधानी से सम्बन्ध रखते हैं जायकर देखूं और वहां के वासियों को कि जो मेरे पिता के मरने के कारण शोचयुक्त हैं धैर्य और भरोसा देआऊं कि वो अपने देश के सम्बन्धित कार्यों और ब्यापार में सावधानता से लगे रहें इसी समयान्तर में मुझे जहाज़ चलाने की बिद्या के सीखने का ब्यसन मेरे हृदय में उत्पन्न हुआ सो मैं एक जहाज़ पर सवारहुआ और दश जहाज़ अपने साथ लेकर चला चालीस दिवस तक बायु अनुकूल रही इकतालीसवें दिन बायु बड़े बेग से चलनेलगी और सम्पूर्ण जहाज़ तूफ़ान में ऐसे पड़े कि हम अपने जीवन से निराश होगये परन्तु दूसरे दिन भोर को हवा कम हुई बादल खुला और सूर्य निकला आकाश निर्मल होगया हम सावधान हो एक द्वीप में उतर दो दिनतक अन्नादि लेने के हेतु ठहरे फिर हम जहाज़ पर सवार हुये और बिचारते थे कि दश दिन के अन्दर में धरती में पहुँच जायँगे क्योंकि हम तूफ़ान के कारण मार्ग भूलगये थे और न

जानते थे कि तूफ़ान और अँधेरे के कारण हमारे जहाज़ किस ओर को जाते हैं कप्तान ने एक मनुष्य को मस्तूल पर चढ़ाया कि दिशा को मालूमकरे उसको दाहिने और बायें पानी और आकाश के सिवाय और कुछ न देखपड़ता था परन्तु दाहिनी ओर जब ध्यान से देखा तो कुछ कालापन देखपड़ा यह समाचार सुनतेही उस कप्तान का मुख बदलगया पगड़ी उतारकर फेंकदी और शिर पीटने लगा और मुझसे कहा हे स्वामी ! हमसब मरा चाहते हैं इस बला से कोई नहीं बचेगा अब हमारे बचने का कोई उपाय नहीं यह कह वह कप्तान इस प्रकार फूट २ रोनेलगा कि जैसे कोई किसीको प्राण से मारताहो यह दशा उसकी देख जहाज़ के मनुष्य अत्यन्त दुःखित और शोचयुक्त हुये मैंने उससे इसका कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि तूफ़ान हमारे जहाज़ों को मुख्य मार्ग से हटाकर ऐसे स्थान पर लाया कि कल के दिन दोपहर को हमारा जहाज़ उस काली बस्तु तक पहुँचेगा और वह काली बस्तु चुम्बक पहाड़ है वह तत्काल हमारे को लोहे की कीलों और लोहे की बस्तुओं के कारण जो जहाज़ में लगी हैं अपनी ओर खींचेगा और जहाज़ जब उसके निकट जायगा तो उसके खींचने से यह सब लोहे की कीलें और पत्तर जहाज़ों के पाटों से अलगहो उस पहाड़ से जाय चिपटेंगे और जहाज़ टूटकर सब वस्तु और मनुष्यों सहित डूब जावेंगे चुम्बक पत्थर में यह गुण है कि लोहे को चिपकाता है और जितना लोहा उसके निकट जाता है उसमें आकर्षिणी शक्ति अधिक होती जाती है और इस पहाड़ की ओर कि जो समुद्र की ओर है सहस्रों जहाज़ों की कीलें निकल २ के नीचे और ऊपर तक जा चिपकी हैं इसी कारण वह पहाड़ काला दृष्टि पड़ताहै फिर उसने कहा वह पहाड़ बहुत ऊँचा और ढलवां है और उसकी चोटी पर एक पीतल का बृत्त पीतल के पीलपायों पर खड़ा है और उस बृत्तपर पीतल का घोड़ा और मनुष्य की मूर्त्ति कि वह उसी अश्व पर सवार है बनीहुई है और एक सीसे की तख़्ती कि उसपर कुछ अक्षर जादू के खुदे हैं उसकी छाती से लगी हुई है लोग कहते हैं कि वही मूर्त्ति जहाज़ों और

मनुष्यों के हानि होने का कारण है इतना कह फिर वह रुदन करने लगा उसके रोने से सम्पूर्ण जहाज़ के मनुष्य भी रोनेलगे और मुझे भी विश्वास हुआ कि मेरी आयु इतनी ही थी और मृत्यु यहां ले आई है और प्रत्येक मनुष्य अपने २ बचाव के विचार में पड़े कि किसी प्रकार अपने प्राण को उबारें परस्पर कहते थे कि हम में से जो कोई सब के प्राण बचावे वह सब का स्वामी है निदान दूसरे दिन भोर को हमारा जहाज़ उस काले पहाड़ के सन्मुख पहुँचा परन्तु जो उपाय कि हमने विचारे थे भूल गये और रोने पीटने लगे दोपहर को जैसा कि उस बुद्धिमान् कप्तान ने कहाथा वैसाही हुआ अर्थात् पहाड़ ने जहाज़ को इस बेग से खींचा कि सब कीलें और लोहे की बस्तु जो जहाज़ में थी उड़के पहाड़से चिपटगई तख़्तों के टूटने से बड़ा शब्द हुआ और तत्कालही वे ग्यारहों जहाज़ टुकड़े २ हो ऐसे गहिरे जल में डूबगये कि किसी बस्तु और मनुष्यों का पता न लगा परन्तु परमेश्वर ने मुझपर दया की कि केवल उन सब में एक मैं जीता रहा संयोगबश मेरे हाथ एक टुकड़ा जहाज़ का लगगया कि उसके सहारे से पहाड़ के नीचे धरती में ऐसे स्थान पर जीता जागता पहुँचा कि जहां चरणों के चिह्न सीढ़ी के समान बने हुये थे वह मार्ग पहाड़ पर जानेका था मैं उन पाँवों के चिह्नों को देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ उन चिह्नों के सिवाय जो कहीं और जगह दाहिने बायें ऐसी न थी कि जहां पांव ठहरसके और गिरने से बचै मैंने परमेश्वर का धन्यबाद कर और उसका नामले पहाड़पर चढ़ना आरम्भ किया मार्ग बहुत सूक्ष्म था और बायु ऐसी प्रचण्ड थी कि मुझे नदी की ओर उड़ाये लिये जाती थी निदान मैं कुशलपूर्वक उस पहाड़पर चढ़गया और उस बृत्त के भीतर जाय और पृथ्वीपर पहुँच परमेश्वर का धन्यबाद किया कि उसने अपनी पूर्णकृपा से मुझे कुशलपूर्वक यहां तक पहुँचाया रात को वहीं सोरहा और यह स्वप्न देखा कि एक बृद्ध मनुष्य मुझसे कहताहै हे अजब ! जब तू जग जावे तो श्रमकर अपने चरणों के नीचेकी धरती खोदियो और उसमें से एक पीतल का धनुष और सीसे के तीन शर कि उस घड़ी में उस

मनुष्य के दुःख पहुँचानेके हेतु बनाये गये थे पावेगा और उन तीन शरों से मनुष्य की मूर्ति को जो घोड़े पर सवार है मारियो तो वह मूर्ति समुद्र में और अश्व तेरे चरणों के निकट गिरपड़ेगा फिर तू उस घोड़े को उस स्थान पर जहां से कि तू शर और धनुष पावेगा गाड़दीजियो जब यह कार्य करचुकेगा तो समुद्र में ऐसा तूफ़ान आवेगा कि इस बृत्तके निकटआय पहुँचेगा जब वह समुद्र ऐसा बढ़ेगा तो एक छोटी नाव समुद्र के तट पर तेरे निकट आय लगेगी और उस नाव में एक पीतल का केवट बैठाहुआ नाव को तेरे निकट लावेगा तू शीघ्रही उस नाव पर बैठजाइयो वह तुझे दश दिन के समयान्तर में इस समुद्र से दूसरे समुद्र में पहुँचावेगा वहां से तुम्हें अपने देश का पहुँचना बहुतही सुगमहोगा परन्तु चैतन्यरह मार्ग में परमेश्वर का नाम न लेना जब वह बृद्धमनुष्य ये बातें कहचुका तो मेरी आंख खुलगई और मैं इस स्वप्न होनेसे अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उस बृद्ध के कहने के अनुसार उस धरती को खोदा तो वहांसे तीन शर और धनुष पाया उन शरों से उस मूर्ति को मारा तीसरे शर के लगने से वह सवार और मूर्ति समुद्र में गिरी और घोड़ा मेरे चरणों के निकट आयपड़ा उसको मैंने उसी स्थान पर कि जहांसे शर और धनुष पायाथा गाड़दिया फिर वह समुद्र बढ़नेलगा यहांतक कि उस बृत्त के निकट आयलगा और एक नाव दूरसे मेरी ओर चली आई और उसपर पीतल का एक मनुष्य बैठा देखा मैंने परमेश्वर का धन्यबाद किया कि मेरा स्वप्न सत्य और ठीकहुआ जब वह नाव तट पर आयपहुँची तो मैं उस नावपर सवारहुआ और उस बृद्ध मनुष्य के कहनेके अनुसार परमेश्वर का नाम न लिया किन्तु कोई भी बात अपने मुखसे न निकालता था फिर वह पीतल का मनुष्य नौ दिन के समयान्तर में शीघ्रही उस नाव को बहुत दूर लेगया और मैं बहुतसे द्वीप अपने दाहिने बायें देख अतिप्रसन्न हुआ और समझा कि अब शीघ्रही इस आपदा से छूटजाऊँगा इसी प्रसन्नता में ईश्वर का धन्यबाद किया नाम लेतेही वह नाव मनुष्यसमेत डूबगई और मैं जलपर पैरनेलगा शेषदिन तक एक द्वीप की ओर जो निकट मालूम होता

था शीघ्रता कियेगया रात्रिको अँधियारे में जान न पड़ता था कि किधर जाताहूँ बहता तैरता उसी ओर चलाजाता था निदान थकगया और मुझमें कुछ भी हाथ पांव हिलाने की सामर्थ्य न रही और अपने प्राण से निराशहुआ संयोगबश उसीदशा में प्रचण्ड बायु चली और समुद्र भी लहर मारनेलगा सो एक लहर तो पहाड़ के समान बढ़ीहुई थी मुझे उठाय तटपर डालदिया मैं तुरन्त निकल आया कि फिर कोई लहर उस समुद्र में मुझे न फेंकदे फिर मैंने समुद्रसे निकलतेही बस्त्र निचोड़ सुखाये और उनको पहिन इधर उधर चलना आरम्भ किया उसमें बहुत से सफलबृक्ष दृष्टि पड़े उससे मुझको बिदित हुआ कि यहां कोई द्वीप निर्जन है फिर बालू दूरतक देखी और मैंने जाना कि प्रथम यह द्वीप समुद्र था अब सूखगया है यह बिचार मैं वह हर्ष जो समुद्र से निकलने और सफल बृक्षों के देखने से हुआ था भूलगया और अपनेको परमेश्वर की इच्छापर छोड़ा कि जो वह चाहैगा करैगा थोड़ी देर न हुई थी कि एक छोटासा जहाज़ देखा कि सब पालों को उड़ाये हुये इस द्वीपकी ओर चला आता है मुझे बिश्वासहुआ कि वह इसी टापू में लंगर करेगा परन्तु न जानिये उसमें कैसे मनुष्य हैं मित्र हैं वा बैरी इस हेतु छिपरहना उचित है इस निमित्त मैं अतिसघन और लम्बे बृक्षपर चढ़गया और इच्छा की कि वहां से छिपकर उन जहाज़ियों को देखूं कि उनका कैसा स्वरूपहै इसी बिचारमें था कि जहाज़ ने कूलपर आकर लंगर किया उसमें से दश अनुचर फड़वे आदि धरती खोदने के शस्त्र लेकर निकले तदनन्तर वह द्वीप के मध्य जाकर ठहरे और एक स्थान पर पृथ्वी खोदनेलगे यहांतक कि उन्हों ने एक दरवाज़ा पाया फिर वो जाके उस जहाज़ में से नानाप्रकार के खानेकी बस्तु और बिछौने आदि का बस्त्र बोझ बांधकर अपने शिरपर उठालाये और उस स्थान से कि जहां खोदाथा नीचे लेगये जिससे मैंने समझा कि इस के नीचे कोई बड़ामन्दिर है फिर जहाज़ में वो सम्पूर्ण अनुचर जाकर एक बृद्ध मनुष्य और बालक को जो अतिसुन्दर और चौदह या पन्द्रह बर्ष की अवस्था का जानपड़ताथा अपने साथ लेआये और

उस भवन में वो सबके सब उतरगये और वहांसे लौट किवाड़ बन्द किया और उसपर मिट्टी डाल पृथ्वी के बराबर करदिया और सम्पूर्ण मनुष्य अपने जहाज़ पर गये परंतु मैंने देखा कि वह बालक नहीं फिरा तो मैं इस बृत्तान्त से अत्यन्त आश्चर्यित हुआ फिर वह मनुष्य उस द्वीप को छोड़ जिधरसे आयेथे उधरही चलेगये जब मैंने देखा कि वह जहाज़ बहुत दूर चलागया और वहां कोई मनुष्य नहीं दृष्टिपड़ता तो मैं तुरंत उस बृक्षसे नीचे उतरा और वहां गया कि जहां उन्होंने पृथ्वी खोदीथी मैंने उस स्थान की मिट्टी सरकाई तो उसके मुख पर दो हाथ का एक चौकोण पत्थर रक्खाहुआ देखपड़ा जब मैंने उसको उठाया तो वहां एक सीढ़ी दिखाईदी मैं उस सीढ़ी से नीचे उतरा और देखा कि वह बहुत बड़ा घर है उसमें क़ालीन का फ़र्श बिछा हुआ और उसके दालान में उत्तम २ उपधान कि जिनमें सोनहरी गिलाफ़ें चढ़ीहुई रक्खेहैं और उसमें वह बालक बैठाहुआ पंखा झल रहा है और दो मोम के दीपक वहां प्रज्वलित हैं और नाना प्रकारके खानेकी वस्तु वर्तमानहैं और सुगन्धित गुलदस्ते उस के निकट रक्खे हुयेहैं वह बालक मुझे देख डरगया तो मैंने उसको धैर्य देनेके वास्ते कहा कि हे प्यारे ! तुम मुझ ऐसे पुरुष से कि जो बादशाह और शाहज़ादा है न डरो मैं कुछ दुःख और पीड़ा न दूंगा और तुम बड़े भाग्यवान् हो कि इस कबर में जीतेही जीते तुमको वे लोग गाडगये हैं छुडाने आयाहूं परन्तु पहिले अवश्यहै कि इस पृथ्वी में अपने गाडेजाने का कारण कहो मुझसे कोई भेद गुप्त न रक्खो क्योंकि मैं सब कुछ देखचुका हूं परन्तु मुझे इतना विदित नहीं कि तुम अपनी इच्छा से क्यों इस स्थानपर गाड़ेगये उस बालक को इस वार्त्तासे कुछ धैर्य हुआ और मुझे बैठनेको कहा जब मैं उसके समीप बैठगया तो उसने इस प्रकार पर कहना आरम्भ किया हे बादशाह! मेरा बृत्तान्त अत्यन्त अपूर्व और अद्भुत है उसको सुन तुम अत्यन्त विस्मित होगे मेरा पिता जौहरी है उसने अपने श्रम और गुणसे बहुतसा धन इकट्ठा किया उसके सैकड़ों भृत्य और कोठियां हैं वह अपने जहाज़ों पर सवारहो दूर २ के नगरों और देशोंमें फिरताहै

और स्थान २ पर गुमाश्ते हैं कि उसकी ओरसे रत्न मोललेते और बेंचतेहैं इतना धन और रत्न रखनेपरभी उसके सन्तान न थी एकरात्रि उसने स्वप्न में देखा कि मेरे घर पुत्र होगा परन्तु उसकी स्वल्प आयु होगी सो वह जागकर अत्यन्त शोचित और शोकयुक्त हुआ फिर कई दिनके पश्चात् मेरी माता ने उससे कहा कि मुझे गर्भ हैं तुम्हारा स्वप्न सत्यहुआ फिर नौमास के पश्चात् मैं उत्पन्नहुआ सम्पूर्ण नातेदारोंको मेरे उत्पन्नहोने से बड़ी प्रसन्नता हुई मेरे पिताके विशेष कि वह उस स्वप्न से शोचित था निदान उसने ज्योतिषियों से पूछा उन्होंने कहा इस बालक के चौदहवें बर्ष में प्राण का डरहै यदि उस बर्षमें बचगया तो फिर आयु इसकी बड़ी है और बहुत बर्ष तक जियेगा फिर उन्होंने कहा कि हमको ग्रहों से बिदित होता है कि सबके पुत्र अजबनाम बादशाह से एक पीतल का सवार जो चुम्बक पत्थर पर रक्खा है समुद्र में गिरैगा और पचास दिवसके पीछे अजब बादशाह के हाथ से माराजायगा एकतो मेरा पिता उस स्वप्न से चिन्तायुक्त था दूसरे ज्योतिषियों की इस बात से और अधिक शोकयुक्त हुआ और मेरी रक्षाके निमित्त रात्रिदिन उद्यत रहता जब चौदहवां बर्ष मुझको आरम्भहुआ तो दूसरे दिवस ज्योतिषियों ने आके बिनय की कि दश दिवस ब्यतीत हुये बादशाह अजबने उस पीतल के सवार को जिसका पहिले हमने वर्णन कियाथा उस पहाड़की चोटीसे समुद्र में डालदिया इस बृत्तान्त को सुन मेरा पिता अत्यन्त शोचित और शोकयुक्त हुआ और चाहता था कि किसीभांति मेरे अरिष्टग्रह का फल दूरहो और मुझे मृत्यु से बचावे फिर उसने आगेसे शोच मेरी रक्षा के हेतु इस द्वीप में कि जहां मनुष्य का नाममात्रभी नहीं पृथ्वीके नीचे इस घरको बनवा रक्खाथा कि उस मूर्ति के गिरने के पीछे पचास दिवस तक मुझे इस घरमें छिपा रक्खा जब सुना कि दश दिवस ब्यतीत हुये और वह बात प्रकट हुई इसवास्ते उसने चालीस दिवस के लिये यहां लायके मुझे रक्खाहै चालीसदिवस के पश्चात् वह फिर मुझे लेजायगा और उसको बिश्वास है कि कोई मनुष्य मुख्य बादशाह अजब ऐसे स्थान पर न जायगा और कोई मनुष्य मुझे इस चालीस दिवस के अन्तर में न देखे

और न मैं उसे देखूं मेरे आने और रहनेका इस घरमें यह कारणहै जो मैंने प्रकट किया जब वह बालक अपना बृत्तान्त बर्णन करचुका तो मैं उन ज्योतिषियों के गुप्त हाल देनेपर हँसा और कहा किमैं इस निर्दोष बालकको क्यों मारनेलगा और उसके धैर्य और दिलासे के लिये मैंने उससे कहा कि तुम कुछभी भय अपने चित्तमें न रक्खो और परमेश्वर पर भरोसा रक्खो तो तुम्हें किसीप्रकार का दुःख न होगा संयोग से परमेश्वर मुझे तुम्हारी रक्षाके हेतु यहां लाया है अब किसीप्रकार का भय और शोच नहीं इसी वास्ते मेरा जहाज़ टूटा और मैं डूबता मरता यहां पहुंचा मैं तुमको उस अवधितक अकेला न छोडूंगा तुम्हें ज्योतिषियोंने झूठ कह डराररक्खाहै रक्षा और सेवा तुम्हारी मैं करूंगा और जब यह अवधि परमेश्वरकी पूर्णकृपा से क्षेमपूर्वक कटजायगी और जब तुम्हारा पिता तुमको लेने आवेगा तो मैं भी सवारहो उसके साथ तुम्हारे नगर में आऊंगा और वहांसे अपने देश को जाऊंगा और मैं यह तुम्हारी भलाई कभी न भूलूंगा ऐसी २ बार्त्ताकर मैंने उस के भय को दूरकिया और उसने अपने पिता का नाम न बताया कि ऐसा न हो कि नाम सुननेसे उसे अधिक भयहो कि मैंही उसका मारने-वाला हूं और अनेक २ भांति की बार्त्ता और कहानी कह उसका जी बहलातारहा और मुझे वह बालक अत्यन्त बुद्धिमान् और समझ-दार जानपड़ा जब रात्रिहुई तो उसने और मैंने मिलके भोजन किया और नानाप्रकारके व्यञ्जन वहां इतने रक्खे थे कि मेरे सिवाय और भी वहां कोई अतिथि होता तो इकतालीस दिवस तक उनको बहुत होता भोजन कर बहुत काल तक हम बार्त्ता करतेरहे फिर सोरहे जब वह दूसरे दिन भोरको जागा तो मैं जल उसके निकट लेगया और उसने अपने हाथ मुख धोये फिर नाना प्रकार के व्यञ्जन इकट्ठा बैठ खाये फिर सतरंज और चौपड़ खेल उसका जी बहलाया और रात्रि को फिर भोजन किया और खा पी के सोरहे इसीभांति दिनरात्रि हम दोनों उसी घर में रहतेथे इससे हम दोनों में अत्यन्त प्रीति उत्पन्नहुई यहांतक कि मैं उसको अपने प्राण से अधिक प्यारा रखनेलगा तब मैंने बिचारा कि जो कुछ ज्योतिषियों ने उसके पितासे कहा था कि यह

चित्र शाहज़ादे के हाथ से छुरी का गिरना और सौदागर बच्चे के हृदय में पार होना और उसका मरना

बालक अजब के हाथ से मारा जायगा झूठहै मैंतो इसको प्यारा जानता हूं विनाकारण मैंइसे क्यों मारूंगा उनतालीस दिनतक अत्यन्त हर्ष और आनन्द से हमदोनों उस घर में रहे चालीसवें दिन वह बालक भोरको जागतेही बड़ीखुशी और हर्ष से कहनेलगा कि देखो हे बादशाह! आज चालीसवां दिन है परमेश्वर की पूर्णकृपा और तुम्हारी अनुग्रहसे मैं जीताहूं मेरा पिता तुम्हारे उपकार और सेवाको जो तुमने इस अवधि में मेरे साथ किया है सुनकर अत्यन्त कृतज्ञ होगा और तुमको तुम्हारे नगर में कुशलपूर्वक पहुँचादेगा फिर उस बालक ने मुझसे कहा कि थोड़ा जल गरम करदो तो मैं स्नान करूं और वस्त्र बदल तैयारहूं आज मेरा पिता मुझको लेने आवेगा मैंने जल गरम कर उसे स्नानागार में लेजाय अच्छेप्रकार मलधुल नहला दिया फिर वह बिछौने पर जालेटा मैंने उसको लिहाफ़ ओढ़ादिया जब वह दोपहर की निद्रा करचुका मुझसे उसने कहा हे बादशाह! मेरा जी इस समय ख़रबूज़ा खाने को चाहताहै तुम एक ख़रबूज़ा और मिश्री लावो तो मैं खाऊं मैंने जाकर एक ख़रबूज़ा बहुत से ख़रबूज़ों में से चुना और चीनी के पात्र में रख उसके निकट लेगया और ख़रबूज़ा काटने के लिये छूरी को पूछा कि कहां है उसने कहा मेरे शिरहाने की ओर ताक़ पर है मैं ताक़ को ऊंचा देख उसके लेनेको उचका और छूरी को लेकर चाहता था कि सुगमता से नीचे को आऊं परन्तु दैवयोग से मेरा पांव क़ालीन पर फैला और मैं उस रत्नपारखी के पुत्रपर बेबशहो इसभांति गिरा कि छूरी उसके हृदय में लगी कि वह तुरन्त मरगया इस दशा को देख मैंने रुदनकर और मुख और हृदय पीट और वस्त्र फाड़ अपने को पृथ्वी पर देदेमारना आरम्भ किया और कहा कि पश्चात्ताप है कि कई घड़ी शेष रहगईथीं वह दिन उस पर से टरजाता केवल इतनेही को इस दीन बालक ने यहां आय अपना बचाव कियाथा और मैं अभागा सचमुचही इसका मारनेवाला हुआ और उन ज्योतिषियों का कहना ठीक था फिर मैंने मुख आकाश की ओर कर दोनोंहाथ उठाय कहा हे परमेश्वर! सर्वत्र तू सब कुछ देखता है मैंने इसे इच्छा से नहीं मारा यदि कुछ भी जान-

बूझकर मेरा अपराध हो तो इसी समय मेरा प्राण ले इसी भांति चिर-
काल तक रत्नपारखी के पुत्रकी लोथपर रोता रहा जब दिन थोड़ासा
रहगया मैंने बिचारा कि अब इसका पिता लेनेको आताहोगा क्योंकि
आज चालीस दिवस ब्यतीत होगये किस मुख से इसके पिता से
इतनी अवधि की भेंटकरूं पश्चात्ताप है कि वह मेरी सेवा और श्रम
ब्यर्थ हुई किन्तु इसके बिपरीत उपकार के बदले अपराधी हुआ अब
मेरा रहना यहां उचित नहीं यह बिचार उसकी लोथ को वहीं छोड़
उस घरसे निकल आया और दरवाज़े को बन्दकर उसके ऊपर से
भारी पत्थर रख मिट्टीसे तोप धरती बराबर करदी ज्योंही मैंने वहां से
निकल नदी की ओर दृष्टि करी तो क्या देखताहूं कि वही जहाज़ उस
बालक के लेने को पाल उड़ाये हुये चला आता है मैंने शोचा जो तू
यहा ठहरा रहता है तो बृद्ध मनुष्य जब अपने पुत्र को मुवा हुआ दे-
खेगा तो मुझे अवश्य अपने भृत्यों से मरवा डालेगा और मैं उसके
सेवकों से झूठ न बोलूंगा इससे उत्तम यह है कि तू इनसे अलग रह
फिर उस घरके ऊपर एक बहुत बड़ा सघन बृक्ष था उसके ऊपर चढ़
के मैंने अपने को ऐसा छिपाया कि मैं उन सब को भलीभांति देखूं
और उनकी बार्त्ता सुनूं परन्तु वे मुझको न देखें फिर उस जहाज़ ने
उसी कूल में आय लंगर किया और वह बृद्धमनुष्य अपने भृत्यों स-
हित जहाज़ से उतर उस घरके समीप हर्षपूर्वक आया परन्तु जब
उन्होंने ऊपरकी मिट्टी पोलीपाई तो उनके मुखका रङ्ग भयसे बदल
गया बिशेषकर उस बृद्धमनुष्य का फिर जब उन्होंने पत्थर को सरका
के सीढ़ी के निकटजाय उस बालक को बुलाया और वह सब उत्तरके
न पाने से अधिक दुःखित और शोकितहुये फिर उन्होंने उस घरके
भीतर जाय चारोंओर उस गृह को ढूंढ़ा तो शय्यायुक्त हुये पर उस
बालकको मुवाहुआ पाया और देखा कि छूरी उसके हृदयमें घुसीहुई
है और मुझे उसके हृदय से छूरी निकालने का ध्यान न रहाथा नि-
दान उस बालक को मुवाहुआ पाय सब रोने और चिल्लाने लगे और
उसका गुणानुबाद कर शिर पीटनेलगे उन सबके रोनेका शब्द सुनने
से मैं भी रोनेलगा और वह बृद्धमनुष्य अपने पुत्र की लोथ देखने से

बेसुधि होगया था तो बांह पकड़कर हवा खानेको उस घर से बाहर निकाला और उस बृक्षके नीचे जिसपर मैं छिपा बैठाथा बिठाया यह अभागा पिता की इतनी रक्षा होनेपर भी फिर अपने पुत्र के शोक में मग्नहोगया जब सुधि सँभाली तो सेवकों ने बालक की लोथको उस घर से बाहर निकाल नहलाया और नये श्वेत बस्त्रों से ढक गाड़दिया और उस बालकके पिताको जो कि बहुत रोताथा क़बरपर लाये उसने पहिले तीन बेर क़बर पर मिट्टी दी फिर उन सेवकों ने उस क़बर को मिट्टीसे तोप बराबर करदिया जब वे यह करचुके तो उसपरसे सब बस्त्र और भोजन की सामग्री जो शेष रही थी जहाज़ पर लेगये और उस पर सवारहो अपने देशको चले जब वह जहाज़ मेरी दृष्टिसे लुप्तहुआ तो मैं उस बृक्ष से नीचे उतरा और अकेले होनेके कारण उसी घर में कि उसका किवाड़ खुलारहता जायकर सो रहता और प्रातःकाल को उस द्वीप में मार्ग ढूंढ़ने के निमित्त इधर उधर फिराकरता और फल आदि खा कालक्षेप करता निदान एक मासतक मैं इसीभांति शोकयुक्त उसी द्वीप में रहा कि उस समुद्र का जल घटते २ पांव के बराबर होगया और वह द्वीप बड़ा बिदित होने लगा इसी प्रकार हौले २ उस समुद्र का जल ऐसा घटगया कि एक नाले के समान केवल मेरी पिंडुलियों तक जल रहगया फिर मैं उस बालू को कि उस समुद्र के जलके सूखजाने से निकल आया था बड़ी कठिनता और श्रम से लांघकर उसपार पहुँचा और वहां से बहुत दूर तक आगे को चलागया यहांतक कि दूर से एक बस्तु ऐसी दृष्टिपड़ी कि जैसे बहुतसी अग्नि प्रज्वलित होतीहै उसको देख मैं अत्यन्त प्रसन्नहुआ और सोचा कि वहां मनुष्य अवश्य होंगे क्योंकि अग्नि आपसे नहीं जलती फिर जब मैं उसके समीप गया तब मुझको बिदित हुआ कि अग्नि नहीं किन्तु लाल तांबे का घर है सूर्य की किरण पड़नेसे वह घर प्रज्वलित अग्नि के समान दृष्टि पड़ता है मैं उस घर के निकट जाय सुस्ताने को बैठगया और बिचारा कि इस बड़े भारी घर का हाल मालूम करना चाहिये इतने में दश जवान उस मकान से निकले परन्तु मैं उन्हें देख आश्चर्यित और अचम्भित हुआ क्योंकि

वे दशों जवान दाहिने नेत्र से काने थे और उनके साथ एक बृद्ध मनुष्य बहुत लम्बा जिसका स्वरूपभी बहुत उत्तम था देखा मैं अभी इसी आश्चर्य में था कि इतने मनुष्य क्यों दाहिनी आंख से काने और एकही स्थान पर क्यों इकट्ठे हैं इतने में वह तुरन्त मेरी ओर आये और अति प्रसन्नता से प्रणामकर पूछा कि तुम्हारा आना इस स्थान पर क्योंकर हुआ मैंने उनको उत्तर दिया कि मेरा बृत्तान्त बहुत बड़ाहै यदि तुम दयाकर बैठजावो तो मैं तुम्हारी आज्ञानुसार अपने बृत्तान्त को प्रकटकरूं वे सब बैठगये फिर मैंने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त जैसे कि अपने देश को छोड़ा था और वहांके पहुँचने तक उनसे प्रकट किया वह सुन अत्यन्त विस्मित हुये तदनन्तर वह सब जवान मुझे उस घर में लेगये उसके भीतर मैंने दालान दरदालान बहुत लम्बे चौड़े देख उनके विशेष एकान्त स्थलको बारहदरी आदि अति उत्तम उत्तम सामग्री और वस्तु से बड़ी सजसजकी थी और उस मकान के एक ओर एक घर बहुतबड़ा और उत्तम और गोल देखा जिसके घेरेमें दश नीले पर कोठोंके समान अलग अलग रात्रि के रहने और उनके बैठने को ऐसे बनेहुये थे कि प्रत्येक कोठे में एक मनुष्य अच्छी तरह रहे और उस गोल के बीच में एक और काला दालान उन दश कोठोंकी अपेक्षा कुछ ऊंचा था उसमें वह बृद्धमनुष्य जिसका कि मैंने पहिले बर्णन किया बैठा और उन दश कोठों में जो उस गोल के चारों ओर थे वह दश जवान अलग अलग जाय बैठे उनमें से एक जवान ने मुझसे कहा कि हे मित्र ! तू भी इस क़ालीन पर जो घरके बीच बिछाहुआ है जायकर बैठ परन्तु किसी बातको जो हम करें न पूछियो और यह भी न पूछियो कि तुम दाहिनी आंख से क्यों काने हो प्रत्येक विषयको देख चुपरहियो फिर वह बृद्ध कुछकाल के पश्चात् वहांसे उठा और उन दशों एकाक्ष मनुष्यों के हेतु व्यञ्जन लाया और प्रत्येक मनुष्य को अलग अलग भागदिया और एक भाग मुझे भी दिया मैंने उसे अकेला खाया जब हम भोजन करचुके तो उस बृद्ध ने एक एक मदिरा का गिलास हम सबको दिया फिर उन सबने मेरे बृत्तान्तको अद्भुत और अपूर्व जान दोहराने को कहा मैंने

अपने वृत्तान्त को फिर कह सुनाया फिर बहुत कालतक इधर उधर की वार्त्ता करतेरहे जब रात्रि बहुत ब्यतीतहुई तो एक जवान ने बृद्ध से कहा कि अब हमारे शयन करने का समय आपहुँचा अब तक तुम हमारे नियमकी बस्तु नहीं लाये इस बातको सुन वह उठा और एक कोठे से दश थाल नीले कठरों से ढकेहुये लाया और एक एक थाल दीपसहित प्रत्येक मनुष्य के सन्मुख रक्खा उन्होंने उन थालियों को खोला तो प्रत्येक थाली में राख और कोयले की स्याही और काला दिया था उन्होंने उस राख और स्याही को मिलाकर अपने मुख पर मला तो उस कालक के मलने से अनोखे और भयानक बिदित होनेलगे फिर सब चिल्लाय २ रोये और मुख व हृदय पीट २ कहनेलगे कि देखो हमारी निर्बुद्धिता और अज्ञानता का फल फिर इसीभांति बहुतकाल तक रोते पीटते रहे जब चुपकेहुये तो वही बृद्ध प्रत्येक के निकट लोटिया चिलमची लेगया हर एक ने अपना हाथ मुख धोया और वस्त्र जो फारडाले थे बदलकर अपने मकानों में जाय सोरहे यह उन मनुष्यों की दशा देख मैं अत्यन्त अधैर्य हुआ और कईबार घराकर चाहा कि अपने प्रण को तोड़ उनका बृत्तान्त पूछूं और उसका कारण जानूं परन्तु मैंने अपने को बहुत ठहराया और भोरतक उसी शोच बिचार में मुझे निद्रा न आई दूसरे दिन भोर को जब हम उस घर से हवा खाने को निकले तो मैंने उनसे कहा कि हे मित्रो! तुम मुझे ज्ञानी और बुद्धिमान् बिदित होते हो परन्तु रात्रि को जो मैंने तुम्हारी दशा देखी तो बड़ा अचम्भा किया कि ऐसा काम विक्षिप्तोंके सिवाय बुद्धिमानों का न होगा और मैं बड़ा शोचितहूँ यदि तुमसे इसका कारण पूछताहूं तो प्रण भङ्गहोता है जो नहीं पूछता तो मुझसे नहीं रहाजाता अब मुझ में ठहरनेकी शक्ति नहीं इस वास्ते पूछता हूं तुमने अपना मुख क्यों काला किया और दाहिनी आंखसे क्यों कानेहो उसने उत्तरदिया कि हम इसका कारण नहीं कहसक्के अगर तुम्हें हमारे साथ रहना स्वीकार हो तो इन बातों के पीछे न पड़ो फिर वह दिन जब ब्यतीतहुआ तो हमने रात्रि को अलग भोजन किया और उस बृद्धने उसीभांति थालियोंको उनके सन्मुख रक्खा और उन

जवानों ने नियमानुसार मुख अपना कालाकर वही किया मैं इस दशा को दूसरी बेर देख महाअधैर्य हुआ और उनसे कहा हे मित्रो! तुम इस बिषय को मुझे बतलादो और मुझे कोई ऐसा उपाय बतादो कि जिससे मैं अपने देश में पहुँचूं क्योंकि मुझे इतना धैर्य नहीं कि तुम्हारे साथ रह तुम्हें इस दशामें देखाकरूं और उसके कारण को न जानूं यह सुन उनमें से एक मनुष्य ने मुझे उत्तरदिया कि हमारी इस दशाको देख इतना न घबरा हम तेरी मित्रता और भलाईके कारण इस बिषय को नहीं प्रकट करसक्ते ऐसा न हो कि जो तुम्हारी भी हमारीसी दशा होजाय जो तू चाहता है कि हमारी इस अभाग्यता को जानले तो हम से कह हम इसका उपायकरें मैंने कहा निस्सन्देह मैं सुननेकी लालसा रखता हूं मेरे इस कहने से उस जवान ने कहा फिर हम तुझको समझाते हैं कि इसबात के पीछे न पड़ और हमारे उपदेश को मान नहीं तो हमारे समान तूभी दाहिनी आंख से काना होजायगा मैंने उत्तर दिया कि इस बिषय में मुझे कोई दुःख पहुँचे तो मुझे अङ्गीकार है उसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं मैं उसे अपनी अभाग्यता से समझूंगा फिर उस जवान ने कहा जो किसी कारण तुम्हारा दाहिना नेत्र काना होजायगा और हमारे निकट आवोगे तो हम तुमको अपने साथ यहां न रहने देंगे क्योंकि यहां केवल दश मनुष्यों के रहने का स्थान है सो यहां दशों बर्तमान हैं ग्यारहवें की यहां समाई नहीं मैंने कहा यह भी मुझे स्वीकारहै जो कुछ हो सो हो मुझे इस भेदको जनादो जब उन दशों जवानों ने देखा कि मैं अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ हूं तब उन्होंने एक भेड़ को मारा और उसकी खाल निकाली और उसी छूरी को जिससे भेड़की खाल निकाली थी मुझे देकर कहा कि इसको रक्षापूर्वक अपने निकटरख यह तेरे काम आवेगी अब हम तुझे इस भेड़ की खाल में बन्दकर बन में रख कर चलेआवेंगे और एक बहुत बड़ा पक्षी जिसको रुख़ कहते हैं वह आकर तुझे अपना भक्ष्य समझ यहां से झंपट्टामार ऊपर की ओर ले उड़ैगा फिर तुझे एक पहाड़ की चोटी पर रख तेरे खाने की चाहना करैगा इसवास्ते पहिले से तुझे चैतन्य करते हैं कि जिस समय अपने को

पृथ्वी पर पाइयो तुरन्त इस छूरी से भेड़ की खाल को चीर शीघ्र बाहर निकल आइयो वह पक्षी तुझे देख डरैगा और वहांसे उड़जायगा फिर वहां न ठहरके निर्भय होय भागजाइयो फिर थोड़ी दूरपर तुझे एक अत्यन्त सुन्दर और अपूर्व मन्दिर मिलैगा उस मकान के नीचे से ऊपरतक सुवर्ण के पत्र लगे हैं और उसपर उचित २ स्थानों पर रत्न हीरे और बहुमोल्य मणि जटितहैं फिर तू उसके दरवाज़े से वह सदैव खुला रहता है होकर उस मकान के भीतर निर्भय चले जाइयो हम सब उस मकान में पारी २ से रहे हैं परन्तु जो कुछ हमने उस में देखाहै उसका बृत्तान्त हम तुमसे नहीं कहैंगे और जो दशा हम पर हुई वहभी बर्णनके योग्य नहीं क्योंकि वहां का बृत्तान्त तुझे आपसे आप बिदित होजायगा परन्तु इतनी बात कहतेहैं कि हमारे समान तू भी दाहिनी आंख से काना होजायगा और हमारे समान पश्चात्ताप होगा यदि तू प्रत्येक के बृत्तान्त को जो अत्यन्त अपूर्व है सुने और लिखे तो बड़ीभारी एक पुस्तकहो परन्तु हम उसे प्रकट नहीं कर सक्के जब वह जवान इतनी बात कहचुका तो मैंने छुरी लै भेड़ की खाल को अपने ऊपर लपेटा उन्होंने उसे चारोंओर से इसभांति से सिया कि मेरे श्वास लेनेका बाधक न हो और बनमें रख अपने गृह को चले गये थोड़ीदेर न हुईथी कि रुख़ पक्षी आया और मुझको भेड़ समझ कूदा और अपने पंजों में पकड़ उस पहाड़ की चोटी पर ले गया जब मैंने देखा कि उसने मुझे पृथ्वी पर रक्खा तत्काल छुरी से उस खाल को काटके बाहर निकलआया तो वह पक्षी मुझे देखतेही उड़गया मैं उस गढ़ के देखने की चाहना रखता था इससे उस पहाड़ पर ठहर न सका और चलके दोपहर के पीछे उस मकान में पहुंचा और उस मन्दिरको उन एकाक्ष जवानोंके कहनेसे भी अधिक सुन्दर और अच्छा पाया दरवाज़ा उसका खुला देखा तो मैं वहांसे भीतर गया उसमें एक गृह चौकोना और बहुत बड़ा देखा जिसमें कि एक दरवाज़ा सुवर्ण का और निन्नानबे दरवाज़े चन्दन और आबनूस के थे और बहुतसी सीढ़ियां जिसमें से चढ़कर उन गृहों में जाते थे और वह सौ दरवाज़े कोश और बागों के थे उनमें असंख्य द्रव्य

भराहुआ था फिर मेरे सन्मुख एक दरवाज़ा बारहदरी का दृष्टिपड़ा उसके भीतर जाकर देखा कि चालीस नवयौवना सुन्दरी स्त्रियां उत्तम२ आभूषण और बस्त्रसे सजीहुई उस बारहदरी में बैठीथीं मुझे देखते ही उठ खड़ी हुईं और मेरे प्रणाम करने के पहिलेही अत्यन्त हर्ष और प्रसन्नता से बोलीं कि आइये क्षेमकुशल से हो और एक ने उनमें से कहा हम सब बड़ी देर से तुम्हारे आनेकी राह देखती थीं परमेश्वर का धन्यबाद है कि तुममें सब गुण जैसा कि हम चाहती थीं पाया और बिश्वासहै कि हमारा संगभी तुम प्रसन्नकरोगे और किसी भाँति अप्रसन्न न होगे फिर उन्होंने मुझे प्रतिष्ठापूर्वक एक उत्तम स्थान में कि उनकी अपेक्षा कुछ दूर था बैठाया कितना ही मैंने वहां बैठने का बड़ा बहाना किया कि यह स्थान मेरे इस दशा और बैठने के योग्य नहीं परन्तु उन सबने कहा तुम इस समय से हमारे पति और स्वामीहो और हम तुम्हारी बांदी और आज्ञापालक हैं उस काल की प्रसन्नता और आनन्द जो उनके देखने और आज्ञा पालकता से मुझको प्राप्तहुआ था बर्णन नहीं करसक्ता संसार में इस से अधिक पदवी प्राप्त न होगी जो मुझे उस समय प्राप्त थी फिर एक गरमजल मेरे पांव धोने को लाई और सुगन्धितजल मेरे हाथ पर डालने लगी और किसीने बस्त्र लाकर पहिनाये और किसीने नानाप्रकार के व्यंजन मेरे सन्मुख लायधरे और कोई सुराही और उत्तम मदिरा का गिलास मेरे पिलाने को लेके खड़ीहुई निदान वह सब सेवा हर्षपूर्वक करतीथीं उनको देख मैं अत्यन्त मोहितहुआ कि अपने सम्पूर्ण शोच और आपत्ति को भूलगया और अपने को सर्व संसार का बादशाह समझनेलगा फिर मैंने उन स्त्रियोंसहित भोजन किया और मदिरा पी जब भोजन करचुके तो उन सब ने मेरे चारो ओर बैठ मुझसे राह का बृत्तान्त पूछा मैंने उनसे अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कहना आरम्भ किया यहांतक कि रात्रि होगई जब मैं अपने बृत्तान्त का हाल उनसे कहचुका तो कई स्त्रियों ने मुझसे वार्त्ता करनी आरम्भ की और कइयों ने उस गृह में रोशनी ऐसीकी कि दिन बिदित होनेलगा और ऐसी अच्छी भांति और बुद्धिमानी से दीप

प्रज्वलित किये थे कि जिनको मैं देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ फिर उन्होंने भोजन की थालियां उठाय फल और मिठाई आदि लाय मेज़ पर रक्खीं और नानाप्रकार की उत्तम २ मदिरा और फालसे आदि का शर्वत शीशों और अन्य पात्रों में लाय धरदिये जब सम्पूर्ण वस्तु आ-चुकी तो उन्होंने प्रथम मुझको उस[illegible]र बैठाया और कई सुन्दरियां मेरे निकट बैठीं और कई गाने वजाने लगीं फिर चिरकालतक मदिरा पीते रहे कोई तो बाजों से स्वर मिलाय गानेलगीं और कोई नाचने लगीं यहांतक कि अर्धरात्रि व्यतीत हुई अभी गाना बजाना बन्द न हुआ था कि एक स्त्री ने मुझसे कहा आज बहुत दूरसे आये और थके हो अब शयनकरो आपके वास्ते शयनस्थान तैयारहै परन्तु जब आप सोने को जायँ तो हममें से एक को पसन्दकरो तो वह रात्रिको आपके कोठे में जाय सो रहे मैंने हा यह अनुचितहै कि मैं एक को तुममें से कि रूप अनूप समान और चित्तचोरहो चुनूं ये विषय मेरी ढिठाई और परस्पर के डाह का कारण होगा उस सुन्दरी ने उत्तर दिया कि हम अपने चित्त से तुम्हारी प्रसन्नता में प्रसन्न हैं हमें डाह नहीं कि पर-स्पर की प्रसन्नता का कारण हो तुम आनन्दसे एकको हम चालीस स्त्रियों में से हाथ पकड़ अपने स्थान लेजाव कोई बुरा न मानेंगी क्योंकि हम एक पारी २ से तुम्हारे भोगनेसे आनन्द को प्राप्तहोंगी कोई स्त्री आज और कोई कल इस में कुछ ढील और शोच विचार न करो परन्तु एक को पसन्दकरो मैंने लाचारहो अपना हाथ उस सुन्दरी की ओर बढ़ाया जो मुझसे उस समय वार्त्ता करती थी उस ने तत्काल अपना हाथ मुझे दिया फिर वे सब एक उत्तम शयना-गार में लेजाय उस स्त्री सहित जिसका हाथ मैं पकड़े था छोड़कर अपने अपने स्थान में सोईं दूसरे दिन भोर को मैंने निद्रा से जग [illegible]हिले इसके कि वो सब स्त्रियां मेरे स्थान में आवें तुरन्[illegible] और प्र-कार के वस्त्र और रत्न कि पहिले से उस स्थान में लगेरक्खे थे प-हिने फिर उन्तालीस स्त्रियों ने आय मुझे प्रणाम किया और कुशल क्षेम पूछी और मुझे स्नानागार में लेजाय नहलाया और नाना प्रकार की सेवा की जब मैं स्नानागार से बाहर आया तो वस्त्र उससे

भी उत्तम पहिनाये और चिरकालतक भोजन करतारहा फिर सुन्दर तमाशे अर्धरात्रि तक पहिली रात्रि के समान दिखलाये जब शयन करने का समय आया फिर उन्होंने मुझसे कहा कि जिसे आप हम में से पसन्द करें वह आपके साथ जाय सोरहे मैंने एक का हाथ उन में से पकड़ लिया और शयनागार में जाय सो रहा फिर भोर को स्नानकर और वस्त्र पहिनके भोजन किया और अद्भुत चरित्रों और तमाशों के देखने में लगारहा निदान उस योगी ने ज़ुबैदा से कहा हे सुन्दरि! मैं अबतक तुमको कहूं इसी भांति प्रत्येक निशा को उन चालीसों स्त्रियों में से एकको लेजाय सोता निदान अत्यन्त आनन्द और हर्ष से एक पूरा बर्ष उस गढ़ में रहा जब एक दिन उस बर्ष का शेष रहा तो सम्पूर्ण स्त्रियां प्रत्येक भोर को आय मुझे प्रणाम करतीं और हर्षसहित कुशल हमसे पूछतीं उस दिन वो सब रोतीहुई आईं और मुझे हृदय से लगाय कहनेलगीं हे शाहज़ादे! अब हम तुमसे बिदा होती हैं तुम्हारा परमेश्वर रक्षक हो उनके रोने से मैं अत्यन्त शोचितहुआ और पूछा तुम्हारे रोनेका क्या कारण है और मुझसे क्यों बिदा होती हो परमेश्वर के वास्ते यह भेद मुझसे कहो कि मैं इस विषय में तुम्हारी कुछ सहायता करसक्ताहूं वा नहीं उन्हों ने कहा परमेश्वर की इच्छा योंही है कि हम तुम को कभी न देखें और न तुम हमको देखो क्योंकि बहुतसे मनुष्य तुम्हारे समान यहां आये और रहे फिर अलग होगये अब हमको उनका हाल कुछभी बिदित नहीं कि वो क्या हुये जीते हैं या नहीं यह कह वो फिर रोने लगीं मैंने घबराकर कहा तुम अपने शोक का कारण क्यों नहीं प्रकट करती हो उन्होंने कहा हम तुम से क्या कहें यह समय तुम्हारे और हमारे अलग होनेका है और फिर आशा हमें नहीं कि तुमको देखें परन्तु जो तुम चाहो और अपनी बात पर दृढ़हो तो फिर हम को आशा है कि फिर तुम को देखें इसी प्रकार संग हमारे और तुम्हारे बीच में रहे मैंने कहा इसबार्त्तासे तो कुछ न सूचितहुआ कि इस कहने से तुम्हारा अभिप्राय क्या है तुम को परमेश्वर की सौगन्द है इस विषय को स्पष्ट बर्णन करो तब एक ने कहा सब के पहिले हम तुम्हें

जानती हैं कि हम चालीसों शाहज़ादी हैं वर्षभर हम इस द्वार में जी बहलाने को रहती हैं फिर हम अवश्य कार्यों के हेतु चालीस दिवस के लिये यहां से जाती हैं और चालीस दिवस के पश्चात् फिर इस मन्दिर में आजाती हैं कल के दिन यह वर्ष पूराहुआ इस कारण आज के दिन हम सब तुम से बिदा होती हैं यही हमारे रोने का कारण है अपने जानेके पहिले सम्पूर्ण वस्तु और कोठों की कुंजियां मुख्य उन सौ दरवाज़ों की तुम्हें सौंपेंगी कि हमारे जाने पीछे प्रत्येक गृह में फिरकर जी अपना बहलाना परंतु हम तुम्हारी ही सौगन्द देती हैं कि इस सुवर्ण के किवाड़ को न खोलना यदि तुम उसे खोलोगे तो फिर हम तुमको कभी न देख सकेंगी पर तुम से तो धैर्य न होसकेगा तुम उस किवाड को अवश्य खोलोगे यही हमारे तुम्हारे वियोग का कारण है इसीसे हम रुदन करती हैं यदि परमेश्वर तुम को यह बुद्धि दे कि हमारे पश्चात् उसे न खोलो तो किसी प्रकार की हानि न होगी तुम को चैन होगा किन्तु सम्पूर्ण आयु आनन्द से व्यतीत करोगे चैतन्य रहो इस सुवर्ण के किवाड़ को कभी न खोलना यदि तुम हमारे कहने के विपरीत करोगे तो तुमको अवश्य दुःख प्राप्तहोगा और हमें भी शोक और क्लेश होगा फिर तुम्हें दूसरी बेर सौगन्द देकर कहती हैं कि ऐसा काम न करना और हमें धैर्य दो कि चालीस दिवस के पश्चात् फिर तुम्हें आय यहां देखें हम आप इस सुवर्ण के दरवाज़े की कुंजी को अपने निकट रखतीं परन्तु यह उचित नहीं कि तुम ऐसे शाहज़ादे के देने को इन्कार करैं कि तुम्हारे अविश्वास का कारण हो उनकी ये बातें सुन मुझे अत्यन्त शोच हुआ और कहा तुम्हारे अलग होने में मुझे बहुत दुःख होगा और तुम्हारे इस उपदेश से मैं कहता हूं तुम्हारी आज्ञानुसार अवश्य करूंगा और तुम्हारे इस पीछे सोने के दरवाज़े को न खोलूंगा यह तो बहुतही सुगम है जो इससे अधिक कोई बात कठिन होती तो मैं उसे भी अंगीकार करता इसमें तो मेराही अर्थ है इसके विशेष जो बात कि तुम्हारे हमारे अलग होने का कारण है तो मैं जानबूझकर क्यों करूंगा निदान मैंने एक २ के हृदयलग उन सबको

बिदा किया फिर वो सब उस मकान में से चलीगईं और मैं अकेला रहगया उनके जानेसे मुझको बहुत दुःखहुआ यद्यपि केवल चालीस दिवसका बियोगथा परन्तु एक एक घरी मुझे बर्षके समानथी निदान मैंने अपने चित्त में सोचा कि उनके उपदेशानुसार केवल सुबर्ण का दरवाज़ा न खोल अन्य दरवाज़े जिनकी कि मुझे आज्ञा है खोलकर उनकी कुंजियों को जो रक्षापूर्वक रक्खीथीं ले पहिले दरवाज़ा खोला. जब उसके भीतर गया तो उसमें ए फलों का बाग़ देखा कि जिसके सरिस संसार में न होगा जिसमें हज़ारों सघन और शोभायमान बृक्ष उचित २ स्थान पर लगे हुये थे उसमें बहुत से नाना प्रकार के उत्तम २ अच्छे रंग के स्वादिष्ट फल लगे हुये थे जिनको कि मैं बहुधा नहीं जानता था लटकरहे थे और उन बृक्षों में जल इसभांति पहुंचता था कि पक्की छोटी छोटी नहरें चारों ओर एक बड़ी नहर से काट इस कारीगरी से लाये थे कि बिना सहायता प्रत्येक बृक्ष की जड़ में जल पहुँचता कि जिससे नवीन पत्ते और फूल उत्पन्न होते और कोई कोई बृक्ष अधिक फल गने से झुकगये थे अन्यों में केवल उनके पकने को पानी पहुँचता बुद्धिमानों ने इसभांति की नहरें स्थान २ पर बनाईथीं कि प्रत्येक समय ल पहुँचनेसे उस बाग़ में सदैव हरियाली रहती और बृक्ष कभी न मुरझाते चिरकाल तक मैं उसबाग़में फिरता रहा और प्रत्येक बस्तु को जो अद्वितीय और अद्भुत थी ध्यान से देख आश्चर्यित होता फिर मैंने उस दरवाज़े को बन्दकर दूसरा र-वाज़ा खोला उसमें केवल पुष्पवाटिका थी और फूलों के बृक्षों में जल बड़ी कारीगरी से पहुँचता और ऐसा कोई पुष्प संसार भर में न होगा जो उस बाटिका में न हो गुलाब, चँबेली, बनफ्सा, नरगिस, सोसन, बेला आदि नाना प्रकार के रंगोंके फूल फूलेहुये थे कि जिनके सुगंधों से वहांकी बायु सुगंधित होरही थी उनकी लपटों से मग़ज़ भरगया फिर मैंने वहभी दरवाज़ा बन्दकर तीसरा दरवाज़ा खोला उसमें एक पक्षियों का गृह था जिसमें संगमर्मर का फ़र्श था और पिंजड़े सन्दल और आबनूस के लटकते थे बुलबुल तोता आदि पक्षी अपनी मिष्ट वाणी और चहचहाने से चित्तको प्रसन्न कर उभारते थे और उन

पक्षियोंके दाना पानीकी कुल्हियां बहुमूल्य पत्थरकीथीं और वह पक्षी-घर इतना बड़ाथा कि सौ मनुष्यों से उनकी रक्षा न होसके परन्तु उन बागों में एक भी मनुष्य दृष्टि न पड़ता था और विशेष इससे एक तिनुका भी वहां अधिक और अकार्थ न देखपड़ता कि जिसके देखनेसे जी हटजाय फिर जब सूर्यास्त हुआ तब वे पक्षी बसेरा लेनेको अपने २ स्थान पर जा बैठे और मैं अपने मन्दिर में आय सोरहा दूसरे दिवस भोर को जाय एक और दरवाज़ा खोला उसमें बड़ाभारी महल पाया कि जिसके चारों ओर बड़े बड़े घर बनेहुयेथे और उसमें चालीस दरवाज़े बने देखे परन्तु वह दरवाज़े खुलेहुये थे और प्रत्येक दरवाज़े से कोठा में जाने के मार्ग थे उसमें उत्तम एक कोठा केवल मोतियों से भरा था उसके एक और ढेरमें कबूतर के अण्डे समान मोती थे और दूसरे ढेर में कुछ उससे छोटेथे और इसीप्रकार कई ढेरमें प्रत्येक भांति के मोती अलग २ थे और दूसरे कोठेमें हीरे और मणि और वो मणि भी थे जो रात्रि को दिये के समान चमकते थे और तीसरे में नीलमणि चौथे में सोने की ईंटें और पांचवें में अशर्फ़ी छठे में चांदी की ईंटें सातवें में रुपये और शेषों में बिल्लौर लहसुनियां और नाना प्रकार के रत्न और खानि के पत्थर जैसे मूंगाआदि इन बहुमूल्य बस्तु से सम्पूर्ण घर भरेहुये थे इस अथाह द्रव्य को देख मैं आश्चर्यित हुआ और सोचा कि यदि सम्पूर्ण संसार का द्रव्य और धन इकट्ठा किया जाय तो भी इस द्रव्य के समान न होगा मैं कितना भाग्यवान् और प्रारब्धी हूं कि इतना धन और ऐसी सुन्दर चालीस शाहज़ादियां भोग करता हूं उस योगी ने कहा हे सुन्दरी ! उन अद्भुत बस्तुओं का कहां तक वर्णन करूं कि जिनके प्रकट करने में जिह्वा अचल है जब इसी भांति देखते २ उन्तालीस दिन व्यतीत हुये इस समयान्तर में मैंने निन्नानवे दरवाज़े खोले और हरएक बस्तु को देख मैंने अचम्भा किया फिर वहां केवल एक दरवाज़ा रहगया जिसके खोलने को मुझे निषेध किया था चालीसवें दिन कि उसके भोर वे सब शाहज़ादियां उस मकानमें आतीं और मुझ से उनसे भेंट होती भोर को उठतेही शैतान ने मुझे बहलाया तो मैंने उस दरवाज़े को खोला

उस किवाड़ के खोलतेही उसमें से ऐसी अच्छी सुगन्ध आई जिस से मैं बेसुध होगया फिर जब सुधि सँभाली तो बिचारा कि इसके भीतर जाय देखभाल बन्दकरदूंगा निदान उसके भीतर गया और थोड़ीदेर तक ठहरा कि यह सुगन्ध की लपट वायु में फैल कम होजावे इतने में उस किवाड़ के भीतर जाय एक घर बहुत बड़ा देखा कि उस की पृथ्वी पर केसर बिछा हुआ था और उसके भीतर सुवर्ण की तिपाइयों पर अगर आदिके तैल से दीप प्रज्वलित थे इसीकारण बड़ी तीक्ष्ण सुगन्ध की लपटें वहां से आती थीं इसके सिवाय बहुत से रूपे के दीपक सुगन्धिततैल से जलेहुये देखे इसके सिवाय एक और अद्भुत चरित्र देखा कि वहां एक बहुत सुन्दर मुश्कीघोड़ा बँधाहुआ था मैं उसके निकट जाय उसे अच्छीभांति देखने लगा उसकी लगाम में सोने के पत्र लगेहुये थे और उस घोड़े के सन्मुख एक पात्र में तिल और यव बहुत से रक्खे थे और एक पात्र में गुलाब उसके पीने के वास्ते धरा था मैंने उस घोडे को पकड़ बाहर चांदनी में निकाला कि उसे और भलीभांति देखलूं फिर उसपर सवार होके मैंने चाहा कि वह चले परन्तु वह अपने स्थान से न हिला तब मैंने उसको चाबुक मारा ज्योंही चाबुक लगा वह घोड़ा बड़े भयानक शब्द से हिनहिनाया तदनन्तर अपने परों को कि जिनको मैंने नहीं देखाथा फैलाया और आकाश की ओर इतना ऊंचा उड़ा कि पृथ्वी न दिखाई देती थी मैं गिरने के भय से उस घोडे की गर्दन के बाल पकड़ उसकी गर्दन से लिपटगया फिर उस घोड़े ने पृथ्वीकी ओर उतरना आरम्भ किया निदान उसी तांबे के मकान की छतके ऊपर उतरा और मुझे इतना अवकाश न दिया कि मैं उसके ऊपर से सुगमता से उतरूं अपनी पीठको इस बेग से हिलाया कि मैं चित्तगिरा और अपनी पूंछ मेरी दाहिनी आंख में मारी कि वह फूटगई यही मेरे काने होनेका कारण है उस समय मुझे कहना उन जवानों का स्मरण आया फिर वह घोड़ा अपने परों को फैलाय उड़ा और मेरी दृष्टि से गुप्त होगया मैं उसी आपत्ति की दशा में उठा और आंखपर हाथ रक्खेहुये उस मकान की छतपर धीरे २ चला और नेत्र जाने

की पीड़ासे अतिदुःखित था फिर मैं छतके नीचे उतरा और बारहदरी में जाय उन दश कोठों को कि जो उस घर के चारों ओर थे और उसके बीचवाले को जो उन दशों से अलग था पहिचाना कि यह वही गढ़ है जिससे रुखपक्षी मुझे पहाड़ पर उठालेगया था परन्तु उस समय दशों जवान उस बारहदरीमें न थे मैं वहां उनके आनेका मार्ग देखता था इतने में वहभी उस वृद्ध मनुष्य सहित आये और मेरी तरफ़ कुछ ध्यान भी न किया और न मेरी आंख फूटने का कुछ पश्चात्ताप किया और कहा हम इस तेरी आपत्ति के कारण नहीं हुये मैंने कहा तुम सत्य कहतेहो जो कुछ कि मुझ पर हुआ केवल अपने ही हाथों के कारण हुआ परन्तु इसके अच्छे होने का उपाय भी है उन्होंने कहा कि यदि हमें इस दुःख का उपाय विदित होता तो हम अवश्य करते और इसी आपत्ति में कि जिसमें तुम पड़ेहो हमभी फँसे हुये हैं एक २ वर्षतक हम सब बड़े आनन्द और चैन से उस मकान में रहे यदि सुवर्ण का दरवाज़ा उन शहज़ादियों के पश्चात् न खोलते तो हमारी ये दशा न होती और सदैव उसी आनन्द और चैन में रहते यदि तुम हम सबसे अधिक बुद्धिमान् और चैतन्य थे परन्तु उस सुवर्ण के दरवाज़े के खोलने बिना न रहसके और अपने को इस दुःख में डाला और इस दण्ड को प्राप्तहुये हम तुम्हें भी अपने हा में शामिल करते परन्तु हम आगे तुमसे कहचुके हैं कि इस स्थान पर और मनुष्य की समवाई नहीं है इससे तुम्हारे वास्ते यही उत्तम है कि यहां से तुम बुग़दाद नगर में जाओ वहांपर ऐसे मनुष्य से मिलाप होगा जो तुम्हारे दुःख को दूरकरैगा मैं उनके कहने के अनुसार बुग़दाद को चला मार्ग में अपनी भौंह और डाढ़ी मुड़वा योगियों के वस्त्र पहिन बहुत दिनों के पश्चात् चलते २ आज सायंकाल को इस नगर में पहुँचा और शहरदिवाली पर इन दोनों योगियों से कि वो भी मेरे समान अभी आये थे भेंट हुई फिर हम तीनों रात्रि के रहने के लिये घर ढूंढ़ने लगे संयोगबश अपने सुभाग्य से तुम्हारे द्वार पर आये तुमने आतिथ्यपालन की राह से अपने घर में जगह दी और भली भांति आदर किया कि जिससे

कृतज्ञ हैं जब तीसरा योगी भी अपना बृत्तान्त कहचुका ज़ुबैदा ने उससे और उसके साथियों से कहा कि तुम तीनों का अपराध मैंने क्षमा किया अब तुम यहां से चलेजाओ तब उन में से एक ने कहा कि हम आशा रखते हैं कि हमैं इतनी आज्ञाहो कि यहां ठहरकर इन तीनों मनुष्यों का बृत्तान्त भी जो हमारी सभा में हैं सुनलें ज़ुबैदा ने खलीफ़ा ज़ाफ़र और मसरूर की ओर देखा कि उनकी पदवी को न जानती थी ध्यान देकर कहा अब तुम तीनों भी अपना २ बृत्तान्त कहो ज़ाफ़रमन्त्री ने बिनयकी कि हे सुन्दरी! हम अपना बृत्तान्त इस महल में पहुँच बिस्तारपूर्वक कहचुके हैं और अबभी आपके सन्मुख कहते हैं हम तीनों मनुष्य मवस्सल के व्यापारी हैं अपने व्यापार की बस्तु बेंचने को इस नगर में आये थे और सराय में उतरे हैं इस रात्रि को यहां के एक व्यापारी ने हमको न्योता दिया था इस लिये उसने हम सबको अपने घर में लेजाय नाना प्रकार के उत्तम २ और स्वादिष्ठ व्यञ्जन खिलाये और मदिरा पिलाई फिर देरतक उस सभा में गीत नृत्य आदि रहा यहांतक कि गान का शब्द सुन रौंदके लोग दौड़ेआये और उस सभा के बहुत मनुष्यों को पकड़ लिया हम अपने सुभाग्य से भागकर निकल आये परन्तु रात्रि व्यतीत होने से सराय का दरवाज़ा बन्द होगया था हम विचारते थे कि कहां जावें इतने में हम इस गली में पहुँचे और गाने बजाने और हँसने बोलने का शब्द तुम्हारे घर से सुन हमने दरवाज़ा खुलवाया और तुम्हारी आज्ञानुसार भीतर चलेआये ज़ुबैदा ने इतनी कथा सुन जाना कि यह सचमुच मवस्सल के व्यापारी होंगे जैसा कि वे प्रकट करते हैं सत्य होगा फिर उन सब से कहा तुम्हारा अपराध क्षमा किया अब तुम यहां से चलेजाओ और इसभांति ललकारके आज्ञादी कि जिसके सुनने से खलीफ़ा ज़ाफ़र और मंत्री मसरूर और तीनों योगी और वे मज़दूर सातों मनुष्य कहे सुने विना तुरन्त उस महल से निकलगये क्योंकि सातोंहब्शी नंगे खड्ग लियेहुये ज़ुबैदा की आज्ञा के पालने को खड़े थे उनके निकलतेही उस घर का किवाड़ बन्दहोगया और खलीफ़ा ने अपने बृत्तान्त के

प्रकट करने बिना उन योगियोंसे कहा तुम परदेशी अभी आयेहो इस नगर के मार्गों को नहीं जानते निशा के अँधियारे में कहां जावोगे उन्होंने उत्तर दिया कि हम इसी बिचार और शोच में हैं खलीफ़ा ने कहा हमारे पीछे चले आवो हम तुम्हारी सहायता करेंगे और मंत्री के कान में कहा कि तुम इन तीनों योगियों को अपने घर लेजा भोर को मेरी सभा में मेरे सन्मुख लाइयो मंत्रीजाफ़र अपने स्वामी की आज्ञानुसार उन तीनों योगियों को अपने घर लेगया और मज़-दूर अपने घरगया खलीफ़ा मसरूर सहित अपने महल को गया और अपनी शय्या पर जालेटा परन्तु भोर तक उसे निद्रा न आई और उन्हीं बातों को कि उसने देखी और सुनी थीं स्मरणकर अच-म्भित होता और चाहता था कि इस बृत्तान्त को जानलें कि जुबैदा कौन है और उन कुतियों को इतना क्यों मारा और अमीना के बदन पर क्यों कालेचिह्न हैं इसी बिचार और शोच से उठ भोर को सभामें गया और सिंहासनपर जाबैठा। इतने में ज़ाफरमंत्री ने भी आय दण्ड-वत् की खलीफा ने मंत्रीको आज्ञादी कि जबतक मैं उन तीनों स्त्रियों और उन दोनों काली कुतियों का बृत्तान्त न जानलूंगा तबतक मुझे चैन न पड़ेगा हे ज़ाफ़र! तू जा और तुरन्तही उन तीनों स्त्रियों और तीनों योगियों को मेरे सन्मुख ला इतनी आज्ञा मंत्री पाय उन तीनों स्त्रियों के घर गया और रात्रिके बृत्तान्त को कुछभी न प्रकटकर खलीफ़ा को आज्ञा प्रकट की यह आज्ञा पाते ही वह तीनों स्त्रियां अपने २ मुख पर बुर्क़ा डाल मंत्री के साथ चलीं और मार्ग में मंत्री उन तीनों योगियों को भी कुछ कहे सुने बिना अपने साथ ले खलीफ़ा के स-न्मुख लाया खलीफ़ा उनके आतेही अत्यन्त हर्षितहुआ और उन तीनों स्त्रियों को आड़ में पीछे अपने खड़े होने को कहा कि उनकी प्रतिष्ठा खलीफ़ा महल के सेवकों पर सूचितहो और तीनों योगियों को उनकी प्रतिष्ठा और पदवी के अनुसार अपने समीप बैठाया फिर जब वो तीनों स्त्रियां खलीफ़ा की आज्ञानुसार उस स्थान पर बैठ गईं तब खलीफ़ा ने उनकी ओर फिरके कहा कल की रात्रि मैंने व्यापारी के बेष से तुम से मिलाप किया था और हमसे तुम्हें कुछ

दुःख हुआ था सो उसी कारण तुम मुझ से क्रोधित हुईथीं अब जो तुमको मैंने बुलाया है तो यह न समझना कि उसी बिषय के सूचन के लिये तुम्हें बुलाया है धैर्य रक्खो मैंने उस बिषय को अपने चित्त से बिस्मरण करदिया और तुम्हारे आने से अतिहर्षित हुआ यदि यह बुद्धि जो परमेश्वर ने तुम्हें दी है सम्पूर्ण बुग़दाद की स्त्रियों में होती तो बहुत अच्छा होता यदि हमसे तुमको महादुःख प्राप्तहुआ और हमने तुम्हारा बड़ा अपराध किया परन्तु तुमने अपनी कृपा से हम सब को छोड़ दिया कल रात्रि को मैं मवस्सल का ब्यापारी था और इस समय में हारूंरशीद सातवां खलीफ़ा अब्बासके घराने का और अपने बड़े नबी का युवराज हूं तुम्हारे बुलाने का कारण यह है कि बतलाओ तुम कौन हो और तुम में से एक स्त्री ने किस लिये उन दोनों काली कुतियों को मार अपने गले लगाया और क्यों एक स्त्री के कन्धों पर काले चिह्न हैं खलीफा ने इस बृत्तान्त को भली भांति उनसे कहा और उन्होंने भी समझा परन्तु मंत्री ने फिर उस प्रश्न को दुहराय समझा दिया यह सुन जुबैदा ने पहिले अपना बृत्तान्त इसप्रकार पर आरम्भ किया॥

जुबैदा का बृत्तान्त॥

जुबैदा ने खलीफ़ा के सन्मुख अपनी कहानी को इसभांति बर्णन किया कि हे बादशाहों के बादशाह! मेरी कहानी अद्भुत और अपूर्व है कि उसके समान कभी आपने न सुनी होगी ये दोनों काली कुतियां और मैं तीन सगी बहिनें हैं अब इस बृत्तान्त को आप सुनिये कि क्यों ये दोनों कुतियां बनी और ये दोनों स्त्रियां जोकि मेरे साथ हैं मेरी सौतेली बहिनें हैं और वह स्त्री कि जिसके कंधे में काले चिह्न हैं अमीना है और दूसरी का नाम साफ़ी और मेरा नाम जुबैदा है अपने पिता के मरने के पश्चात् हम पांचों बहिनों ने पिता के सम्पूर्ण धन को परस्पर बांटलिया वे दोनों सौतेली बहिनें अपने २ भाग को ले अपनी माता के निकट जाय रहीं और हम तीनों बहिनें अपनी माता के समीप रहीं कि माता उस समय तक जीती थीं जब वो मरगई तो तीन २ हज़ार रुपये हम तीनों बहिनों को उनके धन

से मिले उन दोनों बहिनों ने कि हमसे बड़ी थीं अपने भागों को पाय विवाह किया और अपने पतिके घर जायरहीं और उनके पश्चात् मैं अकेली रहनेलगी थोड़े दिनके पश्चात् मेरी बड़ी बहिन के पति ने अपना सम्पूर्ण माल और असबाब बेंच और वह भी जो मेरी बहिन के पास था सबको इकट्ठाकर दोनों स्त्री पुरुष आफ्रिका की ओर चले गये और वहां मेरे बहनोई ने अपना और मेरी बहिन का सम्पूर्ण धन और आभूषणादि खा पी उड़ाडाला जब वह निर्धन होगया तो उसने किसी बहाने से मेरी बहिन को तलाक दे अपने घर से निकाल दिया वह फटेहालों और कठिनता और बड़े बड़े दुःखों को झेलते झेलते इतनी दूरसे बुग़दाद में पहुँची और इस नगर में कहीं आसरा न पाय मेरे घर आई मैंने उसे प्रतिष्ठापूर्वक अपने घर में रक्खा और पूछा कि कौनसा ऐसा दुःख हुआ कि जिससे तुम्हारी यह दशा हुई उसने रुदन कर अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकट किया वह सुन मुझे बड़ा शोच हुआ और मैं भी बहुत रोई फिर उसको स्नान कराय और अपने वस्त्रागार से बहुत उत्तम बसन पहिराये फिर मैंने उससे कहा हे बीबी! तुम मेरी बड़ी बहिनहो मैं तुमको माता समान समझतीहूं और तुम्हारे जानेके पश्चात् परमेश्वर ने मुझपर बड़ीदया की कि रेशम के वस्त्रों में से मुझे बहुतसा लाभ हुआ अब जो कुछ मेरे पासहै वह सब तुम्हारा है तुमभी इसीका व्यापार करो जो मैं करतीहूं उस समय से मैं और वह दोनों एकही घरमें बहुत आनन्द और चैन से रहनेलगीं और बहुधा हम दोनों अपनी दूसरी बहिन को स्मरण कियाकरतीं कि बहुत काल से उसका समाचार न पाया कि वह कहांहै और उसकी क्या दशा हुई थोड़े दिन के पश्चात् मेरी मँझली बहिन भी अपनी बड़ी बहिन के समान उसी बुरीदशा से मेरे घर आई उसके पति ने भी उसकी सम्पूर्ण वस्तु और धन खर्च कर अपने घर से निकाल दिया था निदान उसको भी मैंने अपने साथ रक्खा और बहुतसा धैर्यदिया कुछ काल में इन दोनों बहिनों ने मुझसे इस बात का बहाना किया कि तुम्हारे पास हमारे रहने से तुमको कष्ट और हानि पहुँचती होगी सो हम फिर विवाह करेंगी मैंने उनसे कहा जो मेरी ज़रबारी से तुम्हारा यह

बिचार है तो व्यर्थ है क्योंकि परमेश्वर की पूर्ण अनुग्रह और अनुकम्पा से इस व्यापार में मुझे इतना लाभ होता है कि हम तीनों भलीभांति आनन्द करती हैं और सम्पूर्ण आयु भर इसीभांति प्राप्त होगा और तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचेगा यदि तुम्हारी इच्छा बिवाह करने की है तो मैं अत्यन्त आश्चर्यवान् हूं कि अपने पतियों से इतना दुःख और कष्ट पाने परभी अभी तुमको यही इच्छा बनी है इससमय में अच्छे पति का मिलना अत्यन्त कठिन है इसकारण इस बिचार को छोड़दो और पति बिना रहकर अपने घर में प्रतिष्ठापूर्वक कालक्षेप करो इसीभांति से मैंने बहुत कहा और समझाया परन्तु उन्होंने कुछ भी न सुना और न मेरे कहने को किया और बिवाह करने पर उद्यतहो मुझसे कहा तू हमारी छोटी बहिन है और हमसे अधिक बुद्धिमान् है परन्तु हम इससे अधिक तेरे घर में नहीं रहसक्तीं क्योंकि तू हमको बांदियों के समान अपने चित्त में समझती होगी यह सुन मैंने कहा हे बहिनो! यह क्या कहती हो मैं तुमको वैसाही अपनी बड़ी जानती हूं जैसा कि पूर्व समझती थी घरबार धन बस्तु आदि जो कुछ है वह सब तुम्हारा है फिर उनको अपने कण्ठ से लगाय धैर्य दिया और उसी प्रकार परस्पर मिलकर रहने लगीं फिर एक वर्ष के पश्चात् परमेश्वर ने मेरे व्यापार को ऐसा बढ़ाया कि मैंने प्रदेशमें व्यापार के हेतु जाने की इच्छा की कि कुछ बस्तु को जहाज़ पर लाद किसी नगर में व्यापार के निमित्त जाना चाहिये इस बात को बिचार अपनी दोनों बहिनों समेत बुग़दाद से बुशहर को आई और वहां से छोटासा जहाज़ मोलले अपनी सम्पूर्ण व्यापार की बस्तु को कि बुग़दाद से अपने साथ लाई थी उसपर लाद दिया वायु अनुकूल थी इस कारण तुरन्त मुहाने से नदी फ़ारस में पहुँची और वहांसे हिन्दुस्तान को चली बीस दिवस के पश्चात् हम एक द्वीप में जो बुलन्द पहाड़ के नीचे था पहुँचीं उस द्वीप में एक नगर बहुतबड़ा और अतिसुन्दर था उसके तट पर हमारे जहाज़ने लंगरकिया मैं तटपर उतरने की अतिलालसा रखती थी इसकारण अपनी बहिनों के पहिले उतर अकेली छोटी सी पंसोई पर सवार

होकर पृथ्वी पर उतरी और नगर के दरवाज़े पर जाय क्या देखा कि बहुतसी सेना रक्षा के निमित्त दरवाज़े पर बैठी है और थोड़े सिपाही खड़ेहैं और सबके हाथों में सोंटे व लाठी हैं और उनके ऐसे विकराल और डरावने स्वरूप थे कि जिनके देखने से मैं भयभीत हुई परन्तु उनका अंग कुछ भी न हिलता था और न उनकी पलकें झपकती थीं इससे मुझे आगे ने का साहस हुआ जब मैं उस सेना के निकट पहुँची तो उन सबको शिर से पाँव तक पत्थर का पाया फिर मैं नगर के भीतर गई और उसकी गलियों में चारों ओर जाय फिरी तो स पत्थर का बनाहुआ देखा चौक की दूकानें बन्द देखीं धुइहरों में से कुछभी धुआँ न निकलता था इसलिये मैंने समझा कि घरों के लोग भी बाहर के मनुष्यों के समान पत्थर के होगये होंगे फिर नगर के उसीओर एक बड़ा मैदान देखा उसमें एक बड़ा फाटक था कि जिसमें सुवर्ण के पत्तर लगेथे और दरवाज़े के बाहर खुलाथा उसमें एक परदा रेशम का पड़ाथा और एक हांडी प्रकाश के निमित्त लगी है उस बड़े और सुन्दर दरवाज़े के देखनेसे विदित हुआ कि यह अवश्य राजद्वार है मैंने किसी मनुष्य को वहां न देख अचम्भा किया और उस परदे के समीप इस इच्छासे गई कि किसी से भेंट होगी परन्तु जब परदे को उठाय अपना पांव आगे रक्खा तो और भी अधिक आश्चर्य हुआ कि उस घर की ड्योढ़ी में बहुत से चोपदारों को देखा कि कुछ तो खड़े और कुछ बैठे पत्थर के बने हुये थे फिर सब जगह जाकर यही हाल देखा कि सब छोटे बड़े वहां पत्थर के बने हैं फिर वहां से मैं तीसरे घर में गई उसे भी निर्जन पाया फिर जब चौथे मकान में गई तो वह मकान बहुत बड़ा सुन्दर देखा उसके किवाड़ और ज़ंजीर सुवर्ण की थी मैंने समझा कि यह महल अवश्य रानी के रहने का है उसके भीतर जाय देखा कि एक बड़े दालान में बहुतसे हब्शी बृहन्नल पत्थरके बनेहुये हैं और आगे उस दालान के एक मकान बहुमूल्य वस्तु से सजाहुआ था उसमें एक स्त्री पत्थर की बनीहुई बैठी है और उसके शिर पर मणिजटित मुकुट धरा है मैंने समझा कि रानी यही है और सके गले में

नीलमणि की माला थी कि जिसका प्रत्येक दाना सुपारी के समान था मैंने समीप जाय उन रत्नों को देखा कि इतने बड़े होने से भी बहुत साफ़ और गोल और अतिस्वच्छ थे ऐसे उत्तम उत्तम रत्न और ऐसे बड़े हार की सम्पूर्ण सामां देख मुझे अचम्भा हुआ उसमें गलीचों का फ़र्श था और मसनद उपधान आदि अतलस और कीनखाब के बनेहुये थे फिर वहांसे अन्य बहुतसे सुन्दर सुन्दर घरों में गई उन सबमें से एक बड़ाभारी मकान कि जिसमें सुवर्ण का सिंहासन पृथ्वीसे बहुत ऊँचे बिछाहुआ था और उसके फ़र्श के चारों ओर मोतियों की झालरें लटकती थीं उन सबमें से एक और वस्तु अद्भुत और अपूर्व यह थी कि उस फ़र्श से चमक और लाटें निकलती थीं मैंने चाहा कि उस चमक का बृत्तान्त जानलूं कि किस बस्तु से निकलती है फिर मैंने उस सिंहासन पर चढ़के देखा कि एक छोटी सी तिपाई पर एक बड़ा हीरा शुतरमुर्ग के अण्डे के समान रक्खा है उसी से वह चमक निकलती है कि जिससे आंखें चौंधाती थीं और बड़ी कठिनता से उस पर दृष्टि ठहरती थी और उस फ़र्श के चारों ओर तकिये रक्खे थे और वहां एक दीपक प्रज्वलित था जिससे मुझे विदित हुआ कि यहां कोई मनुष्य जीता भी है क्योंकि दीपक बिना जलाये नहीं जलता और बहुतसी वस्तुओं को देख मुझे आश्चर्य हुआ परन्तु बिशेषकरके वह हीरा अद्भुत था उस राजमन्दिर के कोठे कुछ तो बन्द थे और कुछ खुले थे कोई ढकेलने सेही खुलजाते थे मैं हरएक मकान में जाती और उसकी अमूल्य वस्तु को देखती निदान मैं घूमते घूमते बस्त्रागार और दफ्तरखानों में गई जिसमें असंख्य द्रव्य और बहुमूल्य बस्तु रक्खी थी उन सबको देख मैं अपने को भूलगई न तो कुछ जहाज़ का और न अपनी दोनों बहिनों का शोच रहा केवल इसी बातके पीछे रही कि किसी प्रकार यहां का बृत्तान्त विदित हो कि यह निर्जन क्यों है और सम्पूर्ण मनुष्य पत्थर के क्यों बनगये हैं इतने में रात्रि हुई मैं घबड़ाकर चाहती थी कि जिस मार्गसे आईहूं उसी मार्ग से चलीजाऊं परन्तु रात्रि के अँधियारे के कारण न जासकी फिर उसी घर में कि जिसमें वह सिंहासन और हीरा था और दीपक

भी जलते थे आई और बिचार किया कि रात्रि को इसी घर में रहूं भोर को उठ अपने जहाज़पर चलीजाऊंगी यह बिचारकर निर्भय हो लेटरही परन्तु अकेले ने से निद्रा न आई यहांतक कि अर्ध-रात्रि व्यतीत होगई उसी समय एक शब्द सुनाई दिया कि कोई अतिस्पष्ट और मीठीबाणी से कुरान पढ़ताहै जिसके सुननेसे मुझे अतिहर्ष हुआ और वहांसे उठ एक दीपक अपने हाथमें लियेहुये उसके प्रकाशमें चली कई एक कोठों के लांघने के पश्चात् वहां पहुँची कि जहां से वह शब्द सुनाई देता था वहां जाय मैंने एक छोटीसी मसजिद देखी उसके देखने से मुझे परमेश्वरके धन्यबाद की निमाज़ पढ़नी अवश्य हुई वहां दो बड़ेबड़े मोमके दीपक प्रज्वलित थे उनके समीप निमाज़के स्थान पर क़ालीन पर एक जवान अतिरूपवान् बैठा हुआ एकाग्रचित्त और ध्यान पूर्वक पढ़ रहा था उसको देख मैं अति हर्षित हुई और आश्चर्य किया कि लाखों मनुष्यों में से केवल यही मनुष्य बचा है पत्थर नहीं होगया और समझी कि इसमें कुछ भेद अवश्य है मैंने उस मसजिद में जाय बड़े शब्द से निमाज़पढ़ी और परमेश्वर का धन्यबाद किया कि यह सफ़र हमारा अच्छा हुआ और कुशलपूर्वक यहां तक पहुँची और उसकी पूर्णकृपा से मुझे परिपूर्ण आशाहै कि कुशलपूर्वक अपने नगरमें पहुँचूं उस मनुष्य ने यह शब्द सुन मेरी ओर देखा और कहा कि हे सुन्दरी! मुझे बताओ कि तुम कौनहो और क्यों ऐसे उजाड़ नगर में आईं फिर मैं तुमको अपना बृत्तान्त सुनाऊंगा कि कौन हूं और इस नगर के बासी क्यों पत्थर के बनगये और किस कारण मैं केवल परमेश्वर के इस दण्ड और क्रोध से बचरहा यह सुन मैंने उससे अपना बृत्तान्त इस प्रकार संक्षेप से वर्णन किया कि बीस दिन के समयान्तर में मेरा जहाज़ मेरे नगर से यहांतक पहुँचा और यहां के आने का बृत्तान्त बिस्तारपूर्वक प्रकट कर उससे कहा आशा रखतीहूं कि अपने प्रणानुसार अपना बृत्तान्त मुझे जनादो कि उन सब मनुष्यों को पत्थर का बनाहुआ देख मैं अत्यन्त भयभीत हूं यह सुन उस मनुष्य ने कहा कि थोड़ीदेर ठहर जा फिर उसने पढ़ना बन्दकर और क़ुरान को सुबर्ण के बस्त्रमें लपेट

ताक़ पर रक्खा इस समयान्तर में मैंने अवकाश पा उस जवान को भलीभांति देखा देखतेही उसके रूप अनूप छवि पर मोहित होगई फिर उसने मुझे अपने निकट बैठाया औ कहा हे सुन्दरी! तुम्हारी निमाज़ और स्तुति से विदित हुआ कि परमेश्वर को सच्चा जानती हो और उसीको पूजतीहो यह कह कहा कि इस नगर का बादशाह मेरा पिता था और उसका दूर २ तक राज्य था परन्तु वह बादशाह और सम्पूर्ण राज्य के बासी और सेना और सेवक आदि अग्नि के उपासक थे और नारदीन कि जो पूर्वकाल में देवों का बादशाह था पूजा कियाकरते थे यद्यपि मेरे माता पिता अग्निउपासक थे परन्तु मैं मुसल्मान हूं क्योंकि बाल्यावस्था से मेरी दाई ने कि वह मुसल्मान थी मुझे मुखाग्र कुरान उपदेश किया और समझाया कि परमेश्वर ही उपासना के योग्यहै तू किसीको न पूजियो और मुझको अरबी विद्या पढ़ाई और तफ़सील की विद्या जो क़ुरान से सम्बन्ध रखती थी पढ़ाई सो थोड़ेही काल में मुझे कुरान के अर्थ समझने को सामर्थ्य प्राप्तहुई निदान उस दाई ने मुझे सबसे छिपाकर अपने सब ऊंच नीच धर्म को बतादिया उसके मरने पश्चात् मुझे मुसल्मानों का धर्म जैसा कि उसने मुझे उपदेश किया था दृढ़रहा और मैं सदैव अग्निउपासक आदि से अप्रसन्न रहता कई मास के आगे तीन वर्ष तक बराबर इस नगर में यह शब्द सुनाई देता था कि हे इस नगर के बासियो! नारदीन और अग्नि की पूजा छोड़ परमेश्वर को जो सर्वोपरि और उपासना के योग्य है पूजो इन तीन वर्ष के समयान्तर में प्रतिदिवस यह शब्द यहांके बासियों को सुनाई देतारहा परन्तु किसीने उस शब्द को न माना और न उस अधर्म को छोड़ा तीन वर्ष के पश्चात् यहां के सम्पूर्ण मनुष्यों पर परमेश्वर का कोप हुआ कि जो जिस स्थान में जिसप्रकार से था वहीं पत्थर का बन गया और मेरा पिता भी काला पत्थर का बनगया कि जैसे तुम ने महल में देखाहोगा और यही मेरी माता की भी दशा हुई उन सब में केवल मैं परमेश्वर की पूर्णकृपा से इस कठिनदण्ड से बचाहूं उस समय से मैं पहिले की अपेक्षा उसकी उपासना और पूजा अधिक

चि लगाय करताहूं और हे भाग्यवती सुन्दरी ! मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने तुझे मेरे धैर्य देने को भेजा है इससे तेरी इस कृपा का मैं कृतज्ञहूं क्योंकि अकेले रहने से मैं अत्यन्त शोचयुक्त रहता था उसका यह वृत्तान्त विशेषकर अन्तर का वचन सुन मुझको अधिक प्रीतिहुई और बेधड़क उससे कहा सत्यहै परमेश्वर मुझे इसीलिये तुम्हारे नगर में लाया कि तुमको इस भययुक्त स्थान से निकाल ले जाऊं मेरा जहाज़ यहां वर्तमान है और मैं बुगदाद की रहनेवाली हूं जि ना धन और वस्तु जहाज़ पर लाईहूं उतनाही अपने घर में छोड़ आई हूं वहां तुमको भलीभांति रक्खूंगी बुगदाद के पहुँचतेही उस बादशाह को तुम्हारी खबर होगी और वह तुम्हारी पदवी अनुसार आतिथ्य सेवा और प्रतिष्ठा भलीभांति करेगा मेरा जहाज़ आप की सेवा में वर्तमानहै उ पर चढ़के चलिये उस मनुष्य ने इस बात को हर्ष से अंगीकार किया फिर मैं रात्रिभर वहीं रह उस पुरुष से अपने सफर का वृत्तान्त कहती रही दूसरे दिन भोर को उस जवान सहित उस महल से समुद्र के तटपर पहुँची और उन दोनों बहिनों को अपने पहुँचने से शोकयुक्त पाय मैंने उनसे अपने न आने का कारण प्र ट किया और उस पुरुष की कहानी भी वर्णन की फिर मेरी आज्ञानुसार जहाज़ के भृत्यों ने उस असबाब व वस्तु से जो मैं अपनी गरी से लाई थी जहाज़ को खाली किया और जो द्रव्य और रत्न और बहुमूल्य वस्तु मैंने राजमहल में पाई थी उस जहाज़ पर लाददी और उस शाहज़ादे को अपने साथ लेजाय जहाज़ पर बैठाया और संपूर्ण वस्तु के लेजानेका इरादा न किया क्योंकि उतने असबाब के वास्ते बहुत से जहाज़ चाहिये थे निदान जब आवश्यक वस्तु जहाज़ पर लादके अन्न जल आदि भी लाद लिया तब जहाज़ का लंगर उठाय वहांसे अपने नगर की राहली मार्गमें मेरी बहिनें उस जवान को अतिसुन्दर और रूपवान् देख चित्त में डाह रखनेलगीं और मेरी उसकी परस्पर प्रीति उनके बैरको अधिक करनेवाली हुई निदान एक दिन उन्होंने छल से मुझसे पूछा कि हे बहिन ! अपने नगर में पहुँचकर इस जवान को कहां रक्खोगी और इसके साथ क्या

उपकार करोगी मैंने हास्य से उत्तर दिया कि वहां पहुँचकर मैं इस से बिवाहकरूंगी फिर मैंने शाहज़ादे से कहा कि मेरी यह इच्छाहै कि मैं तुम्हारी बांदियों में होऊँ और अपने चित्तानुसार तुम्हारी सेवा करूं उस शाहज़ादे ने भी हास्यसे उत्तर दिया कि जो तुम्हारा जी चाहे सो करो मैं तुम्हारी बहिनों के सन्मुख यह प्रतिज्ञा करताहूं कि मैं इस बिषय से प्रसन्नहूं और तुम्हें अपनी स्त्री के समान समझूंगा बांदीपने का तो क्या बर्णन है मैं आपही तुम्हारा कृतज्ञ हूं और रहूंगा इस बार्त्ता को सुन मेरी बहिनों के मुख का रङ्ग बदलगया और उसीसमय से मुझे बैरभाव से देखनेलगीं यहांतक कि जहाज़ हमारा नदी फारस के मुहाने पर पहुँचा और बुशहर हम से इतना पास रहगया कि यदि बायु ठीक रहे तो दूसरे दिन वहांपर पहुँचजाती निदान एक दिन रात्रि को मैं निद्राबश थी मेरी बहिनों ने मुझे उठाय समुद्रमें डालदिया और शाहज़ादे की भी यही दशा की बड़ा पश्चात्ताप है कि वह शाहज़ादा गिरतेही डूबगया और मैं नदी में गिरतेही ऊपर को उछली और रात्रि के अँधेरे में पैरनेलगी आयु शेष थी इसकारण तट पर जा पहुँची और पृथ्वी बराबर पाके जलसे बाहर निकल आई इतने में भोर हुआ मैंने अपने को एक उजाड़ द्वीप में पाया जहांसे बुशहर का बंदर दश कोस की दूरीपर था मैंने तुरन्त अपने कपड़े सुखाय पहिन लिये और इधर उधर फिरने से जो फल दृष्टिपड़े वह मैंने खाये और एक सोता से कि जिसमें अति निर्मल और मीठाजल था पानी पिया उस समय मुझे सूचित हुआ कि मेरी आयु बहुत बड़ी है जो समुद्र से डूबते बची और उत्तम उत्तम फल खानेको मिले निदान फिर मैं छाया में जाय लेटी ही कुछ काल ब्यतीत हुआ था कि बहुत बड़ा लम्बा सर्प सपक्ष दृष्टिपड़ा और पहिले मेरी दाहिनी ओर आया फिर बाईं ओर आय अपने मुख से जिह्वा निकाल मेरी ओर देखनेलगा जिससे मुझे बिदित हुआ कि इसको किसी प्रकार का दुःख पहुँचाहै मैं उठ चारों ओर देखनेलगी फिर दूसरा एक सर्प देखा कि उससे बड़ाहै और पहिले सर्प के पीछे आताहै और चाहता है कि पूंछ पकड़ उसको निगल

जायँ मुझे पहिले सर्पपर दया उपजी और निर्भयहो एक बड़ा पत्थर उठाय इस बेग से दूसरे सर्प के शिर पर मारा कि शिर उसका टुकड़े टुकड़े होगया पहिला सर्प अपने बैरी से छुटकारा पाय तुरन्त ऊपर का पर खोलउड़ा मैं उसे देख आश्चर्यित हुई फिर दूसरे स्थान पर जाय सोय रही जब जगी तो एक हरे रङ्ग की सुन्दर स्त्री को देखा कि दो काली कुतियों को पकड़ेहुये मेरे शिरहाने पर बैठीहै उसको देखतेही मैं खड़ी होगई और उस स्त्री से पूछा कि तू कौनहै उसने कहा मैं वही सर्पहूं जिसको तुमने बैरी से बचाया अब मैं चाहतीहूं कि उस उपकार से कि जो तुमने मेरे साथ कियाहै उऋण होजाऊं और उसके बदले तुम्हारी सेवा करूं इस वास्ते मैंने अपनी जाति की अप्सराओं को इकट्ठा कर तुम्हारे जहाज़ की राहली और तुम्हारी उन दोनों बहिनों को कि जिन्होंने भलाई के बदले बुराई की है काली कुतिया बनाडाला और जितनी कि तुम्हारे जहाज़ में द्रव्यआदि वस्तु लदीहुई थी तुम्हारे कोश में कि वह बुग़दाद नगर में है रख आईहूं और वह जहाज़ समुद्र में डुबादिया यह कह उस अप्सराने एक हाथ से मुझे और दूसरे से उन दोनों कुतियों को उठाय ठीक बुग़दाद नगर में मेरे घर पर पहुँचा दिया मैं अपने महल में जाय सम्पूर्ण द्रव्य और रत्न आदि जो उस जहाज़ पर लादलाई थी पाया और वहां पहुँच उस अप्सरा ने मुझ से कहा कि मैं तुझे उसकी आज्ञानुसार जो नदियों का बहना बन्द करसक्ता है कहतीहूं कि अभी यह दण्ड तेरी बहिनों को पूरा नहीं किन्तु प्रतिरात्रि उनको सौ सौ चाबुक माराकरना क्योंकि उनके अपराध का यही दण्डहै चैतन्य रह इस आज्ञा में बिपरीतता न हो और हम सब अप्सरा तुम्हारे अधीन हैं जब स्मरण करोगी तब हम तुम्हारी सहायता करेंगी हे स्वामी! उसी दिन से मैं उस अप्सरा की आज्ञानुसार प्रतिनिशा उन दोनों कुतियों को कि मेरी सगीबहिनें हैं मारतीहूं परन्तु रुधिर के जोश से मुझको क्लेश होताहै इसकारण अपने कण्ठ से लगाय रोतीहूं और प्यारकर आंसू पोंछतीहूं यही कारण मेरे प्यार करने का है अब शेष वृत्तान्त को मेरी बहिन अमीना आपके सन्मुख विनय

करेगी खलीफ़ा ने इस अपूर्व और अद्भुत बृत्तान्तको सुन अपने मंत्री से कहा तू अमीना से पूछ कि तेरी छाती पर काले चिह्न क्या हैं यह सुन अमीना ने अपना बृत्तान्त इसभांति कहना आरम्भ किया॥

अमीना का बृत्तान्त॥

अमीना ने खलीफ़ा के सन्मुख कहा कि जितनी कहानी जुबैदा ने वर्णनकी है उसका दोहराना कुछ अवश्य नहीं केवल मैं अपनाही बृत्तान्त प्रकट करती हूं मेरी माता मुझे एक घर में लेकरआई कि अपना रँड़ापा काटे और मेरा बिवाह एक बड़े आदमी के पुत्र के साथ कि वह इसी नगर का बासी था करदिया एक बर्ष पूरा ब्यतीत न हुआ होगा कि मेरा पति मरगया और मैं रांड़होगई परन्तु सम्पूर्ण द्रव्य उसका जो नब्बे सहस्र रियालों के लगभग था मेरे हाथलगा उसके नफ़े में मैं आनन्दपूर्वक कालक्षेप करती थी और उतना द्रव्य मेरी सम्पूर्ण आयु को बहुत था जब मेरे पतिको मरे छः महीने व्यतीत हुये तब मैंने दश जोड़े वस्त्र बहुत उत्तम और बहुमूल्य अपने लिये सिलवाये सो वह एक २ जोड़ा सहस्र २ रियाल में बना फिर जब अपने पति का शोक करते एक बर्ष व्यतीतहुआ तब मैंने उन वस्त्रों को पहिनना आरम्भ किया एक दिन मैं अकेली अपने घर में बैठी थी कि एक मेरे सेवक ने आय मुझसे कहा कि एक बृद्धा कुछ कहने को आई है जो आज्ञा हो तो हम उसे भीतर ले आवैं मैंने कहा आने दो फिर उस बृद्धा ने आय मुझे प्रणाम किया और धरती चूम खड़ीहो कहनेलगी कि मैंने आपकी दयालुता, दीन-पालकता, ग़रीबनिवाज़ी और प्रशंसा बहुत सुनी है इसवास्ते आप के सन्मुख कुछ बिनय किया चाहतीहूं मेरे पास एक कन्या बिना माता पिता की है आज की रात्रि को उसका बिवाह होगा मैं और वह दोनों इस देश में अनजानहूं न तो कोई हमको जानता पहिचानता है और न हम किसी को और जिसके साथ उसका बिवाह होगा वह धनवान् मनुष्य का पुत्र है उसके कुटुम्ब के लोग भी बहुतसे हैं और मैंने सुना है कि दूल्हे के साथ बहुतसी स्त्रियां बहुमूल्य भूषण और वस्त्र पहिनकर आवैंगी जो आप उस बिवाह में चलें तो मेरी प्रतिष्ठा

समधियाने में हो और कोई हमको निर्धन और परदेशी न समझे तुम्हारे प्रताप के सामने किसी का भी उच्चपद नहीं और सब यही विचारेंगे कि जिसकी ओर ऐसी धनवान् स्त्री है वह प्रतिष्ठित क्यों न होगी और परमेश्वर न चाहे जो तुम मेरी निर्धनता और दीनता पर दृष्टि न कर अपने चलने नाहीं करोगी तो मेरी अप्रतिष्ठा होगी और मेरा इस नगर में कोई भी मुरब्बी नहीं और न कोई ऐसी शीलवान् और दयावान् स्त्री है जैसी कि तुम इस नगर में हो कि जिससे मैं जाय अपना दुःख कहूं और वह सुने और मेरी सहायता करे यह कह वह वृद्धा रोनेलगी मुझे उसके रोने और दीनता पर दया उपजी तो मैंने कहा कि हे माता! रुदनकर मुझे न कुढ़ा मैं तेरी पुत्री के बि ाह में अवश्य चलूंगी पता मकान का कि जिसमें बरात आवेगी बता कि मैं सायंका को वहां जाऊं और तुझसे उसी स्थान पर मिलाप हो फिर तू यहां आने का श्रम न कीजियो वह वृद्धा इस भांति का उत्तर सुन हर्षितहुई और आशीर्वाद दे कहनेलगी कि हे सुन्दरी! जैसा कि तूने इससमय मेरे चित्त को प्रसन्न कियाहै परमेश्वर तुम्हारे चित्तको सदैव हर्षयुक्त रक्खे परन्तु तुझे आवागमन में कुछ श्रम न होगा मैं आज सायंकाल को फिर आऊंगी मेरेही साथ चलना यह कह वह वृद्धा बिदाहो चलीगई फिर मैंने अच्छा जोड़ा पहिन और बड़े बड़े मोतियों की माला बाजूबन्द कर्णफूल अँगूठियां औ चमकतेहुये हीरे और बहुमूल्य रत्न पहिने इतनेमें सूर्य अस्तहुये वह वृद्धा मेरे लेनेको आई औरमेरे हाथको चूम कहा कि दूल्हेके माता पिता और नातेदार तो मेरे घर आये हैं और बहुधा यहां के सरदार और धनवान् और उत्तमकुल की स्त्रियां भी उनके साथ आई हैं अब मैं तुम्हारे लेने को आई हूं इतना बचन सुन मैं उसके साथ हुई और मेरे पीछे बहुतसी दासियां उत्तम उत्तम आभूषण और वस्त्र से सज धज चलीं चलते चलते एक खुली और साफ़ छिड़की हुई गली में पहुँची फिर उस वृद्धा ने हमको बड़े दरवाज़े पर लेजाय खड़ा किया उस दरवाज़े के ऊपर एक फाटक पर लकड़ी की लेखनी से यह लिखा था कि यह घर सदैव प्रसन्नता का है उसको मैंने दिये के प्रकाश से

पड़ा फिर उस वृद्धा के ताली बजाने से वह किवाड़ तत्काल खुल गया और वह मुझे एक बड़ेभारी दालान के भीतर लेगई वहां मैंने एक अतिरूपवती स्त्री को देखा उस स्त्री ने मेरी अगवानी की और मुझे कण्ठ से लगाया और प्रतिष्ठापूर्वक एक कोठे में लेजाय बैठाया वहां मैंने एक जटित सिंहासन और उसपर उत्तम २ रत्न से जटित छत्र देखा फि उस सुन्दरी ने मुझसे पूछा क्या तुम बरात के प्रबन्ध के निमित्त आई हो मैं जानती हूं कि यह बिवाह तुमसे होगा फिर उसने मेरी अत्यन्त प्रतिष्ठा की औ मुझसे मिष्ट वचन और शीतलतापूर्वक उत्तम २ वार्त्ता करके यह कहा कि बीबी इस ब्याह का बृत्तान्त जिसमें तुमको परिश्रम दियागया है इस प्रकार पर है कि मेरा एक भाई अ सुन्दर और युवा है वह तुम्हारी सुन्दरता और रूप अनूप की प्रशंसा सुन मोहित हुआ और तुम्हारे साथ बिवाह करने की अत्य लालसा रखता है जो तुम इसमें नहीं करोगी तो उसके अत्यन्त :ख और दिल टूटने का कारण होगा और मैं सौगन्द खाय कहती हूं कि वह सुन्दर वा तुम्हारी संगति के योग्य है हरतरह से भरोसा रक्खो वह पुरुष अत्यन्त प्रसन्नचित्त है फिर उस सुन्दरी ने अपने भाई की बड़ी प्रशंसा की और इस विषय में ब सा वा बिवाद किया और कहा जो तुम कुछ भी इशाराकरो तो मैं इस बृत्तान्त को उस पुरुष से कहूं यद्यपि मेरे पति के मरने के पीछे बिवाह करने की मेरी इच्छा न थी परन्तु ऐसे युवा पुरुष से मैंने इन्कार करना उचित न जाना यह सुन मैं मुसकराय चुप होरही वह सुन्दरी मेरे चुपरहने और मुसकराने से जानगई कि मेरी भी इच्छा है फिर उसने तुरन्त ताली बजाई ताली का शब्द सुनतेही एक पुरुष अति रूपवान् बड़ी सजधज और भड़कसे एक कोठे से बाहर निकल आया उसके देखने से मैं हर्षितहुई और चित्त में कहनेलगी कि मैं बड़ी भाग्यवान् हूं कि मेरा विवाह ऐसे उत्तम मनुष्य से होगा फिर वह जवान मेरे निकट आ बैठा और मुझसे और उससे वार्त्ता होनेलगी मैंने उसे अत्यन्त बुद्धिमान् और शीलवान् उसकी बहिन के कहने से भी अधिक पाया फिर उस सुन्दरी ने हम दोनों को प्रसन्न और

राज़ी पाय दूसरी बेर ताली बजाई उसके सुनतेही क़ाज़ीने रीत्य-नुसार हम दोनों का बिवाह किया और अपनी रीत्यनुसार बिवाह पत्र लिख चार मनुष्यों को कि अपने साथ लाया था साक्षी किया फिर मेरे नवीन भर्ता ने मुझसे यह प्रतिज्ञा कराई कि तू किसी अन्य मनुष्यकी ओर न देखना और न किसीसे बार्त्ता करना सदैव अपने पातिव्रत और आज्ञापालन से प्रसन्न रहना और कभी भी आज्ञा भंग न करना और उसने भी यह प्रण किया कि मैं कभी तुझे त्याग न करूंगा निदान जब यह परस्पर प्रतिज्ञा होचुकी फिर मैं धनवानों के समान किन्तु रानियों की तरह अपने पति के घर में रहनेलगी एक मास के पश्चात् मैंने अपने पति से चौक जाने की आज्ञा ली कि कुछ थान रेशमी मोल लेने जाऊंगी कि सब अमीरों की स्त्रियां उस समय आप बाज़ार में जाय वस्त्र मोल लेतीं और बेंचाकरतीं और इसमें कुछ दोष न था उसने तुरन्त आज्ञा दी मैं दो बांदियां और उसी बृद्धा को कि जो मुझे बहानेसे उस घर में लेगई थी और मेरे ही समीप रहती थी अपने साथ लेकर बुग़दाद नगर की चौक में गई जब मैं उस बाज़ार में जहां बड़े बड़े ब्यापारियों की दूकानें थीं पहुँची तो उस बृद्धा ने मुझ से कहा हे सुन्दरी! यहां एक ज-वान ब्यापारी की दूकान है कि जिसे मैं जानती हूं उसकी दूकान में सब प्रकार के उत्तम २ बहुमूल्य थान हैं रेशमी वस्त्र जैसा तुम चा-होगे वहां मिलेगा तुम उसी की दूकान पर चलो दूकान २ फिरना कुछ अवश्य नहीं मैंने कहा इससे क्या उत्तम है फिर मैं उसके साथ चली और उसी ब्यापारी की दूकान पर जो अतिरूपवान् था गई बृद्धाने कहा हे सुन्दरी! तुम इस ब्यापारीसे जौनसा वस्त्र चाहो मांगो कि वह तुमको लाकर दिखाये मैंने उत्तर दिया कि मैंने पति से बिवाह के समय यह प्रण किया है कि किसी अन्य मनुष्य से बात न करूंगी इसलिये मैं इससे न बोलूंगी कि जिसमें मेरा प्रण भंग न हो निदान उस ब्यापारी ने मेरी चाहना को बृद्धासे पूछा और नानाभांति के थान दिखाये मैंने उनमें से एकको पसन्द किया और उस बृद्धाके द्वारा उस ब्यापारी से मोल पूछा उसने उत्तर दिया कि अशरफ़ियों पर इस

थान को न देंचूंगा किन्तु इस थान के बदले इस सुन्दरी से एक चूमा चाहताहूं यह सु- मैंने उस बृद्धा से अत्यन्त अप्रसन्न हो कहा कि यह ब्यापारी बड़ा ढीठ है कि ऐसी बुरी बात की चाहना करता है बृद्धा ने उत्तर दिया हे सुन्दरी! इस ब्यापारी ने जो तुम से चाहना की है कुछ बड़ी बात नहीं तुम से तुम्हारे पतिने अन्य पुरुष से बार्त्ता करने को मना किया है यह तो केवल यही चाहता है कि ज़रा अपने गाल का चूमा दो यह बहुतही सुगम है मुझे उस थानके लेने की अत्यन्त लालसा और इच्छा थी मूर्खता से उस बृद्धा की बात को माना फिर वह बृद्धा और वह दोनों बांदियां बराबर से मेरे सन्मुख खड़ी होगईं कि कोई चलनेवाला इस बिषयको न देखे तब मैंने अपने गाल से बस्त्र हटा उस ब्यापारी की ओर किया उसने चूमा के बदले ऐसा काटा कि लहूलुहान होगया और मैं तलमलागई और पीड़ा से बेसुध हो देरतक वहां उसी दशामें पड़ीरही और वह ब्यापारी अवकाश पाय अपनी दूकान बन्दकर वहांसे चलदिया बहुत देर के पीछे जब मुझे सुधि हुई मैंने अपने गालको लहूलुहान पाया परन्तु बुढ़िया और मेरी बांदियों ने मेरे गाल को बस्त्र से ढंकदिया कि बहुत से मनुष्य जो उस ब्यापारी की दूकानपर इकट्ठे होगये थे -स दशाको न देखें उन्होंने जाना केवल निर्बलता से यह बेसुध होगई है मेरे साथ की स्त्रियां यह दशा देख घबड़ाईं औ- मुझे धैर्य देनेलगीं मुख्य करके उस बृद्धाने कहा कि हे सुन्दरी! अब मेरा अपराध क्षमा करो क्योंकि इस तुम्हारे दुःख का कारण मैंही अभागी हुई और इस दुष्ट ब्यापारी की दूकानपर तुम मेरेही कहनेसे आईं तुम अपने चित्त में कुछ शोच न करो अब तुरन्त अपने घर चलो तुम्हारे घाव पर एक ऐसी औषध लगाऊंगी कि वह तीन दिवसमें अच्छा होजायगा और कुछभी चिह्न न रहैगा मैं बेसुध होनेके कारण ऐसी सुस्त और निर्बल होगई थी कि बड़ी कठिनता से अपने घर तक पहुँची और अपने कोठे में जाय उस पीड़ा से फिर बेसुध होगई परन्तु उस बृद्धाने ऐसा उपाय किया कि जिससे फिर मैं सुधमें आई और तुरन्त अपनी शय्या पर जालेटी रात्रि को जब मेरा पति आया और मुझे शिर लपेटे देख

नम्बर १३ मुतअल्लिकै समै १५४ प्रथमभाग

चित्र दूलह अमीनाका वास्ते बधकरने अपनीस्त्रीके तत्परहोनाऔर रुद्दकीनम्रताउसके छुड़ाने केहेतु ॥
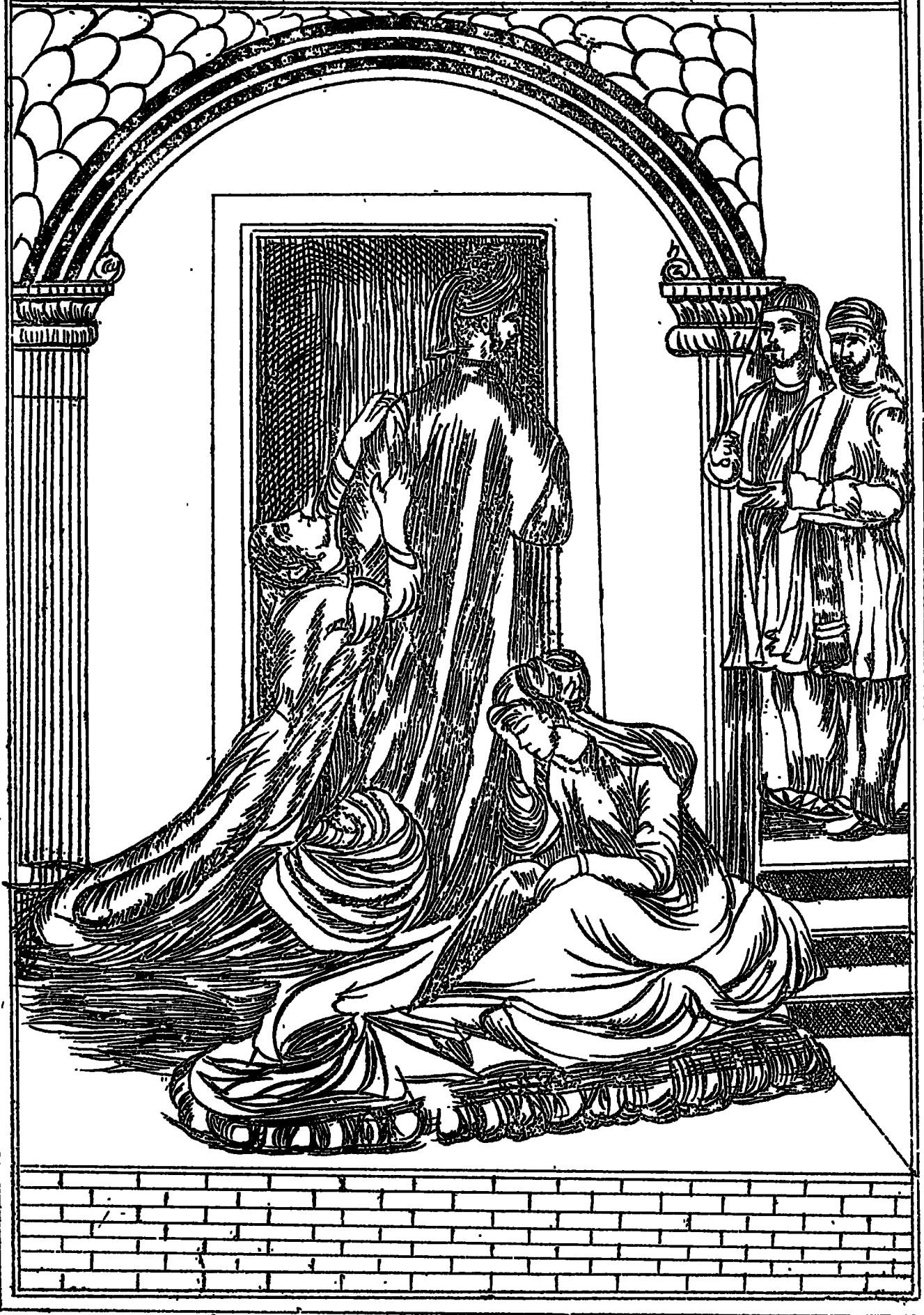
कारण पूछा मैंने उसके भुलावे के लिये कहा कि मेरे शिर में बड़ी पीड़ा है और यह समझकर कहाथा कि यह सुन वह चुप हो रहेगा परन्तु उसने मेरे विचारके विपरीत दिया हाथ में ले उस गाल के घाव को देख झुंझलाय पूछा कि यह घाव क्योंकर लगा यद्यपि मैंने कुछ बुरा कर्म न किया था परन्तु सच्चीबात न कहसकी इसवास्ते मैंने बहाना कर कहा कि आपकी आज्ञानुसार बाजार में गई थी दैवयोग से एक मजदूर काष्ठ का गट्ठा लिये हुये मेरे पास से होकर गया चूंकि वह गली बहुत सूक्ष्म थी इस कारण एक खोंचा मेरे गाल पर लगा यह सुन मेरे पति ने क्रोधित होय कहा कि यदि यह बात सत्य है तो मैं कल भोर को आज्ञा दूंगा कि सम्पूर्ण लकड़ी बेंचनेवालों को पकड़ फांसी दीजावे यह सुनकर मैं भयमान हुई और पश्चाताप किया कि इतने मजदूर निर्दोष मेरी झूठी बात से व्यर्थ मारे जावें यह बिचार मैंने अपने पति से कहा कि ऐसा अन्याय कभी न करना मुझे अत्यन्त खेद होगा कि तुम ऐसी आज्ञा दोगे यदि मैंने कुछ बुरा काम कियाहो तो उसका मुझे दण्ड दो फिर मेरे भर्त्ताने कहा कि सत्य कह तेरे गालमें क्यों घाव है मैंने कहा एक कुम्हार अपने बासनोंको गधे पर लादेहुये चलाजाता था दैवयोग से गर्दभ का धक्का ऐसा लगा कि मैं पृथ्वी पर गिरपड़ी और एक टुकड़ा सीसे का मेरे गालमें चुभगया यह सुन फिर मेरे पति ने कहा यदि यह बचन सत्य है तो सूर्योदय के पहिले मैं जाफ़र मंत्री से इस बात को प्रकट करूंगा कि वह जितने इस नगर में कुम्हार रहते हैं उनको निकालदेगा मैंने इस बचन को सुन कहा परमेश्वर के वास्ते ऐसा काम न कीजियो वे सब निर्दोषहैं फिर उसने कहा तू सत्य कह तेरे गालमें घाव लगने का क्या कारण है मैंने कहा मार्गमें मुझे घुमनी आई कि मैं पृथ्वीपर गिर पड़ी और मेरा गाल छिलगया इसमें किसी दूसरे पर दोष नहीं यह सुन उसने अत्यन्त क्रोधित हो कहा तू बड़ी झूठी है कहांतक मैं तेरी असत्य वार्त्ता सुनूं यह कह उसने ताली बजाई इतने में तीन गुलाम कोठेके भीतरसे चलेआये उसने उनको आज्ञादी कि एक मेरा शिर और एक पांव पकड़े और तीसरा खड्ग ले खड़ारहे जब उन तीनोंने आज्ञा उस

की पालन की फिर मेरे पतिने उस गुलामसे जो खड्ग लिये खड़ाथा कहा कि इसको मारके दो टुकड़े करडाल और लोथ इसकी नदीमें बहा कि मछलियां खावें यह दण्ड उस मनुष्य का है जो मेरा प्यारा होय और अनुचित कर्म करे यह कह फिर उसने हब्शीसे दृढ़ आज्ञा की कि तू देर क्यों करता है इसे शीघ्र बधकर यह सुन उस गुलामने मुझसे कहा कि हे सुन्दरी! यह तुम्हारा अन्त समय आया अपने इष्ट को स्मरण करो और जो कुछ तुम्हें कहना सुनना हो कह सुन लो मैंने उससे कहा कि मैं कुछ कहा चाहतीहूं जो मुझे एक पल का अवकाश मिले फिर मैं अपना शिरउठा चाहतीथी कि कुछ कहूं परन्तु रोने और हिचकियों के कारण शब्द मुख से न निकलता था मेरे पतिने मुझपर कुछ न दया की किन्तु इस भांति बुरा भला कहना आरम्भ किया कि जिसका मैं कुछ भी उत्तर न देसकी फिर मैंने चाहा कि परमेश्वर की बन्दना कर अपने सम्पूर्ण आयुके पापों को क्षमा कराऊं परन्तु उसने मुझे इतना अवकाश न दिया और गुलाम को आज्ञा दी कि तू शीघ्रही इसे बधकर गुलाम चाहता था कि मारें इतने में वही बृद्धा जिसने मेरे पतिको दुग्ध पिलायाथा भीतर आई और उसके चरणोंपर गिरपड़ी और चाहा कि उसका क्रोध शान्तकरे फिर बहुत दीनतापूर्वक प्रार्थना करके मेरे पति से कहा कि मेरे दूध पिलाने और पालन के बदले इसका अपराध क्षमा कर तू इसे ब्यर्थ मारता है परमेश्वर के यहां क्या उत्तर देगा और अपनी प्रतिष्ठा क्यों खोता है और न्याय करनेवाले तुझे क्या कहेंगे निदान उस बृद्धा ने देर तक उसे ऐसा ऊँच नीच समझाया और मेरा अपराध क्षमा कराने को बहुतसा बादविबाद किया और वह बहुतही रोई यहां तक कि उसका क्रोध कुछ कम हुआ तब उसने कहा कि केवल तेरे कहने से मैंने इसके प्राण छोड़े परन्तु इसको कुछ दण्ड देना अवश्य है कि इसे जन्म भर स्मरण रहे यह कह उसने गुलाम को आज्ञा दी कि उसने मेरी छाती और भुजापर इतना मारा कि मैं बेसुध होगई और वहांका चर्म और मांस उड़गया फिर वह गुलाम मेरे पतिकी आज्ञानुसार मुझको एक महल में लेजाय छोड़ आया वहां चार मासतक

मैं उसीभांति घायल पड़ी रही और उस बृद्धा ने मेरी मरहम पट्टी आदि औषध की और उस दशा में मेरी खबर लेती रही फिर मैं अच्छी होगई परन्तु चि- जैसे आपने कल रात्रि को देखे थे रहगये फिर जब मुझमें चलने फिरने की सामर्थ्य हुई तो मैंने चाहा कि मैं अपने पहिले भर्ता के घर में कि जो मेरे काबू में था जा रहूं परन्तु वहां जाय घर का चिह्न भी न पाया क्योंकि मेरे इस पति ने क्रोध से उसे किन्तु गती को जिससे वह घर था खुदवाकर पृथ्वी बराबर करदी मैं फ़रयाद इस अन्याय की जो मेरे दूसरे पति ने किया था किसी से न करसकी कि ऐसा न हो कहीं फिर वह वैसाही करे इस लिये अपने चित्तको दृढ़कर और परमेश्वर का धन्यबाद कर मैं अपनी प्यारी बहिन जुबैदा के निकट गई और उससे अपनी सम्पूर्ण आपत्ति और दुःखको प्रकट किया उसने मुझे धैर्यदिया और अपने निकट रक्खा और समझाया कि हमारा समय अच्छा नहीं किसी से हम को वफ़ा नहीं न तो उनसे जो हमारे मित्र हैं और न उनसे जो हमपर मोहित हैं मेरे समीप बैठरह और फिर बिवाह न कर तब से मैं अपनी बहिन जुबैदा के निकट रहती हूं फिर मेरी बहिन जुबैदा ने उस शाहज़ादे का बृत्तान्त जो उन दोनों बहिनों की डाह से समुद्र में डुबाया था मुझसे प्रकट किया और उन दोनों के कुतिया होने का कारण भी कहा और मेरी माता के मरने के उपरान्त मेरी छोटी बहिन को भी जिसका नाम साफ़ी है अपने साथ रक्खा फिर कभी हमने अपनी बहिन जुबैदा से अलग होने की इच्छा न की और अबतक हम दोनों आनन्दपूर्वक उसकी सेवामें रहती हैं और परमेश्वर का धन्यवाद करती हैं और सब बहिनें अपने घरका कार्य मिलझुलके करलेतीहैं कभी मैं बाज़ार में जाकर सौदासुलफ़ करती हूं और कभी मेरी छोटी बहिन साफ़ी जाती है सो मैं कल के दिन बाज़ार से बहुतसी वस्तु मोलले एक मज़दूर के शिर पर जो बड़ा हँसमुख और हाज़िरजवाब था रखकर लेआई थी और उसको रात्रि भर रहनेदिया कि अपने हँसमुख और मिष्टबचन से हमें प्रसन्नकरे फिर रात्रि को इन तीनों योगियों ने हमारे दरवाज़े पर आय हमसे

रहने की चाहना की कि जिसमें रात्रिभर रहें हमने उनपर दयाकर उन्हें भीतर बुलाया और अपने साथ भोजन कराया और मदिरा पिलाई फिर उनके सन्मुख हम ने गाया बजाया और वे भी हमारे सन्मुख अपनी रीतिपर गातेरहे इतने में तीन व्यापारी मवस्सल के जो अतिप्रतिष्ठित जान पड़तेथे हमारे दरवाज़े पर आये और हमसे योगियों के समान रात्रि को घर में रहने की इच्छा की वह भी हमने अंगीकार किया और उनको अपने घर में रहने को स्थान दिया और अपनी सभा में मिलाया परन्तु कोई भी अपने प्रण पर स्थिर न रहा और हमें महादुःखी किया यदि हमें सामर्थ्य थी कि जिस प्रकार हम चाहतीं दण्ड देतीं परन्तु हमने कुछ भी न किया और प्रत्येक मनुष्य से कहा कि अपना २ वृत्तान्त हमसे कहो फिर हमने उनसे उनकी कहानी सुन सबको छोड़दिया और उनका अपराध क्षमाकर दिया खलीफ़ा हारूंरशीद इस अपूर्व वृत्तान्त से अत्यन्त आश्चर्यित और हर्षित हुआ जब इस ओर से उसे भरोसा हुआ तो उस ने चाहा कि उन योगियों से कि सचमुच वह शाहज़ादे हैं कुछ न कुछ उपकार करूं फिर उसने बिचारा कि उन तीनों के साथ जो विना पति थीं योगियों का बिवाह करे ज़ुबैदा से पूछा कि हे सुन्दरी! तुझे उस अप्सरा का वृत्तान्त भी बिदित है कि जो तुम्हें प्रथम पक्षदार सर्प दृष्टिपड़ा और वह यह भी कुछ कहती थी कि ब—तक यह तुम्हारी बहिनें कुतियों के शरीर में रहेंगी ज़ुबैदा ने उत्तर दिया कि मैं प्रथम आपके सन्मुख यह कहना भूलगई उस अप्सरा ने बिदा होते समय थोड़े से बाल देकर कहाथा कि जब तुम मुझे बुलाया चाहो तो एक बाल को अग्नि में जलाना जो मैं काफ पहाड़ के उस ओ— भी रहूंगी तौ भी तुम्हारे निकट पहुँच जाऊंगी खलीफ़ा ने कहा वह बाल कहां हैं ज़ुबैदा ने उत्तर दिया कि उन बालों को मैं सदै— अपने समीप रक्षापूर्वक रखती हूं फिर उसने अपने सन्दूकचे को खोलकर उन बालों की पुड़िया निकाली और खलीफ़ा के सन्मुख लाई बादशाह ने कहा मैं चाहताहूं कि उस अप्सरा को भी देखूं उसको तुम बुलाओ ज़ुबैदा ने कहा बहुत अच्छा फिर उसने उस

पुड़िया को एकही बेर अग्नि में डालदिया ज्योंही उसमें से धुवां निकला त्योंही वह राजद्वार हिलने लगा और साथ ही वह अप्सरा बहुत उत्तम २ वस्त्र पहिने खलीफ़ा के सन्मुख आई और खलीफ़ा से कहा मैं आपके सन्मुख आई हूं जो आज्ञा हो सो पालन करूं और इस स्त्री अर्थात् जुबैदाने मुझसे बड़ी भलाई की मैं इसकी कृतज्ञ हूं और मैंने इसकी बहिनों को कि उन्होंने इसके साथ बुराइयां की थीं कुतिया बनाडाला यदि आपकी इच्छा हो तो मैं फिर इनको उसी शरीर में लाऊं खलीफ़ा ने कहा यदि तू इनको फिर अपने शरीर में लावे तो मैं तेरा बड़ा कृतज्ञ होऊंगा अब वे अपने अपराध का यथोचित दण्ड पाचुकी हैं इसके बिशेष एक और तुझसे इच्छा रखता हूं वह यह है कि एक मनुष्य ने अपनी स्त्री को बड़ा अन्याय कर इतना मारा है कि उसकी छाती मारके चिह्नों से काली होगई है और उसका घर कि उसने पहिले पति से थाती पाई थी खुदवाय धरती के बराबर कराढ़िया और उसके पति की सम्पूर्ण थाती लेली यह हाल सुन मुझे बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मेरे अधिकार और राज्य में कौन ऐसा अन्यायी है कि इस अन्याय करने का कारण है तुम तो उस मनुष्य को अवश्य जानती होगी अप्सरा ने उत्तर दिया कि मैं अभी उन दोनों कुतियों को उनकी मुख्य योनि में लाये देतीहूं और उस बिचारी स्त्री को इसतरह अच्छा करदूंगी कि फिर कुछ भी घावों का चिह्न न विदित होगा और उस मनुष्य का नाम भी जिस ने उसे मारा है बताऊंगी फिर खलीफ़ा ने तुरन्त उन दोनों कुतियों को जुबैदा के घरसे मँगवाया और परीके सन्मुख किया परी ने एक जल का पात्र मँगवाया उसपर कुछ शब्द पढ़े कि जो कुछ भी समझाई न देते थे फिर उस जल को अमीना और उन दोनों कुतियों पर छिड़का कि वे दोनों कुतियां तुरन्त निज योनि को कि वे अत्यन्त सुन्दरी और रूपवान् थीं प्राप्त हुईं और अमीनाके शरीर से सम्पूर्ण चिह्न चलेगये और उसकी छाती दर्पण के समान साफ़ होगई फिर उस अप्सरा ने कहा कि हे शाहजहां! अब इसके पति का नाम कि जिसने इसे माराहै वह मनुष्य रिश्तेमें आपके बहुत क़रीब है अर्थात

वह आपका छोटा पुत्रहै इस स्त्रीकी सुन्दरता की प्रशंसा सुन मोहित हुआथा और इसको बहाने से अपने घरमें बुला और वृद्ध इस के साथ बिवाह किया फिर कईबेर बातके उलटानेमें इसे मारा और यह सचमुच निर्दोष थी किसी भांति का पाप इसने न कियाथा केवल इसने एक बात कई बेर कही यही इसके पति के भ्रांति का कारण हुआ यही बात थी जो मैंने आपसे प्रकटकी यह कह वह अप्सरा गुप्तहोगई खलीफा यह वृत्तान्त सुन अत्यन्त आश्चर्यित हुआ और अपने पुत्र अमीनको कहला भेजा कि मुझे अमीनाके साथ तेरे गुप्त बिवाह का और उसके कपोल पर घावका हाल विदित हुआ शाहज़ादा इस हाल के सुन लज्जा और भय से खलीफ़ा के सन्मुख न होसका फिर खलीफ़ाने उसे कहला भेजा कि इस सुन्दरीको जो बड़ी पतिव्रता और सुकर्मिणी है लेजाय अपने महलमें प्रतिष्ठापूर्वक रख सो वह शाहज़ादा अमीनाको बड़ी प्रतिष्ठासे अपने घर में लेगया और दोनों सदैव प्रीतिपूर्वक रहनेलगे और खलीफ़ाने जुबैदा से कि उस पर मोहित था बिवाह किया और शेष उन तीनों स्त्रियों अर्थात् साफ़ी और जुबैदा की सगी दो बहिनोंका व्याह उन तीनों योगियों के साथ करदिया उन्होंने हर्षपूर्वक अंगीकार किया फिर खलीफाने हरएक के लिये अपने नगरमें बड़े २ और उत्तम २ घर बनवादिये और उनको अपने राज्य में बड़े २ अधिकार दिये निदान उन तीनों योगियोंने उस दयावान् खलीफ़ाके साथ अपना सम्पूर्ण जन्म आनन्दपूर्वक व्यतीत किया॥

सिन्दबाद जहाज़ी की कहानी॥

जब मलिका शहरज़ाद बादशाह शहरयार से तीन योगियों की कहानी कहचुकी तो बादशाहने उसे बहुत पसन्द किया फिर उसने कहा कि इसी हारूंरशीदके राज्य में एक निर्धन हिन्दबाद नामी मज़दूर बग़दाद नगर में रहता था एक दिन ग्रीष्मऋतुमें जिस समय कि बहुत गरमी थी भारी बोझा शिरपर उठाये नगर के एकओर से दूसरी ओरको लियेजाता था यदि बहुत दूर जाना था मार्गमें थकित हुआ और श्रमसे थक एक कूचे में अपने भार को कि वहां गुलाब

छिड़का हुआ था और मन्द २ ठण्ढी २ वायु चलती थी उतारा और एक बड़ेभारी महलके समीप कि उसमें से नानाभाँति के चोवे और अतरकी सुगन्ध आती थी बैठगया और उस द्वारके एक ओरसे अच्छे राग और उत्तम २ बाजों का शब्द सुनाई देता था और दूसरी ओर से बुलबुल और अन्य पक्षियों की जो वहां की पैदायश थे मीठी बाणी सुनाई देती थी और नानाप्रकारके सुगन्धित और स्वादिष्ठ व्यञ्जनोंकी सुगन्ध पहुँची कि जिससे इसे विदित हुआ कि इस स्थान पर न्योते का सामान होरहाहै चाहा कि यहां का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानूं कि यह द्वार किसकाहै और इसमें कौन धनवान् रहता है उस दिवसके सिवाय वह मज़दूर कभी वहां न गया था कि उस द्वारका हाल जाने निदान उसने सेवकोंसे कि उत्तम २ वस्त्र पहिनेहुये दरवाज़े पर खड़ेहुये थे पूछा कि इस घर का स्वामी कौन है उन्होंने उत्तर दिया आश्चर्य है कि तू बुग़दाद नगर का बासी होकर इतना नहीं जानता कि यह द्वार सिन्दबाद का है उसने सम्पूर्ण नदियों का सफर किया है इससे वह विख्यात हाजी है उसको परमेश्वर ने लाखों करोड़ों का द्रव्य दिया मज़दूरने यह सुन बड़ा आश्चर्य किया और आकाश की ओर देख बड़े ऊंचे शब्दसे कहा कि हे सामर्थ्यवान् संसारके उत्पन्न करनेवाले ईश्वर! सिन्दबाद और मुझमें क्या अन्तर है कि मैं हिन्दबादहूं और सम्पूर्ण दिवस बड़े श्रमसे अपने और अपनी स्त्रीपुत्रोंके निमित्त जौकी रोटी पैदाकरताहूं और सिन्दबाद यह आनन्द करताहै उसने कौन ऐसा कार्य किया कि जिससे वह ऐसा भाग्यवान् है और मैंने कौन ऐसा पाप किया कि जो मेरी ऐसी अभाग्यता का कारण हुआ फिर उसने झुँझलाय एक ठोकर पृथ्वीपर मारी और निराश हो शिर हिलाय अपनी दुर्भाग्यता पर पश्चात्ताप करनेलगा इतने में उस महल का एक सेवक उसके समीप आया और उसकी बांहपकड़ कहा मेरे साथ चल हमारे स्वामी सिन्दबादने तुझे बुलाया है हिन्दबाद डरगया कि ऐसा न हो जो सिन्दबाद मेरी इस बातको सुन क्रोधित हुआ हो और मुझे दण्ड देने को बुलाताहो घबड़ाकर इन्कार करनेलगा और कहनेलगा कि

मेरा बोझा यहां गलीमें पड़ा है क्योंकर उसे छोड़के जाऊं उस से-
वक ने उसे धैर्य दिया कि तू भयभीत न हो अपने बोझमें भरोसा
रख हम उसकी रक्षा करेंगे निदान बादविवादसे निरुपाय ो हिन्द-
बाद उसके साथ हुआ सेवक उसे बड़ेभारी दालान में लेगया कि
जहां बहुत से मनुष्य भोजन करने को बैठे थे वहां नाना प्रकार के
उत्तम उत्तम भोजन चुने थे और सब मनुष्यों के बीच में एक अ-
मीर बृद्ध दिव्यरूप से जिसकी श्वेतदाढ़ी जो छाती तक लटक ी
थी बैठाथा और उसके पीछे बहुत से सेवकों का समूह हाथ बांधे
खड़ा था मज़दूर इतनी बड़ी सभा और सेवकों और नानाप्रकार
के व्यंजनों के देखने से डरगया और झुककर सिन्दबाद को प्रणाम
किया सिन्दबाद ने सके फटे ोर मलिनवस्त्रका कुछभी शोच न
कर प्रणाम का उत्तर दिया और अपने निकट बुलाय अपनी दा-
हनी ओर बैठाया और उत्तम उत्तम भोजन अपने हाथ से उठाय
उसके आगे रक्खे और बहुत अच्छी मदिरा जो वहां बहुतसी रक्खी
थी उसे पिलाई सिन्दबाद ने जब देखा कि उसके सब सभावाले भो-
जन करचुके हिन्दबाद से अरबकी रीत्यनुसार कि मित्रता में अरबी
कह उपनाम करते हैं कहा अरबी तुम्हारा क्या नाम है उसने कहा
साहिब मेरा नाम हिन्दबाद है सिन्दबाद ने कहा कि मैं और यह स-
म्पूर्ण सभा तुमको देख प्रसन्न हुई अब मैं चाहताहूं कि तुम्हारे मुख
से उस बात को जो तुमने गली में बैठकर कही थी सुनूं और सिन्द-
बाद की इस चाहना से यह इच्छा थी उसने दरवाज़े से उन बातों
को हिन्दबाद से सुना और इसीलिये उसे बुलवा भेजा था हिन्दबाद
ने लज्जितहोय उत्तर दिया कि उस समय मैं थकने और श्रमित होने
के कारण अपने आपे में न था मेरे मुख से कोई अनुचित बचन
निकलगया होगा अब उसका दुहराना सभा में ढिठाई है आशा
रखताहूं कि वह ढिठाई और अनुचित मेरी क्षमा करो सिन्दबादने
कहा कि मैं ऐसा अन्यायी नहीं हूं कि उन बातों से किसी प्रकारकी
हानि पहुँचाऊं किन्तु मुझको तुमपर दया आई और तेरा रूप देख
और बातें सुन मेरा मन भरआया है परन्तु हे भाई! तूने बेसमझी

से वह बात गली में कही क्योंकि तू जानता होगा कि बिना श्रम यह आनन्द और द्रव्य मुझे प्राप्त हुआ सो नहीं मैंने बहुतसी आपत्ति और दुःखों के समूह पृथ्वी के भोगे तब परमेश्वर ने मुझे यह पदवी दी फिर सिन्दबाद ने सब सभावालों से कहा कि मुझे पर वर्षों बहुतही अद्भुत बृत्तान्तहुये जिनको सुन तुम बिस्मित होगे सात सफ़र मैंने धन प्राप्त होने के कारण किये और प्रत्येक सफ़र में बड़े २ दुःख और आपत्ति में ग्रसित हुआ कहो तो तुम्हारे सन्मुख प्रकट करूं कि तुमको भी मेरी आपत्तियों का बृत्तान्त बिदित हो फिर उसने अपने सेवकों से कहा कि हिन्दबादके भारको जो कूचे में पड़ा है जहां कहीं कि वह कहे पहुँचादो यह आज्ञा पातेही उन्होंने हिन्दबाद के घर वह भार पहुँचादिया सिन्दबाद ने अपने पहिले सफ़रका बृत्तान्त इस भांति बर्णन करना आरम्भ किया॥

सिन्दबाद जहाज़ी के पहिले सफ़र का बृत्तान्त॥

सिन्दबादने कहा मैंने अपने पिताकी थाती को यौवन अवस्थामें भोगबिलास आदिकर ख़र्च करडाला जब अपनी निर्बुद्धिता से चैतन्य हुआ तो अत्यन्त लज्जित हुआ और बहुतसी द्रव्यके ख़राब करने से अत्यन्त पश्चात्ताप किये बुद्धिमानोंका यह बचन सत्य है कि दरिद्रतासे क़बर में जाना उत्तमहै स्मरण करता और अपनी दशापर उसे ठीकपाता और मेरा पिताभी कहा करता निदान शेष द्रब्य जो मेरे पास बचरहा था इकट्ठाकर सबको बेंचा और दरियाई ब्यापारियों के निकट जाय अपने हाल के बिषय में बार्त्ताकी उन्होंने मुझे अच्छी सलाहदी मैंने तुरन्त ब्यापारकी बस्तु मोललीं और वहां से उन सब ब्यापारियों के समान जहाज़ किराये कर चढ़ा और जहाज़ वहां से लङ्गर उठा पारस नदीकी दाहिनी ओर अरब के बाईं ओर फ़ारस देश में जो हिन्द के पूर्व ओर है चले उस नदी का अनुमान सत्तर मील चौड़ाव और दो सहस्र पांच सौ मील लम्बाव था और पूर्व की ओर खारीनदी से और दूसरी ओर अबासीन से मिलाहुआ था मार्गमें मैं कितने दिनों तक नदीके रोगोंमें ग्रसित रहा फिर नीरोग हो भलीभाँति अच्छा होगया मार्ग में कई द्वीप मिले हमने अपनी बस्तु

को स्थान २ पर बेंचा और अदल बदल किया एक दिन हमारा जहाज़ पानी पर जाता था अकस्मात् एक द्वीप जलपर हराभरा और बहुत सुन्दर दृष्टिपड़ा कप्तानने उसे देख खलासियोंको आज्ञादी कि सब पालें जहाज़की उतारडालो और सबको आज्ञादी कि जिसके जी में आवे उस द्वीपमें जावे सो कई ब्यापारी और मैं जो जहाज़ में बैठे २ उकता गयेथे उस द्वीपके देखनेकी इच्छाकी और अपना खाना लेकर जहाज़से उतरे वह द्वीप कईबेर हिला यह देख जहाज़ी मनुष्योंने हमें बुलाया कि तुम तुरन्त जहाज़पर चढ़आओ यदि कुछभी देरकी तो तुम सब डूबजाओगे क्योंकि जिसे तुमने द्वीप समझा है वह बड़ी मछली की पीठ है हम इस वृत्तान्त से शोचितहुये और जो हममें से चतुर और शीघ्रगामी थे वह तुरन्त पनसुइयों पर कूद चढ़गये और कितने पैरकर चढ़गये परन्तु मैं अकेला उस मछली की पीठपर रह गया यहांतक कि वह मछली डुबकी मार समुद्र के भीतर चलीगई मैं उसमें उस लकड़ी को कि जिसे जलाने को लाया था हाथमें पकड़ेहुये रहगया थोड़ीदेर के पीछे कप्तान वायु अनुकूलपाय उन मनुष्यों सहित जो जहाज़ पर पहुँचगयेथे वहांसे जहाज़ का लंगर उठाचला मैं सम्पूर्ण दिवस और रात्रिको उस अथाह जल में बहाकिया दूसरे दिन भोर को थकगया और हाथपांवों से निर्बल होगया चाहता था कि डूबजाऊं कि अकस्मात् एक लहरने मुझे उठाय किनारेपर डालदिया परन्तु किनारा वहांका ढलवां और ऊंचा था वृक्षोंकी जड़ पकड़ बड़ी कठिनता और श्रमसे खुश्की में पहुँचा और शव हो मृतककी समान गिरा तबतक सूर्य उदय हुआ कि मैं क्षुधा से पीड़ितहो फल और सागपात के ढूंढ़ने में घुटनों से चला और सुभाग्यसे एक सोते पर पहुँचा वृक्षोंसे मीठे फलतोड़ पेटभर खाये और उसी सोतेसे जललिया कईक्षण में मुझमें चलने की सामर्थ्य आगई मैं उस द्वीपमें इधर उधर फिरनेलगा निदान मैंने चलते फिरते एक घोड़ा चरते देखा मैं उधर ही चला परन्तु यह न जानताथा कि यह मेरे वास्ते अच्छा होगा वा नहीं वहां पहुँचकर उस घोड़ेको खूंटे से बँधा देख मैं उसकी सुन्दरता देख रहाथा पहले मनुष्य का शब्द पृथ्वी के भीतरसे सुनाई दिया

फिर एक मनुष्य तुरन्त निकल मेरे निकट आया और पूछा तू कौनहै मैंने सम्पूर्ण अपनी आपत्ति और दुःख का बृत्तान्त प्रकट किया यह सुन वह मुझको खींचकर तहखाने में कि जहांसे वह मनुष्य निकला था लेगया वह सब मुझे देख विस्मितहुये और मैं भी उनको देख आश्चर्यितहुआ फिर मैंने वह भोजन जो उन्होंने मुझे दियाथा खाया और उनसे पूछा कि तुम इस उजाड़में क्यों आये और बैठे क्या करते हो उन्होंने उत्तरदिया कि हम अश्वपालक हैं बादशाह जो यहां के अधिपतिहैं वह प्रत्येक वर्ष इन्हीं दिनों घोड़ियां लेकर दरियाईघोड़ों के वीर्यलेने को इस स्थानपर भेजते हैं और घोड़ियोंको नदीके तट पर जब दरियाई घोडा भोगकर चाहता है कि घोड़ीको मारडालूं तब हम यहां निकल शोर करते हैं वह घोड़ा हमारा शब्द सुन डरकर फिर नदी में भगजाता है और जब घोड़ी गाभिन होजाती है तब हम उसे लेकर नगर में चलेजाते हैं और उसके बच्चे दरियाई बछेड़े कहाते हैं और वह बछेड़ा केवल बादशाहकी सवारी के वास्ते रहताहै कल हम सब बस्ती में जावेंगे मैंने कहा मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा क्योंकि वह मनुष्य दूर रहते थे मेरा वहांतक पहुँचना मार्ग बताये बिना कठिनथा वह मनुष्य मुझसे यही वार्त्ता करतेथे कि इतने में घोड़ा नदी से निकला और घोडी से भोगकर चाहता था कि उसे मारडाले उन्होंने बडा शब्द किया फिर वह भागकर नदीमें होरहा दूसरे दिवस वह सब घोड़ियों को लेकर नगरमें आये मैंभी उनके साथ नगरको गया वह मुझको बादशाह के सम्मुख लेगये उसने मेरा बृत्तान्त पूछ कहा कि तू कौन है और यहां क्योंकर आया है मैंने अपना सब हाल कहा उसने सुन बहुत पश्चात्ताप किया और अपने दरबार के नौकरों को आज्ञादी कि इसमनुष्य को अच्छी तरह रक्खो और इसे किसीभांति का दुःख न पहुँचे सो उन्होंने उसकी आज्ञानुसार मुझे बहुत आनन्द से रक्खा मैं कि व्यापारी था बहुधा व्यापारियों से संगति रखता था और प्रत्येक मनुष्य से जो इस नगर में आता बुगदाद नगर का हाल इस इच्छा से पूछता कि किसी ऐसे मनुष्य से मिलापहो कि जिसके द्वारा अपने नगर में पहुँचूं हुजूर का नगर बहुतबड़ा और

मुन्दर था और प्रतिदिवस देश देशके जहाज़ वहां पर आते बहुधा हिन्दू लोगोंसे मिलकर खुशहोता इसी समयान्तर में अन्यदेशों के बहुत सरदार हुजूरको कर देनेवाले मुझ से मिले वह सब हमारे देश की रीति मुझसे पूछते और मैं भी उनसे वहां की अद्भुत २ बातें पूछता सो हुजूर के राज्य में एक सील नामे द्वीप था मैंने सुना कि वहां से रात्रि दिवस ढोल का शब्द सुनाई देताहै जहाज़वाले मनुष्यों से विदित हुआ कि उस द्वीप में मुसल्मानों ने एक मनुष्य नास्तिक दज्जाल अन्त समय में उत्पन्न होगा कि जब प्रलय को कुछ समय रहजावेगा तो कहेगा कि मैंहीं परमेश्वर हूं और उसकी आंख कानी होगी और गर्दभ पर सवार होगा मैं उस द्वीप को भी देखनेगया मार्ग में मैंने सौ हाथ किन्तु दो २ सौ हाथकी मछलियां देखीं कि जिनके देखने से भयमान होता था परन्तु वे ऐसी डरपोंक थीं कि केवल तख़्तेका शब्द सुनतेही भागजातीं एक प्रकार की मछली और देखीथी कि उसका मुख उल्लू कासा और लम्बाई में एक हाथ से अधिक न थी एकदिन मैं उस नगरके किसी बन्दरमें खड़ा था कि एक जहाज़ का वहा लंगर हुआ और सम्पूर्ण व्यापारी अपने २ असबाब की गठरियां जहाज़से उतारकर नगरमें बेंचने को ले जानेलगे अकस्मात् एक गठरी पर मेरी दृष्टि पड़ी कि उसपर मेरानाम लिखा था मैंने उसे पहिचाना कि यह वही गठरी है जिसको मैंने बांसरासे जहाज़ पर लादा था फिर मैं कप्तान के निकट गया वह मुझे डूबा जानता था और पूछा कि यह गठरियां किसकी हैं उसने उत्तरदिया कि हमारे साथ बुग़दाद नगरका वासी सिन्दबादनामे व्यापारी था जब हम एक द्वीप के समीप पहुँचे बहुतसे व्यापारी उसे द्वीप समझ उस पर गये परन्तु वह वास्तव में टापू न था वह समुद्र का बड़ा मत्स्य जल पर सोताथा जब उन्होंने रसोईं बनानेके निमित्त उसकी पीठ पर आग जलाई वह पहिले अग्निकी गरमी से हिला फिर समुद्र में चला गया बहुतसे मनुष्य उसकी पीठ पर थे कुछ तो पनसुइयोंपर और कुछ पैरके जहाज़ पर पहुँचे परन्तु एक व्यापारी कि जिनका नाम सिन्दबाद था जहाज़पर पहुँच न सका और समुद्रमें

डूबगया यह गठरियां उसी की हैं अब इनको इस द्वीप में बेंचूंगा और असल नफ़ा जो कुछ कि प्राप्तहोगी बुग़दादमें पहुँचकर उसके परिवार को दूंगा मैंने कप्तानसे कहा सिन्दबाद जिसको तुम मुवा जानतेहो मैं ही हूं और यह गठरियां मेरी हैं इस बचन को सुन कप्तानने कहा वाह मैं किसभांति तेरा बिश्वासकरूं कि तू सिन्दबादहै क्योंकि मनुष्योंने झूठ बोलना और छल करना बहुत सीखलियाहै मैंने अपने नेत्रोंसे देखलिया था कि वह समुद्रमें डूबगया और बहुत से मनुष्य इस जहाज़के साक्षीहैं अब तूने अपनेको सिन्दबाद बनाया है तू तो बहुत अच्छा और निश्छल जानपड़ता है परन्तु तुझे यह क्या हुआ कि छलसे दूसरे का धन अपना बनाता है मैंने कहा कुछ शोच बिचारके मेरी बात सुनो उसने कहा कि तू क्या कहता है फिर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त जिसभांति कि मैं जीता बचकर निकला था और जिस प्रकार इस द्वीपमें आकर बादशाहसे मिला था वर्णन किया यह सुन पहिले तो आश्चर्यित हुआ फिर बड़े ध्यान और बिचारसे मुझे देख पहिचाना और अन्य ब्यापारियों ने भी मुझे पहिचान साक्षी दी कि सिन्दबाद यही है फिर मुझे जीतादेख सब धन्यवाद देनेलगे और कप्तानने कण्ठ से लगाय कहा परमेश्वर का धन्यवादहै कि ऐसे बड़े दुःखसे तुम छूटे और तुमको कुशलपूर्वक देख मैं अत्यन्त प्रसन्नहुआ यह तेरा मालहै अपनी गठरियोंको गिन ले तुझे उनके बदलने और बेंचने का अधिकारहै मैंने उस कप्तान की सत्यताकी बड़ी प्रशंसा करके कहा कि इस धनमें से तुम भी थोड़ा सा लो परन्तु उसने न लिया सबका सब मुझे देदिया फिर मैंने उन गठरियोंमें से कुछ वस्तु बहुमूल्य और अच्छी २ चुनकर बादशाह को दी बादशाहने पूछा तूने इस असबाब को कहांसे पाया मैंने उससे अपनी गठरियोंके पाने का हाल बिस्तारपूर्वक प्रकट किया यह सुन वह अत्यन्त हर्षितहुआ और मेरी वस्तु को कि जो भेंटकी तौरपर थी स्वीकार किया उसके बदले मुझे उन वस्तुओं से अधिक द्रब्य दिया फिर मैं उससे बिदाहो अपने जहाजपर चढ़ा और शेष बस्तुको उस देश की वस्तु अर्थात् सन्दल, आबनूस, काफ़ूर, जायफल, लौंग,

कालीमिर्च आदिसे बदला वहांसे चल और २ द्वीपों में गया निदान बन्दर बांसरामें पहुँच मैं जहाज़ से उतरा फिर वहांसे खुश्कीके मार्ग से वहां आया उस यात्रामें मुझे लक्ष मुद्रा लाभहुये अपने नातेदारों और परिवार से मिल अत्यन्त प्रसन्नहुआ बहुतसी ांदियां और सेवक और बड़ा महल मोल ले बड़े आनन्द और प्रसन्नता रहने लगा यहांतक कि परदेश के दुःखों को भूलगया सिन्दबाद ने यहां तक अपना बृत्तान्त प्रकटकर गाने बजानेवालों को गाने की आज्ञा दी क्योंकि इस कहानीके पहले गाना बजाना होताथा फिर वह स भोज करनेलगे इतनेमें ात्रि ोगई सिन्दबादने एक थैली ४००) रु० की मँगवाय हिन्दबाद मज़दूरको दी और कहा इस समय में तुम अपने घर पधारो कल फिर इसी समय मेरे बृत्तान्त सुनने को यहां आना हिन्दबाद इस प्रीति और द्रव्यके पानेसे जो कभी आंख से भी न देखी थी अत्यन्त प्रसन्नहुआ और उसकी ृतज्ञता कर अपने घरमें आया और यह बृत्तान्त अपने स्त्री पुत्रों से प्रकट किया वहभी परमेश्वर का धन्यबाद करनेलगे कि ईश्वर ने सिन्दबाद के द्वारा हमारी निर्धनता पर कृपादृष्टि की दूसरे दिन हिन्दबाद अच्छे अच्छे वस्त्र पहिन फिर सिन्दबाद के घरमें आया वह हिन्दबाद को देख हर्षित हुआ और मुस्करा कर क्षेमकुशल पूछी फिर जब सम्पूर्ण मित्र और अतिथि सिन्दबाद के इकट्ठे हुये तब नियमानुसार नाना प्रकारके भोजन चुनेगये वह सब खानेलगे जब सब भोजन कर चुके सिन्दबादने कहा हे मित्रो ! चित्त लगाय द्वितीय यात्रा का बृत्तान्त सुनो यहभी पहिलेके समान सुननेके योग्यहै वह सब चुपहुये औ उसकी ओर ध्यान दिया सिन्दबादने अपनी दूसरी यात्रा का हाल इसभांति वर्णनकरना आरम्भ किया॥

सिन्दबाद जहाज़ी की द्वितीय या ा का बृत्तान्त॥

हे मित्रो ! उन दुःखों और आपत्तियोंके कारण जो मुझपर प्रथम यात्रामें पड़ीथीं मैंने अपने चित्तमें प्रण कियाथा कि फिर कभी सफ़र का नामभी न लूं और अपने नगरमें आनन्दपूर्वक चैनसे रहूं परन्तु निकम्मा बैठेरहनेसे मैं उदास रहनेलगा निदान घबड़ाकर मैंने चाहा

कि फिर सफरकर नवीन नगरों और देशोंको देखूं और नदियों की उत्तर और अद्भुत चीजें अवलोकन करूं यह दृढ़ इच्छा चित्त में ठहर थ मैंने बहुतसी नानाप्रकार की लाभकारी व्यापारी की बस्तुएँ मोललीं और उन व्यापारियों से मिल कि जिनका मुझे विश्वास था साथ होलिया और एक अच्छे जहाजपर सवार हुआ और हम सब ने अपने को सामर्थ्यवान् परमेश्वरको सौंप जहाजका लंगर उठाया मार्गमें हम सब द्वीपोंको देखते २ और व्यापारकी बस्तुको बेंचते बदलते एकदिन हम एक द्वीपमें कि बहुत उत्तम और सुन्दर और फल युक्त वृक्षों से भरा हुआ था जहाजसे उतरकर गये परन्तु वह स्थान उजाड़ और निर्जन था मनुष्य की तो क्या किन्तु पक्षीका भी चिह्न दृष्टि न पड़ता था मेरे साथ के सम्पूर्ण लोग फल तोड़ तोड़ इकट्ठे करते थे और मैं एक छोटेसे सोतेपर कि जहां बहुतसे सघन वृक्ष लगे हुए थे छाया में बैठाया और भोजन जो अपने साथ लेगया था खाने लगा और कुछ मदिरा पी उस सोते पर अचेत सोगया इतनी देर तक वहां सोया रहा कि जिसकी संख्या मैं नहीं करसक्ता जब जगा जहाज वहांसे खुल बहुत दूर निकलगया था अपने साथियों से किसी को वहां न पाया वह सब जहाज पर चढगये थे जहाजकी सब पालें खुलीहुई थी क्षणभरमें मेरी दृष्टि से गुप्त होगया मैं उस समय के दुःख का वृत्तान्त नहीं कहसक्ता कि उस उजाड़ खण्डमें मेरी क्या दशा हुई निकट था कि इस दुःख में मेरे घट से प्राण निकलजावें हाहाकर रुदन करनेलगा और शिर पीटपीट पृथ्वीपर गिरा बहुत देरतक शोकरूपी समुद्र में डूबाहुआ अपने को सहस्रों धिक्कार देकर बुरा भला कहनेलगा कि पहिली यात्राकी आपत्ति तुझे क्या कमथी कि दूसरा सफर तूने किया फिर नये सिरे से आपत्ति में पड़ा परन्तु वह सब व्यर्थ था निदान परमेश्वर को स्मरण करता करता वहां से उठा और अत्यन्त आश्चर्यित था कि क्या करूं और कहां जाऊं फिर एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ चारों ओर देखा कि कहीं रात्रिको रहने का स्थान मिले परन्तु जलही जल और आकाश दृष्टि पड़ा थोड़ीदेरके पश्चात खुश्की में एक बहुत बड़ी और श्वेत वस्तु दूरसे मुझे दृष्टि पड़ी मैं

उस बृक्ष से उतर शेष भोजन जो मेरे पास बचरहा था लेकर उसे श्वेत वस्तुकी ओर जो बहुत दूरथी और बिचार में न आतीथी चला उसके समीप पहुँच देखा कि वह गुम्मज़की तरह गोल और बड़ी है और छूने से बहुत चिकनी और फिसलती हुई जानपड़ती है फिर मैं उसके चारों ओर फिरा कि कोई दरवाज़ा देखपड़े परन्तु व- चारों ओरसे बन्द थी और उसका घेरा अनुमान पचास क़दमके [illegible]ख पड़ा इतने में सूर्यास्त का समय हुआ और तत्काल चारों ओर अँधियारा सा बदली के समान घिरआया मैं उस अँधियारे को देख अत्यन्त बिस्मित हुआ और एक बड़ीभारी चिड़िया को देख अधिक त्रसित हुआ कि वह मेरी ओर उड़ी चली आतीहै मुझे जहाज़ियों का वचन स्म-ण हुआ कि एक रुख नामे पक्षी बहुत बड़ा होताहै जिसे हिन्दी में गरुड़ कहते हैं मैंने समझा यह गोल श्वेत बस्तु उसका अंडाहै सो यही बिचार मेरा ठीकहुआ वह पक्षी अंडा सेनेको वहां आता था वह गोला उसका अंडाथा एक पञ्जा आकर मेरे समीपपड़ा प्रत्येक नाख़ून उसका एक बड़े बृक्षकी जड़के समान था अपनेको उसके नाख़ून में पगड़ीसे अच्छीभांति दृढ़ बांधा और यह सोचा कि कल भोरको जब यह पक्षी यहां से उड़ेगा मुझे इस उजाड़ द्वीपसे निकाल किसी दूसरी ओर लेजायेगा निदान दूसरे दिन भोरको वह पक्षी वहांसे उड़ा और इतना ऊंचे गया कि जहांसे पृथ्वी किञ्चित् न दृष्टि पड़तीथी फिर क्षण भरमें किसी बनमें जाय उतरा मैं तुरन्त अपने को उसके पांवसे खोल अलगहुआ मेरे अलगहोतेही वह ए- अजदहे पर कि बहुत बड़ाथा जायगिरा और उसको अपनी चोंच में पकड़ ले उड़ा और वह स्थान जहां कि उस पक्षीने मुझे छोड़ाथा बहुतगहरी औरढलमी एकपहाड़ की गुफ़ाथी और चारोंओर उसके बड़े २ पहाड़थे ऊंचे नीचे होने के कारण किसी मनुष्य की शक्ति न थी कि उसपर चढ़सके यह स्थान प्रथमसे भी अधिक भयानक और बुराथा फिर मैंने उस चौपाट बनमें चारोंओर हीरेके टुकड़े फैलेहुये देखे और कोई २ इतने बड़े थे कि जिनको देख मैं अचम्भित हुआ थोड़ेसे बड़े २ टुकड़े इकट्ठेकर कपड़े में बांधलिये परन्तु बड़े अजदहों के देखने से वह प्रसन्नता जो मुझे

हीरोंके मिलने से हुई थी बिस्मरण होगई वह सर्प इतने बड़े थे कि उनमें से छोटासा भी हाथी को सुगमतासे निगल लेवे दिन भर वह उन पक्षीके भयसे कि वह उनके प्राण का बैरी है पहाड़ों की खोह में छिपे रहते केवल रात्रि को निकलकर फिरते मैं दिनभर उस उजाड़खण्ड में फिरा किया और जहां उत्तमस्थान पाया वहीं बैठके सुस्तानेलगा जब सूर्य अस्तहुये तब मैं एक छोटीसी खोह में जाय छिपा और उसके मुखको पत्थरों से बन्द किया कि कोई सर्प न आसके केवल प्रकाश आने को एक छोटासा छिद्र रहने दिया और भोजन निकालके खानेलगा इतने में सर्पोंने निकलना और शब्द करना आरम्भ किया तो उनके भयानक शब्द सुन मैं डरके कम्पित हुआ निदान मुझको इस भयसे निद्रा न आई जागकर यथावस्थित अपनी रक्षा करतारहा यहां तक कि भोर हुआ और वे सर्प कन्दरों में छुपगये मैं उस स्थानसे कि जहां छिपाहुआ था निकलआया उन सर्पोंसे मैं इतना भयभीत था कि हीरों को देख प्रसन्न न होता और रात्रि को किसी डरके मारे सोया न था थोड़ासा भोजनकर शयनके विचारसे लेटरहा ज्योंही मेरी आंख लगी त्योंही एक बस्तु फुदककर मेरे निकटआय गिरी कि जिसके शब्दसे मैं जागपड़ा जब उसको ध्यानकर देखा तो एक बड़ासा नवीन मांसका लोथड़ा दृष्टिपड़ा क्षण भरमें चारोंओर पहाडोंसे मांसके बडे २ खण्ड उस स्थानपर गिरने लगे उन्हें देख मैं विस्मित हुआ थोड़ी देरके पश्चात् मुझे जहाजियों का वचन स्मरण होआया कि एक स्थानपर हीरों की खानिहै और व्यापारी पर्वतों पर जाय इस उपायसे हीरे लाते हैं मुझे इस बचन का विश्वास हुआ वह उपाय यह है कि व्यापारी उन पहाड़ों पर जो उस पर्वतके चारोंओर हैं उस ऋतुमें जाते हैं जिन दिनों में गिद्ध अण्डे बच्चे देते हैं और बड़े २ मांसके टुकड़े नीचेको फेंकतेहैं और उन टुकड़ोंमें लस होनेके कारण हीरेके टुकड़े लगजाते हैं बड़े २ गिद्ध वह टुकड़े मांसके कि अपने घोसलोंमें जो पहाड़ों की चोटियों पर होते हैं लेजाय अपने बच्चों को खिलातेहैं और व्यापारी उन गिद्धोंके लानेही उनके घोसलों से डराकर वह खण्ड मांस को लेलिया करते हैं पर

उपायसे उस पहाड़के दरसे वह हीरे हाथ लगते हैं और वह पहाड़ का दरा ऐसा गहरा और बेढब था कि कितनाही ने बिचारा किसी भांति दूसरी ओर निकलूं परन्तु निकलने का मार्ग न मिला मैं उस पहाड़की कन्दराको क़बर समझे हुयेथा परन्तु वह मांसका लोथड़ा देखकर मुझे कुछ धैर्य हुआ और समझा कि इसी उपाय से यहां से निकलूंगा फिर मैंने अपने चर्म के तोशेदान में कि जिसमें रोटी और अन्य भोजन रक्खा करता था उसमें बड़े २ टुकड़े हीरेके चुन-कर भरलिये और एक बड़े मांसके खण्ड को अपने सम्पूर्ण शरीर से लपेट पगड़ी से उसे भलीभांति बांध लिया और उस तोशेदान को जिसमें हीरे बँधेथे रक्षापूर्वक कमरमें लपेटलिया और अपनेको पृथ्वी पर डालदिया एक क्षण व्यतीत न हुआथा कि गिद्धोंने पहाड़से उस स्थानपर उतरना आरम्भकिया और एक बड़ागिद्ध उस मांसके खण्ड को जिसे मैंने अपने शरीर से लपेटाथा अपने पञ्जोंमें पकड़ लेउड़ा और पहाड़की चोटी पर लेजाय अपने घोसले में रक्खा व्यापारी बहुत चिल्लाये वह गिद्ध वहां से डरके उड़गया उन व्यापारियों में से एक वहां आया और मुझे देख कुछ कहे सुने बिना कि तू कौनहै और क्यों यहां आया है क्रोध करनेलगा मैंने उससे कहा कि जब यह जानोगे कि मैं यहां क्यों आया और कौनहूं तब मुझपर दया करोगे तुम निश्चय मानो जितने कि मेरे पास हीरे हैं वह सब तुमको दूंगा उनके मोलको तुम्हारे हीरे कब पहुँचेंगे मैं उनको पर्वत की कन्दरा से चुनकर लाया हूं वह सब इस चर्मकी थैलीमें वर्तमान हैं देखलो यह कह वह थैली मैंने उसे दिखाई इतनेमें सब व्यापारी आय मेरे चारों ओर इकट्ठेहुये उनसे भी मैंने सी भांति अपना बृत्तान्त उस यत्न से कि मैं वहां पहुँचा था बर्णन किया यह सुन उन्होंने अचम्भा किया फिर मुझे अपने साथ लेकर वहां गये जहां वह सब रहते थे और मेरे हीरे देख आश्चर्यित हुये और कहनेलगे कि इतने बड़े हीरे आजतक हमने न देखे थे निदान मैंने उस व्यापारीसे कि जिस के डेरे में मैं आया था कहा इसमें से जितने चाहो हीरे पसन्दकरके लेलो मुझको किंचित् पश्चात्ताप न होगा उसने कहा मुझे कुछ दर-

नम्बर१४ मुतअ़ल्लिक़े सफ़े १७२ प्र-भा.

चित्र हीरे की कान से सिन्दबाद जहाजी का बुद्धिमानी से छुट्टी पाना.
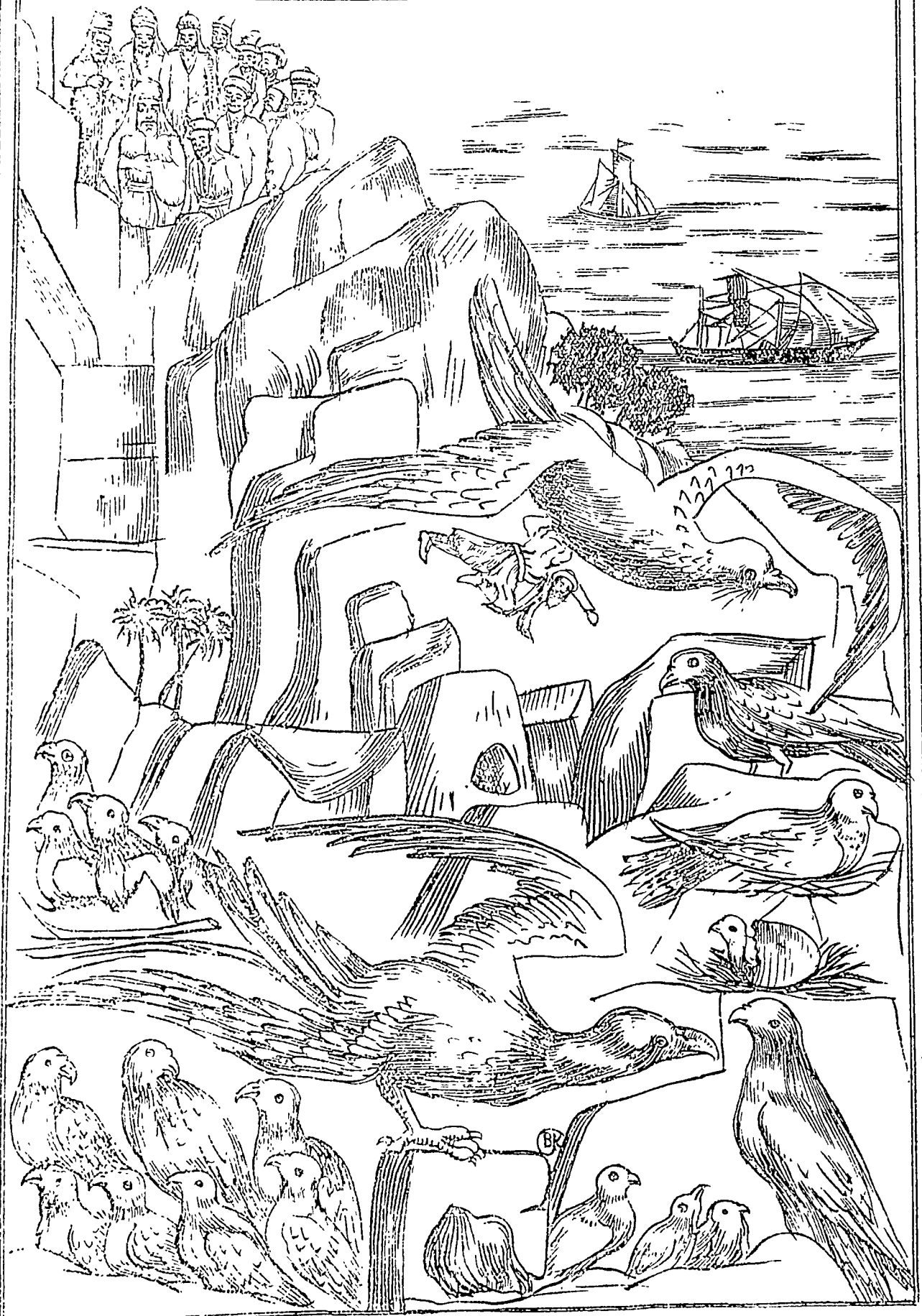
कार नहीं मैं न लूंगा परन्तु जब मैंने बहुत कुछ कहा तो उसने उनमेंसे एक बड़ा हीरा और कई छोटे २ लेलिये और कहा कि यह मेरी सम्पूर्ण आयुको बहुत हैं फिर मुझे दूसरीबेर यात्रा की आवश्यकता न होगी यह नियमथा कि प्रत्येक व्यापारी एक २ वा दो २ गिद्धोंके घोसले हीरे लेनेको नियत करलेता दूसरे घोसलेमें न जाता और उससे कुछ प्रयोजन न रखता फिर रात्रिको मैं उन व्यापारियों के साथ सोरहा अपने वृत्तान्तको दूसरीबेर उनसे कह सुनाया और भयवान् स्थानसे बचकर ऐसा हर्षितहुआ कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और बिचारता था कि यह प्रत्यक्ष है वा स्वप्न है दूसरे दिन उन्हीं सब व्यापारियों सहित जहां वड़े २ सर्प थे वहांसे द्वीपमें आया यदि भाग्य अच्छेथे मार्ग में सर्पो से हमें कुछभी दुःख न पहुँचा वहांद्वीपमें एक बृक्ष से कपूर निकलता है उसकी एक टहनी छुरीसे काटते हैं उसमें से कुछ रससा बहकर एक पात्र में इकट्ठा हो जमजाता है वही जमाहुआ कपूर कहलाताहै फिर वह टहनी मुरझाकर सूखजाती है और बृक्ष इतना बड़ा है कि सौ मनुष्य उसकी छाया में भलीभांति बैठसक्ते हैं और उस द्वीपमें एक पशु गैंड़ा हाथी से छोटा और भैंसे से बड़ा उत्पन्न होताहै उसकी नाक पर एक सींग एक हाथके बराबर भीतरसे ठोस होता है और उस सींगके ऊपर श्वेत चित्र मनुष्य का दिखाई देताहै वह गैंड़ा बहुधा हाथीके पेटमें सींग चुभाकर उसको अपने शिर पर उठालेता है परन्तु रुधिर और मज्जाके कारण कि हाथी के पेट में से बहकर उसकी आंखों पर पड़ताहै तो अन्धा होजाता है उसी दशा में रुख आकर उस गैंड़ेको हाथी समेत पंजोंमें पकड़ लेजाताहै और अपने बच्चों को उनका मांस खिलाताहै फिर मैं वहांसे और बहुत से द्वीपों में गया और उन द्वीपोंमें अपने हीरेसे उत्तम २ बहुमूल्य वस्तु जो वहां पैदा होती थीं बदलीं इसीभांति बहुत से नगर और बन्दरों में होताहुआ बांसरा में और वहां से बुग़दाद को पहुँचा और बहुतसे अभ्यागत और याचकों को अपना धन कि बड़े परिश्रमों से पैदा कियाथा दे अयाचक किया जब सिन्दबाद अपनी दूसरी यात्रा का वृत्तान्त भी प्रकट करचुका उसने ४००) रु० हिन्दबाद को दे बिदा

किया और कहा कल फिर इसी समय आय मेरी तृतीय यात्रा का हाल सुनना सो हिन्दबाद और सब अतिथि और सभा सिन्दबाद से बिदाहुई और तृतीय दिवस फिर उसी नियत समयपर सब आये सबों ने सिन्दबाद के साथ दुपहर का भोजन किया जब खाचुके सिन्दबाद ने कहा हे मित्रो! चित्त लगाय मेरी तृतीय यात्रा का हाल सुनो फिर उसने इस भांति वर्णन किया॥

सिन्दबाद जहाजी की तीसरी यात्रा का वृत्तान्त॥

मैं उन आपत्ति और दुःखों को जो मैंने दो यात्राओं में भोग किये थे आनन्द और मङ्गलके कारण भूलगया यहांतक कि फिर तय्यारी सफ़र की कर बग़दादसे चला और व्यापार की वस्तु वहांसे मोल ले बांसरा को लेचला और अन्य व्यापारियों के सम्मत से जहाज़ पर सवार हुआ और एक बड़ा सफ़र किया और कई द्वीपोंमें असबाब बेंच बड़ालाभ उठाया एक दिन परमेश्वर की इच्छासे हमारा जहाज़ तूफ़ान में पड़ा जिसमें ठीक रास्ता छूटगया कई दिवस के पश्चात् हम एक द्वीप में पहुँचे वहां हमने किसी आवश्यकता पर जहाज़को लंगर किया और पालें उतारडालीं कप्तान चारोंओर उस द्वीपके देखनेलगा और आंसूभर सब जहाज़ियोंसे कहनेलगा इस द्वीपके निकट बनवासियों के द्वीप हैं जिनके शरीर पर लाल बालहैं और वह मनुष्य जहाज़ियों के दुःख देनेवाले हैं यद्यपि वह हमसे छोटे हैं परन्तु हम उनका सामना नहीं करसक्ते क्योंकि वह बहुतसे हैं जो हम उनमेंसे एक को मारडालें तो वह चींटियों की तरह चारों ओरसे इकट्ठे होकर हम सबको मारडालेंगे हम सब जहाज़ी कप्तान के मुखसे इस बात को सुन बहुत डरे और घबड़ाये थोड़ीदेरके पीछे हमने वही देखा जो कप्तान ने कहाथा अर्थात् एक बनवासियों का समूह जिनका शरीर बालोंसे छिपाहुआ था और सवा गज़ लम्बे थे हमारी ओर दौड़े और समुद्र में पैर पैर के जहाज़को चारों ओर से घेरलिया और कुछ हमसे बोले परन्तु हम कुछ न समझतेथे फिर वह जहाज़के किनारे और रस्सियोंपर इस चतुरता से चढ़आये कि उनके पांव रस्सियों पर लगते न देखपड़ते थे उस समय के हमारे

नम्बर १५ मुतअल्लिके सफ़ै ७४ प्र॰ भा॰

चित्र राक्षस और अन्य व्योपारियों के समेत.

दुःख को विचारना चाहिये कि किसीभांतिसे उन बनवासियों से हम अपनी रक्षा न करसके और न उनके हटानेकी हममें शक्ति थी निदान उन्होंने पालों को बांधदिया और लंगर की रस्सी काट जहाज़ को तट पर खैंचलाये और हम सबको जहाज़ से उतारा और उस द्वीप में जहांसे कि वे आये थे घेरके लेगये सब जहाज़ी उस द्वीपसे बहुत डरते हैं उसके निकट न आते परन्तु हम अभाग्यतासे उनके हाथ पकड़ेगये थे हमने उस द्वीपसे फल बहुतसे पाये उन्हीं को हम खाकर जीतेथे और जानतेथे कि हम सब मारेजावेंगे फिर वह बनवासी हमको घेर एक बड़ेभारी घरमें कि जिसका किवाड़ भिड़ाहुआ था लेगये वहां हमने मनुष्यों की अस्थियों का बडाभारी ढेर और कई पड़ेबडे लोहेके सीखचे मांस भूननेके रक्खेहुये देखे ज्योंही हमने वह सीखें देखीं मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिरपड़े बहुत काल पर्यन्त भयसे वहां पडेरहे इतनेमें रात्रि भई और हम रोनेलगे अकस्मात् वह दरवाज़ा खुला जिससे बडा शब्दहुआ हम सब डरगये और उठ बैठे एक क्षणमें भीतरसे एक आदमी काला और विकरालरूप घुड़मुहा ताड़के वृक्षके समान बहुत लम्बा मनुष्य बाहर निकला जिसके ललाट पर केवल एक नेत्र था जो अंगारेके समान लाल दहकता था और आगेके दांत उसके कटीले और मुखसे बाहर निकले थे और नीचे का होंठ उसका छाती तक लटकताथा कर्ण उसके हाथीके कानके बराबर चौडे उसके कन्धोंको ढांकेहुये थे और नाखून उसके ऐसे गोल और टेढ़ेथे जैसे शिकारी पक्षियोंके होते हैं हम सब उस राक्षस को देख फिर मूर्च्छावश हुये और बहुत काल तक मृतकोंके समान पड़ेरहे जब होशमें आये तो उस राक्षस को देखा कि डेवढ़ीमें आकर खड़ाहुआ हमैं विचारताहै फिर अच्छीतरह देख आगे आया और हरएक को हममें से उठा और घुमाके देखनेलगा जैसे क़साई बकरी और भेड़ों का शिर पकड़ उनकी मोटाई को देखता है सबके प्रथम उसने मुझे पकड़के देखा परन्तु मुझमें दुर्बलता से केवल अस्थि और चर्म पाया इस वास्ते मुझे छोड़दिया और इसी भांति प्रत्येकको देखता और टटोलता रहा फिर कप्तान तक पहुंचा वह

औरोंकी अपेक्षा अधिक हृष्टपुष्ट था एक हाथसे पकड़ और दूसरे हाथसे लोहेकी सीख़ उठा उसके शरीरमें ऐसी घुसाई कि दूसरी ओर से निकल आई फिर उसने बहुतसी आग जलाई तो उसे भूनखाया और डेवढ़ी में जाय सोरहा इस ज़ोर से वह ख़र्राटे भरता था कि जैसे बादल गर्जता है भोर तक वह वहीं सोतारहा हम सब रात्रिभर भयसे कम्पितरहे फिर वह दिन चढ़े जगा और वहांसे उठ बाहर गया और हमें वहीं छोड़गया जब हमने जाना कि वह बहुत दूर वहां से निकल गया तो हम फिर उसी भाँति रोदन करने लगे जिससे वह घर हमारे रोने के शब्द से भरगया यद्यपि हम बहुत से मनुष्य थे और वह अकेला राक्षस हमारा बैरी था परन्तु कोई उपाय न सूझता था कि उससे बचें निदान हम सबने अपने को परमेश्वर को सौंपा और उसकी इच्छा पर प्रसन्न रह दिनभर उस द्वीप में चल फिर व्यतीत किया और फल फूल घास पत्ती उस द्वीप से तोड़कर खाई जब रात्रिहुई हमने चाहा कि किसी दूसरे स्थानपर कि जहां सरदी का बचावहो रहें परन्तु उस घर के सिवाय और कोई स्थान न मिला निदान उसी घर में आय बैठरहे रात्रिको वही राक्षस उस घर में आया और हमारे साथियों से एक मनुष्य को जो सबसे मोटा था भूनके खागया और डेवढ़ी में सोरहा दूसरे दिन भोर को जब वह जग कर बाहरगया मेरे साथियों ने चाहा कि समुद्र में डूबमरें कि इसप्रकार की मृत्युसे डूबना उत्तमहै परन्तु एकने उस समूहमें से कहा मुसल्मानों को न चाहिये कि अपने हाथसे अपने को मारें कोई ऐसा उपायकरो जिससे उस राक्षस से बचें उसके कहनेपर वह सब अपनी उस इच्छा से कि समुद्र में डूबमरें हटगये कुछ अपने चित्त में उपाय विचारनेलगे यहांतक कि मैंने अपने चित्त में एक यत्न ठहराके उनसे कहा कि भाइयो तुम देखतेहो कि इस खारी समुद्र के तट पर बहुतसी लकड़ियां और तख़्ते और रस्सियां पड़ी हैं हम सब पांच चार नाव छोटी छोटी बनाकर किसी गुप्तस्थान में रक्खें अवकाश पाकर उनपर चढ़ इस स्थान से किसी दूसरी ओर चलें जो परमेश्वर चाहे तो इस दुःख से छूटें यदि हम समुद्र में डूबजावें तो उत्तम है कि हम इस राक्षस

के भक्ष्य हों निदान मेरे इस उपाय को सबने पसन्द किया और हम सबने मिलकर तुरन्त थोड़ी सी नावें इतनी बड़ी बनाईं कि जिनमें तीन २ मनुष्य सुगमतासे समासकें फिर संध्या को हमसब उस भवन में गये और उस राक्षस ने हम सबमें से और एक को पकड़ पूर्ववत् भोजन किया और सोरहा जब हमने उसके खर्राटों का शब्द सुना तब मनुष्य जो हममें से अत्यन्त प्रवीण और चतुर थे और दशवें मैंने एक एक सीख़ लोहेकी उठाकर अग्निपर रक्खी जब वह सीखें लाल होगईं तो हमने उनको उठाकर एक एककर उस राक्षस की आंख पर रखना आरम्भ किया यहांतक कि उसे अन्धा करडाला वह राक्षस पीड़ा से बहुत चिल्लाया और बड़ा शब्दकर दाहने बायें अपने हाथों को फैलाया कि जो हममेंसे किसीको पावे तो उस क्रोध में उसे कच्चाही खाजावे परन्तु हम सब उससे दूर भागते फिरते थे और ऐसे स्थान पर जाकर ठहरते कि जहां वह न पहुँचसक्ता निदान जब उसने हमको न पाया तब दरवाजे से निकलकर पीड़ा से बैल की भांति चिल्लानेलगा हम सब उसे वहीं छोड़ समुद्र के कूलपर भागआये और उन नावोंपर जिनको हमने पहिलेसे बना रक्खा था चढ़े और चाहते थे कि दिन होतेही वहांसे उन नावोंको समुद्र में लेजाय खेवेंगे भोर होतेही उस राक्षस को दो राक्षस हाथपकड़े समुद्र के तटपर लाये और उन दो राक्षसों के सिवाय और कई राक्षस उसके आगे आगे दौड़े दौड़े चलेआते थे उन्हें देखतेही हम सब उन नावों को समुद्र में डाल बड़े बेग से खेने और डांड़े मारनेलगे वह राक्षस हमको अपनी सामर्थ्यसे बाहर पाकर बड़ी बड़ी शिला नावोंकी ओर फेंकनेलगे यहांतक कि शिला मार २ के सम्पूर्ण नावें डुबोदीं केवल एक नाव जिसपर कि मैं और दो मेरे साथी सवार थे बचरहे हम उसको बड़ेबेगसे खेकर इतनी दूर निकाल लेगये कि जहां उनकी शिला न पहुँचसक्ती थी जब हमारी नाव खुलीहुई समुद्रमें पहुँचगई वायु के बेग और लहरों के कारण ऊपर नीचे होनेलगी इसी दशा में एक रात्रि दिवस रहे निदान दूसरे दिन प्रभात को एक द्वीप में पहुँचे फिर हम तीनों मनुष्य प्रसन्नता से उस द्वीपमें गये और वहां के वृक्ष

फल खाये तो कुछ हममें शक्ति और सामर्थ्य हुई और रात्रिको उस खारी समुद्र के तटपर सोरहे अकस्मात् सर्पकी खरखराहट सुनी जो वह नारियल वृक्षके समान लम्बा था मेरी आंख खुलगई वह आते ही एक को हमारे साथियों में से पकड़ इस तरह खानेलगा कि पहिले उसने उसको तोड़ा और मरोड़ा फिर उसको पृथ्वी पर गिराया फिर तोड़कर खागया मैं यह देख बहुतडरा और दूसरे साथी समेत वहां से भाग बहुतदूर जाकर ठहरा उसपर भी उस मनुष्य की हड्डियों का शब्द जिसको वह समूचा खागया था और फिर उगलता था सुनाई पड़ता था निदान वह रात बड़े भय और दुःख में कटी दिनको मैंने कहा हे परमेश्वर ! कल हम राक्षसके हाथसे छूटे और आज हम इस सर्पके चंगुलमें पड़े इसीभांति उस दिनको बड़ेशोच विचारमें व्यतीत किया और सन्ध्या को थोड़ेसे बनके फल खा एक ऊंचे वृक्षपर जिसको हमने दिनमें देखरक्खा था चढ़गये एक क्षणके पश्चात् हमको उसी सर्पका शब्द उसीवृक्षके नीचे सुनपड़ा फिर देखा कि उसकी जड़ पर पहुँच मेरे साथी को कि वह बहुत ऊंचे न चढ़ सका था पकड़के निगल गया और वहांसे चलदिया मैं उस वृक्ष पर सूर्योदयतक रहा फिर दिनचढ़े वहांसे अधमुवा होके उतरा और मुझे विश्वासहुआ कि आजकीरात अवश्य सर्पका भक्ष्यहूंगा मैंभी उसकी दृष्टिपर चढ़चुकाहूं वह मुझे अवश्य खाजावेगा फिर अपने जीवनसे निराशहो समुद्रकी ओर जानेकी इच्छाकी कि वहां जाकर डूबमरूंगा परन्तु हर दशामें प्राण प्यारे होते हैं न डूबा और अपने को परमेश्वर को सौंप उस सर्प से बचने का उपाय सोच बहुतसी लकड़ियां और कांटे इकट्ठेकिये और बोझबांधरकर उसवृक्षके चारोंओर रक्खे और कुछ टट्टीके समान बनाय उस वृक्षके चारों ओर बांधा कि मैं टट्टियों की आड़में न देखपड़ूं जब रात्रिभई तो मैं उस वृक्षपर जाय छिपरहा और वह सर्प आय चारोंओर उसवृक्षके फिरा परन्तु किसी ओर कांटों के कारण जो मैंने गढ़की छारदीवारी की तरह बनाईथी भीतर आने का मार्ग न पाया रातभर वह मेरी घातमें लगारहा जैसे बिल्ली चूहेकी घात में लगी रहती है निदान दिन होतेही वहां से चलागया और मैं

सम्पूर्ण रात्रिके जागने और सर्पकी गर्म फुंकारोंसे उससमय कुछ सुस्त और मुरझागयाथा इस जीने से मरना अच्छा समझताथा निदान इस जीवनसे तंग होकर समुद्र में डूब मरनेको गया परन्तु परमेश्वर की पूर्ण कृपा से समुद्र तक पहुँचतेही एक जहाज़ दिखाई दिया कि चला आताहै मैंने बड़े शब्दसे पुकारा और अपनी पगड़ीको शिरपर से उतार घुमाया कि मुझे जहाज़के मनुष्य देखें यहांतक कि कप्तानने मुझे देखा और मेरा शब्द सुना नावको भेजा तो मैं उसपर चढ़ जहाज़ पर गया कप्तान और जहाज़ी मुझे देख आश्चर्यित हुये और पूछनेलगे कि क्योंकर इस उजाड़द्वीपमें आया एक बृद्धने जो सबसे बड़ाथा मुझसे पूछा कि लोग कहते हैं इस द्वीपमें मनुष्यभक्षी राक्षस रहते हैं कि वह मनुष्य का मांस कच्चा भूनकर खालेते हैं और उन राक्षसों के विशेष बड़े २ सर्प इसके आगे पीछे हैं कि दिनको कन्दराओंमें छिपे रहकर रात्रिको निकलते हैं और मनुष्यको भोजन करते हैं निदान उन्होंने मेरे उन द्वीपोंमें रहनेसे बड़ा अचम्भा किया और मुझे क्षुधासे अतिपीड़ित और व्याकुल पा भोजन कराया और कप्तानने वस्त्रफटे देख एक जोड़ा अपने पहिनने के कपड़ों का मुझे दिया मैंने कुछ बल पा अपना सम्पूर्ण दुःख और आपत्ति का बृत्तान्त जैसा कि उन राक्षसों और सर्पसे बचाथा बिस्तारपूर्बक प्रकट किया फिर हम वहांसे कई द्वीपोंमें गये निदान सिलहटमें पहुँचे जहां चन्दन उत्पन्न होता है जो बहुतसी ओषधियों में पड़के बहुधा रोग खोता है कप्तानने उस नगरमें जहाज़को लंगर किया और समस्त ब्यापारियों ने अपना २ असबाब बेंचने और बदलने को जहाज़से नीचे उतारा एक दिन कप्तानने मुझसे कहा भाई एक ब्यापारी का असबाब बहुत कालसे मेरे जहाज़ पर लदाहुआहै और बहुत काल ब्यतीत हुआ कि वह मरगया अबतक मैं उसके असबाबको स्थान २ पर बेंचता और बदलता आयाहूं और चाहताहूं कि उसके नगरमें पहुँच असल और नफ़ा उसके स्त्री पुत्रों को दूं अब उस धनकी गठरियां तुझे सौंपताहूं उस ब्यापारी के परिवारसे तेरा मिहनताना दिलादूंगा मैंने उसकी कृतज्ञता कर कहा तुमने मुझपर बड़ी दयाकी कि मेरेवास्ते

एक कार्य नियत किया फिर उसने अपने आज्ञालेखकको आज्ञादी कि वह असबाब इस मनुष्य को सौंपदे उसने कप्तान से पूछा उस व्यापारीका जिसका कि यह माल है क्या नाम था कि उसके नाम से यह माल लिखकर इस मनुष्य को सौंपूं कप्तानने कहा कि यह माल सिन्दबाद जहाजी व्यापारी का है मैं अपना नाम सुनतेही प्रसन्नता से फूला न समाया और कप्तानका मुख देखनेलगा और मैंने उसे पहिचाना कि यह दूसरी यात्रामें मेरा कप्तानथा उसने मुझे उस द्वीप में कुंडपर सोता हुआ छोड़ जहाज़ वहां से खोलदिया था मेरे आने का रास्ता न देखा और उस समयसे मुझे मुवा हुआ समझता है यद्यपि बहुतकाल व्यतीत न हुआथा परन्तु मेरे मुखका रङ्ग बहुतसे दुःख और आपत्तियोंके भोगने से बदलगया था कुछ आश्चर्य नहीं जो उसने मुझे न पहिचाना मैंने कप्तान से कहा क्या यह असबाब उसीका है कि जिसका नाम सिन्दबाद जहाजी था उसने कहा हां उसीकाहै वह बुग़दाद नगरका वासी था और बांसरासे हमारे जहाज़ पर व्यापार का असबाब लेचढ़ाथा एक दिन हमने एक द्वीप के तट पर नवीन और मिष्टजल लेने के निमित्त अपने जहाज़ को लंगर किया वह व्यापारी औरों के साथ उस द्वीपमें गया सब व्यापारी तो जहाज़पर सवार होगये परन्तु न जान पड़ा कि क्या बात हुई कि वह व्यापारी जहाज़पर न पहुँचसका मैं चारघड़ी उसकी राह देखा किया जब वह न आया और पवन अनुकूल चली तो मैं निरुपायहो जहाज़ का लंगर उठा आगे को चला मैंने उस कप्तानसे कहा कि तुम्हें दृढ़ बिश्वासहै कि वह व्यापारी मरगया कप्तानने कहा निस्सं-देह मैं उसे मुवा जानता हूं तब मैंने कप्तान से कहा कि आंखखोल ध्यानधर मेरी ओर तो देखो मैं वही सिन्दबाद जहाजी हूं कि नहीं जो एक जल के कुण्डके तटपर सोगया था मुझे किसी ने न जगाया जब आपही जगा तो देखा कि जहाज़ वहांसे चला गया इस बात को कप्तानने सुन सोच विचार मेरी ओर देखा और मुझे भलीभांति पहिचान परमेश्वर का धन्यवाद किया और मुझे कण्ठसे लगाकर कहा कि भाई तुम अवश्य सिन्दबाद जहाजी हो और यह सब वस्तु

तुम्हारीहै जिसकी रक्षा मैंने आजतककी और प्रत्येक स्थानपर मैंने इसे बेंचा अब मैं तुझे नफ़े समेत सौंपताहूं मैंने वह सब पाया फिर सिलहट द्वीपसे अन्य द्वीपों में गये जहां से हमने लोंग दालचीनी आदि वस्तु मोललीं और वहां से हमने दूरदूर तक यात्रा की एक स्थान पर हमने इतने बड़े कछुवे देखे कि जिनकी लम्बाई चौड़ाई पचास हाथकी थी और अद्भुत २ मत्स्य देखीं कि गोके समान दुग्ध देती हैं कछुओंका चर्म ऐसा कठोरथा कि जिनकी ढाल बनाते हैं और एक मत्स्यको ऊंटके स्वरूप और रंगका देखा फिर हम बांसरामें पहुँचे और वहांसे बुगदादमें आये इस यात्रामें इतना द्रव्य मुझे लाभ हुआ कि जिसकी संख्या नहीं और निज नगरमें जीता जागता और लाभयुक्त पहुँच परमेश्वर का धन्यवाद किया और उसकी धन्यता में बहुतसा धन याचक और मंगनों को दिया और बहुत से सुन्दर मन्दिर और आनन्ददायक वस्तु मोललीं सिन्दबादने अपने तीसरे सफ़रका वृत्तान्त कह हिन्दबादको ४००) रु० दिये और दूसरे दिन अपने नियमानुसार उसे निमंत्रण किया कि चौथे सफ़रका वृत्तान्त सुने सो हिन्दबाद और शेष सभा उस दिन भी सिन्दबादसे विदा हो दूसरे दिन भोजनके समय आये जब खाचुके तो सिन्दबादने अपनी चौथी यात्राका वृत्तान्त इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया॥

सिन्दबाद जहाजी की चतुर्थ यात्रा का वृत्तान्त॥

हे भाइयो! आनन्द और मंगलसे वह तीनों सफ़रके सब भय और आपत्ति विस्मरण होगई और सांसारिक अद्भुत वस्तुओंके देखने और धन इकट्ठा करने की लालसा हुई और चतुर्थ यात्रा की तय्यारीकर उन वस्तुओं को कि जिनकी चाहना दूरदूरके देशों और नगरोंमेंथी इकट्ठा कर पारसकी ओर चला मार्गमें बहुतसे नगर लांघताहुआ एक बंदरमें पहुँचा जहांसे फिर जहाज़पर चढ़ा और वहांसे जहाज़ हमारा तेरा फिर द्वीप आदि पूर्वके बंदरोंकी ओर जा निकला एक दिन अकस्मात् एक झोंका जहाज़ को लगा कप्तानने लाचारहो जहाज़के बदबान नीचे करदिये और खलासियोंसे कहा कि यह तूफ़ानहै चैतन्य रहना कितनाही उन्होंने रक्षा की परन्तु सब व्यर्थहुआ

जहाज़ की पालें तूफ़ानसे फटके टुकड़े २ होगईं और कप्तान की सामर्थ्यसे वह जहाज़ जातारहा यहांतक कि बालूपर चढ़कर भारसे टुकड़े २ होगया जहाज़के मनुष्य समस्त धन और वस्तुसहित समुद्रमें डूबगये परन्तु मैं और कुछ व्यापारी तख़्तेके सहारोंसे बहते २ एक द्वीपमें जो समीपथा जालगे जलसे निकल उस द्वीपमें गये और बनके फलोंके खानेसे हममें कुछ शक्तिहुई रात्रिको फिर वहीं आकर कि जहां लहरोंने हमें डालदियाथा पड़कर सोरहे और अपनी अभाग्यतापर रोये दूसरेदिन भोरको वहांसे उठके उस द्वीपमें गये और इधर उधर अति विस्मितहो फिरने लगे कि अकस्मात् बहुत से हब्शियों ने आकर हम सबको घेरलिया और परस्पर हमें भेड़ों और बकरियों के समान बांधकर अपने घरों में हांक लेगये मुझे और मेरे पांच साथियोंको एक बिलग घरमें रक्खा और हमारे सन्मुख कुछ तरकारी रखकर सैनसे कहते थे कि हम उसे खावें मेरे साथियोंने बिना समझे बूझे उसे भलीभांति खाया उनके खातेही वह नशेमें मतवाले और बेसुधि होगये फिर वे हब्शी नारियलके तैलमें चावल पकाकर हमें खिलाने लगे कि हम मोटे होजावें और हमें मारखावें इसको भी मेरे साथी न समझे और बड़े स्वादुसे पेट भर खातेथे और मैं उसे बहुत थोड़ा खाता कि जिसमें न मरूं और न मोटा होऊं पहिले वह हब्शी उन मनुष्यों को कि जिनको वह पकड़ते ऐसी वस्तु खिलाते कि जिस में वह उन्मत्त और मतवाले होजावें और अपने भलेबुरेका परिज्ञान न रहे और फिर पुष्ट करने को नारियलके तैलमें चावल मिलाकर खिलाते फिर परस्पर जेवनार कर उन्हीं मनुष्यों को खाते सो मेरे साथियोंको कि ऐसे भोजन खाने से हृष्टपुष्ट और उन्मत्त होगये थे सो उन्हें अपने बुरे भले का कुछभी बिचार न रहा और मैं इस बात का फल कि ये हब्शी तैल सहित चावल खिलाते हैं भलीभांति जानताथा कुछ अपनी आपत्तिके शोचसे और कुछ अल्प भोजनसे अत्यन्तक्षीण और सूखगयाथा केवल चर्म और अस्थि शेष रहगई थी इसवास्ते उन्होंने मुझे छोड़दिया कि मैंभी हृष्टहोजाऊं यहांतक कि उसद्वीपमें स्वाधीन फिराकरताथा एकदिन अवकाशपा उसद्वीपसे

चलदिया एक बृद्धने मुझे जातेदेख मुझे बहुत बुलाया परन्तु मैं न गया और अपने प्राणले वहांसे भागा केवल वह बृद्धही वहांपरथा और सब हब्शी बाहर गयेहुयेथे सन्ध्याको वहांआये क्योंकि उनको मेरी ढूंढ़में बड़ी देरहुई जबतक कि वह अपने २ बासेमें आवें तबतक मैं बहुत दूर निकलगयाथा क्षणमात्र मैं खाने व सुस्तानेके निमित्त बैठजाता और फिर भागता इसीप्रकार एक सप्ताह तक भागा जब क्षुधायुक्त होता तो नारियल तोड़कर उसका जल पी जाता उसके पीनेसे मुझे क्षुधा और तृषा न लगती निदान आठवें दिन मैं खारी समुद्रके तटपर पहुँचा वहां मैंने श्वेत वर्णके मनुष्योंको अपने स्वरूपके समान देखा कि काली मिरचें जो वहां बहुतसी उगती हैं चुन रहेहैं उनको देख मैं हर्षित हुआ व अतिप्रसन्नता से मैं उनकी ओर वेडर चलागया वहभी मेरे निकट पहुँचे और अरबी भाषामें मुझसे पूछा कि तू कहांसे आताहै मैं अपने देशकी भाषा सुनकर अधिक हर्षित हुआ फिर उनसे अपना बृत्तान्त जहाज़ टूटने और हब्शियों के द्वीपमें पकड़े जाने का प्रकट किया उन्होंने कहा यह तो मनुष्यभक्षी हैं तू किस भांति बचा मैंने उनसे अपने भागने और भूखे रहने का हाल जैसा कि तुमने सुनाहै कह सुनाया उन्होंने मेरे जीता बच आनेसे अत्यन्त आश्चर्य किया और जबतक कि वह उस द्वीप से मिरच चुनाकिये तबतक मैं उनके साथरहा फिर वह सब मुझे अपने साथ लेकर जहाज़ पर सवार हुये और तुरन्त वह जहाज़ उस द्वीप में जहां से वह आये थे पहुँचा वह मनुष्य मुझे वहां के बादशाह के सन्मुख कि वह प्रसन्नचित्त और दयावान् था लेगये उसने मेरे दुःखोंका बृत्तान्त सुन अत्यन्त अचम्भा किया और मुझे उत्तम २ वस्त्र दिये और मेरी ख़बर लेतारहा वह द्वीप बहुत बड़ा और बसा हुआ था उसमें बहुतसी वस्तु ब्यापार के योग्य उत्पन्न होती थीं वहां से व्यापारी उन वस्तुओं को व्यापार के निमित्त लेजाते और अन्य अन्य देशों में बेंचते और बदलने को लाते मैं व्यापारियों के गतागत से बहुत प्रसन्न हुआ और अपने देशमें पहुँचने की फिर मुझे आशा हुई वहा के बादशाह ने धीरे २ मुझे अपना सभासद्

नियत किया और मुझे बहुत आनन्द और कृपापूर्वक रखता था यहां तक कि मैं उनमें ऐसा मिलगया कि वह मुझे अपने देश ही का समझनेलगे मैं वहांके बादशाह और प्रजाको घोड़ेपर लगाम और ज़ीन बिना सवार होते देख अत्यन्त आश्चर्यित हुआ एकदिन मैंने बादशाहसे पूछा कि यहांके मनुष्य घोड़ेपर ज़ीनलगाम बांधकर सवार क्यों नहीं होते उसने उत्तरदिया कि उन वस्तुओं को हम नहीं जानते और न जानते हैं कि ज़ीन लगाम कैसी होतीहै फिर मैंने एक कारीगर को काष्ठ का नमूना दिखा कहा कि तू इसीभांति की काठी बनादे सो वह मेरी आज्ञानुसार बनालाया फिर मैंने उसे चर्मसे मढ़कर उस पर बहुमूल्य कमख़ाब और अतलस लगाया फिर लोहार से रिकाबें बनाने को कहा जब वह सब मेरी इच्छानुसार बनचुका तो उसे एक अश्व पर लगाकर बादशाहके सन्मुख लेगया वह उसपर सवार होकर अत्यन्त प्रसन्न और मग्नहुआ और मुझे उस सेवाके बदले पारितोषिक और उत्तम २ वस्तु और असंख्य द्रव्य दिया और प्रथमसे भी अधिक मुझसे प्रीति करनेलगा फिर मैंने बहुतसे ज़ीन और लगामें उसके परिवार और मंत्रियों और सभासदों को बनवादीं उन्होंने लेकर उसके बदले हज़ारों रुपये और बहुमूल्य वस्तु देकर मेरी कृतज्ञताकी और उस नगर के मनुष्य भी मेरी बड़ी प्रतिष्ठा करनेलगे एक दिन बादशाहने मुझसे एकान्त में कहा मैं तुझसे बड़ी प्रीति और मित्रता रखताहूं और मेरी प्रजा और सभा तेरी बुद्धिसे अत्यन्त प्रसन्नहै और सबको तुझसे प्रीतिहै एकबात तुझसे चाहताहूं उससे तू इन्कार न कीजियो मैंने बिनयकी जो कुछ आप मेरे वास्ते बिचारें वह अत्यन्त लाभकारी और उत्तमहै मैं क्यों आपकी आज्ञा भंग करूं बादशाहने कहा मैं चाहताहूं कि तेरा बिवाहकरूं कि जिससे तू आनन्दमें रहे और इस नगरसे जानेकी इच्छा न करे मैंने अतिहर्षसे बादशाहके कहनेको स्वीकार किया उसने अपने घरानेकी एक स्त्री के साथ जो अति सुन्दरी और रूपवती और कोमलांगी थी बिवाह करदिया मैं उस बिवाहकी रीतोंके पश्चात् उस सुन्दरी से आनन्द भोगनेलगा बग़दाद नगरमें भी स्त्री और पुत्र रखताथा इसहेतु वहां

जानेकी भी इच्छा बनीथी उस सुन्दरीके प्यार और प्रीतिमें ऐसा आसक्तरहा कि अपने पहले के परिवारको भूलगया थोड़े दिनों के पश्चात् मेरे पड़ोसीकी स्त्री कि उसके साथ मुझे बड़ी प्रीतिथी बीमार होगई कई दिनोंके उपरान्त वह कालवश हुई मैं मातमपुरसीको उस मित्रके निकटगया उसे अत्यन्त शोकयुक्तपा अपने देशरीतिके अनुसार उसे धैर्य और भरोसा देनेलगा कि परमेश्वर तुम्हें जीता रक्खे तुम बहुत वर्ष पर्यंत जीतेरहो उसने उत्तर दिया कि जो तुम मुझे आशीर्वाद देतेहो वह मेरी दशाके विपरीत है कि मैं केवल एक घड़ी वा आधी घड़ीका अतिथिहूं मैंने उत्तरदिया क्या कहतेहो ऐसा अशकुन शब्द अपने मुखसे न निकालो परमेश्वर तुमको चिरञ्जीव रक्खे मैं तुम्हारी मित्रतासे सदा लाभयुक्त रहाहूं उसने कहा कि मेरी आयु पूरीहोचुकी अब तुम्हें परमेश्वर जीता रक्खे आज मैं अपनी स्त्रीके साथ जीता गाड़ाजाऊंगा हमारे बड़ोंने ऐसी रीति उस द्वीपमें नियत की है यदि स्त्री मरे तो उसके साथ उसके पतिकोभी जीतागाड़दो तथा पहिले पति मरे तो उसके साथ उसकी स्त्री को गाड़ो अब मुझे कोई बचा नहीं सक्ता यहांके वासी इसरीति पर दृढ़ और प्रसन्न हैं कोई इसरीतिके विपरीत नहीं करसक्ता इस अनुचित रीतिको सुन मेरी सुधि जातीरही और नानाप्रकारके शोच विचारमें पड़ा अभी मैं उस स्थानसे हिला न था उस पड़ोसीके सम्पूर्ण मित्र और नातेदार और पड़ोसी कफ़न डालनेको आये उन्होंने उस लोथको बहुत उत्तम वस्त्र और आभूषणादि पहिराये जैसे कि दुलहिनको सजाते हैं और उसे खुलीहुई अर्थीपर रक्खा और आगे उसके आपभी चले और उसके पीछे उसका पतिभी शोकके वस्त्र पहिनचला उसके पीछे सब मनुष्य चले एक बड़े पहाड़की राहली उस पर्वतके निकट पहुँचकर उन्होंने एक कन्दरासे एक शिला उठाई और उस लोथको उस वस्तु सहित उसमें डालदिया फिर वह पतिभी सबसे विदा होकर एक घड़ा पानी का और सात रोटियां लेकर अर्थीपर बैठा और उसेभी उसकी स्त्रीके समान उसीखोहमें अर्थी समेत डालदिया वह पहाड़ बहुत चौड़ाथा और दूसरी ओर खारी समुद्रसे मिलाहुआथा और वह खोह बहुत

गहरी और लम्बीथी निदान जब रोपीट और कफ़ना चुके तब उस पत्थरको फिर उस खोहके मुखपर रख सब मनुष्य वहांसे चलेआये हे मित्रो ! मैं इस बुरीरीतिको देख बहुत घबराया और डरा परन्तु वहां के वासी इसरीतिको बहुत अच्छी जानतेथे एकदिन मैंने वहांके बादशाहसे कहाकि हे स्वामी ! मैंने वहांकी इस रीतिसे बड़ा अचम्भाकिया और घबड़ाया कि जीते आदमी को मुरदेके साथ गाड़ते हैं मैं बहुत से देशों फिरा परन्तु किसीदेशमें ऐसी अन्यायकी रीति न देखी और न सुनी बादशाहने उत्तर दिया कि हे सिन्दबाद ! यहांकी यही संप्रदायहै हम किसीभांति इसे बरज नहींसके मैं भी स्वतः इसी रीतिपर स्थिरहूं परमेश्वर न चाहे जो यहांकी शाहज़ादी मरजावे तो मैं भी जीताही उसके साथ गाड़ाजाऊंगा मैंने कहा हे स्वामी ! क्या यह आज्ञा परदेशियों परभी प्रचलितहै बादशाहने मुसकरायकहा निस्संदेह उनपरभी है वह मनुष्य इसरीतिसे पृथक् नहीं होसके इस बचन को मैं सुन अत्यन्त घबड़ाया तबसे इसी भय और शोचमें रहताथा कि ऐसा न हो कि मेरी स्त्री भी मरजावे तो उसके साथ मैंभी जीताही गाड़ाजाऊं निदान धैर्यधर अपनेको परमेश्वरको सौंपा अकस्मात् थोड़ेदिनोंके पश्चात् मेरीस्त्री बहुत बीमारहुई और कुछकालमें यमलोकको पधारी उससमय जो मुझपर शोकहुआ सो कहनेसे बाहरहै अपनेमन में कहताथा इस जीतेजी गाड़ेजाने से उत्तमथा कि मुझे हब्शीलोग खाजाते इतनेमें बादशाह अपने भृत्यों और जलूससहित मेरे घरपर आया और नगरके प्रतिष्ठित मनुष्य भी इकट्ठेहुये और मेरी स्त्रीको वस्त्र आभूषण पहनाकर अर्थीपर रक्खा और गाड़नेचले और उस लोथके पीछे मैंभी वहांकी रीतिके अनुसार रोताहुआ चला जब उस पहाड़पर जहां कि लाशें गाड़ीजातीथीं पहुँचे और अपने छूटनेके लिये विनयपूर्वक बादशाहसे कहा कि हे स्वामी ! मैं परदेशी अन्य देशका रहनेवालाहूं मुझपर दया करो मैं इस कठिन दण्डके योग्य नहीं इसके विशेष मैं अपने नगरमें स्त्री पुत्र रखताहूं हे मित्रो ! उसने कुछभी मुझपर दया न की और तुरन्त उस लोथको उस कन्दरामें डालदिया और मुझेभी दूसरी अर्थीपर रख एक जलका घड़ा

और सात रोटियों सहित उस खोहमें उतारदिया फिर शिला खोहके मुखपर रक्खी मैंने प्रकाशमें कि इस कन्दराके ऊपरसे उसमें पहुँचता था देखा कि गहराव उसका अनुमान पचास हाथके था उस खोहमें जातेही मृतकोंकी गन्ध और सड़ाहट इतनी मेरे ब्रह्माण्डमें पहुँची कि मैं व्याकुलहो वहां न ठहरसका अपनी अर्थीसे उठ और नाक बन्द-कर वहांसे दूरभागा और पृथ्वीपर गिर बहुत देरतक अपनी अभाग्यतापर पश्चात्ताप करता और रोतारहा और मैंने कहा परमेश्वर मनुष्य के निमित्त जो करताहै उत्तम जानके करताहै मेरेवास्ते यही अच्छा हुआ और अपने को बहुत धिक्कार देताथा कि तुझे तीन सफरके दुःख और आपत्ति उठाने परभी बोध न हुआ तुझे चाहिये था कि अपने पहिले धनको जो परमेश्वर ने तुझे दियाथा भोगकर अपने स्त्रीपुत्रोंमें रहता और फिर सफरका नामभी न लेता इसदशामें कभीतो उठके रोता और कभी अपना मुँह और शिर पीटता फिर जब मुझे क्षुधा लगी तब मैं नाक और स्वर बन्दकर अपनी अर्थी परसे जलका घडा और रोटियां उठालाया और कई दिवसतक उसे खाया जब वह रोटियां और पानी होचुका तब मरनेपर तय्यारहुआ इतनेमें मैंने पत्थर उठानेका शब्द सुना उन्होंने एक मृतक पुरुषको एक मरी हुई स्त्रीसहित डालदिया और वही पत्थर फिर उस खोहके मुखपर रख दिया मैंने आकर एक मृतकके पांवकी हड्डी उठाके इसबेगसे उसस्त्री के शिरपर मारी कि वह चकराकर गिरपड़ी केवल उसकी रोटियां और जल लेनेको यहकिया फिर कईदिनतक मैंने उन रोटियोंको खाया जब वहभी होचुकीं परमेश्वरकी मायासे कोई मनुष्य एक मृतक स्त्रीको अपने जीते पति सहित फिर उस खोहमें डालगया उस पुरुषको भी मैंने उसी भांतिकर उनका भोजन और जल उठालिया फिरतो मेरी भाग्यसे उस नगरमें ऐसी मरीपड़ी कि प्रतिदिवस लोथें और उनके साथ जीतेमनुष्य उस खोहमें डालेजाते और मैं उन जीतोंको मार उन की रोटियां और जललेता अकस्मात् एकशब्द कि जैसे कोई श्वास लेताहै सुना मैं उसीओर अँधियारेमें कि दिन और रात्रि समान जान पड़ताथा चला और वह वस्तु दम लेतीहुई और धबधब करतीहुई

एकओर को दौड़ी उसके शब्दपर मैंभी दौड़ता चलागया यहांतक कि मैंने थोड़ासा प्रकाश तारेकासा चमकताहुआ देखा कि कभीतो वह मेरी दृष्टिसे गुप्त होजाताहै और कदापि दीखताहै निदान मैंने उस खोहकी दूसरीओरसे एक छिद्र इतना पाया कि जिसमें सुगम[illegible]ासे बाहर निकलगया और अपनेको समुद्रके तटपरदेखा [illegible]ससमय अत्यन्त हर्ष प्राप्तहुआ जब मैं अच्छेप्रकार होशमें आया तो मैंने बिचारा वह बस्तु जो खोहमें सांसलेतीथी और उसके पीछे लगाहुआ मैं यहां[illegible]क पहुँचा कोई जलजन्तु अवश्य होगा कि उस छिद्रसे होकर मृतकोंके खानेको उस कन्दरामें जायाकरताहै फिर मैंने अच्छे प्रकार देखा तो उस पहाड़[illegible]ो नगर और एक समुद्रके बीचमें पाया परन्तु वह छिद्र किसीको बिदित न था क्योंकि उस पहाड़[illegible]ा किनारा इतना ऊंचाथा कि कोईभी उसपर चढ़ नहीं सक्ता था निदान उसकन्दरासे निकलकर उस समुद्रके तट पर पहुँच परमेश्वरकी बन्दना की कि उसने मुझपर कृपा और अनुग्रह किया फिर मैं उ[illegible] खोहके भीतर जिसमें मुझे दुःख और निराशामें भू[illegible]व न लगतीथी और थोड़ासा कि जिसमें [illegible] मरूं खा लिया करताथा गया हीरे आदि रत्न और वह बस्तु जो उस अँधियारेमें मुझे हाथलगी उठाकर समुद्रके कूलपर लाया और उनको गठरियोंमें रख रस्सियों और मुर्दोंकी अर्थियोंसे जिनको उस खोह में उतारते थे अच्छी तरह बांधा और उस समुद्र के तटपर निर्भय रहने लगा क्योंकि वह बर्षा ऋतुथी तीनदिनके पीछे ईश्वरकी पूर्ण कृपा और अनुकंपासे एक जहाज़ देखा कि उस समुद्रमें पाससे होकरजाताहै मैंने अपनी पगड़ीको घुमाया और बड़े बेगसे पुकारा कप्तानने मेरा शब्द सुन नावको मेरे लेनेको भेजा खलासी मुझे अपनी नावपर चढ़ाके लेगये और कहा तेरी क्या शामत आईथी कि तू इस स्थान पर आया मैंने उनको उत्तर दिया कि दो दिवस व्यतीतहुये कि मैं जिस जहाज़ पर चढ़ा था वह यहां पहुँच डूबगया केवल मैंही बचरहा वह मेरी [illegible]ातको सत्य जान मुझे मेरी गठरियों सहित जहाज़ पर लेग[illegible]ये जब मैं जहाज़में पहुँचा तो कप्तान से भी वही कहा और कुछ बहुमूल्य रत्न देनेलगा परन्तु उसने न लिये [illegible]िर

हम उस द्वीपसे आगे चलके और कई द्वीपोंमें गये यहांतक कि नील
द्वीपमें जो सरन्द्वीपसे दशदिनकी राहपर है पहुँचे और वहांसे कली
द्वीपमें जाकर जहाज़ से उतरे जिसमें शीशेकी खानिहै उसमें कपूर
और हिन्दुस्तानकी बहुतसी वस्तु ईख आदि उत्पन्न होती हैं कली
द्वीपका अधिपति बड़ा बादशाह था जिसका अधिकार नील द्वीपप-
र्यन्तथा उस द्वीपका चौड़ान अनुमान दोदिनकी यात्राकेथा और वहां
के वासी सुन्दर मनुष्यका मांस खातेथे उस द्वीपमें अपनी वस्तुओं
को बेंच और वहांकी चीज़ें मोलले चले और कई द्वीपों और बन्दरों
में होतेहुये कुशलपूर्वक बुग़दादमें पहुँचे इतना धन और रत्न मुझे
लाभहुआ जिसका वर्णन नहीं करसक्ता फिर मैंने परमेश्वरका धन्य-
वादकर कि ऐसे मारक स्थानोंसे बचाथा बहुतसा द्रव्य और अशरफ़ी
याचकोंको दिया और कई यतीमखाने और मस्जिदें अभ्यागतों के
निमित्त बनवाईं और अपने स्त्री पुत्रों और मित्रों में आनन्द पूर्वक र-
हनेलगा दिनरात नृत्य गीत और आनन्द मङ्गलमें व्यतीत होताथा
फिर सिन्दबादने अपना इतना वृत्तान्त कह४००)रु० हिन्दबादको दे
बिदाकिया और हिन्दबाद इस सफ़रका हाल सुन और सफ़रोंकी अ-
पेक्षा अधिक आश्चर्यमें हुआ और उसके सभासद भी अचम्भित हुये
फिर वह सबभी उस दिन बिदाहो दूसरे दिवस सिन्दबादके घरमें आये
उसकेसाथ भोजनकिया फिर पांचवें सफ़रका वृत्तान्त सुननेलगे ॥

सिन्दबाद जहाज़ी की पंचम यात्रा का वृत्तान्त ॥

सिन्दबादने कहा कि उस आनन्द और मंगलमें अपनी सम्पूर्ण
आपत्ति और दुःख विस्मरण होगये कुछदिन पीछे फिर मैंने सफ़रकी
तय्यारीकी और व्यापारकी वस्तुले गाड़ियोंपर लाद उस बन्दरकी
ओर जो मेरे नगरके समीपथा चला परन्तु कोई कप्तान मेरी इच्छा-
नुसार न मिला इस निमित्त मैंने एक जहाज़ बनवाया जब वह बन
चुका मैं अपनी वस्तुको उसपर लाद सवारहुआ यदि मेरा असबाब
इतना न था कि जहाज़को पूराहोता सो मैंने और व्यापारियोंको कि
सब सजाति और मिलनसार थे उनको असबाब समेत चढ़ालिया
और वहांसे चला वायुके अनुकूल होनेसे हम तुरन्त खाड़ीसे निकल

कर खारी समुद्रमें पहुँचे कितने एक दिनोंमें हमारा जहाज़ पहिले पहिल एक उजाड़द्वीप में पहुँचा सम्पूर्ण व्यापारी उस टापू पर गये और वहां हमने रुखपक्षीका अंडा कि जिसका पहिले बर्णन करचुका हूं देखा उस अंडेसे बच्चा निकलनेकोथा सो चोंचकीओर अंडेसे खटक के कुछ निकलताथा उन व्यापारियोंने जो मेरे साथ थे उस अंडे को कुल्हाड़ियोंसे तोड़ा मैंने उनको कितनाही बरजा कि तुम इस अंडेको न छुओ परन्तु उन्होंने मेरा कहना न माना रुखके बच्चेको काटभूनकर खागये उनके खातेही दोबड़े टुकड़े बादलके समान वायु में हमको दूरसे दिखाई दिये कप्तान जिसे मैंने अपने जहाज़पर नियतकिया था इस दशाको देख घबड़ाया और हम सबको पुकारके कहा तुरन्त जहाज़पर चढ़ो उस बच्चेके माता पिता जिसे तुमने खायाहै आपहुँचे हमने तुरन्त सवारहो जहाज़को वहांसे खोलदिया वह जोड़ा ऐसा शब्द और चिल्लातेहुये आया कि जिससे हम भयभीत हुये फि वे अपने अंडेको टूटादेख और बच्चेको उसमें न पाय अत्यन्त क्रोधित हुये और उड़के जिधरसे आयेथे चलेगये थोड़ीदेर तक वह गुप्तरहे इस समयान्तरमें हमने जहाज़को वहांसे खोल सब पालें उसकी खोल दीं कि बहुतदूर निकलजावें और रुखके दु ख के देनेसे बचें प न्तु उन्होंने हमें पकड़लिया बड़ेबड़े पहाड़के टुकड़े अपने पंजोंमें पकड़ वायुमें थर्रानेलगे सो एकने पत्थर हमारे जहाज़के ओर फेंका कप्तान ने जहाज़को ठहराया फिर वह पत्थर उस समुद्रमें इसबेगसे गिरा कि सम्पूर्ण समुद्रका जल ऊपर नीचे होगया और उसके नीचे की पृथ्वी दिखाई देनेलगी परन्तु दूसरेने ऐसा ताकके पत्थर मारा कि जहाज़पर लगा उस पत्थरके गिरतेही जहाज़ टुकड़े टुकड़े होगया स-म्पूर्ण व्यापारी और वस्तु और सेवकसमु में डूबगये परन्तु मैं थोड़ी देरतक समुद्रके भीतररहा फिर जलपर उरा संयोगबश एक तख़्ता जो बहाजाताथा मैंने पकड़लिया और एकहाथसे पैरनेलगा जब वह हाथ थकजाता तो मैं दूसरे हाथसे पैरता यहांतक कि बहुतथका और धारामें बहता वहता तटपर जालगा यद्यपि वह किनारा बहुत ऊंचा और फिसलताथा परन्तु मैं बड़ी कठिनतासे उसपर चढ़ धरतीपर

पहुँचा और घासपर सुस्तानेको बैठगया जब मुझे कुछसामर्थ्य और शक्तिहुई तो उठकर उसद्वीपमें फि नेलगा वहां स्थानस्थानपर बहुत से बागथे जिनमें बहुतसे फलदार वृक्ष लगेहुयेथे कु ग्ल तो हरे और कच्चेथे और कुछ पक्के और रंगीन और स्थान स्थानपर अतिनिर्मल और मिष्टजलके कुण्डथे जिनसे उन वृक्षोंकी जड़ोंमें जल पहुँचताथा मैंने उत्तमउत्तम और प फल खाये और कुण्ड से जल पिया यहांतक कि रात्रिहुई मैं एकस्थानपर सोग्या परन्तु भयसे रात भर निद्रा न आई बहुतकाल पर्यन्त अपने दुःख और आपत्ति को स्मरणकर रुदन करता ा और अपनेको धिक्कार देता कि क्यों अपने घरसे निकल फिर प देशकिया परमेश्वरने तुझे बहुतकुछ दिया था जिससे सम्पूर्ण आयु आनन्द और मंगलमें व्यतीत होती कभी उस उजाड़ टापूमें अपने छु कारेका उपाय सोचता इतनेमें भोरहुआ और दिननिकल आया तब मैं उन उपायोंको वहीं छोड़ उठखड़ा हुआ और उन सफल वृक्षोंकी सैर करनेलगा थोड़ीदूर गयाथा कि एक वृद्धको जिसके नीचे का धड़ झोला मारेहुये था देखा कि एक छोटेसे कुण्डके तटपर बैठाहुआहै पहिले मैंने बिचारा कि इसकाभी मेरे समान जहाज़ डूबगया होगा उसके समीपजाय मैंने उसको प्रणाम किया उसने उत्तर न दिया केवल शिरहिलाया फिर मैंने उस से पूछा कि तुम यहां बैठे क्याकरते हो उसने सैन से बताया मुझे अपने कन्धे पर चढ़ा इसकुण्ड से उसपार उतारदे मैंने जाना कि यह चाहता है कि मुझपर सवार हो फल तोड़े या उसको यह स्वीकार है कि मैं उसे अपने कांधेपर चढ़ा र उसपार उतारूं निदान मैंने कुछ ऐसा सोच उसे अपनी गर्दन पर चढ़ालिया और कुंडके दूसरी ओर ले ायठहरा और उसे अपने ऊपरसे उतारना चाहा जब मुझे यह बात स्मरण आतीहै तोमैं बहुत हँसताहूँ क्योंकि उस वृद्धने जिसे मैं शिथिल समझताथा बड़ी चतुरतासे अपने पांवको मेरी गर्दनपर रख इसबेगसे मेरा गलाघूंटा निकटथा कि प्राणनिकल जावे और पाँव उसका चर्मकी तरह लटकता था निदान इस दुःख से बेसुधहो गिरपड़ा तब उसने अपने पांवोंको कुछ ढीलाकिया जिस

से मुझमें श्वास आनेलगी और मैं सुधिमें आया फिर उसने एकचरण अपना मेरे पेटमें गड़ोकर दूसरे से मुझे लातमारी और मुझे बलसे उठाया और बृक्षोंके नीचे मुझे लिये फिरनेलगा और सैन करताथा कि मैं उन फलोंको इकट्ठाकरूं और खाऊं निदान वह समस्त दिवस मुझपर चढ़ा रहा जब रात्रिहुई मैंने चाहा कि सोऊं वह पृथ्वीपर अपनेको रख अपने चरणोंको मेरी गर्दनसे न्यारा न करताथा रातभर इसीप्रकारसे रक्खा जब भोरहुआ मुझे जगाकर फिर मुझपर चढ़ा और प्रत्येकसमय मुझे शेड़ेमार उसद्वीपमें लिये फिरताथा हे मित्रो! मेरे इस दुःखको बिचारना चाहिये कि उस बृद्धसे मुझे एकक्षण भी छुट्टी न मिलती थी अकस्मात् एकदिन मैंने बहुतसे सूखेकद्दू भीतर से खाली धरती पर पड़ेहुये देखे मैंने एकको कि बहुत अच्छा और बड़ाथा उठालिया और भीतरसे अच्छेप्रकार साफ़कर कई अंगूरके गुच्छे उसमें निचोड़े जब वह भरगया मैंने उसे एक स्थानपर रखदिया कई दिनके पश्चात् जब मैं उस बृद्धसहित उस स्थानपर गया उसे पिया तो बहुत उत्तम मदिरा बनीहुईथी उसको प्रतिदिन थोड़ीसी पीता और उसके नशेमें उस मेहनत और श्रमको जो बुड्ढा मुझसे लिया करता था भूलजाता और मनभी प्रसन्न रहता और कभी २ आनन्दित हो गाता और नाचता जब उस बृद्धने देखा कि उसके पीनेसे मुझे प्रसन्नता और हर्ष प्राप्त होताहै तो सैनसे उस मदिराको मुझसे मांगा कि मैं उसे पिलाऊं सो मैंने वह कद्दू उसे दिया उसने पहिले थोड़ी पी फिर जब उसे कुछ प्रसन्नता प्राप्तहुई तब उस कद्दू को अपने मुखसे लगा सब पीगया इतनी मदिरा उसके बेसुध होने को बहुतथी फिर तो वह उन्मत्त हो गाने और मेरी गर्दनपर डगमगाने और झूमनेलगा यहांतक कि मतवाला होगया और गर्दन उसकी झुकगई और पॉवभी ढीले पड़गये और बेसुध होगया तब मैंने अपनीगर्दनसे उसे पृथ्वी पर पटकदिया और एक बड़ापत्थर उठा इस बेग से मारा कि वह मरगया मैं उससे छूटकर अतिहर्ष पूर्वक समुद्र के किनारेगया अकस्मात् कुछ मनुष्य मिष्टजलके लेने के वास्ते अपने जहाज़से उतरेथे और जहाज़ को समुद्र के तट पर

लंगर कियाथा उन्होंने मुझेदेख और मेरावृत्तान्त सुन अचम्भाकिया और कहा क्या तू उस वृद्धके हाथमें पड़ाथा उसने बहुतसे मनुष्यों का गला घूंटकर मारडालाहै कोई उसके हाथसे नहींबचा तू बड़ा प्रारब्धी है और यह टापू प्रसिद्धहै कोई इसमें नहींजाता फिर उन्होंने मुझे अपने जहाज़में चढ़ालिया उस जहाज़के कप्तानने भी मुझपर बड़ीदया की इस समयान्तरमें एक व्यापारीसे अत्यन्त मित्रता और प्रीतिहोगई वह मुझे अपने साथ लेकर एक टापूमें उतरा फिर उसने मुझे एक टोकरा देकर एक समूह के साथ करदिया और कहा चैतन्य रह इन मनुष्यों से अलग न होना नहीं तो जीता न बचेगा और जो कुछ कि यह सब लोगकरें तुमभी करना और सब आदमियोंने एक २ टोकरा उठालिया वहमुझे अपने साथ लेकर नारियल लाने को वनमें गये वहां बहुतसे वृक्ष नारियलके इतने लम्बे और चिकने थे कि चढ़ना उनपर कठिन था हम सब चाहते थे कि नारियल टोकरोंमें भरें इतने में अनेक वानर देखे वह सब हमारे डर से वृक्षोंपर बड़ी फुरतीसे चढ़गये फिर मेरे साथी शिला इकट्ठीकर बड़े वेगसे वानरों को मारनेलगे मैं भी उनके समान उन वृक्षोंपर पत्थर फेंकनेलगा यहांतक कि वह सब बन्दर क्रोधितहो नारियल तोड़ २ कर हमको मार लगे थोड़ी देरमें वह स्थान नारियल से भरगया हमने उनको टोकरोंमें भरलिया और मैंने जो देखा तो बनमें बन्दरों के बहुत होनेसे इससे कोई उत्तम उपाय न था जो वह व्यापारी करतेथे फिर मैं उन सबके साथ नगरमें आया उस व्यापारीके निकट जिसने मुझे वनमें भेजाथा गया और सब नारियल उसे दिये उसने उनका मोलदे कहा तुम प्रतिदिन नारियल लायाकरो और उसके मोल को इकट्ठा करतेरहो कुछ कालमें तुम्हें इतना धन प्राप्तहोगा कि निज नगर को पहुँचजाओगे मैंने उसकी आज्ञा की कुछ दिनों में नारियल बेंचकर बहुतसा धन इकट्ठा किया और जहाज़ जिसपर मैं और दूसरे इस नगरके व्यापारी नारियल मोललेनेके वास्ते आये थे खुलगया इसवास्ते मैं दूसरे जहाज़ की बाट देखता था इतने में और जहाज़ वहांपर पहुँचा मैंने किराया कर अपने नारियलों को

कि वहांपर नहीं बेंचे थे उसपर लादे मैं उसी ब्यापारी से कि मेरा उपकारी था बिदाहो सवारहुआ वहांसे हम उस टापूमें आये जहां कालीमिर्च उगती है फिर वहां से कमरीटापू में गये जहां आबनूस और चन्दन उगता है वहांके मनुष्य मदिरा पीना अशुद्ध समझते थे और सम्पूर्ण कुकर्मसे अलग रहते उन दोनों द्वीपोंमें मैंने अपने नारियलोंसे कालीमिर्च और चन्दन बदला और वहांपर अन्य ब्यापारियोंके सम्मत से समुद्र से मोती निकलवानेमें तत्परहुआ और बहुतसे गोतेखोरों को नियतकर मोती निकलवाये ईश्वर की पूर्णकृपा और मेरे भाग्यसे अन्य ब्यापारियों की अपेक्षा मेरी पारी में बहुत बड़े और गोल मोती निकले फिर वहांसे बांसराबन्दरको और वहां से बुग़दादमें आया वहां मैंने कालीमिर्च और चन्दन और मोतियों को बड़ा महँगा बेंचा और बहुतसा लाभहुआ और उसका दशांश दान दिया फिर नानाप्रकारके आनन्द भोगनेलगा सिन्दबादने इस कथाको पूराकर ४००) रुपये हिन्दबाद को देकर उसे और सम्पूर्ण सभा को बिदाकिया दूसरे दिन सब सिन्दबाद के घर आये और भोजनकर छठीं यात्रा का बृत्तान्त सुननेलगे ॥

सिन्दबाद जहाज़ी की छठीं यात्रा का बृत्तान्त ॥

सिन्दबादने अपनी सभा और हिन्दबादसे कहा कि तुम बिचारो कि कितना धन परमेश्वरने मुझे दिया और कैसी आपत्तियां निवारण कीं कईबेर अगले सफ़रोंमें मैं मरनेको पहुँचा परन्तु अपनी भाग्य से रक्षापूर्वकरहा जब मुझे वह दशा स्मरण होतीहै बहुत अचम्भाकर परमेश्वर का धन्यबाद करताहूं एक बर्ष के पश्चात् फिर मैंने परदेशगमन की इच्छाकी यद्यपि नातेदार और मित्र मेरे बाधक थे परन्तु मैंने उनका कहना न माना और खुश्की सफ़र किया फिरमैं कई पारस के नगरोंमें गया और वहां से एक बन्दरमें पहुँचकर एक अच्छे जहाज़पर सवारहुआ जिसके कप्तान की इच्छा बहुतदूर जानेकी थी जब बहुत दूरतक गये अकस्मात् कप्तान राह भूलगया वह नहीं जानताथा कि जहाज़ किसओर को जाताहै एकदिन कप्तान एकही बेर अपनी पुस्तक फेंककर रोनेलगा और पगड़ी शिरसे उतार पटकदी

और कभी दाढ़ी नोचता और शिर पीटता हम सबने भयमानहो उस से पूछा कि तेरे रोनेका क्या कारणहै उसने कहा क्याकहतेहो हमबड़ी आपत्तिमें पड़े क्योंकि नदकी धारा हमको बेबश खींचे लिये जातीहै पावघड़ीके समयान्तरमें हम सब मर जावैंगे फिर उसने आज्ञादी कि जहाज़की पालें उतार दीजावें उनके उतारने २ तूफ़ानके बेगसे जहाज़की रस्सियां टूटगईं और जहाज़ने पहाड़से लग ऐसी ठोकरखाई कि शीशेके समान चकनाचूर होगया हमने केवल इतना अवकाश पाया कि खानेकी वस्तुको धरतीपर उतारा और असबाब वहीं छोड़ा कप्तानने कहा जो होनाथा सो हुआ अब एक दूसरेसे बिदाहो अपनी २ क़बरें खोदो और मरनेपर तत्परहो क्योंकि कोई इस मारक स्थानसे जीता नही बचा इसबचनको कप्तानसे सुन एकदूसरेके कण्ठ से लग अपनी अपनी अभाग्यतापर बहुत रोनेलगे उस पहाड़ के नीचे चारोंओर बहुतसे जहाज़ टूटेपड़ेथे और स्थान २ पर मनुष्यों के अस्थि के ढेर जहांतक कि दृष्टि पहुँचती थी दिखाई देते थे उन के देखनेसे विदित हुआ कि हज़ारों जहाजी इस स्थान पर रहगये और मरगये और उस पहाड़के ऊपर नानाप्रकारके व्यापारकी वस्तु पड़ीहुईथीं उनके देखनेसे हम अधिक अपने प्राणसे निराशहुये उस स्थान पर कई बड़ी नदियां मिलकर एकखोहमें कि बहुतउत्तुंग और अँधेरीथी बहतीथीं और उस पहाड़पर बिल्लौर और लाल और बहुमूल्य रत्नोंकी खानिथी और उसपहाड़से राल टपककर समुद्रमें पड़ती थी मछलियां उसे निगलकर थोड़ीदेरके पीछे उस रालको उगलतीं फिर वह राल बहकर तटपर आलगती वही ठीक अबरक है इसके विशेष बहुतसे चन्दनके वृक्ष जैसे कि कमरी द्वीपमें देखेथे दिखाई दिये और उस नदीमें उसी पहाड़के समीप ऐसा बड़ा भँवर था कि दूरसे जहाज़ोंको वहां खींचलाता सिवाय इसके उसनदीकी धाराका ऐसा बेगथा कि जहाज़को बचना वहांसे अत्यन्त कठिनथा और सामनेकी प्रचण्ड वायु पहाड़की ऊँचाईके कारण जहाज़को न लगती कि उसधारासे उसे बचाकर लेजाती निदान जहाज़ बेबश पहाड़के समीप पहुँच खण्ड २ होजाता ऊँचाई पहाड़की इतनीथी कि मनुष्य

और पशु उसपर न चढ़सक्ता कि दूसरी ओर निकलजावे हम सब उसपहाड़के नीचे अपने प्राणसे निराश पड़ेथे और सब भोजनकी बस्तु जो हम जहाज़से उतारलायेथे परस्पर बराबर भाग करलिये और जो कोई हममेंसे मरता हम सब वहां उसको गाड़ते बिशेषकर गाड़ते की सेवा मैं किया करता जो कुछ कि भोजन उसका बचता वहसब मुझको मिलता इसकारण मेरे निकट खानेकी वस्तु बहुत रहतीं निदान मेरेसब साथी कालबशहुये और मैंने सबको गाड़ा और पहिले अपने लिये कबरको खोदरक्खा कि मृत्युके समय मैंभी उसमें पड़रहूंगा और अकेले रहजानेसे मैं ऐसा दुःखितहुआ कि जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और अपनेको सहस्रों धिक्कार देताथा कि इतने दुःख उठानेपर भी तुझे बोध न हुआ लोभवश फिर तूने सफ़र किया और अब ऐसी बलामें पड़ा कि छुटकारा कठिनहै अब तू यहां मरके रहजावेगा और वह द्रव्य जो तूने अपने पांच सफ़रमें कमाई है कौन खावेगा और तेरे किसकाम आवेगी निदान रात्रि दिवस इसी शोच विचार में रहता था ईश्वर की अनुग्रहसे एक दिन मैंने ध्यानपूर्वक और बड़े बिचार से देखा और शोचा कि सब नदी मिलकर इस खोहमें जाती हैं विश्वास होताहै कि यह जल कहीं न कहीं बहकर निकला है और वहांसे होकर अन्य देशों में बहा है निदान इन सब बातों को भलीभांति बिचार अपने मन में कहने लगा कि अब तो किसीभांति अपने को इस जलमें डालिये यदि कुशलपूर्वक किसी ओर को निकलगया तो बहुत उत्तम है नहीं तो यहांही पड़ा रहजाऊंगा अब भी मरना फिर भी मरना इस बातको दृढ़ अपने चित्तमें ठहरा जहाज़ के पाट और रस्सियां कि असंख्य वहां पड़ी थीं उठाकर एक छोटी सी डोंगी बनाई और बड़े २ मणि, बिल्लौर, रत्न और धन आदि वस्तु सुनहली रुपहली उस समुद्र के तटपर लाय गठरियों में बांधीं और उस नावके दोनों ओर बराबर भारकर गठरियों को रक्खा और दो डांड़े ले उसपर चढ़ा और परमेश्वर पर भरोसा रख उस नावको खोहके बहाव में छोड़ा और वहांसे उसे खेनेलगा अँधियारे में धारा जिधर बहाये लियेजाती थी कभी मैं उसे खेता और

कभी थकितहोय सुस्ताने लगता कहीं वह कन्दरा बहुत ऊंची थी और कहीं ऐसी नीची थी कि छत उसकी मेरे शिर में लगती और शेष भोजन जो मैंने रखलिया था क्योंकि यह न जानता था कि क्या होगा और कहांजाऊंगा बहुत थोड़ा २ खाता अर्थात् इतना खाता कि जिसमें जीतारहूं निदान मुझे निद्राने ऐसा बेबश किया कि उस नावपर सोगया और इतनी देर तक सोया कि जिसका प्रमाण नहीं फिर जब मैं जगा तो अपनी नाव निर्मल नदीके तटपर एक नगर के नीचे बँधी हुई पाई और अपनेचारों ओर हब्शियों का समूह देखा तो मैंने उनसे प्रणाम किया और सब भांति का हाल पूछा उन्होंने उत्तरदिया परन्तु मैं उनकी भाषा कुछ न समझा मैं वहां पहुंचने से अति प्रसन्न हुआ और मन में कहनेलगा कि हे परमेश्वर! क्या मैं स्वप्न देखताहूं वा साक्षात् इस स्थान पर पहुँचा यह सब चिह्न जगने के देखकर मुझे सूचितहुआ कि मैं स्वप्न नहीं देखता तब बड़े शब्दसें अरबी विद्यासें परमेश्वर का धन्यवादकर कहनेलगा कि परमेश्वर प्रत्येक क्षण मनुष्य की सहायता करताहै मनुष्यको उचित नहीं कि कुछ भी शोचकरे तू अपने नेत्र बन्दकर और अपनेको उस परमात्मा पर छोड़ वह तेरे सब कष्टों को निवारण करेगा उन हब्शियों में कि एक मनुष्य अरबीभाषा समझता था मेरे समीप आय कहनेलगा भाई हमको देख आश्चर्य मतकर हम यहांके बासी हैं आज हम खेती सींचनेको इस नदी पर आगये थे परन्तु हमने देखा कि नदीका जल किसी वस्तुसे रुकगया और एक नाव उसके मुखपर आड़ीखड़ी है सो हममें से एक मनुष्य पैर कर गया और नाव को वहांसे निकाल यहां बांधदिया और तेरे जगने की बाट देखरहे थे अब तू अपना बृत्तान्त कह कि क्योंकर इस नदी में आया और कहां से आताहै तो पहिले मैंने उनसे खाने को मांगा और कहा कि क्षुधितहूं कुछ खालूं तो अपना बृत्तान्त बर्णन करूं उन्होंने कई भांति का भोजन मुझे दिया मैंने उसे खाकर अपना आदि से अन्त पर्यन्त बृत्तान्त कहसुनाया वह सुन अत्यन्त आश्चर्यित हुये और उनके उल्थकने मुझसे कहा कि हम सबको तुम्हारा हाल सुन अचम्भा हुआ अब

हम तुझे अपने बादशाहके सन्मुख लेजावेंगे तू अपनी कथा उसके सन्मुख प्रकट करना मैंने उनसे कहा मैं तत्परहूं जो तुम कहोगे करूंगा फिर उन्होंने मुझे एक अश्वपर चढ़ाया और उस नावको मणि आदि की गठरियों समेत उठा मेरे पीछे होलिये फिर मु सरन्द्वीपमें कि इसी नामसे बिख्यातथा लेगये और वहांके बादशाहके सन्मुख किया मैंने हिन्दके बादशाहको सिंहासनपर बैठे देख हिन्दुओंकी तरह प्रणाम किया फिर सिंहासन चूंवा बादशाहने मुझे अपने निकट बैठाय मेरा नाम पूछा मैंने कहा मेरा नाम सिन्दबाद जहाज़ी है मैं ब्यापारी बुग़दादनगर का वासीहूं फिर उसने कहा तू मेरे देशमें क्यों आया और कहां से आताहै मैंने अपने बृत्तान्तको उसके सन्मुख विस्तार-पूर्वक प्रकटकिया वह सुन अत्यन्त हर्षितहुआ और आज्ञादी कि इस सब कथाको स्वर्णके जलसे जो पुस्तकें और इतिहास आदि हमारे देशमें हैं उनमें लिखें फिर वह गठरियांभी उसकेसन्मुख खोलीगईं वह चन्दन मणिमाणिक्य और रत्न आदि देख अत्यन्त आश्चर्यितहुआ और कहा ऐसे रत्न मेरे कोषमें भी नहीं हैं फिर उसने उन रत्नोंको एक एक कर देखा मैंने उससे विनयकी कि हे स्वामी! मैं और यह बस्तु सब तुम्हारी है जितना चाहो लेलो उसने मुसकराय कहा यह सबरत्न परमेश्वरने तुमको दिये हैं उचित नहीं कि मैं तुमसे लूं किन्तु उसने और बहुतसे रत्न दिये फिर बादशाहने मुझे अपने एक बड़े अधि-कारीको सौंपकर कहा कि इस मनुष्यको बड़ी रक्षा और आनन्दमें रक्खो किसीभांतिका दुःख इसे न पहुंचे और कई मनुष्य मेरी सेवाके निमित्त नियत किये जितना कि धन वह चाहे हमारे कोषसे मिले उस सरदारने गठरियोंसहित मुझे लेजाय एक उत्तम घरमें उतारा परन्तु मैं प्रतिदिवस बादशाहकी सभा में जाता और सावकाश पाय उस नगर और महल और बस्तुओंको जो २ देखने योग्यथीं जाय देखता सरन्द्वीपटापू कि मध्यरेखाके नीचे बर्त्तमानहै इस हेतु रात दिन वहां सदैव समानहै लम्बाई उसकी ८० मील अर्थात् चालीस कोशकी है और इतनाही चौड़ान दृष्टिपड़ा उस नगरके चारों ओर बड़े २ पहाड़ हैं वह नगर दरेके समानहै वहीं संसारके सबसे बड़े पहाड़ हैं समुद्र

वहांसे तीन दिनकी राहपर देखा मणि आदि रत्नोंकी वहीं खानि है और कोरण्ड कि हीरे और कठोर रत्नोंको काटता और छीलताहै उस द्वीपमें बहुतसा देखा और खोपड़े आदि फलोंके बहुतसे वृक्ष दृष्टि पड़े और मोती वहांके समुद्रमें बहुत हैं और वह पहाड़ कि जहां आदम अर्थात् मुसल्मान और अंगरेज़ों का आदि मनुष्य जो स्वर्गसे निकालेजानेके पश्चात् रहतेथे जाकर मैंने देखा और वहांपर चढ़के यात्राकी जब उस द्वीपको भलीभांति देखचुका तो बादशाहसे बिनय की अब मुझे बिदा करो उसने मुझे अनेक प्रकारकी उत्तम २ बस्तु और द्रव्यदे बिदा किया जब मैं वहांसे चलने लगा तो उसने एक पत्र और बहुतसी वांकी बहुमूल्य वस्तु और सौगात देकर कहा कि इनको मेरी ओरसे अपने खलीफा हारूंरशीदको देना मैंने आनन्दपूर्वक उस पत्र और वस्तुको लेकर उससे यह प्रतिज्ञाकी कि मैं यह सब खलीफाके सन्मुख लेजाय आपकी कृपा जो आपने मुझपर कीहै वर्णन करूंगा मेरे जहाज़पर चढनेके पहिले बादशाहने कप्तान और व्यापारियोंसे जो उस जहाज़परथे मेरेवास्ते बहुत कुछ कहा इस मनुष्यको आनन्द और रक्षापूर्वक इसके नगरमें पहुँचाना सरनद्वीपके बादशाहका पत्र खलीफा हारूंरशीदके नाम किसी पशुके चर्मपर लिखाहुआथा क्योंकि उसदेशमें वह बहुमूल्य बिकताथा इसवास्ते बहुत अच्छा और अलभ्यथा उस चर्मका पीतरंगथा और उसपर लाजवर्द से लिखा हुआथा उसका विषय हिन्दी भाषामें इसभांति लिखवाया॥

यह पत्र हिन्द के बादशाह की ओर से जिसकी सवारीके आगे सहस्र मतंगका समूह होताहै उसने अपना बासस्थान ऐसा बनवाया जिसकी छतमें एक लक्ष दिव्यमणि जटित प्रकाशित हैं और अपने कोषमें बीस सहस्र हीरोंसे जटित मुकुट रखताहै खलीफ़ा हारूंरशीदके नाम तुमको यह सौगात इसप्रकारसे भेजते हैं जैसे भाईभाई वा मित्रमित्रोंको सौगातकी तौर पर भेजते हैं हम चाहते हैं कि तुम हमपर प्रसन्नरहो और अपना परममित्र समझो तुमको प्रणाम भेजते हैं और तुम्हारी कुशल पूछते हैं अधिक शुभ॥

उन सौगातोंमें से एक यहथी कि एक प्याला पौन गिरहके दल

का था और मणि से बनाहुआ था और उसके चारों ओर ब॰तसी मोतियोंकी झालरैंथीं और प्रत्येक मोती उसका ३ माशेका था दूसरा यहथा कि एक सर्प की खाल कि सिफुना उसका रुपये से चौड़ा था उसमें यह गुण था जो कोई उसपर सोवे वा लोटे कभी रोगी न होवे तीसरी सौगात महासुन्दर और दिव्य चन्द की लकड़ी लक्ष मुद्रा के मोलकी थी चौथी सौगात तीस दाने काफूरके पिस्ते के बराबर थे पांचवीं सौगात एक बांदी अ॰रूपवान् सुविधास जिसके दिव्य बस्त्रों में वहुमूल्य रत्न जटित थे तदनन्तर मेरी भाग्यसे वह जहाज़ कुशलपूर्वक तुरन्त बन्दर बांस॰को पहुँचा और वहां से बुगदा॰ में आया सब कार्योंके प्रथम वह पत्र और सौगात बादशा सरनद्वीप की लेकर खलीफ़ा हारूंरशीदकी ड्योढ़ीपर पहुँचा औ॰र उस लौंड़ी को भी निज परिवारसे रक्षितलेगया अपने पहुँचने का हाल बादशाहको कहलाभेजा बादशाहने मुझे बुलवाया ड्योढ़ीदार मुझे हाथोहाथ बादशाहके सन्मुख लेगये मैंने पृथ्वी चूंब बादशाह को सरनद्वीपकी सौगात और पत्र दिया जब उसने उस पत्रको पढ़ा मुझसे पूछा क्या वह शाहनशाह इतनाही बड़ाहै जैसा कि वह अपने पत्र में लिखता है मैंने विनयकी कि हे शाहनशाह! उसने कुछ अशुद्ध नहीं लिखा मैं उसकी बड़ाई और प्रताप अपने नेत्रोंसे देखआयाहूं सब से अपूर्व और अद्भुत उसका मन्दिर है जब वह सवार होता है मंत्री और सरदार हाथियोंपर सवारहो पंक्ति बांधकर चलतेहैं और उसके सिंहासनके आगे प्रधान सुनहले बरछे हाथोंमें लियेहुये और एकमनुष्य पीछे सुबर्णकी मुर्छल लियेहुये हवाकरता है और उस मुर्छलकी चोटीमें एक आधीगिरहका लम्बा और पौनगिरहका चौड़ा नीलमणि चमकताहुआ दृष्टिआता है और एक सह मनुष्य रेशमी और सुनहली आदि वस्तु पहिनेहुये हाथियोंपर सवार रहते हैं और हाथियोंकी सामग्री और हौदे ऐसे बहुमूल्य हैं कि जिन॰ मैं वर्णन नहीं करसक्ता जब उसका हाथी चलता है तो एक सरदार हाथीके आगे बड़े ऊंचे शब्दसे वेर २ यह कहाकरताहै कि यह बड़ा ऐश्वर्यवान् हिन्दुस्तान का बादशाह है जिसके अतिबिचित्र और

चित्र सिन्दबाद जहाज़ी का तीरकमान सम्मेत बैठना और एक हाथी का उसे उखाड़ना

दिव्य मन्दिर में लक्ष मणि जटितहैं और इसके निकट बीस सहस्र मुकुटहैं सब मुसल्मान और हिन्दू राजा इससे पदवी में न्यूनहैं जब अगला सरदार यह कहचुकताहै तो दूसरा सरदार जो सिंहासन के पीछेहोताहै यह पुकारके कहताहै कि इतना ड़ा बादशाह होनेपर ी यह अवश्यमरेगा फिर अगला कहताहै इसे आशीर्बाद दो कि यह सदा जीता रहै यह बादशाह ऐरा न्यायीहै कि जिसके नगरमें कोई भी न्यायाधीश नहीं और कोतवाल नहीं उसकी प्रजा में ऐसा सम्मतहै कि को किसीपर अन्याय और दुःख नहीं पहुँचासक्ता प्रीति और मित्रता पूर्वक निर्बाह करतेहैं इस निमित्त न्यायाधीश आदि की कुछ आवश्यकता नहीं बादशाहने यह सुन कहा तेरे कहने और पत्रसे जानपड़ता है कि वह बादशाह बड़ा बुद्धिमान् और चतुर है और बुद्धिमानी यही है कि वह ऐसा न्यायी कहलाता है फिर खलीफ़ाने मुझे खिलअतदे बिदाकिया सिन्दबादने अपनी इ नीकथा कहकर ४००) रु० हिन्द ाद को दिये दूसरेदिवस उसके सभासद और सिन्दबाद भोजनके समय आये जब सब खाचुके सिन्दबादने अपने सातवें सफ़र का वृत्तान्त कि वह अन्त का सफ़र था कहना आरम्भ किया ॥

सिन्दबाद जहाज़ी की सप्तम यात्रा का वृत्तान्त ॥

मित्रो ! मैंने यह प्रतिज्ञाकी थी कि फिर कभी लकी यात्रा न करूं और ा युभी मेरी इ नी बड़ीहोगई थी कि जिसमें मैं चाहता था कि कहीं न जाऊं और आनंदपूर्वक अपने घर बैठारहूं निदान आनन्द और सुखपूर्वक अ ने घर रहनेलगा एक दिन अपने मित्रों सहित भोजन करता था ि अकस्मात् एक सेवक ने आयकहा कि खलीफ़ाका सरदार तुमसे कुछ कह को आयाहै मैं वहांसे उठ सरदारके निकट गया उस कहा खलीफ़ा ने तुझे बुलाया है मैं तुरन्त खलीफ़ाके सन्मुखगया और प्रणामकर धरतीचूमी खलीफ़ाने कहा सिन्दबाद मैं चाहताहूं कि सरन्द्वीपके बादशाहको उन सौगातों के बदले मैंभी कुछ भेजूं और उसके पत्रों का उत्तरभेजूं सो य सौगातें मेरीओरसे उसे जाकरदे यह बादशाहकी आज्ञा मुझे अत्यन्त दुःख-

दायीहुई मैंने विनयकी कि हे स्वामी! जो मुझे आज्ञा होगी उसका उल्लंघन कभी न करूंगा परन्तु यात्राकी आपत्तियोंसे ऐसादुःखित हुआ कि इससे अधिक मुझे यात्रा करनेकी शक्ति नहीं और मैंने प्रण कियाहै कि फिर यात्राकी इच्छासे बुगदादसे न निकलूं और छःयात्रा की आपत्तियां कहसुनाईं खलीफ़ाने उनको सुनकर अत्यन्त आश्चर्यकिया और कहा वास्तवमें ये वृत्तान्त जोतूने वर्णनकिये अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व हैं परन्तु एक बेर मेरे वास्ते सरन्दीप टापू तक जाना अवश्यहै फिर तू यात्रा न कीजियो जब मैंने देखा कि खलीफ़ा इसमें बहुत वादानुवाद करताहै मैंने निरुपायहो सरन्द्वीप जाना स्वीकार किया॥ उसने मुझे ४०००) रु० राहका खर्च देकर कहा कि तुरन्त अपनी यात्राकी तय्यारी करो मैंने कई दिनके समयान्तर में तय्यारीकी और खलीफ़ा के सन्मुख बिदाहोने को गया उसने उत्तरपत्र अपने हाथसे लिखकर सौगातसहित मुझे दियामैं लेकर बंदर बाँसराको गया वहां जहाज़पर चढ़ कुछकालमें उन वस्तुओं सहित कुशलपूर्वक सरन्द्वीप में पहुँचा वहांके सरदारों से मिल उन के द्वारा बादशाह को अपने आने की खबर कहला भेजी फिर वह सब बादशाहकी आज्ञानुसार मुझे बादशाह के सन्मुख लेगये मैंने प्रणामकर तख़्तके आगेकी धरती चूंबी उस बादशाहने मुझे देखते ही पहिचाना और अत्यन्त प्रसन्न हुआ और पूछा कि सिन्दबाद तू कुशलसेहै मैंने विनयकी कि मैं आपका सदैव स्मरण करताथा आज का दिन बहुत उत्तमहै कि मैंने आपके दर्शनकिये फिर मैंने उसकी बहुतसी स्तुति और प्रशंसाकर खलीफ़ा की सौगात और पत्र को दिया उसने उसको बड़े हर्षसे लिया खलीफ़ाने ४०००) रु० की तय्यारी का फ़र्श किरमिज़ीरंग का जिसपर अच्छा काम कियाहुआ था और एक प्याला माणिक का कि एक अँगुली के बराबर मोटा और उसके किनारे पर एक मनुष्यका चित्र इस भांति खुदाथा कि अपने ऊपर धनुष और शर चलाकर सिंहको मारताहै भेजा था और इसके विशेष एक बहुमूल्य हज़रत सुलेमान का तख़्तथा और उस पत्र में यह विषय लिखा था॥

खलीफ़ा के पत्र का विषय॥

अब्दुल्ला हारूंरशीदकी ओरसे जो परमेश्वरकी पूर्णकृपासे अपने गुरुजनों का युवराज है प्रणाम पहुँचे तुम्हारा पत्र सौगातोंसहित पहुँचा अब हम प्रसन्नतासे उसका उत्तर सौगातोंसहित भेजतेहैं निश्चयहै कि वह पत्र तुम्हारी शरणमें पहुँचेगा जिसके आशयसे प्रीति का हाल जो हमको तुमसेहै विदित होगा सरन्दीपका बादशाह यह पढ़ अत्यन्त हर्षितहुआ फिर मैंने बिदामांगी वह कृपाके कारण शीघ्र विदा न करता था विदा बड़े विनयके पश्चात् उसने मुझे ख़िलअत आदि पारितोषिकदे विदाकिया मैं जहाज़पर चढ़ सीधा बुग़दादको चला परन्तु और कष्ट मेरे भाग्यमें लिखाथा क्योंकि बुग़दाद में जैसा कि शीघ्र मैं परमेश्वर से पहुँचना चाहताथा न पहुँचसका वहांसे चले तीन वा चार दिवस व्यतीतहुये होंगे कि एकाएक हमें लुटेरोंने आयघेर लिया हम उनसे सामना न करसके निदान उन्हों ने हमारा जहाज़ लूट लिया और हम सबको पकड़के अपनागुलाम किया और जिन मनुष्योंने उनका सामना किया वहसब उनके हाथ से मारेगये फिर उन्होंने हमारे वस्त्र उतार हमें नग्न कर एक जोड़ा गजीका जैसाकि गुलामोंको पहिनातेहैं दिया और बड़ीदूरके टापूमें लेजाय हम सबको बेंचडाला मुझे एक बड़ेधनाढ्य व्यापारीने मोल लिया और अपनेघर लेजाय सेवकोंके समान वस्त्रपहिनाये और खानेको दिया वह धनाढ्य मेरेहालको क्या जानताथा एक दिन पूछने लगा कि तुझे कुछ कार्य आता है मैंने उत्तर दिया मैं व्यापारियों का काम करताथा लुटेरोंने मुझे और मेरे साथियों को वस्तुसहित लूटलिया और सबको गुलाम बनाकर बेंचडाला फिर उस व्यापारी ने कहा तुझे तीर चलाना आता है मैंने कहा बाल्यावस्था में मुझे निस्सन्देह तीर चलानेका अभ्यासथा और वह अबतक नहीं भूला व्यापारीने यह वचन सुन मुझे शर धनुष दे अपने साथ हाथी पर सवार किया और एकबड़े बनमें कि नगरसे कई दिनकी राह परथा लेगया और बहुतदूर उस बनमें जाय एक स्थान पर उतारा और एक बड़ा वृक्ष दिखाय कहा कि तू इसपर चढ़के बैठ और जो हाथी

इधरसे जावे उसको तू बाणसे मारियो इसबनमें बहुतसे हाथीहैं यदि कोई मतंग तुझसे माराजावे तो मुझसे आय कहियो यहकह उसने मुझे खानेको दिया और नगरकी ओर चलागया मैं उस बृक्षपर चढ़ रातभर देखतारहा परन्तु कोईहाथी मेरीदृष्टि न पड़ा दूसरेदिवस भोर को सूर्य उदयहोनेके समय बहुतसे हाथी वहांआये मैंने बहुततीर उन को मारे निदान एक हाथी घायल होकर गिरा और शेष भागगये मैं उस वनको खालीपाकर नगरमें गया और उस ब्यापारी से कहा कि एक हाथी मेरेहाथसे घायल हो गिराहै यह सुन वह मुझसे अत्यन्त प्रसन्नहुआ मुझको नानाप्रकारके भोजन प्रीतिपूर्वक खिलाये और मेरी बहुत प्रशंसा की द्वितीय दिवस फिर हम दोनों उसी बनमें गये मैंने उस हाथीको खोदकर गाड़दिया उस ब्यापारीने कहा जब य- मृतकहाथी पृथ्वीमें सड़जावे तो दांत उसके निकालकर लेआइयो उससे बहुत लाभ होगा फिर दो मास तक मैं यही काम करतारहा एक हाथीको तीरसे मारता और उसके दांत निकालकर ब्यापारीको देता कभी उस बृक्षसे उतरता और कभी किसी आवश्यकतासे उस पर चढ़ता एकदिन भोरको मैं बृक्षपर चढ़ाहुआथा कि अकस्मात् एक हाथियोंका समूह उस बनमें आया और उस बृक्ष को चारो ओर से घेर बड़े भयानक शब्दसे चिल्लानेलगे उनकी आधिक्यतासे वहां की धरती छिपगई और उनके पांवकी धमक से धरती हिलनेलगी वह मुझे देख अपनी सूंड़ उस बृक्षकी जड़में लपेट खींचनेलगे और उखाड़नेकी इच्छाकरतेथे यह हाल देख मैं भयभीत हुआ और ऐसा डरा कि शर धनुष हाथसे धरतीपर गिरपड़ा मैं अपने जीवनसे नि- राशहो उस बृक्षकी टहनियोंमें लिपटरहा यहांतक कि बड़े हाथी ने आकर अपनी सूंड़को उस बृक्षमें लपेट ऐसा बलकिया कि उसबृक्ष को जड़से उखाड़ पृथ्वी पर डालदिया जब मैं उस तरुके साथ धरती पर आ गिरा तब उस बड़े हाथीने मुझेउठाय अपनी पृष्ठपर बैठा लिया मैं भययुक्त मृतकों के समान उसकी पीठपर पड़गया फिर वह बड़ा हाथी सबके आगेहुआ और सब हाथी उसके पीछे पंक्तिबांधके चले चलते २ मुझे एक घरमें लेगये और अपनी पीठसे उतार बै-

ठाया और वहांसे सब हाथियों सहित वह चलागया मैं बड़ीदेरतक वहां बैठारहा जब मैंने देखा कि वहां कोई भी हाथी नहीं है तब मैं धैर्य धरकर उठा इतनेमें एक बड़ा चौड़ागढ़ा हाथियोंके अस्थि और दांतों से भराहुआ दृष्टिपड़ा मैंने अपने मनमें शोचा और अचम्भा किया कि यह हाथी बड़ेबुद्धिमान् हैं जब उन्हें यह सूचितहुआ कि केवल मैं दांतोंके हेतु उनको मारताहूं इसलिये उन्होंने मुझको एक गढ़ेपर लाय दिखलाया कि यह बहुतसे दांत हैं जितने चाहे ले और हमारे मारनेकी इच्छा न कर परन्तु मैं वहां अधिक न ठहरा और नगरकी ओर चला एक रात दिनमें अपने स्वामी के निकटजाय पहुंचा मार्ग में कहीं हाथी दृष्टि न पड़े इससे सूचितहुआ कि वह मुझे उसगढ़ेपर छोड़कर और किसी बनमें चलेगये कि दांत भी मैं लेलूं और आगेको उन्हें दुःख न पहुँचाऊं निदान जब मेरे स्वामीने मुझे दूरसे देखा प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे कहनेलगा कि हे दीन सिन्दबाद! तू कहांथा मैं तेरेलिये बहुत शोचयुक्तहूं तुझे ढूंढ़ताहुआ उस बनमें गया वहां जाय उस बृक्षपर जहां तू रहाकरता था देखा कि मूलसे उखड़ापड़ाहै और तेरा शरधनुष पृथ्वीपर पड़ादेखा तुझे बहुतढूंढ़ा वहीं न पाया तुझसे निराशहोकर बैठरहा अब तू अपना बृत्तान्त कह कि तुझपर क्याहुआ और क्योंकर अबतक जीताबचा मैंने सब हाल अपना वर्णन किया यह ब्यापारी उस गढ़े का हाल सुन प्रसन्नहुआ और मेरेसाथ वहां जाकर हाथीदांत जितने कि उठा सका अपने हाथीपर लादलाया और मुझसे कहा भाई आजसे तू मेरा गुलाम नहीं तूने मेरा बड़ा उपकार किया अब मैं बहुत धनाढ्य होजाऊंगा परमेश्वर तुझे खुशरक्खे मैंने अबतक तुझसे इस विषय को गुप्तरक्खा था वह यह है कि हाथियों ने उस बन में मेरे बहुत गुलाम जो हाथीदांतके प्राप्तकरने के हेतु जाते थे मारे कोई तो तुरन्त और कोई दो तीन दिवस के पश्चात् उन हाथियों से मारेगये परन्तु परमेश्वरने तेरी रक्षाकी और तुझपर कृपा और दयाकी इससे बिदितहुआ कि तेरी आयु बड़ी होगी और आनन्द पूर्वक तू इस संसारमें रहेगा इससे पहिले मैं बहुतसे मनुष्योंके मरनेपर भी लाभ-

वान् नहीं होताथा और मेरे बहुतसे आदमी उसकी ढूंढ़में कालवश हुये अब तेरेद्वारा मैं और इस नगरके सम्पूर्ण मनुष्य हाथीदांत की खानिके पानेके कारण धनाढ्य और द्रव्ययुक्त होजावेंगे तू इतनाही न बिचारियो कि तेरा छुटकारा करूंगा किन्तु तेरे साथ बड़ाउपकार करूंगा और इसनगरके बासियोंसे भी तुझे कुछ दिलादूंगा मैंने यह सुन उससेकहा ईश्वर तुम्हें जीतारक्खे और तुम्हारा जीवन सुफलकरे कि तुमने मुझे छुड़ादिया मैं इस बिषयमें तुम्हारा कृतज्ञहूं मैं वास्तव में वहां रहनेसे प्रसन्नथा कि इस नगरमें तुमने मुझे मोललिया अब मैं तुम्हारी और पुरबासियों की कृपासे आशा रखताहूं कि मुझे बिदा करो यह सुन उस ब्यापारीने कहा तू धैर्यरख जहाज़ोंके आनेकी ऋतु में कि वह हाथीदांत लादने को आवेंगे हम तुझे बहुतसा खर्चदे उन पर चढ़ा तेरे नगरकी ओर बिदा करेंगे मैं उसका अधिक कृतज्ञहुआ और आशीर्वाद देनेलगा फिर मैं उस नगर में जहाज़ आनेकी बाट देखतारहा और उसके घर में रहनेलगा इस समयान्तर में मैंने कई बेर बनमें जाय उस गढ़े से हाथीदांत लाय उसका घर भरदिया जब उस ब्यापारीको हाथीदांतोंसे अत्यन्त लाभहुआ उसने और ब्यापारियों को भी उसकी खबरदी वह भी जाय अपनी इच्छानुसार हाथी दांत उठालाये यहांतक कि जहाज़के आने की ऋतु आपहुँची और बहुत ओरके जहाज़ उस नगरमें आये मेरे स्वामीने जहाज़ पर मुझे चढ़ा जितने कि हाथीदांत उसके घरथे अर्धभाग मुझे दिये और मेरे नामसे उनको जहाज़ पर लादे और खाने पीने की बहुतसी वस्तु मेरेसाथ करदी और उस देशकी बहुतसी सौगात और उत्तम २ बस्तु दे बिदा किया सो मैं इस कृपा से अधिक उसका कृतज्ञ हुआ और जहाज़ पर उस नगरसे चला और अपने मन में उस ब्यापारी के उपकारको न भूला मार्गमें कई द्वीपोंसे होतेहुये तेरेसरन्द्वीपमें पहुँचा वहांसे खुश्कीके रास्ते बॉसराबन्दर को पहुँचा और मार्ग में हाथीदांत बेंचकर देशों २ की बस्तु मोलली और ब्यापारियों के समूह के साथ बहुत दिवस के पश्चात् बग़दाद नगर में पहुँचा यद्यपि मैंने खुश्की की यात्रा में बहुतसे दुःख और आपत्तियाँ उठाईं परन्तु तूफ़ान और

लुटेरों और सर्प आदिसे रक्षापूर्वक रहा और नगर बुग़दाद में पहुँ-
चतेही पहिले खलीफ़ाके सन्मुखगया और सम्पूर्ण वृत्तान्त पत्र और
सौग़ातों के पहुँचाने का बादशाह सरन्दीपसे प्रकटकिया खलीफ़ा
ने सुन कहा मुझे सदैव तेरी ओर ध्यान रहताथा और तेरे वास्ते
परमेश्वरसे प्रार्थना करताथा कि तुझे कुशलपूर्वक यहां पहुँचावे जब
मैंने उन हाथियों का हाल कहा उसने अत्यन्त आश्चर्य किया और
इस यात्राको भी अद्भुत समझ एक लेखक को आज्ञादी कि मेरे वृ-
त्तान्त को सुवर्ण के वर्णोंमें लिख मेरे कोष में रक्खे फिर उसने पारि-
तोषिक खिलअत आदिदे बिदा किया हे मित्रो! मैं तबसे अपने परि-
वार में रहनेलगा सिन्दबादने अपनी अन्तिमयात्रा का वृत्तान्त कह
हिन्दबाद से कहा कि मित्र तूने ऐसा किसीको सुनाहै जैसी आपत्ति
और दुःख मैंने उठाये हैं और संकट झेल आनन्द उठायाहो हिन्द-
बादने यह वचनसुन उसके हाथ चूमे और कहा सच तो यह है कि
जितना तुमने इन सात यात्राओंमें परिश्रमकर अपने प्राणपर खेला
है किसी मनुष्यमें शक्तिनहीं कि करसके तुम्हारे इनकष्टों से जो तुम
ने उठाये हैं मुझे भलीभांति धैर्यहुआ अब मैं इस निर्धनताको उ-
त्तम जानताहूं यद्यपि मुझे इतने परिश्रम से केवल सूखीरोटी प्राप्त
होती हैं परन्तु अपने स्त्रीपुत्रोंमें रहकर उनकष्टों और बिपत्तियों से
जो तुमने वर्णनकीं बचकर जन्म काटताहूं वह आनन्द कि तुम भो-
गतेहो उस परिश्रमकी अपेक्षा कुछ नहीं किन्तु तुम अधिक आनन्द
करनेके योग्यहो परमेश्वर तुम्हें इसीभांति सदैव खुश और आनन्द
में रक्खे मेरीसमझ अशुद्धथी जो मैंने संसारकी दशाका बर्णनकिया
वहभी झूठहै फिर सिन्दबादने ४००) रु० हिन्दबादको देकर कहा
अब तुम मज़दूरीकरना त्यागदो और मेरे सभासद रहो मैं तुम्हारे
स्त्रीपुत्रों की पालन अपनी आयुपर्यंत करूंगा सो हिन्दबादने शेष
आयु सिन्दबादकी सभा में रह आनन्दपूर्वक ब्यतीत की॥ सिन्द-
बाद जहाज़ी की यात्रा सम्पूर्ण हुई॥

एक स्त्री और तीन सेवकों की कहानी॥

शहरज़ाद रानी ने बादशाह शहरयार से बिनय की कि उक्त

खलीफ़ा हारूंरशीद बहुधा रात्रि को अकेला भेष बदलकर बुग़दाद नगरमें फिराकरता सो उसने एकदिन जाफ़रमंत्री को आज्ञादी कि आज की रैन मैं इस नगरी में फिरूंगा जिससे विदित हो कि मेरी प्रजाका क्या हालहै और थानेदार किसप्रकार नगरकी रक्षाकरतेहैं यदि उनको अचेतपाऊंगा तो उन्हें छुड़ाकर दूसरोंको नियतकरूंगा और यदि अपने आधीनीकार्य पर तत्पर पाऊंगा तो उन्हें पारितोषिक दूंगा जाफ़रमंत्री अपने स्वामी की आज्ञानुसार नियत समय पर आया खलीफ़ामंत्री और खोजियोंके दारोगा मसरूरको अपने साथले नगरकीओर गया तीनोंने अपना ऐसा भेष किया कि जाने न जातेथे फिर कईबाज़ारों और गलियोंसे होतेहुये एकसूक्ष्मगली में पहुँचे वहां उन्होंने चन्द्रमाके प्रकाशमें एक बड़ेडील और श्वेतदाढ़ी के पुरुषको देखाकि जाल शिरपर और नारियलके पत्तोंका टोकरा कांधेपर धरे लाठी टेकता टेकता चलाजाताहै खलीफ़ाने कहा यह मनुष्य बहुत निर्धन जानपड़ताहै इससे उसका बृत्तान्त चलके पूछिये मंत्रीने आगे बढ़के पूछा तू कौनहै उसने उत्तरदिया स्वामी मैं धीमरहूं इससमय मैं अत्यन्त पीड़ितहूं आज मध्याह्नसमय मैं मछलियां पकड़नेगया तबसे इससमय पर्यन्त एकमत्स्यभी मेरेहाथ न लगा खाली मैं अपने गृहको फिराजाताहूं एकस्त्री और छोटे २ पुत्रहैं मैं अत्यन्त विस्मितहूं कि आज कहांसे उन्हें भोजनदूंगा खलीफ़ाको उसपर दया उपजी और उससे कहा नदीपर फिर चल एक बेर तू जालडार कुछनिकले वा न निकले परन्तु ४००) रु० तुझे मिलेंगे वह धीमर इस बचनको सुन अपने दिन भरेका बृत्तान्त भूल गया खलीफ़ाके बचनपर विश्वासकर उन तीनोंसहित टकरस नदीके किनारेपर जाकर जालखोला और अपने मनमें शोचनेलगा कि यह तीनों मनुष्य अत्यन्त बुद्धिमान् और भलेमनुष्य जानपड़तेहैं मुझसे असत्य न कहेंगे बिश्वास है अपने प्रण को पूराकरें और मुझे एक रुपयाभी बहुतहै उन्होंने ४००) रु० के देनेका प्रण कियाहै यह बिचार उसने अपनाजाल उसनदीमें डाला कुछकालके पश्चात् उस को खींचा अकस्मात् उसजालमें एकसन्दूक़ बन्द बहुतभारी निकला

खलीफ़ाने धीमरको मंत्रीसे ४००) रु० दिलवा तुरन्त बिदा किया और मसरूर अपने स्वामीकी आज्ञानुसार उस सन्दूक को अपने कन्धेपर रख लेचला खलीफ़ाको अत्यन्त लालसाहुई कि उसे खोल-कर देखें कि उसमें कौनसी वस्तुहै तुरन्त उसे निजभवनमें लेगया वहां पहुँच उस संदूकको खोल उसमें कोई वस्तु नारियलकी चटाई में लाल डोरेसे सीहुई देखी खलीफाकी शिघ्रताके कारण उन्हें टांके खोलनेका अवकाश न मिला छुरीसे उन टांकोंको खोला उसचटाईके भीतरसे एक कोईवस्तु पुरानेवस्त्रमें लपेटीहुईथी और उसपर एक रस्सी बँधीहुईथी जब उसको खोला तो देखकर अत्यन्त आश्चर्यित हुआ उस वस्त्रमें एक स्त्रीकी लोथ जो बरफ़सेभी अधिक श्वेतथी टु-कड़े २ हुई देखी खलीफ़ा उसेदेख अत्यन्त क्रोधितहुआ और मंत्री से कहने लगा तू ऐसेही मेरी प्रजाकी रक्षा करताहै तेरे अधिकार में ऐसे अन्यायी और दुष्ट मनुष्यहैं जो मेरी प्रजाको इस निर्दयता से मारकर नदी में डालते हैं बड़ा आश्चर्यहै प्रलयमें मैं इसका क्या उत्तरदूंगा यदि तू इसके बध करनेवालेको न लावेगा तो मैं सौगन्द खाकर कहताहूं इसखूनी के बदले तुझे और तेरे घरानेके चालीस मनुष्योंको फांसी देकर मरवाडालूंगा मंत्रीने बिनयकी हे स्वामी ! इस सेवकको कुछसावकाश मिले तो स्त्रीके मारनेवालेको ढूंढ़लावे ख-लीफाने आज्ञादी कि तीनदिनका सावकाश दियाजाताहै इस सम-यान्तरमें उसे ढूंढ़ला जाफ़रभी शोकयुक्त अपने गृहमें आया और मनमें कहनेलगा कि इतने बड़े और बसेहुये नगरमें मारनेवाले का मिलना अतिकठिनहै और जो उसे मैंने पायाभी तो साक्षियों को कहांसे पाऊंगा और विश्वासहै कि इसका हिंसक कबका कब इसन-गरसे चलागया होगा और जो अपने छुटकारेको किसी अन्य हिंसक अपराधीको जो बंदीखानेमें कैदहो खलीफाके सन्मुखलाके उसे उस स्त्रीका हिंसक प्रकटकरूं तो होसक्ताहै परन्तु मेरामन नहीं चाहता कि ऐसा बुराकामकरूं और दूसरे मनुष्यका अपराध दूसरेपर रक्खूं फिर उसने थानेदारों और सिपाहियोंको आज्ञादी कि उस स्त्रीके हिंसक को तीनदिनके समयान्तरमें तुरन्त ढूंढ़के लावें जो न लायेंगे तो मेरे

प्राण जावेंगे वह सब और मंत्री अपने प्राण के डरसे नगर के चारों ओर गये और घर २ उस हिंसकको ढूंढ़नेलगे बहुत ढूंढ़नेपर भी कहीं उसका पता न लगा यहांतक कि तीनदिवस व्यतीत हुये और बधिक मंत्रीको खलीफ़ाके निकट पकड़के लेगये खलीफ़ाने उससे पूछा क्यों तू हिंसक पकड़लाया मंत्री ने रुदनकर कहा हे स्वामी! बहुत ढूंढ़ने परभी अबतक उसका ठिकाना नहीं मिला खलीफ़ाने क्रोधितहोय आज्ञादी कि राजमंत्री और उसके घरानेके चालीस मनुष्योंको लेजा मेरे दरवाज़े पर गर्दन मारो यह खलीफ़ा का हुक्म पातेही तुरन्त इकतालीस लकड़ियां फांसियों की खड़ी होगईं और चालीस मनुष्य उसके कुटुम्बके पकड़आये और सारेनगरमें ढिंढोरा पिटने लगा कि खलीफ़ा की आज्ञानुसार ज़ाफ़र मन्त्री और उसके चालीस नातेदार फांसी दियेजाते हैं जिसे देखना स्वीकारहो आकर देखे एक क्षणमें यह बात सम्पूर्ण नगर में बिख्यात होगई कि इस कारण मन्त्री माराजाता है फिर मन्त्रीको चालीसों नातेदारों समेत फांसीके नीचे बैठाया और उनकी गर्दनोंमें रस्सियां डालीं इतने में बहुत मनुष्य वहां इकट्ठे होगये और बुग़दादके बासी जो मन्त्रीकी शीलताके कारण बहुत प्रीति रखते थे इस दशा में उसे देख रुदन करनेलगे किन्तु सम्पूर्ण राज्यके मनुष्य उस मन्त्रीके न्यायसे अत्यन्त कृतज्ञ और प्रसन्न थे परन्तु कोई खलीफ़ा को इस आज्ञा के देने से बर्ज न सका निदान बधिक चाहते थे कि उन चालीसों मनुष्यों को फाँसी दें इतने में एक तरुण रूपवान् पुरुष भीड़को फाड़ चीर तुरन्त ज़ाफ़र मन्त्रीके निकट पहुँचा और उसके हाथको चूम कहा कि उस स्त्री का हिंसक मैंहूं मैंनेही उसे माराहै यद्यपि मन्त्री उस मनुष्य का बचन सुन कुछ प्रसन्नहुआ परन्तु उसकी तरुणावस्था पर बहुत कुढ़ा और पश्चात्ताप किया और उससे पूछरहा था कि एक बड़े डीलके बृद्ध मनुष्यने आके मन्त्रीसे कहा जो कुछ कि यह मनुष्य कहताहै सब असत्यहै किन्तु मैंने उस स्त्री को जो उस संदूक़ में है माराहै मैंहीं दण्डके योग्यहूं यह मनुष्य निर्दोष है यहकह उस बृद्ध ने तरुणके सम्मुख हो कहा कि हे पुत्र! तू क्यों घबराकर कुटुम्बियों

के मारने का इक़रार करताहै और क्यों इस बधागारमें आया मैं तो बहुत इससंसारमें रहाहूं मुझे अपने पलटे माराजानेदे उस तरुण मनुष्यने मन्त्रीसे कहा यह बृद्ध झूठ कहताहै उसका मारनेवाला मैं हीहूं वह मन्त्री उनदोनोंके बादानुबादको सुन अत्यन्तबिस्मित हुआ और ख़लीफ़ा के सन्मुख लेगया और बिनयकी कि हे स्वामी! ये दोनों उस स्त्रीके मारने का इक़रार करते हैं उन दोनोंने ख़लीफ़ा के सन्मुख भी यही कहा ख़लीफ़ाने यह सुन आज्ञादी कि मन्त्री आदि को छोड़दो और इन दोनोंको मारो मन्त्रीने छूटकर ख़लीफ़ासे बिनय की कि हे स्वामी! दो का मारना एक हिंसाके बदले न्यायके बिरुद्ध है इतनेमें तरुणने सौगन्द खाकर कहा कि इस स्त्री को मैंने माराहै चार दिन व्यतीत हुये कि मैंने इसे बधकर और संदूक़ में बंदकर नदीमें डालदियाथा जो मैं इसबातको असत्य कहताहूं तो प्रलयमें अन्धा और कालामुख होके उठूं ख़लीफ़ा को इस बचन के कहनेसे विश्वासहुआ कि स्त्रीका मारनेवाला यहीहै और बृद्धमनुष्य भी चुप होरहा और कुछ न बोला ख़लीफ़ाने जवानसे पूछा कि तूने क्यों इस निर्दयता से उस स्त्रीको मारा और अब क्यों आपही उसके बदले मरनेको आया और तूने कुछ भी परमेश्वर का और मेरा भय न किया तरुण मनुष्यने कहा हे स्वामी! जो कुछ मुझ और उस स्त्रीमें हुआ वह सब लिखाजावे कि जिससे सांसारिक मनुष्यों को उपदेश और बोध हो यदि आज्ञा हो तो मैं उस बृत्तांतको प्रकटकरूं ख़लीफ़ा ने कहा अच्छा कह फिर उस तरुण मनुष्यने अपने और उस स्त्रीके बृत्तान्तको इसभांति बर्णन करना आरम्भ किया॥

उस मनुष्य और मरीहुई स्त्री की कहानी॥

मनुष्यने कहा कि हे स्वामी! यह मृतक स्त्री मेरीस्त्री और इसबृद्ध मनुष्यकी पुत्रीथी यह बृद्ध मेरा चचाहै अभी यह द्वादशबर्षकी न हुई थी कि इस बृद्धने इसका मेरेसाथ बिवाह करदिया ११ बर्ष बिवाह को व्यतीत हुयेहैं कि तीन पुत्र इससे उत्पन्न हुये सो वह तीनों पुत्र अबतक जीते हैं यह स्त्री अत्यन्त पतिव्रता और मेरी आज्ञापालक और सदैव मेरी प्रसन्नता पर हर्षित रहतीथी और मैं भी उससे

अत्यन्त प्रीति रखताथा और प्रत्येकसमय मनोरथ उसका पूरा करता था एक मास व्यतीत हुआ कि वह रोगयुक्त हुई मैंने यथोचित उस की औषध की फिर वह अच्छी होगई स्नानके निमित्त स्नानागारमें जानेकी इच्छाकी अपने जानेके पहले उसने मुझसे कहा मेराजी सेब खानेको चाहताहै कहींसे ढूंढ़के उसे ला यदि सेब न मिला तो फिर मैं रोगी होजाऊंगी मैंने कहा हे सुन्दरी! धैर्यरख जिसभांति होसकेगा तेरेवास्ते ढूंढ़लाऊंगा यहबचन उससे कह मैं तुरन्त बाज़ार को गया और सम्पूर्णफल बेचनेवालोंकी दूकानपर ढूंढ़नेलगा और एकसेबके बदले ४) रु० तक देनेलगा तौभी मुझे एकसेव हाथ न लगा निदान मैं घरआया जबयह सुन्दरी स्नानकर घरआई और उसने सेबको न पाया अत्यन्त शोकयुक्तहुई और रातभर उसे निद्रा न आई उसके शोकयुक्त होनेसे मुझे शोकहुआ भोरको उसे इसीदशामें देख नगरके बागोंमें जाय ढूंढ़ा वहां भी कहीं न पाया एक बृद्ध मालीने कहा इ दिनों बादशाही बागोंके सिवाय जो बांसरानगरमें हैं कहीं सेब तुमको न मिलेगा मैंने बांसराको जानेकी इच्छाकी और इतनीदूरकी यात्रा स्वीकार की वहां पहुँचा और ढूंढ़ते ढूंढ़ते तीन सेब चारचार रुपये देकर मोल लिये और दो सप्ताहके समयान्तर में अपने घर आया और वह तीनों सेब अपनी पत्नी को दिये वह देख प्रसन्नहुई और उनको सूंघनेलगी और अपनीशय्याके नीचे अपने समीप रखदिये और निर्बलता के कारण उसीभांति लेटी रही मैं अपनी दूकान पर कि चौक के बज़ाजे में थी जाय बैठा थोड़ी देर में मैंने एक गुलाम हब्शीको कि बड़े डीलका था क्या देखा कि वह दूकान के आगे से एकसेब हाथमें लियेहुये उछालता जाताहै मैंने उस सेबको पहिचाना कि यह तो उन्हीं सेबोंमेंसे है जिनको मैं बन्दर बांसरासे लायाथा नहीं तो इनदिनों अन्ततुमें इसहब्शीने कहां पाया मुझे भलीभांति बिदित था कि बग़दाद नगर में कहीं सेबका नाम भी नहीं तो उस सेब को हब्शी के हाथ में देख ऐसी डाह उपजी कि अधीर होगया निदान उस हब्शीसे बुलाकर पूछा कि तूने इस सेब को कहां से पाया उसने मुस्कराय उत्तरदिया कि यह सौग़ात मेरी प्यारीकी है आज मैं उसे

देखने को गयाथा उसके निकट तीन सेबथे मैंने उससे पूछा कि यह सेब कहांसे आये उसने कहा मेराभर्ता दो सप्ताह की यात्राकर इन्हें मेरेवास्ते लायाहै फिर मैंने और उस सुन्दरीने मिलके भोजनकिया और बिदाहोते मैंने एकसेब वहांसे उठालिया इस वार्त्ताको हब्शीसे सुन मेरीसुधि जातीरही तुरन्त अपनी दूकान बन्दकर घरआया और अपनी स्त्रीके निकटजाय देखा केवल दोहीसेब उसकेनिकट रक्खेहुये थे मैंने उससे पूछा तीसरा सेब क्याहुआ उस स्त्रीने अपने मुख को फेर उसओरको दृष्टिकी जहां वहतीनों सेबरक्खेथे दोहीं सेबको देख वेपरवाहीसे उत्तरदिया मैं नहीं जानती कि तीसरा सेब यहांसे क्या हुआ इसभांतिके उत्तरदेनेसे मुझे सूचितहुआ कि हब्शीने सत्यकहा है इस विषय के समझतेही मैं लज्जा और क्रोध में ऐसा बेबशहुआ कि छुरी निकाल उसके कण्ठ में फेर उसके शिरको काटलिया और उसके शरीरके चारखण्डकर बस्त्रमें बांधके चटाईमें लपेट ऊपर लाल डोरे से बांध रात्रि के समय उसे सन्दूक़ में रख टिकरस नदीपर ले गया और गहरे जलमें डुबोदिया घरमें आय देखा कि दो छोटे पुत्र मेरे सोतेहैं और बड़ा लड़का घरसे बाहर दरवाज़े पर बैठा रोरहाहै मैंने उससे पूछा तू क्यों रोताहै उसने उत्तरदिया मैं भोरके समय एक सेबको कि उन तीनों सेबों मेंसे जिनको तुम मेरी माताके वास्ते लाये थे वेपूछे उठालाया और चिरकालपर्यन्त अपने छोटे भाइयोंकेसाथ खेलतारहा एकग़ुलाम हब्शी कि उधरको जाताथा सेबको मेरे हाथ से छीनके लेभागा मैं उसके पीछेदौड़ा कितनाही सेबको मांगा और रुदनकर कहा कि मेरापिता दो सप्ताहकी यात्राकर मेरी रोगी माताके वास्तेलायाहै परन्तु उसने मुझे न दिया तब दौड़कर उसके पीछेगया उस ग़ुलामने मुझे फिरकर मारा और तुरन्त दूसरे मार्ग हो भाग गया और मेरी दृष्टि से गुप्त होगया तबसे इस समय पर्यन्त उसके ढूंढ़ने में फिरताथा अभी थकित होय दरवाज़ेपर बैठाथा कि तुमको उधरसे आते देखा और तुम्हारे भय से रोनेलगा हे पिता! सेब के खोजाने के कारण मेरीमाता को कुछ न कहना फिर मेरापुत्र फूट २ कर रोनेलगा उसका बचन सुन मेरी ऐसी दशा हुई जिसका वर्णन

नहीं होसक्ता बहुतकाल पर्यंत मूर्च्छावश रहा जब चैतन्यहुआ अपनेको बुराभला और धिक्कारें देनेलगा कि हे भाग्यहीन ! तूने ऐसी अपनी प्यारी और पतिव्रतास्त्रीको निर्दोष मारा और उस दुष्टगुलाम के झूठेवचन सुन जो मुझसे छलकरके कहे थे सत्यजानकर इतना क्रोध किया इसीरंज और शोकमें बैठा पश्चात्ताप करताथा कि मेरा चचा अपनी पुत्री को देखने को आया मैंने उससे इस बृत्तांत को प्रकटकिया वहभी मुझे कुछ कहने सुनने वा उसके मरनेके वादानुवाद बिना मेरेसाथ रोनेपीटनेलगा तीनदिन पर्यंत मैंने और उसने शोककिया फिर यहबृद्ध अपनी प्रियपुत्रीके मारेजानेसे शोकमें मग्न हुआ और इसीभाँति मैं अभागा भी उसदुष्ट गुलामके बचनको स्मरणकर अपने घरके नष्टहोने और अपने अपराध से नानाप्रकार के शोकको प्राप्त हूं इसीसे मैंने आपके सन्मुख यह कहा और आशा रखताहूं कि मेरे मारेजानेकी आज्ञाहो कि उसके बदले मैं दण्ड पाऊं अब मेरा जीना व्यर्थ है ऐसे जीने से मरने को उत्तम जानता हूं खलीफ़ा इस बृत्तान्तको उस मनुष्यके मुखसे सुन अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और उसकी दीनतापर दयाकी और कहा जिसमनुष्यने कि अनजाने अपराध किया वह परमेश्वर और मनुष्योंके बिचारमें क्षमायोग्यहै और मारनेके योग्य वह गुलामहै जो इस स्त्रीके मारेजानेका कारणहुआ फिर खलीफ़ाने मंत्रीसे कहा तीनदिनका सावकाश देताहूं इस समयान्तरमें उस गुलाम हब्शीको ला नहीं तो तूही माराजावेगा मंत्री जो छूटाथा फिर दूसरी बेर फँसा खलीफ़ासे बिदाहोकर रुदन करता हुआ अपने घरआया और समझा कि केवल तीनही दिन तक मैं जीऊंगा चौथे दिन अवश्य माराजाऊंगा क्योंकि बुग़दाद में हज़ारों और लाखों गुलामहैं क्योंकर उसका ठिकाना मिलेगा परन्तु परमेश्वरकी दयासे निराश न होना चाहिये जिसभांति उसने स्त्रीके मारनेवाले को प्रकटकिया क्या आश्चर्यहै कि उस गुलामको भी मिलादे दोदिन उसको ढूंढ़नेमें भी व्यतीतहुये तृतीय दिवस सब मनुष्य मंत्रीके घरानेके उसके चारोंओर इकट्ठे होय रोनेपीटने लगे ज़ाफ़र अपने मारेजानेपर तत्परहो अपनीस्त्री और मित्रोंसे बिदा होनेलगा

और वह भी उसके कण्ठसे लग २ बिदाहोते थे इतने में खलीफ़ाने एक प्रधान को आज्ञादी कि तीनदिन व्यतीत हुये यदि मंत्री ने उस गुलाम हब्शीको प्रकट किया तो लेआवे नहीं तो उसको मेरे सन्मुख लाओ मंत्री खलीफ़ाकी आज्ञानुकूल घरसे बाहर उस पहरे के साथ जो उसे लेनेको आया था जब वहांसे चलने की इच्छाकी कि एक उसकी बालक खिलानेवाली उसकी पुत्री पांच छः बर्षकी थी जिसको मंत्री बहुत प्यार करता था लेकर सन्मुख आई मंत्री ने पहरे के मनुष्योंसे कहा कि यदि मुझे आज्ञाहो तो इसपुत्री का प्यार करलूं यह कह उस लड़की का प्यारकरने लगा अकस्मात् उसकी छातीमें एक वस्तु गोलसी उसके वस्त्र से बँधीहुई देखी पूछा हे पुत्री! तुम्हारे पास यह क्या वस्तुहै उसने कहा बाबा यह सेबहै जिसपर हमारे बादशाह का नाम लिखाहै मैंने अपने गुलाम हब्शीको जिसका नाम रैहानहै ४) रु० को मोल लिया ज़ाफ़र मंत्री उस सेब और गुलामका नाम सुन अचम्भित हुआ और तुरन्त अपना हाथ उसके वस्त्र में डाल वह सेब निकाल लिया और उस गुलाम हब्शीको कि उसीके मन्दिर में वर्तमानथा बुलाकर पूछा सत्य कह तूने यह सेब कहांसे पाया उस ने कहा मैं आपकी सौगन्द खाकर बिनय करताहूं न तो मैंने आपके घरसे चुराया और न बादशाहके घरसे—कईदिनहुये मैंने एक गलीमें तीन चार छोटे छोटे बालकों को खेलते देख एक बालक के हाथ से जो सबसे बड़ा था और सेब हाथमें लिये था छीनकर लेभागा वह बालक रोताहुआ मेरे पीछे दौड़ा और कहनेलगा यह सेब मेरा नहीं मेरी माताका है मेरा पिता बहुतदूरकी यात्रा कर तीन सेब लाया मैं उनमेंसे एक सेब अपनी माताके पूछे बिना खेलनेको लेआया हूं वह बालक बहुत रोया परन्तु मैंने उसे न दिया अपने घरमें लाकर उसे अपनी छोटी लड़की के हाथ बेचा मंत्री ज़ाफ़रने उसकी दुष्टतापर बहुत अचम्भा किया और उसे बादशाहके सन्मुखलाया उस गुलाम ने वहीबार्ता बादशाहके सन्मुखभी प्रकटकी बादशाहको उसीका यह अपराध सूचितहुआ और उसके बचन सुन बेबशहो हँसपड़ा फिर सँभल मंत्रीसे कहा कि तेरे गुलामके कारण यह उपद्रव हुआ यही

दण्ड योग्यहै जिससे प्रजाको उपदेश हो मंत्रीने बिनयकी कि आप सत्य कहते हैं मेरे बिचारमें यही दण्डयोग्य है और इसका अपराध क्षमा योग्य नहीं परन्तु मुझे नूरुद्दीन और बदरुद्दीनहसनकी कहानी जो मिस्रके बादशाहके मंत्रीथे स्मरणहै यदि आपकी इच्छाहो तो मैं उसे वर्णन करूं वह कहानी अद्भुत और बिचित्र है उसके सुनने से आप प्रसन्नहों तो आशारखताहूं कि मेरे गुलामका अपराध क्षमाहो राजाने आज्ञादी तू उस चरित्रको कह परन्तु मैं जानताहूं तेरी वह कथा सेबोंके बृत्तान्तसे अद्भुत न होगी और तू अपने गुलामको दण्ड पाने से बचा न सकेगा फिर मन्त्री वह कथा इसभांति कहनेलगा॥

नूरुद्दीनअली और बदरुद्दीनहसन का चरित्र॥

जाफ़र मन्त्रीने अपने स्वामीके सन्मुख कहा पूर्वकाल में मिस्र का एक बादशाह अत्यन्त सामर्थ्यवान् दयावान् और दानी था जिसके भय से चारोंओर के बड़े २ बादशाह डरते और वह नाना प्रकारकी बिद्या और गुणका ग्राहकथा उस बादशाहका बड़ा प्रबीण और बुद्धिमान् एक मन्त्रीथा वह काव्य आदिक शास्त्रमें निपुणथा उस मन्त्रीके दोपुत्रथे वह अत्यन्त सुन्दर और अपने पिताके समान गुणवान्थे बड़े पुत्रका नाम शम्सुद्दीनमुहम्मदथा और छोटेका नाम नूरुद्दीनअली यह अत्यन्त बुद्धिमान् था जब वह मन्त्री कालबश हुआ तब बादशाहने उसके दोनों पुत्रोंको बुलवाय मन्त्रीकी पदवी दी और कहा तुम्हारे पिता के मरने से मुझे अति शोक भया अब चाहिये कि तुम दोनों भ्राता अपने पिताकी जगह उसके कार्य को करो वह दोनों बिदाहोय अपने घर आये एक मास पर्यन्त अपने पिताके शोकमें रहे फिर बादशाहके सन्मुख जाय राजसभाके न्याय आदि कार्योंमें जो मन्त्री के अधिकार में होतेहैं प्रबृत्तरहे जब बादशाह अहेरकी इच्छाकरता बारी२से एक भाईको अपनेसाथ लेजाता और दूसरेको राजकाजके देखभालमें छोड़जाता एकदिन सायङ्काल को कि भोरभये बादशाह बड़ेभाईको आखेटको लेजानेवाले थे वह दोनों भ्राता भोजनकर रात्रि को परस्पर बातचीत और हास्य कर रहे थे बार्त्तान्तर में बड़ेभाईने छोटेसे कहा मैं चाहताहूं जिस भांति

कि हम और तुम एक सम्मतसे एक स्थानपर रहते हैं एकही दिन एक एक सुन्दर कन्या से बिवाह करें कि जिनके माता पिता प्रतिष्ठा में समानहों इस बिषयमें तुम्हारा क्या सम्मतहै और क्या कहतेहो नूरुद्दीन ने उत्तरदिया भाई मैं आपका सेवकहूं जो आपने आज्ञादी मुझे स्वीकारहै और मेरेवास्ते उत्तमहै बड़े भाईने कहा इसके बिशेष मेरी कुछ और भी इच्छा है वह यह है बिवाह करनेके पश्चात हम दोनोंकी स्त्रियां एकही रात्रिको सगर्भहों नवमास के पश्चात् एकही दिवस वह जनें और तुम्हारे घर पुत्रहो और मेरे घर पुत्री फिर जब वह तरुणहों हम दोनों भाई उनका परस्पर बिवाह करें उसने कहा यह भी जो आपने बिचारा बहुत उत्तम है मैं इसपर प्रसन्न हूं जो परमेश्वर इसे सत्यकरे और निश्वासहै कि मेरा पुत्रभी तुम्हारी कुंवरि से प्रीति करेगा दूसरे ने कहा निस्संदेह परन्तु एक शर्त है तू अपने पुत्रकी ओर से यह वचनदे कि नियमित दहेज़ के बिशेष ६०००) रु० और तीन उत्तम बसेहुये ग्राम जागीर और तीन बांदियां दुलहिनकी सेवाकरने के अर्थ दे छोटे भाई ने कहा मुझे यह अङ्गीकार नहीं क्योंकि हम तुम दोनों भाई पदवीमें तुल्यहैं तुम जानतेहो कि पुरुषकी पदवी स्त्रीसे अधिक होतीहै तुमको चाहिये कि तुम अपनी पुत्री को बहुतसा दहेज़ दो न कि तुम हमसे लो जो कुछ कि तुम्हें करना उचितहै दूसरेके शिर डालते हो यद्यपि नूरुद्दीन ने हास्य से यह कहा था परन्तु बड़ा भाई उसका क्रूर प्रकृति था उसका बचन बहुत कटु लगा अतिरिस से उत्तर दिया कि तू अपने पुत्र को मेरी पुत्रीपर बड़ाई देता है मैं तो जानताथा तू मेरीपुत्रीकी प्रतिष्ठा करेगा इसके विरुद्ध तूने उसको अपने पुत्रकी अपेक्षा थोड़ी पदवीका समझा और तूने जो अपने को मेरी अत्यन्त पदवी के बराबर समझा यह अनुचितहै मैं अपनी पुत्रीका विवाह तेरे पुत्रके साथ कभी न करूंगा यह झगड़ा उनदोनोंका अपने बिवाहकरने और उनकी स्त्रियोंके गर्भ रहने और संतान उत्पन्नहोने के पहिले था इसमें बहुत बादानुबाद हुआ यहांतक कि बड़ेभाईने छोटेको चालाक कहा भोरहोनेदे मैं बादशाहके सन्मुखजाकर तुझे इस ढिठाई का दण्ड दिलाऊंगा जिससे

सब लोगों को बोध हो और कोई छोटाभाई अपने बड़ेभ्राताकी इस भांतिसे ढिठाई जैसे कि तूने की है न करे यहकह अपने मकान में चलागया और छोटाभाई अपने शयनालय में जाय सोरहा शम्सुद्दीनमुहम्मद दूसरे दिनके भोरको उठ बादशाहके निकटगया और वहांसे बादशाहके साथ अहेर खेलनेगया और छोटाभ्राता अपने बड़ेभाई के धिक्कार और बुराभला कहनेसे रात्रिको न सोया क्रोधमें तड़पता और तलमलातारहा और इच्छाकी कि अब भाई के साथ न रहूंगा उसने मुझे बहुत बुराकहा तब उसने एक पुष्टखच्चर पर असंख्य रत्न द्रव्य और खानेपीने की बस्तु साथलाद चलते समय अपने भृत्योंसे बहानाकर कहा कि दोतीन दिनके वास्ते कहीं जाताहूं फिर वहांसे चला जब उस नगरकी सीमाओं से बाहर निकला उसने अरबमें जानेकी इच्छाकी मार्गमें खच्चर उसका रोगीहुआ वह उसे छोड़ पैदलचला अकस्मात् हुसनानगरसे एकसवार बांसराको जाता था उसने नूरुद्दीन को पैदलदेख अपने पीछे चढ़ालिया और जब वह बांसरामें पहुँचा तो नूरुद्दीनने उतर उसकी कृतज्ञता की और उनसे बिदाहो रहनेको स्थान ढूंढ़ते आगेबढ़ा मार्गमें बड़े अमीर और सुपात्रमनुष्य को देखा कि बड़ी सजधज और धूमधामसे उसकी सवारी जातीहै और नगरके लोगोंने झुककर उसे प्रणामकिया और पंक्तिबांध खड़े रहे यहांतक कि बाज़ारसे उसकी सवारी चलीगई नूरुद्दीनने भी उसको देख सबके साथ प्रणाम किया वह बांसरा के राजमंत्रीकी सवारीथी प्रजाके भलेबुरे को देखने आयाथा नूरुद्दीनके दूसरेरूप और भलमंसी को देख बिस्मित हुआ और जब सवारी उसके समीप पहुँची उसने मुसाफ़िरोंकी भांति उसे पाया उसके पास ठहर पूछा कि तू कौनहै और किधरसे आताहै नूरुद्दीनअलीने कहा स्वामी मैं मिसरीहूं और क़ैरू देशमें मेरा निवास है किसी विषय में अपने सम्बन्धीसे अप्रसन्नहो मैंने परदेश अङ्गीकार किया अब यह इच्छारखताहूं कि निजनगरमें कभी न जाऊं और शेषआयु नगर नगर देश देशमें फिर व्यतीतकरूं उस मंत्रीने जो बृद्ध और बुद्धिमान् था नूरुद्दीनके इसबचनको सुन कहा हे पुत्र! इसइच्छाको अपने मनसे

दूरकर यात्रामें दुःख और हानिके बिशेष कदापि लाभ नहीं तुम मेरे साथचलो तुम्हारे साथ ऐसा उपकार करूंगा कि उस शोकको निपट बिस्मरणकरोगे नूरुदीनअली मंत्रीके साथगया और उसके निकट रहनेलगा वह राजमंत्री उसकी बुद्धि और चतुरता को देख उसका बड़ासत्कार करता था यहांतक कि एकदिन उसने एकान्तमें कहा हे पुत्र! अब मैं बहुत शिथिल होगयाहूं और जीनेकी कुछ आशानहीं परमेश्वरने मुझे केवल एकपुत्री अतिरूपवती दीहै अब वह बिवाहने योग्य है बहुत से भलेमानुस धनाढ्य और प्रधान उसकी चाहना रतेहैं परन्तु मैंने स्वीकार नहींकिया अब तुझे अपने प्राणसे भी अधिक प्रिय जानताहूं वह तेरेयोग्यहै यदि तू इस बातको स्वीकार करे तो मैं तुझे और बादशाहकी आज्ञानुसार उसको तुझे बिवाह दूं और अपने बदले इस देशका मंत्रीकरूं और अपनी सब बस्तु तुझे नूरुदीन उसकी कृतज्ञताकर कहा आप मेरेबड़ेहैं आपकी आज्ञा मुझे स्वीकारहै मंत्रीने उसकी खुशीपाकर बिवाहकी तय्यारी की और नगरके वासियोंको इस बिवाहके निमित्त न्योता जब सब लोग आये नूरुदीनने मंत्रीसे कहा अबतक मैंने अपनी जातिपांतिको छिपाया अब मैं उसे प्रकटकरताहूं मेरापिता मिस्रके बादशाहका राजमंत्री था मैं उसका छोटापुत्रहूं एक और मेरा बड़ाभाईहै मेरे पिताके मरनेके पश्चात् बादशाहने हमदोनों भाइयोंको हमारे पिता के अधिकार पर नियत किया सो हम यथोचित उसकार्यको करतेरहे एक दिन हम दोनों भाइयोंमें कुछ वादानुवाद हुआ मैं अप्रसन्नहो इधर को चलाआया बांसराका राजमंत्री इसबचनको सुन अत्यन्तहर्षितहुआ कि यह भी मंत्रीसुवनहै फिर उसने सभासदोंसे कहा एकबातमें मैं सम्मत पूछताहूं वह यहहै कि एकभाई मेरा मिस्रके बादशाहका मंत्री है उसने अपने पुत्र को यहांभेजाहै और मिस्रमें बिवाह उसका न किया सिवाय उसके कोई सन्तान नहीं और उसकी इच्छाहै कि मैं उसके पुत्रका बिवाहकर अपने निकटरक्खूं मुझे तो यहबात परस्पर अधिक प्रीति का कारण जानपड़तीहै तुम सब इसमें क्या कहते हो उनसबने एकमतहो कहा यहबहुत उचितहै परमेश्वर उनदोनों की

आयु दीर्घकरे निदान जब वह सब इसबातमें प्रसन्नहुये मंत्रीने सब को नानाप्रकारके उत्तम उत्तम व्यंजन खिलाये और उनका यथोचित सन्मान किया फिर प्रत्येक मनुष्यके सन्मुख मिठाई रक्खी कि यही वहांकी रीतिथी और क़ाज़ीने वहां आनकर बिवाहकिया फिर सम्पूर्ण मनुष्य उस राजमंत्रीसे बिदाहुये उक्तमंत्रीने अपने सेवकोंको आज्ञा दी कि नूरुद्दीनको स्नानागारमें लेजाय नहलाओ और उसने नाना प्रकारके बस्त्र और रत्न क़िश्तियोंमें लदाकर जैसे कि बिवाहके दिन दूल्हे को पहिनाते हैं वहीं भेजे नूरुद्दीन ने स्नान करने के पश्चात् चाहा कि अपनेबस्त्र पहिने परन्तु मन्त्रीके सेवकोंने वहीबस्त्र पहिना-कर नानाप्रकारकी सुगन्धें लगाईं नूरुद्दीन बस्त्रादिसे अलंकृत होकर मंत्रीके निकट जो उसका श्वशुरथा गया उसने हर्षसे समीप बैठाय पूछा कि तुमने सबहाल तो मुझसे कहा कि मिस्रके मंत्री के पुत्र हो और आपभी बादशाहके मंत्रीथे परन्तु एकबात तुमने अबतक नहीं प्रकटकी कि क्यों तुम निजदेश और कुटुम्ब को छोड़कर यहांआये अब हमारा तुम्हारा एकवास्ताहै और किसीभांतिका परस्परमें अ-न्तर नहीं नूरुद्दीनने अपना बृत्तान्त बिस्तारपूर्बक जैसा कि उनदोनों भाइयोंमें तकरार हुईथी मंत्रीसे कहा मंत्री यहसुन बहुतहँसा और कहा केवल इतनीही बातके वास्ते तुमदोनों भाइयोंमें बादहुआ यह निपट बिचारहीथा कहां तुम्हारापुत्र और कहां तुम्हारे ज्येष्ठभ्राताकी बेटी जिनका बिवाह उन प्रतिज्ञाओं पर होता तुमने निजदेश को छोड़ा परन्तु तुमने केवल हास्यमें कहाथा इस बिषयमें तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राताकी अधिकता जानपड़ती है इसविषय में तुम्हें परदेश जाना उचित न था परन्तु मेरे प्रारब्धमें था कि तुम ऐसा कुलीन और उच्च जातिका मनुष्य मेरा दामाद हो इसीकारण तुम्हारेमन में यह उपजी और इस नगरमें आये अब देर न करो अपनी दुलहिन के समीप जाओ वह तुम्हारीराह देखतीहोगी कल मैं तुमको बादशाहके समीप लेजाऊंगा मुझे बिश्वासहै कि तुम्हारीभेंट हुतेही वह तुमपर प्रसन्न होगा जिससे हमदोनोंको हर्षहो नूरुद्दीन अपने श्वशुरसे बिदाहोकर अपनी दुलहिनकी शय्यापरगया अब शम्सुद्दीन नूरुद्दीन के ज्येष्ठ

भ्राताका भी वर्णन कियाजाताहै जो शिकारको गयाथा एकमास पर्यन्त वह बादशाह के साथ और खेलतारहा जब वह आया और नूरुद्दीनके भवनमें गया तो उसे उसके सेवकोंसे विदितहुआ कि वह उसदिन दोदिनके वास्ते कहींगया शम्सुद्दीनको बड़ाशोक हुआ और जानलिया कि मेरे कठोर बचन से वह अवश्य अप्रसन्नहोकर किसी ओरको निकलगया उसने चारोंओर उस के ढूंढ़ने के लिये मनुष्य दौड़ाये वह दमिश्क और लब पर्यन्त होआये कहीं उसका ठिकाना लगा क्योंकि वह सरामें था फिर दूरदूरके देशों में भी ढूंढ़हुई वहांपरभी न मिला निदान हारमान शम्सुद्दीनने बिवाहका बिचार किया संयोग बश उसीदिन और उस मुहूर्तमें कि जिसमें नूरुद्दीनका विवाह हुआथा उसने अपनाबिवाह एक प्रतिष्ठित मनुष्यकी कन्या के साथ किया और अद्भुत यह कि नवमास ब्यतीत होने के पश्चात् शम्सुद्दीन के घरमें कन्या और नूरुद्दीन के घरमें पुत्रहुआ जिसका नाम उसने बदरद्दीनहसन रक्खा बांसराका मन्त्री नवासे के होनेसे अत्यन्त हर्षितहुआ छठीके दिन बड़ी धूमधामकी और अपने सेवकों आदिको पारितोषिक दिया कुछ कालके पश्चात् इच्छाकी कि अपने दामाद नूरुद्दीनको बादशाह के सन्मुख लेजाय उसे अपना अधिकार दिलाये जब वह उसे पहिले बादशाहके सन्मुख लेगयाथा बादशाह उसे योग्य और बुद्धिमान् और गुणवान्पाके और बहुतसे मनुष्योंसे उसकी प्रशंसासुन बहुत खुशहुआथा सो निजपुराने मन्त्री की चाहनानुसार राजमन्त्रीका अधिकार नूरुद्दीनको दिया दूसरेदिन मन्त्रीने अपने दामादको देखा कि उसने निजसम्बन्धित न्याय के कार्यको भलीभांति किया अत्यन्त हर्षित हुआ और नूरुद्दीनअली राजसभामें सदैव प्रवृत्त रहनेलगा और प्रत्येक मनुष्य को अपनी शीलता और मिलनसारीसे ऐसा प्रसन्नरखता कि सबछोटे बड़े उस को आशीर्वाद देते थे जब इसी भांति उसे चार बर्ष ब्यतीतहुये खुसरो नूरुद्दीन शिथिलता और बृद्धता के कारण कालवश हुआ नूरुद्दीनअली ने रोना पीटना और शोक वहां की रीत्यनुसार भली

के पढ़ाने और उपदेशार्थ बड़े २ गुणवानोंको नियत किया जो बद-रुद्दीन अतिकुशलबुद्धि था कुछसमय में उसने कलामअल्लाह मुखाग्र करली और द्वादश वर्ष की अवस्था में सम्पूर्ण विद्या पढ़ली और वह ऐसा सुन्दरथा कि उसे सबलोग देख प्रसन्नहोते और आशीर्वाद देते फिर जब वह राजदरबार तथा मंत्रीकार्य में निपुण हुआ नूरु-द्दीन उसे बादशाह के सन्मुख लेगया उसने ऐसी सुबुद्धि से प्रणाम किया कि बादशाह प्रसन्नहुआ और उसपर परमअनुग्रहकी पिता उसकी निपुणता और गुणवानता से अत्यन्त प्रसन्न रहता और स-दैव उसे उपदेश किया करता जब वह समय आया कि उसके कार्य से कुछलाभ हो अकस्मात् नूरुद्दीनअली रोगीहुआ और धीरे धीरे मरनेके निकट पहुँचा अन्तसमय अपने पुत्र बदरुद्दीनहसनको बु-लवाकर उपदेशकिया कि यह संसारअसार त्यागनेयोग्यहै मेरे मरने पर रुदन न करना और सन्तोष रखना जैसा कि तुम्हारी जाति में है और तुमने अपने गुरुओंसे भी पढ़ाहै और उन सबको भलीभांति जानतेहौ अब मैं थोड़ीसी बातें तुमको बताताहूं और कुछ उपदेश क-रताहूं विश्वासहै तुम मेरे उपदेशानुसार मेरे पीछे करोगे प्रथम यह कि मैं मिस्रका बासीहूं मेरा पिता वहांके बादशाह का राजमंत्री था मैं और मेराभाई शम्सुद्दीन मुहम्मद नामी जो अबतक जीताहै हम दोनों मंत्री उसी बादशाहके थे कोई ऐसा कारणहुआ कि मैं स्वतः अपने भाईसे अलगहोकर यहां आया और यहीं मंत्रीकी पदवीपाई फिर उसने जेबीक़लमदान खोल एक काग़ज़को जिसको वह सदैव अपने समीप रखताथा निकालकर बदरुद्दीनहसन को दिया और कहा अवकाश पा इसको पढ़ना तुमको इसका वृत्तान्त भलीभांति विदित होगा सबबातोंके विशेष तुम मेरे विवाह और अपने उत्पन्न होनेकी तिथिपाओगे तुम इसपत्रको रक्षापूर्वक रखना बदरुद्दीनहसन अपनेपिताको मृत्युके निकटदेख अत्यन्तशोकवान् हुआ और उस पत्रको ले प्रणकिया कि इसेकभी अपनेपाससे अलग न करूंगा फिर नूरुद्दीनअली ऐसाबेसुधहोगया जिससे विदितहुआ कि वह मरगया थोड़ी देर के पश्चात् फिर उसने सुधि सम्हाली और अपने पुत्र

बदरुद्दीनको यह उपदेशकिया प्रथम—यह कि तुम किसीसे मित्रता न करना और न किसीसे अपना भेद कहना द्वितीय—किसी मनुष्यपर अन्याय न करना कि वह तुमसे बैर और डाहरक्खे तुमसमझो कि यहसंसार देनेलेनेकी जगहहै जैसा कि तुम किसीके साथ बुराई व भलाई करोगे तुमको भी उसकाबदला भोगना पड़ेगा तृतीय—यह कि तुम ऐसावचन न कहना जिससे लज्जा उठानीपड़े और बहुत वार्त्ता न करना कि बहुबाची सदैव लज्जा उठाताहै और गंभीर बहुधा अनेक दुःखोंसे बचताहै इनबातोंको सदा करना बुद्धिमानोंका बचनहै कि गंभीरता प्रतिष्ठाकी बचानेवाली और प्राणकी रक्षाकरनेवाली होतीहै जो मनुष्य थोड़ाबोलताहै लज्जा कदापि नहीं उठाता और जो बहुत बकताहै वह पीछेसे कष्टपाताहै चतुर्थ—यह कि मद्य न पीना कि बुद्धिकी नष्टताका कारणहै पंचम—यह कि सर्वदा किफ़ायतकरना क्योंकि जो तुम बहुत ख़र्चकरोगे तो तुरन्त निर्धन होजाओगे मेरा प्रयोजन यहहै कि न तो इतना ख़र्च करना कि निर्धन होजावो न इतना न्यून कि तुम्हें लज्जा प्राप्तहो सर्वदा सम रहना चाहिये क्योंकि जब तुम्हारे निकट द्रव्यरहेगा सब मित्र तुमको घेरे रहेंगे और जो ख़ालीहोगे तो तुमसे कोई बातभी न पूछेगा न कोई तुम्हारे समीपआवेगा निदान श्वास निकलने पर्यन्त नूरुद्दीन अपने पुत्र बदरुद्दीन को उपदेश करतारहा जब वह मरगया बदरुद्दीन ने बड़ी धूमधामसे उसके शोककी रीतिकी इतनी कथाकह रानीशहरज़ादने बादशाह शहरयार से कहा कि ख़लीफ़ाहारूंरशीद यहांतक इसकहानीको सुन अतिप्रसन्न हुआ फिर जाफ़रमंत्री कहनेलगा कि नूरुद्दीनके मरनेके पश्चात् सबलोग बदरुद्दीनको बांसराई कहनेलगे क्योंकि वह उसीनगरमें उत्पन्नहुआ था बदरुद्दीनहसन उसदेशकी रीत्यनुसार एकमास पर्यन्त अपने पिताके शोकमें ऐसाबैठा कि किसी से न मिलताथा इसीकारण राजसभामें न गया किन्तु द्वितीयमास भी उशीदशामें ब्यतीतकिया इस बेपरवाहीसे बादशाह अप्रसन्नहुआ और उसके स्थानपर किसी अन्य मनुष्य को अपनामंत्रीकर काम लियाकरता एकदिन अपने नवीन मंत्रीको बुलाकर आज्ञादी कि

प्रथम मंत्रीका मन्दिर धन आदि छीनले और बदरुद्दीनहसन को क़ैदकर मेरेसन्मुख तुरन्त लावो नवीनमंत्री बादशाहकी आज्ञानुसार सेनासाथ लेचला एक बदरुद्दीनका सेवक मार्गमें यहदशा देख दौड़ आया और बदरुद्दीनहसनके निकट घबरायाहुआ पहुँचकर उसके चरणोंपर गिरपड़ा और उसके वस्त्रको चूमकहा स्वामी शीघ्र यहांसे भागजावो बदरुद्दीनहसनने उसके शिरको अपने चरणोंसे उठाकर पूछा कुशलतो है उसने उत्तरदिया अब कहने सुननेका अवकाश नहीं बादशाहने क्रोधितहो तुमको पकड़ने और सम्पूर्ण तुम्हारा द्रव्यहरने को सेना भेजीहै बदरुद्दीन उस अपने हितैषी सेवककी बातसुन घबरा गया और कहनेलगा इतनाअवकाश है कि कुछ धन वा रत्न अपने साथलूं उसनेकहा इससमय किसी बस्तुका बिचार न कीजिये केवल यहांसे बच भागजाइये मंत्री आपके घरके समीप पहुँचचुका क्षण-मात्रमें यहां आया चाहताहै बदरुद्दीन इसबातको सुन वहांसे उठा और जूती पांवोंमें पहिनकर अपनेवस्त्रसे अपनामुख छिपाया कि कोई उसे न पहिचाने और परमेश्वर पर भरोसारख एकओरको चला प-रन्तु इतनी चतुराईकी कि भवनके दूसरे दरवाज़ेसे होकर तुरन्त क़ब-रिस्तानको चला जाते जाते सूर्यास्त होजानेसे अँधियारा होगयाथा वह अपने पिताकी क़बर में कि बहुतबड़ी थी और उसे नूरुद्दीन ही बनवा गयाथा पहुँचा अकस्मात् वहां एक यहूदी व्यापारीसे भेंटभई वह यहूदी बदरुद्दीनको पहिचानकर ठहरगया और बड़ी प्रतिष्ठासे उसे नम्रतापूर्वक प्रणामकिया और हाथचूमा फिर आश्चर्यकर कहने लगा कि रात्रिको अकेले कहां जातेहो वह कौनसा ऐसा कार्यहै कि तुमने इतनाश्रमकिया बदरुद्दीनहसनने उत्तरदिया मैंने अपने पिता को स्वप्नमें देखा कि मेरीओर अप्रसन्नतासे दृष्टिकरताहै उसको मुझ से कुछ क्रोध है यहां तक कि मैं जगकर उठ वहांसे अकेला दौड़कर यहांआया उस यहूदीने उसके बचनका बिश्वास न कर कहा तुम्हारा पिता बड़ाप्रतापवान् व शीलवान् और मेरा स्वामी था कई जहाज़ असबाब के लदेहुये स्थान २ परगये हैं और अभीकोई यहां नहीं पहुँचा अब तुम उस असबाबके स्वामीहो यदि जहाज़का असबाब

जो प्रथमही इस नगर में पहुँचे मेरे हाथ बेंचो तो मैं इसीसमय आप को ६०००) रु० देता हूं और एक तोड़ा उसके सन्मुख रख दिया बदरुद्दीनने उस दशामें कि केवल एक नाक और दोकान के सिवाय कुछ न रखताथा इतने रुपयेको परमेश्वरके देनसे समझा हर्षपूर्वक इसको अंगीकार किया फिर यहूदीने कहा आपने अपना माल प्रथम जहाज़का जो इस नगर में पहुँचे ६०००) को बेंचा बदरुद्दीनहसनने कहा उसको मैंने अपनी खुशी से तेरेहाथ बेंचा यहूदीने तोड़ा उस के हाथमें देकर कहा हे स्वामी ! यद्यपि मुझे आपके कहनेपर बिश्वास है परन्तु लिखतम लिखदीजिये कि औरों के निकट सनदहो बदरु-दीनहसन ने कहा बहुत अच्छा फिर उस यहूदी ने अपनी कमर से मसि और लेखनी और कागज़ निकाल सामने रखदी बदरुद्दीन-हसनने उसमें लिखा बदरुद्दीनहसन बांसराईने अपने प्रथम जहाज़ की बस्तुको ६०००) रु० पर इसहाक़ यहूदीके हाथ बेंचा और नीचे अपने दस्तखतकर यहूदी को दिया यहूदी वह ले चलागया और बदरुद्दीनहसन सीधा अपने पिताकी क़बरपर गया और रोकर कहने लगा अभी मेरे प्रिय पिताके मरनेका शोक मेरे हृदयसे न गयाथा कि इस अन्यायी बादशाह ने मेरे घरबारको छीन लिया और मेरे पकड़ने की आज्ञा की अब मैं भागकर यहां आया हूं कि मैं उसके हाथ से छूटूं इसी भांति देरतक रोता और बातें करता रहा निदान उसी दशामें वहां सोगया एकक्षण न हुआथा एकपिशाच कि वहां पर रहताथा और रात्रिको सैरके निमित्त वहां फिराकरता बदरुद्दीन-हसनको वहां पड़े देख उसके रूप अनूपपर मोहितहुआ और कहने लगा यह देवता जान पड़ता है कि अभी परमेश्वर ने इसे स्वर्ग से संसार के प्रकाश के लिये भेजाहै क्योंकि मैंने अबतक और किसी मनुष्यको ऐसा सुन्दर नहीं देखा फिर जब उसे मन भरके देखचुका वहां से उड़कर बायु में एक अप्सरा से मिला और परस्पर प्रणाम किया फिर उस पिशाचने उस अप्सरासे कहा मेरे साथ पृथ्वीपर उतर मैं तुझे एक सुन्दर मनुष्यको कि उस क़बरपर सोताहै दिखाऊं उसके देखनेसे तू प्रसन्नहोगी वह अप्सरा चलनेको तत्परहुई फिर वह दोनों

क्षणमात्र में वहां आपहुँचे पिशाचने उसे बदरुद्दीनहसन को दिखा-कर कहा सत्य कह तूने कहीं ऐसा रूपवान् मनुष्य देखाहै अप्सराने ध्यान धरदेख कहा वास्तवमें यह मनुष्य महास्वरूपवान्है परन्तु मैं केरू में एक अद्भुत चरित्र देख आईहूं यदि तू सुनाचाहे तो बर्णन करूं पिशाचने उत्तरदिया जो तू उस कहानी को सुनावेगी तो मुझे अत्यन्तहर्ष होगा अप्सराने उस बृत्तांतको इसभांति बर्णन किया कि मिसरके बादशाह का एक मंत्री है जिसका नाम शमसुद्दीन मुहम्मद है उसकी एक लड़की बीस बर्षकी अतिसुन्दरी है बादशाह ने उसके रूप अनूप की प्रशंसा सुन मंत्री से कहा कि अपनी पुत्रीका बिवाह मेरे साथकर मंत्रीने अंगीकार न किया और अत्यन्त शोचकर बाद-शाहको उत्तरदिया आपकी इच्छा मुझे स्वीकार नहीं क्योंकि आप कोभी बिदित होगा कि मेरा एकभाई नूरुद्दीनअली नामक है प्रथम वह भी मेरे समान आपका मन्त्री था बहुत दिनसे वह कहीं चला गयाहै अबतक उसका समाचार बिदित नहीं परन्तु पांच चार दिन ब्यतीत होते हैं मैंने सुना कि वह बांसराका मन्त्री होगया था अब वह पुत्र छोड़ मरगया और प्रथम से हम दोनों भाइयों में प्रण हो-चुकाहै कि हम दोनोंकी सन्तानमें परस्पर बिवाहहोगा मुझे बिश्वास है कि उसने अन्तसमय इस विषय में अपने पुत्रको उपदेश किया होगा अब अवश्यहै कि उसके अन्तकालके उपदेशको करें परमेश्वर के वास्ते आप मुझे इस बातसे क्षमाकीजिये इस नगरमें बहुतसे मेरे समान प्रतिष्ठित सुन्दर लड़कियां रखते हैं उनसे आप बिवाहकीजिये बादशाह इस बातको सुन अत्यन्त अप्रसन्न हुआ और क्रोधित हो-कर कहा तूने मुझे बहुत तुच्छ समझा इस तेरी ढिठाईसे देख तुझे कैसा दण्ड देताहूं और मैंने प्रतिज्ञा कीहै कि तेरी कन्या महाकुरूप सेवक को ब्याहदूंगा यह कह मन्त्रीको बिदाकिया वह अत्यन्तशो-चित होय अपने घरमें आया उसी दिन बादशाहने अश्वपालकों में से एक गुलामको जो बहुतही बदसूरत और कुबड़ा और पेट उसका बहुत बड़ा और पांवटेढ़े मिरगीवाले रोगीके समानथे बिवाहके नि-मित्त नियत किया और मन्त्रीको कहलाभेजा कि अपनी पुत्री के बि-

वाहकी सामग्री तय्यारकर और क़ाज़ीको साक्षियोंसहित बिवाह क-
रनेको बुला मन्त्री ने अतिग्लानि से बादशाहकी आज्ञा पालनकी
रात्रिको मिसरनगर के ग़ुलाम इकट्ठे हुये और मशालें हाथों में ले
स्नानागार के किवाड़ पर उस कुबड़े के आनेकी आट देखतेरहे कि
उसे स्नानागार में लेजाय नहलाधुला दूलह बनाकर मन्त्री के घर
ब्याहने को लेजावें इतना कह उस अप्सराने कहा अब वह उसे दू-
लह बनारहे हैं मैंने जाकर देखा कि उस लड़कीको भी नहलाधुला
उस कुबड़े के वास्ते दुलहिन बनायाहै परन्तु पश्चात्ताप है कि वह
मन्त्रीकी कन्या ऐसी रूपवती ऐसे अयोग्य भयानकरूप मनुष्य के
साथ बिवाही जावे जब वह अप्सरा इस बृत्तान्तको कहचुकी पिशाच
ने कहा क्या अच्छी बातहै कि मन्त्रीकी लड़की ऐसी सुन्दरी रूपवती
इस नवकिशोर के साथ बिवाही जावे अप्सराने कहा मैंभी यही चा-
हतीहूं कि बादशाहके अन्यायसे बचाय और कुबड़ेको धोखादे उसी
जगह इस मनुष्यको बिठाऊं और बादशाहके व्यर्थ क्रोधका बदलालूं
कि उस दुलहिन और उसके पिताको लज्जा प्राप्त न हो और उस कु-
बड़े के बिवाहसे उसकी जाति पांति में अप्रतिष्ठा न हो पिशाच ने
अप्सरासे कहा यदि तूभी इस कार्य में मेरी सहायताकरे तो होसक्ता
है मैं इसके जागने के पहिले इसे यहां से उठाय कैरू में लेजाता हूं
तब पिशाच और अप्सरा दोनों इस कार्य में उद्यतहुये सो पिशाच
बदरुद्दीनहसन को धीरे से उठा उसी स्नानागारके समीप जहां वह
कुबड़ा ग़ुलामों के साथ स्नानको आयाथा लेगया जब बदरुद्दीनह-
सन जगा अपनेको एक समूहमें पा भयवान्हो इच्छा की कि चिल्लावें
परन्तु पिशाचने कन्धेपर उसके हाथरख समझाया कि तू न बोलियो
चुपकाहोरह और एक मशालको हाथमें ले इस समूहके साथ होले
और मन्त्रीके भवनमें जाय जहां सब बिवाह करनेजाते हैं तूभी बेध-
ड़क चलाचल और उस कुबड़ेके दाहिनीओर " जिसका बृत्तांत तुझे
अभी बिदित होगा " होकर निर्भय सभामें जा और मुट्ठी २ रुपये अ-
पनी थैली से निकाल गाने बजानेवालोंको जो दूलहके साथ जावेंगे
दीजियो और सभामें पहुँचकर उन बांदियोंको जो दुलहिनके चारों

ओर होंगी बहुत द्रव्य दीजियो चैतन्यरह अपनी थैली में कुछ न रखियो और जो मैं कहता जाऊं वही कीजियो और किसीसे भयभीत न हूजियो बद्रुद्दीन उस पिशाचसे यह बातें सुन और भले प्रकार स्मरणरख स्नानागारके दरवाज़ेपर गया और पहिले उसने गुलामों के समान अपने हाथमें मशाल लेली और उस समूहमें ऐसा मिला कि कैरूके बासियों में जान पड़नेलगा और उन सबके साथ कुबड़े के पीछे स्नानागारसे नहाकर बाहर निकला और बादशाहके घोड़े पर सवारहोके चला जब गाने बजानेवालों के निकटपहुँचा तो एक मुट्ठी २ भर रुपये उनको देनेलगा जिससे वह सब प्रसन्न हुये और उसके रूपअनूपको देख अत्यन्त आश्चर्यमें हुये निदान इसीभांति देता लेता मंत्री शमसुद्दीन अपने चचाके द्वारपर पहुँचा तब चोबदारोंने सबको भीतर जाने न दिया तथा बद्रुद्दीनकोभी बर्जा परन्तु गाने बजानेवालोंने जिन्हें कोई न रोंकसक्ता था धनके लोभसे बद्रुद्दीनहसनकी ओर सैनकर कहा इस मनुष्यको क्यों रोंकतेहो यह गुलाम नहीं किन्तु अन्यदेशका बासीहै इस नगरमें बरात देखने आया है यह कह उन सबों ने बद्रुद्दीनहसन का हाथ पकड़ अपनी ओर खींचलिया और अपने साथ महलमें लेगये और मशाल उसके हाथ से ले और सभामें लेजाय दूल्हेके दाहिनी ओर जो तख़्तपर दुलहिनके बराबर बैठाथा बैठाया यद्यपि वह दुलहिन अतिसुन्दरी अप्सराके तुल्यथी परन्तु शोकके कारण मुरझाई हुई दिखाई देती थी उस समय मिसरकी स्त्रियां और बांदियां मोमी मशालें हाथोंमें लिये हुये आईं और उस कुबड़े का कुरूप देख एकमत होय कहनेलगीं कि हम इस दुलहिनको इस मनुष्य अर्थात् बद्रुद्दीनहसन को देंगी इस कुरूप कुबड़े को और बादशाह के इस बिचार को जिसने चाहा था कि रूपवती स्त्रीके साथ कुरूप मनुष्य बिवाहाजावे उसका कुछ न भयकिया इसी बार्त्ता में ऐसा शब्द किया कि गाना बजाना बन्द होगया क्षणमात्रमें डोमनियां और गाने बजानेवालियां दुलहिनको वस्त्र पहिनानेलगीं अब यहां उल्थक लिखताहै—बुद्धिमानोंको प्रकट हो कि मुख्य अरबीभाषाकी पुस्तकमें इस स्थानपर एकसौ दो रात्रि

नम्बर१७ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ै २२८

चित्रपिशाच का बदरुद्दीन को परी के साथ ले जाते हुये.

ब्यतीतहुई और अन्तिम दो रात्रि इसी राग रंग की सामग्री के ब-र्णनमें बीतीं सो अंगरेज़ी भाषाके उल्थक ने उनको छोड़दिया इस वास्ते इस पुस्तकमें कि अंगरेज़ी भाषा से सलिल उर्दू में उल्थाहो-कर भाषान्तर हुई है छोड़दियागया—निदान डोमनियोंने सात जोड़े सातप्रकार के शम्सुद्दीन मंत्री की पुत्रीको प्रत्येक रागपर पहिनाये जब उस देशकी रीत्यनुसार दुलहिन जोड़े बदलचुकी तब और स्त्रियों के सहित अपने स्थान अर्थात् कुबड़े दूल्हे के निकट से उठ और ग्लानिपूर्वक दृष्टिसे उसे देख बदरुद्दीनहसनके निकट जाबैठी बदरु-द्दीनहसन उस पिशाचके उपदेशानुसार उन बांदियों और गानेवा-लियोंको अपनी थैली से निकाल मुट्ठी भर भर रुपये देता रहा वह प्रसन्नहोय एक दूसरी को झिड़क झिड़ककर चुनने में लगीं और आशीर्वाद देतीथीं और परस्पर यह सैनसे बतलातीथीं कि यह दूल्हा मंत्रीकी पुत्रीके योग्यहै और यह कुबड़ा कुरूप मंत्री कुँवरि के योग्य नहीं और महलके सेवकोंमें भी यही वार्त्ता होती थी वह कुबड़ा कुछ तो उनकी बातें सुनता और कुछ नहीं क्योंकि हज़ारों नक़लकर उसे रिझा रक्खाथा फिर जब यह रीति वस्त्रबदलनेकी होचुकी और गाना वजाना वन्दहुआ तब उन्होंने बदरुद्दीनहसनको सैनकी कि खड़ाहो उसके खड़ेहोनेसे सम्पूर्ण भवनके मनुष्य उस स्थानसे चलेगये और दुलहिन अपने मकानमें गई तब बांदियों ने रात्रि के वस्त्र दुलहिन को पहिराये उस स्थानपर केवल बदरुद्दीनहसन और कुबड़ा और बांदियां रहगईं कुबड़ेने क्रोधकी दृष्टिसे बदरुद्दीनकी ओर देखकर कहा तू क्यों यहां ठहराहै और यहां से चला नहीं जाता बदरुद्दीनहसन उसके क्रोधितबचन सुन घबराया और वहांसे चलेजानेकी इच्छाकी पिशाच और अप्सराने उससे कहा तू कहां जाताहै ठहर कुबड़ेको हम यहां से निकालदेते हैं तू दुलहिन के निकटजा और उससे कह तेरा पति मैं हूं बादशाहने हास्यसे कुबड़ेको दूल्हाबना यहां भेजाथा उसके वास्ते कुछ भोजन अश्वशालामें भेजो और दुलहिनको अपने साथ मिलालो दुलहिन तुझे देख बहुत प्रसन्नहोगी तुम कुछ कुबड़ेका भय न करो उसको अभी दूरकरते हैं निदान जब अप्सराने बदरुद्दीन को

इस भांतिकी शिक्षासे दृढ़किया तो वह उसी स्थानपर ठहरा और वह कुबड़ा मलिन वहांसे भागा क्योंकि पिशाच बिल्लीबन ऐसी तीक्ष्णदृष्टि से देखने और घुर्रानेलगा जैसे सिंह अपने भक्ष्यको देख नाद करताहै कुबड़ा उसे धमकाकर दोनों हाथों से बड़े बेग से मारनेलगा कि वह डरकर भागजावे परन्तु वह बिल्ली उसकी ओर घूरने लगी और नेत्र अंगारोंके समान लालकिये और प्रथमसे अधिक शब्द करनेलगी और इतनी फूली और बड़ीहुई कि गधेके समान होगई तब वह कुरूप देख डरा और भागजानेकी इच्छाकी इतनेमें वह पिशाच बहुत बड़ा भैंसा बन डकारनेलगा और बड़ा शब्दकर कहा हे कुबड़े! कहां भाग जावेगा खड़ारह कुबड़ा भयसे पृथ्वीपर गिरपड़ा और अपना मुख बस्त्रमें छिपालिया कि उस बिकराल भैंसे का स्वरूप दृष्टि न पड़े और अतिनम्र होय गिड़गिड़ाके कहनेलगा हे महिषराज! मुझे क्या आज्ञाहै भैंसेने उत्तर दिया तुझे इतनी शक्तिथी कि मेरी स्त्रीके साथ बिवाह करनेको आया कुबड़ेने उत्तरदिया हे स्वामी! मेरा अपराध क्षमा कीजिये मुझे विदित न था कि यह सुन्दरी तुम्हारी प्यारी है महिषने कहा तू यहांसे सूर्योदयपर्यन्त न जाइयो चुपका यहां पड़ारह दिनहोतेही इस स्थानसे चलेजाइयो और फिरके इस ओर न देखियो नहींतो अपने दोनोंसींग तेरे उदरमें चुभोकर मारडालूंगा तदनन्तर महिष वह शरीर त्याग मनुष्य बनगया और उस कुबड़े की टांगें उठा शिर नीचेकर दीवारके साथ खड़ाकरदिया और कहा जो तू भोरपर्यन्त हिला और इसीभांति खड़ा न रहा तो तुझे इसी दीवारके साथ रगड़डालूंगा फिर वह पिशाच और अप्सरा दोनों चलेगये और बदरुद्दीन अतिहर्षसे दुलहिनके मकानमें गया उस समय एक बृद्धा उसे कहीं एकान्तमें लेआई और दूल्हेसे कहा भैया इस दुलहिन के साथ संसारीब्यवहार बर्तना इतना कह उस मकान का द्वार बन्दकर उसमें ताला लगा चलीगई वह दुलहिन बदरुद्दीनको पाकर अत्यन्त प्रसन्नहुई और पूछा तुम मेरे पतिके साथियोंमें से हो बदरुद्दीनहसन ने उत्तरदिया मैं कुबड़ेका साथी नहीं किंतु तेरा पतिहूं प्रथम बादशाह ने चाहाथा कि अपना बिवाह तुम्हारे साथकरे परन्तु तेरे पिताने उसे

पिशाच का डरावनी सूरत बनाना.

स्वीकार न किया बादशाहने क्रोधितहो प्रकटमें हास्यसे कुबड़ेको नियत किया कि उसकेसाथ बिवाहहो परन्तु वास्तवमें मुझे कि मैं तुम्हारा सजाती हूं बिवाहके निमित्त भेजा है तुमने देखा कि सम्पूर्ण मनुष्य उससे हास्य करतेथे अब मैंने उसे फिर अश्वशालामें भेजदियाहै तुम धैर्यरक्खो वह तुम्हें दिखाई न देगा मन्त्रीकुँवरि जो चिन्तामें थी इस बचन को सुन और अपने भर्ता को सुन्दर देख अत्यन्त प्रसन्न और हर्षितहुई और कहनेलगी कि मैं अत्यन्त शोच बिचारमें थी कि सम्पूर्ण आयु मेरी दुःखमें उस कुबड़ेके साथ कटेगी परन्तु परमेश्वर का धन्यवादहै कि उससे मुझे बचाकर तुम्हारे साथ बिवाह किया यह कह वह बदरुद्दीनके साथ सोरही बदरुद्दीन भी उसके रूप अनूपको देख हर्षितहुआ और अपने वस्त्र और थैली सहित जिसे असहाक़ यहूदी से पायाथा एक चौकी पर उतार रखदिया इतनी दातव्य पर भी वह थैली उसीभांति द्रव्यसे भरीरही यह केवल पिशाच की मन्त्रबिद्या थी फिर पगड़ी भी शिरसे उतार रात्रि का मुकुट पहिनलिया और केवल एकतंग पायजामा और मिरज़ई पहिनकर अपनी दुलहिन के साथ सोरहा जब कुछ रात्रि शेष रही तब वह पिशाच फिर उस अप्सरासे मिला पिशाच ने कहा भोर होने के पहिले उस मनुष्य को सोतेहुये वहांसे उठाकर किसी अन्य देशमें पहुँचादे सो अप्सरा ने धीरेसे दूल्हे को दुलहिनके समीपसे उठाय दमिश्क़नगर की जामा मसजिदपर लेजा लिटादिया और आप पिशाचसहित वहांसे चली गई जब वहांकेबासी भोरके तड़केकी अजां सुनकर नमाज़ पढ़ने आये इसको रात्रिके वस्त्र पहिने देख अत्यन्त बिस्मित हुये किसीने कहा कि यह अपनी स्त्री से रूठके आया है इतना अवकाश न पाया कि कपड़े पहिनता दूसरेने कहा कि यह पुरुष सम्पूर्ण रात्रि अपने मित्रों के साथ मदिरा पीतारहा अब मदमत्तहो यहां आपड़ाहै और निद्रा वशहो अचेत पड़ाहै तीसरा और कुछ कहता परन्तु किसी को ठीक बिदित न हुआ कि वह क्योंकर यहां आया वह कुछ मनुष्यों की चिल्लाहट और कुछ ठंढी हवा चलनेसे जगा और मनुष्योंको अपने चारों ओर देख आश्चर्य में हुआ और अपने को एक मसजिद के

निकट जिसे कभी न देखाथा पाया अत्यन्त विस्मितहो नेत्र खोल उन से पूछा कि मुझे बताओ मैं कौनहूं और तुम क्यों मेरे चारोंओर इकट्ठे होकर क्या बार्त्ताकरतेहो एक मनुष्यने उस समूहमेंसे कहा हे मित्र! हमने तो अभी तुझे देखाहै और क्या तू नहीं जानता यह दमिश्क़ की मसजिदका दरवाज़ाहै बदरुद्दीनहसनने कहा वाह परमेश्वरकी माया कल मैं कैरूमें सोयाथा भोरको क्योंकर दमिश्क़में पहुँचा इस बचन को सुन बहुधा मनुष्योंने कहा यह मनुष्य दया करने के योग्यहै कि ऐसा सुन्दर पुरुष सौदाईहो और ऐसी बहँकी बातेंकरे उनमें से एक बृद्धने कहा हे पुत्र! तुम क्या कहतेहो ऐसा नहीं होसक्ता कि रात्रिको तुम कैरूमें हो और भोरको दमिश्क़में बदरुद्दीनहसनने कहा मैं सत्य कहताहूं कल भोर को मैं बांसरेमें था इस बचनके सुनतेही सम्पूर्ण मनुष्य ठट्ठामार हँसने और बड़ाशब्दकर कहनेलगे क्या तू बिक्षिप्त वा निर्बुद्धिहै वा इसमें कुछ गुप्तभेदहै बड़ा पश्चात्ताप इसकी तरुण अवस्था पर है ऐसा उत्तम मनुष्य बिक्षिप्त होजावे फ़िर एकने कहा यह बात क्योंकर होसक्तीहै कि तुम कहतेहो एक मनुष्य उसी रात्रिको कैरू में और उसके भोरको दमिश्क़में जानपड़ताहै अभीतक तुम सोतेहो यह स्वप्नअवस्थाकी तुम्हारी बार्त्ताहै बदरुद्दीनहसनने उत्तरदिया कि यह बात सत्यहै कल रात्रिको मेरा बिवाह कैरूमें हुआ यह सुन मनुष्य अधिक हँसनेलगे फ़िर उसी मनुष्यने कहा तूने अवश्य स्वप्न देखाहै अभीतक तेरा वही बिचार है बदरुद्दीनहसनने कहा मैंने स्वप्न नहीं देखा कल रात्रिको मेरी दुलहिनको सात प्रकारके बस्त्र पहिनायेगये और उस स्थानपर एक कुरूप कुबड़ाभीथा उन्होंने चाहा कि उसका बिवाह उसी दुलहिन से करें मैं अत्यन्त बिस्मितहूं कि मेरे बस्त्र पगड़ी और धनकी थैली कैरूमें मेरे साथथी क्या हुई यद्यपि वह इन बातोंको ऐसा कहताथा कि बिश्वासहो परन्तु किसीको बिश्वास नहीं आताथा और हँसतेथे निदान जब बदरुद्दीन अपना बृत्तान्त कह चुका तब वहांसे उठ नगरकी ओर गया उसके पीछे मनुष्य कहते जातेथे कि यह मनुष्य बिक्षिप्त है इस शब्द को सुन और बहुत से मनुष्य चारोंओर द्वारोंपर खड़ेहोके उसको देखते और हँसतेथे और

कोई २ चिल्लानेवालोंके साथ होकर शब्द करते और कहतेथे कि यह सौदाई है परन्तु उसकी विक्षिप्तताका बृत्तान्त किसीको विदित न था यहांतक कि वह बेचारा घबराकर एक हलवाईकी दूकानपर गया और दूकान के भीतर जाकर अपना पीछा उनसे छुड़ाया विदितहो कि यह हलवाई प्रथम पश्चिमके धाड़ियोंका प्रधानथा जो परदेशियों को लूटा करते थे अब वह उस निंद्यकर्म को छोड़ दमिश्क में बास करताथा यद्यपि उसकी मिलनसारी और शीलसे उस नगरके बासी उससे प्रसन्न थे परन्तु अबभी बहुतसे मनुष्य उससे डरते इसलिये उसके भयसे सब भागगये तब उसने बदरुद्दीनहसनसे पूछा तू कौन है और यहां क्योंकर आया उसने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त जन्म से विवाहपर्यन्त बिस्तारपूर्वक बर्णन किया और कहा इस भोरको मैंने अपनेको इस नगरकी मसजिदके द्वारे पृथ्वीपर पड़ापाया यह अद्भुत चरित्र कुछभी बिदित नहीं कि क्योंकर मैं इस थोड़े समयमें उन नगरोंको लांघताहुआ यहां पहुँचा उस हलवाईने उसका बृत्तान्त सुन कहा तेरी कहानी अद्भुत है इस बृत्तान्त को किसीसे न कहियो मेरे सन्तान नहीं है मैं तुझे अपना पुत्र बनाया चाहताहूं जो तूभी प्रसन्न होवे और इस विषयमें मनुष्योंके सन्मुख प्रतिज्ञाकरे फिर तू हर्षपूर्वक इस नगरमें फिरियो मेरा पुत्र जान तुझे कोई न टोकेगा यद्यपि हलवाईकी गोदमें बैठना उसको अनुचित और जातिहीनताका कारण था परन्तु उस आपत्ति की दशा में उसने इसे उत्तम जान स्वीकार किया फिर हलवाई ने उसे उत्तम २ बस्त्र पहिनाये और बहुतसे मनुष्यों को इकट्ठा किया और बदरुद्दीनहसन ने अपने को उनके सामने भी उसका पुत्र ठहराया फिर वह हलवाई साक्षियों सहित न्यायाधीश के निकट लेगया बदरुद्दीननेभी यही उसके सन्मुख कहा कि मैं इसका गोद बैठालाहुआ पुत्रहूं फिर वह उसके घरमें आनन्दपूर्वक रहनेलगा और दमिश्क में हसननामसे ख्यात होकर हलवाई का कार्य सीखा अब उस दुलहिन अर्थात् मन्त्रीकुँवरिका भी बृत्तान्त सुना चाहिये भोरको जब शमसुद्दीनमुहम्मद की पुत्री जगी तो उस ने बदरुद्दीनको छपरखट में न पाया जाना कि वह लघुशंका आदि

को उठ बाहरगया शीघ्र फिर आवेगा वह दुलहिन उसके आने की बाट देखतीथी इतनेमें मन्त्री शम्सुद्दीन मुहम्मद अत्यन्तचिन्ता और लज्जापूर्वक वहां आया और मुरझाकर अपनी पुत्रीका नाम लेकर पुकारा दुलहिन ने तुरन्त उठ किवाड़ खोला और हर्षपूर्वक अपने पिताके हाथको चूमा मन्त्रीने उसे प्रसन्न पा आश्चर्यकिया वह जानता था यहभी इस लज्जासे दुःखको प्राप्तहुईहोगी मन्त्रीने कहा अभागी तू मेरे सन्मुख अपनी प्रसन्नता प्रकट करती है दुलहिनने उत्तरदिया यहांपर वह कुरूप कुबड़ा नहीं और मैं उसके साथ बिवाही नहीं गई वह यहांसे कभीका भागाहै और मेरा बिवाह किसी रूपवान् मनुष्य से हुआहै और मुख्य वही मेरा पति है शम्सुद्दीन मन्त्रीने कहा तू क्या कहरहीहै क्यों तेरे साथ वह कुबड़ा नहीं सोया दुलहिनने कहा नहीं वह मनुष्यहै जिसकी भवें काली और बड़े २ नेत्र हैं मंत्री उसके बचन का बिश्वास न कर क्रोधितहुआ और कहा तूने दुष्टतासे यह बिरुद्ध बचन कहे तेरा पति वही कुबड़ा है उसने कहा मैं कुबड़े को धिक्कार देतीहूं मैं उसके साथ नहीं सोई मेरा पति मल मूत्र त्यागने बाहर गयाहै अभी आता होगा उसे तुम देखलेना कि वह कैसाहै शम्सुद्दीन बाहर निकल उसे ढूंढ़नेलगा कहीं न पाया परंतु एक ओर देखा वह कुबड़ा दीवार के साथलगा उलटाखड़ा है पांव ऊपर शिर नीचे जैसा वह पिशाच उसे खड़ाकरगया था उसके भयसे वह अटल खड़ाथा मंत्रीने उसे इस दशामें देख पूछा तुझे इस भांति किसने खड़ा किया कुबड़े ने मंत्री का शब्द पहिचान उत्तर दिया आपने मुझसे अच्छी हँसीकी कि महिषकी स्त्रीके साथ मेरा बिवाह ठहराया वह सुन्दरी तो एक कुरूप पिशाचकी प्यारी है मंत्री समझा कि यह बड़बड़ारहा है उसकी बातों को सुनी अनसुनीकर कहा सीधा होकर खड़ा रह उस कुबड़ेने उत्तरदिया सूर्य उदय पर्यन्त मैं हिलभी नहीं सक्ता क्योंकि मैं रात्रि को बड़ेदुःखमें पड़ा प्रथम तो एक श्यामवर्ण बिल्ली मेरे सन्मुख आई और क्षणमात्र में एक बड़ा महिष बनगई और जो कुछ उसने मुझसे कहा मैं नहीं भूला तुम मुझे इसी दशा में छोड़ अपना कार्य करो मंत्री ने उस कुबड़े को पकड़ सीधा कर

दिया सीधा होतेही वह कुबड़ा ऐसा भागा कि तनक भी न ठहरा और न पीछे फिरके देखा दौड़ता हुआ बादशाह के सन्मुख गया और अपने सम्पूर्ण बृत्तान्त को प्रकट किया बादशाह इस कहानी को सुन बहुत हँसा और मंत्री अपनी पुत्री के निकटआय कहनेलगा क्या तू यह बातें सत्य कहतीहै कुँवरिनेकहा इन सबके बिशेष अपनी सत्यताकी एक और साक्षी देतीहूँ वह यह है कि इस कुरसी पर मेरे पतिके बस्त्र रक्खे हैं उनको तुम भली भांति देखो उनमेंसे ही कोई ऐसी बस्तु प्रकटहोगी जिससे तुम्हारे हृदय का संदेह मिटजावे फिर उसने बदरुद्दीनहसन की पगड़ी उठाय मंत्री को दी मंत्रीने जब उसे चारों ओर घुमाकर देखा तो बिदितहुआ कि यह मवस्सल के बासियोंके मंत्रीकी पगड़ीहै उसमेंसे एक बस्तु बस्त्रमें लपेटी हुई पाई उसने उसे खोला तो उसमें एक पत्र जो नूरुद्दीन मंत्रीने अन्त समय बदरुद्दीनहसन को लिख दिया था पाया बदरुद्दीन अपने पिता की निशानी को अपनी पगड़ी में रखता था मंत्री ने वह पत्र देखतेही अपने भ्राता का लेख पहिचान और एक द्रब्यसे भरीहुई थैली पाई और उस थैलीके बीचमें इसहाक़ यहूदीके हाथका लिखाहुआ पत्र दृष्टिपड़ा उसमें यह लिखाथा कि मैंने ६०००) रु० पर बदरुद्दीन के हाथ जहाज़ मोललिया मंत्री शम्सुद्दीन इस बिषयको पढ़ मूर्च्छित होगया और पत्र उसके हाथसे गिरपड़ा जब सुधि सँभाली लड़की से कहा तुम्हारी प्रसन्नता बहुत ठीकहै पति तुम्हारा चचेरा भाई है फिर उसने अपने भ्राता के पत्र को उठा कईबेर चूमा और रोया उसका लेख यह था कि मैं अमुक तिथि को कैरूसे बांसरामें आया अमुक तिथि को बिवाहहुआ और अमुक तिथिके मुहूर्तमें मेरापुत्र बदरुद्दीन उत्पन्नहुआ शम्सुद्दीनने जब उन तिथियों का मिलान किया तो अपने और अपने भ्राताकी तिथि मुहूर्त बिवाह आदिक की एक ही पाई और जिस तिथि मुहूर्तपर बदरुद्दीन उत्पन्नहुआ उसपर मंत्रीके घर कन्या हुई इससे वह अत्यन्त आश्चर्यमें हुआ कि क्योंकर यह संयोग ठीक मिलगया इन गुप्त बातोंके जानने से सब शोक और दुःख भूलकर प्रसन्नहुआ और वह पत्र और पगड़ी

बादशाह के सन्मुख लेगया वह भी देख अत्यन्त हर्षित और अ-
चम्भे में हुआ और आज्ञाकी कि यह वृत्तान्त हमारी इतिहास की
पुस्तकोंमें लिखा जावे और शम्सुद्दीन एक सप्ताह पर्यन्त अपने
भतीजेके आनेकी राह देखतारहा जब वह इस समयान्तरमें न आया
तब उसने सम्पूर्ण केरूनगर में उसकी ढूंढ़की कहीं उसे न पाया
इससे अत्यन्त शोचितहुआ और बिचारने लगा कि वह कहां
गया और उसे क्या हुआ जो नहीं मिलता फिर उसने बिवाहके
मकान को सब बिवाह की बस्तुसहित बंदकिया और बदरुद्दीन के
बस्त्र और पगड़ी को गठरियों में रक्षापूर्वक बांध एक मकान में
रक्खा और कुलुफ लगाया और कई दिवसके पश्चात् मंत्रीकी पुत्री
नें अपने को गर्भयुक्त पाया और नौ मास के पश्चात् पुत्र उत्पन्न
हुआ उस सुन्दर पुत्रके पालन पोषणार्थ बहुतसे मनुष्य नियत किये
और नाना ने उसका नाम अजब रक्खा जब अजब सात बर्ष का
हुआ मंत्रीने उस लड़केका पढ़ाना घरमें उचित न जान उसे पाठ-
शाला में जिसका गुरु अत्यन्त गुणवान् और बुद्धिमान् था सौंपा
और दो अनुचर सेवा के निमित्त नियत किये जो प्रतिसमय पाठ-
शाला में उसकी सेवाके निमित्त उद्यत रहते बहुधा अजब पढ़ लिख
कर अपने सहपाठियों से खेलाकरता जो बिद्यार्थी अजब से पदवी
में न्यून थे सो वह सब अपने गुरु की आज्ञानुसार उसकी अत्यन्त
प्रतिष्ठा और सत्कार करते इस कारण अजब को अत्यन्त गर्ब हुआ
और बालकों को दुर्वाच्य कहा करता बहुधा मारता इससे वह सब
उसकी संगत से दीन होगये और इस बात को अपने गुरु से कहा
गुरु ने उन्हें समझाया कुछ तुम इसके दुर्वाच्य का बिलग न मानो
क्षमा कियाकरो मैं उसे समझाऊंगा और अजब को एकान्त में ले
जाय बहुत बर्जा परन्तु उसने अधिक उनको दुःख देना आरम्भ
किया तब गुरु ने बिद्यार्थियों से कहा अजब मेरे समझाने से नहीं
समझता दिनप्रतिदिन ढीठ होताजाताहै तुमको अब मैं एकबात सि-
खाताहूं जिससे वह तुम्हें फिर दुःख न पहुँचावेगा और शालामें आना
छोड़देगा वह यहहै कल जब तुम और वह खेलने को इकट्ठेहो तो तुम

सब उसे घेरना एक तुममेंसे यह कहै आज हम यह खेल खेलते हैं कि प्रत्येक बिद्यार्थी अपने माता पिताका नाम बतलावे जो न बतावे तो हम उसे जानेंगे कि वह बर्णसंकर है हमारे साथ खेलने योग्य नहीं निदान जब वह सब बिद्यार्थी खेलनेको इकट्ठेहुये उन्होंने अपने गुरु के उपदेशानुसार वही खेल खेलना आरम्भ किया और अजब के चारोंओर होय एकने कहा आवो हम सब अपनी अपनी पारी पारी से पिताका नाम बतातेजावें और जो न बतासके उससे हम न खेला करेंगे उनसब बालकोंने कहा बहुत उत्तम हम सब इस खेलमें प्रसन्न हैं फिर एक एक ने प्रत्येक बिद्यार्थी से नाम पूछना आरम्भ किया और तुरन्त उत्तर पाया सबोंने ठीक ठीक अपने माता पिताका नाम बताया जब यही प्रश्न अजबसे किया उसनेकहा मेरा नाम अजब है और मेरी माताका नाम हसना और पिताका नाम शमसुद्दीन-हसन जो बादशाह का मंत्रीहै उसके बचनको सुन सब बालक बोल उठे अजब तू क्या कहताहै यह तेरे पिता का नाम नहीं किंतु तेरे नाना का नामहै अजबने उन्हें कुवाच्य दे कहा क्या शमसुद्दीनहसन मेरा पिता नहीं उन सबोंने ठट्ठा मार कहा वह तेरा पिता नहीं नाना है जो तुझे अपने पिता का नाम बिदित नहीं और तू न बतासका तुझे उचित है आजसे तू हमारे साथ न खेलाकर यह कह वह सब वहांसे उठखड़ेहुये और उसे दुर्वाच्य कहने और हँसनेलगे अजब अत्यन्त लज्जितहो रोने लगा गुरू जो वहां समीपही यह सब बार्त्ता सुनताथा तुरन्त अजबके निकट चलाआया और कहा अजब क्या यह सत्य है शमसुद्दीनमुहम्मद तो तेरा पिता नहीं तेरा मातामह अर्थात् तेरी माता का पिताहै और तेरे पिताका नाम हमें भी बिदित नहीं इतना जानताहूं बादशाहने चाहा था तेरी माताका बिवाह एक कुबड़े अश्वपालकसे करे परन्तु किसी पिशाचने उसे निकालदिया और आप तेरी माताके साथ भोगकिया अब तू बिद्यार्थियों को दुःख न दियाकर अजब इस बचनको सुन तुरंत रोताहुआ अपनी माताके समीपगया और मा से कहा परमेश्वरके वास्ते मुझे बता कि मेरा पिता कौनहै उसकी माता ने उत्तरदिया हे मेरे प्रिय पुत्र ! तेरापिता शम

सुद्दीन है जो तुझे नित्य प्यार कियाकरताहै अजबने कहा तू मुझसे असत्य कहती है वह मेरा पिता नहीं किंतु तेरा पिता है मेरे पिता का नाम बता मैं किसका पुत्रहूं उसकी माता प्रथमसंगकी रात्रि और अपने पतिके खोजानेको स्मरणकर रुदन करनेलगी यह दोनों मा बेटे रोरहे थे इतने में मंत्री शम्सुद्दीन आया और उनसे रोनेका कारण पूछा अजब की माताने विद्यार्थियों से लज्जितहोने का हाल बिस्तारपूर्वक कहा मंत्रीभी उनके साथ रोनेलगा और अत्यन्त शोचयुक्तहो अपने मनमें कहा बड़ा पश्चात्तापहै कि मेरी पुत्री के लज्जाका हाल सम्पूर्ण नगरमें ख्यातहै और सब छोटे बड़े जानते हैं इसीभांति रोताहुआ बादशाहके सन्मुख गया और उसके चरणोंपर गिर बिनयकर कहा कि थोड़े दिनों की मुझे छुट्टी मिले तो मैं अपने भतीजे बदरुद्दीन-हसनको मुख्य २ नगरों और विशेष बांसरामें जाय ढूंढूं क्योंकि इस सेवक को इस कुवाच्य सुनने से धैर्य नहीं है कि नगरके बासी कहते हैं कि मेरी पुत्रीने पिशाचसे पुत्र उत्पन्नकिया बादशाहभी बहुत पछ-ताया और उसकी इच्छा स्वीकारकी और स्थान स्थानपर राहदारी के पत्र अपने भृत्यों और बादशाहोंके नाम इस विषयमें लिखवाकर उसके साथ किये कि जिस नगर वा देशमें बदरुद्दीन नामक मेरे मंत्री का भतीजाहो उचितहै कि उससे इसकी भेंटकरादें और उसकी यथा-वस्थित सहायता करें जो मेरी यह आज्ञापालन करेगा मैं उससे अतिप्रसन्नहूंगा शम्सुद्दीनमुहम्मद अपने स्वामीकी इस दयालुता पर कृतज्ञहुआ और फिर उसके चरणोंको चूम बिदाहुआ और अ-पनी पुत्री और नवासेको साथले वहांसे निकला और बीस दिवसके अन्तर में दमिश्क़ पहुँचा और नदीके तटपर जो उस नगरके नीचे बहतीथी डेरे खड़ेकिये और अपने सेवकोंको आज्ञादी कि इसनगरमें जावो और जो कुछ चाहो बेंचो और मोललो बहुतसे मनुष्य जो मि-सरसे बस्तुलाये थे उन्होंने बेंचा और वहांकी उत्तम उत्तम बस्तु मोल लीं और मंत्री बदरुद्दीनको ढूंढ़नेलगा एक दिवस अजबभी अपने कई सेवकोंके साथ दमिश्क़ नगरमें गया उस नगरके मनुष्य उसके दिव्यस्वरूप को देख अत्यन्त प्रसन्नहुये और उसके बाहनके चारों

ओर इकट्ठेहुये अकस्मात् फिरते २ बदरुद्दीनकी दूकानपर गये और उस दूकानपर उन्होंने बिश्रामकिया क्योंकि मनुष्योंके एकत्र होनेसे घबरागये थे और वह हलवाई जिसने कि बदरुद्दीनको गोदबैठाया था सो मरगयाथा और अपना धन बदरुद्दीनको देगयाथा और बदरुद्दीनकी हलवाइयों में बड़ीप्रतिष्ठा थी क्योंकि वह मिठाई बनानेमें बहुत प्रवीण था बदरुद्दीनने अपनी दूकानपर भीड़देखी और उस समूह में उसकी दृष्टि अजबपर पड़ी देखतेही प्रीति उत्पन्नहुई और बेबशहो उसे देखनेलगा परन्तु प्रीतिका कारण न जानताथा यद्यपि नगरके बासी भी उसे प्रीति की दृष्टि से देखते परन्तु बदरुद्दीन को अपने रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अधिक मोह उपजा यहांतक कि बदरुद्दीन अपनी दूकान के कार्य को भूलगया और अजब के निकटजाय नम्रता और बिनयपूर्वक बोला आप मेरी दूकानपर आकर कुछ भोजन कीजिये कि मैं तुमको भलीभांति देखलूं यह कहकर उसके नेत्रोंसे अश्रुकी धारा बह निकली अजब के मनमें भी बदरुद्दीनके देखने और उसके साथ बार्त्ता करनेसे प्रीति उत्पन्नहुई और बेबश होय चाहा कि उसकी दूकानपर बैठ उससे बार्त्ता करे परंतु इसके सेवकों ने कहा तुम मंत्रीके पुत्र हो तुम्हें उचित नहीं कि हलवाई की दूकानपर बैठ कुछ भोजन करो बदरुद्दीन ने अजबसे कहा आप इस अपने बेशील सेवक का कहना न मानिये और इसकी बातको न सुनिये और उसने सेवककी भी बहुतसी बिनती की और ऐसा राग गाया कि वह सुन हर्षितहुआ और उसकी बातको मानगया उस राग का अर्थ यहहै यद्यपि तुम बाहरसे श्यामहो परन्तु भीतर से अतिउज्ज्वलहो और कहा मैं कबिहूं तुम्हारी प्रशंसा ऐसी करूंगा कि तुम संसार में बिख्यात होगे और बहुतसे गीत उसने हब्शियों की प्रशंसा में कहे जिन्हें वह हब्शी सुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अजब को उसकी दूकान पर लेजाकर बैठाया बदरुद्दीनहसन उसे अपनी दूकानपर बैठादेख हर्षितहुआ और कहा मैं मलाई अच्छी जमाताहूं मेरी माता के सिवाय जिसने मुझे सिखाया है संसार में मेरे समान कोई नहीं जमासक्ता बिश्वास है कि तुम उसे खाकर

प्रसन्नहोगे मुझसे बहुत दूर दूरसे मनुष्य मँगवाते हैं यह कह उसने कड़ाही से मलाई निकाल अनारका अरक़ और शक्करडाल अजब के सन्मुख रक्खी अजब उसे खाकर बहुत प्रसन्न हुआ फिर उस सेवकको खिलाई उसनेभी उसे भोजनकर प्रशंसाकी और प्रसन्नहुआ फिर जब वह दोनों मलाई खाचुके बदरुद्दीनहसन अजब को बेर बेर देखता और मनमें बिचारता कदाचित् उस रूपवान् छबिधाम कोमलांगी स्त्री से जिससे शीघ्रही बियोग हुआ उससे ऐसा सुन्दर पुत्र उत्पन्न होता यह शोच रोता फिर बदरुद्दीनहसन ने अजब से पूछा तुम्हारा आना इस नगर दमिश्क़में क्योंकर हुआ अभी कुछ अजब ने उत्तर न दियाथा कि उससेवकने कहा बड़ी देरहुई शीघ्र चलो यह सुन अजब उठचला बदरुद्दीनहसन जिसका अजबके देखनेसे मन न भराथा अपनी दूकान बन्दकर उनकेपीछे होलिया यहां तक कि उनके साथ दौड़ताहुआ नगरद्वार पर्यंत पहुँचा सेवक उसे साथ आते देख अत्यन्त बिस्मित हुआ और क्रोधकर पूछा तू क्यों हमारे साथ लगा चलाआताहै बदरुद्दीनने बहानाकर कहा मेरा कुछ कामहै इस निमित्त इधरसे होकर वहां जाताहूं इस बचनसे उस सेवकको बोध न हुआ और अजबसे कहा इसीवास्ते मैंने तुमको हलवाईकी दूकानपर नहीं बैठने दियाथा अब पश्चात्ताप करताहूं क्यों मैंने तुमको बैठनेकी आज्ञादी क्योंकि मुँह लगाया हलवाई हमारे पीछे चला आताहै अजबने उसे उत्तरदिया वह अपने कार्यको जाता है मार्गमें सभी चलतेहैं हम किसीको मना नहीं करसक्के फिर पीछे न देखकर तुरन्त डेरोंकी ओर चले जब निज स्थानपर पहुँचे अजब ने फिरके देखा कि हलवाई पीछे उसके लगा चला आताहै डरा ऐसा न हो कि कहीं मेरे नानाको बिदितहो कि अजबने उसकी दूकानपर मलाई खाईहै तो यह बात उसकी अप्रसन्नता का कारण होगी इस वास्ते उसने एक बड़ासा पत्थर उठा बदरुद्दीनहसनके माथेपर मारा कि उसका माथा लहूलुहान होगया और फिर तुरन्त अपने सेवक सहित डेरे में घुसगया सेवक ने बदरुद्दीन को समझा बुझाकर फेरा वह उसी दशामें नगरको लौटआया और अपनेको धिक्कार देनेलगा

कि क्यों अपनी दूकान छोड़ ऐसोंके पीछे गयाथा यदि मुझसे उसे शंका न होती तो कदापि मुझे इस निर्दयता से न मारता निदान वह अपने घरसें आया और घावपर पट्टी बांधी फिर दूकानपर गया उसका चचा अर्थात् मंत्री शम्सुद्दीन तीन दिवस ठहर और नगरों में अर्थात् हलब, नारदीन, मवस्सल, सरवर आदि में गया और प्रत्येक नगरसें अपने भतीजेको ढूंढ़ता हुआ बांसरामें पहुँचा और वहांके बादशाहसे भेंटकी बादशाहने उसपर बहुत कृपाकर आगमन का कारण पूछा शम्सुद्दीनमुहम्मदने बिनय की मैं नूरुद्दीन अपने भाईके पुत्र बदरुद्दीनको ढूंढ़ने आयाहूं यदि कुछ आपको उसका वृत्तान्त विदितहो तो मुझे बतलाइये बादशाहने कहा बहुत दिन हुये नूरुद्दीन कालवशहुआ और उसका पुत्र बदरुद्दीन अपने पिता के मरनेके दो मास पश्चात् यहां से कहीं चलागया उसका कुछ भी वृत्तान्त मुझे मालूम नहीं बहुत ढूंढ़नेपर भी उसका मुझे कुछ पता नहीं मिला परन्तु उसकी माता हमारे मंत्रीकी स्त्री अबतक जीती है शम्सुद्दीनमुहम्मदने अपनी भावजसे भेंट करने और उसे अपने साथ मिसरमें लेजानेकी आज्ञा ली और दूसरे दिनतक उसका बासस्थान पूछकर अपनी पुत्री और नवासेसहित गया वह एक बहुत अच्छे घरमें रहतीथी शम्सुद्दीनमुहम्मद ने प्रथम उसके घरमें द्वार पर जाकर नूरुद्दीन का नाम जो एक पाटपर सुनहले वर्णोंमें लिखा था चूंवा फिर उसने उन मनुष्योंसे जो उस घरमें रहतेथे अपनी भावजको पूछा कि वह कहांहै उन्होंने कहा कि वह बहुधा अपने पति की क़बरपर रहती है और अपने पुत्रके चित्रको देखकर जो बहुत दिनोंसे गुप्त होगयाहै प्रतिदिन रोती और नानाप्रकारके कष्ट सहती है निदान शम्सुद्दीनमुहम्मद ने घर भीतर प्रवेशकर सम्पूर्ण वृत्तान्त विवाहादि का अपनी भावजसे कहा और अपनी पुत्री और नवासेको दिखाया वह स्त्री कि बदरुद्दीन के मिलने से निराशथी इस वृत्तान्त और अपने बहू बेटेके देखनेसे हर्षितहुई उससमय उसे बिश्वास हुआ कि मेरा पुत्र जीताहै फिर उठ अपनी बहू और अजबको कंठ से लगाया और प्यार किया और अजबके रूप और मुखको अपने

पुत्रके समान देख अत्यन्त प्रसन्नहुई फिर उसे अपने हृदयसें लगाये बद्रुद्दीनहसनको स्मरणकर रुदन करनेलगी शमसुद्दीनमुहम्मद ने कहा हे सुन्दरी! यह रोनेका समय नहीं किंतु हर्षका है अब तुम इस शोकको अपने मनसे परित्यागकर मेरे साथ मिसर को चलो मैंने बादशाह से तुम्हें अपने साथ लेजाने की आज्ञा लेली है और मुझे परमेश्वरसे परिपूर्ण आशाहै कि बद्रुद्दीनहसन तुम्हारा पुत्र अवश्य हमको मिलेगा और मेरी पुत्री के विवाहका अद्भुतचरित्र इतिहास की पुस्तकोंमें लिखनेके योग्यहै उसकी भावज इस बृत्तांतको बिस्तार-पूर्वक सुनकर प्रसन्नहुई और तुरन्त यात्राकी तय्यारीकी चलते समय शमसुद्दीनमुहम्मद फिर वहांके बादशाह के पास से बिदा होने गया बासराके बादशाहने मिसरके नरेशकी प्रसन्नताके लिये दिव्य सौगातें और उत्तम २ बस्त्र और पारितोषिकादि दे उसे बिदाकिया शमसुद्दीन मुहम्मद फिर अपने कुटुम्बसहित दमिश्क की ओर चला और उस नगरमें पहुँचकर नगरके बाहर डेरा किया और बादशाह से भेंट करने को वहांकी बहुत अच्छी २ बस्तु लेनेको तीन दिनतक ठहरा और बहुमूल्य और उत्तम २ बस्तु आदिके देखनेमें जो व्यापारी वहां के लातेथे प्रवृत्त हुआ अजब ने अपने नानाको उक्तकार्य में लगादेख अपने रक्षक सेवकों से कहा मुझे नगरमें लेचलो कि मैं भलीभांति देखूं और उस हलवाईको जिसे पत्थरसे माराथा उसका हाल मालूम करूं क्योंकि उस बेर मुझे इतना सावकाश न मिला था कि अच्छे प्रकार देखता वह सेवक स्वीकार कर उसकी माता की आज्ञा लेने उपरांत नगरकी ओर गया और फिर दोसीनामक नगरके दरवाज़े से होकर चौकमें जहां बहुत उत्तम बस्तु बिकतीथी लाया और धीरे धीरे देखते भालते मध्याह्न समय में बद्रुद्दीनहसन की दूकान पर पहुँचा और बद्रुद्दीनहसन को अपने कार्य में प्रवृत्त देख प्रणाम किया और कहा तुम मुझे पहिचानतेहो और कुछ तुमको स्मरणहै प्रथमभी तुमने मुझे देखाथा बद्रुद्दीनहसन को अजब के इस बचन सुनते और उसकी ओर देखतेही अति प्रीति उमँगी और पहलेकी सी उसकी दशाहुई और कुछ कहने सुनने बिना बिह्वल हो खड़ा

रहगया थोड़ीदेर के पश्चात् नम्रता और बिनयपूर्वक कहा हे स्वामिन्! अपने सेवक सहित एकक्षण मेरी दूकानपर ठहरो और थोड़ी सी मलाई खाओ पश्चात्ताप है कि मैंने आपको नहीं देखा नहीं तो मैं आपको अवश्य ठहराता अजबने कहा यदि तुम पहलीबेरकी भांति हमारा पीछा न करो तो हम तुम्हारी दूकानपर बैठतेहैं और हम कल भी तुम्हारी दूकानपर आवेंगे किन्तु जबतक मेरा नाना यहां ठहराहै हम प्रतिदिवस एकबेर तुम्हारे निकट आया करेंगे बदरुद्दीनने कहा जैसा आप कहतेहैं वैसाही करूंगा तुम्हारी आज्ञाका कदापि उल्लंघन न करूंगा फिर जब अजब अपने सेवकों सहित बैठगया बदरुद्दीन ने मलाई के प्याले उनके सन्मुख रक्खे अजब ने बदरुद्दीन को भी अपने साथ बैठाया उन्होंने परस्पर भलीभांति मलाई भोजनकी और भोजन के उपरान्त अजब ने प्रीतियुक्त बार्त्ताकर तांकीद कर कहा अपनी प्रीति कदापि प्रकट न करना और हमारे पीछे जानेकी इच्छा न करना बदरुद्दीनने कहा मैं आपके कहने के बिपरीत न करूंगा बदरुद्दीनने मलाई न खाई किन्तु अपने अतिथियों का सत्कार करतारहा जब अजब भोजन करचुका बदरुद्दीन उसके हाथ धुलाकर एक अति उज्ज्वल बस्त्र हाथ पोंछने के लिये लेआया फिर उसने चीनीके पात्र में शरबत बनाया और क़न्द के ओले डाल अजबको दिया और कहा यह गुलाबका शरबत अत्यन्त मिष्ट और स्वादिष्ठहै केवल इस नगरमें ऐसा मेरी दूकानपर बनताहै अजब उसे पानकर अत्यन्त हर्षितहुआ फिर बदरुद्दीनने उसके रक्षकको भी दिया वह उसे एकही बेर पीगया फिर अजब और उसका सेवक बदरुद्दीनकी कृतज्ञताकर अपने डेरेकी ओर चले और शम्सुद्दीनके डेरेमें पहुँचे अजब और उसका रक्षक अपनी दादी के डेरे में गये दादी उसे अपने कण्ठ से लगा रोई और कहा परमेश्वर मुझे वह दिन दिखाये कि मैं तुम्हारे पिताको देखूं और उसेभी अपने हृदयसे लगाऊं फिर उसकी दादी रात्रिको भोजनके हेतु मेज़पर बैठी और अजबको भी अपने साथ बैठाया और उसने इधर उधरकी बातें पूछीं और अजब नगरके सैर तमाशे आदिका बृत्तान्त जो अपने रक्षक सहित देख आयाथा उस

से कहनेलगा फिर उसकी दादीने उसे खानेको कहा अजबने न खाया और कहा इससमय मुझे कुछ इच्छा नहीं फिर उसने एक टुकड़ा मलाईका उसे और उस के रक्षकको दिया यद्यपि यह मलाई उसने आपही जमाईथी परन्तु वह पेटभर खाआये थे सेवक और अजबने उसकी ओर दृष्टिभी न की परन्तु दादीके कहनेसे उसे अपने सन्मुख रखलिया उसकी दादीने उसके न खाने से अत्यन्त आश्चर्य किया और कहा इस उत्तम मलाई को जो मैंने अपने हाथ से बनाई है क्यों नहीं खाते इसभांतिकी मलाई केवल मैं और मेरा पुत्र बदरुद्दीन जो तुम्हारा पिताहै और मैंनेही उसे बनाना सिखायाहै संसारभरमें कोई नहीं बनासक्ता अजब ने कहा यदि मेरा अपराध क्षमाहो तो बिनय करूं इस नगरमें एक हलवाईहै मैंने उसकी दूकान पर बैठकर मलाई खाईहै उससे तुम्हारी मलाई उत्तम न होगी यह बचन सुन उसकी दादी उस रक्षक से अत्यन्त अप्रसन्न हुई और कहा क्योंरे शाबान तू मेरे बच्चे की कैसी रक्षा करताहै उसने हलवाई की दूकान पर बैठ भिक्षुकों की भांति भोजन किया शाबान ने उत्तर दिया हम केवल उसकी दूकान पर सुस्ताने को बैठे थे हमने कुछ खाया पिया नहीं अजब ने उसके बिपरीत कहा हम उसकी दूकान पर गये थे और मलाई भी खाई यह सुन वह अधिक शाबान पर क्रोधित हुई और उसी कोप में शम्सुद्दीनमुहम्मद के डेरे में जाकर उसने इस बृत्तान्त को कहा शम्सुद्दीनमुहम्मद अपनी भावज के डेरे में आया और शाबान पर अति कोपित हुआ और कहा क्या यह सत्य है शावान ने इन्कार किया परन्तु अजब ने अपने नाना से कहा हम दोनों ने उसकी दूकान पर बहुतसी मलाई खाई इससे हमें इस समय भोजन करने की इच्छा अपनी दादी के साथ न हुई इसके बिशेष उस हलवाई ने हमें शरबतभी पिलाया था शम्सुद्दीनमुहम्मद ने शाबान से कहा क्योंरे तू मुझसे असत्य कहता है उसकी दूकान पर नहीं गये न वहां बैठ कुछ खाया शाबान ने फिर भी मन्त्री के भय से इन्कार किया और झूठी सौगन्द खाई कि हमने उसकी दूकान पर कुछ नहीं खाया शम्सुद्दीनमुहम्मद ने कोपित हो

उसे भलीभांति दण्डदिया यहांतक कि बेचारा शाबान मानगया और कहा उस हलवाई की मलाई अजबकी दादी से अधिक स्वादिष्ठ थी अजब की दादी ने अप्रसन्नहो कहा तू असत्य कहता है कभी उसकी मलाई मेरी से उत्तम न होगी फिर उसने शाबान से कहा मेरे वास्ते तू वही मलाई ला सो वह बदरुद्दीन की दूकान पर गया और उसे कुछ द्रव्य दे कहा मुझे मलाई दे मेरी स्वामिनी ने मँगवाई है बदरुद्दीन ने उसे एक पात्र में मलाई दे कहा यह मलाई बहुत उत्तम बनी है इसको केवल मैं और मेरी माता बनासक्के हैं शाबान ने उसे लाकर अजब की दादी को दी वह खातेही मूर्च्छित होगई शम्सुद्दीनमुहम्मद इस दशा को देख अत्यन्त दुःखित हुआ और उसके मुँहपर गुलाबनीर छिड़का जब वह चैतन्य हुई कहने लगी यह मलाई अवश्य मेरे पुत्र बदरुद्दीन की बनाई हुई है शम्सुद्दीन को जब भलीभांति बिदित हुआ कि इसका बनानेवाला बदरुद्दीनहसन है अत्यन्त हर्षित और प्रसन्न हुआ परन्तु प्रकट में अपनी भावज से कहा क्या और कोई ऐसा संसार में तुम्हारे पुत्र के सिवाय नहीं बना सक्का उसकी भावज ने कहा निस्संदेह इस मलाई को सिवाय बदरुद्दीन के और किसीने नहीं बनाया मंत्री ने कहा ज़रा ठहर मैं उसे बुलवाता हूं तुम और तुम्हारी बहू जिन्होंने उसे देखा है पहिचान लेना यदि वही है तो हम उसे तुरन्त अपने साथ लेकर कैरू में चलें यह कह शम्सुद्दीनमुहम्मद वहांसे अपने डेरे में आया और पचास सिपाहियों को आज्ञा दी तुम एकएक लाठी अपने हाथ में लो और शाबानके साथ यहां के बासी हलवाई की दूकान पर जाओ जब वहां पहुंचो तो जो बस्तु उसकी दूकान पर पावो उसे तोड़डालो जो वह तुमसे उसका कारण पूछे तो कुछ न कहना किन्तु उससे पूछना तूनेही वह मलाई बनाईहै जो शाबान लेगयाहै और तुरन्त उसे बांध मेरे निकट लेआना परन्तु उसे न मारना और न किसी भांतिका दुःखदेना तुरन्त जाओ देर न करो सो पचास सिपाही मंत्री की आज्ञानुसार शाबान के साथ बदरुद्दीन की दूकान पर गये और सब बरतन जो उसकी दूकान पर रक्खेथे तोड़

फोड़ चूर्ण करदिये और मिठाई आदि फेंक फांकदी बदरुद्दीन इस दशा को देख अत्यन्त दुःखित हुआ और नम्रतापूर्वक उसने पूछा भाइयो मैंने कौनसा तुम्हारा अपराध किया जिससे दण्ड देतेहो उन्हों ने कहा वह मलाई जो तुमने शाबान के हाथ बेंचीथी तुम्हींने बनाई है वा नहीं बदरुद्दीन ने कहा हां मैंने उसे अपने हाथ बनाई थी और मैं प्रतिज्ञा करताहूं इस नगरमें सिवाय मेरे और कोई वैसी नहीं बना सक्ता इस बचन के सुनतेही उन्होंने चारों ओर से उसे घेरलिया और उसकी पगड़ीसे उसके हाथ पांव बांधलिये बाज़ारके मनुष्य यह दशा देख इकट्ठेहुये और चाहा कि शम्सुद्दीन मुहम्मद के सेवकोंसे बदरु-द्दीनको छीनलें परन्तु अशक्त थे निदान मंत्रीके डेरे में लेगये शम्सु-द्दीन उससमय दमिश्क़ के बादशाह के सन्मुख गया था कि उसे बिदितकरे कि जिसकी ढूंढ़में निकलाथा उसे मैंने पाया परन्तु थाने-दारोंको आज्ञा हो कि मेरे काममें कोई बाधक न हो किन्तु यथोचित मेरी सहायता करें जब शम्सुद्दीन अपने डेरेमें आया सिपाहियों ने बदरुद्दीनको मन्त्रीके सन्मुख ला खड़ाकिया बदरुद्दीनने रोके मन्त्री से पूछा स्वामी मैंने आपका कौनसा अपराध किया जिससे मेरी दू-कान आपने लुटवाई और मुझे इस अप्रतिष्ठा और दुर्गति से प-कड़ बुलाया मन्त्री ने उत्तर दिया तू वही है जिसने अपने हाथ से मिठाई बनाकर मेरे सेवकके हाथ बेंची बदरुद्दीनहसनने कहा नि-स्सन्देह मैं वही हूं शम्सुद्दीन मुहम्मद ने कहा यही तेरा अपराध है इसवास्ते मैंने तुझे पकड़वाय बुलवाया अभी तुझे कुछ दण्ड नहीं मिला इससे अधिक तुझे दण्ड दूंगा किन्तु तेरे प्राण लूंगा तूने ऐसी बुरी मलाई मेरे वास्ते भेजी बदरुद्दीनने कहा जो कोई बुरी मलाई ज-मावे वह अपराधी होता है मन्त्री ने कहा निस्सन्देह सो इधर यही बार्त्ता होरही थी उसकी माता और स्त्री अपने डेरों में से उसे देख पहिचानकर मूर्च्छित होगईं जब सुधिहुई तब उन्होंने दौड़कर बद-रुद्दीनसे लिपटना चाहा परन्तु प्रथमसे शम्सुद्दीन ने उनसे यह प्रण कियाथा जब तक मैं न कहूं तुम उसके निकट न जाना न उसको अ-पना दर्शन देना निदान वह स्त्रियां सन्तोष रख चुपहोरहीं मंत्री उसी

नम्बर१२ मुतअल्लिक़ै सफ़ै २४६ प्र-भा.

चित्र जेबदा का अमीना और साक़ी को फटे हालों देखना ॥
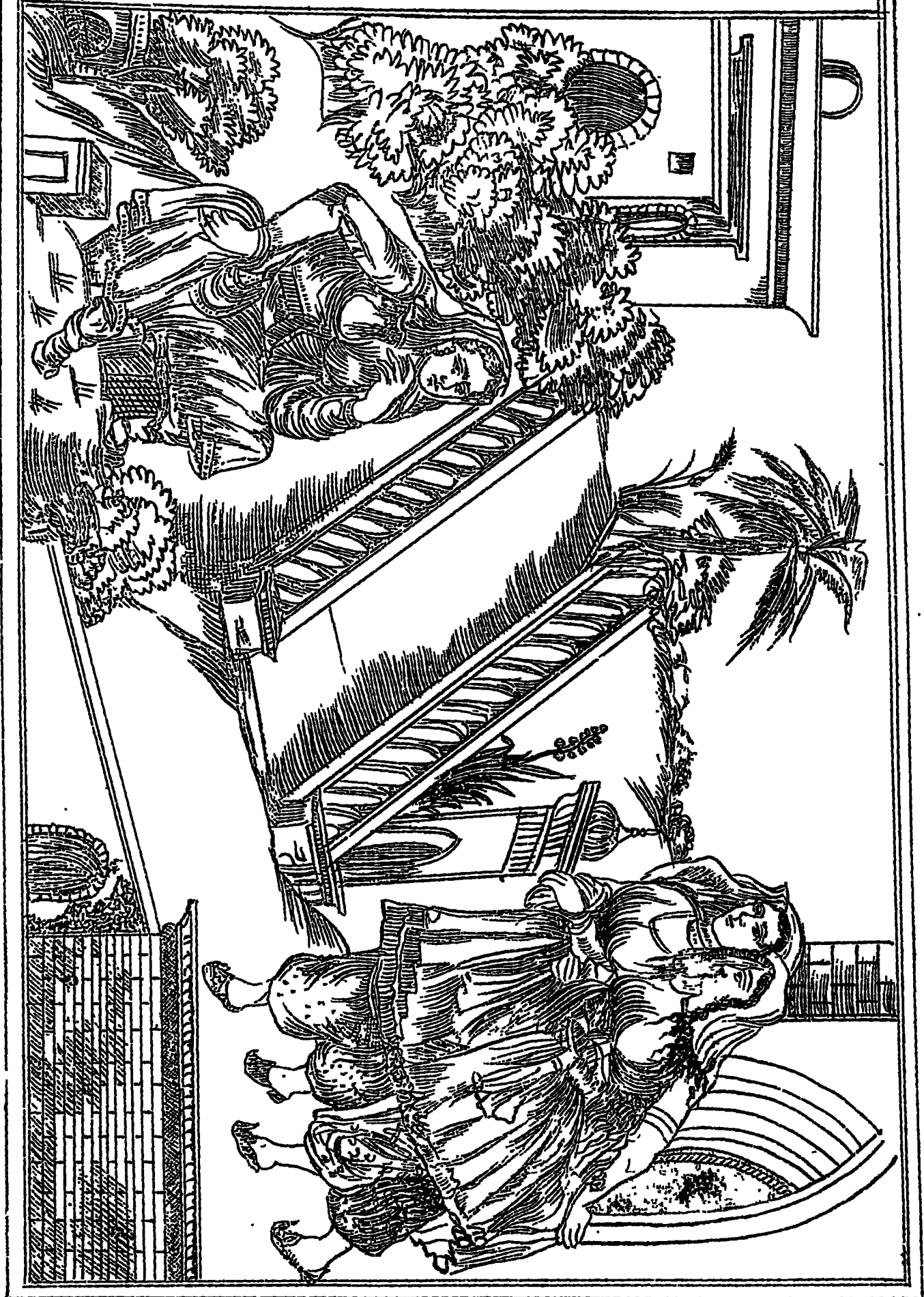
दिन तैयारीकर भोर को वहां से मिसर की ओर चला और बदरुद्दीन को सन्दूक़ में बन्दकर ऊंटपर लाद अपने साथ लेचला सन्ध्याको उसे निकालते और फिर उसे बन्दकर रखते इसीभांति मन्त्री नगरके निकट पहुँच एक स्थानपर उतरा और उसे अपने सन्मुख निकलवा कर बैठाया और उसके सन्मुख एक बढ़ईको आज्ञादी एक लकड़ी शूलीकी तुरन्त बना बदरुद्दीन ने मन्त्रीसे पूछा यह किसके निमित्त शूली बनती है मन्त्री ने उत्तर दिया कल रात्रिको नगर में प्रवेश करूंगा और तुझे इस काष्ठपर बैठाय सम्पूर्ण नगर में फिराऊंगा और तेरेआगे एक मनुष्य यह डौंड़ी पीटता जावेगा कि यह उस मनुष्य का दण्ड है जिसने मलाई में कालीमिरच नहीं डाली बदरुद्दीन यह वचन सुन रोनेलगा और कहा मैं कल इस दुर्दशा से मलाई में कालीमिरच के न डालने के कारण माराजाऊंगा इतना कह मलका शहरज़ाद ने शहरयार से कहा ख़लीफ़ा हारूंरशीद यद्यपि गम्भीर था मन्त्री जाफ़र से यह वृत्तान्त सुन ठट्ठामार हँसा बदरुद्दीनहसनने कहा हे परमेश्वर! कहीं ऐसाभी होताहै और किसी ने सुनाहै कोई मनुष्य इतने अपराध के कारण लूटलिया जावे और पकड़कर शूली दियाजावे इतना अन्याय केवल इतनेही अपराध पर कि मलाई में कालीमिरच क्यों न डाली मुसल्मानों के न्यायके विरुद्ध है इसीभांति की बातेंकर रुदन करता और कहता ऐसी मलाई बनाने पर धिक्कार है इससे मैं संसार में उत्पन्न न होता इसी समय परमेश्वर ऐसा करे कि मैं मरजाऊं कि ऐसी अप्रतिष्ठाके मरने से छूटूं यह बिचारकर बदरुद्दीन रोताथा इतनेमें लकड़ी बनाके मंत्री के सन्मुख लाईगई और उसके शिरपर लोहे की सलाख लगाई जिसे देख बदरुद्दीनहसन बहुत घबराया और कहनेलगा न तो मैंने किसीकी चोरी की न किसी को मारा और न कुछ अपने धर्म में बिपरीतता की केवल इतनीही बात के वास्ते कि मैंने मलाई में काली मिरच न डाली मुझे शूली देंगे फिर जब सन्ध्या हुई मंत्री शम्सुद्दीन ने आज्ञादी कि इसे उसी संदूक़में बन्दकरो और उसकी ओर देख कहा तू आज रात्रिको इसीमें रहैगा कल मैं तुझे नगरमें लेजा

वध करूंगा सो उसे संदूक में बन्दकिया और उसी ऊंटपर चढ़ाया और मन्त्री अपने बाहनपर चढ़ा और आज्ञादी कि इस ऊंट को मेरे आगे लेचलो सो वह बड़ी धूमधाम से कैरू में पहुँचा और अपने घर में प्रवेशकर आज्ञा दी इस संदूक को उतारो परन्तु खोलना नहीं जब सब असबाब उतारागया मन्त्री ने अपनी पुत्री को एकान्त में लेजाय कहा परमेश्वरका धन्यबाद है तुम्हारा पति मिला आज तुम उसीभांति अपना शयनस्थान अलंकृतकरो जैसा कि बिवाह के दिन सजाहुआ था और प्रत्येक बस्तुको उसी मकान में उसी भांति रक्खो जिसप्रकार उस रात्रिको रक्खीगईथीं जो कुछ तुम्हें भूलाहोगा मैं तुम्हें स्मरण कराऊंगा निदान उस मंत्री की पुत्री ने अपने पिता की आज्ञा पालनकी और प्रत्येक बस्तु को उसी स्थान पर रक्खा उसी भांति सिंहासन बिछाया गया और मोमकी बत्तियां जलाईगईं जब वह मकान पूर्व की भांति अलंकृत हुआ शम्सुद्दीन मुहम्मद ने आप वहां जाय बदरुद्दीन के बस्त्र जिसे वह बिवाह की रात्रिको पहिने था उसी द्रव्यकी थैली सहित रक्खे जैसा कि बदरुद्दीन रखकर अपनी स्त्री के साथ सोया था तदनन्तर मन्त्रीने अपनी पुत्री से कहा तू रात्रि के चीर पहिर और उसी दिन के समान शय्या पर रह जब बदरुद्दीनहसन इस मकान में आवे और तुझे जगावे तू उसके आनेका आश्चर्य न करना किंतु अपने समीप उसे सुलाना और भोर को जो कुछ परस्पर वार्त्ता हो अपनी सास और मुझ से कहना इतने में भोरहुआ मलका शहरजाद इस कहानीको यहींतक छोड़ चुप होरही फिर जब रात्रिहुई बादशाह को इस कहानी की लालसा से रात्रिभर निद्रा न आई और नियमित समय पिछले पहर आपने मलका को जगाया और कहा उस चरित्र की समाप्ति में क्या हुआ मलका इस भांति बर्णन करने लगी कि मंत्री शम्सुद्दीन ने आज्ञादी कि केवल इस मकान में दो वा तीन बांदियां रहें जब रातहुई और अनुमान प्रहर रात्रि के व्यतीत हुई मंत्री ने बदरुद्दीनहसन को संदूक सहित उस मकान के समीप भिजवाया और सन्दूक से निकाल मिरज़ई आदिक बस्त्र पहिनाये और मकान के

भीतर छोड़ बाहर से बन्द करने को आज्ञा दी बदरुद्दीनहसन दुःख के कारण ऐसा अचेत सोयाथा कि मंत्री के सेवकों ने उसे सन्दूक़ से निकाल नंगा किया और उसे मकान में लेगये तदनन्तर जब वह मकान में पहुँचकर जगा उसने अपने को एकांत उस कोठे में पाया और अपने चारों ओर बिवाह की सामग्री देख अपने बिवाह की रात्रि स्मरण करके उसे पहिंचाना कि यह वही मकान उसी स्त्री का है जिसमें मैंने बादशाह के कुरूप अश्वपालक को देखा था अत्यन्त आश्चर्यमें हुआ और उसके भीतर अपने बस्त्र देखे कि उसी भांति रक्खे हैं इससे वह अधिक बिस्मित हुआ कहनेलगा हे परमेश्वर ! यह क्या बातहै क्या मैं स्वप्न अवस्था में देखता हूं वा जाग्रत् में इतने में उसकी स्त्रीने मसहरी से शिर निकाल और मुख बदरुद्दीनहसन की ओर कर बड़े प्यार से कहा हे मेरे प्रिय पीतम ! तुम किवाड़ पर खड़े क्या करतेहो शय्यापर आय आनंद करो जब मैंने जगकर तुम्हें शय्या पर न पाया अत्यन्त आश्चर्य में हुई और चिरकाल पर्यन्त जागती और तुम्हारे आगमनकी बाट देखतीरही बदरुद्दीन इस बचनको सुन अत्यन्त हर्षित हुआ वह शोक और भय जो उसे मन्त्रीसे प्राप्तहुआ था भूलगया और उसके मुखका वर्ण बदलगया और उस स्त्रीको वैसाही रूपवान् मनहरण पाया जैसा कि बिवाहकी रात्रि को देखाथा फिर मकान के भीतर गया और मनमें शोचनेलगा क्योंकर दशबर्षकी अवधि एकरात्रिमें बीती तदनन्तर उस स्थानपर गया जहां उसके बसन और द्रव्यकी थैली रक्खीथी उसे वहीं और उसी भांति रक्खा हुआ पाया कि कुछ भी अन्तर नहीं था बड़े शब्द से कहने लगा हे परमेश्वर ! यह क्या बात है जिसे न तो मैं कुछ समझसक्ता और न बिचारसक्ताहूं उस सुन्दरीने दूसरीबेर कहा हे पते ! शय्यापर आके शयनकरो खड़े क्या शोचतेहो इस बचनको सुन शय्याके समीप खड़ाहुआ और कहा हे सुन्दरी ! सत्य कहो मुझे तुमसे बिछुड़े कितना समयान्तर हुआ होगा उसने कहा मुझे तुम्हारे इस प्रश्न से अत्यन्त आश्चर्य हुआ अभी तो तुम सोते हुये शय्यापर से उठे बदरुद्दीनहसन ने कहा तुम क्या कहतीहो हां यह सत्यहै कि एक रात्रि

में तुम्हारे साथ सोया परन्तु इसे दशबर्ष का समयान्तर हुआ और तबसे में दमिश्क़ में था कुछ नहीं जाना जाता यह वही रात्रिहै जिस में मेरा बिवाह तुम्हारे साथ हुआ वा नहीं जो वही रातहै तो दश बर्ष पर्यन्त मैं क्यों तुमसे बिछुड़ारहा अब तुम मुझे बताओ मैं कौन सी बातको सच जानूं दशबर्षसे बियोगको स्वप्न समझूं वा इस बात को उसकी पत्नीने उत्तरदिया क्या तुम विक्षिप्त होगयेहो कि तुम यह कहतेहो कि मैं दमिश्क़में था बदरुद्दीन इस बचनको सुन हँसा और कहा यह बड़ी हँसीकी बातहै क्योंकि दमिश्क़ के द्वारपर यही वसन पहिने पड़ा था और वहां के बासी मुझे देख हँसते और ठट्ठा मारते यहांतक कि मैं वहांसे भागा और एकहलवाईकी दूकानपर जा छिपा उसने मुझे गोद बैठाया और अपना जातिकार्य सिखाया और अन्तसमय मुझे अपना धन सौंपा सो मैं उसी दूकान पर बैठ दश बर्ष पर्यन्त कालक्षेप करतारहा एक मंत्री कहींसे उस नगरमें आया उसका पुत्र अत्यन्त स्वरूपवान् और सुकुमार था जिसके देखने से मुझे प्रीति उत्पन्न हुई एक दिन वह अपने सेवक सहित मेरी दूकानपर आया और मलाई ले वहीं बैठ खाई जब वह अपने पिता के डेरे में गया तब उस मन्त्री ने बालक के रक्षक से थोड़ीसी मलाई मेरी दूकान से मँगवाई फिर मुझे पकड़वा मँगाया और काली मिरच के न डालनेसे मेरी दूकान लुटवाई और मुझे सन्दूक़में बन्द किया और दमिश्क़ से ऊंट पर रख अपने घर में लाया तदनन्तर मुझसे कहा तू कल फांसी दिया जावेगा यह बचन सुन शोकयुक्त होय मैं सन्दूक़ में बेसुध सोगया जब जगा अपने को तुम्हारे निकट पाया यह सुन उसकी स्त्रीने कहा जान पड़ताहै तुमने कोई बड़ा अपराध किया होगा जिससे तुमपर यह आपत्ति पड़ी और यह कठिन दण्ड बिचारा गया बदरुद्दीनने कहा सुन्दरी मैंने कोई ऐसा अपराध नहीं किया यह दण्ड केवल इतनेहीके लिये मेरे वास्ते बिचारागया था कि मैंने कालीमिरच बिना क्यों मलाई जमाई और बेंची वह सुन्दरी इस बातको सुन बहुत हँसी और कहनेलगी नहीं तुमने कोई और बड़ा अपराध किया होगा बदरुद्दीन ने कहा और तो कोई भी

नहीं केवल इसी से मेरी दूकान की सब बस्तु नष्ट की और मुश्कें बांध मुझे सन्दूक़ में बन्द किया जिसमें मैं दिन रात रहताथा कल मुझे बाहर निकाल मेरे सन्मुख बढ़ई को आज्ञादी कि सूली की लकड़ी बना और उसपर लोहे की सलाख़ लगाकर शीघ्र ला परन्तु परमेश्वर का धन्यबाद है वह सब बातें स्वप्न थीं बादशाह शहरयार इस कहानी को सुन बहुत हँसा और कहा यह बृत्तान्त अत्यन्त अद्भुत है और मुझे बिश्वासहै कि शम्सुद्दीन मुहम्मद और उसकी भावज कलके दिन बदरुद्दीन की यह वार्त्ता सुन अत्यन्त हर्षित होंगे दूसरे दिन मलका शहरज़ाद ने रात्रि के अन्तमें बादशाह शहरयार से कहा स्वामिन्! उस रात्रि को बदरुद्दीन इसी भ्रम में रहा कि मैं स्वप्न में अपनी स्त्री के समीपहूं वा जाग्रत् अवस्था में कभी शय्या से उठ मकान के चारों ओर घूमता और सब बस्तु को पहिचान कहता यह मकान वहीहै जिसमें मेरा बिवाह हुआ था और यह वही स्त्री है जिसका बादशाहने उस कुरूप कुबड़ेके साथ बिवाह बिचारा था अब मैं उसके साथ सोताहूं वह इसी बिचारमें था भोर होतेही मन्त्री शम्सुद्दीन ने आकर ताली बजाई और भीतर जाय प्रणाम किया बदरुद्दीनहसन ने मन्त्री को पहिचान कहा आपही ने मेरे वास्ते सूली बनाने को आज्ञादी जिसके भय से मैं अबतक कांपता हूं और केवल इतनेही अपराध के लिये कि मैंने मलाई में काली मिरच नहीं डाली यह दण्ड मेरे निमित्त नियत किया मन्त्रीने मुस-कराय उत्तर दिया मैंने ही तेरा विवाह अपनी पुत्रीके साथ जिसका विवाह बादशाहने एक कुबड़े के साथ बिचारा था किया तू मेरा भ-तीजा है तदनन्तर उस पत्र को जो नूरुद्दीन के हाथ से लिखा था उसको दिखाया कि केवल तेरे ढूंढ़ने को मैं कैरू से बांसरा और द-मिश्क़ को गया मन्त्री ने बदरुद्दीन को हृदय से लगाय प्यारकिया और कहा यह सब बातें जो मैंने तुमसे की हैं क्षमा करो इन बातों से मेरा यह प्रयोजन था कि तुमको इस उपायसे कुशलपूर्वक अपने घरमें लाकर तुम्हारे परिवारसे मिलाऊं जो यह उपाय न करता तो सम्भवथा इस हर्षमें तुम्हारे शरीर में किसीभांति का दुःख पहुँचता

वा आनन्दमृत्यु होजाती इसी हेतु तुम्हें इस भयमें मैंने रक्खा अब तुम अपने वस्त्र पहिनो कि मैं तुम्हारी माताको कि तुमसे बिछुड़ने के कारण दुःखित और अधैर्य होरही है भेंट कराऊं और तुम्हारे पुत्रको जिसे तुमने दमिश्क़ में अपनी दूकान पर बड़ी प्रीति से मलाई खिलाई थी लाऊं और जो बदरुद्दीन और उसकी माता से भेंट करनेमें हर्ष हुआ था सो लिखने में नहीं आसक्ता निदान उस की माता उसके कण्ठलग बहुत रोई जो कुछ आपत्ति और कष्ट उसके बिछुड़ने में उसपर पड़े थे अपने पुत्र बदरुद्दीनसे कह सुनाये और एक ओर से उसका पुत्र उसकी छाती से लिपटगया और बदरुद्दीनहसन ने उसे पहिचान कहा यह वह बालक है जिसे मैंने दमिश्क़में देखा था और इसकी मुझे अत्यन्त प्रीति उपजीथी फिर कण्ठ से लगा बहुत प्यार किया और शम्सुद्दीन मन्त्री उन्हें वहीं छोड़ बादशाह के सन्मुख गया और अपनी यात्रा का बृत्तान्त बिस्तारपूर्वक बर्णन किया बादशाह इस बृत्तान्त को सुन हर्षित हुआ और आज्ञादी कि यह सब कहानी हमारी पुस्तकों में लिखी जावे तदनन्तर मंत्री ने बादशाह से बिदा होय हर्षपूर्वक सकुटुम्ब नानाप्रकारके ब्यञ्जन और पाक भोजन किये वह दिवस तो बड़ी प्रसन्नतामें कटा जाफ़र मंत्रीने इस कहानी को समाप्तकर बादशाह हारूंरशीद से बिनय की कि आप हब्शी रैहांका भी अपराध क्षमा कीजिये बादशाह उसका अपराध क्षमाकर उस मनुष्य को जिसने धोखे से अपनी स्त्री को मारा था धैर्य दे एक अपनी बांदी के साथ बिवाह करदिया और बहुतसा धन पारितोषिकादि देकर कुछ मासिक नियत किया सो वह उस बादशाह दीनपोषक प्रणतपाल की दया से जन्मभर आनन्द में रहा मलिकाशहरज़ाद ने बादशाह से बिनयकी हे स्वामिन्! दिन निकलआया यदि प्राणदान होंगे तो मैं इससे उत्तम कहानी कलकी रात्रि में कहूंगी बादशाह इस बात का कुछ उत्तर न दे शय्या से उठ अपनी सभा में जाय राज्य के प्रबन्धादि कार्य में लगा परन्तु मनमें सोचा उसने मुझ से प्रण किया है कि कल इससे अच्छी कहानी सुनाऊँगी इससे उसे

बंध न किया चाहिये और उस कहानी को भी सुनना चाहिये॥

इति काश्मीरिपण्डितप्यारेलालभाषाकृते सहस्र-
रजनीचरित्रे प्रथमोभागः समाप्तः॥

दोहा॥

श्रीजगदीश्वर की कृपा, प्रथम भाग अभिराम।
सहसरजनिवरचरित यह, उल्था कियो सुनाम॥
अतिबिचित्र मनहरण यह, पढ़ै सुनै जो कोय।
लहै मुदित आनन्द अति, बुद्धिवन्त बर होय॥
इक इक पद सानन्दमय, शशिप्रकाशयुत सोय।
बर प्रबीणता देत अति, पढ़िहैं सुनिहैं जोय॥
सबके प्यारे मनन के, प्यारो करन बिचारि।
प्यारेलाल सुभाग यह, भाषा कियो सुधारि॥

सहस्त्ररजनीचरित्र ॥

द्वितीयभागप्रारम्भः ॥

सोरठा ॥

नमोनमोगणदेव,लम्बोदरछबिधामबर। ऋद्धिसिद्धिकोदेव,ममइच्छापूरणकरो ॥

दोहा ॥

श्रीईश्वरकीकृपाते, दूजोभागअनन्द। करतसुप्यारेलालहैं, बन्दिगौरिगोबिन्द ॥

काशग़री दरज़ी और बादशाह के सेवक कुबड़ेकी कहानी ॥

दूसरेदिन रानीशहरज़ाद ने बादशाह शहरयारसे रात्रिके अन्तमें आज्ञालेकर अपनी छोटीबहिन दुनियाज़ादकी इच्छानुसार इस कहानी को इसभांति कहना आरम्भ किया पूर्वकाल में एक काशग़र का दरज़ी जो तातारदेशके समीप है अपनी दूकानपर बैठकर बस्त्र सियाकरताथा एकदिन सन्ध्याको सीरहाथा दैवयोग से एक कुबड़ा तबला लिये आया और दूकान के नीचे बैठकर मीठेस्वरों से गान करनेलगा वह दरज़ी उसका गानासुन प्रसन्नहुआ जब उसके घर जानेका समय आया उसने कुबड़े से कहा जो तुम्हारा मनचाहे तो मेरा घर जो यहांसे अतिसमीप है चलकर गाओ बजाओ वह प्रसन्न होकर उसके साथ उसके घरगया जब सूचीकार मुख हाथ धो बैठा अपनी स्त्रीसे जो अत्यन्त रूपवतीथी और उसे बहुत प्यार किया करताथा कहनेलगा आज मैं तुम्हें गाना सुनानेके लिये इस मनुष्य को लायाहूँ भोजन जो बनाहो तो ला उसकी पत्नी ने नानाप्रकारके स्वादिष्ठ भोजन ला आगे रक्खे और वह स्त्री पुरुष परस्पर बैठ खाने लगे और उस कुबड़ेको भी साथ बैठाया उस दिन सूचीकार के घर मछली बनीथी सो मछली कुबड़े को खानेके लिये दी कुबड़ा कांटे निकालने बिना खागया एक कांटा उसके कण्ठ में ऐसा चुभा जिससे वह अत्यन्त दुःखितहुआ और उसका श्वास रुकगया उस दरज़ी और उसकी स्त्रीने बहुतसे उपाय किये परन्तु उपयोगी न हुये इससे वह सूचीकार अत्यन्त भयभीत हुआ और घबराया जो इस नगर के कोतवाल को विदित होगा तो इस हिंसा के बदले आपत्ति में पडूंगा

अवश्य है कि प्रथमही से इसका उपाय करूं यह सोच उस कुबड़े को यहूदी वैद्य के समीप लेगया वैद्य का द्वार भिड़ाथा कुबड़े को लिटा सीढ़ी के ऊपर चढ़गया और किवाड़ पर ताली बजाई वैद्य की अनुचरी शब्द सुन निकली सूचीकार ने पांचरुपये उसे देकर कहा तू तुरन्त अपने स्वामीसे कह रोगी को आके देखे और उसका उपायकरे जब बांदी वैद्य को जो बालाखाने पर रहता था कहनेगई सूचीकार कुबड़े को मृतक समझ ऊपर लेगया और किवाड़ के सहारे खड़ाकर आप चुपके चलदिया वैद्य यह बांदी से सुन चिराग़ बिना लोभ से किवाड़ की ओर दौड़ा कुंढी खोल चाहता था कि नीचे उतरे और रोगी को देखे किवाड़ खोलतेही वह कुबड़ा सीढ़ी से लुढ़कताहुआ नीचे आपड़ा वैद्य अँधेरे में शब्दसुन बिस्मित हुआ कि यह क्या बस्तु थी जो किवाड़ से नीचे गिरपड़ी फिर जब चिराग़ मँगवा नीचे उतरा कुबड़े को मुवा देख रुदन करनेलगा यह समझकर कि यह मुझसे मरा परमेश्वर को स्मरणकर अपराध क्षमा करानेलगा तदनन्तर यह सोचा जो कोई राह चलनेवाला इस गलीमें से चले और इस लोथ को मेरेद्वार पर देखे तो वह बादशाह से जाय कहेगा और मैं बड़ेदुःखमें पड़ूंगा इससे उत्तम यहहै कि इस लोथको शीघ्र यहांसे उठाऊं निदान वह वैद्य उसे घर के भीतर लेगया और स्त्रीपुरुषों ने परस्पर सम्मतकर अपना पीछा छुड़ाने के लिये उस लोथके हाथपावों को रस्सीसे कस एक मुसल्मानके घरमें जो पिछवाड़े रहता था डालदिया वह यवन बादशाह का मोदी था अपने घरमें बहुत सा घृत अन्न आदि संचित रक्खा करता और चूहे चारों ओरसे उसके गृहमें इकट्ठेहो उसकी बस्तु खाजाते अकस्मात् वह मोदी अर्धरात्रि को जब अपने गृहमें आया लालटेनके प्रकाश से कुबड़े को बखारी में खड़ादेख चोर समझा और कहने लगा तूही मेरी बस्तु चुराया करता है मैं अबतक धोखे में था कि चूहे खाजाया करते हैं और उसे मारनेलगा दो चार लाठीके पड़ने से वह लोथ पृथ्वीपर गिरपड़ी मोदीने निकटजाय उसे मृतक देखा इससे वह लज्जा को प्राप्तहुआ और मन में कहने लगा तूने बड़ा

अनर्थ किया कि चोर का बध किया भोर को तू अवश्य इसके पलटे मारा जावेगा कदाचित् मेरी सम्पूर्ण बस्तु नष्ट होजाती तो ऐसा बड़ा भारी पाप न करता इसी शोचबिचार में मूर्च्छित होगया जब कुछ सुधिहुई अपनी रक्षाके हेतु उसे अपने कंधेपर रख बाज़ार में ले गया और अँधियारे में एक दूकान से लगाकर खड़ा किया और अपने गृह में आय सोरहा कुछ काल के पश्चात् एक सौदागर फिरंगी बादशाह के दारोगा किसी व्यभिचारिणी स्त्रीके गृहसे निकल नहाने को स्नानागारमें जानेलगा बाज़ारमें उसी दूकान के समीप जिसमें वह लोथ खड़ी थी पहुँच अँधियारेमें ऐसा पास होकर चला कि उसकी पीठसे कुबड़े का शरीर लगगया फिरंगी उसे चोर समझ लात मुक्की मार चोर चोर कर पुकारा रौंदके सिपाही चोर का शब्द सुन दौड़े आये उन्होंने यह देखकर कि एक फिरंगी मुसल्मान को मारता है उससे कहा तू क्यों मारता है फिरंगी ने उत्तर दिया यह चोर है चाहता था कि मेरा गला दबावे निदान एक सिपाहीने फिरंगी का हाथ पकड़ कुबड़े से अलग किया और चाहा कि उसको पृथ्वी से उठावें हाथ लगातेही उसे मुवापाया रौंद के सिपाही उस फिरंगी को पकड़ नगरके कोतवाल के निकट लेगये भोर को कोतवाल फिरंगी को लोथ समेत न्यायाधीश के निकट लेगया न्यायाधीशने उनसे बृत्तान्त पूछ अपराधी को मृतकसहित बादशाह के सन्मुख लेजाय बिनयकी इस फिरंगीने इसे चोर समझ इतना मारा कि वह मरगया बादशाहने आज्ञादी कि हमारे धर्मशास्त्र की आज्ञा के अनुकूल तू यथोचित दण्डठहरा न्यायाधीशने आज्ञादी इसे चौराहे पर लेजाय फांसी दो यह आज्ञा पातेही फांसी की लकड़ी चौराहेमें खड़ी कीगई और सम्पूर्ण नगरमें ढिंढोरा पिटा कि एक कुबड़े के बदले फिरंगी फांसी दियाजाता है जिसे देखनाहो सो आय देखे जब अपराधी को बधिकने चाहा कि उसके गलेमें रस्सी डाल खैंचें इतनेमें बादशाह का मोदी इस बृत्तान्तको सुन दौड़ा और भीड़ को हटा उस स्थान पर पहुँचा और बड़े शब्दसे कहा हे बधिक! उस कुबड़े का हिंसक मैंहूं यह मनुष्य नहीं जिसे तू मारा चाहताहै इसने कुछ

अपराध नहीं किया और मैं नहीं चाहता कि दूसरा अपराध मुझ पर हो यह एक अपराध क्या थोड़ाहै और सम्पूर्ण वृत्तान्त न्यायाधीशके सन्मुख कहसुनाया न्यायाधीशने बधिकसे कहा इसको छोड़ कर इस मोदीको फांसीदे बधिकने उसे छोड़ मोदीके गले में रस्सी बांध चाहताथा कि खैंचें अकस्मात् यहूदी वैद्यका शब्द सुनपड़ा कि कहताहै हे वधिक! ठहर इसे वध न कर मैंने उस कुबड़ेको मारा है फिर उस वैद्यने भी रात्रि का सम्पूर्ण चरित्र न्यायाधीश के सन्मुख प्रकट किया कि उस कुबड़े को औषध के अर्थ लायेथे वह बाहर की ओर किवाड़से लगा बैठा था ज्योंहीं मैंने किवाड़ खोला त्योंहीं वह सीढ़ी से लुढ़ककर नीचे गिरा और मरगया इसका मारनेवाला मैंहूं मोदी नहीं न्यायाधीशने वधिक से कहा मोदीको छोड़ इस वैद्य को फांसीदे बधिकने रस्सी उसके गले में बांधी और खैंचने की इच्छाकी इतनेमें दरज़ीने वहां पहुंच बधिक से कहा इस कुबड़े का हिंसक मैं हूं वैद्य निर्दोष है यह कुबड़ा गाने बजाने के लिये मेरे घर आया मैंने इसे मछली खानेको दी एक कांटा उसके कण्ठमें चुभगया मैं उसे औषध के निमित्त इस वैद्य के गृह लेगया परन्तु मैं उसे मुरझायाहुआ देख इसे उसके किवाड़ से खड़ाकर छोड़आया वास्तवमें इसे मैंनेही माराहै यह वैद्य निपट निर्दोषहै न्यायाधीश और प्रजा मोदी और वैद्य उस दरज़ीका बचन सुन अत्यंत आश्चर्यमें हुये निदान न्यायाधीशने कुछ सोच बधिकसे कहा उसके बदले इस दरज़ीको जो अपने मुखसे हिंसक ठहरताहै फांसी दे एक मनुष्य को उस हिंसा के बदले वधकरना अवश्यहै बधिक चाहताथा कि दरज़ीको फांसीदें इतनेमें बादशाहका पहरा वहां आया और न्यायाधीशको लोथ और दरज़ी आदि सहित बादशाहके निकट लेगया इसका कारण यहथा कि वह कुबड़ा मुख्यबादशाह का मसखराथा प्रतिदिन बादशाह के निकट जाकर अपने हास्यसे बादशाहको प्रसन्न करता उस दिन बादशाहने उसे न पाकर पूछा क्या कारण है अभीतक वह कुबड़ा नहीं आया उसके सेवकोंने बिनय की महाराज कल सायङ्कालको मदिरा पान कर नगरकी ओर गया भोरको उसकी लोथ देखी न्यायाधीशने उसके

हिंसक को कि कोई फिरङ्गी था फाँसी की आज्ञादी बधकरने के समय दूसरे मनुष्यने अपने को अपराधी ठहराया इसीभांति तीसरा चौथा मनुष्य आया और उसके मारनेका क़रार किया अब अन्य न्यायाधीशने चौथे मनुष्यके फाँसी देनेकी आज्ञादी है अब वह बध कियाजाताहै बादशाह ने इस अद्भुत बृत्तान्त को सुन आज्ञादी कि तुरन्त जाओ और न्यायाधीश से कहो उन चारों मनुष्यों को लोथ सहित लावे कि उस दीनकुबड़े को अन्तसमय देखलूं निदान न्यायाधीशने उन सबोंको लाकर बादशाहके सन्मुख किया और चारों के बृत्तान्त भी बिस्तारपूर्वक प्रकट किये बादशाह ने इस बृत्तान्तको लिखवाकर उन चारों मनुष्यों से कहा तुमने इस बृत्तान्तसे अधिक उत्तम कहानी सुनीहो वा देखीहो तो मेरे सन्मुख प्रकट करो यदि इससे अद्भुत होगी तो तुम्हें मैं छोड़दूंगा नहीं तो तुम चारोंकी गरदन मारूंगा सबसे प्रथम फिरंगी ने प्रणामकर बिनय की कि मैं इससे उत्तम कहानी जानताहूं यदि प्राणदान हो तो बर्णन करूं बादशाह ने स्वीकार किया॥

फिरंगीकेमुखसेकाशग़रके बादशाहकेसन्मुख वर्णितकहानी॥

ब्यापारी ने उस बृत्तारम्भ के प्रथम बिनयकी यह सेवक मिसर देशान्तर्गत केरू का बासी है मेरा पिता दलाली कर्म करता था इसी जीविका में उसने बहुत धन सञ्चित किया जब कालबश हुआ तब बहुतसी बस्तु द्रब्य मुझे मिली तदनन्तर मैंने वही जीविका की एक दिन अन्न बेंचनेवालों के बाज़ार में जहां बहुतसे ब्यापारी इकट्ठे होकर व्यवहार करतेथे गयाथा एक मनुष्य अतिसुन्दर उत्तम उत्तम बस्त्र पहिनेहुये उस मण्डी में आया और मुझसे भेंटकर तिल का नमूना मुझे दिखाया और पूछा ऐसे तिल कितनेमन बिकते हैं मैं उसे भलीभांति देख बोला इसका मूल्य प्रत्येक मन शतमुद्रा है उस मनुष्य ने कहा जो कोई इसका मोल लेनेवाला हो उसे मेरे समीप फ़तह दरवाज़े के निकट अमुक सरायमें लेआना इस मूल्यपर सब का सब बिकवादेना मैं अपने घर जाय तेरे आनेकी राह देखता रहूंगा यह कह वह तो चलागया मैंने वह तिल बहुतसे ब्यापारियों

को दिखाये वे सब एकसौदश रुपये देनेपर राज़ीहुये मैं अपने मनमें प्रसन्नहुआ कि प्रत्येक मन पर दश रुपये मुझे लाभ होंगे निदान मैं उसके घर गया उसने मुझे गोदाममें ले जाय तिल का बोरा दिखाया मैंने उसे तुलवाया एक सौ पचास मन निकले उनको गधों पर लदवाय उसका मोल सोलह सहस्र पांचसौ रुपये हमने उसे गिन दिये उसने एक हज़ार पांचसौ रुपये मुझे दे कहा ये तुम्हारे हैं क्योंकि मैंने अपनी वस्तु को प्रत्येकमन एकसौ पर बेंचने का क़रार कियाथा अब प्रतिमन दश रुपये बचे उसे तुम लो और पन्द्रह सहस्र भी अपने निकट रक्खो जब मुझे आवश्यकता होगी लेलूंगा यह कह वह अपने घर चलागया एकमास पश्चात् उस मनुष्य ने मुझसे आयकहा हमारा द्रव्य तुम्हारे निकट है मैंने कहा तय्यार है जो कहो तो लाऊं फिर मैंने उससे कहा आप अपने अश्व से उतर कर कुछ भोजन कीजिये तुम्हारे खाते खाते तुम्हारा धन भी आजावेगा उसने उत्तर दिया मुझे एक कार्य अवश्य है मैं ठहर नहीं सक्ता लौटकर लूंगा तुम रुपये बाहर निकाल रखना मैं उसकी राह देखता रहा वह उस दिन तो न आया किन्तु एकमास पर्यन्त उसे मैंने न देखा तदनन्तर मैंने उस धन को रक्षापूर्वक रक्खा निदान तीन मास के पश्चात् फिर वह एक दिन दृष्टिपड़ा मैं तुरन्त उसके निकट गया और कहा आप उतरें और अपना धन लें उसने कुछ भी विचार न किया और कहा मित्र इतनी शीघ्रता क्यों करते हो मुझे भरोसा है कि मेरा धन अच्छे स्थान परहै मैं आप लेलूंगा यह कह वह चलागया मैं एक सप्ताह पर्यन्त उसकी राह देखतारहा और मनमें शोचा यदि इतने समयान्तर में कोई कार्य इस धनसे करता तो बहुतसा लाभ उठाता निदान एक वर्ष व्यतीत हुआ तो वह व्योपारी उत्तम २ वस्त्र पहिन मेरे घर आया मैंने उससे कहा आप मेरे घर में उतर विश्राम कीजिये उसने कहा बहुत अच्छा मैं चलता हूं परन्तु मेरे वास्ते कुछ श्रम न करना मैंने कहा जिसमें आपकी प्रसन्नता होगी वही करूंगा वह उतरपड़ा और मेरे घर आया मैं तुरन्त भोजन लाया वह बायेंहाथ से खानेलगा मैं देख आश्चर्य में

हुआ कि वह कोई कार्य दाहिनेहाथ से न करताथा मैंने विचारा कि यह मनुष्य शीलवान् और प्रसन्नचित्त है यदि मैं इससे कोई बात पूछूं तो वह अप्रसन्न न होगा जब भोजन करचुका और सेवक भोजन के पात्र को उठा लेगया और उस स्थान को साफ़ करनेलगा हम वहांसे उठ दूसरे दालान में जाबैठे और मैं उसका पान इलायची आदिसे सत्कार करता रहा वह बायें हाथसे लेता निदान मैंने उससे कहा यदि तुम अप्रसन्न न हो तो मैं कुछ तुमसे पूछूं उसने कहा बहुत अच्छा तब मैंने पूछा क्या कारण है आप सब काम बायें हाथसे करते हैं दाहिने को नहीं लगाते आपने भोजन भी बायें हाथ से किया उसने यह सुन ठण्डी सांस खैंची और अपनी दाहिनी बाहु जिसे वह सदैव वस्त्रमें छिपाये रखता था निकाल दिखाया मैंने देखा दाहिना हाथ उसका सब कटा है मैंने पूछा हाथ क्योंकर कटाहै यह सुनतेही वह अधैर्य हो रोया कुछ काल पीछे अपना वृत्तांत कहने लगा कि मैं बुग़दाद का बासी हूं मेरा पिता बड़ा धनाढ्य वहां का रईस था मैंने ब्योपारियों से मिसर की प्रशंसा सुन उसके देखने की इच्छा की मुख्यकर क़ैरू के जो यहां की राजधानी है अधिक लालसा की और कई बेर वहां जाने की इच्छा की परन्तु जबतक कि मेरा पिता जीतारहा उसने मुझे जाने की आज्ञा न दी फिर जब वह कालवश हुआ और मैं स्वाधीनहुआ मैंने क़ैरू जाने की इच्छा की और बहुतसी सौगात और वस्तु बगदाद और मवरसल की मोल ले इस ओर चला जब मैं क़ैरू में पहुँचा एक सराय में जो मसरूर नाम से विख्यात थी उतरा तदनन्तर किरायेपर एक घर और एक गोदाम ब्योपार की वस्तु रखने के लिये लेकर मैं उस घर में गया और अपने सेवकों से कहा बाज़ार से कुछ पाक मोल लाओ सो उन्होंने तुरन्त नानाप्रकार के भोजन ला मेरे सन्मुख रक्खे मैं अपनी इच्छानुसार भोजन कर मसजिद गढ़ आदि जो ख्यात और देखनेयोग्य थे गया और भलीभांति उनको देखा दूसरे दिवस मैंने उत्तम वस्त्र पहिने और अपनी गठरियों से दो तीन थान ले चौक को चला कि विदित हो ये चीज़ें यहां कितने मोल पर विकतीहैं जब

चौक में पहुँचा दलाल कि मेरे आगमन का समाचार सुनचुके थे उन्होंने आकर मुझे घेरा और मैंने नमूने प्रत्येक वस्तु के जो मेरे पास थे दिये उन्होंने चौक के बज़ाजों को दिखाकर बेंचना आरम्भ किया प्रतिदिन मैं आता और मेरा थोड़ा थोड़ा असबाब बिकता परंतु मेरा घर चौक से बहुत दूरथा इसवास्ते मजदूरों और गाड़ी वालोंको दुःखहोता दलालोंने यह हाल देख मुझसे कहा यदि हमारे कहनेपर तुम्हें विश्वास हो तो हम तुम्हें एक उपाय बतावें कि मज़-दूरी देनेसे छूटो तुम अपनी वस्तु व्योपारियों को बेंचनेके लिये बांट दो वे तुरंत तुमको बेंचदेंगे और तुम प्रतिसप्ताह में केवल एकबेर सोमवार वा बृहस्पतिवार को आया करो इस समयान्तर में जितना माल तुम्हारा बिकेगा उसका मोल समझ लियाकरना इसमें निस्सं-देह तुमको लाभ होगा और किरायेकी हानिसे बचोगे और ये व्यो पारी भी कुछ लाभ उठावेंगे तुम भलीभांति इस नगरको मुख्य नील नदी को देखना और सैर करना मैं यह बात स्वीकार कर उनको अपने घर लेगया और सम्पूर्ण वस्तु एकहीबेर लेजाकर चौक के दूकानदारों को बेंचने के लिये बांटदी उन्हों ने मालकी रसीद सा-खियों सहित लिखदी और मैंने भी लिखदिया कि एक मास पर्यन्त तुमसे इसका मोल न मांगूंगा मैं यह प्रबंधकर अत्यंत निश्चिन्त और हर्षितहुआ मैंने अपने समआयु से मित्रता की एक मास के व्यतीत होनेके पश्चात् उन व्योपारियों से तक़ाज़ा करना आरम्भ किया मैं दोदिन चौक में जाकर अपनी वस्तु का दाम लेता कुछ स-मय में मुझे बहुत द्रव्य प्राप्तहुआ मैंने उसे अपने वासस्थान सराय मसरूर में रक्षापूर्वक संचित कररक्खा बहुधा भोर को मित्रों के साथ सैर को जाता और नगर के वासियों को चौकमें इकट्ठेदेख और उन की वार्त्ता सुन हर्षित होता एक दिन मैं बदरुद्दीन नामक व्योपारी की दूकान पर बैठाथा एक स्त्री उत्तम २ वस्त्र आभूषण से अलंकृत कई अतिरूपवती और स्वच्छ बांदियोंके साथ दूकानपर आकर मेरे समीप बैठगई उसके आगमनसे मैं अत्यन्त प्रसन्नहुआ और चाहा कि उसके रूप अनूपको वस्त्र उतार देखूं उसने मेरी इस अधैर्यता

और बेवशी को समझकर जालीका वस्त्र इस तमक और इस भाव से उठाया कि मैं उसके रूप अनूप और मायावी नेत्रों को देखतेही मोहितहुआ थोड़ीदेरके पीछे उसने बदरुद्दीनहसन से कुशल क्षेम पूछी और ज़रीबाफ़ का थान मांगा बदरुद्दीन ने एक थान जिसका मोल ६६००) रु० था निकाल दिखाया उस रूपवती ने उसे पसन्द किया और कहा यदि कहो तो मैं इसे आज अपने घर लेजाकर मोल इसका कल्ह भिजवाऊं बदरुद्दीन ने कहा आप इसे तुरन्त लेजाइये इसका मोल जब चाहिये तब दीजिये परन्तु यह थान इस मनुष्य का है जिसे तुम दूकान पर बैठे देखती हो आजके दिन मैंने प्रण किया है कि जो इस सप्ताह में असबाब बिकाहै उसका मोल लूं उस स्त्री ने कहा एक दिन का सावकाश दो कल में इसका मोल अवश्य भेजूंगी ब्योपारी ने कहा सुन्दरी आजही हमको चाहिये यह सुनते ही वह मृगनयनी अप्रसन्नहुई और थान बदरुद्दीन के सन्मुख फेंकदिया और कहा तुम सब ब्योपारी बड़े बेशील हो सिवाय अपने और किसी का विश्वास नहीं करते यह कह क्रोधितहो उठचली जब मैंने देखा वह सुन्दरी दूर निकलगई तो बड़ेशब्दसे पुकारा कि इधर आओ मैंने एक उपाय विचाराहै जिसमें सौदा बने वह स्त्री लौटआई और जानगई कि वह थान मेरा है मैंने वह थान उस स्त्री को देकर कहा आप इसे लेजाइये इसका मोल दीजिये वा न दीजिये आपकाही यह धन है वह स्त्री थान ले हर्षितहुई और आशीर्वाद दिया कि परमेश्वर तुम्हें अधिक द्रव्य दे और जीतारक्खे इसके सुनतेही मुझे कुछ कहनेकी शक्तिहुई तो मैंने उससे कहा आप अपना रूप अनूप बालों की लटक सुन्दरता की चटक मुझे दिखाती जाओ उस स्त्री ने मेरी ओर फिर अपने कोमल शोभायमान मुख पर से जाली का वस्त्र उठाया उसकी सुन्दरता को देख मैं प्रथमसे अधिक मोहितहुआ और उसके स्वरूप मनहरणको टकटकी बांध निर्जीव चित्र के सदृश देखनेलगा और खड़ा रहगया परन्तु उस चित्तचोर घोर ने तुरन्त अपना मुख छिपालिया कि कोई अन्य न देखे तदनन्तर वह थान उठा और मुझे उसी दशा में छोड़

अपने घरको चली मैं वहीं तड़पतारहा जब कुछ सुधिसँभाली तो उस व्योपारी से पूछा यह सुंदरी कौनहै उसने कहा यह एक धनपात्र की पुत्रीहै इसका पिता बहुतधन छोड़ मरगया तदनन्तर मैं उसी विह्वलता में अपने वासस्थान को गया और विना भोजन किये सोगया और रैनभर उसीके शोचमें रहा दूसरे दिन भोरको फिर उसके देखने की आशा में बदरुद्दीन की दूकान पर गया क्षणमात्र न हुआथा कि वही सुन्दरी बांदियों के समूह में वहां पहुंची और मेरी ओर देख कहा देखो मैं कैसी अपने वचन पर दृढ़हूं आज के वचनानुसार अपना वचन पालन किया मैंने कहा हे सुन्दरी! मुझे आपसे भरोसाथा आपने क्यों इतना श्रमकिया उसने कहा यह सब सत्यहै परन्तु व्योहार में सत्यता अच्छी होती है यह कह छःहजार छःसौ रुपये की थैली मेरे सम्मुख रख मेरेपास बैठगई मैंने अव-काश पाकर कुछ अपनी प्रीति का हाल वार्त्ता में वर्णन किया यह सुन वह तुरन्त उठ चलीगई मैंने जाना मेरे इस वर्णन से इसे कुछ खेद हुआहोगा मैं उसे देखता रहा कि वह मेरी दृष्टि से गुप्त होगई तब मैं उस व्योपारी से बिदाहो एक ओर को जिस दिशा को मैं न जानताथा चला कितनीदूर गया था कि एक स्त्री ने पीछे से आके मेरीदृष्टि पर हाथ रक्खा मैंने पीछे फिरके देखा और पहिंचाना कि वह उसी स्त्री की एक अनुचरी है जिसपर मैं मोहितहूं मैं उसे देख हर्षितहुआ उस बांदी ने धीरेसे मेरे कानमें कहा मेरी स्वामिनी तुम को बुलाती है कि तुमसे कुछ वार्त्ताकरे मैं तुरंत उसके साथ हो-लिया और थोड़ीदूर पर गया कि वह स्त्री सर्राफ़ की दूकान पर बैठी हुई मेरी राह देखती थी उसने मुझे देखतेही अपने समीप बैठा लिया और कहा अधीर और दुःखित न हो मेरी भी तेरी प्रीति में यही दशा है परन्तु बुद्धि के विरुद्ध था कि मैं उस व्योपारी के सम्मुख तुझसे इस भांति की वार्त्ता करती निदान मुझे बहुतसा समझाबुझा कर कहा मेरे घर चलो वा मैं तुम्हारे घर चलूं मैंने कहा मैं इस नगर में परदेशी हूं एक सराय में उतरा हूं वह स्थान आपके आने योग्य नहीं जो आपके घर का पता विदित हो तो वहां पहुँच सक्ताहूं उस सुन्दरी

ने इस बातको स्वीकार किया और कहा कल बुधवार है तृतीयप्रहर मेरा घर कि अमुक गली में है आना और उस गली में पूछना अमुक मनुष्य का घर कहां है उसी स्थान पर तुम मुझे पावोगे मैं उसके वासस्थान का पता भलीभांति पूछ बिदाहुआ वह दिन काटना मुझे कठिन हुआ जब दूसरा दिन हुआ मैंने तड़के उठ उत्तम उत्तम वस्त्र पहिन एक थैली पचास अशरफ़ी की जेब में रक्खी व एक किराये की सवारी पर सवार हुआ जब उस गली में पहुँचा उस भलेमानस का घर पूछा एक ने ठीकठीक पता बतादिया मैंने अपनी सवारी से उतर और किराया दे वहां से उसे बिदा किया और कहदिया कि दूसरे दिन भोर को वाहनसहित आइयो और मुझे मसरूर की सराय में लेजाइयो फिर मैंने उस घर के द्वार पर ताली बजाई शब्द सुनते ही दो छोटे २ गुलाम बहुत श्वेत वस्त्र पहिने मानो मेरे आनेकी राह देखते थे उन्होंने आकर द्वार खोला और कहा भीतर आइये हमारी स्वामिनी तुम्हारे आगमन की राह देखती है और बहुत अधीर और बेवश है मैं भीतर गया वहां एक बारहदरी देखी कि बहुत ऊँची जिस की ऊँचाई सात सीढ़ी की थी और उसके चारोंओर जाली का घेरा बनाहुआ था और उसके आगे एक पुष्पवाटिका थी इसके विशेष बहुतसे सघनवृक्षों से वह स्वच्छभवन सुशोभितथा जिनसे धूप न आसक्की और बहुतसे वृक्ष फलसे लदेहुये थे जिनपर नानाप्रकार के पक्षी अपनी मनोहर और मिष्टवाणी सुना प्रसन्न करते और उन पक्षियों के शब्दके साथ बड़े ऊँचे२कुंडों से अतिनिर्मल नीर उस पुष्पवाटिका में पड़ता जिससे आनन्द होता वह कुंड देखने में अत्यन्त सुन्दर और चौकोण थे उनके चारों ओर अज़दहे के मुख बनेहुये जिनमें से अत्यन्त निर्मल और उज्ज्वल बिल्लौरके समान नीर बहता निदान वह दोनों गुलाम मुझे अपने साथ एक मकान में लेगये जो अत्यन्त सुन्दर और नानाभांति से अलंकृत था वहां एक बालक दौड़ाहुआ मेरे आगमन का संदेश कहनेको गया और दूसरा उस कोठे को दिखाने लगा क्षणमात्रमें वह रूपवती धीरे २ हंसगति से चलती शिरसे पांवतक बहुमूल्य रत्न और आभूषण से अलंकृत मेरे समीप आई

उस समय का हर्ष मैं कुछ वर्णन नहीं करसक्ता निदान हम दोनों पर-स्पर देख प्रसन्नहुये और एक दालान में बैठकर वार्त्ताकरनेलगे इतने में भोजन बनगया हम दोनों खाकर फिर वार्त्ता करनेलगे फिर वे उत्तम मदिरा और सूखे, हरे फल लाये कुछ बांदियां मिष्टस्वर से गान करने लगीं और कुछ सेवा करनेलगीं और वह सुन्दरी भी मुझे अपने कटाक्ष और गानेसे रिझाती निदान सम्पूर्ण रात्रि आनन्द मङ्गलमें व्यतीतहुई जब भोरहुआ मैंने चुपके से वह अशरफ़ियोंकी थैली उसके उपधान के गिलाफ़ में जो मेरे निकटथा रखदी और उठकर उससे कहा सुन्दरी अब मैं विदाहोताहूं तुम्हें परमेश्वर को सौंपा उसने पूछा अब कब आवोगे मैंने कहा फिर सन्ध्या को आ-ऊंगा वह प्रसन्नहो मुझे द्वारतक पहुँचागई और मुझे जाते समय सौगन्ददी कि अपने वचनपर अवश्य आना मैं उस घर से बाहर निकल ऊंट पर जो उसी मनुष्य ने प्रथमसे ला रक्खा था चढ़ मस-रूर की सराय में आया और ऊंटवाले से कहा संध्या को फिर ऊंट लेकर आइयो और नाना प्रकार के पाक व्यञ्जन एक मनुष्य के हाथ उस सुन्दरी के पास भेजे उसी नियमित समयपर ऊंटवाला ऊंट लाया और मैंने दूसरी थैली पचास अशरफ़ियोंकी कमर में बांधी और वहां जाकर रात्रि भर रहा और उसीभांति वह थैली तकिये में रखआया एक अवधि पर्यन्त वहां जाता और उस सुन्दरी के पास रहता और विदा होते थैली पचास अशरफ़ियों की वहां रखआता रहा कि कुछ समयान्तर में सम्पूर्ण द्रव्य वस्तु जो कुछ कि मेरेपास था चुकगया जब कुछ न रहा उस स्त्री के घर जाना छोड़दिया एक दिवस भोर को बादशाही गढ़के देखने को गया एक स्थानपर बहुत से मनुष्यों का समूह देखा मैं उस भीड़ में घुसगया वहां क्या दे-खताहूँ कि एक मनुष्य घुड़चढ़ा एक अशरफ़ियों की थैली उसके ज़ीन में लटकती है और उसका हरा डोरा नीचेतक लटकता है अकस्मात् एक मनुष्य काष्ठ का गठा लिये उस सवार के समीपसे होकरगया सवार ने इस भय से कि लकड़ी का खोंचा न लगे अपने घोड़े को भीड़ की तरफ़ से फेरा दैवयोग से वह डोरा थैली का मेरे

हाथ में आलगा मैंने उसे खींचकर थैली अपनी कमर में रखली सवार ने थैली को ज़ीन में लटकतीहुई न देखा तो मुझको कि समीप खड़ाथा बड़ेरोष से खड्गमारा जिससे मैं गिरपड़ा मनुष्य मुझे पड़ादेख उस सवार को दुर्वचन कहनेलगे कि तूने इसको निर्दोष क्यों मारा और उस पुरुष के घोड़े की लगाम पकड़ चाहते थे कि उसको मारें सवार ने कहा तुमको विदित नहीं यह चोर है इसने मेरी अशरफ़ियों की थैली चुराई है वह इसी वार्त्ता में थे कि इतने में मेरी अभाग्यता से पुलिस की रौंद आपहुँची और रौंद के अधिप ने पूछा यह क्या हाल है सवार ने अपनी अशरफ़ियों के जाने का वृत्तान्त वर्णन किया पुलिसके प्रधानने पूछा तुमको किसपर संदेह है उसने मुझे बताया पुलिसदारने मुझसे पूछा मैंने इन्कार किया पुलिसदार ने उससे कहा यह चोर नहीं है सवार ने कहा मुझे विश्वासहै कि इसीने ली तब पुलिसदारने अपने आदमियोंको आज्ञा दी इस मनुष्य का झारा लो उन्होंने मेरा झारा लिया वह थैली मेरी कमरसे निकली पुलिसदार ने प्रथम सवार से पूछा जो यह तेरी थैली है तो तू बता कि इसमें कितनी अशरफ़ी हैं और क्या सिक्का है उसने कहा अमुक सिक्के की बीस अशरफ़ियां हैं तब पुलिसदार ने खोलके देखा और गिना तो बीस अशरफ़ियां उसी सिक्के की पाईं जैसा कि सवार ने कहाथा पुलिसदार वह अशरफ़ी सवार को दे मुझे न्यायाधीश के निकट पकड़लेगया न्यायाधीश ने आज्ञा दी कि दाहिना हाथ इसका काटडालो तुरन्त मेरा हाथ काटा गया फिर न्यायाधीश ने कहा यह तो उसकी चोरी का दण्डहै इसने असत्य कहा इसलिये एक चरण भी काटो तब मैं बहुत घबराया उसी सवार को जो वहींथा बिनती कर प्रसन्नकिया उसने मुझपर दयाकर न्यायाधीश से कहसुन पांव काटने से बचाया और उस सवार ने उदारता से वह थैली मुझे दे कहा मैं जानताहूं कि तू चोर नहीं कोई ऐसीही आपत्ति पड़ी कि तूने चौरकर्म किया यहकह सवार तो चलागया और जो मनुष्य कि वहांथे मुझपर दयाकर मुझे अपने घर लेगये और एक गिलास मदिरा का मुझे पिलाया और

रुधिर बंद करने के लिये एक पट्टी मेरे घाव पर दृढ़बांधी जब मैं मसरूर की सराय को गया और किसी अपने सेवक को न पाया कि इस दशा में मेरी सहायता करते अनन्तर यह शोचा कि उसी स्त्री के घरजाऊं फिर यह शोचा जो वह मेरे इस हाल को मालूम करेगी तो वह भी मुझसे ग्लानि करेगी परन्तु मैं बहुत दुःखित था और किसी दूसरे को अपना सहायक न पाया निरुपायहो वहीं जानेकी इच्छा की जब भीड़ छिटकगई मैं दूसरे मार्ग से उसके घरतक पहुँचा पीड़ा के कारण अत्यन्त अशक्त था उसके गृह जाय शय्या पर लेटगया और दाहिना हाथ कटाहुआ अपने बसन में छिपालिया थोड़ी देरमें उस सुन्दरी को मेरे आगमन की खबरहुई वह सुनतेही दौड़ी आई मुझे व्याकुल और तड़पते देख बोली हे मेरे प्राण! हे मेरेप्यारे! तुम्हारी क्या दशा है मैंने मुख्य बृत्तान्त प्रकट न कर कहा मैं इस समय शिरपीड़ा से अत्यन्त व्याकुल और दुःखित हूं यह सुन वह अत्यन्त शोकयुक्त हो शय्या के नीचे बैठगई और कहने लगी बहाना न करो सचकहो तुमपर कौनसी आपदा और दुःखपड़ा अभी तो कल तुम भलेचंगे थे आज यह तुम्हारी क्या दशा हुई कोई दूसरा कारणहै जिसे तुम मुझसे छिपाते हो परमेश्वर के वास्ते मुझे बताओ मैंने कुछ उत्तर न दिया और रोनेलगा तब उसने कहा जो तुम अपना हाल नहीं बताते तो मैं जानतीहूं कि तुम्हारी प्रीति और प्यार मुझसे सब झूठाहै मैंने कहा सुन्दरी मैं अपना दुःख तुमसे क्या बर्णन करूं मुझसे कहा नहीं जाता जब सायंकाल हुआ और भोजन बनगया उसने मुझे खाने को बुलाया मैंने देखा दाहिने हाथ के सिवाय भोजन करना कठिनहै मैंने कहा इससमय मुझे इच्छा नहीं उसने कहा पश्चात्ताप है तुम अपना बृत्तांत प्रकट नहीं करते तुम पीड़ा से अति दुःखित और अशक्त हो तब उसने मदिरा का एक गिलास भरके मुझे दिया कि इसे पियो इससे तुम्हें शक्तिहोगी उसको भी मैं बायें हाथ से ले पी गया वह मदिरा का गिलास नेत्रों से अश्रु के द्वारा बह निकल गया और ठंढी उसासें लेनेलगा उस सुन्दरी ने कहा मेरे प्रियस्वामी

क्यों तुम ऐसी ठंढी उसासें लेते और नयनों में नीरभर रुदन करते हो मैंने कहा मुझसे इसका कारण न पूछो मेरे दाहिने हाथमें शोथहै और बहुत पीड़ाहोतीहै उसने कहा दिखाओ मैं चुपहोरहा और जो शेष मदिरा उस गिलास में थी वहभी पीली जो गिलास बहुत बड़ा था और मदिरा भी उसमें बहुतथी मुझे पीड़ा और थकनेसे बेसुधि सीहुई और उसी दशा में सोगया जब उस सुन्दरी ने मुझे निद्रा में बेसुधिपाया चाहा कि मालूमकरे कि मेरे दाहिने हाथमें क्या पीड़ा है वहां से वस्त्र हटा और मेरे हाथ को कटादेख आश्चर्यितहुई फिर उसीभांति उसे वस्त्र से ढांकदिया और अत्यन्त शोकयुक्त और विस्मित हुई जब मैं जागा तो उसे शोचयुक्त देखा उसने मुझसे कुछ देखनेका हाल न कहा ऐसा न हो कि मैं कुछ बिलगमानूं परंतु अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुरन्त मुर्ग़ के बच्चे का गाढ़ाशोरुआ बनाओ सो उन्होंने बनाय मुझे पिलाया कि मुझे सामर्थ्य हो जब मैं पीचुका उससे बिदाहो चला उसने मेराबस्त्र पकड़लिया और मेरे जानेकी बाधक हुई और कहा मैं तुम को इस दशा में जाने न दूंगी जबतक तुम मुझसे अपनी पीड़ा का बृत्तान्त नहीं कहते परंतु मुझे बिदितहै कि इस तुम्हारे दुःखका कारण मैंही अभागी हूं और जानतीहूं कि इस दुःख से मैं शीघ्र मरजाऊंगी यह बात जो मैंने बिचारीहै उसे अवश्यकरना यहकह अपने सेवकों को आज्ञादी कि इस मुहल्ले के पुलिसदार और कई साक्षियों को बुलाओ जब वह आये उनके साम्हने अपनेसम्पूर्ण द्रव्य और बस्तु को मेरे नाम लिखदिया और उनको कुछ देले बिदाकिया तदनन्तर एक संदूक खोला जिसमें मेरी थैलियां जिनको पहिलेसे अन्तदिवस तक ले गयाथा उसीप्रकार रक्खी हुईथीं कहा यह थैलियां तुम्हारी लाईहुई इसमें वर्त्तमानहैं मैंने इनमें हाथभी नहीं लगाया यह कह सन्दूकको बंदकर उसकी कुंजी मुझे दी उसीदिनसे वह स्त्री रोगीहुई और दो तीनसप्ताह के पश्चात् मरगई मैं उसका शोककर सब असबाबले निज बासस्थान बुग़दाद में आया सो वह तिल जो तुम्हारे द्वारा बिके उसीके धन में से थे उस बुग़दादी ने अपने बृत्तान्त को पूर्णकर

मुझसे कहा अब तुमको बायें हाथ से खाने का हाल विदित हुआ मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूं तुमने अपना इतना समय मेरे बृत्तान्त के सुनने में ब्यतीत किया और तुम्हें इतनाश्रम हुआ तुम्हारी शीलता और मिलनसारी से मुझे हर्षहुआ और मेरे तिल का मोल जो तुम्हारे पास बर्त्तमानहै मैंने तुमको दिया तुम उसे स्वीकारकरो और मुझे तुमसे एक आवश्यकता है मैंने देशों देशमें फिरना इन दिनों में छोड़दियाथा यदि तुम मेरी सहायताकरो तो फिर मैं ब्यापारकरूं जो जो कुछ कि बर्ष में प्राप्तहोगा हिसाबकर अर्ध अर्ध भाग बांट लेंगे नसरानी ब्यापारी कहताहै कि मैंने उस मनुष्य से कहाकि मैं तुम्हारी देन से अत्यन्त कृतज्ञ हुआ कि तुमने सबका सब धन मुझे अपना देडाला इसके बिशेष तुम मुझे अपने संयुक्त करते हो मैंने उसे मनसे स्वीकार किया कि मैं इस बिषयमें इतनी सहायता करूंगा जैसा कि अपने कार्य में करताहूं निदान एक शुभवार यात्रा की नियतकी जब वह दिन आया हमने बग़दाद को कूचकिया सीरा और मपूटमा में पहुँचे और वहांसे फ़ारस में गये इसी भांति नगरों देशों में फिरते फिरते आपकी राजधानी में पहुँचे कुछ दिनों में उस मनुष्य ने मुझसे कहा मैं चाहताहूं कि फिर फ़ारस को जाऊं और वहां बैठरहूं हमने परस्पर बैठ सब अपना मुख्यधन और नफ़े का हिसाबकर अर्ध अर्ध बांटलिया और परस्पर प्रसन्नरहे वह मनुष्य फ़ारस को गया और मैं आपके देश में रहनेलगा यह कहानी जो मैंने आपके सम्मुख बर्णन की क्या कुबड़े के बृत्तान्त से अद्भुत और उत्तम नहीं बादशाह काशगरनसरानी ब्यापारीपर बहुत क्रोधित हुआ और कहा हे निर्लज्ज ! तू क्या कहता क्या तूने कुबड़े के बृत्तान्त के समान अपना चरित्र सुनाया तू अपने मनहीं को प्रसन्न करताहै स्मरण रख मैं तुम चारों को उस कुबड़े के पलटे बध करूंगा यह सुन मोदी उठ बादशाह के चरणों में गिरा और बिनयकी आप क्रोध न कीजिये मेरी कहानी सुनिये यदि वह कहानी इस कुबड़े के बृत्तान्त से अद्भुत और उत्तम हो तो मुझे परिपूर्ण आशाहै कि हम चारों का अपराध क्षमा हो बादशाह ने कहा जो तेरी कहानी

बिचित्र होगी तो मैं तुम चारों का अपराध क्षमा करूंगा॥

मोदी के मुख से वर्णित चरित्र॥

मोदी ने कहा स्वामी कल मैं एक धनपात्र मनुष्य की पुत्री के विवाह में था और उसकी सभा में बहुतसे भलेमानस नगर के बासी इकट्ठे थे जब सब विवाह की रीतें होचुकीं और नानाप्रकार के पाक और ब्यञ्जन परसे गये और सब जाकर बैठे प्रत्येक ने इच्छाभोजन किया नाना प्रकार के पाक थे एक थाल में अत्यन्त स्वादिष्ठ और सरुचि लहसुन रक्खे थे प्रत्येक मनुष्य उसमेंसे थोड़ा थोड़ा लेकर रुचिपूर्वक भोजन करता परन्तु हममें से एक मनुष्य जो उस थाल के समीप बैठाथा न खाता किन्तु देखता भी नहीं हमने कहा तुम क्यों नहीं खाते उसने कहा प्रथम मैंने एक बेर इसे खाया तो ऐसे दुःख में पड़ा कि आजतक नहीं भूला तब सब मनुष्यों ने उससे पूछा तुम क्यों इस स्वादिष्ठ पाक से ग्लानि करतेहो उसने कुछ उत्तर न दिया तब स्वामी ने कहा मित्र यह पाक बहुत अच्छा बना है और हम सब इसे रुचिसे खाते हैं तुम क्यों नहीं खाते जैसा कि तुमने अपने आगमन से मुझे कृतार्थ किया कृपाकर इसको भी भोजन कीजिये उस पुरुष ने कि बुग़दाद का बासी था उससे कहा यदि आपकी यही इच्छा है तो मुझे इन्कार नहीं परन्तु इस पाक के भोजन के पश्चात् मेराहाथ अशनान (अर्थात् एकप्रकार की सुगन्धमयी घास) और चालीस बेर अमुक घास से व बहुत बेर साबुन से धुलवाना इसके बिशेष मैंने इसके भोजन की बड़ी सौगन्द खाई है जिसे मैं भंग नहीं करसक्ता उसने स्वीकार किया और एक पात्र में लहसुन रख उसके सन्मुख रक्खा और अपने सेवकों को आज्ञादी कि कई पात्रों में उष्णजल तय्यार रक्खें और अमुक घास की राख और साबुन तय्यार रक्खें कि यह मनुष्य जितनी बेर चाहे हाथ अपना धोवे यह कह उससे कहा अब कुछ इसमें से भोजन कीजिये नहीं तो बस्तु हमारी नष्ट जायगी तब वह ब्यापारी लाचारी से डरते २ उसमें से ग्रास उठा अत्यन्त ग्लानि से मुख में रख खाने लगा हमको अत्यन्त आश्चर्य हुआ और बिशेष इस बात से कि

नम्बर २० मुतअ़ल्लिक़े सफ़े २७०

एक स्त्री का खच्चर पर सवार और व्यापारी से वार्त्ता करना·

उसने अँगूठे के सिवाय चार उँगलियों से खाया यद्यपि प्रथम भी उसने इसी प्रकार भोजन किया था परन्तु तबतक किसी ने न देखा था घरवाले ने उससे कहा तुम्हारे अँगूठा नहीं उस पुरुष ने कहा सत्यहै इस सेवक पर एक ऐसी आपत्ति पड़ी जिससे मेरे हाथ पांव के चारों अँगूठे काटे गये जो तुम उस बृत्तान्त को सुनोगे तो आश्चर्यित होगे अब मुझे आज्ञा हो तो मैं अपने हाथ धोऊँ यह कह उठा और एकसौ चालीस बेर हाथ धो फिर आबैठा और अपना बृत्तान्त इसभांति कहने लगा॥

चारों अंगुष्ठ कटेहुये मनुष्य की कहानी॥

हे मित्रो! मेरा पिता बग़दाद का बासी था और ख़लीफ़ा हारूंरशीद की सल्तनत में मैं भी उत्पन्न हुआ और मेरापिता बड़ा धनपात्र था और बड़े व्यापारियों में गिनाजाता था परन्तु अत्यन्त लम्पट था इस निमित्त व्यापार के बहुतसे कार्यों में अप्रबन्धता रहती उसके मरने के पश्चात् बहुतसे मनुष्योंका ऋणरहगया मुझे उसके देने में बहुतकष्टहुआ निदान धीरे धीरे मैंने अपने पिता का सब देन चुकादिया तदनन्तर परमेश्वर की पूर्णकृपा से इतना द्रव्य प्राप्त हुआ जिससे मैं कुछ निश्चिन्त हुआ और दूकान पर बैठ सादा कपड़ा बेंचाकरता एक दिन मैं भोर को अपनी दूकान खोले बैठाथा अकस्मात् एक सुन्दरी खच्चर पर सवार एक सेवक आगे और दो बांदियां पीछे मेरी दूकानपर आखड़ीहुई सेवक ने उस सुन्दरी का हाथ थांभ बाहन से उतारा और चहुँओर देखकहा हे सुन्दरी! तुम बहुतसबेरे आईं अभी कोई दूकान नहीं खुली कहांतक राह देखोगी उस सुन्दरी ने भी चारोंओर देख कहा वास्तव में एक दूकान के सिवाय कोई भी नहीं खुली तदनन्तर वह मेरी दूकान पर आई और प्रणामकिया मैंने उसका भलीभांति आगतस्वागत किया और कहा दयाकर इस दूकान पर बैठ मुझे कृतार्थ कीजिये निदान वह सुन्दरी मेरी दूकान पर आय बैठगई और देखा कि चौक में केवल उसका सेवक और मैंहीहूं सो हवा खाने के वास्ते अपने चन्द्रमुख से वस्त्र उतारा मैंने जो जन्मभर ऐसा रूप छबिअनूप, मनहरण, प्रसन्न-

करण न देखाथा तुरन्त मोहित होगया और उसी को देखाकिया फिर उसने भलीभांति वस्त्र उठाय मुझे अपना इन्दुमुख दिखाया कि इतने में सब दूकानदार वहां इकट्ठे होगये उससमय उसने लज्जाकर अपने मुखको छिपाया और मुझसे कहा मुझे बहुमूल्य थान ज़र-बाफ़की आवश्यकता है जो तेरी दूकान पर हों तो दिखा मैंने कहा मेरी दूकान पर नहीं परन्तु आपके वास्ते अन्य दूकानदारों से जो मेरा बिश्वास करते हैं लादूंगा और वह भी मेरे कारण अधिक मोल न लेंगे और आपको कुछ श्रम वार्त्ता आदि का दूकानदारों से न होगा वह सुन्दरी इस बातपर प्रसन्नहुई इस बिषयमें उसकी और मेरी वार्त्ता चिरकालपर्यन्त होती रही निदान मैं उन थानों को ढूंढ़ने कई दूकानों पर गया और ढूंढ़कर लेआया उसने कई एक थान प-सन्दकर उनमें से रखलिये और उनका मोलपूछा मैंने कहा इनका मोल २४७५०) रुपये हैं उसने कहा बहुत अच्छा तदनन्तर मैंने वह थान वस्त्र में बांध उसके दासको दिये वह सुन्दरी मुझसे बिदा हो चली उसकी प्रीति में मैं ऐसा बेबश था न तो उनका मोल उससे मांगा और न पूछा कि वह सुन्दरी कहां रहती है उसके चलेजाने के पीछे मुझे बड़ाशोच हुआ कि इतना द्रव्य मैं कहां से उन बज़ाजों को दूंगा निदान मैं उनके समीप गया और कहा कि मैं इस स्त्री को भलीभांति जानताहूं कुछ शंका का स्थान नहीं मैं उनको धैर्यदे संध्या को अपने घर आया रात्रिभर मुझे उसकी प्रीति और द्रव्यके देनेके बिचारमें निद्रा न आई भोर को प्रत्येक दूकानदार के गृह जाय एक सप्ताह का क़रार करआया उन्हों ने भलमनसात और शीलता से अंगीकारकिया आठवेंदिन भोर को फिर मैंने उनकी बिनय कर कुछ और मुहलत मांगी उन्होंने माँगना बंदकिया दूसरेदिन भोर को वह सुंदरी उसी खच्चर पर उन्हीं सेवकोंसहित मेरी दूकानपर आई और कहनेलगी मैंने तुम्हारी बहुत राह देखी कि आकर रुपये लेजाओगे अब आप उनको लेआई इन्हें लेकर सराफ़ से परखवालो सेवक जिसके पास वह थैलियां थीं मुझेले सराफ़के निकटगया और परख-वाया सबके सब अच्छे थे वहां से मैं अपनी दूकान पर आया इतने

ने चौक की दूकानें खुलीं मैं उस सुन्दरी से वार्त्तालाप करतारहा उस सुन्दरी ने इस चतुरता से वार्त्ता की कि जिससे विदित हुआ कि अत्यंत बुद्धिमान् और प्रवीण है और वार्त्तान्तर में वस्त्र अपने मुख से उठालिया फिर दूकानदारों ने दूकानें खोलीं मैंने प्रत्येक को मोल दिया वह सब मेरे सच्चे व्यवहारसे बहुत प्रसन्नहुये और प्रथम से अधिक विश्वासी समझा तदनन्तर उस सुन्दरी ने और कई थान मांगे मैंने वह भी लाकर उसे दिये फिर भी मैंने न पूछा वह सुन्दरी कौन है और कहां से आई उसके जातेही सोचितहुआ कि देखिये इसका क्या परिणाम होता है और अपने मनमें सोचा इस सुन्दरी ने तेरी परीक्षा ली है उनका मोल अवश्य भेजवादेगी वा मेरे हानि वा अप्रतिष्ठाकी इच्छा रखती है क्योंकि दूकानदारों ने अपनी वस्तु मेरे ही विश्वासपर दी है परन्तु जब उसकी सुन्दरता स्मरण होती वह सब शोच भूलजाता जब एक मास व्यतीत हुआ और उस सुन्दरी का कुछ पता न लगा व्यापारी अपने मालके वास्ते अधैर्य होनेलगे उनके धैर्य के वास्ते जो कुछ कि मेरी दूकानपर था शीघ्र बेंचता और कुछ कुछ उनको पहुँचाता एकदिन भोरको वही सुन्दरी उसी वाहन और उन्हीं सेवकों सहित आई मैं उसे देख हर्षितहुआ जब वह मेरी दूकान पर आकर बैठी उन थानों का मोलदे कई प्रश्न मुझसे किये उनमें से एक यह था तुम्हारा विवाह हुआ है वा नहीं मैंने उत्तर दिया अभी नहीं फिर उस सुन्दरी ने अपने दास को सैन की वह मुस्कराय मुझे एकान्तमें लेगया और मेरे कान में चुपकेसे कहा मैं जानताहूँ तुम इसपर मोहितहो परन्तु आश्चर्य है तुमने इस बात को गुप्तरख किसी बात की इससे इच्छा नहीं की और वह भी तुमपर मोहित है यह न जानो कि यहां केवल थानों के वास्ते आती है किन्तु तुम्हारी प्रीति उसे आकर्षण करती है इसीलिये तुम्हारे विवाह का हाल पूछा तो भी तुम इस सैन को न समझे और कुछ उससे चाहना न की मैंने उससे कहा मैं इस सुन्दरी पर उसी दिनसे कि पहिले देखाथा मोहित हूँ परन्तु मुझे कब आश थी कि उनकी भी यही इच्छा है यदि इसमें तुम मेरी सहायता करोगे तो यह तुम्हारा

उपकार मैं कभी न भूलूंगा वह वहां से उठ उस सुन्दरी के समीप गया और कहा भलीभांति ठीक करआया हूं तब वह सुन्दरी दोनों अनुचरियों को कुछ सैन कर उठखड़ीहुई और मुझसे कहा कि मैं इसी सेवक को तेरे निकट भेजूंगी जो यह कहे सो तुम करना तद-नन्तर मैंने सब रुपया ब्यापारियों को बांटदिया और उस अनुचर के आने की राह देखतारहा कईदिन पीछे वह आया मैंने बड़ी प्रीति से उस चन्द्रमुखी की कुशल पूछी उसने उत्तर दिया तुम बड़े भाग्य-वान् हो तुमपर वह अतिमोहित है यदि उसका बश होता तो अभी तुम्हारे निकट चली आती मैंने कहा वह सुन्दरी बड़ी शीलवान् जानपड़ती है उसने कहा क्या तुम नहीं जानते वह ख़लीफ़ा हारूं-रशीद की बीबी जुबैदाकी सहेली है और बीबी उसे बहुत प्यार करती है और बाल्यावस्था से उसने उसे पालन किया है और महलों के सब कार्यों की यह अधिकारी है जुबैदा ने कई बेर उसे बिवाह करने को कहा अब उसने उससे कहाहै यदि आपकी इच्छा हो तो एक ब्यापारी है मैं उससे बिवाह करलूं बीबी ने उसको स्वीकार किया और कहा एकबेर मैं उसे देखाचाहतीहूं तब बिवाह की आज्ञा दूंगी मैं तुम्हारे लेनेको आया हूं तुम बादशाह के मकान में चलो इसमें तुम्हारी क्या इच्छा है मैंने कहा मैं चलने के वास्ते तत्पर हूं जिस स-मय चाहो मुझे लेचलो उसने कहा बहुत अच्छा परन्तु तुम जानते हो कि कोई मनुष्य ख़लीफ़ा के महल में नहीं जासक्ता किसी उपाय से मैं तुमको लेजाऊंगा आज संध्या समय उस मसजिद में जो अ-मुक नदी के कूल पर बर्तमान है जाकर मेरे आगमनकी बाट देखना मैंने कहा अति उत्तम निदान जब सायंकाल हुआ मैं उस मसजिद में जाकर सेवक की बाट देखनेलगा इतने में एक छोटी नाव उस नदी के तटकी ओर आई जब वह मसजिद के नीचे पहुँची सब उतरगये और बहुत से सन्दूक़ उसपर लादे उसमें एक बड़ा लम्बा चौड़ा सन्दूक़ जो लाये थे उसको मसजिद में रख चले गये परन्तु एक सेवक वहां रहगया इतने में वह सुन्दरी भी वहां आई मैं उसके निकटगया और कहा क्या आज्ञा है उसने कहा मुझे इस समय बात

करने का सावकाश नहीं तुरन्त एक सन्दूक़ खोला और मुझसे कहा तुम इसके भीतर जाकर लेटरहो मैं उसमें लेटरहा उसने तुरन्त उस सन्दूक़ को बन्दकर ताला लगाया तब उस सेवकने कि उसका विश्वासित और भेदी था केवट को पुकारा और कहा इस सन्दूक़ को इस नाव पर रक्खो वह सन्दूक़ जिसपर मैं था उठा नाव पर लेगये और चन्द्रमुखी भी उसपर सवारहुई मैं इसका परिणाम विचार भयभीत हो अपने को धिक्कार देनेलगा और इस कर्मसे दुःखित हुआ वह नाव ठीक ख़लीफ़ा हारूंरशीद के द्वारपर जायलगी सब सन्दूक़ों को नाव से उतार द्वारपाल के प्रधान के निकट लेगये जिसके पास सब सन्दूक़ों की कुञ्जियां थीं और कोई वस्तु उस प्रधान के देखने भालने बिना भीतर न जाती वह प्रधान उससमय सोताथा जब उसे जगाया तो अत्यन्त क्रोधित हुआ इसहेतु उस सुन्दरी से बहुत वादानुवाद हुआ वह कहता कि यह सन्दूक़ मेरे देखे बिना भीतर न जानेपावें और उस सुन्दरी ने आज्ञा दी थी कि इन सन्दूक़ों को प्रधान के देखने बिना उठा उठा तुरन्त मकान के भीतर लेजाओ ऐसा न हो कि वह सन्दूक़ों को खोलकर देखे और भेद खुले परन्तु वह द्वारपाल जो प्रधान के अधिकार में थे तलाशी के लिये प्रधान के निकट लेगये प्रथम उसी सन्दूक़ को जिसमें मैं था उठाकर सन्मुख रक्खा मैं कि यह वार्त्ता और तकरार सुनताथा अत्यन्त भयभीत हुआ कि इस सन्दूक़के खुलतेही अवश्य माराजाऊंगा मेरा काल आयपहुँचा परन्तु उस सुन्दरी ने न तो उसकी कुञ्जी दी और न उसे हाथ लगाने दिया और उससे कहा तुम भलीभांति जानते हो मैं कोई वस्तु ज़ुबैदा की आज्ञाबिना मंदिर में नहीं लेजाती इस सन्दूक़ में बहुतसा बहुमूल्य असवाब व्यापारियों का रक्खा हुआ है जो अभी इस नगरमें पहुँचे हैं और कई बोतल ज़मीज़म * के जलकी हैं जो एक शीशा भी इसके खोलनेमें टूटजावेगा सम्पूर्ण वस्तु इसकी नष्ट होजावेंगी इसकी जवाबदेही तुमको देनी होगी और ज़ुबैदा तुमको इस ढिठाई से दण्ड देगी प्रधान भयमान हुआ और कुछ न बोला और सन्दूक़

* एककुआं मक्के में है मुसल्मान उसका जल गङ्गाजी के तुल्य पवित्र जानते हैं॥

उठवादिये दास उठाकर भीतर लेगये परन्तु बड़ी कठिनतासे उस दुष्ट की तलाशी से बचे यहां आकर अधिक आपदा मुझपर पड़ी अर्थात् अकस्मात् खलीफ़ा आप उस मकान में आया और बहुत से सन्दूकों को देख पूछा कि मुझे इन सन्दूकों को खोल दिखा इसमें क्या वस्तु है उस सुन्दरी ने बहुतसे बहाने किये परन्तु कोई उपयोगी न हुआ निदान निरुपाय हो एक एक सन्दूक खोल दिखाने लगी जब सब दिखा चुकी केवल वही जिसमें मैं अभागा था शेष रहगया खलीफ़ा ने कहा इसको भी तुरन्त खोल दिखा हे मित्रो ! उससमयकी मेरी दशा न पूछिये काटो तो रुधिर नहीं निदान उस चतुरा ने विनय की कि आप इस सन्दूक के खोलने में अधिक वाद न कीजिये और इसके देखने की इच्छा न कीजिये इसमें वह असबाब है कि ज़ुबैदा बिना मैं से नहीं दिखासक्की खलीफ़ा ने कहा अच्छा इसे न दिखा वहां से खलीफ़ा कहीं दूसरी ओर चलागया तदनन्तर दासों को आज्ञा दी इन सन्दूकों को तुरन्त यहां से लेजाओ सेवक उठे उनने उस सुंदरी के मकान में लेगये और वहां से निकलआये जब उसके मकान में कोई न रहा उस सुन्दरीने उस सन्दूक को जिसमें मैं था खोलकर कहा शीघ्र निकल मैं निकलआया फिर मुझे एक सीढ़ी दिखाकर कहा इसपर तू चढ़जा वहां एक मकान है तू जाकर बैठ रहियो मैं अभी आतीहूं मैं जब ऊपर को चढ़ा उसने तुरन्त किवाड़ मूंदकर ताला लगादिया एकक्षण न हुआथा कि खलीफ़ा उस कोठे के अन्दर फिर आया उसीसन्दूक पर जिसमें मैं पहिले बंद था बैठगया और उस सुन्दरी से देरतक नगरका वृत्तान्त पूछा किया वह सुन्दरी बहुत कालपर्यन्त खलीफ़ा से वार्त्ता करतीरही तदनन्तर खलीफ़ा वहां से उठ अपने शयनागार में गया वह सुन्दरी खलीफ़ा से बिदा होय उसी मकान में आई और मुझसे कहा कि यह दुःख तुमको मेरे कारण पहुँचे परन्तु मुझे तुमसे अधिक भय था कुछ तो तुम्हारा और कुछ अपना अब धैर्य रक्खो किसी भांति का डर नहीं तदनन्तर हम दोनों ने मिलके भोजन किया और बहुतकाल पर्यन्त वार्त्ता करतेरहे फिर उसने कहा अब तुम शयन करो कल भोर को तुम्हारी

भेंट जुबैदा से होगी रात्रि को कि खलीफ़ा यहां शयन करतेहैं भेंट नहीं होसक्ती मैं बड़ेआनन्द से उस दिव्यमकान में सोरहा और मुझमें अतिप्रसन्नता थी कि ईश्वर ने मुझे अतिसुन्दरी स्त्री कृपाकी जो रूप अनूप और चतुरता और प्रवीणता में अद्वितीयहै अरुणोदय होतेही वह सुन्दरी मुझे जुबैदा की भेंट को लेगई और सब भांति ऊंचनीच मुझे सिखाये जो जुबैदा यह कहे तो तुम यह उत्तर देना जो यह कहे तो तुम यहकहना निदान वह मुझे जुबैदा के मकान में जो कि बहुतबड़ा और बादशाही सामान से अलंकृत था ले जाकर एक स्थान पर खड़ाकिया और कहा वह अपने शयन स्थान से उठ यहां बैठेगी और आप चलीगई पहिले बीस स्त्रियां नवयौवना अत्यन्तरूपवान् और उत्तम आभूषण और वस्त्र से अलंकृत वहां आई और तख़्तके सन्मुख जो जुबैदाके बैठने को बिछा था दो पंक्ति बांध खड़ी होगई तदनन्तर और बीस स्त्रियां वैसीही सुन्दर पहिले समूह के समान वहां से निकलीं उनके मध्य में जुबैदा बड़ी तमक और हंसगति से निकली ऐसे रत्न पहिनेथी जिनपर दृष्टि न ठहरती और आभूषणादिक के भारसे धीरे धीरे चलती जब वह रत्न जड़ित तख़्त पर बैठी उसकी बांदियां अपने अपने उचित स्थान पर खड़ीरहीं और वह सुन्दरी कि उसीकी पोषित और मेरी प्यारी थी आप उसके दाहिनी दिशि बड़ी तमक झमक से खड़ी हुई उस समय एक बांदी ने मुझे सैन से कहा मैं तख़्तके आगे जाकर प्रणाम करने को इतना झुका कि मेरा शिर कालीन पर जहां उसके चरण थे लगगया और देरतक इसीभांति झुका रहा यहां तक कि खुदजुबैदा ने निजमुख से मुझे शिर उठाने को कहा और मेरा नाम जाति पांति पूछा मैंने उसका यथोचित उत्तरदिया मुझे देख और मेरी बातें सुन हर्षित हुई और कहा मैं चाहतीहूं कि अपनी पुत्री का तेरेसाथ बिवाहकरूं और बिवाह की सामग्री तय्यार करनेको आज्ञा देतीहूं आजके दशवें दिवस तुम्हारा बिवाह होजावेगा इस समयान्तर में खलीफ़ा से भी आज्ञा लेलूंगी दश दिन पर्यंत तुम यहीं होशियारीसे रहो निदान मैं दश दिन तक उसी दिव्यमन्दिरमें रहा

वह सुन्दरी एकान्तमें बहुधा मेरे निकट आती और फिर चलीजाती मैं वहां अत्यन्त हर्षित और प्रतिष्ठापूर्वक रहा और जुबैदा ने इस कालान्तर में खलीफ़ा से भी आज्ञा लेली और बहुतसा द्रव्य मेरी प्यारी को दिया वहां प्रतिदिवस गाना नाचना आनन्दमङ्गल होता जब नौ दिन व्यतीतहुये दशवें दिन विवाह की तय्यारीहुई उस दिन हम दोनों दूल्हा और दुलहिन ने स्नानकर उत्तम उत्तम वस्त्र पहिने सन्ध्या को मेरेवास्ते बांदियों ने नानाप्रकार के पाक चुने उनमें से एक थाल में लहसुन का पुलाव था जिसे तुम भाइयों ने मुझे बर-जोरी खिलाया मैंने उसे स्वादिष्ठ पा और पाकोंकी अपेक्षा रुचिपू-र्वक खाया परन्तु अभाग्यता से कि दुःख भोगना था हाथ अच्छी तरह न धोये आलस्य से केवल रूमाल से हाथ पोंछलिये फिर जब रात्रि भई वहांपर बहुतसे दीपदान प्रज्वलितकर बांदियोंने नृत्य गीत आदि आरम्भ किया एक ओर गाना बजाना होरहाथा एक ओर नक़लें होती थीं जब विवाह की रीतें होचुकीं बांदियां हमको नवस-ङ्गमागार में लेगईं मैंने भोग की इच्छा की अकस्मात् मुझसे मेरी स्त्री अत्यन्त अप्रसन्न और क्रोधितहुई और बड़ाशोर मचाया कि सब बांदियां इसका हाल मालूम करने के लिये दौड़ी आईं मैं यह दशा देख अत्यन्त बिस्मित और चौकन्नाहुआ उसके भय से उसकी अप्रसन्नता का कारण पूछ न सका निदान बांदियों ने दुलहिन से पूछा सुन्दरी अच्छी तोहो क्या दुःख तुमको पहुँचा कि इतनेही काल में तुम ऐसी अधैर्य हो चिल्लाईं कुछ आज्ञा दो तो हम उसका उपाय करें उस सुन्दरी ने अतिकोपित होकर कहा इस अयोग्य और मूर्ख को अभी मेरेसन्मुख से हटाओ मैंने डरते डरते कहा हे सुन्दरी! मुझसे ऐसा कौनसा अपराध हुआ कि एकही बेर मुझसे ऐसी क्रो-धित होगईं उसने अप्रसन्नता से कहा तू बहुत ढीठ और दुष्ट है तूने लहसुन का पुलावखाया और हाथ नहीं धोया तू नहीं जानता कि मुझे ऐसे महामलिन मनुष्य की सङ्गति से अतिग्लानि है अभी तक मेरा मग़ज़ उस गन्ध से फटा जाताहै तदनन्तर उसने बांदियों से कहा इसको पृथ्वी पर लिटाओ और चाबुक मुझे दो उन्होंने

तुरन्त मुझे गिराया कई एकों ने मेरे हाथ पकड़े और कई एकोंने पांव मेरी दुलहिनने मुझे इस निर्दयता और कठोरताई से मारा कि थकितहोगई तदनंतर बांदियोंसे कहा इसको पुलिसमें लेजाओ और पुलिसदारोगा से कहो इसकेहाथ को जिससे इसने लहसुन का पुलाव खाया है काटडाले मैंने अपने मनमें कहा हे परमेश्वर ! इस सूक्ष्म अपराध पर मैं इतना मारागया और अब हाथ कटाजाता है वह पाककर्ता जिसने उसे पकायाथा और वह बांदी जो उसे लाईथी मरजाती निदान प्रत्येक बांदी को मुझपर दया उपजी यह आज्ञा सुन हाथ बांधके उससे बिनय की हमारी अच्छीबहिन हमारी अच्छी बीबी वहुत क्रोधित न हो यह सत्य है कि इसका बड़ा अपराध है और बड़ी मूर्खता की परन्तु यह तुम्हारी पदवी और स्वच्छता को न जानताथा अब इसका अपराध क्षमाकरो उसको यथोचित दण्ड मिलचुका उसने कहा इतनेही दण्डसे मेरा बोध नहीं हुआ मैं चाहतीहूं कि इसे सिखाऊं कि वह निर्मलरहे जबतक कि मैं कठिन चिह्न उसको न दूंगी कदापि स्मरण न रहेगा कि हाथ न धोने से क्या होताहै तब उन्होंने फिर बिनतीकी उस समय तो वह चुप होरही और कुछ न कहा तदनन्तर उस मकान से उठ चलीगई वह सब बांदियांभी उसके पीछे २ होलीं और मुझे उसीदशा में अकेला छोड़ दिया दश दिन तक मैं वहीं रहा उसके भय से कोई दासी व बांदी मेरे निकट न आई परन्तु एकबृद्धा कभी कभी कुछ कुछ मेरे खाने को लाती एक दिन मैंने उससे अपनी दुलहिन का बृत्तांत पूछा कि वह क्या करतीहै उसने कहा वह रोगीहै उस दुर्गन्ध से जो तुम्हारे हाथ से उसके मग़ज़ में प्रवेश हुईथी भाई तुमने लहसुनका पुलाव भोजन कर भलीभांति हाथ क्यों नहीं धोये मैंने कहा अब तो मुझसे अपराध हुआ वाहरे इन स्त्रियों की कोमलता और क्रोध इतना कि इतने थोड़ेसे अपराध पर क्या न किया इतने कष्ट और दण्डपानेपर भी मैं अबतक उसको वैसाही चाहताहूं और उस रूप छबिअनूप की एक झलक के देखे बिना अत्यन्त बिह्वल और अधीरहूं एक दिन उस बृद्धा अनुचरी ने कहा अब तेरी स्त्री आरोग्य होगई आज

वह स्नान को स्नानागार में गईहै और उसने मुझे तेरा नाम लेके कहा है कि कल के दिन मैं देखने आऊंगी अब तूभी धैर्य रख वह सुन्दरी ज़ुबैदा की अत्यन्त प्यारी और उसकी सखी है निदान द्वितीय दिवस वह मेरे देखनेको आई और कहा मैं केवल तुझे दण्ड देने आईहूं फिर उसने अपनी लौंडियों से मुझे बँधवाय पकड़वाया और निर्दयता और कठोर मनसे उस्तुरा हाथमें पकड़ चारों हाथ पाँवके अंगुष्ठ काटडाले एक स्त्रीने दौड़कर किसी वृक्ष का मूल पीस मेरे घावोंपर लगादिया जिससे रुधिर बन्द होगया परन्तु पीड़ा से मुझे मूर्च्छा आगई जब सुधिभई उन्हों ने थोड़ी सी मदिरा पिलाई जिससे मुझे कुछ सामर्थ्य होगई अपनी स्त्री से मैंने कहा आज मैं सौगन्द खाताहूं कदाचित् फिर कभी ऐसे कुलक्षण पुलाव के भोजन का संयोग होगा तो अपने हाथों को एकसौ बीस बेर स्नान और अमुकघास की भस्म और साबुन से धोऊंगा यह सुन मेरी स्त्री ने कहा कि वह कष्ट जो मुझपर पड़ाहै मैं भी भूलजाऊंगी और तुझे अपना पति जान तेरे साथ रहाकरूंगी उस बग़दादी ब्यापारी ने इतना कह उस सभा में कहा हे मित्रो ! इस कुलक्षण पुलावके भोजन न करनेका यही कारणहै निदान बांदियों ने बुलसान का तैल ख़लीफ़ा के चिकित्सालय से लाकर मेरे घावों पर लगाया कुछ दिन में मैं अच्छा होगया तदनन्तर मैं और मेरी स्त्री परस्पर आनन्द मंगल से रहनेलगे मानों मैंने कभी भी पुलाव न खायाथा परन्तु जो मैं मुख्य बादशाही महल में रहता था और बहुधा छिपाया और बंद कियाजाता था इसवास्ते उदासीन रहता परन्तु अपनी स्त्री के भय से इस बात को न कहसक्ता उसने मेरे अन्तःकरण की बात समझ ज़ुबैदा से दूसरे घर में रहनेकी आज्ञा मांगी ज़ुबैदा जो मेरी स्त्री को बहुत प्यार करतीथी स्वीकारकर चुपहोरही जब एक मास पूर्ण ब्यतीत हुआ मैंने अपनी स्त्री को देखा कि अपने मकान की ओर चली आतीहै और कई सेवक अशरफ़ियों के तोड़े लियेहुये उसके पीछे पीछे आते हैं जब वह तोड़े रख चलेगये मेरी स्त्री ने मुझ से कहा तुम्हारे क्लेशके कारण ज़ुबैदा से मैंने अलगरहनेकी आज्ञा

लेली और उसने पचास हज़ार अशरफ़ी कृपाकीं कि हम प्रतिष्ठा-पूर्वक इस नगर में बास करें और दश हज़ार अशरफ़ी मुझे दे कहा कि कोई उत्तम घर अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार मोल लेलो मैंने तुरन्त एक गृह मोल लेलिया और उसे उत्तम बस्तुओं से अलंकृत कर उसमें जारहे और बहुतसी बांदियां और दासीदास मोलले उत्तम उत्तम चीर पहिने और आनन्दपूर्बक बिहार करनेलगे परंतु पश्चात्ताप है कि थोड़ेदिनों में मेरी स्त्री रोगयुक्त होके कालबशहुई तदनन्तर मैंने दूसरा बिवाह किया अकस्मात् वह भी यमलोक को पधारी फिर तीसरी का संयोगहुआ सो वहभी इसीभांति मरगई मैंने उस घरको अशकुन समझ बेंचडाला और ब्यापार की बस्तु मोल ले पारस को गया और वहांसे समरक़ंदको फिर वहां से यहां आ रहनेलगा उस मोदीने बादशाह काशग़र से बिनयकी कि हे स्वामी, दीनपालक, दुःखहरण ! यह वह कहानी है जो बुग़दादी ब्यापारी ने उसी सभा के सन्मुख जिसमें मैं कल था बर्णनकी बादशाह ने कहा यह कहानी निस्संदेह कुछ अद्भुत है परंतु हमारे कुबड़े के बृत्तान्त को नहीं पहुँचती इतने में यहूदी बैद्य ने विनय की हे स्वामी ! मेरी कहानी को आप सुन प्रसन्न होंगे बादशाह ने कहा जो तेरा चरित्र कुबड़े से बिचित्र न होगा तो अपने छुटने की आशा न राखियो ॥

बादशाह काशग़रके सन्मुख यहूदी करके बर्णित कहानी ॥

यहूदी बैद्य ने पृथ्वीचूम बिनय की हे स्वामी ! मैं दमिश्क़ नगर में बैद्यकी किया करता अपने पूर्णगुण के कारण उसनगर में बड़ी प्रतिष्ठा और सत्कारयुत रहा एक दिन वहां के हाकिम ने मुझे बुलवाय आज्ञा दी कि एक रोगी की औषध करो तदनन्तर वह मुझे आपही एक मकान में लेगया वहांपर एक नवकिशोर अतिसुन्दर मनुष्य लेटाहुआ देखा जो पीड़ा से अतिब्याकुल था मैंने प्रणाम किया उसने उत्तर न दिया परन्तु सैनसे कहा कि मैं तुम्हारे आगमन से कृतज्ञ हुआ तब मैंने उससे कहा अपना हाथ मुझे दो कि मैं तुम्हारी नाड़ी देखूं उसने बायां हाथ दिया मैं अत्यन्त आश्चर्यित हुआ और जाना कि वह इस रीतिको नहीं जानता तदनन्तर मैंने

नाड़ीदेख औषध लिखदी और बिदाहुआ उसके देखने के लिये मैं नौ दिन पर्यन्त जाता और वह बायां हाथ दिखाया करता दशवें दिन मैंने उसे नीरोग पाय कहा आप अच्छे होगये अब मेरे आने की कुछ आवश्यकता नहीं अब आप स्नान कीजिये फिर दमिश्क के हाकिम ने मुझे पारितोषिक दे अपने चिकित्सालय का बैद्य नियत किया और अपने महल का इलाज भी मुझसे कराता और एक स्थान मेरे भोजन के निमित्त नियत किया वह मनुष्य जो मेरी औषध से नीरोग हुआ जब मुझे देखता हर्षित होता और बड़ी प्रीति करता सो वह अपने साथ स्नानागार में लेगया बस्त्र उतारने के समय मैंने दाहिनाहाथ उसका कटा देखा इसीकारण वह रोगीभी होगया था और मुझसे छिपा रखता था उसके देखने से मुझे बड़ा पश्चात्ताप हुआ था उसने मुझे इस दशा में देख कहा केवल मेरा दाहिनाहाथ कटादेख आश्चर्य और पश्चात्ताप न करो मेरा बृत्तान्त अद्भुत है स्नान कर जब मैं भोजन करने को बैठूंगा तब वह कहूंगा तदनन्तर उसने मुझसे पूछा जो बाग़ की सैर करना मेरे वास्ते हानिकारक न हो तो मैं जाऊं मैंने कहा बाग़ की सैर करना तुम्हारे वास्ते अतिलाभकारी है और उस मनुष्य ने कहा तुम्हारा मन चाहता हो तो तुमभी मेरेसाथ चलो कि मार्गमें मैं अपने निज बृत्तान्त को तुम से कहूंगा मैंने कहा बहुत अच्छा मैं चलताहूं तदनन्तर उसने अपने सेवकों से कहा भोजन बनाओ और हम दोनों बाग़ की सैर को गये दो तीन बेर उसमें फिरे फिर एक क़ालीन पर जो एक सघन बृक्ष के नीचे बिछा था बैठगये वह अपना बृत्तान्त इसभांति बर्णन करनेलगा कि मेरा उत्पत्ति का स्थान मवस्सल नगर है और बड़े घराने का पुत्रहूं मेरे दादा के दश पुत्र थे मेरापिता सबसे बड़ा था केवल अपने पिताका मैंहीं इकलौता पुत्रथा बाक़ी मेरे चचा अपुत्र थे मेरे पिता ने मेरे पढ़ाने लिखाने में बड़ा श्रम किया और नाना भांति की बिद्या और शिल्पबिद्या जो मनुष्य को सम्पूर्ण आयु में उपयोगीहों मुझे सिखाई जब मैं बड़ाहुआ और प्रत्येक सभामें बैठने उठनेलगा तब एक शुक्रवार को मेरा पिता और मेरे सब चचा

मवस्सलकी जामामस्जिदमें गये जब निमाज़ी निमाज़ पढ़ चुके और अपने कार्यमें लगे मेरा पिता और मेरे चचा नगरों की शोभाका बखान करनेलगे एक मेरे चचा ने कहा कोई देश मिसर जो नील नद पर है की बराबरी नहीं करसक्ता मुझे उनके साथ मिसर की प्रशंसा सुन ऐसी इच्छाहुई कदाचित् मैं स्वाधीनहोता तो उसीसमय चला जाता यद्यपि मेरे सबचचा यही कहतेथे कि बुग़दाद और इसनदी के समान कोई नहीं परन्तु मेरे पिता ने मिसर की बहुतसी प्रशंसाकर कहा जिसने मिसर नहीं देखा वह संसार की अद्भुत बस्तुओं से अज्ञान है जिसकी धरती स्वर्ण की सी है और उसकी पृथ्वी ऐसी उर्बराहै कि पुरबासी वहां के धनाढ्य और सम्पन्नहैं और स्त्रियां वहां की अत्यन्तरूपवान् और चतुर नीलनद बहुत अच्छा और जल उसका अत्यन्त मिष्ट और पाचन और रोगहर जिसकी बहाव से चारों दिशाके देश सदैव हरेरहते और उस देश की धरती बहुतनर्म और खेतीके योग्यहै जिसके बोनेसे किञ्चित् श्रम नहीं होता बिशेष कर किसी कबि ने उसकी प्रशंसामें कहाहै जिसका अर्थ यहहै मिसर वहां के पुरबासियों से अब की भाषा में कहताहै तुम्हारा नद द्रब्यप्रद और तुम्हारे लाभ के हेतु सदैव यात्रा करताहै पश्चात्ताप है कि तुम इसे तज अन्यदेश में जा रहो इतना कह मेरे पिताने कहा नील नद के दोनोंओर खेती बाड़ी और सफल बृक्ष सदैव ऋतु अऋतु में रहते हैं नानाप्रकार के बृक्ष और सब भांति के पशु पक्षी वहां उत्पन्न होते हैं और नगर बहुत बसा हुआहै और मिष्टजल की नहरें चलती हैं और महाप्रवीण मनुष्य वहां रहते हैं इसीभांति की नाना प्रकारकी हज़ारों सुन्दर सुन्दर बस्तु मनहरण वहांपरहैं वहांके जल और हरियाली की उपमा दें तो मानों पन्ने के टुकड़े रूपे के पात्र में जड़ेहुयेहैं तो उचितहै और क़ैरू उसकी दारुल्सल्तनत है जो बहुत बड़ा और बसाहुआ जिसमें अतिसुन्दर मन्दिर बर्तमानहैं जिनमें अनेक भांति के दिब्य रत्न जड़े हैं मैंने बहुत से नगर और शहर आदिक देखे हैं जिसमें बड़े बड़े प्रतिष्ठित और मिलनसार मनुष्य रहते हैं और अनेकभांति की अति हितकारक और आनन्ददायक

दिब्य बस्तु उत्पन्न होती हैं मैंने बहुतसी आयु ऐसे ऐसे सुन्दर न-गरों में आदरपूर्बक बिताई है फिर उस मनुष्य ने कहा मेरे पिता के मुखसे यह बचन सुन वह चुप होरहा और कुछ उत्तर न दिया किन्तु उन्होंने भी कुछ उसकी प्रशंसा की मुझे उस काल से मिस्र देश के देखने की ऐसी लालसा हुई कि रात दिन अधीर रहता परमेश्वर से यह मांगता कि कोई कारण ऐसा होजाय कि जिससे मैं मिस्र को देखूं मेरे चचाओं ने भी उस देश के देखने की लालसा की और मेरे पिता से कहा तुम भी मिस्र को चलो कि हम भी तुम्हारे साथ चलें मेरे पिता ने स्वीकार किया तदनन्तर मेरे चचाओं ने कि वह ब्यापारी और धनाढ्य थे बहुत सी बस्तु ब्यापार की मोलली जब मैंने उनकी तय्यारी का हाल सुना अपने पिताके निकट रोताहुआ गया और कहा मुझे भी उनके साथ जाने की आज्ञादीजिये कि मैं भी अपने वास्ते ब्यापार की बस्तु मोललूं पिता ने कहा अभी तुम छोटी अवस्था के हो इस यात्रा में तुम्हें दुःख होगा तुम्हारा जाना मिस्र में ठीक नहीं इसबात से मेरी इच्छा कुछ कम न हुई तब मैंने अपने चचाओंसे कहा तुम इस बिषय में मेरे पिता से कहो निदान उनके कहने से मेरापिता प्रसन्नहुआ कि यह दमिश्क़ पर्यंत हमारे साथ चले वहां से जब हम मिस्र नगरकी ओर चलेंगे तो इसे मव-स्सल की ओर बिदा करदेंगे फिर पिता ने कहा दमिश्क़भी बहुत अच्छा नगरहै और उसका जल बायु भी बहुत उत्तम है मैं राजी हुआ कि वहींतक मुझे लेचलिये यद्यपि मैं मिस्रके देखनेकी लालसा रखताथा परन्तु पिताकी प्रसन्नताभी अवश्यथी दमिश्क़पर्यंतभी जाना अति उत्तमजाना निदान मवस्सल से अपने पिता और चचाओं के साथ नूष्टपामार को चला और वहां से अपड़लिश को गया वहां से हलब में पहुँचा और थोड़े दिन रह हम सब दमिश्क़ में पहुँचे मैं उस नगर के देखतेही अत्यन्तप्रसन्न हुआ हम सब एक सराय में उतरे उस नगर को बहुत बड़ा पाया पुरबासी सब सजाति और शीलवान् थे कई दिनतक वहांके बाग़ जो प्रत्येक स्वर्गके बागोंके स-मानथे सैर की और उस नगरकी शहरपनाह सुन्दर और मनभावन

थी हमने इस उपमा को सत्यजाना कि दमिश्क़ की सुन्दरता और लालित्यता स्वर्गके बाग़ों के मानों प्राणहैं मेरेपिता और चचाओंने थोड़ेदिन ठहर आगे जानेकी इच्छाकर मेरा असबाब बहुत नफ़े से बेंचा कि प्रत्येक शत पर मुझे ५) रु० नफ़ा हुये जिससे मैं बहुत धनाढ्य होगया निदान मेरे बड़े मुझे दमिश्क़ में छोड़ आगे चले तदनन्तर मैंने ख़र्च में बहुत किफ़ायत की ब्यर्थ एक कौड़ी भी ख़र्च न करता मैंने एक हवेली अपने रहनेके लिये किराये पर ली वह हवेली अत्युत्तम सङ्गमर्मरकी बनीहुईथी और भीतर बाहरसे उसमें ज़ंगारसे चित्र खुदेहुये थे उसमें एक उत्तम पुष्पवाटिका थी जिसमें बहुत से फ़व्वारे चलते मैंने उस घर को शीशेआदि अन्य सामग्री से यथोचित थोड़े ख़र्च में सजाया उस घर का स्वामी प्रथम अब्दुल-रहीमनामे दमिश्क़ का रईसथा अब उसे कोई रत्नपारखी धनवान् मोलले किरायेपर चलाताथा मैंने उसे दो अशरफ़ी किराये पर लिया और मेरे दास दासी और असबाब बहुतथा अमीरों की तरह उसमें रहनेलगा और कभी कभी पुरबासियों को जिनसे कि मेरी जानपहिचान और भेंट होगईथी न्योतता और आदरकरता और कभी वह मुझे निमंत्रण कर यथोचित सत्कारकरते इसीभांति मैं अपने चचाओं के पीछे दमिश्क़नगर में आनन्द मङ्गल और नाना प्रकार के भोग भोगतारहा और पुरबासी मेरे समीप आते और मेरा काम कियाकरते एक दिन मैं अपने द्वार पर भोजनकरके बैठाथा कि एक स्त्री अतिसुन्दरी उत्तम उत्तम आभूषण और बस्त्र पहिने मेरे स-मीप आई और कहा क्या तुम कपड़ा बेंचतेहो यह कह मन्दिर के भीतर चलीगई जब मैंने देखा कि वह अन्दर मकान के जा चुकी मैं वहां से उठा और भीतर जाय किवाड़ मूंदलिये और उस स्त्री को एक दालान में लेगया और बैठाय कहा हे सुन्दरी! मेरे समीप ब-हुत अच्छे थान हैं परंतु पश्चात्तापहै कि इस समय मेरे पास मौ-जूद नहीं उस स्त्री ने यह सुन अपने मुख से बस्त्र उलटलिया मैं उस का रूप अनूप देखतेही बेबश हुआ वह सुन्दरी बोली मैं थानों को मोललेने नहीं आई मुझे तेरेसाथ भेंटकरनी अंगीकार थी मुझे

इच्छाहै कि सायंकाल पर्यन्त मैं यहांरहूं यदि तुम्हें बुरा न लगे मैं इस समय कुछ भोजन किया चाहतीहूं मैंने कहा बहुत अच्छा तत्काल अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुरन्त कुछ रुचिर भोजन और उत्तम फलादिक लाओ उन्होंने उसी समय लादिये फिर हम परस्पर बैठ बड़ीरुचि और स्वाद से खाया किये और आधीरात बड़े आनंद और विलासपूर्वक कटी तदनन्तर शयन किया जब अरुणोदय भया मैंने दश अशरफ़ियां निकाल उस सुन्दरी मृगनयनी के हाथ रक्खीं उसने उन अशरफ़ियों को न लिया और तुरन्त फेरदीं और कहा क्या मैं अशरफ़ियां लेने को तेरे पास आई थी फिर जब मैंने बहुत तकरार की उसने कहा जो यही रीति रक्खोगे तो फिर मैं कभी तुम्हारे निकट न आऊंगी उलटी दश अशरफ़ियां अपनी थैली से निकाल मेरे हाथ रक्खीं मैंने लाचारी से लेलीं और कहने लगी फिर मैं तीन दिवस के पश्चात् आऊंगी यह कह बिदा हुई मैंने उस के बियोग में यह समझा कि मेरे चित्त को चुराके लेगई तदनन्तर तीन दिवस के पश्चात् वह सुन्दरी उसी समय मेरे गृह आई मैंने प्रीति से अगवानी की और घर में लेगया सम्पूर्ण रात्रि उसी आनन्द मङ्गल में उसी दिनके समान व्यतीत हुई दूसरे दि बिदा होती समय उसने मुझसे प्रतिज्ञा की कि तीसरे दिन फिर आऊंगी और दश अशरफ़ियां मुझे देकर चलीगई निदान तीसरी भेंट में जब मदिरा का नशा उसे अच्छी तरह चढ़ा मुझसे कहने लगी हे मेरे परम प्रियतम ! तू मुझे कैसा जानताहै मैं सुन्दरहूं वा नहीं मैंने कहा य तुम्हारा प्रश्न व्यर्थ है मेरी प्रीति को तुमने भलीभांति परखा मैं प्राण से तुमपर मोहितहूं तुम मेरी बीबीहो इसके पूछने से क्या अर्थ है उसने कहा अब तो तुम यह कहतेहो परन्तु दूसरी स्त्री को जो मुझसे जान पहिचान रखतीहै देखोगे तो मुझे भूलजाओगे वह मुझसे अवस्था में न्यूनहै और अत्यन्त सुन्दर कोमलांगी है मैं उसे अपने साथ लाऊंगी वह मुझसे बहुत प्रीति रखती और उसे तुम्हारे देखनेकी अतिलालसा है तुम्हारी आज्ञा बिना मैं उसे नहीं लासक्ती मैंने कहा हे सुन्दरी ! जब चाहो उसे लेआओ परन्तु मुझे

यियसूका पकड़ा जाना और पुलिस के लोगों की मारपीट.॥

दूसरी स्त्री के देखने से क्या प्रयोजनहै मैं तो तुमपर मोहितहूं ऐसा नहीं होसक्ता कि किसीभांति की इसमें न्यूनाधिक्यहो उस स्त्री ने कहा इसी प्रणपर स्थिर रहना मैं तुम्हारी परीक्षालेतीहूं जब यह वार्त्ता होचुकी वह सुन्दरी मुझसे बिदाहुई और उस दिन पचास अशरफ़ियां मुझे दीं और मुझे भी लेनीपड़ीं जातेसमय कहनेलगी दो दिनके पश्चात् एक नवीन अतिथि तुम्हारे घर आवेगा उसके निमित्त भोजन आदि तय्यार रखना और मैं भी अपने नियमपर आऊंगी मैंने जिसदिन उसके आनेको सुनाथा उस घर को झड़वा-कर बिछौना बिछवारक्खा और नानाप्रकार के पाक और फल त-य्यार रक्खे निदान सन्ध्या को वह दोनों स्त्रियां आईं और भीतर जाय दोनों ने अपने अपने मुख से वस्त्र उतार लिया बास्तव में दूसरी दशभाग पहिली से प्रत्येक बिषय में अधिकथी जो एकदृष्टि पहिली पर पड़ती तो कई बेर दूसरी पर क्योंकि छबि उसकी ऐसी अनूप मनहरण दुःखदरण आनन्दकरण थी कि आपसे आप चित्त को खींचे लेती और जब उसकी काम की दृष्टि मुझपर पड़ती तो मैं अधीरहोजाता निदान मैंने दोनोंकी कृतज्ञता की दूसरी स्त्री ने कहा मुझे उचित है तुम्हारी कृतज्ञहूं कि तुमने मुझे अपने घर में आने की आज्ञा दी तदनन्तर मैंने उन दोनों स्त्रियों को भोजन पर बैठाय आप नव अतिथि अर्थात् दूसरी स्त्री के सन्मुखजा बैठा और वह पहिली स्त्री के भय से मेरी ओर दृष्टि न करसक्की और न हँससक्की परंतु उसने हावभाव कटाक्ष से मेरे मनको मोहलिया जब उसने जाना कि मैं प्राणसे मोहितहूं तब उसने सैन से प्यार की बातें कीं पहिली स्त्री यह सब जानगई प्रथम मुस्कराय कहनेलगी मेरे प्रिय तुम इस स्त्री पर क्यों दृष्टि करतेहो अपनी सौगन्द और प्रण को बिस्मरण करगये मैंने भी उसी भांति हँसकर कहा तुम मुझे व्यर्थ दोष लगातीहो मुझे क्या उचित है कि तुम्हारी आज्ञा के बिपरीत इसको कि बड़ीदया से मेरे स्थान पर लाईहो आंख उठादेखूं इस बात में तुमदोनों के निकट मेरी लज्जाहै जब हम बहुत सी मदिरा पी मदान्धहुये नवीनस्त्री और मैं चोरी चोरी परस्पर देखते और

परस्पर कटाक्षकरते पहली स्त्रीको ऐसी डाह और बैरहुआ कि वह अत्यन्त क्रोधितहो यहकह खड़ीहुई कि मैं अभी आतीहूं कुछ काल में दूसरी स्त्री कि मेरे समीप बैठीथी उसके मुख का वर्ण और का और होगया और अन्त समय की सी दशा होगई मैंने गर्दन में हाथ डाल उसे सँभाला कि कुर्सी परसे गिर न पड़े इतनेमें वह काल-बशहुई मैंने घबराके अपने सेवकों को पुकारा कि इसे थांभें और बाहर निकलके पूछा कि वह पहिली स्त्री किधरगई मेरे सेवकों ने कहा कि द्वार से बाहर निकल अमुक गली से हो चलीगई इससे मुझे बिदितहुआ कि यह उसीकी दुष्टताहै पिछलेगिलास में बिष मिला उसे पिलागई इस अकस्मात् की उपाधिसे मैं अत्यन्त बि-स्मित और शोचित और भयभीतहुआ देखिये इसके पलटे कौन आपदा मुझपर पड़तीहै फिर यह सोचा आगे जो कुछहो सो हो अब इसकी लोथ तुरन्त गाड़दिया चाहिये तदनन्तर मैंने सेवकों से कहा कि संगमर्मर के फ़र्श को जो उस घर भर में बिछाहै धीरे २ खोदो उन्होंने तत्काल खोदडाला तब मैंने उस मुर्दे को उसीमें गाड़ दिया फिर मैंने कुछ धन अपने साथले शेष बस्तु को मकान में बन्द कर कुफ़ुल लगाया और उसपर अपनी मुहर कर द्वार पर ताला लगाया और उस रत्नपारखीके निकटजाय एक बर्ष का किराया पे-शगी दे कहा यहकुंजी उस हवेलीकी है अपनेपास रख छोड़ना मुझे कुछ आवश्यकता है मैं क़ैरूमें अपने चचाओं के निकट थोड़े दिन के लिये जाताहूं यहकह बिदाहुआ और अश्वपर आरूढ़हो नि-श्शंक क़ैरूकी ओर चला कुछ दिन में क़ैरू पहुँच अपने चचाओं से भेंट की वे मुझे देख आश्चर्यित हुये और कहनेलगे तुम क्योंकर यहांआये मैंने कहा तुम्हारे आगमन की बाट देखतारहा जब तुम न आये और न कुछ तुम्हारी क्षेमकुशल इस अवधिमें पाई घबराके चलाआया उन्होंने मुझपर बड़ीदया की और प्रतिज्ञा की कि हम सब तुम्हारे पिता से तुम्हारी सिफ़ारश करेंगे क्योंकि वह तुम्हारे यहां आनेसे अति अप्रसन्न होगा कि तुम मेरी आज्ञा बिना क्यों चले आये तदनन्तर उसी सराय में जहां वे सब उतरे थे मैं भी रहा और

वहां के जो अद्भुत २ तमाशे थे भलीभांति देखे जब मेरे पिता और चचाओं ने सब ब्यापार की बस्तु बेंच मवस्सल नगर में जाने की तय्यारी की मैं अभी क़ैरू अच्छीतरह न देखचुका था किसी ओर दूर स्थान पर छिपके जारहा जबतक वे वहांसे न गये अपने स्थान से न हिला उन्होंने मुझे बहुतढूंढ़ा परन्तु मैं न मिला सबने यही समझा कि वह इसी लज्जा से कि बिना आज्ञा अपने पिता के यहां आयाथा फिर दमिश्क़ को चलागया वहां पहुँच हम उसे अपने साथ लेजावेंगे यह बिचार वहां से चलेगये मैं यहां क़ैरू नगर में तीन बर्ष पर्यन्त रहा और दमिश्क़ में रत्नपारखी के निकट बार्षिक किराया भेजदेतारहा और लिखभेजताथा कि मेरा असबाब रक्षापूर्वक रखना मैं शीघ्रही वहां पहुँचताहूं परन्तु जो आपदा मुझपर दमिश्क़ नगर में पड़ी उसे सुन तुम आश्चर्यित होगे निदान जब मैं वहां से दमिश्क़ में आया पहले उस जौहरी के निकटगया वह मुझे देख हर्षित हुआ और मेरे साथ उस मन्दिर तक आया मैंने उसे क़ुफ़ुल और मोहर को वैसाही पाया जब वह रत्नपारखी चलागया सेवक के साफ़ करते सुवर्ण की माला ज़ंजीर के आकार जिसमें दश दाने दिव्य मोतियों के पिरोये हुये थे पड़ाहुआ पाया वह उसे मेरे निकट लेआया मैंने उस माला को पहिंचाना कि यह वही माला है जिसको उस मृतक स्त्री के गलेमें देखाथा और घबराहटमें मुझे उस की कुछ सुधि न थी निदान वह माला देख उस सुन्दरी को स्मरण कर बहुत रोया और कपड़े में लपेट गले में डाललिया तदनन्तर मैं उस नगरमें रहनेलगा यहांतक कि सम्पूर्ण धन जो मेरे निकट था सब ख़र्च होगया और बेंचनेलगा प्रथम मैंने मालाबेंचने की इच्छा की परन्तु मुझे मोती के मोल की संख्या का ज्ञान न था इसलिये मैं ऐसे दुःखमें पड़ा जिसे सुनकर तुमको पश्चात्ताप होगा मैं उसे चौक में लेगया और वहां उसे एक दल्लाल के हाथदे कहा इसको बेंचता हूं उस दल्लाल ने कहा ऐसे मोती मैंने कभी नहीं देखे ऐसा बहुमूल्य मोती अलभ्यहै फिर वह दल्लाल मुझे उस रत्नपारखी की दूकानपर जिसके घरमें मैं रहताथा बैठागया और कहा आप यहां ठहरो इसको

मैं बाज़ार में दिखा और इसके मोल लेनेवाले को ढूंढ़ताहूँ जो कुछ इसका मोल ठहरे अभी आपसे आकर कहताहूँ क्षणमात्र में उस दल्लाल ने चुपके से आके कहा इसका मोल दो सहस्र अशरफ़ी हैं परन्तु अब कोई पचास अशरफ़ी से अधिक नहीं देता मैंने कहा जिस मोलपर बिके मुझे लादे वह दल्लाल उसी ब्यापारी के निकट जो पचास अशरफ़ी देताथा गया और कहा इसका धनी इतने मोल पर राज़ी है वह ब्यापारी यह सुनतेही उस दल्लाल को पकड़ कोतवाल के निकट लेगया और उस मालाको दिखाय कहा यह माला चोरी गईथी अब चोर अपनेको ब्यापारी ठहराके बेंचने आया और वह चौक में बर्तमानहै दोहज़ार अशरफ़ी की माला को पचास अशरफ़ी पर देना स्वीकार किया है इससे सूचित है कि यह चोर है कोतवाल ने बरक़न्दाज़ोंको आज्ञादी कि उसे बांधके बहुतमारो क्यों इतना सस्ता बेंचता है कोतवाल ने मुझे पकड़ बुलवाके पूछा यह माला तेरी है मैंने कहा हां यह मेरीहै निदान कोतवाल अन्यायी ने मुझे इतनामारा कि जिसके भय से मैंने चोरीका क़रार किया ज्योंही यहसुना त्योंही मेरा दाहिनाहाथ काटडाला और माला मुझसे छीनली मैं उसी घर में जिसमें मैं रहताथा पीड़ासे तड़फताहुआ आया मेरे सेवक मुझे कोतवालके भयसे छोड़कर चलेगये चौथे दिन क्या देखताहूँ कि बहुतसे पुलिसदार मेरे घर घुसआये उनके साथ घरवाला और वह ब्यापारी जिसने मुझपर चोरी लगाई थी आया उन्हों ने आकर मुझे रस्सी से बांधा और बहुत से दुर्बचन कहने लगे यह माला यहांके हाकिम की है तीन बर्ष हुये कि यह खोगया था और उसी समय से उस हाकिम की पुत्री भी गुप्तहै यह सुन मैं हाथ कटने की पीड़ा भूलगया और दूरदूर के शोचों में पड़ा यह आपत्ति पहिले से अधिक थी तदनन्तर धैर्यदिया कि जो कुछहो सो हो हाकिम या तो मेरा अपराध क्षमा करदेगा वा बध करेगा इसमें भी मैं प्रसन्नहूँ कि इस दुःखसे तो मैं छूटूंगा उन्होंने मुझे हाकिम के सन्मुख किया हाकिम ने मुझे दया की दृष्टि से देख छुड़ादिया और अपने सेवकों से पूछा यह वही मनुष्यहै जिसने माला बेंचने को

भेजी थी सबने कहा यह वहीहै हाकिमने कहा यह चोर नहीं इसपर व्यर्थ अन्याय हुआ और आज्ञा दी जिस ब्यापारी ने इस मनुष्य पर चोरी लगाईहै उसे बध करो वह तत्काल ही मारागया तदनन्तर हाकिम ने सभा को बिदाकर एकान्त में मुझसे कहा हे पुत्र! मुझसे तू अभय हो कह कि यह माला तेरेहाथ क्योंकर लगी इसके बर्णन में मुझसे कोई बात गुप्त न रखना मैंने उन दोनों स्त्रियों का बृत्तान्त और पहिली के डाह का कारण दूसरी स्त्री का बिषसे मरना बिस्तार पूर्बक बर्णनकिया हाकिम ने सुन आज्ञा दी कि परमेश्वर की इच्छामें किसीका कुछ उपाय नहीं मैं उसी ईश्वर की इच्छा पर प्रसन्नहूं और कृतज्ञहूं तदनन्तर मुझसे कहा हे पुत्र! तुझपर जो यह आपदा पड़ी मुझे बड़ा शोक हुआ अब मैं अपना बृत्तान्त बर्णन करताहूं कि वह दोनों स्त्रियां मेरी पुत्री थीं प्रथम जो तुम्हारे घरगई वह बड़ी बेटी और दूसरी छोटी मैंने बड़ीबेटी का बिवाह क़ैरूमें अपने भ्राता के पुत्र के साथ किया अकस्मात् उसका पति कालबश हुआ और वह कईबर्ष पर्यन्त मिस्र में रही और वहांसे सैकड़ों कुकर्म सीखकर मेरे घर आई और दूसरी स्त्री जो उससे छोटी थी और तुम्हारे हाथों जिसके प्राण निकले वह बहुत बुद्धिमती और सुकर्मिणी थी कभी मुझे उससे दुःख न हुआ बड़ीबहिन उसे भी कुमार्ग कर अपने साथ बाहर लेजाती उसके मरने का एक दिन ब्यतीत हुआथा कि मैंने भोजन के समय उससे पूछा वह कहांहै कल से मैंने उसे नहीं देखा उस की बहिन यह सुन रोनेलगी मैं समझगया कि उसपर कुछ आपदा व दुःख पड़ा तब मैंने उससे पूछा जो कुछ तुझे उसका बृत्तान्त बिदित हो कह उसने ठण्ढी सांसभर कहा मैं इसके सिवाय कुछ नहीं जानती कलके दिन मेरी बहिन उत्तम २ बस्त्र और मोतियों की माला पहिन कहीं बाहर गई थी तबसे देख नहीं पड़ती यह सुन मैंने उसे नगर में बहुत ढुँढ़वाया परन्तु कुछ भी उस अभागी का बृत्तान्त न मालूम हुआ कुछ समय के पश्चात् उसकी बड़ी बहिन उस अपने अकर्म से लज्जितहुई और रात्रि दिवस उसके वास्ते रोदन करती और खाना पीना छोड़दिया यहांतक कि रोगी होगई कई एकदिन

में कालबश हुई तदनन्तर हाकिम ने कहा हे पुत्र ! हम तुम दोनों अभागे हैं अब अपना शोक चित्त से भुलादे तेरा बिवाह अपनी ती-सरी कन्या से करदूंगा वह दोनोंसे छोटी और बड़ी रूपवान् है तुम उसे देख बहुत प्रसन्न होगे और सदैव उससे राज़ी रहोगे मेरे घर को अपना घर समझो मेरे पीछे तुम मेरे वारिस होगे मैंने कहा मैं सब भांतिसे आपका आज्ञापालकहूं तुम्हारी कृपा का मैं कृतज्ञ नहीं होसक्ता उसने कहा अब देर न करो फिर साक्षियों को बुलवाय प्रकट रीतों के बिना अपनी पुत्री को मेरे साथ ब्याह दिया और अपना सम्पूर्ण धन और राज्य मुझे लिखदिया तुमने भी हाकिम से भेंट क-रते समय मुझपर दयाकरते देखा होगा कल मेरे चचाओं का एक मनुष्य मुझे ढूंढ़ते मेरे निकट आया और उनका पत्र मुझे दिय जिसमें मेरे पिता का मरना और मेरा बुलाना लिखा था कि अपने पिता की थाती को आके ले परन्तु अब मेरा बिवाह हाकिम की पुत्री के साथ हुआहै और मवस्सल को जाना कठिन था इसकारण मैंने अपने चचाओं को लिख भेजाहै कि मेरा आना किसीभांति वहां नहीं होसक्ता मैं यहां आपके आशीर्बाद से प्रसन्नहूं मैंने अपने पिता की द्रब्य अपनी ओरसे तुमको दी उस पुरुष ने अपना बृत्तांत स-म्पूर्ण कहा अब मुझे बिश्वास है कि तुम्हें मेरे दाहिने हाथ से न देने का बृत्तांत भलीभांति बिदितहोगया होगा जब चरित्र समाप्त भया उस यहूदी बैद्य ने काशग़र के बादशाह के सन्मुख कहा यह कथा मव-स्सल के ब्यापारी कीहै मैं उस समय दमिश्क़ में था और उस बाद-शाह के जीवन पर्यंत दमिश्क़में उसके निकट रहा जब वह कालबश हुआ वहांसे उदास हो फ़ारस देश में गया और फ़ारस के देशों की सैरकर हिन्दुस्तानमें आया वहांसे आपकी राजधानी में पहुँचा अ-पने पुराने बैद्यकर्म को करतारहा काशग़र के बादशाह ने कहा यह कथा जो तूनेकही अद्भुतहै परन्तु इस कुबड़ेके बृत्तांत के समान नहीं तुम धैर्य न धरो कि इसी के कारण तुम छुटकारा पावोगे यादरक्खो मैं तुम चारों को इस कुबड़े की हिंसा के बदले बध करूंगा तदनन्तर वह दरज़ी उठ बादशाह के सन्मुख गया और उसके चरणोंपर

गिर के कहा एक बृत्तान्त बिनय करताहूं और मुझे परिपूर्ण बिश्वास कि आप उसके श्रवण से प्रसन्नहोंगे॥

बादशाह काशग़र के सन्मुख दरज़ीके मुख से बर्णित कथा॥

दरज़ी ने प्रणामकर बादशाह काशग़र के सन्मुख इस कथा को इसभांति बर्णन किया कि एक ब्यापारी ने इस नगर में अपने मित्रों को निमंत्रण कर नानाभांति के पाक खिलाये और मुझे भी परसों प्रातःकाल को न्योता उसके निमन्त्रणानुसार मैं उसके घर गया बीस मनुष्य वहां मैंने बैठे देखे परंतु मालिक वहां न था हम सब उस के आगमन की बाट देखतेथे इतने में क्या देखते हैं कि वह एक सुन्दर लँगड़े मनुष्य को अपने साथ लिये चलाआता है हम सब उसे देख उठ खड़ेहुये वह उस लँगड़े मनुष्य को जहां हम थे लाय बैठाने लगा वह मनुष्य वहां बैठने लगा कि इतने में एक नापित अर्थात् बाल बनानेवाला उसे दृष्टिपड़ा उसे वहां बैठे देख पाछिलेपाँवों फिरा और सभा से निकल चलेजाने की इच्छा की मालिक इस बात से आश्चर्यितहुआ और कहा हे मित्र! तुम कहां जाते हो मैंने तुमको इस निमित्त श्रम दियाथा कि मेरेघर पर आकर कुछ भोजन करोगे सो भोजन तय्यारहै उसे बैठके सब मित्रोंसहित भोजनकरो बिना भोजन किये तुम्हें न जाने देंगे उस परदेशी ने कहा मैं तुम्हारे घर मरने के लिये नहीं आया ईश्वर के वास्ते मुझे जाने दो मैं इस दुष्ट कुलक्षण नापित का स्वरूप जो वहां बर्तमानहै नहीं देखसक्ता दरज़ी ने कहा हम सब उससे यह बचन सुन अत्यंत बिस्मितहुये इतना क्यों इस नापित से अप्रसन्नहै सो उसका बृत्तान्त सुनने को उसके चारों ओर बैठगये और उससे कहा हमको इस नापित के बृत्तान्त सुननेकी लालसाहै उसने कहा हे मित्रो! मेरे लँगड़े होनेका कारण यही नापित दुष्टहै और इसीके कारण बहुतसी आपत्तियों और दुःख में पड़ा इस निमित्त मैंने प्रणकियाहै कि जहां कहीं यह नाई होगा वहां मैं न रहूंगा किंतु उस नगरको परित्याग करूंगा हे मित्रो! मैंने नगर बग़दाद निज बासस्थान को इसीके वास्ते त्यागकिया और निज नगर का रहना छोड़ यात्राकर इसनगरमें पहुँचा परन्तु बड़ा पश्चात्तापहै यहांभी वही

बैरी बर्तमान है इस निमित्त मैं यहां ठहर नहीं सक्ता मुझे क्षमा करो मैं घर जाय अन्य देश में चला जाऊंगा कि इस कुलक्षण दुष्ट से रक्षित रहूं यह कह हम सबसे बिदाहुआ और मालिक की बिना आज्ञा चला जानेलगा परन्तु उसने दौड़के उसे ठहराया और दूसरे मकान में लेजा बड़े सत्कार और आदरपूर्बक भोजन कराया और अतर, पान दे कहा मैं तुम्हारा कृतज्ञ होऊंगा जो तुम इसके अपकार का बृत्तांत जो उसने तुमसे कियाहै प्रकटकरोगे हमने भी इसीभांति उससे उस चरित्रके सुननेकी इच्छा की वह नाईभी वही बार्त्ता सुनता और चुपका शिर झुकाये धरती की ओर देखता जाताथा निदान वह मनुष्य उस की ओर पीठकर बैठा और इसभांति अपना बृत्तान्त कहनेलगा॥

पंगुल का चरित्र॥

मेरा पिता बुग़दाद नगर में रहताथा और प्रतिष्ठापूर्बक आनन्द से निर्बाह करता और मैं उसका इकलौता पुत्र था जब वह कालबश हुआ मैं लिखपढ़ निपुण होय व्यापार का कार्यभी जानगया जब वह जीताथा उसने सम्पूर्ण द्रब्य और बस्तु मेरेनाम लिखदीथी मैं समझ बूझ धन ख़र्च करता मेरे उत्तमाचरण से वहां के बासी मुझे मित्र और प्यारा जानते यद्यपि मैं जवान था तथापि मैं स्त्रियों की प्रीति और भोग बिलास से निपट अज्ञान था और मुझे अत्यन्त लज्जा थी कदापि स्त्रियोंकी सभा में न जाता और उनसे बिलग रहता अकस्मात् एक दिन मैं एक दिशा को जाताथा कि दूसरी ओर से बहुतसी स्त्रियां आईं मैं उनसे बचने के लिये एक सूक्ष्म गली में जाय एक तख़्त पर जो एक द्वार के समीप बिछा था बैठगया और यह बिचारा कि जब स्त्रियां चलीजावेंगी तो मैं वहांसे अपने घर चलाजाऊंगा अकस्मात् मेरीदृष्टि के सन्मुख एक खिड़की थी और उस खिड़की के नीचे बहुत से पुष्पों के बृक्ष लगेथे मैं बैठाहुआ वह खिलेहुये पुष्प देखरहा था इतने में वह खिड़की खुली एक स्त्री अतियौवनवती षोड़श बर्ष की दृष्टिपड़ी उसपर मैं मोहित होगया वह मुझे देख मुसकराई और मुझसे नयन लड़ाके पुष्पबाटिका में चलीगई और बृक्षों को सींचा तदनन्तर उधर से लौट मुझ से हावभाव कटाक्ष कर उस

खिड़की में चलीगई और उसे बन्दकरलिया है मित्रो! जितना स्त्रियों से अलग रहता था उतनाही मैं उसपर मोहितहुआ और मूर्च्छित हो तख़्त पर गिरपड़ा जब कुछ सुधिहुई देखा कि नगर का न्यायाधीश बड़ी धूम धाम से आया और उसी घर में चलागया मैंने समझा कि यह उसी स्त्री का पिता है अपने घर में उसी दशा में आया और विरह की अग्नि में जल बिछौने पर ऐसागिरा कि चैतन्यता जाती रही मेरे घर के लोग यह दशादेख अत्यन्त चिंतित और शोकयुक्त हुये और नातेदार जो प्यार करतेथे यह दशा सुन मुझे देखने आये और अत्यन्त चिंताकर पूछनेलगे तुम्हारी क्या दशा है और तुम्हें तत्काल क्या होगया मैंने चतुरतासे अपनाभेद किसीसे न कहा और चुप होगया वह अधिक शोकवान् हुये और वैद्य जो कुछ औषध खिलाते वह उपयोगी न होती और सब उपाय निष्फल जाते कुछ दिन में सामर्थ्य मेरी जातीरही मानों क्षयी रोग होगया एक दिन एक वृद्धा जो मेरे घर के लोगों से जान पहिंचान रखती थी इस वृत्तांत को सुन मुझे देखने आई और बड़े विचार से मुझे ऊपर से नीचे तक देखा तो प्रकट में कोई भी रोग मुझमें न पाया तब मेरे घर के लोगों से कहा तुम इसके समीप से हटजाओ मैं एकांत में फिर इसे देखूंगी जब वह सब चलेगये तब उस वृद्धा ने फिर मुझे भलीभांति देख मेरे कान में कहा तुम्हारे रोग को मैंने भलीभांति पहिंचाना प्रकट में कोई रोग तुम्हारे शरीर में नहीं परन्तु तुम किसी सुन्दर स्त्री पर मोहित हुयेहो लज्जासे प्रकट नहीं करते यदि मुझे तुम्हारी प्यारी का पता वा नाम मालूम होगा तो यथोचित तुम्हारे प्रयोजनके अर्थ सहायता करूंगी यह कह मुझसे उत्तर चाहा और बहुतसा मुझे तंग किया कि मैं उससे कुछ कहूं परन्तु मैं चाहता था कि उससे लज्जा के कारण अपना वृत्तान्त प्रकट न करूं इस निमित्त मैंने उसकी ओर देख एक ठंढी सांस ली और कुछ न कहा उसने कहा मेरेप्रिय इतनी भी लज्जा न चाहिये मैं तो कहती हूं कि तुम्हारे काम में श्रम करूंगी फिर क्यों मुझसे अपना मनोरथ नहीं कहते यौवन अवस्था में बहुधा ऐसा हुआ करता है निदान इष्टमित्रों के उपाय से उनके

मनोरथ प्राप्तहोतेहैं उस बृद्धाने इस भांतिकी बहुतसी बातें कीं मैं उस से खुला और अपने रोग का कारण बर्णन किया और उससे यही मनोरथ चाहा कि तुम्हारे द्वारा एकबेर उसका दर्शनहो और मेरी प्रीति और मोह का बृत्तान्त उसको मालूमहो तो निस्संदेह जीवन सुफलहै उस बृद्धा ने कहा हे पुत्र! वह स्त्री जिसका तुमने बर्णन किया नगर के हाकिम के न्यायाधीश की कन्या है आश्चर्य नहीं कि तुम उसपर मोहित हुये वह महासुन्दरी, रूपवती, कोमलांगी, मनहरणी, दुःखदरणी, चन्द्रमुखी, बुग़दादकी स्त्रियों मेंसेहै परन्तु वह और उसका पिता जिसको तुमने देखा था दोनों अहङ्कारी और कटुभाषी हैं और वह न्यायाधीश अपनी लड़कियों को कभी घरसे बाहर नहीं निकलने देता और उनको अज्ञादी है जब तुम किसी आवश्यकता पर बाहर निकलो तो कभी किसी पुरुष की ओर न देखना जब वह बाहर निकलती हैं उनके नेत्रों पर कपड़े की पट्टी बांधीजाती है और अन्धों के समान बांदियां हाथ पकड़ गली कूचों में लेजाती हैं यह उसका और उसके पिता का हालहै जो मैंने कहा कदाचित् तुम किसी दूसरी स्त्री पर मोहित होते निदान उस स्त्री ने बहुत पृथ्वी आकाश दिखाय कहा यह सब बातें जो मैंने कहीं सब सत्यहैं और यह बिचार जो मैं करतीहूं अग्रसोची के तौरसे है परन्तु तुम धैर्य रक्खो देखो तो ईश्वर क्याकरताहै अब तो मैं जातीहूं यह कह वह बुढ़िया चलीगई दो तीन दिनके पीछे फिर आई और मुझसे कहने लगी हे पुत्र! मैं प्रथमही कहती थी वह स्त्री जिसपर तुम मरतेहो बड़ी नकचढ़ी है मैंने उससे बहुत कुछ कहा परन्तु कुछ उसका बिचार न किया जब मैंने तुम्हारी बीमारी का हाल कहा यहसुन वह चुपकी हो सुना की फिर जब भेंटका बर्णन हुआ अत्यन्त अप्रसन्नहो भृकुटी टेढ़ीकर मेरी ओर देखा और कहा तुमने बड़ी ढिठाई की कि ऐसी बात मुझसे कही जो फिर मैं कभी ऐसी बात सुनूंगी तो तेरा मुख न देखूंगी तदनन्तर यह कह उस बृद्धा ने मुझे बहुत धैर्य दिया कि तुम भरोसा रक्खो निराश मतहो जबतक तुम्हारा मनोरथ सिद्ध न होगा मुझे चैन न पड़ेगा उसके धैर्य देने पर भी मैं निराश हो

नम्बर२२ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ै २९६ द्वि भा.
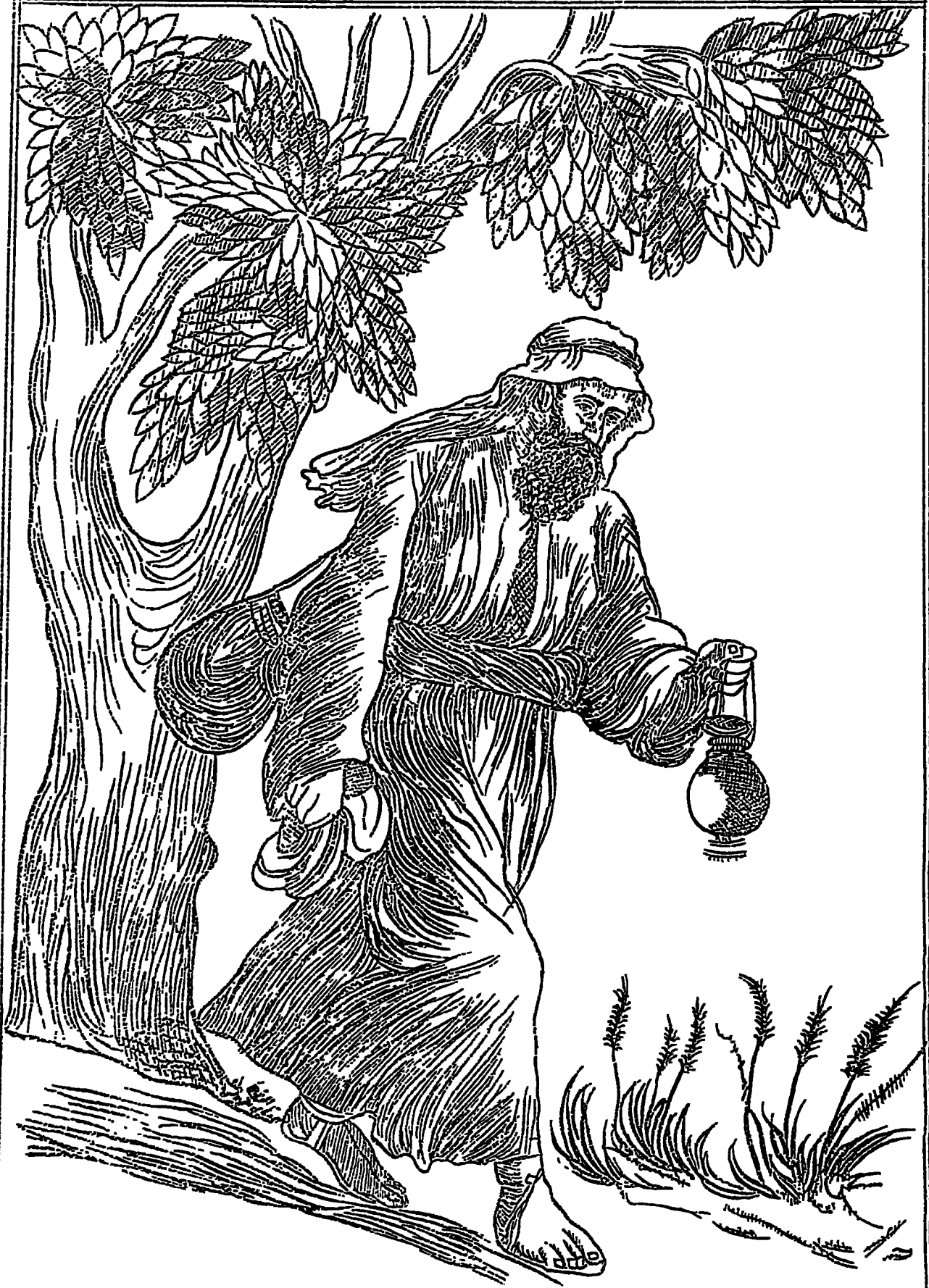
मरणतुल्य होगया और पहिले से अधिक मेरी बुरीदशा होगई परन्तु जब कभी वह बृद्धा आती तो उसे अपना भेदी समझ किंचित् धैर्य होता एक दिन वह आई और मेरे समीप बहुतसी स्त्रियों को बैठा देख मेरे कान में चुपके से कहा अब तुम्हारे वास्ते शुभसमाचार लाई हूं यह सुनतेही मुझमें शक्ति और बल हुआ तुरन्त उठबैठा तदनन्तर उस बृद्धा ने कहा कल्ह सोमबार को मैं उस सुन्दरी के निकट गई थी उस समय मैंने उसे प्रसन्न पा अपने को चिन्तायुक्त बनाया और रोनेलगी उस स्त्री ने मेरी यह दशा देख पूछा मेरी अच्छी माता कुशलतो है आज क्यों शोकवान्हो मैंने कहा क्याकरूं बड़ा पश्चात्तापहै कि अभी मैं उसी मनुष्य के पास से आतीहूं उसकी कुछ आशा नहीं अब तब होरहाहै तुम्हारी प्रीतिमें उसकी यह दशाहुई अब वह दया योग्य है और तुम बड़ीकठोर और निर्दय हो उस कोमलांगी ने उत्तरदिया मैंतो उस पुरुष को नहीं जानती कि कौनहै और कहां रहताहै तुम उसके मरने का व्यर्थदोष मुझपर लगातीहो मैंने कहा हे चंद्रमुखी, गजगामिनी! तुम भूलगईं मैंने तो तुमसे उसी दिनकहा था कि यह वहपुरुषहै जो तुम्हारे द्वारके सन्मुख बैठाथा और तुम खिड़की खोल पुष्प के बृक्षों को सींचने के निमित्त बाहर आईथीं उसी समय वह तुम पर मोहित होगयाथा और उसीक्षण से तुम्हारे बिरह की अग्नि से निशिदिन घुलाकिया अब उसमें कुछहाल नहीं उस समय जो तुमसे मैंने कहाथा तुम सुनकर अप्रसन्नहुईं सो मैंने वही सबहाल उससे कहा उस क्षण से औरभी उसकी दुर्गति होगई अब जो तुम्हारी उसपर कृपादृष्टिहो तो वह बचजावे नहीं तो वह मराचाहताहै जब मैं उससे यह बृत्तान्त कहचुकी और अपना स्वरूप प्रथम से अधिक चिन्तायुक्त बनाया और नेत्रों में अश्रु भरलाई तब उस प्यारी ने कहा हे बृद्धा! तुम सत्य कहती हो मेरीही चाह और प्रीति से उसकी यह दशा होगई तदनन्तर वह बोली यदि केवल मुझसे वार्त्ता करने व देखनेहीसे उसका जीवन हो तो कुछ हानि नहीं तब मैंने कहा इतनी ही दया उसपर बहुत है उसने एक ठण्ढी सांस भरके कहा अच्छा तुम उससे जाके कहो यदि उसकी इसीमें

प्रसन्नताहै तो वह मुझे फिर देखसक्ता है परन्तु बार्त्ता के सिवाय दूसरी आशा मुझसे न रक्खे जब तक कि मैं उससे बिवाही न जाऊं और मेरा पिता राज़ी न हो मैंने उस स्त्री की बहुतसी प्रशंसा कर कहा वाह क्या दयावान् हो परमेश्वर तुम्हें जीता रक्खें अब मैं उसके समीप जाय यही शुभसमाचार उसे सुनातीहूं तदनन्तर उस सुन्दरी ने कहा शुक्रबार को मेरा पिता जामामसजिद में निमाज़ पढ़नेजाताहै वह मनुष्य उस समय अकेला आवे मैं उसे भीतर बुला लूंगी और अपने पिताके आगमन के एक मुहूर्त आगे उसे बिदा करूंगी इस समयान्तर में वह मुझे भलीभांति देखे और बार्त्तालाप करे निदान जब उस बृद्धा ने आय यह हाल बर्णन किया मैं उस समय की प्रसन्नता का बर्णन नहीं करसक्ता कि कितनी मुझे प्राप्त हुई और तुरन्त मुझमें बल और शक्ति आगई मैंने उस बृद्धाकी बहुतसी कृतज्ञता और प्रशंसा कर हज़ार अशरफ़ी का एक तोड़ा उसे दिया और बिदाकिया और शुक्र को अरुणोदय पर उठ मेरी यही इच्छाहुई कि क्षौर करा उत्तम उत्तम वस्त्र और अतर मल उस न्यायाधीश के मन्दिर में जाऊं और उस प्यारी सुन्दरी से भेंट और बिवाह की बार्त्ता करूं और उसे राज़ी पा विवाह का नेग न्यायाधीश को कहलाभेजूं यह सोच मैंने एक दास को कहा तू तुरन्त एक चतुर नापित को बुलाला कि मेरा क्षौरकरे दैवयोग से वह दास इसी दुष्टनाई को जो यहां बैठाहै बुलालाया उसने आतेही प्रणामकर कहा आपकी कृशांगता से जान पड़ता है कि आपके बैरी रोगी थे मैंने कहा निस्संदेह मैंने बड़ा कष्ट भोगा है और अभी अच्छा हुआहूं इसने कहा परमेश्वर आपको सम्पूर्णरोगों और कष्टों से रक्षित रक्खे और तुमपर दया और अनुग्रह रक्खे मैंने कहा मैं उसीकी अनुकम्पा की आशा रखताहूं तदनन्तर इसने कहा आप आज्ञा दीजिये तो मैं आपका क्षौर करूं वा फ़स्त खोलूं मैंने कहा क्या तूने नहीं सुना कि अभी मैं अरोग हुआहूं फ़स्त से क्या प्रयोजनहै तू शीघ्रही मेरा क्षौर कर बहुत बातों से बिलम्ब न कर मुझे ठीक मध्याह्न को कहीं जाना है यह नाई फिर भी कुछ कालपर्यन्त बका किया न तो अपने हथियार खोले और अस्तुरा

भी तीक्ष्ण और दुरुस्त न किया किन्तु एक बहुत उत्तम अस्तुरा निकाला और दालान से उठ सहन में गया और यन्त्र लगाकर ग्रह-गोचर बिचार कहनेलगा प्रसन्न हूजिये आज शुक्रबारको बृहस्पति और मंगल का संयोग है इससे कोई उत्तम मुहूर्त क्षौर के निमित्त नहीं दूसरा यह सम्बन्ध प्रथमके बिपरीत अत्यंत कुलक्षण और अशकुनहै और ग्रहों से मुझे बिदितहुआ कि आज के दिन आपके बैरियों पर बहुत कष्ट होगा परंतु प्राण बचजावेंगे इतना दुःख होगा कि जीवन पर्यंत आप पर रहेगा परंतु मुझे अपने साथ रखिये बिश्वासहै कि उन कष्टान्तरों में मैं तुम्हारे काम आऊं तदनंतर उस पुरुष ने इतनाकह कहा मित्रो ! उससमय के मेरे कष्ट और व्यथा को बिचारो कि इस दुष्ट नापित ने ऐसी व्यर्थ बार्त्ता से मुझ ऐसे आसक्त को ऐसी सुंदरी की भेंटसे जहां पक्षी पर न मारसक्ता था हटा रक्खा मैं यहसुन अत्यंत क्रोधितहुआ तब धैर्यरख उससे कहा मैंने तुम्हें कुछ सम्मत करने और मुहूर्त देखने को नहीं बुलाया तुझे क्षौर के निमित्त बुलायाहै अपना कार्यकर नहीं तो चल बरन मैं दूसरा नाई बुलालूंगा वह मुख में कफ़ भरके बोला आप इतना क्रोधित क्यों होते हो तुम नहीं जानते मुझ ऐसा गुणवान् नाई आपको कदाचित् न मिलेगा मुझमें बहुतसे गुण और बिद्याहैं जिनमेंसे मैं आपके सन्मुख कुछ बिनय करताहूं बैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, कबिता, न्याय, वेदान्त और सम्पूर्ण प्रकार की गणितबिद्या और ग्रहपरीक्षा इन सब बिद्याओं में मैं निपुणहूं इस के बिशेष भूतकालके बादशाहों के इतिहास किन्तु संसार भरके इतिहास मुझे भली भांति बिदित हैं कोई ऐसी पुस्तक संसार में नहीं जिसे मैं भली भांति नहीं जानता आपके स्वर्गबासी पिता जिनको मैं प्रायः स्मरणकर रुदन करताहूं मेरे गुण को भले प्रकार जानते और बड़ी प्रतिष्ठा करते और कदापि मुझे अपने से भिन्न न करते उनके हित को स्मरणकर इच्छा रखताहूं कि आपकी यथोचित सेवा करूं और उन कार्यों में जो तुमपर पड़े हैं तुम्हारा सहायकहूं किसी भांतिका तुमपर दुःख व आपदा न आने दूं ऐसे ऐसे निरर्थक बचन सुन क्रोध होने पर भी मैं हँस पड़ा और कहा कबतक तू बकबक करेगा और कब

क्षौर बनावेगा उसने उत्तर दिया वाह आपने अन्य लोगों के विचार के विपरीत कि वह मुझे अल्पभाषी कहते हैं अधिकभाषी का उपनाम दियाहै मेरे छः भ्राताहैं उनके नाम सुनिये बड़े का नाम बकबक, दूसरे का नाम बकबारह, तीसरे का नाम बूबक, चतुर्थ का नाम अलकूज़, पंचम का नाम अलनसचर, षष्ठ का नाम शाहकुबक यह सब तो निस्संदेह बक्की हैं और मैं उन सबसे छोटा और अल्पभाषीहूं दरज़ी ने कहा इतनाकह उस मनुष्य ने सभा से कहा हे मित्रो! न्यायकरो इस निरर्थक बकनेपर भी अपनेको चुपका और अल्पभाषी समझता है तब मैंने द्वितीय सेवक से जो घर का ख़र्च उठाता था कहा तीन अशरफ़ी इसेदे बिदाकर आज मैं क्षौर न कराऊंगा इस नापित ने यह सुन कहा स्वामी आप क्या कहते हो मैं आपसे यहां नहीं आया आपके बुलाने से यहां आयाहूं और मुझे सौगन्द है जो मैं आपके क्षौर किये बिना जाऊं जो तुम मेरी गुणग्राहकता नहीं करते तो इसमें मेरा कुछ अपराध नहीं तुम्हारा पिता मेरे गुण और योग्यता को भलीभांति जानता मानता था वह स्वर्गबासी जब कभी मुझे बुलाते तो अपनी गोद में मुझे बैठाते और अपने साथ मुझे भोजन खिलाते और मेरी चतुरता और हर्षयुक्त अमृतरूपी बचन सुन अत्यन्त प्रसन्नहोते और यथाशक्ति सत्कार करते और कहते तू संसार भरमें अद्वितीय है तब मैं बिनयकरता यह सेवक तो इस योग्य नहीं परन्तु आप प्रणतपालकता और गुणग्राहकता से कहते हैं एक दिन उन्हों ने मेरे अमृतरूपी बचनों से आनन्दितहो एकसौ अशरफ़ी और भारी ख़िलअत मुझे कृपाकिया एक समय में उनके फ़स्त खोलने से मैं धनाढ्य होगया सो मुझे अबतक वही सुधि बनी है इतनी कथा कहकर भी वह नापित चुप न हुआ तुरन्त दूसरी कथा आरम्भ की और बका यहांतक कि एक मुहूर्त व्यतीत हुआ और उसके निरर्थक बचन सुनते सुनते मैं दीन होगया और अत्यन्त बिस्मितहो शोचा इसदुष्ट और नष्ट नाई से क्रोध से काम न निकलेगा नम्रता करनी चाहिये तब बिनयपूर्वक मैंने कहा अपनी बचनचातुरी को समाप्त कीजिये और मेरा तुरन्त क्षौर बनाइये मुझे कुछ आवश्यकता है जैसा कि कई बेर मैं तुमसे

कहचुका हूं वह दुष्ट यह सुन हँसा और कहा मुझे विदितहुआ आप को कोई बड़ी आवश्यकता है परन्तु उसे मुझे भी बताइये और मुझे अपने साथ रखिये किंतु तुम्हें उचित है कि मुझसे आप सम्मतकर उस कार्य को कीजिये जैसे कि तुम्हारे पिता और दादा मुझसे प्रत्येक कार्यमें सलाह लेते और फिर करते मुझे अपनादास और आज्ञापालक समझिये और निश्शंक मुझसे मनकी बात कहिये मैंने कहा तू बकते बकते मेरा मग़ज़ चाटगया और अपने निरर्थक बचन सुनाये इससे मेरी बहुत हानिहुई यह कह मैं उठखड़ाहुआ और रिस में अपना एक चरणउठा बड़ेबेगसे पृथ्वीमें मारा यह निर्लज्ज नापित मुझे क्रोधित और मेरे लाल नेत्र देख कहनेलगा आप अप्रसन्न न हों मैं तुरन्त तुम्हारा क्षौर बनायेदेताहूं तदनन्तर उसने मेरा शिर भिगो मूंड़ना प्रारम्भ किया और थोड़ा सा मूंड़कर ठहरगया और कहा इन असत्य बिचारोंको जो तुम्हारे मनमें फिरतेहैं दूर करो और मेरी बुढ़ाई और सर्वगुणनिधानता का विचार न कीजिये मैंने इससे कहा चल अपना कार्यकर अधिक न बक तदनन्तर इसने कहा क्याकोई बड़ीही आवश्यकताहै जिससें इतनी घबराहटहै मैंने कहा प्रथम मैं तुझसे कहचुकाहूं बेरबेर क्यों पूछताहै तेरा काम क्षौर बनानाहै और झगड़ों से तुझे क्या प्रयोजन फिर इस कुलक्षण ने कहा स्वामी इतने गम न हूजिये मुझे यह भयहै कि आप जो समझे बूझे बिना कार्य करें और हानि पहुँचे क्योंकि बुधजनों ने कहाहै जो मनुष्य बिचारे बिना करता है अन्त को लज्जा उठाताहै इस निमित्त आपसे बिनय करता हूं वह कौनसा कार्यहै मुझे भी बतादीजिये कि उसके वास्ते आप शीघ्रता करतेहैं अभी तीन घड़ी मध्याह्न में शेष हैं इतनी क्या शीघ्रताहै मैंने कहा जो प्रणतपाल कहलातेहैं वह उस नियतकालके प्रथम अपनेको पहुँचातेहैं तू कुछ इस बातका बिचार न कर क्षौर तुरन्त बनादे तब उसने मेरे धैर्यके हेतु अस्तुरा तीक्ष्णकर मेरा आधाशिर मूंड़ उठखड़ा हुआ और सूर्यकी ओर देखकर कहा अभी तीन घड़ी पूरी शेषहैं मैंने कहा मुझे ज्योतिषका निश्चय नहीं मेरे बिचार में सब असत्यहैं और जलभुन उसे बहुत से दुर्बचन कहे तब उसनेकहा हे स्वामी! इतने न

झुँझलाइये मैं अभी क्षौर बनाये देताहूं अपनेको सँभालिये इस क्रोध
से डरताहूं ऐसा न हो कि फिर तुम्हें रोग उत्पन्न होजाय एक क्षण-
मात्र में मैं तुम्हारा क्षौर बनाये देताहूं फिर उसने अस्तुरा पथरी पर
रख और कमर से चमूटा निकाल अस्तुरे को तीक्ष्ण किया और
शिर मूंड़नेलगा तो भी वह अभागा चुप न था यदि एक बाल मूं-
ड़ता तो दश बातें कहता निदान कहने लगा जो मुझे अपने साथ
रखिये और निज आवश्यकता को प्रकट करिये तो उसमें मैं भी कुछ
आपको उपदेश वा सम्मत दूंगा मैंने इस अभागे नापित को धोखा
देने के लिये कहा कई मेरे इष्टमित्रों ने मेरे नीरोग होनेसे प्रसन्न
होकर मुझे न्योता है और वह मेरे आगमन की राह देखतेहोंगे यह
नीच न्योते का नाम सुन उछलपड़ा और कहने लगा परमेश्वर
आपका जीवन सफलकरे आपने मुझे इससमय भलीसुधि दिलाई
मैंने कल पांच चार मनुष्यों को न्योताथा और आज मैं उसे भूल
गया अभी कुछ भी तय्यारी नहीं की मैंने कहा कुछ हानि नहीं यद्यपि
मुझे मित्रों ने न्योता है तथापि नानाप्रकार के व्यञ्जन पकवान
आदि बने रक्खे हैं वह सब मैं तुझे दिलवादूंगा परन्तु मेरा क्षौर
तुरन्त बनादे और मदिरा भी तुझे उत्तम मिलेगी और जिसभांति
पिता ने तेरे प्रियबचन सुन तेरा पारितोषिक आदिसे सन्मान किया
था बिश्वास रख मैं भी तेरे चुपरहने से तुझे अधिकदे सत्कार करूंगा
यह सुन वह अत्यन्त हर्षयुक्त हुआ और कहा ईश्वर आपको जीता
रक्खे उस पाक को मैं देखलूं वह मेरे मित्रों को पूरेहोंगे वा नहीं मैंने
कहा बहुतसा उत्तम पक्वमांस है और छः मुर्ग भुनेहुये वह सब पाक
अस्सी मनुष्यों को बहुत है तदनन्तर मैंने अपने दास से कहा कि
वह सब पाक और मद्य के चार शीशे इस नापित को दीजिये उसने
कहा बहुत अच्छा तदनन्तर इस नाई ने कहा कुछ फल और पात्र
भी कृपाकरो मैंने उसकी भी आज्ञा देदी यह दुष्ट और अभागा नाई
क्षौर तज प्रत्येक बस्तु को देखनेलगा निदान इस दुष्ट ने इसी बहाने
से और भी अर्धघटी ब्यर्थ ब्यतीत की और क्षौर की ओर देखा भी
नहीं फिर मेरे रिसकरने से क्षौर बनानेलगा क्षणमात्र में अस्तुरे को

रख कहनेलगा कि पश्चात्ताप है जो आपके पिता स्वर्गबासी जीते होते तो मैं कदापि निर्धन न होता परन्तु परमेश्वर का धन्यबाद है कि आपने भी मेरा सत्कारकिया मैंने तुम्हारे और तुम्हारे पिताके सिवाय आज तक किसीसे कुछ न लिया और मेरी दशा जंजौट के समान है जो नाइयों की दल्लाली किया करता व सांवल के सरिस जो भुने चने गलियों में बेंचता व सांवल का जो बकला बेंचता व शातरां बेंचनेवाले के समान था अबूबकट के सरिस जो मार्गों में नीर छिड़कता कि धूर न उठे वा क़ासिम के समान जो ख़लीफ़ा का रक्षक था यह सर्बदा भलीभांति आनन्द भोगते रहे बुग़दाद के पुरबासी उनको निमंत्रण कर सत्कार करते उन सब में एक गुण यह था कि इस सेवक के समान अल्पभाषी थे अब मैं एक कबित्त और नृत्य जंजौट * का गाताहूं आप उसे सुनिये अनन्तर इस अयोग्य नाई ने जंजौट के समान नाचना गाना प्रारम्भ किया मैंने उसे क्रोधित हो बरजा कि अपना मसख़रापन मत दिखा परन्तु कब सुनता था यहांतक कि वह नक़ल उसने पूरी की तदनन्तर कहनेलगा अब उन मित्रों को जिनका मैंने बर्णन किया जाय भोजन खिलाताहूं जो मेरा उपदेश मानिये तो अपने मित्रों को छोड़ मेरे न्योते में संयुक्त हूजिये नहीं तो आपके मित्र बकबककर तुम्हें बहुत दुःखदेंगे और आपके बैरी फिर रोगी होजावेंगे मैंने रिसहोने परभी उसकी दुर्बुद्धि पर हँसदिया और कहा मुझे तुम्हारा निमंत्रण स्वीकारहै किसीदिन अवकाश पा तेरा मसख़रापन देखूंगा और सुनूंगा परन्तु आज किसी प्रकार वहां नहीं जासक्ता तू शीघ्र मेरा क्षौर पूराकर और अपने घर जा तेरेमित्र वहां आय तेरी राह देखते होंगे तदनन्तर उसने नम्रतापूर्वक बिनय किया कि जो मैंने आपसे कहा है उससे इन्कार न कीजिये और अवश्य चलिये मेरे घर की सभा देख आप प्रसन्नता और आनन्दको प्राप्त होंगे और बिश्वास है ऐसा आनन्द उस सभा में प्राप्त होगा कि आप अपनेमित्रोंको भूलजावेंगे मैंने उससे कहा इतना निरर्थक क्यों बकता है मैं तेरेघर आज किसी प्रकार नहीं जासक्ता

* एक प्रकार का नृत्य और राग ॥

अनन्तर इसने कहा जो आप मेरे घर नहीं चलते तो मुझेही अपने साथ लेचलिये अब यह पाक जो आपने कृपाकिये हैं मैं अपने घर लेजाताहूं और अपनेमित्रों को खिला पिला तुरन्त लौटआताहूं मैं ऐसा अशील नहीं कि आपको अकेलाजानेदूं इससे आप प्रसन्नहों वा अप्रसन्न इस बात को सुन मैं अत्यन्त दुःखितहुआ और कहा हे ईश्वर ! मैं इस नाई के हाथ से किस आपदा में पड़ा सम्पूर्ण दिवस मेरा इसी बकबक में कटा फिर इस अन्यायी से कहा परमेश्वर के वास्ते मेरी हजामत पूरीकर और अपने घर मित्रों के समीप जा वहां खा पी और उनको खिला पिला मुझे छोड़ मैं अकेला जाऊंगा मैं नहीं चाहता कि मैं अपने साथ किसीको लेजाऊं जहां मेरे जाने की इच्छा है अन्य का वहां प्रवेश नहीं वहां तो मेराही जाना कठिन होगा उस नापित ने कहा वाह आप मुझसे हास्यकरते हैं स्वामी जब आपके मित्रों ने आपको निमन्त्रण दिया है तो मेरे जानेके लिये कौन बरजेगा वह मुझ ऐसे बुद्धिमान् को देख आपसे बहुत प्रसन्न होंगे क्योंकि मैं सभाचातुर हूं और मेरी बाचालता से वह बहुत प्रसन्न होंगे आप जो चाहिये सो कहिये मैं अवश्य आपके साथ जाऊंगा उस मनुष्य ने सभा से कहा हे मित्रो ! मैं उसकी बातों से घबराया देखिये क्योंकर इसदुष्ट नापित से छुटकारा होगा तद-नन्तर सोचा कि नम्रता बिना इससे छुटकारा नहीं इतने में शुक्रवार की प्रथम बन्दना जिसे अज़ां कहते हैं हुई मैं चुप होके बैठा उसके निरर्थक बचन का कुछ भी उत्तर न दिया यहांतक कि इस नष्ट ने हजामत पूरी की अनन्तर मैंने बड़ी नम्रता से कहा मेरे सेवकों से पाक ले अपने घर जा और उसे खा पी तुरन्त फिरआ मैं तेरी राह देखूंगा वह नापित जब अपने घर गया मैं अवकाशपा तुरन्त स्नान कर बस्त्र पहिन दूसरी बन्दना व अज़ां के सुनने की राह देखतारहा दूसरी अज़ांके होतेही मैंने चाहा कि चलूं परन्तु यह दुष्ट नापित मेरे चलने की ख़बर लिये रहाथा इतने में वह निश्चिन्तहो आगेकी गली में कि मेरे घर में मिलीहुईथी छिपरहाथा मैं उत्तम २ बसन पहिन अपनी प्यारी के घर की ओर चला वह चुप से मेरे पीछे

होलिया जब मैं न्यायाधीश के घर पहुँचा फिरके क्या देखता हूं कि वह अभागा भी चलाआता है उसको देख मैं राम २ स्मरण करने लगा और अत्यन्त क्रोधितहुआ परन्तु उस स्थान पर कुछ कहने का सावकाश न पाया न्यायाधीश के गृह का द्वार आधा खुलाहुआ था जब दरवाज़े पर पहुँचा वह बृद्धा कि मेरे आगमन की राह देखती थी मुझे देख दौड़ीआई और मुझे उस चित्तचोर के समीप लेगई हम दोनों बड़ीलालसा और आनन्दयुक्त प्रीति की वार्त्ता करते थे कि अकस्मात् हमने मनुष्यों का शब्द सुना वह सुन्दरी और मैं उठ खिड़की से देखनेलगा प्रथम न्यायाधीश को देखा कि शुक्रवार की बन्दनाकर अपने महलमें आया तदनन्तर उस नापित को देखा कि उस खिड़की के सन्मुख उसी तख़्त पर जिसपर मैंने पहिले बैठ उस कोमलांगी को देखाथा बैठाहै तब मुझे दो प्रकार का भय प्राप्तहुआ एक न्यायाधीश के पहुँचने का दूसरे नापित का निदान उस प्यारी ने मुझे भयभीत देख धैर्यदिया और अग्रसोची से एकस्थान सोचरक्खा कि आवश्यकता पर काम आवे इसके बिशेष इस भाग्यहीन दुष्टनाई के कारण ऐसी आपदा मुझपर पड़ी कि वर्णन नहीं करसक्ता जिस समय न्यायाधीश अपने घर में पहुँचा दैवयोग से उसके एक दास ने निजदास को किसी अपराधपर बहुत मारा वह सेवक ऐसा चिल्लाया और रोया कि गली तक उसका शब्द पहुँचा और दुर्बुद्धि नाई ने समझा कि न्यायाधीश को मेरे जाने का बृत्तान्त बिदितहुआ और वह शब्द मेराही है यह समझ वह बहुत चिल्लाके रोया और निज बस्त्र फाड़ शिर पर मिट्टीडाली और मुहल्ले के लोगोंको अपनी सहायता के लिये बुलाया वह सब पूछनेलगे कुशल तो है उसने रुदनकर उत्तरदिया मेरेस्वामी को मारते हैं केवल इतनाकह मेरेघर दौड़ागया और इसीभांति वहां भी कहा मेरे नातेदार और दास चाकर यह बचनसुन सबके सब लाठियांले न्यायाधीश के घर दौड़ेआये और बड़ेक्रोध से न्यायाधीश का घर तोड़नेलगे न्यायाधीश ने वह शब्दसुन एक अपने दास को आज्ञा दी कि बाहर जाके देख कि ये कौन लोग हैं और क्यों चिल्लाते

हैं वह दास उनको देख भयभीत हुआ और भीतरजाय न्यायाधीश से कहा अनुमान दश हज़ार आदमी के आपके द्वार पर खड़े अत्यन्त क्रोध से दरवाज़ा तोड़ने की इच्छा करते हैं न्यायाधीश ने आप द्वार पर आय उनसे पूछा कि इस शोर और चढ़ाई का क्या कारण है मेरे आदमी जो अत्यंत क्रोधित थे कुछ उसकी प्रतिष्ठा का बिचार न कर बोले हे दुष्ट दूत! कुकर्मी तूने हमारे स्वामी को क्यों मारडाला उसने तेरा क्या किया था न्यायाधीश ने कहा मैंने तुम्हारे स्वामी की सूरत भी न देखी कब मारा और उसने मेरा क्या अपराध किया मैं द्वार खोलताहूं तुम उसे ढूंढ़लो यह दुष्टनाई निर्दोष न्यायाधीश को बहुत से दुर्बचनकह बोला तेरी पुत्री मेरे स्वामी पर मोहितहै उसने भेंटके वास्ते उसे मध्याह्न में बुलाया है यह तूने जान कर उसे बहुतमारा यदि अपना भला चाहता है तो मेरे स्वामी को छोड़दे नहीं तो हम सब तेरे घर जाय उसे निकाललावेंगे और इसमें तेरी बड़ी अप्रतिष्ठाहोगी न्यायाधीश ने कहा जो तू सच्चाहै तो अपने स्वामी को मेरे घर से ढूंढ़के निकाल ला इतना कहतेही मेरे नातेदार और यही नाई घर में बड़ेक्रोध से घुसगये और प्रत्येक कोण में ढूंढ़नेलगे मैं अप्रतिष्ठा और न्यायाधीश के भयसे एक सन्दूक़ में जो वहां ख़ाली रक्खा था जाछिपा और कुंढी बन्दकरली यह अभागा ढूंढ़ते २ मकान में जिसमें वह सन्दूक़ था आया और सन्दूक़ को थोड़ासा खोल मालूम किया कि मैं उसमें छिपाहूं तुरन्त उसे अपने शिरपर उठालिया और उस ऊंचे मकान की सीढ़ी से उतर सहन में आया वहां से बाहर के द्वार की ओर जो गली की तरफ़ था चला अकस्मात् संदूक़की कुंढी खुलगई मैं उसमें से निकल और मुख अपना छिपा गली की ओर भागा उस घबराहट में कि मनुष्यों की भीड़ लिये यह नापित दौड़ाआताथा एक नाले के फांदने से मैं ऐसा गिरा कि मेरा पांव टूटगया उसपर भी उन मनुष्यों से कि मेरे पीछे हँसते और ठट्ठा मारते थे भागाजाताथा जब देखता कि बहुत समीप पहुँचगये तब दो मुट्ठी रुपये और पैसोंकी उनकी ओर फेंकता वह उसको चुनते में लँगड़ाता २ आगेको निकल जाता जब वह दौड़

के मेरे निकट पहुँचते तो मैं फिर द्रव्य फेंकता इसी उपाय से मैं वचता और उनको अपने समीप पहुँचने न देता जब मैं दूर निकलगया मनुष्यों ने थकितहो मेरा पीछा न किया परन्तु यह दुष्ट नापित छाया के सदृश मेरे पीछे लगा चलाआता था और पुकार के कहता दौड़ो नहीं देखो मैं तुम्हारा कैसा हितैषी और परिश्रमीहूं किस भांति मैंनें आपको न्यायाधीश से छुड़ाया प्रथम तो मैंने बिनय किया था जो आप मुझे अपने साथ न लेजावेंगे तो आपके बैरी बड़ी आपत्ति में पड़ेंगे यह सब जगहँसाई और अप्रतिष्ठा तुम्हारी निर्बुद्धिताके कारणहुई अबभी मुझसे न भागिये निदान यह अभागा नाई इसी भांति सम्पूर्ण मार्गों और गलियों में बकता और मेरे पीछे लगा चलाआता था और मेरी अप्रतिष्ठा करता यहांतक कि सम्पूर्ण पुर-बासी मेरे कर्मको जानगये इस दुष्ट पर मुझे ऐसा क्रोध आताथा कि ठहरजाऊँ और पकड़के इसका गला दबाऊँ परन्तु इसमें भी अपनी अप्रतिष्ठा समझता इसवास्ते मैं वह मार्ग तज दूसरी ओर को दौड़ा तौभी इसने मेरा पीछा न छोड़ा और बकता चलाआता था मनुष्य उसकी बातें सुन मेरा तमाशा देख अनादर करते निदान ऐसे दुःख और अप्रतिष्ठा में पड़ा कि जिसको मैं बर्णन नहीं कर सक्ता अन्त को निरुपाय हो मैं एक बिशालघर में कि उसका स्वामी द्वार पर खड़ा हुआ था और मुझसे जान पहिंचान रखता था उसके निकट चलागया और कहा हे मित्र! परमेश्वर के वास्ते मुझे इस बिक्षिप्त से कि मेरे पीछे लगाआता है बचाओ तब उसने इस ना-पितको ललकारा और बहुत से दुर्बचन और धिक्कार दे घुड़का और हटाया तब मैं इस नाई से छुटकारापाय कुछ सावधान हुआ तद-नन्तर उस मित्र ने मुझसे पूछा कि तुम्हारी क्या दशा है मैंने कहा मुझे दम लेने दो कि मैं किंचित् चैतन्य होऊं तब मैं अपना बृत्तान्त बिस्तारपूर्बक कहूंगा उसने मुझे बुरी दशा में देख कहा कि तुम अ-पने घर में सावधानहोगे उत्तमहै कि अपने घर पधारो मैंने कहा यह सचहै परंतु यह दुष्ट नाई वहां पर भी मुझे न छोड़ेगा और उसके दुःख देने से मेरे प्राण न बचेंगे इसके बिशेष इस कुलक्षणी के हाथ

से मैं ऐसा ब्याकुल हुआ और मेरी ऐसी प्रतिष्ठा भङ्गहुई कि फिर यहांके बासियों को मुखदिखाने योग्य न रहा निदान थोड़े दिन मैं वहीं रहा जब मैं कुछ सावधान हुआ तब बहुत सी द्रब्य ले बुग़दाद को छोड़ इस नगर में आया मुझे बिश्वास था फिर इस अभागे से इस नगर में जो बुग़दाद से बहुत दूरहै भेंट न होगी परन्तु प्रारब्ध से यहांभी इसका अशकुन रूप दृष्टिपड़ा हे मित्रो! तुम उन सब आपत्तियों को जो इसके हाथ से मुझ पर पड़ीं भलीभांति बिचारो इस दुष्ट अभागे के कारण वह चन्द्रमुखी कि मुझसे बिवाह करनेपर राज़ी थी इसप्रकार छूटगई और लँगड़ाहुआ इसके बिशेष सम्पूर्ण नातेदार इष्टमित्र छूटे यह कह वह पंगुल चलागया हम सबने उसका और नाई का बृत्तान्त सुन आश्चर्य किया तदनन्तर नाई की ओर होय उससे कहा यदि यह सब बृत्तान्त जो उस मनुष्यने कहा सत्य है तो तू बड़ा दुष्ट और दुर्बुद्धि है और दण्ड योग्य है वह तो उस समयपर्यन्त मस्तक नीचे किये था शिर उठाय कहनेलगा जो इस मनुष्य ने कहा सब सत्य है इसमें बालभर भी अन्तर नहीं अब तुम को न्यायी ठहराताहूँ देखो और बिचारो यदि मैं उसकी सहायता न करता तो ऐसे भययुक्त स्थान से क्योंकर छूटता इतनाही कुशल हुआ कि यह लँगड़ा होगया और प्राण से न मारागया जिस समय मैंने उसके रोने और चिल्लाने का शब्द सुना तो उसके छुटकारे के लिये यह परिश्रम किया उसके बिपरीत मुझे दोष लगाताहै और अधिक यह कि मुझे बक्की नियत किया यह दोष मेरेवास्ते अत्यन्त निंद्य है मैं तो सात भाइयों में अल्पभाषी बिख्यातहूँ अभी तुम्हारे सन्मुख अपनी और अपने छः भाइयों की कहानी बर्णन करताहूँ जिससे तुमको मेरे बचन की सत्यता बिदित होगी॥

दरज़ी और सभा के सन्मुख नापित की कथा॥

बादशाह हारूँरशीदके राज्य में जो अत्यन्त दानी था दश डाकू बुग़दाद नगर में चारोंओर के मार्ग लूटते पुरबासी उनके दुःख और क्लेश देने से अतिब्याकुल भये ख़लीफ़ा यह सुन अत्यन्त क्रोधित हुआ और कोतवाल को आज्ञा दी कि तुरन्त उन दशों डाकुओं को

ईद के दिन कि उस दिन भेंट होती है पकड़लाइयो यदि उस दिन उनको पकड़ न लावेगा तो तुझे बधकरूँगा कोतवाल कि अत्यन्त चतुर और बुद्धिमान् था तुरन्त चपरासियों को पकड़ने के लिये भेजा कि उस नियत तिथि पर उनको पहुँचावे अकस्मात् उसी तिथि को डाकुओं को पकड़ नाव पर चढ़ाया और उसी दिन में भी प्रातःकाल उन डाकुओं को भलेमानस समझ इसी आशापर कि यह सब मुझे अपने साथ लेजावेंगे कुछ कहे सुने बिना उस नाव पर सवार होगया उसी नावको खेकर ख़लीफ़ा के महल की ओर लेचले उस समय मुझे बिदितहुआ ये सब डाकूहैं मारनेके लिये पकड़ेजाते हैं जब हम उस नाव से तट पर उतरे सिपाहियों ने हम सब को चारोंओर से घेर लिया और एक एक की मुश्कें बांध ख़लीफ़ा के सन्मुख लेगये मैंभी डाकुओं के सदृश बांधागया और जिह्वा भी न हिलाई कि मैं डाकू नहीं मुझे क्यों लियेजाते हो निदान उन सिपाहियों की निर्बुद्धिता से मैं इस आपदा और दुःख में पड़ा जब हम ख़लीफ़ा के सन्मुख हुये उसने बधिक को आज्ञादी इन दशों डाकुओं की गर्दन मार उसने हम सबको पंक्तिबांध बैठाया कि उसे मारना सुगमहो मेरे अच्छे प्रारब्ध से बधिक ने मुझे सबसे पीछे बैठाया तदनन्तर मारना प्रारम्भ किया जब दश मस्तक काटचुका मेरे सपीप आया और ठहरगया ख़लीफ़ा उसे ठहरा देख क्रोधितहुआ कि तूने क्यों एक को छोड़ा बधिकने बिनय की कि मैंने आपकी आज्ञानुसार दश डाकुओं को बधकिया अब दश शिर और दश धड़ोंको आप गिनलें ख़लीफ़ा ने दश मृतकों को देख मेरी ओर बिचारपूर्वक दृष्टि की और कहा हे बृद्ध ! तू तो डाकू नहीं क्यों इन अभागों के साथ होकर बधस्थान में आया मैंने बिनय की हे स्वामी ! मैं ठगों को भलामानस समझ उनके साथ नाव में बैठगया ख़लीफ़ा मेरा बृत्तान्त सुन बहुत हँसा और मेरे चुप रहने से आश्चर्य किया तब मैंने कहा इस सेवकने छः भाइयोंके बिपरीत अल्पभाषणता स्वीकार कीहै जिससे मैं सप्रतिष्ठित रहता हूँ ख़लीफ़ा मेरी गम्भीरता पर बहुत प्रसन्नहुआ और कहने लगा तुम्हारे भाई इस गुण में तुम्हारे सदृश हैं वा नहीं मैंने कहा

उनमें इस गुण का लेश भी नहीं है वह सब बहुभाषी हैं और बेष में भी अन्तर है एक तो कुबड़ा है, दूसरा पोपला, तीसरा काना, चौथा अन्धा, पांचवां बूचा अर्थात् दोनों कर्ण उसके कटेहुये हैं, छठवां खरगोश की भांति चलताहै उनके बृत्तान्त और चरित्र जो आप सुनें तो उनकी पदवियां बिदितहोंगी आशा रखताहूं कि मुझे आज्ञा हो तो मैं उन सबकी कथा बर्णनकरूं मैंने इस बातको बिचारा कदाचित् बादशाह कहनेकी आज्ञादे वा न दे इसवास्ते मैंने बर्णन करना प्रारम्भ किया ॥

नापित कुबड़े के प्रथमभ्राता का बृत्तान्त ॥

हे स्वामी ! मेरा बड़ा भाई जिसका नाम बकबक था कुबड़ा था और दरज़ी का कार्य्य सीखता था जब वह इस कार्य में निपुण हुआ तब उसने एक दूकान किराये की ली दैवयोग से वह दूकान एक पनचक्कीवाले के सन्मुख थी अभी उसका काम भलीभांति न चलता और बड़ी कठिनता से कालक्षेप करता और पनचक्कीवाला इसके बिपरीत बहुत धनवान् था उसकी स्त्री अतिसुन्दरी रूपवतीथी एक दिन मेरा भाई दूकान पर बैठा कुछकार्य्य करताथा कि उस पनचक्की वाले की स्त्री पर जो खिड़की पर बैठीहुई थी दृष्टिपड़ी वह उसपर मोहित हुआ उस स्त्रीने जो पतिब्रता थी परपुरुष को देख खिड़की बंदकरली बकबक निज कार्य्य को तज उसकी इच्छा में मग्न हुआ इस आशा पर कि उसे फिर देखै और खिड़की की ओर मुखकर बैठरहा उस दिन तो वह स्त्री उसे दृष्टि न पड़ी परंतु दूसरे दिवस प्रातःकाल नियमानुसार वह खिड़की खोल इधरउधर देखनेलगी और दरज़ी की ओर देख समझगई कि वह मुझे कुदृष्टिसे देखता है मन में अत्यन्त अप्रसन्नहुई परंतु प्रकट में उसे देख मुस्कराई दरज़ी भी उसे देख हँसा और कुदृष्टि से सैन की वह लज्जित हो खिड़की से उठ चलीगई वह दरज़ी इस हावभाव से समझा कि यह स्त्री मुझको चाहती है यह समझ बहुत प्रसन्न भया उस स्त्री ने चाहा कि उसे दण्ड दें इस प्रयोजन से उसने कईगज़ बहुमौल्य कपड़ा बांदी के हाथ उसके समीप भेज के कहलाभेजा कि उत्तम बसन मेरे

वास्ते तुरंत सीकर तय्यारकरदे मेरा भाई समझा कि वह स्त्री भी मुझे चाहती है कि इसीहेतु मेरेपास सीने को भेजा निदान उसने बड़े श्रम से सन्ध्यापर्यंत सीके तय्यारकिया दूसरे दिवस जब बांदी वस्त्र लेनेआई उसने वह देकर उससेकहा कि अपनी स्वामिनी से कहिये कि अपना सब कपड़ा मुझसे सिलवाया करें मैं बहुत शीघ्र और उत्तम सीदिया करूंगा वह बांदी उस बसन को ले अपने घर चली थोड़ीदूर जाय वह दूती लौटआई और कहा यह संदेशदेना मैं भूलगई मेरी स्वामिनी ने तुमसे पूछाहै कि रैन तुम्हारी क्योंकर व्यतीतहुई मैं तो तेरे मोहमें सर्बनिशि अधैर्यरही और निद्रा न आई वह सूधा इस वचन के सुनतेही अत्यन्त हर्षितहुआ और पूर्णबिश्वास हुआ कि वह भी मुझपर मोहितहै और उस बांदी के हाथ कहला भेजा मैं भी तुम्हारी प्रीति में चार दिन से नहीं सोया वह उससे बिदा हो क्षणमात्र में फिर सन्देश लाई मेरी स्वामिनी उस बस्त्र को देख अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसे पहिनके देखा उस के बदन में ठीक आया अब उसने एक टुकड़ा साटन का दियाहै कि उसका तुरन्त मेरेवास्ते एक बस्त्र सीके भेज दे कि मैं इस बस्त्र के साथ इसेभी पहिनूं मेरा मूर्खभाई उसेभी लेके सीने लगा उसीसमय वह मृगनयनी, चन्द्रबदनी भी खिड़की में आई और अपनी छबिअनूप बालों की लटा यौवनकी छटा दिखाई कि जिससे उसने अधिक प्रसन्न होकर शीघ्रही बस्त्र सीकर तय्यार करदिया वह अनुचरी आके उसे भी ले गई और कुछ भी मज़दूरी उसे न दी उस महामूर्ख प्रेमी को निर्धनता के कारण उस दिन भी कुछ भोजन प्राप्त न हुआ सन्ध्या को क्षुधा से अत्यन्त व्याकुलहुआ निदान कुछ ऋण ले भोजन का उपाय किया दूसरे दिन अरुणोदय को वही बांदी उसके समीप आई और कहा मेरा स्वामी तुझे बुलाता है क्योंकि उसकी स्त्री ने तेरे काम को उसे दिखा तेरी बहुतसी प्रशंसा की सो वहभी चाहताहै कि अपने बसन तुझसे सिलवाये और उसकी स्त्री चाहती है कि इसीबहाने से तेरा आवागमन हमारे घर में होजावे और तुम दोनों में जान पहिचान हो और तुम्हारा मनोरथ भी सिद्धहो मेरा भ्राता इस बात

को सुन बांदी के साथ पनचक्कीवाले के घरगया उसने उसका आदर सत्कारकर एक थान कपड़े का दिया और कहा मुझे इसमें से २० वस्त्र सीकर दे जो कुछ इसमें से बचरहे तो उसे मुझे फेर दीजियो मेरेभाई ने पांच सात दिन के कालान्तर में सब सीदिये तदनन्तर उसने एक थान और दिया कि कई और वस्त्र सी दे वह उनको भी सीकर लेगया पनचक्कीवाला उसकी चतुरता से अति हर्षित हुआ और कहा भाई इन सबकी सिलाई क्या हुई हिसाबकर कुछ द्रव्य उसे देनेलगा वह बांदी कि उस स्थानपर बर्तमानथी मेरे भाई को सैनसे निषेध किया जो तू उसकी मज़दूरी लेगा तो तेरा प्रयोजन सिद्ध न होगा मेरे मूर्खभाई ने उसकी सैन समझ आवश्यकता होने पर भी कुछ न लिया किंतु सूत का भी मोल न लिया और उससे बिदा हो मेरे समीप आया और कहा लोगों ने मुझे सिलाई अब तक कुछ नहींदी तू मुझे कुछ ऋण दे मैंने कईपैसे उसेदिये उसने उनपैसों में कई दिनतक खाया केवल सूखीरोटीखाता एक दिन मेरा भाई उससुंदरी के घरगया उसका पति चक्की चलाने में प्रवृत्तथा उसे देख जाना कि अपनी मज़दूरी लेने आया उसने जेब में हाथ डाल कुछद्रव्य निकाला कि उसे मज़दूरी दे परंतु उस बांदी ने मेरे भाई को सैन से बर्जा कि कभी न लीजियो मेरेभाई ने पनचक्कीवाले से कहा मैं इसप्रयोजन से नहीं आया केवल कुशलक्षेम पूछनी अङ्गीकार थी पनचक्कीवाले ने गुण मानकर एक और वस्त्र सीने को दिया वह उसेभी सी के लेगया तदनंतर पनचक्कीवाले ने चाहा कि उसको मोलदे परंतु उस दुष्टदूती बांदी की सैन से कि अहर्निशबर्तमान रहती थी मेरेभाई ने कुछ न लिया और कहा हे पड़ोसी! इतनी क्या शीघ्रता है और समय समझाजावेगा यह कह वह दीन कि प्रीति के दुःख और निर्धनता में ब्याकुल था और क्षुधा के कारण प्राण निकलते थे दूकान पर फिरगया और पनचक्कीवाले की स्त्री जो पतिव्रता और चतुर थी मेरेभ्राता को मज़दूरी न देनेके बिशेष उसे अधिक दण्ड देना स्वीकार हुआ और चाहा कि इस कुइच्छा का स्वाद उसे चखावे एक दिन अपने पति को मेरेभाई की बुरीइच्छा से बिदित

किया वह सुनते ही क्रोधित हुआ और मेरेभ्राता से बदलालेने के विचार में हुआ सो उसने एक दिन सायङ्काल में मेरे भ्राता को निमन्त्रण किया जब वह दोनों भोजन करके बैठचुके पनचक्कीवाले ने उससे कहा भाई रात्रिबहुत ब्यतीतहुई अब कहां जाओगे यहीं शयन करो यह कह उसे एक स्थान बतादिया कि यहांपर सोजा आपजाकर अपनी स्त्रीके समीप सोरहा तदनंतर आधीरात्रि के समय मेरेभाई को सोते से उठाया और कहा हे परममित्र! आज मेरा खच्चर रोगी होगया है और मुझे आटापीसने की आवश्यकता है जो तुम कृपाकरके इसचक्की को थोड़ीदेरतक चलाओ तो उत्तमहो मैंने कहा मैं इस सेवाके वास्ते हाज़िरहूं परन्तु मुझे चक्की चलाने की रीतिबताओ मैं इसे नहीं जानता पनचक्कीवाले ने चक्की की रस्सी मेरेभाई की कमर में खच्चर के सदृशबांधी और कहा अब तुम चक्कर के गिर्द दौड़ो कि तुम्हारे दौड़ने से चक्की चलेगी और कोड़ा उसकी पीठपर मारा तब वह चिल्लाया कि मारते क्योंहो चक्कीवाले ने कहा इससे तुम सावधानहो घूमोगे आलस्य न करोगे क्योंकि जब खच्चर सुस्ती करताहै तो मैं इसीभांति चाबुक मारताहूं तो वह चालाकहोके खींचताहै बकबक यह दशा देख अतिविस्मित हुआ और पांच सात चक्कर शीघ्र किये निदान थकित हो बैठगया तदनन्तर उसने बड़े बेगसे बारह कोड़े मारे और कहा जल्दीघूमो हे मेरेपड़ोसी! बैठो नहीं जो धीरेधीरे और ठहर ठहरके घूमोगे तो मेरा आटा नष्टहोजावेगा निदान उस पनचक्कीवाले ने रातभर उसके साथ यही कृत्यकिया जब अरुणोदयहुआ तो वह उसे इसीदशा में बँधा हुआ छोड़ अपनी स्त्री के निकटगया कि वह इसी दशासे उसको देखे इतनेमें वही बांदी आई और उसे खोल कहा देखो मैं और मेरी स्वामिनी दोनों कैसी दयावान् हैं तुम्हें इस दशा में देख न सकीं हम दोनों अपने स्वामी के कृत्यमें संयुक्त नहीं बकबक ने इसका कुछभी उत्तर न दिया क्योंकि उसे बहुतकष्ट पहुँचाथा कुछ समय में जब कुछ सावधान हुआ वहां से उठ अपने घर में आया ख़लीफ़ा ने मेरे भाई की कथासुन कहा ईद का पारितोषिक ले अपने घरजा मैंने बिनय की जबतक मैं

अपने सम्पूर्ण भाइयों का बृत्तान्त बर्णन न करलूंगा पारितोषिक न लूंगा और न बिदाहोऊंगा खलीफ़ा चुप होरहा मैंने अपने दूसरे भाई की कथा कहनी प्रारम्भ की ॥

बकबारह नामक नाई के द्वितीय भ्राता का बृत्तान्त ॥

नापित ने खलीफ़ा के सन्मुख बिनयकी हे स्वामी ! मेरा दूसरा भाई पोपला बकबारह नामक एक दिन भ्रमताहुआ नगरकी किसी गली में जापहुँचा एक बृद्धस्त्री ने उसकारूप देख प्रथम प्रणामकिया तदनन्तर उससे कहा मैं तेरेलाभ के अर्थ एकबात कहती हूँ जो तू उसेसुने और उसपर चले मेरे भाई ने प्रसन्न होकर कहा परमेश्वर तुम को जीता रक्खे वह क्याबातहै मैं उसे शिरआंखों से करूँगा उस बृद्धा ने कहा तू मेरे साथ एक दिब्यमन्दिर में चल उसकी स्वामिनी एक स्त्री अत्यंत रूपवती और हँसमुख है वह तेरेसाथ बड़ा उपकार करेगी जिस में तू धनपात्र होजावेगा परन्तु वह नवबाला हँसौड़ और खिलंदड़ी है वह तुझसे हँसेगी और उसकी सहेलियां तेरेसाथ खेलें कूदेंगी तू कुछ बिलग न मानियो और न अप्रसन्न हूजियो बकबारह इसे स्वीकार कर बृद्धा के साथ हुआ और उसीके साथ एक बड़े भारी बिशाल घरके भीतरगया रक्षक और द्वारपालों ने बृद्धा के कहने से न बर्जा जब कईड्योढ़ी लांघीं फिर बृद्धा ने उसी बात को दृढ़ाया कि वह सुन्दरी मृगनयनी, चम्पकबर्णी, गजगामिनी, अत्यन्त शीलवान् और हँसौड़ है शीघ्र क्रोधी उसे प्रसन्न नहीं चैतन्यरह उसकी सहेलियों के हास्य से अप्रसन्न न होना और बिलग न मानना वह तुझे निहाल करदेगी बकबारह ने उसका बड़ा यश माना और कहा बहुत अच्छा किया कि पहिले से मुझे जनादिया देखो मैं उन्हें कैसा प्रसन्न रखताहूं फिर वह बृद्धा उसे भीतर लेगई मेरे भ्राता ने उसकी सजावट बनावट देख बड़ा आश्चर्य किया उस महल के आगे पुष्पबाटिका अति उत्तम थी निदान उस बृद्धा ने उसे एक दालान में लेजाय कहा तू यहीं बैठ तेरे आगमन का सन्देश उसे जायदेतीहूं मेरे भाई ने कि कभी ऐसासुन्दर घर स्वप्नमें भी न देखा था प्रत्येकबस्तु को देख प्रसन्नहोता इतने में उसने बांदियोंका शब्द

सुना कि उसकी ओर चलीआती हैं जब उसके समीप पहुँचीं उसके स्वरूप को देख सब खिलखिला के हँसने लगीं और उन बांदियों के समूह में एक नवयौवना, अतिसुन्दरी, मृगनयनी, मनहरणी, बादशाही वस्त्र आभूषण बहुमौल्यरत्न पहिने हुये थी उसकी सजधज से उसे विदित हुआ कि यही स्वामिनी है और बहुतसी सुन्दर बांदियां और दासियां अपने चारोंओर देख बिह्वल हुआ जब वह सुन्दरी दालान के निकट पहुँची मेरे भाईने झुकके उसकी अगवानी की उस स्त्री ने उसे बैठने की आज्ञा दी और मुस्कराके कहा हम तुम्हें देख बहुत प्रसन्नहुईं और जो कुछ तुम्हें इच्छाहो कहो हम तुमको दें बकबारह ने बिनयकी मैं केवल आपकी सेवा करना चाहता हूँ और कुछ नहीं चाहता उस सुन्दरी ने कहा मैं भी यही चाहती हूँ दो चार घड़ी परस्पर हँसें बोलें यह कह उसने आज्ञादी कि भोजन लाओ बांदियों ने तुरन्त नाना प्रकार के पाक लाय उसके सन्मुख रक्खे उसने मेरे भाई कोभी बैठने की आज्ञादी दासियों ने उस को उसी सुन्दरी के सन्मुख बैठाया जब उसने खाने के लिये मुख खोला तो उस सुन्दरी ने देखा एक दांत उस के मुहँ में नहीं उसने अपनी सहेलियों को सैनकी वह सब देख हँसीं और बकबारह घड़ी घड़ी निज मस्तकउठा उस सुन्दरी की ओर देख हँसता और समझता कि मेरी संगति से यह प्रसन्नहोय हँसती है अत्यन्त हर्षित होता तदनन्तर उस सुन्दरी ने धृष्ट होजाने के लिये दासियों से सैनकी कि हट जाओ कि यह मनुष्य भलीभांति भोजन करे और मुझसे वार्त्तालाप करे और अत्यन्त कृपापूर्वक उत्तम उत्तम व्यञ्जन और नाना प्रकार के फल अपने हाथों से उठा उसे दिये और हँस हँसके उससे बातें करनेलगी जब भोजनकर निश्चिन्त हुआ गानेवालियां साज को लेके गाने बजानेलगीं और कोई कोई नाचनेलगीं मेराभ्राता भी मग्नहोय उन सबके साथ नाचनेलगा केवल वही सुन्दरी बैठी हुई सबका तमाशा देखती थी जब वह भलीभांति नाच गायचुकीं और विश्राम किया तब उस सुन्दरी ने प्रथम एक गिलास मद्य का भर आपपिया और एक गिलास मदिरा का मेरे भाईको दिया मेरे भ्राता

ने गिलास ले उसके हाथचूंबे और उसको पीलिया और कृतज्ञता के निमित्त कि उसने अपने हाथ से गिलास उसे कृपा किया था सन्मुख खड़ाहुआ उस सुन्दरी ने उसे अपने समीप बैठने की आज्ञा दी वह प्रणामकर बैठगया वह सुन्दरी गलबहियां डाल धीरे धीरे तमाचे मारनेलगी मेरा भाई ऐसे सुन्दर उसके हावभाव देख हर्ष से फूला न समाता और समझता कि जगत् में मुझसे कोई अधिक भाग्यशाली नहीं मदमत्त होय चाहता था कि उस कोमलांगी से विहार करे परंतु बांदियों के भय से कि प्रतिक्षण उसे दृष्टि में रखतीं न करसक्ता फिर वह सुन्दरी बड़ेबेग से तमाचे मारनेलगी तब वह अप्रसन्न हो वहांसे उठा और हटके दूर जा बैठा वह बृद्धा जो मेरे भाई को वहां लेगईथी उसे सैन से बतलाया तू अनुचित करता है उस मेरे उपदेश को भूलगया वह महामूर्ख उस सैन का अभिप्राय समझ फिर उसी सुन्दरी के समीप आया और यह बहाना किया कि मैं अप्रसन्नहो यहां से नहीं उठता था तब उस मृगनयनीने मुस्करा के अपना हाथ बढ़ा उसको अपनीओर खींचा और अपने समीप बैठाय प्रकट में उस पर बड़ी कृपा की बांदियों ने उसके अप्रसन्न करनेके लिये नानाभांति का खेल किया निदान उन सबोंने मेरे भ्राता को सभा का नक़ल करनेवाला बनाकर कोई तो उसकी नाक पकड़ खींचती और कोई उसे तमाचे मारती तब मेरे भाई ने बृद्धा से कहा तुम सत्य कहतीथीं कि तू ऐसी सुन्दरी पावेगा कि कदाचित् वैसी कभी स्वप्न में भी न देखी होगी और तू देख मैं उसके प्रसन्नार्थ कैसे कैसे दुःख सहताहूं बृद्धा ने कहा अभी क्या हुआ आगे यह सुन्दरी तुझ को बहुत आनन्द देगी तदनन्तर उस नवयौवना ने कहा तू शीघ्र क्रोधी और अप्रसन्नचित्त बिदित होता है देखतो थोड़े से हास्य के लिये मैं कितनी दया तुझपर करती हूं परन्तु तू बिस्मरण कर तुरन्त अप्रसन्न हो जाताहै जिससे हमैं ग्लानिहोतीहै तब मेरे भाई ने कहा हे सुन्दरी! मैं बर्तमानहूं जिसमें आपकी प्रसन्नता है वह कीजिये आपकी आज्ञा का उल्लंघन न होगा जब उस नवयौवना ने यह समझा कि यह मूर्ख निपट मेरे कहने में आगया और किसी

अनुचित को असह्य न मानेगा गले में हाथडाल कहा जो हमारी प्रसन्नता चाहता है तो हमारे सदृश होजा यह कह अपनी बांदियों से कहा तुरन्त अतर गुलाबनीर लावो दो बांदियां दौड़ीगईं एक अतर की शीशी लाई और दूसरी गुलाब की उस चन्द्रवदनी ने निज करसरोज से अतर ले मेरे भ्राता के बहुतसा लगाया और गुलाबनीर उसके मुख पर छिड़का मेरा भाई यह आनन्द मङ्गल देख प्रसन्न होय प्रफुल्लित होय आपे में न समाता तदनन्तर उस गजगामिनी ने अपनी बांदियों को गाने बजाने की आज्ञा दी वह गान करनेलगीं और एक दासी को बुला के कहा कि इसे लेजा और जिसभांति तुझे बिदित है इसे बना सँवार के मेरे समीपला यहसुन बकबारा तुरन्त उठ खड़ा हुआ और उस बृद्धा से कि वह भी उसी दासी के साथ थी पूछा उस सुन्दरी ने मेरे वास्ते क्या आज्ञा दी है उसने मेरे भाई के कान में कहा वह सुन्दरी चाहती है कि तुझे स्त्री स्वरूप बनाकर उस स्वरूप में भी तुझे देखे अब यह बांदी तेरीभवों पर चित्र खींचेगी और तेरी मूछें मूड़ तुझे स्त्रियों के बसन पहिनायेगी मेरेभाई ने कहा कि मेरी भ्रूपर जितना चाहो चित्र खींचोमैं उसे जलसे धुलवा डालूंगा परन्तु मूछ मूड़ने में हानिहै क्योंकि मैं कुरूप होजाऊंगा उस बृद्धा ने कहा इसमें तकरार न कीजियो वह द्रव्य जो तुझे प्राप्त होनेवाली है अप्राप्त होगी यह सुन्दरी तुझपर मोहित है उसके मन में अब यही है कि तुझे धनपात्र करे तू इन थोड़े से मूछों के बाल मूड़ने के लिये तकरार न कीजियो वह कोमलाङ्गी कि तेरी प्यारी है इतनीसी बात में अप्रसन्न होजावेगी निदान बकबारा राजीहुआ और कहा जो चाहो सो करो तब वह दासी उसे एक मकान में लेगई और उसकी भवें लालकर उसपर चित्र खींचे तदनन्तर उसकी मूछें मूड़डालीं और दाढ़ी मूड़ने की इच्छा की मेरे भाई ने इसमें तकरार की कि दाढ़ी मेरी न मूड़ो उसने कहा जो तुझे यही स्वीकारथा तो मूछें क्यों मुड़वाई स्त्रियों के बसन दाढ़ी के साथ क्योंकर शोभा देंगे और ऐसी सुन्दरी की प्रसन्नता के अर्थ कि बुग़दादनगर में अद्वितीय है दाढ़ी मुड़वाना कितना बड़ाकाम है उस

बृद्धा ने भी मेरेभाई को बहुत समझा बुझा के राज़ी किया तब वह दासी दाढ़ी मूड़ स्त्रियों के चीर उसे पहिनाकर उसी सुन्दरी के सन्मुख लेगई वह मेरेभाई को स्त्रीरूप में देखतेही हँसते हँसते लोटगई तद-नन्तर उस मृगनयनी ने कहा तूने मेरी इच्छा के अनुसार यह सब बातें स्वीकार कीं अब एकबात और है कि उसके करने से पूरीप्रस-न्नता होगी अर्थात् मेरे सन्मुख नृत्यकर वह हाथ उठा और नाकपर अँगुली रख नाचने लगा उसके नाचने से वह सुन्दरी और सब बां-दियां मिलके उसके साथ नाचनेलगीं और हँसते २ बावली होगईं जब वह नृत्य करचुकीं सबों ने उसदीन के हाथपांवबांध भलीभांति मारा और एक को दूसरी पर ढकेलने लगीं उस बृद्धा ने इस कृत्य से उनको बर्जा और प्रकट में उसकी ओर से उन सबको झिड़क मेरे भ्राता को उनकी अकृत्य से अप्रसन्न न होनेदिया और धीरेसे उसके कान में कहा जो कुछ होनाथा सो हुआ धैर्य रख अभी तुझे पारितोषिक मिलेगा एक बात केवल रहगई है अर्थात् यह सुन्दरी जिसदिन मदिरापानकरती है उसके नशे में किसी को अपने समीप नहीं आनेदेती जो कोई नग्नहो केवल एक वस्त्र पहिनके उसके निकट जावे और उसके पकड़ने की इच्छाकरे परन्तु वह आगे आगे भागती है कभी एक दालान में और कभी एक मकान से दूसरे मकान में यहां तक कि यह सुन्दरी थकित हो खड़ी होजाती है और वह पुरुष उसे पकड़ लेता है अब वह तेरे आगेसे होके भागेगी तू नग्न हो उस के पीछे दौड़ के पकड़ लीजियो यह सुन मेरेभाई ने बुढ़िया से यह बातसुन बसन उतार डाले केवल एक वस्त्र शरीर पर रहनेदिया और दौड़नेपर तत्परहुआ तब सुन्दरी भी दौड़ने को उद्यतहुई और उसे धोखादे अनुमान बीस पैग के उसके आगे हो दौड़ी मेराभाई भी उसके पीछे दौड़ा और सब बांदियां भी उसके साथ तालीबजातीहुई दौड़ीं वह सुन्दरी दो तीन बेर दालान के चारोंओर घूम एक छत्ते में जिसमें बहुत अँधियारा था चली गई मेराभाई भी उसीभांति उसके पीछे दौड़कर उसी अँधेरेमकान में गया वह सुन्दरी तो उस कोठेसे अन्यमार्ग होके निजघरमें आई परन्तु मेराभाई उस मार्ग को न

जानताथा उस अँधेरे कोठेमें दौड़ता और भटकतारहा और कुछ उसे वहां न सूझता कि मैं किधरजाताहूँ और वह सुन्दरी कहां है निदान एक ओर कुछप्रकाश देख दौड़ा और उस मकानके द्वारसे बाहर निकलगया निकलतेही वहद्वार भिड़गया मेरेभाई ने अपने को चमारों की गली में पाया चमार उसे नग्न और दाढ़ी मुड़ीहुई और भवों पर चित्रखिंचे देख विस्मित और आश्चर्य में होकर तालियां बजानेलगे और कइयों ने पीछेदौड़ उसे मारना आरम्भ किया तननन्तर कहीं से गधा पकड़ उसपर उसे सवार करा के नगर की ओर लेगये उसकी अभाग्यतासे वह सब नाद करते हुये एक गली में कि जिसके समीप क़ाज़ी का घर था उसे लेके निकले क़ाज़ी ने शब्दसुन अपने सेवकों से सबको मेरेभाई समेत पकड़ बुलवाया और बृत्तान्त पूछा चर्मकारों ने कहा स्वामी हमने इस मनुष्य को इसी दशा से अमुकगली में जो वज़ीर की स्त्री के द्वार से सम्बन्धित है पाया यह वहांसे चलाआता था क़ाज़ी ने यह सुन आज्ञादी कि इसके पांवों पर सौकोड़े मारकर देशसे निकालदो फिर कभी इस नगर में न आने पावै इतना कह उस नाई ने ख़लीफ़ा से कहा यह कथा जिसको मैंने आपके सन्मुख वर्णन किया मेरे दूसरे भाई की थी फिर वह तुरन्त अपने तृतीय भ्राता का बृत्तान्त कहनेलगा॥

नापित के अन्धे बूबक नामक तृतीय भ्राता की कथा॥

हे स्वामी! मेरा तीसराभाई बूबक नाम से प्रसिद्ध निपट अन्धा और बड़ा अभागी था मनुष्यों के द्वारों पर भिक्षा मांगता और नियम यह रखता था कि गलियों में नित्य अकेला फिरता और अपने साथ मार्ग दिखाने के लिये किसीको न लेता और किवाड़ खटखटा के चुपका खड़ा रहता और कुछ मुख से न बोलता इतनेमें धनी उसे द्वारखोल भिक्षा देता संयोगवश एकदिन एक द्वार परजा खटखटाया घरके धनी ने जो घरमें अकेलाथा हांकदी कि कौन है मेरे भ्राता ने उत्तर न दिया दूसरी बेर फिर किवाड़ खटखटाया धनी ने फिर पूछा कौनहै फिरभी वह न बोला तब घरवालेने द्वार खोल मेरे भाईसे कहा तू क्या मांगताहै उसने कहा मैं निर्धन दीन याचकहूँ परमेश्वर

के नामपर कुछ भिक्षादो उसने कहा तू मुझे आंखों से अन्धा जान पड़ताहै मेरेभ्राता ने कहा सत्यहै तदनन्तर उसने कहा हाथ फैला मेराभाई समझा कि कुछ देवेगा हाथ आगे बढ़ाया वहहाथ उसका बड़े बेग से पकड़ सीढ़ी के मार्ग से ऊपर लेगया बूबक ने समझा कि यह भोजन खिलावैगा परंतु उसने ऊपर मेरेभाई को लेजाय हाथ छोड़दिया और निज स्थान पर बैठ उससे पूछा तू क्या मांगताहै उसने आशीर्वाद दे कहा मैं भिक्षुक दीन और निर्धन भिक्षा मांगता हूँ उसने कहा मैंभी तुझे आशीर्वाद देताहूँ कि ईश्वर तेरेनेत्रों में प्रकाश दे मेरे भाई ने कहा इतनीबात पहिलेही कहदेते तो मैं सीढ़ी पर चढ़ने का कष्ट न उठाता तब उसने कहा मैंने दोबेर तुझसे पूछा तू कौनहै और क्या मांगताहै तू कुछ न बोला तूने मुझे उतरनेका कष्ट दिया तब उसने कहा मुझे कुछ भी तो दो उसने कहा मेरेपास कुछनहीं तब मेरे भाई ने कहा मुझे नीचे उतारदो उसने कहा सीढ़ी तेरे सामनेहै तू आप उतरजा मेरा भाई लाचार होकर नीचे उतरने लगा बीचमें से उसका चरण फिसला नीचे गिरा उसके मस्तक और पीठ में बड़ी चोट लगी जिससे अत्यन्त व्यथित हुआ वहांसे घर वाले को कुवाच्य और धिक्कार देताहुआ आगेचला संयोगवश मार्ग में अन्य अन्धे जो मेरेभाई के मित्र थे मिले उसका शब्द पहिंचान खड़ेहुये और उससे पूछा आज तुझे भिक्षा में क्यामिला मेरेभाई ने उनसे सबबृत्तान्त अपने गिरने और चोट लगने और घरवाले की अशीलताका वर्णन कर कहा आज मुझ को दिनभर कुछ न मिला तदनन्तर मेरेभाई ने उनसे कहा तुम घर चलो और कुछद्रव्य जेब से निकाल उन्हें दिया कि मेरे निमित्त कुछ भोजन मोल लाओ प्रकटहो जो मनुष्य बूबक को ऊपर लेगया था एक चोर था बड़ा छली और ईर्षी बूबक की बातेंसुन नीचे उतरा और पीछे उसके होलिया और अन्धों की अज्ञानता में उनकेसाथ लगाहुआ उसघर में जहां मेराभाई रहता था गया बूबकने घरमें बैठ अपने साथियोंसे कहा अच्छी तरह देखभाल द्वारबन्दकरो कि कोई अन्य मनुष्य यहां न रहे चोर यह बचन सुन बहुत सिटपिटाया और चहुँओरदेख एक

मोटीरस्सी जो छतमें बँधीथी दोनोंहाथोंसे दृढ़ पकड़ लटकरहा वह तीनों अन्धे द्वारबन्दकर अपनी लाठियों से कोनों में भलीभांति टटोल और देखभाल एक स्थान पर बैठगये वह चोर भी रस्सीछोड़ मेरे भाई के समीप चुपका आबैठा मेराभाई जब समझा कि यहांपर अन्य पुरुष नहीं तब गुप्त बातें कहनेलगा कि तुमदोनों ने मुझे बिश्वासित समझ अपना द्रव्य मेरे निकट रक्खा मैंने तुम्हारी वस्तु यथोचित प्रबन्ध से इस समय पर्यन्त रक्खी अब नहीं रखसक्ता तुम उसे गिनके लेलो बूबक उस गुदड़ी को जिसमें बयालीस हज़ार रुपये रक्खे थे उठालाया और उनके सन्मुख रखदिया उन्हों ने कहा हमें तुम्हारी सत्यता पर बिश्वास है तौलने और गिनने की कुछ आवश्यकता नहीं तब वह थैलियों को टटोल फिर उसीभांति गुदड़ी में रख जिस स्थानपर कि पहिले थीं रखआया तदनन्तर मेरे भ्राता ने कहा मुझे क्षुधालगी है कुछ खानेको मेरे निमित्त बाज़ार से मोललाओ एक अन्धे ने कहा उसको कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि अमुक धनवान् ने मुझे पाक भेजाथा उसमेंसे कुछ खर्चहुआ और बहुतसा शेषहै वह भोजन तीनों को बहुतहै इतनाकह उसने अपनी झोली से कुछ रोटियां पनीरसमेत निकालकर रक्खीं तदनन्तर मेवे निकाले और उन तीनों ने परस्पर भोजन आरम्भ किया वह चोर जो मेरे भाई के दाहिनी ओर बैठाथा आगेबढ़ उत्तम उत्तम वस्तु और पाक भोजन करनेलगा परन्तु उस चोरकी रक्षा करनेपर भी बूबक चबाने का शब्दसुन चौंका और मनमें कहनेलगा हम सब मारेगये क्योंकि यहां कोई अन्यपुरुष जान पड़ता है यह कहतेही तुरन्त चोर का हाथ पकड़लिया और उसपर चढ़ पुकारा कि चोर चोर और बहुतसी मुक्की उसे लगाईं और उन दोनों अंधों ने भी उसे मार बड़ा नाद किया चोरभी अपनी सामर्थ्यभर उनसे बचता और उन तीनों को बारीबारी से मारता और चिल्लाता कि लोगोदौड़ो चोर मुझे मारेडालते हैं पड़ोसी शब्दसुन चारोंओर से दौड़ेआये और द्वार तोड़ भीतर घुसपड़े और पूछा क्या है मेरेभाई ने कहा भाइयो जिसे मैं पकड़े हूं चोरहै हमारे रुपयों के चुराने के लिये जो हमने भीख

मांग संग्रह किये हैं चुरानेआया हैं चोरने समूह को देख दोनों नेत्र बंदकर छलसे अपने को अंधाबनालिया और कहा भाइयो यह अन्धा असत्य कहता है परमेश्वर की सौगंदहै मैं भी इनके साथियों में से हूं मेराभाग मुझे नहीं देते और इन तीनों ने मुझे चोर ठहराया और बहुत सा मारा परमेश्वर के वास्ते मेरा न्याय चुकादो मनुष्य इसबात का न्याय कठिन समझ चारों को कोतवाल के समीप लेगये जब वह चारों कोतवाल के सन्मुख खड़े कियेगये चोर ने कि अपने को भी छलसे अन्धा बनाया था उसके प्रश्न करने के प्रथम बोला हे स्वामी! मेरीबिनय सुनिये कि हम चारों सम अपराधी हैं यदि हम चारों बचनबन्ध करके भी पूछे जावेंगे तो कोई हममें से सत्य सत्य न कहेगा जो आप चाहते हैं हम चारों का अपराध सूचितहो तो एक एकको भिन्न भिन्न दण्ड देनेकी आज्ञा दीजिये तो प्रत्येक निजमुख से अपने अपने अपराधका बर्णन करेगा प्रथम मुझसे आरम्भकीजिये मेरे भाई ने चाहा कि कुछ बोलूं लोगों ने उसे कुछ कहने न दिया और चोर पर मार पड़नेलगी जब अनुमान बीस वा तीस कोड़े उसपर पड़े तब तड़पनेलगा प्रथम एक आंख खोली फिर दूसरी खोल कोतवाल से बिनय की हे स्वामी! छुड़ादीजिये मरजाऊंगा कोतवाल उसके खुलेनेत्र देख आश्चर्य में हुआ और कहा हे दुष्ट, अकर्मी! यह तूने क्या छल कियाथा उसने कहा जो मुझे मार से छुड़ाइये और मेरा अपराध क्षमाकीजिये तो मैं इस भेद को आपके सन्मुख बर्णनकरूं कोतवाल ने निज सेवकों को आज्ञा दी अब न मारो मैंने इसका अपराध क्षमाकिया तब चोरने कहा स्वामी सत्य तो यह है कि मैं और तीनों मनुष्य जिन को आप अन्धा जानते हैं सनेत्र और ज्योतियुक्तहैं हम चारों ने अपने को अन्धा बनायाहै कि अभयहोय जिसके घरचाहते हैं घुस जाते हैं मैं सत्य सत्य आपके सन्मुख कहताहूं कि हमचारों ने इसी बहाने आजतक बयालीसहज़ार रुपया सञ्चित किया है आज मैं इन के समीप अपना चतुर्थ भाग लेने आयाथा इन्हों ने इस भयसे कि यह हमारा भेद प्रकट न करे उसे न दिया जब मैंने अपने भागलेने

नम्बर २३ मुतअल्लिकै सफ़ै ३२२ हि०भा०

[illegible] का ऊंटपर सवारकरके देशसे निकलवादेना
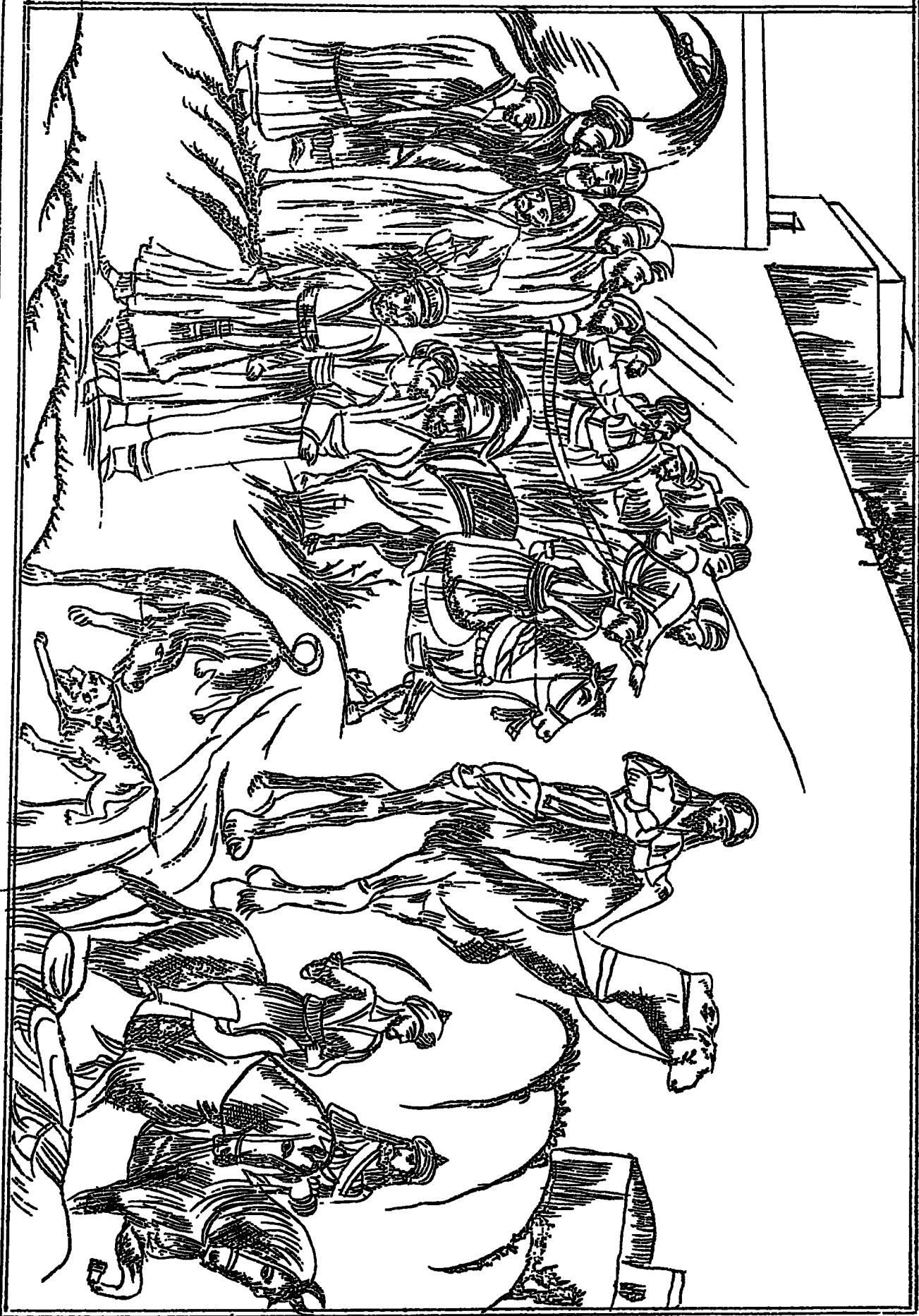
में इनसे तकरार की तब इनतीनों ने मिलके मुझे भलीभांति मारा इसकेसाक्षी सब मनुष्य हैं मुझे परिपूर्ण आशाहै कि न्यायसे मेरा भाग इनसे दिलादीजिये यदि आप चाहते हैं मेरेसाथी भी आपके सन्मुख सत्य कहैं तो इन्हें भी मारनेकी आज्ञादीजिये फिर देखिये यह सब मारके कारण नेत्र खोल सत्य २ कहते हैं वा नहीं मेरेभाई और उन दोनों ने भी चाहा कि कोतवाल से उसका छल प्रकटकरें पर क़ाज़ी ने कुछ न सुना और कहा तुम बड़ेधृष्ट हो धूर्तता से अन्धे बनेहो कि पुरबासी तुम्हें अन्धाजान बहुतसी भिक्षा दें मेरे भाई ने कहा स्वामी जो इसचोर ने हमारे विषय में कहा कि हम सनेत्र हैं सब झूठ है हम तीनों परमेश्वरकी सौगन्दखाके कहते हैं कि हमें दृष्टि नहीं निदान बहुत कुछ मेरेभाई ने कहा सुना परन्तु कुछ लाभकारी न हुआ और कोतवालने आज्ञादी कि सौ सौ कोड़े इनको मारो तीनों पर मारपड़ने लगी क़ाज़ी ने देखा कि इनपर इ-तनी मारपड़ी और इन्हों ने आंखें न खोलीं जानपड़ता है कि ये बड़े दुष्ट हैं और चोर ने भी अवसर पाय कहा मेरे प्रियमित्रो! क्यों अपने प्राणदेतेहो यदि नेत्र खोलदो तो निस्संदेह बचोगे और तुम्हारा अपराध क्षमाहोजावेगा तदनन्तर उसने कोतवालसे विनय की हे स्वामी! यह तीनों बड़ी आज्ञा भंगकर्ता और कठोरचित्त हैं जो आप मारते मारते इनको मारभी डालेंगे तो कदाचित् अपने नेत्र न खोलेंगे अब ये अपने अपराध से अधिक दण्ड पाचुके उत्तम है कि इनका अपराध क्षमाहो आप एक मनुष्य को मेरेसाथ कीजिये वह जो इन्होंने द्रव्य संचयकियाहै आपके सन्मुख लाऊं क़ाज़ी इस व्यवस्था के मूल को न पहुँचा और चोर के कहने के अनुसार एक सेवक को उसके साथ करदिया वह जाय उस धन को उठालाया क़ाज़ी ने उसका चतुर्थ भाग गिनवाके चोर को दिया और शेष आ-पलिया और उन तीनों अन्धोंको मारपीट देशसे निकालदिया नाई ने ख़लीफ़ा के सन्मुख विनय की स्वामी जब मैंने यह सुना तो ढूंढ़ता हुआ बूबक के समीप गया और उसको फिर गुप्तकरके नगर में लाया और कोतवाल के सन्मुख साक्षियों के द्वारा निर्दोषता प्रतीत कराई

तदनन्तर कोतवाल ने चोर को भलीभांति दण्डदिया परन्तु द्रव्य न फेरा इसभयसे ऐसा न हो कि इस चोर के दम्भ छल से मुझ पर किसी भांति का दुःख हो नापित ने इस कहानी को समाप्तकर खलीफ़ा से कहा यह मेरे तृतीय भ्राताका वृत्तान्तथा खलीफ़ा इस कहानीको सुन बहुत हँसा और इच्छाकी कि मुझे कुछ पारितोषिक आदि दे बिदा करे परन्तु मैंने अपने चतुर्थ भ्राता की कहानी प्रारम्भ की॥

नाई के चतुर्थ काने अल्कूजनामक भाई की कहानी॥

स्वामी मेरे चौथेभाई का नाम अल्कूज था वह एकाक्ष था जिस भांति उसने अपनी आंख खोई थी वह वृत्तान्त यह सेवक आपके सन्मुख वर्णन करताहै वह मेराभाई पशुहिंसा अर्थात् क़साई का कार्य करता था उसे भेड़ बकरी की पहिंचान अच्छीथी और मेढ़ों को भलीभांति युद्ध सिखाता था इसकारण लोक में बहुत प्रसिद्धथा प्रायः धनपात्र और भले भले मनुष्य मेढ़ों के युद्धका चरित्र देखने उसके घर आते और वह उत्तम २ हृष्ट पुष्ट युद्ध योग्य दिव्य मेढ़े पालता इसके विशेष अपनी दूकानपर बहुत उत्तम मांस बेंचता एकदिन वह अपनी दूकानपर बैठाथा कि एकवृद्ध वहांआया और अनुमान छःसेरके मांस मोललिया और उसका मूल्यदे चलागया मेरेभाई ने वे रुपये जो श्वेत और सुन्दर और नवीन प्रकार के थे देखकर किसी भिन्न संदूक़ में रख दिये वह वृद्ध पांचमासपर्यन्त उतनाही मांस उसकी दूकान से लेता और उसीभांति के रुपये देता रहा वह उन्हें एकही स्थान पर रखताजाताथा पांच महीने के उपरांत मेरे भाईने उसी द्रव्यकी भेड़ें मोललेनी चाहीं जब उसने संदूक़ खोला तो वहां श्वेतकागजकी टिकुलियांपाईं जिन्हें देख वह अत्यंत बिस्मित हुआ और अपना मस्तक पीटने और रुदन करने लगा तदनंतर अपने पड़ोसियों को बुलाय यह वृत्तान्त कहा और कागज़ की टिकुलियां दिखाईं वे देख अधिक आश्चर्य में हुये मेराभाई उस समय रोरोकर यह मांगता कि परमेश्वर करे इसीकाल वहछली वृद्ध आजावे यह कहरहाथा कि वह वृद्ध दूरसे दृष्टिपड़ा मेरेभाई ने उसे देखतेही दौड़ के पकड़ा और मनुष्यों के समूह में उसे खींच

लाया और दुहाई कर कर कहनेलगा हे भाइयो! देखो इस निर्लज्ज और दुष्ट ने कैसाछल किया तदनंतर बहुत से दूकानदार और पड़ोसियों से वहां बड़ी भीर होगई मेरेभाई ने उसका वृत्तांत वर्णन किया वृद्ध ने यहसुन मेरेभाई से कहा यही उत्तमहै कि मुझे छोड़ और कुछ न कह किन्तु यह अनादर और कुवाच्य जो तूने किया और कहे मुझसे क्षमाकरा नहीं तो मैं तेरी इससे अधिक अप्रतिष्ठा और निरादरकरूंगा मैं नहीं चाहता कि ऐसी अभक्ष्यवस्तु को अपने मुख पर लाऊँ मेरेभाई ने कहा तू क्याबकता है मैं कुछ अपनी वस्तु में छल नहीं करता तुझसे मैं नहीं डरता वृद्ध ने कहा तू नहीं मानता यही चाहताहै कि मैं तेरेकपट को प्रकटकरूँ यह कह उस बुड्ढे ने कहा हे भाइयो! सुनो यह बकरी और भेड़ का मांस नहीं बेंचता किन्तु मनुष्य का मांस अपनी दूकान में रख बेंचताहै मेरेभाई ने कहा हे नीच! वृद्धावस्थामें तू असत्य कहने से भय नहीं करता उसने कहा मैं मिथ्या नहीं कहता क्या तेरी दूकान पर एक मनुष्य का गला कटा हुआ भेड़ की सदृश नहीं लटकता है ? जिसका मन चाहे दूकान पर जाके देखले उसे मेरा झूठ सत्य मालूम होजावेगा मेरेभाई ने एक भेड़ मार कर लटकाई थी अल्कूज़ इस वचनको सुन क्रोधितहुआ और बुड्ढे से कहा तू झूठाहै तुझे मेरे दोष लगाने से क्या लाभहोगा निदान वे सब मनुष्य वृद्ध को पकड़ेहुये मेरेभाई की दूकानपर लेगये यदि यह झूठा हो तो इसे द्विगुणदण्ड दे वहां आय देखा तो वास्तव में एक मनुष्य का गला कटाहुआ लटकताहै वह वृद्ध मायावी था उसने सब की दृष्टि बांधदी थी जैसे उसने काग़ज़ की टिकुलियों के रुपये दिखाये उसी भांति भेड़ को मनुष्य दिखाया परंतु किसीको यहगुप्तबात विचार में न आई तदनन्तर उस समूह में से एक मनुष्य ने मेरेभाई को बहुतमारकर कहा दुष्टकुकर्मी तू हम को नरमांस खिलाया करताहै उस वृद्ध ने भी मेरे भाई को मारा यहांतक कि एक नेत्र उसका फूटगया तौभी उनको धैर्य न हुआ उसे क़ाज़ी के समीप पकड़लेगये और कटेहुये मनुष्य को भी जो उस वृद्ध की माया के कारण दिखाई देताथा उसी के साथ क़ाज़ी के

निकट लेजाय दिखाया क़ाज़ी उसे देख अत्यन्त क्रोधितहुआ और आज्ञादी कि पांचसौ कोड़े अल्कूज़ को मार ऊँट पर चढ़ाओ और नगर में प्रसिद्धकर देश से निकालदो उस दीन ने उस वृद्ध के छल का वृत्तांत कहा कि यह रुपयोंकेबदले कागज़की टिकुलियां देताथा परंतु क़ाज़ी ने क्रोधवश कुछ न सुना जिससमय यहकष्ट मेरेभाई पर पड़ाथा मैं बग़दादमें न था वह किसी निर्जनस्थान में गुप्त रहने लगा कुछदिन में उसकी पीठ के घाव जो मारके कारण पड़गये थे अच्छेहोगये जब कुछ चलने फिरने की शक्तिहुई तब उसने किसी दूसरी बस्ती में जानेकी इच्छाकी रात्रिको अप्रकट मार्गों से चलता जब एक नगर में जहां उसे कोई न जानता था पहुँचा वहां कईदिन बड़ी कठिन दशा से काटे एक दिन उस नगर में चलाजाता था कि उसने घोड़ों के चलने का शब्द सुना पीछे फिरके देखा तो बहुत से सवार उसके पीछे चलेआते हैं उनको देख भयभीतहुआ कि मेरेही पकड़नेकी तो इन्हें इच्छानहीं है वह उठते बैठते एक फाटक तक पहुँचा और सवारों के भय से भीतरजाय द्वार बन्दकरलिया और वहां से एक बिशाल मकान में जानेलगा इतने में दो मनुष्यों ने आके उसेपकड़ा और कहा परमेश्वर का धन्यवाद है कि तुम्हीं ने कृपा की हम तीन दिनसे तुम्हें ढूंढ़ते थे और दौड़ते २ हमें तीन रात्रि दिन व्यतीत हुये मेराभाई यह वचनसुन अत्यन्त विस्मित हुआ और उनसे कहा तुम्हारा क्या प्रयोजन है और मुझसे क्या चाहते हो तुमने मुझे किसी दूसरे के भ्रमसे पकड़ा तब उन्होंने कहा हम तुझे भलीभांति जानतेहैं तू और तेरेसाथी सबकेसब चोर और डाकूहैं तूने हमारे स्वामी की वस्तु और धन चोराय उसे निर्धन किया तौ भी तेरा बोध न हुआ अब तू उसके प्राणलेनेकेलिये आया है देखें तेरेपास छुरीहै वा नहीं कल रात्रि को जो तेरे पीछे दौड़ेथे तेरे हाथ में हमने छुरी देखीथी यहकह उसके वस्त्र में छुरी ढूंढ़नेलगे दैवयोग से मेरेभाई के पास एक छुरी थी वह उन्हों ने छीनली और कहने लगे अब हमें अधिक निश्चयहुआ तू चोर है मेरेभाईने उनसेकहा क्यायह होसक्ताहै कि जिसमनुष्य के पास छुरीहो वह चोर हो मेरी

आपदा का वृत्तान्तसुनो तो विश्वास है कि तुम मुझपर दयाकरोगे मेरे भाई का वृत्तान्त सुन वह दोनों लिपटगये और वस्त्र खण्ड २ करदिये और उस के कन्धों पर घाव देख कहनेलगे तू अपने को भलामानुस कहता है तेरे शरीर पर मारके चिह्न हैं तू अवश्य चोर है तदनंतर उन्हों ने उसे बहुत मारा तब मेरेभाई ने कहा हे परमेश्वर! मैंने तेरा कौनसा पाप किया जिसके पलटे मैं एकबेर प्रथम निर्दोष मारागया अब दूसरीबेर व्यर्थ मारा जाताहूं उन दोनों ने मेरेभाई के कहनेपर कुछ भी विचार न किया और उसेपकड़ क़ाज़ी के समीप लेगये क़ाज़ी ने उसे चोर समझ कहा हे दुष्ट, अयोग्य, अभागे! तू मनुष्यों के घरों में सेंध देताहै और उन्हीं के बधकरने के लिये छुरी हाथ में लेता है अल्कूज़ ने कहा स्वामी मेरी सदृश संसार भर में कोई निर्दोष और निष्पाप न होगा मैंने कोई कुकर्म नहीं किया जो मेरा वृत्तांत सुनिये तो मालूमहोगा मुझसा कोई दया योग्य नहीं तब एक ने उनमें से कहा आप इसकी बातें क्या सुनियेगा जो लोगों के घरों में द्वारतोड़ उनकी धरी वस्तु चुरा लेजाताहै और पुरवासी इस के हाथ से मारेजाते हैं जो हमारे वचन पर आपको विश्वास न हो तो इसके कन्धे आप देखिये कि कितने चिह्न मार के हैं उन्होंने मेरेभाई की पीठ खोल क़ाज़ी को दिखाई तब क़ाज़ी ने आज्ञादी कि बड़ेबेग से सौ चाबुक मार ऊंट पर चढ़ा सम्पूर्ण नगर में फेरो और एक मनुष्य इसके आगे पुकारे यह उस का दण्ड है जो कोई मनुष्यों के घरों में घुसके चोरी करे निदान उसे मारपीट प्रसिद्ध कर देश से निकाल दिया और आज्ञा दी फिर इस नगरमें न आनेपावे कई मनुष्यों ने कि उसे दूसरी बेर आपदा में देखाथा मुझसे आयकहा मैं सुनतेही वहांगया और उसे ढूंढ़ गुप्त बग़दाद में लाया और अपनी सामर्थ्य भर मैंने उसका पालनकिया ख़लीफ़ा यह सुन बहुत हँसा और अल्कूज़ की अभाग्यता पर अतिदया आई तदनन्तर चाहा मुझे पारितोषिक आदिदे बिदाकरे परन्तु मैंने अवसर न दिया विनय की स्वामी जहां आपने स्वामि-भाव से इतना श्रम किया मेरे और दो भाइयों का वृत्तान्त सुन

लीजिये विश्वास है आप उन अद्भुत वृत्तान्तों को सुन आनन्दित होंगे और हम सातों भाइयों की कहानी परिपूर्ण होजावेगी ॥

नापित के अलनसचर नामक पञ्चम भाई का वृत्तान्त ॥

मेरे पांचवें भाई का नाम अलनसचर था वह पिता के साथरहा करताथा परन्तु महाआलसी और निकम्मा था और बड़ी निर्लज्जता से सन्ध्या को कुछ भिक्षामांगता और उसे भोजनकर कालक्षेप करता और मेरा पिता कि वृद्धतासे शिथिल होगया था कालवश हुआ तीन-हज़ार एकसौ पचास रुपये जो उसने छोड़े थे हम सातों भाइयों ने परस्पर बांटलिये अलनसचर ने भी अपना भाग पाया उसने अपनी वयस भर में भी इतना द्रव्य न पाया था गूढ़शोच विचार में पड़ा कि इसमें क्योंकर व्यापार करूं पहिले कौनसी वस्तु लूं निदान विचा-रते २ उसने साढ़े चार सौ रुपये के शीशे के पात्र गिलास आदिक मोललिये और एक बड़े टोकड़े में भर एक दूकान पर रख आप भी दीवार से लग बैठा और एक दरज़ी को जो उसकी दूकान के निकट अपना काम करता था उसके सामने होकर अपने हृदय के विचार को कहनेलगा कि मैं इस वस्तु को नौसौ रुपये पर बेंचकर उससे फिर शीशे मोलले एक हज़ार आठसौ को बेंचूंगा इसीभांति मोल लेते बेंचते तीसहज़ार रुपये होजावेंगे तदनन्तर मैं उत्तम उत्तम बहु-मूल्य मणि माणिक रत्न मोती मोलले व्यापार करूंगा जब बहुत धन मेरे मनोरथानुसार मुझे प्राप्तहोगा तब मैं एक बड़ा उत्तम विशाल घर और कई सेवक और अश्व मोलले बड़े धनपात्रों की सदृश रहा करूंगा धीरे २ मेरे उच्चपद और बढ़तीका हाल सम्पूर्ण नगरमें प्र-सिद्ध होगा और उत्तम स्त्री पुरुष गाने बजानेवाले जो इस नगर में प्रसिद्ध हैं मेरे घर आया करेंगे जब मेरा व्यापार बढ़ता २ पांचलख मुद्रापर्य्यन्त पहुँचेगा तब मैं बहुतसे द्रव्य और वस्तुसे अपने को बादशाह के समान समझ वज़ीर को उसकी कन्या के साथ अपने विवाह का नेग भेजूंगा कि मैंने सुना है कि तेरी कन्या अत्यन्त रूप-वती कोमलांगी प्रियवचनी चतुरा और सुन्दर गुणयुक्ता है उसका विवाह मेरे साथ करदे यदि वज़ीर ने स्वीकार किया तो उत्तम नहीं तो

उसकी कन्याको नवसंगम रात्रिके लिये एक हज़ार अशरफ़ी दूंगा यदि उसने इन्कार किया तो मैं उसके घर पर चढ़ उसके सन्मुख उसकी पुत्रीको वरजोरी निकाल लाऊंगा निदान जब मेरा विवाह वज़ीर की कन्याके साथ होजावेगा तो मैं दश सेवक मोललूंगा और उत्तम वस्त्र शाहज़ादोंके सदृश पहिनूंगा और जड़ाऊ साजवाले मुश्की घोड़े पर चढ़ बड़ी सज धज से कुछ दास आगेपीछे वज़ीर के घर की ओर जाऊंगा जब मैं उसके मन्दिरमें पहुँचूंगा सम्पूर्ण छोटे बड़े मनुष्य मेरी ओर डाह से देखेंगे और बड़े आदरभाव से मेरी अगवानीकर मन्दिरके भीतर लेजावेंगे जब मैं अपने घोड़े से उतर ऊपरजाने की इच्छाकरूंगा मेरे सेवक दास और प्रधानआदि दोनोंओर पंक्तिबांध खड़े होंगे वज़ीर मुझे अपना दामाद जान निजस्थानपर बैठावेगा और आप मेरे सन्मुखहो बैठेगा तब मैं सेवकोंको आज्ञादूंगा दो तोड़े हज़ार२ अशरफ़ीके लाओ वह तुरन्तलावेंगे मैं एकतोड़ा वज़ीरको दे कहूंगा कि यह भँवरीके समयका नियत धनहै तदनन्तर दूसरा तोड़ा अशरफ़ियों का दे कहूंगा यह केवल अपनी उदारता से मैं तुम्हें देता हूं मेरीदातव्य से पास दूरके सब मनुष्य परस्पर चर्चाकरेंगे तदनन्तर मैं निजवाहन घोड़ेपर चढ़ उसी सज धज और ठाटसे अपने घर आऊंगा अनन्तर मेरी स्त्री यह गुण मानकर कि मैं उसके पिता की भेंटको गयाथा एक प्रधान को भेजेगी मैं उसे बहुमूल्यवस्त्र और बहुतसा पारितोषिक आदि दे विदाकरूंगा यदि मेरी स्त्री कुछ मेरे निमित्त सौगात भेजेगी तो मैं उसे अंगीकार न करूंगा और बेर २ नवीन २ बसन बदल बैठूंगा जब अपनी स्त्री के साथ विहार की इच्छाहोगी तो बड़ेठाट और सगर्वबैठ दाहिनेबायें दृष्टि न करूंगा जब मेरी स्त्री सोरह शृङ्गार बारहों आभूषणकर पूर्णमासी के चन्द्रमाकी सदृश मेरे सन्मुख आवेगी मैं उसकी ओर आंख उठाके भी न देखूंगा तब उसकी सखीसहेलियां उसके आगे पीछे की आकर मुझसे कहेंगी हे स्वामी ! अपनी स्त्री की ओर कि वह तुम्हारी किंकरी तुम्हारे सन्मुख खड़ी है बैठनेकी आज्ञा दो और कुछ उसकी ओर कृपाकरो मैं उनकी बात का कुछ भी उत्तर न दूंगा वह सब मेरी ग्लानि और

अनिच्छा से अत्यन्त विस्मित होंगी और बहुकालपर्यन्त खड़ी २ मुझसे विनय करेंगी तदनन्तर मैं शिर उठाय किंचित् कृपादृष्टिपूर्वक उसकी ओर देख फिर उसीभांति चुपकारहूंगा वह दासियां समझेंगी कि मेरी स्वामिनी उत्तम वस्त्र नहीं पहिने है इसी निमित्त उस की ओर प्रसन्नता से नहीं देखता तो उसे वस्त्र बदलने के अर्थ एक मकान में लेजावेंगी और मैं भी अपने मकान में जाय भारी उत्तम वसन पहिर वहां आबैठूंगा जब दुलहिन को सुलाने के लिये लावेंगी मैं तनक उसकी ओर न देखूंगा किन्तु पीठफेर सोरहूंगा और उससे बातभी न करूंगा अरुणोदय होनेपर वह उठ अपनी माता से जो वज़ीर की स्त्री है जाय मेरे गर्व और अकृपाकी निज व्यथा कह सुनावेगी उसकी माता मेरे देखने को आवेगी और मेरे हाथ चूम के कहेगी इतनी अशीलता मेरी पुत्री से न करो यह सदैव तुम्हारी आज्ञापालन करैगी और मन कर्म वचन से तुम्हें प्यार करेगी निदान मेरी सास भी मुझसे बहुत कुछ कहेगी परन्तु उससे भी मैं गर्वयुक्त चुपका हो बैठारहूंगा फिर मेरे चरणों को चूम कर कहेगी तुम को उचित नहीं कि इतना मेरी पुत्री से दूररहो मैंने उसे निज नेत्रों से कदाचित् भिन्न न किया और तुम्हीं ने उसका मुख देखाहै डरती हूं ऐसा न हो तुम्हारी इस अकृपा से उसके चित्त पर कुछ खेदहो तुम्हें उचित है कि उसकी ओर देखो और उससे वार्त्ता करो वह अत्यन्त बुद्धिचतुरा है तुम्हें सर्वदा प्रसन्न रक्खेगी जब यह विनय मेरे मन में कुछ फल न करेगी तब मेरी सास मद्य का एक गिलासभर मेरी स्त्री को दे कहेगी यह गिलास अपने पति को दे विश्वास है कि वह कठोरता त्यागदेगा और इसे तेरे कोमलहस्तकमलों से लेकर पीजावेगा मेरी स्त्री वह गिलास मेरे सन्मुख लाय मेरे भयसे बहुत काल पर्यन्त कांपा और थर्राया करेगी निदान वह कहेगी मेरेप्यारे सुखदैनपति तुम्हें उसी ईश्वरकी सौगन्दहै जिसने तुम्हें ऐसाउच्चपद दिया है इस गिलास को इस तुच्छ दासी के हाथ से लो और पानकरो मैं किञ्चित् उसके वचन का विचार न करूंगा और न उससे बोलूंगा तब वह प्रथम से अधिक रोतीहुई आगे बढ़ गिलास मेरे मुख के

पासलाय बहुत विनय करेगी कि मैं पीऊं उसकी इस ढिठाई से मैं अप्रसन्नहोकर एक तमाचा उसके मुखपर और एक चरण की ठोकर ऐसे मारूंगा कि दालान से नीचे जायपड़ेगी मेरा भाई इसी शोच विचार में ऐसा मग्नथा कि वह सब बातें सचजान और दुलहिनको खड़ीजान शीशेके पात्रों में ऐसे वेगसे ठोकर मारी कि वह टोकड़ा उलट दूकानके नीचे आरहा और सम्पूर्ण पात्र टूट फूट चूर्ण होगये दरज़ी जो उसके निरर्थक वचन बैठा सुनता था उस के पात्रटूटे और टोकड़े को उलटा देख बहुत हँसा और मेरे भाई को कहा हे दुष्ट भाग्यहीन! यह उसी का दण्डहै जो तूने ऐसी रूपवती स्त्रीके साथ ऐसा अकृत्य किया जो मैं तेरा श्वशुर वज़ीर के बदले होता तो एक सौ चाबुक तुझे लगाता और नगर में प्रसिद्ध कर अनादर करता मेरा भाई भी टोकड़े को उलटा देख चैतन्य हुआ और समझा यह सब मेरे अहङ्कारके कारण हानिहुई तदनन्तर व्याकुल होय वस्त्र फाड़ने और रोनेलगा यहांतक कि उसके चिल्लाने से मुहल्ले के मनुष्य जो एकत्रहो निमाज़ पढ़ने जातेथे उसकी दशा देख खड़े होगये और पूछनेलगे कि इस कोलाहल का क्या कारणहै यदि शुक्रवार था और दिनों से अधिक भीड़होगई उसकी मूर्खतापर सब हँसते संयोगवश एक धनपात्र युवती अतिसुन्दर वाहनपर सवार होकर वहां पहुँची वहां ठहर समूह से पूछनेलगी कौनरोरहा है उस पर कौनसी आपदा पड़ी उन्होंने बात बनाके विनयकी यह निर्धनी दीन बहुतथोड़ा द्रव्य रखताथा एक टोकड़ा शीशे के पात्रों का मोललै यहां बेंचने के लिये आया दैवयोग से वह टोकड़ा दूकान के नीचे गिर पड़ा और सम्पूर्णपात्र चूर्णहोगये उस स्त्री ने फिरके एक अपने सेवक को आज्ञादी वह थैली जो तेरेपासहै इस दीनको दे उस सेवकने वह थैली जिसमें पांचसौ अशरफ़ियांथीं मेरे भाई को दी उसने लेली अलन-सचर ने प्रसन्नहो असंख्य आशीर्वाद उस स्त्री को दिये और दूकान बन्दकर अपने घरगया अपनी भाग्यपर बहुत प्रसन्न हुआ इतने में किसीने उसके द्वारपर हांकदी अपना दरवाज़ा खोल देख एक वृद्धा कहतीहै बेटा वन्दना का समय बीताजाताहै एक लोटा जल का

दे तो मैं हाथ पावँ धोकर वन्दनाकरूं मेरे भाई ने उसे देखा कि वृद्धा पूर्ण आयु को पहुँचगई यद्यपि उसे न जानता था परन्तु उसे पानी दिया और कहा यहांपर बैठकर वन्दना करले जब वह नियमित वन्दनासे निश्चिंतहुई तब मेरेभ्राता के चरणों पर ऐसी झुकी कि पृथ्वी से भाल लगगया जैसा कोई ईश्वर की वन्दना करता है तद-नन्तर शिर उठा उसे बहुत से आशीर्वाद दिये परन्तु वह बसन अत्यन्त मलिन फटे पुराने पहिरे हुये थी मेरा भाई उसकी दीनता पर दयाकर समझा कि कुछ यह याचना करती है दो अशरफ़ियां निकाल उसेदीं उसने फेरदीं मेराभाई उससे अत्यन्त अप्रसन्न हुआ तब उस वृद्धा ने कहा तुमने मुझे कङ्गाल समझा तुम अपनी अश-रफ़ियां अपने पास रक्खो मुझे कुछ आवश्यकता नहीं एक महा-तरुण अत्यन्त रूपवती और अत्यन्त दानी स्त्री मुझे बहुत कुछ देती लेती है जिससे मैं निर्धन नहीं मेरा मूर्खभ्राता उस छल को न स-मझा कि उसने क्यों दो अशरफ़ियां फेरदीं वृद्धा से कहा हम उस तरुणी को किसी भांति देखसक्तेहैं उसने कहा निस्संदेह किन्तु उससे तुम विवाह करसक्ते हो भाई अशरफ़ियां रखलो और मेरेसङ्ग चलो एकहीबेर अत्यन्त सुन्दरी यौवना और असंख्य धन तुम्हें मिलेगा उसने हमयानी कमर में बांधली और उस बुढ़िया के साथ होलिया आगे वह पीछे मेराभाई चले चलते २ एक बड़ेघर के द्वार पर प-हुँचे वृद्धा ने हांकदी तुरन्त एक ग्रीकदेश की दासी ने आय द्वार को खोलदिया वृद्धा ने प्रथम मेरे भाई को भीतर जानेके लिये कहा तद-नन्तर आप भीतर जाय उसे एकबड़े विशाल मकान में लेगई वह मकान नानाप्रकार की सामग्री से अलंकृत था अनन्तर वह वृद्धा मेरे आगमन का संदेश उस स्त्री को देनेगई मेरा भाई गरमी के कारण अपने मस्तक से पगड़ी उतार सावधान हो बैठा क्षणमात्र में वह सुन्दरी भी मेरे भ्राता के निकटआई वह उसके रूप अनप मनहरण, दुःखदरण, चन्द्रमुख, दैनसुख और वस्त्राभूषण को देख मोहित होगया और उठके झुककर प्रणाम किया उस स्त्रीने उसे वहीं रहने दिया और आप उसके निकट आबैठी और उसे देख हर्षितहुई और

कहनेलगी यह स्थान हमारे बैठने योग्य नहीं तदनन्तर मेरे भाई का हाथ पकड़ दूसरे मकान में लेगई और बहु काल पर्यन्त प्रीतियुक्त वार्त्ता करती रही तदनन्तर उससे यह कहा कि मैं अभी आतीहूं और मकान में गई वह उसके आगमन की राह देखता रहा अकस्मात् एक बड़ा बलवान् हब्शी हाथ में खड्ग लिये हुये आया और भृकुटी वङ्ककर मेरे भाई से कहा तेरा यहां क्या काम है अलनसचर उसे देख भयभीत हुआ और मुखसे कुछभी उत्तर न निकला उस हब्शी ने हमयानी उसके कमरसे खोल कई हाथ खड्ग के मार शरीर उसका खण्ड खण्डकर दिया वह दीन अभागा घायल हो पृथ्वी पर गिरपड़ा यद्यपि उसकी बुरी दशाहोगईथी परन्तु प्राणमात्र रहगये थे जब वह समझा कि मैं इसे बध करचुका लवण मँगवाया वही ग्रीकदेश की दासी पात्र में चूर्ण लवण का लेकेआई उन दोनों ने उसके घावों पर भलीभांति नोन छिड़का यद्यपि नोन छिड़कने से उसे बहुत कष्ट होता था परन्तु कुछ भी न हिला मृतकों के समान पड़ारहा उस हब्शी और दासी के चलेजाने के पश्चात् वह वृद्धा जो मेरे भ्राता को छलसे लाई थी घसीट एक चहबच्चे में डालआई जहां बहुतसी लोथें थीं यद्यपि वह मृतकसमान होगयाथा परन्तु कुछ देर में किञ्चित् सुधिहुई और प्रकट में घावोंपर नमक मलने से पीड़ा होती थी परन्तु वही कारण उसके जीवन का हुआ और इतनी सामर्थ्य हुई कि उठबैठा दोदिन के पश्चात् वह रात्रि को उसी मकान का द्वार खोल बाहर निकला और एक मकान में छिपरहा जब उसने प्रातःकाल को देखा कि वह वृद्धा दुष्टा शिकार ढूंढ़ने को गई वह भी वहां से भाग मेरे निकट आया और उन्हीं आपत्तियों का वृत्तान्त जो थोड़ी सी अवधि में उसपर पड़ी थीं वर्णन किया एक मास के पश्चात् सब घाव उसके औषध आदि के सेवन से अच्छेहोगये तब उसने उस वृद्धा से अपना बदला लेनेकी इच्छा की इसलिये उसने बड़ीलम्बी थैली जिसमें पांचसौ अशरफ़ियां समावें बनवाई और अशरफ़ियों की जगह उसमें शीशे के टुकड़े भर अपनी कमर में बांधे और बुढ़िया का भेष धर एकखड्ग अपने वस्त्रों में छिपाय प्रातःकाल

उसको ढूंढ़ने के लिये निकला अकस्मात् एक गली में वही कपटी बुढ़िया जो मनुष्यों को छलने और भुलावा देनेके लिये फिरती थी उसे मिली उसने अपना शब्द बृद्धा स्त्रियों के सदृश बदल प्रथम प्रणाम किया तदनन्तर कहा बहिन एक क्षणमात्र के वास्ते कहीं से तुला रुपये तौलने के लिये मांगे की ला दो क्योंकि मैं फ़ारस देश की रहनेवालीहूं अभी इस नगर में आईहूं पांचसौ अशरफ़ियां मेरे समीप हैं चाहतीहूं उसे तौल और जांचलूं पूरी हैं या कुछ कम हैं उसने उत्तरदिया बहिन तुम मुझसा इस नगर में कोई विश्वासित न पावोगी मेरेसाथ चलीआवो मैं अपने पुत्र के घर जो सर्राफ़ी का कार्य करता है तुम्हें लेचलूंगी वह भलीभांति तुम्हारी अशरफ़ियां तौल देगा तुम्हें कुछ भी श्रम न होगा शीघ्र चलो ऐसा न हो वह अपनी दूकान पर चलाजावे दुष्टा मेरे भाई को उसी विशाल घर में लेगई जिसमें पहिले लेगई थी और उसी ग्रीक देश की दासी ने द्वार खोला तदनन्तर भीतर लेजाय एक स्वच्छ स्थान पर बैठाय कहा ठहरो मैं अपने पुत्र को जाय बुलालातीहूं क्षणमात्र में उसका कपट-पुत्र अर्थात् वही दुष्ट अकर्मी हब्शी पहुंचा और पुकारा हे बृद्धा! मेरे संग चलो निदान वह हब्शी मेरे भ्राता को उसी ओर जहां उसे खड्गसे माराथा लेचला अलनसचर वहांसे उठ उसी हब्शी के पीछे चला मार्ग में हब्शी को अकेला और अचैतन्य पा अपने वस्त्र से खड्ग निकाल ऐसी उसकी गर्दन पर मारी कि शिर उसका कट नीचे आपड़ा तब उसने एक हाथ से उसका शिर और दूसरे हाथ से धड़ खींच उसी चहबच्चे में फेंकदिया इतने में वही दासी पिसाहुआ लवण लेआई और उसे नंगी तलवार लियेहुये और मुख से वस्त्र उतारे हुये जिससे वह अपना पुरुषत्व छिपाये था देख नमक का पात्र फेंक भागी मेरे भाई ने दौड़ उसका शिर धड़ से काट डाला तदनन्तर वह बृद्धा आहट सुन दौड़ी आई देखूं क्या होरहा है यह चरित्र देख भागने लगी इतनेमें मेरे भाई ने पकड़के कहा हे दुष्टा! तू मुझे नहीं पहिंचानती मैं कौनहूं उसने कम्पितहो कहा मैं तुम्हें नहीं पहिंचानती तुम कौन हो और कभी तुम्हें आगे नहींदेखा मेरे

भ्राता ने कहा मैं वहीहूं तूने जिसके घर में जाय अमुकदिवस हाथ पांव धोने के लिये जल मांगा था उसे भूलगई वह वृद्धा गिड़गिड़ाय उसके चरणों पर अपराध क्षमा करानेके लिये गिरी मेरे भाई ने उसके भी चार खण्ड किये अब उस घरमें केवल वही सुन्दरी मृग-नयनी रहगई मेरा भाई उसे ढूंढ़ने लगा तो उसे एक दूसरे मकान में पाया वह नवयौवना उसे देख भयभीत हुई और मूर्च्छित होने लगी मेरेभाई ने उसे कुछ दुर्वचन न कहा और उसे धैर्यदे पूछा हे सुन्दरी! तू क्योंकर इनअन्यायियों के फंदे में जिनको मैंने अभी बध किया फँसी और रहती थी उसने कहा मैं एक बड़े धनपात्रव्यापारी की स्त्री थी यह वृद्धा जिसे मैं न जानतीथी कभी २ मेरेघर आती एक दिन उसने मुझसे कहा हे प्यारी! मेरे घर विवाह है यदि आप मेरे घर आवें तो मैं तुम्हारा बड़ा यश मानूंगी इस विषयमें उसने मुझसे बहुत विनय की सो मैं उसके घर जाने के लिये प्रसन्नहुई और बहुत उत्तम आभरण और वस्त्र पहिर और सौ अशरफ़ी अ-पने साथ ले उस बुढ़ियाके साथचली वह मुझे इसी घर में लाई मैंने यहां इस हब्शी को देखा उसने मुझे बरजोरी अपने पास रक्खा और घर न जानेदिया इसको तीन वर्ष हुये तबसे मैं इस मंदिर में रहतीहूं और इस हब्शी के कृत्य से अत्यन्त अप्रसन्न रहाकरती थी मेरे भाई ने पूछा यहां कितना द्रव्य है उसने कहा यहां इतना धनहै कि कभी तू निर्धन न होगा तब वह उसे बड़े दालान में लेगई और बहुतसे सन्दूक़ केवल रुपयों के भरेहुये उसेदिखाये वह देख आश्च-र्यितहुआ तदनन्तर उस सुन्दरी ने कहा जा और बहुतसे मनुष्य इन सन्दूक़ों को उठानेके लिये ला और इन सब वस्तुओं को उठा यहांसे लेचलो यहसुन मेरा भाई बाहर का द्वार बंदकर दौड़ागया और बहुत ढूंढ़ के बहुतसे मज़दूर लेके वहां आया प्रथम द्वार खुला देख आश्चर्य किया तदनन्तर भीतर जाय देखा न तो वह संदूक़ है न वह स्त्री मेरा भाई सोचा कि क्योंकर वह सुन्दरी सन्दूक़ों समेत गुप्तहोगई तदनंतर बिचारा ख़ाली हाथ जाना उत्तम नहीं मज़दूरों से वह सब असबाब अनुमान पांच सौ अशरफ़ी के उठवा लेचला

संयोगवश मेरे भाई ने भीतर घुसते समय उस घर के आवागच्छ का द्वार बाहरकी ओरसे बंद न किया और न ताला दिया इसलिये वहां के पड़ोसी उस घर को असबाब और मनुष्यों से खाली और मज़दूरों के शिर पर बस्तु लेजाते देख क़ाज़ी से जाय पुकारे दीन अलनसचर एक रात को अपने घर आनन्द में सोया और प्रातःकाल को उठ चाहताथा कि बाहर निकले अकस्मात् थाने के बीस सिपाहीआये और उसे पकड़लिया उसने कितनाही विनय की कि क्षणभर ठहरो किंतु कुछ रिशवत भी देनेलगा कि उसेछोड़ें परन्तु उन्होंने उसके कहने सुनने पर कुछ भी विचार न किया और बरजोरी उसे बांध क़ाज़ी के समीप लगये क़ाज़ी ने उससे पूछा मुझे बता इस वस्तु को तूने कहां से पाया उसने कहा मैं अभी सत्य सत्य इस वृत्तान्त को आपके सन्मुख वर्णन करता हूं परंतु यह एक प्रतिज्ञा कीजिये कि किसीभांति का दण्ड मुझे न देना क़ाज़ी ने कहा ऐसाही होगा तब मेरे भाई ने आदिसे अन्तपर्यंत सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और कोई बात नहींछोड़ी क़ाज़ी ने अपने मनुष्यों को उस के घर भेज सब वस्तु उठवामँगवाई और अपने घर में भिजवाय कुछभी उसे न दिया किन्तु आज्ञा दी अलनसचर को देशनिकाला दो तीन वर्ष पर्यन्त इसनगर में न आनेपावे क्योंकि अवसर पाय क़ाज़ी के अन्याय को ख़लीफ़ा से न कहने पावै अलनसचर ने क़ाज़ी की आज्ञानुकूल उस नगर को परित्यागकर अन्य नगर में जानेकी इच्छा की मार्ग में डाकुओंने उसका सब धन लूटा मैं यह वृत्तान्त सुन कुछ वस्त्र संगले उसके ढूंढ़ने के लिये चला निदान उसे ढूंढ़ निकाला और अपनी सामर्थ्यभर रुपये और वस्त्र दे अप्रकट इस नगर में गुप्त करके लाया और सदैव उसका भाइयों के समान पालन करतारहा ॥

नाई के शाह कवक नामक छठे भाई की कहानी जिसके ओठ ख़रगोश के मानिन्द थे ॥

यह कहानी मेरे छोटे भाई की है अब केवल उसीका वृत्तान्त शेष रहगयाहै उसका नाम शाह कवक था उसके ओठ ख़रगोश के

चित्र कवक का लुटेरों में घिर जाने का॰

सदृश ऊपरको चढ़ेहुये थे और ख़रगोश के समान चलता प्रथम उसने उसी ४५) रु० अपने पिता की थाती से वहुत द्रव्य कमाया निदान दुर्भाग्यता से निज धन और नफ़ा जो कुछ उसे प्राप्त हुआ था खो बैठा किन्तु भोजन भी न मिलता तदनन्तर वह यह काम करता कि द्वारपालों और सेवकों को द्रव्य दे धनपात्रों के घरों में याचने जाता और यह कुछ उसकी ओरसेकहते सुनते जिससे वह भाग्यवान् मनुष्य उसपर दया कर वहुतसी भिक्षा देता दैवयोग से एक दिन वह एक बड़े विशाल घर की ओर गया जहां वहुत से नौकर चाकर वर्तमान थे वह एक सेवक के समीपगया और पूछा यह किसका मकान है उसने उत्तर दिया मालूम होताहै कि तू परदेशीहै और तेरा नगर यहां से वहुत दूरहोगा क्योंकि यह मन्दिर और वरमकी का नाम सूर्य से अधिक विख्यात है तब उसने उन सेवकों से याचना की उन्होंने कहा भीतर जाय हमारे स्वामीसे मांगला।ओ वह तुझे धनपात्र और निहाल करेगा और तुझे कोई नहीं रोकेगा मेराभाई उस मकान के भीतर गया और ढूंढ़ता मकी के समीप जाक पहुँचा वह मन्दिर भीतर से वहुत विशाल और स्वच्छ भांति भांति की वस्तुओं से अलंकृत था और उसके निकट एक पुष्पवाटिका थी जिसमें नानाप्रकार के रंग की शिला का फ़र्श था और चारोंओर उसके वरामदे खुलेहुये देखे नानाप्रकार के रंग के परदे लटकते जिससे सूर्यकी धूप भीतर न आनेपाती एक दिशा के कुछ परदे उठे हुये थे जहांसे मंद २ ठंढी २ समीर आती मेराभाई ऐसे विशाल घर और समाग्री को देख हर्षित हुआ और विश्वास हुआ यहां अवश्य मनोरथानुसार लाभ होगा तदनन्तर वहां एक दालान देखी कि वहुत उत्तम औ स्वर्ण और मणि माणिक रत्न आदि से सजी थी औ उसके भीतर एक वृद्धपुरुप सुनहली गद्दी पर बैठे देखा उसके स्वरूप से मालूम हुआ कि इस विशालघर का यही धनी है वास्तव में वही मकी था उसने देखतेही मेरे भ्राता से कुशलपूछी और कहा तू क्या चाहता है मेरे भाई ने प्रणाम कर विनय की हे प्रणतपाल ! मैं निर्धन दीन मनुष्य हूं तुम ऐसे प्रतापवान् भाग्यवान् से कुछ

याचने आयाहूं बरमकी ने मेरेभाईके उत्तरसे प्रसन्नहो दोनों हाथ अपनी छाती पर रक्खे उसका फूटाटूटा हाल देख और उसपर दया और कृपा कर कहा भाई आश्चर्यहै हमारे बुग़दाद में निवासकरने पर भी तुम्हारी ऐसी कुदशाहै मेरा भाई इस वार्त्तासे समझा यह मुझे बहुतकुछ देगा तदनन्तर उसने बरमकी को आशीर्वाद दिया बरमकी ने मेरे भाई को धैर्यदे कहा हम ऐसा उपकार तेरे साथ करेंगे कि जन्मभर न भूलेगा तदनन्तर मेरे भाईने कहा आपके सन्मुख शपथ खाके विनय करताहूँ आज मैंने अबतक कुछ नहीं खाया बरमकी ने कहा क्या सत्य कहतेहो तुमने अभीतक कुछभी भोजन न किया हा! खेदहै यह दीनमनुष्य क्षुधा से व्याकुल है तदनन्तर बड़े शब्द से कहा अरेलड़के तुरंत स्वच्छ जल का लोटा ला और हमारे हाथ धुलवा अभी कोई न आया न लोटा आया परन्तु बरमकी अपने हाथों को मल धोनेलगा जैसे कोई उस पर जल डालताहै और मेरे भाई से कहा तुमभी आगे आवो और हमारे साथ अपने हाथ धोवो मेरा भाई शोचा यह हँसमुख है इससे वह भी आगे बढ़ झूठमूठ हाथ धोनेलगा तदनन्तर उसने कहा धैर्य धरो भोजन अभी आता है यह कह फिर हाथ बढ़ाया और अपने मुख में हाथलगा मुँह चलाने लगा जैसे कोई मुँह में ग्रास डाल चबाता है और मेरे भाई से कहा हे मेरे अतिथि! तूभी खा कुछ लज्जा न कर यह दृष्टांत प्रसिद्ध है (आहारे व्यवहारे लज्जा नकारे) यह अपनाही घर समझ तू बहुत क्षुधित जान पड़ता है मेरे भाई ने भूख से झुंझलाय कहा महाराज मुझपर दया कीजिये इन झूठी बातों से मेरी तृप्ति नहीं होती बरमकी ने कहा क्या तुम्हें यह शीरमाल स्वादिष्ठ नहीं लगती उसने कहा मैं न तो कुछ शीरमाल देखताहूं और न मांस निदान बरमकी के कहने से अनुकरण भोजन करनेलगा थोड़े काल के पश्चात् बरमकी ने कहा छोकरे दूसरी थाली ला और मेरे भ्राता से कहा इस नवीन थाली के पाक भोजनकरो और इसका स्वादु देख मुझसे कहो तुमने ऐसा सुरुचि बटेर और चकोर का मांस कदाचित् न खाया होगा तदनन्तर उसने बत्तख़ का भूनामांस मँगवाया और

उसीभांति मानसी विचार से भोजन करनेलगा तदनन्तर मेरे भाई से कहा देखो क्यापुष्ट और रुचिकारी पक्षी का मांस बनाहै एक बाजू और रान इसकी तुमलो और धीरे २ भोजन करो अभी भांति२के पाक आनेवाले हैं इसीभांति मकी प्रत्येक प्रकारके पाक मँगवाय झूठमूठ भोजन करता फिर एक बकरी के बच्चे का अन्तः परिपक्वमांस मँगवाया उसकी हृष्टता की बहुतसी प्रशंसा की और अन्य भोजनों के सदृश उसे भी खाया तदनन्तर कहा एक प्रकार का पाक ऐसा स्वच्छ और स्वादु युक्त है कि तुम यहांके सिवाय अन्य स्थान पर न पावोगे यह कह झूठमूठ थोड़ा सा उसमें से अपने हाथ में ले मेरे भाई के मुख में डाला और कहा भाई इसके भोजनकरने से तुम्हें इस का स्वादु मालूम होगा मेरा भाई आगे बढ़ा और मुख खोल उस ग्रास को बरमकी के हाथ से ले चबाय उस की बहुतसी प्रशंसा की बरमकी ने कहा क्यों मैं न कहता था खावोगे तो जानोगे शाह कबक ने कहा वास्तव में ऐसा स्वादिष्ठभोजन जन्म भर में नहीं खाया तद-नन्तर और विधि का पक्व मांस लायागया बरमकी ने कहा यह भी कुछ स्वादु में उससे न्यून नहीं मेरे भाई ने कहा वाह यह पाक भी स्वच्छ और सरुचि है इसमें से अम्बर, लवंग, जावित्री, जायफल, सोंठि की सुगन्धआती है यह सब यत्नसे इसमें मिलाये गये हैं कि एक की सुगन्ध दूसरे को नहींदबाती बरमकी ने कहा इसका स्वादु तुमने पाया इसे भलीभांति भोजन करो तदनन्तर आज्ञा की पात्र समेट फल लावो सेवक लोग झटपट भोजन के पात्र उठा अनुकरण फलों के पात्र लगा कहनेलगे फल वर्तमानहैं बरमकी ने मेरेभाई से कहा यह बादाम नवीन तोड़ेगये हैं तदनन्तर वह दोनों झूठमूठ उ-नको तोड़ छिलके फेंक बादाम का गूदा खानेलगे तदनन्तर कहा यह सब नवीन फलहैं भोजन करो मेरेभाई ने कहा स्वामी क्या अच्छे और रुचिकारी व्यञ्जन खाये जिनके खातेखाते कण्ठ दुखने लगा और तृप्ति न हुई बरमकी ने मुस्कराय अनुकरण मद्य का पात्र मेरे भाई के हाथ में दिया उसने प्रथम तो न लिया और कहा हमारेकुल में यह अभक्ष्य है मैंने इसे कदापि पान नहीं किया निदान बरमकी

के तकरार करने से वह पीकर कहा स्वामी इसके पीने से मुझे कुछ भी प्रसन्नता न हुई बरमकी ने कहा मेरे मद्यालय में एक प्रकार की मदिरा है उसके पानकरने से तुम बहुत प्रसन्नहोगे तदनन्तर उसने मानसी विचार से उसी भांति की मदिरा मँगवाय प्रथम एक गिलास आप पिया और एक गिलास मेरे भाई को दिया उसने पी अपने को उन्मत्त बनाया और मतवालों के सदृश एक दोबेर हाथउठा बरमकी को मारा तीसरीबिरियां बरमकी ने बचाने के निमित्त उसका हाथ पकड़लिया और कहा क्या तू विक्षिप्त होगया है निदान मेरा भाई चैतन्य हो कहनेलगा स्वामी आपने अपने घर में बुलाकर नाना प्रकार के छत्तीसों व्यञ्जन खिलाये और बरजोरी मुझे मद्य पिलाई उसके नशे में आपसे बड़ी ढिठाई की इसी निमित्त यह सेवक उसे न पीता था ऐसा न हो कि उसके नशे में कोई ढिठाई बनिआवे आशा रखताहूं कि मेरा अपराध क्षमा हो बरमकी क्रोध के बदले हँसपड़ा और कहा मैं बहुत कालसे तुझसा मनुष्य ढूंढ़ता था परन्तु मैं इस तेरे अपराध को क्षमा न करूंगा परन्तु एक प्रतिज्ञा से कि तू मेरा घर तज अनत न जा और मैं इसीसमय से तुझ से प्यारकिया करूंगा अब हम भोजन सचमुच का मँगवाते हैं यह कह हांक दी तुरन्त सब सेवक दौड़े आये उसने आज्ञा दी शीघ्रभोजन लावो उसकी आज्ञा पाते ही वही पाक जो केवल उसने अपने हृदय के विचार से ही भोजन किये थे लाये मेरे भाई ने वह सब पाक रुचिपूर्वक तृप्त हो भोजन किये तदनन्तर जब वह पात्र उठे सुरा आई और कई रूपवान् स्वच्छ बसन पहिरे हुई बांदियां गाने बजाने की सामग्री सहित आईं और बड़े मीठेस्वरों से गाईं मेरा भाई बरमकी की हास्यप्रकृति और उदारता से बहुत प्रसन्न भया और उसकी बहुतसी स्तुति और प्रशंसा कर आशीर्वाद दिये बरमकी ने निज बसनालय से बस्त्र मँगवाय मेरे भ्राताको दिये उसने अपने मलिन बस्त्र उतार उनको पहिना बरमकीने शाह कबकको प्रत्येक विषय में बुद्धिमान् और चतुर पा सम्पूर्ण निजघरके कार्य उसको सौंपे वह बीसवर्ष पर्यन्त अत्यन्त प्रसन्न और निश्चिन्तता से बरमकी

की सेवा में तत्पररहा प्रत्येक विषय से उसे प्रसन्न और हर्षयुक्त रक्खा निदान वरमकी अतिवृद्ध होकर कालवश हुआ और कोई उसके पुत्र न था सबवस्तु और रुपया उसका ख़लीफ़ा ने हरलिया उसके साथ जो कुछ मेरे भाई को प्राप्तहुआ था वहभी छीनलिया मेरा भ्राता पूर्व की भांति निर्धन हो एक यात्रियों के समूह के साथ मक्के की यात्राको गया मार्गमें लुटेरोंने उसे लूटलिया वस्तु धन आदि उन सबका लूट उन्हें अपना गुलाम बनालिया सो मेरा भ्राता भी एक वनवासी का दास भया वह जङ्गली सर्वदा उससे द्रव्य मांगता अर्थात् कहता कि इतनेरुपये मुझे दे तो मैं तुझे छोड़दूंगा जब उस से कुछ न पाता तो थप्पड़ मारता एक दिन मेरे भाई ने उससे कहा तुम मुझे व्यर्थ मारतेहो मेरेपास कुछ भी नहीं और किसीप्रकार द्रव्य दे नहीं सक्ता उस वनवासी ने निराश हो क्रोध से छुरीनिकाल मेरेभाई के दोनों होंठ चीरडाले तौ भी उससे कठिन परिश्रम लिया करता उस वनवासी की स्त्री अतिसुन्दरी थी जब वह कहीं लूटनेको जाता तो मेरे भाई को घर में रक्षाके निमित्त रखजाता वह स्त्री एकान्तस्थलमें मेरेभाई का सन्मान करती और उसे बहुत धैर्य देती सो मेराभाई जानगया कि वह मुझे बहुतचाहती है और मुझ से कुकर्म की इच्छारखती है वह उस वनवासी के भय से उससे भिन्न रहता और यथाशक्ति उससे बचता परन्तु जब वह स्त्री उसे देखती तो नयनों से अति तीक्ष्ण कटाक्ष करती परन्तु शाह कबक अपने नेत्र नीचे करलेता एकदिन उसी सुन्दरी ने भूले से अपने पतिके सन्मुख वही हावभाव शाह कबक के साथ किये उसका पति उस समय देख कर चुप होगया और मन में कहा मेरे पीछे यह अवश्य अनुचित कर्म करताहोगा इस विचार से वह अत्यन्त क्रोधित हुआ निदान अत्यन्त कठोरता से शाह कबक को ऊंटपर अपने पीछे चढ़ा एक बहुत ऊंचे निर्जन पहाड़ की चोटी पर लेजाय छोड़दिया और आप उतर आया और यह शोचा यहीं भोजन जल बिना दो तीन दिन में मरके रहजावेगा संयोगवश उस पहाड़ से बग़दादनगर का रास्ता था प्रायः यात्री मेरेभाई को वहां अकेला और क्षुधा तृषायुक्त देख

भोजन देते और कई परदेशियों ने जो वहांसे यहा आयेथे मुझसे उसकी दशा वर्णन की कि अमुक पहाड़ पर तेरा भाई अतिदुर्दशा में पड़ाहै यह सुन मैं तुरन्त उधरचला और उस पहाड़ पर जाय यथाशक्ति उसकी सहायता की और उसे अपने नगर में लेगया ख़लीफ़ा इस कथा को सुन वहुत प्रसन्नहुआ और वहुतद्रव्य पारितोषिक आदि दे विदाकिया और मुझे गंभीरता का उपनाम दिया और कहा फिर तू इस नगर में न आइयो कुछदिन तो मैंने अन्य देशों में निवास किया जब मैंने सुना ख़लीफ़ा कालवश हुआ फिर मैं इस बुग़दादनगर में आया उस समय तक मेरे सब भाई मरगये थे कुछकाल पश्चात् पंगुल की सेवा की जैसा तुमने उसके मुख से सुना परन्तु बड़ाखेद और पश्चात्ताप है उसने इस परिश्रम और सेवा के बदले मेरी यह अप्रतिष्ठा की इसके विशेष मुझे बकवादी का कलङ्क लगाया परन्तु उसपर भी सर्वदा उसको ढूंढ़ता रहता था यहां तक कि आज वह मुझे मिला उस कृतघ्नी ने जो कुछ मेरे विषय में कहा तुम भी उस के साक्षी हो इतना कह दरज़ी ने ख़लीफ़ा के सन्मुख विनय किया जब हमने सब चरित्र नाई के भाइयों के सुने हमें परिपूर्ण विश्वास हुआ जो उस पुरुष ने इसके विषय में कहा सब ठीक है तदनन्तर मैंने और अन्य अतिथियों ने वही पाक आनन्दपूर्वक भोजन किये इतनेमें तीसरा पहर होगया मैं वहां से विदाहो अपनी दूकान पर आया और संध्या के समय दूकान बन्द कर अपनेघर जानेलगा इतनेमें यह कुबड़ा मद्यके नशेमें उन्मत्त हो मेरी दूकानके सन्मुख बैठ तबला बजाने और गानकरनेलगा मैं इसे अपने घर में लेगया मेरी स्त्री ने उस दिन मछली बनाईथीं वह उन्हें थालीमें रख मेरे सन्मुखलाई मैंने थोड़ीसी मछलियां कुबड़ेको दीं कुबड़ा उनको कांटे निकालनेके विना खागया उनके भोजन करतेही वह मूर्च्छा खाय गिरपड़ा मैंने बहुतसे यत्न किये परन्तु सब निष्फल हुये निदान लाञ्छन और आपके भय से उसे अपने कन्धे पर उठा यहूदी वैद्यके घर लेगया यहांसे आपने सम्पूर्ण वृत्तांत सविस्तर सुना है इस वैद्य ने भी उसे मोदी के बुखारे में फेंकदिया और मोदी ने

जाय उसे बाज़ार में दीवार से लगाके खड़ाकिया उस ब्योपारी ने उसे चोर समझ दो चार धौलें बड़ेवेग से लगाईं कि वह पृथ्वी पर गिरपड़ा उसने जाना यह मेरे हाथ से मरगया स्वामी यह वह कथा है जिसे मैंने आपके सन्मुख अपने प्राण छुड़ाने के लिये कही अब आप नीति से विचारकर आज्ञादें उसमें मैं प्रसन्न और वर्तमानहूं चाहे आप वध कीजिये अथवा प्राणदान दीजिये ख़लीफ़ा काशगर दरज़ी से यह सुन बहुत प्रसन्नहुआ और कहा इस दरज़ी को साथियों समेत छोड़दो यह सब निर्दोष हैं और मैं इस पंगुल और नाई के छहों भाइयों समेत वृत्तान्त सुन बहुतहर्षित हुआ वास्तव में यह कथा इस कुबड़े के चरित्र की अपेक्षा अत्यन्त अद्भुत है परन्तु मैं चाहताहूं कि इस लोथ के गाड़ने और तुम चारों मनुष्यों के विदा होनेके प्रथम उसी नापित को जिसकी कथा के कारण सब छूटे देखूं अभी तो इस नगर में उसका मिलना कुछ कठिन नहीं तदनन्तर उस ख़लीफ़ा ने निज सेवकों को आज्ञा दी इस दरज़ी के साथ जाय उस नाई को तुरन्त मेरे सन्मुख लाओ वह दोनों उसे ढूंढ़ते ढूंढ़ते बहुत काल में उसे पाकर ख़लीफ़ा के सन्मुख लाये उसकी अवस्था नव्वे वर्षकी थी और दाढ़ी भवें उसकी हिमके सदृश श्वेत और नासिका बहुतलम्बी और कर्ण उसके बहुत अवस्था के कारण लटकते थे ख़लीफ़ा उसके विचित्ररूप को देख बेवश हँसपड़ा और कहा मैंने सुनाहै तुझे अति विचित्र कथा स्मरण हैं मुझे इच्छा है कि तेरे मुख से उनमें से एक कथा सुनूं नाई ने प्रणामकर विनय की हे स्वामी, प्रणतपाल, दुःखभञ्जन! जो कुछ मुझे आज्ञाहो उसके पालने में मैं तत्परहूं परन्तु प्रथम एक मेरा प्रश्नहै आशा रखताहूं कि उसके वर्णन करनेके लिये मुझे आज्ञा दीजिये ख़लीफ़ा ने कहा वह क्याहै नाई ने कहा इस यहूदी वैद्य और दरज़ी और इस कुबड़े को जो लेटा है यहां एकत्र होने का क्या कारण है ख़लीफ़ा ने कहा तुझे इस प्रश्न से क्या प्रयोजन है उसने कहा जिससे आप को मालूमहो कि मैं अल्पभाषीहूं ख़लीफ़ाने सुशीलतासे कुबड़े और चारों मनुष्योंकी सम्पूर्णकहानी जो कुबड़ेकी हिंसाके अपराधी ठहरेथे

सविस्तार यथातथ्य वर्णनकी उस नाई ने उसे आदि से अन्तपर्यन्त सुन इस विधि से शिर हिलाया जिससे सब कोई समझे इसने इस विषयमें कोई बात निकाली परन्तु उसे प्रकट नहीं करसका तदनन्तर उसने कहा वास्तव में यह कथा अद्भुत और ललित है मैं चाहताहूं उस कुबड़े के समीप जाय उसे भलीभांति देखूं तदनन्तर वह कुबड़े के निकट जाय पृथ्वी पर बैठगया और उसका शिर अपने दोनों रानों पर रख शोचविचार ठट्ठामार हँसा इतना हँसा कि पीछे को गिरपड़ा और कुछ ख़लीफ़ा का भय न किया फिर उठ बहुत काल पर्यंत हँसाकिया और कहा इस कुबड़े की ऐसी कथा है कि मनुष्य इसे स्वर्ण के जल से लिखें उस नाई की बातें सुन संपूर्ण मनुष्य आश्चर्यितहुये और परस्पर कहनेलगे यह नाई यातो विक्षिप्त है अथवा वृद्धावस्था को प्राप्तहोनेसे स्वल्पबुद्धि होगयाहै काशग़र के ख़लीफ़ा ने भी विस्मित हो पूछा हे अल्पभाषी बुद्धिमान् महापुरुष! तेरे इसविधि के हँसने का क्याकारण है उसने उत्तरदिया आपकी शीलता और दयावान् चित्त की शपथ खाके कहताहूं कि यह कुबड़ा नहीं मरा अभी इसमें प्राणहैं यदि मैं इस बचन को सत्य न दिखाऊं तो मैं दुर्बुद्धि और विक्षिप्तहूं यह कह उसने ओषधियों का सन्दूकचा जिसे वह सर्वदा अपने निकट रखताथा खोला उसमें से किसी वस्तु के तैल की शीशी निकाल बहुतकाल पर्यन्त कुबड़े के कण्ठ में मर्दन करतारहा अनन्तर किसी यन्त्र से कुबड़े का जबड़ा खोल उस के कण्ठ में मोचना लेगया और उससे पकड़के मछली का कांटा उस कुबड़े के तालू से निकाल सबको दिखाया क्षणमात्र में उस कुबड़े ने अपने हाथ पाँव फैलाये और नेत्र खोले इसके विशेष कितने ही चिह्न उसकी सजीवता के जानपड़े काशग़र का ख़लीफ़ा और सम्पूर्ण मनुष्य कुबड़े के जी उठने से जो एकरात दिन ज़मीन में पड़ारहा था अत्यन्त आश्चर्यित और आनन्द को प्राप्तहुये तदनन्तर ख़लीफ़ा ने आज्ञा दी कि यह सब कुबड़े और नाई की कथा लिखी जावे और मेरे कोश में रक्खीजावे इसके विशेष आज्ञा दी दरज़ी, वैद्य, मोदी और फरंगी, व्यापारी कि उन्होंने कुबड़े के

नम्बर २५ मुतअल्लिके सफ़े ३४४ द्वि·भा·

चित्र बादशाही मकान और अबुलहसन और अत्तार देख रहे हैं ॥
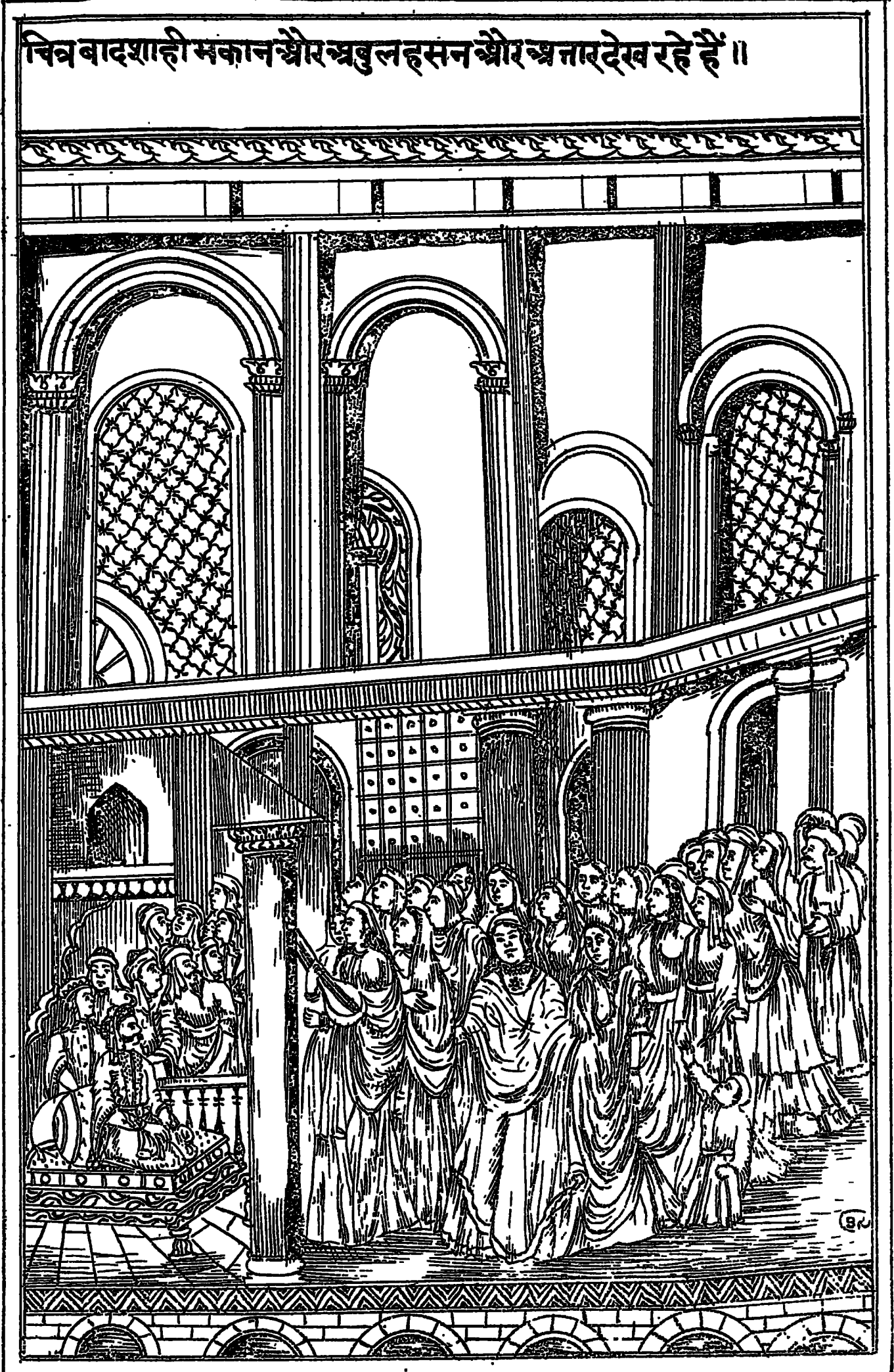
विषय में बहुत दुःख और क्लेश पाया बहुमूल्य पारितोषिक दे विदा करो और नाई का कुछ मासिक नियतकर आज्ञा दी मेरी सभा में उद्यत रहाकर वज़ीर की बड़ीबेटी कुबड़े की कहानी समाप्तकर चुप होरही तब दुनियाज़ाद उसकी छोटी बहिन ने उससे कहा हे रानी! तुमने क्या अच्छी कहानी कुबड़े की कही मैंने तो जानाथा वह दीन कुबड़ा वास्तव में मरगया था परन्तु उस नाई को धन्य है जिसने अपनी बुद्धिमत्ता और यत्न से उसे फिर जिलाया हिन्दुस्तान के बादशाह शहरयार ने कहा मैं भी नाई के भाइयों और पंगुल की कहानी सुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ शहरज़ाद ने अपनी बहिन दुनियाज़ाद से कहा यदि बादशाह मुझे प्राण दान देगा तो मैं बका के पुत्र अबुलहसन और बादशाह हारूंरशीद की प्यारी शमशुन्निहार नाम की कहानी कि वह कुबड़े के चरित्र से लालित्यता में न्यून नहीं कहूंगी उस बादशाह ने उस कहानी के सुनने के लिये मलका को उसदिन भी न मारा और नियमानुसार बादशाह सभा में जाय निज राजकाज करनेलगा तदनन्तर दूसरी रात्रि प्रातःकाल के एक मुहूर्त पहिले उस नियमित समयपर दुनियाज़ाद ने अपनी बहिन से कहा उस कहानी को वर्णनकर सो वह इस भांति कहनेलगी॥

अबुलहसन नामक शाहज़ादा और बादशाह हारूंरशीद की प्यारी शमशुन्निहार का चरित्र॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीद की सल्तनत में बुग़दाद नगर में एक पंसारी था बड़ाधनवन्त और सुन्दर और उसका अन्तःकरण उसके रूप अनूपसे भी उज्ज्वल वहां के प्रतिष्ठित और राजसभा के अधिष्ठाता उसका अतिसत्कार करते यहां तक कि उसका विश्वास हारूंरशीद ख़लीफ़ा पर्यन्त भी विदित था बादशाही महल की छोटी छोटी बांदियां प्रत्येक विषयमें उससे व्यवहार रखतीं और वह भी उनकी याचित वस्तुओं को तुरन्त देता सो उन स्त्रियों के सर्ववसन आभूषण और रत्न आदि उसीके द्वारा मोल लिये जाते उसकी सुशीलता और ख़लीफ़ा की मेहरबानी के कारण सर्वपुर के अधिष्ठाताओं के पुत्रों की आवागच्छ उसकी दूकान पर रहती और प्रत्येक उसपंसारी

से प्यार मित्रता रखता मुख्य उनमें से एक बक्का का लड़का अबुल-हसन नामक जो पारस के बादशाह के घराने में से था उससे बहुत प्यार और मित्रता रखता और दिनको पहरभर उसके निकट बैठा रहता वह पंसारीभी औरोंसे अधिक उसका आदर करता यहशाहज़ादा अत्यन्त सुन्दर रूपवान् था जो कोई स्त्री पुरुष उसे देखता सो मोहित होजाता इसके विशेष बड़ागुणवान् गानविद्या, कविता आदि में अति निपुण था यदि वह कभी बाजा बजाता वा गानकरता उसके सुनने के निमित्त बहुतसे मनुष्य एकत्र हो उसकी प्रियवाणीसे आनन्दित हो मग्न होजाते एक दिन वही शाहज़ादा उसीकी दूकानपर बैठा था सो क्यादेखा कि एक सुन्दरी चितकबरे ख़च्चर पर सवार और दश दासियां उसके आगेपीछे चली आती हैं और सब के मुख वस्त्रसे ढके हैं और उस स्त्री की कमर में स्वच्छपटुका बँधा है जिसके गिर्द चार अंगुल के प्रमाण चौड़ी लैस टँकीहुई और उसके वस्त्रों में नानाप्रकार के बड़े २ हीरे मोती जड़े उस सुन्दरी का रूप इतना विचारना चाहिये जिसकी बाँदियां और सखी सहेलियां पूर्णमासी के चन्द्रमा को लज्जा देतीथीं निदान वह सुन्दरी चन्द्रमुखी, गजगामिनी उसी दूकान पर किसी आवश्यकता के निमित्त आई वह पंसारी उसे देखतेही दौड़ा और अगवानी कर निज दूकान पर बैठाया और पारस के शाहज़ादे ने औसर पा कमख़ाब से मढ़ीहुई तिपाई लेजाय उसके चरणकमलों के नीचे रक्खी और नम्रतापूर्वक प्रणामकर उस क़ालीन को चूमा जो उस सुन्दरी के चरणों के नीचे था तदनन्तर जब उस सुन्दरी ने वहांपर अपना घर समझ अपने मुख से वस्त्र उतारा तब चन्द्रमुखी की मनहरण छवि को देखतेहीं काम ने औसर पाय शाहज़ादे के हृदय में ऐसे बाण मारे कि जिससे वह अति विह्वल होगया वह सुन्दरी भी शाहज़ादे को देख मोहरूपी अग्नि से जलने लगी निदान वह दोनों प्रेमी परस्पर प्रेम-जाल में फँस बिरहसागर में मग्नहुये उस सुन्दरी ने शाहज़ादे का खड़ारहना अनुचित समझ बैठनेकेलिये कहा शाहज़ादा उसकी आज्ञानुसार उसीके समीप बैठगया परन्तु चित्रसमान अपनी प्यारी

को टकटकी बांध देखरहाथा वह सुन्दरी उसकी अधैर्यता को समझ तुरन्त उठ खड़ी हुई और पंसारी के कान में प्रथम तो अपने आने का कारण कहा तदनन्तर उस तरुण के निवासस्थान का पता चिह्न पूछा पंसारी ने कहा हे गजगामिनि ! यह नवकिशोर बका का पुत्र अबुलहसन नामक पारस के बादशाह के घराने में से है इसीका पिता और दादा वहांका अन्तिम बादशाह था प्रायः वहांकी शाहज़ादियां ख़लीफ़ा के घराने में ब्याहीगई हैं वह सुन्दरी उसके उच्च जाति का हाल सुन अत्यन्त हर्षितहुई और पंसारी से कहा मुझे इस नवकिशोर से भेंट की अतिलालसा है सो तुम सर्वदा कराद्दिया करना मैं निज मन्दिर को सिधारतीहूं अमुक दास को बुलाने के लिये तुम्हारे निकट भेजूंगी तुम इसको अवश्य अपने संग लाना मैं चाहतीहूं यह मेरी पुष्पवाटिका और भवन की सैर करे तो इसका चित्त प्रसन्न रहे चलती समय फिर शाहज़ादे के लेआने की ताकीद की और बचनबन्ध कर चलीगई पंसारी जो सुबुद्धि और चतुर था उस मृगनयनी का मनोरथ समझकहा मैं अवश्य इसे लाऊंगा तदनन्तर वह चन्द्रमुखी, चम्पकवर्णी बिदाहो चली शाहज़ादा उसे बड़ी बिह्वलता से देखाकिया जब वह दृष्टि से गुप्तहुई उस मार्ग को विक्षिप्त की नाईं ताकता रहा पंसारी ने उसे बहुत समझाया कि मित्र कुशल तो है मनुष्य तुम्हें इस कुदशा में देख हँसेंगे इस चिन्ता को तज और अपने चित्त को दूसरी ओर लगा उसने कहा जो मेरे अन्तःकरण के कष्ट को जानों तो विश्वास है मुझे न बरजोगे मैं उस सुन्दरी चन्द्रमुखी की प्रीति में बेवशहूं परमेश्वर के वास्ते बताओ यह कौन है और इसका मन्दिर कहांहै पंसारी ने कहा मेरेप्यारे यह सुन्दरी शमशुन्निहार नामक ख़लीफ़ा की प्यारी है शाहज़ादे ने कहा शमशुन्निहार*इसका नामरखना बहुत उचितहुआ क्योंकि वह सूर्य के सदृश है पंसारी ने कहा ख़लीफ़ा इसे अत्यन्त प्रीति से रखता है और मुझे आज्ञाहै जो जो वस्तु यह मांगे तुरन्त इसे लादीजियो और प्रत्येक बिषय में इसीकी प्रसन्नता मुख्य जानियो तदनन्तर

* यामिनी भाषा में शमशुन्निहार मध्याह्न के सूर्य को कहते हैं ॥

पंसारी ने उसे बहुतसे नीच ऊंच दिखाके चाहा कि इसे उसकी प्रीति से हटावे परन्तु वह उसीके प्रेमरूपी अग्नि में ऐसा विह्वल था कि उसे किसीका उपदेश फलदायक न होता निदान वे इसी वार्त्ता में थे कि शमशुन्निहार ने निज मन्दिरमें पहुँच एक दासी को उसके बुलाने के निमित्त भेजा उस दासी ने पंसारी के कान में कहा शीघ्रचलो हमारी स्वामिनी ने तुम्हें और शाहज़ादे को बुलायाहै वे सुनतेही उसके साथहुये वह दासी उनको ख़लीफ़ा के महल में लेगई उस मन्दिर के एक ओरको शमशुन्निहार के मुख्य रहनेकी जगह थी उसने दोनों को एक सूक्ष्म द्वार से लेजाय एक स्थान पर बैठाया क्षणमात्रमें एक सेवकने आय स्वर्ण रूपे के थाल बिछाय भांति भांति के व्यञ्जन उनपर परसे जिनकी सुगन्ध से चित्त प्रसन्न हुआ वही दासी उन्हें भोजनस्थान में लेगई जब वे भोजन से निश्चिन्त हुये एक दासी मद्य लाई और पारी पारी से उन दोनों को पिलाई तद-नन्तर स्वर्ण का लोटा लाय उनके हाथ धुलवाये और नानाभांति की अतर की शीशियां आईं उन्हों ने भलीभांति अपने वस्त्रों पर अतर मला फिर वही विश्वासित दासी आई और उन्हें वहां से उठा उत्तम उत्तम रत्नखचित बारहदरी में लेगई वह बारहदरी गुम्मज़ के सदृश थी जिसके एक ओर श्वेत संगमरमर के दो खम्भे थे और उन खम्भों के नीचे पशु पक्षी के प्रियचित्र चित्रितथे उस बारहदरी के फ़र्श में अति विचित्र फूल रंगबरंगे कढ़ेहुये और उन दो खम्भों में नीचे की ओर अति सुंदर सूक्ष्मअल्मारियां बनी थीं जिनमें चीनी, बिल्लौर, मूसी, पत्थर आदि के अतिस्वच्छ और शोभायमान पात्र रक्खेथे और उन सब पात्रों पर स्वर्ण से अति उत्तम प्रियचित्र और सुलेख लिपि थी और ऊपर की ओर के खम्भों में किवाड़ उनपर सुन्दर बरामदे थे उन दरवाज़ों से चहुँओर बाग़ देखपड़ता और उस बाग़ की धरती पर रंगीनपत्थर का फ़र्श था और बारहदरी के दोनों ओर दो दिव्य सरोवर थे जिनसे सैकड़ों फ़व्वारे छूटते उस बाग़ में सफल वृक्षों पर हज़ारों पक्षी बुलबुल हज़ारदास्तान के स-दृश अपनी मनोहरवाणी से चहक रहे थे वह पंसारी और शाहज़ादा

उस मनोहर और स्वच्छ मंदिर को बैठे देखते थे इतने में बहुतसी स्त्रियों का यूथ और बाँदियां अतिसुन्दरी स्वच्छ वस्त्राभरण पहिने आय बारहदरी की सुनहली चौकियों पर जो वहां बिछी थीं बैठगईं वे स्त्रियां साजनिकाल तय्यारकर आज्ञाकी राह देखतीरहीं तद-नन्तर वह दोनों भी एक बरामदे के नीचे जहांसे वह सब उनको देख सकें बैठगये और अपनी दाहिनी ओर रत्नजटित सिंहासन देखा पं-सारी ने विचारांश पूर्वक मालूम करके शाहज़ादे से कहा यह स्थान शमशुन्निहार के बैठने का है यद्यपि यह मन्दिर ख़लीफ़ा के भवनों से सम्बन्धितहै परन्तु उक्त ख़लीफ़ा ने शमशुन्निहार ही के अर्थ ब-नाया है ख़लीफ़ा को और बाँदियों से अधिक इससे प्रीति है उसे आज्ञा है स्वाधीनहो जहां चाहे पूछे बिना चलीजाय ख़लीफ़ा भी सन्देश पहुँचाये बिना उसके निकट नहीं आता तुम कुछ चिन्ता न करो विश्वासहै शमशुन्निहार शीघ्र आती होगी और तुम्हें अपनी दासियों से राग सुनवाकर बहुत प्रसन्न करेगी पंसारी यही वार्त्ता शाहज़ादे से करताथा कि एक बांदी ने आय उन स्त्रियों के यूथ से गाने बजाने के लिये कहा वे सब अपने अपने साजों को उठाय ब-जाने लगीं कोई केवल साज बजाती और कोई स्वर मिलाय गाती शाहज़ादा उनका गाना और सरस मोह के गीत सुन मूर्च्छित हुआ इतने में शमशुन्निहार के आने की ख़बर हुई और शाहज़ादा भी चैतन्य हुआ प्रथम वही दासी दश कहारियां अपने साथ लाई उन्होंने उस रत्नजटित सिंहासन को उठा पंसारी और शाहज़ादे के समीप लाकर बिछाया तदनन्तर और बहुतसी हब्शिने आय पंक्ति बांध खड़ी हुईं और बीस गानेवालियां सिंहासन के सन्मुख खड़ीहो गाने बजाने लगीं और दश बांदियां अतिरूपवती समआयु उसी द्वार पर जहां से दश हब्शिने कहारियां निकलीथीं जाय उसी सु-न्दरी की राह देखती रहीं इतने में वही चन्द्रमुखी, गजगामिनी उसी यूथ में होके धीरेधीरे चकोरगति से इधरको आनेलगी यद्यपि वह सब सम स्वरूपथीं परन्तु उस कोमलांगी का रूप अनूपसर्वोपरि था वह निज हस्तकमलों को दो सखियों के कन्धों पर रक्खे शिर से

चरण पर्यन्त रत्न परे धीरे धीरे उसी रत्नजटित सिंहासन पर सुशो भित हुई और सैन से उन दोनों को प्रणाम किया उन दोनों ने भी प्रणामकिया तदनन्तर उस चम्पकवर्णी ने उन स्त्रियों को जो गाती बजातीथीं आज्ञादी आगे आओ वह सब अपने २ स्थान से उठ चलीं इतने में हब्शिनियों ने उनके बैठने की चौकियां वहांसे उठा बरामदे के निकट जहां ये दोनों पंसारी और शाहज़ादा बैठे थे बि- छादीं वे सब यथोचित पंक्तिबांध बैठगईं तदनन्तर शमशुन्निहार ने उनमें से एक को मोह के राग गाने की आज्ञादी सो उसने उसी विषय का सरसराग गाया शमशुन्निहार ने उसको अपने और शाह- ज़ादे की दशा के सदृश समझा शाहज़ादा अधैर्यहो उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ उसी स्त्री से बांसुरी ले प्रीति और मोह के व्यथा युक्त राग बांसुरी की ध्वनिके साथ बहुकाल पर्यन्त गाया किया जब वह गाचुका शमशुन्निहार भी उसीभांति बांसुरी की ध्वनिपर गाई जिससे मोहरूपी अग्नि शाहज़ादे के चित्त में एक से शतगुण अ- धिक प्रवेशहुई शाहज़ादे ने दूसरी बेर गाना आरम्भ किया इस बेर प्रथम से अधिक प्रियस्वरों से गाया निदान मोहरूपी अग्नि ऐसी उनके मनमें भड़की कि वे दोनों बेवश होगये शमशुन्निहार निज सिंहासन से उठ बारहदरी की ओर चली और शाहज़ादा भी उसके संग वहींपहुँचा और वह दोनों अति विह्वलता में परस्पर कण्ठ से लगगये और उसी आनन्द में मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरपड़े परन्तु बाँदियों ने दौड़कर दोनों को सँभाला और बारहदरी में दोनोंको लेजाय उनपर बेदमुश्क का नीर छिड़का शमशुन्निहार ने चैतन्य होतेही पंसारी को पूछा कि वह कहां है पंसारी अकेला बैठाहुआ इस दशा को देख अत्यन्त चिंतायुक्त और विस्मित था देखिये इसका परिणाम क्या होताहै यदि खलीफ़ा सुनपावे तो हम तीनों को बध करडालेगा शाहज़ादे ने कहा शमशुन्निहार तुम्हें स्मरण करती है तुरन्त वहांआया शमशुन्निहार ने कहा मैं तेरा अतिगुण मानतीहूं उसने दोनोंको अधैर्य देखकहा मुझे बड़ाआश्चर्य है भेंट होने पर भी तुम अधैर्यहो शमशुन्निहार ने कहा प्रीति का पन्थ निरालाहै न

तो प्यारों को भेंट में आनन्द और न बियोग में सुख उनमें न तो भेंट की शक्ति है और न बियोग की शमशुन्निहार ने एक दासी को सैनकी वह तुरन्त नानाप्रकार के व्यञ्जन लाई और शमशुन्निहार ने शाहज़ादा और पंसारी समेत सरुचि भोजन किया फिर शमशुन्नि· हार सुरा का पात्र ले भलीभांति गानकर पीगई और दूसरा पात्र शाहज़ादे को दिया उसने भी उसीप्रकार गाके पानकिया इसी आ· नन्द मङ्गल में एक बांदी ने शमशुन्निहार से धीरेसे कहा स्वामिनी सेवकों का प्रधान मसरूर ख़लीफ़ा का सन्देशा पहुँचाने के लिये आया है पंसारी और शाहज़ादा दोनों यह बचन सुनतेही कांपने लगे और उनके मुख पर हवाइयां उड़नेलगीं शमशुन्निहार ने उनको धैर्य दे उस बांदी से कहा कि तू जाय मसरूर को बातों में लगा जब तक मैं शाहज़ादे को न छिपालूं फिर उसे बुलाऊंगी वह तो उधर को चलीगई शमशुन्निहार ने आज्ञादी कि सबद्वार बारहदरीके बन्दकरो और परदे जो बाग़ की ओर हैं सब छोड़दो शाहज़ादे और पंसारी को एकओर बारहदरी के बैठाय कहा यहां तुम आनन्दपू- र्वक सावधानता से बैठो और उस ओरके द्वार को बन्द करदिया कि बाहर से मालूम न हो अनन्तर आज्ञा की कि वह सब गानेवाली स्त्रियां पूर्ववत् गावें बजावें यह प्रबन्धकर आप सिंहासन पर बिराज- मानहुई और उस बांदी से कहा अब मसरूर को अपने साथलेआ तुरन्त मसरूर बीस सेवकों सहित जिनके गले में अतिस्वच्छ रत्न जटित सुनहले कण्ठे पड़े थे आया और प्रणाम किया उस समय वह निज सिंहासन से उतर मसरूर की ओर आई और पूछा तेरा आगमन क्योंकर हुआ उसने कहा ख़लीफ़ा की ओर से यह संदेशा लायाहूँ कि ख़लीफ़ा आज्ञा देते हैं कि मैं तुम्हारी भेंट बिना नहीं रहसक्ता तुम्हारे मंदिर में आने की इच्छा रखताहूं शमशुन्निहार यह सुन हर्षितहुई और कहा मेरी ओर से ख़लीफ़ा को कहियो मैं वर्त- मानहूँ जब आपका मन चाहे आइये यह कह निज दासियों को आज्ञा दी तुरन्त फ़र्श आदि जैसी कि ख़लीफ़ा के आगमन पर त- य्यारी होती है करो और मसरूर से कहा क्षणमात्र में तय्यारी हुई

जातीहै कुछकाल में खलीफ़ा आवें ऐसा न हो कि शीघ्रता में कोई बात भूलजाऊं यह कह मसरूर को उसके साथियों सहित बिदा किया और आप आंसू भर शाहज़ादे के ढिगगई पंसारी उसे रुदन करते देख बहुतडरा ऐसा न हो कि भेदखुलगयाहो जिससे यहरोती है उधर शाहज़ादा आनन्द में यह बिघ्न देख ब्याकुल भया और उसे चिन्तित देख रोनेलगा इतनेमें एक बिश्वासितदासी ने आय कहा बैठी क्याहो सेवकोंका यूथ चलाआताहै क्षणमात्र में खलीफ़ा भी आते हैं शमशुन्निहार ने ऊर्ध्वश्वास खींचकहा हे बिधाता ! तू कैसा कठोर और निर्दयीहै कि कैसीजल्दी तूने परस्पर बियोग किया उस दासी से कहा इन दोनों को उस मकानमें जो बाग़ के कोणसे मिलाहुआ टेकरस नदीके तटपरहै लेजाय बैठा और बाहर से ताला लगादे अवसर पाय दूसरे द्वार से उनको गुप्त निकालियो अनन्तर शाहज़ादे को कंठ से लगाय बिदाकिया और आप खलीफ़ा की अगवानी के लिये खड़ी हुई वह दासी उन दोनों को उसी मकान में लेजाय छोड़आई और उन्हें बहुतसा धैर्यदिया कि तुम्हें यहां किसी भांतिका भय नहीं रात्रि को अवकाशपा तुम्हें यहां से बा-हरलेजाऊंगी यह कह वह तो चलीगई वे उठके चहुँओर भ्रमते कि कहींसे निकलनेका मार्गपावें परन्तु किसी ओर से बाहर निक-लने का मार्ग न मिला अकस्मात् सवार और पैदलों को जो ख़-लीफ़ा के आगे चलेआते थे देख अतिब्याकुल हुये अनन्तर बहुत सा प्रकाश देखा कि एकओरसे बाग़में चलाआताहै घबड़ाकर उस प्रकाश को देखनेलगे तहां समायु सेवक मोम के दीपदान हाथों में लियेहुये हैं उनके पीछे सौ से अधिक अनुचर शस्त्र सहित पंक्ति बांधेहुये खलीफ़ा की रक्षार्थ हैं उनका यह नियम था जब खलीफ़ा किसी स्त्री के घर रात को जाता तो वह उसकेसाथ रहते फिर क्या देखा उन सबके पश्चात् खलीफ़ा उसके दाहिनी ओर सेवकों का प्रधान मसरूर चलाआता है शमशुन्निहार खलीफ़ा की अगवानी को जाय खड़ी भई और बीस अतिसुन्दर और स्वच्छ सखियां सोरहों शृङ्गार और बारहों आभूषण धारणकर शमशुन्निहार के

पीछे खड़ी बाजेगाजे बजा बड़े मीठे मीठे स्वरों से गान कररहीं हैं जब देखा कि ख़लीफ़ा समीप पहुँचा शमशुन्निहार ने अपनाशिर ख़लीफ़ाके चरणों पर रखदिया ख़लीफ़ा शमशुन्निहार को देख हर्षित हुआ और कहा हे परमप्यारी ! अपना शिर उठा और मेरे निकट आ मैं तुम्हारे देखनेकी अतिलालसा रखताहूं शमशुन्निहार शिर उठाय ख़लीफ़ाके सन्मुख बैठी और एक गानेवालीको गानेके वास्ते सैन से आज्ञादी उसने दो भांति के राग गाये जिसमें अत्यन्त प्रीति की तपन और बिरह था ख़लीफ़ा समझा कि इसने शमशुन्निहार की आज्ञानुसार इसप्रकार का राग गाया और यह सब तपन मेरे ही वास्ते हैं और बास्तव में वह राग शाहज़ादे की बिरह का था निदान शमशुन्निहार उसी राग के अनुराग में धैर्य न धरसकी गिरने लगी दासियों ने दौड़के उसे थांभा और बारहदरी के भीतर लेगई उधर पंसारी भी शाहज़ादे की कुदशा देख कि वह भी मूर्च्छा खाय गिरपड़ा उसे भी सँभाला इतनेमें वही बांदी उसके निकट फिर आई और कहनेलगी अब तुम्हारा यहांपर रहना उत्तम नहीं मैं सभा का रँगढँग अच्छा नहीं पाती पंसारी ने कहा देख शाहज़ादे की यह दशाहै क्योंकर हम यहांसे जासक्तेहैं वह बांदी शाहज़ादे को मूर्च्छित देख दौड़ीगई और जल लाय उसपर छिड़का जब उसने सुधिसँभाली पंसारी ने कहा हम दोनों पकड़े जावेंगे अब यहांसे निकल जाना उत्तम है सो वह दासी और पंसारी शाहज़ादे को पकड़ बाहर द्वार पर्यन्त लेगये और नहर के तटपर कि नदी से लगी थी पहुँचे वहां उस बांदी ने धीरे से हांकदी एक मनुष्य नाव खेताहुआ उनके समीप लाया वह दोनों उसमें सवार हुये और बांदी कूलपर खड़ी रहगई और केवट नाव को वहां से शीघ्र खेके नदी में लेगया पंसारी शाहज़ादे को धैर्य देता और कहता हमको बहुतदूर जानाहै तुम अपने को सँभालो ऐसा न हो कि रौंद के लोग मार्ग में मिलके हमें पकड़ें इतने में वह कूलपर पहुँच नाव से उतरे पंसारी ने शाहज़ादे को अत्यन्त मलिनरूप पाया और उसमें चलने की शक्ति न देख बहुत घबड़ाया और चिन्ता करनेलगा अब क्या कीजिये इतने

में उसे सुधिहुई हां मेरा यहां एक मित्र रहताहै उसके घर पर्यन्त जिसभांति होसके पहुँचा चाहिये निदान शाहज़ादेको खींच खांच वहां तक लेगया उसका मित्र उसे देखतेही दौड़ा और अपने मन्दिर में लेजाय उन्हें बैठाया और पूछा इस समय तुम कहांजातेहो पंसारी ने कहा एक मनुष्य जिससे मुझे रुपये लेने थे भागा चाहताथा मैं यह सुन उसके ढूंढ़ने को गया इस मनुष्य को जिसे तुम मेरे साथ देखतेहो मार्ग में भेंटहुई परस्पर वार्त्ता कर मालूमहुआ कि यह उस मनुष्य को भलीभांति जानता और बतादेगा अत्यन्त कृपा से मेरे साथ हुआ यद्यपि इसके परिश्रम में सन्देह नहीं परन्तु वह मेरेहाथ न लगा निदान हम वहांसे लौटके चले आते हैं दैवयोग से यह मार्ग में रोगीहोगया सो निरुपायहो तुम्हारे मन्दिर में आये और चाहते हैं कि प्रातःकाल पर्यन्त यहीं रहें उसके मित्र ने यह वृत्तान्त सुन और उसकी कुदशादेख अतिचिन्ताकी और उसकी आरोग्यता के लिये यत्न करनेलगा पंसारी ने कहा औषध की कुछ आवश्यकता नहीं यह रोग प्रायः इनको होजाया करताहै और आप से आप अच्छे होजाते हैं केवल इनको सोने की इच्छा है उसके मित्र ने एकबड़े बिशाल हवादार मकानमें लेजाय उन्हें सुलाया शाहज़ादे ने सोतेही स्वप्न में क्या देखा कि शमशुन्निहार खलीफ़ा के सन्मुख मूर्च्छित है यह स्वप्न देख चौंका और अत्यन्त ब्याकुल हुआ और पंसारी इस शोच में था कहीं रात्रि शीघ्र ब्यतीतहो तो भोर होतेही कुशलपूर्वक अपने घरमें पहुँचूं घर के लोग चिंता करतेहोंगे क्योंकि पंसारी कदाचित् कहीं रात्रि को न रहताथा निदान पंसारी भोर होते ही निज मित्र से बिदाहो शाहज़ादे को लियेहुये अपने मन्दिर में पहुँचा और सावधान हो निजकुटुम्ब से वह सब वृत्तान्त कहा और ऐसे भयङ्कर स्थानसे बच आने के लिये ईश्वर का धन्यवाद किया दो तीन दिन शाहज़ादा पंसारी के घर में रहा तिस पीछे उस के नातेदार उसे उठाके वहां से लेगये शाहज़ादे ने बिदाहोते समय पंसारी से कहा मेरी ओरसे तुम बेसुध न रहना शमशुन्निहार का वृत्तान्त मुझे अवश्य कहला भेजना जबसे मैंने उसे स्वप्न में मूर्च्छा-

बश देखाहै तबसे मैं अत्यन्त ब्याकुलहूं उसने कहा भाई घबड़ाओ नहीं बिश्वास है वह दासी अभी आय वहां का बृत्तान्त बर्णन करेगी पंसारी दो दिन के पश्चात् शाहज़ादे के देखने को गया उस को उसीभांति ब्याकुल ठण्ढी श्वास लेते और रोते देखा उसके मित्र चहुँओर बैठे हैं और बैद्य यत्न कररहे हैं उस समय पर्यन्त उसे किसीका उपाय लाभकारी न हुआ इसीप्रकार वह अचैतन्य पड़ाहै परंतु पंसारीका शब्दसुन उसने नेत्रखोले और उसे देख मुसकराया वह दोप्रकार से हँसा एक यह कि उसे देख वह प्रसन्नहुआ दूसरे बैद्यों के उपाय पर कि वह रोग के जानने बिना अपना काल ब्यर्थ नष्टकरते हैं फिर सम्पूर्ण मित्रों और बैद्यों को बिदाकिया केवल पं-सारी को अपने निकट बुलाय कहा प्रीति दिनप्रतिदिन बढ़तीजाती है और उस मृगनयनी, चम्पकबर्णी का बियोग क्षणप्रतिक्षण हृदय में शालताहै सब कुटुम्ब मेरी यहदशा देख रोतेहैं मित्रों के एकत्र होनेसे अधिक ब्याकुल रहताहूं लज्जासे किसीको कुछ नहीं कहसक्ता केवल तेरे देखने से मुझे धैर्य हुआ परंतु तुम मुझसे कोई बात गुप्त न रखना क्या शमशुन्निहार का कुछ समाचार लायेहो क्योंकर उस की दासी को तुमने पाया और उसने तुमसे क्या कहा पंसारी ने उत्तर दिया अबतक वह नहीं आई और कुछ हाल वहां का नहीं जानता यह सुन शाहज़ादा रोनेलगा पंसारी ने कहा हे शाहज़ादे! परमेश्वर के वास्ते रुदन मतकर ऐसा न हो कि बेर बेरके रोने से यह भेद खुलजावे तो महाकष्ट होगा शाहज़ादे ने कहा मैंने अपने चित्त को बहुत थांभा परन्तु आंसुओं से बश नहीं वह सर्बदा गि-रतेरहते हैं पंसारी ने उसको बहुत सा धैर्य दे कहा शमशुन्निहार कु-शलपूर्बक है तुम और कुछ न बिचारो उसने किसीको भेजने का अवसर नहीं पाया होगा बिश्वासहै कि सायंकाल को कोई न कोई वहां से अवश्य आवेगा निदान पंसारी उसे इसी भांति धैर्य दे बिदा भया जब वह अपने मन्दिर में पहुँचा उसने शमशुन्निहार की दासी को अपने घर बैठादेख परस्पर प्रणाम के पश्चात् उससे शमशुन्नि-हार की क्षेमकुशल पूछी बांदी ने कहा प्रथम तुम अपना हाल बर्णन

करो क्योंकि बिदाहोती समय हमने शाहज़ादे को कुदशा में देखाथा पंसारी ने सम्पूर्ण बृत्तान्त मार्ग का और शाहज़ादे की ब्याकुलता का उससे प्रकटकिया दासी ने शाहज़ादे की दशासुन कहा यही उन का भी हालहै जब मैं तुम्हें बिदाकर मंदिर में गई मैंने उसे मूर्च्छित पाया किसी उपायसे चैतन्य न हुई और ख़लीफ़ा भी उसके निकट बैठाहुआ बिस्मित था और प्रत्येक दासी बिशेष मुझसे पूछताथा तुम्हें इसके मूर्च्छा का कारण मालूमहै हमने भेद को गुप्त रखकर कहा हम कुछ नहीं जानतीं अनंतर हम सब रोते धोते रहे निदान अर्धरात्रि को वह चैतन्यहुई उस समय ख़लीफ़ा ने पूछा शमशुन्नि-हार तेरी ऐसीदशा क्यों होगई थी उसने कहा स्वामी आपने इस दासी को इससमय आय कृतार्थ किया परंतु मैं अत्यन्त अभागीहूं कि मेरी यह दशा होगई कुछ आपकी सेवा न करसकी किंतु मेरी यह दशा देख आपको चिंता उपजी ख़लीफ़ाने कहा मुझे तेरे अन्तः-करण की प्रीति भलीभांति सूचितहै चैतन्यरह फिर कोई ऐसीबात न हो जिससे तेरी यह दशा होजावे इस रात्रि को तू इसी स्थान पर रहियो अन्य मंदिर में जानेकी इच्छा न कीजियो ऐसा न हो जो चलनेसे तुम्हें कुछ कष्ट हो निदान जब ख़लीफ़ा वहांसे चलागया शमशुन्निहार ने सैनसे मुझे निकट बुलाय तुम्हारा बृत्तान्त पूछा मैंने उसे धैर्यदे कहा कि वे आनन्दपूर्बक यहां से गये और शाहज़ादे की मूर्च्छा का हाल उससे न कहा तौभी उसने रोके कहा हे शाहज़ादे! मुझे तेराहाल मालूम नहीं कि तुझपर क्या बीतता है इतनाकह फिर मूर्च्छाबश होय मेरीगोद में लेटगई दासियों ने जो वहां बर्त-मान थीं दौड़के उसपर बेदमुश्क का नीर छिड़का तो तनक सचेत हुई मैंने कहा हे सुन्दरी, कोमलांगी! क्या तुम अपने प्राण दोगी और हम सबको अपनेसाथ मारोगी तुम्हें उसी शाहज़ादे की सौगंद है जिसकी प्रीति में तुम्हारी यह दशा हुई किञ्चित् अपने प्राण पर दयाकरो और दूसरे कार्य में अपना मन बहलाओ तब उसने आंख खोल मुझसे कहा मैं तेरी सेवा और उत्तम उपदेश का अतिगुण मानतीहूं परन्तु क्या करूं मैं अपने बश में नहीं फिर उसने सम्पूर्ण

बांदियों को बिदा किया केवल मुझेही अपने निकट रहनेकेलिये आज्ञा दी और रात्रि भर शाहज़ादे का नामले रोयाकिये और भोर को मैं उसे गोद में उठा उसके मुख्य बासस्थान में लेगई वहां ख़लीफ़ा के हुक्म से बैद्य उसके देखनेके निमित्त बर्तमान थे क्षणमात्र में आप भी ख़लीफ़ा वहीं आया औषध यत्न आदि आरम्भहुआ परन्तु सब ब्यर्थ हुये किन्तु रोग अधिक बढ़गया रात्रि को कुछकाल निद्रा आई अरुणोदय पर मुझे आज्ञा दी तुम्हारे निकटपहुँच शाहज़ादे का समाचार लाऊं पंसारी ने कहा तू शीघ्र जाके कह शाहज़ादा चंगा भला है परंतु तुम्हारी ब्याकुलता का हालसुन वह बहुत अधीर और ब्यथितहुआ और उसे समझाना कि ऐसा न हो जो ख़लीफ़ा के सन्मुख बेवशी में कोईबात निकलजावे जिससे हम सबपर आपदा पड़े यह कह उसे बिदाकर शाहज़ादे के निकटगया और उससे कहा शमशुन्निहारने तुम्हारी कुशल पूछने के लिये एक दासी को भेजा था जो कुछ दासी के मुख से सुनाथा सबिस्तर शाहज़ादे से वर्णन किया इतनेमें संध्या भई शाहज़ादे ने पंसारी को रात्रिभर वहीं रक्खा प्रातःकाल पंसारी अपने घर आया थोड़ीदेर न हुईथी कि वही दासी उसके ढिगआई प्रणाम कर कहा उस सुन्दरी ने यह पत्र शाहज़ादे को लिखाहै पंसारी ने उसी बांदी और पत्र को शाहज़ादे के निकट लेजाय कहा शमशुन्निहार ने तुमको पत्र भेजाहै और बांदी को तुम्हारी कुशल पूछने को भेजाहै शाहज़ादा यह सुन उठ बैठा और बांदी को सन्मुख बुलाया पत्र उससे ले आंखों में लगाया और चूम और खोल उसे पढ़ा उसमें मोह और बियोग का कष्ट लिखा था शाहज़ादे ने दूसरी बेर उसे पढ़ा और उसका उत्तर लिख बांदी को दे बिदाकिया पंसारी भी उसके पास से उठ अपने मन्दिर में आया और चिंता करनेलगा दिन २ इन दोनों की मोह में कुदशा होतीजाती है प्रतिदिवस दासी का आना और समाचारलाना और मेरा शाहज़ादे के निकट जाना मेरेवास्ते उत्तमनहीं वह दोनों प्रीति में अपने २ प्राणपर खेलतेहैं यदि यह भेद खुले और ख़लीफ़ा सुनपावे तो तत्काल मैं माराजाऊंगा और मेरे कुटुम्ब पर न जानिये

क्या आपदा और दुःखपड़े और मेरीप्रतिष्ठा मिट्टीमें मिलजावेगी इससे उत्तम यहहै तू इसनगर को तज अन्ते जा रह एकदिन वह इसी शोच बिचार में अपनी दूकान पर बैठा था एक रत्नपारखी जो उसका मित्र था उससे भेंट करने को आया वह जौहरी प्रायः शमशुन्निहार की बांदी को उसके ढिग आते और उसे शाहज़ादे के घर जातेदेख चकितहुआ कि इसका क्या कारण है और पंसारी को उस समय अत्यन्त चिन्तित पाय समझा कि इसपर कोई आपत्ति पड़ीहै जिससे यह ऐसाशोचितहै निदान उस रत्नपारखी ने उससे पूछा शमशुन्निहार की बांदी क्यों तुम्हारेनिकट आयाजाया करती है पंसारी उसके प्रश्न से भयभीतहुआ और कहा कुछ लेनदेन के लिये आतीहै जौहरी ने कहा वह ऐसे ही नहीं आती किन्तु कोई अतिगुप्त कार्य है पंसारी ने जाना इसे उस उत्तरसे बोधनहीं हुआ इससे इसे मुख्य बृत्तान्त सुनानाचाहिये सो पंसारी ने बचन ले उससे कहा शमशुन्निहार और पारस का शाहज़ादा एक दूसरे पर मोहितहै और उनका समाचार मेरे द्वारा पहुँचताहै यदि यह बृ-त्तान्त ख़लीफ़ा को पहुँचै तो ईश्वर जाने मेरी क्या दशा हो अब मैं अपने ब्यवहारियों के लेन देन का हिसाब कर बांसरा को जाया चाहताहूं कि इस दुःख से रक्षितरहूं जौहरी ने यह सुन आश्चर्य किया और उससे बिदाहो चलागया दो दिन पीछे वह पंसारी की दूकान की ओर गया उसने उसकी दूकान को बन्द देख जाना वह बांसरा को चलागया होगा रत्नपारखी को उसके चलेजाने से शाह-ज़ादे पर अतिदया उपजी और मन में कहा इस नगर में केवल उसका एकही मित्रथा वह तो यहांसे चलागया उसके न होनेसे शाह-ज़ादे पर अतिकष्ट हुआ उत्तम है कि अब तू उसकी सहायताकर यह शोच जौहरी ने शाहज़ादे से भेंट की उसने रत्नपारखीको पहि-चाना और उसका सन्मानकर उठ बैठा और कुशलपूछी और कहा मुझसे कुछ कहनेको आयेहो वा कुछ मुझसे कामहै जौहरी ने कहा हे शाहज़ादे! यद्यपि मेरी आपसे जान पहिचान कम है परन्तु मैं चाहताहूं आपकी सेवा में उद्यतरहूं इस समय मैं एकबात कहा

चाहताहूं शाहज़ादे ने कहा अच्छाकहो तब रत्नपारखी ने कहा मुझे अपना निज दास समझो और किसी भांति की मेरी ओर से चिन्ता न करो मुझे पंसारी से अधिक हितैषी और बिश्वासी पावोगे जो सेवा पंसारी किया करताथा उसीपर मैं भी उद्यतरहूंगा उसकी दूकान बंददेख मैंने जाना वह बांसरा को चलागया यदि आपको उसके चलेजानेका कारण मालूम हो तो बताइये वह क्यों यहां से चलागया शाहज़ादा जौहरी का बचन सुन पीला होगया और उससे कहा क्या तू सचकहता है कि वह यहांसे चलागया केवल उसीके कारण मुझे धैर्यहोताथा उसने मेरे वास्ते बहुत से कष्ट उठाये निदान शहज़ादा उसके चलेजाने से अत्यन्त कष्ट को प्राप्त हुआ तदनन्तर अपने सेवक को कहा पंसारी के घर पर उसके सेवकों से पूछकेआवो कि पंसारी कहां चलागया वह जाय पूछआया कि पंसारी दोदिन से बांसरा नगर को गया और यह भी उस सेवक ने शाहज़ादे से कान में कहा किसीकी दासी आपसे कुछ कहने के लिये आया चाहतीहै मैं उसे बैठाय आयाहूं शाहज़ादे ने कहा तुरंत उसे ले आ और मन में बिचारा कि वह निस्संदेह शमशुन्निहार की बाँदी है निदान वह शाहज़ादे के सन्मुख आई और वह जौहरी उसे देख उठगया वह दासी शाहज़ादे से वार्त्तालाप कर बिदा भई उसने शाहज़ादेको पहिलेसे अच्छापाया जब वहां दासी जाचुकी वह रत्नपारखी शाहज़ादे के निकट आय अपने स्थानपर बैठगया और मुस्कराय के पूछनेलगा हे शाहज़ादे ! तुम्हें राजद्वार से बड़ा ब्यवहार है वह झुंझलाय बोला कि तूने क्योंकर इसबात को जाना और तू क्या जानताहै कि यह किसकी दासी है जौहरी ने कहा मैं भलीभांति जानताहूं वह बादशाह की परमप्रिया शमशुन्निहार की दासी है और मैं उसे और उसकी स्वामिनी को भलीभांति जानताहूं वह बहुधा रत्न मोललेने के लिये मेरीदूकान पर आया करतीहै यह दासी उनकी भेजीहै और प्रायः उसे मैंने पंसारीके निकट आतेजाते देखाहै यह सुनतेही शाहज़ादे को बिश्वासहुआ जौहरी भी इसभेद को जानता है अत्यन्त भयभीत हुआ एकक्षण चुप रहा अनंतर

उस रत्नपारखी से कहा जो कुछ तुम इस भेद को जानते हो सब मुझसे कहो कोईबात मुझसे गुप्त न रखना रत्नपारखी ने अवसर पाय आदिसे अन्तपर्यंत सम्पूर्ण, वृत्तान्त सविस्तर समझाय बुझाय कहसुनाया और कहा मेरे आगमन का यही कारणहै और मुझे आपपर बहुत दया आई और इच्छा की कि आपका सेवक समान बन आपकी सेवा और सहायता जैसी कि पंसारी ने की है करूं और तुम्हारे कार्य में अपनी सबप्रतिष्ठा किंतु प्राण भी देने में संदेह न करूंगा मुझसे कदाचित् भेद न खुलेगा आप निश्चय मानिये कि मुझ ऐसा हितैषी आपके पहिले मित्र के बदले मिला निदान शाहज़ादे को उसके हित के बचनों से कुछ धैर्यहुआ और उससे खुला और अपने अन्तःकरण की बातें उससे कहने लगा परंतु यह भी कहा शमशुन्निहार की दासी तुम्हें यहां बैठेदेख कहती थी इसी पुरुष ने पंसारी को बुग़दाद के जाने का सम्मत दिया है और तुमसे वह दासी बहुत शङ्का रखती है इस हेतु से क्योंकर भेद का सम्बंध तुमसे रक्खाजावे क्योंकि उसने यहीहाल उसी सुन्दरी से कह उसके मन में भी संदेह डालाहोगा जौहरी ने कहा यहबात इस तरहसेहै जब पंसारी ने मुझसे बांसरे जाने का सम्मत लिया तब मैंने निस्संदेह उसे न बरजा और मैंने जाना कि यह पुरुष बुद्धिमान् और चतुर है अपनी प्रतिष्ठा के बचाने के अर्थ अपनापुर त्याग जाताहै तब शाहज़ादे ने कहा उसने ईर्षा के कारण तुम्हें इसबात में दोषी बनायाहै मेरेमनमें तुम्हारी ओर से कुछ मल नहीं परंतु तुम्हें उचितहै जैसा तुमने मुझे अपनी ओर से बिश्वास दिलायाहै वैसाही उस दासी को भी अपने साथ मिलालो और उसका भी बोधकरो जिसमें तुमसे प्रसन्नरहै और तुम्हारा गीला न करै इसीभांति बहुकाल पर्यंत वह दोनों परस्पर सम्मत करतेरहे कोई यत्न ऐसाभी है कि जिससे फिर प्यारों की भेंट हो फिर वह रत्नपारखी शाहज़ादे से बिदा हो अपने मंदिर में गया शाहज़ादे ने बांदी को बिदाकरती समय कहाथा अब की बार कोई पत्र मेरीप्यारीसे लिखवाय मेरे हेतु लाइयो दासी ने मंदिरमें पहुँच उस सुन्दरी से पंसारी के चलेजाने और

शाहज़ादे के दूसरे निजहस्ताक्षर पत्र के मांगने का बृत्तांत बर्णन किया शमशुन्निहार ने तुरंत एकपत्र जिससे भेंट की चाह और बि-योग का दुःख और बिरह की अधिकता और पंसारी के चलेजाने का पश्चात्ताप था लिख बांदी को देकर कहा तुरन्त जाकर यह पत्र शाहज़ादे को पहुँचा वह बाँदी पत्र ले शाहज़ादेके मन्दिर की ओर दौड़ीजाती थी दैवयोगसे वह पत्र उसके हाथ से मार्ग में गिर पड़ा और रत्नपारखी ने उसे पड़ापाया इसी बात पर जौहरी और लौंड़ी में ईर्षा उत्पन्नहुई अर्थात् वहबांदी पत्र ढूँढ़तीहुई उस स्थान पर आई जहां वह रत्नपारखी उठाय उसे पढ़ताथा लौंड़ी ने जौहरी के हाथ में पत्र देखकहा यह पत्र मेरेहाथ से यहां गिरपड़ा था तुमने इसे पाया यह पत्र मेरा है मुझे दो उस जौहरी ने उसके कहने पर कुछ भी ध्यान न किया और चुपका अपने घर चला गया वह दासी भी उसके पीछे लगीहुई चलीगई और घर में जाय फिर उस से कहा यह पत्र तुम्हारे किसी काम का नहीं उसके देदेने में तुम्हारी क्या हानि है और तुम यहभी नहीं जानते कि इसे किसने लिखा और किसको पहुँचैगा जौहरी ने पहिले बैठने की सैन की तद-नन्तर कहा मैं जानताहूं यह पत्र शमशुन्निहार ने अमुक शाहज़ादे के लिये लिख दिया है दासी यह सुन भयभीत हुई रत्नपारखी ने कहा मार्ग में मैं तो तुम्हें यह पत्र देदेता परन्तु तुझसे मुझे कुछ पूछना है सत्य कह तूने शाहज़ादे से क्या कहा क्या मैंने पंसारी को बुग़दाद से चलेजानें का सम्मत दियाहै मैं तो चाहताहूं पंसारी के बदले इस बिषय में शाहज़ादे की यथाशक्ति सहायताकरूं तू इसमें बिरुद्ध समझती है यह निस्संदेह है कि मैंनेही प्रथम पंसारी के जाने का सँदेशा शाहज़ादे से कहदियाथा वहभी पहिले मुझे अबिश्वासी समझ कुछ भेद न कहताथा निदान मुझे हितैषी और सहायतामें उ-द्यत समझ अपना समस्त बृत्तान्त मुझसे कहा और इसपर प्रसन्न हुआ कि मैं उसे सम्मतदूं और मैं तुझसे भी चाहताहूं कि तूभी मेरी इस सेवाको अंगीकार कर पंसारीके बदले मुझे समझ इसी बातपर शमशुन्निहार को भी राज़ी करना कि वह भी मुझे बिश्वासी और

भेदिया जाने यदि मेरे प्राण भी शाहज़ादे और शमशुन्निहार के काम आवें तो शंका न करूंगा प्रतिष्ठा तो क्या बस्तुहै उस बांदीने जौहरीके बचन सुन कहा शमशुन्निहार और शाहज़ादा वास्तवमें बड़े प्रतापी और भाग्यवान्‌हैं कि पंसारीके पीछे तुमसा उनको हितैषी और भेदिया मिला तुम्हारी प्रशंसा शमशुन्निहारसे कर प्रसन्नकरूंगी तब जौहरी ने पत्र निकाल उसे दिया और कहा यह जाय शाहज़ादे को दे जो कुछ वह इसका उत्तरलिखे मुझेभी दिखाती जाइयो जो कुछ हमारे तुम्हारे परस्पर प्रण हुआ है वह सब शाहज़ादे से कहना तदनन्तर वह दासी पत्र ले शाहज़ादेके समीपगई उसने उसे पढ़ तुरन्त उत्तर लिख दासीको दिया वह लौंड़ी प्रथम तो रत्नपारखी के निकट गई उसने पढ़ उसे देदिया फिर उससेभी बिदाहो शमशुन्निहारके निकट गई और उसके पत्र का उत्तरदिया और रत्नपारखी की अतिप्रशंसाकी दूसरे दिन प्रातःकालको वह फिर जौहरीके निकट आई और कहा मैंने तुम्हारी शमशुन्निहार से अतिप्रशंसा की यह सुन वह तुम से अत्यन्त प्रसन्न और हर्षितहुई कि तुम पंसारी के बदले दूतकर्म करोगे कल मेरी स्वामिनी मेरे आगमन की बाट देखतीथी कि मैंने जाय शाहज़ादे का पत्रदिया उसे पढ़ वह बहुतरोई मैंने अवसरपाय कहा हे सुन्दरी! सत्यहै कि तुम्हें पंसारी के चलेजाने से बड़ी चिन्ता हुई परन्तु मैंने और एक पुरुष इस कार्य के हेतु उद्यत कियाहै वह अत्यन्त बिश्वासयोग्यहै पंसारी से अधिक धैर्यवान्, बुद्धिमान् है यह कह मैंने तुम्हारानाम लिया और शाहज़ादे और तुमसे ब्यवहार था वहभी कह सुनाया यह सुन वह अधिक हर्षितहुई और कहा मैं चाहतीहूं कि उसको देखूं और उसीके मुख से जो बातें कही हैं सुनूं ऐसे श्रेष्ठ मनुष्य जो जाने बूझे बिना मनुष्यों के कार्यमें प्रबृत्त होते हैं संसारमें न्यून हैं और उसकी बुद्धि और चातुरता की भी परीक्षा लेलूं कि इस कार्य के योग्यहै वा नहीं तू प्रातःकाल अवश्य जाय उसे लेआ इतना कह उस बांदी ने कहा यदि चाहतेहो तो मेरे साथ शाहीमहल को चलो उस लौंड़ी की बातसुन जौहरी गूढ़ चिन्ता करनेलगा और कहा शमशुन्निहार बिचारे बिना मुझे इबनताहर

चित्र शम्स शुल्निहार और इब्नबका का कन्जाकों में घिरजाने का॥

अर्थात् पंसारी समझ वहां बुलाती है यह न समझी कि इवनताहर को केवल बादशाहही न जानतेथे किन्तु शाही दर्वाज़े के सब छोटे बड़ेभी पहिंचानतेथे कोई उसे मन्दिर के आवागमन में निषेध न करता और न पूछता मुझे तो कोई नहीं जानता क्योंकर मंदिर में जानेकी इच्छाकरूं फिर उस लौंडी ने जौहरी को बहुत समझाया और धैर्य दिया कि भाई जो तुमने कहा सो सत्य है परंतु शमशुन्निहार अत्यन्त चतुरहै कुछ तो समझ के तुम्हें बुलवाया होगा तुम कुछ चिन्ता न करो निश्शंक मेरे साथ चलो तुम्हें किसी भांति का भय न होगा इसबात का मैं ज़िम्मा करतीहूं कि तुम्हें कुशलपूर्वक तुम्हारे घर में पहुंचाजाऊंगी निदान कितनाही लौंड़ी ने उसे धैर्य दिया परंतु उसने स्वीकार न किया फिर वह बांदी शमशुन्निहार के निकटगई और जौहरी के डरनेका कारण उससे कहा शमशुन्निहार ने कुछ शोचके कहा वह सत्यकहता है मैं आपही गुप्त उसके मंदिर में जाय उसे देखूंगी तू मेरे आगमन का समाचार उसे दे वह बांदी जौहरी के समीप आई और शमशुन्निहार की इच्छाको प्रकटकिया और कहा अब तुम अपने घरसे कहीं न जाना मैं अभी उनको लिये आतीहूं निदान क्षणभर में शमशुन्निहार उसी बांदी समेत आपही रत्नपारखी के घरगई जौहरी प्रणामकर बड़े आदर सन्मान पूर्वक घरके भीतर एकान्तस्थल में लेगया शमशुन्निहार ने वहां बैठ अपने मुख से बस्त्रउतारा जौहरी उसके रूप छविअनूप, मनहरण, सकल दुखदरण, चन्द्रमुख को देख चकित हुआ और मन में कहा क्यों न राजपुत्र ऐसे मनोहर स्वरूप पर जिसको देख अप्सरा मोहित होती हैं मोहित हो फिर वह चम्पकबर्णी सब भांति से ऊंच नीच समझाय बुझाय बोली तुम्हारा परमेश्वर रक्षक है अब जाती हूं और तुम मेरे और शाहज़ादे के मध्यस्थ हो इवनताहर के सदृश हमारे भी सहायक रहना मैं तुम्हें देख प्रसन्न हुई परमेश्वर का धन्यवाद है कि उसने इवनताहर के पीछे भी हम दोनों प्रिया प्रियतमके मध्य में धैर्य देनेके लिये तुम ऐसे सुशील चतुर श्रेष्ठ पुरुषको दिया यह कह चलीगई और जौहरी शाहज़ादे के निकट गया शाहज़ादे ने

उसे दूरसे देखतेही कहा मैं तुम्हारी राह देखताथा उस दिन जो वह लौंड़ी उसी मृगनयनी के पास पत्रलाई थी उससे मुझे धैर्य न हुआ यदि शमशुन्निहार अपनी परिपूर्ण कृपा से कोई भेंट का यत्न निकाले तो निस्सन्देह मुझे धैर्यहो पश्चात्ताप है जो अब तक इवनताहर होता तो कोई न कोई अवश्य उपाय ठहरता अब उसके न होनेसे निपट निराशहूं रत्नपारखी ने यह बचन सुन उससे कहा जो मैंने आपके हितके हेतु उपाय बिचारा है दूसरे मनुष्य की सामर्थ्य नहीं है जो उसे सुनियेगा तो तुमको अवश्य धैर्य होगा जौहरी ने सब बात अर्थात् लौंड़ी को प्रसन्न करना और उसके घरमें शमशुन्निहार का आना शाहज़ादे से सबिस्तर कहा और कहा घबड़ाओ नहीं एक दो दिन में तुम्हारी उसकी भेंट होजावेगी परन्तु तुम्हारा और मेरा उसके महल में जाना उचित नहीं उसको यहीं बुलवाऊंगा और कोई बड़ामहल ठहराके तुम दोनों का वहीं मिलाप होगा शाहज़ादा जौहरी का बचनसुन हर्षितहुआ और कहा मुझे बिश्वासहै कि तुम्हारी कृपासे मेरा मनोरथ सिद्धहोगा जो कुछ मुझे कहोगे मैं करूंगा रत्नपारखी शाहज़ादे से बिदाहो अपने मंदिरमें आया दूसरे दिवस वहबांदी उसके घर आई जौहरी ने उसे देख कहा अच्छा हुआ जो तू आई मैं तेरी राह देखताथा उसने कहा क्यों कुशल तो है जौहरी ने कहा कि शाहज़ादा शमशुन्निहार के हेतु अत्यंत ब्याकुल और ब्यथितहै जिसप्रकार होसके उस कोमलांगी को ला दासी ने कहा बहुतअच्छा जिससमय कहो उसीकाल उन्हें लेआऊं क्योंकि वहभी शाहज़ादे की बिरहानलमें जैसे कि गरमबालूमें मछली डालेसे तड़फतीहै उसीतरह तड़फ रहीहै परंतु यह घर बहुतसूक्ष्महै उन दोनोंके निवास के योग्य नहीं जौहरी ने कहा एक और मेराघर अत्यन्त बिशाल बड़े आदमियों के रहने के योग्य है तू चल उसे देख और पसन्दकर उस दासी ने कहा बहुत अच्छा तदनन्तर वह दोनों उस महल में गये उसे देख बांदी ने पसन्द किया और कहा मैं अब उस सुन्दरी के निकट जाय यह सर्व बृत्तान्त कहतीहूं जो वह आनेपर राज़ी होती है तो मैं तुरन्त तुमसे आय कहतीहूं क्षणभर में वह

लौंड़ी जौहरी के ढिग फिर आई और कहनेलगी कि मेरी स्वामिनी सन्ध्याके समय अवश्य आवेगी यह कह एक थैली अशरफ़ियों की जौहरीको दी और कहा उस सुन्दरीने आज्ञादी है कि उसका यथोचित सूक्ष्मभोजन और शय्या आदि तय्यार कर रखना इतना कह वह बांदी जौहरी से बिदाभई तदनन्तर उस रत्नपारखी ने अपने इष्टमित्रों से कुछ सुनहले रुपहले पात्र और अतिदिव्य मसनद उपधान आदि सामग्री जितनी कि आवश्यकता थी मांगेकी मँगवाय उस महल को भलीभांति अलंकृत किया जब वह अपने मनोरथानुसार उसे सजाचुका और सर्व प्रकार की खानेपीने की वस्तु लाय बर्तमान की तब शाहज़ादेके समीप गया वह दिव्यबस्त्र पहिर अकेला उसके साथ हुआ जौहरी उसे ऐसी गलियों में से कि कोई न देखे उस घर में लेगया शाहज़ादा वहांबैठ शमशुन्निहार की बाट में जौहरी से बार्त्तालाप कररहा था कि शमशुन्निहार भी सायङ्काल को उसी लौंड़ी और दो और बांदियों समेत वहां पहुँची वह दोनों प्रियाप्रियतम परस्पर देख ऐसे प्रसन्नहुये कि जिसका बर्णन नहीं हो सक्ता प्रथम तो वह बिह्वलतासे एक दूसरे को देखाकिये तदनन्तर उन दोनों ने परस्पर वियोग की ब्यथा बर्णन की जिससे वह जौहरी और तीनों दासियां उसको सुन रोनेलगे निदान जौहरी ने उठके उन दोनों के आंसू पोंछे और भोजन पर बैठाया वहदोनों कुछ थोड़ा २ भोजनकर उठखड़ेहुये तदनन्तर उसी स्थान पर जहां पहिले बैठे थे आनन्दपूर्बक बिलासकरनेलगे शमशुन्निहार ने जौहरी से कहा यहां कोई बजाने की बांसुरी है जौहरी ने तो प्रथम से इस भांति की वस्तु लारक्खी थीं एकबांसुरी शमशुन्निहार को लादी वह उसकी ध्वनि में बहुत कालपर्यन्त मोह और प्रीति के ललित राग रागिनी गाई तदनन्तर शाहज़ादे ने भी शमशुन्निहार को प्रसन्न करनेके लिये उसीसमय के सुरुचित अतिमनोहर राग गाये इसी आनंदमंगलमें बड़ाशब्दसुना उसके साथही जौहरीका एकदास जो बाहर था महल के भीतर चलाआया और कहा बहुतसे मनुष्य द्वार पर एकत्र हैं और चाहते हैं कि किवाड़ तोड़कर चलेआवैं मैंने उन

से पूछा तुम कौनहो उन्होंने मुझे मारना शुरूकिया इसहेतु मैं भीतर भागआया जौहरी यह बृत्तान्त सुन अत्यन्त चिन्तित हुआ और चाहा आप बाहरजाय हाल मालूमकरे जब वह बाहर निकला क्या देखताहै कि सौ सवार हाथों में खड्ग लिये उस महलके द्वार पर खड़े हैं फिरतो उसे वहां ठहरने की सामर्थ्य न हुई और न भीतर आनेकी निदान एकपड़ोसी के घर की दीवार पर चढ़ उसके मकान में कूद-पड़ा और कहा भाई यह दशा है मुझे बचाओ निदान वह जौहरी पड़ोसी के महल में जायछिपा अर्धरात्रिपर्यन्त वह वहांसे शब्द सुना किया जब देखा अब सुनाई नहीं देता तब अपने पड़ोसी का खड्ग ले अपनेमहल में गया उसमें न तो मनुष्य देखे और न असबाब परन्तु एक मनुष्य का शब्दसुना वह कहताहै तू कौन है उसने अपने दास का शब्द सुन पूछा तू इन मनुष्यों से क्योंकर बचा उस दास ने कहा मैं इसघर के कोने में छिपाथा जब वह सब चलेगये तब मैं निकलआया स्वामी यह पहरा न था किन्तु डाकू थे कितने दिनबीते कि इन्होंने अमुक महल्ले को लूटाथा और कितनेही घरों को लूट लेगये उस जौहरी ने बिचारा कि इसकी बात की परीक्षा लेनी चाहिये यदि वह डकैतहोंगे तो इस घर की सब सामग्री और बस्तु लूटलेगये होंगे जब दालान के भीतरगया तो उसे शून्यपाया न तो शाहज़ादा न शमशुन्निहार तब बहुत रुदन किया और शिर पीटा कि अपने पड़ोसियों की बस्तु जानेसे क्याकहूंगा न जानिये उन दोनों पर कौनसी बिपत्तिपड़ी हो दास ने उसे धैर्यदिया और कहा शमशुन्निहार को शाहज़ादे सहित वहीं डाकूलेगये हैं या वहां से अपने मकान में गईहोगी और कदाचित् शाहज़ादा भी अपनें घर में पहुँचाहोगा जिन मित्रों की मँगनी बस्तु तुम लायेहो यह हाल सुन वह तुम्हें कुछ न कहेंगें क्योंकि इनडाकुओं का हाल सब पुरबासियों को बिदितहै बहुधा धनपात्रों के घरों में घुस लूटलेगये फिर उस जौहरी ने अपने मन में कहा इब्नताहर ने बड़ी चातुरता की इस बात के परिणाम को समझ यहां से चलागया मैंने अपनेही हाथों से अपने को फँसाया देखिये अब इसका क्याफलहोता है उन

दोनोंके कारण लूटगया देखिये प्राण बचतेहैं वा नहीं इतने में प्रातः-
काल भया और उस डाकेका समाचार नगरभरमें फैलगया जौहरी
के पड़ोसी और इष्टमित्र इकट्ठेहुये और उस अकस्माती हानि पर
पश्चात्ताप करने लगे और संसार की रीत्यनुसार उसे बहुत सम-
झाय बुझाय धैर्यदिया उसे किञ्चित् मित्रों की ओर से भरोसा
हुआ परन्तु उन दोनों के हेतु चिंता करता रहा कि वह अपने २
घरों में पहुँचे वा नहीं जब वह जौहरी अकेलाहुआ तो दास उसके
सन्मुख भोजनलाया परन्तु उससे कुछ खाया न गया मध्याह्न समय
उसके दास ने आय कहा एक मनुष्य आपको बाहर खड़ा बुलाता
है जौहरी ने बाहर निकल उससे पूछा तू कौनहै और क्यों आया
उसने कहा यद्यपि तुम मुझे नहीं जानते हो परन्तु मैं तुमको भली
भांति जानताहूं मेरा बड़ाकार्य तुमसे सम्बन्धित है रत्नपारखी ने उसे
अपने घर में लेजाकर हाल पूछना चाहा उसने कहा तुम अपने
दूसरे घर में चलो जौहरी ने कहा तू क्योंकर जानता है कि मेरा दू-
सरा भी घर है उसने कहा मैं उसको भलीभांति जानताहूँ तुम मेरे
सङ्ग चले आओ किसीप्रकारका सन्देह न करो मैं कुछ तुमसे कहा
चाहताहूं जिससे तुम्हें अतिप्रसन्नता होगी रत्नपारखी यहबात सुन
उसके साथहुआ और वह उसे ऐसे मार्ग में लेगया कि जिसे कोई
न जानता था और कहा इसी मार्ग से तेरेघर चोर लूटने आयेथे
वहां ठहर उससे कहा आगे चलो निदान वह दोनों वहां से आगे
चले इतनी दूर गये कि जाते २ सन्ध्या होगई और रत्नपारखी ब-
हुत थकितभया और सायङ्काल होनेसे बहुतडरा चलते २ टेकरस
नदी के तटपर पहुँचे वहांसे नाव पर सवारहो नदी के उसपारगये
वह जौहरी को बड़ी लम्बी गली में जिसे उसने कभी न देखाथा
लेगया और इसीभांति कई गली और बाज़ारों को लांघ एक द्वार
पर खड़ाभया जब वह किवाड़ खुला तो उसने रत्नपारखी से कहा
कि भीतरचल जब वह दोनों उस महल में गये तब वह किवाड़
भीतर से बंद करलियागया और एक भारी कुफ़ुल उसमें लगा तद-
नन्तर वह मनुष्य जौहरी को एक मकान में लेगया जिसमें और

दश मनुष्य बैठेथे उन्होंने जौहरीका आदर और सत्कार यथा उचित किया और अपने निकट बैठाया जौहरी लाचारी से वहां बैठगया इतने में उनका प्रधानआया और भोजन मँगवाया और उन सबों ने हाथधोये जब सब भोजनकर निश्चिन्तहुये तो उन्होंने रत्नपारखी से पूछा कभी तूने प्रथमभी हमको देखाथा उसनेकहा मैंने तुम को नहीं देखा न इस ओर आया और न यह गलियां देखीं तब उन्हों ने कहा हमसे रात्रि का बृत्तान्त जो तुझपर बीताहै सत्य २ कह जौहरी ने यह सुन आश्चर्य किया और कहा भाइयो तुमने किसी से यह बात सुनीहोगी उन्होंने कहा निस्सन्देह हमसे उस मनुष्य और स्त्री ने जो कल सायङ्काल को तुम्हारे घर में थे कहा परंतु हम चाहते हैं कि तेरे मुख से सुनें जौहरी को उससमय बिश्वास हुआ वास्तव में यही डाकू औ चोर हैं जिन्होंने मेराघर लूटा तब उसने कहा भाइयो जो कुछ हुआ सो हुआ परंतु मैं उस पुरुष और उसी सुंदरी के हेतु चिन्तितहूं यदि तुम्हें कुछ उनका बृत्तान्त बिदित हो तो कहो उन्होंने कहा तू उन दोनों की चिन्ता न कर वह दोनों कुशलपूर्वक निर्भय स्थान पर हैं यहकह उन्होंने दो मकान उसे बाहर से दिखाय कहा इनमें वह दोनों भिन्न भिन्नहैं और इन्हीं दोनों से तुम्हारा बृत्तान्त भी बिदित हुआ कि तुम उन्हें भलीभांति जानते हो और उनके बिश्वासी हो यह सुनतेही हमने उन दोनों को सन्मानपूर्बक रक्खा किसीभांति से उनको दुःख न दिया किन्तु अपनी रीति के बिपरीत हमने उन दोनों की सेवा की और कोई हम में से उनका दुःखदायक न हुआ और तुम भी हमसे अभयरहो किसीभांति का कष्ट तुम्हें न पहुँचेगा यह सुनके जौहरी को धैर्य हुआ और उन सब चोरों का बहुत गुण माना तदनन्तर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त शाहज़ादे और शमशुन्निहार का आदि से अन्त पर्यंत बर्णन किया यह चरित्रसुन वह आश्चर्यितहुये और कहा तुम सत्य कहते हो यह पुरुष बका का पुत्र अबुलहसननाम फ़ारस का शाहज़ादा है और यह चन्द्रमुखी ख़लीफ़ा की परमप्रिया है जौहरी ने कहा जो कुछ मैंने बर्णन किया इसमें बाल भर भी न्यूनाधिक नहीं

अनन्तर उन्हें विश्वास हुआ कि जो कुछ जौहरी कहताहै वह सत्य है फिर वह सब चोर पारीपारी से जाय शाहज़ादे और शमशुन्निहार के चरणों पर गिर अपना अपना अपराध क्षमा करानेलगे और कहनेलगे जो हम इसे प्रथम से जानते तो कदाचित् यह कुत्सितकार्य न करते निपट अज्ञानता में हमसे यह अपराध हुआ फिर जौहरी से कहने लगे हमको इस कर्तव्य से अत्यन्त लज्जाहुई परंतु हम सम्पूर्ण बस्तु जो तुम्हारे घरसे लाये हैं फेर नहीं सक्के क्योंकि उसमें से हमारेसाथी रात्रि को अँधियारे में लेगये हैं परंतु सुनहली रुपहली बस्तु एकस्थान पर एकत्रकर उसे दीं अनन्तर चोरोंने उन तीनोंसे बचनबंध किया कि हमारा भेद किसीसे न खुले निदान वह चोर बस्तुसहित उन तीनों को लियेहुये टेकरस नदी के तटपर आये और नाव पर सवारहो नदी के उसपार पहुँचे यह तीनों जब धरती पर उतरे उन्होंने रौंद के सवारों और घोड़ोंका शब्दसुना कि इस ओर चली आती है उन्होंने इन तीनोंको पकड़लिया और उधर चोर अपनी नाव बड़े बेग से खेके दूर निकल गये रौंद के अधिपति ने उनसे पूछा तुम कौनहो और कहां से चलेआतेहो प्रथम तो वह तीनों भयसे कुछ न कहसके निदान जौहरी ने कहा स्वामी हम तीनों इसपुर के बासी भलेमानुस हैं यह मनुष्य जो नाव में सवार हुये जाते हैं यह सब डाकू हैं सो कल हमारे घर डाका डाल सब असबाब लूटकर हमको भी पकड़लेगये थे अब हम बड़ीकठिनता से उनसेछूट अपने घर को जातेथे सो वे हमें इसपार पहुँचागये जो बस्तु हमारी लूटलेगयेथे वह सब हमको फेरदी और वह सब गठरियां उस प्रधान को दिखाईं उसने रत्नपारखी को सच्चा जान कुछ न कहा और छोड़दिया फिर शाहज़ादे और शमशुन्निहार से पूछनेलगा कि तुम कौनहो और इस सुन्दरी चम्पकबर्णी, चंद्रमुखी को कौन लाया है और इस नगर के कौनसे महल्ले में रहतेहो शाहज़ादा तो कुछ उत्तर न देसका परंतु शमशुन्निहार ने उस प्रधान को एकांत में एक ओरलेजाय कुछकहा वह सुनतेही अपने घोड़े से उतर पड़ा और प्रणाम किया तुरंत दो नावें मँगवाईं एकपर शमशुन्निहार और

दूसरी पर जौहरी और शाहज़ादे को बस्तु और अपने दो मनुष्य समेत बैठाय आज्ञादी कि इनको भलीभांति इनके गृह में पहुँचा दो वह दोनों नावें दोनों ओर चलीं मार्ग में शाहज़ादे ने उन दोनों प्यादों से कहा तुम हम दोनों को जौहरी के महल में कि अमुक मह्ले में रहताहै पहुँचादो परंतु वह प्यादे उससे कुछ प्रसन्न न थे उन्होंने जानबूझके उस नाव को बंदीख़ाने की ओर पहुँचाया इस इच्छासे कि रातभर इनको बंदीख़ाने में रक्खें और प्रातःकाल ख़लीफ़ा के सन्मुख लेजावें यह बृत्तान्त जौहरी और शाहज़ादा जान कर अत्यन्त चिन्तितहुये निदान जब उन्हें उतार बंदीख़ाने में ले गये बंदीख़ाने के अधिपति ने उनसे बृत्तांत पूछा तो जौहरी ने सम्पूर्ण बृत्तांत कहा कि रौंद के अधिपतिने तो छोड़दिया था और आज्ञा दी थी कि इन्हें घर पहुँचादो परंतु प्यादे कि जिनको हमने कुछ न दिया हमको दुःखदेने के लिये यहांलाये उसने जौहरी की बात सत्यजान अपने दो प्यादों को साथ करदिया और आज्ञादी कि इन दोनोंको शीघ्रही इनके घर पहुँचाआवो जोकि वहांसे शाहज़ादे का महल जौहरी के घर के समीपथा इसलिये प्यादों ने उन्हें पहुँचादिया और वह दोनों बिशेष करके शाहज़ादा ऐसे थकित और अशक्ति होगयेथे कि उनमें हिलनेकी भी सामर्थ्य न थी परंतु शाहज़ादे के सेवक उन दोनोंको बस्तुसहित उतारलेगये शाहज़ादे ने निजदासों को आज्ञादी कि जौहरी का असबाब उठाके उसके घर पहुँचा दो जौहरी वहांसे उठ अपने घर में आया उसके कुटुम्ब के मनुष्य रोरहे थे उसे कुशल पूर्वक देख हर्षितहुये जौहरी दो दिवस पर्यन्त निर्बलताके कारण अपनेघरसे बाहर न निकला तीसरेदिन मनबहलाने के लिये एक मित्र की दूकान पर गया वहां से लौटता था इतने में एक स्त्री को देखा कि वह सैन से बुलाती है निदान ध्यान से उसे देख जाना कि यह वही शमशुन्निहार की बांदी है मार्ग भर में इस भयसे कि कोई देख न ले बात न की चुपकाचला और वह दासीभी उसके पीछे लगीहुई चलीगई चलते चलते वह एक निर्जन मसजिद में गये उस लौंड़ी ने प्रणामके पश्चात् जौहरी से

पूछा कहो तुम चोरों से क्योंकर बचे उसने कहा प्रथम तुम अपनी और दोनों बांदियों की कुशल कहो फिर मैं भी अपना बृत्तान्त कहूंगा उस लौंड़ी ने कहा जिस समय चोर तुम्हारे घर में घुसगये तो मैंने जाना ख़लीफ़ा ने शमशुन्निहार का यह बृत्तान्त सुनके अपने नौकर उसके बधकरनेको भेजे हैं मैं प्राण के भय से मकान पर चढ़गई वह दोनों लौंड़ियां भी मुझे देख छतपर चढ़आई इसीभांतिहम तीनों कोठे कोठे चलते चलते एक गृहमें पहुँचे कि उस मकानका धनी बड़ा शीलवान् और सत्पुरुषथा हमें भयभीत और कम्पित देख अपने महलमें निवासके हेतु स्थानदिया रातभर हम वहीं रहीं भोर को हम वहांसे अपने घर में पहुँचीं बादशाही महल की लौंड़ियां अपनी स्वामिनी को न देख अत्यन्त चिन्ता करने लगीं और हमसे पूछने लगीं हमारी स्वामिनी कहांहै तो हमने उनको धैर्यके हेतु कहा कि अपनी सखीके घर रात्रिको रहगई और हमको बिदा करदियाहै और यह कहाहै कि दूसरे दिवस यहां आना यह सुन वह चुप होरही शेषरैनि हमारी बड़ी चिन्ता से कटी और सर्बदिवस भी बड़े शोचबिचार में बीता कि इस सुन्दरी के बैरियोंपर क्या आपदापड़ी कि अभीतक उसका कहीं पतानहीं जब सन्ध्याहुई मैंने नदी की ओर का द्वार घबड़ाके खोलदिया और केवट से कि जिसकी नाव वहीं लगीहुईथी कहा तू अपनी नाव उसपार लेजाय एक स्त्री को ढूंढ़ जो तुझे मिले तो उसे चढ़ाके तुरन्त यहां लेआ केवट तुरन्त वहां से किश्ती खोल उसपार लेगया अर्धरात्रिको कोई शब्द उस द्वार में मुझे सुनपड़ा मैंने दौड़के उस किवाड़ को खोला तो क्यादेखतीहूं उस नाव पर दो मनुष्य और एक स्त्री सवार हैं जब समीप गई तो मैंने अपनी स्वामिनी को पहिचाना परन्तु बहुत मुरझाई हुई थी उसमें इतनी शक्ति न थी कि नाव से उतरे तब मैं और दो दासियों ने उसे नाव से उतार महल में लाकर शय्या पर सुला दिया जब वह कुछसावधानभई तब मुझे सैन से अपने निकट बुलाय कान में कहा तुरन्त हज़ार अशरफ़ी की थैली उन दोनों प्यादों को दे बिदाकर मैंने उसकी आज्ञा पालनकी अब परमेश्वर की कृपा से अच्छी हैं और अपना सम्पूर्ण

बृत्तान्त जबसे चोर उनको और शाहज़ादे को तुम्हारे घर से पकड़ लेगये थे अपने महल प्रवेशपर्यन्त सबिस्तर समझायबुझाय बर्णन किया रत्नपारखी ने भी अपना और शाहज़ादे का बृत्तांत जो कुछ कि बीताथा कहा वह उस दासी से सब चरित्र सुन जौहरी को दो थैलियां अशरफ़ी की देके बोला उस परमरूपवती को तुम्हारी बस्तु की हानि से और तुम्हें कष्टपहुँचने से अत्यन्तपश्चात्ताप हुआ इसी हेतु दो तोड़े तुमको भेजदिये हैं और बहुतसा तुम्हें धैर्यदिया है जौहरी ने वह तोड़ेले शमशुन्निहार और उस बांदी का बड़ागुणमाना और उसे बिदाकर अपने घर में आया दूसरे दिन सबबस्तु जो अपने मित्रों से मँगनी लाया था सबको पहुँचादी और जो उसे न मिला सो बनवाके पहुँचाया जो द्रव्य शेषरहा उससे एक बड़ाबिशाल महल हर्षपूर्वक बनवाना आरम्भ किया और सायङ्काल को शाहज़ादे की भेंट के लिये गया उसके सेवकों से उसका हाल पूछा उन्हों ने कहा जबसे तुम उसे यहां लायेहो तबसे उसने कुछ भी न खाया और न किसीसे बातकी और न किसी के प्रश्न का उत्तरदेते हैं तुम चलके उनको देखो फिर जौहरी को शाहज़ादे के निकट लेगये उसने शाहज़ादे को देखा कि अपनी शय्यापर चुपचाप नेत्रमूँदे पड़ा है उसको इस दुर्दशामें देख उसको अपने हाथ से उठा बहुत धैर्य दिया और कहा मित्र तुम क्यों अपनेप्राण देतेहो शाहज़ादे ने उसका शब्द सुनकर जाना कि जौहरी है अपने नेत्र खोले और जौहरी का हाथ पकड़ प्रीतिपूर्वक दबाया और धीरे से कहा मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानताहूं कि तुमने केवल हमारेही लिये इतना कष्ट उठाया जौहरी ने कहा तुम मुझपर बड़ी कृपारखते हो इससे मैं अपने को बड़ाभाग्यवान् जानताहूं अब केवल मैं आपकी आरोग्यता चाहताहूं आप कुछ खातेपीते नहींहो इससे दुर्बलता का चिह्न तुम्हारे मुख से प्रतीत होताहै परमेश्वर के वास्ते थोड़ासा मेरेसन्मुखभोजन कीजिये तत्पश्चात् जौहरी ने पाक मँगाकर शाहज़ादे को खिलवाया शाहज़ादे ने भोजनकर हाथ धोये और एकांत में शमशुन्निहार का बृत्तांत पूछनेलगा जौहरी ने जो कुछ उस लौंड़ी से सुनाथा याथा-

तथ्य वर्णनकर कहा अब वह अच्छी है कल उसने अपनी लौंड़ी को तुम्हारे कुशलप्रश्नार्थ भेजाथा इस समयांतर में कईबेर जौहरी ने बिदाहोकर अपने घर जानेकी इच्छाकी परन्तु शाहज़ादे ने उसे न जानेदिया इतने में अर्धरात्रि व्यतीतहुई उस समय वह उससे बिदा हो घर गया और फिर प्रातःकाल शाहज़ादे के देखने को आया शाहज़ादे को उसकी भेंट से धैर्यहोताथा उसे देख उठबैठा क्षणमात्र में उसकी हानि के बदले कुछद्रव्य देनेलगा परन्तु उसने न लिया और कहा शमशुन्निहार ने मुझे कुछ भेजदियाहै जिससे मैंने अपने सब मित्रोंकी वस्तु देदी है शाहज़ादा लाचारहो चुपहोरहा जब मध्याह्न भया जौहरी ने कहा मैं बिदा होताहूं शाहज़ादे ने निरुपाय हो उसे बिदा किया जौहरी बिदा हो अपनेघर पहुँचा एक क्षण न बीता था वही बांदी रोतीहुई उसके समीपआई जौहरी ने उसके अश्रुपात और उसे कम्पितदेख पूछा कुशल तो है आज क्यों रुदन करतीहो उसने कहा कुशल क्या है हम तुम शाहज़ादे सबके सब मारे परे जो तुम्हें और शाहज़ादे को प्राणप्रिय हैं तो तुरन्त यहां से अन्य देश में चलेजाओ जौहरी ने पूछा क्या हुआ क्यों तू इतनाभय देती है तब उस लौंड़ी ने कहा कल जब मैं तुमसे बिदाहोकर घर पहुंची तो शमशुन्निहार ने उन्हीं दो लौंड़ियों में से एक को जो उस रातको तुम्हारेघर आई थी किसी अपराध पर अप्रसन्न होय उसे दण्ड देने की आज्ञादी सो वह बहुतसी मारखा अपने प्राण के भयसे उस महल से भागगई और सेवकों के प्रधान के निकट जाकरबैठी जो उस महल के रक्षार्थ ख़लीफ़ा की ओरसे नियतहैं और सम्पूर्ण रात्रिका वृत्तांत उससे कहदिया॥

दूसरे दिन दूसरी दासी उसी सुंदरी के भय से भाग ख़लीफ़ाके मुख्य महल में गई ईश्वर जाने वहां ख़लीफ़ा से क्या कहा तो उसने बीस दास भेज शमशुन्निहार को पकड़बुलवाया न जानिये अब उसे मारडाला वा क्या किया मैं इस दशा को देख यह हाल कहने के लिये तुम्हारे समीप आईहूं यह बचन सुनतेही रत्नपारखी की सुधि बुधि जातीरही और रोता पीटता शाहज़ादे के निकटगया तो

शाहज़ादा उसे इस दशा में देख बहुतघबड़ाया और उसे अपने नि-कट बुलाय पूछा उसने जो कुछ उसबांदीके मुखसे सुनाथा शाहज़ादे से कहसुनाया शाहज़ादा प्रथम तो मूर्च्छावश हुआ जब चैतन्य हुआ तो जौहरी से पूछा अब क्याकिया चाहिये उसनेकहा इसके विशेष और कोई उपायनहीं कि आपभी सवारहो इवनाज़पुर की ओर चलो नहीं तो एक क्षण में खलीफ़ा के चपरासी मुझे तुझे प-क लेजावेंगे और खलीफा हमदोनों को अत्यन्त निरादरकर बध करेगा शाहज़ादे ने तुरन्त कई तीव्रगामी घोड़े तय्यारकर मँगवाये और कई सेवक सिपाही आदि और निजकोश से अशरफ़ियां और आभूषण जौहरीकी कमर में बँधवा अपनी माता से बिदाहुआ और जौहरी समेत इवनाज़की ओर चला और रात्रि दिन वह दोनों चले गये दूसरे दिन विश्रामके लिये प्रहर दिन चढ़े सेवकों और घोड़ों के थकने के कारण घोड़ों से उतर घनेवृक्षों की शीतलछाया में ठहरगये क्षणमात्र न बीताथा कि डाकुओं ने आके उन्हें लूटा और शाहज़ादे के सेवकों ने उनसे सामनाकिया परंतु सब मारेगये शाहज़ादा और जौहरी जो अलगरहेथे उनसे बचगये और सम्पूर्ण द्रव्य वस्तु और घोड़े और उनकेशरीर से वस्त्र उतारकर भाग गये जब वे दूर चले गये शाहज़ादे ने जौहरी से कहा मुझसा अभागा कोई संसार भरमें न होगा प्रतिक्षण नवीन नवीन आपत्ति पड़ती हैं यदि हमारे धर्ममें अपने को बध करडालना निषेध न होता तो अपने को मारडालता जौहरी ने कहा हरि की इच्छा पर प्रसन्नहोय सन्तोष रखना चाहिये इसीमें कुछ लाभ होगा मनुष्य की क्याशक्ति है जो परमेश्वर की इच्छा को मेटसके यहां ठहरना उचित नहीं किसीप्रकार से अन्य स्थानपर जाय ठहरना चाहिये जहां किञ्चित् सावधान होजावें शाह-ज़ादे ने कहा अब मैं तो यहांसे नहीं उठता शमशुन्निहार के ध्यान में इसी स्थान पर मरके रहजाऊंगा उसके बिना जन्म अकार्थ है जौ-हरी ने उसे बहुत समझायबुझाय वहांसे उठाया और आगे लेचला कई योजन पहुँचने के पश्चात् उन्हें एक मसजिद मिली उसको खुला पाके भीतर गये शेषरात्रि वहीं बिताई प्रभात होतेही एकसत्पुरुष

वहां आया उसने मसजिद में बन्दना करने के पश्चात् शाहज़ादे और जौहरी को मसजिद के कोने में बैठेहुये देखा वह उनके समीप गया प्रणामकर कहा मुझे तुम परदेशी जानपड़तेहो जौहरी ने कहा सत्यहै कल रात्रिको बुग़दादसे आतेथे मार्ग में डाकू सर्व धन वस्तु लूट लेगये सो तुम हमें देखलो उस पुरुष ने कहा जो तुम मेरे घर चलो तो मैं सर्व भांति से तुम्हारी सहायता करूं वह यह समझे ऐसा न हो कि ख़लीफ़ा ने हमारे पकड़ने के लिये प्रसिद्धपत्र दिया हो और यह पुरुष हमें पहिचान इसी बहाने से अपने घर लेजाव इसीभांति बिचारनेलगे उसने कहा शोचने का क्या कारणहै मेरे साथ क्यों नहीं चलते जौहरी ने कहा हम दोनों नग्न हैं बस्त्र बिना लज्जा आती है दिन में मनुष्यों के बीच में नंगे क्योंकर जावें सो उस सत्पुरुष ने दो चादरें लाके उन दोनोंको दीं और उन्हें क्षुधित जान अपनी दासी के हाथ भोजन भेजदिया उन्होंने कुछ भी भोजन न किया विशेष शाहज़ादा कि अत्यन्त निर्बल था कुछ न खा सका उसी दुर्गति में पड़ारहा जौहरी शाहज़ादे के मुख का बर्ण पलटा देख भयभीत हो उसके जीवनसे निराश हुआ वह सत्पुरुष दो तीन बिरियां उनको आकर देखजाता अन्त समय जौहरी ने सत्पुरुष से कहा मेरा साथी बहुत रोगी होगया है तुम इसकी आकर सुधि लेना यदि इसका हाल औरतरह का होजावे तो मेरी सहायता अवश्य करना जब वह पुरुष वहां से चलागया तब शाहज़ादे ने जौहरी से कहा मेरा यह अन्तसमय है और तुम मेरे साथ के साक्षी हो कि मैं उसकी प्रीति में अबतक दृढ़हूं जो कुछ मुझे उसके मोह में बीता उसे मैंने अत्यन्त हर्ष समझा मुझे अब कुछ पश्चात्ताप नहीं केवल यही कि मैं अपनी प्रिया दयावान् माता के निकट न गया अन्तउपदेश यह है जब मेरे नेत्र मूंद जावें और मैं स्वर्ग को सिधारूं तो मेरी लोथ को इसी सत्पुरु के घर में छोड़ मेरी माता के निकट जाना और उससे समाचार कहना कि तेरा पुत्र अमुक स्थान पर कालबश हुआ और उसने यह अन्तोपदेश किया है कि मेरी माता यहां आय बुग़दाद को मेरी लोथ लेजावे और अपने

सन्मुख स्नान करा मेरे शरीरको अपने निकट गाड़े इतना कह उसने देह त्यागदी जौहरी बहुत शिर पीट रोया दूसरे दिन उसके उपदेशानुसार उसकी लोथ सत्पुरुष के घरमें रख बटोहियों के साथ बुग़दादमें पहुँचा पहिले अपने महलमें जाय वस्त्र बदले अनंतर स्वर्गबासी शाहज़ादे के घरगया और चौरव्यथा और उसके मरने और अंतोपदेश का समाचार उसकी माता से जाय कहा उसकी माता बहुत रो पीट शोककर शाहज़ादे की लोथ लानेको चली दूसरे दिन जौहरी कि शाहज़ादे के शोक में बहुत रोया करता था अपनेद्वार पर टहलरहा था कि कालेवस्त्र पहिरे एक स्त्री उसके निकट पहुँची जौहरी ने उसे पहिचाना कि यह वही दासी है जो शमशुन्निहार की ओर से आया जाया करतीथी उसे अपने घरमें लेगया और उससे शमशुन्निहार के मोहमें शाहज़ादे का देहान्त और उक्त स्वर्गबासी के उपदेशानुसार उसकी माता को लोथ लेने जाना वर्णन किया और हाहा खा रोनेलगा वह दासी भी बहुत रोई फिर उस लौंड़ी ने कहा शमशुन्निहार का भी शाहज़ादे के मोहमें देहांत हुआ फिर वह दोनों मित्रों के लिये रोनेलगे जौहरी ने पूछा कि खलीफ़ा ने उन दोनों बांदियों से वह समाचार सुन शमशुन्निहार की क्या गति की दासी ने कहा क्या अद्भुत संयोगहुआ जब खलीफ़ा ने२०दास भेज उसे पकड़वा बुलवाया उसे रोते और तड़पते देख उसका क्रोध शान्त होगया किन्तु उसे अपने कण्ठ से लगा बहुत प्यार कर धैर्य दिया और उसे पारितोषिक दे आदर सन्मान पूर्बक बिदा किया उस स्वर्गबासिनी ने अपने महल में आय मुझसे कहा मैं तेरे हित से बहुत प्रसन्नहुई अब मैं घड़ी पल की होरहीहूं मैं उसकी दशा और बचन सुन बहुतरोई और धैर्यार्थ उससे कहा ऐसा बचन मुख सें न निकालो परमेश्वर तुम्हें जीता रक्खे हम सब तुमपर वारीहोके मरजावें उसीदिन संध्या को गानेवालियों का समूह लेके खलीफ़ा शमशुन्निहार के महल में आया और खलीफ़ा के हुक्म के अनुसार गाना बजाना आरम्भहुआ खलीफ़ा शमशुन्निहारको अपनी बग़ल में ले बारहदरी में जाबैठा वह मोह के रागों से मूर्च्छा को प्राप्त भई

नम्बर २७ मुतअ़ल्लिके सफ़ै २७६ द्वितीय भाग

चित्र अप्सरा का किसोते हुये कमरुज्जमां को देखकर मुख चूमा चाहती है

कई क्षण पीछे प्राण त्यागदिये खलीफ़ा समझा यह अभी मूर्च्छा-
वश है उसने और हम सबने बहुतसे यत्न किये पर उसने फिर श्वास
न ली जब खलीफ़ा को बिश्वास हुआ कि यह मरगई तब बहुत
रोया और आज्ञादी कि सब गानेबजानेके साज तोड़डालो इतनी
आयसु पातेही वह आनन्दधाम क्षणमात्र में शोकागार होगया
और चारों ओर से गीतों के स्वरों के बदले रोनापीटना होनेलगा
खलीफ़ा शोकसागर में मग्नहो वहां अधिक न ठहरसका उठके अ-
पने महल में चलागया मैं रातभर उसी मृतक के निकट बैठी रही
फिर मैंने अपने हाथों उसे नहलाया धुलाया प्रातःकाल होतेही ख-
लीफ़ा की आज्ञानुसार शमशुन्निहारको उस बड़े मक़बरेमें जो पहिले
उसने खलीफ़ा से अपने हेतु मांगलिया था गाड़दिया अब मेरा
यह मत है कि जिससमय शाहज़ादे की लोथ पुरमें पहुँचे शमशुन्नि-
हार के ही साथ गाड़ीजावे क्योंकि यदि उनकी जीवन में यथेष्ट
भेंट प्राप्त न हुई तो मरके तो एक स्थान पर रहें जौहरी ने कहा कि
किसकी शक्ति है जो खलीफ़ा की आज्ञा बिना उसको उस मक़बरे
में गाड़सके दासी ने कहा यह कुछ कठिन नहीं क्योंकि खलीफ़ा ने
शमशुन्निहार की सब चेलियों का मासिक नियतकर मुझे उस मक़-
बरे की रक्षार्थ नियत किया और आज्ञा दी है कि जैसे तुम उसके
जीने पर उसके सन्मुख हाथ बांधे खड़ी रहती थीं उसीभाँति अब
भी उद्यतरहो और मुझे वहां का परिपूर्ण अधिकार दियाहै इसके
विशेष खलीफ़ा को भी इनदोनों के मोहका हाल मालूम है उन
दोनों बांदियोंने यह बृत्तान्त सुननेपर भी उससे कुछ न कहा किन्तु
उसके साथ अधिक प्रीति और मोह करनेलगा निदान जब लोथ
शाहज़ादे की बुग़दाद में पहुँची जौहरी ने यह हाल बांदी से कहा
वह उसे उस मक़बरे में लेगई और हज़ारों स्त्री पुरुष उसकी लोथ
के साथ होगये उस बांदी ने शाहज़ादे की माता से आज्ञाले उसे
शमशुन्निहार के पहलू में रख उसे गाड़दिया तब से संसार भर के
दूरसमीप के मनुष्य उन दोनों की सच्चीप्रीति का बृत्तांत सुन उसी
मक़बरे पर आते और आशीर्बाददेते और अपनी अपनी कामना

के लिये पूजते हैं जब शहरज़ाद ने यह कथा सम्पूर्ण की दुनिया-ज़ाद ने बहुत प्रशंसाकर कहा बहिन क्या अच्छा चरित्र तूने कहा अब कोई और नवीन कथा कहो उसने कहा यदि खलीफ़ा प्राण-दान दे तो मैं कल क़मरुज़्ज़मा शाहज़ादे की कथा कहूंगी वह इससे भी अद्भुत और ललित है खलीफ़ा शहरयार ने उसी कथा की लालसा से उसका बध न किया कि उस मनोहर कथा को भी सुनलेना चाहिये॥

क़मरुज़्ज़मां और बदौरा का वृत्तांत॥

फ़ारस दी से बीस दिन के रस्ते पर एक द्वीप चीलडन खाल-दान नामक ख्यात था उस टापू में कई देश और नगर अति सुन्दर बसे हुये थे पूर्वकाल में वहां का शाहज़मां नामक अति प्रतापवान् तेजोवान् बादशाह था उसकी चार ब्याहता स्त्रियां और सात बांदियां थीं परमेश्वर ने उसे बहुत द्रब्य और नानाप्रकार के ऐश्वर्य दिये थे और उसे किसीप्रकार की चिन्ता न थी परन्तु पुत्र न था जो उसके राज्य का वारिस होता बादशाह सर्वदा इसी चिन्ता और शोच में रहता और कहा करता कि बड़ा खेद है मेरे पीछे कोई मेरा सन्तान नहीं जो मेरे सिंहासन पर बैठे एकदिन उस बादशाह ने अपने मंत्री से कहा मेरी आयु ब्यर्थ बीतीजाती है अभीतक कोई पुत्र नहीं जो मेरे पीछे सिंहासन पर बैठे मन्त्री ने बिनयकी मनुष्यको उचित नहीं कि किसी अवस्था में परमेश्वर की देनसे निराश होवे आप एकाग्रचित्त होय ध्यानपूर्वक परमेश्वर से इस बिषय में प्रार्थना कीजिये और नगर के तपस्वियों और योगियों की अति सेवा कीजिये याचकों को यथाशक्ति दान दो उनके आशीर्बाद से परमेश्वर तुमपर कृपाकरेगा बादशाह ने मन्त्री के उपदेशानुसार दान देना आरम्भ किया और अपने सम्पूर्ण देश के तपस्वियों और योगियों को बुलवाय उनसे इस कार्य में सहायता मांगी निदान उनके आशीर्बाद से एक स्त्री के गर्भरहा नौ महीने बीते पुत्र उत्पन्नहुआ बादशाह ने बड़े हर्ष से असंख्य अशरफ़ियां भिक्षुकों को दीं और अपने सेवकों को बहुमोल्य पारितोषिक कृपा किये इतना पुण्यकिया

चित्र कसलकस पिशाच का बदूरा को उड़ा ले जाते हुये ॥

कि उसकी दातव्य से देश भर में कोई याचक न रहा सबको धनाढ्य करदिया वह पुत्र अत्यन्त स्वरूपवान् उत्पन्न हुआथा इस वास्ते उसका नाम क़मरुज़्ज़मां रक्खा जब वह लिखने पढ़ने योग्य हुआ उसके हेतु बड़े ब. विद्वान् और गुणज्ञ नियतकिये थोड़ेही कालमें वह शाहज़ादा सर्वप्रकार की विद्या और गुण में निपुणहुआ जब वह पन्द्रहबर्ष का हुआ बादशाह ने उसका बिवाह करना चाहा सो एकदिन क़मरुज़्ज़मां को अपने निकट बुलवाय कहा मैं चाहताहूं कि तुम्हारा बिवाह करूं तुम्हारी क्या इच्छा है शाहज़ादा बिवाह का नाम सुन मनमें बहुत अप्रसन्नहुआ और बहुतकाल पर्यन्त चुपचाप खड़ारहा बादशाह ने कहा बेटा तूने मेरे प्रश्नका उत्तर न दिया उसने बिनयकी कि पिता आपकी आज्ञा के बिरुद्ध कोई बात कहनी निपट ढिठाई है मुझे बिवाह की इच्छानहीं क्योंकि मैंने पुस्तकों में स्त्रियों के छलमयी चरित्र बहत पढ़े हैं बादशाह शाहज़ादे के इस उत्तर से बहुत अप्रसन्न हुआ और कहा एक बर्ष का सावकाश तुम्हें दिया जाताहै उस अवसर में समझबूझ मेरे प्रश्न का उत्तर दीजियो सो एक बर्ष के पश्चात् बादशाह ने शाहज़ादे से वही प्रश्न किया शाहज़ादे ने फिर भी अंगीकार न किया और स्त्रियों की बहुत सी बुराइयां बर्णनकीं बादशाह ने अप्रसन्नहोय शाहज़ादे को कुछ दण्ड देनाचाहा परन्तु मन्त्री के बिनय करनेसे एक बर्ष की और अवधि दी कि उस अवधि में शाहज़ादे ने फिरभी न माना निदान बादशाह ने अपने महलमें जाय उसकी माता से यह हाल बर्णन कर कहा तुम शाहज़ादे को समझाओ और उसे बिवाह करने पर राज़ी करो नहीं तो मैं उसे इस आज्ञाभंग करने में दण्ड दूंगा शाह-ज़ादे की फ़ातिमा नामक माता ने क़मरुज़्ज़मां को बुलवाय ऊंच नीच समझाय बिवाह का उपदेश दिया और कहा बेटा तुम्हें पिता की आज्ञा भंगकरनी किसी अवस्था में उचित नहीं उनकी प्रसन्नता प्रत्येक बिषय में मुख्यहै और वह कौनसा ऐसा कार्य है कि तुम बि-वाह नहीं करते यहरीति तो हमारे पुरुषा और जातिपांति में सदा चलीआती है किसी मनुष्य को इसरीति का उल्लंघन करना उचित

नहीं क़मरुज़्ज़मांने वही बात जो पिता से कही थी माता से भी कही और स्त्रियों की बुराई वर्णनकी फ़ातिमा ने कहा सब स्त्रियां कुचाली नहींहोतीं बहुधाकरके पतिब्रता भी होती हैं जो तुम ने स्त्रियों के चरित्र पुस्तकों में पढ़े हैं मैंने भी उन्हीं पुस्तकों में कुचाली पुरुषों के बृत्तांत पढ़े हैं इससे यह प्रतीति नहीं कि सब पुरुष अकर्मी हों इसी हेतु सम्पूर्ण स्त्रियों को भी कुकर्मी जानना नीति नहीं निदान बहुत काल पर्यन्त माता ने उसे समझाया परन्तु उसने स्वीकार न किया इसीभांति कई वर्ष ब्यतीत हुये शाहज़ादे ने बिवाह अङ्गीकार न किया बादशाह ने दुःखित होय आज्ञा दी इसे अमुक मकान में जो अत्यन्त सूक्ष्म और पुराना और उसमें बहुत अँधियाराहै लेजाय क़ैद करो पुनः बस्त्रों के दो चार जोड़े और कई पुस्तकें भेजदो और दासी को उसकी सेवार्थ नियतकर कहा कि शाहज़ादे के समीप कोई जाने न पावे रात्रि दिन उसी निर्जनस्थान में क़ैदरहे और उसका द्वार मूंदेरहे जब क़मरुज़्ज़मां उसी मकानमें क़ैदहुआ सायङ्कालपर्यन्त हर्षपूर्वक पुस्तकें देखा किया और रात्रि को शय्या पर जाय आनन्दपूर्वक शयन किया दैवयोग से उस मकान में एक कुवां था उसमें राक्षसों के बादशाह दिमरटशाह की बेटी मैमूं नामक अप्सरा रहती थी आधीरात्रि को मैमूं अप्सरा उस अपने नियम के अनुसार कुयें से बाहर निकली और संसार के अद्भुत चरित्र देखने के लिये उड़नेलगी तो वहां प्रकाश देख आश्चर्य में हुई और उसी किवाड़ को जिसे दास ने बाहर की ओर से मूंदा था और आप अलग सोरहा था वह अप्सरा अपनी मायाबल से कोठे के भीतर गई वहां सुनहली शय्या और उसपर स्वच्छ बिछौना बिछा देख अधिक आश्चर्य किया बिशेष जब उसकी दृष्टि क़मरुज़्ज़मांपर पड़ी उसके रूप अनूप को देख मोहित हुई क़मरुज़्ज़मां का आधामुख और कुछ शरीर दुपट्टे से छिपा था उसने वह बस्त्र उठा उसको शिर से चरण पर्यन्त देखा और धीरे से उसके मुख और भाल को चूमा फिर उस का मुख उसीभांति ढांक बाहर निकल आई और आकाश की ओर आभ्रमण्डल में उड़ी उसने किसी राक्षस के पंखों का शब्द सुन वहीं

ठहर पुकारी कौन जाता है इधर आ शाहमरशाह का बेटा नहश ना-
मक किसी ओर उड़ाजाता था मैमूं की आवाज़ सुन तुरन्त आया
अप्सरा ने उससे कहा सत्य कह तू इस समय किधर से आता है
और कहां जाता है और इस रैनि में तूने सांसारिक चरित्र क्या देखे
उसने कहा हे शाहज़ादी! मैं इससमय चीन देश से कि वहां से दूर
समीप के सम्पूर्ण द्वीप दिखाई देते हैं उड़ाआताहूं चीन के बादशाह
का नाम ग़ोर है उसकी बेटी जिसका नाम बदौरा है ऐसी सुन्दरी
और रूपवती है कि उसके सदृश इस समय में हमारीजाति और
मनुष्यगणों में कोई नहीं है और न होगी उसकी अलकैं चन्द्रमुख
पर घटा के सदृश लटकती हैं और केशों में अति सुन्दर दामिनी
सदृश शोभायमान दिखाई देता है भाल अतिउज्ज्वल दर्पण के स-
दृश नयन अति तिरीछे और मदभरे और शुक की सी नासिका और
सूक्ष्ममुख और बिम्बाफल के समान रक्त ओष्ठ और दन्त मानो
मोतियों की दुलड़ी बाणी अतिप्रिय और मिष्ट मनहरण अतिकोमल
और मनोहर बचन उसकी छाती अतिउज्ज्वल और बड़ी हँसमुख
मनहरणी प्रियबैनी सुखदैनी है बादशाह ने उसके हेतु सात दरजे का
महल बनवाया है करोड़ों रुपये उसके बनवाने में व्ययकिये पहिला
खण्ड बिल्लौर का दूसरा तांबे का तीसरा फ़ोलाद का चौथा पीतल
का पांचवां कसौटी के पत्थर का छठा रूपे का सातवां स्वर्ण का उस
महल के चारोंओर पुष्पवाटिका है हरप्रकार के सुगन्धित पुष्प और
नानाप्रकारके सफ़ल बृक्ष और स्थान स्थानपर फव्वारे और कमल-
युक्त सरोवर और उनके तटपर सघन बृक्ष अतिसुन्दर जिनसे धूप
प्रवेश नहीं करती और उनके नीचे मन्द मन्द शीतल सुगन्धित वायु
बहती है वह स्थान अतिरमणीक और शोभायमान है देश २ के
शाहज़ादे और बादशाह उस चन्द्रमुखी गजगामिनी चम्पकबर्णी की
सौन्दर्यता को सुन विवाह का नेग देते हैं पर उसकी अद्भुत रीति
है कि उसके पिता ने उसे इस विषय से स्वाधीन कियाहै परन्तु
शाहज़ादी को विवाह से अत्यंत ग्लानि है उसके माता पिता ने उसे
बहुत समझाया परंतु वह स्वीकार नहीं करती और कहती है जो

तुम इस बिषय में तकरार करोगे तो खड्ग मार मर जाऊंगी इसीहेतु बादशाह ने उसे एक मकान में बन्द कररक्खा है और दश बृद्धा स्त्रियां उसकी सेवाकरती हैं और उन सब पर शाहज़ादी की दाई जिसने उसे दुग्ध पिलाया था प्रधान है अब न तो वह कहीं निकल सक्ती है न कोई उसके निकट जासक्ता है और बादशाह ने अपनी पुत्री को बिक्षिप्त समझ निज देश में यह प्रसिद्धपत्र दिया है कि जो बैद्य वा ज्योतिषी वा मंत्रज्ञ इसे अच्छाकरे मैं उसीके साथ इसका बिवाह करदूंगा पुनः उस राक्षस ने मैमूं अप्सरा से कहा मुझे उस शाहज़ादी के बन्दहोने से बड़ा खेदहै ऐसी रूपवती होनेपर ऐसे कष्ट को प्राप्तहो मैमूं ने शाहज़ादी के रूपकी प्रशंसासुन राक्षस से भी कहा हे दुष्ट, अयोग्य ! तूने एक तुच्छ लड़की की इतनी प्रशंसा की यदि तू शाहज़ादे को कि जिसको मैंने देखाहै और उसे प्यार करती हूं देखे तो जाने कि रूप और सौन्दर्य उसी को कहते हैं और बिश्वासहै कि तूभी उसे देख चीन की शाहज़ादी को भूलजावेगा नहश ने पूछा हे सुन्दरी ! वह शाहज़ादा कहां है अप्सरा ने उत्तर दिया वह यहांसे अतिसमीप है और वह भी बिवाह के अङ्गीकार न करने से कष्ट उठाता है तबसे वह पुराने और निर्जन स्थान में जहां मैं रहतीहूं बन्दहै नहश ने कहा यदि मैं उस शाहज़ादे को देखूं तो बिदित हो कि वह दोनों सुन्दरतामें तुल्य हैं वा न्यूनाधिकहैं परंतु मुझे बिश्वास है कि चीन की शाहज़ादी कहीं अधिकरूपवती होगी अप्सरा ने कहा क्यों झख मारता है वह शाहज़ादी मेरे शाहज़ादे के पासंग को भी नहीं पहुँचती निदान उस राक्षस और अप्सरा में बहुतकाल पर्यन्त तकरार रही अन्त को राक्षस ने कहा हे सुन्दरी ! तुम्हें क्योंकर बिश्वासहो कि मैं सच्चाहूं वा झूठा जो कहो तो मैं उसे लाके दिखाऊं कि तुम्हें मेरे कहनेका बिश्वासहो और फिर मैं तुम्हारे शाहज़ादे को देखूं और उन दोनोंका अन्तरबिचारूं अप्सरा ने कहा बहुत अच्छा तू उसे मेरे शाहज़ादे के पहलू में लिटाके देख उन दोनों में कौन अधिक सुन्दर है राक्षस वहांसे उड़ा और चीनदेश की शाहज़ादी को जो निद्रा में थी उठालाया और उनदोनों ने उसे

शाहज़ादे के पास लिटाया पुनः उन दोनों में बहुतकाल तकराररही दोनों अपनी २ बात को दृढ़ और सूचित करते निदान अप्सरा ने कहा तेरी शाहज़ादी तो परमसुंदरी है परंतु मेरे शाहज़ादे के रूपको नहीं पहुँचती उन दोनों ने कहा किसी तीसरे मनुष्य को जो रूप की पहिचान रखताहो हम उसे न्यायी बदें तब अप्सरा ने एक ठोकर पृथ्वीपर मारी और पृथ्वी फटगई उसमें से एक पिशाच कुबड़ा, लँगड़ा, काना जिसके शिरपर छः सींगथे और उसके हाथ पांव बड़े और नाम उसका कसकसथा वहांसे बाहर निकला उस राक्षस ने प्रणामकर एक घुटने के बल खड़े होके अप्सरा से विनयकी इस सेवक को क्यों बुलाया अप्सरा ने कहा मुझ और नहश में कुछ तकरारहै उसका तू निर्णय करदे तू इन दोनों को जो शय्या पर अचेत सोते हैं ध्यान धर देख कि इनमें कौनसा अधिक सुन्दर है कसकस ने उन दोनों को बड़े शोचविचार से देखा और शिर से पांव पर्यन्त दोनों को बहुकालतक देखाकिया परन्तु दोनों स्वरूप और अनूपछवि में तुल्य थे किसीको अच्छा न कह सका निदान बहुत शोच के अप्सरा से कहा जो यह दोनों बारी बारी से जागके परस्पर प्रीति और मोह प्रकटकरें तो निस्संदेह उनके रूपमें प्रकटहो क्योंकि कोई एक विषय में उत्तम दिखाई देता है और दूसरा वैसा नहीं अप्सरा और राक्षस ने कसकस की इसबात को पसन्दकिया पहिले मैमूं ने पिस्सू बनकर क़मरुज़्ज़मां के गले में इस बेग से काटा कि वह जागपड़ा और अपना हाथ गर्दन पर पिस्सू के पकड़ने के लिये मारा परन्तु उसे न पकड़सका फिर वह पिस्सू अपने पूर्वस्वरूप में हो क़मरुज़्ज़मां की दृष्टि से गुप्तहोगया वह तीनों अर्थात् मैमूं अप्सरा व नहश व कसकस राक्षस बायुचारी एक स्थान पर एकत्र खड़े हो उन दोनों को देखनेलगे क़मरुज़्ज़मां आंख खोल चीन की शाहज़ादी को अपने निकट सोतेहुये देखतेही मनसे उसपर मोहित होगया स्त्रियों से ग्लानि करनेपर भी अकस्मात् चीन की शाहज़ादी की प्रीतिमें ऐसा मग्न हो बेबशी की दशा में प्राप्तहो कभी तो उसका मुख कभी गाल और कभी होंठ चूमता और शाहज़ादी नहश की

मायाबश से अचेत सोती थी उसे कुछभी यह समाचार बिदित न था शाहज़ादे ने समझा कि यह वही सुन्दरी है जिसके साथ मेरे माता पिता ने बिवाह बिचारा था जो मुझे इसे पहिले से दिखादेते तो मैं अवश्य स्वीकार करता अपने मन में माता पिता की आज्ञा भंग करने से लज्जित हुआ प्रीति से उसे जगाना चाहा परन्तु वह राक्षस के मंत्रकी शक्ति से न जगी फिर उसने अपनी प्यारी की नीलमणि की अँगूठी उतार अपनी हीरे की अँगूठी उसे पहिनाई और उसकी आप पहिनली और अपने स्थान पर लेटरहा और अप्सरा के मंत्र से तुरन्त निद्राबश हो अचेत होगया पुनः राक्षस ने मच्छर बन चीन की शाहज़ादी के होंठ में काटा जिसकी ब्यथा से वह जाग उठी और अपने साथ एक सुन्दर तरुणपुरुष को सोते देख आश्चर्यितहुई और बिवाह अंगीकार न करने पर भी मोहित होगई और मन में समझी कि मेरे पिता ने इसी मनुष्य के साथ बिवाह ठहराया था परन्तु मैंने बहुतबुरा किया जो समझे बूझे बिना इन्कार कर उन्हें अप्रसन्न किया और क्या बातहै कि दूलह अचेत सोता है मुझसे बातचीत और बिहार नहीं करता कुछसमय में जब वह प्रीतिको रोक न सकी और क़मरुज़्ज़मां की बांहपकड़ बहुत हिलाया कि वह जगे परन्तु वह रासक्ष के मन्त्र के बल से न जगा शाहज़ादी निरुपायहो परमप्रीति और मोह से उसके हाथ चूमनेलगी और देखा कि मेरी अँगूठी उसकी अंगुली में है और उसकी मैं पहिनेहूं इससे उसे बिश्वास हुआ मेरा बिवाह इसी रूपवान् पुरुष के साथ हुआ फिर कण्ठ से लगा बहुत प्यार किया और अपने स्थान पर सोरही मैमूं अप्सरा ने राक्षस से कहा तूने देखा मेरा शाहज़ादा इस शाहज़ादी से सौन्दर्यता में श्रेष्ठ है अब तू तुरन्त शाहज़ादी को जहां से लाया था वहीं पहुँचादे और कसकस पिशाच को बिदाकर आप कुयें में जाय आनन्दपूर्बक सोरही जब क़मरुज़्ज़मां प्रभातकोजगा और अपनी प्यारीको न देख बिस्मित हो चारोंओर देखनेलगा निदान समझा कि मेरे पिता ने उसे बुला लिया अधैर्यहो उसी दास को पुकारा वह आय शाहज़ादे की सेवा करनेलगा शाहज़ादे ने

अपनी नियमित क्रिया के पश्चात् दास से पूछा सत्यकह वह स्त्री जो मेरे समीप रात्रि को सोतीथी यहां क्योंकर आई और अब कहां है दास नें बिनय की स्वामी मैंने उस सुन्दरीको नहीं देखा वह क्यों-कर इस कोठे के भीतर जिसका किवाड़ बाहर की ओरसे वन्द कर कुफ़ुल लगाया था आसक्ती है आपने स्वप्न देखा होगा क़मरुज़्ज़मां नें क्रोधित होय उसे बहुत मारा और कहा तू मुझे उस स्त्री के समा-चार बिदित नहीं करता तू बड़ा दुष्टहै जबतक मैं तुझे भलीभांति दण्ड न दूंगा तबतक तू कुछ भी बर्णन न करेगा निदान दास को रस्सी से बांध कुयें में लटकादिया दास ने शोचा यह शाहज़ादा कुछ बिक्षिप्त और मूर्ख है मुझे कहीं मार न डाले अब किसीयत्न से बचो दास ने पुकार के कहा जो मुझे प्राण दान हो तो उस सुन्दरी का बृत्तान्त बतादूं कमरुज़्ज़मांने उसे कुयें से निकाल छोड़ दिया और कहा तुरन्त बता उसने कहा मैं सावधान होलूं तो बतलाऊं लघुशङ्का के बहाने से कोठे के बाहर निकल शीघ्र उसका द्वार मूँद वहां से भाग बादशाह के निकट आया और सारा समाचार शाह-ज़ादे और अपने मारखाने और कूप में लटकाये जानेका बादशाह से प्रकटकर कहा स्वामी आप बिचारिये वह मकान बाहर से बंद और यह सेवक किवाड़ से लगके सोया था वह स्त्री जिसे शाहज़ादा मुझसे पूछता है किधर से गई आप शीघ्र जाय शाहज़ादे को देखें बादशाह दास से यह बात सुन बिस्मितहुआ और मंत्री को आज्ञा दी तू तुरन्त जा और शाहज़ादे का बृत्तान्त मालूम करके मुझसे प्रकटकर मंत्री तुरन्त शाहज़ादे के सन्मुखगया दण्डवत्कर उसके निकट बैठकहा आपके पिता दास से आपका बृत्तान्त सुन अत्यन्त चिंतित हुये और मुझे उसी स्त्री के समाचार बिदित करनेको जिसे तुम ने स्वप्न में देखा था भेजाहै शाहज़ादे ने कहा वह दास बड़ादुष्ट है मुझे उस स्त्री का हाल जो रात्रि को मेरे समीप सोतीथी नहीं बताया परमेश्वर के वास्ते तुम कहो वह सुन्दरी मृगनयनी जिसे मेरे पिता ने रैनि को मेरे निकट भेजा था और उसीके साथ मेराबिवाह बिचारा था कहां है मैं उसके देखे बिना निपट बेचैन और अधैर्यहूं जो

बादशाह पूर्व से मुझे उस छविधाम को दिखाते तो मैं काहे को ऐसी सुन्दर स्त्री से बिवाह स्वीकार न करता और उनके कोप में पड़ता मन्त्री ने यह सुन शाहज़ादे से कहा महाराज आप क्या कहते हैं आपके मकान में जो बाहर से बंद था क्योंकर स्त्रीगई आपने उसे स्वप्नावस्था में देखाहोगा शाहज़ादे ने अप्रसन्न हो मन्त्री की दाढ़ी पकड़ली और भलीभांति ताड़ना की मन्त्री ने अपनेप्राण बचानेके लिये कहा इस सेवक को बिदित नहीं बादशाह ने किसी स्त्री को आप के निकट भेजाहोगा अब मुझे आज्ञा हो तो मैं बादशाह से बिनती कर उस परमरूपवती को आपके समीप भिजवादूं शाहज़ादे ने मन्त्री से कहा अब तू राहपर आया शीघ्र जा और मेरीप्यारी अति सुन्दरी कोमलांगीको भिजवादे मंत्री बाहर निकलभागा और बाद-शाह के सन्मुख जाय कहा स्वामी जो दास ने आपसे बिनय की थी वह सब सत्य है शाहज़ादे ने मुझे भी मारा और कहता है कि शीघ्र उसी सुन्दरी को जो रातको मेरे समीप सोती थी ला बाद-शाह इस बचन को सुन अत्यन्त चिंतित और व्यथित हुआ और आपही शाहज़ादे के निकट गया जब वहां पहुँचा शाहज़ादे को भलाचंगा और सावधान देख प्रसन्नहुआ और उसे अपने कण्ठ से लगाय पूछा बेटा वह कौन स्त्री थी जो रात को तुम्हारे समीप आय सोई मैं कुछ नहीं जानता और अत्यन्त बिस्मितहूं यह मकान तो बंद था किसमार्ग से स्त्री यहांआई प्रत्यक्ष में स्त्री का आना किसी विधिसे नहींहोसक्ता तुमने उसे स्वप्न में देखाहोगा शाहज़ादे ने बि-नयकी मैंने उस स्त्री को स्वप्न में नहींदेखा किंतु जाग्रत् अवस्था में देखाहै इसकी साक्षी यह अँगूठी है फिर शाहज़ादे ने चीन की शाहज़ादी की अँगूठी उतार दिखाई कि मैंने अपनी अँगूठी उसकी अंगुली में पहिनाई और उसकी आप पहिनली आप भले प्रकार शोचिये यदि वह युवती मेरेपास स्वप्न में आती तो अँगूठी क्योंकर बदलती न तोमैं मंदबुद्धिहूं और न बिक्षिप्तमैं तोसावधानहूं परमेश्वर के वास्ते उस परमप्रिया कोमलांगी को मेरेपास भिजवादीजिये उस के देखे बिना मुझे आनन्द नहीं जो आप प्रथम से उस सुन्दरी

चन्द्रमुखी को एकबेर दिखाते तो मैं बिवाह आप अंगीकार करता मैं न जानता था कि आपने मेरा ऐसी सुन्दरीसे विवाह ठहराया है बादशाह अँगूठी देख शोचने लगा कि यह अँगूठी शाहज़ादे की नहीं किसी और की है हमारे राज्यभर में इस बनावटकी अँगूठी नहीं बनती इसके बिशेष इसका नग बहुमौल्य है इससे प्रतीत होताहै कि शाहज़ादे का बचन मिथ्या नहीं परन्तु शोच यह है कि प्रत्यक्ष में ऐसी सुन्दरी तरुण स्त्री बंदकोठे में इसके समीप क्योंकर आई यह क्या अच्छी बात है कि समझमें नहीं आती अनन्तर क़मरुज़्ज़मां को वहां से लेजाय निज मन्दिर में रक्खा और प्रकट में उसका बहुत समाधान किया कि उस स्त्री को हम ढूंढ़ तुम्हारा बिवाह उसीके साथ कियेदेते हैं तुम निश्चिन्तरहो और आप रातदिन अपने बेटेके निकट रहने लगा मन्त्री ने बिनय की मेरे बिचारसे उचितहै आप पूर्ववत् राज्य के प्रबन्धमें प्रबृत्त रहैं किसीप्रकार की हानि राज्यमें न हो और शाहज़ादे को ख़िरद टापू के कोट में जो नदी के कूल पर है भेजदीजिये वहां चारों ओर से जहाज़ आतेजातेहैं और देश देश का समाचार बिदित होताहै शाहज़ादे का चित्त वहां बहलेगा वह गढ़ बहुत दूर नहीं बादशाह ने मन्त्री के मतसे प्रसन्नहो क़मरुज़्ज़मां को उसी कोट में भेजदिया और आपभी प्रायः उसमें जाया करता यहांतो क़मरुज़्ज़मां की यह दशा थी जो ऊपर वर्णन किया गया अब उधर का समाचारसुनो जब उस राक्षस ने चीन की शाहज़ादी को उसके निजस्थानपर शय्यास्थ किया भोर होतेही जागकर अपने दाहिनेबायें क़मरुज़्ज़मां को ढूंढ़ने लगी उसे न पाके बृद्धा को जो उसकी रक्षक थी घबराकर पुकारा और पूछा वह अतिसुन्दर पुरुष जो रैनि में मेरेसाथ सोताथा कहां है उसके देखे बिना मैं अत्यन्तब्याकुल हूं तुरन्त उसे मेरे समीप ला बृद्धा यह बचन सुन बिस्मित हुई और बिनतीकी कि हे मेरी प्यारी शाहज़ादी! कुशल तो है क्या कहती हो जिस महल में तुमने शयनकिया है मनुष्य की तो क्या गति है वहां पक्षी भी पर मार नहीं सक्के तुमने क्या स्वप्न देखा जिसका बिचार अबतक तुम्हें बनाहै परमेश्वर

के वास्ते ऐसीबातें न करो बादशाह यह बचनसुन हमारीगर्दन मा-
रेगा शाहज़ादी कि अपने प्रियतम के मोह में पगिके बिह्वल थी
झुँझलाय दाई के शिर के केश पकड़ उसे बहुतमारा दाई अपने को
छिटका के भागी और बादशाह और मलिका से अपने मारखाने
और शाहज़ादी की विक्षिप्तता का समाचार जाय सुनाया वह दोनों
अतिदुःखित होय शाहज़ादी के समीपगये और उससे कहा हे बेटी!
तूने रात्रि को क्या स्वप्नदेखा जिससे तुम ब्याकुल और दुःखितहो
बेटी ने लज्जित होय नेत्र नीचे करके अपने माता पिता से कहा तुम
मेराविवाह करते थे और मैं स्वीकार न करती रात को मैंने एक नव-
किशोर मनुष्यको अपने पास सोते देखा उसपर मैं मोहितहुई तुरन्त
मेरा उसके साथ ब्याह करो नहीं तो मैं खांड़ा मार मरजाऊंगी जो
तुम मुझे पूर्व में उस पुरुष को दिखाते तो मैं अवश्य उसे आप स्वी-
कार करती यदि तुम्हें मेरे कहने की प्रतीत न हो तो देखो उस
सुन्दर पुरुष ने मुझे अपनी अँगूठी पहिनादी है और मेरी आप
पहिन ली है उसके माता पिताने अँगूठी देख जाना यह अँगूठी बहु
मौल्य किसी अन्य पुरुष की है शाहज़ादी की नहीं पुनः उन दोनों
ने बहुत बिचार किया कि यह अँगूठी क्योंकर बदली गई और वह
पुरुष इस बन्दीख़ाने में किसप्रकार आया और बेटी के पास सोया
परन्तु मुख्य समाचार के मूल को न पहुँचे निदान शाहज़ादी को
बिक्षिप्त और उसपर मोहितजान सुनहली बेड़ियां उसके पांव में
डालीं और आज्ञा दी कि इसकी दाई के सिवाय कोई भी निवास-
स्थान में न जानेपावे और उस महल के चहुँओर कई पहरे बैठा
दिये और वहांसे अत्यन्त मुरझाय और दुःखितहोय अपने महल
में आये दूसरे दिन उसने अपनेसम्पूर्ण सभासदों और पुरके अधि-
ष्ठाताओं को बुलाय कहा जो कोई मेरी बेटी को अच्छाकरे और वह
सावधान और चैतन्य होजावे तो मैं इसे उसीके साथ ब्याहदूंगा
और मेरे पीछे वही सिंहासन पर बैठ राज्यकरेगा और इसी समा-
चार को राज्यभर में प्रसिद्ध किया और आज्ञादी जो कोई यत्न
करनेपर भी मेरी बेटी को अच्छा न करसकेगा उसे बधकरूंगा तथापि

विवाह के लोभ से बहुत से मनुष्यों ने अनेक प्रकारके उपाय किये परन्तु कुछ भी लाभकारी न हुये बादशाह ने उनके शिर कटवाय शहरपनाह के द्वार पर लटकवा दिये कईबर्ष में बैद्य और ज्योतिषी और मायावी गुणवानों के अनुमान डेढ़सो शिरके जिन्हों ने अपनी अपनी कृत्य की और निष्फलहुये प्राण से मारेगये उसी दाई का जो शाहज़ादी की रक्षक थी एक पुत्र था उसका नाम मरजवां था वह बाल्यावस्था से शाहज़ादी के साथ प्रीतिरखता जब वह दोनों सयाने हुये और उन दोनों में बियोगहुआ मरजवांको बालापनसे ज्योतिष् और रमल बिद्याके सीखनेकी अभिलाषा हुई बहु काल तक चीनदेश में इन बिद्याओं को सीखा तिसपीछे अन्यदेशों में और बिद्याओं के सीखने को फिरा जब वह बहुत बर्षोंबीते सब बिद्याओं में निपुणहो लौटा तो अपने नगर में आय शहरपनाह के द्वार पर मनुष्यों के मस्तक लटके देख बिस्मितहो घर में पहुँचा शाहज़ादी का समाचार पूछा उसके घरवालों ने कहा वह तो बहुतकाल से बिक्षिप्त होगई है बादशाह ने उसे एक बन्दीख़ाने में बेड़ियां डाल क़ैद कर रक्खा है केवल तुम्हारी माता उसके पास आयाजाया करती है और बादशाह ने यह डौंड़ी फिरवाई है जो कोई शाहज़ादी को सचेतकरेगा उसीकेसाथ उसका बिवाह कर दूंगा यदि उसे अच्छा न करसकेगा तो उसकी गर्दन मारूंगा यह समाचारपाय नानाभांति के गुणज्ञ अनुमान डेढ़सौ के आये और उन्होंने अपनी अपनी बिद्या से उस का उपाय किया जब उनकायत्न बृथाहुआ तब उन सबको मारकर उनके शिर शहरपनाह के द्वारपर लटकाये गये शेषबृत्तान्त तुम्हें तुम्हारी माता से सबिस्तर बिदित होगा निदान जब दाई ने अपने बेटे के आगमन का समाचार सुना बिदा हो घर में आई अपने बेटे को बहुत दिनों के पीछे देख प्रसन्नहुई थोड़ीदेरपीछे शाहज़ादी का बृत्तान्त कहा मरजवां ने कहा किसी बिधि उससे मेरी भेंट गुप्त भी होसक्ती है जिससे मैं उसके रोग की परीक्षा लूं उसकी माता ने उत्तर दिया मैं इसबातको पूछके तुमसे कहूंगी यह कह शाहज़ादी के निकटगई दूसरेदिन पहरे के अधिपति से कहा भाई तुम्हें बिदित

होगा मेरी एक बेटी है जिसको मैंने शाहज़ादी के साथ दूध पिलाया था कई बर्ष बीते मैंने उसका बिवाह करदिया था अब वह ससुराल से मेरेघर आई है शाहज़ादी उसके आगमन का समाचार सुन उसके देखने की लालसा रखती है यदि तुम्हारी इच्छा हो तो आज रात्रि को वह आय भेंट करजावे परन्तु वह किसीके साम्हने नहीं आती प्रधान ने कहा बहुत अच्छा प्रहर रात्रि बीते बादशाह शयन करने के लिये महल में प्रबेशकरते हैं तू उससमय उसे ले आइयो मैं द्वार खुला रक्खूंगा मुझे शाहज़ादी का मन रखनाहै दाई यह आज्ञा पाय मरजवां को स्त्रीके बसन पहिराय शाहज़ादी के महल में लेगई दाई ने पहिले जाय उसके आगमन का समाचार और भेंट की इच्छा बर्णनकी शाहज़ादी मरजवां का समाचार सुन प्रसन्न हुई और कहा शीघ्र उसे ला जब मरजवां गया तो पहिले दण्डवत् कर खड़ा भया शाहज़ादी ने कहा मरजवां भाई आगे आवो कि मैं तुम्हें भलीभांति देखूं और अपने मुख से वस्त्र उतारकर कहा भाई बहिन में क्या परदा है मरजवां ने आगे जाय फिर दण्डवत् की शाहज़ादी ने कहा इस समय मैं तुझे देख बहुतहर्षित हुई तेरी भेंट को मेरा जी बहुत चाहताथा मरजवां ने बिनय की इस सेवक को आपने कृतार्थ किया मुझे सदा आपकी सुधि बनी रहती थी और आशीर्बाद दिया करताथा मेरा भाग्य उदयहुआ कि फिर आपके चरणकमलों के दर्शनहुये यह कह अपनी ज्योतिष और रमल की पुस्तक निकाल उसके रोग की परीक्षा करनेलगा शाहज़ादी ने पुस्तक और सामग्री को देख मरजवां से कहा भाई तू मुझे बिक्षिप्त समझता है मैं चंगी भली सावधान हूं लोग मेरे बृत्तान्त को नहीं जानते इस हेतु मुझे बावली समझ रक्खा है न तो आजतक मेरा बृत्तान्त किसीने जाना और न किसीने उसका उपाय किया फिर उसने साराबृत्तान्त सबिस्तर बर्णन किया और कहा उसी नवकिशोर के बियोग में मेरी यह दशा भई जब उसकी भेंट होगी तो मैं अच्छी होजाऊंगी कोई मुझे ब्यथित देख बिक्षिप्त कहता है और कोई प्रेतबाधा बताता है परन्तु साक्षात् न तो मैं सौदाइन हूं और

न विक्षिप्त न किसी भूतप्रेत का दोष है मरजवां यह वृत्तान्त बहुकाल पर्यन्त बिस्मित हो चुपका खड़ा सुनाकिया तदनन्तर बिनयकी हे शाहज़ादी ! मुझे तुम्हारे कहनेकी प्रतीतहुई और तुम्हारा वृत्तान्त मुझे विदितहुआ तुम भरोसा रक्खो कुछदिन और ठहरो मैं उस पुरुष के ढूंढ़ने के लिये जाताहूं यदि परमेश्वर की इच्छा है तो मैं शीघ्र उसे तुम्हारे समीप लाताहूं नहीं तो अपनामुख न दिखाऊंगा। जब मेरे आगमन का सन्देशा इसनगर में सुनना तो बिश्वास मानना तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगया है यहकह शाहज़ादी से बिदा भया और यात्रा की तय्यारी कर सिधारा नगर २ गांव २ द्वीप २ जाता और बदौरा के रूप की प्रशंसा और विक्षिप्तता का हाल सुनता निदान मरजवां यात्रा करताहुआ चारमहीने पीछे एकपुरमें जो बहुत बसाहुआ एक नदी के कूल पर था पहुंचा और क़मरुज़्ज़मां का नाम चीन की शाहज़ादी के सदृश बीमारहोने का सुन मनमें हर्षितहो पुरवासियों से पूछा कि किस देश में यह शाहज़ादा रहता है उन्होंने कहा क़मरुज़्ज़मां के द्वीप में जानेके दो मार्ग हैं एकतो खुश्की का और दूसरा नदी के द्वारा जल का मार्ग खुश्की से अति समीप है मरजवां जलकेमार्गसे जाना स्वीकारकर एकव्यापारी के साथ जो उस ओर को जाताथा जहाज़ पर सवारहुआ वायु अनुकूल होने से जहाज़ के द्वारा शीघ्र क़मरुज़्ज़मां के राज्य में पहुँचा परन्तु जब कोट के निकट जहाज़ आया ईश्वरकी इच्छासे पहाड़ से टक्कर खा टूटगया और सम्पूर्ण मनुष्य जल में डूबगयेपरन्तु मरजवां कि पैराकी में भी निपुण था एक पाटके सहारे पैरताहुआ उसी कोट के नीचे जहां क़मरुज़्ज़मां को उसके पिताने रक्खा था पहुँचा दैवयोग से उसकाल शाहज़मां भी नदीकी तरफ़ देखताथा मरजवांको डूबते और पैरते देख मंत्रीको आज्ञा दी इस मनुष्य को तुरन्त जल से निकलवाओ ऐसा न हो जो यह डूबजाये केवट यह आज्ञापाय मरजवां को हाथों हाथ नदी से निकाल बादशाहके सन्मुखलेगये बादशाह उसे देखतेही समझा यह मनुष्य बुद्धिमान्है उसे शाहज़ादे का समाचार बताय कहा इसका उपाय कियाचाहिये पुनःबादशाह साराहाल क़मरु-

ज़्ज़मांका मरजवांसे कहके उसको शाहज़ादे के निकट लेगया मरजवां को उसकी दशा देखने और अँगूठीके बदलनेसे सूचितहुआ यह वही शाहज़ादा है जिसपर चीनकी शाहज़ादी मोहितहै उसीके वियोग में इसकी यह दशाहोगई यह सब बातें समझबूझ बादशाह से बिनय की हे दीनदयाल! मैं चाहताहूं आपके पुत्रसे एकघड़ी एकान्त में कुछ बार्त्ता करूं बादशाह मरजवां को अपने पुत्र के समीप छोड़ आप दूसरी जगह जायबैठा क़मरुज़्ज़मां ने एकान्त में उससे पूछा तुम कौन हो और तुम्हारा आगमन किधर से हुआ मरजवांने उत्तर दिया मैं चीन का बासीहूं उस स्त्री को जों तुम्हारे निकट सोईथी और जिस की अँगूठी तुमने बदली है भलीभांति जानताहूं वह बड़े प्रतापवान् धीमान् ग़ोर नामक चीनके बादशाह की कन्याहैं और तुम्हारी प्रिया का नाम बदौरा है वहभी तुम्हारे मोहरूपी सागर में मग्न और बिरहरूपी अग्नि में जलती और तुम्हारे वियोग में बहुत बेचैन रहती है सो उसी शाहज़ादी नें कि उसका मैं बिश्वासीहूं उसी रात्रिका समाचार जिसमें वह तुम्हारे समीप सोई थी मुझसे सबिस्तर बर्णन किया उसके पिता ने उसे भी बिक्षिप्त समझ क़ैद कर रक्खा है और अपने राज्य भर में यह प्रसिद्धपत्र दियाहै जो मनुष्य मेरी बेटी को अच्छा करेगा मैं उसीके साथ उसे ब्याह दूंगा और वही मेरे पीछे सिंहासन पर बैठ राज्य करेगा और जिसका उपाय उपयोगी न होगा उसको बध करूंगा सो उससमय से अबतक अनुमान डेढ़सौ मनुष्यके कि उन्हों ने उसका उपाय किया और निष्फलहुआ प्राण से मारेगये और उनके मस्तक नगर के द्वार पर लटकायेगये तुम निस्संदेह अपनी प्यारी को कि उसे केवल तुम्हारे वियोग का रोग है अच्छा करोगे और अपनी प्रतिज्ञानुसार उसका पिता तुम्हारे साथ उसका बिवाह करेगा अब तुम्हें उचितहै पहिले तुम बलकारी भोजन कर सावधान हो—मरजवां के इन कोमल बचनों से क़मरुज़्ज़मां को ऐसा हर्ष हुआ कि उसी समय अपनी प्यारी के भेंट की आशा से सबलहोय खड़ाहोगया और स्वच्छवस्त्र मँगवाय पहिने अपने पिता के साथ हर्षपूर्वक भोजन

किया और हरएक से हँसने बोलनेलगा बादशाह अपने पुत्र को प्रसन्नचित्त पाय अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसे कंठ से लगाय प्यारकर उसी कोट से अपने महल में लेगया और पुरबासियों और सभासदों को बड़े हर्ष से निमंत्रणकर यथाबिधि सत्कारकर बड़ा उत्सवकिया और अपने भृत्यगणोंको यथोचित सन्मानकर पारितोषिकादि दे निहाल किया और याचक मंगनोंको असंख्य दान दे धनाढ्य किया बंदियों को जोड़े तोड़े और अनगिनत द्रव्य दे छोड़ दिया निदान वहांके बासी जितना कि शाहज़ादे के रोग से व्यथित थे उतनेही उसके चैतन्यहोने से हर्षितहुये क़मरुज़्ज़मां जो चीन की शाहज़ादी के बियोग में बहुकाल से खानापीना और सोना भूलगया था अब स्नानकर और वस्त्र बदल आनन्दपूर्वक सोया फिर जगके भलीभांति भोजन किया कुछ दिनों में स्वादिष्ठ और बलदायी पाकों के भोजन से उसे शक्ति हुई और रूपरंग उसका अच्छा निकला जब उसे ज्ञात हुआ कि चीन की यात्रा करसकूंगा मरजवां से कहा अब मुझे चीन में लेचलो इससे अधिक मुझमें बियोग के दुःख सहने की शक्ति नहीं परंतु मेरा पिता मुझे बहुत प्यार करता है उसे एक क्षण का बियोग मेरा असह्य है क्योंकर मुझे बिदा करेगा यह कह क़मरुज़्ज़मां रोनेलगा मरजवां ने बिनय की आप सत्य कहते हैं परंतु एकयत्न यहांसे निकलने का है आप दो तीन दिनके लिये बादशाहसे अहेर खेलने की आज्ञा लीजिये बिश्वासहै कि वह अवश्य आज्ञा देंगे तब आप मुझे और कई एक मनुष्यों को साथले अमुक दिशा को चलना दो घोड़े अति तीव्रगामी अपने साथ रखिये हम दो तीन मंज़िल तक अहेरके बहाने जावेंगे उपरान्त इन घोड़ों पर सवारहो चीन की तरफ़ चलेंगे शाहज़ादे को मरजवां का सम्मत पसन्द हुआ दूसरेदिन क़मरुज़्ज़मां ने अवसर पा बादशाहसे अहेरकी आज्ञाली और मरजवां को साथ ले चला कई योजनचलके सन्ध्या समय एक मुसाफ़िरखाने में उतरे भोजन से सुचित्त हो आनन्दपूर्वक सोये जब अर्धरात्रि बीती मरजवां ने शाहज़ादे को जगाय कहा अब तुम अपने बादशाही वस्त्र उतार अश्वपालक के सदृश बसन पहिरो

शाहज़ादे ने तुरन्त वस्त्र बदले और वह दोनों उन्हीं शीघ्रगामी घोड़ों पर चढ़ और तीसरा घोड़ा कोतल के वास्ते अपने साथ ले और समस्त सेवकों को निद्रावश अचेतछोड़ निकलचले प्रातःकाल होते ही वह बन में दोराहे पर पहुँचे मरजवां वहां घोड़े से उतरा और तीसरे घोड़े को मार उसके रुधिर से शाहज़ादे के वस्त्र फाड़ के रँगे और उसी दोराहे पर फेंकदिये शाहज़ादे ने मरजवां से पूछा यह तुमने क्या किया मरजवां ने कहा जिनको तुम सरायमें सोते छोड़ आये हो हमको स्थानपर न पाकर ढूंढ़ते २ यहां पहुँचेंगे आपके वस्त्र लोहू भरे देख जानेंगे कि कोई बनपशु आपके वैरियोंको मार के खागया है और मुझे समझेंगे कि बादशाह के डरसे वह किसी ओर भागगया निदान निरुपाय हो यहीं से लौट जावेंगे और हमारा पीछा न करेंगे इस उपायसे हम उनसे बचकर निश्शंक होय यात्राकरेंगे और जबतक कि सबलोग बादशाहसे यह समाचार कहेंगे तबतक हम बहुत दूर निकलजावेंगे निदान वह दोनों बहुतसी अशरफ़ी और रत्नादि द्रव्य लियेहुये कभी तो पृथ्वीके मार्ग से और कभी जलके मार्ग से चलते २ कुशलपूर्वक चीन की राजधानी में पहुँचे और एक सराय में उतर तीनदिन बिश्रामकिया मरजवां ने इस समयान्तर में बैद्यों के सदृश शाहज़ादे के वित्तानुसार वस्त्र बनवाये उपरांत स्नानागारमें जाय दोनोंने स्नान किया मरजवां ने बैद्यों के सदृश शाहज़ादे को वस्त्र पहिराय कहा अब तुम उस घरमें जहां बैद्य आदि शाहज़ादीको अच्छा करनेके लिये जातेहैं जाओ और मैं सब बदौरा से तुम्हारे आने का शुभसमाचार कहने जाताहूं यह कह वह अपने घर आया अपनी माता से भेंटकर कहा तू इसीसमय शाहज़ादी से मेरे आगमन का समाचार कह कि वह प्रसन्नहो क़मरुज़्ज़मां उसी वेष से बादशाही महल के नीचे जाय पुकारनेलगा कि मैं बहुत दूर से चीन की शाहज़ादी को इस आशापर अच्छाकरने आया हूं जो वह मेरे यत्नसे अच्छीहो तो बादशाह अपने बचनके अनुसार शाहज़ादी का विवाह मेरे साथ करदे जो मैं अच्छा न करसकूं तो बादशाह मेरे मारडालने की आज्ञा दे बादशाह के सेवकों

ने क़मरुज़्ज़मां की किशोर अवस्था और सौन्दर्य देख अतिचिन्ता की और कहा हे भाई! अपनी अवस्थापर दयाकर इसी लोभसे बहुतसे मनुष्य मारेगये और उनके मस्तक नगर के द्वार पर लटकाये गये शाहज़ादी को आजतक कोई अरोग्य न करसका तू उसे अच्छा न करसकेगा तेरे प्राण व्यर्थ जावेंगे क़मरुज़्ज़मां उनके बर्जने से न हटा पुनः वही बचन कहा निदान वह निरुपाय हो उसे राजमन्त्री के निकट लेगये वह उसे बादशाह के साम्हने लेगया क़मरुज़्ज़मां जातेही बादशाह के निकट बैठगया बादशाह उसकी ढिठाई से अप्रसन्न न हुआ किन्तु उसकी जवानी पर पछताया बिचारनेलगा कि यह अभी औरों की भांति माराजावेगा फिर बादशाह ने वही प्रतिज्ञा उससे लिखवाली और उसे शाहज़ादी के मकान में भेजवाया प्रधान क़मरुज़्ज़मां को द्वारपर बैठाय शाहज़ादी के निकट संदेशा पहुँचानेगया और बिनय की एक मनुष्य तुम्हें अच्छा करने के लिये आयाहै यदि आज्ञा हो तो लाऊं शाहज़ादी ने आज्ञादी तुरन्त उसे ला प्रधान ने क़मरुज़्ज़मां के निकट आय कहा तुम शाहज़ादी के समीप चलो और किसी यत्न से उसे अच्छाकरो क़मरुज़्ज़मां ने उत्तरदिया मैं यहीं से उसे अच्छाकरदूंगा उसके निकट जानेकी कुछ आवश्यकता नहीं यह कह शाहज़ादे ने लेखनी और दावात निकाल उसी रात्रि का सम्पूर्ण बृत्तान्त जिसमें शाहज़ादी उसके पास सोईथी एक पत्र में लिख अँगूठी उसमें बन्दकर और प्रधान के हाथ दे कहा हे मित्र! यह पत्र लेजाय शाहज़ादी को दे ज्योंहीं प्रधानने वहपत्र उसे दिया त्योंहीं उसेपढ़ और अँगूठी पहिंचान अपने हाथ पांव से बेड़ीतोड़ किवाड़ की ओर दौड़ी और क़मरुज़्ज़मां को देखतेही पहिंचानलिया क़मरुज़्ज़मां ने भी उसे पहिंचाना कि यह वही सुन्दरी है जो मेरेपास सोई थी और मैं इसी की प्रीति और बियोग में बिक्षिप्त हुआ था फिर वह दोनों दौड़ परस्पर मिले उपरान्त दाई ने वहांसे उनको उठाकर महल में बिठाया शाहज़ादी बदौराने अपनी अँगूठी फिर क़मरुज़्ज़मांको देके कहा इस अँगूठीको अपनेसमीपरक्खो और तुम्हारी अँगूठी मैं अपनेप्राणके

समान रक्खूंगी यह दशा देख प्रधान बादशाह के पास दौड़ागया और बिनती की स्वामी जितने वैद्य और गुणी आये वह सब निर्बुद्धि थे इसने शाहज़ादी को निरीक्षण के बिनाही अच्छाकिया अब वह परमेश्वर की पूर्णकृपासे सावधानहै बादशाह यह शुभसमाचार सुन उसके महल में गया उसे प्रसन्न देख अपने हृदय में लगाया उपरान्त क़मरुज़्ज़मां से भेंटकर अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में पकड़ा दिया और कहा जो मैंने प्रतिज्ञा कींथी अब उसे पूरीकी अब बताओ कि तुम कौनहो और किस देश से यहां आये क़मरुज़्ज़मां ने दण्डवत्कर विनय की मैं न तो वैद्यहूं न मन्त्रज्ञ केवल अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिये यह बेष रचा मैं बड़े प्रतापवान् बादशाह का पुत्रहूं मेरा नाम क़मरुज़्ज़मां और मेरे पिता का नाम शाहज़मां वह बड़े बिशाल चीलद्रननामक द्वीपों का बादशाह हैं उपरान्त सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी प्रीति का सबिस्तर बर्णन किया इस अद्भुत कहानी को सुन बादशाह बिस्मित हुआ और कहा यह अपूर्व चरित्र स्वर्ण से लिखवाके कोश में रखने योग्य है फिर सेवकों को आज्ञा दी तुरन्त बिवाह की तय्यारी हो कुछ काल में बिवाहकी सम्पूर्ण सामग्री संग्रहहुई चीन के बादशाह ने बड़ी धूमधाम से उनका बिवाहाकिया और उन दोनों बियोगियोंका मनोरथ सिद्धहुआ तदनन्तर बादशाह ने क़मरुज़्ज़मां को वज़ीर की पदवी दी सो वह अतिप्रसन्नता से निवास करनेलगा इसी हर्ष में क़मरुज़्ज़मां ने रात्रि को यह स्वप्न देखा कि उसका पिता अन्तसमय में कहताहै हा! खेदहै कि मेरापुत्र क़मरुज़्ज़मां मुझसे बिछुड़ा और उसके बियोग ही से मेरी मृत्युहुई शाहज़ादा यह दुस्स्वप्न देख चौंक पड़ा अति बिकलहोय रुदनकरनेलगा उसका रोना सुन उसकी प्रिया जगी और घबड़ाके पूछने लगी स्वामी कुशल तो है ऐसे दुःखित होय क्यों रोतेहो क़मरुज़्ज़मां ने वह स्वप्न कहसुनाया शाहज़ादी ने अपनी बुद्धिबल से जाना इसकी इच्छा पिता के समीप जानेकी है उस बेर तो उसे धैर्यदिया और दूसरे दिन अवसरपाय अपने पिता से यह सब हाल कहा और एक बर्षकी बिदा मांगी उसने अति चिन्ताकर

चित्र शहज़ादी बदूरा का अपने पति के भेषमें
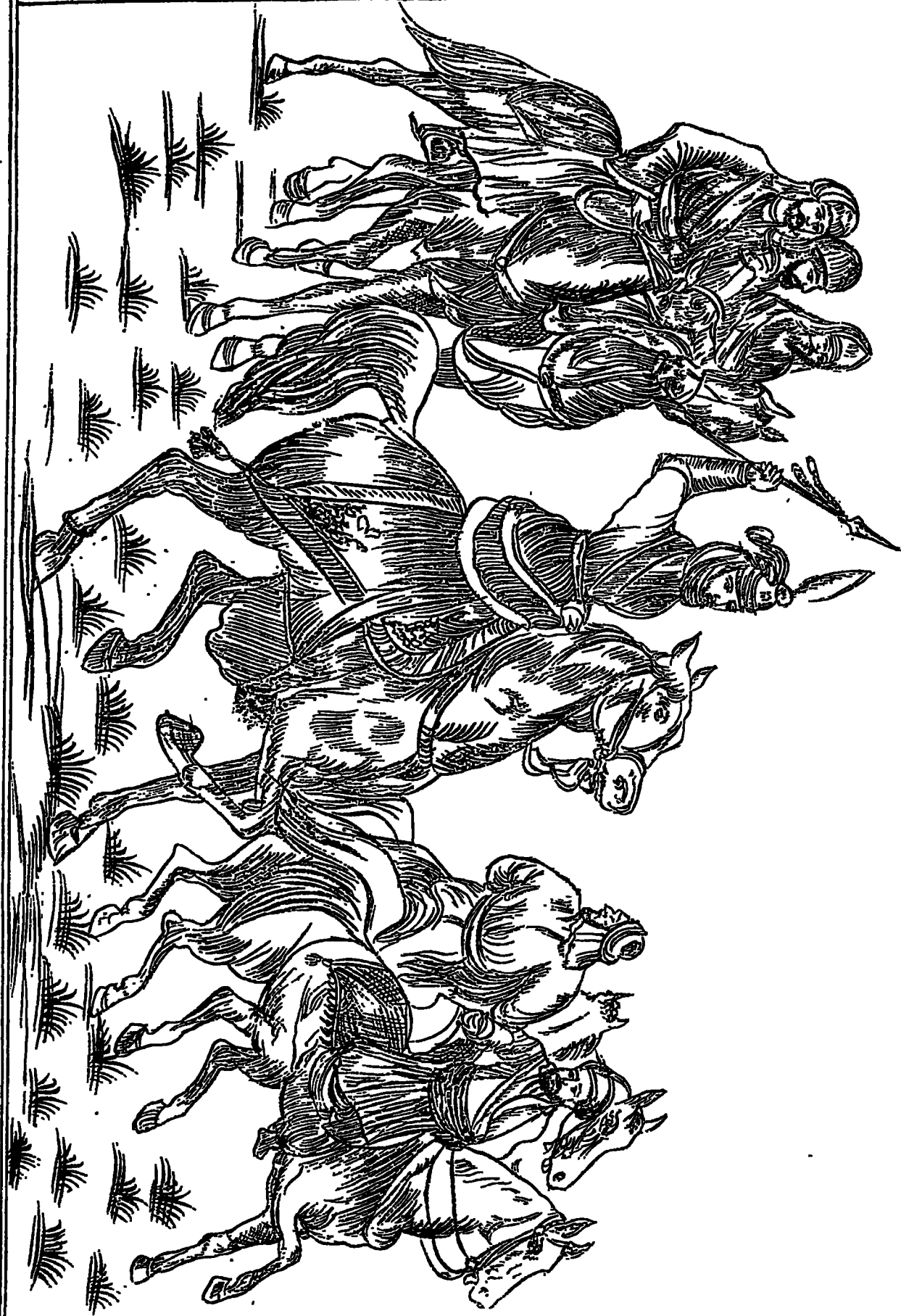
उसे अंगीकारकिया और घोड़े हाथी आदि सामग्री और धन रत्न असंख्य दे कहा एक बर्ष बीते तुम अवश्य इस देश में आना इतना कह उन्हें बिदा किया और आप भी थोड़ी दूर तक उनके साथ गया अब यहां से उन आपदाओं का बृत्तांत जो क़मरुज़्ज़मां पर पड़ीं बर्णन किया जाताहै जब उनको प्रबास में एक मास बीता तो उन्हें अतिबिशाल बन मिला उसदिन क़मरुज़्ज़मां ने अपने में चलने की शक्ति न पाकर अपनी प्रियस्त्री से कहा कहो तो आज इसी स्थानपर सघन बृक्षों की शीतलछाया के नीचे रहें क्योंकि सेना बराबर चले आने से थकितहोगईहै बदौरा ने उत्तरदिया मैं भी चाहतीहूं कि आज यहीं रहते तो उत्तम था वह भीड़ जो पीछे रहगई है पहुँचजावे और आज के दिन बिश्रामकरे क़मरुज़्ज़मां ने प्रधानों को आज्ञादी कि आज इस बन में उतरो फ़र्राशों ने यह आज्ञा पाय स्थान २ पर डेरे खड़ेकिये और सेना भी उचित २ स्थान पर उतरपड़ी बदौरा उष्णता से अतिब्याकुल थी अपने डेरे में जो घनेबृक्षों की छाया में खड़ाथा शय्या पर जाय सोरही कुछ काल पीछे उसी डेरे में शाहज़ादा भी आया अपनी स्त्री को निद्राबश देख आप भी एक ओर को लेटरहा लेटतेही उसकी दृष्टि बदौरा के बहुमूल्यरत्न और हीरेजटित पटके पर पड़ी और शाहज़ादी ने सोती बेर उसे अपनी कमर से खोल वहीं रखदिया था और उस पटके के साथ सुनहली बिनावट का बटुवा बँधाहुआथा शाहज़ादे ने उसे टटोल मालूमकिया इसमें कई कठोरसी बस्तुहैं जब उसें खोला एकमणि पर उत्तम यन्त्र खिंचा था क़मरुज़्ज़मां समझा यह बस्तु बहुमूल्य होगी शाहज़ादी ने उतार बेपरवाही से उसे डालदिया न तो रक्षापूर्बक किसी सन्दूक़ में रक्खा और न किसी बांदी को सौंपा सत्य बृत्तान्त उस यन्त्र का तो यह है कि वह यन्त्र उसकी माता ने गुप्त करके बदौरा को दिया था क़मरुज़्ज़मां अवलोकन की इच्छासे उसे डेरे के बाहर लेजाय प्रकाश में उसके अक्षर देखनेलगा अकस्मात् कोई पक्षी उस यन्त्र को मांस का टुकड़ा समझ झपट्टामार क़मरुज़्ज़मां के हाथ से लेगया शाहज़ादा अत्यन्त दुःखित हुआ और

मन में चिन्ता करने लगा ऐसी श्रेष्ठवस्तु मेरी प्राणप्यारी की इस विधिसे जातीरही किसीप्रकार से इस पक्षी से लेनीचाहिये वह पक्षी उस यन्त्र को लियेहुये कुछ दूर एक बनमें जाबैठा क़मरुज़्ज़मां ने उसका पीछाकिया जब वह उसके समीपजाता वह पक्षी उड़ दूर चलाजाता इसीभांति वह उसके पीछे लगाहुआ चलाजाता फिर वह पक्षी उसे खागया और बहुतदूर उड़के जाबैठा फिरभी क़म-रुज़्ज़मां उसके पीछे चलागया जाते जाते वह अपनी सेनासे बहुत दूर निकलगया सन्ध्यासमय उसी पक्षी को एककएटक बनमें घेर पकड़नेकी इच्छाकी जब वह उसके निकट पहुँचा वह उड़के एक बड़े ऊंचे बृक्ष की फुनगी पर जाबैठा उससमय क़मरुज़्ज़मां निराश हो सोचनेलगा यह पक्षी किसीभांति न मिलेगा लाचारहो अपने डेरे में आनेकी इच्छाकी लौटतेही यह बिचारा उस यन्त्र के बिना अपनी प्यारीको अपना मुख क्या दिखाऊं इसी चिन्तामें भूखा प्यासा उसी बनमें बृक्ष के नीचे जिसपर पक्षी था सोरहा भोर को वह पक्षी वहां से किसी ओर को उड़ा शाहज़ादा भी उसीके पीछे चला वह दिनभी ब्यर्थ उसके पीछे दौड़ताबीता सायंकालको क्षुधासे ब्याकुल हो बन के फल खाये दश दिन इसीभांति से पक्षी का पीछा करतारहा सन्ध्या को वह पक्षी किसी ऊंचेबृक्ष पर बैठता और क़मरुज़्ज़मां उसके नीचे सो रहता निदान ग्यारहवें दिन वह दोनों एक नगर में पहुँचे वह पक्षी एक बड़े बिशाल घर की आड़में दृष्टिसे लोप हो गया शाहज़ादा उसी यन्त्र के शोच में ब्याकुलहो यह चाहताथा कि कोई ऐसा मिले जो मेरी इस दुर्दशामें सहायताकरे इसहेतु उसी नगर में कि वह समुद्रके कूल पर था बहुकाल पर्यन्त गलियों और बाज़ारों में फिरा परन्तु किसी मनुष्य ने उसकी सहायता न की निदान वहां से निकल समुद्र के कूल पर फिरनेलगा इतने में एकबाग़ देखा उस का द्वार भी खुलाथा उसमें वह चलागया उसके रक्षक ने क़म-रुज़्ज़मां को बिदेशी मुसल्मान जानके शीघ्र केवाड़ मूंदलिये क़म-रुज़्ज़मां ने अचम्भाकर उस माली से पूछा तूने दरवाज़ा क्यों मूंदा उसने कहा मैंने तुम्हें परदेशी मुसल्मान समझ किवाड़मूंदे क्योंकि

यहांके पुरवासी शिलापूजक हैं मुसल्मानों से निपट बैर रखते हैं जो किसी मुसल्मान को देखते हैं उनकी जाति में उसका दुःखदेना उत्तम धर्म है और आश्चर्य है तुम इस नगर में बहुत फिरे परन्तु किसीने तुम्हें कुछ दुःख न दिया परमेश्वर का धन्यबाद है जो तुम उन दुष्टों से बचेरहे क़मरुज़्ज़मां ने उस वृद्ध का अति गुण माना इसके उपरान्त माली ने कहा तुम थकेहो कुछ खा पी शयन करो सो उसने उसे अपने झोपड़े में लेजाय भोजन कराया क़मरुज़्ज़मां ने सावधानहो अपना सम्पूर्ण वृत्तांत उससे प्रकट किया और रोके कहा अब क्योंकर उस अपनी प्रिया से भेंटहोगी और उसे लेके अपने पिता के राज्य में पहुँचूंगा कुछ जाना नहीं जाता कि वह अब तक उसी बनमें है वा वहांसे आगे गई ग्यारहदिन मुझे उसे छोड़े होचुके हैं माली ने उत्तरदिया यहांसे एक बर्ष की राहपर मुसल्मानों के देश हैं उनदेशों के बादशाह भी मुसलमान हैं परन्तु सब देशों से अबौनी नगर सबसे पासहै और समुद्र के तटपर है वहां के बासी आनन्दपूर्वक अतिशीघ्र चीलद्रन द्वीपों में पहुँचजाते हैं प्रत्येक बर्ष एक व्यापारी अबौनी नगर से इस नगर में आता है यहां से माल असबाब मोलले अबौनी में जाता है पुनः तुम्हारे द्वीप में जाय व्यवहार करताहै यदि तुम कुछदिन पहिले आते तो उस व्यापारी के जहाज़ में मैं तुम्हें सवार करादेता तुम भलीभाँति अपने देश में पहुँचजाते अब एक बर्ष के उपरांत वह जहाज़ आवेगा तबतक तुम मेरे झोपड़ेको अपना घर समझ रहो क़मरुज़्ज़मां उस परदेश में कि किसीको न जानताथा इसको भी परमेश्वर की देन समझ उसके पास रहकर जहाज़ आने की राह देखतारहा दिन को वह माली के साथ बाग़ का काम करता और एकान्त में अपनी प्रिया की सुधि कर रोया करता अब हम शाहज़ादीचीनका समाचार लिखतेहैं जो डेरे में सोगई थी जब वह जगी तो क़मरुज़्ज़मां को न देख अत्यन्त विस्मितहुई अनन्तर उसने पटके को देखा कि बटुवा खुला है और वह यंत्र उसमें नहीं बदौरा ने बिचारा कि मेरा प्राणपति उसकी परीक्षाके लिये कहीं उसे लेगयाहोगा रात्रि पर्यंत उसके आगमन

की राहदेखा की जब वह न आया तो अत्यन्त बेचैनहुई और यन्त्र के बनानेवाले को बहुतसे दुर्वचन कहे यदि अपने भर्ता के खोजाने से वह दुःखितहुई परन्तु बुद्धि जो प्रत्येक दशामें मनुष्य को सुयत्न सुझाती है उसने न खोई और बड़ा साहसरक्खा और शाहज़ादे के खोजाने का वृत्तान्त थोड़ी बांदियों के सिवाय किसीको ज्ञात न था क्योंकि वह सब मार्ग के कष्टों और सूर्यकी गरमी से अपने अपने डेरों में अचेत सोरहीथीं बदौरा ने समझा जो सेना इस समाचार को सुनेगी तो ऐसा न हो किसीभांति का दुःखदे अथवा भाग जावे इसहेतु अपने मन को दृढ़कर और धैर्य रख सब बांदियों को आज्ञादी तुममें से कोई मेरेपति के खोजाने का हाल किसी सेना के मनुष्य वा किसी सेवक से न कहना न कोई ऐसीबात करना जिससे यह वृत्तान्त प्रकटहो यह कह आप पुरुषों के वस्त्र अपने पति के सदृश पहिन अपनेपतिके समान ऐसा बेष बनाया कि कोई उसे पहिचान न सका और आज्ञादी प्रातःकाल असबाब लादके तुरंत यहां से आगेबढ़ो जब सब कुछ तैयारी होगई उसने एकबांदी को आज्ञा दी कि पालकी में मेरीजगह तू सवारहो और आप घोड़े पर चढ़ उस कुलक्षण बन से आगे चली कई मास पृथ्वी और जल की यात्राकर अपने पति के देश की तरफ़ जातीथी कि मार्ग में उसे अबौनी का द्वीप मिला उसके सेवक जहाज़ से उतर विश्राम के निमित्त स्थान ढूंढ़ने के लिये उस नगर में गये उन्हीं मनुष्यों के मुख से अबौनी के असमंजसनामक बादशाह को विदितहुआ कि क़मरुज़्ज़मां के जहाज़ने यहां पहुँच लङ्गर किया वह बहुत दूर से यात्रा किये आताहै और शीघ्रही यहांसे चलाजावेगा आज वे सब चाहते हैं कि किसी स्थान पर यहां रहें अबौनी का बादशाह इस समाचार के सुनतेही शाहज़ादे से भेंटकरने के लिये समुद्र की ओर गया मार्ग में वही शाहज़ादी जिसने अपने पति का बेष धारण किया था टिकने को जाती थी उससे भेंटहुई अबौनी के बादशाहने उसे अपने किसी बड़े मित्र बादशाह का पुत्र समझ उसका बड़ा सन्मान किया और अपने महल में लेजाय तीनदिन उसकी कारबारियों समेत

बड़ी धूमधाम से जेवनार की फिर शाहज़ादी ने विदा होनेकी इच्छा की अवौनी के बादशाह ने जो उसके रूप अनूप और बुद्धि पर मोहित था उसे अपने निकट रखनाचाहा इस भेद को गुप्तरख प्रकटमें उससे कहा मित्र अब मैं वृद्ध और शिथिल हुआ और मेरे कोई भी पुत्र नहीं जो मेरा राज्यकरे केवल एकही बेटी है वह अत्यन्त सुन्दरी और चतुरा है मैं चाहताहूं कि जो उसके सदृश रूपवान् बुद्धिमान्हो उसे ब्याहदूं सो तुममें यह सब गुण हैं उसका बिवाह तुम्हारे साथकर तुमको गद्दी पर बैठाय परमेश्वर का भजनकरूंगा तुम न जाओ और मेरी बेटी से बिवाहकर राज्य सुखभोगो बदौरा जो बड़ी बुद्धिमती थी अपने मन में सोची जो मैं पुरुष होती तो कुछहानि न थी बिवाह करलेती परंतु इस दशा में कि मैं स्त्रीहूं और आवश्यकतापर यह बेष धारण किया है उसके साथ क्योंकर बिवाह करूं पहिली ही रात्रिमें यह भेद प्रकटहोजावेगा जिससे मेरा भेद खुलजावेगा और जानों अनजानों में मेरी बड़ी अप्रतिष्ठाहोगी जो मैं नहीं मानती तो बादशाह अप्रसन्नहो न जानिये क्या अपकार करे प्राण से मारे वा सदैव कारागृह में रक्खे अबतक मेरे पति का वृत्तान्त बिदित नहीं निदान भलीभांति चिंतनाकर बिवाह करनेपर राज़ीहुई और कहा एक दिनका मुझे सावकाश मिले तो मैं अपने सभासदों और मित्रों से इस बिषय में सम्मत लेलूं बादशाह ने कहा बहुत अच्छा दूसरे दिन उसने बड़े २ प्रधानों से यह समाचार वर्णन कर कहा मैंभी इस बिषयमें प्रसन्नहूं तुम इसबिषय में क्या कहतेहो सबों ने बिनयकी जिसमें आपकी मरज़ी हो हमभी प्रसन्न हैं अवौनी का बादशाह उस शाहज़ादी और उसके नौकरों को राज़ी पा हर्षितहुआ और बड़ी धूमधाम से उसका बिवाह अपनी कन्याके साथ करदिया और सब बिवाहकी रीतेंकर बादशाहने अपनी गद्दी से उतर दामाद को बैठाय अभिषेकित किया और मंत्रियों और नगर के प्रतिष्ठित मनुष्यों से भेंटें दिलवाईं और इसे सम्पूर्ण राज्य के अधिकार दिये यह सब समाचार देशभर में प्रसिद्ध हुआ जब रात्रिहुई बदौरा को दुलहिन के शयनस्थान में ले गये बदौरा

अर्धरात्रि पर्यन्त ईश्वर की बन्दना करती रही जब दुलहिन सोगई तो आपभी चुपके से एकओर सोरही प्रातःकाल बदौरा स्नानकर वस्त्र बदल तख़्त पर शोभितहो शाहीकाम करनेलगी और बादशाह दुलहिन के निकट रात्रि का हाल पूछने के लिये आया दुलहिन ने लज्जाकर अपना शिर नीचेकर कुछ उत्तर न दिया बादशाह ने अपने बुद्धिबलसे जाना कि अभी इसकी इच्छारूपी कली नहीं खिली उसने उसे बहु धैर्यदे कहा आज की रात यात्रा के श्रम के कारण उसने सम्भोग की इच्छा न की कुछ शोच मतकर दूसरी रात भी पूर्ववत् बीती जब बादशाह ने जाय देखा कि उसकी बेटी उसीभांति चिन्ता में है इससे ज्ञातहुआ आज की रात्रि भी बिहार के बिना बीती इससे बादशाह अत्यन्त अप्रसन्नहुआ और अबौनी की शाहज़ादी से कहा आज तीसरी रातहोगी कदाचित् आजभी ऐसेही बीतेगी तो मैं उसे बधकरूंगा तू उसे समझादीजियो निदान तीसरी रातको जब बदौरा अपनी नियमित बन्दना से निश्चिन्त हो उसी शय्यापर सोनेलगी तब वह दुलहिन उठबैठी और बदौरा से कहा आज तीसरी रात है तुमने मुझसे बिहार न किया किन्तु बातचीत न की इसका क्या कारण है मैं तो तुम्हें मनसे प्यार करती हूं नहीं चाहती कि तुम्हें मेरे कारण किसीप्रकार का कष्ट हो कल मेरा पिता तुमसे अप्रसन्न हो ऐसा ऐसा कहताथा बदौरा दुलहिन की यह बातें सुन अत्यन्त व्याकुलहो चुपरही और मन में सोची यदि अपना भेद प्रकट करतीहूं तो बादशाह अबौनी मुझे मारडालेगा जो नहीं कहती तोभी उसकी कोपाग्नि से नहीं छूटसक्ती हरतरह से मृत्यु और अप्रतिष्ठा का साम्हना है दुलहिन ने कहा हे प्राणप्यारे! तुमने मेरे प्रश्न का कुछ उत्तर न दिया और तुम्हारी मुखकी कान्ति क्यों बदली और बिकल क्यों होगये यह दुलहिन बदौरा से लिपट गई और कहा स्वामी तुम अपने मन की चिंता क्यों नहीं कहते मुझे किसीप्रकार से तुमको दुःखदेना स्वीकार नहीं बदौरा के व्याकुलता से आंसूकीधारा बहचली और मूर्च्छा आनेलगी परन्तु उसने परमेश्वर को स्मरणकर अपने को सँभाला और आंसू पोंछ

कहा हे कोमलाङ्गी मेरीप्यारी! मुझसे अपराधहुआ मैं दण्डयोग्य हूं तथापि तुमसे क्षमा की आश रखतीहूं अब मेरी प्रतिष्ठा और प्राण तुम्हारे हाथ हैं निरुपायहो मैं अपना वृत्तान्त तुमसे प्रकट करतीहूं उसे सुन चाहे तुम क्षमाकरो वा मारो फिर उसने अपनी छाती खोल के उसे दिखाई कि मैंभी तुम्हारेसदृश चीन के बादशाह की बेटीहूं और अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह हाथजोड़ बिनती की जबतक मेरा पति न पहुँचे तबतक मेराभेद न खुले और परमेश्वर से परिपूर्ण आश है कि वह आताहोगा तुमभी उसीकी स्त्री होना और मैं तुम दोनों प्रीतिपूर्वक उसकी सेवा करेंगी इतनासुन दुलहिनने कहा अब तुम किसीभांति की चिन्ता न करो हर्षपूर्वक गद्दी पर बैठ देश का प्रबन्धकरो मैं बातबनाके अपने माता पिता और कुटुम्ब को समझा दूंगी वहां की यह रीति थी कि नवसङ्गम का समाचार सुन छोटा बड़ा खुशी करता और कईरीति होतीं निदान उस समय तो वह दोनों परस्पर लिपट सोरहीं और अबौनीकी शाहज़ादी ने अपनी बाँदियों के ज्ञात करने के लिये वही शब्दादिककिये जैसे कि दुल-हिनें प्रथम समागम में करती हैं दुलहिन ने प्रातःकाल होतेही अ-पने माता पिता को सैन से रात्रिका हाल बतादिया और बदौरा स्नान कर वस्त्र पहिन आनन्दपूर्वक बादशाही काम में लगी और इसी विधि रात्रि दिन अपने प्राणपति के भेंट की आशामें काल बिताने लगी उधर क़मरुज़्ज़मां शिलापूजकों के नगर में माली के घर रह माली का कार्यकर आपत्तिकाल बिताता एकदिन भोर को माली ने उससे कहा आज शिलापूजकों का बड़ा उत्सव है न तो वो आप कार्य में प्रवृत्तहोते हैं और न किसीको करने देते हैं और हरएक मिलकर मेले की तरह स्थान स्थान पर एकत्र होते और नाना प्रकारके तमाशे देखते हैं आज के दिन मुसल्मानों से भी ग्लानि नहीं करते इसहेतु आज तुमको छुट्टी है यदि तुम्हारा मन चाहै तो नगर में जाय मेला देखो तुमको कोई न रोंकेगा और मैंने सुना है कि अबौनी का जहाज़भी यहां पहुँचगया है अब मैं अपने मित्रों की भेंट को जाताहूँ और उनसे मालूम करताआऊंगा कि कबतक

यह जहाज इधर को जावेगा कि मैं तेरे निमित्त अन्न और ऋतु-फल उसपर रखदूं यहकह वह माली समुद्र को चला और कम-रुज्जमां नगर के चरित्र को देखने के बदले अपनी प्रिया की सुधि कर रोनेलगा थोड़ेकाल में दो पक्षी उसके समीप के वृक्ष पर बैठ लड़नेलगे इतने में उन्में से एक मरकर नीचे आपड़ा और दूसरा उड़ वहां से लोप होगया एक क्षण पीछे दो बड़े पक्षी दो दिशा से आय वहीं उतरे एक ने उस पक्षी मृतक के शिर की ओर और दू-सरा पांव की ओर बैठ शिर हिलानेलगा मानो वह दोनों उसकी दुर्दशा को देख पछिताते हैं अनंतर उन दोनों ने अपनीचोंच और पंजों से गढ़ाखोद उसके शरीर को गाड़दिया और वहांसे उड़गये एकघड़ी पीछे वही दोनों उसी पक्षी को जिसने उसे मारा था पकड़ लाये और उसके पंख नोचनोच टुकड़े टुकड़ेकर चलेगये कम-रुज्जमां इस चरित्रको देख विस्मित हुआ और उसके निकटजाय भलीभांति देखनेलगा दैवयोग से एक लाल वस्तु उसकी अंतड़ियों में देखपड़ी जब उसे धो के देखा तो वही यंत्र था यद्यपि उसी से उसे इतनाकष्ट हुआ था तथापि उसे पाय अत्यन्त प्रसन्नहुआ और समझा अब मेरी प्राणप्यारी मुझे शीघ्र मिलजावेगी दूसरे दिन माली ने उससे कहा अमुक वृक्ष सूखगया है उसे मूल से काटडाल कमरुज्जमां ने उसको ऊपरसे काटा तिसपीछे उसकी जड़ खोद नि-कालनेलगा अकस्मात् उसकी कुल्हाड़ी पत्थर की चट्टानपर पड़ी इतने वहां की मिट्टी टारकर उस शिला को उठाया उसके नीचे सीढ़ी दश हाथ की पाई वह नीचे उतरगया वहां उसने एक बड़ा स्वच्छ और सुन्दरघर चौदहपर्दे के अंतर में देखा और उसमें प-चास ढेरों तांबे की ढकने समेत पाईं जिनमें स्वर्णमरस भरी थी कमरुज्जमां इतनी द्रव्य को देख अतिप्रसन्न हुआ और माली से जाय यह समाचार कहा माली ने कहा भाई यह धन तुमसों यह मेरे भाग का नहीं क्योंकि ८० वर्ष से मैं इस बाग का काम करता हूं और पूर्व से मेरा पिता और दादा यहीं इसी काम को करते न यह द्रव्य उन्हें मिलीं और न मुझे भाई तीनि दिन में यहां से

जहाज़ अवौनी को जावेगा तुम शीघ्र अपनी तय्यारी करो और इस असंख्य धन को उस पर चढ़ाय अवौनी को जाओ परन्तु एक काम करो कि आधी आधी डेगों को ख़ालीकर उनके ऊपर जैतून जो मेरे पास बहुत है भरो लोग यह समझेंगे कि इसमें केवल जैतून ही है इस यत्न से द्रव्य रक्षापूर्वक पहुँचेगी क़मरुज़्ज़मां ने माली से बहुत बिनय कर कहा जो तुम यह सब द्रव्य नहीं लेते तो आधाही लेलो और अर्धभाग मुझे दो माली ने कहा अच्छा तेरी इच्छा से यह मुझे स्वीकार है क़मरुज़्ज़मां ने हर एक पात्र की भस्म आधी रहनेदी और आधी का माली के घर में ढेर करदिया फिर यह सोचा ऐसा न हो कि यह यंत्र मेरे पास से जातारहे एक डेग में उसे रक्षापूर्वक रखदेना चाहिये सो एक भाजन ख़ालीकर उस यन्त्र को उसकी तह में रख दिया और उस पर सुवर्ण की भस्म डालदी और उसपर चिह्न करदिया जिससे शीघ्र पहिचानीजावे जब वह यह निबन्धकर निश्चिन्तहुआ संयोग से वह माली रोगीहुआ और तीसरे दिन उसकी अन्तकाल कीसी दशा होगई उसी दिन प्रात को जहाज़ का कप्तान अपने ख़लासियों समेत बाग़ में पहुँचा और क़मरुज़्ज़मां से पूछा वह कौनहै जो हमारे जहाज़ पर सवार होगा क़मरुज़्ज़मां ने कहा मैंहूं मेरेही वास्ते माली ने तुमसे कहा था मेरी वस्तु और पचास भाजन जैतून* के जो मेरे निजका मालहै लेजाय जहाज़ में चढ़ाओ पीछेसे मैं भी आताहूं ख़लासियों ने क़मरुज़्ज़मां का असबाब पचास भाजनों सहित लेजाय जहाज़ पर लादा कप्तान ने जानेके समय क़मरुज़्ज़मां से कहा कि जहाज़ पर शीघ्र आना बिलम्ब न करना क्योंकि बायु अनुकूल है केवल तुम्हारे पहुँचने की बाट देखेंगे निदान कप्तान के जानेकेपीछे क़मरुज़्ज़मां माली से बिदा होने को गया माली उसे अन्तोपदेशकर कालबश हुआ शाहज़ादा लाचार होकर उसके स्नानकराने और गाड़ने में प्रवृत्त हुआ फिर बाग़में ताला लगा कुञ्जी उस बाग़के धनीको दे तुरन्त समुद्रकी ओर चला वहां जाय देखा कि जहाज़ खुलगया मनमें अत्यन्त चिन्ता

*जैतून एक वृक्ष की लकड़ी अतिपुष्ट होती है ॥

करनेलगा कि एकवर्ष और मुझे यहां ठहरना पड़ा उपरान्त समुद्र से उसी बाग में आया और माली के भाग की स्वर्ण की भस्म पचास पात्रों में भर ऊपर से जैतून भर मुहँ मूंदलिया इस बिचारसे कि इनको अपनेसाथ लेजाऊंगा और उसी बाग में कार्य करता और जहाज़ के आनेकी बाट देखतारहा और वह जहाज़ बायु अनुकूल पाकर थोड़ेही काल में निर्विघ्न अबौनीद्वीप में पहुँचा बदौरा जहाज़ के पहुँचने का समाचारसुन इसबिचार से कि कदाचित् उसका पति वहां पहुँचाहो आप समुद्र के तीरआई और प्रकट में यह मनुष्यों से कहा मुझे कुछबस्तु मोललेनी है इसहेतु ब्यापारियों के असबाब उतारने के पहिले जाताहूं निदान समुद्र के कूल पर पहुँच कप्तान से पूछा तुम्हारा आगमन किधर से हुआ और इसपर कौन सवारहै उसने उत्तरदिया इस जहाज़ में उन्हीं ब्यापारियों के सिवाय जो सदैव ब्यवहार के निमित्त इस द्वीप में आते जाते हैं और कोई सवारनहीं और वह सब अनेक देशों की बस्तु सादा कपड़ा और बूटेदार, रत्न, सुगन्धित बस्तु, कपूर, केसर, जैतून आदि औषध लाये हैं बदौरा जैतून को बहुत चाहतीथी उसका नाम सुनते ही कप्तान से कहनेलगी कि जितना जैतून इसपर लादा है मैं उस सबको मोल लूंगी तुरन्त उसे जहाज़ से उतारो और ब्यापारियों से कहो सिवाय जैतून के पहिले सब असबाब मेरे समीप लावें कप्तान ने कहा पचास पात्रों में जो वही भराहै वह एक ब्यापारी का है वह पीछे रहगया है हमने उसकी बहुकाल पर्यन्त बाट देखी परन्तु वह न आया और बायु अनुकूल होनेसे हम अधिक उस देश में न रहसके बदौरा ने कहा भला तुम उन पात्रों को नीचे उतारो जो कुछ उनका मोल होगा हम तुझे देदेंगे तू इसके धनी को देदीजियो जब वह पचासों जैतून के पात्र उसके सन्मुख लेगये बदौरा ने पूछा इस सब बस्तु का क्या मोल होगा कप्तान ने कहा वह बहुत छोटा ब्यापारी है आप साढ़े चार हज़ार रुपया दीजिये वह प्रसन्नहो उसे लेलेगा बदौरा ने कहा यहांपर यह बस्तु नहीं मिलती इसका बहुत मोलहोगा मैं नौ हज़ार रुपया दूंगी मेरी यह इच्छा नहीं कि किसी ग़रीब की

हानि हो तुम इस द्रव्य को अपने पास रखना उस ब्यापारी के मिलतेही उसे द्रव्य देदेना उसी समय शाहज़ादी रुपयादे और पचासों पात्रों को उठवा अपने महल में लेगई एक भाजन को निकलवा थोड़ीसी बस्तु किसीपात्रमें निकलवाई कि उसे भलीभांति देखे उसमें सोनेकी राखमिली उसने अत्यन्त अचम्भा किया जब दूसरा तीसरा पात्र खुलवाय देखा सबमें सुनहली भस्म देखी आज्ञादी कि यह सब भाजन खाली होवें सबमें ऊपर तो वह तेल और नीचे सोने की राख भरीहुई पाई और एक पात्र के तह में वही यंत्र जिसे क़मरुज़्ज़मां ने रक्खाथा देख मूर्च्छितहो गिरपड़ी अवौनी की शाहज़ादी और उसकी दासियों ने दौड़के उसे सँभाला और गुलाब और बेदमुश्क का नीर उसपर छिड़का जिससे वह सचेत हुई बदौरा ने चैतन्यहो उस यन्त्र को चूम नेत्रों से लगाया और उन्हीं बाँदियों के सन्मुख जो इस भेद को न जानती थीं कुछ कहना उचित न समझ चुपहोरही व एकान्तस्थल में अवौनी की शाहज़ादी से कहा पूर्व जो तुमने मुझसे यंत्र का वृत्तांत सुनाथा वह यहीहै जिसे मैं देख अचेत होगई और इसी यन्त्र से मेरे प्राणप्यारे का मुझसे बियोग हुआ अब बिश्वास है कि शीघ्र उससे मेरी भेंट होगी दूसरे दिन बदौराने अपने महल से निकल जहाज़ के कप्तानको बुला भेजा जब वह आया उससे कहा उसी ब्यापारी का बृत्तान्त जिसके पंचास भाजन जैतून के हैं और तू उसे शिलापूजकोंके देशमें छोड़आयाहै समझाय कह कि वह कहां रहताहै और कौनसा कार्य करताहै कप्तान ने कहा वह किसी के बाग़ में रहताहै और एक बृद्धमाली के द्वारा मैंने उसका असबाब और पचासबर्तनों को जहाज़ पर लादा था और उसी बाग़में मैंने उसे छोड़ा मैं आप बाग़में उसके निकट गयाथा उसने अपनी बस्तु का भेद मुझसे कहा कि तुम मेरा असबाब ले जहाज़पर चलो मैंभी माली से जो दो तीन दिनसे रोगी होगया है बिदा हो शीघ्र आताहूं परन्तु न जानिये ऐसा क्या कारण हुआ कि वह जहाज़ पर न आसका मैंने लाचार हो जहाज़ खोलदिया बदौरा ने यह बृत्तांत सुन ब्यापारियों और कप्तान की सम्पूर्ण

बस्तु और द्रव्य हरली और कप्तान से कहा वह व्यापारी जिसे शिलापूजकों के नगर में छोड़ आयाहै मेरा ऋणी है तू तुरन्त जाकर उसे ला जबतक तू उसे न लावेगा मैं यह तेरी और व्यापारियों की बस्तु न छोडूंगा इसके सिवाय तुझे दण्डदूंगा कप्तान जहाज़ ले शिलापूजकों के नगर की ओर चला और अति शीघ्र वहां पहुँच जहाज़ का लंगर किया और एक नाव पर सवार हो नगरमें प्रवेश किया और उस बाग़ के द्वार पर जाय हांकदी क़मरुज़्ज़मां अकेले रहजाने और अपनी प्रिया के बियोग से कईदिन न सोया था और उस घड़ी को जिसघड़ी उस यंत्र को निकाल के देखा था हज़ारों धिक्कारदेता उस समय बस्त्र उतार सोने के लिये जाताथा इतने में शब्द सुना और उसी दशासे किवाड़ खोलनेगया ज्योंहीं किवाड़ खोला त्योंहीं कप्तान और ख़लासी उसे पकड़ नाव पर लेगये और नाव को शीघ्रखेकर जहाज़पर चढ़ाया और उसी समय से जहाज़ का लंगर उठा अबौनी टापू को चले क़मरुज़्ज़मां इस दशा को देख विस्मित हुआ और कप्तान से पूछा तुम मुझे बाग़ से पकड़ क़ैद किये क्यों लिये जातेहो कप्तान ने कहा तू अबौनी के बादशाह का ऋणी है उसी की आज्ञा से तुझे पकड़े लियेजाते हैं क़मरुज़्ज़मांने कहा मैंने उसकी सूरति भी नहीं देखी और न कभी उसके देश में गयाहूं कप्तान ने कहा इस बृत्तान्त को तुम उससे कहना तुम कुछ चिन्ता मतकरो वह बादशाह अत्यन्त न्यायी और शीलवान्है तुमको दुःख न देगा निदान वह जहाज़ जैसा शीघ्र गयाथा वैसाही जल्द अबौनी देशमें पहुँचा कप्तान अपने छुटकारे के लिये उसी क्षण क़मरुज़्ज़मां को जहाज़ से उतार अबौनी के बादशाह के समीप लेगया उस समय बदौरा सोने के लिये जातीथी जहाज़ कप्तान और क़मरुज़्ज़मां समेत लौटआने का समाचार सुनतेही महल से बाहर निकलआई और अपने प्राणपति को जिसके वास्ते रोया करतीथी मलीनबस्त्रोंसे कि किसी ख़लासी ने उसे दियेथे देखकर पहिंचाना और दौड़कर उसे कण्ठ से लगाना चाहा परन्तु कुछ शोचके ठहर गई और बिचारने लगी कि यहां के पुरबासी जो मेरे और इसके

नम्बर ३० मुतअ़ल्लिक़े सफ़े ४०८ द्वि·भा·

चित्र जिन्दर और शेर का

बृत्तांतको नहीं जानते हँसेंगे यह शोच उसे एक प्रधानको सौंप आज्ञा दी कि उसे स्नानकरा बस्त्रपहिरा भोर के समय मेरे समीप लाना प्रातसमय जब वह प्रधान क़मरुज़्ज़मां को स्नानकराय स्वच्छ बस्त्र पहिराय बदौरा के निकट लेगया तो उसी समय बदौरा ने कप्तान और सब ब्यापारियों का असबाब छोड़दिया बिशेष ढाई हज़ार रु-पया और ख़िलअत आदि पारितोषिक दे बिदा किया अनन्तर क़मरुज़्ज़मां को बड़ापद दे प्रतिसमय अपने साथ रखनेलगी एक दिन रात को क़मरुज़्ज़मां को एकांत में वह यंत्र दिया और कहा बहुत दिनबीते एक ज्योतिषी ने मुझे यह यंत्र दिया था तुम सर्वज्ञ हो इसे भलीप्रकार देख इसके गुण अवगुण कहो क़मरुज़्ज़मां ने उस समय पर्यन्त बदौरा अपनी प्रिया को जो पुरुष के बेष में थी अबौनी का बादशाह समझाथा वह पहिले तो कई दिनतक क़म-रुज़्ज़मां अपने पतिके नामसे बिख्यात रही और अबौनी की शाह-ज़ादीके बिवाह के पश्चात् अपने श्वशुर के नाम असमंजस से प्र-सिद्ध रही निदान क़मरुज़्ज़मां ने उस यन्त्रको देख पहिंचाना और अत्यन्त बिस्मितहो कहा स्वामी इसमें बहुतबुरे अवगुण हैं जिससे मैं आपदा में पड़ मरण तुल्य होगया और इसीके कारण अपनी परमप्रिया से मेरा बियोगहुआ यह यंत्र मेरी स्त्री का है जिसके बि-योग में न तो मैं जीता और न मराहुआहूं जो इसकी कहानी आप मुझसे श्रवण करें तो निस्संदेह मेरी दुर्दशा पर आपको दया उ-पजैगी बदौरा ने कहा मैं इस बृत्तांतको दूसरे समय सुनूंगी तुम कुछ काल यहां ठहरो वह वहां से उठ एक कोने में गई और पुरुषों के बस्त्र उतार स्त्रियों के बस्त्रपहिन वही पटका जिसे बियोग के दिन कटि में बांधा था बांधकर क़मरुज़्ज़मां के समीपआई क़मरुज़्ज़मां अपनी प्रिया को तुरन्त पहिंचान दौड़ा और उसे लिपटगया और कहा ऐसे बादशाह का गुण मानताहूं जिसकेकारण मैं अपनी प्यारी से मिला बदौरा ने कहा अबतुम उस बादशाह को न देखोगे वह बादशाह मैं हीं थी उपरांत बदौरा ने अपनाबृत्तांत आरम्भ से अन्त पर्यन्त क़मरुज़्ज़मां से प्रकट किया और क़मरुज़्ज़मां ने भी अपना

हाल कहा फिर परस्पर बृत्तांत सुन अपनी शय्या पर जाय सुखशयन किया तदनन्तर बदौरा ने निज बस्त्रपहिर असमंजस बादशाह को अपने महल में बुलवाभेजा उस बादशाह ने महल में एक रूपवती सुन्दर स्त्री को देख आश्चर्यकर पूछा यह कौन स्त्री है और कहां से आई और मेरा दामाद कहांहै बदौरा ने मुस्कराके उत्तरदिया कल दिनतक मैं अबौनी देश का बादशाह था आज मैं चीन देश की शाहज़ादी शाहज़मांनामक चीलद्रनद्वीप के बादशाह के बेटे की स्त्रीहूं यदि आप किंचित् ध्यानधर हम दोनोंका बृत्तान्त सुनेंगे तो आश्चर्यकरेंगे सो उसने अपना और अपने भर्ता का बृत्तांत सबिस्तर कहसुनाया और कहा हमारे धर्म में चार स्त्रियों के साथ इकट्ठा बिवाह करना उचितहै परन्तु पहिली स्त्री को दूसरी स्त्री के साथ बिवाहकरने से अत्यन्त ईर्षा और डाह उपजती है मैं इस की पहिली स्त्रीहूं मैं मनसे कहतीहूं कि तुम्हारी बेटी का बिवाह मेरे पति से हो बादशाह ने यह अपूर्व बृत्तान्त सुन आश्चर्य किया और क़मरुज़्ज़मां से कहा हे बेटा! आजतक हम बदौरा को पुत्र जानते थे परन्तु यह ज्ञात न था कि यह चीन की शाहज़ादी और तुम्हारी स्त्री है अब मैं तुझे दामाद जानताहूं जो तुम्हारी इच्छाहो तो मैं अपनी बेटी हयातुल्नफ़्स का तुम्हारे साथ बिवाहकरदूं तुम्हारी स्त्री भी इस बात में राज़ीहै और तुम मेरे दामाद होकर इस देश की बादशाहत आनन्दपूर्बक करो क़मरुज़्ज़मां ने कहा मुझे अपने देश में जाने की इच्छा थी निदान क़मरुज़्ज़मां उस दिन से सिंहासनपर बैठ वहांका राज्य करनेलगा और हयातुल्नफ़्स के साथ उसका बिवाह बड़ी धूमधाम से हुआ वह दोनों स्त्रियां आनन्दपूर्बक प्रीतिसे रहने लगीं और क़मरुज़्ज़मां उन दोनों के साथ बराबर प्रीतिकरता और प्यार तुल्य रखता और पारी २ से उन दोनों के महल में जाय आनन्द से बिहारकरता ईश्वर की इच्छा से एकही बर्ष में उन दोनों स्त्रियों से दो बेटे अतिसुंदर उत्पन्नहुये क़मरुज़्ज़मां ने उनके उत्पन्न होने का बड़ा उत्सव किया और लाखों रुपये याचक मंगन और सेवकादिकों को दिये जो बेटा बदौरासे उत्पन्नहुआ उसका नाम अमजद

और जो दूसरी से था उसका नाम असद रक्खा वह दोनों भाई एकही जगह रहनेलगे जब वह बड़े और बिद्या सीखने के योग्य हुये उनके वास्ते सर्वगुण सम्पन्न बड़े बड़े चतुर बिद्यानिधान अध्यापक नियत किये उन दोनों में अत्यन्त प्रीति थी जितने २ वह बढ़तेजाते उतनीही उनमें प्रीतिभी बढ़ती गई जब वे दोनों बड़े हुये और बुरा भला समझनेलगे क़मरुज़्ज़मां ने दोनों के वास्ते भिन्न २ महल और सेवक नियत करदिये परन्तु उन दोनों ने कहा हम दोनों भाई एकही महल में साथही रहाकरेंगे हमें एक दूसरे का बियोग एक घड़ीमात्र का अच्छा नहीं लगता क़मरुज़्ज़मां ने कहा हे बेटो ! जो तुम्हारी इच्छाहो वह दोनों एकही घर में आनन्दपूर्बक रहने लगे जब वह दोनों उन्नीस २ बर्ष के होकर बादशाही प्रबंध और शस्त्रबिद्या में बड़े निपुणहुये क़मरुज़्ज़मां ने बिचारा जब मैं शिकार खेलने जाऊंगा तो मेरे पीछे पारी २ से यह गद्दी पर बैठा करें सो वे अपने पिता की आज्ञानुसार गद्दी पर बैठाकरते यदि वे दोनों सुन्दरता और बुद्धि में तुल्य थे पर उनकी दोनों माता अपने बेटे से दूसरे को अधिक प्यार करतीं तात्पर्य बदौरा असद को बहुत चाहती और उसकी सौत बदौरा के बेटे को और वह दोनों सब बिषयों में अपनी २ सौतेली माता से सम्बन्धरखते और यही प्रीति सौतेली माताओं के गुप्तईर्षा और डाह का कारणहुई उन दोनों ने यही चाहा कि हम अपने २ पुत्र का मन सौतेली मातासे फेरें प्रकट में उनकी परस्पर प्रीति देख न कहसकीं इस हेतु उन्हों ने चाहा इस बृत्तांत को अपने २ बेटों से प्रकटकरें सो एक दिन अमजद शाहज़ादा बदौरा का पुत्र सभा से उठ अपने घर आता था कि मार्ग में सेवक ने अलग लेजाय उसकी दूसरी माताका पत्र उसे दिया उसने पत्र पढ़ते ही कोपाग्नि में उस सेवक को ऐसा खड्गमारा कि दो खण्ड हो गिरपड़ा और उसी दशा में अपनी माता बदौरा के समीप जाय उस पत्र को दिखाया वह भी उसे पढ़ अत्यंत क्रोधितहुई और कहा बेटा जो उसने मेरे बिषय में लिखा केवल झूठ दोष लगायाहै अनन्तर उसने अपने महलमें जाय सबबृत्तांत अपने भाई असदसे कहा

और उस पत्र को दिखाया वह भी उसे पढ़ अत्यन्तकोपितहुआ दूसरे दिन असद सभा में जाय तख़्त शाही पर स्थित हुआ और सभा को बिदाकर अपने घर जाता था कि मार्ग में एक बृद्धा ने बदौरा का पत्र उसे दिया असद भी उसे पढ़ ऐसा क्रोधित हुआ कि उस बृद्धा को मारडाला और अपनी माता के निकटजाय पत्रदिखाया वह पत्र को पढ़तेही असद से क्रोधितहुई और कहा तूभी अमजद की सदृश बिक्षिप्त होगयाहै तूने व्यर्थ उसको मारडाला मेरे साम्हनेसे चलाजा फिर कभी मेरे साम्हने न आइयो असद अपनी माताके क्रोधित बचनसुन कोपाग्निमें काष्ठवत् जल अपने महलमें आया और वह पत्र अमजद को दिखाया निदान वह दोनों शाहज़ादे इस बात से अत्यन्त दुःखी और व्यथितहुये और उन दोनों की माताओं ने अपने अपने बेटे से अतिअप्रसन्न होकर उनके बध करने की इच्छा की तीसरे दिन क़मरुज़्ज़मां अहेर से लौट अपने महल में आया दोनों स्त्रियोंको इकट्ठी शोचयुक्त और रोतेदेख बिस्मितहुआ और पूछा कुशल तो है क्यों ऐसी मलिनरूप होरहीहो बदौरा ने कहा तुम्हारे दोनों पुत्रों ने हमको इतना दुःखदिया कि कुछ हम कह नहीं सक्तीं इससे अधिक हम तुमसे और कुछ नहीं कहसक्तीं क़मरुज़्ज़मां छलयुक्त बैन बदौरा के सुन कोपित हो चाहता था कि दोनों बेटों को बुलवा अपने हाथों बध करें परन्तु श्वशुर के समझाने से आप न मारा और जिन्दरनामक एक अपने प्रधान को बुलाके कहा इसी समय इन दोनों दुष्टों को नगर से बाहर लेजाय किसी बन में बध कर और उनके मरने का कोई चिह्न लाकर मुझे दिखा जिन्दर उन दोनों निर्दोष प्राणियों को रातोंरात पुरसे बाहर लेगया और भोर होतेही घोड़ों से उतर उन दोनोंसे बादशाह की आज्ञा प्रकट की उन्हों ने कहा हम निर्दोष हैं यदि बादशाह की यही इच्छाहै तो बहुत अच्छा हमें मार अमजद ने कहा पहिले मुझेमार कि अपने असद भ्राता को मारेजाते न देखूं असद ने भी यही कहा तब प्रधान ने उन्हें मिलाके चादरसे बांधा और खड्ग निकाल मारना चाहा इतने में उस का बहुमूल्य घोड़ा जिसका साज सुनहला था खड्ग की चमक से

भड़का और बागतोड़ बनकी ओर दौड़ा जिन्दर सोचा इनका मारना तो सुगमहै पहिले घोड़े को पकड़लाऊं ऐसा न हो जो वह दूर निकलजावे निदान खड्ग वहीं छोड़ आप घोड़े के पीछे दौड़ा घोड़ेको बनमें शीतल बायु लगी वह और अधिक भागने लगा उसके हिनहिनाने से एकसिंह बनसे सोताहुआ जाग बाहर निकला और जिन्दर का पीछा किया ॥ अब उन दोनों भाइयों का हाल सुनो वह दोनों बिचारे चादर से बँधेहुये उसके आगमन की बाट देखते थे थोड़े काल के पश्चात् असद ने अमजद से कहा भाई बिलम्ब हुआ जिन्दर घोड़ा ले उधर से नहीं लौटा ऐसा न हो कि कोई उसपर दुःख पड़ाहो उसकी सहायता अवश्य करनी चाहिये यहकह उन दोनों ने चादर खोली अमजद उसका खड्गले संयोग से उसी बन की ओर जहां सिंह ने उसे गांसा था दौड़ा और यह दशा देख सिंह को बड़ी बीरता और पुरुषार्थ से ललकारा सिंह जिन्दर को छोड़ अमजद की ओर झपटा उस साहसी ने लपक ऐसा खड्गमारा कि सिंह दो खण्ड हो गिरपड़ा तिस पीछे अमजद ने खड्ग को रख जिन्दर को कि भय से मूर्च्छित हो गिरपड़ा था पृथ्वी से उठा उसके शरीर और वस्त्रों से धूर पोंछी और असद उसके घोड़े को पकड़लाया तदनन्तर अमजद ने खड्गपोंछ जिन्दर को दे कहा अब तुम हमारे पिता की आज्ञा प्रतिपालन करो जिन्दर ने देखा सिंह के दो टुकड़े हुये पड़ा है अमजद की सामर्थ्य और बलपर धन्य २ किया और असद का बड़ागुण माना फिर प्रत्येकके चरणचूम बिनयकी हे शाहज़ादो ! तुम ने मेरेप्राण ऐसे बली बैरी से बचाये और मेरे घोड़े को पकड़ लाये यदि हज़ारबर्ष पर्यन्त असंख्य जिह्वा से तुम्हारे उपकार का बखान करूं तो थोड़ाहै अब मैं क्योंकर तुमको मारूं किन्तु आशारखताहूं कि इतनीढिठाई तुम मेरी क्षमाकरो जो बादशाह मुझे तुम्हारे बदले कुटुम्बसहित बधकरे तौ भी मुझे स्वीकार है निदान अमजद और असद को अपने कण्ठ से लगा कहा मुझे एक एक बस्त्र ऊपरका दो सो दोनों के बस्त्र सिंह के रक्त में डुबोये और जितने अशरफ़ी रुपये उसके पास थे उन्हें दे कहा तुम दोनों किसी दूसरे देशमें चले

जाओ और आप वहां से नगर में आया और बादशाह के सन्मुख जाय दोनों के रुधिर से डूबेहुये वस्त्र उसके साम्हने डालदिये देखतेही क़मरुज़्ज़मां का क्रोध शांत होगया और बेटों के शोक से अति व्याकुलहुआ उनके वस्त्रों की जेबों में से उनकी दुष्ट माताओं के हाथ के लिखेहुये दो पत्र पाये उनको पढ़ उसे प्रतीतहुई कि यह निर्दोष थे इससे वह अत्यन्त शोकयुक्त हो हाहाखाय रोकर कहनेलगा मेरे सदृश कोई अन्यायी पिता संसार भरमें न होगा जिसने अपने बेटों को निर्दोषमारा वह दोनों अपनी माताओं के छलबल से मारेगये तदनन्तर सौगन्दखाई फिर कभी अपनी स्त्रियों का मुख न देखूंगा और उन दोनों को कारागृह में डालदिया और अपने दोनों पुत्रोंके मरवाडालने से शोकसागर में डूबा और इधर वह दोनों भ्राता बन २ भागते और रातको बनफल भोजनकर कालक्षेप करते चले जाते रातको बन में एक भाई सोता और दूसरा जग बनपशुओंसे रक्षा करता इसीप्रकार एक मास प्रवास करते बहुत ऊंचे कालेपहाड़ के नीचे पहुँच उस पर चढ़ने लगे उँचान निचान के कारण थकित भये बिशेष असद अधिक असक्तहो गिरपड़ा अमजद कुछ साहस कर पहाड़ की चोटी पर चढ़गया वहां निर्मल मिष्ट नीर का अति उत्तम कुण्ड और एक अनार का बृक्ष था जिसकी घने घने फलों की डालियां झुकके नीचेलगीथीं अमजद असद को उठा वहीं लेगया वह भूखे प्यासे निर्बल होगये थे अनार तोड़खाये तीन दिन वहीं ठहरे चौथे दिन दूसरे पहाड़ की ओर जिसका मार्ग सूधा और बराबर था चले पांच दिन पीछे उस पहाड़ के नीचे उतरे वहां एक बिशाल नगर देखपड़ा वह उसे देखतेही प्रसन्नहुये और वहां जाने की इच्छाकी असद ने कहा भाई हम दोनों का इकट्ठा वहां जाना अच्छानहीं ऐसा नहो जो किसी प्रकार से दुःख में पड़ें एक तो उस से बचारहे मैं नगर में जाय शीघ्र भोजन मोललेकर आताहूं तुम इसी स्थानपर ठहरो निदान वह नगर की ओर चला जब नगर के भीतर पहुँचा प्रथम उसे बृद्धपुरुष मिला असद ने उसका स्वरूप देख दण्डवत् कर पूछा बाज़ार किस ओर है उसने मुस्करा के उत्तर

दिया हे पुत्र ! तुम मुझे बिदेशी जानपड़तेहो असद ने उत्तर दिया सच है मैं अभी इस देश में दूरसे आया हूं बृद्ध ने कहा बेटा तुम क्यों बाज़ार पूछतेहो असद ने कहा वहां से मैं भोजन अपने भाई के निमित्त मोल लाऊंगा बृद्ध ने कहा आज तुम मेरे घर पर चलो वहां कईप्रकार के भोजन बनेधरे हैं तुम पेट भरकर खाना जितना लेजासको अपने भाई के लिये लेजाना निदान वह कुटिल बृद्ध असद को झांसादे अपने महल में लेगया असद ने उसके घर में जाय देखा कि चालीस बृद्ध अग्नि के चहुं ओर बैठे पूजा करते हैं यह हाल देख डरा और जानगया कि इस दुष्ट बृद्ध ने मुझसे छल किया उपरांत उस बुड्ढे ने उन चालीसों से कहा आजकादिन सुफल है जो ऐसा शिकार हाथलगा यह कह गजवान् का नामले पुकारा कि तुरन्तआ और इसे तहखाने में लेजा पुकारतेही एक कुरूप हब्शी आया और असद को पछाड़ मुश्कें बांधीं उस बृद्ध ने कहा इसे तहखाने में लेजा मेरी बोस्तना और कैवाना लड़कियों को सौंप कहियो इसे रक्षापूर्वक रक्खें और प्रति दिवस इसे बहुत मारें और प्रात व सन्ध्या को नियम से रोटी का टुकड़ा खाने को और एक जलका लोटा पीने को दें जिससे यह न मरे जब जहाज़ की ऋतु आवे हम इस मुसल्मानको ज्वालामुखी पर्वत पर भेजेंगे कि इसमें अग्नि की भेंट दीजावेगी गजवान् उसे पकड़ वहीं लेगया और एक भारी बेड़ी उसके पांव में डालदी कैवाना और बोस्तना प्रतिदिन वहांजाय असद को नग्नकर अतिनिर्दयता से मारतीं जिससे वह मूर्च्छा खाय गिरपड़ता तब वही दुष्ट स्त्रियां रोटी का टुकड़ा और जल दें और उसी दुर्दशा में उसे छोड़ चलीजातीं असद सचेत हो अपनीदुर्दशा और दीनतापर बहुत रोता उपरान्त यह समझता कि मेरा भाई अमजद इन सब दुःखों से तो बचा है इससे अपने मनको धैर्यदेता अमजद सन्ध्या तक अपने भाई की बाट देखाकिया जब रात्रिहुई तब उसके आने से निराशहो दुःखित हुआ सम्पूर्ण रात्रि अत्यन्त व्याकुलता से काटी भोरको उठ नगर की ओर गया उसमें मुसल्मानों को कमदेख आश्चर्य किया एक मनुष्य से पूछा इस नगर

का क्या नाम है उसने कहा इस बस्ती को अग्निपूजकों का नगर कहते हैं क्योंकि इसमें सबकेसब अग्निपूजक रहते हैं मुसल्मान यहां नहीं रहते अमजद ने पूछा यहांसे अबौनीद्वीप कितनी दूर है उसने कहा यहां से वह द्वीप समुद्रमार्ग से चार महीने की राहपर और खुश्की से दो महीने परहै अमजद जो चार सप्ताह में अबौनी से आयाथा यहसुन अचम्भा किया फिर शोचा कि हमबड़े २ भयानक मार्गों से आये हैं सूधामार्ग इससे निस्सन्देह दूरहोगा उपरांत फिरते फिरते एक सूचीकार की दूकानपर खड़ाहोगया उस सूचीकार ने उसके स्वरूप और भेष से जाना कि यह मुसल्मान है अमजद उसे अपने अनुकूल पाकर प्रणाम कर कुशलपूछ बैठगया और उसे दयावान् पा अपनी आपदा और अपने भाई के लोप होजानेका बृत्तान्त प्रकटकिया सूचीकार ने कहा जो तुम्हाराभाई किसी अग्निपूजक के हाथलगा तो उसका मिलना कठिनहै परन्तु अब अपनी रक्षाकरो यदि तुम मेरेसमीप रहोगे तो मैं तुम्हारीरक्षा और सहायता करूंगा अमजद इसबृत्तान्त को सुन अपने भाई के मिलनेसे निराशहुआ और उसका उपदेशमान एक मास पर्यंत सूचीकार के बिना बाहर न निकला एकदिन वह अकेला उसनगर में निकला तो दैवयोगसे किसी कूचे में जानिकला वहां एक अतिरूपवती तरुण स्त्री ने अपने चन्द्रमुख से बस्त्रउठाय उससे सुन्दर कटाक्ष किया और पूछा हे प्राणप्यारे! कहांजातेहो और कहांके रहनेवालेहो ठहरजाओ अमजद ने उसकेरूप छविअनूप पर मोहित हो उत्तरदिया मैं अपने महल को जाताथा परन्तु अब तुम जहां लेचलो वहांचलूं उस मृगनयनी ने कहा मुझऐसी सप्रतिष्ठितस्त्रियां अपने प्यारों को अपने घर नहीं लेजातीं किंतु पुरुष उनको अपने घर लेजायाकरते हैं अमजद शोचा मेरे तो कोई घरनहीं और जो सूचीकार के घर इसे लेजाऊं तो बड़ीलज्जा है इसके बिशेष मैं इसनगर में किसीको नहीं जानता तू इस बिचारको छोड़ सीधासूचीकारके घर चलाजा सो अमजद चुपकाहो वहांसेचला वह सुन्दरी उसके पीछे होली अमजद ने यह इच्छाकी कि वह स्त्री मेरापीछा छोड़ चलीजावे और

मैं किसी प्रकार सूचीकार के गृह में पहुँचूं परन्तु वह दोनों ऐसे थक गये कि किसीगली में एक हवेली के द्वारपर जिसके दोनों ओर चौकी और कोंच बिछेथे एकओर अमजद दूसरी ओर वह स्त्री बैठगई थोड़ीदेर पीछे उसस्त्री ने अमजद से पूछा क्या तुम्हारा महल यही है अमजद चुपका होरहा अनन्तर उसनेकहा प्रीतम भीतर क्यों नहीं चलते किसकी बाट देखतेहो अमजद ने उस स्त्री के धोखा देने के लिये कहा इस घर की कुंजी मेरेसेवक के पासहै उसे मैंनें भोजन मोललेने के लिये बाज़ार में भेजाहै अमजद के इस कहने से यह प्रयोजन था कि वह स्त्री ऊबके चलीजावे परन्तु यह न जानताथा कि वह छाया के समान पीछा न छोड़ेगी थोड़ीदेर पीछे उस स्त्री ने कहा तुम्हारासेवक बड़ादुष्ट और क्रूरहै जो अबतक नहीं आया जब वह आवे तो उसे भलेप्रकार दण्ड देना फिर कहनेलगी मुझे शोभा नहींदेती जो मैं परपुरुष के साथ मार्ग में बैठूं यह कह काष्ठ का ताला जो उस महल में लगाथा तोड़ने लगी अमजद ने कहा ताला मत तोड़ कुछकाल ठहर उसने कहा क्या तुम्हारा यह घर नहीं काष्ठ का ताला फिर बनजावेगा निदान वह सुन्दरी ताला तोड़ महल में गई अमजद ने मनमें कहा इसको तो स्त्री जान कोई कुछ न कहेगा मुझी से इसके मध्ये तकरार होगी इससे यह उत्तमहै कि तू यहां से चलदे यह इच्छाकर उठा इतने में स्त्री ने बाहरआ कहा हे प्राणपति ! तुम क्यों अपने महल में नहीं चलते अमजद ने कहा अभी मेरा सेवक बाज़ार से नहीं आया मैं उसके आगमन की बाट देखताहूं वह आवे तो मैं चलूं उसने कहा भीतर बैठकर सेवक के आगमन की बाट देखना निदान वह निरुपायहो महल में गया महल अतिसुन्दर अत्यन्त स्वच्छ और बिशालदेखा सहन बहुत चौड़ा और रमणीय फिर दोनों सीढ़ी से चढ़ बैठने के स्थान में गये उसे अत्यन्त सुन्दर सुन्दर दालान दरदालान अति बिचित्र बस्तु से अलंकृत पाया और एक स्थान पर अनेक पात्र नानाप्रकार के स्वादिष्ठ व्यञ्जनों से भरेहुये रक्खे थे और दूसरी जगहपर चीनी के पात्रों में अति स्वच्छ सूखे और गीले फलरक्खे थे एकओर मद्य के पात्र और

शीशे रक्खे थे अमजद उस महल को अतिसुन्दर देख समझा कि यह अवश्य किसी धनाढ्य का स्थान है अभी उसके सेवक आय हमें मारेंगे यह शोच अति चिन्ता करनेलगा वह स्त्री सब सामग्री देख अति प्रसन्नहुई और कहनेलगी हे प्यारे, नयनों के तारे! तुमतो कहते थे अभीकुछ तय्यार नहीं यहां तो सबकुछ बर्तमान है तुम्हारा दास भोजन और फलादि रख कहीं दूसरे कार्यको चलागयाहोगा तुम्हारे मलीन मुखसे ज्ञात होता है कि यह सब सामग्री और किसी स्त्रीके निमित्त है जिसके लिये तुम उदासीन बैठेहो हे प्यारे! तुम कुछ चिंता मतकरो उस सुन्दरी को आने दो मैं उसे कुछ न कहूंगी अमजद ने हँसदिया और कहा हे प्राणप्यारी! तुम नहीं जानतीं यह पाक जो बर्तमान हैं मेरे भोजन करने के योग्य नहीं मेरा सेवक अतिस्वच्छ और नवीन नानाप्रकार के भोजन लाता होगा इसी हेतु अभीतक मैंने भोजन नहीं किया वह स्त्री उसे बरजोरी भोजन पर बैठाय खानेलगी और दोतीन ग्रासखा एक पात्र मद्य पी दूसरा अमजद को दिया उसने वहभी लाचारी से पिया अमजद ने मन में कहा उत्तमहो कि कोई सेवक उस भवन के धनी का न आवे और हम यहांसे खा पी अपने अपने घरोंको चले जावें यदि ईश्वर न करे कोई आगया तो अतिअप्रतिष्ठा होगी यह तो यही चिंता करता था परन्तु वह स्त्री बड़े हर्ष से भोजन करती थी जब वह दोनों भोजनकर मद्य पी निश्चिंत हुये इतने में उस घर का बहादुर नामक धनी आपहुँचा वह बादशाह के अश्वशाला का रक्षक था इस भवन के सिवाय उसके रहने का एक और भी घर था इस घर में कभी अपने मित्रों को निमन्त्रणकर ज्यवनार करता इसी लिये वह उसदिन अमजद के आने के दो चार घड़ी पहिले अपने इष्टमित्रों के हेतु भोजन और फलादि उस जगह रखगया था पहिले उसने कुफ़ुल टूटा और द्वारखुला देख आश्चर्य किया जब भीतर जाय मनुष्यों के बोलने और खानेका शब्द सुना तो अधिक बिस्मित हुआ सो वह उस दीवार की आड़ में खड़ा हो उनका चरित्र देखने लगा कि यह कौन हैं उसने वहां क्या देखा कि यह दोनों निश्शंक

होय भोजन करते और मदिरा पान करते हैं उस सुन्दरी की पी
द्वार की ओर थी उसको बहादुर के आने का हाल मालूम न हुआ
परन्तु अमजद का मुख द्वार की ओर था उसको आते देख डरा
और अति व्याकुलता से बहादुर की ओर देखनेलगा बहादुर ने
सैन से उसे धैर्यदे अपने निकट बुलाया कि उसका हाल मालूम
करे अमजद लघुशंका का बहानाकर बहादुरकेसमीपगया बहादुरने
अमजदसे पूँछा तुम कुफुलतोड़ क्यों इस स्त्री को यहां लाये अम-
जद ने कहा भाई तुमसे मैं बहुत लज्जितहूं यदि तुम मेरे आगमनकी
व्यवस्था सुनोगे तो बिश्वास है कि मुझे क्षमाकरोगे यह कह उसने
संक्षेप में अपनी सम्पूर्ण व्यवस्था और यहां के आने का कारण
बर्णन किया बहादुर ने कहा हे शाहज़ादे! मुझे तुम्हारी निर्दोषता
बिदितहुई अब तुम भय न करो आनन्दपूर्बक उस स्त्रीके साथ खावो
यह घर और सामग्री मेरी है मेरा नाम बहादुर है मैं बादशाह के
अश्वालय का रक्षकहूं इसके बिशेष रहने का मेरा दूसरा घर भी है
इस घर में कभी कभी अपने मित्रों के साथ आय पहर छः घड़ी
हँसता बोलता हूं फिर इस घर को मूँद के चलाजाताहूं अब मैं से-
वकों के समान बस्त्र पहिर तुम्हारे समीप आऊंगा तुम निश्शङ्क
मुझपर कोपकरना और दुर्बचन कहना और कहना कि बिलम्ब
क्यों हुआ किन्तु दण्ड देना इसमें मेरी प्रसन्नता है और मैंतुम्हारी
सेवा करूंगा तुम रातभर इस सुन्दरी के साथ आनन्द से बिहार
करना और भोर को इसे कुछ देकर बिदा करना मेरे भाग्य उदय
हुये कि तुम ऐसे शाहज़ादे ने यहां आय मेराघर पवित्र किया इतना
दिलासा दे कहा अब तुम बेगही जाय पूर्बवत् उसके साथ भोजन
करो यह सुन धैर्यधर उस स्त्री के निकटजाय बैठा और धर्नी की
आज्ञापाय बड़ी रुचिसे खाने पीने लगा बहादुर ने अपना स्वरूप
बदलकर अमजद के सन्मुख जाने की इच्छाकी इतने में उसके मित्र
जिनको उसने निमन्त्रण कियाथा आये बहादुर ने कहा भाइयो
आज दयाकरो इसके बदले में दूसरे दिन तुमको निमन्त्रण करूंगा
निदान उनको बिदाकर सेवकों के बस्त्रपहिर अमजद के सन्मुखगया

और उसके चरणों पर गिर गिड़गिड़ाय कहनेलगा मेरा अपराध क्षमाकीजिये शाहज़ादे ने प्रकटमें क्रोधित ह्वै कहा हे निर्लज्ज! तू बड़ादुष्ट अयोग्य है भोर का गया अब आया बहादुर ने विनय की स्वामी आज मुझसे बड़ा अपराध हुआ मैं न जानता था कि आप आज सवेरे आवेंगे अमजद ने कहा इस अपराध का दण्ड देना तुझे अवश्य है कि फिर तू ऐसा न करे यह कह उठा और दो चार लकड़ियां धीरे से उसके लगाईं और लकड़ी फेंक फिर भोजन करनेलगा उस स्त्री को इस दण्ड देने से बोध न हुआ उठके उस लकड़ी से बहादुर को ऐसामारा कि वह दीन वास्तव में पीड़ा से रोनेलगा अमजद को यह बात बहुत बुरी लगी उठकर उसके हाथ से लकड़ी छीनी और कहा हे प्राणप्रिया! कोई ऐसा भी मनुष्य को मारता है और उस स्त्री का हाथ पकड़के लेगया और भोजन पर बैठाया बहादुर आंसूपोंछ हाथबांध खड़ाहोगया और पात्र भर भर उनको मद्य पिलानेलगा जब उसने देखा कि वह भलीभांति भोजन करचुके तो पात्र हटा उस जगह को साफ़कर सम्पूर्ण वस्तुओं को अलमारी में रखदिया इतने में सन्ध्या भई बहादुर ने हरएक स्थान पर दीपदान प्रज्वलित किये और शय्या झार अति उज्ज्वल कर रक्खी अमजद और वह स्त्री शयन करने शय्या पर गये बहादुर छुट्टी पाकर दूसरे स्थान में जाय सोरहा उस स्त्री ने उसके खर्राटों का शब्द सुन अमजद से कहा कि तुम इस खड्ग से जो शय्या के पास धरा है लेजाय उस सेवक का शीश काटो तो मैं जानूं कि तुम मुझे प्यार करते हो अमजद को उसका कहना बुरा मालूमहुआ और समझा कि मदिरा पी उन्मत्तहो ऐसे बचन कहती है यह समझ उस स्त्री से कहा हे प्यारी! सेवक ने कोई ऐसा अपराध नहीं किया जिसके बदले बधकरूं तुम्हारा इतना मारनाही मुझे बुरामालूम हुआ उस अन्यायी दुष्टा स्त्री ने कहा मेरी प्रसन्नता इसी में है कि यह दुष्ट सेवक माराजावे जो तुम नहीं मारते तो मैंहीं उसे मारतीहूं यह कह उठी और खड्ग नग्नकर बहादुर की ओर चली अमजद को विश्वास हुआ कि यह दुष्टा अवश्य

उस निर्दोष को जाय प्राण से मारेगी उसको बचाकर इस अभागी को मारना चाहिये धोखादे उससे कहा यदि तुम्हारी प्रसन्नता इसी में है तो खड्ग मुझे दो तो मैं अपने सेवक को अपनेही हाथ से मारूं और तुम मेरे पीछे चुपकी चलीआवो ऐसा न हो जो पांव की आहट से वह जागउठे निदान जब वह दोनों उसी स्थान पर जहां बहादुर सोताथा गये अमजद ने औसरपाय उस स्त्री के ऐसा खड्ग मारा कि मस्तक उसका कट नीचे गिरपड़ा बहादुर ने जागकर क्या देखा कि अमजद रुधिरभराहुआ खड्ग हाथमें लिये खड़ा है और उस स्त्री का शिर कटकर उसकी छाती पर पड़ा है घबड़ा के पूछा तुमने क्यों इस स्त्री को मारा अमजद ने सम्पूर्ण व्यवस्था बर्णनकर कहा तुम्हारी रक्षा के लिये इसदुष्टा को मैंने मारा क्योंकि सिवाय इसके तुम्हारे बचने का कोई उपाय न सूझा बहादुर ने कहा तुम धन्य हो कि मुझ निर्दोष को इस वेश्या से बचाया इससे मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानताहूं इतनाकह फिर बहादुर ने कहा इसी अँधियारी रात्रि में इस की लोथ डालआनी चाहिये यदि सूर्य के उदयहोने के प्रथम मैं इसे फेंकआया तो कुशल है नहीं तो जानना कि मैं पकड़ा गया इस हेतु मैं पहिलेही से यह महल और सम्पूर्ण वस्तु इसकी तेरे नाम लिखेदेताहूं यह कह उसने तुरन्त उसके नाम पत्रपर अपना महल लिख अमजद को दिया और उस स्त्री का शिर और धड़ चादर में बाँध नदी की ओर लेचला मार्गान्तर में उसे थाने की रौंद मिली और उस गठरी को खुलवाय उसमें मरीहुई स्त्रीदेख उसे पकड़ थानेदार के निकट लेगये थानेदार ने दास के वेष में भी बहादुर को पहिंचानकर बिचारा कि बादशाह की आज्ञा बिना इसे बधकरना उचित नहीं रात भर बहादुर को अपने घर में लेजाय रक्खा और प्रात उठ उसे लोथ समेत बादशाह के सन्मुख लेगया बादशाह बहादुर को दुर्बचन दे कहने लगा हे दुष्ट! तू मेरी प्रजा को मार उनका धन बस्तु लूटलेता है अभी इसे बधस्थान में लेजायमारो कोतवाल ने चौराहे में शूली खड़ी की और यह डौंड़ी पिटवाई कि अमुक मनुष्य ने एक स्त्री को मारा है आज वह उसके बदले शूली

दियाजावेगा अमजद बहादुर के न लौटनेसे अत्यन्त चिन्ता में ब्याकुल था अकस्मात् डौंड़ी का शब्द सुन उसे बिश्वासहुआ कि बहादुर अवश्य पकड़ागया और माराजावेगा अब यह उचित नहीं कि मैं अपने को बचाऊं और मेरा मित्र माराजावे तुरन्त उस घर से निकलकर बधस्थान में गया और कोतवाल जो बहादुरको मारनेके लिये लायाथा कहा यह दीन निपट निर्दोष है उस स्त्री को मैंने माराहै जब इस स्त्री ने बहादुर के मारने की इच्छाकी मैंने उसे बचा स्त्री को मारा और सम्पूर्ण ब्यवस्था अपनी और उसस्त्री की कहसुनाई कोतवाल यह सुन उन दोनों को बादशाह के सन्मुख लेगया बादशाह ने अमजद से कहा तू अपने मुख से सब बृत्तान्त कह अमजद ने अपना आदि से अन्त पर्यन्त सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया बादशाह ने यह बृत्तान्त सुन आज्ञादी कि मैंने इस दुष्टा के मारने का अपराध क्षमाकिया और बहादुर को भी जोकि निपट निर्दोषहै छोड़दिया और अमजद को वज़ीर किया कि अपने पिता की अनीति और मार्ग की ब्यथा को भूले इस कृपा के बिशेष हरप्रकार से उसका सन्मानकिया सो अमजद उस अग्निपूजक बादशाह की सेवा करनेलगा और अपने भाई असद को भी बहुधा ढूंढ़ता अनन्तर डौंड़ी पिटवाई जो मेरे असद नामक भ्राता को ढूंढ़लावेगा वा उसका समाचार देगा मैं उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा इसके बिशेष उसने बहुतसे जासूस प्रकट और गोप्य असद को ढूंढ़ने के लिये नियत किये परन्तु कहीं से उसका पता न आया वह दीन उसी तहखाने में क़ैद था उस बृद्ध की बोस्तना और कैवाना लड़कियां उसे मारतीं और रोटी का टुकड़ा और जल उसके सन्मुखरख चली जातीं इतने में अग्निपूजकों के भेंट का दिन निकट पहुंचा वह जहाज़ जो ज्वालामुखी पहाड़ को बर्ष में एकबेर जाया करताथा बहराम नामक कप्तान समेत वहां पहुंचा उस बृद्ध ने ज्वालामुखी पहाड़ की भेंट के हेतु बहराम को उसे सौंपकर कहा इस मुसल्मान को रक्षापूर्बक लेजाना जब जहाज़ वहांसे चलने लगा बहराम ने असद को एक सन्दूक़ में बन्द किया और असबाब इस युक्तिसे

जहाज़ पर चढ़ाया कि असद छिप गया अमजदने जहाज़ छूटनेके पहिले सुना कि अग्निपूजकों की भेंट के लिये एक जहाज़ इस नगर में आया करता है और कप्तान उसका एक न एक मुसल्मान को आतशीन पर्वत में डालनेके लिये इस नगरसे लेजाता है उसने विचारा कहीं इसी कार्य के हेतु असद को पकड़ गुप्त जहाज़ पर न चढ़ायाहो सो आपही जहाज़पर गया और आज्ञादी कि खलासी और व्यापारी इस जहाज़ से अलगहों और अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुम इस जहाज़ में असद को ढूंढ़ो उन्होंने ऊपर नीचे जहाज़ के बहुत ढूंढा कहीं उसे न पाया निदान अमजद ने उसे छोड़ दिया जब वह जहाज़ उस बन्दर से निकल किसी समुद्र में गया तो बहराम ने असद को सन्दूक से निकाल पांव में बेड़ीडाली कि कहीं अपने मरने का हाल सुनके समुद्र में न गिरपड़े कई दिन पीछे जहाज़ को विपरीत वायु लगी और चारों ओरसे जल उमड़ उस जहाज़ को किसी दूसरी ओर लेगया मार्गान्तर में कप्तान को पृथ्वी दृष्टिपड़ी उसने पहिंचाना यह मरजीना नाम मलका की दारुल्सल्तनत है बहराम अत्यन्त भयभीत हुआ क्योंकि वह अग्निपूजकों से बैर रखतीथी किसी अग्निपूजक को अपने नगर में न रहनेदेती और न कोई उनका जहाज़ उसके राज्य में जाने पाता जब वह जहाज़ बन्दर में पहुंचा कप्तान ने जहाज़ के निवासियों से कहा यदि मरजीना के लोग इस जहाज़पर आय इस मनुष्य को लेजाते देखेंगे तो मरजीना जहाज़ को लूट सबके बध की आज्ञादेगी इससे यह उत्तमहै कि असद की बेड़ीकाट इसे सेवकों के सदृश वस्त्र पहिनाये जावें समय पर यह कहाजावे कि यह हमारा दास है और इसके हाथ में उत्तम उत्तम वस्त्र और रत्नदेजाय रानी को भेंटदूं कि वह मुझे दुःख न दे और असद को भी दिलासादूं कि यह हमारा भेद न खोले इस उपाय से यहां बचकर जब वायु अनुकूल होगी तब जहाज़ खोलेंगे सब लोगों ने यह मत बहराम का पसन्दकिया असद के हाथ पांव की बेड़ी हथकड़ी कटवाकर दासों के सदृश सफ़ेद कपड़े पहिनाये और उत्तम उत्तम व्यंजन

उसे खिला प्रकट में उसको अपने में मिलाके कहा कि इस बन्दरसे निकल हम तुझे तेरे देशको पहुंचादेंगे तू धैर्यरखतेरेसाथ बड़ाउपकार किया जावेगा परन्तु चैतन्य रह कोई बात उस बुड्ढे के अपकार की किसीसे न कहना और जो कहेगा तो प्राणसे माराजावेगा निदान बहरामने असद को भलीबिधि समझाय बुझाय और बिनती कर प्रसन्न किया असद ने भी उस दुर्दशा से छूट दासवत् बस्त्र पहिन लिये और बहराम से कहने लगा कि मैं किसी से यह बृत्तान्त न कहूंगा तुम हर प्रकार से धैर्य रक्खो निदान जब उस जहाज़ ने मरजीना के बन्दर में लङ्गर किया मरजीना ने अपने बाग़ से जो समुद्र के अतिसमीप था नवीन जहाज़ देख उसके कप्तान को बुलवाभेजा और आप भी उसका बृत्तान्त मालूम करनेकेलिये बन्दर पर गई बहराम असद को साथले मरजीना के निकट गया और दण्डवत्कर कहा मैंने प्रचण्ड बायु के चलने और तूफ़ान के आनेसे जहाज़ की रक्षा के लिये आप के बंदर में लंगर किया हम ब्यापारी हैं दासोंके लेनदेनका ब्योहार करते हैं हमारे सबदास बिकगये केवल यह दास हमने हिसाब किताब लिखने को रखलिया है यहकह उत्तम उत्तम बस्तु किश्तियों में लगा भेंटदेने को लेगया मरजीना ने असद के रूप अनूप को देख मोहित हो बहराम से कहा मैं तेरी भेंट न लूंगी यह सेवक मुझे दे जो कुछ इसका मोल कहेगा मैं दूंगी उपरांत असद को लियेहुये बाग़ में फिरनेलगी और फिरते २ पूछा तेरा क्यानाम है असद ने रुदन कर उत्तरदिया हे मलका! मेरा कौनसा नाम पूछतीहो मेरे दो नामहैं पहिलानाम मेरा शाहज़ादा असद है अब मेरानाम कुर्बानीआतश इस जहाज़ के लोगों ने रक्खाहै अब अग्निपूजक मुझे भेंट देने को लियेजाते थे मरजीना यह बृत्तांत सुन असद की दुर्दशा पर पछिताने लगी और बहराम को बुलवा बहुतसे दुर्बचन दे कहा हे दुष्ट! तू शाहज़ादे को भेंट के निमित्त लियेजाता है और मुझे छलसे दास बताया तेरे लिये यही उत्तम है कि अभी तू जहाज़खोल यहांसे लेजा नहीं तो तेरा जहाज़ लूट जलादूंगी मेरे सामने से दूरहो बहराम वहां से घबड़ाया हुआ

और रोताहुआ जहाज़पर आया और तूफ़ान के बन्द न होनेपरभी लाचारी से अपने जहाज़ का लंगर उठाने लगा और मरजीना मलका असद का हाथ पकड़ महल में लेगई और उसका वृत्तान्त प्रथमसे अन्तपर्यंत सुन उसे बहुत धैर्य दिया और कहा कल मैं तुम्हें स्नान कराय स्वच्छ बसन पहिराय अपना वज़ीर बनाऊंगी यह कह भोजन मँगवाया और असद को अपने साथ बैठाय खिलाया असद कई मद्य के पात्र पी उन्मत्त होगया जब खा पी निश्चिन्त हुआ तब असद बाग़ में जाय सैर करने लगा और बहुतकाल पर्यन्त वहांपर टहलाकिया फिर बाग़के कुण्डपर बैठ मुखधोया और हरियालीपर लेटरहा एक घड़ी पीछे अचेतहो सोगया बहराम कि मरजीना के भय से लंगर उठाने में लगाथा वायु अनुकूल पाकर खलासियों से कहा अब रात्रि होगई मीठाजल जो जहाज़ पर नहीं रहा हम तुम चल किसीकुयें अथवा कुण्डसे भरलावें और भोर को बहुत सबेरे में जहाज़ को यहांसे खोलूंगा खलासी यह सुन जल ढूंढ़ने चले मार्ग में उन्हें सुधिहुई कि मलका के बाग़ में एक मीठे जलका कुण्ड है वहीं से जल लाना चाहिये यह विचार पात्र ले उसी कुण्ड पर गये वहां एक मनुष्य को सोता देख पहिंचाना कि यह असद है देखकर बहुत प्रसन्नहुये पहिले जल कुण्ड से भर नौका पर लेगये और असद को धीरे से उठाय नावपर सवार कराय बड़े वेग से जहाज़पर लेगये बहरामने असद को पा बड़ाहर्ष किया और दो घड़ी तड़के जहाज़ खोल आतशीन पहाड़ की ओर चला भोर को मलका असद को न पाकर समझी कि वह दिशा गया होगा जब बहुतकाल बीता और वह न आया तब व्याकुलहो सखी और दासियोंको चहुँओर ढूंढ़ने के लिये भेजा उन्होंने कितनाही ढूंढ़ा परन्तु कहीं उसकापता न मिला इतनेमें रात्रि होगई मरजीना असद के वियोग में महादुःखित हो मशालोंके प्रकाशमें शाहज़ादेको ढूंढ़ने लगी बाग़ का द्वार खुलादेख बाँदियों के साथ बाग़ में गई एक बांदी ने असद का जूता पहिंचाना दूसरी ने कहा कुण्ड में जलथोड़ा जान पड़ता है मलका समझगई कि बहराम के सेवक आय शाहज़ादे को

लेगये होंगे और कुण्डसे भी उन्होंने जल लियाहोगा फिर उसने एक मनुष्य को इस बृत्तान्त के मालूम होनेके लिये समुद्र के तीर भेजा कि देख बहराम का जहाज़ खुलगया वा नहीं उस मनुष्य को घाटियों से बिदितहुआ कि बहराम जहाज़ को यहांसे लेगया परन्तु पहर रात्रि बीते एक नाव जलकेनिमित्त बाग़ की ओर भेजी थी मलका मरजीना यहसुन समझी कि बहराम के मनुष्य अवश्य असद को लेगये उसने अपने जंगी जहाज़ोंको कि प्रत्येकसमय तय्यार रहते थे आज्ञादी कि तुरन्त दश जहाज़ लंगर में आवें मैं प्रातःकाल आय सवारहूंगी यह आज्ञा पातेही कप्तान दश जहाज़ लेके लंगर में गया और सम्पूर्ण सिपाही प्रधान और खलासी आदि यात्राकी सामग्री समेत सवारहो मलका की राह देखनेलगे सो वहभी भोर को आयचढ़ी और आज्ञा दी कि तुरन्त जाय बहराम के जहाज़ को पकड़ लो सो वह सब बहराम का पीछा करनेचले तीसरेदिन उस जहाज़ को चारों ओरसे घेरलिया बहराम समझगया कि असदके लिये मरजीनाके जहाज़ों ने मुझेघेरा अपने प्राणधनादि से निराश हो असद शाहज़ादे को बहुतमारा कि इसीदुष्ट के कारण हमने तूफ़ान का दुःख झेला इसके बिशेष हमारा जहाज़ इस मलका ने पकड़लिया इसको जहाज़ पर रखना उचित नहीं तब उसने उसकी बेड़ी हथकड़ी काट उसे समुद्र में डालदिया शाहज़ादा पैरने में अति प्रवीणथा पैरनेलगा पैरते२कूलपर पहुँचा परमेश्वरका धन्यबादकिया क्योंकि परमेश्वरनेही ऐसे गहरेजलसे उसकेप्राण बचाये और अग्निपूजकों से उसे छुटाया पृथ्वी पर जाय अपने बस्त्र सुखाये तिस पीछे बस्त्र पहिन ईश्वरका भरोसा रख एकपन्थ को चला बनके फल खाता दशवें दिन एक गांव में पहुँचा उसे निर्जन पाया फिर उसने उस गांव से एक नगर दूरसे देखा जब उसके निकट पहुँचा तो पहिं-चाना कि यह वही अग्निपूजकों का नगर है जिसमें उसने बहुकाल पर्यन्त दुःख उठाया था यदि वह नगरको देख प्रगटमें प्रसन्नहुआ परन्तु यह शोच भयवान्हुआ कि ऐसा न हो जो फिर कहीं अग्नि-पूजकों के हत्थे में पड़ूं इस हेतु ऐसे समय में नगर को प्रवेश किया

कि सब दूकानें बंद होगई थीं और पुरवासी अपने २ धाममें चले गये थे फिर नगर से बाहरजाय मुसल्मानों के श्मशान में सोरहा अब बहराम का हाल सुनिये जब उसने खिसियाय के कोपसे असद शाहज़ादे को समुद्र में डाला कुछकाल पीछे मरजीना के जहाज़ उसे मिलगये मरजीना आपही उसके जहाज़पर चढ़गई और बहराम से पूछा वह दास कहां है जिसे मेरेबाग़ से निकालके लेआयाहै बहराम ने विनयकी हे मलका ! वह मेरे जहाज़ में नहीं यदि वह यहां होतो अपराधीहूं मरजीनाने पहिले असदको उसमें ढूंढ़ा जब उसमें न पाया क्रोधित हो आज्ञादी कि जहाज़ की वस्तु लूटलो और बहराम को उसके सेवक समेत पृथ्वी पर लेजाय क़ैदकरो मैं सबको वध करूंगी जब बहराम और उसके सेवकों को पकड़के पृथ्वीपर लेगये तो बहराम उतरतेही तटपर से भाग अग्निपूजकों के नगर की ओर गया और रात्रि को पुर के बाहर पहुँचा उस समय नगर का द्वार बन्दहोगया था उसने निरुपायहो किसी श्मशान में सोने की इच्छाकी संयोगवश उसी श्मशान में जहां असद अचेत सोताथा गया और वहां एक मनुष्य को सोता देख असद शाहज़ादा मनुष्य का शब्दसुन जागपड़ा और मुख फेरके देखनेलगा कि कौनहै बहराम ने उसे पहिंचान कहा आपही हमारी आपदाके कारणहुये यदि इसवर्ष में भेंट से बचे तो दूसरे वर्ष कदाचित् नहीं बचसक्के यह कह असद को फिर बांधा और प्रातःकाल उसी बृद्ध के घरजाय सम्पूर्ण वृत्तान्त अपना और असद का वर्णन किया उस कुटिल ने असद के पांव में बेड़ीडाल उसी तहख़ाने में भिजवाय अपनी पुत्रियों को उसी प्रकार दुःख देने की आज्ञादी जब उसने बोस्तना को अपने ढिग आते देखा तो असद मारेभय के रोने और कांपनेलगा और मनमें कहा एक वर्ष पर्यन्त यहीकष्ट भोगूंगा इससे मरना उत्तम है परन्तु परमेश्वर की माया से उसने रोने में बोस्तना के मन को ऐसा पिघलाया कि वह भी उस के साथ रोनेलगी और कहा अब तुम मेरी ओरसे भरोसारक्खो मैं तुम को कदापि दुःख न दूंगी मैं मुसल्मान हुईहूं मैं अग्निपूजन और पापोंको छोड़दिया और परमेश्वरसे

यही मांगतीहूं कि तुम्हारे छूटने का कोई उपाय निकलआवे निदान बोस्तना की बातों से उसे परिपूर्ण धैर्य हुआ परन्तु कैवानाकी ओर से उसे डररहा सो उसने बोस्तनासे कहा परमेश्वर ने तुम्हें मेरे ऊपर दया उपजाई परन्तु कैवाना मुझे अवश्यमारेगी बोस्तनाने उत्तर दिया तुम भयवान् मतहो मैंहीं प्रत्येक समय आयाकरूंगी उसदिन से बोस्तना उसे दिव्य भोजन खिलाने लगी और प्रतिकाल उसे धैर्य दिया करती एकदिन बोस्तना अपने भवन के द्वार पर खड़ीथी कि उसने डौंड़ीका शब्द सुना कि एकमनुष्य कहताहै वज़ीर अमजद आपही अपने भाई को ढूंढ़ने के लिये यह प्रतिज्ञा करता हुआ निकला है कि जो कोई असद को मेरे समीप लावेगा मैं उसको इतना कुछ दूंगा जिससे कई पीढ़ीतक धनवान् रहेगा और जो कोई उसे छुपाके अपने घरमें रक्खेगा वह कुटुम्ब समेत प्राणसे मारा जावेगा और उसकाघर खोद उसपर हलचलाया जावेगा बोस्तना यह डौंड़ी सुन असद के समीप दौड़ी आई और उससे यह वृत्तान्त कह बेड़ीकाट अपने साथ लेआई और गली में पुकार के कहा कि असद यह है अमजद उसका नाम सुनतेही उसी घर के द्वार पर गया और असद को पहिंचान कण्ठ से लगाय घोड़े पर सवारकर बादशाह के निकट लेगया बोस्तना भी अमजद के साथ चलीगई असद ने अपनी सम्पूर्ण व्यवस्था कह सुनाई और अमजद ने उसी समय उस वृद्ध का घर खुदवादिया बादशाह ने बहराम आदि उसके नातेदारों को बुलवा सबके बधकरने की आज्ञादी उन्होंने बादशाह के चरणों पर गिर क्षमामांगी बादशाह ने कहा तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमा न होगा जबतक तुम इस अधर्म को तज मुसल्मानी धर्म अंगीकार न करोगे उन सबने स्वीकार किया फिर अमजद ने बहराम आदिकको असंख्य धनदिया बहरामने अमजद की उदारता को देख विनय की कि मैं गतवर्ष में अबौनी द्वीप को गयाथा मैंने तुम्हारे पिता क़मरुज़्ज़मां को तुम्हारे वियोग में अत्यन्त व्याकुल पाया आश्चर्य नहीं जो वह तुम्हारे शोक में तन त्यागदे उचित है कि तुम दोनों भाई अबौनी में जाय अपने पिता को देखो मैं तुमको

नम्बर ३० मुतअल्लिके सफ़े ४२८ हि॰ भा॰

चित्र खाकान वज़ीर के अरथी की

शीघ्रही आनन्दपूर्बक पहुँचादूंगा वह दोनों इस बातसे राज़ी हुये और वहां के बादशाह से बिदामांगी उसने हर्षपूर्बक स्वीकार किया जब जहाज़ सामग्री समेत तय्यार हुआ वह दोनों शाहज़ादे बादशाह से बिदाहोने को गये बादशाह ने उन दोनों को अपने कण्ठ से लगाया और बहुतसाद्रब्य रत्नादि दिब्यबस्तु दे उनको समुद्रतक पहुँचाने के लिये जानेलगा अकस्मात् हरकारे ने आय कहा कि अमुकदिशा से एक सेना सवार और पैदलोंकी चलीआती है बादशाह ने बिस्मितहो कहा ऐसा कौन मेरा बैरी है जो अकस्मात् मेरे नगर पर चढ़आया अमजद ने बादशाह को चिंतित देख बिनती की आप कुछ शोच न कीजिये मैं जाय उनका बृत्तान्त ज्ञात करता हूं निदान अमजद चतुरङ्गिणी सेना ले उस कटक की ओर चला और हरकारों को भेज ज्ञातकिया कि किसी देश की मलका सेनाले इसनगरकी ओर आईहै अमजदने जाय उससे भेंटकी और पूछा कि तुम मित्रताके मार्गसे आईहो वा युद्धकी इच्छाहै यदि हमसे बैरहै तो हमसे बैरका क्याकारण है उसने कहा मैं संग्राम की इच्छा से नहीं आई मैं अपने असद नामक दासको ढूंढ़ने आईहूं बहराम नामक कप्तान इस पुर का निवासी मेरेनगरसे उसे चुरालाया है मैं तुम्हारे बादशाह से नीति चाहतीहूं यदि असद तुम्हारे नगर में हो तो मुझे दो और मेरानाम मरजीना है अमजद पूर्बबृत्तान्त सुनचुका था कहनेलगा मैं तुम्हारे दास का भाईहूं मेरानाम अमजद है एकबर्ष पर्यन्त वह इस नगर में लुप्तरहा तुम मेरेसाथ चलो हमारे बादशाह से भेंटकरो वह तुम्हारी भेंट से अति प्रसन्न होंगे और असद को तुम्हें देदेवेंगे मरजीना मलका सेना को बाहर छोड़ केवल थोड़ी सखियों समेत अमजद के साथ बादशाह की भेंट को गई बादशाह ने बड़े आदरसे उससे भेंट की और असद शाहज़ादा भी उससे आय मिला मरजीना मलका उसे देख अत्यन्त प्रसन्नहुई और बादशाह से असद के चुरालेजाने का हाल बर्णन कर रहीथी कि इतने में दूसरे हरकारे ने आय कहा कि दूसरी ओर से एक और कटक इस पुर की ओर चला आताहै बादशाह दूरसे उस घनीसेना को देख घबराया

और अमजदसे पूछा यह कौन बैरी चढ़आयाहै जाके देखो अमजद अपनीसेना नगरके बाहर खड़ीकर आप परसेना में घुसगया समीप पहुँच किसीप्रधान से पूछा कि तुम्हारे यहां आनेका क्या कारणहै मुझे अपने बादशाहके सन्मुख लेचलो अमजद उस प्रधान के साथ होके बादशाह के निकटगया और दण्डवत्कर पूछा हमारे बादशाह से तुम्हारा क्या प्रयोजनहै कि ख़बरदिये बिना इतनी सेनालेके पुर में घुस आनेकी इच्छा रखतेहो बादशाह ने उत्तरदिया मेरानाम गोरहै और मैं चीनका बादशाहहूं अपनी बदौरा नाम बेटीका समाचार मालूम करनेके लिये यहां आया कई बर्ष बीते मैंने चीलद्रन द्वीप के शाहज़ादे क़मरुज़्ज़मां से उसका बिवाह करदियाथा वह शाहज़ादा केवल एक बर्षकी बिदाईमांग अपनी स्त्रीसमेत पिताके दर्शनकोगया कईबर्षसे मुझे उसका समाचार ज्ञात नहीं उन्हीं को ढूंढ़ता हुआ यहां पहुँचा मुझे इसबातके सिवाय कुछ संग्रामकी इच्छानहीं अमजद जब यह समझा कि यह बादशाह उसका नानाहै उसके चरणचूमे और कहा आप धैर्यरक्खें मैंहीं आपका नवासा क़मरुज़्ज़मां का बेटाहूं वह इस समय अबौनीटापू का बादशाह है और माता मेरी बदौरा नामक चीन की शाहज़ादी है जिसको ढूंढ़ते आप यहांतक आये दोनों कुशलपूर्बक आनन्दसे हैं चीन के बादशाह ने असद को अपने कण्ठसेलगा बहुत प्यार किया और अमजद और असद के यात्रा और उनकी आपदा का हालसुन बहुत पछताया और अमजद को धैर्य दिया कि वहां चल तुम्हारे पितासे तुम दोनों भाइयों का मेल कराढूंगा निदान अमजद ने अपने नाना से बिदाहो अपने स्वामी के निकटजाय चीन के बादशाह के आनेकाहाल कहा वह इस समाचारको सुन बिस्मितहुआ कि इतना बड़ा बादशाह अपने देश को तज अपनी बेटी के ढूँढ़ने को निकल मेरेराज्य पर्यन्त पहुँचा सो अपने सेवकों को उसके आतिथ्य की आज्ञादी और इच्छा की कि आपही उसके भेंट को जावें इस समयान्तर में यह सुना कि तीसरी दिशा से एकभारी सेना चलीआती है बादशाह ने चिन्ता में होकर अमजद को आज्ञादी तुम जाय उसका हाल भी मालूम

करो अमजद अपने असद भाई को ले बिदाभया जब वह दोनों भ्राता सेना के समीप पहुँचे तो मालूमहुआ कि क़मरुज़्ज़मां अबौनी का बादशाह अपने बेटों को ढूंढ़ने के लिये निकलाहै क्योंकि जब वह अपने बेटों को जिन्हें अपनी स्त्रियों की कुटिलतासे कोप में बध की आज्ञादी थी और उसे यहभी बिश्वास था कि वह दोनों प्राण से मारेगये शोकसमुद्र में मग्नहोय मृत्युके निकट पहुँचा यह दशा देख जिंदर ने उसे धैर्यदे जीते छोड़नेका हाल बर्णन किया यह सुन क़मरुज़्ज़मां ने परमेश्वरका धन्यबाद किया और लाखों रुपये और जोड़े याचक मङ्गल आदिको दानदेकर अपने बेटों के ढूँढ़नेके लिये निकला दैवयोग से फिरताहुआ इस नगर में भी आया निदान उसने अपने बेटों को देख पहिंचाना और कण्ठ से लगा बहुकाल पर्यंत हर्षसे रुदन करतारहा तिसपीछे अमजद ने क़मरुज़्ज़मां से कहा आजही चीन का बादशाह भी ढूंढ़ताहुआ पहुँचा उसने हर्षित हो उन दोनों शाहज़ादों के साथहो चीन के बादशाह से भेंटकरने की इच्छाकी थी कि इतने में क्यासुना चौथीओरसे महाकटक चला आता है क़मरुज़्ज़मां ने अपने बेटों से कहा प्रथम इस सेना को देखनाचाहिये कि किसकी है और किसबादशाह ने इस ओर की इच्छा की है फिर वह तीनों उस कटक को देखनेगये अमजद ने आगेबढ़के पूछा यह किस बादशाह की सेना है और इस अग्नि-पूजक देश में क्योंआया वज़ीर ने जो सबके पहिले था उत्तरदिया कि यह चीलद्रन का बादशाह जो बहुकाल से अपने देशसे अपने बेटे क़मरुज़्ज़मां के ढूंढ़ने के लिये निकलाहै पहुँचा यदि तुम कुछ उसका हाल जानतेहो तो हमें बताओ अमजद ने वज़ीर से कहा मैं अभीआय तुम्हारे प्रश्न का यथार्थ उत्तर देताहूं तुम यहीं ठहर जाओ यहकह उसने जाय क़मरुज़्ज़मां से समाचारकहा क़मरुज़्ज़मां अपने पिता के आने का हालसुन मूर्च्छितहुआ जब कुछ सचेत भया तो अपने पिता के चरणों पर जायगिरपड़ा दोनों बापबेटे परस्पर कण्ठ से लग २ बहुकालपर्यन्त रोयाकिये फिर शाहज़मां ने कहा हे बेटे! तुम मेरे बतानेबिना मुझे क्यों अकेलाछोड़ चलेगये

इस अवधि में तुमने मुझे कुशल का समाचारभी न भेजा कि जिससे मुझे धैर्यहोता क़मरुज़्ज़मां अतिलज्जित हुआ और पितासे बहुतसी बिनतीकी और अपने असद और अमजद बेटोंको उनके पितासे मिलवाया शाहज़मांने अपने दोनों पोतों को अपने कण्ठसे लगा बहुत प्यारकिया निदान वह तीनों बादशाह और मरजीना मलका तीन दिन वहांठहरे अग्निपूजकों के बादशाहने चारोंके बड़ी धूमधामसे न्योता तदनन्तर हरएक सौग़ातदे बिदाकिया और अमजद्केसाथ बोस्तनाको जिसने असदकी बड़ी सेवाकीथी ब्याह दिया और असद के साथ मलका मरजीना जो इसपर मोहितथी और अपने देशको तज केवल उसीके निमित्तआई थी बड़ी धूम-धामसे ब्याहकिया सो वह तीनों बादशाह और मरजीनामलका अपने पति असद समेत अपने २ देशको सिधारे अग्निपूजकों का बादशाह अतिवृद्ध और शिथिल होगयाथा और अमजद्से बहुत प्रीति करताथा उसे अपना राज्य सौंप आप ईश्वरका आराधन करनेलगा और वहांके निवासी अग्निकापूजन छोड़ ईश्वरकी ब-न्दना करनेलगे मलकाशहरज़ाद जब भोर होते यह सुन्दर कहानी कहचुकी उसकी छोटीबहिन दुनियाज़ाद ने कहा बहिन तुमने क्या अच्छाचरित्र कहा आशाहै कि अब कोई दूसरा बृत्तान्त कहोगी क्योंकि तुम्हारे सुन्दर मुखसे ऐसी २ अद्भुत कहानी के सुनने से अतिआनन्द होताहै मलका ने उत्तर दिया यदि कल बादशाह मुझे प्राणदान देंगे तो मैं कल रात्रिके अन्तमें नूरुद्दीन और पारस की बांदी की अत्यन्त सुन्दर कहानी कहूंगी बादशाह शहरयार ने उस कहानी की लालसा से उस दिन भी अपनी स्त्रीको न मारा और पूर्ववत् अपनी शय्या से उठ स्नानादिक कर्म कर अपनी सभामें बैठा ॥

बांसरानगर के बादशाह के वज़ीर ख़ाक़ान के पुत्र नूरु-द्दीन और पारस की बांदी की कहानी ॥

दूसरी रात्रिको शहरज़ाद उस बृत्तान्त को इस भांति कहने लगी कि पूर्वकालमें बांसराका नगर अब्बासी बादशाहोंके आधीन

था और वहां के हाकिम जबेनी और ख़लीफ़ा हारूंरशीद दोनों एकही भाईकी सन्तानथे और वह दोनों चचेरे भाईथे जबेनी के दो वज़ीरथे प्रथमका नाम ख़ाक़ान द्वितीयका सूयख़ाक़ान वहांकी प्रजा ख़ाक़ान की उदारता के कारण बहुत प्यार और सन्मान करती और उसकी प्रशंसा सर्वदा करती दूसरा वज़ीर जिसका नाम सूय था अतिश्रशील और सूम था इसहेतु कोई नगरबासी उससे प्रसन्न न रहता और वज़ीर दोयम वज़ीर अव्वल से अतिईर्षा रखता और सदा उसकी बुराई बादशाहसे करता एकदिन बादशाह ने ख़ाक़ान वज़ीर से कहा मेरे वास्ते अतिसुन्दर चतुर और गाने बजानेवाली बांदी मोललला सूयने कहा ऐसी गुणयुक्त दासी दशहज़ार अशरफ़ीसे कम न आवेगी बादशाहने क्रोधकर उसे उत्तरदिया तेरे विचार में दशहज़ार अशरफ़ी बहुत हैं मैं उसे कुछ नहीं समझता उसीसमय दशहज़ार अशरफ़ी ख़ाक़ानको लौंड़ी मोललेने के लिये दीं ख़ाक़ानने घरपर आके दल्लालोंको बुलवाभेजा और कहा कि एक रूपवती गाने बजानेवाली लौंड़ी ढूंढो उस समय से दल्लाल लौंड़ी ढूंढ़नेलगे कई दिनकेपीछे एक दल्लाल ने वज़ीर से कहा कल एक पारस का व्यापारी एक बांदी आपके इच्छानुसार लाया है वज़ीरने उस समय जो बादशाहके सन्मुख जाता था दल्लालसे कहा उस लौंड़ीको व्यापारी समेत लेआना शाहीदर्बार से लौटके मैं उसे देखूंगा दल्लाल लौंड़ीको वज़ीर के द्वारपर लाया वज़ीर दर्बारसे आय लौंड़ीको सर्वगुणसम्पन्न देख हर्षितहुआ किन्तु बादशाह की आज्ञासे अधिकगुण देखे सो उसके धनी से उसका मोल पूछा उसने बिनयकी स्वामी इसका बहुतमोल है परन्तु मैं इसे आप के हाथ दशहज़ार अशरफ़ी से कम न बेचूंगा मैंने बहुतकुछ इसके सिखाने में व्यय कियाहै बाल्यावस्थासे इसे गाना बजाना सिखाया यह बांदी प्रत्येक बाजेको भलीभांति बजाती और गाती लिखने और कविता में बड़ी निपुण है और सम्पूर्ण पुस्तकें इतिहासादिकी भी इसने पढ़ी हैं मेरेबिचार में यह इनगुणों में अद्वितीयहै परीक्षाकरने से यह सबगुण आपको प्रकट होजावेंगे वज़ीर ने इनसबके परीक्षाकेबिनाही

उसकेरूप छबिअनूपको देखतेही दश हज़ार अशरफ़ी उसे गिनवादीं बिदाहोते ब्यापारी ने बिनयकी स्वामी यह बांदी बहुतदूरसे यात्राकेकष्टभोग यहांपहुँची आप इसको एक सप्ताहतक बादशाह के निकट न ले जाइये इसे इससमयमें दो बेर उष्णजल से स्नान कराना उससमय उसका स्वरूप चौगुणा होजावेगा किंतु उसे पहिंचान न सकोगे अभी उसका मुख किंचित् श्याम होरहाहै खाक़ानने कहा तू सत्य कहताहै मैं इसे एकसप्ताह्के पीछे बादशाहके निकट लेजाऊंगा यह कह उसने बांदीको अपने भवन में लेजाय अपनी स्त्रीको सौंपदिया और कहा इसे रक्षासे रखना मैंने इसे बादशाहकी आज्ञासे मोललिया है दो तीनबेर उष्णजल से स्नान कराइयो और मैं बस्त्रआभूषण पहिरा यहांकीरीतिके अनुसार उसे बादशाह को दूंगा उसका नाम हुस्नअफ़रोज़ था उससे भी कहा मैंने तुझे बादशाहके हेतु मोललिया है जब पांच सात दिन में तू सबल हो जावेगी और बराबर स्नानकरेगी तो तुझे बादशाह के सन्मुख लेजाऊंगा तू यहां बड़ी रक्षासे रहियो किसी पुरुषकेसामने न हूजियो बादशाह तुझे देखतेही तेरा बड़ासन्मान करेगा मेरा एक तरुण बेटा अपनी माता के पास दिनमें बहुधा आता है उससे बचियो बांदीने वज़ीरसे बिनयकी भलाहुआ कि आपने मुझे पहिले से बतला दिया अब आप भरोसा रखिये मैं आपही की आज्ञा के अनुकूल बचूंगी यहकह वज़ीर तो चलागया वज़ीरका बेटा नूरुद्दीन अत्यन्त सुन्दर और शीलवान् बिशेष हास्यरस में निपुणथा मध्याह्नके समय भोजन के लिये अपनी माताके निकट आया वह इस तरुणी, चम्पकबरणी, मृगनयनी, गजगामिनी, चन्द्रमुखी, तमहारिणीके रूपअनूप को देखतेही उसपर मोहितहुआ यद्यपि यह भी उसे ज्ञातहुआ कि यह बांदी बादशाह के लिये मोललीगई है तथापि उसे यह इच्छा हुई कि यह सुन्दरी मेरेनिकटरहे बिशेष इस के बांदी भी नूरुद्दीनको देख उसपर मोहित हुई और परमेश्वरसे यह अभिलाषा करनेलगी कि कोई ऐसाउपाय बनपड़े कि मैं इसी नवकिशोर के पासरहूं और बादशाहके निकट न जाऊं उसदिनसे नूरुद्दीन प्रायः

उस गृहमें आता और माताकी दृष्टि बचाय उस नवयौवना से कटाक्षके सुख लेता वह दोनों परस्पर देख प्रसन्नहोते जब उसकी माताको यह ज्ञातहुआ कि नूरुद्दीन बहुधा यहांआकर लौंड़ी को घूरता है और वहभी दृष्टिबचा उससे सुन्दर कटाक्ष करती है तो एक दिन उसने नूरुद्दीन से कहा और समझाया हे पुत्र! अबतुम परमेश्वर के अनुग्रह से तरुणहुये तुम्हें उचित नहीं कि घरमें आके स्त्रियों के निकट बैठो शीघ्र भोजनकर चलेजायाकरो निदान दो चार दिन पीछे वज़ीरकी स्त्रीने अपने हम्मामके जलको गरम करनेकी आज्ञादी और बांदियों के साथ लौंड़ीको स्नान निमित्त भेज दिया और उनसे कहा इसे भलेप्रकार मलदल नहलाय बस्त्रपहिनाय मेरेसमीप ले आओ इसे अपने मध्यमें लेजाना हुस्नअफ़रोज़ने स्नानकर अतिस्वच्छ और ललित पीतबस्त्र पहिर महल में आय वज़ीरकी स्त्रीको दण्डवत् की उसने उसकेस्वरूप के अधिक होजाने से उसे न पहिंचाना और अचम्भाकिया कि यह कौनसी स्त्री है लौंड़ीने वज़ीरकी स्त्रीसे बिनयकी मैं इन्हीं बस्त्रों में जो आपने दियेहैं कैसी दिखाई देतीहूं बांदियोंने नहला धुला औरजोड़ापहिना के मुझे कठिनतासे पहिंचाना और कहा आगेसे तुम कहीं अच्छी होगईहो हम तुम्हें पहिंचान न सकीं इन सबने खुशामदसे तो ऐसा नहीं कहा वज़ीरकी स्त्री ने कहा न तो मेरी बांदियोंने यह बचन स्वार्थ से कहे और न तुझसे हँसीकी उन्होंने यथार्थ कहा मैंनेभी बड़ीकठिनतासे तुझे पहिंचाना मानों सहस्रगुण रूप तू स्नानालय से ले आईहै यदि जल अभीतक उष्णहो तो मैंभी जाय उसमेंस्नान करूं मैंने बहुत दिनोंसे उष्णजल में स्नान नहीं किया लौंड़ी ने कहा हे सुन्दरी! जल अभीतक उष्ण है यह सुन उसने दो लड़कियां लौंड़ीके मकानपर बैठाय उन्हें आज्ञादी जबतक मैं न आऊं तबतक तुम इस मकानके द्वारपर रहना यदि नूरुद्दीन आवे और मेरेपीछे महलमें जाकर लौंड़ीके निकट जानेकी इच्छाकरे तो तुम उसे जाने न देना यह कह वह दो बांदियों समेत स्नानागारकी ओर गई संयोगवश नूरुद्दीन अपनी माताके घर आया और महलको खाली देख

सीधा लौंडीके मकान में जानेलगा लड़कियोंने उसे बहुतबर्जा उसने न माना और उन दोनोंको उठाय उस मकान के बाहर छोड़ आया और हुस्नअफ़रोज़के समीपजाय भीतर से किवाड़ मूंदलिये और हुस्नअफ़रोज़को देखतेही उसकामन लोट पोट होगया उन दोनोंने जो ऐसे अवसर की इच्छा करतेथे अति प्रसन्न हो सुख भोग किया वह दोनों लड़कियां रोती हुई स्नानागार में गईं और वज़ीर की स्त्रीसे यह सब समाचार जाय कहा उस वज़ीर की स्त्री ने यह सुन स्नान न किया और तुरन्त अपने महल को चली अभी वज़ीर स्त्री महलमें न पहुँचीथी कि नूरुद्दीन वहांसे निकल चलागया हुस्न-अफ़रोज़ वज़ीरकी स्त्रीको व्याकुल और रोतेदेख अत्यन्तविस्मित हुई आगे बढ़के पूछा हे सुन्दरी! कुशल तो है तुम स्नान किये बिना रुदन करती महल में क्यों आईं उसने उत्तर दिया तू मुझही से इसका हेतु पूछती है क्या तू नहीं जानती कि नूरुद्दीन मेरेपीछे अकेला तेरेपास आयाथा हुस्नअफ़रोज़ने कहा हे माता! इसमें तो कोई भी तुम्हारे और उसके वास्ते दुःखकी बात न हुई यदि वह अकेला मेरे निकट आया तो क्या हुआ उस स्त्री ने कहा मेरेपति ने तुझे पूर्व से न बतायाथा कि तुझे बादशाहके निमित्त मोललिया है और कहाथा कि नूरुद्दीन से बचियो हुस्नअफ़रोज़ने कहा मुझे उनकी आज्ञा स्मरण है परन्तु उसबेर नूरुद्दीनने मुझसे कहा कि मेरे पिता ने तुझे मुझेदेडाला अब वह तुझे बादशाह के सन्मुख नहीं लेजावेगा भला मैं क्योंकर तुम्हारे पुत्रसे बचती इसके विशेष जबसे मैंने उसे देखा मेरामन सहस्रप्रकारसे उसपर लोभायमान होरहाहै मैं बादशाहके समीप जाने की लालसा नहीं करती हूं कि जन्मभर नूरुद्दीन अपने प्राणप्यारेका बियोग देखूं वज़ीरकी स्त्रीने कहा ईश्वर तेराबचन सत्यकरे और इसबातमें मेरी भी प्रसन्नताहै परन्तु नूरुद्दीन की कुटिलतामें सन्देह नहीं मुझे यह भयहै जिससमय वज़ीर इस बातको सुनेगा तुरन्त उसे बधकरेगा इसहेतु मैं रोतीहूं इतना कह वह फिर रोने लगी इतनेमें वज़ीर आया और अपनी स्त्रीको रोती देख कारणपूछा उसने निरुपायहो कहा मैं अभागी स्नानकरने गई

थी मेरेपीछे नूरुद्दीन ने एकान्त में आय हुस्नअफ़रोज़से भोगकिया
क्या तुमने हुस्नअफ़रोज़को उसे दे डाला था नहीं इसीहेतु मैं रोतीहूं
कि इसका अन्त क्या होगा वज़ीर यह सुन शिर और छाती पीटने
लगा कि इस अभागे दुष्टने यह क्या अनर्थकिया बादशाहकी धरी
वस्तुको छुवा और मेरा निरादरकराया बादशाह यह समाचार सुन
मुझे और उसे प्राणसे मारडालेगा उसकी स्त्रीने कहा कि स्वामी
इतना शोक क्यों करते हो मेरा आभूषण बेंच दशहज़ार अशरफ़ी
की एकबांदी मोललो अब जो होना था सो हुआ वज़ीर ने कहा
तुम समझतीहो कि मैं हानिको झीकताहूं मैं अपनी प्रतिष्ठाको डरता
और मरताहूं सूय वज़ीर जो मेरा बैरी है यह समाचार सुन बाद-
शाहसे कहेगा कि सुन्दर हुस्नअफ़रोज़ बादशाहके निमित्त मोललै
अपने बेटेको देडाली उसकी स्त्रीने कहा मुझे सूयके बैरका समाचार
भलेप्रकार विदितहै परंतु किसीके घरका हाल किसीको क्यामालूम
यदि बादशाह बांदीके मोल लेनेका हालभी पूछे तो कहना कि
एकलौंडी आपकेलिये मोललीथी परंतु परीक्षासे मालूमहुआ कि
वह हुजूरके योग्यनहीं यह सुन बादशाह तुम्हारीबात का बिश्वास
करेगा इस उपायसे दूसरे वज़ीरका कोई उपाय न चलेगा उन्हीं द-
ल्लालों को बुलवाय कहो कि दूसरी बांदी ढूंढें निदान उस समय स्त्री
के समझाने से वज़ीरको धैर्य हुआ और क्रोध उसका नूरुद्दीन की
ओरसे कमहोगया उसदिन से नूरुद्दीन अपने पितासे छुपके महल
में आता और रात्रिको गुप्तसोरहता और अपनेपिता के जगने के
पहिले बाहर चलाजाता परन्तु उसकी माताको उसकी ओरसे
चिन्तारहती ऐसा न हो जो पिता उसका उसे एकान्तमें पाय मारडाले
इसहेतु उसने अपने पतिसे इस बिषय में बातचीत की वज़ीरने कहा
मैं जब उसे पाऊंगा अवश्य मारडालूंगा उसने कहा स्वामी एकही
तुम्हारा बेटाहै उसने अबतक तुम्हारे प्रतिकूल कोई कार्य नहीं किया
यहकर्मभी तरुणावस्थामें बनपड़ा क्षमाकरो जो तुम्हें दण्डदिये बिना
धैर्य नहीं तो भोरको कि वह महलसे भयभीत होकर निकल जाया
करता है तुम उससमय पकड़के मारडालनेकी इच्छाकरना मैं छुड़ा

लूंगी उसेदण्ड मिलजावेगा और तुम्हारे भी मनसे क्रोध जातारहेगा हुस्नअफ़रोज़को अब उसे देडालो वज़ीर ने इसबातको स्वीकार किया भोरको जब नूरुद्दीन के निकलने का समयहुआ एक घड़ी पहिले वज़ीर किवाड़की आड़में खड़ाहोरहा जब नूरुद्दीन निकला तो वज़ीरने पकड़ पछाड़ा और खड्गनिकाल वध करनेलगा इतनेमें उस की स्त्री यह शब्दसुन दौड़ीआई और वज़ीरका हाथ पकड़लियाऔर कहा कि ईश्वरके लिये नूरुद्दीनको छोड़ वज़ीरने कहा नहींमैं इसकुकर्मी दुष्टको अवश्य मारूंगा तब उसकी माताने कहा पहिले तुम मुझे मारो फिर इसे मारना तुम्हें पिता होके उचित नहीं कि अपने हाथ से अपने बेटेको मारो नूरुद्दीन ने भी अवसरपा बहुतसी बिनती कर गिड़गिड़ाय कहा तुम्हें परमेश्वरकी शपथ है जिसने तुम्हें उत्पन्न किया और प्रलयके दिन तुम उसके सन्मुख अपराधों के क्षमाके लिये खड़ेहोगे मुझे प्राणदानदो और मेरे अपराधको क्षमाकरो वज़ीरने दयाकर खड्गहाथ से फेंक नूरुद्दीनको छोड़दिया नूरुद्दीन पृथ्वीसे उठ अपना सम्पूर्ण अपराध क्षमा करानेकेलिये पिताके चरणोंपर गिरा वज़ीरने अपनेहाथसे उसका शिर उठाय कहा तू अपनी माताके चरणों पर जाय गिर मैंने तुझे उसीके कहनेसे क्षमाकिया और जोमैंने हुस्नअफ़रोज़को भी देडाला परन्तु उसे व्याहता स्त्रीकी भांति रखकर इसके बेंचनेकी इच्छा न कीजिये नूरुद्दीन इसबात से अतिप्रसन्न हुआ और हाथजोड़ प्रतिज्ञाकी कि मैं इसे कदाचित् भिन्न न करूंगा तदनन्तर अत्यन्त प्रीति से वह दोनों रहनेलगे वज़ीर भी उनकी परस्पर लगन देख बहुत प्रसन्नथा एक बर्षके पीछे वज़ीरने उष्णनीर से स्नान किया उससमय उसे ऐसी आवश्यकता पड़ी कि ठहरने और जल सूखने बिना शीघ्र बाहर निकलआया शीतल वायुके लगने से ज्वर और शिरपीड़ा ऐसी हुई कि कई दिन में अत्यन्तरोगीहुआ अंत समय उसने अपने पुत्र नूरुद्दीन से कि प्रत्येक समय उसकी औषध आदिके लिये उद्यत रहताथा कहा मैंने तुझे हुस्नअफ़रोज़ के लिये पूर्व भी कहाथा और अब फिर अन्तोपदेश करताहूं कि उसे बड़ी प्रीतिसे रखना और कदाचित् उसके बेंचने की इच्छा न

करना यह कह वज़ीरने इस असारसंसारको छोड़दिया प्रजा उसके मृत्युका समाचार सुन रोने पीटने लगी नूरुद्दीनने बड़ी धूम-धामसे अरथी निकाल अपने हाथों उसे गाड़ा और उसको पिताके मरने से बड़ा शोकहुआ चालीस दिनतक रोतापीटतारहा किसीको उसी शोकमें अपने घरमें आने की आज्ञा न दी तिसपीछे एक उस के परममित्रने उससे भेंटकी और वह बहुधा उसको धैर्य देनेलगा यहांतक कि नूरुद्दीन उसकी संगति से पिताके मरने का शोक भूल गया इसके उपरान्त अपने पुराने मित्रों को भी बुलवाय उनका सत्कार करने लगा कुछदिनों में हरएकको अपनी उदारता से धनाढ्य करदिया और अपने पिताकी सम्पूर्ण द्रव्य लम्पटता और मित्रोंको खिला पिला व्यय करडाली किन्तु हुस्नअफ़रोज़का आभूषण भी बेंच के खर्च करडाला एकदिन हुस्नअफ़रोज़ने उसे समझाया हे प्राणप्यारे ! जो कुछ द्रव्य तुम्हारा पिता छोड़गयाथा सो सब तुमने अपस्वार्थी मित्रों को देडाली अब भी समझो और सुचाल पकड़ो जिससे तुम अपने पिताकी पदवी को पहुँचो नूरुद्दीन ने हँसके उत्तरदिया कि मेरेपिताने जो कुछ इकट्ठा कियाथा क्या उसे वह अपने साथ लेगया और क्या मैं लेजाऊंगा सो क्यों न अपने मनोरथ को पूराकरूं दो चारदिन पीछे उसका प्रधान आया और जमाखर्च का हिसाब उसे दिखा कहा देखिये इस थोड़ी अवधिमें आपने कितना द्रव्य खर्च किया और आप अप्रबन्धता मे खर्च करते हैं इस हेतु मैं आपका कार्य नहीं करसक्ता अपना हिसाब किताब समझ मुझे विदा कीजिये और इसीप्रकार बहुतसे हितैषी सेवक आपकी सेवा तज बैठ रहे इसीभांति प्रधानने उसे बहुत समझाया परन्तु अचेतरूपी स्वप्नसे न जगा उसके मित्र अवसरपा पूर्वसे अधिक लूटनेलगे नित्य एक मनुष्य आता और नूरुद्दीन से कहता आज मैं अमुक बाग़ और महल में गया उसकी शोभा देखकर प्रसन्नभया वह मुझे बहुत अच्छा दिखाईदिया यदि आप उसे मुझे कृपाकरें तो मैं उसमें जारहूं नूरुद्दीनने तुरन्त पत्रलिख और हस्ताक्षर उसपर करके दे दिया इसीविधि किसी ने सुन्दर घोड़े और

किसीने हाथी आदिकी प्रशंसाकी उसने तुरन्त उसे देदिया जब केवल अपने निवासके महलके सिवाय कुछ न रहा वही स्वार्थी मित्र अलग हुये और घर बैठरहे यदि किसीको उनमें से अपने मन बहलाने को बुलाता तो वह न आता कदाचित् आता तो थोड़ी देर पीछे बिदाहो चलाजाता जो वह उस मित्रको ठहराता तो वह बहानाकर कहतामेरी स्त्री कल से रोगी होगई है उसकी औषध जाकर करूंगा इसीभांति वह सब बहाना करके चलेजाते और उसके पास न बैठते इस दशाको देख नूरुद्दीन आश्चर्य में हुआ और हुस्नअफ़रोज़ से जाकर अपने मित्रोंकी अशीलता वर्णनकी उसने कहा हे प्राणनाथ! यह सब बातें मैंने पूर्वही तुमसे कहीथीं परन्तु तुमने मेरे कहने को न माना निदान एक दिन तीसरे उपवासपर हुस्नअफ़रोज़ने आंसूभर कहा हे प्राण-प्यारे! अब मैं तुम्हारी भलाई इसीमें देखती हूं कि तुम मुझे बेंचो और कुछ दिन कालक्षेप करो जब तुमपर परमेश्वर कृपा करेगा तो फिर मुझे लेलेना नूरुद्दीन ने कहा यह तो मुझसे कदाचित् न होगा कि तुझे बेंचूं परन्तु मुझे किसी मित्रसे सहायताकी आश है बिश्वास है कि वह मुझसे आंख न छिपावेंगे हुस्नअफ़रोज़ ने कहा स्वामी यह केवल तुम्हारा बिचारहै कोई इष्टमित्र इस आपत्तिकाल में तुम्हारे काम न आवेगा समयपर सब निकल जावेंगे नूरुद्दीन ने कहा ऐसा मत कहो मैं तुझसे उनका हाल अधिक जानता हूं बालपन से उनके साथ मेरी मित्रता है मैंने उनके हज़ारों उपकार किये हैं कलभोर को मैं उनके समीपजाय ऋण मांगूंगा आश है कि वह मुझे अवश्य देंगे निदान दूसरे दिन प्रातसमय नूरुद्दीन उन दशों मित्रों के निकट गया जिनका उसे अत्यन्त विश्वास था और वह सब एकही मुहल्ले में रहतेथे पहिले एकमित्र जो औरोंसे अधिक धनपात्रथा उसके द्वारपर जाकर हांकदी एक बांदीने भीतरसे पूछा कौन है नूरुद्दीन ने कहा मैं वज़ीरकापुत्र नूरुद्दीन हूं मेरे आगमन का समाचार अपने स्वामीसे कह बांदी ने सुनतेही शीघ्र द्वारखोल दिया और उसे उत्तम स्थानपर बैठाय अपने स्वामी से यह समाचार कहा कि नूरुद्दीन तुम्हारे दर्शन करने को आये हैं उस मित्र ने मुहँ

बनाय कुपित होय बांदी से कहा जाके कहदे कि स्वामी घरमें नहीं और पूछ कि उन्हें क्यों तुम बुलाते हो नूरुद्दीन बाहर से यह सब बातें सुनताथा इतने में बांदीने अपने स्वामी से जो कुछ सुनाथा उस से कहा परन्तु बांदी पहिले अपने स्वामी के बर्तमान होनेको कह-चुकीथी अब उसके बिपरीत बड़ी लज्जा से अपने स्वामी के उपदे-शानुकूल कहा नूरुद्दीन यह सुन बड़े आश्चर्य में हुआ और मनमें कहनेलगा अभी यह कलही मेरी बिनती करताथा आज यह इस बिधि की अशीलता करता है निदान अति चिन्ताकर उस मित्रके घरसे दूसरे मित्रके घर जो पहिले से कुछ न्यूनथा गया वहांभी यही उत्तर मिला इसीभांति दशों मित्रोंके घर पारीपारीसे फिरा सबसे यही उत्तर पाया नूरुद्दीन अपने मित्रोंकी अशीलतासे बहुत घबड़ाय पछिताने लगा और समझा कि वह निपट अपस्वार्थीथे लेनेके स-मय मुझे घेरे रहते और मेरी जूतियां सीधी करते थे अब मुझे नि-र्धन समझ भेंटभी नहीं करना चाहते मेरा नाम सुनतेही मुख छिपा लिया मेरी दशा फलदार बृक्ष के समान है जबतक वह फल से लदा रहा तबतक चारोंओर से मनुष्य फलके लोभ से उसके पास आया किये जब फल उसमें न रहे तब कोई उसके समीप न गये निदान मित्रों से निराश हो अपने घर आया और स्त्री से आंसू भर यह समाचार कहा उसने कहा अब उनका बृत्तान्त मालूम हुआ मैं आगे से जानती थी और तुम्हें कई बेर समझाया अब मेरे बिचार से परमेश्वरपर भरोसा रक्खो यह उत्तम है कि तुम अपनी सम्पूर्ण दास दासी और घरकी शेष बस्तु बेंचो और उसे थोड़ा २ खर्च करो बिश्वास है कि तुमपर फिर दीनदयालु प्रभु कृपाकरेंगे नूरु-द्दीन ने पहिले दासों को बेंचकर कई दिन अपना निर्बाह किया जब वह होचुका जो बस्तु घरकी शेष रहगई थी बेंचडाली जब कुछ न रहा तो उसने हुस्नअफ़रोज़ से जो अत्यन्त बुद्धिमान् और हितूथी यह हाल कहा वह इस महाबिकट सङ्कटको देख रोनेलगी और कहा हे प्राणनाथ! तुम्हें सुधि होगी कि तुम्हारे पिताने मुझे दशहज़ार अशरफ़ीको मोल लियाथा यद्यपि अब कोई भी मेरा वह मोल

न देगा परन्तु आधामोल निस्सन्देह देवेगा तुम मुझे नखास में जहां दासदासी बिकते हैं लेजाय बेंचो और उस धनसे तुम काल-क्षेप करो जब परमेश्वर तुम्हें सामर्थ्यदे तो तू मुझे मोल लेलीजियो नूरुद्दीन ने रोके कहा कि प्रथम तो मुझे प्राणसे अधिक प्रिय है दू-सरे पिताने मुझे बचनबन्ध कियाहै कि तुझे कदापि न बेंचूंमैं क्योंकर उससे विरुद्ध करसक्ता हूं उसने कहा यह तुम सत्य कहतेहो मैंभी तुम्हें प्राणसे अधिक प्यार करतीहूं परन्तु धर्मशास्त्रानुसार आपत्ति में अनुचित भी उचित है अब इससमय तुमपर ऐसी आपदा पड़ी है कि उस प्रतिज्ञा का विचार बृथा है तुम मुझे निश्शङ्क बेंचो नूरु-द्दीन लाचारी से हुस्नअफ़रोज़को बज़ार में लेगया और एक द-ल्लाल को बुलाके कहा तुम्हारे द्वारा मेरे पिताने इस बांदी को दश हज़ार अशरफ़ी दे मो लियाथा अब मैं उसे बेंचताहूं तुम व्यापा-रियों को उसे दिखाओ देखो तो इसका क्या मोल लगाते हैं दल्लाल ने कहा बहुत अच्छा सो वह बांदीको एक मकान में बैठाय बाहर से क़ुफ़ुल लगाय व्यापारियों के निकट गया उन्होंने नानाभांति की ग्रीक, फरङ्गी, अफ़रीकी दासियां आदि बहुत मोलली थीं सो दल्लाल ने उनसे कहा भाइयो तुमने सब प्रकारकी दासियां मोलली हैं परंतु एक दासी पारसकी बिकती है उसके रूप अनूप और गुणको कोई न पहुँच सकेगी और तुमने नही सुना कि बुधजनों ने यह दृष्टान्त कहा है हर गोलबस्तु सुपारी नहीं, और प्रति चपटी बस्तु अञ्जीर नहीं, और सब मांस लालरंग नहीं, और सब अंडे अच्छे नहीं होते, अब तुम मेरे साथ चलकर देखो और उसका मोल बिचारो निदान वह सब व्यापारी उसी दल्लाल के साथ गये उसने किवाड़ खोल हुस्नअफ़रोज़को दिखाया वह सब उसके स्वरूप छबि अनूपको देख आश्चर्य में हुये और कहने लगे सच सच जन्मभर हमने ऐसी लौंड़ी शहर और मुल्क में नहीं देखी हम सब मिलके चार हज़ार अशरफ़ीतक इसका मोल देसक्ते हैं इससे अधिक हम देनेकी सा-मर्थ्य नहीं रखते यहकह वह सब बाहर आये और दल्लाल ने उस मकानको जिसमें हुस्नअफ़रोज़ थी बन्दकरदिया इतनेमें सूय नामक

दूसरे दिन वज़ीरकी सवारी वहांसे निकली उसने व्यापारियों का यूथ देख पूछा कि यह सब मनुष्य यहां क्यों इकट्ठे हैं दल्लाल ने कहा एक लौंड़ी मोल लेनेको यह सब आये हैं और चारहज़ार अशरफ़ी तक इसका मोल लगाया परन्तु मालिक इस क़ीमतपर राज़ी नहीं सूयने भी उसके देखने की इच्छा की और दल्लालसे कहा मुझे भी उस दिखा मैंहीं उसे लेलूंगा निदान दल्लालने उसे भी हुस्नअफ़रोज़को दिखाया उसने उसे पसन्दकर कहा चारहज़ार अशरफ़ी मैं भी इस लौंड़ीकी देताहूं मुझे दिलवादे दल्लालने कहा मैं इसके मालिकसे जाके कहताहूं यदि वह राज़ीहो तो आप निश्शंक उसे मोल लीजिये वज़ीर ने सब व्यापारियोंको सैनों से मना किया कि खबरदार इससे अधिक मोल न बढ़ाना और तुम इस लौंड़ी के मोललेनेका विचार न करना मैंहीं इसे लेलूंगा वे सब सौदागर वज़ीरके कहने से चुपके होरहे और किसीने दम न मारी दल्लालने नूरुद्दीनके समीप आय कहा हा! खेदहै कि तुम्हारी लौंड़ी कम क़ीमतपर जातीहै नूरुद्दीन ने पूछा क्योंकर उसने कहा व्यापारियों ने पहिले आके उसे देखा और पसन्दकर चारहज़ार अशरफ़ी तक देते थे और मैं बाज़ार में पुकारताथा कि चारहज़ार अशरफ़ी की पारसकी लौंड़ी मुफ़्त बिकती है इस आशासे कि कोई बढ़े पांच छःहज़ार अशरफ़ी तक देवे इतने में सूय वज़ीर उस मार्ग से चलाजाताथा व्यापारियों को इकट्ठा देख और मेरे पुकारनेका शब्द सुन वहां खड़ाहोगया और लौंड़ीको जाके देखा और उसे पसन्दकर मुझसे कहताहै कि चारहज़ार अशरफ़ी मैं इसकी देताहूं तू मुझे दिलवादे और सब व्यापारियोंको सैनसे मना किया कि कोई इससे अधिक क़ीमत न लगावे किन्तु उसके लेनेका भी इरादा न करे सो सब व्यापारी उसके भयसे चुप हैं और कुछ नहीं बोलते नूरुद्दीनने कहा सूय हमारे घरानेका बैरी है मुझे उसके हाथ किसी तरहसे बेंचना मंज़ूर नहीं तब दल्लालने कहा आप चलके व्यापारियों में खड़ेहोके बड़ेशब्दसे कहिये कि मैंने इस लौंड़ीपर क्रोध कियाथा और उस कोपान्तर में सौगन्द खाई थी कि मैं तुझे बाज़ारमें लेजाय बेंचूंगा सो मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की मुझे वास्तव में उसका

वेंचना अंगीकार नहीं केवल अ नी प्रतिज्ञाके पूरा करने के लिये यह बहाना कियाथा सूय भी इस वचनको सुन चुप होरहेगा अब तुम मुस्तैद होकर तय्यार रहो जिस समय मैं लौंड़ीका हाथपकड़ सूय को देनेलगूं तुम उस वक्त उसे दोचार तमाचेम र और उसे सूय के हाथसे छीन अपने घरलिये चलेजाना नूरुद्दीन दल्लालका यह मत पसन्दकर तय्यारहुआ फिर दल्लालने लौंड़ीको मकान से निकाल यही मत समझाय बाज़ार में लेजाकर दूसरे वज़ीर को उसका हाथ पकड़ाय कहा स्वामी यह लौंडी तुम्हारी होचुकी वज़ीरने हाथ बढ़ाय चाहा कि तने में नूरुद्दीनने लौंड़ीका दूसरा हाथ पकड़ अपनी ओर खींचलिया और धीरेसे एक तमाचा मार कहा तेरे कटुबचन और आज्ञाके उल्लंघनसे मैंने यह प्रतिज्ञाकी थी कि तुझे बाज़ारमें वेंचनेके लिये लेजाऊंगा अब मेरी सौगन्द पूरीहोचुकी अपने घरचल आगे जो कुछ अपराध करेगी तो समझा जावेगा यह कह उसे ले अपने घरकी ओर चला वज़ीरने अति कोपित होके उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया और हाथ बढ़ाकर कोड़ा मारनाचाहा नूरुद्दीनने लौंड़ीका हाथ छोड़ा आगे बढ़ वज़ीरके घोड़ेकी लगाम पकड़के ऐसा झटकामारा कि वह घो से नीचे आरहा फिर उन दोनोंमें बड़ा युद्ध भया यदि वज़ीर बूढ़ा और निर्बलथा और नूरुद्दीन तरुणथा सने उठा देमारा और भलीभाँति घिसा और सौदागर और बाज़ारके आदमी कि सूय वज़ीर से बदमिज़ाजी के कारण दिलसे बहुत नाराज़ थे उसके हारने से और नूरुद्दीनकी जीत से बहुत ही प्रसन्नहुये और कोई भी उन दोनों में बाधक न हुये पर जब वज़ीर के सेवकों ने अपने स्वामी का पक्ष किया और नूरुद्दीन को मारनाचाहा तब मनुष्योंने कहा इसे तुम नहीं जानते और यह तुम्हारा स्वामी है तो यह वज़ीर का बेटा है तुम उनमें बाधा न करो क्योंकि जब वह परस्पर मिलजावेंगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा न होगा निदान नूरुद्दीन ने बाज़ार में वज़ीर को इतना मारा कि उसके शरीर से रक्त निकल बस्त्र लहूलुहान और कीचड़ और मिट्टी से मैले होगये निदान यह तो उसे मारपीट और बांदीका हाथ पकड़ अपने घरको चला वज़ीर के नौ-

कर चाकर अपने स्वामीको उसी दुर्दशामें बादशाह जबेनी के सामने लेगये बादशाह उसे देख अति आश्चर्य में हुये और कहा यह क्या तेरी गतिभई किसने तुझे मारा उसने बिनय की हे बादशाह! मैं दरबारसे अपने घरको ताथा चौकमें ब्यापारियों का समूह देख खड़ा होगया मालूमहुआ कि वे मनुष्य पारस गी लौंड़ी मोललेने आये हैं मुझे भी रसोई के लिये एक लौंड़ी की जरूरतथी मैंने भी उसे देखा वह अत्यन्त सु न्री है मैंने चा इस मोलकी मिले तो लेकर आपको भेंटदूं क्योंकि वह आपकी सेवा योग्य है वह ब्यापारी चारहज़ार अशरफ़ीतक देतेथे मैंने दल्लाल से कहा इतना द्रब्य मैं भी दूंगा मुझीको दिलवादो सो उसने मुझे लाके दी इतने में स्वर्गवासी ख़ाक़ान वज़ीरका बेटा नूरुद्दीन आया और लौंड़ी मेरेहाथसे छीनकर लेगया और कहा मैं यह लौंड़ी बिना मोल दूंगा पर तेरे हाथ न बेंचूगा मैं उसे बहुत समझाया कि मैं इसे अपने लिये नहीं लेता बादशाह की भेंट क ंगा इसमें उसकी मेरी तकरार हुई परन्तु उसदुष्ट अयोग्य ने मेरी यह दशाकी ऐ बादशाह! आपको सुधिहोगी कि पूर्व आपने दशहज़ार अशरफ़ी ख़ाक़ान को लौंड़ी मोललेने के लिये निजकोश से दीथीं उसने उसी द्रब्यसे यह लौंड़ी मोलले अपने बेटेकोदी तीन चारबर्ष से वह उसी के पासहै और उसने अपने पिता के देहान्त के पीछे जो कुछ द्रब्य बस्तु बचाथा ब्यभिचारादि करके थोड़ेही कालमें व्यय किया अब अत्यन्त निर्धन हो उस लौंड़ीको बाज़ारमें बेंचने को लाया बादशाह यह समाचार सुन अति क्रोधित हुआ और वज़ीरको बिदाकर एक प्रधानको आज्ञा दी कि इस समय चालीस सिपाही अपने साथ लेजाय नूरुद्दीन और उसकी लौंड़ीको पकड़लाओ और उसका मक़ान खोद पृथ्वी बराबर करदो अभी वह प्रधान सेना तय्यार कर रहाथा इतने में नूरुद्दीन के पिताके उपकारों को स्मरणकर ब्याकुल हुआ और किसी उपाय से दौड़ नूरुद्दीन के घरपर जाय हांकदी बेचारे नूरुद्दीन ने जो निर्धनतासे सेवक न रखताथा आपही जाकर द्वार खोला प्रधान ने दण्डवत् कर सम्पूर्ण बृत्तान्त बादशाह की सभाका वर्णनकर कहा हे कुँवर! तुम इ ी

समय उस लौंड़ी समेत इस नगर से निकल जाओ यदि कुछ भी ठहरोगे तो पकड़े जाओगे और निस्सन्देह बादशाह तुम्हें बध करडालेगा मैं इससे अधिक यहां नहीं ठहरसक्ता ऐसा न हो जो बादशाह के नौकर मुझे देखलेवें निदान प्रधान ने बिदा होती समय चालीस अशरफ़ियां जेबसे निकाल नूरुद्दीन को दीं और कहा इस समय मेरे पास यही बर्तमान हैं यदि कुछ भी सावकाश मिलता तो और भी तुम्हारी भेंट करता यह कह वह तो चलागया और नूरुद्दीन ने भीतर जाय हुस्नअफ़रोज़ से यह समाचार कहा और उसे अपने साथले दीवारके पिछवाड़े फांद उसी समय नगर से बाहर निकल सीधा नदीकी ओर चला दैवयोग से एक जहाज़ तय्यार पाय शीघ्र ही उसपर सवारहुआ कप्तान क्षणमात्र में लंगर उसका उठा बुग़दाद की ओर चला पवन अनुकूल होने से जहाज़की एकही बेर सब पालें खोलदीं नूरुद्दीन बांसरा से कुशलपूर्वक निकल अति हर्षित हुआ और इधर बादशाह के नौकर नूरुद्दीन को पकड़ने के हेतु चले उसके घर पहुँच प्रथम तो किवाड़ खटखटाया जब किसीने उत्तर न दिया तो उसे तोड़ भीतरगये यहां किसीको न पाके पड़ोसियों से पूछा कि नूरुद्दीन कहांहै उन सबने कि मनसे उसके हितैषी थे उत्तर दिया हम नहीं जानते निदान प्रधान ने बहुत ढूँढ़कर उसका घर खुदवाय धरती बराबर करदी और बादशाह से जाके विनय की कि नूरुद्दीन नहीं मिला मेरे पहुँचने के पहिले न जानिये कहां निकलगया बादशाहने आज्ञादी कि फिर जाके उसे ढूंढ़ो और डौंड़ी पिटवाओ जो कोई नूरुद्दीन को पकड़ बादशाह के सामने लावेगा हज़ार अशरफ़ी इनाम पावेगा जो कोई उसे अपने घर छिपारक्खेगा वहभी उसीके साथ प्राणसे मारा जावेगा और घरबार उसका छीनलिया जावेगा अब नूरुद्दीन का बृत्तान्त सुनो जब वह जहाज़ बुग़दादके समीप पहुँचा तो कप्तानने लोगोंसे कहा भाइयो यह नगर अतिश्रेष्ठ और अद्भुतहै इसमें देशदेशके गुणवान् और प्रतिक्रियाके अभ्यासी बर्तमान हैं और अनेकप्रकारकी स्वच्छवस्तु और नाना प्रकारके फल उत्पन्न होते और थोड़ेही कारणसे यहां मनुष्य निर्धनसे धनवान् और

सद्द्रव्यसे निर्धन होजाते हैं विशेषकर नवीनवासी बहुत समझ बूझ इस नगरमें रहते जब जहाज़ने वहां पहुँच लंगर किया व्यापारी आदि जहाज़परसे उतर अपने अपने ठिकाने पर गये नूरुद्दीन उन चालीसों अशरफ़ियों में से पांच अशरफ़ी किरायादे हुस्नअफ़रोज़ को लिये हुये उतरा बग़दादमें तो वह कभी न आयाथा और यहांके बाज़ारोंसे निपट अज्ञानथा इससे बहुकाल पर्यंत विश्रामके स्थान को ढूंढ़ने के निमित्त फिरा फिरते फिरते एक बागके द्वारपर जो नदीके कूलपर था पहुँचे वहां सुन्दर कुण्डके तटपर बैठकर अपने हाथ पांव धोये और शीतल जल पी उसी बागकी सहञ्चो में बैठ परस्पर बार्ता करते करते निद्रावश हुये प्रकटहो कि वह बाग़ खलीफ़ा हारूंरशीदका था मध्यमें उसके बारहदरी थी जिसके भातर बाहर हरभांतिकी अति शोभायमान चित्रकारियां थीं उसमें अस्सी किवाड़ बिल्लौर के उन में अतिसुन्दर मोमीदीपदान हरसमय तय्यार रहाकरते जब कभी खलीफ़ा हारूंरशीद रात्रिको उस बाग़में जाता चारोंओर उसके रो-शनी करते उसका प्रकाश बारहदरीकी ऊँचाई से नगरभरमें दिखाई देता उस बाग़का दारोग़ा शेख इब्राहीम था उसकी आज्ञा बिना कोई उस बाग़में न जाने पाता और न कोई बाग़के सम्बन्धित महलों में निवास करसक्ता संयोगसे उसकाल वह दारोग़ा वहां न था अनु-मान सायङ्कालको जब दारोग़ा वहां पहुँचा बाग़के किनारे क्या दे-खताहै कि दो मनुष्य मुखपर महीन डुपट्टा डाले आनन्दसे शयन करते हैं इससे वह अप्रसन्न हुआ और उन्हें दण्ड देनेकी इच्छा की सो उनके समीप जाय मारने को लकड़ी उठाई फिर कुछ सोच अ-पना हाथ रोकलिया और मन में कहनेलगा कि ये वृत्तान्त ज्ञात किये बिना इनको मारना उचित नहीं मालूम होताहै कि वह विदेशी यहांकी रीति नहीं जानते उत्तम यह है कि पहिले इनका बृत्तांत पूछलूं निकटजाय उनके मुखसे डुपट्टा उठाय देखा कि एकअतिसुन्दर पुरुष दूसरी स्त्री अतिरूपवती दोनों नींदमें अचेत सोते हैं उसने नूरुद्दीन को पांवसे हिलाय जगाया नूरुद्दीनने जागकर श्वेतदाढ़ीवाला वृद्ध पुरुष देखा देखतेही उठके दारोग़ाके हाथ चूम दुआयें दीं और कहने

लगा हे पिता! क्या आज्ञाहै दारोग़ाने पूछा हे पुत्र! तू कौनहै और कहांसे आया नूरुद्दीनने कहा मैं कभी इस शहरमें नहीं आया इच्छा है कि मुझे आज की रात्रि यहीं विश्राम की आज्ञा हो भोर होतेही यहांसे चलाजाऊंगा दारोग़ाका क्रोध उसके कोमलबचनों से बिलकुल जातारहा और दोनोंके रूप मनहरण को देख अतिनम्र हो कहनेलगा कि पुत्र तुम्हें यहां रात्रिमें कष्ट होगा मेरे साथ चलो मैं स्वच्छ स्थान तुम्हारे निवासको दूंगा जहांसे तमाम बाग़ दिखाई देता है नूरुद्दीनने कहा क्या यह बाग़ तुम्हाराहै दारोग़ाने मुस्करायके उत्तर दिया कि मैंने अपने पिताकी छाती से इसे पायाथा उपरांत उसने दोनोंको बाग़ के भीतर लेजाय बाग़ के द्वारको भीतर से मूंद कुफुल लगादिया और उनको ऐसी जगहपर बैठाया जहांसे वह सम्पूर्ण बाग़को देखें फिर दारोग़ा उनको अपने साथ कई मकानों के दिखाने को लेगया तने में नूरुद्दीनने जेबसे दोअशरफ़ी निकाल दारोग़ा को दीं और कहा कुछ भोजन हमारे लिये पकवाइये दारोग़ा वह अशरफ़ियां ले प्रसन्न होकर अपने जेब में रख विचारा अच्छा हुआ जो मैंने ऐसे उदार मनुष्य से कोई बुराई न की इतने में बहुत अच्छे व्यञ्जन पकसक्ते हैं किन्तु कुछ बचरहेगा वह मेरे काम आवेगा सो उन दोनों को वहीं छोड़ आप भोजन के उपाय में गया उसके जाने के पीछे नूरुद्दीन हुस्नअफ़रोज़सहित बारहदरी में गया और नीचेकी तय्यारी और साज सामग्री देख ऊपर जानेकी इच्छाकी परंतु उसके द्वारमें ताला दियाहुआथा जब वह दारोग़ा भोजन लाया नूरुद्दीन ने उसकी बहुत प्रशंसा और बिनतीकर कहा आपने आतिथ्यभावसे हमें साराबाग़ दिखाया परंतु वह बारहदरी हमने नहीं देखी हमारी इच्छा है कि हम उसे देखें दारोग़ाने कहा बहुत अच्छा तिस पीछे कुञ्जीसे बारहदरी खोल उनको उसीमें लेगया नूरुद्दीन ने उस मकान को देख हर्षित हो दारोग़ा से कहा यदि तुम्हारी खुशी हो तो हमदोनों तुम्हारे साथ भोजनकर यहीं शयनकरें दारोग़ा ने बिचारा कि जो ख़लीफ़ाकी इच्छा आज इधर आने की होती तो आगेसे कोई मनुष्य सन्देशा देने अवश्य आता यह बिचारकर हर्षपूर्वक उन

को रहनेकी आज्ञादी फिर दारोगाने वह सब भोजन रत्नजटितपात्रों में परसदिये नूरुद्दीन ने अति रुचिसे दारोगा और हुस्नअफ़रोज़ सहित भोजन किया फिर हाथ धो नूरुद्दीन ने एक बारहदरी का किवाड़खोल हुस्नअफ़रोज़से कहा यहांबैठ शीतल चांदनीकी सैरदेखो तो क्याआनन्द है वह दोनों खिड़की में बैठ प्रसन्नहोतेथे इतने में दारोगाने पात्रआदि उठाय उन दोनोंके निकटआय कहा अगर किसी और बस्तुकी तुम्हें इच्छाहो तो उसेभी तुम्हारे सन्मुख लाऊं नूरुद्दीनने कहा कुछ थोड़ीसी मदिरा मिलसक्ती है दारोगा समझा कि यह शर्बत मांगता है तो कहा शर्बत मैं लासक्ताहूं परन्तु भोजन के पीछे उसे नहीं पीते नूरुद्दीनने कहा तुम सत्य कहतेहो परन्तु मैं शर्बत नहीं मांगता किन्तु अंगूरी मदिरा चाहता हूं दारोगा ने कहा हमारे धर्मशास्त्र में उसका पीना किन्तु पासरखना निषेध है बिशेष मैंने चारबेर मक्केकी यात्राकी है मैंने मदिरा कभी नहीं देखी और न कभी उसे अपने हाथोंसे स्पर्शकिया नूरुद्दीनने कहा भला उसे छुये बिना लासक्के हो उसने कहा ऐसा कौनसा उपाय है नूरुद्दीनने कहा एक गधा बाग़कीखाई में बँधाहै मैं तुम्हारे निकटलाय अशरफ़ी रूमाल में बांध उसपर रक्खे देताहूं तुम उसे हाँकते हाँकते मदिरा के घरमें लेजाओ मदिरा बेंचनेवाला तुम्हारे सैनकरतेही अशरफ़ियां लेकर मदिरा के पात्र इस गधेपर रखदेगा तुम इस गर्दभ को हांककर यहां लेआना फिरयहां हम समझलेवेंगे तुम्हें तनक परिश्रम न होगा दारोगा इस बचनको सुन प्रसन्नहुआ और कहा यह यत्न बहुत अच्छा है दारोगाने वैसाही किया भट्ठीसे मदिरालेआया परंतु जल्दी में बाग़का द्वार मूँदना भूलगया निदान जब गधा बारहदरीके समीप पहुँचा नूरुद्दीन दोनों ठिलियोंको जो स्वच्छ मदिरासे भरीहुईथींउठा के भीतर लेजाकर दारोगाका बड़ागुणमान कहा तुम्हें अतिपरिश्रम भया अब मेरा एक और मनोरथ है दारोगाने पूछा वह क्या नूरुद्दीन ने कहा कि एक गिलास और कुछफल चाहिये दारोगा ने एक स्वच्छबस्त्र बिछाय उसपर थालियां और नवीनचीनी के पात्रों पर फल रख कहा और जो कुछ तुम्हें आवश्यकताहो लादियाजावे

नूरुद्दीन ने कहा अब कुछ नहीं चाहिये इसके उपरान्त दारोग़ा वहां से हट किसी और मकानमें इसभयसे जाबैठा कहीं मुझे मदिरा न पिलावें नूरुद्दीन और हुस्नअफ़रोज़ प्रसन्नहोहो मदिरा पीनेलगे जब दोनों मदमत्त भये नूरुद्दीन ने हुस्नअफ़रोज़ से कहा हम इस संसार में बड़े प्रारब्धी हैं कि उस आपत्ति के पश्चात् परमेश्वर ने हमें ऐसी जगह कृपाकी जहां सब तरहके आनन्द की सामग्री बर्तमान हैं तिस पीछे वह दोनों गानेलगे दारोग़ा उनका रागसुन हर्षित हुआ और चोरीसे उन दोनोंको देखनेलगा इतने में नूरुद्दीनने उसे देख कहा हे दारोग़ा! तुम बहुत अच्छेहो मैं तुम्हारी प्रशंसा बर्णन नहीं करसक्ता उत्तमहो जो तुमभी इस आनन्द में संयुक्तहो दारोग़ाने हँसके कहा मैं योंही तुम दोनों को देख प्रसन्न होताहूं यह कह फिर लोपहोगया हुस्नअफ़रोज़ ने अपने स्वामी से कहा यदि तुम्हारी इच्छाहो तो मैं इस दारोग़ा को भी मदिरा पिलाऊं उसने कहा इस से क्या उत्तम है कि वह भी हमारी सङ्गति में मिल आनन्द उठाये हुस्नअफ़रोज़ ने कहा तुम उसे अपने निकट बुलाओ और कुछ काल पश्चात् मदिरा का पात्र दो जो उसने पिया तो अच्छा नहीं तो तुम उसे पी शय्यापर झूठमूठ सोजाना फिर देखना मैं उसे किस भांति पिलाती हूं नूरुद्दीन ने कहा बहुत अच्छा यह कह दारोग़ा को पुकारा अभी वह सीढ़ीपर था कि इनको मदमत्त देख लौटगया नूरुद्दीन ने कहा हम तुम्हें मदिरा न पिलावेंगे तुम क्षणमात्र हमारे निकटआय बैठो दारोग़ा नूरुद्दीन के कहने से सीढ़ी के निकट बिछौने पर बैठगया नूरुद्दीन ने कहा यह अतिअनुचित है कि तुम हमारे बड़े होके नीचे बैठो वहांसे उठ हमारे बराबर इस सुन्दरी के निकट बैठो वह तुम्हारे बैठने से अप्रसन्न न होगी दारोग़ा मन में अति प्रसन्न हुआ कि ऐसी सुन्दरीके निकट किसको बैठना मिलताहै परन्तु प्रकट में नाक भौंह चढ़ाके हुस्नअफ़रोज़के समीप बैठगया अनन्तर नूरुद्दीन ने हुस्नअफ़रोज़ को गानेकी सैनकी वह अतिसुन्दर हाव भाव कटाक्षकर ऐसी मिष्ट कोमलबाणीसे गाई कि वह दारोग़ा मोहित होगया जब वह गाचुकी नूरुद्दीन ने मदिरा से गिलासभर दारोग़ा

को दे कहा हम दोनों की प्रसन्नता के लिये इसे पीवो दारोगा ने कहा पूर्व ही मैंने इसका कारण तुमसे बर्णन किया इसमें नूरुद्दीनने उससे अधिक तकरार की जब उसने न माना तो उसे आपही पीगया हुस्नअफ़रोज़ ने एकसेब उठाय उसके दोखण्ड किये और एक खण्ड उस बृद्धको दे कहा जो मदिरा नहीं पीते तो भला सेब के खाने में तो कुछ पाप नहीं दारोगा उस सुन्दरी चन्द्रमुखी के हस्तकमल से सेब लेने में इन्कार न करसका और उसेले रुचिपूर्बक भोजन किया फिर हुस्नअफ़रोज़ मीठे स्वरों से गानेलगी नूरुद्दीन वहीं दालान में लेट कर बहाने से सोनेलगा हुस्नअफ़रोज़ने अपने पतिको सैनकर बृद्ध से कहा कि देखो साहब इनकी क्या आदत है कदाचित् एक वा दो गिलास मदिरा के अधिकपीते हैं तो मुझे अकेली छोड़ अलग जाय सोरहते हैं जबतक यह जागें तबतक तुम कृपाकर मेरे समीप बैठे रहो थोड़ेकाल में हुस्नअफ़रोज़ ने अपने मायावी कोमल बचनोंसे दारोगा को अपने अनुकूल करके बिचारा कि अब यह मदिरा से ग्लानि न करेगा और मेरे रूप अनूप और गान की प्रबलतासे पक्षी के सदृश जाल में पड़गया है सो अतिसुन्दर हावभाव और मनह-रण कटाक्षकर हाथ बढ़ाय मदिरा का गिलास उसे दिया और चित्त प्रेरक मुस्कान दिखाय कहा इसके पीनेका पाप मेरे शीशपर तुम्हें मेरे शिरकी शपथ है कि इसे पानकर देखो तो इस में कैसा स्वादु है दा-रोगा तो पूर्बही से उसके भाव और गानपर मोहित था प्रकट में कुछ बहानाकर हाथ से गिलास ले पीगया और आधासेब जो शेष था वह भी भक्षण करगया फिर हुस्नअफ़रोज़ने दूसरा गिलास भी उसे दिया उसने उसे भी पीलिया इसी बिधि बराबर तीनचार गिलास उसके हाथ से पिये फिर नूरुद्दीन जो बहाने से निद्रा में था उठ अपनी जगहपर आबैठा और उस बृद्धको नशे में हँसतादेख कहा तुमतो कहते थे कि मैं कदाचित् मदिराको स्पर्श न करूंगा अब तुमने क्यों पी उसने कहा मैंने इस सुन्दरी के कहनेसे पी फिर वह बृद्ध आन-न्दितह्वै अपने हाथसे गिलास भर भर पीनेलगा और खूबमस्त हुआ इसीभांति वह तीनों मनुष्य अर्धरात्रि पर्यंत बैठे मद्य पिया

किये हुस्नअफ़रोज़ ने कहा यहां अँधियारा बहुत है अगर कहो तो दीपदान प्रज्वलित करदूं दारोग़ा जो नशे में चूरथा बोला बहुत अच्छा तुमहीं जलाओ परन्तु चार पांच से अधिक न जलाना हुस्न-अफ़रोज़ ने उठकर सम्पूर्णदीपदान जो अनुमान अस्सी के थे प्रकाशित करदिये तिस पीछे नूरुद्दीन ने बृद्धसे कि हुस्नअफ़रोज़ के सुन्दर चरित्रों और कोमल बचनोंपर लोभायमानथा पूछा कहो तो वह दीपदान भी दीवार में दरवाज़ों पर लगे हैं जलायेजावें कि बाहर की ओर भी प्रकाश हो बृद्धने उसकी भी आज्ञा देकर कहा तीन चारसे अधिक न जलाना नूरुद्दीन ने एक सिरेसे दूसरे सिरेपर्यन्त सब के सब प्रज्वलित किये वह बृद्ध हुस्नअफ़रोज़ के सुन्दर बैनों में ऐसा लगाथा कि उसे भली बुरी बातका ज्ञान न रहा बादशाह हारूंरशीद अभी न सोयाथा अपने महल में जो नदी के तीरथा जाकर उसने बैठनेकी इच्छाकी कि अचानक उसकी दृष्टि उस रोशनी पर पड़ी जो बारहदरी में दारोग़ा की आज्ञासे नूरुद्दीन व हुस्नअफ़रोज़ ने कीथी इससे वह अत्यन्त बिस्मित हुआ और वज़ीरजाफ़र को बुलाय पूछा कि यह कैसा प्रकाशहै क्या किसीने बाग़में प्रकाश तो नहीं किया वज़ीर जाफ़र भी इस उजियालेको देख आश्चर्य में हुआ परन्तु उससमय बात बनाय बादशाह से बिनयकी कि इस बाग़के दारोग़ा ने पूर्व यह मानता मानीथी कि मनोरथ के सिद्धहोने पर बाग़ में रोशनीकर इष्ट मित्रोंको न्योतूंगा उसीने वह प्रकाश किया होगा बादशाह उसकी बातका बिश्वास न कर उसी बातको निश्चय करने के लिये बस्त्र उतार पुरबासियों के सदृश कपड़े पहिन वज़ीर और मसरूरको अपने साथ ले उस बाग़की ओर चला जब नगरकी गलियां लांघ बाग़के समीप पहुँचा बाग़का किवाड़ खुला पाय अधिक करके अचम्भा करनेलगा निदान दारोग़ा की ग़फ़लत समझ वज़ीरसे पूछा इससमय बाग़का द्वार क्यों खुला है उसने भयभीत हो उत्तर दिया मुझे इसका कारण मालूम नहीं फिर वह अपने सेवकोंको एक जगह बैठा आपही बाग़ के भीतरगया और धीरेधीरे बारहदरी पर्यन्त पहुँच सीढ़ीपर चढ़ गया और दूसरे आड़

म खड़ेहो देखा कि एक सुन्दरी और एक स्वरूपवान् पुरुष बैठेहुये हैं और दारोगा मदिरा का गिलास उस स्त्री को दे कहता है हे मृग-नयनी! मैंने भलीभांति तुम्हारा प्रिय गाना नहीं सुना कुछ इस समय भी गावो बजावो फिर मैं तुम्हें अपना गाना सुनाऊंगा यह कह वह बृद्ध गाने लगा बादशाह यह दशा देख विस्मित हो अपने मनमें सोचा दारोगा तो अत्यन्त आचारी था इसको क्या हुआ जो मदिरा पी उन्मत्त हो गायरहा है बादशाह ने वज़ीरको सैनसे बुलाय चुपकेसे पूछा देख तो यह कौनहै वज़ीरने डरते २ धीरे से पांवआगेधर क्या देखा कि वह हर्षपूर्वक मदिरा पानकरते हैं फिर वहां से उतर बादशाह से बिनती की सेवक तो इनदोनों पुरुष और स्त्रीको नहीं जानता न जानिये इस आचारी बृद्धको क्या होगया यह दास अत्यन्त आश्चर्यित है कुछ नहीं कहसक्ता बादशाहने वज़ीर से कहा यदि इस सुन्दरी ने अच्छा गाया तो मैं कुछ न कहूंगा नहीं तो मैं इन तीनोंको ऐसा दण्ड दूंगा कि इनको सदा स्मरण रहेगा यह कह वज़ीर से कहा तूभी मेरे साथ सुन सो किवाड़की ओटमें छिप वह दोनों सुनने लगे बृद्धने उस कोमलांगीसे कहा कि ऐसा गावो जिससे मेरा मन प्रसन्न हो उसने कहा जो कोई बाजा बांसुरी आदिहोता तो तुम निस्सन्देह उसे सुन हर्षित होते जो कहीं मिलसके तो लावो दारोगा ने कहा बांसुरी बजाना जानती हो उसने कहा निस्सन्देह कुछ बजाना जानती हूं बृद्धने तुरन्त एक कोठरी खोल बांसुरी निकाली हुस्नअफ़रोज़ उसे ले बजानेलगी खलीफ़ा ने सुनतेही वज़ीर से कहा यह स्त्री क्या सुन्दर बांसुरी बजाती है मैंने इसका अपराध क्षमा किया और इसी के कारण इस मनुष्य का भी अपराध क्षमा किया परन्तु बृद्धकी गफ़लत पर तुझे अवश्य फांसी दूंगा वज़ीर ने कहा अगर वह बुराबजाती बादशाह ने कहा यह दुआ क्यों मांगता है उसने कहा अगर वह बुराबजाती तो ज़रूर वह दोनों जानसे मारेजाते तो उनके साथ मारा जाना अच्छा था बादशाह इस कहने से बहुत खुशहुआ हुस्न-अफ़रोज़ ने अति प्रसन्नता से बृद्ध के सन्मुख ऐसी बांसुरी बजाई कि खलीफ़ाने भी कहा कि यह इसगुणमें अतिनिपुणहै फिर वह

बांसुरी की ध्वनिके साथ गानेलगी यदि ख़लीफ़ा उसके बजानेपर एकभाग बिह्वलथा तो उसकी प्रियबाणी से दोभाग बिह्वल होगया और बेबश वाह वाह कहनेलगा और वहांसे उतर बाग़के एक कोने में जाय वज़ीर से कहा न तो मैंने आजतक ऐसा गाना सुना और न ऐसा बांसुरीका बजाना इसहाक़ कि इस गुणमें बिख्यात है पर इस स्त्री के सन्मुख अज्ञान बालक है ख़लीफ़ा जोकि सांगीत बिद्या में अतिकुशल और रागको भलीभांति समझता था वज़ीर से कहने-लगा मैं चाहता हूं किसी भांति भीतर जाय इसका गाना बजाना सुनूं इससमय मेरा हृदय तड़प रहाहै परन्तु कोई यत्न बिचारमें नहीं आता वज़ीरने कहा साहब मेरे अगर आप भीतर जावेंगे तो दारोग़ा पहि-चान के मरजावेगा और यह दोनों स्त्री पुरुष आपके भयसे गाना बजाना भूलजावेंगे फिर आपके गाना सुनने का स्वादु जातारहेगा ख़लीफ़ा ने कहा मैं इनदोनों और बृद्ध दारोग़ा को जिसने मेरी जन्मभर सेवाकी दुःख देना नहीं चाहता तू यहीं मसरूरके साथ ठहर और मेरे आगमनकी बाट देख ख़लीफ़ा इसी बिचारमें था दैवयोगसे एकधीमर ने रात्रिको द्वार खुला पा चार पांच बड़ीबड़ी मत्स्य उस बाग़ से जो टेकरनदीके तीर था पकड़ीं ख़लीफ़ा ने उसके पासजाकर दो मछलियां बड़ी बड़ी चुनकर लेलीं यद्यपि ख़लीफ़ा दूसरे बेषमें था परन्तु धीमर पहिचान कांपनेलगा और पांव पर गिरपड़ा ख़लीफ़ा ने कहा डरमत और अपने कपड़े मुझे उतारदे और मेरे वस्त्रपहिर अपने घर चुपके चला जा उसने यह सुनतेही कपड़े उतार दिये और बादशाही कपड़े पहिन अपने घर चलागया ख़लीफ़ा उसके कपड़े पहिन और दो मछलियां हाथमें ले पहिले वज़ीर और मसरूर के निकट खड़ाभया वज़ीर ने उसे न पहिचाना और समझा कि कोई धीमर इनआम मांगने आया है यह शोच उसे झिड़क कहा दूर हो यहां से चलाजा बादशाह खिलखिलाके हँसपड़ा और वज़ीर पहिचानकर डरगया और हाथ जोड़ बिनय की कि इस सेवकका अपराध क्षमा कीजिये मैंने आपको नहीं पहिचाना कि आप धीमर के बेष में आके खड़ेभये हैं मैंहीं नहीं किन्तु कोई आपको इस बेष

में नहीं पहिचान सकेगा अब निश्शंक बारहदरी में जाइये और गाना सुनिये ख़लीफ़ा फिर उसी भांति मछलियां हाथ में लिये-हुये बारहदरी के पास खड़ाभया और द्वार खटखटाया नूरुद्दीन ने पहिलें शब्द सुना और दारोग़ा से कहा दारोग़ाने पूछा कौन है ख़लीफ़ाने दरवाज़ेका पट खोल एक पांव आगे किया कि पहिचाना न जावे और कहा मैं करीमनामक मछली बेंचनेवाला हूं मैंने सुना था आजकी रातको तुमने अपने मित्रों को निमन्त्रणकर उनकी जेवनार की है इस हेतु इसी समय अतिउत्तम दो मछलियां पकड़ आप के निकटलायाहूं नूरुद्दीन और हुस्नअफ़रोज़ दोनों मछलियों का नाम सुनतेही प्रसन्नहुये हुस्नअफ़रोज़ ने बृद्धसे कहा इसे भीतर बुलाओ तो हमदेखें कि कैसी और किस जाति की हैं वह दारोग़ा कि बहुतसी मदिरा पीजाने से नशे में मग्नथा मुख अपना द्वारकी ओर फेरा और ख़लीफ़ाको धीमर समझ कहा मेरे इस रात्रि के चोर भीतर आवो तो मैं तुम्हें देखूं ख़लीफ़ा निश्शंक मछलियां लियेहुये भीतर गया हुस्नअफ़रोज़ ने उन्हें देख कहा यह बहुत अच्छी मछलियां हैं इन्हें मोललो पकवाओ दारोग़ा ने ख़लीफ़ा से कहा अरे करीम इन मछलियों को शीघ्रही रसोई में लेजाकर भूनकर ला धीमर ने कहा बहुत अच्छा यह कह वह बारहदरी के नीचे आया और वज़ीर से कहा इसे साफ़कर तुरन्त तय्यारकर वज़ीर ने कहा बहुत अच्छा मैं इस कार्य में चतुरहूं बहुधा मैंने अपने हाथसे मछली बनाई हैं फिर ख़लीफ़ा और वज़ीर और मसरूर ने बावर्चीख़ाने में जाय मसाला तेल जो कुछ आवश्यकथा लेके मछलियां पकाईं और ख़लीफ़ा एक पात्रमें उन्हें रख बारहदरी में लेजाय और उसके सन्मुख रख एक नीबू भी सामने रखदिया जिसमें खटाईका स्वादुहो उपरान्त उन तीनों ने वह मछलियां खाईं और प्रसन्न भये नूरुद्दीन और हुस्नअफ़रोज़ ने धीमरसे कहा तूने ऐसे स्वादुकी मछलियां पकाईं कि हमने ऐसे स्वादुकी कभी न खाईथीं सो उसने अशरफ़ियों की थैली निकाल जिसमें केवल चौबीसही अशरफ़ियां शेषरहगई थीं सबकी सब ख़लीफ़ाको देडालीं और कहा जो मेरे पास

कुछ और होता तो तुझे देडालता और कदाचित् तू पूर्व में आता तो इतना देता कि जन्मभर आनन्द भोगता इस दशामें इस थोड़े द्रव्य को बहुत जान खलीफ़ाने उस थैलीको नूरुद्दीन से ले देखा तो चौबीस अशरफ़ियांथीं अत्यन्त गुणमानकर कहा मैंने तुम ऐसा दानी और उदार नहीं देखा परमेश्वर आपको जीतारक्खे परन्तु मेरी एक इच्छाहै नूरुद्दीनने कहा वह क्या खलीफ़ा ने कहा मैंने यहां एक बांसुरी रक्खीहुई देखीहै इससे समझताहूं यह सुन्दरी इसे बजाना जानतीहै मुझे सुनने की अतिलालसा है जो आप आज्ञा दीजिये तो बांसुरी की ध्वनि सुन तुम्हें आशीर्बाद दे चलाजाऊं नूरुद्दीन ने हुस्नअफ़रोज़ से कहा कि तू बांसुरी बजाकर इस धीमर को सुना भला यहभी क्या याद रक्खेगा हुस्नअफ़रोज़ मदिराके नशे में और ऊपरसे मछली भोजनकर अतिआनन्द से बांसुरी उठा बजाने और स्वरमिला गानेलगी ऐसा गाई कि दोनोंके स्वरमें कुछभी अन्तर न था खलीफ़ाने सुन धन्य धन्य किया फिर उसने केवल बांसुरी बजाई यह सुन खलीफ़ा अति प्रसन्न हो कहनेलगा वाह वाह क्या स्वर और क्या हाथ और क्या सुन्दर कण्ठ और क्या गानेबजाने की निपुणता और कोई ऐसा गानेबजाने वाला संसारभर में न होगा और न किसी ने ऐसा गाना सुना होगा नूरुद्दीन का यह नियम था जो कोई उसकी बस्तु की प्रशंसा करता तुरन्त उसी को वह बस्तु दे देता कहा हे धीमर! मुझे बिदित हुआ कि तू गाना बजाना भलीभांति समझता है मैंने हुस्नअफ़रोज़ तुझे दे डाली और वहां से उठ वस्त्र पहिर खलीफ़ा से बिदा भया और कहा इसे भलीभांति रखियो और वहा से चलदिया हुस्नअफ़रोज़ उसकी उदारता को देख आश्चर्य में हुई और बिचारने लगी जिस मनुष्य ने प्रशंसा मात्र में ऐसी अपनी प्रियाको इस निर्धनता में एक धीमर को देडाला तो उसके आगे कुबेरका धन क्या बस्तु है नयनों में आंसू भर कहा हे प्राणनाथ! कहां जाओगे बैठके मेरा अन्तका गाना सुनो वह इसके कहनेसे बैठगया तो हुस्नअफ़रोज़ बांसुरी हाथमेंले और उसकी ओर मुँहकर उसी समय के रचित बियोगके गीत गानेलगी

नम्बर ३२ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ै ४५६ द्वि॰ भा॰

चित्र ख़लीफ़ा और जाफ़र का

और यह इच्छा करनेलगी कि मुझे धीमरको न दे जब गाचुकी तब बांसुरीफेंक रूमाल मुख और नेत्रोंपर रखलिया कि उसका रोना उसे विदित न हो नूरुद्दीन उसके रोनेपर कुछभी विचार न कर चुपका बैठारहा ख़लीफ़ा इस व्यवस्था को देख आश्चर्य में हुआ और नूरुद्दीन से कहा मुझे विदित हुआ कि यह हुस्नअफ़रोज़ तुम्हारी लौंड़ी है तुम उसके स्वामी हो नूरुद्दीन ने कहा हे करीम ! जो कुछ तूने कहा सो सब सत्यहै तू इतनीही बातको देख अचम्भा मतकर यदि तू मेरा सम्पूर्ण वृत्तान्त जो इसके कारण मुझपर बीता सुने तो और भी विस्मितहो ख़लीफ़ा ने कहा स्वामी मुझे वहभी सुनाइये नूरुद्दीन ने सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रथमसे अन्त पर्यन्त वर्णन किया ख़लीफ़ाने सब चरित्र सुन उससे कहा अब तुम्हारी कहां जानेकी इच्छाहै नूरुद्दीन ने कहा जहां ईश्वर लेजावे धीमरने कहा तुम कहीं न जाओ बांसराको चलेजाओ मैं एक छोटापत्र लिखे देताहूं तुम जबेनी ख़लीफ़ा को मेरी ओर से देना वह इस पत्रको देखतेही तुम पर कृपा करेगा फिर किसी प्रकारसे तुम्हें दुःख न देगा और तख़्तसे उतर तुम्हें बैठाय अपना मुकुट उतार तुम्हारे शीशपर रक्खेगा नूरुद्दीन धीमर की उन बातोंपर बहुत हँसा और कहा कहां धीमर और कहां जबेनी बादशाह—दृष्टांत—कहां राजाभोज कहां गंगा तेली, जो कुछ तूने कहा समझ में नहीं आता बादशाह ने कहा प्रकट में तो मुझे धीमर समझतेहो परन्तु बालापन में हम और वह एकही पाठशाला में पढ़ते थे उस समय से आजतक उससे अति प्रीति है कई बेर उसने मुझे बुलवाभेजा और कहा तुम हम मिलके बादशाहतकरें वा तू मेरा वज़ीर आज़महो मैंने इसे स्वीकार न कर प्रारब्ध पर स्थिररहा परन्तु कई मनुष्यों को मैंने उसके निकट भेजा उसने उनके साथ मेरे लेख से अधिक उपकार किया नूरुद्दीन यह सुन धीमरसे राज़ी हुआ अनन्तर ख़लीफ़ाने दावात और लेखनी आदिले पहिले महीन अक्षरों में परमेश्वरका नाम लिख इसभाति पत्र लिखा॥

पत्र का विषय॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीद मेंहदीकापुत्र इसपत्रको जबेनी अपने चचा

के नाम भेजताहै इसपत्रके देखतेही वजीरखाकानके पुत्रको जिसे मैंने पत्र दियाहै तख़्तपर बैठाना और आप उसपरसे उतर ताज शाही उसके शिरपर धरना इस आज्ञाके प्रतिपालमें बाल भरका भी अन्तर न पड़े फिर ख़लीफ़ा ने उस पत्रको लपेट अपनी मुहर उसपर करदी उसका मतलब नूरुद्दीनको न सुनाकर थैली में रख उसे दिया और कहा इसीसमय जहाज़ जानेको तय्यार होगा सो उसपर चढ़ शीघ्र बांसराको पहुँच नूरुद्दीन उस पत्रको ले बिदा होचला हुस्नअफ़रोज़ उसके पीछे रोतीहुई द्वारतक गई और उसे बिदाकर ठण्ढी श्वासें लेती अपने स्थानपर आयबैठी वृद्ध दारोगा चुपके चुपके नशे में यह सब बातें सुनता था जब नूरुद्दीन वहां से चलागया तब उसने ख़लीफ़ा की ओर जिसे धीमर समझताथा देख कहा तू यहां दो मछलियों से अधिक नहीं लाया जिसका दो चार पैसे से अधिक नहीं पासक्का और उसके बदले अशरफ़ियों की एक थैली और एक सुन्दर लौंड़ी पाई तू इन दोनों को अपने घरलेजा नहीं सक्का आधी बांदी मेरी है और आधी तेरी और थैली ला मुझे दे यदि उसमें रुपये हैं तो एक उसमें से तुझे दूंगा और सब लेलूंगा यदि अशरफ़ियां हैं तो उन सबको मैं लूंगा और कुछपैसे तुझेदूंगा जब ख़लीफ़ा मछलियां भूनने को गयाथा तो उसने वज़ीरको आज्ञादी थी कि शीघ्र महलमें जाय बादशाही कपड़े और चारपांच सेवक लाय यहां ठहर जिस समय मैं बारहदरी के किसी द्वारपर हाथमारूं तो शब्द सुनतेही मेरे कपड़े और मसरूर और सेवकों सहित आइयो सो वह वहीं खड़ाथा अब यहांसे फिर दारोग़ा की कथा कहते हैं ख़लीफ़ा ने वृद्ध को उत्तरदिया मुझे थैली का हाल मालूम नहीं कि उसमें अशरफ़ी हैं वा रुपये जो कुछ उसमें होगा आधोआध परस्पर बांटलेंगे परन्तु लौंड़ीको मैं न दूंगा और अपनेघर लेजाऊंगा इसमें तुम प्रसन्नहो वा अप्रसन्न वह वृद्ध धीमरकी इस ढिठाईपर बहुत क्रोधित होगया और एक चीनी की रकाबी उठा धीमर के शिरपर मारी ख़लीफ़ाने अपना शीश हटा लिया और वह पात्र दीवार से टूक टूक भया दारोग़ा पात्रके न लगने से अधिक अप्रसन्न भया और रोशनी को

ले ख़लीफ़ाको मारने के निमित्त लकड़ी ढूंढ़ने निकला इतने में ख़लीफ़ाने सीढ़ी के मार्ग से बारहदरीमें आय एक किवाड़पर हाथ मारा उसका शब्द सुनतेही जाफ़र, मसरूर और चारों दास दौड़ के बारहदरी में आये ख़लीफ़ा धीमर के बस्त्र उतार और बादशाही कपड़े पहिर तख़्तपर जो बारहदरी में पड़ा रहताथा बैठगया दाहिनीओर वज़ीर, बाईंओर मसरूर और तख़्तके पीछे वह चारों सेवक हाथ बांधे खड़ेहोगये इतने में वह दारोग़ा मोटीसी लाठी ढूंढ़ हाथमें लिये धीमर के मारने के हेतु बारहदरी में आया और इधर उधर उसे ढूंढ़ने लगा अकस्मात् उसकी दृष्टि ख़लीफ़ापर पड़ी कि ख़लीफ़ा शाही कपड़े पहिने बैठाहै वज़ीर मसरूर और सेवक हाथ बांधे दाहिने बायें खड़े हैं आश्चर्य में होकर बिचारनेलगा कि मैं स्वप्नावस्था में हूं वा जाग्रत् में ख़लीफ़ा ने उसे बिकलदेख कहा हे बृद्ध ! तू किसे ढूंढ़ताहै वह उनके पांवपर गिरपड़ा और गिड़गिड़ाय मुख दाढ़ी पृथ्वीसे घिस कहने लगा हे स्वामी ! मैंने बड़ा अपराध किया उसे क्षमा कीजिये इतने में ख़लीफ़ा ने तख़्तसे उतर कहा मैंने तुझे क्षमाकिया हुस्नअफ़रोज़को इसदशा के देखने से धैर्य हुआ और समझी कि यह बाग़ और बारहदरी इसी बादशाहकी है जिसने अपना बेष धीमर का धारण कियाथा ख़लीफ़ा ने हुस्नअफ़रोज़ से कहा मेरेसाथ चल तूतो मुझे जानगई होगी कि मैं कौन हूं मैंने किसीको नूरुद्दीन के सदृश उदार नहीं पाया कि तुझ ऐसी परमप्रियाको प्रशंसामात्रपर मुझे देडाला मैंने उसे बांसराका बादशाह कर भेजाहै तिसपीछे जब भले प्रकार प्रबन्ध होजावेगा तुझे भी उसीकेपास भेजदूंगा तबतक मेरे महलमें ठहर हुस्नअफ़रोज़ यह बचन सुन हर्षितहुई और उसे बिश्वासहुआ कि अब नूरुद्दीन अवश्य बादशाहत करेगा फिर ख़लीफ़ाने उसे अपने साथ महल में लेजाय मलका ज़ुबैदाको सौंप कहा इसे भलेप्रकार रखियो यह सुन्दरी नूरुद्दीन की स्त्री है—अब यहां से नूरुद्दीन का बृत्तान्त सुनिये वह धीमर का पत्र कि बास्तवमें वह ख़लीफ़ा हारूंरशीदका लिखाथा ले बांसराको सिधारा वहां पहुँच न किसी अपने मित्र और न किसी

नातेदारको मिला सीधा बादशाही दरबार में चलागया उससमय जबेनीबादशाह अदालत घरमें इंसाफ़ कररहाथा वह निश्शंक भीड़ में पैठ बादशाह के समीप पहुँचा और पत्र उसेदिया उसने प्रथम पत्रको ले तीनबेर चूमा और चाहा कि तख़्तसे उतर पत्रकी आज्ञाको प्रतिपालनकरे इतने में सूय वज़ीर जो नूरुद्दीन के प्राणका बैरीथा आया बादशाह ने वह पत्र उसे दिया वह उसपत्र के पढ़तेही अति बिकलहुआ फिर कुटिलतासे उसपत्रको बहाने से बाहर प्रकाशमें लेजाय पढ़नेलगा और वहां उसपत्र में जहां ईश्वरका नाम और ख़लीफ़ा की मुहरथी कतरके खागया और फिर बादशाहको आय पत्रदिया और कहा कि हुजूरकी क्याइच्छाहै बादशाह ने कहा इस आज्ञाका पालन करना अवश्यहै वज़ीरने कहा यह छलकापत्र जान पड़ताहै यदि बास्तव में ख़लीफ़ा के हाथका लिखा हुआहो तो ऐसा जानपड़ता है कि इसने मेरी और आपकी नालिश ख़लीफ़ा से की होगी ख़लीफ़ाने इसकी सिफ़ारश लिखीहोगी कि इसे दुःखमतदो नकि यहकि जो कुछ इसमें लिखाहै बर्ताव कियाजावे जो कुछ मैंने कहा इसे सत्यमानिये और किसी भांतिकी चिन्ता न कीजिये जो परमेश्वर न चाहे आगे किसी प्रकारकी हानिहोगी तो उसका मैं ज़िम्मेदारहूं जबेनी ने वज़ीरके कहनेको मान नूरुद्दीनको सूय को दिया सूय कि उसके रुधिरका प्यासाथा अपने महलमें लेजाय उसे भलीभांति मारनेलगा ऐसामारा कि वह दीन मृत्युतुल्यहो मूर्च्छित भया तिस पीछे उसको अतिसूक्ष्मस्थान में क़ैदकर उसपर चौकी नियतकर आज्ञादी कि केवल एकहीबेर इसको रोटी और जलदेना कुछ कालपीछे जब नूरुद्दीन सुधिमें आया तो क्या देखताहै कि मैं महा-मलिन और दुर्गन्धित स्थानमें पड़ाहूं वह ऐसासूक्ष्म स्थानथा कि श्वासा उसकी रुकनेलगी अपनी दुर्भाग्यता से ग्लानिकर कहनेलगा कि उस धीमर ने मेरे साथ भला उपकार किया और मैंभी अपनी दुर्बुद्धितासे उसकी बात मान इस आपदामें पड़ा निदान छःदिन तक नूरुद्दीन उसीसूक्ष्म और महामलिन स्थान में पड़ारहा सातवें दिन वज़ीरने उसके बधकी इच्छाकी परन्तु उसे अपने घरमें मारने

का अधिकार न था इसलिये एक बहाना उठाया अर्थात् कई सेवकोंके शिरपर स्वच्छबस्तु की किश्तियांधर बादशाह के सन्मुख लेगया और कहा यहबस्तु नवीन बादशाह ने आपके निमित्त तख़्त और ताज की आशसे भेजी है बादशाह ने सूय से कहा वह अभागा क्या अबतक जीताहै मैं जानताथा कि उसे तूने अबतक मारडाला होगा उसने कहा मुझे अधिकार नहीं जो किसीको अपने घरपरमारूं उसने कहा इसे अभी जाके बधकर उसने कहा हुजूर मैं आपके इन्साफ़ से बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु मैं चाहताहूं जिसप्रकार नूरुद्दीन ने सम्पूर्ण मनुष्यों के साम्हने बाज़ारमें मुझेमारा उसीप्रकार वहभी शाहीदरबार में मारा जावे बादशाह ने स्वीकार किया नगरमें डौंड़ी फिरी कि कल अमुक समय नूरुद्दीन जिसने वज़ीर से ढिठाई कीथी उसके बदले गर्दनमारा जावेगा जिसे देखनाहो शाहीदरबार में आय देखे फिर महादुष्ट और निर्दयी वज़ीर बीसदासों सहित बन्दीगृह में गया और बड़ी अप्रतिष्ठा से नूरुद्दीनको अंधे बेज़ीन घोड़ेपर सवार किया उसने अपनी यह दुर्दशादेख कहा मैंने प्राचीन पुस्तकों में पढ़ाहै जो कोई किसी निर्दोष मनुष्यको दुःखदेताहै उसका फल वेगही पाताहै वज़ीर यह बचन सुन अति अप्रसन्न भया और कहा हे अयोग्यदुष्ट ! मुझे ब्यंग्य वाक्य कहताहै मैंने तेरी इस ढिठाईको क्षमाकिया क्योंकि क्षणमात्र में तू माराजावेगा और तेरा मस्तक काट शहरभर में फिराया जावेगा मैंने भी किताबों में पढ़ा है वह मनुष्य बड़ा प्रारब्धी है जो अपने बैरीको मरा हुआ देखे उपरांत उसके सेवकों ने नूरुद्दीनको शाहीदरबार में लेजाय एक बड़े बनमें जो शाहीमहल से सम्बन्धितथा बधकरने के लिये बधिक को दिया और चारों ओरसे सेवकों और सिपाहियों ने उसे बीचमें करलिया और बधिकने आकर नूरुद्दीन से कहा मेरा अपराध चित्तमें न धरना मैं आपका आज्ञापालकहूं और इसकार्य से मेरी जीविका है बादशाह ने मुझे तुम्हारे मारनेकी आज्ञादी है तुम्हें इससमय कुछ खाना पीना हो वा कहना सुननाहो तो कह सुन लो और खा पी लो नूरुद्दीन इस भयानक समय में किसीको अपना सहायक न देख

अपने प्राणसे निराशहुआ फिर जलमांगा मनुष्योंने तुरन्त दौड़
एक जल का पात्रभर उसेदिया वह पीताहीथा कि सूय वज़ीर
बधिकपर ख़फ़ा हुआ कि इतनीदेर उसके मारने में क्योंकी जल्द
उसेमार सब लोग वज़ीर को निर्मोही देख उसको गालियां देनेलगे
जल्लाद वज़ीर के ख़फ़ाहोने से खड्ग निकाल शिरकाटना चाहताथा
इतनेमें बादशाहने खिड़की से झांक बधिकसे कहा ठहरजा क्योंकि
उसने ऊँचेसे देखा कि एकबड़ा कटक चलाआता है वज़ीरसेकहा
देखो तो यह सेना कहां से आती है वज़ीर ने बादशाह को भुलाने
के लिये कहा कुछ नहीं यह गर्द जो आप देखते हैं पुरबासियों की
है बहुधा सवार और प्यादे इस अयोग्य का तमाशा देखने को चले
आते हैं सेना नहीं है बधिक को आज्ञादीजिये इस कुलक्षणको बध
करे बादशाहने कहा नहीं जबतक मुझे इन सवारोंका बृत्तान्त ज्ञात
न होगा मैं उसके मारने की आज्ञा न दूंगा जानना चाहिये ख़लीफ़ा
नूरुद्दीन के हालको भूलगया और उसके बिचारसे वह प्रतिज्ञा जो
उसने हुस्नअफ़रोज़ से सेना और धन नूरुद्दीनके भेजने को कीथी
उतरगई इसको कई दिनबीते एकदिन वह अपने महल में जहां
उसकी सब बांदियां और नूरुद्दीन की लौंड़ीथी गया वहां कुछ गाने
का शब्दसुना कि कोई स्त्री बियोगके गीत बड़ी बिकलतामें गारहीहै
उसे ठहरके सुननेलगा और सेवकों के प्रधानसे जो उसके साथथा
पूछा यह कौनसी स्त्री गारही है उसने कहा यह नूरुद्दीनकी लौंड़ी है
जिसको हुज़ूरने बादशाहकर ज़बेनीकी जगह भेजा है ख़लीफ़ाको
सुधिभई और कहनेलगा हा! खेद है कि मुझे दीन नूरुद्दीन की सुधि
न रही जाफ़र वज़ीरको बुलाके कहा मैं सनद और आज्ञा नूरुद्दीन
के निमित्त बांसराको भेजना भूलगया अब यहां ठहरना न चाहिये
तुरन्त तू कटकसाज बांसराको सिधार और वहां जाके देख यदि
नूरुद्दीनको मारडालाहो तो तुरन्त वहांके वज़ीरको बध कीजियो यदि
उसे जीतापाइयो तो उसे ज़बेनी और वज़ीरसमेत शीघ्र मेरे सन्मुख
लाइयो वज़ीर तुरन्त सेनासहित बांसराकोपधारा जिससमय बधिक
नूरुद्दीनको मारनेलगा दैवयोगसे वह उसीसमय पहुँचा लोगोंनेउसे

देख दाहिने बायें होकर उसे मार्गदिया वह अपने घोड़े और सवारों की सेनासमेत ज़बेनी तक शाहीदरबारमें पहुँचा ज़बेनी वज़ीर आज़मको देख उसकी अगवानीको सीढ़ीतक आया और उससे भेंट कर अति प्रीतिसे आदर सत्कारकिया वज़ीर ने पहिले नूरुद्दीनका बृत्तान्त पूछा कि वह जीताहै वा नहीं यदिजीता है तो उसे तुरन्त लाओ सेवक बादशाहकी आज्ञाके अनुकूल उसी दशा से उसे वज़ीरके सन्मुख लेगये वज़ीरने उसीकाल उसके बन्धन खुलवादिये और उसी रस्सी से सूय वज़ीरको बांधा उसदिन तो वहींठहरारहा दूसरेदिन नूरुद्दीन ज़बेनीबादशाह और सूय वज़ीरको अपने साथ ले बुग़दादको सिधारा और वहां पहुँच उन तीनों को ख़लीफ़ाके निकट लेगया और बादशाह से सूय के बैरका समाचार बर्णनकिया और यहभी कहा जो एकक्षण न पहुँचता तो नूरुद्दीन माराजाता ख़लीफ़ाको नूरुद्दीन पर बड़ीदया उपजी और कहा कि सूय को तू अपने हाथसे वधकर नूरुद्दीनने बिनयकी स्वामी यद्यपि यह मेरा और मेरे पिताका शत्रुहै तथापि मैं अपने हाथको उस ईर्षी दुष्टके रुधिरसे भरना नहीं चाहता ख़लीफ़ाने उसके साहसपर धन्य २ किया और बधिकको आज्ञादी कि इसकी गरदन मार सो उसने तुरन्त अपने कुकर्म का दण्डपाया फिर ख़लीफ़ाने चाहा कि नूरुद्दीन को बांसराका बादशाह करके भेजे परन्तु उसने बिनयकी इस अप्रतिष्ठा पर इस सेवकने सौगन्दखाई है कि फिर उसशहर में अपनें जन्मभर न जाऊँ मैं चाहताहूं कि आपकीसेवा में तत्पररहूं बादशाहने उसे निजसभामें एक सभासद नियतकर एक बड़ामकान दिया और बड़ी जागीर उसकी नियतकी कि वह अपनी उदारतासहित हुस्नअफ़रोज़ के साथ जन्मभर आनन्दमें रहे और ज़बेनी बादशाह आज्ञा न पालन करनेसे दण्डको पहुँचा फिर वज़ीरआज़मके कहनेसुननेसे उसे बांसराको बिदाकिया शहरज़ाद जब यह सुन्दर कहानी कहचुकी दुनियांज़ाद ने दूसरी कहानी की इच्छाकी तब शहरज़ाद इसभांति एक और चरित्र कहने लगी ॥

ईरान के बदर नामक बादशाह और समुन्दालदेश की शाहज़ादी का चरित्र ॥

स्वामी ईरानदेश अति बिशाल नगरहै पूर्व में यहां के बादशाहों की चक्रवर्ती बादशाह की संज्ञाथी और अन्य बादशाह उसके अधीन और कर देते थे उन सबमें एक बादशाह अति तेजस्वी महाप्रतापी बहुतसेना और कोष रखता बहुत दिनतक उसने बादशाहतका सुखभोगा उसको किसीप्रकार की सांसारिक चिन्ता असन्तानादि के बिशेष न थी उसके सौ बीबियांथीं और हरएक के निमित्त सैकड़ों बांदियां सेवाकेलिये नियतथीं परन्तु किसीसे बेटा नहीं होता था इसके बिशेष दूर २ के ब्यापारी महास्वरूपवान् स्त्रियांलाते वह बहुतसा द्रब्यदे उनको मोलले उनके साथ भोगकरता कि उनहीं से सन्तान उत्पन्नहो और इसी बाञ्छासे अपनी जातिके सिद्ध और बड़ों से सहायता चाहता कि उनके आशीर्बादसे ही मेरा मनोरथ सिद्ध हो और हज़ारों रुपये अशरफ़ी निर्धनों को दियाकरता कि इसी में ईश्वरकी कृपा मुझपर हो और अपनी चिन्ता मिटानेको बुद्धिमानों से बहुतसी कथा सुनता एक दिन एक सेवक ने बादशाह से कहा महाराज एक ब्यापारी बहुत दूरसे अति सुन्दर दासी लाया है और चाहताहै कि उसे आपकी भेंटकरे बादशाहने कहा अच्छा उस ब्यापारीसे कह कि उस दासीको लावे दूसरे दिन वह ब्यापारी बांदी को लेकर द्वारपर आ बादशाहको सलामकी बादशाहने उससे पूछा तुम किसदेशसे आयेहो और वह बांदी कैसी है व्यापारी ने बिनय की स्वामी मैं बहुतदूरसे बांदी लायाहूं कि वह अपने स्वरूपमें अद्वितीय है बादशाहने कहा वह कहां है उसने कहा मैंने उसे अमुकदास को सौंपा है आज्ञाहो तो निकटलाऊं बादशाहने उसे बुलवाय देखा तो उसके अतिसुन्दर रूपको बहुत पसंद किया और उसके चन्द्रमुखपर काली घुँघुवारीलटें अतिशोभायमान मानों घनमें दामिनी उस रूप अनूप मनहरण दुःखदरणको देखतेही बादशाह मोहितहुआ और अपने केलिगृहमें इसब्यापारीसमेत उसेलेगया तिसपीछे जब उस बांदीके मुखपर से बस्त्र उठाया तो बादशाह कामदेवकी स्त्री रतिसदृश

और मैं मृगवत् देख अचेतहुआ जब चैतन्यहुआ तो व्यापारी से उस का मोलपूछा व्यापारीने कहा स्वामी मैंने इसे एक हज़ार अशरफ़ीको मोललियाथा और इतनाही तीन वर्ष इसेखिलाने पहिनाने में व्यय हुआ अब इसे आपकेभेंट करताहूं बादशाहने अतिप्रसन्नहो कहा मेरीरीति नहीं कि किसीसे भेंट बिनामोल लूं किन्तु दुगुना तिगुना मोल मैं धनीको देताहूं निदान बादशाहने दशहज़ार अशरफ़ी उस व्यापारी को दीं वह व्यापारी उसीसमय दशतोड़े अशरफ़ियां ले बिदाभया फिर बादशाहने कईदासियां और कईसेवक उसकी रक्षा आदिकेहेतु नियतकर आज्ञादी कि इसे हम्माम में लेजाय स्नान कराय स्वच्छवस्त्र पहिराओ उन्होंने भलीभांति मल नहला और उत्तमवस्त्र और अतिसुन्दर हीरे आदि जटितआभूषण और मोतियों की अतिमनोहर माला पहिराय दुलहिनके सदृश अलंकृत किया वह सब उसके रूप छविअनूपको देख बिस्मितहुये और उन्होंने बादशाहसे विनयकी कि तीनचारदिन यह विश्रामकरे जिससे मार्ग का परिश्रम जातारहे और स्वस्थ चित्त होजावे और बलकारी पाक भोजनकरे फिर जब इसे देखियेगा तो बिश्वासहै कि वह पहिचानी न जावेगी उसकारूप आजसे द्विगुणहोजावेगा सो बादशाहने तीन दिनतक उससेभोग न किया प्रकटहो कि ईरानकी दारुलसल्तनत उससमय एक समुद्रके कूलपर थी और शाहीमहल खारी समुद्रके तीर था वह बांदी बहुधा उस महल से जो उसे निवासको मिलाथा समुद्रकी ओर देखती और उन सब तरंगोंको जो महलकी दीवारसे लगके टक्करखातीं तमाशादेखती निदान तीसरे दिन समुद्रकी ओर का द्वारखोल कुर्सीपर बैठीथी कि बादशाहको समाचार पहुँचा कि अब वह सावधान होगई है वह वहांगया बांदीसमझी कि मेरी कोई बांदी आईहै इसीबिचारसे बादशाहकीओर देखा परन्तु कुछ बादशाहका सन्मान न किया बादशाह उसके मनोहर स्वरूपको देख आश्चर्य में हुआ और उसकेसत्कार न करने से समझा अभी यह सिखाई नहींगई जब बादशाह उसके समीपगया तो भी उसे वैसाही चुपदेखा परन्तु बादशाहको बिहारादिके करने से न रोका निदान

बादशाहने संगमान्तरमें उससे कहा मेरीप्राणप्यारी तू किसदेशकी रहनेवालीहै और तेरे माता पिता कौन हैं और उनकानाम क्याहै जिनसे तुझ ऐसी अप्सरा उत्पन्नहुई यदि मेरेघरमें सहस्रों बांदियाँ रूपवती वर्तमानहैं परन्तु तेरेसमान कोई नहीं और जितनी मुझे तेरी प्रीति है दूसरेसेनहीं वह इनबातोंको चुपकीसुनाकी बरन् जिह्वा भी न हिलाई बादशाहने थोड़ीदेर पीछे उससे कहा हे प्रिये! तूनेमेरे प्रश्नका कुछ भी उत्तर न दिया जिससे मैं हर्षितहोता और न तूने मेरी ओर आंख उठाके देखा कि मेरेनयन ठण्ढे होते और तू क्यों शोकमें मुरझायरही है तुरन्त बता कि इससे मैं अतिबिकलहूं यदि अपने देश वा माता पिताकी सुधिकर कुढ़तीहो तो वह तो नहीं आसक्के इसके बिशेष संसारकी सकलबस्तु बिद्यमानहैं उसने कितने ही इसभांति के बचन कहे परन्तु न तो यह बोली और न आंख उठा के उसकी ओर देखा चुपकी पृथ्वीकी ओर देखतीरही परन्तु बादशाह कुछ अप्रसन्न न हुआ और मनमें शोचा आगे जब हिलमिलजावेगी तब बोलेगी फिर उसने हांकदी सुनतेही दो बांदियां और सेवक आये बादशाहने भोजनमांगा उन्होंने तुरन्त नानाप्रकार के ब्यञ्जन लादिये बादशाह लौंड़ीकेसाथ भोजन करनेलगा और अपने हाथ से उत्तम उत्तम पाक उसके सन्मुख रखताजाता था वह सुन्दरी उसी भांतिसे चुपकी भोजन करतीरही इसहेतु बादशाह ने उसके प्रसन्नकरने को अनेकप्रकारके चरित्र दिखाये और रात्रिको उसके सन्मुख नृत्यकी आज्ञा दी कि मन उसका बहलकर हृदयका शोक जातारहे तौभी वह मृगनयनी उसीप्रकार चुपरही निदान बादशाह ने उसके नियत सेवकों से पूछा कि इस सुन्दरीको तुमने हँसते बोलते देखाहै उन्होंने कहा हमने कभी इसको बातेंकरते भी नहींसुना जबसे वह आई सदाचुपरहती है निदान बादशाह रात्रिभर उसके साथ सुख से बिहारकर ऐसा प्रसन्न हुआ कि किसीस्त्री से ऐसासुख न हुआथा और पूर्बसे अधिक उसे प्यार करनेलगा और इच्छाकी कि उसके सिवाय कभी किसीसे बिलास न करूंगा तदनन्तर अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंको बुलाया और उनको बहुतसी वस्तु और द्रब्य

नम्बर३३मुतअल्लिक़े सफ़ै ४६६ प्र भा

चित्रशहजादीगुलअनारकामंत्र पढ़तेहुयेऔरउसकेभाईआदिकानदी सेबाहरनिकलना
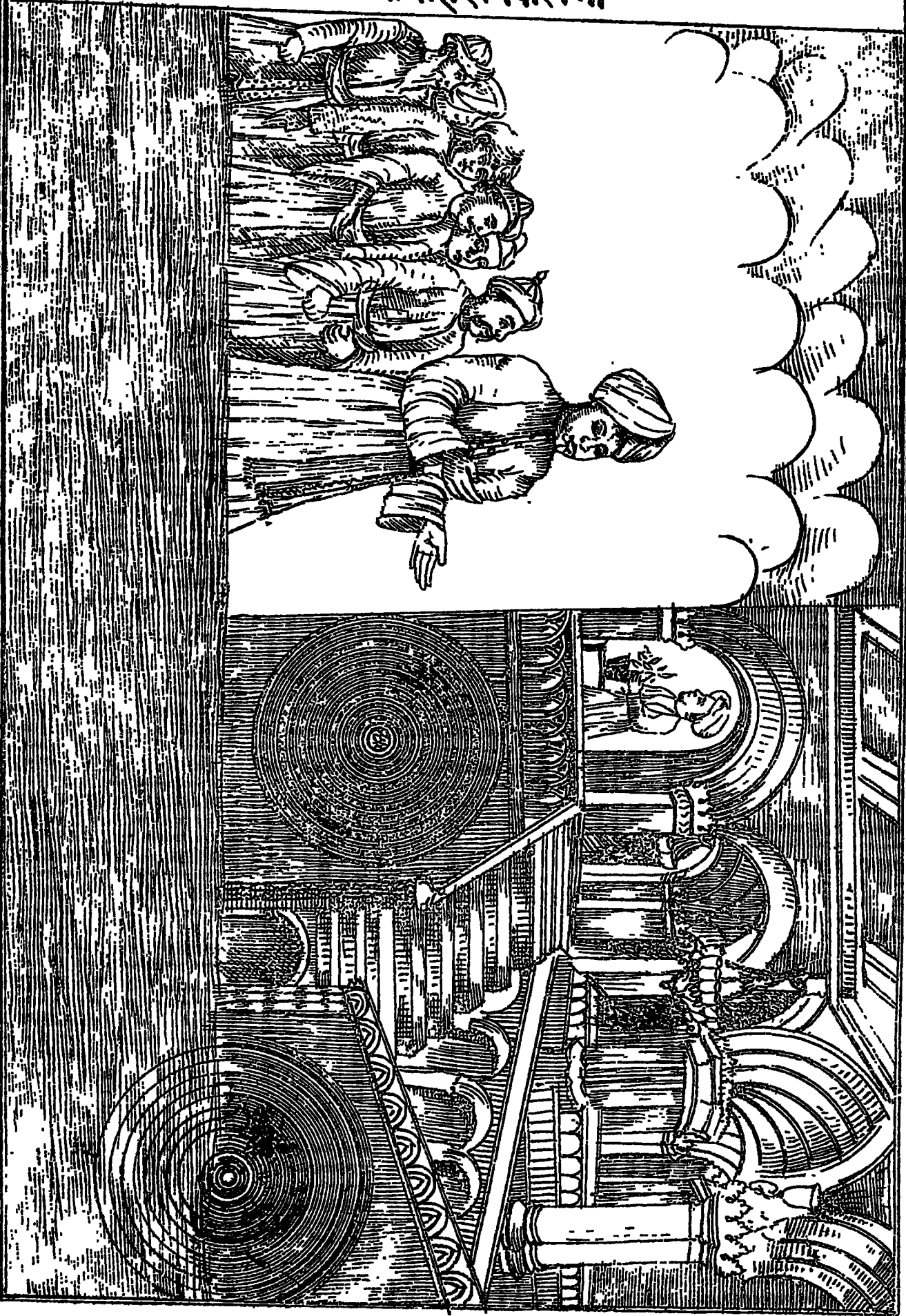
आदिक देकर आज्ञादी कि जिसका जिससे मन चाहे बिवाहकरले परन्तु थोड़ीसी बांदियां लौंड़ी के लिये रखलीं एक बर्ष पर्यन्त बादशाह उसके चुपरहने से अतिबिकलरहा एकदिन उस सुन्दरी से कहा हे प्राणप्यारी! बड़ाखेद है कि मुझे तेरा बृत्तान्त बिदित नहीं कि तू मुझसे प्रसन्नहै वा अप्रसन्न और मैं तो तेरा सत्कार यथावस्थित करताहूं तेरीही प्रसन्नता के लिये मैंने अपनी सबस्त्रियों को परित्याग किया यदि ईश्वर न चाहे तू गूंगी है तो महाअनर्थहै कि ऐसी सुन्दरी रूपवती में इतना बड़ा दोष यदि गूंगीनहीं तो कुछ बोल क्योंकि मुझे चुपरहने से अतिकष्ट है और एक बर्ष से मैं रात दिन परमेश्वर से यह मांगताहूं कि जो तेरे उदर से कोई पुत्र उत्पन्न होता तो मेरेपीछे बादशाहत करता क्योंकि दिन दिन मेरी आयु घटती और निर्बलता दबातीजाती है परमेश्वरके वास्ते जो तू गूंगी नहीं तो मुझसे कुछबात कर नहीं तो मैं प्राणदेताहूं मेरीहत्या तुझ पर होगी वह सुन्दरी यह बचन सुन उसकी ओर देख मुस्कराई बादशाहने उसके इस सुन्दर भावसे आनन्दितहो जाना अब यह बोलेगी प्रसन्नता से उसकी ओर देखनेलगा वह मनहरणी थोड़ी देरपीछे बोली मैं बहुतसी बातें आपसे कहना चाहतीहूं परन्तु मैं नहीं जानती कि पहिलीबात कौनसी कहूं इस कालान्तर में तुमने मुझपर इतनी दयाकी जिससे मैं आपका धन्यवाद करती हूं वह ईश्वर सर्वोपरि तुमको इसका बदलादे और १३० बर्ष पर्यन्त तुम जीतेरहो और तुम्हारे शत्रु प्रतापरूपी अग्नि से जलके भस्महों और आप नित्य प्रसन्नरहें आपको शुभसमाचार देतीहूं मुझे तुमसे गर्भरहा आश है कि पुत्रही उत्पन्न होगा और जो कुछ इससमयमें ढिठाई हुई क्षमाकीजिये न बोलने का यह कारणथा अबतक मेरा मन तुमसे प्रसन्न न था परन्तु इस समय में मैं तुम्हें मनबचन से चाहतीहूं ईरानका बादशाह उसके यह कोमल मनोहर बचनसुन इतना प्रसन्न हुआ जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और उससे लिपटगया और कहा मेरी आंखें अब रोशन हुईं और गर्भका शुभबृत्तान्तसुन महाहर्षितहूं यह कह उठ खड़ाहुआ और कहा अब मैं जाके यह

शुभसमाचार सबसे प्रकट करताहूं फिर बाहर आके वज़ीर से कहा एकलाख अशरफ़ी याचक मंगनों को अभीदो और जिसकी जो आवश्यकताहो उसे चुकादो उपरान्त महल में आ उस सुन्दरी से कहा मुझे क्षमाकरना मैंने यह सब वृत्तान्त तुमसे सुन अपने वज़ीर आदि सवारियों से अब तुमसे बहुतबातें पूछना चाहता हूं प्रथम यह कि एक वर्ष पर्यंत अप्रसन्नहोकर चुप क्यों रहीं उसने कहा मेरे उदासीन चित्त का यह कारण था कि परमेश्वर ने मुझे तुम्हारी दासीकिया और अपने देशसे इतनादूर फेंका कि वहां जाने की फिर आश नहीं इसके बिशेष अपने माता पिता और भाईबन्धु से बियोग होनेका जो मनुष्य दूसरे का अधीनहो उसकेलिये मृत्यु उत्तमहै यह सबबातें मेरे उदास रहनेकीथीं बादशाहने कहा हे सुन्दरि! जो तुमने कहा सो सत्य है परन्तु जब कि कोई अतिसुन्दर हो और उसकी प्रीति बादशाह के हृदय में पैठे तो चिन्ताकी जगह नहीं उसने कहा ये सब वचन जो आपने मेरे धैर्य के लिये कहे उचित हैं परन्तु बांदी बांदीही है बादशाहने कहा हे मृगनयनी! तुम्हारी वार्ता से प्रतीत होताहै कि तुम किसी बड़े घरानेकी पुत्रीहो मुझे अपना और अपने माता पिताका नाम जिससे तुमसी चन्द्रमुखी मृगनयनी उत्पन्न हुई हालसुनाओ और उनका निवास कहां है उसने कहा साहब मेरानाम गुलअनार आसीन है मेरा पिता आसीननामक नद का बड़ा बादशाहथा उसने मृत्युसमय मेरे सहोदरभ्राता सालक और मेरीमाता को सम्पूर्ण बादशाहत सौंपदी मेरीमाता भी उस नद के किसी बादशाह की बेटीथी हम तीनों अपने राज्यमें आनन्दमंगल से रहतेथे अकस्मात् एकशत्रु मेरेपिता का मरनासुन सकटक हमपर चढ़ा हमारी बादशाहत छीनली मेरा भाई उसका सामना न करसका लाचारहो मुझे और मेरी माता को गुप्त वहांसे लेके निकल आया कई दिन पीछे मेरे भाई ने मुझ को एकांतमें लेजायकहा हम तुमतो आपत्ति में पड़े हैं यदि भाग्य सहायकहो तो मेरीइच्छा है कि किसीयत्नसे वैरीको अपने देशसे निकालें और बादशाहतकरें इससे पहिले तेरा बिवाह करदूं परन्तु मेरी

दृष्टिमें जलबासी कोई शाहज़ादा नहीं जचता यही इच्छा रखताहूं कि तेरा ब्याह किसी पृथ्वीके शाहज़ादे से करूं जहां तू आदरपूर्वक रहे जो कुछ कि तेरे दहेज़ आदिकी आवश्यकहोगी अपनी सामर्थ्य भर तय्यार करदूंगा मैं अपने भाई के मुखसे यह बचनसुन अति अप्रसन्न और महाकोपितहुई और उससे कहा सुनो भाई मैं और तुम दोनों एकही जलनिवासी माता पिताके बीर्यसे उत्पन्नहुये और आजतक कोई शाहज़ादी धरतीके शाहज़ादे से ब्याही न गई मुझे यह बात कब अंगीकार है कि मेरा सम्बन्ध उनसेहो मैं यही चाहती हूं कि तुम्हारी दशामें मैं भी रहूं यदि इससे भी दुःखपड़े तो तुम्हारे साथ प्राण देने को तत्परहूं मेरेभाई ने कहा यह दूसरीबात है परन्तु हे प्यारीवहिन! जो तुम पृथ्वी के बादशाहों से ब्याह करना अंगीकार नहीं करतीं इसका क्या कारण है क्या पृथ्वी के बादशाह सब कमीने और अयोग्यहैं ऐसानहीं जो तुम समझतीहो किन्तु बहुत से उनमें भलेमानस उच्चजाति हैं निदान भाई ने इस विषय में मुझे बहुत समझाया वह मुझे बहुतबुरा मालूमहुआ और मनमें अति क्रोधित होकर उससमय तो चुपहोरही फिर जब मेरा भाई मेरेपास से उठके किसी और कार्य में प्रवृत्तहुआ मैं नद से निकल पृथ्वी पर आई और एकद्वीप में पहुँच किसी ऐसे स्थानपर जहां किसी मनुष्य की आवागमन न थी जाय थककर अचेतहो सोरही मैंने अपनी बहुत रक्षाकी कि कोई मनुष्य मुझतक न पहुँचे परन्तु कुछ लाभकारी न हुआ सो एक प्रतिष्ठित मनुष्य मुझे सोतेदेख अपने सेवकों सहित वहां आया और मुझे उठवाकर अपने महलमें ले गया और मुझे बहुत प्रीतिकर चाहा कि अपनी इच्छा पूर्णकरूं परन्तु मैंने उसकी ओर न देखा जब उसे ज्ञातहुआ कि यह बिनय से न मानेगी तब उसने बरजोरी भोग करना चाहा मैंने उसे इस ढिठाई का ऐसा दण्डदिया जिससे वह लज्जाको प्राप्तभया निदान उसने निराशहो मुझे इस ब्यापारी के साथ बेंचडाला यह ब्यापारी बड़ा भलामानस और सुशीलथा कभी मुझे उससे कष्ट न मिला किन्तु बातचीत भी न हुई इतना कह फिर गुलअनार बोली यदि

आप मुझसे इतनी प्रीति न करते तो मैं तुमसे कदाचित् प्रसन्न न होती और यदि अनीतिमात्र भी मुझसे करते तो मैं उसद्वार से जो समुद्रकी ओर है कूद अपने कुटुम्ब से जामिलती परन्तु एकही चिन्ताथी यदि मेरी माता और भाई को ज्ञात होता कि मैं अमुक बादशाहकी बांदीहुई तो लज्जासे मुझे तुरन्त मार डालते जो मेरे उदरसे पुत्र उत्पन्न होजावे तो निस्सन्देह यहांसे नहीं जासक्की हर दशामें मुझे अपनी दासी जानना परन्तु मेरा सन्मान अपनी स्त्री के सदृशकरना जब गुलअनार ने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त बादशाह से कहसुनाया तो बादशाहने कहा तेरे सुन्दरमुख से अति विचित्र बातें सुनीं जो भलीभांति समझ में नहीं आतीं मुझे इच्छा है कि उन सबको निश्चयकर अपने मनको धैर्यदूं परन्तु प्रथम मैं तुम्हारा गुण मानताहूं क्योंकि मेरी तुमसे अतीव प्रीति प्रतीति हुई और सबसे अधिक मेरेचित्तको यह भरोसाहुआ कि तुमभी अपने देश की शाहज़ादी हो आजसे तुमको मैंने मलका मुल्क ईरानका नाम दिया कल मैं अपने राज्यभरमें डौंड़ी फिराऊंगा कि तुम आगे समुन्दालकी शाहज़ादीथीं और अब ईरानदेश की शाहज़ादीहुई और तुम्हें नित्य आदरकर पूर्व से अधिक तुमसे प्रीति करूंगा और तुम भी सिवाय मेरे और किसीसे प्यार न रखना अब तुम मुझे बताओ कि क्योंकर तुम जलमें रहसक्कीहो और डूबती नहीं पूर्व मैंने सुना था कि मनुष्य जलमें रहते हैं परन्तु बिश्वास न हुआ अब मुझे भलीभांति ज्ञातहुआ कि वह सत्य है यहांतक कि तुम दरियाई परी हो परन्तु आश्चर्यितहूं कि मनुष्य जल में क्योंकर रहते हैं और अपना कामकाज करते हैं शाहज़ादी ने कहा यदि पानी कितनाही गहराहो परन्तु हमारीदृष्टि वैसीही पहुँचती है हम जल में वस्तुओंको दूरसे देखसक्कीहैं समुद्रमें रातदिन समान है जैसा कि हम पृथ्वी में सब वस्तुओंको दूरहों वा निकट देखसक्की हैं तैसाही नीरमेंभी देखती हैं हमें चन्द्रमा सर्वदा जलमें अपना सुन्दर प्रकाश देताहै और हम वहांसे अपरिश्रम तारागण और बृक्षोंको देखसक्की हैं जिस प्रकार धरतीपर देश प्रदेश पुर ग्रामादि हैं उसीभांति हरएक बादशाह

के भिन्न भिन्न हैं किन्तु धरती से तीनहिस्से वहां बस्ती है और प्रतिदेश में बहुतसी बिशाल बस्तियां हैं जैसे कि यहां सब जाति भिन्न भिन्न रहती हैं यही दशा वहांकी भी है और वहांके शाहीमहल अतिबिशाल और सुन्दर संगमरमर के रंगबिरंगे निर्माण किये जाते हैं और उन महलों में सीप, बिल्लौर, मूंगा और अनेक प्रकार के रंगकी मणि जड़ीजाती हैं जलमें रत्न धरतीकी अपेक्षा बहुतहैं और मोती तो असंख्य इतने बड़े बड़े होते जिनका मैं बिचार नहीं कर सक्ती और वहां महल सबलोग बनालेते हैं और आवागमन के निमित्त गाड़ी व सवारी की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह दूर दूर अतिसुगमता से चलेजाते हैं बादशाहलोग दरियाई घोड़े अपने घुड़शाल में अपनी शोभाके लिये रखते हैं जब कभी तमाशा देखने कहीं जाते हैं तो उन्हें मँगालेते हैं वह घोड़े इस सुगमता से जलमें चलते हैं कि सवार हिलताभी नहीं और गाड़ियांभी अतिदृढ़ और उत्तम बनाते हैं उनपर बादशाह तख़्तधर सवारहोते हैं केवल सैन सेही वह गाड़ी जिस ओर चाहैं बिजली और वायुकी सदृश चली जातीहै थोड़ेही कालमें दूसरे नगरको पहुँच उसपर सैरकरते फिरतेहैं वहां की स्त्रियां अत्यन्त सुन्दर और पतिसेवामें चतुरहैं यदि आज्ञा दीजिये तो अपने भाई और माताको जो मेरे देखने के बिना अति शोकयुक्तहैं यहां बुलाऊं कि परस्पर दर्शन लाभ प्राप्तहो जब मैं उन से यह कहूंगी कि मैंने इतने बड़े ईरानके बादशाहके साथ बिवाह किया तब वह अत्यन्त प्रसन्नहोंगे बादशाहने कहा हे मृगनयनी! तुम मेरी प्राणप्यारी हो उनको अतिप्रसन्नता से बुलाओ मैं उनका यथोचित सन्मान करूंगा परन्तु बड़ा आश्चर्य है कि वह यह नहीं जानते कि तुम कहां रहतीहो फिर क्योंकर बुलावोगी गुलअनारने कहा स्वामी इसकी कुछ शङ्कामतकरो क्षणमात्रमें वह सब यहां पहुँचेंगे तुम इस मकानसे उठकर दूसरे मकानमें जाबैठो और किवाड़ मूँद झरोखे से उनके आगमन का तमाशा देखो बादशाह वहांसे उठ दूसरे मकान में गया और द्वारमूंद झरोखे में से देखनेलगा गुलअनार मलकाने अपनी दासीसे अग्नि मँगवाई और कहा तू

बाहरजा किवाड़ मूंदले और जबतक मैं न बुलाऊं मेरे पास न आइयो जब मलका अकेली हुई उसने छोटासा एक संदूकचा खोल एक चन्दनकी लकड़ी का टुकड़ा निकाला और उसे आगपर रक्खा जब उसमें से धुआँ निकला और ऊंचाहुआ तब कोई मंत्र पढ़ने लगी वह शब्द बादशाह न समझता था और हृदय में लालसा रख उधरकोही देखने लगा उस मन्त्र के पूर्ण होतेही नद बढ़ने और उमड़ने लगा बढ़ते बढ़ते उस राजमहल के बराबर पहुँचा कुछ काल में नदका जल फटगया उसमें से एक तरुण सुन्दर पुरुष प्रकट हुआ जिसकी मूछें जल के सदृश हरीथीं फिर एक स्त्री निकली उसके पीछे पांचस्त्रियां यौवनवती निकलीं गुलअनार ने आगे बढ़ उनकी अगवानी की और परस्पर भेंटभई जब जलसे तटपर पहुँचकर गुलअनार निकट पहुँचे तो सुल्तान सालह और उसकी माता और सम्पूर्ण स्त्रियों ने पारी पारीसे गुलअनार मलका को अपने २ कंठसे लगाय नेत्रों से आंसू बहाये उसने भी सबका यथोचित सत्कार कर बैठाया उसकी माता ने कहा हे पुत्री! तुम्हारे देखने से प्रसन्नता प्राप्तहुई जो जो कष्ट कि तुम्हारे बियोग में हुये वह बर्णन नहीं करसक्ती हूं और मैंने तुम्हारे भ्रातासे तुम्हारी अप्रसन्नता और रूठजाने का कारण सुनाथा इससे दुःखहुआ अब बर्णन करो कि तुमपर हांसे आके क्या हुआ और क्योंकर यहां पहुँचीं यह सुनतेही वह अपनी माताके चरणोंपर गिरपड़ी और शिरउठाय कहा बास्तव में मुझसे बड़ा अपराध हुआ उसे दयाकर क्षमाकरो मैं बड़ी बड़ी आपत्ति और दुःखोंको झेल यहां पहुँची जिससे मुझे बिदितहुआ कि वास्तव में पृथ्वी के बादशाह भी समुद्रके बादशाहके तुल्यहैं फिर उसके भ्राता सालहने कहा प्यारी तुम अपने देशको फिरचलो वहां हम तुम पूर्ववत् प्रीतिसे रहेंगे और उसकी माताने भी यही कहा, गुलअनार ने उन दोनोंको उत्तर दिया मैं अब यहांसे क्योंकर जासक्ती हूं प्रथम तो इस बादशाहने मुझे दशहज़ार अशरफ़ीपर मोल लिया फिर मेरी प्रसन्नता के निमित्त अपनी सम्पूर्ण बिवाही हुई स्त्रियोंको परित्याग किया और मुझे अपनी मलका बनाया इसके बिशेष मुझे

उससे चार मास का गर्भ है ईरानका बादशाह उनके निकट बैठाहुआ यह सबबार्ता सुनताथा गुलअनार के लेजाने का हाल सुन बहुत घबराया और मनमें कहनेलगा बड़ा अनर्थ है कि मेरी प्रिया अपनी माता और भाई के साथ चलीजावेगी तो मेराजीना कठिन होगा इतने में गुलअनार शाहज़ादी ने दासियों को बुलाय भोजन मांगा उन्होंने तुरन्तपात्र रख सुन्दर भोजन परसदिये इसके उपरान्त गुल-अनार ने उनको बैठाय भोजन के लिये कहा उन्होंने कहा क्या हम को उचितहै कि ईरान के बादशाह के बिना जिसके घर हम आये हैं भोजनकरें इतने में एकही बेर उनके मुखका लालबर्ण होगया और मुँह और नथुनों से अग्निकी लपटें निकलनेलगीं बादशाह यह चरित्रदेख घबराया इतनेमें गुलअनार उन दोनोंसे आज्ञा पाय अपने पति के समीप आई और कहा तुम्हारे बिना वे भोजन नहीं करते उचित है कि तुमभी वहां चलो और सबसे भेंटकर सुखपूर्वक बैठ भोजन कीजिये यद्यपि मेरे माता और भाई मुझसे कहते हैं कि मेरे साथ फिर अपने देशको सिधारो परन्तु मैं तुमसे ऐसी प्रसन्नहूं कि तुम्हें छोड़ वहां नहीं जासक्ती बादशाहने कहा हे मेरी प्राणप्यारी! मैं तुम्हारे इन सुन्दर बचनोंसे महाप्रसन्न हुआ अब मुझे तुम्हारी ओर से धैर्य हुआ कि तुम्हें मेरी बड़ी प्रीति है और तुम मुझे छोड़ अपने देशको न जाओगी मैंभी तुम्हारी माता और भ्राताके भेंटकी लालसा रखताहूं अब जाके उनके दर्शन करताहूं और उनके साथ भोजन करूंगा परन्तु उनके मुख और नासिका से लपटें निकलते देख भयभीतहूं गुलअनार ने कहा इस बातकी आप चिन्ता न कीजिये यह आग इसहेतु निकलती है वह बिना आपके भोजन करने में अप्रसन्न हैं बादशाहको यह बचन सुन धैर्य हुआ और अपना मन दृढ़कर उसकेसाथ उस मकान में गया गुलअनार ने बादशाहको सबसे मिलवाया उन सबने बादशाह के सन्मान के नि· मित्त अपने शिरोंको पृथ्वी से लगाया बादशाहने तुरन्त दौड़ उन के शिर उठाय पारी २ से सबसे भेंटकी तिस पीछे सब मिलके बैठे सालहने बादशाह से कहा हम आपके सन्मुख अतिप्रसन्नता प्रकट

करते हैं कि मेरी वहिन बहुतसेदुःख सह आपकी छायामें आई और तुमसे बहुत प्रसन्न है परमेश्वर आपका जन्म सफलकरे बादशाहने भी उचित उचित बिनयपूर्वक कोमल बचन कहकर उनका आगत स्वागत कर उन सबको भोजन कराया जब सब भोजनकर निश्चिंत भये तो वार्ता करनेलगे इतने में रात्रिहोगई तब बादशाह ने उन के निमित्त सुन्दर कोमल सेज बिछवाय सुलाय आप उनसे बिदाहो निज केलिगृह में जाय आनन्दपूर्वक सोरहा प्रातःकाल उठ अपने अतिथियों को भलीभांति आदरकर न्योता और इसी प्रकार बहुत दिनोंतक उन सबको अपने देश में रख प्रतिदिवश नवीन प्रकार से मान करतारहा इतने में गुलअनार पूरे दिनों से होकर पीड़ा से बेचैनहुई उसके दूसरे दिन पुत्र उत्पन्न हुआ इसमें बड़ी प्रसन्नता हुई और गुलअनार की माताने अपनी रीति के अनुसार बहुत भारी बहुमूल्य जोड़ा छठीके दिन उस देश और चलनके अनुसार तय्यारकर बादशाह को दिया वह शाहज़ादा कि अति सुन्दर चन्द्रमा के सदृश उत्पन्न हुआ था इसलिये उसका नाम बदर रक्खा गया और महाउत्सव किया और याचक मङ्गनादिकों को असंख्य द्रव्य, भूषण, रत्न, वस्त्र दे अयाचक किया और अपने दरबारवालों को अनेक प्रकार की बिचित्र बस्तु कृपा कीं और सेवक सेनादिको भी बहुमूल्य पारितोषिक आदि दिया और नगर में आज्ञादी कि सब अपने अपने घरों में मंगलाचार मनावें और नृत्यादि देखें कईदिन तक पुरबासियों को बड़ी धूमधाम से न्योता जब सौरके दिन होचुके तो मलकाने स्नानकर बहुत उत्तम चीरपहिरे ईरानका बादशाह और उसकी माता और भ्राता उन पांचों शाहज़ादियों समेत बड़े हर्ष से बदर के देखनेको गये उसे देख अति प्रसन्न हुये तदनन्तर सालह बच्चेको दाईकी गोदसेले अपने कण्ठ से लगाय बहुत प्यार कर उसी मकानमें इधर उधर टहलनेलगा इतने में उसीद्वार से निकल शाहज़ादे समेत नदमें कूदपड़ा ईरानका बादशाह यहहाल देख घबड़ाय रोनेपीटनेलगा और उसे बिश्वास हुआ कि फिर अपने पुत्रको न देखूंगा मलका ने हँसके बादशाह को धैर्य दिया कि आप

भय न कीजिये यह जैसा तुम्हारा पुत्र है तैसाही मेरा देखो मैं तो इसके लिये कुछभी चिन्ता नहीं करती भरोसा रक्खो इसको किसी भांति का डर नहीं इसे मेराभाई जलके भीतर इसीलिये लेगया है कि उसे जल और पृथ्वी पर फिरना बराबर हो जैसा कि हमलोगों को अभ्यास है उसीभांति उसकी माताआदि अन्य स्त्रियों ने भी बादशाह को धैर्यदिया कुछकाल पीछे नदका जल हिलनेलगा और सालह अथाह नीरकी तरंगों में से बदर को ले बाहर निकला और वायुपर उड़ उसी द्वारसे महलमें आया बादशाह अपने बेटेको अपने मामूं की गोदमें आनन्दसे सोते देख अत्यन्त आश्चर्य में हुआ सालहने बादशाहसे पूछा कि हुज़ूर जब मैं अपने भानजेको जलमें लेगया आपको तो कुछ भय न हुआथा बादशाहने कहा कुछ न पूछो मेरी क्या दशाभई अब मेरा उसे देख नयेसिरेसे जन्म भया सालह ने कहा कुछ शोचकी जगह न थी क्योंकि मैंने नदमें उतरने के पहिले हज़रत सुलेमानकी अँगूठीका इस्मआज़म नामक मन्त्र पढ़लिया था हमारी जातिमें यहरीति है जबकोई सन्तान हमारेबीर्य का पृथ्वी पर उत्पन्न होता है तो हम इस्मआज़म उग्रमन्त्र की शक्तिसे उसे जलमें सैर करानेको लेजाते हैं जैसा कि तुमने देखा यहकह उसने शाहज़ादेको दाईको देदिया और एक छोटासा सन्दूक़चा कि उसे शीघ्रता में नदके भीतर से अपने साथले आयाथा खोला और उसमें से सौहीरेके टुकड़े कि प्रत्येक कपोतके अण्डे के तुल्य थे और उतनीही बड़ी बड़ी अति विचित्र मणि और नीलमणि कि प्रत्येक दो तोले तीन माशेकी थीं और नीलमणिकी तीसमाला जिसमें दशदश लड़ी गुहीहुई वह सब बादशाह को भेंटकर कहा मुझे अपनी बहिन का वृत्तान्त मालूम न था कि किस स्थानपर है और किस ऐश्वर्यवान् बादशाह से उसका बिवाह हुआ इसी हेतु ख़ालीहाथ हम आये और यहां तुम्हारे प्रताप और ऐश्वर्य को देख लज्जितहुये कि कौनसी ऐसी वस्तु तुम्हारी भेंटकरें इस निमित्त थोड़े से रत्न यद्यपि वह तुम्हारे योग्य नहीं अपने देशसे ला आपकी भेंट किये सो इस सूक्ष्मबस्तु को हमारी प्रसन्नताके लिये स्वीकार

कीजिये ईरानका बादशाह उन बिचित्र और अनेक भांति के सुन्दर रत्नोंको देख अति आश्चर्यमें हुआ उनमें से दो रत्न तो इतने बड़े थे कि पृथ्वी भर में वैसे नहीं होंगे फिर उसे बड़ेहर्ष से अंगीकारकर शिर नेत्रों से लगाय सालह का बड़ा गुणमाना और कहने लगा मैं तुम्हारी शीलता और बिशेष इस सम्बन्ध से अति हर्षितहूं तुमने मुझे ऐसे बड़े बहुमोल्य रत्न दिये और उन्हें तुच्छ कहते हो भाई यह संदूकचा कई राज्य का मोल होगा फिर उसने अपनी स्त्री से कहा हे मृगनयनी! तुम्हारे भाईने वहरत्न भेंटदिये चाहताहूं कि थोड़े से लूं और शेषलौटादूं परन्तु वह बहुत बिनय करताहै तुम मेरी ओर से उसे समझाओ गुलअनार ने उत्तर दिया हे स्वामिन्! यद्यपि पृथ्वी पर ये बस्तु कमहैं परन्तु समुद्र में कि हरएक स्थानपर रत्नोंकी खानिहैं कुछबस्तु नहीं इसबातका आपकुछ सोच न कीजिये और लेलीजिये बादशाह यह सुन चुपहोरहा कई दिन पीछे सालह ने बादशाहसे कहा हम सब आप के यहां इतने प्रसन्नरहे कि इतना आनन्द और स्थानपर न मिलता परन्तु हमैं यहां आये बहुत दिन बीते वहांका समाचार कुछ ज्ञात नहीं क्योंकि बहुधा नगर में बादशाह के न होनेसे प्रबन्ध में उलट पलट होजाते हैं इसहेतु आपसे बिनती करतेहैं यदि आपकी इच्छाहो तो हम सब तुमसे और अपनी बहिन से बिदाहो अपने देशको सिधारें बादशाहने लाचारीसे अंगीकारकर कहा यद्यपि हम लाचारीसे तुम्हें बिदाकरतेहैं परन्तु गुलअनार और बदरको मतभूलना और कभी कभी उनके देखनेके लिये आना और मुझे भी अपना दर्शनदे कृतार्थ करतेरहना सालह बादशाहसे बिदा हो समन्दाल देशको सिधारा और ज्यों ज्यों बदर बढ़ता त्यों त्यों उस के माता पिता प्रसन्नहोते कभी कभी सालह और उसकी माता उस के देखने को आते जब बदर पढ़ने लिखने योग्य हुआ थोड़ेही काल में सम्पूर्ण बिद्या और गुणों में निपुण हुआ और पन्द्रह बर्षकी आयु में जब अतिकुशल बुद्धि हुआ तो उसके पिताने उसे अपना क़ायम मुक़ाम करके और ब्यवस्थादि कार्य उसे सौंपे उसने अपनी नीतिसे प्रजाको बहुत प्रसन्नरक्खा प्रत्येक बिषय को भलीभांति समझता

और सुनता और उसका उत्तर यथार्थ देता और किसी से अहंकार न करता जब बादशाहने अपने शाहज़ादेको प्रत्येक विषय में अति कुशल देखा तो ताज बादशाही अपने शीशसे उतार उसके मस्तक पर धारणकिया फिर उसके हाथ चूमें क्योंकि यह सूचितहै कि सब बादशाही प्रवन्ध इन्हीं हाथोंसे भुगतेंगे और बादशाह तख़्त के नीचे कि वह आसन वज़ीर और अमीरों था बैठा फिर सब वज़ीर और सभा जो सेना और देशके प्रवन्धक थे नवीन बादशाह को भेंट देनेलगे और पूर्ववत् उसकी आज्ञा पालनेलगे जब इन सब कामों से निश्चिन्तहुआ वज़ीर राज्यके प्रवन्ध और व्यवस्था उसके सन्मुख लाया उसने भलीभांति उन्हें भुगताया जिसे सब देखके आश्चर्यित हुये और थोड़ेही कालमें शाहज़ादेने अपनी सल्तनतका ऐसा प्रवन्ध किया कि हरएकको पसन्द आया और उस की तीव्र बुद्धिपर धन्य धन्य करने लगे जब वह यह सब कार्य कर निश्चिंत भया पिताकेसाथ अपनी माताके निकट आया उसकी माता उसका शीश मुकुटसे सुशोभित देख दौड़ी और अपने कण्ठ से लगाय हर्षितहुई दोवर्ष में उसका पिता उसे सब प्रकारसे चतुरपाकर नगरके बाहरजाय ईश्वरका आराधन करनेलगा बदर प्रायः अहेर खेलता और देश देश ग्राम ग्राम घूमता प्रत्येक विषय को निश्चयकर उसका उपाय करता निदान इसी प्रवन्ध में बदर का पिता रोगयुक्त हुआ और दिन २ उसका रोग बढ़ता गया निदान जब अपने जीवन से निराश हुआ तो वज़ीर और प्रधानों को बुलाकर बादशाह बदर की प्रतिज्ञा प्रतिपालन के लिये प्रतिज्ञा लेली और इस संसार असार से परमधाम को सिधारा यह दशा देख बदर और गुलअनार रोने पीटनेलगे और बड़े ठाटसे अर्थी निकाल उसे गाड़ा बदर एक पूर्ण वर्ष अपने पिताके शोकमें दिनरात रुदन करतारहा इतने में सालह और गुलअनार की माता वहां पहुँचीं और अनेक भांति के गुण बखान रोने लगीं जब निश्चिंत हुये तो सालहने एकदिन अपनी बहिन गुलअनारसे कहा आश्चर्य है कि तुमको अबतक बदर के विवाहका सोचनहीं यदि तुम्हारी इच्छाहो तो मैं एक शाहज़ादी

अपने देशों में से जो रूप अनूप में बदरके तुल्यहो ढूंढूं मलका ने उत्तरदिया अबतक मुझे इस बातका कुछ सोच न था क्योंकि मैंने अबतक उसकी रुचि इस बिषयमें न पाई थी और मैं बहुत खुशहोंगी जो कोई समुद्रकी शाहज़ादी से सम्बन्ध हो यदि तुम्हारे बिचार में कोईहो तो मुझेभी ज्ञात करना तुम्हारी कृपासे आशाहै कि तुम कोई ऐसी स्त्री उसके निमित्त ढूंढ़ोगे कि जिसे बदर देख मोहित होगा सालह ने कहा मैं तुम से एक शाहज़ादी का बृत्तान्त बर्णन करूंगा परन्तु जिससमय बदर अचेत सोजावेगा गुलअनारने बदर को बहुत कालसे चुपदेख जाना कि वह सोताहै और बदर शाहज़ादी का हाल सुन अनुकरण निद्राबशहुआ और अपनाध्यान उनकी बार्तापर रक्खा गुलअनार ने सालह से कहा भाई तुम निश्शंक उस शाहज़ादी का हाल बर्णनकरो बदर अचेत सोता है सालह ने कहा इसबिषय में रक्षा अवश्य चाहिये ऐसा न हो कि बदर उसके रूपकी प्रशंसा सुन मोहित होजावे और उसके वास्ते सर्बस्व त्याग बिचारे उस शाहज़ादी के पिता का बृत्तांत तुम्हें ज्ञात है वह अहङ्कार से किसी बादशाह और शाहज़ादे को चाहा पृथ्वीकाहो वा जलबासी अपने बराबर नहीं समझता ईश्वर जाने माने वा न माने परंतु बदर उसके मोहमें अपना प्राणदेगा केवल तुमसे उसका और उस के पिताका नाम बर्णन करताहूं उस शाहज़ादीका नाम जवाहर है और उसके पिताकानाम सुल्तानसमन्दाल गुलअनार ने कहा क्या भाई अभीतक कहीं जवाहर शाहज़ादी ब्याही नहीं गई मैंने उसे अपने यहां आने के पहिले देखा था उस समय वह आठमहीनेकी थी वास्तव में उस समय में उसकी सुन्दरता बिख्यात थी जो कोई उसे देखता प्रसन्नहोता अबतो तरुण अवस्था में उसका औरही यौवन होगया होगा इस संसार में वह अद्वितीय है वह निस्संदेह मेरे पुत्र बदर से बड़ी है और मैं आश्चर्यितहूं कि तुम्हें उसके मांगने में क्या परिश्रम है सालह ने कहा समन्दाल ऐसा अहङ्कारी है कि किसी बादशाह को अपने समान नहीं समझता मैं नहीं जानता वह इस सम्बन्ध को स्वीकार करे वा नहीं अब मैं अपने भानजे के

निमित्त उससे प्रार्थना करूंगा परन्तु चैतन्य रह जबतक मैं लड़की के पिताको प्रसन्न न करलूं तबतक इस बृत्तांत को बदर न सुनने पावे ऐसा न हो जो बदर उसका बखान सुन मोहित होकर अपना प्राण त्यागदे इसीभांति वह दोनों बहिन भाई बहुकाल पर्यंत बार्ता किया किये अन्तको यह बात ठहरी कि सालह तुरन्त अपने देश को जावे और समन्दाल बादशाह से जाय बिवाह का नेग दे सालहको परिपूर्ण बिश्वासथा कि बदर अचेत सोता है वह दोनों यही बार्ताकर चले गये और बदर ने चुपके २ वहीं बार्ता सुनी और जवाहर शाहज़ादीकी मूर्ति जो उन्होंने निकालकर देखीथी देख उस पर मोहित हुआ उस रात्रि तो उसी मूर्तिके स्मरणमें अधीरहो लोटा किया और प्रातकोभी उसीके बिचारमें उठा और खानापीना बोलना चालना तजदिया जब सालह अपनी बहिनसे बिदा होनेको आया तब बदरकी आक्रांति बदली देख कारण पूछा उसने अपने मुख्य अभिप्रायको छिपाकर कहा मेराजी यहां बहुत घबड़ाताहै मुझे आप अपने साथ रखिये और अपने देशजानेकी इच्छा न कीजिये मेरी इच्छाहै कि दोतीनदिनके लिये आपके साथ अहेर खेलनेजाऊं और मनमें यह बिचारा कि इसी बहानेसे अपने मामूं के साथ अपनी प्रिया के ढूंढ़ने के लिये यहांसे निकलजाऊंगा। इस बातको अपनी माता से गुप्तरक्खा क्योंकि वह कदाचित् मेरा बियोग न सहेगी और मुझे न जाने देगी प्रकट में अपनी माता से अहेर खेलने की आज्ञा ली और अहेरकी सामग्री ले सालह के साथ एकओरको चला यहांतक कि एकदिन मृगके पीछे घोड़ा दौड़ाते बिछुड़गये उस समय कोई सेवक बदरके पास न था वह थकितहो अपने घोड़ेसे उतरा और घोड़े को किसी बृक्षसे बांध एक नदी के तीर सघनबृक्षोंकी शीतल छायामें हरी २ घास पर बैठगया और हाहा खाय अपनी प्यारीके ध्यानमें रोनेलगा बहुकालपर्यंत उसी दशा में बैठारहा उधर सालह उसे न देख घबड़ाया और सेनासे पूछा कि वह कहांहै कोई न कहसका कि वह कहांगया सो वह आपही उसके ढूंढ़ने को निकला वहांपहुँच दूर से क्या देखताहै कि वह अपनी प्रियाके बिरहकी तपनि में तप धाड़ें

मारमार रोरहाहै तब उसे बिश्वासहुआ निस्संदेह उसने जवाहर शाहज़ादी का बृत्तान्त सुनाहोगा और उसी के बियोगमें बिकलहै सो अपने घोड़ेसे उतर और उसे रूखमें बांध धीरेधीरे उसकी आड़ में आय खड़ाहो सुनने लगा कि वह इन बातोंको कहरहाथा हे मेरी प्राणप्रिया समंदालकी पुत्री! तुम्हारी मूर्तिको देख मेरी यह दुर्दशा भई मुझे बिश्वास है कि तुम संसारकी सकल शाहज़ादियों किंतु चन्द्रमासे भी अधिक सुन्दरहो मैंने अपना मन तुम्हारे अर्पण किया परंतु आश्चर्यितहूं कि तुम्हें कहां जाके ढूंढूं सालहको इससे अधिक सुननेकी शक्ति न रही और आगेजाय उसके पासबैठ कहा मुझे निस्संदेह बिदित हुआ तुमने हम दोनों बहिन भाईकी बार्ता सुनी होगी हमारी रक्षा कुछकाम न आई बदर ने कहा कि मामूंसाहब मैंने आपकी सब बातें सुनी जो होनाथा सो हुआ यदि आपको मेरेप्राण प्यारे हैं तो तुम मेरे बिवाह का नेग उसके पिताको देकर प्रसन्नकरो सालहने उसे धैर्यदिया कि तुम अब नगरको चलो मैं अब इसी कार्यके साधने के लिये समन्दाल देशको जाता हूँ बदरने कहा तुम्हें मेरीप्रीति होती तो तुम मुझे इसदशामें अकेला छोड़ न जाते यदि मुझे हृदयसे प्यारकरतेहो तो मुझे अपनेसाथ उधर लेचलो उसने कहा तुम्हारी माताकी आज्ञाबिना मैं क्योंकर तुम्हें लेजासक्ता हूं बदर ने कहा तुम भलीभांति जानते हो कि मेरी माता काहे को प्रसन्नता से जानेकी आज्ञा देगी क्योंकि वह मुझे प्राणसे अधिक प्यार करतीहै सालहने अपनी अँगुलीसे एक अँगूठी जिसपर इस्म-आज़म नामक यंत्र लिखाथा उतार उसे देकर कहा तू इसे अपनी अँगुलीमें पहिन और निश्शंक जलमें चलेजाइयो ज़ब बदरने उसे पहिंचाना तो सालहने उससेकहा अब जो कुछ मैं करूं तू भी उसे निस्संदेह कीजियो सो वह दोनों बायुपर उड़े और समुद्रके तीर प-हुँचे उससे उतर जलमें चलने लगे कुछ काल में वह दोनों समुद्र की बस्ती में पहुँचे सालह बदर को अपनी माताके समीप लेगया बदर ने अपनी माई को देख हाथ चूंबे और परस्पर देख हर्षितहुये फिर सालह की माता ने उस की कुशल पूछ उसे प्यार किया फिर

उस ने और स्त्रियों से बदर को मिलवाया बदर उन से बार्ता करने लगा इतने में सालहने सावकाश पाय अपनी माता से एकान्त में बदरके समन्दाल बादशाह की शाहज़ादी पर मोहित होने का बृत्तान्त कह सुनाया और कहा अब मैं समन्दाल देश को जाताहूं और वहां पहुँच बादशाह को बदर के बिवाह के निमित्त नेगदूंगा यद्यपि सालह इस बिषय में निपट निर्दोष था और उसने यथा-शक्ति बहुत रक्षाकी थी कि जवाहर का हाल बदर को बिदित न हो परन्तु उसकी माता ने उससे अतिप्रसन्नहो कहा तू नहीं जानता था कि समन्दाल महाअहंकारी है जो तूने उसकी पुत्री का बर्णन किया और बदर को उसके मोह में फँसाया सालह ने कहा जो बदर जवाहर पर इतना मोहित रहा और किसी उपायसे भी जवाहर के साथ उसका बिवाह न भया तो वह निस्सन्देह देह त्यागदेगा और मैं यथाशक्ति इस बिषय में परिश्रम करूंगा मैं समन्दाल को जाय बिवाह का नेग बादशाहको पहुँचाऊँगा परन्तु पहिले उसे बहुमौल्य रत्न भेंट दूंगा मुझे बिश्वास है कि वह ऐसेबड़े बादशाह को अ-वश्य अपनी पुत्री देदेगा माता ने कहा इससे क्या उत्तम परंतु उसके अहंकार का भय है समझ बूझके इस बिषय में बार्ता करना और बदरको मेरेही निकट छोड़जाओ यह कह उसने अपने पास से बहुत से रत्न, हीरे, मणि, नीलमणि आदि की अतिउज्ज्वल माला निकालीं और उनको दिव्य सन्दूक़चे में रख सालह से कहा कि यह पहिले भेंटदेकर अपना मनोरथ बर्णनकीजियो उसने वह सन्दूक़चा अपने साथलिया और अपनी सेना समेत माता और भा-नजे से बिदा भया और तुरन्त ही समन्दाल देशमें पहुँच बादशाह के समीप गया बादशाह ने उसका बड़ा सन्मान किया और तख़्तसे उठ सालह से भेंट की और अपने निकट बैठने को कहा सालह दण्डवत् कर उसके निकट बैठगया फिर समन्दाल ने उसकी कुशल पूछ कहा यदि कोई कार्य तुम्हारा इस रियासत से सम्बन्धित हो तो कहो मैं उसे शिरआँखों से पूराकरूंगा सालहने कहा मैं आपसे भेंट करने आयाहूं इसके बिशेष एक और भी प्रयोजन है यदि आप

भली भांति ध्यानधर उसे सुनें तो मैं बिनयकरूं इतना कह उसने अपने सेवक से मालाओं का सन्दूकचा ले भेंटकर कहा यह भेंट मित्रता से स्वीकारकीजिये बादशाह समन्दाल ने मलिकसालहकी खातिर से उसे क़बूल किया मलिकसालह समन्दाल को प्रसन्नता पूर्वक देख बहुत सी प्रशंसाकर अपना मनोरथ इस भांति कहने लगा कि मैं आपकी कृपा और मित्रवत् दया जो हमेशा से हम दोनों बादशाहों में प्राचीन से चली आई है समझ और निश्शंकहो अपने मनोरथके प्रकट करनेको आयाहूं कि आपके अति उज्ज्वल दर्पणरूपी मनपर प्रकटहो कि मेरी बहिन गुलअनार नाम एक बड़े ईरान के बादशाहके साथ बिवाही गईथी उसके उदरसे एक कुँवर उत्पन्न हुआ शाहज़ादा सौन्दर्य में अद्वितीय और बिद्यारूपी भूषणसे भी ऐसा अलंकृत है कि इस समय के बुधजन उसके सामने कुछ बस्तु नहीं उसके पिताने चौदह बर्षकी आयुमें उसे तख़्त पर बैठाय राजकाज सौंपा ईश्वरकी दया से वह बिवाहने योग्य हुआ इसहेतु आपसे बिनयहै कि उस शाहज़ादेको अपनापुत्र बनाय जवाहर अपनी कुँवरिं का बिवाह उसके साथ करदीजिये समन्दालदेश का बादशाह इस बातको सुनतेही महाअप्रसन्नहो कहने लगा हे सालह! आज तक मैं तुझे बड़ा बुद्धिमान् और चतुर समझता था आज तुम्हारी चतुरता कहां जातीरही कि ऐसे अनुचित बचन कहने लगे और मेरीपुत्रीका नाम निश्शंक मुखपरलिया क्या तुम मेरे ऐश्वर्य को नहींजानते इनदोनों राज्यमें बड़ा अन्तरहै परंतु तुम्हारी मृत्यु यहां लाई सालह यह सुन बहुत पछताया कि मैंने अपने वास्ते शाहज़ादी जवाहरका नेग तो नहींदिया यह बादशाह यही समझता होगा सो उसने कहा आप समझे होंगे कि मैंने अपने लिये कहा हे बादशाह! मैंने अपने भानजे बदरनामक ईरानके बादशाह के हेतु नेग दिया बादशाह समन्दाल ने अधिक अप्रसन्नहो कहा तुमने मुझे और गाली चढ़ाई फिर तो वह महाकोपितहो कहने लगा हे दुष्ट! तूने मेरी पुत्री को गुलअनारके पुत्र बदरके बराबर समझा तेरा पिता कौन था तेरी बहिन क्या बलाहै और तेरा भानजा क्या

बस्तुहै निदान उसने अपने सेवकों से कहा इसका शीशकाट फेंकदो उसके सेवकों ने सालह को बध करनाचाहा सालह अवकाशपा अपनी सेनासे जो एक हज़ारके अनुमान शस्त्रसहित खड़ीथी और भी उसकी माताके भेजेहुये कटक में जो वहां पहुँचाथा जामिला उन्होंने उसे बिकल देखकहा कुशल तो है हमें आप आज्ञामात्र दीजिये फिर देखिये हम क्याकरतेहैं सालह को उस सेनाके आजाने से सामर्थ्यहुई और उनको साथले चढ़आया तहां महासंग्रामभया निदान समन्दालका बादशाह पराम्त भया सो सालहने समन्दाल बादशाहको क़ैदकरलिया और थोड़े से लोग वहीं छोड़ आप सेना समेत उसके महलमें चढ़गया इस इच्छा से कि उसकी पुत्री को पकड़लेजावे जवाहर उसके आगमनका समाचार सुन कई बाँदियों समेत समुद्रसे निकल किसी द्वीपकी ओर चली और वहां पहुँच किसी बनमें जाछिपी॥ कई सेवकों ने बार्ता में समन्दालको क्रोधित देख सालहके मारडालने का समाचार उसकी माता से जाय कहा वह यह सुन अतिकष्टको प्राप्तभई और बदरभी उस समय नानी के समीप विद्यमानथा इसहाल को सुन अपने मनमें चिन्ता करने लगा कि बड़ा खेद है जो मेरे कारण सालह पर यह कष्टहुआ नानी मेरा आना कुलक्षण समझेगी अब तेरा रहना यहां किसी भांति उचित नहीं यह बिचार अकस्मात् समुद्र से निकल ईरान को सिधारा परन्तु मार्ग न जानताथा भूलकर उसी टापूमें जहां जवाहर शाहज़ादी जाके छिपीथी पहुँचा और थकितहो एक बड़ेबृक्षके नीचे जिस के चहुँओर बहुत से दिव्य तरुथे बैठगया इतने में मनुष्यों का शब्द सुनाई दिया कान लगाके सुननेलगा पर भलीभांति न सुनसका निदान चुपके उठ दबेपाँवों वहां गया जहां से शब्द सुनाई देता था वहां जवाहर शाहज़ादी को बैठेहुये देख मोहितहुआ और जाना कि निस्सन्देह वह यही स्त्री है जिसपर मैं मोहितहूं सो बदर ने उसके सन्मुखजाय कहा परमेश्वरका धन्यबाद है जिसने तुम्हारे दर्शन से मुझे कृतार्थ किया ऐसे समयमें मुझे आज्ञाहो तो मैं तुम्हारे निकटरह हरभांति से आपकी सेवाकरूं दयाकर मुझे अपना

नाम बतलाइये उसने कहा तुम सत्य कहतेहो अवश्यहै कि एकम-
नुष्य तुम्हारे सदृश मेरी सहायताकरे मेरानाम जवाहर है और मैं
समन्दाल बादशाह की पुत्रीहूं अपने महल में आनन्दपूर्वक थी
अकस्मात् शोर सुना और उसके साथही मनुष्यों ने आकेकहा कि
सालह बादशाहने मेरे पिताको क़ैदकिया इसका कारण मैं नहीं
जानती मैं यह दशा देख यहां आय छिपगई बदरने सोचे बिना
अपनावृत्तान्त उससे बर्णन किया और कहा मेरानाम बदरहै मैं ई-
रानके बादशाहका पुत्रहूं और सालह बादशाह मेरा मामा है उसने
उसे इसी बातके लिये क़ैद किया कि तुम्हारा बिवाह मेरेसाथकरदे
जब तेरे पिताने यह बात न मानके मेरे मामा के बधकी आज्ञादी
तो दैवयोगसे उसकी सेना वहां पहुँचगई और तेरेपिताको क़ैद
करलिया अब तुम धैर्यरक्खो मैं परस्पर मिलाप कराढूंगा सालह
बादशाहको केवल यही इच्छा है कि तेरा पिता मेरेसाथ तेरा बिवाह
करदे फिर वह किसी भांतिका तुम्हें कष्ट न देगा जवाहर उसके म-
धुर बचन और रूपअनूपको देख मोहित हुई परन्तु जब उसे बि-
दितहुआ कि इसीके कारण यह आपत्तिपड़ी तब उसे अपना शत्रु
समझ प्रकट में उससे प्रीतिपूर्वककहा हे बदर मलका गुलअनार
के पुत्र ! मैं तुझेदेख हर्षित भई वास्तव में यही उचित है कि तेरे
साथ मेरा बिवाहहो परन्तु मेरे पिताने न माना बड़ी भूलकी यदि
वह तुझे देखता तो बिश्वासथा कि वह इस सम्बन्धको अवश्य मा-
नता और बड़े हर्ष से तेरा विवाह मेरेसाथ करदेता यह कह जवा-
हर ने प्रीति से अपना हाथ आगे बढ़ाया बदरने इस बात से महा
प्रसन्नहो अपना हाथ बढ़ाके चाहा कि उसका हाथ पकड़ के चूंबे
जवाहर ने तुरन्त अपना हाथ खींचलिया और बदर के मुख पर
थूकदिया कि मन्त्रके हेतु किसीप्रकार का जल होना चाहिये और
कहा हे दुष्ट ! यह चोलाछोड़ लालपीठ और चरण का पक्षी बनजा
बदर अपना शरीर छोड़ बिचित्रपक्षी बनगया फिर जवाहर ने एक
बाँदी से कहा इस पक्षीको निर्जल द्वीपमें लेजाकर छोड़दे वह टापू
केवलएकपहाड़था जिसमें नीरका चिह्न भी न था वह दासी उस पक्षी

चित्र बदर का समुद्र से निकलना और गाय और खेसरों को रोकना

को पकड़लेचली मार्ग में उसे बदरपर दया उपजी और अपने मन में चिन्तनाकी कि यह शाहज़ादा बड़े लाड़प्यार में रहा उस द्वीपमें बिना अन्नजल के मरके रहजावेगा और यह शाहज़ादी कि अति दयावान्है यद्यपि उसने कोपमें इसे पक्षी बनाया जब शांतहोगी तो पछतावेगी उत्तम है कि इसे ऐसे स्थान पर छोड़ूं जिससे इसकी अकालमृत्यु न हो वह दासी तो उसे किसी अच्छे द्वीपमें छोड़ आई जहां नानाप्रकार के सकलबृक्ष और स्थान स्थानपर सुन्दर कुण्ड थे अब यहां से सालहका बृत्तान्त सुनो उसके प्रधानों ने जवाहर राजपुत्री को बहुतही ढूंढ़ा परन्तु जवाहर को न पाया निदान आज्ञा दी कि समन्दाल को उसी बन्दीघर में बड़ा कष्टदो एक मनुष्य उसके ख़बरलेने को नियतकर आप अपनी माताके समीप आया और सम्पूर्ण ब्यवस्था कह सुनाई जब उसे बिदितहुआ कि बदर किसी ओर को निकल गया तब घबड़ाके उसका बृत्तान्त पूछने लगा उसकी माताने कहा जब मैंने समन्दालके कोपका हाल सुना तो यहां से दूसरीसेना भेजी तभीसे बदर न जानिये कहां चलागया उसका समाचार कुछ भी बिदित नहीं तुम्हारे परास्त होने को सुन घबड़ाया होगा और अपने बचाने को किसी ओर चलागया यह सुन सालह महाशोकयुक्त भया कि मैंने जिसकी प्रसन्नता के लिये यह सब दुःखउठाये वही हमारे हाथसे जाता रहा अपनी बहिनको क्या मुख दिखाऊंगा फिर अपने प्रधानों को बदरके ढूंढ़ने के लिये भेजा परन्तु कहीं उसका ठिकाना न लगा तब सालह अतिचिंतित हो अपने राज्यको अपनी माताको सौंप आपही समन्दाल देशको बदरके ढूंढ़ने को गया उसी दिन गुलअनार अपने देशसे अपनी माताके निकट आई उसके आगमनका यह कारणथा कि जिसदिन बदर अहेरकोगया और रातको फिर न आया तो समझी कि किसी मृगका पीछा करते दूर निकलगयेहोंगे इसहेतु उन्हें लौट आने में देरी हुई परन्तु जब वह कई दिनतक न आये तो अतिचिन्ताकर उन लोगोंसे जो सालह और बदरके साथ गयेथे उन दोनोंका हाल पूछा उन्होंने कहा उन दोनों ने एक मृगके पीछे ऐसा घोड़ादौड़ाया

कि हमारी दृष्टिसे लुप्त होगये हमने कई दिनतक बन बन और प-
हाड़ पहाड़ उन्हें ढूंढ़ा कहीं उनको न पाया परन्तु उन दोनोंकी स-
वारीके घोड़े निस्सन्देह हमको मिले वह बृक्षसे बँधेहुयेथे गुलअनार
ने धैर्य धर मनमें कहा कि मामूं भानजे दोनों समुद्रमें पैठगये होंगे
फिर उन्हें आज्ञादी अब तुम उसी स्थानपर जाय भलीभांति ढूंढ़ो
और आप अपनी दासियों की अज्ञानतासे समुद्रमें कूदपड़ी और
अपने इस सन्देहके मिटाने को कि सालह उसे अपने साथ समुद्र
में लेगया वा नहीं थोड़ेही कालमें अपने नैहरमें पहुँची प्रथम दे-
हली में माता उसे देख प्रसन्न भई फिर उससे कहा तुम अपने पुत्र
का हाल पूछने यहां आई होगी उसका समाचार तुमसे क्या कहें
प्रथम जब बद्र अपने मामाकेसाथ यहांआया तो मैं उसे देख महा-
प्रसन्न भई परन्तु जब सालहने समन्दाल बादशाहके निकटजाय
बिवाहका नेगदिया तब उस बादशाहने अप्रसन्नहो सालहको बध
करना चाहा सो उसके आदमियों ने आके यह सब मुझसे कहा
मैंने तुरन्त और बहुतसी सेना उसके समीप भेजी सो सालहने
उसे पराास्तकिया परन्तु बद्र अपने मामूं की पराजय सुन वहां से
किसी ओर निकलगया और सालह समन्दालको क़ैदकर मेरे नि-
कट आया जब उसने अपने भानजेके गुम होजाने को सुना फिर
उसके ढूंढ़नेको समन्दाल देशमें चलागया रानी गुलअनार अपने
पुत्रके चलेजानेको सुन बहुतरोई और सालहको बुराभला कहने
लगी उसकी माताने कहा वास्तव में उसने बड़ा अपराध किया कि
जवाहर के बर्णन में उसने रक्षा न की परन्तु मुझे बिश्वास है कि
तेरा पुत्र तुझे शीघ्रही आन मिलेगा धैर्यरक्खो और उसके देशकी
रक्षाकरो तुम्हारा वहां होना अवश्य है गुलअनार अपनी माताकी
आज्ञानुसार उससे बिदाहो ईरान देशमें गई और उन्हीं प्रधानोंको
जिन्हें बद्रके ढूंढ़नेके निमित्त फिर भेजाथा बुलवालिया और कहा
मुझे मेरे पुत्रका हाल मालूमहै वह यहां शीघ्रही आया चाहता है
फिर आज्ञा दी कि तुम इसी समाचारको राज्यभर में बिख्यातकरो
राजमन्त्री और सभासद् यह बृत्तान्त सुन अत्यन्त प्रसन्न हुये और

आनन्दपूर्वक अपने अपने सम्बन्धित कार्य में लगे॥ अब यहांसे फिर बादशाह बदरका हाल लिखाजाता है जब जवाहरकी दासी बदरको पक्षीकी योनिमें टापूमें लेजाय छोड़आई तो वह अपनेको पक्षी के शरीर में देख महाविस्मित भया कुछ न जानता था कि मैं कहांहूं और ईरानदेश किस ओर है और पङ्खोंमें इतनी सामर्थ्य न थी कि अपने राज्य में पहुँचे परन्तु जो उसे और आपदा भोगनी थी सो वह बिचारा और पक्षियोंके सदृश उसीद्वीपके खेतोंमें बैठकर चुगता फिरता और रात्रिको ऊंचे वृक्षोंपर जाबैठता कईदिनपीछे एक चिड़ीमार अपना जाललिये उसी खेतकी ओरचलाजहां शाहज़ादा बदर पक्षियों के साथ बैठाहुआ खेतमें चुगताथा उसपक्षीको नवीन प्रकारका देख आश्चर्यकर मन में कहनेलगा मेराजन्म इसीकार्य में बीता परन्तु आजतक ऐसा सुन्दर पक्षी नहीं देखा सो जालबिछाय उसे और पक्षियोंके साथ पकड़ा और उसेदेख पिंजड़ेमें रख नगरकी ओर लेगया जब वह चौकमें पहुँचा पुरवासी ऐसा नवीनपक्षीदेख उस चिड़ीमार के चहुंओर एकत्र हुये सो उनमें से एक मनुष्यने उसका मोलपूछा उसने उत्तर दिया भाई पक्षीलेकर क्याकरोगे उसने कहा हम इसे भूनकरखावेंगे चिड़ीमार ने कहा तुम इसका मोल कहांतक दोगे बहुत एकरुपया वा एक अशरफ़ी मैं इतने मोलपर इसे न बेचूंगा मैंने जन्मभरमें ऐसासुन्दर पक्षीनहींदेखा मैं इसे बादशाहकी भेंटदूंगा विश्वासहै कि वह इसे देख प्रसन्नहोगा और मुझे पारितोषिक कृपाकरेगा यह कह वह बादशाह की डेवढ़ीपर गया अकस्मात् बादशाह झरोखे पर बैठाहुआ बाज़ारकी सकल बस्तु देखताथा संयोगसे उसकी दृष्टि उसीपक्षीपर पड़ी उसने ऐसा सुन्दर पक्षी न देखाथा उसे देख प्रसन्नभया और एकसेवकसे कहा कि इस पक्षीको मोलला सेवकने आय उससे उसका मोलपूछा उसने कहा मैं इसे बादशाहकी भेंटदेनेको बहुतदूरसे लायाहूं सेवकने कहा मैं भी बादशाहकी आज्ञासे इसे लेनेआयाहूं तब उसचिड़ीमार ने पिंजड़ापक्षीका उसेदिया वह सेवक पिंजड़ा बादशाहके निकट लेगया बादशाहने प्रसन्नहोय दश अशरफ़ियां उसेदिलवा बिदाकिया और

आज्ञादी कि इसपक्षीको स्वर्णकेपिंजड़े में रक्खो और अन्नजलकी कुल्हियां जवाहिरात की बनाओ उससमय तो बादशाह सवारहो कहीं चलागया जब वहां से लौटआया तो पिंजड़ा अपने सन्मुख मँगवाया और उसपक्षीको पिंजड़ेसे निकाल अपने हाथपर बैठाय सेवक से पूछा इसने कुछ अन्नजल खाया उसने बिनयकी कि अन्न जल सब बर्तमान है इसने कुछभी इसमें से नहींखाया बादशाह ने यह सुन अनेकप्रकारके भोजन लगवादिये और उस पक्षीको थालियोंपर लेजाके बैठाया वह पक्षी बादशाहके हाथ से कूद वहां जा बैठा और हरएक रिकाबीसे कूदकूद खानेलगा बादशाह यह देख अचंभितहुआ और सेवकसे कहा मलकाको बुला ला कि वह भी इस पक्षी का चरित्र देखे उसने जाय मलका से कहा वह तुरन्त बादशाह के सन्मुखआई और उस पक्षीको देखतेही अपना मुख ढांपलिया बादशाहने अतिआश्चर्यमान पूछा हे सुन्दरी! यहां कौन परपुरुष है जिससे तुमने अपना मुख छिपाया यहां केवल पक्षी है वा मैंहूं वा तुम्हारी दासियां वा एक सेवक मलका ने कहा यह पक्षी वास्तव में पक्षीनहीं यह बदरनामक गुलअनार जो शाहज़ादी दरियाई देशोंकी बिख्यात है उसकापुत्र ईरान महादेशका बादशाह है और शनफ़र्शीका नवासा जो अमुकदरियाकी शाहज़ादी है और इसे समन्दालदेशकी शाहजादी ने कोप से पक्षी बनाया फिर कहने लगी स्त्रियोंको परमेश्वर ने परदा करने की आज्ञादी है इसनिमित्त मैंने अपनामुख इससे छिपाया, बादशाह बिचारे बदरकी यहदुर्दशा सुन ब्यथितभये और शाहज़ादीसे कहा किसीउपायसे यह बादशाह अपनी निजयोनि प्राप्तकरसक्ता है उसनेकहा यह कितनी बड़ीबात है आप दूसरे स्थानपर पक्षी समेत जाइये मैं उसे क्षणभरमें उसके मुख्यस्वरूपमें लादेतीहूं बादशाह उसपक्षीको लियेहुये दूसरेस्थान में गया, शाहज़ादी ने एक जलका पात्रले उसपर कुछमन्त्रके शब्द पढ़े इतने में वह जल खौलनेलगा सो उसमें से थोड़ासा जल ले बादशाहको दिया उसने उसके कहने से उसपक्षीपर छिड़क दिया और यहकहा कि इसीमन्त्र को शक्ति और उस संसारके रचनेवालेकी

आज्ञानुसार यह पक्षीकी योनिछोड़ अपनीयोनिमेंआ,इसशब्दके पूर्ण होतेही वह अपनी योनिको प्राप्तभया बादशाहभी अतिसुन्दर पुरुष को जिसके माथेसे बादशाही चिह्न प्रतीतहोतेथे देख आश्चर्य में होय महाप्रसन्नभया और बदरभी अपने को अपने स्वरूप में देख उस बादशाह के चरणोंपर गिरपड़ा और ईश्वरका धन्यवाद किया फिर शिर उठाय उस बादशाहके हस्तकमल चूम बहुतसे आशीर्बाद देने लगा परन्तु मलका अपने महलको पधारी तदनन्तर बादशाहने बदरको अपने साथ भोजनकराया जब सुचित्तहुआ समंदाल की बेटीके जादू का हेतु पूछा बदरने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया बादशाह ने यह समाचार सुन अतिआश्चर्यितहोय कहा जो कुछ होनाथा सो हुआ अब तुम्हारी क्या इच्छाहै मुझसे बर्णनकरो बदर ने कहा आपने मुझसे ऐसा उपकार किया जो जन्मभरकी तुम्हारी सेवाकरूं तौभी उऋण नहीं होसक्ता परन्तु बहुत दिनोंसे मैं अपने देश से निकलाहूं इसहेतु इच्छा है कि अपने देशको जाय वहांका प्रबन्ध करूं और सिवाय इसके डरताहूं कि ऐसा न हो जो गुल-अनार मेरीमाता मेरे बियोग में अपनी देह त्यागदे वहांजाय उसे धैर्यदूं इसनिमित्त दयाकर मुझे एकजहाज़ कृपाकीजिये तो उसमें अ-पने देश को पहुँचूं बादशाहने अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुरन्त एक जहाज़ तीव्रगामी तैयारहो सो तुरन्त एक जहाज़ तैयारहोगया बदर बादशाहसे बिदाहोय ईशानदेशकी ओर पधारा दशदिनतक बायु अनुकूलरही और आनन्दपूर्बक यात्राकी ग्यारहवेंदिन बायु बिपरीतचली और अगाधजल उमड़आया जिससे जहाज़ कुमार्ग होगया प्रचण्ड बायुसे जहाज़की रस्सियां और मस्तूल टूटगया और जहाज़ टक्करखा चूर्ण होगया बहुतसे मनुष्य डूबमरे कई म-नुष्य एकपाट के सहारे पैरने लगे उसमें बदरभी टूटे हुये पाटपर समुद्रकी तरंगों और धारोंमें बहता बहता तटपर पहुँचा वहां स-मीपही एक नगर था सो बदर पृथ्वीपर पहुँचा और जलसे निकल किसी ओर जानेलगा अकस्मात् घोड़े, गायें, बैल, खच्चर आदि पशु चहूं ओर से दौड़े और शोरमचा उसे जलसे निकलने न दिया

बदर बड़े यत्नसे उन्हें हटाकर एकपहाड़की कन्दरा में जाछिपा और विश्राम कर वहां अपने वस्त्र धूपमें सुखाये जब वहां तनक सावधान हुआ तब उसने नगर में जानेकी इच्छाकी नगरद्वारपर फिर पशुओं ने उसे रोंका वह पशु कहते थे यहनगर बहुतबुरा है इसमें जाने से जन्मभर दुःखमें पड़ोगे बड़ी कठिनता से बदर नगर के भीतर गया उसे अति स्वच्छ और महाविशाल और उज्ज्वल देखा परन्तु मनुष्य नहीं थे अत्यन्त बिस्मितहुआ और समझा कि पुरका मनुष्यों से ख़ालीहोना और पशुओंका एकत्रहोकर विदेशीको रोंकना बिना किसी हेतु के नहीं साहसधर आगेगया तो उसने दूकानों को दूकानदार बिना देखा इसीभांति सम्पूर्ण नगरमें फिराकिया कहीं मनुष्य न देखा फिर आगेजाय एक बृद्धपुरुष बैठादेखा जो अपनी दूकान पर फलोंको रख कर उज्ज्वल करताजाताथा बदरने उसे दंडवत्की उसने शिर उठाय बदरको देखा और उसकारूप देख आश्चर्यमें हुआ कि यह क्योंकर इस नगरमें आया फिर उसने प्रणामका उत्तरदे उससे पूछा कि तुम कौनहो और किधरसे आये बदरने संक्षेपमें अपना बृत्तान्त बर्णन किया उसबृद्धने उससे पूछा तुमने किसी मनुष्य को इसनगर में देखा बदरने कहा सिवायतुम्हारे अबतक मैंने किसी को नहीं देखा बड़ा आश्चर्य है कि ऐसास्वच्छ नगर निर्जनहो बृद्ध ने कहा शीघ्र भीतर चलाआ बाहर मति खड़ा रह ऐसा न हो जो किसी दुःख में पड़े मैं इस नगरका बृत्तान्त तुझे सुनाऊंगा बदर उसके कहने के अनुसार उसकी दूकान के भीतर जाय उसके समीप बैठगया बृद्धने बदरको पहिले भूखाप्यासा देख भोजनकराया फिर बदरसे कहा इस बस्तीकानाम मायावीनगरहै और यहांकी अतिरूपवती शाहज़ादी मलकाहै और मायाबिद्यामें भी अद्वितीय है वह सम्पूर्ण पशु जो तुम्हें समुद्रकेतट और नगरद्वारपर मिले भीतर आने को बर्जतेथे वह सब तुम्हारे सदृश मनुष्य थे इसरानीने अपनी मन्त्रविद्या के बलसे उन्हें पशुबनारक्खाहै यदि कोई तरुणपुरुष रूपवान् तुम्हारेसदृश भाग्यहीनता से इस नगरमें आनिकला तो इसरानी के जासूसदेख उसको बरजोरी उसके समीप लेजाते थे प्रथम वह

उसका अत्यन्त सत्कार करतीहै कि मानों उस मनुष्यके बिचारमें वह उसपर मरतीहै निदान अप्रसन्नहोय उससे प्रीतित्याग पक्षी वा पशु बनाके छोड़देतीहै वह दीन अपनीजाति के साथ समुद्रके तीर घास चर कालक्षेप करता है यदि कोई यात्री भूलसे वा कोई आपत्तिका मारा तटपर उतरने वा नगरप्रवेशकी इच्छा करताहै तो वे पशु उस पर दयाकर उसे शोरकर रोंकते हैं वह बिचारेतो बोलनेकी शक्ति नहीं रखते जिससे अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बर्णन करें परन्तु अपने से उससे कहते हैं कि इसनगरमें कदाचित् मतिजा नहीं तो तेरी ह- मारीसी दशाहोजावेगी परन्तु वह प्रवासी उनके अभिप्रायको नहीं समझता और उस मलका के फन्दे में पड़ अन्त को पशु होजाता मनुष्यता जातीरहती है बदर वृद्ध से यह वृत्तान्त सुन बहुत घब- ड़ाया और कहनेलगा एक जादूगरनी से अभी छुट्टी न पाई थी कि दूसरी के हाथ में पड़ा मैं अत्यन्त अभागा हूं फिर अपना सम्पूर्ण वृत्तांत उस वृद्ध से कहसुनाया उसे उसपर दया उपजी और उसे धैर्यदे कहा यद्यपि यहांका और यहांकी मलकाका यहीहालहै जैसा कि मैंने बर्णन किया तथापि तेरे प्रारब्ध अच्छे थे कि तू मेरे पास चलाआया और किसी दूसरे से न मिला अब तू इसी दूकानमें रहा कर और जो मैं कहूं वही कीजियो यहां किसी से अपना प्रयोजन मतिरख मुझे यहांकेबासी सब छोटेबड़े जानते हैं तू सब दुःखों से बचारहेगा बादशाह बदरने उसकी बड़ी प्रशंसाकी और उसी दूकान पर बैठारहा जो कोई उसे वहां बैठादेखता तो उसके रूप छबि अनूप को देख पछताता और महाबिस्मित होता कि यह क्योंकर उस रानीके फन्देसे बचा मनुष्य उसे प्रायः वृद्धका दास जानते और वह बुड्ढा उनसे कहता भाइयो! यह मेरा भतीजाहै दास नहीं है इसके पिताका कालहोगया मेरेपुत्र न था उसे मैंने बुलाकर अपना पुत्र बनाया और अपने देश से इसेबुलाभेजा कि मेरेपास रहाकरे वे यह सबवृत्तान्तसुन प्रसन्न होते फिर कहते जितना कि हम इस बातसे प्रसन्नभये उतनाही हमें खेदहै जब हम बिचारते हैं कि मलका इसे देखतेही अपनेसाथ लेजावेगी और कईदिन इसे अपने समीपरख

वही दुष्टता इससेभी करेगी जो औरोंके साथकी है तब हमें दुःख होता है वह बृद्ध उनसे कहता कि मुझे बिश्वासहै जब रानी इसके आने को सुनेगी तो मैं उससे बिनय करूंगा कि यह मेरा भतीजा है मैंने इसे अपना पुत्र बनायाहै वह मेरे कारण इससे कुछ न कहेगी निदान बदर एकमहीने तक उस बृद्ध के पास आनन्द में रहा किसी भांतिका उसे खेद न पहुँचा एकदिन वह उसी दूकानपर बैठाहुआ था कि अकस्मात् रानीकी सवारी बृद्धकी दूकानसे जातीहुई देखी पहिले सेना आगे आगे जातीथी उसकी दृष्टि पड़ी वह उठके दूकानके भीतरगया और बृद्ध से पूछा यह सवारी इस धूमधाम से किस की आती है उसने कहा यह सवारी उस मलकाकी है जिसका बृत्तान्त मैंने पूर्व में कहाथा परन्तु भयभीत न हो अपने स्थानपर जायबैठो इसके उपरान्त बदरने देखा की उस रानी की अरदली के सिपाही हज़ार मनुष्य सर्ब गुलाबी बस्त्र पहने और नग्न खड्ग हाथों में लिये जाते थे उनमेंसे कोई भी सेनापति न था जो बृद्धको प्रणाम न करता उसके पीछे खोजियों के यूथके यूथ भारी कीनख़ाब के बसन पहिरे उत्तम उत्तम बाहनों पर सवार होकर निकले जब समीपही दूकान के आये तो उनके अधिपतियों ने भी बृद्धको बड़ी नम्रता से दण्डवत् की फिर क्या देखा कि एक स्त्रियोंका समूह अनेकभांतिके स्वच्छ बस्त्र और जड़ाऊ आभूषण पहिने बरछियां हाथों में लिये पैदल धीरे धीरे चलाआता है उनके मध्यमें मलका मुश्की घोड़ेपर सवार जिसकासाज सबसुनहला और स्थान स्थानपर बड़े बड़े टुकड़े हीरे के जटितथे बड़ी धूमधाम और सजधजसे चली आतीथी उन सब सुन्दरियोंने झुकझुकके बृद्धको प्रणाम किया जब मलकाकी सवारी सन्मुख आई बदर बादशाहको देखतेही उसपर मोहित भई और घोड़ेकी बाग ठहराई और खड़े होके उसने उसबृद्धको पुकारा और पूछा कि यह सुन्दर मनुष्य क्या तुम्हारा दासहै और कबसे तुम्हारे पास आया है बृद्ध ने प्रथम अपना मस्तक उसके चरणों पर रख चूमा तदनन्तर उठ हाथ जोड़ बिनती की हे ख़ुदावन्द ! यह मेरा भतीजाहै बहुत दिनहुये कि इसका पिता कालबश हुआ मैंने अपुत्र

चित्र जिन का मलकाहुदा और बदर को लिये जाते हुये

होनेके कारण इसे अपना पुत्रबनाय अपनेपास बुलाके रक्खा जिस से इस जन्ममें मुझे धैर्य्यरहे और मेरेपीछे मेरा नामरहे मलका बदर को देख मोहिगई और इच्छाहुई कि किसीभांति इसे बुड्ढे से लेके आनन्दभोगें यह बिचारकहा मेरे पिता इससुन्दर पुरुषको मुझेदेदो मैं अग्नि और प्रकाशकी शपथ खातीहूं कि इसे बहुत अच्छेप्रकार रक्खूंगी और किसीबिधिसे इसेदुःख न दूंगी और मुझे तेरीप्रीतिसे बिश्वासहै कि तू इस बिषयमें मुझसे निषेध न करेगा और मैं सदैव तेरा गुण मानतीरहूंगी अब्दुल्लाने कहा आपने मुझे और मेरे भतीजे को इसकृपासे अति सप्रतिष्ठ किया परन्तु यह राज्यब्यवहारसे निपट अज्ञान है इसहेतु आज आपके समीप इसे नहीं भेजसक्ता मलका ने कहा इसबातका तुम कुछभी शोच न करो एकही दिनमें यह सब जानलेगा और मुझे अग्नि और प्रकाशकी सौगन्द है कि जबतक तू इसको मुझे न देगा तबतक मैं यहांसे न हिलूंगी और इसी कारण तुम्हें दुःखहोगा और मैं प्रतिज्ञा करतीहूं कि तू इस पुरुषके देनेमें कदाचित् न पछतावेगा बृद्धने उसके कोपसे डरकेकहा बहुत अच्छा मैं राज़ीहूं परन्तु कल वह आपके सन्मुख आवेगा मलका ने यह मान लिया और अपनी सेना और सेवकों समेत वहां से चलीगई फिर अब्दुल्लाने बदर बादशाह से कहा इसमलकाने तुम्हारे भेजने के लिये बहुतकहा जैसा तुमने देखा अब तुमको किसी भांति मैं नहीं रखसक्ता यदि मैं न मानता तो ईश्वरजाने कोप में तुमसे और मुझसे क्या करबैठती उसने अग्निकी जिसे अपना पूजक समझती है सौगन्दखाई है बिश्वास है कि तुम्हारेसाथ किसी प्रकारकी बुराई न करेगी और अच्छीतरह रक्खेगी मैं तुम्हारी नित्य ख़बर लियाकरूंगा उसके सभासद् सब मुझसे मित्रतारखते हैं वेभी अपनी सामर्थ्यभर तुम्हारी सहायताकरेंगे निदान ऐसे २ बचनोंसे उस समय तो बदर धैर्य्ययुक्त होकर कहनेलगा मेरेप्रारब्ध में बुराई या भलाई जो कुछ लिखी है अवश्य भोगनी पड़ेगी अथवा इसी मलका के हाथों मेरीमृत्यु है या इसीसे मेरामनोरथ पूराहोगा निदान अब उसी के समीप जानाचाहिये बृद्धने कहा कुछ चिन्ता न

करो यदि यह रानी राज्यबल और मायाशक्ति रखतीहै तथापि किसी भांति मेरी इच्छा के विपरीत न करसकेगी कदाचित् करेगी तो कुछ न चलेगा परन्तु यह बचन मेरा स्मरणरखियो यह दुष्टा तुमसे बुराई तो अवश्यकरेगी उससमय तुम्हें चाहिये कि चैतन्यरहो और जो बात कि इसके नियम के बिरुद्ध देखो मुझसे तुरन्त आकर कहना निदान दूसरे दिन वह राक्षसी उसीबृद्धकी दूकानके समीप उसी तड़क भड़क और सजधज से निकली और वहां खड़ी होके बुड्ढेसे कहा तुम्हारे भतीजेकी लालसासे जिसके देनेको तुमने मुझे बचन दिया था मुझे रात्रिभर निद्रा न आई और इसी बिचारमें रही कि किसीभांति सबेरा हो तो मैं उसे लाऊं मुझे बिश्वासहै कि तुम अपने बचन के सच्चेहोगे कदाचित् असत्य न भाषोगे और अपनी प्रतिज्ञा को अवश्य पूर्ण करोगे बृद्धने प्रथम तो सत्कारार्थ अपना शीश पृथ्वी से लगाया फिर मलकाके समीपगया कि कोई उनकी वार्ता न सुने और उसके घोड़ेके शिरकेपास खड़ाहो बड़ी नम्रतासे बिनयकी कि कलदिनको जो कुछ मैंने आपके सन्मुख अपने भतीजेके हेतु बिनय की उसे न भूलियेगा मैं अब उसे आपको सौंपताहूं परन्तु आशा है किसी प्रकारसे इसे दुःख न दोगी इसे आप मेरा पुत्र समझ सर्वदा इसपर कृपा रखना यदि इसके बिरुद्ध किसी तरहका दुःख दीजियेगा तो जानो वह मुझे पहुँचा रानीने कहा इसबिषय में मैंने कल बड़ी सौगन्दखाई है कदाचित् उसे दुःख न दूंगी तुमदोनों धैर्य रक्खो अब्दुल्लाने बदरका हाथपकड़ मलकाके हाथमें दिया और कहनेलगा मैं दूसरीबेर इसके लिये कहताहूं कि इसे कभी कभी मेरे निकट आनेकी भी आज्ञा दियाकरना मलका ने इसे स्वीकार कर एक अशरफ़ियों का तोड़ा जो अपने साथ लाईथी बृद्धको दिया इसके उपरान्त मलकाने आज्ञादी कि एक घोड़ा बहुतउत्तम सामग्री से सजाके तुरन्तलाओ सेवक एक अश्व अनेकप्रकारकी बस्तु से अलंकृतलाये मलकाने बदरको आज्ञादी कि इसघोड़ेपर सवार हो वह शीघ्रही सवार होगया मलका ने अब्दुल्ला से पूछा तुम्हारे भतीजेका क्यानामहै उसने कहा इसकानाम बदर है मलका ने कहा

बड़ी भूलहुई इसे शम्स अर्थात् मध्याह्नका सूर्य कहना चाहियेथा निदान बदर घोड़ेपर सवारहो मलकाके पीछेहोलिया और मलका उसे अपने बाईंओर कर महलकी ओर सिधारी मार्गान्तर में पुरवासी बदरको देखते और हर्षित होते और मलका को ग्लानिदृष्टि से देखते और उसके अन्याय और दुष्टप्रकृतिकी बार्ता करते कोई कहता इसने नयाशिकार पाया है इसके साथभी वही दुष्टता करेगी जो औरोंके साथ की है ईश्वर इस मनुष्यपर दयाकरे और इसदुष्टा के फन्दे से छुड़ावे दूसरा कहता यदि यह पुरुष प्रारब्धी होता तो इस व्यभिचारिणी के चंगुल में न पड़ता बदरको यह बार्ता सुनकर बिश्वास हुआ कि जो कुछ उस बृद्धने इसका बृत्तान्त मुझसे कहा वह सब सत्य है फिर मलका अपने महल में जाय बदरका हाथ पकड़ अपनी दासियों और खोजियों समेत अपने महल में गई जिस की सर्व सामग्री सुवर्ण की और उसमें नानाप्रकार के अतिउज्ज्वल हीरे आदि रत्नजड़ित थे वह उसे बाग़ में सैर कराने लेगई बदर बादशाह प्रतिमन्दिर और बस्तु को देख प्रशंसा करता उसकी बाचालताको सुन शाहीमकान के सब मनुष्य जानते कि यह बृद्धका भतीजा नहीं किन्तु यह कोई रईस वा कहीं का शाहज़ादा है इतने में भोजनका समय पहुँचा दासियोंने आय मलका से कहा भोजन तय्यार है मलका बदरसहित पाकशाला में गई और सोने चांदी के पात्रोंमें खानेलगे जब निश्चिन्त भये मलका ने एक स्वच्छ मद्य का पात्र पिया और बदरने भी पिया इसीप्रकार मदिरा चलनेलगी गानेवालियां अपने अपने बाजों को उठाय मीठेस्वरोंसे गाने लगीं बहुकालपर्यन्त यही आनन्द रहा जब रात बहुत बीती और वह दोनों मदिरामें उन्मत्त भये मलकाकी आज्ञानुसार सम्पूर्ण दासियां और सेवक वहांसे चलेगये फिर उन दोनोंने शय्यापर जाकर सुख से बिहार किया प्रात उठ उन दोनों ने स्नान किया और महासुन्दर सुन्दर बस्त्र पहिर भोजन किया इसके उपरान्त बहुकाल पर्यन्त बाग़की सैर और परस्पर हास्यादिकका आनन्द उठायाकिये इतने में रात्रिभई और पूर्ववत् भोजन से निश्चिन्तहो शय्यास्थ हुये

इसी प्रकार चालीस दिनतक उस मलकाने बड़ा आनन्द उठाया अब उसकी प्रकृति बदलगई सो एक रातको वहदोनों छपरखटमें शयन करतेथे कि अर्धरात्रिमें मलका जगी बदरको सोताहुआ समझ चुपके उठी परन्तु वह जागताथा वह सोचा कि यह अवश्य कोई नई बात करगी सो वह और भी चुपकेहोकर पड़ारहा और उसकी ओर ध्यान धर देखनेलगा मलका ने सन्दूकचा खोला उसमें से एक छोटासा पात्र पीली मिट्टीसे भरा हुआ निकाला और उसके मकानके एक ओर अपने मंत्रके बलसे एक निर्मल जलका कुण्ड प्रकट किया बदर उसे देख भयभीतहो कांपनेलगा परन्तु वह चुपकाही पड़ारहा फिर उसने एक जलका पात्र उस कुण्डमें से भरलिया और एकपात्रमें थोड़ीसी मैदा रख और उस जलको उसमें डाल गूंधा बहुकालपर्यन्त अपनेही हाथसे उसे मलतीरही फिर कई एक औषधें छोटी छोटी डिबियोंसे निकाल उसी मैदेमें मिलाईं और उसकी एक टिकिया कुलचे के तौर पर बनाई और अग्निलाय कोयले सुलगाये और उसे लोहेके तवे पर रख पकाया जब वह पकचुकी तब उसने उस तवे और सब बस्तुओं को जहां से निकालाथा वहीं रख दिया और एक मन्त्र पढ़ा जिससे वह कुण्ड लोप होगया और उस टिकिया को रक्षापूर्वक रख आप फिर आय बदरके साथसोरही बदर ने यहसब देख जाना कि इसमें कुछ भेदहै और मुझे यहां चालीस दिनकी अवधि ब्यतीत होगई है मेरेही निमित्त इसने यह युक्ति अवश्य कीहै यह बृत्तान्त बृद्धसे कहना चाहिये निदान जब भोर भया दोनोंने स्नानकर बस्त्र पहिने बदरने मलकासे कहा मैं इन दिनों आपके बिचित्र बागोंकी सुन्दरता और आपकी परिपूर्ण अनुग्रहका सुख उठा अपने चचाको बिस्मरण करगया जो आप मुझे आज्ञादें तो मैं खड़े २ उनका दर्शनकरआऊं मलकाने कहा सत्य है मैंनेभी बहुतदिनों से उनकी भेंट नहीं की तुम जाय तुरन्त देखआवो फिर उसने एक मुश्की घोड़ा साजसमेत सवारी के निमित्त दे बिदाकिया जब वह अब्दुल्लाकी दूकानपर पहुँचा वह उसे देख हर्षित भया और कुशल पूछ कहा तुमने उस दुष्टाको कैसा पाया बदरने उत्तर दिया

अबतक तो उसने मुझे अतिप्रीतिसे रक्खा परन्तु रात्रिके कृत्यमें मुझे संदेह है फिर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त रात्रिका वर्णनकर कहा इसीलिये मैं अबतक तुम्हारे उपदेशों को भूलाहुआ था अब घबराय तुम्हारे समीप आया तुम कोई मुझे ऐसा यत्न बताओ कि मैं उसके छलसे बचूं किसी कष्टको प्राप्त न हूं अब्दुल्ला ने मुस्कराके कहा वह तुम्हें पशु बनाना चाहती है परन्तु अत्युत्तम हुआ जो तुम ने मुझे पहिले से चिताया अब तुम कुछ भी भय न करो मैं उसका उपाय बताताहूं जिससे तुम्हें दुःख न होगा फिर अब्दुल्लाने दो कुलचे उसे दे कहा इनको अपने पास रक्खो जब वह कुकर्मिणी अपने कुलचेका टुकड़ा तुम्हें भोजनको देवे तो तुम उसे कदाचित् न खाना और चतुरतासे उसे अपने आस्तीनमें छिपालेना और वह कुलचे जो तुम्हें मैंने दियेहैं खाइयो जब वह जानेगी कि तुमने वह कुलचा भोजन करलिया तो तुमको पशु बनाने की इच्छा करेगी परन्तु तुम्हें कुछ फल न करेगा फिर तुम उसी कुलचेको उसे खिलाना वह निस्संदेह उसे भोजनकरेगी तुम थोड़ासा जल अपने हाथमें लेके उसके मुखपर छिड़कके कहना अपनी योनिको छोड़ दूसरे चोलेमें हो उसी समय जिसपशुका तुम नाम लोगे वही होजावेगी तब तुम उसे मेरे समीप लेआइयो जो उचितहोगा कियाजावेगा जो मैं तुमसे कहूंगा सो करना बदर अब्दुल्लाके इस उपायसे अतिप्रसन्नहो मलकाके निकटगया मलका तो उसके आगमनकी बाट बागमें बैठीहुई देखती थी उसे देख कहनेलगी हे प्राणप्यारे! तुमने बहुत बिलम्ब किया मैं तुम्हारे दर्शन विना महाव्याकुलथी बदरने कहा मैं तुमसे अधिक बिकलथा यही इच्छाथी कि शीघ्रहीलौटूं और तुमसे भेंटकरूं परंतु चचा की वार्ता में विलम्ब होगया उन्हों ने मेरे निमित्त बड़े प्रेमसे व्यञ्जन पकवाये परंतु जब मैंने देखा कि भोजनकरने में यहां और बिलम्ब होगा केवल एकही कुलचा भोजनकर और एक अपने साथ लिये आयाहूं सो वह एक कुलचा कि श्वेतवस्त्र में लपेटाहुआथा दिखाके कहा हे मृगनयनी! तुमभी इसमें से थोड़ासा भोजन करो मलकाने कहा मैं इसे शिर नेत्रोंसे अंगीकार करूंगी तुम्हारा चचा मेरा हितू

है उसके घरकी बस्तु भोजनकरनी अवश्य है परंतु पहिले तुम यह मेरा कुलचा जो मैंने तेरेपीछे बनायाहै भोजनकरो बदरने कहा बहुत अच्छा तुमने जो अतिपरिश्रम कर यह बनायाहै बिश्वासहै कि बहुत अच्छा होगा मैं तुम्हारे परिश्रम और कृपासे उऋण नहीं होसक्ता सो उसने वह तो अपने आस्तीनमें रखलिया वह कुलचा जो अब्दुल्ला ने दियाथा तोड़के खाया और बड़ीप्रशंसाकी कि हे चन्द्रमुखी! मैंने ऐसा स्वादिष्ठ कुलचा जन्मभर नहीं खाया जब उसने जाना कि बदरने मेरा बनाया कुलचा भोजन किया तुरन्त उसके मुखपर जल छिड़क कहा अपना चोला छोड़ एक काने लँगड़े कुरूप घोड़ेका स्वरूप बनजा उस मंत्रने कुछ काम न किया जैसा था वैसाही बनारहा मलका ने अचम्भा कर बिचारा कि इस मंत्रने कुछभी बल न किया निदान बदरने कहा हे सुन्दरी ! मैंने तुम्हारा कुलचा खाया बड़ा स्वादिष्ठ था अब तुम हमारा कुलचा भोजन करो सो वही अर्थात् उसीका पकायाहुआ उसे कुलचा दिया मलकाको यह भली भांति निश्चय था कि यह वह कुलचा है कि जो अब्दुल्लाके पाससे लाया है निश्शंक भोजन किया बदरने तुरंत जलकी अंजलीले उसके मुख पर छिड़क कहा अपना मुख्य स्वरूप त्याग घोड़ी होजा इसबचन के कहतेही वह मलका घोड़ी बनगई और महाब्याकुल भई और रुदनकरने और अपना मस्तक बदर के चरणों पर बारंबार रख अपराध क्षमा करानेलगी परंतु बदरको इतनी सामर्थ्य न थी कि फिर उस घोड़ी को मलका बनावे निदान घोड़ीको खींच अश्वशाला में लेगया और अश्वपालक को उसे दे कहा जीन लगाम देके इसे तुरंत ला वह जो लगाम उसके मुँह में देताथा कोई ठीक न होती बदरने दो घोड़े तय्यार कराये एकपर आप सवारहुआ और दूसरेपर साईस को सवार होनेकी आज्ञादी और कहा इस घोड़ीको खींच अब्दुल्ला की दूकानपर लेआ जब वे दोनों उसे लियेहुये अब्दुल्ला के घर पहुँचे अब्दुल्लाने दूरसे देख जाना कि बदर उसपर प्रबल होकर उसको घोड़ी बनायलायाहै अत्यन्त हर्षित भया और कहा हे दुष्टा! ईश्वरने तुझे पापकर्म का दण्ड दिया बदर घोड़े से उतर अब्दुल्ला

की दूकानपर गया अब्दुल्लाने उठ उसे कंठसे लगाया और उसकी बहुत प्रशंसाकी फिर बदरने सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया और कहा इसके मुँह में कोईभी लगाम नहीं लगती बृद्धने अपने घोड़ों में से एक लगाम निकालदी वह उसके मुखमें ठीक आगई फिर अब्दुल्ला ने बदर से कहा अब तुम इस नगर में क्षण भर भी न ठहरो इसी पर सवार होके अपने देश को सिधारो परन्तु चैतन्य रहना कदाचित् इस लगाम को इसके मुखसे न निकालना बदर उससे बिदा हो अपने देशको सिधारा कई मंज़िलें चला तीनदिन पीछे एक बड़े नगरमें पहुँचा वहां एक बृद्धसे भेंटभई प्रकटमें वह सत्पुरुष मालूम होताथा और पैदल अपने घरकी ओर जाताथा उसने बदरको प्रणाम किया और पूछा तुम किधर से आते हो बादशाह बदर उस के उत्तर देनेको ठहरगया फिर उस बृद्धने उसे बातोंमें लगालिया इतनेमें एक बृद्धा बदरको उस घोड़ीपर सवार देख आखड़ीभई और महाबिकल होय फूटफूट रोई जब बदर उस बृद्धसे बातें करचुका तब उस बृद्धासे रोनेका कारण पूछा उसबृद्धाने कहा मेरे पुत्रकी घोड़ीमर गई वह ऐसीहीथी जिसपर तुम सवारहो यदि तुम इसे बेंचो तो मैं लेलूं जो तुम इसका मोल मांगोगे वही दूंगी बदरने कहा हे माता! मैं इस घोड़ीको नहीं बेंचसक्ता और मेरी सामर्थ्य नहीं जो मैं तुम्हें इसे दूं बृद्धाने कहा ईश्वरके वास्ते इसे मुझेदे यदि तू न देगा तो इसके शोकमें मैं और मेरा पुत्र दोनों मरजावेंगे बदर ने कहा इसका बड़ा मोलहै तुम उसे नहीं देसकोगी बुढ़ियाने कहा मैं तुरंत देदूँगी बदर यह समझा यह बृद्धा अतिनिर्धन और आपत्तिकी मारी फटे पुराने बस्त्र पहिने है इसे तो थोड़ी द्रव्यके देनेकी भी सामर्थ्य न होगी बहुत धन कहांसे देगी इतना बड़ा मोल कहना चाहिये कि निराश हो चलीजावे यह समझ उसने कहा इसका मोल एक हज़ार अशरफ़ी है यदि इतना द्रव्य मुझेदे तो यह घोड़ी तेरी है बृद्धाने इतना सुनतेही अपनीकमरसे थैली खोल हज़ार अशरफ़ी बदरको गिनदीं और कहा ये अशरफ़ियां गिनलो और घोड़ी से उतरो कदाचित् हज़ार अशरफी से कमहोंगी तो मेरा घर जो अतिसमीप है वहांसे

तुझे लादूंगी बदर आश्चर्यित हुआ और कहने लगा हे माता ! मुझे यह घोड़ी बेंचनी किसीभांति स्वीकार नहीं मैंने जो तुझ से मोल किया तो केवल हँसी कीथी वह बृद्ध जो वहां खड़ा था औ सबबातें सुनता था उससे कहने लगा भाई तुम यह घोड़ी बृद्धा के हाथ बेंचचुके अब तुम्हारी तकरार न चलेगी क्या तुम इस नगर की रीति नहीं जानते जो कोई व्यवहार में मिथ्या बोलता है वह प्राणसे माराजाताहै अब तुम्हें उचित है कि हज़ार अशरफ़ी लेके घोड़ी इसे देडालो क्योंकि इसने वही दिया जो तुमने अपने मुखसे मांगा अब तुम इस विषय में व्यर्थ तकरार करतेहो यदि यह बृत्तान्त बादशाह सुनेगा तो न जानिये तुम्हारी क्या गति करे बदर बादशाह यह सुन अत्यन्त बिकल भया और उस घोड़ी से उतर पड़ा बुढ़िया उसे शीघ्रही उसकी लगाम पकड़ एक नहर के तटपर जो वहां बहती थी लेगई और ज़ीनलगाम उतार एक अंजली जलकी उस नहर में से ले उस घोड़ी पर छिड़क कहा मेरीप्यारी पुत्री इस योनिको जो तेरे योग्य नहीं छोड़ निजस्वरूप को प्राप्त हो इतना वचन कहतेही वह मलका बनगई बदर भयके मारे मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरने लगा इतने में उसी बृद्धने उसे थामलिया और उस बृद्धा से जो मलकाकी माताथी और उसीने मलका को सम्पूर्ण माया सिखाई थी अपने कण्ठसे लगाया और महाप्रसन्न भई इतने में पश्चिम की ओरसे एक महाविकराल कुरूप राक्षस प्रकट हुआ एक हाथसे बदर को और दूसरे से उस बृद्धा और मलका को उठाय ले उड़ा क्षणभर में उन तीनों को मलका के भवन में पहुँचाया मलका ने वहां पहुँच महाकोपसे दांत पीसपीस बदर से कहा हे दुष्ट ! मेरी सेवा का फल था जो तूने और तेरे चचाने मेरे साथकिया देख अब तुझे मैं कैसा दण्ड देतीहूं यह कह थोड़ासा जल अंजलीमें ले उसपर छिड़ककहा अपनाचोला छोड़ महाअशौच उल्लू बनजा बदर उल्लू बनगया फिर मलकाने अपनी दासी को आज्ञादी कि इस पक्षीको पिंजड़े में बन्दकरदे और उसे अन्न जल कुछभी न दीजियो दासीने उसे पिंजड़े में रखलिया परन्तु मलका से छिपाकर उसे अन्न जल

दियाकरती वह दासी वृद्धकी मित्रथी गुप्तमें यह हाल उसको सुनाया कि यह रानी तुम्हें और तुम्हारे भतीजे को अवश्य मारडालेगी तुम अपनी रक्षाकरो वह वृद्ध यह सुनतेही विचारा कि बात बढ़गई अब तुम इसका औरही कुछ उपाय करो सो उसने बड़ा नाद किया इतने में एक महाउग्रराक्षस वरकनामक जिसके चारोंवाजू सपक्ष थे आया और वृद्धसे विनय की मेरी आपने क्यों सुधिकी वृद्धने कहा हे वरक! पहिले तू वदर के प्राणकी रक्षाकर और उसकी रक्षक बांदी को ले ईरानदेश में रानी गुलअनारके महलमें पहुँचा कि वदर की माता उस बांदीसे यह वृत्तान्त सुने राक्षस यह आज्ञा पातेही तुरन्त जादूगरनी के महलमें पहुँचा और उसबाँदीको भी वृद्धकी आज्ञासे ज्ञातकर उसको ले आकाश को उड़ा और क्षणमात्र में ईरान देश पहुँचा और रानी गुलअनारकी छतपर खड़ा भया उस दासीने सीढ़ी के मार्ग से जाय गुलअनार और उसकी माताको कि परस्पर अपने दुःख की वार्ता करतीथीं प्रणाम किया और सब हाल वर्णन किया गुलअनार वदरका वृत्तान्त सुनतेही अतिहर्षित भई और उठके उस दासी को कण्ठ से लगाय बड़ा गुण माना और अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुम डौंड़ी पिटवाओ कि महाराजा वदर शीघ्रही यहां पहुँचा चाहता है फिर सुगन्धित वस्तु अग्निपर रख मलिक सालहको समुद्रके राज्यसे बुलाया जब वह पहुँचा तो मलका गुलअनारने कहा भाई तुम्हारा भानजा वदर मायावी देशमें वहां की मलकासे महाकष्ट पारहा है अब वहां तुम्हारा मेराकाम है कि उसे उस महाआपत्ति से छुड़ावें सालहने अपनी सामुद्रीसेना को आज्ञा दी तुम तुरन्त जलमार्ग से मायावी देशमें पहुँचो मैं तुम्हारे पहुँचने से भी पहिले पहुँचूंगा इसके उपरांत असंख्य राक्षसीकटक अपने साथ ले अपनी माता और वहिनसहित क्षणमात्र में मायावी देशमें पहुँचा और निश्शंक राजमहल में प्रवेशकर मलिक आदि अग्निपूजकों को एकही वेर विनाशकर ध्वस्त करदिया तदनन्तर गुलअनारने उसी दासीसे पूछा वह पिंजड़ा तुरंतला जिसमें मेरा वदर बादशाह है वह तुरंत उठालाई उसने वदर को बाहर

निकाला और उसपर नीर छिड़ककर कहा इसयोनिको तज अपने चोले में आ उसी समय वह बदर बादशाह बनगया मलकाने उसे हृदयसे लगालिया और हर्षित भई उपरान्त बदरने चैतन्यहो अपने मातुलादि से भेंटकी तदनन्तर गुलअनार अब्दुल्लाके घरमें गई और उससे भेंटकर अतिनम्रता से कहा तुमने बदरकी बड़ी रक्षा और सेवाकी अब जो सेवा हमारे योग्यहो कहो कि हम उऋण होजावें और प्रसन्नतासे करें अब्दुल्लाने कहा मेरे विचारसे यह उचित है तुम इसी दासी के साथ बदर को विवाहदो कि वह भी महारूपवान् है मलका गुलअनार ने उसे स्वीकार कर उसे राजसी उत्तम उत्तम सुवर्णमयी रत्नजटित सुन्दर नखसे शिखतक शृङ्गारकर बदर को व्याहदिया बदर ने कहा मैंने आपकी और पितासमान वृद्धकी आज्ञापालन की परन्तु मैं वास्तव में जवाहर शाहज़ादी से अपना विवाह करूंगा उसकी माता ने मुस्कराय कहा बहुत अच्छा इसका यत्न कियाजावेगा इतना कह उसने सामुद्रीकटकको जो विद्यमान था आज्ञादी कि तुम तुरन्तजाय जल और पृथ्वी के नगरों में ढूंढ़ो जो कोई शाहज़ादी सुन्दरी मेरे पुत्र के समानहो तो मुझे आकर कहो मैं बदरकी मँगनीकरूं बदरने कहा यह सब व्यर्थहै तुम जानती हो कि मैं शाहज़ादी समन्दालपर मोहितहूं उसके सदृश कोईभी स्त्री नहीं उसने मुझे केवल अपने पिताके भयसे कष्टदिया जो समन्दाल के बादशाहको बन्दीगृहसे छुड़ाय मेरे हेतु उससे कहोगे तो कदापि इन्कार न करेगा गुलअनारने कहा हे मेरे प्यारे पुत्र! उसे तो तुम्हारे मातुलने कष्ट देरक्खा है यदि वह उसे छुड़ाय यहां बुलावे तो निस्सन्देह स्वीकार वा निषेध का हाल मालूमहो फिर बदर ने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सालहसे कहा कि मलिक समन्दालको छुड़ाओ उसके मातुलने अग्निकी अंगीठी मँगवाय कुछ वस्तु उसमें डाल मंत्रपढ़ा धुवें के उठतेही पृथ्वी कांपी और समन्दाल चाकरों सहित आया और बदर उसके चरणोंपर गिरपड़ा फिर दोनों घुटनोंके बल उसके सन्मुखखड़ेहो कहा जिसमनुष्य के हेतु सालहने मँगनी को कहाथा वह मैंहीहूं मैंही फ़ारसदेशका महाराजाहूं मुझपर आप कृपाकीजिये

आशाहै कि तुम मुझे अपनी पुत्रीकी प्रीतिमें न मारोगे जो कुछहोना था सो हुआ अब कृपाकर यह सम्बन्ध स्वीकार कीजिये समन्दाल ने तुरन्त बदर को धरती से उठाय अपने कण्ठ से लगाय कहा यदि तुम्हारी इसकी प्रीति में यह दशा है कि मेरी पुत्रीके बिवाहने बिना मरजावोगे तो मैं प्रसन्न हूं जवाहर को मैंने तुम्हें खुशी से दिया वह अब तुम्हारी है वह कदाचित् मेरी आज्ञा न तोड़ेगी वह मेरे कहने को अवश्य मानेगी समन्दाल ने सेवकको आज्ञा दी कि तुरन्तजा और जवाहरको जहां कहीं हो ढूंढ़कर लेआ वह यह आज्ञा पातेही जवाहरको उसकी दासियों समेत ढूंढ़लाया उसके पिताने उसे कण्ठ से लगाय कहा हे प्यारी पुत्री ! मैंने तेरा बिवाह ईरान के महाराजा बदरनामक से जो सन्मुख खड़ा है करदिया तेरा अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों से अधिक सत्कार कियाकरेगा और हम तुम दोनोंको प्रसन्नरक्खेगा शाहज़ादी जवाहरने अपने पिता से कहा जो कुछ आपने आज्ञादी मैंने उसे स्वीकारकिया परन्तु वह अपराध जो मुझसे बदरके मध्ये क्रोध में हुआ बदर उसे क्षमा करे सो उसने क्षमाकिया फिर बिवाहकी रीतें बड़े धूमधाम से उसी मायावी नगरमें हुईं और जितने मनुष्य बिचारे आपत्तिके मारे उसी दुष्ट मलकाके मंत्रबलसे पशु बनेहुये भ्रमते फिरतेथे उसके मारेजातेहीं सब अपने अपने स्वरूपमें आये और आशीर्वाद देदे अपने देशों को सिधारे इसके उपरान्त बादशाह समन्दाल अपने देश को गया और ईरानका बादशाह परिवारसहित ईरान को सिधारा सालह कितनेएकदिन वहां रहा फिर अपनी मातादि सहित अपने राज्य में पहुँचा ॥

इति श्रीपण्डितप्यारेलालउल्थाकृतेसहस्ररजनीचरित्रे द्वितीयभागस्समाप्तः ॥

सो० संवत्सर इकतीस, भाद्रशुक्ल भृगुबार में ।
पूरण बिस्वेबीस, उल्थाकृत यह भाग बर ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

सहस्त्ररजनीचरित्र ॥

तृतीयभागप्रारम्भः ॥

सो० लम्बोदर छविधाम, कृपा जासु सुखदैन अति।
करत तोहिं परणाम, तृतियभाग पूरणकरहु ॥

ग़ानिम और फ़ितनह की कहानी ॥

मलका शहरजादने बादशाह शहरयारसे बिनयकी कि हे स्वामी! पूर्बकाल में एक व्यापारी अयूब नाम दमिश्क नगर का निवासी महाधनवान् श्रीमान् था उसके ग़ानिम नामक एक पुत्र और अलकनव नाम एक पुत्री अतिगुणवान् स्वरूपवान् थी जो कोई उस पुत्री को देखता बेबश होय मोहिजाता एक दिन अकस्मात् वह व्यापारी बहुत धनछोड़ कालबश भया सो उसके गोदाम में सौ गठरियां उत्तम उत्तम बस्तुकी बँधीहुई रक्खी थीं जिसमें भारीभारी कमखाब और गुलबदन आदि के थान थे और प्रतिगठरी पर बुग़दादी अक्षरों से लिखाहुआथा उससमय सुलेमान का पुत्र मुहम्मदजबेनी दमिश्क का बादशाहथा अपने पिताके मरनेके पश्चात् एक दिन ग़ानिमने अपनी मातासे पूछा मैंने प्रतिगठरी पर बुग़दादी अक्षरों से लिखाहुआ देखाहै उसके क्या अर्थ हैं उसकी माता ने कहा तुम्हारे पिताकी यह रीति थी कि जब किसी देशमें व्यापारकी बस्तुलेजानेकी इच्छाकरता था तो उसेबांधके हरएकगठरीपर नाम उसनगरका लिखदेता कि लादनेकेसमय भ्रम न पड़े इनदिनों बुग़दादकी यात्राको उद्यतथा परन्तु मृत्युने उसे अवसर न दिया अकस्मात् कालबशहुआ इतनाकह उसकीमाता पतिकी सुधिकरके रोनेलगी ग़ानिम अपनी माताका यह शोक न देखसका निदान उस काल तो

वह चुप होरहा दूसरे समय उसे प्रसन्नदेख कहनेलगा बड़ाखेद है कि मेरापिता यह असबाब बुग़दाद में लेजाने न पाया अब मैं चाहताहूं कि मैंही लेजाऊं और बेंचूं उसकी माता यह सुन अतिचिन्ता करने लगी क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करती थी फिर कहा हे पुत्र! तुम अभी छोटेहो ऐसी कठिनयात्रा को क्योंकर करोगे एकतो मैं अपने पतिके शोकमें दुःखीहूं दूसरे तुमभी चाहतेहो कि अपने बियोगके दुःखमें मुझे डालो मेरेबिचार में तुम्हें उचित है कि यह माल दमिश्क के ब्यापारियों को थोड़े नफ़ेपर देडालो और इतने दूरकी यात्रा मतकरो ग़ानिमने अपनी माताका समझाना कुछ न माना और बुग़दादकी यात्रा मनमें ठान नख़ासमें जाय कई दास अपनी आवश्यकतानुकूल मोललिये और सौ ऊंट और सम्पूर्णसामग्री तय्यारकर पांच छः ब्यापारियों के साथ जो बुग़दादको जाते थे होलिया और अपने सेवकों और बहुतसे लोगोंके साथ बड़े आनन्द से बुग़दाद को पधारा मार्गमें सब मनुष्य थकगये इतने मे बुग़दाद नगर दृष्टिपड़ा उसको देखतेही सबलोग अतिप्रसन्न होय राहका श्रम भूलगये और नगर में प्रवेशकर एकबड़ी सरायमें जाउतरे परन्तु ग़ानिम ने उन सबके साथ रहनेकी इच्छा न की और अलग उत्तम स्थान में रातको जायरहा भोर उठ उसने एकस्वच्छ गृह जो सुन्दर बस्तुओंसे अलंकृतथा और उसमें पुष्पबाटिका जो अतिउत्तम सुगन्धितफूलों से सुशोभित थी किरायेपर लिया और कई दिन तक उसने उसमें आनन्दसे निवासकिया जब भलीभांति बिश्राम करचुका तो एकदिन उत्तम बसनपहिर ब्यापारियों की सभामें जहां सब अपना असबाबलिये बेंचने को एकत्र थे गया और कई थान दासोंके हाथमें अपने साथ लेगया वहांजाय ब्यापारियों से भेंटकी उन्हों ने यथोचित सत्कारकिया और नमूने देख पसन्दकर असबाब उसका मोललेलिया निदान ग़ानिम ने अपनी सम्पूर्णबस्तु थोड़ेकाल में बहुत से लाभपर बेंचडाली केवल एकहीगठरी अपने निमित्त रहने दी फिर दूसरेदिन अपने मन्दिरसे निकल बाज़ार की ओर गया वहां सब दूकानों को बन्ददेख बिस्मितहुआ मनुष्यों से उसका कारण

पूछा उन्होंने कहा अमुक ब्यापारी जो ब्यापारियोंमें मुख्यथा आज ही कालबश हुआ उसके शोकको वह सब गये हैं ग़ानिमने पूछा यह उसकेलिये किस मसजिदपर निमाज़ पढ़ेंगे और वहांसे किस क़बरिस्तानमें लेजावेंगे पुरबासियोंने पता बतादिया ग़ानिम अपने दासको बिदाकर आप उस मसजिदकी ओर गया और वहां पहुँच सुना कि निमाज़पढ़ अरथीको क़बरिस्तानकी ओर लियेजाते हैं ग़ानिम भी उसी लोथ के साथ होलिया और उसी क़बरिस्तानपर जो नगर से बहुतदूर था जायपहुँचा उस लोथकी क़बर पहिलेसे ही पत्थर की बनीहुईथी और धूपके कारण चारोंओर डेरे खड़े कियेगये थे लोथ को क़बर के भीतर लेगये और सब ब्यापारी आदि उन डेरों में ठहरे और क़ुरानकी आयतें पढ़नेलगे लोथ गाड़ने के पश्चात् अन्य ब्यापारी एकही स्वर से फ़ातिहा पढ़नेलगे इतने में रात्रिभई ग़ानिमने रात्रि होजाने और गृह बहुतदूर होनेके कारण घर जानेकी इच्छाकी इतनेमें वहां के रीत्यनुसार भोजनआया जिससे ज्ञातहुआ कि वह डेरे केवल धूपकेही बचावके हेतु नहीं खड़ेकिये गये किन्तु रात्रिको सब मनुष्य वहां रहेंगे दूसरे दिन नगरको पधारेंगे ग़ानिम यह बात विचारने लगा कि मैं बिदेशीहूं यदि रात्रिको यहां सब रहजावेंगे ऐसा न हो जो चोर मेरे घरको लूटें वा मेरेदासही अवसरपा सम्पूर्ण द्रब्यलेदें किसी ओर भागजावें तो मैं उनको कहां ढूंढ़ता फिरूंगा इस हेतु सूक्ष्म भोजन कर मनुष्योंकी दृष्टिबचा अपने घरको चला चिन्तासे जल्दी जल्दी भागताथा बहुधा ऐसा होता है कि जो मनुष्य किसी बिषय में शीघ्रता करता है प्रायः दुःख उठाता है दैवयोगसे वह अँधियारे में भूल औरही मार्ग में जायपड़ा घूमते घूमते आधीरात्रिको नगरद्वार पर पहुँचा परन्तु वह द्वार उसकी अभाग्यता से बन्द होगयाथा उसे रात्रि बिताने को रहने की जगह ढूँढ़ना अवश्यहुई निदान बहुत ढूँढ़ने से नगरके निकट एक क़बरिस्तान मिला जो चारों ओर ऊंची दीवारों से घिराहुआ था उसके मध्यमें एक नारियलका बृक्ष लगाहुआथा उसने भीतरजाय किवाड़ मूंदलिया और एक बराबर जगह ढूंढ़ हरीघासपर लेटरहा परन्तु

क़बरिस्तान के भयसे उसे निद्रा न पड़ी और घबड़ाके उठखड़ा हुआ और द्वारके सामने टहलने लगा इतनेमें दूरसे कुछ प्रकाश दृष्टि पड़ा कि उसी ओर चलाआता है डर से बृक्षपर चढ़गया और उसकी लतामें छिपकर बैठरहा इतने में तीन मनुष्य सेवकोंके सदृश वस्त्र पहिरे उसी क़बरिस्तान में आये एक के हाथमें लालटेन और दो उसके कई पग पीछे एक सन्दूक़ अपने कन्धोंपर लिये थे अपने कन्धे से सन्दूक़ उतार एकने उनमेंसे कहा भाइयो यदि मेरी बात सुनो तो इस सन्दूक़ को इसीभांति छोड़ नगरको चलो दूसरेने कहा हमारी स्वामिनी ने ऐसी आज्ञा नहीं दी जो हम ऐसा करेंगे तो बहुत पछतावेंगे क्योंकि उन्होंने सन्दूक़ के गाड़नेकी आज्ञादी है ती-सरेने कहा तू सत्य कहताहै तदनन्तर वह फावड़े से पृथ्वी खोदनेलगे यहां तक उन्होंने गहरा गढ़ा खोदा कि सन्दूक़ उसमें गाड़ चलेगये ग़ानिम यह सब बार्ता सुन बिचारा कि इसमें द्रब्य भराहोगा किसी धनवान् पर आपत्ति पड़ीहै इससे यहां गड़वादियाहै निदान बृक्षसे उतरा और हाथों से उसकी मिट्टी सरका सन्दूक़को देखा उस सन्दूक़ में क़ुफ़ुल लगाथा बिचारने लगा कि इसे क्योंकर तोडूं फिर उसने कई टुकड़े पत्थरके उठा एकको क़ुफ़ुलके नीचे और दूसरेको ऊपररख ऐसा ज़ोर किया कि वह सुगमतासे खुलगया फिर उसने संदूक़ का पट उठाया उसमें रुपयेके बदले एक अतिरूपवती तरुण स्त्रीको लेटीहुई देखा समझा कि वह सोती है फिर यह बिचारा यदि वह सोती होती तो क़ुफ़ुल के खड़खड़ाहट से अवश्य जागपड़ती फिर उसके बाज़ूबंद और कान के बालोंको देखा कि वह हीरेके हैं और सुंदर बड़े बड़े नीलमणि की माला उसके कण्ठमें लटकती हैं और राजसी बस्त्र पहिने है इस से जाना कि यह बीबी ख़लीफ़ाके महल की है फिर उसके रूप अनूप पर दृष्टिकर मोहित हुआ परंतु इतनी सामर्थ्य न हुई कि वह पूछे कि क्यों चुपचाप संदूक़ में पड़ीहै पहिले ग़ानिम ने वही द्वार जिसे दास खुला छोड़गये थे जाके मूंद दिया तदनन्तर उसे सन्दूक़में से बाहर निकाल बराबर धरतीपर रक्खा जब उसके बायुलगी तो कुछ हिलने लगी और आधेनेत्र खोल

ग़ानिमके देखेबिना इस सुंदरस्वरसे पुकारी कि अरीज़ोहरा, बिस्तान, शाहसफ़रम् मरकत्लां, कासैबोस, नूरुन्निहार तुमसब कहांहो यह सब नाम उसकी दासियोंके थे जो रातदिन उसकी सेवा करतीथीं और वह उनको सर्बदा पुकारतीथी इसके सुनने से ग़ानिम प्रसन्नहुआ जब उसने देखा कि कोई उत्तर नहीं देती बिस्मित हुई और भलेप्रकार नेत्रखोले क्या देखा कि मैं क़बरिस्तान में पड़ीहूं इससे वह अत्यन्त व्यथित होय बड़ेशब्द से कहनेलगी यह मुर्दा जीनेके लिये यहां आया है वह प्रलयका समय आगया मैं संध्या से अपना बुरा हाल देखतीहूं ग़ानिमने उसके सन्मुखजाय कहा मैं बिदेशीहूं दैवयोगसे तुम्हारे प्राण बचाने के लिये यहां पहुँचा अब जो आज्ञाहो उसे प्रतिपालन करूं उस सुन्दरी ने उससे पूछा मैं क्योंकर यहां पहुँची और कौन मुझे यहां लाया ग़ानिमने सम्पूर्ण बृत्तांत कह सुनाया फिर उस मृगनयनी ने ग़ानिमको देखतेही मुख ढांप कहा ईश्वरका धन्यबाद है कि मेरे प्राण बचाने के लिये उसने तुमको यहां भेजा इतना कह फिर ग़ानिम से बोली कि तुम सबेरे नगरमें जाय एक ख़च्चर किरायेपर लाइयो मैं इसी संदूक़ में लेटी हूं तुम इसमें क़ुफ़ुलदे ख़च्चर पर लाद मुझे लेचलियो मैं तो पैदल तेरे साथ चलती परन्तु इन बस्त्रोंसे पुरमें न छिपूंगी और मैं तेरेघर पहुँच अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाऊंगी ग़ानिम ने सन्दूक़ को गढ़े से निकाल मिट्टी से साफ़ किया फिर वह सुन्दरी उसमें जाय लेटरही और ग़ानिम ने सन्दूक़ इस युक्तिसे बन्दकिया जिसमें बायु न रुके भोरको क़बरिस्तान से निकल पुरकी ओर चला नगरका द्वार खुला देख तुरन्तही भीतर चलागया और एक ख़च्चर किरायाकर फिर उस क़बरिस्तानमें आया और ख़च्चरवालेसे कहा मैं एक ख़च्चर किरायेकर एक सन्दूक़ क़बरिस्तान तक लाया था बहुत चाहा कि वह ख़च्चरवाला रात्रिभर यहां ठहरे और भोरको असबाब घर पहुँचादे उसने न माना बस्तु छोड़ चलागया अब तू इस सन्दूक़ को नगर में मेरे घर पहुँचादे फिर उन दोनोंने सन्दूक़ उठाय ख़च्चरकी पीठपर रक्खा और उसे चारोंओर से बांध नगर की ओर चला ग़ानिम सम्पूर्ण

मार्गमें अतिडरताजाता था कि कहीं यह भेद खुल न जावे जब वह सन्दूक़ समेत अपने घरमें पहुँचा तब प्रसन्नहो खच्चरवालेको बिदा किया और अपने दास से कहा कि घरका द्वार मूंददे उसने बंद करदिया फिर उस सुन्दरीको सन्दूक़से निकाल पूछा अब तुम कैसी हो उस सुन्दरीने उत्तरदिया मैं अच्छीहूँ तदनन्तर ग़ानिम एकदास को अपनेसाथले बाज़ारमें गया और उसकेहेतु नानाप्रकारके दिव्य भोजन अपनेहाथसे मोल लिये और उत्तम मद्य जो बादशाह के निमित्त जातीथी और फलवालेकी दूकानसे उत्तमफल मोलले घर में आया और उनको सुधारके थालियों में लगाय उस सुंदरीके निकट ले जाकर कहा भोजनकरो उसने कहा जबतक तुम मेरे साथ बैठके न खाओगे मैं न खाऊंगी ग़ानिम भी लाचारहोकर बैठगया जब उसने अपने मुखसे वस्त्रउतार एक ओर रखदिया ग़ानिमको उस वस्त्रके एकओर बड़ेअक्षरों में रेशमसे कढ़ाहुआ देखपड़ा उस में लिखाथा कि हे हारूंरशीद ! मैं तेरी हूँ और तू मेरा है ग़ानिम उसेपढ़ बहुत घबड़ाया और कहनेलगा हे मृगनयनी ! तुमअपना नाम और बृत्तान्त बतलाओ उसने कहा मेरा नाम फ़ितनह है मैं बादशाह हारूंरशीद की प्रियाहूँ बाल्यावस्था से मैं उनके महल में आई हूं और थोड़े ही काल में मैं औरों से सब बातों में निपुण होगई ख़लीफ़ा मेरी बुद्धि और स्वरूपको देख प्यारकरने लगा और अपने निकट एक मन्दिर मुझे रहने को दिया और बीस दासियां और सेवक मेरी सेवा और रक्षाके लिये नियत किये और इतना धनदिया कि मैं और शाहज़ादियोंके समान रहनेलगी ज़ुबैदा मलका जो ब्याहता स्त्री है इस बृत्तांतको सुन मुझसे डाहकरनेलगी और मेरे मारडालने के बिचारमें हुई परंतु मेरी चातुरता से उसका बल न चलसका निदान धीरे २ किसी मेरीदासी को लोभसे बहँकाया जब बादशाह किसी शत्रुसे युद्ध करनेगया उसी बांदीने अवसरपाय पहिले रातको तो मुझे शरबत में कोई मूर्च्छा की औषध पिलाई जिसके पीने से मैं अचेत होगई तब उसने मुझे संदूक़ में बंदकर गड़वा दिया परंतु मेरी आयु बाकी थी इस कारण ईश्वरने तुझे उस

क़बरिस्तानमें पहुँचाया और तेरे मनमें डाला तूने संदूक़को खोला
और मुझे अपने घरलाया यदि यह बात ज़ुबैदा सुनै तो निस्संदेह
तुझे मरवाडाले अब जबतक कि बादशाह बाहर है निस्संदेह मैं
तेरे भवन में हूँ जब वह नगर में आवेगा और मेरे न होनेके समा-
चारसुन अत्यन्त बिकलहो अपनी सामर्थ्यभर ढुँढ़वावेगा और
जिससमय उसे यह मालूमहोगा कि मैं तेरे घरमेंहूँ उसीसमय मुझे
बुलवावेगा और तुझे बधकरेगा ग़ानिम यहसुन बहुत घबराया और
कहनेलगा हे मृगनयनी ! तुम तो बचगई परंतु मेरा बचना कठिनहै
क़ितनहने कहा कोई किसीके घरका बृत्तान्त नहीं जानता जबतक कि
उसके घरका कोईभेदी प्रकट न करे ग़ानिमने कहा यहसत्यहै परंतु मेरे
दास किसीसे मित्रता नहीं रखते जिनसे कुछ इस विषय में बार्ताकरें
इसके बिशेष सबकोई जानते हैं कि तरुणपुरुष बिनादासी वा किसी
सुंदरीके नहीं रहसक्ता यदि कोई तुमको मेरादास देखभी लेगा तो उसे
यही संदेहहोगा कि तुमभी वहीहो फिर ग़ानिम अपनी शक्तिभर किसी
दासके सन्मुख क़ितनहको न करता यही बार्तालाप करतेथे कि इतनेमें
किसीने उसकाद्वार खड़खड़ाया ग़ानिमउठा इतनेमें एकदासने आके
कहा कि भोजन आपके निमित्त लायाहूँ ग़ानिम भोजनकी थालियां
दासके हाथसे ले आप घरमें लेगया और क़ितनहको भोजनकराय
कहा सुन्दरी अब तुम आराम करो मैं अभी आताहूँ यहकह बाज़ार
को गया और दो बहुतअच्छी बांदियां और उत्तम उत्तम वस्त्र मोल
ले आया और बांदियोंको क़ितनहकी सेवा करने के लिये आज्ञादी
वह मनप्रसन्न होकर कहनेलगी अब मैं ईश्वरसे यह मांगतीहूँ कि
मेरे शीघ्र दिन फिरैं और पूर्व अधिकार प्राप्तहो तो मैं तुमसे उऋण
होजाऊं फिर क़ितनह ने बार्तान्तर में कहा हे स्वामी ! ग़ानिम ने
कहा मेरा इतना सन्मान न कीजिये किंतु अपना सेवक समझिये
क़ितनहने कहा यह तुम क्या कहतेहो यदि इससे अधिक सत्कार
करूं तो उचितहै क्योंकि तुमने मेरे प्राणबचाये मैं तुम्हारे उपकार
का हज़ार जिह्वासे बखान नहीं करसक्ती फिर क्योंकर तुम्हें दास
समझूं यद्यपि दोनों में अधिक प्रीति होगई थी परंतु ग़ानिम को

भलीभांति मालूमथा कि जो बस्तु मुख्य स्वामीकी हो वह सेवक को त्याज्य है जब सन्ध्याभई उसने दीपक प्रज्वलितकर बिछौने बिछाये और उनपर फल, स्वच्छमद्य बुग़दादकी रीत्यनुसार रक्खी वहां के बासी दिनको तो मांस और रोटी आदि भोजन करते रात्रि को केवल फल खाते निदान वे दोनों भोजन करने लगे और दो तीनगिलास मदिराके पीकर मदमत्त हो मीठेस्वरों से गानेलगे प्रथम ग़ानिमने उसीसमय के रचित पद प्रीतिके स्वरोंसे गानकिये फिर फ़ितनह ने भी उसी बिषयके गीत सुनाये जब रात्रि बहुतसी बीती ग़ानिम फ़ितनहसे बिदाहो दूसरे स्थानमें जाय सोरहा बहुकालपर्यन्त वे दोनों इसीप्रकार आनन्द भोगतेरहे और सिवाय बार्ताके कोई और बात न होनेपाई ख़लीफ़ाके भयसे ग़ानिम रैनिको अकेला सोता और दिन को कहीं घरसे बाहर न जाता और जितना ग़ानिम अपने तन मनसे फ़ितनहपर मोहित था उतनाही वह उसपर मोहितथी परन्तु किसी बिषयसे प्रयोजन न रखते बुग़दाद में सिवाय एक दासी के इस बात को कोई न जानता और वह तीनों दासभी जो सन्दूकको क़बरिस्तान में गाड़आयेथे न जानते परन्तु मलिका ज़ुबैदा अपने पतिके भयसे प्रतिसमय चिन्ता में रहती इसी सोचमें बृद्धा को कि उसीकी दाई और बाल्यावस्था में उसे खिलायाथा बुलबाभेजा जब वह आई तब उससे कहा हे माता! मैं तुमसे सदैव अपनादुःख कहा करतीहूं और तुम मुझे उसमें सुमत बताय मेरी सहायता करतीहो अबभी तुमको वैसी ही सलाहके लिये कि जिससे मुझे रातदिन आराम नहीं है बुलाया है तुम कोई इस बिषय में उपाय बताओ कि जिससे मैं बचूं फिर अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया वह बृद्धा कि महाधूर्ता थी कहनेलगी हे प्यारीपुत्री! यह कौन बड़ीबात है तुम धैर्यरक्खो कुछभी चिन्ता मतकरो मैंने ख़लीफ़ाको इस बातके ख़फ़ा न होनेकेलिये एक यत्न सोचाहै तुम वही करो ज़ुबैदाने कहा वह क्याहै उस बृद्धा ने कहा कि एक लकड़ीका पुतला बड़ासा बनवाओ मैं उसे पुराने बस्त्र से लपेटूंगी तुम आज्ञादेना कि इस लोथको बादशाही क़बरिस्तान में गाड़ो और तुरन्तही उसपर बड़ाबिशाल

मक़बरा बनवाओ और एक बड़े चित्रको काले वस्त्रसे पहिनाय क़बर पर रक्खो और उस क़बरके चारोंओर बहुतसे दीपक प्रज्वलित कराना और तुम आपभी उसके शोक में कालेबसन पहिन क़बरि-स्तानमें कभी कभी जाना इसीभांति तुम्हारी और फ़ितनह की दा-सियां और सब दरबारी काले वस्त्र पहिन प्रतिदिन उस क़बरिस्तान में जाय बिलापकरें ख़लीफ़ा जब आय यह दशा देखेगा तो अवश्य घबड़ा के पूछेगा उससमय तुम अवसर पाय कहियो कि यह फ़ित-नह का शोकहै कि वह अकस्मात् तुम्हारे पीछे कालवशहुई और अमुक क़बरिस्तान में गाड़ीगई और उसकी क़बरभी बनवादी गई ख़लीफ़ा यहसुन निस्सन्देह रोवेगा और उसके मरनेका बिश्वास भी होजावेगा यदि तुम्हारी ईर्षा का बिचारकर क़बर खोद देखा चाहे तो क़बर खोदना और मृतकको निकालना धर्मशास्त्र के बिप-रीत है और दूसरे उसे क्या प्रयोजनहै कि एकदासीके लिये इतना परिश्रम करे इस हेतु मैं काष्ठ का पुतला बड़ी रक्षाके साथ किसी अच्छे कारीगर से बनवाऊंगी जिसमें कोई भी न जानेगा कि किस निमित्त बनवायाहै इतनाकह उसने कहा हे सुन्दरी ! उसी बांदीको जिसने फ़ितनह को शरबतसे मूर्च्छा की औषध डाल पिलाईहै चुपके से बुलाके कहो तू अपनेलोगों से प्रसिद्धकर कि मैंने फ़ितनह को अ-पनी शय्यापर सुवा पायाहै और उस मकानमें जिसमें फ़ितनहथी मूंद भीतर उसके किसीको न जानेदेवे और यही बात तुम्हें कहलाभेजे तुम इसबातको सुनतेही मसरूरको शोक करनेकी आज्ञा देना ज़ुबैदा यह बचन बृद्धासे सुन हर्षितहुई और अपना सन्दूक़ खोल अमोल हीरेकी एक अँगूठी उसेदी और कण्ठसे लगाय कहा मैं इस उपाय बताने से तुम्हारा बड़ा गुण मानती हूं मुझे धैर्यहुआ तुम काष्ठ का पुतला तुरन्त बनवालाओ और शेष वस्तु मैं अभी यहां तय्यार कराती हूं वह बड़ापुतला बनवालाई और उसपर पुराने वस्त्र लपेट दिये और मसरूर को आज्ञादी कि फ़ितनह की लाशको लेजाय बादशाही क़बरिस्तानमें गाड़े उसने उसकी लोथ लेजाय वहीं गाड़ दिया फिर आप दासियोंसमेत कालेवस्त्र पहिर उसकेलिये रोनेलगी

नम्बर ३६ मुतअ़ल्लिक़े सफ़े ५१२ तृ॰ भा॰

चित्र ग़ामिन बीमार का मसजिद में
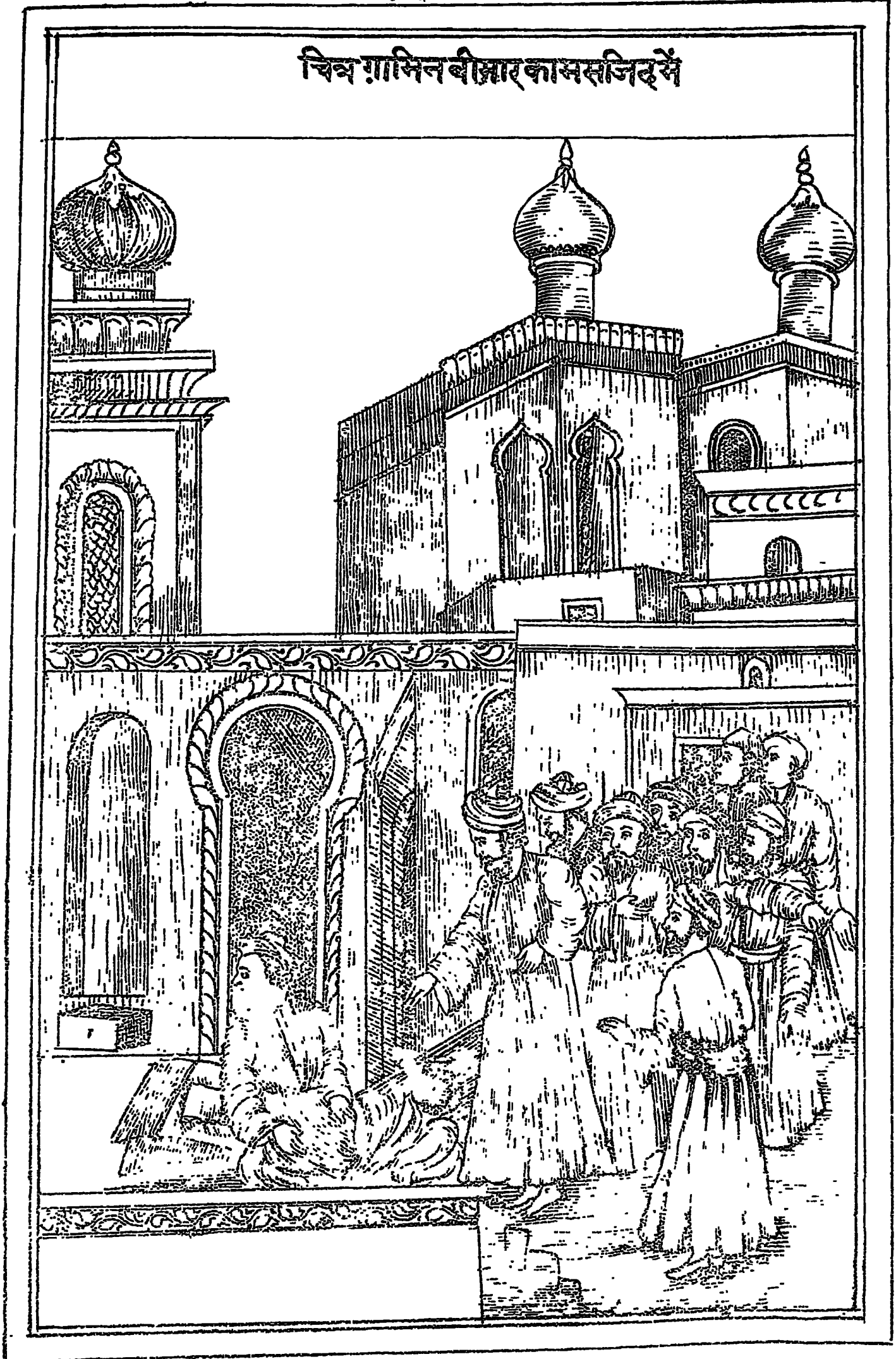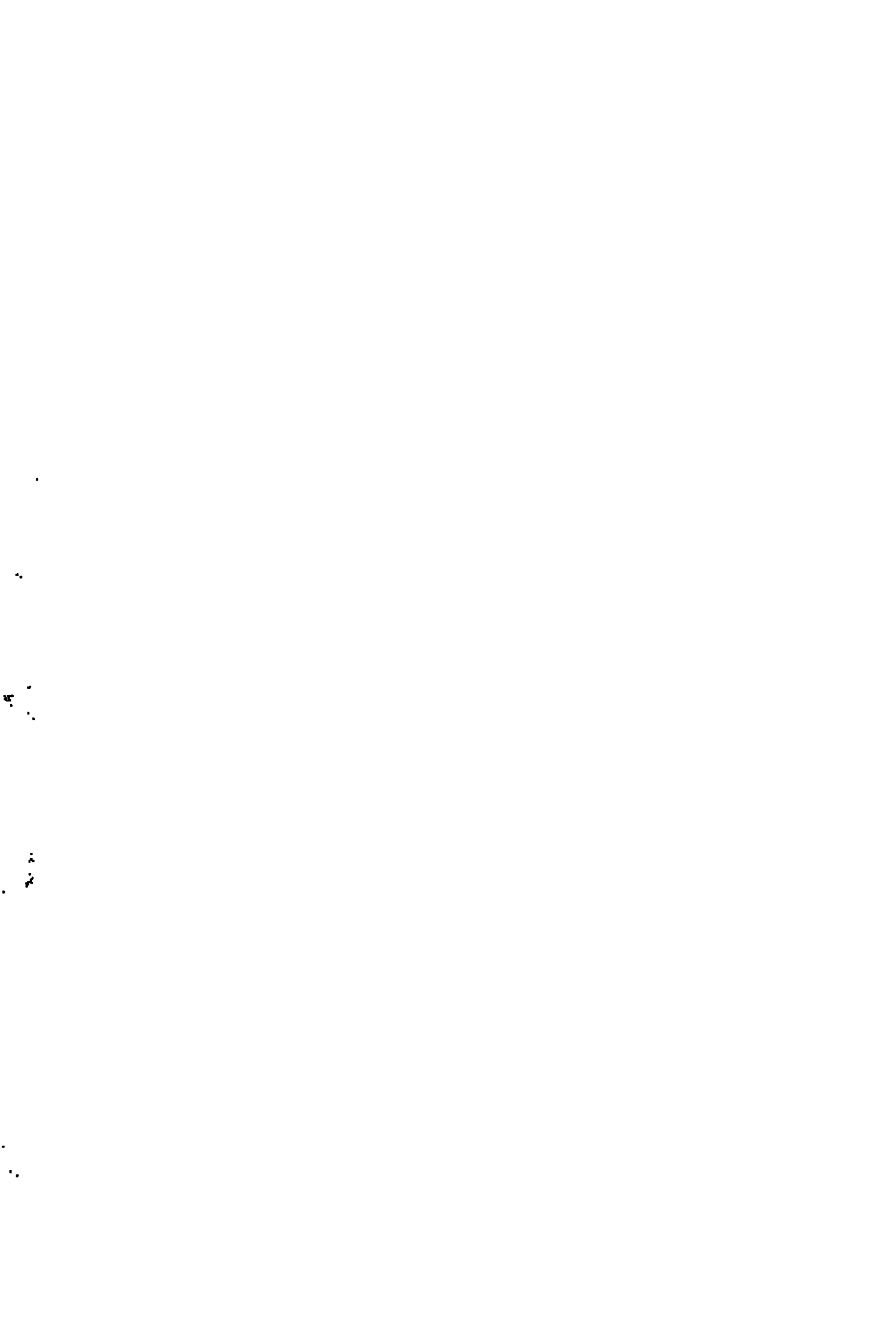
दूसरे दिन थवैयों को वहां भेज उसकी बहुतबड़ी क़बर बनवाई भोर और संध्या को दास दासियां क़बरिस्तान में एकत्रहो फ़ितनह के लिये शोक करते निदान नगर भर में फ़ितनह का मरना प्रसिद्ध होगया ग़ानिमने इस समाचार को सुन फ़ितनह से कहा हे मृग-नयनी! तुम्हारे कालबश होने का समाचार नगर भर में विख्यात हुआहै फ़ितनहने कहा ईश्वरका धन्यबाद है कि मैं तुम्हारे कारण जीतीहूं यदि ईश्वर चाहेगा तो यह सब छल जो वे करती हैं उसी से लज्जितहोंगी और हम तुम दोनों का मनोरथ एक न एकदिन सिद्ध होगा और इस सेवा और परिश्रम का फल जो तुमने बिना प्रयोजन किया है ख़लीफ़ा एक न एकदिन तुमको देगा और ईश्वर तुमको मुझे देडाले ग़ानिमने कहा मैं योंहीं तुम्हारी दयासे प्रसन्न हूं बुधजनोंने कहाहै जो बस्तु कि स्वामीकी है सेवकको उसे बर्तना न चाहिये किन्तु दृष्टिभी न करनी चाहिये निदान तीन महीनेके पश्चात् ख़लीफ़ा अपने शत्रुओं को बिजयकर बुग़दाद में आया सब से अधिक उसे फ़ितनह के भेंटकी लालसा थी पहिले उसीके मकान में गया तो ज़ुबैदा और सब छोटे बड़ोंको कालेबस्त्र पहिने शोक में देख बिस्मित भया कि यह किसका शोक है ज़ुबैदा ने छलसे ठंढी श्वासखींच कहा यह बिलाप फ़ितनह का है कि तुम्हारे पीछे अकस्मात् मृत्युसे कालबश भई ख़लीफ़ा इस समाचारको सुनतेही शोक-सागर में अचेतहो गिरने लगा तो जाफ़र वज़ीरने जो उसके साथ था उसे सँभाल लिया जब वह सचेतभया तो पूछने लगा कि मेरी परमप्रिया फ़ितनहको कहां गाड़ा है ज़ुबैदाने कहा कि मैंने आपही उसका सब काम किया और उसकी मसजिद बनवाई यदि आप आज्ञादें तो मैं आपके साथ वहां चलूं ख़लीफ़ा ने कहा तुम्हें कुछ अवश्य नहीं और उसी समय बस्त्र बदलने बिना ख़लीफ़ा मसरूर को साथले क़बरिस्तान में गया तो क्या देखताहै कि एकचित्र काले कपड़े पहिनेहुये रक्खा है और उसके चारोंओर दीपक जलरहे हैं और एक बस्तु वहां बड़ीसजावट से धरी है अत्यन्त बिस्मित और आश्चर्यितहुआ कि सवतियाडाह होनेपर भी ज़ुबैदाने इस भड़क

से क़बर बनवाई है ऐसा न हो जो बास्तव में फ़ितनह न मरी हो और मेरी स्त्री ने अवसरपाय महलसे उसे निकालदियाहो वा किसी दूर जगह भेजवादियाहो जहां से कोई हाल उसका न सुनपड़े उस के उपरान्त वह बिचारनेलगा कि मुझे बिश्वास नहीं कि ज़ुबैदाने मेरी प्रियाकी अपेक्षा ऐसा कियाहो फिर बहुकालपर्यन्त चिन्तित रहा निदान आज्ञादी कि इस चित्रको जो क़बरपर रक्खा है तुरन्त उतार उसके बस्त्र उतारो जब वह नग्न कियागया तो क्या देखा कि एक काष्ठके पुतले को कपड़े पहिराये हैं यह देख उसे अधिक छल ज्ञात हुआ और चाहा कि क़बर खुदवाके फ़ितनह की लोथ देखें कि बास्तव में वह मरीहै वा नहीं परन्तु बिद्वानोंने उसे मना किया कि हमारे धर्मशास्त्र में क़बर खुदवाना बर्जितहै यह सुन ख़लीफ़ा ने क़बरको न खुदवाया और बहुतसे क़ुरान पढ़नेवालों को उसपर नियत किया प्रायः आप भी वहां जाता और रोता निदान एक मासपर्यन्त फ़ितनह के ध्यान में जाफ़रवज़ीर और सभासहित रुदन करता रहा कोई दिन ऐसा न था कि ख़लीफ़ा उसकी सुधि न करता हायहाय कर न रोता इस अवधि में सिवाय रोने पीटने के दूसरे कार्यकी ओर ध्यान ख़लीफ़ाने न दिया चालीस दिनतक उसकी यही दशा रही फिर उसने कालेबस्त्र उतारे और सबको कपड़े बदलने की आज्ञादी तिसपीछे बहुतसी रातोंके जागरणके कारण शय्यापर जाय सोगया दैवयोगसे दो बांदियां अपनी चौकीके अनुकूल एक शिरहाने और दूसरी पांयतेकी ओर बैठीहुई चिकन काढ़ रहीथीं शिरहानेवाली का नाम नूरुन्निहार था और दूसरीका नाम नगहत पहिलीने ख़लीफ़ाको सोयाहुआ जान कहा मैंने आज शुभ समाचार सुनाहै हमारे स्वामी जब जागेंगे तब उनसे कहेंगी ख़लीफ़ा सुनतेही प्रसन्नहोंगे फ़ितनह नहीं मरी वह कुशलपूर्बक है दूसरीने कहा हे परमेश्वर! यह कैसी बातहै कि फ़ितनह अबतक जीती है उसने ऐसे बड़े शब्द से इस बचनको कहा कि ख़लीफ़ा जागउठा और कहनेलगा तुमने क्यों शोरकरके मुझे जगाया उस ने बिनयकी अय हुज़ूर! मेरा अपराध क्षमाकीजिये मैंने ऐसीबात

सुनी जिससे मुझे धैर्य न रहा अभी मैंने सुना है कि फ़ितनह जीती है ख़लीफ़ाने आश्चर्यितहो पूछा वह कहां है उसने बिनती की मैंने आज सन्ध्याको फ़ितनह के हाथका लिखाहुआ पत्र एक मनुष्य के द्वारा पायाहै जिसमें उसने अपना सम्पूर्ण बृत्तांत लिख दिया है मैं चाहतीथी कि आपको दिखाऊं पर जब मैंने देखा कि आपने एक महीने पीछे अब आराम किया है इसलिये वह पत्र दिखाना उचित न जाना ख़लीफ़ाने कहा उस पत्रको शीघ्र मुझे दे इतना बिलम्ब क्यों किया उसने वह पत्र झट ख़लीफ़ाको देदिया ख़लीफ़ाने बड़े हर्षसे उसे खोल पढ़ा उसमें फ़ितनहने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त और ग़ानिमकी सेवा का हाल लिखाथा ख़लीफ़ा ने वह पढ़ ग़ानिम के नामपर लज्जितहो महाअप्रसन्न हुआ और जुबैदाकी धूर्ततासे बड़े आश्चर्य में हो समझा कि फ़ितनह से ग़ानिमने अवश्य भोगकिया होगा यह बिचार मनमें कहनेलगा हे दुष्टे ! तू चारमास तक उस तरुण ब्यापारी के घरमें रही और मुझे मालूम न हुआ मैंने यहांपहुँच कितनादुःख तेरे मरनेमें उठाया निदान ख़लीफ़ा कोपितहो शय्यासे उठ सभामें आया वहां सभासद उसके आगमन की राह देखतेथे वज़ीर जाफ़र तख़्तके सन्मुख आय धरती चूम हाथ बांध खड़ाहुआ ख़लीफ़ा ने आज्ञादी मैं एक बिषयमें तेरी परीक्षा लेताहूं तू चारहज़ार सिपाही चौकीपहरेके अपने साथलेके ग़ानिम ब्यापारी दमिश्कके निवासीको जो अयूब का पुत्रहै पकड़ला और फ़ितनहनामक मेरी दासीको जो चारमहीने से उसके घरमें रहती है हाथसे जाने न पावे उसेभी पकड़ अपने साथ लेतेआइयो और उसके महलको खुदवाके धरतीके बराबर करडाल मैं उन दोनोंको कठिन दण्ड दिया चाहता हूं वज़ीर यह आयसु पाय सेनाले सिधारा और ग़ानिम का महल चारोंओर से घेरलिया और बेलदार भी घर खोदनेके लिये हाज़िरहुये तिस पीछे बरक़न्दाज़ों को आज्ञादी कि चैतन्यरहो किसी ओरसे वह ब्यापारी बाहर निकलने न पावे उस समय ग़ानिम और फ़ितनह दोनों भोजन करचुके थे अकस्मात् फ़ितनह ने घरके द्वारसे जो मार्ग में था

क्या देखा कि जाफ़र वज़ीर सेना लियेहुये द्वारपर खड़ाहै उसे वि-श्वासहुआ कि यह कटक ग़ानिमके पकड़ने के हेतु आयाहै समझ गई कि मेरा पत्र ख़लीफ़ाको पहुँचा उसने वज़ीरको मेरे लेनेको भेजा है महाभयभीतहो काँपनेलगी और यह भी विश्वासहुआ कि ख़-लीफ़ा मेरी आपत्तियोंको सुन कदाचित् मुझे कुछ न कहेगा परंतु ग़ानिमको देखतेही बध करडालेगा यह सोच उसने ग़ानिमसे कहा कि बहुत सेना हमें पकड़नेको नग्न खड्गलिये वज़ीरसहित खड़ी है और कोतवालभी उसके साथ है ग़ानिम यह बचन सुनतेही भयभीत हुआ कि बात करनेकी भी शक्ति न रही फ़ितनह ने कहा बैठे क्या हो समय कुछ नहीं रहा यदि मुझे प्यारकरते हो तो उठो और अ-पने वस्त्र उतार दासोंके कपड़े पहिन अपने मुख और हाथोंमें काली भस्म मलो और रसोई के पात्रोंका टोकड़ा अपने शिरपर रख यहां से निकल जाओ जिसभांति होसके अपनी रक्षाकरो सेना के लोग रसोइये का मज़दूर समझ तुझे कुछ न कहेंगे यदि पूछें कि मालिक घरका कहां है तो उनसे कहियो घरमें है ग़ानिमने कहा मुझे केवल तुम्हारेही लिये भयहै अपने प्राणका कुछ सन्देह नहीं फ़ितनहने कहा मेरा कुछ भी शोच न करो मैं अपने को घरकी बस्तु सहित बचालूंगी और जब ख़लीफ़ा से मेरा सामनाहोगा तो तेरी ओरसे भी सफ़ाई करदूंगी यदि इस समय तू उसके सन्मुख जावेगा तो निस्सन्देह वह तुझे मारडालेगा ग़ानिम यह सुन बहुत घबराया कि क्या करूं फ़ितनहने उसे चिन्तामें देख कहा हे प्यारे! जो मैं कहती हूं करो ग़ानिमने निरुपायहो दासोंके महामलिन वस्त्र पहिरे और सियाही और चूल्हेकी भस्म देहपर लगाय ख़ालीपात्रों का टोकड़ा शीश पर रख फ़ितनह से बिदाहो बाहर निकला और सीधा किसी कूचेकी ओर चला सिपाहियों ने ग़ानिमको रसोइयेका लड़का समझ कुछ न कहा जब वज़ीर के सन्मुखसे होके चला उसने भी न जाना कि यह वहीहै जिसके पकड़नेको यहां आयाहूं और रिसालदार आदि सिपाही जो वज़ीरके पीछे खड़े थे उन्होंने भी उसे न पहिचाना ग़ानिम उसीप्रकार से नगरके द्वारतक पहुँचा और वज़ीर द्वार खुला

पाय भीतर आया तो क्या देखता है कि मन्दिर में बहुत संदूकें और थैलियां रक्खी हैं जिनमें उत्तम उत्तम बस्तु और बहुतसी द्रव्य भरी है और वह सबधन ग़ानिमका था जो उसने अपने ब्यापारकी बस्तु बेंचकर धरा था फ़ितनह वज़ीरको देख उठी और चरण छू थरथर काँपने लगी जैसे कोई मारेजाने के समय काँपता है और वज़ीर से बिनती की कि जो कुछ ख़लीफ़ा की आज्ञा है वह मेरे शीश नेत्रों पर मुझसे सब बर्णन कीजिये वज़ीर ने उसके चरण चूमकर कहा हे सुन्दरि! मैं केवल इसीहेतु आया हूं कि तुम्हें यहां से शाहीदरबारमें लेजाऊं और उस ब्यापारीको जो इस घरमें रहताहै ख़लीफ़ा के निकट पहुँचाऊं फ़ितनहने कहा मैं बर्तमानहूं मुझे लेचलो और वह ब्यापारी जिसने मेरेप्राणकी रक्षाकी है वह तो यहां नहीं है अनुमान एकमासके बीताहोगा कि वह ब्यापारकी बस्तु लेके दमिश्क़को चला गया और मुझे अपनी बस्तुकी रक्षाके लिये जो इन सन्दूक़ों और थैलियों में है यहांपर छोड़गया है अब मैं बिनय करतीहूं कि इनसन्दूक़ों और थैलियों को यहां से उठाके बादशाह के महल में भिजवादो वज़ीरने कहा बहुत अच्छा और मज़दूरोंके शिरपर उन सन्दूक़ों और थैलियों को रख मसरूरको सौंपदिया कि ख़लीफ़ाके निकट भेजदो फिर वज़ीरने कोतवाल के कानमें कहा कि तुम इस घर को खुद्वाके धरतीके बराबर करडालो यदि कहीं वह ब्यापारी छिपा होगा तो बिदित होजावेगा निदान इधर मकान खुदनेलगा और उधर वज़ीर और फ़ितनह दोनों बांदियों समेत दरबार शाहीको सिधारे कोतवाल ने क्षणभरमें उस मकानको खुदवाय मैदान करादिया जब कहीं भी ग़ानिमका चिह्न न पाया तो वज़ीर से आय यहहाल कहा ख़लीफ़ाने वजीरको दूरसे आतेदेख कहा क्यों तूने मेरी आज्ञा पालनकी? उसने बिनयकर कहा अयहुज़ूर! मैंने आपकी आज्ञानुकूल पहिले तो ग़ानिम को ढूंढ़ा बिदित हुआ कि एक महीनेसे वह दमिश्क़को चलागया फिर उसकाघर खुद्वाडाला और जो कुछ धनादिक हाथलगा उसे मसरूरको सौंपदिया और फ़ितनहको लेतेआया हूं ख़लीफ़ा ग़ानिमके न पकड़े जानेपर अधिक कोपितहुआ और

फ़ितनह को अपने समीप बुलवाय न तो उससे कुछ बात की और न उसकी ओर देखा समझा कि यह अवश्य व्यापारीके साथ रहीहै फिर महाकोपितहो मसरूरको आज्ञादी कि इस दुष्टाको लेजाय अमुक कारागृहमें क़ैदकरो यह कारागृह शाहीमहलकी दीवार के समीप था प्रायः अपराधी बांदियां उसी कारागृहमें क़ैद कीजातीं मसरूर ने यह आज्ञा पाय उसे वहीं क़ैदकिया और ख़लीफ़ाने उसी क्रोध में मुहम्मद जबेनी और दमिश्क़ के बादशाहके नाम यह पत्र लिखा॥

हारूंरशीद का पत्र मुहम्मदजबेनी के नामपर॥

भाई तुम जानो और आगाह हो कि ग़ानिम नामी दमिश्क़ का सौदागर अयूबका पुत्र मेरी फ़ितनह अतिसुन्दरी दासीको बहँका के लेभागा तुम इस पत्रके पढ़तेही अपनी सामर्थ्यभर उसे ढूँढ़ना और जहां पाना बेड़ी हथकड़ीडाल तीनदिन तक उसे सम्पूर्ण नगर में विख्यात करना किन्तु कोतवाली के सिपाहियोंको आज्ञादेना कि हरगली में उसे कोड़ेमारें और एकमनुष्य उसके आगे यह कहता जावे कि यह दण्ड उसी मनुष्यका है जो कोई बादशाहकी चोरीकरे वा उसकी दासीको भगायलेजावे फिर पहरेमें करके उसे मेरे निकट भेजदेना और उसका घर खोद हल चलवाना यदि उसके माता, पिता, पुत्री, बहिन, भाई जो कोई उसके कुटुम्बमें से वहांहों उनको भी इसीभांति का दण्ड देना और जो कोई उस नगरका निवासी प्रकट वा गुप्तमें उनकी सहायता करे उसको भी यही दण्डदेना इतना लिख पत्र बन्दकिया और उसपर अपनी मुहर बनाय दूतको दिया और आज्ञादी कि तुरन्त दमिश्कको पहुँच और एककबूतर अपने साथ लेताजा पत्रकी रसीद जबेनी से लेके उसके पंखमें बांध इधरकी ओर उड़ादीजियो जिससे मुझे मध्याह्नपर्यन्त मिले उससमय में कबूतर एक प्रकारके ऐसे थे कि महीनेका रास्ता चारदिनमें लांघ जाते और जिस नगर वा स्थानमें उत्पन्न होते वा पालेजाते वहां पहुँचते निदान दूत एक रात दिनमें दमिश्क़में पहुँचा और जबेनी के सन्मुख जाय पत्रदिया उसने अपने तख़्तसे उतर पत्रको बड़े सन्मानसे ले अपने शीशपर रक्खा और तीनबेर चूमकर पढ़ा

उसके पढ़तेही घोड़ेपर सवारहो अपने सरदारों और कोतवाल को साथले ग़ानिम के घरगया ग़ानिम जबसे दमिश्कछोड़ बुग़दाद में गयाथा तबसे कोई भी पत्र अपनी माताको न भेजाथा केवल उन्हीं ब्यापारियों से जो ग़ानिमके साथ बुग़दादको गये थे उसकी माताको कुशलका कुछ बृत्तान्त बिदित हुआथा इसीकारण उसे विश्वासहुआ कि ग़ानिम मरगया यदि जीता होता तो इस अवधि में कुछ न कुछ हमें समाचार अवश्य भेजता निदान अतिबिलाप कर ऐसा शोक किया जैसे कोई अपनेही सन्मुख मराहुआ देखे और एक क़बर ग़ानिमकी अपने गृहमें बनवाय उसका चित्र उसपर धर रात दिन उसी क़बरपर रहाकरती और भोर और सन्ध्या उसकी सुधिकर रोती मानों वास्तव में उसकी लोथ वहांही गड़ी है और अलकनब उस की पुत्री ग़ानिमकी बहिन भी उसीभांति अपनी माताके साथ रोती पीटती और कभी कभी गलीके लोगभी उनका रुदन सुन उनके साथ रोते निदान जबेनी ने उसके द्वार पहुँच हांकदी तो भीतरसे एक बांदी आई जबेनीने ग़ानिमको पूछा वह दासी प्रथम तो दमिश्कके बाद-शाहको देख बिस्मितहुई फिर सँभलके कहा कि बहुत दिनहुये वह मर गया उसकी मा और बहिन क़बरपर बैठी रोयाकरतीहैं जबेनीने दासी के कहनेपर कुछ बिचार न कर अपने प्रधानों और सिपाहियोंसे कहा तुम उसके घरमें घुसके ढूंढ़ो इसके उपरांत आपभी घर में प्रवेशकर क्या देखताहै कि ग़ानिमकी माता और बहिन उसकी क़बरपर बैठीहुई महाबिलाप कररही हैं उन दोनों आपत्तिकी मारियों ने परपुरुष को देख मुख अपना ढाँप लिया फिर ग़ानिमकी माता दौड़ बादशाह के चरणोंपर पड़ी बादशाहने कहा हे सुन्दरी! हम तेरे पुत्र ग़ानिमको ढूँढ़ते हैं वह यहां है या नहीं उसने कहा बहुत दिनहुये कि वह मर गया हम अब इस क़बरपर बैठीहुई शोकमें हैं यह कह ग़ानिम की सुधि कर इतना रोई कि आवाज़ उसकी बन्दहोगई और हिचकी लगगई जबेनी भी अत्यन्त दयावान् था यह दशादेख बेबशहोय रोनेलगा और अपने मनमें बिचारा यदि अपराधी है तो ग़ानिमहै उसकी मा बहिनने कौनसा अपराध किया हारूंरशीद महाकठोर है

कि इन बिचारी निर्दोष स्त्रियोंके दुःख देनेको ताकीद कर लिखा है इतने में वह मनुष्य जो नगर में चहुँओर ग़ानिमके ढूँढ़ने को गये थे आये और बादशाहसे कहा हमने ग़ानिमको नहीं पाया और ग़ानिम की मा बहिनके रोने पीटने से बिदितहुआ कि वह मरगया जबेनी बादशाह न चाहताथा कि इनको किसी भांतिका क्लेशदें परन्तु हारूँ-रशीदके भयसे लाचारहो ग़ानिमकी मातासे कहा हे माता! तुम और तुम्हारी बेटी इस घरसे निकलो यह सुन वह दोनों बेचारियां वहां से निकलीं तब जबेनी ने अपना वस्त्र जो बहुत चौड़ा और लम्बाथा उन्हें उढ़ादिया और अपने निकट उन्हें बैठालिया तिस पीछे उसने पुरबासियों को आज्ञादी कि इस घरको लूटलो यह सुन हज़ारों म-नुष्य उस गृहमें घुसपड़े जो कुछ धन, वस्तु बर्तमानथा लूटके लेगये वह दोनों स्त्रियां इस दशाको देख बिस्मितहुईं क्योंकि कुछ उनको इस आपत्तिका बृत्तान्त बिदित न था इसके अनन्तर बादशाह ने कोतवालको आज्ञादी कि इस घरको खुदवाय बराबर करदो कोत-वाल ने बादशाहकी आज्ञापाय घरको खुदवाडाला तिस पीछे बाद-शाह ने उन दोनों मा बेटियों को अपने महल में लेजाय उनसे कहा मैंने सब दुःख तुमको हारूंरशीद बादशाहकी आज्ञासे दिये दूसरेदिन आज्ञादी कि इनदोनों को नग्न करडालो और प्रजाके सन्मुख चाबुक मारो जिससमय वस्त्र उतारेगये जबेनी को उनका शरीर कोमल और लाल देखकर दया उपजी परन्तु बादशाहकी आज्ञासे लाचार था निदान उनके बचानेको एक बहुत मोटा कम्मल घोड़ोंके बालोंका उन्हें पहिना दिया और उनका शिर बन्दकर उनके शिरके केश बिथ-राय दोनों कंधोंपर डाल दिये अलकनब के बाल बहुत पतले और इतने लम्बे थे उसकी एँड़ीपर्यंत पहुँच धरती से जायलगे निदान इसी दुर्दशासे उन्हें पुरबासियों के समूह में बिख्यात करते २ नगरमें लेगये और पीछे उनके कोतवाल सिपाहियों को लियेहुये साथहुआ और उनके आगे ढँढोरिया यह कहता चला कि यह दण्ड उन म-नुष्यों का है जो बादशाह का अपराध करें जब वह इस महादुर्दशा से बिख्यात होतीहुईं चौकमें आईं तो लज्जासे उन्होंने अपना मुख बालों

से छिपालिया सम्पूर्ण नगरके निवासी उन्हें इस दशामें देख रोनेलगे और नगरकी स्त्रियां कोठों और झरोखों से इस हालको देख और उनको निर्दोष समझ बहुत पछताईं बिशेष अलकनब का रूप अनूप और यौवन देख अतिचिन्ताकर हाथ मलनेलगीं और बालक उनके रोनेपीटनेको सुन भयभीत हुये जब सन्ध्याभई तो उनदोनोंको शाही महलमें लाये तब वह बेचारियां आपत्तिकी मारीहुईं इस घोरकष्ट से अचेत होगईं दमिश्ककी मलका भी उनकी यह दशासुन अतिखेदको प्राप्तभई यद्यपि बादशाहने निषेध कियाथा कि कोई भी इनकी सहायता न करे तथापि मलकाने अपनी दासियों को गुप्तभेजकर उनको भोजन भिजवाया दासियों ने वहां जाय उन्हें मूर्च्छित देख उनपर गुलाब नीर छिड़का और शरबत पिलाया जिससे वह सचेतभईं तब उनमें से एकने ग़ानिमकी मातासे कहा तुम्हारी दुर्दशा सुन सबको खेदभया बिशेष मलकाको और हमको मलकाने आज्ञादीहै कि तुम्हारी यथाशक्ति सेवाकरें ग़ानिमकी माताने उन दासियों का गुण माना और मलकाको बहुत से आशीर्वाद देकर कहा बादशाहने हम से यह नहीं कहा कि ख़लीफ़ा हमपर क्यों इतना कोपितभया जो इस दण्ड और अप्रतिष्ठाकी आज्ञादी दासियोंने कहा हे सुन्दरी ! तुम्हारे इस दुःखका हेतु तुम्हारा पुत्रहीहुआ जिसका नाम ग़ानिमहै उसपर दोष लगाहै कि वह ख़लीफ़ाकी एक महासुन्दरी चन्द्रमुखी प्रियाको छल से लेभागा इसहेतु बादशाहने क्रोधितहो तुम्हारे दण्डदेने की आज्ञा भेजीहै किसीको सामर्थ्य नहीं कि उसकी आज्ञा भंगकरे हमारे बादशाहने भी उसके भयसे निरुपायहो तुमको यह कष्ट दिया परन्तु इस बातसे मनमें बहुत पछताता है और हमभी तुम्हें निर्दोष देख पश्चात्ताप करती हैं ग़ानिमकी माताने कहा मैं अपने पुत्रके स्वभाव को भलीभांति जानतीहूं उसके शिक्षा और उपदेशादि में मैंने बहुत परिश्रम किया बिशेष बादशाही कार्यादिक मैंने उसे बड़े श्रम से सिखाये उससे कदाचित् ऐसा अपराध न हुआहोगा और वह सब जो कि हमपर अन्याय भया हमने उसे अपने मन से क्षमा किया यदि वह जीताहै तो यह सब हानि उसपर निवछावरहै अलकनब भी

चैतन्यहुई सबबातें सुनकर माताके कण्ठसे लगी और कहने लगी मुझे भी यह स्वीकारहै कि जो तुम कहतीहो मैं भी अपने भाई के जीनेका समाचार सुन अपने सबदुःख भूलगई इसके अनन्तर वह दोनों मा बेटियां परस्पर कण्ठसे लगीं और ग़ानिमकी सुधिकर बड़ी अप्रसन्नता से रुदन करनेलगीं फिर मलकाकी दासियों ने उन्हें भोजन कराया उन्होंने उनके कहने से दोचार ग्रासखाये दूसरे दिन जबेनी ने ख़लीफ़ा हारूंरशीद की आज्ञानुकूल कि उसने तीन दिन तक बराबर दण्ड देनेको लिखाथा उन दोनों मा बेटियोंको पूर्ववत् दुःख देनेके लिये बाहर निकाला पुरबासियों ने यह हाल देखते ही अपनी दूकानें न खोलीं और नगर से बाहर चलेगये और स्त्रियां भी यह दशा उनकी न देख सकीं और अपने अपने महल के द्वार मूंद भीतर बैठरहीं फिर तीन दिवस पर्यन्त कोई बाहर न निकला चौथे दिन दमिश्कके बादशाहने सम्पूर्ण गली बाज़ारों में यह इश्तिहार दिया कि कोई ग़ानिमकी मा बहिन को अपने घर में जगह न देवे और न उनकी सहायता करे और आज्ञा दी कि इस नगर से उन्हें निकालदो जिधर उनका मन चाहे उधरको चलीजावें निदान वह मा बेटियां जिस गली वा कूचे और जिस जान पहिंचानके निकट सहायता की आशासे जातीं वह उन से दूर भागता और बादशाह के भयसे उनके समीप न खड़ा होता ग़ानिमकी माता ने यह दशा देख लाचारहो अपनी पुत्री से कहा बादशाहकी आज्ञा से कोई हम को अपने घरमें न रहनेदेगा और न भोजनादिक की सुधिलेगा इस से उत्तमहै कि हम तुम किसी अन्य देशको पधारें फिर बादशाह जबेनी ने सम्पूर्ण समाचार लिख कबूतर के पंखमें बांध बुग़दादकी ओर उड़ाया हारूँरशीद ने उस पत्रके पढ़तेही फिर लिखा कि अपने नगर के तीनमंज़िल तक के गांवों में भी डौंड़ी पिटवाओ कि कोई उनको रहने न दे और किसी भांति से सहायता न करे जबेनी ने हारूँरशीदकी आज्ञानुकूल फिर डौंड़ी पिटवाई और उन्हें देश निकाला देके गुप्त आधी आधी अशरफ़ी उनको दी कि तुम दोनों अन्य देशोंमें जाय इसका कुछ मोललेके भोजन करना उन दोनों ने उसे

लेके भिक्षुकों के समान एक पुराने वस्त्रकी झोली गले में लटकाई और बहुत दूरजाय एकग्राम में पहुँचीं वहां किसानों की स्त्रियां उन्हें देख चहुँओर से एकत्रभई और उनसे पूछनेलगीं तुमने क्या ऐसा खलीफ़ाका अपराध किया जिसका तुमने इतना बड़ा दण्ड पाया यह सुन वह बिलाप करनेलगी ग्रामकी स्त्रियों ने यह दशा देख सम्पूर्ण बृत्तांत के सुनने की इच्छाकर उनसे कहा कि अपना सब हाल कहो गानिमकी माताने निरुपाय हो वह सब बृत्तांत कहसुनाया यह सुन सम्पूर्ण स्त्रियों को उनपर बड़ी दया उपजी और उनको धैर्यदे भोजन कराया और उनके ऊपरसे कम्मलउतार वस्त्र पहिराये तिसपीछे वह दोनों आपत्तिकी मारी उन्हें आशीर्वाद दे हलबनगरकी ओर चलीं दिनको चलतीं और रातको मसजिदों में उतर बोरियों पर पड़रहतीं यदि मसजिद न पातीं तो सरायों में रहतीं और भण्डारों में जाय मांगतीं और खातीं कईदिन पीछे हलबनगर में पहुँचीं परन्तु वहांका रहना उन्हें अच्छा न मालूम हुआ इसहेतु वहां से निकल मवस्सलमें आईं और वहांसे गानिमके भेंटकी आशासे बग़दाद में गईं जहां उनके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धभये यद्यपि गानिमका मिलना वहां उनको दुर्लभ था परन्तु आशा बलवान् है इतने दुःख भोगने परभी गानिमकी प्रीति उनको आकर्षणकर वहां लेगई जो कोई उन को मिलता गानिमको पूछतीं अब यहां से फ़ितनहका बृत्तांत कहते हैं बेचारी फ़ितनह उसी सूक्ष्म कारागृह में रात दिन गानिम की सुधिकर महाबिलाप करती और उसकी अभाग्यतापर धिक्कारदेती बहुधा खलीफ़ा रात्रिसमय मन्दिरके सहन में जो उस कारागृह के निकट था टहलता और राज्य के माली मुल्की उपाय सोचता दैवयोगसे एकरात्रिको वह वहां टहलताथा कि अकस्मात् एकमहापीड़ायुक्त शब्द उसे सुनपड़ा वह उसे सुनके खड़ाहोगया और फ़ितनह अपनी प्रियाका शब्द पहिंचाना कि महाशोकसे कहरही है हे भाग्यहीनगानिम! तू कहांहै और तुझपर क्या बीततीहै क्यों तूने मेरी सेवा की जिसके बदले तू इसदुःखमें पड़ाहै तेरे परिश्रमका यही फल था कि भलाईके बदले बुराईहुई द्रव्य तेरा यों नष्टहुआ मुझे मालूम नहीं तू

जीताहै या खलीफ़ाके भयसे मरगया यह कह फिर कहा हे खलीफ़ा! तूने निर्दोष ग़ानिमपर ऐसी अनीतिकी कि किसी बादशाहने किसी मनुष्यपर ऐसा न कियाहोगा ईश्वरसे तू नहीं डरता जिसदिन अर्थात् प्रलयमें न्यायार्थ मनुष्य ईश्वरके सन्मुख खड़ेहोंगे और भले और बुरे पूछेजावेंगे उस समय तू इसअन्यायका क्या उत्तरदेगा और क्योंकर इस अन्यायसे छूटेगा जब फ़ितनह यह बचन कहचुकी तो हायहायकर महाविलाप करनेलगी खलीफ़ा यह सुन अत्यन्त लज्जितभया और अपने मनमें कहनेलगा जो फ़ितनहने कहा सत्यहै बड़ा अनर्थभया कि मैंने केवल अपनेही बिचारसे उनपर इतना कोप किया और ग़ानिमकी मा बहिनको इतना दण्ड दिया यह नीति के बिपरीत है इसके अनन्तर अपने महलमें जाय मसरूरको बुलाय कहा शीघ्र फ़ितनहको कारागृहसे निकाल मेरे सन्मुख ला वह फ़ितनहसे प्रीति रखताथा और उसके क़ैदहोने से खेदको प्राप्त हुआथा यह आज्ञा पातेही हर्षितहो कारागृहमें गया और फ़ितनहसे कहा हे सुन्दरी! मेरे संगचलो तुम्हें खलीफ़ाने बुलायाहै मुझे विश्वासहै अब तुम यहां से छुटकारापावोगी निदान मसरूर उसे खलीफ़ाके निकट लेगया वह वहां जातेही शीश अपना खलीफ़ाके चरणोंपर रख रुदन करनेलगी खलीफ़ा ने उससे प्रथम यह प्रश्न किया कि तूने क्योंकर मुझे अन्यायी ठहराया सत्यकह कौन मनुष्यहै जिसपर मैंने अनीति की तू भलीभांति जानतीहै कि मैं अनीति नहीं करता यह सुन फ़ितनह समझगई कि वही बातें जो मैंने कारागृहमें कहीथीं खलीफ़ाने सुनी यह सोच फिर कहनेलगी हे स्वामी! यदि कोई अनुचित बचन मेरे मुखसे निकले तो आप क्षमा कीजियेगा मैं सम्पूर्ण बृत्तांत बर्णन करतीहूं अयूबका पुत्र ग़ानिम दमिश्क़का ब्यापारी है और उसका कुछ भी अपराध नहीं है उसने मेरे प्राण बचाये मुझे अपने घरमें रहने को स्थान दिया और आपके सन्मुख सत्य सत्य बिनय करती हूं कि प्रथम तो वह मुझे देख मोहित हुआथा और अज्ञानतासे उसे मुझ से बिहारकी इच्छाथी परन्तु जब मैंने अपना बृत्तांत उससे प्रकट किया तब उसने जाना कि मैं आपकी प्रियाहूं तो उसी समय से

अपनी इच्छा छोड़ कहनेलगा कि हे मृगनयनी! जो वस्तु स्वामीकी है वह सेवकों को त्याज्यहै निदान उसी दिनसे अपनी इच्छा त्याग मेरेसाथ सच्ची प्रीति रखनेलगा यह सुन खलीफ़ाने फ़ितनहका शिर धरती से उठाय अपने समीप बैठालिया और कहनेलगा अपना बृत्तान्त बिस्तारपूर्बक कह फ़ितनहने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त आदि से अन्तपर्यंत कह सुनाया खलीफ़ा ने कहा मुझे तेरे कहने पर विश्वास हुआ परन्तु मुझे अचम्भा है कि तूने अपने समाचार न दिये और मुझको आये एक महीना हुआ अब तूने लिखके मुझे ज्ञातकिया फ़ितनहने कहा बादशाह प्रणतपाल, दुःखभञ्जन इसका कारण यह है कि पूरा एक महीना हुआ कि ग़ानिम अपने घरकी सम्पूर्ण वस्तु मुझे सौंप अपने दमिश्क़ देशको किसी आवश्यक व्यापारके लिये गया मैंने किसीसे आपके आनेका हाल न सुनाथा जि- दिन मैंने यह सुना कि आप आगये सो तुरन्तही एक पत्र लिख नूरुन्निहार के द्वारा आपको खबरदी खलीफ़ा ने कहा सत्य है मैंने बड़ा अन्याय किया परन्तु अब मुझे इच्छा है कि इस दुःख के बदले अपनी सामर्थ्यभर तेरे बिचारके अनुकूल उस व्यापारी के साथ उपकारकरूं जो तू उस- लिये बिचारे फ़ितनहने यह कृपायुक्त वचन ग़ानिम के निमित्त सुन खलीफ़ा के चरण छूकर बिनय की कि आपके क़लमरौ भरमें यह डौंड़ी फिराई जावे कि मैंने ग़ानिम का अप-ाध क्षमा किया यह हाल सुनतेही वह आजावेगा खलीफ़ा ने कहा बहुत अच्छा मैं अभी डौंड़ी की आज्ञा देता हूं और जो कुछ द्रव्यादिक उसकी और उसके कुटुम्ब की नष्ट हुई है उसका दूना उसे दूंगा और तेरा व्याह उसके साथ करदूंगा फ़ितनह यह सुन अतिहर्षित भई और ग़ानिमके असबाबको देखा कि सन्दूक़ों में रक्खाहुआ है फिर दूसरे दिन खलीफ़ा ने वज़ीर को आज्ञादी कि राज्यभर में डौंड़ी फेरदे मैंने दमिश्क़ के व्यापारी ग़ानिम का अपराध क्षमाकिया यह आज्ञापाय वज़ीरने सब राज्य में डौंड़ी फि- रवादी परन्तु डौंड़ी से कुछ लाभ न हुआ न तो वह आया और न किसी ने उसका समाचार दिया तब फ़ितनह खलीफ़ा की आज्ञा

लेकर आपही ग़ानिम के ढूंढ़ने को एक तोड़ा हज़ार अशरफ़ी का लेके भोरको सवारहुई और दो सेवकों को अपने साथ ले मसजिद में जाय सिद्ध और याचकों को पुण्य करदिया और उनसे अपने मनोरथ के सिद्ध के लिये आशीर्वाद पाया और दूसरे दिन भी यही काम किया इसीभांति वह रत्नपारखियों में गई वहां ठहर एक दल्लाल को अपने समीप बुलाया कि इससे अपना अर्थ पूछे वह दल्लाल अतिधर्मिष्ठ था और बिदेशियों और रोगियोंकी सेवा किया करता था इसीकारण उस महानगर में वह ख्यात था और दूरसे याचक मंगन उसे ढूंढ़ते आते और हरएक अमीर और रईस पुण्य के लिये बहुतसा द्रव्य भेजदिया करता वह दल्लाल उसे याचक और बिदेशियों को बांटदेता फ़ितनहने भी अशरफ़ियोंकी थैली उसे देकर कहा इस द्रव्यको रोगी और दीनजनोंको बांट देना मैं भलीभांति जानती हूँ कि तुम उचित प्रकारसे इसे खर्च करोगे दल्लाल ने उसे बादशाही वस्त्र पहिरे देख जाना कि यह किसी बादशाहकी बीबी है झुकके दण्डवत् की और कहने लगा हे सुन्दरी! जो तुमने मुझसे कहा मैं उसे शिर नेत्रों से करूंगा परन्तु आप अपने हाथ से इसे बांटें तो बहुत उचित है यदि मेरे घर में आन्यो तो वहां पर दो स्त्रियां दयायोग्य हैं तुम अवश्य उनकी दुर्दशा देख अपनी कृपा करोगी कलके दिन वे इस नगर में आईं थीं मैंने उनको महा-दु:खित और फटे पुराने वस्त्र पहिरे देखा वे मारे धूप के काली और क्षुधा तृषाके मारे मुरझाई हुई थीं सो मैंने उन दोनोंको अपने गृह में लाय अपनी स्त्री को सौंपदिया और कहा इनकी भलीभांति सुधिलेना ऐसा न हो कि किसी प्रकार से इन्हें दुःख पहुँचे निदान मेरी स्त्री ने उष्णजल से उनके मुख और हाथ पांव धुलवाये और कोमल बिछौना बिछवाय बैठाया और वस्त्रादिक उन्हें पहिराये वह तो मार्ग की थकी टूटी अतिदुःखित थीं इस हेतु मैंने अबतक उनसे नहीं पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आईं फ़ितनह यह सुनतेही उसीके साथ सीधी चली और दल्लाल उसकी सवारी के आगे हुआ फ़ितनहने सवारी के साथ उसका दौड़ना उचित न जानकर कहा मैं

तुम्हारे दासके साथ जातीहूँ तुम धीरे २ मेरे पीछे आना फिर फ़ितनह दल्लालके गृह में पहुँच वाहन से उतरी दास दौड़के महलके भीतर गया और दल्लालकी स्त्रीको फ़ितनहके आगमनका संदेशा दिया उसकी स्त्री अपने मकानसे निकल अगवानी के लिये दौड़ी आई परन्तु फ़ितनह उसके पहुँचने से पहिलेही दासके साथ भीतरजाय इतने समीप पहुँची कि उसे आनेका अवकाश न मिला दल्लालकी स्त्री उसको देख चरण चूमने को झुकी फ़ितनहने उसका शिर उठाय कहा हे सुन्दरी! मैं तेरेघर उन दोनों स्त्रियोंके समाचार मालूम करने को आईहूं जो कल रात्रि को इस नगरमें आई हैं दल्लालकी स्त्रीने कहा वह दोनों अपनीसेज पर पड़ी हैं यह सुन पहिले फ़ितनह उसी ओर गई जिधर ग़ानिमकी माता थी उसकी ओर ध्यानसे देख कहा हे प्यारी, सुन्दरी! मैं तुम दोनों की सुधि लेने और सेवाके लिये आई हूं ग़ानिमकी माताने आशिष दी कि ईश्वर तुम्हें इसका उत्तम फल दे हम ऐसी आपदामें हैं कि ईश्वर हमारे शत्रुओं को भी उसमें न डाले यह कह वह रुदन करनेलगी उसको रोतेदेख फ़ितनह और दल्लालकी स्त्री भी रोई तदनन्तर फ़ितनहने ग़ानिमकी मातासे कहा बहिन तुम अपना वृत्तान्त कहो कौन हो और तुम्हें कौन विपत्तिपड़ी और क्यों तुम्हारी यह दुर्दशाभई मैं अपनी शक्तिभर तुम्हारी सहायता करूंगी ग़ानिमकी माता ने कहा हे सुन्दरी! खलीफ़ाकी प्रिया फ़ितनह नामक हमारे इस दुःखका कारणहुई फ़ितनह यह बचन सुन चुपहोरही और धैर्यधर बेगानों की भांति बातें सुननेलगी ग़ानिमकी माताने कहा कि मैं दमिश्क़ के व्यापारी अयूब की स्त्रीहूं मेरा एक पुत्र ग़ानिम नामक किसी कार्य के निमित्त बग़दादको गया वहां उसको फ़ितनहके साथ कलंक लगा इस कारण खलीफ़ाने उसके बध करने की आज्ञादी जब उसको न पाया तो खलीफ़ा ने दमिश्क़ के बादशाह को आज्ञापत्र भेजा कि ग़ानिमके घरको खुदवाके बनके सदृश करदे और मुझे और मेरी बेटीको तीन दिनतक कोड़ेमार ख्यातकर देश-निकाला दे इसी से वहांके हाकिम ने मेरा सम्पूर्ण द्रव्य लुटाय और मकान खुदवाय उसी विधि दण्डदे नगरकी सीमा से निकाल दिया

परन्तु हम इसी आपदा में प्रसन्न हैं यदि गानिम जीतेजी हमसे आमिले जिस क्षण हम उसका स्वरूप देखेंगी उस द्रव्य और वस्तु के विनाशको भूल जावेंगी खलीफ़ाकी प्रियाने जो हमपर और हमारे पुत्रपर अनीति की है उसे हम खुशीसे क्षमाकरें उस समय फ़ितनह बोली हे माता! जैसे तुम गानिमकी निर्दोषताको प्रकट करतीहो मैं भी साक्षीहूं और मैंही वह अभागी फ़ितनह हूं जो तुम्हारी इन आपत्तियोंकी कारण हुई अब जितना कि तुमपर मेरे प्रारब्धहीनता से प्रतिष्ठा में अन्तर पड़ा जो ईश्वर चाहे तो मेरेही कारण तुम्हारे यह सब दुःख दूर होजावेंगे और तुम्हारी हानिका पलटा तुमको हज़ार हिस्से अधिक मिलजावेगा और मेरे कहने से खलीफ़ाने गानिमका अपराध क्षमा किया उसने अपने मुल्कमें यह डौंड़ी पिटवादी है कि मैंने गानिम का अपराध क्षमाकिया और यह भी आज्ञादी है कि वह मेरे सन्मुख आवे हे माता! अब तुम धैर्य रक्खो खलीफ़ा तुम्हें अपना शत्रु नहीं समझता किन्तु वह गानिमके आने की राह देखताहै कि उसकी सेवाके बदले जो उसने मेरे साथ की है पारितोषिकादिदे सत्कारकरे और उसको मेरे साथ ब्याहदे अब तुम मुझे अपनी पुत्रीके सदृश समझो गानिमकी माता इस वृत्तान्त को सुन हर्षित भई तदनन्तर फ़ितनह उठ गानिम की माता के कण्ठ से बहुकाल-पर्यन्त लगी रही फिर उसको लेकर अलकनबके समीपगई और उसे भी हृदय से लगाय धैर्यदिया और उनको समझाय कहनेलगी कि सम्पूर्ण द्रव्यादिक तुम्हारे पुत्रका जो इस नगर में था मेरे पास धराहै हानि नहीं हुआ यद्यपि मैं जानतीहूं कि संसारभरके खज़ाने गानिम के देखने बिना तुम्हारे बिचारमें तुच्छ हैं परन्तु तुम निराश मतहो प्रभु चाहे तो वह भी शीघ्र आय मिलताहै जब परमेश्वरने तुमको यहां तक पहुँचाया तो उसकी प्रभुतासे कुछ दूर नहीं कि वह भी यहां तुरन्त पहुँचे फ़ितनह यही वार्त्ता करतीथी कि वही दल्लाल अपने घर आया और फ़ितनह से कहा हे सुन्दरी! एक अच्छीबात मैंने देखी कि एक ऊँटवाला एक रोगी मनुष्य को ऊँटपर बैठाये और उस की निर्बलताके कारण चहुँओरसे उसे रस्सियों से बांधे अस्पतालमें

आयाहै मैंने और ऊँटवाले ने चारोंओर से कज़ावेकी रस्सियां काट ऊँट से उतारा और उसकी जातिपांति पूछी वह कुछ भी न बोला रोने के सिवाय कुछ अपना वृत्तांत प्रकट न किया मैं उसे महादुर्बल और अशक्त देख उसे अपने घरमें लेआयाहूं और एक मकान में उसे सुलाय उसके हेतु पथ्य मँगवाया है और वस्त्र निकलवाये हैं कि पहिराय उसे भोजन करावैं जिसमें बोलनेकी शक्तिहो अनन्तर वैद्य को दिखाय औषध करूंगा फ़ितनह ये वचन सुनतेही विस्मित भई और उससे कहनेलगी मुझे वहां लेचलो कि मैं भी उस रोगी का दर्शनकरूं दल्लाल फ़ितन्ह को वहीं लेगया ग़ानिम की माताने अपनी बेटीसे कहा यह स्थान बहुत उत्तम है कि दूरदूर के विदेशी और निर्धन यहां आते हैं कहीं यह तुम्हाराही भ्राता न हो निदान फ़ितनहने वहां जाय क्या देखा कि एक तरुणरोगी जिसके मुखका वर्ण पीला महाकुरूप होरहा है और नेत्रों से आंसू बहते हैं पलँगपर पड़ाहै उसकी प्रीतिकी तासीरसे फ़ितनहका हृदय उमड़आया और अधीर होनेलगी जब ध्यानधर देखा तो पहिंचाना कि यह ग़ानिम है तो रोकर पूछनेलगी हे ग़ानिम ! तेरी यह क्या दशा भई ग़ानिम ने फ़ितनहका शब्द पहिंचान नयन खोल और उसकी ओर भली भांति देख बोला हे सुंदरी ! तुमहो इतना कहतेही मारेहर्ष के मूर्च्छागत भया फ़ितनह और दल्लालने दौड़कर उसपर गुलाब छिड़का और उसे शर्बत पिलाया वह सचेत भया तब दल्लालने फ़ितनह से कहा हे मृगनयनी ! तुम यहां से चलीजावो ऐसा न हो जो इस महाहर्ष में वह मरजावे यह सुन फ़ितनह उस जगह से चलीगई जब ग़ानिमने फ़ितनहको न देखा न उसकी आवाज़सुनी तो चहुँओर देख बोला हे कोमलाङ्गी ! तुम कहांहौ मेरे सन्मुख नहीं आतीं मैंने तुम्हारा चित्र स्वप्नावस्था में तो नहीं देखा वा वास्तव में दृष्टिपड़ी दल्लालने कहा नहीं तुम्हारा बिचार न था किन्तु वह सुन्दरी वास्तव में आई थी अब हमें सूचितहुआ कि तुम ग़ानिमहो खलीफ़ाने यह डौंडी फिरवाई है कि मैंने ग़ानिमका अपराध क्षमा किया अब तुम धैर्यरक्खो और शेष वृत्तान्त तुम अपनी प्रियासे सुनोगे अब ईश्वर तुम्हें

आरोग्यकरे जितना श्रम हमसे होसकेगा हम उसे मनसे करेंगे।
वह वहांसे उठ औषध लानेको गया और फ़ितनह वहांसे उठ उसकी मा, बहिनके पासगई और गानिमके आनेका हाल कहा गानिमकी माताको अपने पुत्रके आनेका विश्वास हुआ और महाप्रसन्नता से मूर्च्छित होगई फिर फ़ितनह और दल्लालके यत्नसे उसने सुधि सम्हाली और अपने पुत्रके समीप जाने की इच्छाकी दल्लालने उसे बर्जकर कहा वह अतिअशक्त है तुम्हारे जाने से उसे खेद होगा ऐसा न हो जो वह अधीर होजावे उसकी माता दल्लालका वचन मानगई फ़ितनह ने कहा यदि ईश्वर की इच्छा होगी तो हम तुम साथही उसके पास जावेंगी अब मैं जाती हूं और खलीफ़ा से भी हाल सुनाती हूं सो फ़ितनह उनसे बिदाहो बादशाह के महल की ओर चली वहां पहुँच खलीफ़ा से एकान्त में भेंट की और सम्पूर्ण बृत्तान्त गानिम और उसकी माताके आनेका कहसुनाया खलीफ़ाने कहा तूने क्योंकर उन तीनोंको ढूंढ़ा उसने दल्लालकी भेंट और बातों में गानिमके मा बहिन के रूप छवि अनूपकी प्रशंसा वर्णनकी सो उनके देखने की इच्छाकर अपने मनमें खलीफ़ाने प्रतिज्ञाकी कि जैसे मैंने गानिम और उसकी मा, बहिनको निर्दोष दुःख दिया और उनकी अप्रतिष्ठा भई तैसेही उसे और उसके कुटुम्बको प्रजाके सन्मुख सत्कार करूंगा जिससे उऋण होजाऊं और उनकी वस्तुओं के बदले उन्हें इतना द्रव्यदूंगा कि वह महाधनवान् होजावेंगे पुनः खलीफ़ाने फ़ितनह से कहा धैर्य रख मैं तेरा बिवाह गानिम से करदूंगा आज से तू मेरी लौंड़ी नहीं मैंने तुझे छोड़दिया अब तू जा यदि वह आरोग्य होगयाहो तो उसे उसकी मा, बहिन समेत तुरन्त मेरे सन्मुख लेआ दूसरे दिन प्रातःकाल फ़ितनह घबड़ाई हुई दल्लालके घर गानिम का हाल पूछने को गई प्रथम दल्लाल से भेंटकी औ गानिम का बृत्तान्त पूछा उसने कहा गानिम आजकी रातको अच्छीतरह रहा केवल उसे तुम्हारे ही वियोगका रोगथा अब वह ईश्वर की परिपूर्ण कृपासे आरोग्यहै जब खलीफ़ा की क्षमाका हाल सुना और तुमसे भेंटकी तो कुछ सावधान होगया

अब तुम्हारी और अपनी मा, बहिनके भेंटकी लालसा रखता है फ़ितनह यह बचन सुनतेही पहिले आप अकेली ग़ानिमके निकट गई और उसकी मा, बहिन को बाहर ठहराया और कहा मैं अभी तुम्हें बुलाती हूं जब फ़ितनह और दल्लाल उसके सन्मुख गये दल्लाल ने ग़ानिमसे कहा मित्र अब इस सुंदरी से भलीभांति भेंटकरो जिसे कल देखके तुम बेसुधि होगये थे और उसके देखनेका तुमने स्वप्न समझा था ग़ानिम ने फ़ितनह की ओर देख कहा हे मृगनयनी, चन्द्रबदनी! तुम क्योंकर बादशाह के महलसे मेरी भेंटको आई तुम्हारे देखने बिना तो क्षणमात्र भी ख़लीफ़ा नहीं रहसक्ताथा उसने क्योंकर तुम्हें यहां आनेदिया फ़ितनहने कहा मैं ख़लीफ़ाकी आज्ञा-नुकूल यहां आई हूँ और उसने मुझसे यह प्रतिज्ञा की है कि मेरा बिवाह तुमसे करदेगा ग़ानिम यह सुन इतना प्रसन्नभया जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और आश्चर्यितहोय पूछनेलगा सत्य कहतीहो ख़लीफ़ा तुमको देडालेगा उसने कहा निस्सन्देह क्योंकि ख़लीफ़ाने पूर्व में केवल शङ्का से तुम्हारे बधकी आज्ञादीथी जब तुम उसके हाथ न लगे तो उसने दमिश्क़के बादशाहको लिख तुम्हारी मा, बहिनको दुःखदिलाया और तुम्हारा घर खुदवायसम्पूर्ण बस्तु धन लुटवादिया अब वह अपने अन्याय से लज्जितभया और उसे मेरेमुखसे तुम्हारी निर्दोषता प्रतीत भई इसकारण चाहताहै कि तुमसे उऋण होजावे इसके अनंतर ग़ानिमने अपनी मा, बहिनका हाल पूछा फ़ितनह ने बिस्तार से बर्णन किया वह सुन महाखेदको प्राप्तहोय रुदन क-रनेलगा फ़ितनहने कहा अब यह तुम्हारा शोक ब्यर्थ है जो होना था सो हुआ अब तुम्हारी मा, बहिन यहांही हैं यह सुन उसे उनके दर्शनकी लालसाभई फ़ितनहने उन्हें बुलाया वह दोनों स्त्रियां कि फ़ितनहके बुलानेकी बाट देखतीथीं भीतर दौड़ीआईं और ग़ानिम के कण्ठलग बहुत रोईं दल्लाल ने उन्हें धैर्य दिया इसके अनन्तर ग़ानिम ने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त आदि से अन्तपर्यंत इस भांति वर्णन किया कि मैं ख़लीफ़ा के भयसे बग़दाद से भागकर एक ग्राम में जाय छिपा और वहां रोगी होगया एक दयावान् किसानने मेरी

सहायता की और अपनी सामर्थ्यभर मेरे खिलाने पिलाने और औषध आदि में तत्पररहा परन्तु जब वह मेरे प्राणसे निराशभया तो उसने एक ऊंट किरायाकर ऊंटवाले से कहा इसे तू बग़दादके अस्पतालमें पहुँचा दे सो उसने मुझे वहां पहुँचा दिया फिर फ़ितनह ने सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णनकिया जब सब अपना २ बृत्तान्त कहचुके फ़ितनहने कहा अब हम सब मिलके ईश्वरका धन्यबादकरें कि उस सच्चिदानन्द प्रभुने हमपर दयाकी और हमें इस महादुःख से निकाल परस्पर भेंटकरादी जब ग़ानिम भलीभांति आरोग्यभया फ़ितनह ने चाहा कि ग़ानिम और उसकी मा, बहिन को ख़लीफ़ा के सन्मुख लेजावें फिर सोचनेलगी कि इसके पास अच्छे बस्त्र नहीं जिसे पहिन ख़लीफ़ाके सन्मुख लेजावें यह समझ अपने मकानको सिधारी और हज़ार अशरफी दल्लालको दे कहा कि तुम अतिस्वच्छ बसन अलंकनब और उसकी माता के लिये मोललेके आवो उस दल्लालने कि अतिप्रबीण और महाचतुर था अत्युत्तम रेशमी थान मोलले तीन दिनमें भारी जोड़े उन दोनों स्त्रियों के निमित्त बनवाये फिर एकदिन ख़लीफ़ाकी भेंटका नियतकिया और उसदिन वह तीनों कपड़े पहिन शय्यापर बैठेथे कि जाफ़र वज़ीर ख़लीफ़ा की आज्ञानुसार बहुतसी सेना और प्रधान साथले उस दल्लालके घर ग़ानिमके लेनेको आया और घोड़ेसे उतर घरके भीतर गया और भेंटकर कुशलपूछ ग़ानिम से कहा मैं तुम्हारे लेनेकेवास्ते आयाहूँ तुम मेरे साथ चलो ख़लीफ़ा तुम्हारे दर्शन किया चाहते हैं सो ग़ानिम उत्तम घोड़ेपर सवार हुआ और फ़ितनहने उसकी मा, बहिनको दो ऊँटोंपर सवार कराय आप अपने घोड़ेपर सवारहो गुप्तमार्गसे उन्हें बादशाहके महलमें लेगई और वज़ीर ग़ानिम को बाज़ारमें से ख़लीफ़ा के सामने लेगया उस समय ख़लीफ़ा अपने तख़्तपर बैठाथा और उसके चहूँ ओर वज़ीर सभासद् और देश देशके बसीठ और देश देशके निवासी बर्तमान थे जब ग़ानिम ख़लीफ़ा के पास पहुँचा तो अपना शीश पृथ्वी चूमने को ख़लीफ़ा के तख़्तके सन्मुख रक्खा और निजरचित पदों में स्तुतिकी जिसको सुन सम्पूर्ण सभा उसकी प्रशंसा करने लगी

ख़लीफ़ा ने कहा मैं तुझे देख प्रसन्न हुआ जब तुमसे अपनी प्रिया के बचाने का बृत्तान्त सुनेंगे तो अधिक प्रसन्न होंगे ग़ानिमने सम्पूर्ण बृत्तान्त आदि से अंतपर्यंत कह सुनाया ख़लीफ़ा उसे सुन प्रसन्न भया और आज्ञादी कि एक भारी ख़िलअत जसी कि बड़े अमीरोंको मिलाकरती है दो ग़ानिम ने ख़िलअतपहिन दण्डवत्कर कहा हे स्वामी! मुझे इच्छाहै कि जन्मभर आपके चरणोंसे लगारहूं ख़लीफ़ा उससे अतिप्रसन्न हुआ फिर अपने घरमेंआया और वज़ीरसे कहा ग़ानिमको अपने साथकरके मेरे निकट लेआ जब ख़लीफ़ा एकान्त में गया तो फ़ितनहको बुलवाभेजा और कहा ग़ानिमकी मा, बहिन को भी लेतीआ फ़ितनह उनदोनों मा, बेटियों को ख़लीफ़ाके सन्मुख लेआई उनदोनों ने भी ख़लीफ़ाके चरणछुये ख़लीफ़ा अलकनब को देखते ही मोहितहुआ और कहनेलगा जैसे कि मैंने तुम्हें निर्दोष अप्रतिष्ठा की वैसेही अब मैं अपना अलकनबके साथ बिवाह कर तुम्हारा दुःख भुलाऊँगा क्योंकि ज़ुबैदा जो तुम्हारे इस दुःख का कारण हुई उसको यह दण्ड देताहूं कि अलकनबकी डाह और ईर्षा से मरे इसके अनन्तर ग़ानिमकी मातासे कहा हे सुन्दरी! तुम अभी तरुणहो मेरे वज़ीर जाफ़रसे अपना बिवाहकरो और ग़ानिम से कहा तू फ़ितनहपर मोहित है और तुझे भी इसके साथ ब्याह करना उचित है फिर ख़लीफ़ाने क़ाज़ी और गवाहों को बुलवाया और तीनों ने ब्याह किया ग़ानिम यह बिचारता था कि उसकी बहिन लौंड़ी होगी परन्तु ख़लीफ़ा ने उसे स्त्री बनाया फिर ख़लीफ़ा ने आज्ञा दी कि यह बृत्तान्त इतिहास की तौरपर लिख हमारे ख़ज़ाने में रक्खा जावे और नक़लें उसकी देशान्तरोंमें भेजीजावें जब शाहजादी शहरज़ाद यह कहानी कहचुकी तब दुनियांजाद ने कहा वाह यह क्या अद्भुत कहानी थी शहरज़ाद ने कहा यदि तू दूसरी सुनैगी तो महाप्रसन्न होगी शरयारनेह कहने की आज्ञादी परन्तु भोर होगया था इसहेतु दूसरी रातको चरित्र कहने लगी॥

ज़ैनुस्सनम शाहज़ादा और राक्षसों के बादशाह की कहानी॥

पूर्वकाल में बांसरा देश का एक बड़ा बादशाह प्रजापालक,

महाऐश्वर्यवान् और द्रव्यवान् था परन्तु सन्तान न होने से सदैव महाशोकवान् रहता था नगरनिवासी सर्वदा ईश्वरसे प्रार्थना करते कि हमारे बादशाहके पुत्रहो निदान उस सच्चिदानन्द ईश्वर ने उन की इच्छा पूर्णकी अर्थात् मलका सगर्भ भई और नव मास पीछे उसके पुत्र उत्पन्न भया उसका नाम जैनुस्सनम रक्खा बादशाह ने अपने देशके सम्पूर्ण ज्योतिषियोंको बुलवाय आज्ञादी कि इसका जन्मपत्र बनाओ इस लड़के का समाचार कहो सब ने उसका जन्मपत्र बनाय एकमत हो कहा हुज़ूर इसकी पूर्णआयु होगी और बड़ा साहसी और प्रतापी होगा परन्तु कई बिषय में इसे भय प्राप्त होगा बादशाह ने कहा मुझे इस बातकी चिन्ता नहीं क्योंकि मेरा पुत्र पुरुषार्थी तो होगा बादशाहों को आपत्ति और दुःखसे कुछ उपाय नहीं चलता बरु ऐसे बिषय बादशाह को उपदेश होते हैं सो बादशाह ने ज्योतिषियों को पारितोषिक और द्रव्यादिक दे बिदाकिया जब वह शाहज़ादा पठन योग्य भया अनेक प्रकार के गुणी नियत हुये थोड़ेही काल में वह प्रत्येक विद्या और गुण में निपुणभया दैवयोग से इसका पिता ऐसा बीमार हुआ कि असाध्य होगया अन्त समय उसने जैनुस्सनम अपने पुत्रको बुलाय उपदेश किया कि तू कदाचित् अपस्वार्थियों की बात न सुनियो और अधिक उदारता भी न कीजियो किन्तु दण्ड और दान सम रखियो क्योंकि बादशाह प्रायः छलमें पड़के कुकर्म में पड़ सुकर्म तज देते हैं इतना कहतेही बादशाहने देह त्यागदी जैनुस्सनम शोक के बस्त्र पहिन सात दिनतक बिलाप करतारहा आठवें दिन तख़्तपर बिराजमान हो बादशाही ख़ज़ाने की मोहर तोड़ एकहीबेर ब्यय करनेलगा उसी आनन्द में सल्तनत के प्रबन्ध से निपट अचेतभया तरुण मनुष्यों की संगति से यह आनन्द भोगनेलगा थोड़ेही काल में पिताका सम्पूर्ण कोश बेश्याओंको लुटादिया उसकी माता जो अत्यन्त बुद्धिमान्, चतुरथी बहुधा समझाती परन्तु उपदेश ब्यर्थजाता यहांतक कि सल्तनत की अप्रबन्धता से नगर में चर्चा होनेलगी और कोलाहल मच गया और दूर दूर यह बात उड़गई धीरे धीरे सम्पूर्ण कोश ख़ाली

नम्बर ३७ मुतअल्लिक़े सफ़ै ५३४

चित्र जैनुस्सनम और मुबारक का नदी में किश्ती पर विचित्र खेवट समेत.
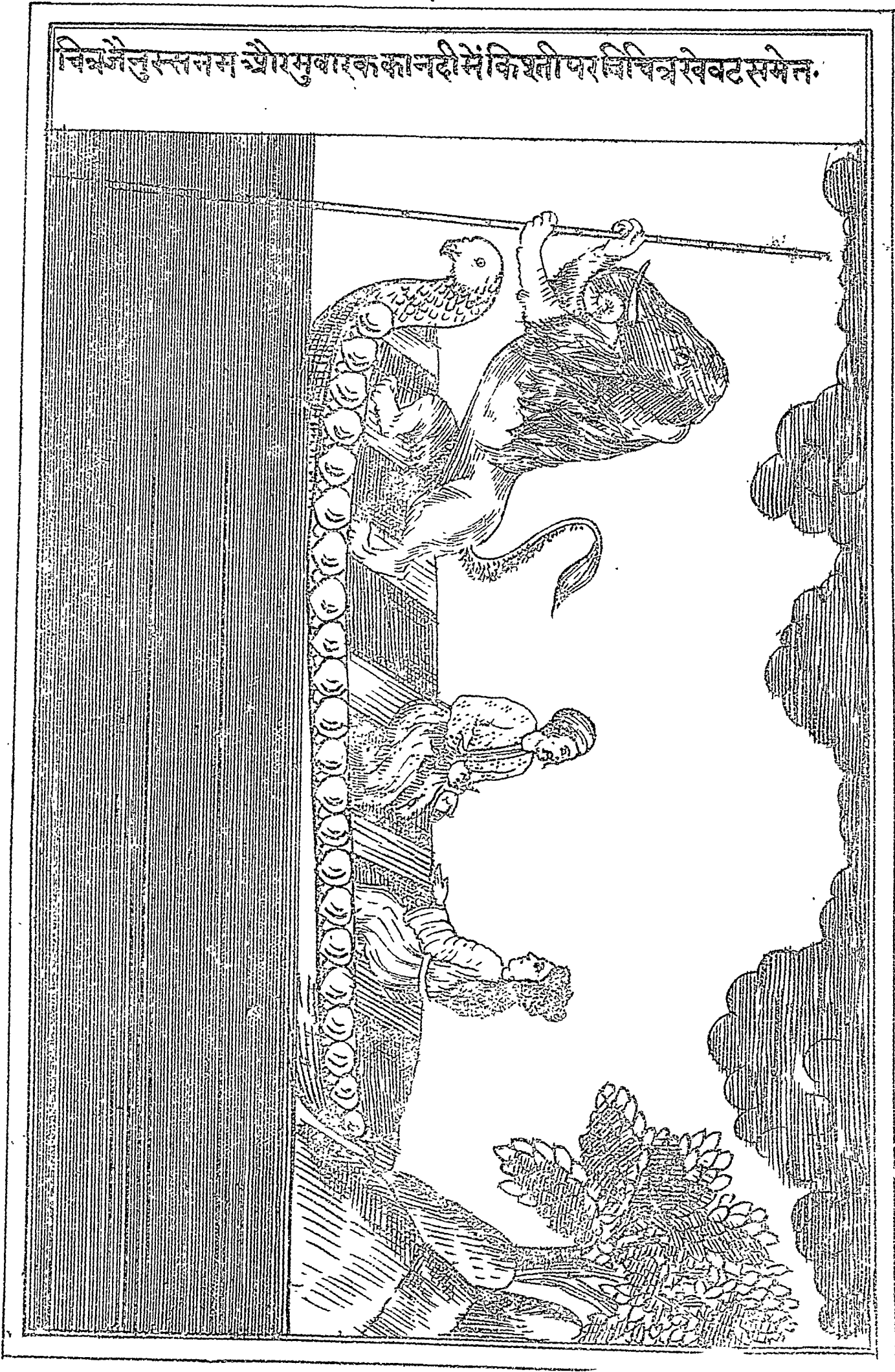
होगये और सेना निर्धनतासे स्थान स्थान से उठ जाने लगी उस समय वह कुछ सोचता भया अपने सब तरुण निर्बुद्धि मित्रों को निकाल बड़े बड़े चतुर बृद्धोंको नियत किया उन्होंने भलीबातें उसे सिखाईं यहांतक कि वह सल्तनतकी अप्रबंधता से ज्ञातहो लज्जित भया और जाना कि मैंने इतना द्रव्य व्यर्थ खर्च किया रातदिन इसी चिंतामें रहनेलगा सो एकदिन उसने स्वप्न देखा कि एक बृद्धने उस से मुस्कराय कहा हे जैनुस्सनम ! तू जान कि संसार में कोई ऐसा शोक नहीं जिसके पीछे हर्ष न हो कोई ऐसी आपदा नहीं कि उसके पीछे आनन्द न मिले यदि तू चाहताहै यह दुःख मेरा जावे तो तुरन्त क़ैरूनगरको जो मिसर की दारुल्सल्तनतहै चलाजा वहां पहुँचतेही तेरी सम्पूर्ण आपदा दूर होजावेंगी और तेरा प्रताप वहां चमकेगा जब वह जगा तब उसने वह स्वप्न अपनी मातासे कहा माताने कहा हे पुत्र ! केवल स्वप्नके बिश्वासपर जो मनुष्य हज़ारों प्रतिरात्रि में देखता है और बास्तवमें कुछ नहीं इतने बड़े दूरकी यात्रा करनी न चाहिये जैनुस्सनम ने कहा हे माता ! तू यह क्या कहतीहै सब स्वप्न केवल विचारही नहीं होते किन्तु बहुधा सत्य होते हैं इसके सिवाय वह बृद्ध ऐसा न था जिसका बचन असत्य हो वह कोई सिद्धपुरुष था उसके कहतेही मेरे मनको धैर्य हुआ मुझे उसके बचन का भली भांति निश्चयहै मैं अवश्य क़ैरूको जाय अपने प्रारब्ध की परीक्षा लूंगा मा ने बहुत चाहा कि उसे न जानेदें परन्तु उसका समझाना लाभकारी न भया निदान अपना राज्य अपनी माता को सौंप अकेला गुप्त अपने महल से निकल क़ैरूको सिधारा और बहुतसे दुःख उठाय उसी बिशाल और सुन्दरनगरमें जायपहुँचा और एक मसजिद में थकित हो सोरहा फिर उसने उसी बृद्धको स्वप्नमें देखा कि कहताहै हे पुत्र ! मैं तेरे इस पुरुषार्थ से प्रसन्नभया कि तूने मेरा बचन निश्चयकर अपने आनन्दको तज इतनी बड़ी यात्राकी मैंने केवल तेरी परीक्षा ली और तुझे महापुरुषार्थी पाया अब तू महाद्रव्य पावेगा और इस संसारमें तू बड़ा बादशाह होगा अब तू यहांसे निज देश बांसराको लौटजा तू वहीं इतना धन पावेगा कि किसी बादशाह

को न मिलाहोगा जैनुस्सनमने जगके अपने मनमें कहा उस बृद्धने मुझे व्यर्थ क़ैरू में आनेको कहा यदि बांसरा में मेरा मनोरथ सिद्ध था तो क्यों मुझे यहां के आनेका श्रम दिया अच्छाहुआ जो मैंने यह भेद अपनी माताके सिवाय किसीसे न कहा नहीं तो लोग आज मेरी निर्बुद्धिता पर हास्यकरते इसके अनन्तर वह बांसराको लौटा जब वहां कुशलपूर्वक पहुँचा तो माताने उससे पूछा कि शीघ्र चले आनेका क्या कारणहै उसने दूसरे स्वप्नका बृत्तान्त कह सुनाया वह उसे धैर्य दे कहने लगी बेटा अपने कार्य में चिन्ता न कर यदि तेरे भाग्यमें धन है तो घरबैठे मिलेगा परन्तु जब ईश्वर तुझपर अपनी परिपूर्ण कृपा करे तो आगेकी भांति लम्पट में व्यय न करना सुकार्य और आवश्यकता के बिशेष एक कौड़ी किसीको न देना उसने स्वीकार कर प्रतिज्ञाकी कि अब तुम्हारी आज्ञा पालन करूंगा इसमें बालभर भी अन्तर न पड़ेगा रात्रिको फिर उसी बृद्ध पुरुषने स्वप्न दिया हे जैन ! समय आय पहुँचा तुम्हें बहुत धन मिलेगा कल अपने पिताके मकान में जाय फड़हे से उसे खोदियो तुम्हें वहां एक बड़ाकोश मिलेगा जैनने जागके अपनी मातासे कहा उसकी माता ने मुसकराय कहा वह बृद्ध कैसा है कि दो बेर न मानकर धूर्तता से तीसरीबेर तुझसे कहगया जिसका कुछ मूल नहीं जैनने कहा यद्यपि मुझे भी उसके बचन पर बिश्वास नहीं तथापि चाहता हूं कि मैं अपने पिताका मकान भी खोदकर देखूं वह बहुत हँसी और कहने लगी जाओ और देखो वहां तुम्हें इतना परिश्रम नहीं जितना क़ैरू के जाने में था जैनुस्सनम ने कहा मुझे कुछ निश्चय है कि तीसरा स्वप्न सत्यहोगा चाहता हूं कि उसकी परीक्षालूं क्योंकि उसने मुझ से पहिले कहा तू क़ैरू को जा वहां तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सो मैं वहां गया फिर मुझसे दूसरे स्वप्न में कहा केवल मैंने तेरे पुरुषार्थकी परीक्षाली अब तू फिर बांसरा को लौटजा वहीं तेरी इच्छा सिद्धहोगी सो मैं उसकी आज्ञा से यहां आया अब केवल तीसरे स्वप्न की परीक्षा शेषरही माताने कहा अब अधिक इस बिषय में श्रम मतकर उस समय तो वह चुपहोरहा और मा से छिप अपने पिताके मकान

में जाय खोदनेलगा खोदते खोदते अनुमान एक गज़ के चौकोन गहरा खोदडाला जब उसमें से द्रव्यका चिह्न भी न पाया तो थकके बैठगया और अपने मनमें कहनेलगा माता मेरी बहुत हँसके कहेगी यह विक्षिप्त है कि झूठे लोभसे पिताका मकान खोदडाला और कुछ न पाया निदान सुस्ताय फिर फड़ुहा लेके उठा और खोदनेलगा तो अकस्मात् एक चट्टान सफ़ेद संगमरमरका उसे दिखाई दिया उसने उस शिला को वहांसे सरकाया उसके नीचे एक द्वार प्रकट भया जैन ने फड़ुहे से तालातोड़ द्वारखोला उसके साथ संगमरमर की सीढ़ी लगीहुई थी सो एक दीपक जलाकर उसके उजियाले में सीढ़ी के मार्ग से नीचे उतरा और एक बिशाल दालान कि उसकी दीवार चीनी की और छत बिल्लौर की बनीहुईथी गया वहां क्या देखताहै कि सुन्दर चार सीपकी तिपाइयां बिछी हैं और प्रतितिपाई पर दश दश सीमाक़ पत्थरकी डेगें बराबर बराबर रक्खी हैं जैनुस्सनम स-मझा कि इन पात्रों में स्वच्छमदिरा होगी और पुरानीहोने से बहुत अच्छी होगई होगी यह विचार एकपात्र के निकट जाय ढकना उ-ठाया उसे अशरफ़ियों से भराहुआ पाया इससे महाप्रसन्न हुआ पुनः सब पात्रों के ढकने उठाय देखा वे सब अशरफ़ियों से भरीहुई थीं एक मुट्ठी अशरफ़ियों की भर अपनी माताको जाय दिखाई वह देखतेही अचम्भे में हुई और पुत्र से कहनेलगी ईश्वर ने तुझपर बड़ी कृपाकी अब इस द्रव्यको पूर्ववत् नष्ट न कीजियो जैन ने कहा तुम निश्चयमानो मैं आपकी आज्ञा के बिरुद्ध कोई काम न करूंगा इसके अनन्तर उसकी माता ने कहा मुझेभी वहां लेजाय धन दिखा वह उसका हाथ पकड़ नीचे उतार लेगया उसने वहां जाय अश-रफ़ियां भरी देखीं अनन्तर मलका की दृष्टि एक छोटे से पात्रपर कि वह भी सीमाक़ पत्थर का बनाहुआ था और उस दालान के एक कोने में रक्खाहुआ था पड़ी जैन ने उसे देखा था पूछा इसमें क्या है उसने उसको खोला उसमें एक सुनहली कुंजी निकली मलकाने कहा हे पुत्र ! निश्चय यह दूसरे किसी कोशकी कुंजी है इसके उप-रान्त वे दालानके चहुँओर ढूंढ़नेलगे ढूंढ़ते २ उन्हों ने दालान के

एक ओर सुन्दर दरवाज़ा जिसमें कुफुल लगाथा पाया तब तो उन्हें बिश्वास भया कि यह कुंजी अवश्य इसी द्वारकी है जैन ने कुंजी से कुफुलखोला तो एक महाबिशाल घर चौकोन देखा उसके मध्य में सुनहले नवखम्भे थे आठ खम्भोंपर एक एक मनुष्यका चित्र अति उत्तम और दिव्य हीरेका बनाहुआ था जिनकी चमक से वह सब मकान प्रकाशित था जैनुस्सनम ने उन्हें देखतेही अचम्भा किया और मनमें कहनेलगा हे प्रभु ! ऐसे अपूर्व सुन्दर चित्र मेरे पिता को कहांसे मिले परन्तु नवांखम्भा ख़ाली था केवल सफ़ेद साटनसे मढ़ाहुआ उसपर यह लिखाथा हे मेरे प्यारे पुत्र ! यद्यपि ये आठों चित्र अपूर्व हैं परन्तु नवां इन आठों से सुन्दर और बहुमौल्य और चमक दमक में अधिक है यदि तू उसे भी लिया चाहता है तो क़ैरू में जा वहां मेरा दास बृद्ध मुबारक नामक रहता है वह बहुत प्रसिद्ध है जिस किसीसे तू पूछेगा वह तुरन्त उसका घर तुझे बतादेवेगा तू उसके समीप जाय अपना बृत्तान्त कहना वह तुझे मेरा पुत्र जानके ऐसे स्थानपर लेजावेगा जहां से यह नवाचित्र हीरे का तुझे सुग-मता से मिलजावेगा जैन यह पढ़तेही अपनी मातासे कहनेलगा मुझे ऐसे अपूर्व चित्रकी अतिलालसा है क्योंकि ये आठोंमूर्ति उस के मोलको नहीं पहुँचतीं अब मैं क़ैरू को जाता हूं बिश्वास है कि तुम मुझे वहां जानेकी आज्ञा दोगी उसने कहा तुम ऐसे सत्पुरुष की आज्ञानुसार यह कामकरते हो निश्चय है तुम्हें किसीभांति से खेद न होगा इसलिये मैं तुझे मना नहीं करती जब तुम चाहो चलेजाओ मैं और वज़ीरआज़म तुम्हारे सल्तनत का प्रबन्ध करते रहेंगे इस के अनन्तर जैन बादशाह कई सेवक अपने साथ ले क़ैरू नगर को सिधारा थोड़े दिनों में कुशलपूर्वक वहां पहुँचा और पूछने से मा-लूम हुआ कि मुबारक नगरमें अतिप्रसिद्ध है और बड़े आदमियों के समान रहता है उसके घरमें पहुँच द्वारपर हांकदी एक सेवक ने आय द्वारखोला और जैनुस्सनम से नाम पूछा जैनुस्सनम ने कहा मैं इस नगर में अभी आयाहूं तुम्हारे स्वामीकी उदारताकी प्रशंसा को सुना चाहताहूं कि उसके घरमें उतरूं दास ने कहा तनक ठहरो

कि मैं अपने स्वामी से तुम्हारे आगमन का संदेशा दूं फिर वह दास शीघ्रही अपने स्वामी की आज्ञानुकूल जैन को महल के भीतर लेगया जैनुस्सनम ने भीतर जाय एक विशाल अतिसुन्दर मन्दिर देखा एक मकान में मुबारक उसके आने की बाट देखता था उस के देखते ही मुबारक ने उठ उसे दण्डवत् की और कुशल पूछी बादशाह ने उसका उत्तर दे कहा मुझे तुमने पहिंचाना वा नहीं मेरा नाम जैनुस्सनम है मैं स्वर्गबासी बांसरा के बादशाह का पुत्रहूँ मुबारक ने कहा मुझे तो उस बादशाह ने मोललिया था आपकी आयु कितनी होगी जैनने कहा बीसबर्ष की इसके अनन्तर जैनने पूछा तुमको हमारे पितासे बिछुड़े कितने बर्ष बीते मुबारक ने कहा बाईस बर्ष मुझे क्योंकर निश्चयहो कि तुम उसी के पुत्रहो जैनुस्सनमने कहा मेरे पिताका एक मकानथा उसमें मैंने चालीस पात्र अशरफ़ियों से भरेहुये पाये मुबारक ने कहा इसके विशेष और भी तुमने उसमें कुछपाया जैनुस्सनम ने कहा नवखम्भ स्वर्ण के आठ खम्भों पर एक डाल आठ चित्र हीरे के अतिसुन्दर रक्खे हुये हैं और नवां खम्भा श्वेतसाटन में मढ़ा हुआ उसपर मेरे पिता ने लिखा है जिससे मुझे नवींमूर्ति जो इन आठों से बहुत उत्तम है मिले तुम उस स्थान को जानतेहो मुझे वहां लेजाओगे अभी जैन न कहचुका था कि मुबारक उसके चरणोंपर गिरपड़ा और उसके हाथ बहुकाल पर्यन्त चूम कहा मुझे बिश्वास भया तुम बासरा के बादशाहके जो मेरा स्वामीथा पुत्रहो मैं तुम्हें अवश्य वहीं लेजाऊंगा जहां से नवां चित्र मिलेगा परन्तु थोड़े दिन आप यहां बिश्राम कीजिये जिससे मार्ग की निर्बलता जातीरहे आज मैंने पुरके रईसों को न्योता है मैं सबके साथ भोजन करता था कि तुम्हारे आगमन का समाचार सुन बाहर निकल आया अब आप भी वहां चलके रुचिपूर्वक भोजन कीजिये जैनने हर्ष से उत्तर दिया बहुत अच्छा इसके अनन्तर वह जैनको जहां सब मनुष्य एकत्रथे लेगया और उनको भोजनपर बैठाय आप सेवकों के सदृश खड़ारहा और जैन की सेवा करनेलगा नगरवासी यह दशा देख परस्पर धीरे से कहने

लगे यह बिदेशी मनुष्य कौनहै जिसकी सेवा मुबारक ऐसी करता है जब सब भोजन करचुके मुबारकने लोगोंसे कहा भाइयो मेरी इस सेवापर कुछ आश्चर्य न करो यह बांसराका शाहज़ादा है जो मेरा स्वामी है इसके पिताने मुझे मोल लियाथा और मेरे छूटने से पहिले मरगया अब यह शाहज़ादा मेरा स्वामीहै और अपने पिताका यह एकही पुत्रहै जैनुस्सनम ने वार्त्तान्तर में कहा मैं इस समूह के सन्मुख यह प्रतिज्ञा करताहूं कि मैंने तुझे छोड़दिया केवल एकही बात जो मैंने तुमसे कही वही शेष रहगई है मुबारकने यह वचन सुनतेही प्रणाम किया इसके उपरान्त मदिरा आई सन्ध्यातक वे सब पीतेरहे निदान मुबारकने सबको फलोंके पात्र दे बिदा किया दूसरे दिन जैनने उससे कहा अब मेरी राहकी मांदगी जातीरही मैं क़ैरू में तमाशा देखने नहीं आया केवल नवें चित्रके निमित्त इतना श्रम उठायाहै उचितहै कि हम तुम यहांसे सिधारें मुबारकने कहा बहुत अच्छा परन्तु एकबात पहिलेही तुमसे कहनी उत्तमहै कि इसमार्ग में बहुतसे भय हैं आपको उन बस्तुओं से बचना और भय रखना अवश्य है जैनने कहा तुम भलीभांति भरोसा रक्खो मैं कदाचित् न डरूंगा और इस बातके लिये मुझे प्राण भी देने स्वीकारहैं तुम मुझे अपने साथ ले चलो जो तुम कहोगे वही करूंगा किसी दुःख और भूत प्रेतादि से भय न करूंगा मुबारकने जैनको धैर्यवान् देख अपने सेवकों को यात्रा के तय्यारीकी आज्ञादी फिर उसके दूसरे दिन भोर को स्नान और नियमित कृत्यकर वहांसे चले मार्गमें अद्भुत सुन्दर बस्तु देखते हुये कई दिन पीछे एक महासूक्ष्म राहमें पहुँचे मुबारकने घोड़ों और और बस्तुओंका वहीं छोड़ कई पियादे उनकी रक्षाको नियत किये और कहा हमारे लौटनेतक तुम यहां सब बस्तुकी रक्षा करना इसके अनन्तर जैनको पैदल ले आगे बढ़ा और उसी भयभीत स्थान में जहां वह नवांचित्रथा पहुँच जैनसे कहा तुम अपने मनको दृढ़रखना किसी अद्भुत और भय देनेवाले बिषयको देख मतडरना इतने में वे एक नदीके कूलपर पहुँचे मुबारक वहां बैठ गया और जैन को भी अपने निकट बैठालिया और कहनेलगा

हमें इस नदी से पारहोना अवश्यहै जैनने कहा क्योंकर इस नदी से पार होंगे मुबारक ने कहा तुम्हारे और मेरे लेनेको राक्षसों के बादशाहकी माया की नौका अभी यहां आवेगी तुम कदाचित् न बोलना उसके केवटों का अद्भुतस्वरूप होगा ऐसा न हो जो तुम उन्हें देख आश्चर्यकर उनसे कोई बातचीत करो मैं पहिले से तुम्हें चिताये रखताहूं जो तुम सवार होकर तनकभी मुखसे बोलोगे तो तुरन्त वह नाव इस अथाह जलमें डूबजावेगी जैनने कहा मैं कुछ न बोलूंगा और तुमको उचितहै कि सब बातें मुझे बतादो जिसमें मैं बचारहूं इतने में वे क्या देखते हैं कि एक चन्दनकी नाव अत्यन्त सुन्दरी जिसका मस्तूल अम्बरका और बादबान नीली साटन का है उस नदी में उनकी ओर चलीआती है और उसको केवल एक मनुष्य खेवताथा जिसका शिर हाथीका और देह सिंहकीसी थी जब वह नाव उनकेपास पहुँची तो उस केवटने सूंड़से एक एकको पकड़ नाव में सवार किया और क्षणमात्र में पारलेजाय उसीभांति उन दोनों को नावसे उतार नदी के पार उतारदिया फिर वह नाव गुप्तहोगई मुबारकने जैनसे कहा यह द्वीप जिसमें हम तुम हैं राक्षसों का है और निस्सन्देह यह स्वर्ग के बाग़का नमूना है देखो किसविधि के अतिस्वच्छ खेत हरे हरे और उनकी क्यारियोंके चहुँओर अनेकप्रकार के सुगंधित खिलेखिले पुष्प और सुन्दर तरकारियां शोभायमान हैं इसके विशेष देखो क्या सुन्दर सघन और फलयुक्त बृक्ष भारकेमारे धरती से लगरहे हैं और पक्षियों की प्रियबाणी सुनो कि चहुँदिशि से बड़े अनुराग और आनन्दसे बोलरहे हैं जैनका थकाव वहां के जल बायु लगने से जातारहा और उस टापू के तमाशे और रंग रंग के फूल और पक्षियों को देख आनन्दित भया और पैग पैग पर नवीन और अद्भुत बस्तु देख प्रसन्न होता निदान चलते चलते वे दोनों ऐसे स्थानपर पहुँचे जहां एक कोट देखपड़ा वह कोट हीरे का बनाहुआथा उसके चहुँओर बड़ी बिशाल और गहरी खाईं थी और उस खाईं की चारोओर थोड़ी दूर सघनबृक्ष लगेहुये थे जिनकी छाया सम्पूर्ण मकानको ढांपेथी और उस मकानके द्वार के

आगे एक दिव्यसेतु बारहगज़का लम्बा छः गज़ चौड़ा सीप का बनाहुआ उसके दरवाज़े पर बिकराल राक्षसोंका पन्रा बैठाहुआ था कि कोई बादशाहकी आज्ञा बिना भीतर न जानेपावे मुबारक वहीं ठहरगया और जैन से कहा यदि हम तनक आगे बढ़ें तो वे महाविकराल राक्षस जो पहरेपर बैठे हैं तुरन्त हमको मारडालेंगे अब मुझे रक्षार्थ कोई मन्त्र पढ़ना चाहिये जिसमें वह हमारे समीप न आसकें यह कह मुबारक ने अपनी कमर से एक थैली जिसमें चार पटके थे निकाली एक उसने अपनी कमर में लपेटा और दूसरा अपनी पीठपर डाला और दो जैनको दिये कि वहभी अपनी कमर और पीठपर लपेटे फिर उसने कपड़ेकी दो चादरें पृथ्वीपर बिछाई और उसके किनारोंपर अनेकप्रकार के पत्थर रख उनपर वे दोनों बैठे फिर मुबारकने शाहज़ादेसे कहा अब मैं राक्षसपति का जो इसी मन्दिरमें है आवाहन करताहूं यदि वह कोपसे बड़ा बिकराल बनके आया तो जानना हम बड़ेदुःख में पड़े यह समझना हमारे यहां आने से वह अप्रसन्न भया और यदि वह अच्छेमनुष्य का देहधर आया तो तुम्हारी कामना सिद्धहोगी किसी भांति का भय तुम्हें न पहुँचेगा परन्तु जिस समय वह तुम्हारे सन्मुख आवे तुम उसे दण्डवत् करना परन्तु वह चादर जिसपर तुम बैठे हो कदाचित् अपने शरीरसे अलग न करना नहीं तो तुरन्त मरजावोगे फिर उससे विनयकर कहना हे राक्षसपति! मेरा पिता जो आपका प्राचीन सेवकथा उसका काल होगया आशारखताहूं कि जो कृपा उनपर थी मुझपरभी हो यदि वह पूछे तू किस विषयकी कृपा चाहता है तो तुम कहना वह नवांचित्र मुझे देदीजिये निदान वह उसे भली भांति समझाय बुझाय मन्त्रपढ़नेलगा उसके पढ़तेही बड़ेबेग से बिजली चमकने लगी तत्पश्चात् बादल बड़े ज़ोर से गर्जने लगा और ऐसा शब्द हुआ कि वह सम्पूर्ण द्वीप कांपनेलगा और चारों ओर अँधियारा छायगया मानो प्रलयहुई शाहज़ादा यह दशा देख बहुत घबराया और भयसे हृदय उसका धड़कने लगा मुबारक ने मुसुकराय कहा घबराओ नहीं जो कुछ होनाथा सो होचुका अब

उजियाला हुआजाताहै इतने में बादल बिजली जातीरही उजियाला भया और राक्षसपति मनुष्य की सुन्दर देह धर प्रकट भया जैनने उसके देखतेही मुबारकके उपदेशानुकूल उसे दूरसे झुकके दण्डवत् की राक्षसपति मुसुकराता हुआ उसके निकट आया और कहनेलगा हे मेरेपुत्र ! मैं तेरे पिताको बहुत प्यार करताथा जब वह मेरे समीप आता तो बिदाकरते समय उसे मैं एक हीरे का चित्र सौगात की तौरपर देता और वह उसे अपने साथ लेजाता अब वही प्रीति मुझे तुम्हारे साथ भी है मैंने तुम्हारे पिता से कहा था कि तुम नवें खम्भे में श्वेत साटनपर लिखना जिसे हे शाहज़ादा ! तुमने पढ़ा और यहां चलेआये मैंने तेरे पितासे प्रतिज्ञाकी थी कि यह नवां चित्र मैं तेरे पुत्र को दूंगा वह इन आठों चित्रोंसे जो तुम्हारे निकट हैं सुन्दरता में कहीं अच्छा है मैंने अपनी प्रतिज्ञाके प्रतिपालन के लिये वृद्धके स्वरूप में तुम्हें स्वप्नदिया वह वृद्ध पुरुष मैंहींथा और मैंनेही तुझे वह गोप्यधन बतलाया जिसमें तुमने अशरफ़ियों का पात्र और हीरे के पात्र रक्खे पाये मुझे तुम्हारा मनोरथ बिदित है जिस हेतु तुम यहां आयेहो धैर्यरक्खो तुम्हारी कामना सिद्ध होगी यदि मैं तुम्हारे पितासे उसके देनेका प्रण न भी करता तो भी तुम को निस्संदेह देता अब तुम मेरा एक काम करो कि एक स्वरूपवान् कन्या जिसका अन्तःकरण शुद्ध हो मेरे लिये लाओ परन्तु चैतन्य रहना उससे किसी कर्म की इच्छा न रखना जैनने इस बचनको मान बड़ी प्रतिज्ञा और बिनती की कि यदि ऐसी कन्या जैसी आपने कहीहै मुझे मिलेगी तो लाऊंगा उसके रूपकी तो परीक्षा हो सक्ती है परन्तु उसके हृदयकी कौन जाने राक्षस ने मुसकराय कहा सत्यहै मनुष्य दूसरे के अन्तःकरणका हाल नहीं जानता किन्तु हमभी अपनी जातिके मनका हाल नहीं जानते अब हम एक द-र्पण तुम्हें देते हैं उससे अन्तःकरण का हाल तुम्हें मालूम होगा जब कोई सुन्दर कन्या पन्द्रहवर्षकी तुम्हें मिले तुम उसका मुख इस शीशेमें देखना यदि वह गुणयुक्त होगी तो तुमको उसका मुख स्पष्ट दीखेगा नहीं तो यह दर्पण ऐसा दृष्टिपड़ेगा कि कदापि तुम्हें भली

भांति उसकी सुन्दरता मालूम न होगी चैतन्यरहो इस प्रतिज्ञा में अन्तर न पड़े नहीं तो तुझे मारडालूंगा जैनने फिर यही प्रतिज्ञाकी कि मैं अवश्य इस प्रण को पूराकरूंगा फिर राक्षसपति ने जैनको दर्पणदेकर कहा हे पुत्र ! अब तुम बिदाहो इसी दर्पणके कारण तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोगा फिर जैन और मुबारक राक्षसपति से बिदाभये और उसी भांति दोनों नावपर बैठ क्षणभर में पारउतरे और वहांसे अपने बाहनोंपर सवारहो सबलोगों समेत क़ैरूनगरकी ओर सिधारे जब वह दोनों क़ैरूमें पहुँचे जैनने कईदिनतक वहां बिश्रामकर मुबारकसे बिदामांगी कि कन्याको ढूंढ़नेजावें मुबारकने कहा क्या यहां सुन्दर कन्या नहीं है इस नगरमें जितनी तुम्हें कन्या मिलेंगी दूसरे पुरमें मिलना उनका कठिनहै जैनने कहा तुम सत्य कहतेहो परन्तु मैं नहीं जानता कि ऐसी कन्या कहां मिलेगी मुबारक ने कहा इससे आप भरोसा रखिये यहां एक बृद्धा स्त्री है कि उसको सम्पूर्ण नगर की कन्याओं का हाल भलीभांति मालूमहै उसको बुलवाय उस कार्य के हेतु नियत करताहूं निश्चयहै कि वह जिसप्रकारकी लड़की चाहोगे लेआवेगी निदान उस बृद्धाको कि बास्तवमें दूतकर्म में निपुण और महाधूर्ता थी बुलाया वह थोड़ेकाल में बहुतसी लड़कियां पन्द्रह पन्द्रह बर्षकी जो रूप अनूपमें सूर्य और चन्द्रमा के सदृशथीं लाई परन्तु जब जैन उनका स्वरूप दर्पणमें देखता तो मलिन पाता ऐसी कोई भी न थी जिसकी सूरत दर्पणमें निर्मल दीखे निदान निरुपाय हो जैन और मुबारक दोनों क़ैरू से बुग़दाद में गये वहां एक बिशाल मन्दिर किरायेको ले उतरे और बड़ी उदारता से रहनेलगे उनके घरमें प्रतिसमय भोजनके पात्र बिछे रहते और नानाप्रकार के व्यंजन पके रहते और सैकड़ों मनुष्य उनके साथ भोजन करते जो बचरहता भिक्षुकों को बांटा जाता निदान उसकी उदारता से पुरबासी आदि सब आनन्द से रहते यह समाचार सर्वत्र प्रसिद्धभया संयोगबश उस गलीमें एक मनुष्य मुराद् नामक महाअहंकारी और ईर्षी रहताथा वह धनवान् और उदारको देख बहुत जलता और बिरोध रखता क्योंकि वह आप निर्धन था जैनुस्सनमकी उदारताको

देख चिन्तित हुआ एक दिन संध्या की निमाज के पीछे मसजिद में बैठ अपने मित्रों से कहा भाइयो मैंने सुनाहै कि एक मनुष्य हमारी गलीमें आके उतराहै दिन २ हज़ारों रुपये खर्च करता है मैं इस नगरमें किसीको ऐसा नहीं पाता जिसने उससे कुछ लिया न हो ऐसा जानपड़ताहै कि वह चोर है जो इस बसेहुये नगरको लूटने आया है तुम सब उससे अपनी रक्षा करो क्योंकि खलीफ़ाको यह बिदित होगा कि ऐसा दुर्जन इस गली में रहता है ऐसा न हो जो हमभी इसी अपराध में फँसें सबों ने उसके बचन सुन कहा वास्तव में ऐसे दुष्टसे बचना उचित है किन्तु हमें चाहिये कि ऐसे मनुष्यकी ख़बर कोतवाल से करें ईर्षी यह मत सुन अपने महल में आया और मनमें यह सोचा कि कल्ह अवश्य कोतवालसे यह बात कहूंगा दैवयोगसे मुबारक ने भी सुबह को बन्दनासे निश्चिन्त हो उनमें बैठ उसी ईर्षी की बार्त्ता सुनीथी तुरन्त एक थैली पांचसौ अशरफ़ियों की और कुछ थान रेशमी गठरीबांधे प्रभात समय उसके घरगया मुराद उसके आने का हालपाय भीतर से बाहर निकल आया और क्रोधित होय मुख बनाय मुबारकसे कहा तेरा क्या नामहै जो तू मेरे घर आया और मुझसे क्या चाहता है मुबारक ने अति नम्र होय कहा मैं बिदेशी तुम्हारे परोस आयरहाहूं फिर वह थैली और रेशमीथानों की गठरी उसे देदी और कहा जैनने जो तुम्हारे परोस में उतराहै तुम्हारी बड़ाईको सुन मुझे तुम्हारे निकट भेजाहै उसको तुम्हारे दर्शनकी इच्छाहै और यहभी कहाहै कि यह थोरीसी वस्तु लेलो और मुझे सदैव अपना सेवक समझो वह उसे ले प्रसन्न भया और मुबारकसे कहा मेरा प्रणाम अपने शाहज़ादेसे कहदो कि मैं आपके सन्मुख न आनेसे लज्जितहूं प्रभातको मैं अवश्य आऊंगा निदान दूसरे दिन भोरको मसजिद में जाय मुराद ने अपने मित्रों से कहा भाइयो मुझे भलीभांति ज्ञातहुआ कि वह मनुष्य जिसका बृत्तान्त मैंने कल तुमसे कहाथा बहुत अच्छा आदमीहै कुकर्मी नहीं किन्तु वह किसी बादशाहका पुत्र है अब कोई उसकी झूठी बात बादशाह से न कहनी चाहिये निदान मुराद ने जो बातें अगिले दिन

उनके चित्तमें जमाई थीं सब उठादीं इसके अनन्तर अपने महल में जाय अतिस्वच्छ बसन पहिर शाहजादे की भेंट को गया जैन ने उसका बहुत सन्मान किया मुराद ने जैन से कहा तुम्हारे इस नगरमें आनेका क्या हेतु है और किस प्रयोजन से तुम यहां इतने दिन ठहरे जैन ने कहा मैं यहां एक महासुन्दर कन्या पन्द्रह बर्षकी ढूंढ़ने आयाहूं मुराद ने कहा ऐसी कन्या का मिलना अतिकठिन है परन्तु मेरे बिचार से एकहै उसका पिता प्राचीनमन्त्री है अब उसने बहुकाल से बादशाही सेवा छोड़दी है और अपनी पुत्री को अपना धर्म कर्म सिखाया है वह कन्या रूप अनूप के बिशेष अन्तःकरण की स्वच्छता भी रखती है यदि तुम उसके पिताके समीप जाय उसकी कांक्षा करोगे तो वह निस्सन्देह उसे तुम्हें देदेगा जैनने कहा मैं जबतक उसमें वह सब गुण देख न लूंगा कदाचित् उसके साथ बिवाह न करूंगा मुरादने कहा तुम क्योंकर एकही बेर उसे देख सकोगे यह बातें तो बहुत दिनतक रहनेसे मालूम होतीहैं जैनने कहा मैं उसका स्वरूप देखतेही जानलूंगा यह सुन मुरादने कहा अब मैं जाय उसके पितासे एकबेर मुख देखनेको कहताहूं तुम उस समय उसकी परीक्षा लेलेना इसके अनन्तर जैनने मुरादके साथ जाय मंत्री से भेंटकी मन्त्री उसकी जातिपांति पूछ अपनी पुत्री ब्याहदेनेपर राज़ीहुआ और अपनी पुत्रीको आज्ञादी कि एकबेर इस शाहज़ादेको सन्मुख होकर अपने मुखसे बस्त्र उठा दिखादे निदान जब उसने बहु मूल्य रत्नजटित बस्त्र पहिर अपने कोमलमुख से बसन उठाया तो वह उसे देखतेही मोहितहुआ और अपने मनमें बिचारा कि जो होगा तो मैं इसे अपनेही साथ ब्याहूंगा राक्षसपतिको न दूंगा फिर उसने उसका स्वरूप उसी दर्पणमें देखा तो अत्यन्त स्पष्ट और उज्ज्वल दृष्टि पड़ा और वह दर्पण सूर्यवत् प्रकाशित भया इस परीक्षा से भी उसे भरोसा हुआ कि जैसा ढूंढ़ता था वैसाही उसे पाया फिर मन्त्री ने क़ाज़ी को बुलवाय उसका बिवाह बांधा और तीन दिनतक उसे अपने घरमें रख बिवाहकी सब रीतैं बड़ी सजधज से कीं तिस पीछे जैनने अपने डेरे पर जाय लाखों रुपयेका जड़ाऊ भूषण मुबारक

के हाथ कन्याके लिये भेजा फिर मन्त्रीने बहुतसा दहेज दे मुबारकके साथ कन्याको बिदा किया जैनने वहां के अमीरों और मन्त्रियों को निमन्त्रण दिया और अनेक प्रकार के व्यञ्जन खिलाय सत्कार किया तत्पश्चात् मुबारकने जैनसे कहा अब यहां रहनेकी कुछ आवश्यकता नहीं क़ैरूको पधारो जो प्रतिज्ञा तुमने राक्षसपति से कीहै उस पर दृढ़ रहो उसे न भूलना जैनने कहा मैं इस कन्यापर मोहितहूं क्योंकर राक्षसपतिको दूं अब मैं इसे अपने देश बांसराको लेजाय अपनी मलका बनाताहूं मुबारकने कहा कदाचित् ऐसा काम न कीजियो राक्षसपति से यहबात छिप न रहेगी तुम्हारे भोगकरने के पहिले वह तुम्हें बध करडालेगा और उसे अपने साथ लेजावेगा इस कारण तुम यह बिचार अपने मनसे निकालो जिसभांति बने अपने प्रणके अनुसार इस सुन्दरी को उसके निकट पहुँचाओ कि उसके अनुकूल रहनेसे तुम्हारा भलाहै जैनने अपना चित्त दृढ़कर कहा तुम इसको मुझसे छिपाओ कि मार्गभर में मैं उसे देखने न पाऊं फिर मुबारक यात्राकी तय्यारी करके शाहज़ादे और दुलहिन समेत सिधारा और वहांसे राक्षसपति के टापूकी राह ली मार्गान्तर में वह चन्द्रमुखी बीमार होगई और शाहजादेको कि केवल विवाहके दिन देखा था घबराके मुबारकसे पूछा कि इतनी यात्रा करके कभी मैं अपने पति के देशमें नहीं पहुँची मैंने बिवाह के दिन के सिवाय उसे फिर न देखा इसका क्या हेतुहै मुबारकने कहा हे सुन्दरी! अब मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा सत्य तो यहहै तुम जैनका स्वरूप कदापि न देखोगी उसने जो तुमसे बिवाह किया है बांसराके लेजाने के वास्ते न था किन्तु तुम्हें राक्षसपतिको कि उसने जैनसे तुम ऐसी सुन्दर कन्याको मांगाथा बुग़दाद से लाया है यहसुन वह रोनेलगी उसके रुदनकरनेसे मुबारक और जैन दोनों चिन्ता करनेलगे फिर उस सुन्दरीने कहा यहां मेरा कोई नहीं मैं दीन बिदेशीहूं तुम ईश्वर सच्चिदानन्द से इस बिषयका कि मुझे तुम छलसे यहां लाये और मेरे मारने की इच्छा रखते हो प्रलयमें क्या उत्तर दोगे निदान उसी दशा से वह उसे राक्षसपति के सन्मुख लेगये और उसे सौंपदिया राक्षसपतिने

उसे देख पसन्द किया और हर्षित हो जैन से कहा तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की जैसी मैं चाहताथा वैसी सुन्दर कन्या तुम मेरे हेतु लाये मैं तुमसे महाप्रसन्न भया अब तू यहां से तुरन्त अपने देश को जा उसी तहखाने में जहां तुमने द्रव्य पायाहै नवांचित्र जिसके देनेकी मैंने तुमसे प्रतिज्ञाकी है पाओगे जैन राक्षसपति से विदा हुआ और क़ैरूकी ओर सिधारा वहां पहुँच थोड़े दिन ठहरा फिर नवें चित्र की लालसासे बांसराको चला परन्तु सम्पूर्ण मार्गमें उसी चन्द्रमुखी की सुधि करके रोता और कहता बड़ाखेद है कि हम छलसे उसको उसके प्रिय पितासे छुड़ाय उसके मारने के लिये राक्षसपति को दे आये उसी चिन्ता में वह बांसरा में पहुँचा उसके मन्त्री सभासद् छोटे बड़े महाहर्षित भये प्रथम जैन अपनी माता के निकट गया और अपनी यात्रा का हाल आदिसे अन्तपर्यंत कह सुनाया उस ने कहा अब तुम शीघ्र उस नवें चित्र को पाओगे उसी स्थानपर चलो जहां राक्षसपति ने तुम्हें देने की प्रतिज्ञा की है परन्तु जैन अपनी प्यारी के बियोग में नवेंचित्र को भूलगया और मनमें कहने लगा अब मैं अपनी प्यारी बिना नवांचित्र लेकर क्या करूंगा हे ईश्वर! किसी प्रकार उस प्राणप्यारी को मुझे दिलवादे निदान जैन अतिचिन्तित होय अपनी माता सहित नवां चित्र लेने को उतरा और वहांजाय नवेंखम्भे पर चित्रके बदले एक सुन्दरी को बैठे देखा शाहज़ादे ने उसे पहिचाना कि यह तो वही कन्या है जिसे हम राक्षसपति को दे आये थे देखतेही वह आश्चर्यित हुआ और बिस्मित हो खड़ा रहगया उस कन्या ने जैन से कहा तुम्हारा अचम्भा इस हेतु है कि मेरे बदले तुम किसी अन्यवस्तु को जो मुझसे उत्तम है लेनेआये थे जैनने कहा हे सुन्दरी! इसलिये मेरा आश्चर्य नहीं जो तुमने बिचारा किन्तु तुम ऐसी बस्तुको पाके मारे हर्षके बिस्मितहो ईश्वर जानताहै तुम्हारी प्रीति और मोहमें मेरा बुराहाल हुआ और बराबर तुम्हारा स्मरण बनारहा कि क्या बुराकाम किया कि ऐसे स्थानमें फेंक आये परन्तु क्या करूं इस बिषयमें मैं लाचारथा क्योंकि राक्षसपति ने मुझसे बचन लेलियाथा कि मैं उसे एक कन्या तुम ऐसी

नम्बर ३८ मुतअल्लिक़े सफ़े ५४८ तृ॰ आ॰

चित्र खुदादाद और हबशी का जंगल में और शाहज़ादी का खिड़की से देखना॰
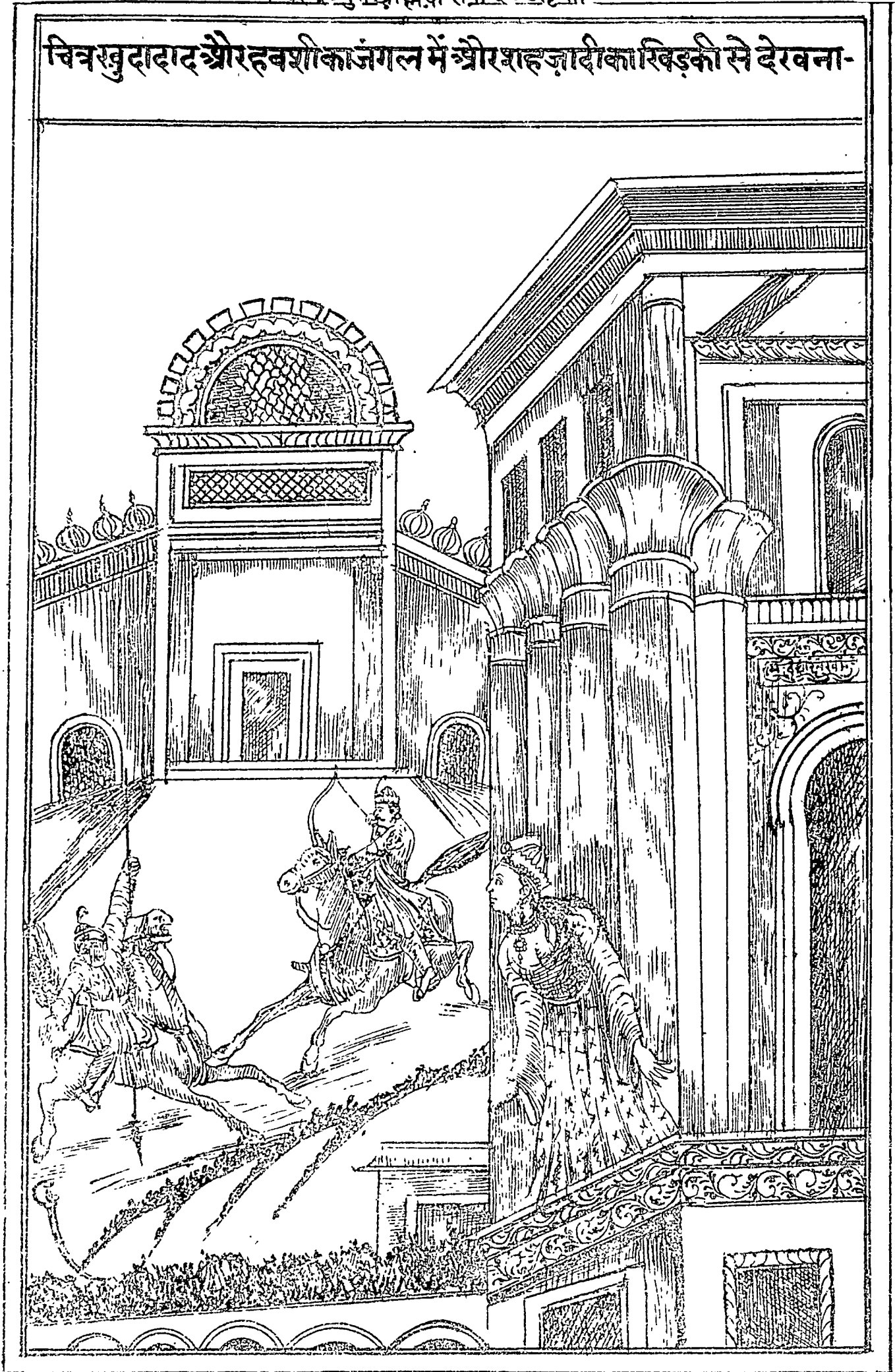
पहुँचाऊं यदि तनक भी इस प्रतिज्ञामें अन्तर पड़ता तो वह मुझे मार डालता मैंने मार्गान्तरमें बहुत चाहा कि उस प्रण को भंगकर तुम्हें अपने देशमें लाऊं और नवेंचित्र से हाथ उठाऊं परन्तु मेरे मित्र ने जो मेरेसाथ था राक्षसपति के भयसे मुझे मना किया अब ईश्वर ने मुझे घरबैठे देदिया और तुम मुझे उन चित्रों वरु संसार के सम्पूर्ण द्रव्य से भी अधिक प्रिय हो जैन यह कहचुकाथा कि अकस्मात् एक घोर शब्द भया और मन्दिर हिलनेलगा शाहज़ादे की माता इस दशाको देख भयभीत हुई इतने में राक्षसपति मनुष्यरूप से प्रकट भया और जैनकी मातासे कहनेलगा हे मलका! मैं तेरे पुत्रसे अति स्नेह रखताहूं जब मुझे मालूम हुआ कि वह इस सुन्दरी पर मोहित है और केवल अपनी प्रतिज्ञाके पूर्णकरने को लाचारी से मुझे यह सुंदरी दी तो मैंने उसे देडाली फिर जैनसे कहा इसी प्रीतिसे सदैव रहना और कोई दूसरी स्त्रीसे ब्याहकर इस कन्याको दुःख न देना फिर उस नवेंचित्रको भी दे शाहज़ादेसे बिदाहो गुप्तभया शाहज़ादे ने अति प्रसन्नहो डौंड़ी पिटवाई कि पुरबासी इस सुंदरीको आजसे बांसराकी मलका कहें सो बहुकालपर्यंत वह अतिआनन्द मंगलसेरहे॥

शाहज़ादे खुदादाद और दरियाबार शाहज़ादी का चरित्र॥

इस कथाके मध्यमें दरियाबार देशका भी बर्णन कियाजाता है हैरन नगर में एक बड़ा बादशाह प्रजापालक सर्वगुण अलंकृत था उस परमात्मा प्रभुने सब कुछ उसे दिया था सिवाय संतान के कोई कामना उसे न थी यद्यपि उसके महलमें बहुतसी सुन्दर २ स्त्रियां थीं परन्तु किसी से संतान न उपजती बादशाह सर्वदा सच्चिदानन्द ईश्वर से पुत्रार्थ प्रार्थना करता निदान एक निशाको उसने स्वप्नमें देखा कि एक अतिउज्ज्वल स्वरूप सत्पुरुष उससे कहता है कि हे बादशाह! तेरी प्रार्थना स्वीकार भई प्रभात उठ निमाज़पढ़ ईश्वरसे मनके मनोरथकी प्रार्थनाकर तत्पश्चात् अपनी पुष्पबाटिकामें जाय माली से अनार मँगवाय अपनी इच्छानुसार भोजनकर वह ईश्वर सर्वोपरिहै तुझपर कृपा करेगा बादशाहने भोरको उठ रात्रिका स्वप्न स्मरणकर प्रभुका धन्यबाद किया तदनन्तर बन्दनाकर घुटनोंके बल

खड़ेहो प्रार्थनाकी पुनि बागमें गया और बागवानसे एक अनार मँग-
वाय पचास दाने गिनके खाये क्योंकि उसके पचास स्त्रियांथीं उस
दिनसे पारीपारी हरएकसे बिहार करनेलगा ईश्वरकी मायासे उसकी
संपूर्ण स्त्रियां सगर्भ भईं परंतु एक स्त्री जिसका नाम पीरोज़था उसके
कुछभी चिह्न गर्भका न प्रकट भया इसहेतु बादशाह को उससे ग्लानि
हुई और बिचारा कि यह बांझ है क्योंकि परमेश्वर ने इसे कुलक्षण
और दुर्भागी समझ न चाहा कि यह शाहज़ादेकी माता हो तदनन्तर
उसने चाहा कि पीरोज़ को मरवाडाले परन्तु मंत्री ने उसे बर्जा और
समझाया कि कदाचित् यह भी गर्भवतीहो और उसका गर्भ और
स्त्रियोंके सदृश प्रकट न होताहो बादशाहने कहा अच्छा इसे मत मारो
परंतु यह मेरे नगरमें न रहे मैं इसे नहीं देखसक्ता मंत्रीने कहा बहुत
अच्छा इसको अपने भतीजे के निकट जिसका नाम सुमेरहै भेजदी-
जिये बादशाहने उसे समरिया नगरमें भेजदिया और अपने भतीजे
को एक पत्र लिखा कि यह सुन्दरी तुम्हारे समीप भेजतेहैं यदि इसका
गर्भ प्रकटहो वा कोई पुत्र इसके उदर से उत्पन्नहो तो तुरंत मुझे सं-
देशा भेजना ईश्वर की कृपासे वह पीरोज़ समरिया देश में जाय पूरे
दिनोंमें बेटा जनी तब शाहज़ादे समीरने हैरनके बादशाहको पत्र
लिखा कि पीरोज़के पेटसे पुत्र उत्पन्नभया बादशाहको इस शुभसमा-
चारके सुनतेही प्रसन्नताहुई और उसका यह उत्तर लिख भेजा कि
यहां भी भगवत्की पूर्ण कृपा से सब स्त्रियोंके उदरसे एक एक पुत्र
उत्पन्न भया है मैं पीरोज़के बेटा होनेसे अतिहर्षयुक्त हुआ तुम उसका
नाम खुदादाद रक्खो उसको भलीभांति पालन पोषण करो और जो
कुछ तुमको छठी आदि रीतोंमें चाहिये यहां से भेजदिया जावेगा
समीर उस कुँवर का पालन मनसे करनेलगा जब खुदादाद पढ़नेके
योग्य भया तो घोड़ेकी सवारी बाणविद्या और संसार के सकल गुणों
को सीख निपुणभया जब अठारहवां बर्ष लगा तो ऐसा रूप और
पुरुषार्थ हुआ कि कोई उसके सदृश संसार में न था उसने अपने
को अति बलवान् और साहसी देख अपनी मातासे कहा मुझे तुम
आज्ञादो तो समरिया नगरको तज कहीं अनत जाय अपने पुरुषार्थ

की परीक्षालूं आजकल मेरे पिता हैरनके बादशाह के कई शत्रुहैं और चहुँओर के कई बादशाह भी चाहते हैं कि उसपर चढ़धावे बड़ा आश्चर्य है कि ऐसे कुसमय में मेरा पिता मुझे क्यों नहीं बुलाता और मुझे इसकठिन समय में अपने साथ क्योंनहीं करता मुझे यहां रहना उचित नहीं यद्यपि मेरा पिता मेरे पुरुषार्थ और साहस को नहीं जानता और मुझे नहीं बुलाया परन्तु मुझे आपही उचितहै कि ऐसे कुसमय में अपने पिताके निकट जाऊं माताने कहा हे प्यारे पुत्र ! यद्यपि तुम्हारा बियोग मुझे स्वीकार नहीं परंतु ऐसे कालमें कि शत्रु चहुँओरसे तुम्हारे पितापर चढ़धाये हैं तुम्हें वहां पहुँचना अवश्यहै शायद वह तुझे अपनी सहायताके लिये बुलाभेजे खुदादादने कहा ऐसे समय में उसके बुलानेकी बाट मैं देख नहीं सक्ता इसके बिशेष मुझे अपने पिताके दर्शनकी इतनी लालसा है यदि मैं जाय उसे न देखूं और उसके चरण न चूमूं तो निश्चय है कि मैं मरजाऊं मैं वहां पहुँच बिदेशी बन उसकी सेवा करूंगा और जबतक मेरे पिताको मेरा पुरुषार्थ सूचित न होगा तबतक अपने को उसका पुत्र प्रकट न करूंगा परंतु माता ने उसे जानेकी आज्ञा न दी एक दिन वह शाहज़ादा अहेरके बहाने सफेद घोड़ेपर जिसकी लगाम स्वर्ण और जीन आदि रत्नजटित मोतियोंके झालरोंकी टकी हुई थी सवार हुआ और रत्नजटित धनुर्बाण अपनी भुजापर लटकाय ससरियासे चला और शीघ्रही अपने मित्रों और सभासदों समेत बड़ी धूमधामसे हैरननगर में पहुँचा और अवसर पाय बादशाहका सामनाकर दण्डवत् की बादशाह उसके रूपको देखतेही प्रसन्न हुआ और अतिकृपापूर्बक उसे अपने निकट बुलाय नाम और जाति पांति पूछी खुदादादने कहा मैं एक धनवान् का पुत्र और कैरूनगरका निवासीहूं सैरके व्यसन से अपने देश को तज अन्य देशों को देखता आपके सन्मुख पहुँचा मैंने सुनाहै आपको शत्रुओंने घेराहै चाहता हूं कि इस संग्राममें अपनी बीरता आपको दिखाऊं बादशाह उसकी बीरतायुक्त बार्त्तासुन अत्यन्त प्रसन्न भया और अपनी सेनाका उसे रणधीर किया उसने अपने अधीनी कटकको

देखतेही सब प्रधानोंका सन्मान किया और सबको राजी किया और यथाबिधि साज सामान से उसे अलंकृत किया बादशाह उसे देखतेही प्रसन्न हुआ और उसकी इस बुद्धिपर उसे अपना सभासद किया वहांके मन्त्री उसके स्वभावको देख उसे मनसे प्यार करनेलगे उस के सामने सब शाहजादे और अन्य अधिष्ठाता तुच्छ होगये इससे वह डाह करनेलगे खुदादाद बादशाह को बहुत प्रसन्न रखनेलगा और दिन दिन बादशाहकी कृपादृष्टि उसपर अधिक होती जो शत्रु हैरनदेशको परास्त कियाचाहतेथे कटक का बनाव और युद्धकी सामग्री तैयार देख अपने अपने देश को चलेगये धीरे धीरे बादशाहने उसकी बुद्धिपर बिश्वास कर अपने समस्त पुत्र उसे सौंपदिये कि वे होशियारहों यद्यपि खुदादाद अपने भाइयों से छोटाथा परंतु अपनी चतुरता से सबका हाकिम हुआ इससे वह सब उससे महाईर्षा रखनेलगे और शत्रु होगये और परस्पर कहनेलगे कि हमारे पिताको क्या होगया जो इस बिदेशीको इतना प्यार करताहै कि हम सबपर इसे हाकिम कियाहै हम कोई काम इसकी आज्ञा बिना नहीं करसक्के यह बात हमें कदाचित् स्वीकार नहीं इसका कुछ यत्न किया चाहिये कि इस बिदेशीको यहांसे निकालें और इसे कोई दोष लगावें एकने कहा इसे अकेला पाय मारडालें दूसरे ने कहा इस भांति इसे बधकरना हमारेवास्ते अच्छा न होगा क्योंकि यह बात बादशाह से छिपी न रहेगी और वह हमारे प्राणका बैरी होजावेगा ईश्वर जाने हमारे साथ क्या करे इससे उत्तम यहहै कि इससे अहेर खेलनेकी आज्ञा लेकर किसी ओर को चलेजावें और किसी दूरदेश में होरहें इससे हमारे पिताको बड़ा खेद होगा निदान अप्रसन्न और चिन्तायुक्तहो इसे मारडालेगा मेरे बिचारमें यह युक्ति उत्तमहै उन सबने कहा निस्सन्देह यह मत अच्छाहै यह समझकर उन्होंने खुदादादके निकट जाय कहा यदि हमें आज्ञाहो तो हम सब भाई मिलके सैर तमाशा देखने और अहेर खेलनेजावें संध्यापर्यन्त आजावेंगे खुदादाद ने कहा जाओ वह सब भाई अहेर का बहानाकर चलेगये और फिर न लौटे तीसरे दिन जब बादशाहने उन सबको न

देखा तो खुदादादसे पूछनेलगा कि क्या कारण है कि मैं अपने पुत्रोंको नहीं देखता उसने बिनती की हे खुदावन्द! तीन दिन बीते कि वह सब अहेर खेलनेको एक दिनके लिये छुट्टी लेकर गये आज तीसरा दिन है अबतक लौटकर नहीं आये इससे यह सेवक बड़ी चिन्तामें है जब बहुत दिन बीते और वह न फिरे बादशाह शोक-युक्त हुआ और क्रोधको थांभ खुदादादसे कहा हे बिदेशी! तूने इ-तना साहस किया कि मेरे पुत्रोंको अहेर खेलनेकी आज्ञादी और आप उनके साथ न गया अब तेरे वास्ते उत्तम यह है कि तू जा जहां जाने तुरन्त उनको ढूंढ़ला नहीं तो निस्सन्देह तुझे बध करूंगा खुदादाद बादशाहके ऐसे बचन सुन डरा और शीघ्र तैयार होकर घोड़े पर सवार हुआ और शाहजादोंके ढूंढ़नेको नगर छोड़ एकओर को चला ग्राम ग्राम पुर पुर उनको ढूंढ़ताथा जब कहीं उनका चिह्न भी न पाया तो अत्यन्त शोकवान् होय कहनेलगा हे मेरे भाइयो! तुम्हें क्या होगया और तुम कहां हो किसी सबल बैरीके फंदे में तो नहीं पड़े जहांसे निकल नहीं सके जबतक तुम मुझे न मिलोगे मैं हैरननगरमें न जाऊंगा क्योंकि बादशाहको महाखेद होगा नि-दान वह बन बन ढूंढ़ता ढूंढ़ता एक महानिर्जन बनमें पहुँचा उसके मध्यमें काले पत्थर का एक महल अतिसुन्दर बनाहुआ था यह फिरता फिरता उस महलके नीचे जा खड़ाभया और क्या देखताहै कि एक महासुन्दर स्त्री अतिदुर्दशामें शिरके बालखोले उसी घरमें है और उसके सम्पूर्ण बस्त्र फटे और मुखका रंग पीला और महा-खिन्नतासे कुछ धीरे २ कह रही है खुदादाद ने कानदे सुना कि वह क-हतीहै हे बटोही! इस स्थानसे भाग नहीं तो अभी इस घरके स्वामी से बहुत दुःख पावेगा इस घरका स्वामी जंगीकौमका मनुष्यभक्षी है जिन मनुष्यों की मृत्यु निकट पहुँचती है वही इस बनमें आते हैं वह हत्यारा उनको पकड़ एक महासूक्ष्म अँधियारे तहखानेमें उन्हें अपने भोजनके निमित्त रखता है खुदादादने कहा हे सुन्दरी! मुझे बताओ कि तुम कौन हो और कहांकी रहनेवाली हो उसने कहा मैं कैरू देशकी रहनेवालीहूं और बुगदादको जातीथी कि इस कुलक्षण

बनमें पहुंची और वही जंगी मुझे मिला उसने मेरे समस्त सेवकों को मार मुझे इसी घरमें रक्खाहै अब मैं जीना नही चाहती इससे मरना भला क्योंकि वह हब्शी मुझसे भोग करनेकी इच्छा रखताहै अबतक मैंने उससे अपने को बचाया यदि मैं कल उसका कहना न मानूंगी तो वह मुझे निस्सन्देह मारडालेगा अब मैं अपने प्राण से हाथधोये बैठीहूं परन्तु तुम क्यों अपने प्राण देने यहां आये हो शीघ्र भागो वह मुसाफ़िरोंके ढूंढ़ने को गयाहै अभी आता होगा वह बहुत दूरसे बनको देखा करताहै अभी वह सुन्दरी बातें करतीथी कि इतने में वह हब्शी आयपहुँचा उसका बड़ास्थूल और उग्रस्वरूप था और बड़े दृढ़ तुरकी घोड़ेपर सवार भारी खड्ग भुजामें लटकाये हुये था उसके सिवाय दूसरेकी सामर्थ्य न थी कि उस खड्गको उठासके खुदादाद उसके बिकराल रूपको देखके भयभीत हुआ और ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि इस राक्षसको मारे फिर खड्ग निकाल सावधान हो बड़े साहस और दृढ़तासे उसके पहुँचने की बाट देखनेलगा जब वह समीप पहुँचा शाहज़ादेको निर्बल जानके युद्धकी इच्छा न की चाहताथा कि उसे जीता पकड़े खुदादादने उसके मनका बिचार जान लिया कि वह मुझसे युद्धकी इच्छा नहीं रखता शीघ्रही खड्ग उसके घुटनेपर ऐसा मारा कि वह क्रोधमें आके घोरशब्द करनेलगा उसके चिल्लाने से सम्पूर्ण बन गूंजगया फिर उस हब्शीने झुलझुलाय ऐसे बेगसे खड्ग मारा यदि वह अपनी और अपने घोड़ेकी चतुरता से ख़ाली न देता तो साफ़ खीरे की तरह दो टूक होजाता जब उस हब्शीका वार ख़ालीपड़ा तब खुदादाद ने झपटके ऐसी गदा मारी कि उसका दाहिना हाथ कटके गदासमेत धरती पर गिर पड़ा फिर एक क्षण पीछे बहुत घबरा गया और आसन उसका रिकाबसे छूटके पृथ्वीपर आ रहा खुदादाद ने तुरन्त घोड़े से उतर अपने शत्रुका शीशकाट फेंकदिया वह सुन्दरी खिड़की से यह बृत्तान्त देखतीथी और ईश्वरसे उस बीरके लिये जयकी प्रार्थना करतीथी जब उस हब्शी को मराहुआ और खुदादादकी जय देखी महाप्रसन्न हुई और खुदादादसे पुकारके कहा ईश्वरका धन्यबाद है

कि उसने इस महादुष्टको तुम्हारे द्वारा बिनाश किया अब तुम मेरे निकट आवो और इसकी कुंजियां वह अपने पास रक्खा करताथा लेके द्वार खोलो खुदादादने उसके जेबसे बहुतसी कुंजियोंका गुच्छा निकाल द्वार खोला और जहां वह सुन्दरी बैठीहुईथी गया उसने उसे आते देख अगवानीकी और चाहा कि उसके चरणोंपर गिरपड़े परन्तु खुदादादने उसे झुकनेभी न दिया इसके अनन्तर उसने इसकी प्रशंसा की और कहनेलगी तुम्हारे समान योधा संसारभरमें नहीं वह सुन्दरी पाससे ऐसी रूपवान् देखपड़ी कि वैसी दूर से न देखपड़ी थी खुदादाद उसे देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ फिर वह परस्पर बैठ वार्त्ता करनेलगे इतने में अकस्मात् रोनेपीटनेका शब्द सुनपड़ा खुदादाद ने पूछा यह शब्द किसका है और कहांसे आता है उसने एक द्वार की ओर जो उस घरके नीचे था सैनसे कहा यहांसे यह शब्द आता है इस स्थान में बहुतसे मनुष्य अभाग्यतासे इस हब्शीके हाथमें पड़े सो इसी जगह में हैं प्रतिदिन वह एकको भूनखाता था खुदादादने कहा मैं उनको निकालना चाहताहूं चलो मुझे बताओ कि वह किस मकान में बन्द हैं फिर वे वहीं गये और एक कुंजी कुफ़ल में लगाकर उसे खोलनाचाहा परन्तु वह न लगी तब उसने दूसरी कुंजी लगाई कि इतने में वह अधिक शोर करनेलगे खुदादादको महाखेद भया कि ये इतने क्यों अधीर होते हैं उस सुन्दरीने कहा हमारे पांवकी आहट और क़ुफ़ल की खड़खड़ाहट से जानते हैं कि वही दुष्ट आयाहै हममें से एकको भूनकर भक्षण करेगा सब यही बिचारते हैं कि आज मुझे भूनके भोजन करेगा इसहेतु भयसे सबके सब घबराते हैं और बहुत शोर मचाते हैं तहख़ाने में से उनका शब्द ऐसा सुनाई देता था मानो वह कुवें में से बोलरहे हैं निदान जब उसने द्वार खोला तो बहुतसी सीढ़ियोंका ज़ीना दृष्टिपड़ा उस सीढ़ीसे उतर वहां पहुँचा तो वहां बड़ा अँधियाराथा और सूक्ष्मस्थान पाया उसमें सौ मनुष्यों से अधिक थे और हरएकके हाथ बेड़ियोंसे बँधे हुयेथे खुदादादने कहा अब तुम भय मत करो तुम्हारे शत्रुको मैंने प्राणसे मारडाला अब ईश्वरका धन्यबाद करो कि उसने तुम्हारे

बैरीका बिनाश किया वे सब इस बातको सुनतेही महाहर्षित भये फिर दोनों उनकी हथकड़ी बेड़ी खोलनेलगे जो बेड़ियों से छोड़ाये जातेथे वह शाहज़ादे की सहायता करतेथे निदान क्षणमात्रमें सबको खोल वहांसे बाहर निकाला तब सबोंने खुदादाद के चरण चूमे और उसे आशीर्बाद दिया जब वह सब दालानमें जहां भलीभांति सूर्यका प्रकाशथा आये तो उनके मध्य में खुदादादने अपने भाइयों को जिनके ढूंढ़ने के लिये निकलाथा देख आश्चर्य किया और उनसे कहनेलगा उस ईश्वर सच्चिदानन्दका धन्यबाद है कि तुम सब मुझे जीते मिले तुम्हारा पिता तुम्हारे बियोगमें महादुःखित होरहा है भला तुममें से किसीको उस दुष्टने तो नहीं खाया फिर अपने समस्त भाइयों को गिनके उस समूहसे न्यारा किया वह प्रसन्नतासे परस्पर कण्ठसे लगे पुनि खुदादादने भलीभांति सबोंको भोजन कराया और बहुतसी बस्तु जो उस क़िले में ईरानके क़ालीन और चीनकी साटन और कमख़ाब आदिके थानआदिक उस दुष्टने ब्यापारियोंके लूटके इकट्ठे किये थे सबको दिये और जो जो उनका था सो सो उनको देडाला फिर कहा जो जो गठरी जिस जिस की हो पहिचानके लेले बाक़ी बस्तु सबको बांटदी और यथावस्थित सबको प्रसन्न करके फिर उन से कहा तुम इस असबाबको क्योंकर लेजावोगे सवारी इस निर्जीव बनमें कहां मिलेगी उन्होंने कहा यह हब्शी हमारे ऊंटभी लूटकर लायाथा वह इस क़िले की पशुशालामें होंगे फिर खुदादाद सबके साथ वहां गया तो वहां सौ ऊंट और उन्हीं शाहज़ादोंके सौ घोड़े बँधे हुयेथे उसने घोड़े और ऊंटोंको जिस जिसकेथे देदिये उस पशुशाला में सैकड़ों गुलाम हब्शीथे उन्होंने सबको छूटाहुआ देख जाना वह हब्शी मारागया इससे भयभीतहो बनकी ओर भाग गये किसीने उनका पीछा न किया फिर वह सब ब्यापारी खुदादादसे बिदा हो अपने अपने देशको पधारे खुदादाद ने उस सुन्दरीसे कहा अब तुम किधर जावोगी और कहां से यह हब्शी तुमको लायाथा हमें बताओ तो हम वहां तुम्हें पहुँचादें निश्चय है यह सब हैरन के बादशाह के पुत्र तुम्हारे देशको जानते होंगे तो तुम्हें वहां पहुँचादेंगे उस सुन्दरी

ने कहा मैं कैरूकी रहनेवालीहूं तुमने मेरे साथ बड़ा उपकार किया कि इस महादुष्टसे मेरा प्राण और धर्म बचाया अब मैं तुमसे अपना वृत्तान्त नहीं छिपातीहूं मैं बड़ेबादशाह की पुत्रीहूं उसको पकड़ एक दुष्टने मारडाला और उसका मुल्क छीनलिया मैं अपने प्राण और प्रतिष्ठाको बचाके वहांसे भागी यह बात सुन खुदादाद और उसके सब भ्राताओंने उसे धैर्य दे कहा हे सुन्दरी! अब तुम आनन्द से रहोगी किसीभांतिसे तुम्हें दुःख न होगा तुम अपना सब वृत्तान्त कहो जब उसने देखा कि वे कहे नहीं बनपड़ता तब इस भांति कहनेलगी॥

दरियाबार नामक शाहज़ादी की कहानी॥

एक द्वीप में दरियाबार नाम बड़ा नगर है उसका बादशाह बड़ा प्रतापी था सन्तान न होने से सदा चिन्तित रहता और ईश्वरसे प्रार्थना करता बहुत काल पश्चात् उसके घर बेटी उत्पन्न भई सो वह मैंही अभागी हूं मेरे पिताने मेरे उत्पन्न होतेही बड़ा उत्सव मनाया जब मैं सयानी भई मुझे उसने लिखाया पढ़ाया और राज्य के प्रवन्धादिक भलीभांति सिखाये इस प्रयोजनसे कि मेरे पीछे यही राज्य करेगी एक दिन मेरा पिता अहेरको गयाथा कि उसने बनमें एक गोरख़र के पीछे घोड़ा दौड़ाया और उसका इतना पीछा किया कि सन्ध्या होगई और अपनी सेना से अलग होगया निदान थकित होय घोड़े से उतर मार्गमें बैठा और बिचारनेलगा कि वह गोरख़र थककर इसी स्थानपर आवेगा इसके अनन्तर वृक्षों के मध्यमें कुछ उजियाला देखा तो समझा कि यहां कोई ग्राम है वहां चल रात्रि बितानी चाहिये भोरभये समझलियाजावेगा यह बिचार वहां से उठ उस प्रकाशकी ओर चला जब वह बहुत दूरतक गया तो क्या देखताहै कि वह प्रकाश एक घरसे जो घोरबनके मध्यमें है दिखाई देताहै फिर उसने दूरसे देखा कि अतिबिकरालरूप एक हब्शी राक्षस के सदृश उस घरमें बैठाहै और बहुतसी शराबकी ठिलियां सन्मुख रक्खी हैं और बैलके मांस को कोयलोंकी आगपर भूनभून खाता है और ठिलियों से उठा उठा मदिरा पान करता है उसीमें उसने एक सुन्दर स्त्रीको भी देखा कि रस्सीसे हाथ बँधेहुये एक कोनेमें पड़ा चिन्ता

से बैठी है और उसके चरणों के पास दो तीन बर्षका एक बालक बैठा हुआ माताकी दुर्दशा देख रुदन करता है मेरे पिताको यह बृत्तान्त देखतेही दया उपजी और बिचारनेलगा कि इस दुष्टको गदासे बधकरे परन्तु अवसर न पाय उसकी घातमें खड़ारहा इतने में राक्षस ने बैल का आधा मांस खाय सब ठिलियोंकी मदिरा पीली फिर उस स्त्रीसे कहनेलगा हे सुन्दरी, मृगनयनी, शाहज़ादी! कबतक तू मुझसे अलग रहेगी और मेरा कहना न मानेगी देख तो मैं तेरा कितना सत्कार करताहूं और कितना तुझ पर मरताहूं तुझेभी उचितहै कि तूभी प्यारकर उसने उत्तर दिया हे दुष्ट बनबासी! तू क्या बकता है कभी ऐसा न होगा जितना तू चाहे मुझे दुःख दे वा मुझे प्राणसे मारडाले मैं कदाचित् तुझसे प्रसन्न न हूंगी वह राक्षस यह बचन सुनतेही कुपित हुआ और उस चन्द्रमुखीको एक हाथसे पकड़ खड्ग उठाय चाहा कि उसका शिर काटडालें इतने में मेरे पिता ने एक तीर बड़े बेग से उसके हृदय में मारा कि छातीके पार होगया और उसी समय वह पृथ्वीपर गिर यमद्वारको गया फिर मेरे पिता ने घरमें जाय उस सुन्दरी के हाथ खोले और उससे पूछा तू कौनहै और क्योंकर यह दुष्ट तुझे यहां लाया उसने कहा यहां से पासही समुद्र के तटपर सरासंग की जाति बनमनुष्यों के सदृश रहती है उसके बादशाह से मेरा बिवाह भया और यही राक्षस जिसे तुमने अभी मारा है मेरे पिताका सभासद् मुझपर मोहित था और यही इसकी इच्छा बनी रहतीथी कि अवसर पाय मुझे ले भागे सो एक दिन मेरे भर्ता को अचेतपा मुझे और मेरे बच्चेको वहांसे इस बन में भगालाया और प्रतिदिवस मुझसे मैथुन की इच्छा रखताथा परन्तु अबतक ईश्वरने मुझे उससे बचाया मैंने अपने प्राणसे हाथ धोके उससे इस भांतिकी वार्त्ता की तब उसने निराश हो मुझे मारना चाहा पर यह दुष्ट तुम्हारेही हाथसे नरकबासी भया मेरा यही बृत्तान्तथा जो मैंने तुमसे कहा यह सुन मेरे पिताने उसको धैर्य दे कहा प्रभात को मैं तुझे इस निर्जन स्थानसे दरियाबारको लेजाऊंगा मैं वहांका बादशाह हूं यदि तुम्हें वह नगर पसन्द हुआ तो उसमें रहना उस सुन्दरीने

यह स्वीकार किया दूसरे दिन भोरको मेरा पिता उस बनसे उसको बालक समेत लेचला इतनेमें अकस्मात् उसके सरदार और सेवक और सेना सकल रात्रिको उसे ढूंढ़ते और चहुँओर दौड़ते फिरते थे वहां पहुँचे और बादशाहके दर्शन पाय महाहर्षित भये और उस सुन्दरीको बादशाहके साथ सवारदेख आश्चर्य करनेलगे कि इस निर्जन बनमें ऐसी रूपवान् स्त्री कहांसे पाई बादशाहने सम्पूर्ण कहानी उनसे कह सुनाई फिर एकने उस सुन्दरीको अपने पीछे और दूसरेने उसके बालकको घोड़ेपर चढ़ालिया थोड़े कालमें मेरा पिता अपने महल में पहुँचा और एक मन्दिर अतिसुन्दर महाबिशाल उस स्त्रीके रहनेको बनवादिया और उसके पुत्रको पढ़ानेलगा निदान वह सुन्दरी आनन्दपूर्बक रहनेलगी बहुत काल बीता कि उसने अपने भर्तारका कुछ भी समाचार न सुना फिर उसने मेरे पिताके साथ बिवाह करनेकी इच्छा की और अतिसुन्दर हावभावसे मेरे पिताको मोहितकर उससे बिवाह किया उसका पुत्र भी थोड़ेवर्ष पीछे अच्छा तरुण और सुन्दर निकला राज्यादिक कार्यों के बिशेष सर्वगुणोंमें अलंकृत भया उसे मेरे पिता और सम्पूर्ण सभासदोंने पसन्द किया और सबके बिचार में यह आया कि मेरा ब्याह उसके साथमें होवे और मेरे पिताके पीछे गद्दी पर बैठे वह यह अनुग्रह बादशाहकी अपने ऊपर देख बिशेष ब्याहकी ख़बर सुन अतिप्रसन्न भया फिर एक दिन मेरे पिताने चाहा कि मेरा हाथ उसे पकड़ाके मुझे ब्याहदे परन्तु प्रथम उसने कई प्रतिज्ञा की उनमेंसे एक यहथी कि दूसरी स्त्रीसे बिवाह न करे यह बात उस महाअहङ्कारीने स्वीकार न की और समझा कि मुझे तुच्छ समझ यह प्रण करतेहैं इसी हेतु बिवाह न भया इस बातसे वह अतिअप्रसन्न भया और मनमें मेरे पितासे शत्रुता रखनेलगा निदान एक दिन अवसरपाय वह मेरे पिताको बधकर मेरे मारनेको महल में आया परन्तु मन्त्री यह ख़बर सुनतेही हित की राहसे मुझको तुरन्त वहांसे निकाल लेगया और गुप्त अपने एक मित्रके गृहमें लेजाय रक्खा और दो दिनकी अवधि में जहाज़ तैयार कराय मुझे और एक मेरी दासीको एक देशको कि उसका बादशाह मेरे पिताका

मित्र था लेचला प्रारब्धानुसार कई दिन पीछे ऐसा जल उमड़ा और प्रचण्ड बायु चली कि कप्तान और खलासी उसे देख मूर्च्छा खाय गिरपड़े निदान तरङ्गोंके बेगसे जहाज़ टूकटूक होगया और उस अथाह जल में मन्त्री आदि सबके सब डूबगये परन्तु मैं एक पाटपर लहरोंके थपेड़ोंसे समुद्रके कूलपर आयलगी उस सच्चिदानन्द प्रभुने मुझे दुःख दिखानेको अपनी माया दिखाय अबतक जीता रक्खा जब मैं सावधान भई तो अपनेको तीरपर पाय ईश्वर का धन्यबाद किया परन्तु मन्त्री और अपने साथियोंको न देख जाना कि वे जलमें डूबगये इसके अनन्तर अपने पिताका मरना यादकर महाबिलाप करनेलगी और किसी अपने सम्बन्धीको न देख बहुत घबराई और यह बिचारा कि अब मैंभी इस समुद्रमें डूबमरूं इतने में अकस्मात् मनुष्य और घोड़ोंका बड़ाशब्द सुना और क्या देखती हूं कि कई सवार शस्त्रसहित हैं उनके मध्यमें एक अतिस्वरूपवान् शाहज़ादा सुनहले बस्त्र पहिने और हीरेका पटुका बांधे और शीश पर रत्नजटित मुकुट रक्खे आता है उन सबोंने मुझे वहां अकेला देख अचम्भा किया इसके अनन्तर उस शाहज़ादेने एक मनुष्यको मेरे समीप भेजा कि मुझसे मेरा हाल पूछकर शाहज़ादेसे कहे उसने मुझसे कितनाही पूछा परन्तु मैंने उसे उत्तर न दिया और रोनेलगी जब उन्होंने बहुतसे पाट जहाज़के तटपर देखे तो समझे कोई जहाज़ टूटगयाहै जिसकी ये लकड़ियां और पाट यहां बहआयेहैं यह सुन्दरी भी उसी जहाज़ पर होगी और किसी तख़्ते पर यहां बह आई फिर उन सबोंने मुझे घेरलिया और नम्रतापूर्वक पूछनेलगे कि मैं अपना बृत्तान्त उनसे कहूं जब मैंने उनसे कुछ न कहा तो शाहज़ादा अधीन होकर आपही मेरे निकट आया और सबको मेरे पाससे हटाके मुझसे कहा हे चन्द्रमुखी ! तुम किसी बातकी चिन्ता और भय मत करो हम इस हेतु तेरा बृत्तान्त पूछते हैं कि तुम्हें अपने मन्दिरमें अपनी माताके निकट लेजावें वह हरप्रकार तेरी सेवा करेगी और तुमको प्रसन्न रक्खेगी मैंने उसे भला मनुष्य पायके अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया उसने सुनतेही अश्रुपात किये और

नम्बर ३९ मुतअल्लिक़े सफ़े ५६० त॰ सा

चित्र खुदादाद के मक़बरे पर सवारों और फ़क़ीरों और स्त्रियों और दाद शाह का शोक करना ॥
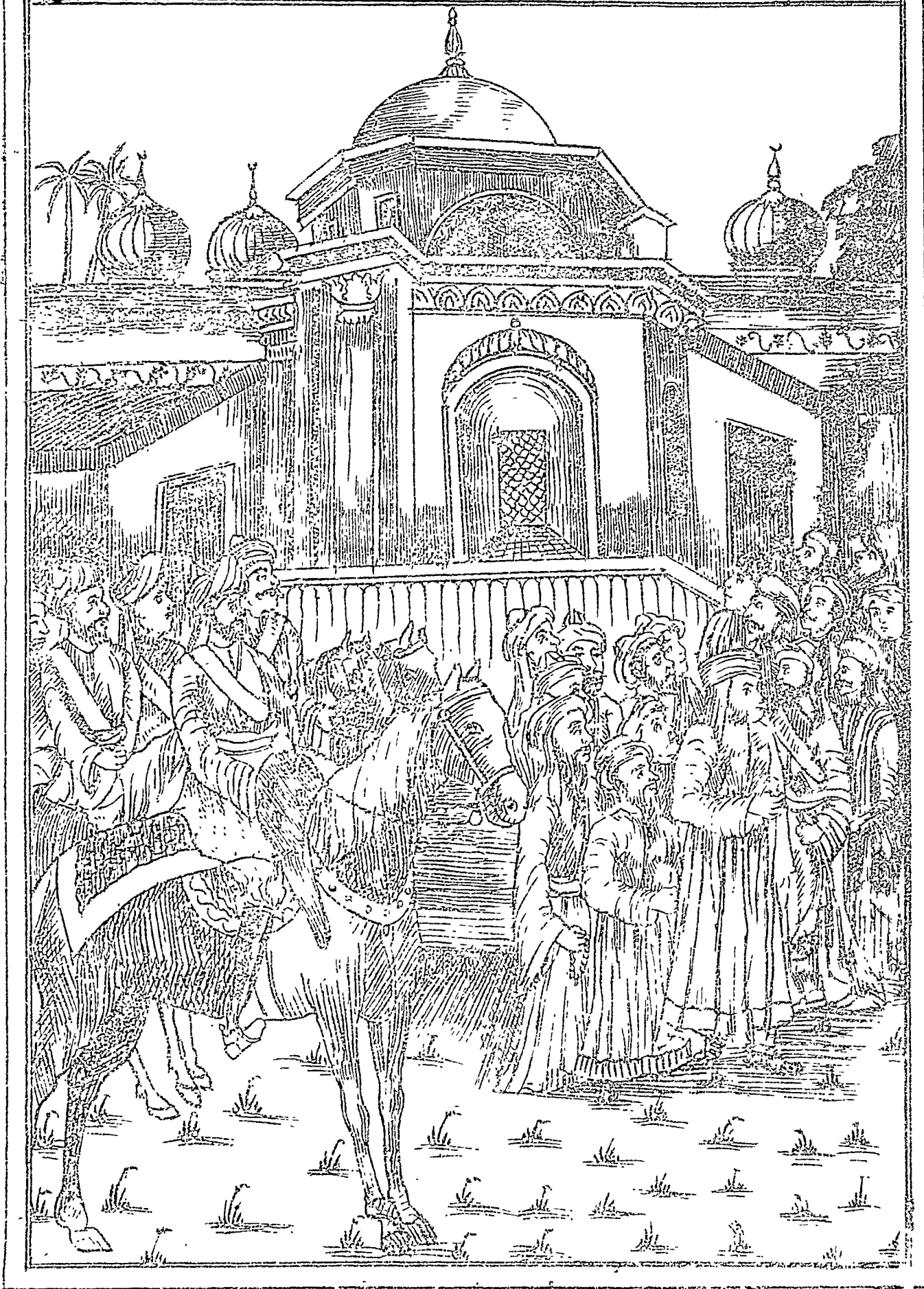
बहुत पछिताया फिर मुझे धैर्यदे अपने साथ लेगया और अपनी मालाको सौंपदिया मैंने उसकी मातासे भी अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा उसने भी सुन खेदकिया और निशिदिन मेरा सन्मान करती रही और अपने पुत्रको मुझपर मोहित और अधीर देख मेरा बिवाह उसके साथ करदिया मैंभी उसके रूप छवि अनूप और प्रीति को देख प्रसन्न रही फिर बिवाहकी रीतें राजसी प्रकार से कीगईं भाग्य से कुछ उपाय नहीं चलता बरातकी रात्रि जंगबारका बादशाह जो उस द्वीपके निकटहीथा और सदैव उससे युद्धकी इच्छा रखताथा अवसरपाय बड़ा कटक ले चढ़धाया और उस नगरके बहुतसे मनुष्यों को मार मुझे और मेरे पतिके पकड़नेकी इच्छाकी तो हम शीघ्रही उससे बचके रातोंरात समुद्रकी ओर भागे वहां एक धीमर की डोंगी हाथलगी हम दोनों उसपर सवारहो चले दूरतक वह नाव जलधारा में पड़के एक ओरको बही जातीथी परन्तु यह मालूम न था कि भाग्य कहां लेजावेगा निदान तीसरे दिन देखा कि एक जहाज़ हमारी ओर चलाआता है उसे देख हम प्रसन्न हुये और जाना कि किसी ब्यापारीका जहाज़ होगा वह हमारी सहायताको आया है जब वह समीप पहुँचा तो उसमेंसे पांच सात डकैते नग्न गदा हाथों में लिये हमारी डोंगी पर चढ़आये और हम दोनों को बांध अपने जहाज़पर लेगये जब उन्होंने मेरे मुखपर से वस्त्र उतार देखा तो मुझपर सबके सब मोहित होगये और सबोंने चाहा कि इस सुन्दरी को मैं लूं बहुकालपर्यन्त वह परस्पर बादानुबाद करते रहे फिर एक क्षणमें परस्पर युद्धकर कटकर रहगये परन्तु एक मनुष्य जो सब से प्रबल था बचरहा मुझसे कहनेलगा मैं तुझे कैरू नगर में लेजाय वहां एक अपने मित्रको दूंगा मैंने उससे एक दासी लादेनेकी प्रतिज्ञाकी है अनन्तर उसने कहा यह मनुष्य कौनहै तेरे कुटुम्ब मेंसेहै वा तुझपर मोहितहै मैंने कहा यह मेरा पतिहै उसने कहा यदि ऐसाहै तो मैं इसे इस दुःखसे छुड़ाऊं क्योंकि यह तुझको मित्र के निकट क्योंकर देखसकेगा यह कह उस महादुष्टने मेरेभर्तार को उठाय उस अथाह जलमें उसीप्रकार बँधेहुये डालदिया मैंने

रोया पीटा और उसे वर्जा परन्तु कुछलाभ न भया और उसे जलमें डूबते देख चाहती थी कि मैं भी कूदूं परन्तु उसने तुरन्तही मुझको पकड़ लिया और मस्तूलकी रस्सीसे बांधरक्खा और जहाज़ चलाया वायु तो अनुकूलही थी शीघ्रही एक छोटे नगरमें पहुंचे वह उस नगर के कई ऊंट ढेरे और दास मोलले कैरूको चला कईमंज़िल पृथ्वीके मार्ग से चलेथे कि दैवयोग से इसी हब्शीने जो इस महलमें रहताथा हमें आके घेरलिया और दूरसे उसे देख हमने बड़ा ऊंचा मुनारा समझा जब निकट आया कठिनतासे उसे मनुष्य समझा फिर उसने गदा निकाल उस डकैत से कहा अपने हाथ क़ैदियोंके सदृश बांधकर अपने दासों और इस सुन्दरी समेत मेरे साथ होले परन्तु धाड़ी ने बड़े साहस से दासों समेत उसका सामना किया बहुकाल पर्यन्त युद्ध होता रहा निदान वह दासों समेत मारागया फिर वह हब्शी मुझे और ऊंटोंको लुटेरेकी लोथ समेत भवनके भीतर लेगया और उस मृतकका मांस संध्याको भोजन किया फिर मुझेदेख कहा अब शोक और क्रोधको मनसे दूर कर और इस स्वच्छ क़िले में रहकर मुझसे आनन्द भोग परन्तु इस समय जो तुझे खेदहै इस हेतु आज तुझे कुछ न कहूंगा कल तुझसे विहार करूंगा यह कह मुझे एक मकान में लेजाय रक्खा और आप द्वारमूंद दूसरे मकानमें जाय अकेला सोरहा प्रभातको उठ उसने किवाड़ खोले और विदेशियों के ढूंढ़ने को दूर निकलगया और खाली हाथ फिरा आताथा कि तुम से सामनाभया और तुम्हारे हाथों मारागया जब वह अपना वृत्तान्त कहचुकी खुदादाद को उसपर दया उपजी और उसे धैर्यदे कहा अब तुमको किसी भांतिकी चिन्ता वा भय न होगी ये बादशाह हैरनके पुत्रहैं जिसे चाहे स्वीकारकर तुम्हें अपने नगरमें जाय आनन्द से रक्खेंगे और इनका पिता सब भांतिसे तुम्हारी रक्षा करेगा यदि तुम इनसेभी प्रसन्न नहीं तो फिर तुम उस मनुष्यको जिसने तुम्हें इस दुःखसे छुड़ाया विवाहकरो यह बात उसने स्वीकार की सो वहीं बड़ी धूमधामसे व्याहभया वहां सकल वस्तु खानेपीने फल, मदिरा आदिकी

वर्त्तमानथीं खुदादादने अनेक प्रकार के व्यञ्जन पकवाये और अपने भाइयों को खिलाये दूसरे दिन सब वस्तु अपने साथले वहांसे हैरन-नगरको सिधारे एक मंज़िल पहुँच अच्छी जगह देख डेरे खड़ेकर उतरे जब एकही मंज़िल हैरननगरकी शेषरही रात्रि को भोजनकर उन सबोंने भलीभांति मद्यपानकी खुदादाद आनन्दितहो कहनेलगे मैंने अबतक अपनेको तुमसे छिपाया परन्तु अब मैं अपना हाल वर्णन करताहूं मैंभी तुम्हारा एक भाईहूं अर्थात् हैरनके बादशाहका पुत्रहूं मुझे शाहज़ादे समेर ने पाला है मेरी माताका नाम पीरोज़ है और दरियाबार से भी कहा हे सुन्दरी! अबतक तुमको मेरी जाति पांति ज्ञात न थी अब तुमभी प्रसन्नहो कि तुम्हारा पतिभी शाहज़ादा है उसने कहा यद्यपि तुमने मुझे अपना वृत्तान्त न कहाथा परन्तु मुझे पूर्वही निश्चयथा कि तुम किसी बड़े बादशाहके पुत्रहो वह सब शाहज़ादे उसके बचन सुन प्रकटमें तो प्रसन्नहुये परन्तु मनमें महाईर्षा से उनको यह बात बुरी मालूमहुई यह दुष्ट खुदादाद के उपकार को भूल उसके मारनेका सोच करनेलगे और इसी बातके लिये परस्पर सम्मत करनेलगे एकने उनमें से कहा हमारा पिता उसे बिदेशी समझ इतना प्यार करताथा कि हम सबका उसे स्वामी किया और जब जानेगा कि मेरा पुत्रहै तो निश्चय उसे युवराज करदेगा इसहेतु उत्तम यहहै कि इसे यहीं मारडालें यह बिचारकर वह सब उसके डेरेके चहुँओर जाय गदामारनेलगे यहांतक कि खुदादाद को टुकड़े टुकड़ेकर अपने विचारसे मारडाला दूसरे दिन प्रभातको हैरन में पहुँच बादशाहसे भेंटकी बादशाह उनको कुशल-पूर्वक देख बहुत प्रसन्न हुआ और उनसे बिलम्बका कारण पूछा उन्होंने हब्शी से पकड़ा जाना और खुदादादकी सहायता से छूटने का हाल तो न कहा किन्तु यह कहा हमें अहेरखेलते बिलम्ब भया बादशाह उनकी बातोंको सत्य जान चुपकाहोरहा॥ अब खुदादादका वृत्तान्त सुनो जब भोरको दरियाबारने जागके देखा कि खुदादाद रु-धिरमें डूबा और अनेक घावोंसे घायल पड़ा है देखतेही उसे मरा हुआ जान बिलाप करने लगी और उसकी तरुणता और गुण

कथनकर आंसुओंसे नदी बहाई फिर जब ध्यानधर उसका मुख देखा तो कुछ कुछ उसके नथुनों से स्वर आताथा और शरीर उसका गर्म पाया तो डेरे के द्वारको मूंद नगरकी ओर जर्राह ढूंढ़नेगई और एक जर्राहको अपने साथ डेरेमें लाई वहां खुदादादको न पाया तो समझी कि कोई बनपशु इसे उठायलेगया और खायगया यह बिचार कर इतनी रोई कि जर्राहको उसपर दया उपजी और उसे धैर्यदे नगरमें लेगया और एक अलग मकान उसके निवासको दे दो बांदियां उसके सेवार्थ नियतकीं और बहुधा आप भी जाय उसकी बड़ी सेवा और सन्मान करता एक दिन जर्राहने उसे किंचित् प्रसन्न पाय पूछा हे सुन्दरी ! यदि तुम मुझे अपनी आपदा और बृत्तान्त सुनाओ तो मैं अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी सहायता और परिश्रम करूं उसने उसे चतुर जान अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त उससे कह सुनाया जर्राहने कहा हे मृगनयनी ! यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम तुमको तुम्हारे बादशाह तक पहुँचानेका उपायकरें वह नीतिमान् है तुमको देख प्रसन्नहोगा और तुम्हारा बदला अपने पुत्रोंसे लेगा शाहज़ादी इस बातपर राज़ी हुई फिर जर्राहने दो ऊंट किराये के लिये और उनपर सवारहो हैरननगर में गया और एक सराय में उतर सरायवाले से नगरका बृत्तान्त पूछा उसने कहा यहां के बादशाहका पुत्र अत्यन्तप्रतापी और पुरुषार्थी बहुत कालसे लोप है उसका हाल कोई नहीं जानता कि उसे क्या हुआ जीताहै वा मरगया पीरोज़ उसकी माताने उसे ढूंढ़ा परन्तु उसका ठिकाना न लगा उसके माता पिताके बिशेष पुरके सब रईस उस शाहज़ादेकी सुधिकर बिलापकरते और पछतातेहैं यद्यपि इस बादशाहके और उंचास बेटेहैं परन्तु कोईभी उसकी बीरता और पुरुषार्थ को नहीं पहुँचता यद्यपि उसने बहुत ढूंढ़ा परन्तु कहीं उसका ठिकाना नहीं लगता जर्राहने यह सुन यह हाल दरियाबारसे कहा उसने चाहा कि खुदादादकी माताके निकट जाय अपने पतिका हाल उससे कहे पर जर्राहने सोचके उससे कहा यदि तुम इस उपाय के लिये वहां पहुँचो और शाहज़ादे तुम्हारे आगमनका समाचार सुनेंगे तो तुमको

मारडालेंगे तुम्हारे प्राणकी व्यर्थ हानि हो इस से उत्तम यहहै कि प्रथम मैं किसीभांति खुदादादकी माता के समीप पहुँचूं तदनन्तर तुम्हें बुलाऊं जबतक तुम यहीं बैठीरहो यह कह वह तो पुरकी ओर गया मार्गान्तर में एक स्त्री को ऊंटपर सवार देखा जिसका साज अतिस्वच्छथा उसके पीछे बहुतसी बांदियां और अनेक दास और प्यादे एक ओरसे चले आते हैं पुरवासी उस सुन्दरीको सवार देखतेही दोनोंओर अगवानी के लिये पंक्ति बांध खड़ेहोगये जर्राह ने भी उन सबके साथ उसे दण्डवत्की एक मनुष्यसे पूछा यह तो कहींकी मलका मालूमहोतीहै उसने कहा निस्सन्देह यहांके मनुष्य इसे बहुतसा प्यार करते हैं क्योंकि यह खुदादाद की माता है निश्चय तुमने उसका वृत्तान्त सुनाहोगा वह यह वचन सुनतेही सवारीके साथ लगाहुआ चलागया इतनेमें उस सुन्दरीने किसी मसजिद में पहुँच ईश्वरकी वन्दनाकी और बहुतसी अशरफ़ियां रुपये पुण्यकिये क्योंकि बादशाहने प्रतिज्ञाकी थी कि खुदादादके लौटनेतक उसकी माता याचक और भंगनों को बहुत दान करे कि याचक उसके पुत्रके प्राणको आशीर्वाद दें तदनन्तर जर्राहने भीड़में पैठ उसके एक दास से कहा भाई हमको एक बात इस समय अ-वश्य मलकासे कहनी है उसने उत्तरदिया यदि तुझे कुछ समाचार खुदादाद का कहना है तो जावो वह निस्सन्देह सुनेगी यदि कोई दूसरा मनोरथ है तो कठिनहै इन दिनों वह अपने पुत्रके वियोगमें विकल है जर्राहने उसके कानमें कहा मैं कुछ उसीके लाभकी बात कहूंगा दासने कहा यदि ऐसा है तो तू चुपका शाही महलपर्यन्त सवारीके साथ लगा चलाजा निदान जब पीरोज़ मन्दिरतक पहुँची उसी दास ने उससे बिनयकी एक विदेशी आपसे एकान्तमें कुछ कहा चाहता है पीरोज़ने उससे कहा उसे लेआ तदनन्तर वह उसे सन्मुख लेगया पीरोज़ने उसे कृपादृष्टिसे आगे बुलवाया जर्राहने पृथ्वी चूम बिनयकी मैं बड़ी कथा आपसे कहा चाहताहूं तुम उसे सुन बिस्मित होगी तदनन्तर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त खुदादाद का कह सुनाया पीरोज़ अपने पुत्रके घायल होनेका हाल सुनके मूर्च्छा

खाय गिरपड़ी बांदियों ने दौड़के उठाया और उसपर गुलाब नीर छिड़का जब सचेत भई तो जरीहसे कहनेलगी तुम जाय दरियाबार को मेरी और बादशाहकी ओरसे धैर्यदो फिर उसे बिदाकर अपने पुत्रकी सुधिकर बिलाप करतीथी कि अकस्मात् उस महलमें बादशाह आये और पीरोज़ को इस भांति रुदन करते देख हेतु पूछा उसने जो कुछ जरीह से सुनाथा बर्णन किया बादशाह सुनतेही अपने पुत्रों से महाअप्रसन्न भया तदनन्तर वहां से उठ सभा में आया सम्पूर्ण सभा बादशाह को क्रोधित देख भयभीत भई बादशाह ने तख़्तपर विराजमानहो वज़ीरको आज्ञादी कि तत्काल मेरे चौकी पहरे के हज़ार चपरासी लेजाय उंचासों पुत्रों को पकड़के लेआ और उसी बन्दीगृह में जहां खूनी बँधे रहतेहैं क़ैदकर चैतन्य रह कोई उनमें से निकलके न जानेपावे मन्त्री ने यह आज्ञा पाय उन सबको पकड़ बन्दीगृह में डालदिया और बादशाह से आय कहदिया बादशाहने सभी को बिदाकर कहा एक मास पर्यन्त मुझे सभा करनेका अवकाश नहीं तुम एक महीने पीछे आना फिर वहां से उठ मन्त्रीको अपने साथ लियेहुये पीरोज़ के महल में आया और मन्त्रीको आज्ञादी कि तू सरायमें जाय दरियाबार शाहज़ादी को जरीह सहित बड़े सत्कार से मेरे निकटला मन्त्रीने उसी समय एक सफ़ेद ऊंट जिसकी सब सामग्री रत्नजटितथी बादशाहके पशुशाला से लेलिया और आप घोड़ेपर सवार हो बहुतसी सेना ले वहां पहुँचा और बादशाहकी ओरसे उसे सब कुछ कहा और उसी ऊंटपर सवार कराय और उसको तुरकी घोड़ेपर चढ़ाय बड़ी धूमधाम से महलकी ओर लेचला पुरबासी उसकी सवारी और जलूस देखने को दूर दूरसे दौड़आये फिर सबको बिदितहुआ कि यह सवारी खुदादादकी स्त्री दरियाबार शाहज़ादी की है वह सब बहुत प्रसन्न भये और उन्हें निश्चयहुआ कि इससे खुदादादका ठिकाना लगेगा निदान जब उसकी सवारी महल के द्वारतक पहुँची बादशाह उसकी अगवानी को आया उसने अपने बाहनसे उतर बादशाह के चरण चूमे बादशाह उसका हाथ पकड़ पीरोज़ मलका के

घर लेगया तदनन्तर वह तीनों परस्पर कण्ठ से लग बहुत रोये कि हिचकियां लगगईं जब वह सावधान हुये तब दरियाबारने बादशाहसे बिनयकी मैं आशारखतीहूं कि जिन्होंने मेरे पतिको निर्दोष इस निर्दयतासे बध किया उनसे उनका बदला लिया चाहिये यह सुन बादशाहने कहा हे सुन्दरी ! तुम भरोसा रक्खो मैं इन सब पुत्रों को मारडालूंगा पुनि बादशाह कहनेलगा यद्यपि मैंने अपने प्रिय पुत्र खुदादादकी लोथ नहीं पाई परन्तु उसकी बड़ाई के वास्ते अवश्य है कि एक मक़बरा उसका बनवाऊं तदनन्तर मन्त्री को बुलवाय आज्ञादी कि नगर के मध्य में एक मक़बरा सफ़ेद संगमर्मर का तत्काल तैयार हो मन्त्री ने मेमारों को बुलवाय एक उत्तम स्थान में बड़ाभारी मक़बरा बनवाया और उसके मध्य में खुदादाद का चिह्न लिखवाय रक्खा बादशाहको जब क़बरकी तैयारीकी ख़बर पहुँची उसने एक दिन उसके रोनेपीटने और क़ुरान पढ़ने के लिये नियत किया जब वह दिन आनपहुँचा सम्पूर्ण पुरबासी देखने को एकत्र भये बादशाह अपने समस्त सभासदों और मन्त्री के साथ वहां पहुँचा और फ़र्शपर जो कालीसाटन सुनहली बूटी का बिछा हुआ था बैठा थोड़ी देर पीछे सवारोंका रिसाला कि उनके शिर नीचे और नेत्र कुछ खुले और कुछ मूंदेहुये थे पहुँचा और दो बेर उस क़बरकी परिक्रमा कर तीसरी बेर उसके सन्मुख खड़ेभये और बड़ा शब्द कर कहनेलगे हे बादशाह के पुत्र ! यदि हमारे खड्गवेग और भुजबल से तुम्हारा छुटकारा हो तो हम प्राण सहित बिद्यमानहैं यदि ईश्वरकी कोई दूसरीआज्ञाहै तो हम निरुपायहैं यह कह वह जिधरसे आयेथे उधर चलेगये तदनन्तर कुटीके रहनेवाले सौ बृद्ध जिन्होंने केवल अपनी आयु में ईश्वराराधन किया और कभी मनुष्यका रूपभी न देखाथा आये उनमेंसे एक शिरपर बड़ी भारी पुस्तक रक्खे और उसको अपने एक हाथ से थांभे सबके प्रथमथा वह सब तीनबेर परिक्रमाकर मध्यमें खड़ेहोगये एकने उनमें से बड़े शब्द से कहा यदि हमारे आशीर्बादसे तुम्हारा छुटकारा वा प्राण बचें तो हमभी मौजूद हैं यह कह वह भी चलेगये तदनन्तर

पचास स्त्रियां अतिरूपवान् छबि धाम चन्द्रमुखी मृगनयनी रत्नज-टित अतिसुन्दर सफ़ेद टांघनोंपर सवार और शिरोंपर रत्नोंकी टोक-रियां भरीहुई लिये उसी प्रकार मक़बरेके चहुँओर फिरीं तदनन्तर सामने आईं उनमें से एक जो सबसे छोटीथी बड़े शब्दसे कहने लगी अय शाहज़ादे! यदि हमारा रूप अनूप तुम्हारे काम आवे तो हम मौजूदहैं हम सब तुम्हारी दासियां हैं परन्तु तुम जानतेहो इस स्थानपर कुछ सुन्दरता भी काम नहीं आती यह कह और आशी-र्बाद दे चलीगईं तदनन्तर बादशाह और उसके साथियों ने तीन बेर परिक्रमा की और बादशाह खड़ाहो कहनेलगा हे मेरे पुत्र! मेरे नेत्र तेरे बियोग में ज्योतिहीन होरहे हैं उनमें प्रकाश कर इस बिधिकी बार्त्ताकर रोनेलगा और उसके साथियोंनेभी महाबिलाप किया जब निश्चिन्त भये बादशाह सभासदों सहित महलमें आया और मक़बरे का दरवाज़ा मूंदागया फिर प्रतिसप्ताह एक दिन वहां जाता और शोक करता तदनन्तर बादशाहने उंचासों पुत्रों को ब-दलालेनेकी आज्ञा दी यह समाचार नगरभरमें प्रसिद्ध हुआ और उनके फांसी की सामग्री तैयार भई संयोगबश क्या सुनपड़ा कि एक शत्रु बादशाहका जिसे उसने पहिले परास्त कियाथा बहुतसा कटक लिये नगरके निकट पहुँचा बादशाह इस समाचारको सुन बहुत घबड़ाया और सम्पूर्ण सभासद् भी ब्याकुलहो कहनेलगे बड़ाखेद और पश्चात्ताप है यदि शाहज़ादा खुदादाद इस समयपर जीता होता तो इस बैरीको क्षणभर में परास्त करता निदान बाद-शाह आपही अपनी सेना साथले पुरसे बाहर निकला और तैयारी भागजानेकीभी कररक्खीथी कि जिस समय पर शत्रु प्रबल होगा तो नदके मार्गसे और किसी देशको निकल जाऊंगा निदान जब दोनों कटक सन्मुख भये और शत्रुकी सेना चहुँओर से इन्हें घेरा चाहतीथी कि बिनाशकरें कि अकस्मात् बहुत सवारों की सेना प्र-कटहुई दोनोंओरके बादशाह उनकी चतुरता देख आश्चर्यितहुये और न जाना यह कटक किसकी ओरकाहै जब वह सेना निकट पहुँची तो हैरन के बादशाह के शत्रुओंपर चढ़गई और परसेनाको

मारकर टूक २ करडाला हैरन यह दशा देख बिस्मित हुआ और ईश्वरका धन्यबाद किया और अपने सेवकों से कहा इस सेना के अधिपति का नाम पूछो कि यह कौन है और कहां से आया जब दुश्मनकी सेना मारीगई और जो कुछ बची अपना २ प्राणलेकर इधर उधर भागगई तब खुदादाद हैरनके बादशाहकी भेंटके लिये आया जब वह दोनों सन्मुख हुये बादशाहने उसे पहिंचान लिया कि यह मेरा प्यारा पुत्र खुदादाद है तो इतना हर्षितहुआ जिसका बर्णन नहीं होसक्ता खुदादादने कहा जिसको आपने सुनाथा मारा गया वह मैं हूं ईश्वरने मुझे आजके दिनके लिये जीता रक्खा कि आपकी सेवा करूं और आपके बैरीको मारूं बादशाहने कहा हे मेरे प्यारे पुत्र ! मैं तुझसे निराश था तेरे मिलनेकी मुझे कब आशा थी कि फिर तुझे जीता देखूं निदान वह दोनों पिता पुत्र बाहनों से उतर परस्पर छातीसे मिले पुनि बादशाहने उसका हाथ पकड़ कर कहा मुझे तेरी बीरता प्रथम से ज्ञात होचुकी है बिशेष मनुष्यभक्षी हब्शीसे छुड़ाना और अपने भाइयों से दुःख पानेका हाल भली भांति बिदितहै अब अपनी माता के निकट चलो वह तुम्हारे शोक में रोते रोते ब्याकुलहै उसमें केवल हड्डियां रहगई हैं और तुम्हारे हाथसे जीत होने का समाचारसुन प्रसन्नहोगी मार्गान्तर में खुदा-दादने बादशाह से पूछा हे पिता ! आपको उस दुष्ट हब्शी का बृत्तान्त क्योंकर मालूमहुआ किसी मेरे भ्राताने आपसे बर्णन किया होगा बादशाहने कहा नहीं किन्तु दरियाबारसे मैंने सब बृत्तान्त सुना वह बहुतकालसे हमारे पास रहतीहै और तुम्हारे भाइयोंसे बदलालेनेको कहतीहै खुदादादने यह सुना कि दरियाबारभी यहीं है महाप्रसन्नभया दूसरे दिन खुदादादके सलामत आनेका हाल न-गर भरमें पहुँचा निदान घर घर उत्सव होनेलगा ठौर ठौर नृत्य गीत आदिमें मङ्गल होनेलगे फ़ीरोज़ और दरियाबार खुदादाद के कण्ठसे लग रोई फिर वह चारों एकही ठौर बैठ इधर उधरकी बार्त्ता करने लगे इतने में बादशाह और उन दोनोंको यह आश्चर्य हुआ कि खुदादाद इतने भारी घावों के खानेपर भी क्योंकर जीतारहा सो

बादशाहकी आज्ञानुकूल खुदादादने कहा प्रभातको डेरेमें कहींसे एक किसान आया मुझे घायल और रुधिर से भरे देख ऊंटपर सवार कर अपने घर लेगया और बनकी बूटियां पीस घावपर लगाईं सो घाव तत्काल भरआये और थोड़ेही दिनों में आरोग्य होगया तब मैं इस नगरकी ओर सिधारा मार्गान्तर में शत्रुकी असंख्य सेना देखी कि हैरनके मारनेको जाती है मैंने यह वृत्तान्त ग्रामबासियों से कहकर उनसे सहायता मांगी और बहुत से मनुष्योंको एकत्रकर उनका अधिपति बना और तत्काल अवसर पर पहुँचा और आप के प्रतापसे बैरियोंको परास्त किया बादशाहने खुदादाद की बड़ी प्रशंसा की पुनि कहनेलगा उन सब शाहज़ादोंको मारने की आज्ञा देताहूं जिन्हों ने तुमसे ऐसा अपकार किया उसने बिनय की यद्यपि वह इसी दण्ड के योग्य हैं परन्तु आपहीके पुत्र और मेरे भाई हैं मैंने उनका अपराध क्षमा किया आशारखताहूं कि आपभी उनका अपराध क्षमा करेंगे बादशाहने खुदादादके कहनेसे उन सब का अपराध क्षमा किया और समस्त सभासदोंको इकट्ठाकर खुदादादको अपना युवराज किया और उंचासों पुत्रों को अपने सन्मुख बुलवाया वह सब उसी दशासे बँधेहुये आये खुदादाद सबकी बेड़ियां और हथकड़ियां कटवाकरके गलेसे मिला और सबसे प्रीति करने लगा जैसे कि उनसे हब्शी के मन्दिरमें प्यार कियाथा पुरबासियोंने उसकी सुशीलतापर धन्य धन्य कहा इसके अनन्तर उस जर्राहको पारितोषिक और द्रव्यादिक दे बिदा किया मलका शहरज़ादने यह पूरी कहानी शहरयार बादशाहसे कही यदि आप सोते जागतेकी कहानी सुनेंगे तो अतिप्रसन्नहोंगे इतनेमें दुनियाज़ादने पूर्ववत् कहा क्या उत्तम वृत्तान्त तुमने सुनाया अब कुछ और कहो उसने कहा अब तो प्रभात होगया जो कल मेरे प्राण बचेंगे तो एक अद्भुत कहानी सोते जागते की कहूंगी शहरयारने कहनेकी आज्ञादी सो इस भांति कहनेलगी ॥

खलीफ़ा हारूंरशीद और सोतेजागते की कहानी ॥

हारूंरशीद खलीफ़ा की सल्तनत में एक बड़ा व्यापारी बग़दाद

नम्बर ४० मुतअल्लिक़े सफ़ै ५७० न०-भा.

चित्र अबुलहसन का ख़लीफ़ा के महल में आश्चर्य देखने का

में रहताथा उसके केवल एकही पुत्र अबुल्हसननामक अपनी ब्याहता स्त्रीसे उत्पन्नहुआथा उसने बड़े परिश्रमसे अपनी आयुभरमें बहुतसा द्रव्य संचय किया परन्तु बड़ा कंजूसथा जब वह मरगया अबुल्हसन अपने पिताके बिपरीत बहुत ख़र्च करनेलगा धीरे धीरे अपने इष्टमित्रोंको इतना दिया कि वह सब धनवान् होगये इसके अनन्तर उसने अपने शेष द्रव्यके दो भाग किये एकमें नगर के घर मोललिये जिनका किराया उसकी आयुभरको काफ़ीथा और द्वितीयभागसे अपना ख़र्चचलाता बहुधा उसके साथ मित्र रहते और सदैव इन्द्रके सदृश सभा रहती और रातदिन वह सब अबुल्हसन के साथ उत्तम भोजन करते जब भोजन तैयार होता रंग बरंगे उत्तम उत्तम पात्र जिनमें नाना प्रकारकी चित्रकारियां खिंचीथीं बिछायेजाते और बेश्याओं के नृत्य गीत रातदिन देखते और भांड़ नक़्क़ाल हरदिन अनेक भांतिकी उसके सन्मुख नक़लें और तमाशे करते इसी प्रकार अबुल्हसनने एकही बर्षमें अपने पिताका सम्पूर्ण द्रव्य ख़र्च करडाला जब उसे खिलाने पिलानेकी सामर्थ्य न रही मित्रोंने भी उसके घर आना जाना छोड़दिया किंतु मार्गमें कदापि किसीका सामना होता तो वह उसकी ओरसे मुखफेर आंखें चुराता और जो कोई उनमेंसे मिलता और अबुल्हसन उसे ठहराता तो वह कुछ बहानाकर चलाजाता वह उन झूठे मित्रोंकी अशीलतासे बिस्मित भया और मनमें पछताता कि जिनकी प्रसन्नताके लिये मैंने निर्बुद्धितासे अपना सर्ब धन ख़र्च किया उनके शीलकी यह दशाहै निदान महाखेदितभया एक दिन अपनी माताके निकट गया और शोकवान्हो बैठा माताने उसे चिन्तित देख पूछा हे प्यारे पुत्र! तेरी यह क्या दशा भई मैं सर्बदा तेरा चित्त प्रसन्न देखतीथी आज तू क्यों उदासीन है जानपड़ता है कि तूने अपने पिताका द्रव्य उड़ा डाला मैं तेरा चलन देख पहिलेसे जानतीथी कि तू शीघ्रही निर्धन होगा परन्तु तौभी जानतीथी कि कुछतो बचावेगा परन्तु मुझे मालूमहुआ कि तूने कुछ न रक्खा सब लुच्चों और दुष्टोंको अपना मित्र बनाय खिलादिया अब इस दुःखमें कौन काम आताहै वह

अपनी माता के ये बचन सुन रोदिया और उन अपने मित्रोंके नि-कट गया जिनपर निश्चय रखताथा और उनसे ऋणकी तौरपर मांगा वह तो उसीसे धन पाय अपना भलीभांति निर्बाह करतेथे सबोंने इन्कार किया ऐसे बनगये जानो कभीकी जानपहिचान न थी अत्यन्त अशीलतासे साफ़ जबाब दिया वह उनसे निराश होय माताके निकट आया और कहनेलगा तुमने सत्य कहाथा वास्तव में वह सब दुष्ट स्वार्थीथे निदान उसे भलीभांति उन स्वार्थी मित्रों का बृत्तान्त ज्ञात भया तब प्रतिज्ञाकी कि कभी भी बुग़दाद के बा-सियोंसे मित्रता न करूंगा अपनी शेष बस्तुओंको बेंच थोड़ा द्रब्य इकट्ठाकिया और उसे थोड़ा थोड़ा ख़र्च करनेलगा केवल एक बि-देशीको अपने घर लेआता रात्रिको उसके साथ भोजनकरके और आधीराततक उससे मित्रवत् बार्त्ता करता और प्रभातको उसे बिदा करता दूसरे दिन दूसरे को बुलाता और इसी भांति ब्यवहार रखता और भोरको भोजन पकवाय पांच चार घड़ी दिन रहे बुग़दादके पुलपर बिदेशियोंकी ढूंढ़में जाय बैठता और रात्रि को उसका स-न्मान करता और बातों में अपना मन बहलाता और सुबहको उसे बिदाकर कहता अब तुम कभी मेरे घरमें न आना और न मुझसे भेंटकरना निदान मित्रोंकी मित्रतासे उसका ऐसा बिश्वास जातारहा कि वह अधिक भेंटसे भागता और उसे यही स्वभाव पड़गयाथा कि मेहमानके बिना उसे भोजनमें स्वाद न लगता इसलिये यह बात ठहराई कि केवल दोपहर बिदेशियों का सन्मान करता और दूसरे दिन फिर उसे न बुलाता जो कभी कोई उससे मिलता तो उसकी ओर नेत्रभी उठाके न देखता बरन प्रणामका उत्तर भी न देता एक दिन अबुलहसन अपनी प्रकृतिके अनुकूल बुग़दादके पुलपर बैठाथा कि उसदिन ख़लीफ़ा हारूंरशीदसे उसकी भेंटहुई परन्तु ख़लीफ़ाने अपना बेष ऐसा बदलाथा कि कुछभी न पहिचाना जाता यद्यपि उस के साथ बहुतसे मन्त्री और सेवक थे और वह सब राति दिन नगर की रक्षा करतेथे तथापि ख़लीफ़ा आपभी बेष बदल नगर का हाल मालूम करनेके लिये निकलता ख़लीफ़ाने इस बिषयके लिये यह

नियम कियाथा कि मासकीपहिली तिथिको संध्यासे बग़दादके मार्गोंमें बेष बदलकर निकलता और नगरका बुरा भला देखता सो मवस्सल के रहनेवालों के बेषसे निकला उसके साथ महाबलवन्त दासभीथा अबुलहसन उसे देख समझा कि यह कोई मवस्सल का ब्यापारी है तुरन्त उसके बराबर जाय प्रणाम किया पुनि बिनयकी कि कृपाकरके आजकी रात मेरे घर बिश्राम कीजिये और मेरे सूक्ष्म भोजनको खाय मुझे कृतार्थ कीजिये निदान उस बिदेशीको कि बास्तव में वह ख़लीफ़ा था अपने घर में लेआया मार्गान्तर में अपनी प्रकृतिको उससे प्रकटकिया ख़लीफ़ा उसके भोले और सुन्दर बचन सुन समझा कि इसका हालभी मालूम करना चाहिये इसलिये उसके साथहोलिया उसने उसे अपने घर में लेजाय अतिस्वच्छ स्थान में जो महासुन्दर शीशे आदि बस्तुओं से अलंकृत था मसनद पर बैठाया इसके अनन्तर उत्तम उत्तम बर्तन बिछाकर अनेक भांति के सुन्दर पाक उसपर परसदिये उसकी माता पाकक्रिया में अद्वि-तीयथी और अपने पुत्रकी प्रीतिसे आपही श्रम करती सो उस दिन तीन पात्र पाकके लाई एकमें कई कुक्कुटका मांस धराहुआ और दूसरे भाजन में अतिउत्तम भुनाहुआ मांस तीसरे में कबूतरका मांस था वह सब भोजन इतनाथा कि उसे कई मनुष्य खाकर तृप्तहोते अ-बुलहसन ख़लीफ़ा के सन्मुख हो बैठा और भोजन करनेलगा जब तृप्तहुये ख़लीफ़ाके दासने जलभरा पात्र लाय उसके हाथ धुलाये जब पात्र उठाये गये अबुलहसनकी माताने पात्रों में फल बादाम आदिक लगाय उनके सामने रक्खे जब सायंकाल हुआ अबुलहसन दीपक जलाकर स्वच्छ मद्यके शीशे और गिलास लाये और माता से कहा इस मनुष्य के सेवकको भलीभांति भोजन कराना फिर उसने मदिराका पात्रभर ख़लीफ़ाको दिया तत्पश्चात् आप पीगया इसी भांति ख़लीफ़ानेभी उसे पिलाया फिर आप पीगया इसी प्रकार वह दोनों मद्यपी आनन्दित हुये ख़लीफ़ा अबुलहसन के स्वभाव से अति प्रसन्न हुआ और उसका नाम और जाति पूछी उसने कहा मेरा नाम अबुलहसनहै मेरा पिता स्वर्गबासी ब्यापारी था यद्यपि

अमीरों की सामग्री न थी परन्तु प्रतिष्ठापूर्वक यहां व्यापारियों के सदृश निर्वाह करताथा जब वह कालबशहुआ उसका धन मुझे मिला मैंने उसे बहुतसा खर्च करडाला परन्तु जब सब धन लम्पटता और मित्रों के सन्मानमें खर्च होगया तो मित्रोंने मुझे बांसके सदृश भीतर से खोखलपाय मेरे घरका आनाजाना छोंड़दिया मुझे रुपये लुटा देनेसे दुःख हुआ इसलिये हरएक मित्रके निकट सहायताके लिये गया परन्तु किसीने मेरी सहायता न की सब अशील होगये तब मैं समझा कि वह सब मित्र स्वार्थी थे मैंने भी उनसे मिलना छोंड़ दिया और यह प्रतिज्ञाकी कि बग़दाद के बासियों से कि वह महा-अशीलहैं कभी भी न मिलूंगा किन्तु प्रतिदिन बिदेशीको केवल एक रातकेलिये लाकर अपने साथ भोजन कराऊंगा और दोपहर उससे वार्त्ताकर प्रभातको उसे बिदा कियाकरूंगा जैसा कि राहमें आपसे कहाथा ख़लीफ़ा अबुल्हसनके यह बचन सुन बहुत प्रसन्न हुआ और कहनेलगा तुमने भला किया कि ऐसे स्वार्थी झूंठे मित्रों से मिलना छोंड़दिया अब तुम निस्सन्देह आनन्द से रहतेहो और दिन दिन बिदेशियों से अपना जी बहलाकर भोर को उन्हें बिदाकर फिर उनसे प्रयोजन नहीं रखते तुम्हारा स्वभाव बहुत अच्छा है मुझे तुम्हारे इस आनन्द पर बड़ी ईर्षा है पुनि बहुकालपर्यन्त वह मद्यपान और हास्यादिककी वार्त्ता करते रहे इसमें रात बहुत बीती ख़लीफ़ाने कहा रात्रि बहुत व्यतीतहुई मुझे सुबहको मंज़िल चलना है कहो तो सोरहूं और तुम भी अब आराम करो भोरको मैं तुम्हारे जगनेके पहिले चला जाऊंगा परन्तु मुझे यह इच्छाहै कि मैं तुम्हारी इस सेवासे उऋण होजाऊं जो कुछ तुम कामना रखतेहो कहो उसे पूराकरूंगा मैं बग़दादियों के समान अशील नहीं अबुल्हसनने ख़-लीफ़ा से जिसे ब्यापारी समझे था कहा हे मेरे परमप्रियसखा ! तुमने जो कहा मैंने सुना परन्तु तुम समझो कि मेरे मनमें कोई इच्छा नहीं है जो तुमसे कहूं मैं अपने भाग्यपर प्रसन्नहूं और जो तुमने कहा कि उऋण होजाऊं ईश्वर साक्षी है मैं आपही तुम्हारा कृतज्ञ हूं कि तुम कृपाकर मेरे घरमें आये और यह थोड़ा अन्न जल जो

आपके योग्य नहीं भोजन किया परन्तु एक बातसे मुझे सदा खेद रहाकरताहै यदि तुम्हारी इच्छाहो तो बर्णनकरूं यह तुम भलीभांति जानतेहो कि बग़दाद नगरमें हज़ारों गलियां हैं और प्रत्येक गली में एक एक मसजिद उनका मवज़्ज़न (अर्थात् निमाज़ पढ़ानेवाला) पांचबेर अज़ांपढ़ निमाज़के वास्ते बुलाता है इस महल्ले का मवज़्ज़न बृद्ध अत्यन्त दुस्स्वभाव और धूर्त है उसके चार मित्र हैं कि वह भी उस के सदृश मनुष्योंको दुःख देते हैं प्रतिदिन वह चारों बृद्धके घरमें जाय मनुष्यों के दुःख देनेकी बार्त्ता करते हैं मुझे भी बहुधा उनसे दुःख पहुँचता है वह दुष्ट सदैव सबको धमकाते और बुरा भला कहते इस हेतु हम सब उनके दुःख देनेसे ब्याकुल और भयवान् हैं मैं उनको देख महाअप्रसन्न होताहूं ख़लीफ़ाने कहा तुमने इसका कौनसा उपाय सोचा है उसने कहा उनके दण्ड देनेको मैं ईश्वर से प्रार्थना करताहूं कि वही ईश्वर कल मुझे ख़लीफ़ा हारूंरशीदके तख़्तपर बैठादे ख़लीफ़ाने पूछा यदि तुम ख़लीफ़ा भी हुये तो क्याकरोगे उसने कहा मैं आज्ञा दूंगा कि सौ सौ चाबुक उन्हीं बुड्ढों को और चारसौ केवल उसी मवज़्ज़नको लगायेजावें तो मेरे मनका अरमान निकले और गली के लोगोंको दुःख न दें ख़लीफ़ा उसकी इस इच्छाको सुनकर प्रसन्न हुआ यह तो बड़ा रसीलाथा मानो उसने हास्य का मूल पाया और कहनेलगा हे मित्र! मैंभी यही चाहताहूं कि ऐसे दुष्टोंको दण्ड मिले और इच्छा जो तुम रखतेहो ईश्वरकी मायासे कुछ दूर नहीं और कुछ आश्चर्य नहीं जो बादशाहको तुम्हारा यह पत्न और बुद्धि ज्ञातहो और एक दिन तुम्हें अपने स्थान पर बैठाय तुम्हें सम्पूर्ण अधिकार दे तब तुम भलीभांति उनको दण्ड दोगे मैं तो एक बिदेशी ब्यापारीहूं नहीं तो मैं उनको अवश्य दण्ड देता उसने कहा तुम मुझे बुद्धिहीन समझ हास्य करतेहो निश्चय है कि ख़लीफ़ा भी इन्हीं बिचारोंको जो शेख़चिल्ली के सदृश हैं सुनके हँसेगा ख़लीफ़ा ने कहा नहीं नहीं मैं हास्य नहीं करता ईश्वरने यह निषेध कियाहै कि कोई किसीको न हँसे बिशेष तुमसे कि जिसने मुझे ऐसा स्वादिष्ठ भोजन प्रीतिपूर्बक खिलाया हास्यकरूं और ख़लीफ़ा भी तुम्हारे इस

बिचार पर कदाचित् न हँसेगा अब तुमने मुझे प्रसन्न किया आधी रात बीती अब सोनेका समय आय पहुँचा अबुल्हसनने कहा सत्य कहतेहो बहुत रात बीती शेष जो मद्य रहगईहै हम तुम पीके सोरहें एक बात तुमसे कहनी अवश्यहै जिस समय प्रभात को तुम यहांसे सिधारो तो इस मकानका द्वार मूंद जाना उसे कदाचित् खुला न छोड़ना खलीफ़ाने उत्तर दिया बहुत उत्तम ऐसाही किया जावेगा पुनि खलीफ़ाने मदिराका पात्रभर प्रथम तो आप पिया और दूसरे पात्रमें मूर्च्छाकी औषध जो उसके साथथी घोलकर अबुल्हसनको दी और कहा सन्ध्यासे तुमने मुझे पात्र भर भर पिलाये अब यह अन्तिम पात्रहै इसे मेरे हाथसे पियो उसे वह ले तरन्त पीगया उस औषध ने तुरन्त अपना फल किया अर्थात् उसने वह पात्र बड़ी कठिनतासे रक्खा और अचेत होय शिर उसका घुटनोंपर जायलगा खलीफ़ा इस दशाको देख बहुत हँसा इसके अनन्तर खलीफ़ा ने अपने सेवकको जो भोजनकर हाथ बांधे खड़ाथा बुलाय आज्ञा दी कि इस मनुष्यको अपने कन्धेपर उठाले और इस मन्दिरको भली भांति पहिचानरख जिस समय मैं कहूं तू फिर उसे यहीं लाय छोड़ जाइयो वह दास कि अतिबलवान् था धीरेसे अबुल्हसन को कंधेपर रख खलीफ़ाके साथ होलिया खलीफ़ा वहांसे निकल उस द्वारको खुलाछोड़ अपने महलमें पहुँचा और चोरदरवाज़ेसे दास को साथ लिये हुये अपने मन्दिरके भीतर जहां उसके सोनेका मकानथा गया वहां वह सेवक और दासियां जिनकी पारी उस रातकीथी खलीफ़ा के आगमनकी राह देखती थीं खलीफ़ाने उनको आज्ञा दी कि इस मनुष्यके बस्त्र उतार हमारे सोने के कपड़े पहिरायो और मेरी शय्या पर सुलावो चैतन्य रहो कोई यहां का नियत मनुष्य न सोवे और जिस समय यह प्रभातको जगै तो उसे मेरी जगह समझके दण्ड-वत् आदिक करना निदान मुझमें और उसमें तनक अन्तर न समझना और उसको मेरे सदृश बादशाह कहना उन्हों ने कहा बहुत अच्छा फिर वह तो अपनी सम्बन्धित सेवा टहल करनेलगे और खलीफ़ा यह आज्ञा दे बाहर आया और अपने वज़ीर को

बुलवाय आज्ञा दी कि कल एक मनुष्यको जो मेरी शय्यापर सोता है मेरे शाही कपड़े पहिर तख़्तपर बैठेगा तुम सब उसे मेरी जगह समझ बादशाही भाव बर्ताना और उसकी आज्ञा पालन करना जो द्रव्य और पारितोषिकादि किसीको दिलवाये मेरे कोशसे देना और सम्पूर्ण सभासद् भोरको आकर उसकी अगवानी करें और वहां उपस्थित रहें और मसरूरको भी यही आज्ञा दी कि भोर को जिस भांति मुझे निमाज़ के निमित्त उठाया करताहै उसी प्रकार उसेभी उठाना निदान ख़लीफ़ा उन सबको समझाय बुझाय किसी दूसरे मकान में जाय सोरहा जब प्रभात हुआ तो ख़लीफ़ा अरुणोदय पर उठ वहां जा बैठा जहां से सब काम और बार्त्ता अबुलहसन की सुने और देखे और उसे कोई न देखे वहां सब चौकीदार और शय्या की दासियां विद्यमान थीं अबुलहसन के जगतेही अपने स्थानपर खड़ीहुई जब निमाज़की बेर आयपहुँची मसरूर खोजी ने जो शय्याके सिरहाने था स्फंजका टुकड़ा सिरकेमें डूबाहुआ उसकी नाक के समीप लेजाय सुँघाया अबुलहसन सिरकेकी तीव्र गन्ध से छींका और शिरउठाय नेत्रखोल चाहा कि खखार थूकें तो एक बांदी ने तुरन्त उसे स्वर्णके उगालदानमें लेलिया कि क़ालीनपर गिरके बिछौना ख़राब न होजावे यह नियत रीतिथी कि इसी भांति ख़लीफ़ाको स्फंजके टुकड़ेको सिरकेसे भर सुँघाय उठाते कि जगत्के ईश्वरका आराधन करे इसके अनन्तर अबुलहसन ने फिर अपना शीश तकियेपर धर दीपकके प्रकाश में बड़ाभारी दालान अनेक भांतिसे अलंकृत देखा उसकी छत भांतिभांतिके चित्रोंसे चित्रित थी और अतिस्वच्छ क़ालीन बिछे हुये और स्थान स्थानपर महासुन्दर २ चित्र लगेहुये पुनि क्या देखता है कि अतिरूपवती चन्द्रमुखी चम्पकबर्णी दासियां उसके सन्मुख हाथजोड़े खड़ी हैं कई तो निज हस्तकमलों में उगालदान लिये और कई कोमल हाथोंमें सुन्दर मुरछल और कई गाने बजानेके साज लिये और खोजी अति सुन्दर सुनहले कपड़े पहिरे चुपचाप खड़ेथे जब उसकी दृष्टि लिहाफ़ और पलंगपोश पर पड़ी तो वह अतिस्वच्छ गुलाबीरंग कमख़ाब

का था और उसके चहुँओर हीरे और मोतियोंकी झालरें सजीथीं इसी भांति मसहरी आदि शय्याकी सामग्री ऐसीहीथी और उपधान के समीप खलीफ़ाका मुकुट धराथा वह ऐसी सामग्री देख आश्चर्यित हुआ और विचारनेलगा क्या मैं स्वप्न देखताहूं वा प्रत्यक्ष में यदि मैं जाग्रत् अवस्थामें देखताहूं तो मैं अवश्य खलीफ़ाहूं रात्रिको उस अतिथिसे हास्यमें खलीफ़ाका बर्णन हुआथा कहीं वही बिचार मेरे चित्तमें तो नहीं समाया और बास्तवमें कुछ न हो इसी चिन्ता से फिर अपनी आंखें मूंद सोनेकी इच्छाकी कि एक खोजीने उसके समीप आय हाथ बांध बिनय की कि हे दीनपालक, बादशाह! यह सोनेका समय नहीं यह काल ईश्वरकी बन्दनाका है और सूर्य उदय हुआ चाहते हैं उसने इस बातको सुन अचम्भा किया और अपने को सोता हुआ जान फिर नयन मूंदे जब खोजी ने उत्तर उनसे न पाया और कोई चिह्न जगने के न देखे तो एक क्षण पीछे फिर कहा हे कृपानिधान! दासकी यह बिनती है कि यह समय आपके जगने का है उठिये और ईश्वरकी बन्दना कीजिये सूर्य निकला चाहते हैं अबुल्हसनने यह बात सुन मनमें कहा तुम धोखेमें हो सोते नहीं यह सोनेका समय है सोयाहुआ मनुष्य बात नहीं सुनता मैं तो सब बातें सुनताहूं पुनि उसने आंखखोल क्या देखा कि दिन निकल आया वह बस्तुयें जो रात्रिको दीपकके प्रकाश में देखीथीं दिव्य उजियाले में भी दृष्टिपड़ीं फिर वह आनन्दित हो शय्यापर से उठ बैठा और जानगया कि उस परमात्माने मुझे यह राज्य कृपा किया खलीफ़ा वहींपर बैठाहुआ उसके बिचारोंको समझता और प्रसन्न होताथा इतनेमें एक दासीने उसके सन्मुख आय चरण चूमे और गायनियों ने सामने आय मीठे स्वरोंसे बांसुरी बजाय सलामी दी और सहनाई आदिक बाजोंके ललित स्वरों से उसे मोह लिया कि वह अपनेको भूलगया फिर उसे प्रथम यह बिचार उठा जो कुछ कि देखता सुनताहूं स्वप्न है या सत्य है फिर दोनों हाथों को आंखोंपर रख मनमें कहनेलगा यह सब दास सुनहले बसन पहिरे और ऐसी यौवनवती सुन्दर स्त्रियां ऐसे मनोहर और शोभायमान

वस्त्र पहिरे और यह उत्तम साज लिये जिनको मैं देखताहूं क्या हैं और मैं कहांहूं और इस जगह मैं कहां आया मैं सावधानहूं वा नहीं निदान उसने हाथ अपने मुखपरसे उठाय नेत्रखोले इतने में खोजी मसरूर आया और शिर नीचे कर धरती चूमी फिर शिर उठाय कहा हुजूर आज क्या कारण है कि आपने अबतक ईश्वर की बन्दना नहीं की कहीं रात्रिको निद्रामें बिघ्न तो नहीं हुआ वा कुछ आपके शत्रुओं की देह में व्यतिक्रम भया अब उठके सभामें बिराजमान हूजिये और राज्यके कार्योंको कीजिये सम्पूर्ण सभासद् आप की बाट देखते हैं सभाका समय आन पहुँचा मसरूरके बचन सुन उसे निश्चय हुआ कि मैं जागताहूं और वह बस्तु और स्थान स्वप्न नहीं वास्तवमें हैं पुनि बिचारने लगा यह पदवी मुझे क्योंकर प्राप्तहुई फिर मसरूरसे पूछनेलगा तूने यह बातें किस मनुष्यसे कीं और किसे बादशाह कहता है मैं तो तुझे नहीं पहिचानता तूने किसी और के धोखेसे मुझे बादशाह कहा मसरूरने कहा हे कृपासागर! क्या यह आप सत्य कहते हैं वा इस किंकरकी परीक्षा लेतेहैं आप क्या बादशाह नहीं और पूर्वसे पश्चिम पर्यन्त आपका राज्य नहीं आशा रखताहूं कि इस सेवकपर कृपादृष्टि रखिये जानपड़ता है कि आपने कोई स्वप्न रात्रिको देखाहै जिससे ऐसे उलटे बचन कहते हो अबुलहसन मसरूरके यह बचन सुन बहुत हँसा कि हँसते हँसते पीठ उसकी तकियेसे लगगई खलीफ़ाभी आनन्दित होय चाहताथा कि ठट्ठामारके हँसे परन्तु हँसी दबाली कि कहीं अबुलहसन उसका शब्द पहिचान न ले निदान वह बहुकाल पर्यन्त हँसता रहा फिर भली भांति अपनी शय्यापर उठके बैठा और एक लड़केसे कि उसका कालारंग मसरूरके सदृश था कहनेलगा सत्य कहो मैं कौनहूं उस बालक ने बिनती की कि आप बादशाह हैं अबुलहसनने कहा तू बड़ा झूठा है इसीसे तेरा स्वरूप काले श्वानके सदृश काला होगया है फिर उसने एक बांदीको कि औरोंसे निकट खड़ीथी कहा हे सुन्दरी! इधर आ और अपना कोमल हाथ आगे बढ़ा और मेरी अंगुली का पोर अपने दांतसे काट कि मैं जानूं कि सोताहूं या जागता उस

बांदी ने जाना कि ख़लीफ़ा भी छिपे हुये इस वृत्तान्तको देखरहा है महाहर्षित होय उसकी अंगुलीका पोर आगे जाय धीरेसे दांत के नीचे दबाया उसने तुरन्त अपना हाथ खींचकर कहा ईश्वर मैं क्योंकर एकही रात्रिमें ख़लीफ़ा बनगया बड़ा आश्चर्यहै पुनि उससे कहने लगा तुझे ईश्वरकी सौगन्द है सत्य कहना क्या मैं वास्तवमें बादशाह और तुम्हारा स्वामी हूं उसने कहा आप वास्तव में हमारे स्वामी हैं जब उसने उठनेकी इच्छा की तो एक दासने दौड़ के उस का हाथ थांभ उठाया जब वह खड़ाहुआ सारे महल में प्रणाम का नाद राजसी रीति से फैलगया सब खोजी और दासियों ने अगवानीकर आशीर्बाद दिया कि वह परमात्मा सच्चिदानन्द आपका यह दिन कुशल और आनन्दसे बितावे अबुलहसनने मनमें कहा हे प्रभु ! यह क्या बातहै कि कल तो मैं अबुलहसन था आज मैं ख़लीफ़ा बनगया मेरी समझमें कुछ नहीं आता क्योंकर मुझे यह पदवी मिली फिर सेवकोंने उसे बादशाही कपड़े पहिनाये और सब दोनों ओरसे पंक्तिबांध द्वारपर्यन्त खड़े भये और मसरूर आगे होके उसे दरबारमें लेगया अबुलहसन भीतर जाय तख़्त के समीप खड़ा हुआ कि मनुष्य उसका हाथ पकड़ चढ़ावें सो बड़े दो प्रधानोंने आय उसकी भुजा पकड़ तख़्त पर बैठाया उसके विराजमान होतेही बड़ा शब्द प्रणामका भया जिसके सुनने से वह महाहर्षित हुआ और दाहिनी बाईं ओर क्या देखताहै कि बड़े बड़े सरदार हाथ जोड़के पंक्तिबांधे खड़ेहैं सो सबकी बिनती सुनने लगा राजमन्त्री कि जो ख़लीफ़ाके पीछे राज्यप्रबन्ध करताथा अबुलहसन को देखआया और दण्डवत्कर आशीर्बाद दिया कि तुमपर ईश्वर की छाया रहे और असंख्य बर्षकी आयु हो मित्र प्रसन्न और शत्रु आपके प्रतापसे भस्महों यह सब दशा देख उसे निश्चय भया कि मैं जागता हूं स्वप्न नहीं देखता मैं अवश्य ख़लीफ़ा भया जैसी मेरी इच्छाथी बेपरिश्रम ईश्वरने पूर्ण की और आज्ञा चलानेलगा प्रथम मन्त्री से जो हाथ बांधे खड़ाथा कहा तुमको कुछ कहना है उसने बिनय की कि सर्ब सेवक और सेना अगवानी करने और आज्ञा

पालने के लिये बाहर खड़ीहै यदि आज्ञा हो तो आपके सन्मुख आय प्रणाम करें अबुल्हसन ने आज्ञा दी कि सभाका द्वार खोलो यह आज्ञा पाय दो मन्त्रियों ने चोबदारोंको आज्ञा दी कि सबको आने दो फिर सबने आय दण्डवत् की और अपने २ स्थानपर जाय चुपके खड़े होगये जब अगवानी होचुकी तब मन्त्रीने जो तख़्तके सामने अकेला खड़ाथा लोगोंकी अर्ज़ियां दीं और प्रतिदेश और व्यवस्था का बृत्तान्त कहनेलगा अभी कह न चुकाथा कि अबुल्हसनने नगर के कोतवालको बुलवाय आज्ञा दी कि अमुक गलीमें जाय मवज़्ज़न को जो उस मसजिदका है चारसौ कोड़े उसके पांवपर लगा और चार मनुष्योंको जो उसके संगती हैं सौ सौ चाबुक मारियो पुनि पांचोंको ऊंटोंपर उलटा सवार कराय नगरके बाज़ारों में घुमाइयो और उसके आगे एक मनुष्य यह कहता जावे कि यह दण्ड उन मनुष्योंका है जो अपनी गलीवालोंको दुःख देवें और उनको झूठा दोष लगावें फिर देशसे निकाल दीजियो कोतवालने यह आज्ञा पाय अबुल्हसन की गलीमें जाय वही काम किया ख़लीफ़ा ने भी निषेध न किया क्योंकि पूर्वसे उसे अबुल्हसनके मुखसे उस बृद्ध और उस के संगतियोंकी दुष्टताका बृत्तान्त ज्ञात होगया था इस समयान्तर में मन्त्रीभी कह सुनकर निश्चिन्त भया और कोतवालने आय अबुल्हसन से कहा कि मैंने आपकी आज्ञासे उन पांचों मनुष्योंको दण्ड देकर देशनिकाला दिया यह सुन अबुल्हसनने मुसकराय कहा मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ ख़लीफ़ा छिपे छिपे उसकी प्रसन्नताको देखता और हर्षित होता इसके उपरान्त अबुल्हसन ने वज़ीर को आज्ञादी कि हज़ार अशरफ़ी इस नगरकी अमुक गली में अबुल्हसनकी माताको भिजवादे मन्त्री ने वही किया वह बृद्धा अर्थात् अबुल्हसनकी माता कि इस बृत्तान्तको न जानती थी रुपये लेकर अतिप्रसन्न हुई और आश्चर्य में हो बिचारनेलगी कि ख़लीफ़ाने मुझपर बड़ी कृपा की इतनेमें मन्त्रीने भी जाय अबुल्हसन से रुपये देनेका हाल कहदिया जब बादशाही कामों से निश्चिन्त हुआ दरबारी अगवानी कर बिदा भये केवल मन्त्री और मसरूर अबुल्हसन

के निकट रहगये तब अबुल्हसन मन्त्री और मसरूरकी सहायता से नीचे उतरा और उसी सुन्दर मकान में जिसमें प्रथम था गया मार्ग में उसे दिशा लगी इतने में ख़लीफ़ा के पाख़ाने को खोल दिया वह पाख़ाना अतिउत्तम बनाथा उस पर अति शोभायमान मख़मल बिछाथा उसके रक्षकने सुनहली जूता कि ख़लीफ़ा उसे पहिनकर दिशाको जातेथे उसके सन्मुख रक्खा अबुल्हसनने उस को उठाय अपनी चौड़ी आस्तीनमें धरलिया इस बात से मन्त्री और खोजीको बहुत हँसी आई परन्तु ख़लीफ़ाके भयसे थँभे रहे निदान मन्त्रीने बिनय की कि हे बादशाह! यह जूता पहिन दिशा जाते हैं यह सुन वह उसे चरणोंमें पहिन दिशागया जब बाहर निकला मसरूर उसे रसोईकी ओर लेगया उसके पहुँचतेही द्वार खुलगया और सेवक गानेवालियों को बुलानेको गये जब अबुल्ह-सन भोजन पर बैठा तब गाना आरम्भ हुआ जिसके सुनतेही वह प्रसन्न भया और सोचनेलगा हे भगवन्! यह आनन्द मैं स्वप्नमें देखताहूं या साक्षात् पुनि बिचारनेलगा यह तो जाग्रत् अवस्था है इसमें मनुष्य स्वप्न नहीं देखताहै जब मनुष्य सोजाताहै तब स्वप्न देखताहै मैं तो साक्षात् जाग्रत् अवस्थामें चलता फिरताहूं इस स-मयतक मुझे मालूमथा कि मैं बादशाह नहीं मेरे सिवाय कोई दूसरा इस देशका स्वामी है परन्तु जो मैंने आज्ञा दी उसका पा-लन हुआ यह सुख आदि केवल मेरेही हेतुहै मैंही बादशाहहूं वहां प्रतिबस्तु बिचित्रथीं बहुतसे सोने रूपेके पात्रथे जिसे अबुल्हसन देख प्रसन्न होता और सात बांदियां अत्यन्त रूपवान् छबिधाम अपने गाने के साज लिये उसके चहुँओर मीठे स्वरोंसे बजायरहीं और अति स्वच्छ प्रकाश के सात झालर उस मन्दिरकी छतमें सुशोभित मध्य में भोजनके पात्र महासुन्दर बिछेथे और सुबर्णकी सात अँगीठियां दूर धरीहुई जिनमें नानाभांतिकी सुगन्धें जलाई जातीं जिन सुगन्धों से हृदय प्रसन्न होता और सात दासियां अति रूपवती नखशिखसे शृंगारकिये और रंगबिरंगे आभरण पहिने उसके चहुँओर खड़ीं और सबके हस्तकमलोंमें मुरछल और रत-

जटित अतिबिचित्र डरिडयों की पंखियां थीं जब अबुलहसन उस मनोहर मन्दिर में बैठा तो पग पगपर ठहरके उन अद्भुत वस्तुओं को देखता और बिस्मित होता निदान उस महलमें जाय भोजन पर बैठा उसके बैठतेही वह सातो दासियां उस नवीन खलीफ़ाके मुरछल हिलानेलगीं अबुलहसन उन्हें देख आनन्दको प्राप्तभया और मुसकराय उनसे कहनेलगा तुममेंसे मुझे पारी पारी से मुरछल हिलाओ और छः भोजन करें निदान तीनको दाहिनी ओर और तीनको बाईं ओर बैठायलिया वह छः दासियां उसकी आज्ञानुसार बैठगईं परन्तु खलीफ़ाके भयसे भोजनमें हाथ न डाला फिर अबु-लहसनने मुसकराय कहा तुमभी भोजन करो और उनसे उनका नाम पूछनेलगा तो एकने कहा मेरा नाम चन्द्रकला, दूसरी का ललिता, तीसरीका शशिमुखी, चौथीका निर्मला, पांचवींका स्वर्गा-प्सरा, छठीका चपला व सातवींका जो पंखा झलरही थी और उसकी सुन्दर बार्त्ता से वह महाप्रसन्न था पूछा तेरा क्या नाम है? उसने कहा मेरा नाम चन्द्रकान्ति है खलीफ़ा भी छिपकर ये बातें सुनताथा और उसके प्रिय बचन सुन प्रसन्न होता जब उन्होंने जाना कि अबुलहसन भोजन करचुका तो सेवकोंने जो खड़ेथे दौड़ के एकने जलका पात्र और दूसरे ने सीलावची लाय उसके हाथ धुलवाये फिर उसे दूसरे मकानमें लेगये उसमें अतिसुन्दर सुनहले चित्र दीवारों में लगेथे उसके भीतर जातेही गानेवालियां गान क-रनेलगीं उस मकानमें मणिजटित सात क़न्दीलें सात स्थान पर लटकी थीं उनके नीचे सात भाजन सूखे और हरे फलों के भरे हुये रक्खे थे वहांभी सात दासियां अतिस्वरूपवती थीं जिन्हें देख वह मोहित होगया और उन सबके साथ फल भोजन करनेलगा और उनके नाम पूछे उन्होंनेभी बताय दिये फिर मेवे उठाकर हरएकको देनेलगा और उनको खिलावता गया पुनि वहां से उठ मसरूर स-मेत तीसरे मकानमें गया वहभी वैसाही सजाथा वहां सात समूह गानेवालियोंके थे और अप्सराओं के सदृश सात दासियां सुनहले सात पात्र लिये भांति भांति के शरबत लिये खड़ीथीं वहांभी उसके

पहुँचतेही गाना आरम्भ हुआ उसमें से थोड़ासा पीकर उनसे कहा तुम्हें जौनसा शरबत अच्छा लगे पीजाओ फिर सातोंके नाम पूछे और उनके नाम सुन प्रसन्न भया फिर बहुकाल पर्यन्त उनसे हास्यादिक बार्त्ता करतारहा खलीफ़ाभी उसके बचन सुन प्रसन्न होता जब सूर्य अस्तभया अबुल्हसन चौथे मकानको गया वहभी उसी प्रकार प्रतिबस्तुसे अलंकृत और शोभितथा सात मणिजटित फ़ानूस जिनमें कपूरी बत्तियां जलाईगईं थीं वहां दिनके बराबर प्रकाशथा जो सौन्दर्य इस मन्दिरमें था वैसा पूर्व मन्दिरोंमें न था इस बारहदरी में सात यूथ गानेवालियोंके थे जो मीठे और ललित स्वरोंसे गाय बजाय मनको आकर्षण करतीं और मनुष्यके हृदय को अतिकोमल करदेतीं बिशेष इसके स्वरूप छबि अनूपमें अद्वितीय किन्तु पूर्णमासीके चन्द्रमाको लज्जा देतीं अपने हस्तकमलों में सुनहले पात्र कुलचे और मिठाई आदिक लिये खड़ी और गज़क आदिक जो मद्यके पश्चात् अवश्य होताहै उनके निकटथी और उस मकानमें एक ठौर रूपेकी सात सुराहियां स्वच्छ मद्यसे भरीहुई और उनके निकट महासुन्दर बिल्लौरी गिलास धरेथे बुग़दादनगर की यह रीतिथी कि सरदार रात्रिको छिपकर मदिरा पीते और दिन को उससे ग्लानि रखते निदान जब अबुल्हसन मद्यघरमें जाय बैठा वहां सात दासियां महाकोमलाङ्गी बांकपने से खड़ीथीं जिनके देखतेही अबुल्हसन बेबश हुआ और उसका स्वर पलटगया और उन सबको पूर्वकी सब दासियों से जिनको देखाथा अधिक सुन्दर पाकर मोहितभया और इच्छा की कि इनसे बार्त्ता करूं परन्तु गान और सारंगी मृदंग के शब्दसे उसे कुछ सुनाई न दिया इस हेतु उसने हाथोंसे ताली बजाई जिससे गाना बजाना बन्द हुआ जब सब चुप भये उसने उस दासीको जो उसके समीपही खड़ीथी हाथ पकड़ अपने निकट बैठालिया और उसका नाम पूछनेलगा उसने कहा हे बादशाह ! मेरा नाम मणिमालाहै यह सुन अबुल्हसनने कहा तेरी दन्तमाला होरेसी अतिउज्ज्वल है जिसने तेरा यह नाम रक्खा बड़ी भूलकी उचितथा कि इससे कोई उत्तम नाम होता अब

तू एक मद्यका पात्रभर मुझे पिला कि मैं तेरे कोमल कमलवत् हाथों से पिऊं मणिमालाने तुरन्त भर उसे दिया वह पीगया पुनि उससे कहा अब तू एक गिलास आप पी उसने एक पात्र भरकर एक विचित्र राग गाया जिसे अबुलहसन सुन प्रसन्नभया फिर वह पान करगई अनन्तर अबुलहसनने उन पात्रोंमें से फल उठाय दूसरी दासीको दिया और अपने निकट बैठाय उसकाभी नाम पूछा उसने कहा मेरा नाम शशिमुखी है यह सुनतेही उसने कहा तेरे नेत्र चन्द्रमासे अधिक प्रकाशयुत हैं उचितथा इससे बढ़के कोई नाम होता सो उसने उसके हाथसेभी मद्य पिया इसी भांति तीसरी दासी को बुलाया और उससेभी वही व्यवहार किया जब उसने कई मदिरा के पात्र पिये मणिमाला बांदी ख़लीफ़ाकी सैनसे फिर पात्र मद्यसे भर और उसमें मूर्च्छा की औषध डाल उसके समीप लाई और कहनेलगी हुजूर इस अन्तिम मदिराके पात्रको मेरे हाथसे पान कीजिये मैं एक गीत गातीहूं वह मैंने आजही प्रभातको रचाहै अबतक उसे किसी ने नहीं सुना फिर वह बांदी बांसुरी हाथमें लेके बजानेलगी उसने वह राग ऐसा गाया जिसको अबुलहसनने सुन धन्यबाद किया और दूसरी बेर फिर उससे वही गीत गवायाथा जब वह गाचुकी तो अबुलहसनसे चाहा कि उसकी प्रशंसा करूं परन्तु मूर्च्छाकी औषध के गुणसे मुख खोलके रहगया कोई बात न कह सका नेत्र उसके मुँदगये और हाथ फैलगये जैसे कोई मूर्च्छा खाया हुआ सोजाता है निदान उसकी वही दशा भई जो पहिले दिन हो गईथी पात्र उसके हाथसे छिटक गिरनेलगा परन्तु एक दासीने दौड़के उसे थांभलिया ख़लीफा उसे बेसुधि देख अपने स्थानसे उठ वहां आया और शाही बस्त्र उसके शरीरसे उतरवाय उसके कपड़े उसे पहिनादिये और उसी दासको आज्ञादी कि इसे इसी भांति उठाय इसके घरके उसी मकान में लिटाय आ और लौटते हुये द्वार खुला छोड़ियो वह दास उसे उठाय कन्धेपर रख चोरदरवाजे से सुला आया फिर ख़लीफ़ाने अपने कुटुम्बसे कहा कि यह मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना करताथा कि जो मैं एक दिनके लिये

ख़लीफ़ा होजाऊं तो अपनी गलीके मवज़्ज़न और उसके चारसंगती वृद्धों को दण्ड दूं क्योंकि उनसे उसने बहुत कष्ट उठायाथा इस हेतु मैंने इस यत्नसे उसे एक दिनके लिये ख़लीफ़ा बनाया और उसने अपनी इच्छानुसार दण्ड दिया अबुलहसन रात्रिभर मूर्च्छित रहा जब प्रातःकाल हुआ और दिनचढ़ा क्या देखताहै कि मैं अपने घरमेंहूं इससे बड़ा आश्चर्य किया और मणिमाला शशिमुखी आदिक बांदियों के नाम उसे स्मरणथे पुकारनेलगा कि तुम कहां हो मेरे निकट आओ निदान वह बड़े नादसे बादशाही महलके खोजियों और दासियोंको बुलानेलगा उसकी माता शब्द सुन उसके निकट दौड़ीआई और पुत्रसे कहनेलगी हे पुत्र! तुझे क्या होगया जो ऐसी बातें कहता है अबुलहसन अपना शिर उठाय अपनी माताको बड़े अहंकारसे देख कहनेलगा हे सत्पुरुषिणी! तू किसे अपना पुत्र कहती है उसने कहा मैं तुझे अपना पुत्र कहतीहूं क्या तुम मेरे पुत्र नहीं क्या एक रात्रिमेंही तुम मुझे भूल गये उसने कहा हे दुष्टा! क्या मैं तेरा बेटा हूं तू क्यों इतनी ढिठाई करती है तू झूठ बोलती है मैं अबुलहसन नहीं मैं ख़लीफ़ाहूं उसकी माताने कहा हे प्रियपुत्र! चुप इतनी बड़ी बात मुखसे मत निकाल अभी तुझे पुरवासी विक्षिप्त समझ मारेंगे उसने कहा मैं विक्षिप्त नहीं कि जैसा तू समझती है मैं सावधान हूं फिर मैं तुझसे कहता हूं कि मैं ख़लीफ़ाहूं जो संसारभरका स्वामी है उसकी मांने कहा बेटा बड़ा खेद है तेरी बुद्धि ठिकाने नहीं तुझे कोई भूत लगा है वा शैताननें अवसर पाय तेरी बुद्धि पलट दी जिससे तू ऐसी बहकी बातें करता है मैंने तुझे ईश्वरको सौंपा तू मेरा पुत्र अबुलहसनहै और मैं तेरी माताहूं और कई चिह्न उसे दिखाये कि वह सावधान होजावे पुनि कहनेलगी तू नहीं देखता यह घर तेराहै वा ख़लीफ़ाका तू सदैव इसी घरमें जबसे उत्पन्नभया मेरे साथ रहा किया जो बातें मैंने तुझसे कहीं उन्हें सोच जो तू कहताहै उस बिचारको छोड़दे यह पदवी तुझे प्राप्त नहीं और कदाचित् न होगी फिर कदापि ऐसा किसीसे वर्णन न कीजियो अबुलहसन मातासे यह बचन सुन आंखें

खोल और अपना शिर हाथपर रख इस तरह सोचनेलगा जैसे कोई मनुष्य कुछ भूलगयाहो और उसे सोचे फिर अपनी मातासे कहनेलगा जो तूने कहा सो सत्यहै और मैंभी भलीभांति जानताहूं कि मैं अबुलहसनहूं और तू मेरी माता है और यह मेरा घरहै पुनि चहुँओर देख कहनेलगा इसमें सन्देह नहीं कि मैं अबुलहसन नहीं परन्तु मैं नहीं जानता कि किसलिये मेरे मनमें यह बिचार समाया उसकी माता समझी कि मेरा पुत्र बीमार होगया जिससे ऐसी बहकी २ बातें करताहै वा उसने कोई दुःस्वप्न देखा यह चिन्तना कर वह हँसनेलगी और उससे पूछनेलगी हे पुत्र! क्या तुमने रात्रिको दुःस्वप्न देखा अबुलहसनने घुड़कके अपनी मातासे कहा हे दुष्टा! तू समझके नहीं बोलती तू क्या झखमारती है कदाचित् तेरा पुत्र नहीं और न तू मेरी माता तूने बड़ी ढिठाईकी कि मुझे अपना पुत्र समझती है तू नहीं जानती कि मैं ख़लीफ़ाहूं तू अभी भ्रममेंहै उस वृद्धा ने कहा हे पुत्र! ईश्वर के वास्ते ऐसी बातें मुखसे मत निकाल तूने मवज़्ज़नका हाल नहीं सुना कि वह और चार उसके संगती अपनी गली के मनुष्यों को धमकाते और उन्हें दुःख देते थे कल कोतवालने आय उन पांचों मनुष्योंको पकड़कर चार सौ कोड़े मवज़्ज़नके और सौ सौ उन चारों बृद्धोंके लगाये पुनि उलटा ऊंटपर चढ़ाय नगर भरमें फिराया फिर महाकष्ट दे और उनकी अप्रतिष्ठा कर देशनिकाला दिया मैं डरतीहूं बेटा कहीं तेरीभी ऐसीही गति न हो अबुलहसनकी माता तो यह न जानतीथी कि अबुलहसनहीकी आज्ञासे वह सब दण्ड दिये गये उसकी माताने डरानेके लिये यह हाल कहाथा अबुलहसन इस बचन के सुनतेही कहनेलगा अब तुम भलीभांति जानो न तो मैं तुम्हारा पुत्र और न अबुलहसन किन्तु ख़लीफ़ाहूं क्योंकि मवज़्ज़न और उसके चार संगियों को मेरीही आज्ञासे दण्ड दियागया अब मैं निस्सन्देह ख़लीफ़ाहूं तू इसे स्वप्न मत समझ कोतवालको मैंनेही दण्ड देनेकी आज्ञा दीथी उसने तुरन्त मेरी आज्ञा प्रतिपालन की तेरेही बचनसे प्रतीतभया कि मैं ख़लीफ़ाहूं उसकी मां कुछ न समझी कि अबुलहसन मवज़्ज़नका

हाल सुनकर अपनी बातपर क्यों दृढ़हुआ परन्तु उससे कहा ईश्वर कुशल करे जो कोई तेरे इन बचनोंको सुनेगा क्या कहेगा वह सुनते ही महाकोपित भया और कहनेलगा हे दुष्टा! चुपरह नहीं तो उठके तुझे ऐसा मारूंगा कि मरण पर्यन्त स्मरण रक्खेगी मैं अवश्य ख़लीफ़ हूं उस बिचारीने जाना कि यह अधिक बहका और बिक्षिप्त भया इससे अतिचिन्ताकर रोनेलगी अबुल्हसन कि उस बिचारमें डूबाथा अपनी माता के रोनेपर तनक ध्यान न देकर क्रोधाग्निसे उठ खड़ाहुआ और एक लाठी उठाय अपनी माता से कहनेलगा दुष्टा सत्य कह मैं कौनहूं उस बृद्धा ने उसकी ओर प्रीतिकी दृष्टिसे देख कहा तू मेरा पुत्र अबुल्हसन है और मैं वही हूं जिसने तुझे उत्पन्न किया और दूध पिलाया तूने भूल से अपना नाम इतना बढ़ाया क्योंकि यह संज्ञा केवल हारूंरशीद कीहै जिसके हम तुम और सम्पूर्ण देश आज्ञा पालनेवालेहैं और वह हमारा स्वामी है अभी कलही उसने मुझे हज़ार अशरफ़ियोंका तोड़ा भेजदियाथा उसे अशरफ़ियों का नाम सुनतेही निश्चयभया कि मैं ख़लीफ़ा अवश्यहूं क्योंकि मन्त्री ने उसीकी आज्ञासे उसकी मांको अशरफ़ियां भिजवाईं थीं पुनि अपनी मातासे कहनेलगा ओ धूर्ता! अबभी तुझे मेरे ख़लीफ़ा होनेका निश्चय नहीं मैंनेही तो अपने राजमन्त्री जाफ़र के हाथ हज़ार अशरफ़ियां तुझे भिजवादी थीं जो आज्ञा मैं देताथा उसका तुरन्त प्रतिपाल होताथा तौभी तू मुझे अपना पुत्र कहतीहै तुझे झूठ बोलने का दण्ड अवश्य देना चाहिये इतना कह उसने अपनी माताका हाथ पकड़ लकड़ी से बहुत मारा वह बिचारी महारुदन करनेलगी उसका रोना सुन गलीके सब मनुष्य दौड़आये परन्तु अबुल्हसन मारता जाताथा और कहताथा कि मैं ख़लीफ़ाहूं वह बुढ़िया मारखातीजाती और कहतीथी कि मेरा पुत्र है जब पड़ोसी वहां पहुँचे तो वह कुछ शान्त हुआ और उन्होंने उसके हाथसे लकड़ी छीनकर उन दोनोंके मध्यमें आय कहनेलगे अबुल्हसन तुझे क्या होगया ईश्वरसे नहीं डरता और नहीं समझता कि कोई सुपूत अपनी मातापर हाथ उठाताहै तुझे लज्जा नहीं

आती कि अपनी माताको इसभांतिसे मारताहै और वह तुझे इतना प्यार करतीहै अबुलहसन महाक्रोधितहो नेत्रलालकर कहनेलगा अबुलहसन कौनहै यह तुमने किसकानाम रक्खाहै पड़ोसी इसबचनको सुनतेही घबड़ाये और कहनेलगे क्या तू इसगली और घरमें नहीं रहता और यह तेरी माता नहीं तुझे इसने नहीं जना उसने कहा मैं इस दुष्टाको नहीं जानता न तुम्हें जानताहूं कि तुम कौन बलाहो मैं अबुलहसन नहीं मैं खलीफ़ाहूं सबोंने जाना कि यह बिक्षिप्त होगयाहै जैसे इसने अपनी माताको माराहै तैसेही हमेंभी मारेगा उनमेंसे एक मनुष्यने यह वृत्तान्त दारोग़ा से जाय कहा दारोग़ा सुनतेही अबुलहसनके घर दौड़ाआया जब मनुष्योंने अबुलहसनको पकड़ा तो उसने इच्छाकी कि यहांसे छूटकर भागें यह देख दारोग़ाने पकड़ बड़े बेगसे कोड़े मारे जिनके लगनेसे वह चुपका होगया पुनि दारोग़ा उसे बँधवाय हाथपावों में हथकड़ी बेड़ी और गले में शृङ्खलाडाल बन्दीगृह की ओर लेगया कोई तो उसे धूंसामारता और कोई तमाचा और कोई उसे दुर्बाच्य कहता जैसा कि सौदाईके साथ व्यवहार करतेहैं जब इस भांति मारखाई और अप्रतिष्ठाभई तब अपने मनमें बिचारनेलगा कि पुरबासियोंने मुझे बिक्षिप्त बनाया और मैं तो सावधानहूं निदान जब अबुलहसन उसी दशामें क़ैदहुआ दारोग़ा ने उस बिक्षिप्तताको असाध्य समझ लोहेके पिंजरेमें बन्द किया और प्रतिदिन पचास कोड़े उसकी पीठ और कन्धों पर मारता तीन सप्ताह पर्यन्त उसकी यही दशा रही दारोग़ा उसे कोड़े मारके पूछता अब तू सावधान हुआ वा नहीं कह अब तू अपनेको खलीफ़ा समझताहै या नहीं अबुलहसनने कहा मैं बिक्षिप्त नहीं मैंने अभाग्यतासे इतनी मार खाई और प्रतिष्ठा गँवाई उसकी माता जो प्रतिदिन बन्दीगृहमें उसे देखने जाती उसका यह कष्ट देख रोती फिर उसने देखा कि वह दिन दिन दुबला होता जाताहै न तो दिनको आनन्द और न रातको चैन और सदैव पीड़ासे रोता और हाहा खाताहै पीठ और उसकी भुजा मारसे काली और घायल होगईहै और देहकी खाल उधड़गई उस को उसपर बड़ी दया आई तब इच्छाकी कि उससे बार्त्ताकर परीक्षा

लें कि वह चैतन्य होगया वा नहीं सो उससे बातें करनेलगी वह भी बादशाह के महलका सब व्यवहार भूलगया था और समझा कि वह सब स्वप्न था यदि वास्तवमें होता तो मैं जाग्रत् अवस्थामें क्यों न देखता और क्यों न वह सब बांदियां मेरे सन्मुख आतीं परन्तु यह बिषय अर्थात् कि मेरी आज्ञासे मन्त्री ने आय हज़ार अशरफ़ियां मेरी माताको दीं और मवज़्ज़न आदिकको दण्ड दिया गया मुझे भ्रममें डालते हैं कि मैं ख़लीफ़ा हूं परन्तु यह अचम्भा है कि किसको स्वप्न समझूं और किसको न समझूं एक दिन वह इसी चिन्तामें था कि उसकी माता आई और उसकी अतिदुबली देह देख और दिनोंसे अधिक रोई अबुल्हसनने उसे बड़ी नम्रतासे प्रणाम किया उसकी माताने सावधान होनेका चिह्न पाके पूछा हे पुत्र! अब तेरी क्या दशाहै वह बिचार कि जिसने तेरी यह दशा की तेरे शिरमें तो नहीं उसने कहा हे माता! मेरा अपराध और ढिठाई जो कुछ मुझसे हुई उसे क्षमाकरो और यही पड़ोसियोंसे भी मेरी ओर से बिनय करना कि जो कुछ मैंने अनुचित कहा क्षमा करें मैं ख़लीफ़ा नहींहूं अबुल्हसन तुम्हारा पुत्रहूं और तुम मेरी माताहो इसी प्रकारके बहुतसे बचन कहे जिसके सुननेसे उसकी माता हर्षितभई और समझी कि मेरा पुत्र परमेश्वरकी पूर्ण कृपासे अब चैतन्यहै पुनि प्रसन्न होय उससे कहनेलगी कि मैं बिचारती हूं वह बिदेशी जिसे तू अपने घरमें लायाथा प्रभातको उठ द्वारमूंदने बिना चला गया और शैताननने आके तुझे बहकाया जिस हेतु तूने वह बचन कहे अबुल्हसनने कहा अभीतक मुझे निश्चयथा कि वह व्यापारी मवस्सलका मेरे मकानका द्वारमूंद चलागया अब मालूम हुआ कि वह खुलाछोड़ चलागया और अवसर पाय शैताननने मुझे बहकाया ईश्वरने कुशल किया अब मैं अच्छाहूं शीघ्र मुझे यहांसे बाहर निकाल निदान दारोग़ाने अबुल्हसनकी माताके कहनेसे उसे छोड़ दिया वह वहांसे छूट अपने मकानमें आया और पूर्ववत् एक बिदेशी को अपने घर बुलाता और रात्रिको उसे भोजन कराय प्रभात को उसे बिदा करदेता एक दिन अबुल्हसन कि पहिली तिथिको

बिदेशी ढूंढ़नेके लिये पुलकी ओर गया अकस्मात् उस दिनभी ख़लीफ़ा हारूंरशीद पूर्ववत् मवस्सलके ब्यापारीका वेष किये वहीं पहुँचा वह तो पहिले से बैठाथा दूरसे उसे देख पहिचान गया कि यह वही मवस्सली ब्यापारी है जिसके कारण मैंने यह दुःख उठाये यदि किवाड़ मूंदजाता तो शैतान घुसकर मुझे न बहकाता उसे देखतेही कांपा और मनमें कहनेलगा हे ईश्वर! इस मनुष्य से मुझे बचाइयो उसकी ओरसे मुखफेर जलकी तरङ्गें देखनेलगा और अपनेको छिपाय लिया कि वह न देखले ख़लीफ़ा तो उसे ढूंढ़ताहीथा कि उसे फिर अपने महलमें लेजाकर उसका तमाशा देखे और जो उसने दुःख उठायाहै उससे उऋण होजावे और उसके साथ ऐसा उपकार करे कि जन्मभर आनन्दमें बितावे निदान ख़लीफ़ानेभी उसे दूरसे देखलिया और उसके सन्मुख जाय खड़ाहुआ और दण्डवत् कर चाहा कि उससे भेंटकरे परन्तु उसने तनकभी उसकी ओर न देखा और बेशीलहोय कहा मुझे तुम्हारी दण्डवत् अङ्गीकार नहीं अपना रस्ता लो ख़लीफ़ाने कहा तूने मुझे नहीं पहिचाना एक महीना बीता कि मुझे इसी तिथिमें तुमने अपने घरमें लेजाय सन्मान कर भोजनकराया था उसने रूखे होके कहा मैं तुझे नहीं पहिचानता जाओ भाई अपना काम करो ख़लीफ़ा रुखाईका कारण कुछ न समझसका फिर सोचनेलगा कि वह अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार केवल एकहीबेर बिदेशीको अपने घरमें लेजाता उसीपर दृढ़है इसीहेतु यह रुखाई करता है यह बिचार कहनेलगा तुम भलीभांति अपने मनमें बिचारो और स्मरण करो कि तुमसे हमसे जानपहिचानहै या नहीं बड़ा खेदहै कि तुम मुझे बिस्मरण करगये बिदित होताहै कि तुमने इस अवधि में किसी प्रकारका दुःख उठायाहै जिससे कि तुम मुझसे अलग होतेहो बिश्वासकर जानो कि मुझे तुम्हारी बड़ी प्रीतिहै यदि मुझे तुम्हारे दुःख और क्लेशका हालमालूमहो तो मैं तुम्हारीसहायता करूं यह सुन उसने उत्तर दिया मैं नहीं जानता कि तुमसे मेरी कुछ सहाय होसके परन्तु मैं इतना जानताहूं कि तुम्हारे कारण मैं बिक्षिप्त कहलाया भाई तुम मुझसे मत बोलो और मेरे पाससे चलेजाओ

दूसरी बेर मुझे दुःख मतदो खलीफ़ा ने उसके कण्ठ से लगकर कहा भाई इतना अप्रसन्न न हो अब मैं तुम्हें छोड़ दूसरी ठौर नहीं जासक्ता मैं बड़ा भाग्यवान् हूं कि फिर तुम्हें अच्छीतरह देखा और तुम्हें भी अवश्यहै कि आज मुझे घरमें लेजाय वैसेही भोजन कराओ और मुझे इच्छाहै कि फिर तुम्हारे साथ मद्य पीऊं अबुल्हसन ने कहा मुझे कुछ आवश्यकता नहीं उस मनुष्यसे जिससे मुझे कष्ट पहुँचा मिलूं जैसे चतुर कहते हैं (मृदङ्ग अपना लेजाओ और आप बजाओ) तुम्हारे कारण मैंने बड़ी आपदा उठाई मैं नहीं चाहता कि फिर उसमें पड़ूं खलीफ़ाने दूसरी बेर उसके हृदय से लग कहा हे मेरे प्रियमित्र! तुम मुझसे अप्रसन्न मतहो मुझे अपना मित्र समझो और बताओ कि तुम्हें मुझसे कौनसा दुःख पहुँचा यदि अनजाने मुझसे कोई अपराध हुआ तो उसका बदला दूंगा अबुल्हसन उस के दममें आगया और उसे अपने निकट बैठालिया और अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त आदिसे अन्त पर्यन्त बर्णन किया जिसे खलीफ़ा भलीभांति जानताथा पुनि कहनेलगा यह स्वप्न मेरे चित्तमें ऐसा समागया कि मैंने जाना कि मैं खलीफ़ाहूं इसपर पड़ोसियोंने मुझे बिक्षिप्त समझ क़ैद करवाया और बन्दीगृहमें मैंने महाकष्ट उठाया और मुझपर बड़ी मारपड़ी तूही इस दुःखका हेतु है कि भोरको जातेसमय मेरेमकानका द्वार खुला छोंड़गया और शैतानने दरवाज़े से आय मुझे बहँकाया उन सम्पूर्ण दुःखोंके बिशेष मैंने उस दशा में अपनी माता को मारा और उसे बुराभला कहा और पड़ोसियों को दुर्बाच्य कहे इस कारण उन्होंने बन्दीगृहमें मुझे मार खिलवाई इन सब बिषयोंके आपही हेतु हैं निदान उसने सब यह दशा बिदशा जो कुछ कि बीतीथी क्रोधमें खलीफ़ासे कहसुनाई वह इनसब बातोंको पहिलेसे जानताथा उसकी सूधीभोली बातें सुन भलीभांति ठट्ठामार हँसा यह देख अबुल्हसन कहनेलगा मैं जानताथा कि तू मुझसे प्रीति रखताहै और मेरा दुःख सुन पछितावेगा और अपने अपराधपर लज्जितहोगा इसके बिपरीत मेरी आपदाको सुन हँसा इतना कह वह महाअप्रसन्न हुआ और क्रोधितहोय कहनेलगा यदि

तुझे मेरे कहनेका विश्वास न हो तो मेरी पीठ और कन्धोंको देख कि कोड़ों के चिह्न अबतक वर्तमान हैं निदान वह उसकी देहपर निशान देख बहुत पछिताया और उसे धैर्यदे फिर कण्ठले लगाय कहनेलगा भाई मुझे तुम्हारे चिह्न देख महाखेद भया परन्तु जो होनाथा सो हुआ अब मेरा अपराध क्षमा करो और मुझे अपने घर लेचलकर भोजन कराओ सुबहके वक्त मैं दरवाजा मूंद चला जाऊंगा यद्यपि अबुल्हसन ने पूर्वमें यह प्रतिज्ञाकीथी कि दूसरी बेर किसीको अपने घर न लेजाऊंगा विशेषकर ऐसे मनुष्यको जिसके कारण इतना दुःख पहुँचा परन्तु उस बेचारेको इसके सिवाय कि उसे ले घरमें जावे कुछ न बनआया निदान दोनों वहांसे उठ नगरकी ओर सिधारे मार्गान्तरमें ख़लीफ़ाने उससे कहा तुम मुझ पै भरोसा रक्खो मैं प्रणकरता हूं कि अपनी प्रतिज्ञा के विपरीत न करूंगा परन्तु तुम्हें उचित नहीं कि मुझ ऐसे परमप्रिय मित्रको कि हरदशा में तुम्हारी भलाई और प्रसन्नताकी कांक्षा रखता है शङ्का करो उसने कहा जो तुम कहते हो वह सत्य है परन्तु फिर मेरे घर आनेकी आशा मत रखना क्योंकि वह सब दुःख जो मुझे पहुँचे उस का तुमहीं हेतु थे यह सुन ख़लीफ़ाने मुसकराय कहा तुम बड़े मन-पापी हो इतना कहने सुनने परभी फिर तुम्हारे मनमें सन्देह बना रहा इसी विधि परस्पर वार्ता करते सन्ध्याको घर में पहुँचे उसकी माताने भोजन पकाय सन्मुख रक्खा अबुलहसन ख़लीफ़ाके साथ बैठ के खानेलगा जब निश्चिन्तभया तो उसकी माताने और पात्र बिछाय उसपर फल मदिरादिक ला धरदिये और आप भीतर जाय सोरही उन दोनोंने मद्यके कई पात्र पिये और अनेक प्रकारकी वार्त्ता करते रहे जब ख़लीफ़ाने देखा कि अबुलहसन उन्मत्त भया तब उससे पूछने लगा तुम कभी किसीपर मोहित हुये थे उसने कहा न तो मैं किसी पर मोहित भया और न मुझे विवाहका सुख मालूम है उसने पूछा फिर किसपर तुम्हारी रुचिहै उसने कहा कि मेरी यही इच्छाहै कि स्वच्छ मदिरा पीऊं और अपने मित्रोंसे वार्त्ता करूं इसके विशेष एक और इच्छाहै कि मैं एक सुन्दर स्त्रीसे जो स्वप्न में मेरे साथ बैठ

के मदिरापान करतीथी बिवाह करना चाहता हूं परन्तु ऐसी स्वरूप- वान् छबिधाम सिवाय महल बादशाह वा मन्त्री के घरके किसको मिले पुनि एक मद्यका पात्र भर खलीफ़ाको दिया और कहनेलगा यह अन्तिम पात्रहै मेरे हाथसे लेके पियो वह तुरन्त पीगया फिर ख़लीफ़ानेभी एक पात्रभर उसमें थोड़ीसी मूर्च्छाकी बूटी डाल उसे देकर कहा कि उस सुन्दरीको जिसे तूने स्वप्नमें देखा था सुधिकर सोजा अबुलहसनने मुसकराय वह पात्र अपने हाथमें ले उस अनु- चरी की सुधिमें पिया और मूर्च्छा खाय सोगया फिर ख़लीफ़ाने उसी दासको सैनकी कि इसे बड़ी रक्षासे महलमें लेजा वह उसे कांधे पर उठाय लेचला और ख़लीफ़ा उसके घरसे निकल द्वारमूंद उसके साथ होलिया जब अपने घरमें पहुँचा दाससे कहा इसे चौथी बार- हदरीमें जहां से उसे उठाय लेगयाथा मेरी शय्यापर लिटायदे पुनि खोजियोंको आज्ञा दी कि उसके कपड़े उतार मेरे वस्त्र पहिनाओ उन्होंने तुरन्त वही किया ख़लीफ़ा प्रभात होतेही अपने शयनस्थान में गया और छिपके बैठरहा कि वहांसे अबुलहसनका तमाशा देखे निदान जब उस बूटीका असर गया तो वह जगा और नेत्र खोले तो सोनेका उगालदान और प्रत्येक बस्तु वहां बिद्यमान देखी गाने वालियोंके सात समूह तुरन्त अपने बाजे ले स्वर मिलाय अतिल- लित गीत गानेलगे वह सहनाईका अतिमिष्ट शब्दसुन प्रसन्न हुआ और इतना दुःख उठाकर जो फिर वह सामान देखा तो अधिक आश्चर्यित भया और अपने चहुँओर खोजियोंको खड़ा देख पूर्ब समयकी सुधिकी और उस बारहदरीको भी देख पहिचान गया और वही प्रकाश और वही वस्तु देखीं गाना बजाना बन्द हुआ कि ख़- लीफ़ा उसका रूप और उसकी बातें सुने इस हेतु शयनालयके से- वक चुपचाप अपनी अपनी ठौरपर हाथ बांधे खड़ेरहे अबुलहसन ने अपनी उँगली आश्चर्य से दांत से काटी और कहनेलगा बड़ा खेद है कि आज मैं फिर वही स्वप्न देखताहूं जो प्रथम मैंने देखाथा निश्चय है कि मैं फिर पूर्बवत् लोहेके पिंजड़े में बन्द किया जाऊं और बेड़ी हथकड़ी पहिन कई दिन तक मार खायाकरूं वह मनुष्य

चित्र चन्द्रकला की शरद के निकट और बादशाह और वजीर का हाल पूंछना॰

जो कल मेरे घर गयाथा महादुष्टहै वही इस स्वप्न और अप्रतिष्ठा का कारण भया यद्यपि उसने मुझसे प्रतिज्ञाकीथी कि मैं जाते वक़्त मकान का दरवाज़ा मूंदजाऊंगा परन्तु फिर वह किवाड़ खुला छोड़ गया शैताननने उस द्वारसे आय मुझे बहँकाया और ऐसे स्वप्न फिर दिखाये जिसे मैंने अपनेको खलीफ़ा समझा हे ईश्वर! उसकी माया और दृष्टिबन्दीसे मुझे बचा यह कह उसने फिर अपनी आंखें मूंदीं और बहुकाल पर्यन्त सोचतारहा कि एक क्षण पीछे आंखेंखोल वह सब सामग्री और खोजियों और बांदियोंको देख आश्चर्यकर कहने लगा हे परमात्मा, सच्चिदानन्द, प्रभु! मुझे शैतानके छलसे बचादे फिर नयनमूंद मनमें कहनेलगा तू इसीभांति पड़ारह तनक न बोल चाहे मध्याह्नभी होजावे शैतान झखमारके आप चलाजावेगा परन्तु लोगोंने उसे चुपका रहने न दिया प्राणानन्दिनी नामक अनुचरी जिसको उसने पहिलीबेर देखाथा उसके समीप आय बैठी और उस से कहनेलगी हे बादशाह! यदि मेरा अपराध क्षमा हो तो मैं बि-नय करूं यह आपके सोने का समय नहीं जागिये सूर्य उदय हुये अबुलहसन प्राणानन्दिनी का शब्द पहिचानकर कहनेलगा शैतान मेरे पास से उठ दूसरे मनुष्यके धोखे से मुझे खलीफ़ा कहता है प्राणानन्दिनी ने कहा आपही बादशाहहैं और यह नाम जो मैंने आपको दिया मुख्य आपहीकाहै क्योंकि आप हिंदू मुसल्मान किन्तु संसार भरके चक्रवर्ती बादशाहहैं जिसकी मैं किंकरी अनुचरीहूं आपने रात्रिको कुछ स्वप्न देखाहै जिससे आप यह कहते हैं यदि आप भलीभांति नेत्र खोलें तो यह सन्देह आपका निवृत्त होजाये और समझें कि मैं अपने मन्दिर में हूं और यह बांदियां आपकी सेवाके लिये खड़ीहैं आप कुछ अचम्भा न कीजिये क्योंकि रात्रिको आपने बहुकालपर्यन्त शयन किया हमने आपकी निद्रामें विघ्न होने से न जगाया निदान प्राणानन्दिनी ने इस भांति की बहुतसी बातें कीं इतनेमें वह उठबैठा और नेत्र खोले और उन लौंड़ियोंको जिन्हें पहिले देखाथा पहिचाना वह सब हरबराय उसके निकट आय खड़ी हुईं पुनि प्राणानन्दिनी उससे बातें करनेलगी और कहनेलगी

हे बादशाह! यह समय आपके जगनेका है देखिये उजियाला प्रकट हुआ उसने अपनी आंखें मल उससे कहा मैं तो बादशाह नहीं बेचारा अबुल्हसनहूं मुझे अपना बृत्तान्त भलीभांति मालूमहै तूने उसके बिपरीत मुझे बादशाह क्यों कहा उसने उत्तर दिया हम अबुल्हसन को नहीं जानतीं कि वह कौन है ऐसा न कहिये कि आप बादशाह नहीं अबुल्हसनने चहुँओर देखकर कहा क्या अद्भुत माया है कि मैं उस बारहदरीमें बैठाहूं जिसमें पहिलेथा और वही स्वप्न देखताहूं जो पहिले देखाथा ऐसा न हो जो इस स्वप्नके देखनेसे वही दुःख उठाऊं मेरा ईश्वर रक्षक है ख़लीफ़ा यह सब बार्त्ता सुन चाहता था कि ठट्ठामार हँसे परन्तु हँसी को दबाये रहा फिर अबुल्हसनने लेटकर अपनी आंखें मूंदलीं तब फिर प्राणानन्दिनीने कहा यद्यपि इस किंकरीने दो बेर आपसे कहा कि समय बीताजाताहै आप क्यों नहीं जागते सम्पूर्ण सभासद् अगवानीके लिये खड़ेहैं आपहीकी आज्ञा है कि आपको सूर्योदयके पहिले जगादें फिर दो बांदियोंने उसकी भुजा पकड़ उठायदिया और बारहदरी के मध्यमें गद्दीपर लेजाय बैठायदिया और हाथ बांधकर उसके सन्मुख नृत्य और ललितस्वरोंसे गान करनेलगीं और चहुँओरसे सुन्दर बाजे बजने लगे अबुल्हसन इस दशाको देख मनमें कहनेलगा क्या मैं वास्तवमें बादशाहहूं और चाहताथा कि कुछ वार्त्ता करे परन्तु शोर और वाह वाह में कुछ सुनाई न देता तब उसने हाथकी सैनसे शशिमुखी को जो उसके सन्मुख नृत्य करती थी बुलाय पूछा सत्य कह मैं कौनहूं उसने उत्तर दिया हे बादशाह! इस प्रश्नसे आप परीक्षा लेतेहैं आप ही बताइये क्या आप बादशाह नहीं फिर कौनहैं अपने को आप क्यों भूलगये आप इस रात्रिको अपने नियमसे अधिक सोये यदि आप कहिये तो हम उन सब बातों को जो कल आपने कीहैं स्मरण करावें फिर कहनेलगी कल आपने सभामें जाय कोतवालको अमुक गलीमें भेजकर मवज़्ज़न और चार उसके संगतियोंको दण्ड दिलाया और मन्त्री को भेजकर हज़ार अशरफ़ी अबुल्हसनकी माता को दिलाई और जब फिर बारहदरीमें आप गये तब अमुक पाक

भोजन किया और अमुक बचन कहे और हमको स्वामिवत् दया-लुतासे बैठाय भोजन कराया और फल दिये और हमारे हाथसे मद्य के पात्र पान किये और हमारा गानासुना फिर शय्यापर रात्रिभर ऐसे सोये कि दिन होगया और फिरभी आपकी आंखें नहीं खुलतीं मणि-माला और अन्य अनुचरियां और खोजीभी एकमत होय उस शशि-मुखीके बचनका पक्ष करतेरहे फिर सब कहनेलगे कि अब आप उठिये और भोरकी बन्दना कीजिये अभी समय कुछ शेष है अबुल्ह-सनने उन बातोंको सुन कहा हे महाधूर्तो! यद्यपि तुम रूप अनूपसे छकी और यौवनमें पकीहो परन्तु बुद्धि और चतुरतासे खालीहो पूर्व में मैंने ऐसाही स्वप्न देखाथा तब बड़े २ दुःख और कष्ट उठाये और बहुकालपर्यन्त लोहे के पिंजड़े में हथकड़ी और बेड़ी डालेहुये पड़ारहा प्रतिदिवस पचास कोड़े मुझपर पड़ाकरते थे जिससे मेरी पीठकी खाल उधड़गई और उसपर काले चिह्न पड़गये तुम उसे स्वप्न समझतीहो यह सुन शशिमुखीने उत्तर दिया यह बृत्तान्त अर्थात् क़ैद होना और मारखाना आपके बैरियोंने स्वप्नमें देखा होगा क्योंकि आप कलसे कहीं नहीं गये रात्रिभर इसी बारहदरी में सोया किये इस समयमें आपकी आंखें खुली हैं अबुल्हसन ने उसका बचन सुन कहा तू सत्य कहती है और समझा जबसे मैं इस महलमें आया फिर यहांसे बाहर नहीं निकला परन्तु फिर चिन्ता करनेलगा कि उस दशाको जिसमें मारखाई स्वप्न समझूं वा इसे जो साक्षात् देखताहूं हे प्रभु! मैं अबुल्हसनहूं वा ख़लीफ़ा जो सत्य हो सो विदित होजावे इसके अनन्तर अपनी भुजाओं को जिनपर मारके चिह्न पड़ेथे खोलके उन स्त्रियोंको दिखाये और कहनेलगा तुम बिचारो कि सोये हुये मनुष्यके शरीरपरभी कहीं मार के चिह्न पड़तेहैं इस बिषयको साक्षात् समझो अभीतक इनके दबाने से पीड़ा होतीहै अब दृढ़ सूचित हुआ कि मैं ख़लीफ़ा नहीं बेचारा अबु-ल्हसनहूं यदि कोई इसे स्वप्न समझै तो कोई बात संसारमें इससे अद्भुत न होगी कि स्वप्नमें मारपड़े और उसका परिणाम अर्थात् पीड़ा जाग्रत् अवस्थामें ज्ञातहो इसके उपरान्त उसने एक बांदी

को बुलाय कहा मेरा मांस काट जिससे मुझे मालूमहो कि मैं जागता हूं वा सोता उसने वैसाही किया तो वह पीड़ा से चिल्लानेलगा उसके चिल्लातेही एकहीबेर सब बाजे बजनेलगे और सब खोजी और लौंड़ियां गाने बजाने लगीं फिर अबुलहसनने अपने वस्त्र उतार फेंकदिये केवल एक पायजामा पहिनेरहा और उन सबके साथ हो नाचता और तालियां बजानेलगा कभी इतना झुकता कि दोहरा जाता निदान कोईबात मसखरेपनकी न छोड़ी ख़लीफ़ा यहदशा देख हँसते हँसते लोटगया निदान उसने पुकारकर कहा अबुलहसन बस कर क्या हँसते हँसते तू मुझे मारडालेगा जब ख़लीफ़ाने यह कहा तब सब चुपहोरहे और बाजों का शब्दभी बन्द हुआ अबुलहसन भी चुपहोय आवाज़की तरफ़ देखनेलगा उसने वहां ख़लीफ़ाको देख पहिचानकर कहा आपही ब्यापारीका बेष बनायेहुयेथे इतना कह कुछ लज्जित हुआ और समझा कि मैं जगाहूं स्वप्न नहीं देखता और यह सब बातें ख़लीफ़ाकी खुशी के लिये हुईं पुनि ख़लीफ़ाकी ओर देख कहनेलगा कि आपही मवस्सलके ब्यापारीके बेषमेंथे और आपही मेरे मारपड़ने और अप्रतिष्ठा के हेतु हुये ख़लीफ़ाने कहा अबुलहसन तू सत्य कहताहै मैं इसका तुझे यथार्थ बदला दूंगा और मैं ईश्वरको साक्षी करताहूं कि इसके बदले तेरे साथ ऐसा उपकार करूंगा कि आजतक किसीसे न किया होगा यह कह ख़लीफ़ा उस मकानसे नीचे उतरआया और मसरूरको आज्ञा दी कि तुरन्त वस्त्र लाय इसे पहिनाओ जब वह पहिनचुका ख़लीफ़ाने उसे अपने कण्ठ से लगाय कहा तू मेरा भाईहै जो तू कहेगा वही करूंगा अबुलहसनने कहा हे दयालु, कृपालु ! पहिले आप कहिये कि मेरे बिक्षिप्त बनाने से आपको क्या लाभथा ख़लीफ़ाने उसे धैर्यदे कहा महीनेकी प-हिली तिथिको वेष बदल नगरके बुरे भले बृत्तान्तके मालूम करने को नगरके गलीकूचों में फिराकरताहूं तथा अमुक रात्रिको तूने मुझे अपने घरमें लेजाय अतिस्वादिष्ठ भोजन खिलाये तेरी बार्त्ता से ज्ञात हुआ कि यदि तुझे ईश्वर एक दिनके लिये ख़लीफ़ा करदे तो अपनी गलीके अमुक मवज़्ज़न और चार उसके संगती मनुष्योंको

दण्ड देगा इस लिये मैं तुझे मदिरा में मूर्च्छाकी औषध पिलाय अपने मन्दिरमें उठवालाया तू रात्रिकी बातें विचार ख़लीफ़ा बन बैठा और हरएकको मारने और बुरा भला कहनेलगा निदान क़ैद होके मारखाई एक मास पीछे दूसरी बेर मैं फिर तेरा अतिथिहोके उसी भांति तुझे यहां उठालाया अब तू धैर्यधर अबुल्हसनने कहा हे बादशाह! जो कष्ट मुझपर पड़े सो जन्मभर स्मरण रहेंगे कि ख़लीफ़ाके कारण मेरी यह दशा भई और बिश्वासहै कि आप मुझ पर सर्वदा कृपा करतेरहेंगे परन्तु मेरी यह इच्छा है कि आपकी सेवामें रहूं और प्रतिसमय आपके सन्मुख उपस्थित रहूं ख़लीफ़ाने कहा मैंने तेरी यह इच्छा स्वीकारकी और तुझे मैंने हरसमय आने की आज्ञा दी तुझे कोई न रोंकेगा फिर एक मन्दिर अतिसुन्दर उसके रहनेको दिया और हज़ार अशरफ़ी देके यही मासिक उसका नियत किया जब ख़लीफ़ा सभामें गया तो अबुल्हसन अवसर पाय अपने घरमें आया और अपनी मातासे सम्पूर्ण बृत्तान्त वर्णन किया कि जो कुछ बीताथा स्वप्न न था किन्तु यह सब जाग्रत् अवस्थामें ख़लीफ़ाकी इच्छासे हुआ और उसने मुझे एक रात दिनके लिये अपना राजपद दे मेरी सब आज्ञा प्रचलित कराई अब मुझे उस ने अपना सभासद् नियत किया फिर यह बृत्तान्त सम्पूर्ण बग़दाद-नगर में बिख्यात हुआ और वहांसे और नगरोंमें प्रसिद्ध भया उस दिनसे अबुल्हसन ख़लीफ़ाके निकट उपस्थित रहकर उसको अपने हास्य और वाचालतासे प्रसन्न रखता एक दिन ख़लीफ़ा अबुल्हसनको ज़ुबैदा अपनी मलकाके समीप लेगया और इसका सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया वह यह सुन हर्षित भई अबुल्हसन बहुधा ख़लीफ़ाके साथ महलमें जाता और बहुधा चन्द्रकला नाम एक अनुचरीको प्यारकी दृष्टिसे देखता ज़ुबैदाने यह बृत्तान्त ख़लीफ़ा से कहा कि अबुल्हसन इस सुन्दरीको बहुत देखाकरताहै और वह भी उससे प्रसन्न मालूम होती है यदि सलाहहो तो इन दोनोंका बिवाह करदें ख़लीफ़ाने कहा हे प्रिय! तुमने मेरे मनकी बात कही क्योंकि मैंने इससे प्रतिज्ञाकीथी कि तुझे अतिसुन्दर स्त्री दूंगा परन्तु

अबतक मैंने इसकी रुचि किसीपर न पाई अब तुमसे मालूम हुआ इससे क्या उत्तम कि इन दोनोंका बिवाह करदिया जावे जितना कि ज़ुबैदा को चन्द्रकला प्रियथा उतनाही ख़लीफ़ाको अबुल्हसन प्याराथा पुनि उनका बिवाह बड़ी धूमधामसे हुआ ज़ुबैदाने असंख्य द्रब्य दहेज़में दिया और ख़लीफ़ानेभी अबुलहसनको बहुत रत्न और धन दिया अबुलहसन चन्द्रकलाको उसी मकानमें लेगया जो ख़लीफ़ाने उसे दिया था और बड़ा उत्सव किया कई दिनतक आनन्द रहा फिर वे दोनों प्रीतिपूर्बक रहनेलगे सिवाय इसके कि वह ख़लीफ़ा और ज़ुबैदा की सेवामें जाते बियोग न होता बास्तवमें चन्द्रकला अत्यन्त चतुर और रूपवान्थी इस हेतु अबुल्हसन उसपर मोहित रहता वे दोनों प्रिया प्रियतम अतिउदारथे सदैव उत्तम भोजन करते और स्वच्छ वस्त्र पहिनते और दिव्य मदिरा पीते और भोर से सायंकालपर्यन्त भोजनके भाजन बिछेरहते जो खोजी वा कोई अनुचरी उनके भेंट को आती तो वह उनको बिना भोजन कराये बिदा न करते इसके बिशेष उनकी प्रतिष्ठानुसार वस्त्र देते और कइयों को पारितोषिकादिक दे बिदा करते और रात्रिको फल मिठाइयां मुरब्बे और अचार भोजनके समय रक्खे रहते गाना बजाना आदिक आनन्द रहता निदान इसी भांति इन्होंने धनवानोंके समान अपना निर्बाह किया उनके रसोइयेंनेभी बहुत दिनोंतक अतिस्वच्छ भोजन पकाये और निश्शङ्क लुटादिये तो एक दिन रसोइयें ने ख़र्च का हिसाब उन्हें लाय दिखाया और इसी प्रकार तोशेख़ानेवाले ने कि उन दोनों के बस्त्रोंमें ख़र्च कियाथा सो रुपया मांगा उन्होंने जो कुछ कि बचाथा देदिया तथापि हज़ारों रुपयेका ऋण उनके मध्ये निकला और ख़र्चकी ओरसे दुःख पानेलगे अबुल्हसनने इस प्रतिज्ञासे कि कदाचित् ख़लीफ़ासे कुछ न मांगूंगा सो ख़लीफ़ासे कुछ मांग न सका और पूर्बका द्रब्य जो बिवाहके प्रथम पायाथा अपनी माताको देडाला अब कुछ मातासेभी न मांगसक्ताथा और चन्द्रकला भी कि ज़ुबैदाने उसे इतना द्रब्य दियाथा कि जन्मभर उसे बहुत था न मांगसक्ती थी सो द्रब्यके न होनेसे अतिदुःख पाकर अबुल्हसन

ने अपनी स्त्री से कहा अब कोई उपाय करनाचाहिये सो परस्पर सहायता करनी अवश्य है चन्द्रकलाको इसके कहनेपर कुछ दृढ़ता हुई और कहनेलगी मैं तो निपट निराशथी अब तुम बताओ कि वह कौनसी युक्तिहै उसने कहा वह ऐसा उपायहै कि वह कुछ न कुछ अवश्य देंगे वह यहहै कि हम तुम दोनों मरें उसने कहा जो तुम चाहो तो मरो मैं अभी नहीं मरती मुझे तो अभी संसारका सुख भोगना है यदि इस उपाय के बिशेष कोई अन्य यत्नहो तो निस्सन्देह मैंभी इसमें संयुक्तहूं उसने कहा आखिर को तेरा स्त्रीका जन्म है मरनेका नाम सुनके घबड़ागई मुझे मरनेका हाल न कहनेदिया मेरा प्रयोजन बास्तवमें मरना नहीं किन्तु केवल मक्कर करनाहै चन्द्रकला ने कहा यदि मरनेसे तुम्हारा यह अभिप्राय है तो इससे उत्तम दूसरा कोई उपाय नहीं अब उस मक्करको बयान कर कि मैंभी उसे समझूं उसके पतिने कहा मैं लेटके मृतकवत् बनूंगा तुम मुझ पर एक उज्ज्वल चादर डालदेना कि मानो मैं बास्तव में कालबश हुआ फिर मुझे दालानमें रख यथोचित बिलाप करना और एक पगड़ी बँधीहुई मेरे शीशपर रखकर मेरे चरण पश्चिम की ओर करदेना और बस्त्र फाड़ शिरके केश खोल रुदन करती हुई ज़ुबैदा के निकट जाना वह तुझे अवश्य कुछ देवेगी कि मेरी अरथी बड़ी धूमधाम से उठाई जावे और तेरे बस्त्र फटे देख अतिउत्तम थान देगी जब तुम वहांसे रुपये लेके आवोगी तो मैं उठ खड़ाहूंगा और फिर तुम लेटकर मृतक बनना मैं तुझे बस्त्र पहिना खलीफ़ाके निकट जाय यही छल उससे करूंगा निश्चयहै कि वह इस हालको सुन ज़ुबैदासे कम न देगा जब वह यह उपाय बर्णन करचुका उसकी स्त्री ने कहा यह उपाय बहुत अच्छाहै वह निस्सन्देह हम तुमको बहुत कुछ देंगे अब हममें से कोई वह उपाय करे जिससे लाभहो जब हम परस्पर मिलकर उसको करेंगे तो निश्चय बहुत रुपया मिलेगा अब बिलम्ब मतकरो फिर अबुल्हसन क़ालीन पर सफ़ेद चादर बिछाय चित लेटगया और पांव अपने लम्बे करदिये और एक चादर लपेट मृतकके सदृश बनगया उसकी स्त्रीने पश्चिमकी ओर उसके

चरण फेर दिये और महीन वस्त्र से उसका मुख छिपादिया और रुगड़ी उसके मुखपर इस भांति रक्खी कि श्वास उसका न रुके पुनि अपने शिर की ओढ़नी फाड़ केश खोल बहुत विलाप किया उसी दशासे रुदन करतीहुई जुबैदाके महलमें गई और उससे अबुलहसनके मरने का हाल कहसुनाया जुबैदा और अन्य बांदियां यह सुन रोने और पछितानेलगीं जुबैदा कि इसे बहुत चाहतीथी उसके वचन पर निश्चयकर एक हजार अशरफ़ी और एक भारी थान कमख़ावका उसे देकर कहा कि इसे अरथीपर डालियो और अशरफ़ियों को फ़ातिहा और दरूद में ख़र्च करना वह उसे ले अपने घरमें लाकर अबुलहसन को रुपये और वस्त्र दिखादिये वह हर्षित होय उठ खड़ाहुआ पुनि चन्द्रकलाने कहा अब मैं वहाना करके मरती हूं तू मेरे मरनेका हाल ख़लीफ़ासे जाके कह और अशरफ़ियां और थान उससे ला उसने कहा तू मुझे इस विषयमें क्या सिखाती है मैं तुझसे आपही चतुर हूं अब तू तुरन्त मृतकवत् वन देख तो मैं क्या काम करता हूं निदान अबुलहसन अपनी स्त्रीको वस्त्रसे ढांपकर दरबारके समय रुदन करता हुआ चला ख़लीफ़ा ने उसे रोतेहुये देख अपने सब काम छोड़ दिये और उसकी ओर देखनेलगा और उससे रोनेका हेतु पूछा उसने विनयकी हे दयालु, कृपालु, स्वामी! मेरी स्त्री चन्द्रकला मरगई ख़लीफ़ा ने बड़ा खेद किया और उसे रोते देख वज़ीर आदिक सकल सभासदोंने भी महारुदन किया और ख़लीफ़ा ने हजार अशरफ़ी और भारीथान कमख़ावका दिलवाकर उसे बिदा किया उसने हँसी ख़ुशी लाकर चन्द्रकलाको दिखाया वह प्रसन्नहो उठबैठी ख़लीफ़ा और जुबैदाको उन दोनोंके मरनेसे महाशोक था इतने में ख़लीफ़ा सभा को बिदाकर मसरूरको साथले जुबैदाके महलमें आया और उसे अत्यन्त चिन्ता करते और आंसू बहाते देख ख़लीफ़ाने उसे धैर्य देकर कहा कि यद्यपि चन्द्रकला तुम्हारी हितैषी लौंड़ी थी परन्तु ईश्वरसे कुछ उपाय नहीं चलता सन्तोष रक्खो जुबैदा यह सुनते ही आश्चर्यमें हो समझी कि ख़लीफ़ाको धोखा हुआ कि अबुलहसनको चन्द्रकला समझा यह सोच

कहनेलगी हज़ूर चन्द्रकला तो जीती है अबुलहसन तुम्हारा सभासद् मरगया ख़लीफ़ा हँसकर मसरूरसे कहनेलगा इसकी समझसे मुझे अचम्भाहै कि ऐसी उलटी बात कही कि चन्द्रकलाके बदले अबुलहसनका मरना बतातीहै पुनि ज़ुबैदासे कहनेलगा हे सुन्दरी! तुम अबुलहसनके वास्ते मत रोवो वह तो चंगा भला है अभी अपनी स्त्रीके लिये बिलाप करताथा अब तुम अपनी प्रिय बांदी के लिये रुदनकरो अबुलहसन थोड़ी देर हुई कि मेरे पास रोताहुआ आयाथा मुझेभी उसे देख रोना आया और उसने मुझसे अपनी स्त्री के मरनेका हाल प्रकट किया सो मैंने एक थान कमख़ाब और एक हज़ार अशरफ़ी उसे दिलवादीं जिससे उसे धैर्य हो उस समय मसरूर वहां खड़ाथा यह सब बातें जो मैं कहताहूं उसने देखीं यदि तुम्हें सन्देह वा भ्रमहो तो इससे पूछलो ज़ुबैदाने ख़लीफ़ा से कहा तुम्हारा स्वभाव हँसीकाहै परन्तु यह समय हँसीका नहीं तुम मेरी लौंड़ीका शोक करतेहो और वास्तवमें उसका पति मराहै तुम्हें चाहिये कि अबुलहसनके वास्ते रुदनकरो ख़लीफ़ाने कहा हे सुन्दरी! मैं हँसीसे नहीं कहता वास्तवमें अबुलहसन जीताहै और चंगा भला है तुम धोखेमेंहो ज़ुबैदाने उत्तर दिया ऐसा नहीं जैसा तुम कहतेहो लौंड़ी जीती है थोड़ी देर हुई कि वह रोतीहुई मेरे समीप आई थी बहुकालपर्यन्त अपने पतिके मरने से बिलाप करतीरही सो उसकी यह दशा देख मैंभी रोई मेरा रोना देख सब बांदियां भी रोईं आप सब से यह वृत्तान्त पूछें कि मैंने उसे एक हज़ार अशरफ़ी और एक कमख़ाबका थान दिया या नहीं मुझे जो आपने शोकमें देखा मुझे अबुलहसनके मरजानेकाही शोक है और मैं चाहतीथी कि आपको कहला भेजूं इतनेमें तुम आपही आये निदान बहुकालपर्यन्त इसी विषय में तकरार रही ख़लीफ़ा कहताथा कि अबुलहसन जीता है और चन्द्रकला मरगई और ज़ुबैदा कहती नहीं चन्द्रकला जीती है निदान ख़लीफ़ा ने खिसियाकर मसरूरको आज्ञा दी कि यद्यपि मैं जानताहूं कि चन्द्रकला मरगई तथापि तू शीघ्र जाय ठीक ठीक हाल वहांका ला कि इन दोनों में से कौन मरा और कौन जीता है

जब मसरूर जाचुका तो खलीफ़ा ने जुबैदा से कहा अभी मालूम हुआजाताहै कि सच्चा कौनहै और झूठा कौनहै जुबैदाने कहा मैं सच्चीहूंगी और तुम अभी सुनोगे कि अबुल्हसन मरा निदान दोनों अपनी २ बातपर दृढ़थे उन दोनों ने परस्पर प्रण किया खलीफ़ाने कहा यदि मैं हारूं तो अमुक बाग़ तुम्हें दूं और जो तुम हारो तो तुम्हारा खिलौनोंवाला मकान लेलूं जुबैदा राजी हुई वह दोनों परस्पर इस प्रणपर मसरूरके आगमनकी बाट देखनेलगे अबुल्हसन तो प्रथमही जानताथा कि इस बिषयमें खलीफ़ा और जुबैदा में अवश्य तकरार होगी किन्तु परीक्षाकी बार आवेगी इस हेतु उसने प्रथमसे एक उपाय सोचरक्खा था वह अपने मकान में बैठाहुआ स्त्रीसे बार्त्ता करताथा कि किवाड़ की दरारसे मसरूरको आते देखा कि सूधा इन्हींके घरकी ओर चला आता है और समझगया कि इसी हेतु खलीफ़ाने उसे भेजाहै यह देख उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि तुरन्त तुम फिर एकबेर मर जाओ चन्द्रकला तुरन्त लेट कफ़न पहिन मृतकतुल्य बनगई और अबुल्हसनने एक कमख़ाब का थान जिसे खलीफ़ाने उसे दियाथा उसपर डालदिया और घरका द्वार खोल अपनी रोनी सूरति बनाय रूमाल अपने नेत्रोंपर रख लोथ के शिरहाने बैठगया इतनेमें मसरूर भीतर आया और चन्द्रकला को मरा देख मनमें प्रसन्न हुआ कि हमारा खलीफ़ा सच्चाहै जब निकट पहुँचा तो अबुल्हसन उठ बड़े आदर से उसके हाथों को चूमकर कहनेलगा तुम देखतेहो मैं किस शोक और आपदामें हूं चन्द्रकला ऐसी स्त्री इस संसारसे उठ गई तुमभी उसपर दया रखतेथे मसरूर भी उसकी सुधिकरके बहुत रोया और शिरकी ओरसे वस्त्र उठाय उसकी सूरति देखी फिर मुख छिपाय कहनेलगा ईश्वरकी माया से किसीका कुछ उपाय नहीं चलता चन्द्रकला मेरी अच्छी बहिनथी ईश्वर तुझपर दयालुहो पुनि अबुल्हसनसे कहनेलगा स्त्रियोंकी क्या दशाहै भलेप्रकार निश्चय करनेके बिना हरएक बातपर तकरारकर अपनी बातको दृढ़ रखती हैं और दूसरेका बचन नहीं सुनतीं यद्यपि जुबैदा बुद्धिमान् है परन्तु यही कहती है कि तुम मरगये और

चन्द्रकला जीतीहै बड़ी देरसे ख़लीफ़ा से तकरार करतीहै यद्यपि मैंनेभी साक्षी दी क्योंकि तुमने मेरे सामने यह हाल कहाथा तौभी ज़ुबैदाको निश्चय नहीं और अबतक वह अपनेही बचनको दृढ़ करतीहै और ख़लीफ़ाको झूठा जानतीहै उसने कहा ईश्वर ख़लीफ़ा को जीता रक्खे कि उन्होंने इस दुःख में मेरी बड़ी पालना की मैं आपही जाकर बृत्तान्त कह आता परन्तु अरथी छोड़कर नहीं जासक्ता मसरूरने कहा यदि अब मुझे ख़लीफ़ाके पास जानेकी आवश्यकता न होती तो इसी दशा में तुम्हारे संयुक्त होता तुम्हारे जाने की वहां आवश्यकता नहीं अब जाय इस हालको बिस्तारसे बर्णन करताहूं यह कह वह बिदाहुआ अबुल्हसन द्वारतक उसके साथ हुआ जब मसरूर दूर निकलगया अबुल्हसनने अपनी स्त्रीके ऊपर से थान और चादर उठाय कहा अब तुम उठबैठो परन्तु मुझे बिश्वास है कि ज़ुबैदा मसरूरके कहने पर निश्चय न करेगी और किसी अपनी बिश्वासित दासीको यहां देखने के लिये भेजेगी चन्द्रकला ने तुरन्त उठ अपने बस्त्र पहिन लिये फिर वह दोनों द्वार के समीप बैठ मार्गके दरवाज़ेकी दरारसे देखतेथे कि देखिये अब कौन आता है मसरूर महलमें पहुँचकर हँसा और अपने दोनों हाथ मारे हर्ष के बजाये अर्थात् ख़लीफ़ा सच्चाहुआ और ज़ुबैदा को जीत लिया ज़ुबैदाने अप्रसन्न होय कहा हे गुलाम हब्शी, दुष्ट! यह हँसने का समय नहीं है सत्य कह कौन मरा है स्त्री वा पुरुष मसरूरने कहा चन्द्रकला कालबश हुई अबुल्हसन उसके शोकमें रोरहाहै ख़लीफ़ा यह बचन सुनतेही उछलपड़ा और ठट्ठा मारके हँसा और ज़ुबैदा से कहनेलगा हे सुन्दरी! तुम्हारा खिलौनोंवाला घर मैं जीता इसके अनन्तर ख़लीफ़ा मसरूरसे कहनेलगा कि सम्पूर्ण बृत्तान्त वहां के जाने और अरथी के देखनेका बिस्तारसे बर्णनकर उसने कहा हे स्वामी! जिस समय मैं अबुल्हसनके घर पहुँचा द्वार उसका खुला पाया भीतर जाय क्या देखा कि अबुल्हसन अरथी के शिरहाने बैठाहुआ रोरहा है और चन्द्रकला कफ़नाई हुई दालानके मध्यमें पड़ी है और वह कमख़ाब का थान जो आपने उसे दिया था लोथ

पर पड़ाहुआ था मैं उस लोथके निकट गया और शिरहानेकी ओर से उसके मुँहपरसे वस्त्र उठाय देखा उसके मुखकी कान्ति बदली हुई थी परन्तु किंचित् शोथहुआ था फिर उसके मुखपर वस्त्र ढांक चला आया वहांका यही हालथा जो मैंने आपसे कह सुनाया खलीफ़ाने कहा मुझे इस विषय में कुछ सन्देह न था अब तेरे देखआने से दृढ़ निश्चय हुआ पुनि खलीफ़ा जुबैदासे कहनेलगा तुम्हेंभी स्त्रीके मरने का निश्चय हुआ होगा तुमने शर्त हारी जुबैदाने खलीफ़ासे कहा मुझे इस दास के बचनका निश्चय नहीं यह दास महादुष्ट और धूर्त है न मैं अन्धीहूं न विक्षिप्त मैंने अपनी आंखोंसे चन्द्र-कलाको देखा कि रोती पीटती आई थी मैंने उससे आप बातें कीं और जो उसने कहा मैंने सुना मसरूर कहनेलगा हे सुन्दरी ! मुझे तुम्हारी और खलीफ़ाकी कि मुझे संसारमें इससे अधिक प्रिय कोई नहीं सौगन्द है कि चन्द्रकला मरी और उसका पति जीता है जु-बैदाने क्रोधित होय कहा कि भला मैं अभी तुझसे समझूंगी फिर अपनी दासियों को बुलाय उनसे पूछा कि खलीफ़ा के आनेके प-हिले कौन रोताहुआ मेरे पास आयाथा दासियों ने बिनयकी कि चन्द्रकला रोतीहुई आई थी फिर जुबैदाने उस बांदीसे जो उसकी खज़ांचीथी पूछा कि किसको मैंने अशरफ़ियां और थान दिलवाया उसने कहा चन्द्रकला को फिर जुबैदाने क्रोधित होकर मसरूर से कहा हे दुष्ट, अयोग्य ! तू क्यों इन सबके प्रतिकूल कहता है मैं तेरे कहनेका निश्चय करूं वा सब बांदियोंका मसरूरने बहुत कुछ कहा निदान चुपका होरहा और खलीफ़ाने जुबैदाकी ओर देख हँसके कहा जिसने स्त्रियोंको भ्रष्टबुद्धि कहा सत्य कहा है हे सुन्दरी ! इसी समय मसरूर अपनी आंखसे देखआयाहै कि चन्द्रकला दालान में मुई पड़ीहै और अबुल्हसन उसके शिरहाने बैठा रोरहा है तिसपर तुम्हें बिश्वास नहीं आता जुबैदा ने खलीफ़ा से कहा मेरा अपराध क्षमाहो मसरूर के बचनका मुझे निश्चय नहीं वह तुम्हारा सेवक है तुम्हारीसीही कहेगा और उसके कहने पर तुमने मुझे बुद्धिहीन बनाया मैं बिनय करती हूं मुझेभी आज्ञा हो तो मैंभी किसी अपने

मनुष्य से भेद मालूमकरूं कि मैं सच्चीहूं वा झूठी ख़लीफ़ा ने कहा बहुत अच्छा तुमभी किसीको भेजो ज़ुबैदाने अपनी दाईको जिसका दूध उसने पिया था बुलाय कहा कि तुम अबुल्हसन के घर जाओ और भलीभांति मालूम करो कि अबुल्हसन मरा है वा चन्द्रकला मैं तुझे इनआम दूंगी वह दण्डवत् कर सिधारी ख़लीफ़ा ने मनमें कहा दाईका जाना व्यर्थहुआ उसके मुखसे सुनकर ज़ुबैदा को बि-श्वास होगा और मसरूरसे साफ़ होजावेगी अबुल्हसन कि अपने दरवाज़ेकी दरारसे मार्गकी ओर देखरहाथा दाईको आते देख स-मझा कि वह ज़ुबैदाकी तरफ़ से हालके मालूम करने को आती है अब जो उचितहो सो करनाचाहिये तो अपनी बीबीसे कहा कि दाई ज़ुबैदाकी ओरसे आई है अब मुझे चाहिये कि मैं मरूं सो वह प-हिले की भांति लेटगया और अपनेको मुर्दा बनालिया चन्द्रकला ने उसे कफ़न पहिनाय थान कमख़ाब का जो ज़ुबैदा ने दिया था डाल दिया और पगड़ी उसके शिरपर रखदी और दाई तुरन्त उसके घर पहुँची और क्या देखती है कि चन्द्रकला अपने शिर के बाल नोंचे खसोटे छाती पीटती आंसू बहारही है दाई उसके समीप जाय अतिनम्रतासे कहनेलगी मैं इस समय मातमपुरसीको तुम्हारे पास नहीं आई उसने कहा हे माता! देखो मैं किस दुःख में हूं अबुल्हसन कि जिसके साथ ख़लीफ़ा और ज़ुबैदाने बड़ी दया करके मेरा बिवाह किया था मरगया फिर उसने पुकारके कहा हे अबुल्हसन! तुम मुझे रांड कियेजाते हो मैं तुम्हारे पीछे क्या करूंगी ईश्वर ने कौन कष्ट मुझपर डाला दाईने देखा कि जो कुछ मैं यहां देखतीहूं मसरूरके कहनेके प्रतिकूलहै फिर उसने अपना शिर ऊपर करके कहा धिक्कार है उस मुँहकाले ग़ुलामपर जिसने झूठी बातें कहके मेरी स्वामिनी और ख़लीफ़ामें झगड़ा डाला और चन्द्रकलासे कहा बच्ची तुमने कुछ अचम्भेकी बात औरभी सुनी उस अयोग्य हब्शी अर्थात् मसरूरने ख़लीफ़ासे कहा कि चन्द्रकला अर्थात् तेरे शत्रु कालबश हुये और अबुल्हसन तुम्हारा पति जीता है और इस बात पर लड़ झगड़ ज़ुबैदाको अप्रसन्न किया उसने

रोके कहा यदि हे माता! जो मसरूर कहताहै वही सत्य होता तो मैं आज अपने प्रिय प्रियतमके शोकमें न पड़ती यह कह महाबिलाप करनेलगी दाई भी उसे इस दशामें देख रोनेलगी और चतुरता से अबुल्हसनके शिरहाने जाय वस्त्र उठाया और उसे भलीभांति देख तुरन्त ढांपदिया और आशीर्बाद दिया हे दीन, अबुल्हसन! तुझपर ईश्वर दया करे और चन्द्रकलासे कहनेलगी तेरा ईश्वर रक्षकहै मैं चाहती हूं कि मैंभी तेरे साथ शोक करूं परन्तु क्या करूं ऐसी आवश्यकता है कि मैं तनक ठहर नहीं सक्ती ज़ुबैदा मेरे पहुँचनेकी राह देखतीहोगी उस दासने झूठ कह उन्हें इस समय अप्रसन्न कर रक्खा है और निर्लज्जतासे उनके सन्मुख इस बातकी सौगन्द खाई कि तुम मरगई हो और तुम्हारा स्वर्गबासी पति जीता है इतना कह दाई आंसू पोंछती हुई ज़ुबैदाके महलको सिधारी उधर अबुल्हसन उठबैठा और वे दोनों किवाड़की दरार से मार्गकी ओर देखनेलगे कि देखिये अब क्या होताहै कि उसका समयपर उपाय करें अबतक तो अपना बुद्धि और धूर्ततासे अपने को बचातेरहे यद्यपि वह बुढ़िया महानिर्बल थी तथापि शीघ्र अपने पांवोंको उठातीहुई चली जो चन्द्रकला के जीने और अबुल्हसन के मरने का समाचार कह ज़ुबैदाको प्रसन्न और ख़लीफ़ाको निरुत्तर करे निदान मन्दिरमें हांफतीहुई ज़ुबैदा और ख़लीफ़ाके निकट गई जो कुछ कि उसने वहां देखाथा सब ज़ुबैदा से कहसुनाया ज़ुबैदा उसकी बातें सुन कहनेलगी अब यह सम्पूर्ण बृत्तान्त जाय ख़लीफ़ासे कह कि वह हमें निर्बुद्धी समझ हँसकर कहताहै कि सब धोखेमें हैं और उस का एक अनुचर सत्यबक्ताहै और मसरूर अपने मन में प्रसन्न था और बगलें बजाताथा कि अब दाई अपने नेत्रोंसे देखआईहै वही कहेगी जो मैंने बर्णन किया दाई ने मसरूरसे कहा तू बड़ा झूठाहै तूने क्यों स्वामीके सन्मुख झूठ कहा चन्द्रकला तो जीतीहै मैं अभी देखआई कि अबुल्हसन मरगया अब तू दण्ड योग्य है निदान दाईने बहुतसे ऐसेही ब्यंग्यबचन कहे मसरूरने उसके कठोरबचन सुन कहा हे पोपली, बुढ़िया! तू बड़ी झूठीहै कि मुझे झूठा बनाती

है तूने एक बातभी सत्य न कही मैं अपने नेत्रों से स्त्री को मरीहुई देख आयाहूं दाईने कहा वाह वाह तू बड़ा लबार है कि मुझे झूठी बनाताहै अभी मैं उसके घरसे आतीहूं अबुलहसनको मुवा देखकर उसकी स्त्रीको रोतीहुई उसके शिरहाने छोड़आई मसरूरने कहा हे महाधूर्ता! तू चाहती है कि मुझको फ़रेब देवै दाई ने कहा मक्कार झूठा तू है कि स्वामी के सम्मुख झूठकहताहै ज़ुबैदाने जो कुवाच्य उसकी दाईको कहेथे सुनकर ख़लीफ़ासे कहनेलगी कि इस अनुचर की ढिठाई और बात सुनतेहो कि क्या क्या मेरी दाईको उसने कहा तुम कुछ नहीं बोलते यहकह उसने खिसियानीहो रोदिया ख़लीफ़ा इस परस्परकी बातों और बिशेषकर जो ज़ुबैदा ने कहाथा सुनके तंग हुआ और कहनेलगा इस विषयमें सिवाय चुप रहने के और कुछ उपाय नहीं बिस्मितहो चुप होगया उधर ज़ुबैदा और उसकी लौंड़ियां जो वहां उपस्थितथीं सबकी सब बिस्मित होय चुप होरहीं थोड़ी देर पीछे ख़लीफ़ा ने ज़ुबैदासे कहा हम एक दूसरे के आगे झूठे हैं पहिले मैं फिर तुम और इसी भांति मसरूर और दाई हम से किसीका कोई निश्चय नहीं मानता अब उचित है कि हम सब अबुलहसनकेघरमें चलें कि सच झूठ खुलजावे अब इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं कि यह सन्देह दूर होवे ख़लीफ़ा आगे और ज़ुबैदा पीछेहोके चले सबके आगे मसरूर और पीछे सबके दाई और सम्पूर्ण दासियां हो लीं मार्गान्तर में परस्पर दाई और मसरूर की इस बिषयमें तकरार होनेलगी ज़ुबैदा ने दाईका पक्षकर मसरूरको कुवाच्य कहे मसरूरने कहा हे स्वामिनी! यदि तुम्हारी दाई इस बि-षयमें सच्चीहै तो मेरे साथ शर्तकरे दाईने कहा बहुत अच्छा इसके अ-नन्तर उन दोनोंने एक एक थान सुनहरी कमख़ाबका ख़लीफ़ा और ज़ुबैदा के सन्मुख शर्त बांधा वह महल जिसमें अबुलहसन रहताथा ज़ुबैदाके मन्दिरके सन्मुखथा सो अबुलहसनने देखा ख़लीफ़ा जिस के आगे मसरूर और ख़लीफाके पीछे ज़ुबैदा और उसके पीछे दाई बांदियों समेत चले आते हैं यह देख अपनी स्त्रीसे कहा देख सबके सब घरके पास आनपहुँचे वह देख घबड़ाई और कहनेलगी अब

हमारा भेद खुल जावेगा और हम दोनों लज्जित होंगे उसने कहा तुम मत घबड़ाओ तुम उसको भूलगईं कि मैंने जो अभी तुमसे कहाथा उनके द्वार पहुँचनेतक मैं उपाय करलूंगा पुनि वे दोनों अपना अपना कफ़न पहिन दालान के मध्यमें उताने हो लेटगये जब सब द्वारपर पहुँचे खलीफ़ा मसरूर और ज़ुबैदा दाई इत्यादि दासियोंके साथ भीतर गये तो क्या देखते हैं कि वे दोनों मरगये हैं यह दशा देख आश्चर्यमें हुये और किसी के बिचार में कुछ न आया कि यह क्या बातहै निदान ज़ुबैदाने खलीफ़ासे कहा हा ! क्या अनर्थहै कि ये दोनों मरगये पुनि दाई और मसरूरकी ओर देख कहनेलगी तुम्हारे बेरबेर की तकरार और आदमियों के भेजने से मेरी प्रिय लौंडीभी मरगई खलीफ़ाने कहा कि ऐसा नहीं जैसा तुम कहतीहो किन्तु प्रथम चन्द्रकला मरीहै अबुलहसन उसपर मोहित था उसने उसके शोकमें अपनेको मारडाला अब मैं जीता और तुम हारीं तुम्हारा चित्रोंवाला महल मेरा हुआ ज़ुबैदाने उत्तर दिया नहीं किन्तु मैंने यह प्रण जीता और तुम हारे तुम्हारा अमुक बाग मेरा हुआ क्योंकि अबुलहसन पहिले मुवाहै मेरी दाईने आके साक्षी दी है यह बात खलीफ़ा और ज़ुबैदा में फिर होनेलगी और इसी तरह दाई और मसरूर में भी हर एक कहता था कि मैं सच्चाहूं और मैंने यह शर्त जीती और दूसरा उसकी बातको काटता और अपने बाक्यको सूचित करता निदान खलीफ़ा कुछ सोच दोनों मृतकों के मध्यमें आबैठा और पुकारके कहने लगा मैं प्रतिज्ञा करताहूं कि एक हज़ार अशरफ़ी अभी उसे दूंगा जो मुझे ठीक बतादे कि पहिले कौन मरा यह सुनतेही उस मृतक से जिसपर पगड़ी रक्खीथी अर्थात् अबुलहसन से यह बात सुनी जो प्रथम मरा था सो मैंहूं मुझे हजार अशरफ़ी कृपा कीजिये एक क्षण पश्चात् क्या देखते हैं कि अबुलहसन अपने शरीर से थान उतार खलीफ़ा के चरणोंपर गिरपड़ा उसकी स्त्रीभी इसी भांति उठ ज़ुबैदा के पादकमलों में गिरी ज़ुबैदा डरगई और चिल्लाउठी कि मुर्दे जीके मुझे और खलीफ़ाको लिपट गये जब उसका भय निवृत्त हुआ तब वह चन्द्रकलासे कहनेलगी

हे अभागी! तेरेही कारण आजका सब दिन हमारा लड़ने झग-ड़ने में बीता अच्छा मैंने तेरा अपराध क्षमा किया मैं इसीको बहुत जानतीहूं कि तुझे कुशलपूर्वक देखा इसी प्रकार जब अबुलहसन का शब्द ख़लीफ़ाने सुना तो हँसनेलगा और उन दोनोंको कुशल-पूर्वक देख प्रसन्न हुआ पुनि अबुलहसन से कहने लगा तुझे क्या सूझी थी कि तूने मक्करकर मुझे और रानीको लड़वा दिया और महलके नौकरों को कष्टदिया और मुझे हँसाते हँसाते मारडाला उसने कहा हे खुदावन्द! मैं सम्पूर्ण वृत्तान्त सत्य सत्य वर्णन करता हूं मैं जब से आपके शरण में आया और आपने मेरा विवाह कर दिया तबसे मैं यथावस्थित अपना निर्वाह करता था परन्तु अनेक भांति के ख़र्चों से सम्पूर्ण द्रव्य जो आपने कृपा किया था व्यय हो गया और मैं क़र्ज़दार होगया और मेरे नौकरोंने मुझे बहुत दुःख दिया तो मैंने लाचारहो जो कुछ कि वस्तु और द्रव्य मेरे पास था हिसाबकर दे दिया जब कुछभी हमारे पास न रहा तो हमने यह उ-पाय और छल किया इस यत्न के सिवाय जो हमने निर्लज्जता से किया कुछ और न सूझा आशा रखतेहैं कि हमारी ढिठाई क्षमाहो ख़लीफ़ा और ज़ुबैदा अबुलहसनके सत्य कहने से अतिप्रसन्न भये और अबुलहसन और उसकी स्त्री को अपने साथ लेजाय हज़ार अशरफ़ी जिसकी प्रतिज्ञा ख़लीफ़ाने कीथी दीं सो वे दोनों अपने स्वामी और स्वामिनी की उदारतासे बड़े आनन्दसे रहे शहरज़ाद ने जब यह कहानी पूर्णकी तो ख़लीफ़ा से कहने लगी हे स्वामी! कलकी रात्रि को मैं इससे विचित्र कहानी सुनाऊंगी जिसे सुनकर आप प्रसन्न होंगे निदान दूसरी रात्रिको दुनियाज़ादने सूर्यके उदय के पहिले सुधि कराई और ख़लीफ़ाने कहा कि मैंभी उस कहानीके सुननेकी इच्छा रखताहूं सो वह कहने लगी॥

अलादीन और विचित्रदीपक का वृत्तान्त॥

किसी उज्ज्वल नगर में मुस्तफ़ानाम दरज़ी रहता था वह अ-पने कार्यमें बड़ी कठिनतासे अपने कुटुम्ब समेत अपना निर्वाह क-रता उसका पुत्र अलादीन अति आलसी और खिलाड़ीथा माता

पिताका वाक्य डुलखता प्रभातको अपने घरसे निकलजाता और सारे दिन बालकों के साथ जो उसके हमजोली और उसकी भांति अयोग्य निकम्मेथे खेलता जब वह बड़ाहुआ तब उसके पिताने बहुत सा श्रम किया कि कोई गुण उसे सिखावे किसी कार्यमें उसका मन न लगा निदान लाचार हो उसे अपनी दूकानपर जिसपर वह बैठा करता था लेजाया करता और अपना काम उसे सिखाता परन्तु न तो वह प्यार से न मारपीट से सीने में चित्त लगाता और सदा अपने पिता को अप्रसन्न रखता जब मुस्तफ़ा किसी कार्य के लिये दूकान से उठता तब वह दूकान से भागजाता और सन्ध्या पर्यन्त न आता बहुतसी मारखाता परन्तु कुछ न सँभला और कोई काम उसने न सीखा निपट गुणहीन रहा मुस्तफ़ा उसपर सदैव क्रोधकरता और महाचिन्ता करता कि यह क्योंकर मेरे पीछे अपना निर्बाह करेगा इसी चिन्ता से वह बीमार होगया और कई मास पीछे मृत्युबश भया अलादीन की माताने देखा कि इससे दूकान न सँभलसकैगी इसलिये उसने बन्द करदिया और असबाब बेंच रुई कातनेलगी वह बेचारी सूत बेंच बेंचके गुज़ारा करती यदि अपने पुत्रको कुछ काम करनेको कहती तो उसे धमकाता और भय देता और सर्बदा कठोर बाक्य कह उसे दुःख देता और बुरे मनुष्यों से संगति रखता जब वह चौदह बर्षका भया तौ भी वैसाही रहा और अपने निर्बाहकी चिन्तामात्र न की इसी दशा में एक दिन वह बाज़ार में खेलताथा कि एक बिदेशीने अलादीन को देखा बिदित हो वह महाधूर्त जादूगर था इस लिये उसे आफ़्रिक़ा का जादूगर कहते थे और वह आफ़्रिक़ाखण्ड का रहनेवाला था दो दिन हुये थे कि वह इस चीनदेशमें जगत् में घूमता हुआ पहुँचा था और रमल आदिक बिद्यामेंभी निपुणथा उसने अलादीनको देख पहिचाना कि यह बालक मेरे कामका है जिसको ढूंढ़ता ढूंढ़ता देश देश नगर नगर फिरा निदान जादूगरने दूसरे दरज़ियों और पड़ोसियों से मालूम कर एक दिन अलादीन को अकेला पाके कहा बेटा क्या तुम मुस्तफ़ादरज़ी के पुत्रहो उसने कहा हां मैं उसीका पुत्रहूं परन्तु बहु

नम्बर ४२ मुतअल्लिक़े सफ़ै ६१३ तृ॰ भा॰

मिश्र जादूगर का मय अलादीन के गढ्ढे के निकट
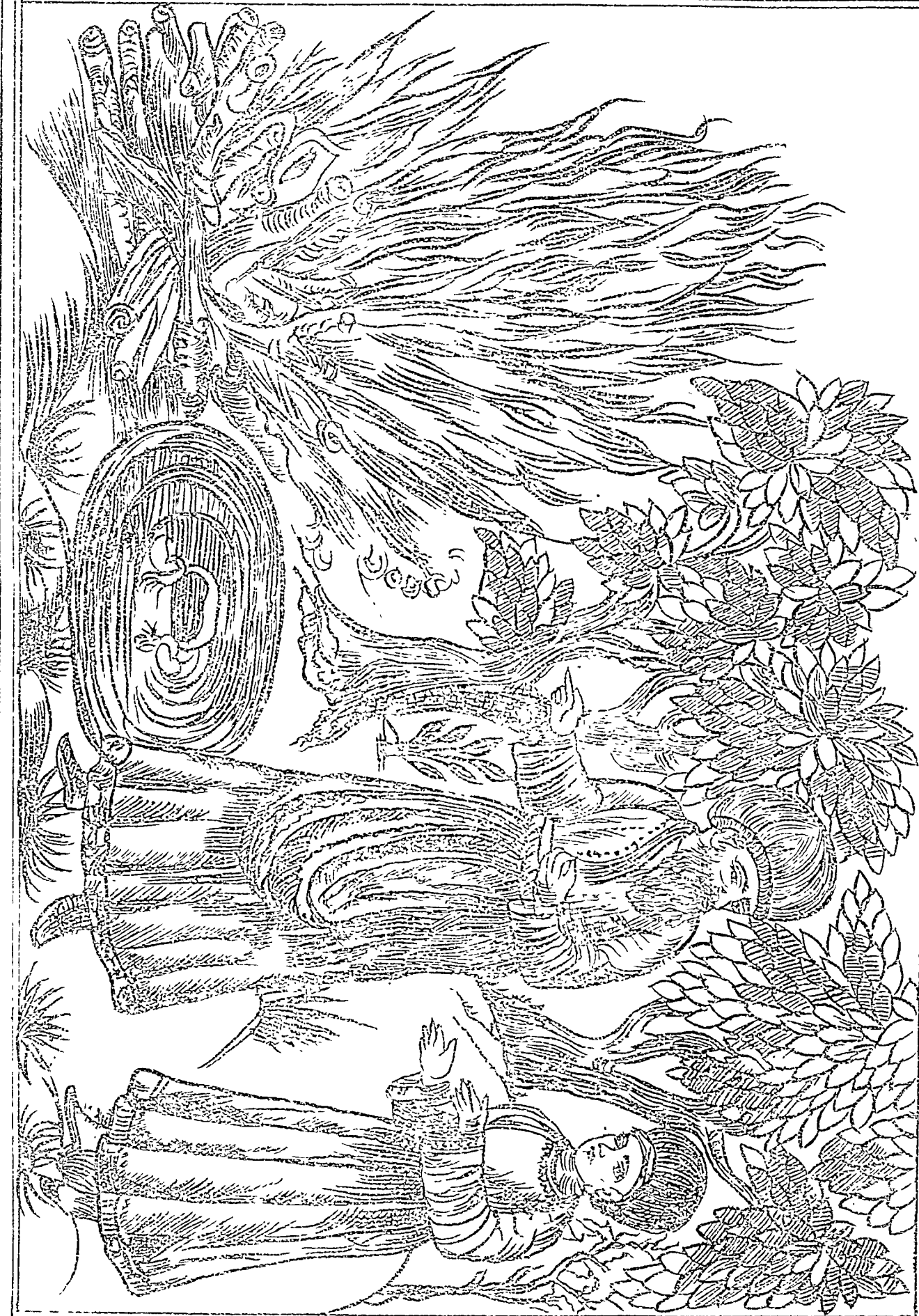
काल बीता कि मेरा पिता कालवश भया इतना सुनते ही उस मा-
यावी ने उसके कण्ठमें हाथडाल उसे अपने हृदयसे लगाय बहुकाल
पर्यन्त प्यार किया और ठंढी ठंढी श्वासेंभर रोनेलगा अलादीन ने
उसे रुदन करते देख पूछा तुम क्यों रोतेहो उस जादूगरने कहा
हे पुत्र! मैं इसका क्या कारण वर्णन करूं तुम्हारा पिता मेरा बड़ा
भ्राता था बहुत वर्षोंसे मैं यात्रा करतारहा अब इस नगर में केवल
उन्हीं के दर्शनको आया अपने मनमें महाप्रसन्नथा कि उससे बहुत
वर्षों के पीछे भेंट करूंगा और वहभी मुझसे मिल प्रसन्न होंगे अब
तुम्हारे मुख से उनके मरने का समाचार सुन ऐसा शोकयुक्त भया
जिसका वर्णन नहीं करसक्ता अब सब मनोरथ मेरा मिट्टी में मिल
गया और मेरा श्रम वृथा नष्ट होगया अब भगवान् तुझे जीता
रक्खे तेरा स्वरूप तेरे पिता से मिलताहै और सब चिह्न उसके तेरे
में पाताहूं निदान तुझे देख मैं सन्तुष्ट भया पुनि उसने अपनी जेब
से एक मुट्ठी भर पैसे निकाल उसे दिये और पूछनेलगा बेटा तुम्हारी
माता कहां रहतीहै तुम उसके निकट जाय पहिले मेरी ओरसे प्रणाम
करना और कहना यदि कल मुझे सावकाश मिलेगा तो मैं अवश्य
आऊंगा मैं वहां पहुँच जहां कि मेरा भाई रहता और बैठताथा और
जिस ठौरपर वह मृत्युवश हुआ है देख के अपने मनको धैर्य दूंगा
यह कह वह तो चलागया अलादीन दौड़के अपनी माताके निकट
आया और उससे पूछनेलगा हे माता! मेरे कोई चचाभी है उसने
कहा कोई नहीं किन्तु संसार में सिवाय मेरे और तेरे पिताके कोई
कुटुम्ब में से नहीं है उसने कहा अभी कोई मुझसे कहताथा कि मैं
तेरा चचाहूं जब उसने मेरे पिता के मरनेको सुना तो मुझे कण्ठसे
लगाके बहुत रोया और मुझे बहुत प्यारकर पैसे दिये और तुम्हें
प्रणाम कहाहै और यह कहाहै कियदि मुझे कल अवसर मिलेगा तो
मैं अवश्य आऊंगा वह इस घरके देखनेकी अतिलालसा रखता है
विशेष उस स्थानका जहां मेरा पिता रहता और उठता बैठता था
उसकी माताने कहा तेरे पिताका एक भाई था सो बहुत काल बीता
कि तेरे पिताके जीतेही वह कालवश हुआ मैंने उससे नहीं सुनाथा

कि कोई उसका औरभी भाई है दूसरे दिन फिर मायावीने अला-
दीनसे कि वह बाज़ारमें बालकों के साथ खेल रहाथा भेंट की और
उसको हृदयसे लगाय दो अशरफ़ियां दीं और कहनेलगा हे पुत्र!
तू अपनी माता को देके कहना कि आज संध्या को मैं तेरे घर
आऊंगा तुम अशरफ़ी भुनाके भोजन पका रखना जिसे हम तुम
मिलके खायेंगे अब मुझे अपने घरका पता बताओ कि किस गलीमें
है उसने ठीक ठीक बतादिया वह सुन चलागया और अलादीनने
वे अशरफ़ियां अपनी माताको दीं और अपने अनुकरण चचाका
वाक्यभी कह सुनाया यह सुन उसकी माता अच्छी वस्तु पकाने-
मित्त बाज़ारसे मोललाई और चीनी और तांबेके भाजन जो उसके
पास न थे सो पड़ोसियोंसे मांगलाई और दिनभर रसोई पकाती रही
जब अनुमान सायंकालके भोजन बन चुका तो उसने अलादीनसे
कहा तेरा चचा घरको ढूंढ़ता फिरता होगा तू उसे अपने साथ घरमें
लिवाला यद्यपि अलादीनने उसे ठीक अपने घरका पता बतायदिया
था तथापि वह उसके लिवानेको उठा जब द्वारके निकट पहुँचा तो सुना
कि कोई मनुष्य किवाड़ खुलवाताहै जब उसने दरवाज़ा खोला तो
वही आफ़्रिका का जादूगर दो शीशे मद्यके और फल हाथमें लिये
हुये आया उसने वह सब वस्तु अलादीनको दी और आप भवन
के भीतर चला आया और उसकी माताको नम्रहोय दण्डवत् की
और उससे पूछनेलगा मेरा भाई सदैव कहां बैठा करताथा उसने
बतायदिया तो प्रथम उसने अपना शिर वहां नवाया और कई बेर
उसे चूमा फिर अतिविलाप कर कहनेलगा मैं कितना अभागी हूं
यद्यपि मैंने इतना श्रम मार्गका उठाया तथापि मुझे तुम्हारा दर्शन
न प्राप्त भया इस नगरमें मेरे पहुँचनेके पहिले तुम्हें काल हुआ
उसकी माताने उस ठौरपर जहां उसका पति बैठा करताथा बैठने
को कहा उसने कहा मैं क्योंकर वहां बैठसक्ताहूं जहां मेरा पिता स-
मान प्रियभाई बैठाकरताथा अलादीनकी माताने उससे अधिक न
कहा और कहनेलगी जहां तुम्हारा मनमाने बैठो वह उचित स्थान
पर बैठगया और उससे वार्त्ता करनेलगा कि भाभी तुम घबड़ाना

नहीं कि तुमने मुझे पहिले नहीं देखा क्योंकि पूरे चालीस बर्ष बीते कि मैंने इस नगरको जहां उत्पन्न हुआथा छोंड़ा इस अवधिमें पहिले मैं हिन्दुस्तानमें गया फिर फ़ारस में फिर मिसर में इन सब बिशाल देशोंको देख फिर मैं आफ़्रिक़ाखण्डके बिचित्र नगरोंमें गया वहांके बासियों को बुद्धिमान् देख वहीं निवास अङ्गीकार किया परन्तु अपने नगरको नहीं भूला और न अपने परिवार और इष्टमित्रोंको बिशेष अपने भाई को नहीं भूला सदैव उनकी सुधि बनी रहतीथी और यही कांक्षाथी कि फिर जाके उनका दर्शन करूं इस हेतु इतनी बड़ी यात्राकर यहां आया परन्तु उसके काल होने का सुन मुझे बड़ी ब्यथा हुई जिसका बर्णन नहीं करसक्ता हा! खेदहै कि मेरा इतना परिश्रम सब बृथागया परन्तु किंचित् अलादीन के देखनेसे धैर्यहुआ कि मेरा भतीजा है इसके स्वरूप में मेरे भाई के चिह्न दिखाई देतेहैं इसी लिये मैंने एकहीबेर इसको देखने से पहिचान लिया उससे तुमने सुना होगा कि मुझे कितना दुःख भया परन्तु ईश्वरका धन्यबादहै कि उसके पुत्रको देख मुझे धैर्यहुआ मानो मुझे उनके दर्शन हुये जब उसने देखा कि बहुत शोककी बार्त्ता करने से अलादीनकी माताका मन भरआया और उसकी सुधिकर रोनेलगी तब उसने वह बातें छोंड़दीं औरही कुछ कहने लगा और अलादीनकी ओर मुखकर उसका नाम पूछा उसने बतायदिया फिर पूछा बेटा तुम कौनसा उद्योग करतेहो तुमने जीविका के लिये कौनसा गुण सीखाहै वह लज्जितहो कुछ उत्तर न देसका और अपना शिर निहुराय लिया उसकी माता ने कहा यह महा आलसी है इसके पिताने अपने जीते जी बहुत कोशिश की कि इसे अपना कामसिखावें परन्तु इसने कुछ न सीखा और अपना जन्म निपट खेलमें खोया दिनभर लड़कोंके साथ खेलाकरताहै जैसा तुमने देखा अब उचितहै कि तुम इसे कुछ समझावो और कहो सुनो कि सुमार्ग में लगे और खेल आदि परित्याग करे निस्सन्देह तुम ऐसे पोषकका कहना मानके सुमार्ग में लगे और अपने पेशे के सीखने में मन लगाये क्योंकि वह भलीभांति जानता है कि इसका पिता

कुछ धन अथवा बस्तु छोड़कर नहीं मरा जिससे हम अपना यथोचित निर्बाह करते और यहभी देखताहै कि मैं दिनभर चरखा कातती हूं तथापि बड़ी कठिनतासे भोजनमात्र प्राप्त होता है मैंने कई बेर खिसियानी होके चाहा कि इसे अपने घर से निकालदूं कि वह क्षुधा से पीड़ित हो कोई उद्योग करे परन्तु पुत्रकी पीड़ा से यह भी स्वीकार नहीं इतना कह वह स्त्री रुदन करने लगी मायावी ने कहा क्या बेटा यह बातें सत्यहैं तुम अब समर्थहो तुम्हें उचितहै कि तुम कुछ उद्योग करो यहां अनेक प्रकारके ब्यवहारहैं यदि एकपर तुम्हारा मन न लगे तो दूसरा स्वीकार करो यदि वह जिसे तुम्हारा पिता करताथा पसन्द नहीं और जो तुम उससे कोई श्रेष्ठ कामकी इच्छा करतेहो तो मुझ से मत छिपाओ स्पष्ट कहो कि मैं उसमें तुम्हारी सहायता करूं जब उसने देखा कि अलादीन कुछ उत्तर नहीं देता तो कहनेलगा हे पुत्र! यदि तुम चाहते हो कि अच्छा पेशा सीखें वा यह इच्छा है कि उच्चपदवी और प्रतिष्ठित होवें तो मैं तुम्हें बज़ाज़ी की दूकान करादूं जिसमें अनेक प्रकार के थान और भांति भांतिका कपड़ाहो और तुम उसमें बैठकर कमाओ अपने मनकी बात मुझसे कहो मैं तुमसे प्रतिज्ञा करताहूं जो ईश्वर चाहे तो तुम्हारा मनोरथ पूरा करूंगा अलादीन उसके यह बचन सुन अति प्रसन्न भया क्योंकि वह जानता था कि वह ब्यापारी जो ऐसी दूकान करते हैं और कपड़े का लेनदेन रखते हैं निश्चिन्ताई से अपना निर्बाह करतेहैं अच्छे कपड़े पहिन और भांति भांतिके पाक भोजन करते हैं सो सैन से उसे कहा यदि तुमने यह काम पसन्द किया तो कल मैं तुमको सुन्दर बस्त्र पहिराय एक ब्यापारीके निकट भेंटके लिये लिवाले जाऊंगा और एक दूकान चौकमें तुम्हें किराये पर लेदूंगा अलादीनकी माता कि उसे अबतक बास्तव में अपना देवर न जानतीथी उसको अपने पुत्रपर यह दयालुता देख उसका गुणानुबाद करनेलगी और उसे धनवान् समझ अलादीनका हाथ उसके हाथ में पकड़ाय कहने लगी जो इसके वास्ते अच्छा हो सो करो इतना कह आप भोजन निकाला और उसके आगे परसदिया

और तीनों ने तृप्त होकर भोजन किया इसके अनन्तर मायावी कहने लगा रात बहुत बीती मैं बिदा होता हूं यह कह वह चलागया दूसरे दिन वह फिरआया और अलादीन को उस ब्यापारीकी दूकान में जिसमें अनेक प्रकार के कपड़े के जोड़े सियेहुये रहते थे लेगया और अलादीन से कहा तू अपने चित्त के अनुसार जोड़ा पसन्दकर कि मैं तुझे लेदूं अलादीन अपने अनुकरण चचा की ऐसी उदारता देख प्रसन्न भया और जोड़ा पसन्द किया उसने वह जोड़ा सामान सहित मोल लेके उसे दिया वह उसे पहिन शिर से पांवतक अपने को देखअत्यन्त प्रसन्न हुआ फिर वह जादूगर उसे चौक में लेगया जहां बहुत से बड़े बड़े ब्यापारियों की दूकानें थीं और उससे कहनेलगा यदि तुम चाहते हो तुमभी इन ब्यापारियों के सदृश हो तो बहुधा यहां आया करो और इनकी रीति और व्यवहार देखा करो फिर उसे बड़ी प्रसिद्ध सरायमें जहां बिदेशी उतरा करतेथे लेगया और वहांसे बादशाही मकानों में लेगया और सम्पूर्ण नगर में फिराय उस सरायमें जहां वह आप रहताथा गया वहां बहुत ब्यापारियोंसे जिनसे वह जान पहिचान रखताथा अपने भतीजे को मिलाया और सबोंने मिलके भोजन किया जब सायंकाल हुआ तो अलादीन ने अपने चचासे बिदा मांगी उसनेउसे अकेला जाने न दिया और आप साथ होके उसे घरमें पहुँचा आया उसकी माता ऐसे उत्तम बस्त्र उसे पहिने देख अतिप्रसन्न हुई और मायावीको हज़ारों आशीर्बाद देनेलगी और कहनेलगी मैं तुम्हारी उदारताका गुणानुबाद नहीं करसक्ती मेरा पुत्र इस कृपाके योग्य न था वह तुम्हारी सदा सेवा में रहेगा जिस मार्ग में तुम लगाओगे चलेगा मायावीने कहा अलादीन बहुतअच्छा लड़काहै जो मैं कहूंगा वही करेगा अफ़सोस है कि कल शुक्रबारहै सब दूकानें बन्द होंगी इसलिये कोई दूकान किराये पर न मिलसकेगी और कोई वस्तु मोल नहीं लेसक्ता दूकानदार सब सैर तमाशा देखने जावेंगे जो ईश्वर चाहे तो यह सब कार्य परसों करूंगा कल मैं इसे बागोंकी सैरको लेजाऊंगा उसने उन बागों और मार्गोंको अबतक नहीं देखा अभी

तक बालकोंके साथ वृथा खेला किया है अब इसे उचितहै कि बुद्धि-
मानोंकी संगतिमें बैठाकरे यह कहकर बिदाहुआ अलादीनने जब
बागोंमें जानेको सुना तो अत्यन्त हर्षित हुआ क्योंकि उस बेचारे
ने केवल नगरके महलोंके द्वारही देखेथे और कदापि नगरके बाहर
और ग्रामोंमें न गयाथा निदान दूसरे दिन प्रभातको उठ अपने
वस्त्र पहिने और अपने चचा की बाट देखताथा जब बिलम्ब भया
और वह न आया तो द्वार खोल उसकी मार्ग देखनेलगा इतने में
क्या देखता है कि वह चला आताहै वह अपनी मातासे बिदा हो
आया और द्वार मूंद मायावी के निकट गया मायावीने उसे बड़ी
प्रीतिसे पुकारकर कहा आज मैं क्या २ उत्तम मकान और हरे २
वृक्ष और दिव्य बाग़ दिखाताहूं जो तूने कभी न देखेहोंगे पुनि वह
उसे बहुत दूर लेगया जब अलादीन नये २ सुन्दर २ मकान और
बाग़ देखता तो प्रसन्न हो कहता चचा क्या भले २ बिचित्र बाग़हैं
वे जाते २ नगरके बाहर निकलगये और थकितभये वह महाधूर्त
कि अपने कार्य के लिये आगेजानेकी इच्छा रखताथा इसलिये एक
निर्मल जलके कुण्ड के तटपर बैठगया और छलयुक्त यह बचन
अलादीनसे कहे हे मेरे प्यारे पुत्र! तुम थकितभये और मैंभी थकगया
हूं आओ तनक यहां बिश्राम करें फिर आगे चलेंगे यह कह उसने
अपनी कमरसे एक रूमाल जिसमें भांति भांतिके स्वादिष्ठ और
मिष्टफल और कुलचे बँधेथे निकाला उनमेंसे अर्धभाग उसे दिया
और आधा आप लिया और कहनेलगा फल जितने तुम चाहो
अच्छे अच्छे चुनके खाओ भोजनान्तरमें उसे उपदेश करतारहा कि
हे पुत्र! तुम बालकों से मत खेलाकरो चतुर मनुष्योंकी संगतिमें बैठ
उनके सुबाक्योंपर ध्यान रक्खाकरो जिससे तुम्हें लाभ प्राप्तहो और
तुम समझदार और बुद्धिमान् होजाओगे जब खाचुके तो वह दुष्ट
दम दिलासा देताहुआ अलादीनको बहुत दूर लेगया और नगर
बहुत छूटगया पहाड़ दिखनेलगे अलादीन कि कदापि इतनी दूर
न चलाथा थकित भया और पूछनेलगा तुम कितनी दूर जाओगे
हम्म बागों से बहुत दूर निकल आये उसने कहा भतीजे तू मत

घबड़ा मन दृढ़रख मैं तुझे एक बाग़ दिखाऊंगा जिसके आगे यह सब तुच्छ हैं वह यहांसे बहुत दूर नहीं जब तुम उसे देखोगे आपही दौड़के उसमें जाओगे निदान वह उसे फुसलाये हुये हाथ पकड़ खींचेलिये जाता था और उसके जी बहलानेको मनोहर कहानीभी कहताजाता था अन्तको वह एक घोर बनमें जो दो पहाड़ोंके मध्य में था पहुँचे यह मुख्य वही स्थानहै जहां वह मायावी अलादीन के लेजानेकी इच्छा रखताथा और जिस हेतु इतना परिश्रम कर आफ़्रिक़ाखण्ड से वह आयाथा निदान वहां पहुँच उसने उससे कहा इसी ठौरपर वह बाग़है जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा तू उसे देख प्रसन्न होगा मैं आग लेने के लिये जाताहूं तू सूखा काष्ठ चुनरख मैं आग जलाऊंगा अलादीनने वही किया और उसने आप आग जलाई और उस अग्निसे अपनी बत्ती जलाई और थोड़ासा अतर और सुगन्धित बस्तु उस बत्तीपर डाली इतनेमें एक बड़ा धुंधाकार धुवां उसमेंसे उठा उसने कुछ मन्त्र पढ़ा इतने में धरती कांपी और जिस स्थानपर वह खड़े थे एक चौकोन शिला अनुमान डेढ़ पगके प्रकट हुई जिसके बीच में लोहे का कड़ा उठानेको लगाहुआथा अलादीन उसे देख डरकर वहांसे भागा जादूगरने दौड़के उसे पकड़ा और क्रोधितहो बड़े बेगसे एक तमाचा उसके मुखमें मारा जिससे अलादीन बैठगया और उसके दांतों से रुधिरकी धारा बही और कहने लगा चचा मैंने तुम्हारा ऐसा कौनसा अपराध किया कि तुमने मुझे इस भांति मारा उसने कहा मैं तुम्हारा चचा हूं तुम मुझे पितासमान समझो मेरे मार और क्रोध करनेपर बिलग मत मानो पुनि प्यार और नम्रता से कहने लगा हे पुत्र ! मैं तुम से और कुछ नहीं चाहता सिवाय इसके जो मैं तुमसे कहूं उसे तुम कियाकरो मैं तुम्हें बड़ा आदमी बनादूंगा निदान इस भांति के बचन कह उसका भय दूर किया जब देखा कि अलादीन अब राहपर आया तो कहने लगा तुमने देखा मेरे पढ़नेसे पृथ्वी हिली और यह शिला निकल आई अब तू निश्चय मान इस शिलाके नीचे एक गोप्य बस्तु मुख्य तेरेही लिये धरी है वह एक दिन तुझे महाधनवान् करदेगी और

संसारमें सिवाय तेरे कोई दूसरा नहीं कि इसको हाथ लगासके अब तू इस शिलाको उठा और उसके भीतर जा मैं तो इसके भीतर नहीं जासक्ता सिवाय तेरे और किसीका काम नहीं कि इस द्रव्यको जाके लेवे अब जो मैं कहूं वही कीजियो उसके भीतरजाने और लौटने में कुछ देर न लगेगी इस कार्य को सिवाय तेरे और मेरे तीसरा कोई नहीं करसक्ता अलादीन ने लाचार हो अङ्गीकार किया और कहनेलगा चचा मैं तैयारहूं जो कुछ तुम आज्ञा दोगे मैं तुरन्त पालन करूंगा मायावी यह बचन सुन उसपर प्रसन्न हुआ और उसे अपने कण्ठसे लगाय कहनेलगा यही बात चाहिये मेरे निकट आ जब वह उसके पास गया मायावीने उसे एक छल्लादेकर कहा कि इसे अपनी अंगुलीमें पहिन इस शिला को उठा उसने कहा हे चचा! मैं अकेला इस भारी शिलाको न उठासकूंगा तुमभी हाथ लगाओ और बल करो जादूगर कहनेलगा मेरी सहायताकी तुझे आवश्यकता नहीं जो होती तो तेरे कहने बिना मैं करता तुम अपने बापका नाम लेके तिनुके की भांति सरकाओ उसने लोहेका छल्ला अपनी अंगुली में पहिन उस शिला को अतिसुगमता से सरकाया उसके नीचे तीन चार पगका गहरा गढ़ा उसे दृष्टिपड़ा जिसके भीतर एक ओरको छोटासा दरवाज़ा लगा हुआ था और उस किवाड़के बाईं ओर सीढ़ी लगीथी जिससे मनुष्य नीचे उतर जासक्ताथा मायावी ने उससे कहा हे मेरे प्रिय पुत्र! तुम मेरे इन बाक्योंको भलीभांति सुधि रखना चैतन्य रहो उन्हें बिस्मरण न करना अब तू इस गढ़े में कूदकर एक द्वारको पावेगा उसके साथ एक सीढ़ी लगीहै तू वहां एक अतिबिचित्र सुन्दर मकान पावेगा जिसमें तीन बराबर दालान हैं उनके मध्य में ताम्रके अतिस्वच्छ बिशाल पात्र सोने रूपेके भरे हुये रक्खेहैं परन्तु तू उन्हें न छूना जब तुम पहिले दालानमें जाओ तो तुम अपना बस्त्र कमर से भली भांति कसके बांधना फिर तुम दूसरे दालानमें चले जाना और इसी बिधि तीसरेमें और उस मकान की दीवारको कदाचित् स्पर्श न करना यदि तुम्हारा बस्त्र उस से छूजावेगा तो तत्काल भस्म होजाओगे इस लिये तुम्हें कहे रखता

हूं कि वस्त्र अपने दृढ़ करके कमर से बांधलेना फिर तीसरे दालान में एक द्वार तुम्हें और मिलेगा जब उसमें से होके भीतर जाओगे तो एक बाग़ देखोगे जिसमें अतिसुन्दर अनेक प्रकार के फलित वृक्ष देखोगे तुम सूधे आगे को उस मार्ग से जो तुम्हें मिलेगा चले जाना निदान एक मञ्चपर जिसमें पचास हाथकी सीढ़ी है मिलेगी उसके ऊपर एक छत है जब तुम उसपर चढ़जाओगे तो वहां एक ताक़है जिसमें एक दीपक जलता हुआ रक्खा है तुम उसे वहां से उठाकर बुझाय देना तेल और वत्ती उसकी फेंक उसे अपने दामन में रखलेना और मेरे समीप चलेआना तुम्हारा वस्त्र चिकना नहीं होगा उसमें तेल नहीं जब तुम उसे ताक़से उठालोगे तो वह तुरन्त सूखजावेगा यदि तुम्हारा मन चाहे तो उन वृक्षों के फल जितने लेसको लेलीजियो निदान जब उसने सब यह क्रिया उसे भलीभांति सिखाई और विधि समझाई तो उस मायावीने उस लोहेके छल्लेको जो लेलिया था फिर उसे पहिनाय दिया और कहने लगा इसके कारण तुम प्रति दुःखसे कि तुमपर पड़े बचेरहोगे यह सब बातें जो तुम से कहीं भलीभांति स्मरण रखियो भूलियो नहीं अब हे मेरे प्रियपुत्र ! तुम इस गढ़े में कूदो जिससे हम तुम दोनों धनपात्र होजावें और जन्मभर राज्य भोगें अलादीन अतिसाहसकर उस गढ़े में कूदपड़ा और सीढ़ी से उतर आगे को जिसमें तीन दालान थे गया और डरतारहा ऐसा न हो कि उसका वस्त्र उस गृहकी दीवारों से लगजावे जब बाग़के भीतर पहुँचा तो सीढ़ीके द्वारा छतपर चढ़ गया और दीपक जो प्रज्वलित था उठाय अपने दामनमें रखलिया फिर उस छतसे उतर बाग़में आया और मार्गमें जितने उसे अच्छे फल मिले चुनलिये वहांके वृक्ष अति विचित्र अनेक रंगों फलों से प्रफुल्लितथे कई तो फल श्वेत और प्रकाशयुक्त बिल्लौर के सदृश थे और कोई कोई हरे और ऊदे और पीले निदान अतिअद्भुत उनका रंग कि जो श्वेतथे वह हीरे और लाल थे वह जो हरे सो ज़मुर्रद और जो अन्य रंगथे बहुमोल्य रत्न किन्तु रत्नोंसे भी अधिक सुन्दर थे अलादीन तो उन रत्नोंके गुण न जानता और न उनका मोल

जानता सो उन फलों को अंगूर और अंजीर के सदृश जैसे उसने नगरमें बिकतेहुये देखेथे समझ उनके लेनेमें अधिक लोभ न किया उतनेही रख लिये जितने उसकी जेब और आस्तीनमें समाये और जेबोंको अपनी कमरसे बांधलिया और आस्तीनें मुखपर से बांधदीं कि कोई फल उनमें से न गिरपड़े और कुछ अपने गरेबान और कमर में जहां जितनी जगहथी रखलिये फिर तीनों दालानों से तुरन्त नांघ उसी गढ़ेमें आय पहुँचा क्योंकि जानताथा कि चचा मेरे आगमन की बाट देखताहोगा सो वहां पहुँच हांकदी कि चचा मैं आयाहूं हाथ पकड़ मुझे ऊपर खींचलो उसने कहा बहुत अच्छा मैं तुझे निकालताहूं परन्तु प्रथम तू मुझे दीपक दे अलादीन ने कहा इस समय मैं दीपक नहीं निकालसक्ता बाहर आकर निकाल दूंगा वास्तवमें दीपक निकालदेनेमें कठिनताथी क्योंकि पहिले उस ने दीपकको अपनी छाती में रक्खाथा फिर बहुतसे फल वहीं रखके उसके चहुँओरसे वस्त्र बांधाथा कि किसी ओर से कुछ न गिरे और सीढ़ियों के उतरने और फलों के बोझसे थककर हँफताथा उस समय यही चाहता था कि तुरन्त बाहर निकलूं और शीतल वायुके लगनेसे ठंढाहों और मायावी यह चाहताथा कि पहिले दीपक उस से लेलूं फिर उसे गढ़े से निकालूं निदान इसी तकरार में जादूगर ऐसा क्रोधितभया कि थोड़ीसी सुगन्धितबस्तु लेके उसी जलती आग में डालदी और निर्दयतासे मन्त्र पढ़ सैनकी कि वह शिला उठ उसी गढ़े पर ढकगई और मट्टी उसी स्थानपर बराबर जैसी कि पहिले थी होगई अब सुना चाहिये जादूगर वास्तवमें मुस्तफ़ा दरज़ीका भाई न था और न वह अलादीनका चचा वह आफ़्रिक़ाखण्ड का निवासी और वही उसकी जन्मभूमि थी उस नगर में जादूकी बिद्या बहुतथी वह चालीस बर्ष जादू पढ़तारहा इसके बिशेष ज्योतिषादिक बिद्या में अद्वितीय और बहुतसी पुस्तकें रमलकी उसने पढ़ीं अन्त को उसे बिदितहुआ कि जगत् में किसी स्थानपर एक बिचित्र दीपक है जिस मनुष्यके हाथ वह दीपक लगे कई बीर उसके अधीन रहें और ज्योतिर्बिद्या से उसे यह मालूम हुआ कि वह दीपक चीन

देशमें अमुक स्थानपरहै इस बातपर निश्चयकर आफ़्रिक़ासे चीन में उसे लेने आया और यह भी वह जानता था कि उस दीपक को वह आप नहीं लेसक्ता इसलिये उसे दूसरे मनुष्यकी आवश्यकता हुई कि उसे निकाल देवे तो उसने अलादीन को भोला सूधा देख भतीजा बनाया और जाना कि इसीके हाथ से मेरा मनोरथ सिद्ध होगा और उसकी यह इच्छाथी जब वह दीपक उसके हाथलगे तो इस भेदके न खुलने के लिये उसी दिन अलादीन को मन्त्रसे मार डाले निदान जब उसका अर्थ सिद्ध न भया पकड़ेजाने के भय से उसी दिन आफ़्रिक़ा को सिधारा ऐसा न हो कि नगरवासियों ने अलादीन को जाते देखाहो अब उसे अकेला देख उससे पूछे इसी चिन्तामें उस छल्लेका लेनाभी भूलगया परन्तु अलादीन ईश्वरकी इच्छासे इसी छल्ले के द्वारा बचा परन्तु वह मायावी दुष्ट उस दीपक के पाने से निराश भया इस बिषय में यही निराश न हुआ किन्तु बहुतसे ऐसे कुकर्मी निराश होजाते हैं अलादीन तो इससे अपकारकी आशा न रखताथा आश्चर्यमें भया और जब उसने जीतेजी अपने को क़बरमें देखा तो हज़ारोंबेर अपने चचासे चिल्लाकर कहनेलगा कि अपना दीपक मुझसे लो और मुझे यहांसे निकालो परन्तु यह सब कहना इसका बृथाथा इसका उत्तर उसने कुछ न सुना और अपनेको अँधियारे में देख घबड़ाकर रुदन करनेलगा और सीढ़ी से नीचे उतरनेलगा परन्तु सब चरित्र मायाके जो बाग़ इत्यादिथे सब गुप्त होगये जब केवल अँधियाराही देखा तो कई बेर दाहिनी ओरसे बाईं ओर गया और इधर से उधर पर किसी तरफ़से राह न पाई और न कुछ उजियाला देखा इससे अतिदुःखित होकर रुदन करने लगा और निपट निराश होय उस कालकोठरी के एक अच्छे ठौरपर बैठगया और उसे निश्चय हुआ कि इस स्थान से कभी न निकलूंगा इसी स्थानपर मुझे मृत्यु लेआईहै दो दिनतक वह उसी गढ़ेमें रहा तीसरे दिन मरना अपना अवश्य जान दोनों हाथ उसके परस्पर मिले तो वह छल्लाभी पत्थरसे रगड़गया ज्योंही रगड़ा त्योंही महाबिकराल स्वरूप बीर धरती से निकल प्रकटभया ऊंचा

इतना था कि शिर उसका आकाश से जालगा उसने बड़े शब्द से कहा तू मुझसे क्या इच्छा रखताहै मैं तेरा आज्ञापालक दासवतहूं और मैं उसका अधीनहूं जिसके हाथमें यह छल्लाहै मैं और दूसरा बीरभी इसी प्रकार उस मनुष्य से बाहर नहीं जो यह छल्ला पहिने है उसने कि ऐसा बिकराल स्वरूप कभी न देखाथा उस बीरके प्रकट होनेसे भयवान् हुआ और कुछ बात उससे न करसका निदान जब कुछ सावधान हुआ तो उससे कहनेलगा यदि तुझे सामर्थ्य है तो तू मुझे इस स्थान से बाहर निकाल इतना कहतेही उस बीरने उसे बाहर निकाल खड़ाकिया जब वह अपने को बाहर देख अचम्भित भया सोचा कि क्योंकर सुगमता से बाहर निकल आया कि उस गढ़ेका कुछ चिह्नभी दृष्टि नहीं पड़ा फिर नगरकी ओर देखा कि उसके चहुँओर बाग़हैं और जिस मार्ग से आया था उसे पहिचाना और उसीको पकड़ ईश्वर का धन्यबाद किया फिर उजियाला देखा निदान अशक्तता के कारण बड़ी कठिनता से घर पहुँचा जब उसने अपना पांव अपने घरके द्वारके भीतर रक्खा तो माता को देख हर्षित हुआ परन्तु तीन दिन कुछ खाया पिया न था अतिनिर्बलतासे मूर्च्छित होगया उसकी माताने कि तीन दिनतक उसे नहीं देखाथा और यह समझतीथी कि वह मरगया व कहीं गुम होगया रोतीथी उसकी यह दशा देख तन मनसे उसे सचेत करनेलगी जब उसने सुधि सम्हाली पहिले उसने अपनी माता से यह बात कही कि कुछ भोजन ला तीन दिनसे मैंने कुछ नहीं खाया भोजन पहिले से पकाहुआ था उसकी माता ने आगे रखके कहा हे पुत्र! भोजन में शीघ्रता न करना बहुत खानेसे मरनेका भयहै थोड़ा खायके चुप होके सोरह फिर मुझसे बात कीजियो अलादीन ने वही किया और थोड़ाही खाना खाया और थोड़ाही जल पिया और कहनेलगा उस दुष्ट ने जो मेरे साथ अपकार किया उसका बर्णन अतिबिस्तृत है वह अपने बिचारसे मुझे यमको सौंपगया यह वही मनुष्यहै जिसे तुम मेरा चचा जानतीथीं और मैंभी निपट उसके छलमें आगयाथा परन्तु तुम निश्चय मानो वह बड़ा निर्दयी था यह सब प्रीति जो

उसने मेरे साथ की सब धूर्तताथी केवल उसकी यह कांक्षाथी कि अपने किसी प्रयोजन के लिये मुझे बधकरे पुनि अलादीन ने किञ्चित् अपने में सामर्थ्य पा अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी मातासे बिस्तारपूर्बक कह सुनाया और वे फल उसे दिये उसकी माता कि उनके गुण और मोलको न जानती थी सो उन्हें उसने लेके धरती पर रखदिये परन्तु अँधियारे में उनका प्रकाश सूर्यवत् देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि यह बस्तु देखने में अच्छी है जब अलादीनने सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया तो उसने उस दुष्ट मायावी को बहुतसे दुर्बाच्य कहे और ईश्वरका धन्यबाद किया कि मुझ रांड़के बालकको उससे छुड़ाया जो वह तीन दिनतक न सोया था इसलिये वहां से उठ दूसरी जगहपर सोरही अलादीन भी उसी रात्रिको भलीभांति सोरहा प्रभातको अपने को क्षुधासे महाबिकल पाकर अपनी मातासे कहा मैं इस समय बहुत भूंखाहूं कुछ मुझे भोजन दो उसकी माता कि अतिनिर्धन थी कहने लगी बेटा इस समय पर तो मेरे पास रोटीका टुकड़ाभी नहीं जो तुझे खानेको दूं यदि तनक सन्तोष रक्खो तो थोड़ा सा सूत जिसे मैंने काता है बाज़ार में लेजाय बेंचूं और कुछ भोजन मोललाऊं उसने कहा सूत को तुम और दिन बेंचना आज तुम उस दीपकको जिसे मैं लाया हूं लेजाके बेंचो और खाने की बस्तु मोल लाओ कि रात दिन कटे वह उठकर वही दीपक लाई और उसे देख कहनेलगी बेटा यह दीपक मलिन होरहाहै यदि इसे साफ़कर बेंचूंगी तो कुछ अधिक मिलेगा इसके अनन्तर वह थोड़ा सा जल और रेत लेकर उसे ज़ोरसे मलने लगी उसके मलतेही एक बिकराल उग्र बीर बड़ेबेग से धरतीको फाड़निकला और बड़े नादसे मानो बादल गर्जता है कहनेलगा तू क्या इच्छा रखतीहै मैं उस कार्यके करनेमें दासवत् उन मनुष्योंकाहूं जिनके हाथमें यह दीपक है और मुझसे आदिले अन्य बीरभी इस दीपक के अधीनहैं वह तो उसका स्वरूप देखतेही मूर्च्छाखाय गिरी अलादीन कि गढ़ेमें वह स्वरूपदेख चुका था इतना न डरा कि अचेत होजाता किन्तु उसने झपट के एक हाथ से माताको सँभाला और एक हाथसे दीपक पकड़ बीरके

पास जाकर अपनी माता के बदले उत्तर दिया मैं भूंखाहूं कुछ भो-
जन ला वह यह बचन सुनतेही गुप्त होगया एक क्षण पीछे बड़ा
भारी सुनहला पात्र अपने शिरपर रक्खे प्रकट हुआ जिसमें अति
स्वादिष्ठ पाकों की बारह रुपहली रिकाबियां रक्खी हुई और दो
शीशे स्वच्छ मद्य के और दो रूपे के गिलास दोनों हाथों में लिये
आया और सब पात्रोंको दालान में रख गुप्त होगया अलादीनने
अपनी माताको जो मूर्च्छितथी जल छिड़का जिससे वह चैतन्यहुई
और उससे कहने लगा अब मत डर उठबैठ और आकर भोजन
कर बिलम्ब मत कर नहीं तो भोजन ठंढा होजावेगा वह यह उत्तम
उत्तम नानाव्यञ्जन देख आश्चर्य में हुई और मनमें सोचनें लगी
यह कहांसे आया कदाचित् यहां के बादशाह ने हमारी आपदाका
हाल सुनकर भेजा है अलादीन ने कहा अब आके भोजन करो मैं
इसका समाचार तुमसे बर्णन करूंगा फिर वह रुचि से खानेलगे
भोजनान्तरमें उसकी माता वह सुनहले रुपहले पात्र देख बिस्मित
हो पूछनेलगी यह भाजन किस बस्तुके बने हैं मैंने ऐसे सुन्दर भा-
जन चमकदार कदाचित् नहीं देखे जब वह तृप्त भये तो शेष भो-
जन रखछोड़ा और तीन दिनतक उसे खायाकिये और अलादीनने
सम्पूर्ण बृत्तान्त बीरके भोजन देजाने का उससे कह सुनाया उसने
सुन अचम्भा माना और कहनेलगी मुझे निश्चय नहीं क्योंकि मैंने
कदापि बीर नहीं देखा और न कभी अपनी जानपहिचानवाले से
सुना क्या इसी दीपक के कारण जिसको तुम अपने साथ लाये हो
वह दुष्ट प्रकट भयाथा इसको मेरी दृष्टि से दूर करो तुम इसे किसी
दूसरी जगह छिपाय रक्खो कि मेरा हाथ उसपर कदापि न लगे
किन्तु उत्तम है कि तुम इसे फेंकदो वा किसीके हाथ इसे बेंचडालो
कि इसके स्पर्श से ऐसा बिकरालरूप न देखूं और इस छल्लेको भी
अंगुली से निकाल फेंकदो हमको बीरोंका आवाहन कुछ अवश्य
नहीं है उसने कहा इस दीपक को क्यों बेंचें इससे तो हमको इस
आपदा में बहुत बहुत लाभ हुये और आगेको इससे अधिक लाभ
की आशा है तुम भली भांति सोचो कि इसीके वास्ते मेरे अनुकरण

चचाने इतनी दूरका सफ़र उठाया यह बहुत अच्छी वस्तुहै उसका सब श्रम इसीके वास्ते था कि उसे यह बिचित्र दीपक मिले और वह भलीभांति इस दीपक के गुणको जानता था और उसने इस दीपक की अपेक्षा रत्नादिकों को तुच्छ समझा परन्तु उस ईश्वर ने मेरी दीनतापर दयालु होकर उसका भाग्य और धन मुझे कृपा किया मुझे इस दीपकके लाभ उठाने दे इस बातको गुप्त रखना कि कोई न जाने और पड़ोसी डाह और बिरोध न करें परन्तु मैं इसे तुमसे छिपाके ऐसे स्थानपर रक्खूंगा कि आवश्यकता पर फिर पाऊं परन्तु इस छल्ले को अलग नहीं करसक्ता क्योंकि मैं इसी से जीता बचा नहीं तो मैं कबका उसी गढ़े में मरगया होता अब तू मुझे आज्ञा दे तो इसे अंगुली में ही पहिनेरहूं कौन जानता है कि किस समय पर अकस्माती आपदा पड़े तो मैं इसके द्वारा बचसक्ताहूं उसकी माता यह बातें सुन चुपहोरही फिर कहने लगी जो उचित जानो सो करो परन्तु मुझे बीरों से कुछ प्रयोजन नहीं दो दिनतक वही भोजन उन्होंने भलीभांति तृप्तहोय खाया जब तीसरे दिन कुछ न रहा तो प्रातःकाल अलादीनको क्षुधा लगी वह एक रुपहला बीरका लाया हुआ पात्र अपने बस्त्र में ढांप बाज़ारकी ओर बेंचने गया संयोगबश एक यहूदी से जो सोने चांदी के पात्रोंका व्यवहार किया करता था भेंट भई अलादीन ने उसे एकान्त में लेजाय वह भाजन दिखाया और कहने लगा तुम इसे मोल लोगे वह यहूदी जोकि अतिबुद्धिमान् और धूर्त था इसे लेके परखा उसकी चांदी बहुत उत्तम पाकर कहनेलगा इसका मोल क्या चाहतेहो अलादीन ने जो खोटी खरी चांदीका हाल न जानता था और कभी चांदी के लेनदेन का काम न पड़ा था कहने लगा जो कुछ तुम दोगे सो लेलूंगा क्योंकि तुम इसका मोल जानते हो मुझे तुमपर बिश्वास है उसने एक अशरफ़ी निकाल उसे दी यद्यपि वह रिकाबी अशरफ़ी से सत्तर हिस्से मोल में अधिक थी परन्तु अलादीन ने उसे प्रसन्न होके लेलिया और वह धूर्त इतना लाभ उठाकर भी पछताया कि क्यों मैंने उसे कम न दिया यह बिचार अलादीनके पीछे दौड़ा कि

कुछ अशरफ़ीमेंसे फेरलें परन्तु अलादीन दूर निकल गयाथा मार्ग में अलादीन ने अशरफ़ी तुड़ाकर भोजन मोललिया और घर में पहुँच जो अशरफ़ीमें शेष बचा था अपनी माता को दिया कि बाज़ार में जाके कई दिनके लिये अन्न मोल लावे इसी भांति कई दिन उन्होंने कालक्षेप किया जब वह भी होचुका तो अलादीनने दूसरा पात्र उसी यहूदीके हाथ बेंचा और यहूदी ने वही मोल जो पहिले दियाथा प्रति भाजनका दिया इस भय से कि अलादीन भड़क के फिर और के हाथ न बेंचे एक अशरफ़ी से कम हरएक भाजन का मोल न किया निदान जब अलादीन बारह भाजन बेंचके ख़र्च कर चुका तो उसने सुनहला बड़ा पात्र जिसमें वह बारह भाजन रक्खे थे जाय दिखाया उसने उसे तौल दश अशरफ़ियां उसके हाथ में रक्खीं अलादीनने प्रसन्न ह्वै लेलीं और कुछ तकरार न की आगे तो अलादीन बालकोंके साथ खेलताथा परन्तु इस मायावी के हाथ से दुःख देनेके कारण बहुधा बाज़ारमें जाता और बुद्धिमानों से वार्त्ता करता और बहुधा बड़े बड़े व्यापारियों की दूकान के पास जाय खड़ाहोता कि अनेक प्रकार के व्यवहारकी वार्त्ता उनकी सुने थोड़े दिनों में कुछ सांसारिक व्यवहारको जानगया जब वह सब अशरफ़ियां ख़र्च करचुका तो उसी दीपकको उठालाया और उसी स्थान पर जहां उसकी माता ने उसे मलाथा रेत लेके धीरेसे मलने लगा इतने में बीर प्रकट हुआ और नम्रतापूर्वक कहनेलगा तू क्या चाहता है मैं और दूसरे बीर उसके अधीनहैं जिसके हाथमें यह दीपक है अलादीन ने कहा मैं भूखाहूं कुछ भोजन मेरे लिये ला वह यह सुन गुप्त होगया फिर एकदम में जैसा कि पहिले लाया था उसी तरह से एक खोंचा खाने का लेआया और अलादीन के सामने रखकर गुप्त होगया उस समय उसकी माता कहीं गई हुई थी जब घर आई और भोजन देखा तो जाना कि यहभी पूर्ववत् इसी दीपक के द्वारा आया फिर दोनों ने बैठके तृप्त होकर भोजन किया और बाक़ी दो दिनतक ख़र्च किया जब रुपया पैसा उनके पास न रहा तो चांदी के पात्र लेके उसी यहूदी के पास बेंचनेगया मार्ग में

वह एक भलेमानुष सुनार की दूकानसे होकर निकला सुनारने उसे अपनी दूकान पर बुलाकर कहा हे पुत्र ! मैंने तुझे बहुधा कुछ वस्तु अमुक यहूदीके पास लेजाते देखाहै और उधर से खालीहाथ आते पाया आजभी कुछ लियेहुये उधरको जातेहो जानपड़ताहै कि तुम कुछ बेंचने को उसके पास जातेहो परन्तु तुम्हें मालूम नहीं कि वह यहूदी महाधूर्त और अधर्मी है जिस ने उसके साथ ब्यवहार किया वह उसकी धूर्तताको भलीभांति जानगया मेरा प्रयोजन यहहै यदि तुम कोई बस्तु बेंचनेको लेजातेहो तो मुझे दिखाओ मैं उसका ठीक मोल दूंगा और जो मैं उसे न लेसकूंगा तो मैं और ब्यापारी के पास लेजाऊंगा जो तुमसे छल न करेगा उसने यह बचन सुन वही पात्र बस्त्रसे निकाल उसे दिखाया उसने उसे परखकर कहा कि इसकी चांदी बहुत चोखी है फिर कहनेलगा इस प्रकार का तूने कोई और पात्र यहूदीके हाथ बेंचा है उसने उसका तुझे क्या मोल दिया है उसने कहा बारह भाजन इसी प्रकारके उस यहूदी के हाथ बेंचेहैं उसने प्रतिपात्रपर मुझे एक अशरफ़ी दीहै सुनारने कहा बड़ा अनर्थ हुआ उस दुष्टने तेरे साथ ऐसा छल किया जिसका कुछ वर्णन नहीं होसक्ता फिर पात्रको तौल कहनेलगा ठीक मोल इसका बहत्तर अशरफ़ी है और थैली से अशरफ़ियां निकाल दीं और कहनेलगा भाई जो तुम्हें सन्देहहो तो तुम दूसरे सुनारके पास लेजाओ और उसे दिखाओ जो वह इसका मोल अधिकदे तो मैं प्रतिज्ञा करताहूं कि उसका द्विगुण तुम्हें दूंगा परन्तु यह बात यहूदी से न कहना अलादीन उसका गुण मानकर घरमें आया और फिर कभी और पात्रोंको और किसी के पास बेंचने न लेगया और सब पात्र उसी सुनार के पास बेंचे इसी प्रकार बहुकालपर्यन्त अपना निर्बाह करतेरहे यद्यपि वह दोनों चाहते तो उसी दीपकके कारण उन्हें असंख्य धन प्राप्त होता परन्तु कईबर्षतक वही पात्र बेंच कालक्षेप करतेरहे और उसकी माता बराबर चरखा काततीरही इस समयान्तर में अलादीन बहुधा चौक के बज़ाज़े और सर्राफ़ेमें जाकर घूमता बिशेष रत्नपारखियों की दूकान पर बैठकर हरएक प्रकार के जवाहिरोंको देखता और उनका

व्यवहार देखता और उन जवाहिरोंको अपने रत्नोंकी अपेक्षा जिन को अज्ञानतामें शीशेके रंगबिरंगे टुकड़े जानता था चमकदमक में कहीं कम पाता धीरे धीरे वह जानने लगा कि वह शीशे के टुकड़े नहीं किन्तु वह अतिउत्तम रत्न हैं परन्तु यह बात अपनेही मन में रक्खी अपनी मातासेभी न कही एक दिन वह नगर में सैर करता था अकस्मात् डौंड़ी का शब्द सुना कि आज कोई अपनी दूकान न खोले न अपने घर से बाहर निकले क्योंकि बदरबदौर शाहज़ादी स्नान करने को हम्माम में जावेगी और नहाकर अपने महल में आवेगी इस कालान्तरमें कदाचित् कोई मनुष्य बाज़ार वा गलीमें न निकले यह सुन कर उसे यह लालसा हुई कि किसी उपायसे उस सुन्दरीका मुख खुलाहुआ देखें इस हेतु उसने एक गृह हम्मामके पास ढूंढ़ रक्खा कि उसके दरवाजेकी दरारोंमें बैठकर शाहज़ादीके रूपको देखें और पहिले से उस घर में जाय बैठरहा क्षण भर पीछे वहभी पहुँची और हम्मामके निकट अपनी बांदियों और खोजियों में अपने कोमल चन्द्रमुखसे वस्त्र उतारा अलादीनने कि तबतक सिवाय अपनी वृद्ध कुरूप माता के कोई सुन्दर स्त्री न देखीथी और यही जानताथा कि सब स्त्रियां मेरी माता के सदृश होंगी परन्तु जब इसे देखा तो समझा कि ईश्वरने ऐसे स्वरूपभी उत्पन्न कियेहैं निदान उस रूप छवि अनूप मनहरण को देखतेही मोहका बाण उसके हृदयसे पार होगया और मूर्च्छाखाय गिरपड़ा जब सचेत भया और जाना कि वह सुन्दरी हम्माममें गई तो मनमें कहनेलगा अब इस स्थानपर ठहरना उचित नहीं क्योंकि अब हम्माम से मुखढाँपे निकलेगी तो उस समय उसका देखना वा न देखना बराबर है यह सोच गुप्तमार्गसे अपने घर पहुँचा और मोहकी व्यथा अपनी मातासे छिपा न सका उसकी माता उसकी दुर्दशा देख अतिबिकल हुई और उसे रोते पीटते देख अचम्भाकर पूछने लगी हे पुत्र! तुझे क्या दुःख हुआ जो तू रोताहै तू कुछ बीमार तो नहीं होगया उसने कुछ उत्तर न दिया कुछ काल पर्यन्त अपनी प्यारीकी सुधिमें चुपका बैठारहा माता उसकी कि रसोई पकाने में लगी थी इस लिये फिर उससे न

पूछा जब उसने भोजन पकाय थालियोंमें परस उसे बुलाया तो वह माताके कहनेसे थोड़ासा खाके फिर चुपहोरहा उसकी माताने भोजनान्तरमें उससे उसकी बिकलताका हाल पूछा पर वह कुछ न बोला जब भोजन कर चुका तो फिर उससे पूछा परन्तु वह न बोला रात्रि भर उसी सुन्दरी की सुधि में तड़पतारहा दूसरे दिन भोरको अपनी माता के पास जो चरखा कातरही थी बैठकर कहनेलगा हे माता! अब मैं अपनी व्यथा तुमसे कहताहूं मुझे कोई बीमारी नहीं जैसा कि तुमने बिचार कियाहै कल जो यहांके बादशाहकी पुत्री हम्माम में गई तो मुझे उसके देखनेकी लालसा हुई सो मैं एक घरमें जाय छिपा जब वह चन्द्रबदनी आई और अपने मुखसे बस्त्र उठाया तो उसके रूप छबि अनूप मनहरण को उसी घरकी दरार से देखतेही मोहित होगया मेरी बिकलताका यही कारण है इस बीमारीका यत्न सिवाय इसके और कुछ नहीं कि बादशाह के पास जाकर उसकी पुत्रीको मांगूं उसकी माता यह बचन सुन हँसकर कहने लगी बेटा चुपरह ऐसी बात मुखसे मत निकाल तेरे इस कहनेसे मालूम हुआ कि तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है अलादीन ने उत्तर दिया मैं तो सावधानहूं मैं तो पहिलेसेही जानताथा कि तुम मुझे अवश्य बुद्धिहीन समझोगी पर मैं अवश्य बादशाह की कन्या लूंगा उसने कहा हे बेटा! क्या तू अपनेको भूलगया तू ग़रीब दरज़ीका पुत्र है जो एक तुच्छ इस बादशाहकी प्रजा है क्या तू शाही रीतों को नहीं जानता कि वह अपनी सन्तानका बिवाह अपने बराबरवालोंके सिवाय दूसरे से नहीं करते जो वह ऐसा न करें तो उनकी नामधराई हो और सल्तनतमें बिघ्नहो अलादीनने कहा हे माता! जो तुम यह कहती हो सो सत्य है परन्तु मैं बादशाह से इस बातके कहने के बिना न रहूंगा तुम्हीं मेरी ओरसे जाकर बादशाहसे कहो जो तुम इस कार्यमें परिश्रम न करोगी तो मैं देह त्यागदूंगा अब तुम्हारे हाथ मेरे प्राण हैं मैं तो अपनी प्राणप्रिया के बियोग में मरचुकाहूं उसकी माता यह सुन अतिचिन्तित हुई और कहनेलगी हे पुत्र! हमें वह कार्य करना चाहिये और वह बात मुख से निकालनी चाहिये जिस से

लज्जा को न प्राप्तहों (कहां राजा भोज कहां गंगा तेली) कहां तू ग़रीब और कहां शाहज़ादी जो तेरी जातिकी कन्या होती तो निस्सन्देह मैं जाती अपनी ओर देख हम ऐसे बड़े बादशाह को कन्याके वास्ते कहसक्ती हैं मुझे इतना साहस कहां कि बादशाह के सन्मुख जाय इतनी बड़ी बात कहूं जब तेरा पिता मुझपर क्रोध करता तो मैं डरजाती और मेरे मुँह से बात न निकलती सिवाय इसके जो कोई बादशाहके पास जावे तो उसे चाहिये कि अपनी इच्छाके प्रकट करनेके पहिले अपनी प्रतिष्ठानुसार भेंट दे मैं बादशाहके पास कौनसी भेंट इतने बड़े कार्य के लिये लेजाऊं तू ऐसी बात करना चाहता है कि वह नहीं होसक्ती अलादीनने अपनी माता के बचन सुन कहा हे माता ! मैं उसकी प्रीतिमें ऐसा नहीं फँसा कि उसे मन से निकालूं इसलिये फिर बिनय करताहूं कि ईश्वरके वास्ते यह सब बिचार अपने हृदय से निकालकर जिस तरह से बने बादशाह से जाकर उसकी पुत्रीके लिये प्रार्थना करो और इस कामके लिये परिश्रम करो मेरा मन साक्षी देताहै कि मेरा कार्य सिद्ध होगा जो तूने कहा कि राजाओं को भेंट देना अवश्य है और मेरे पास कोई ऐसी बस्तु नहीं जो बादशाहोंके भेंट देने के योग्यहो हे माता ! उन रत्नों को जो मैं अपने साथ लायाथा और तुम उनको अबतक शीशे के टुकड़े जानतीहो क्या वह बादशाहकी भेंट के योग्य नहीं पहिले मैं भी न जानता था जौहरियों की दूकानपर जाने से उनकी ब्यवस्था मुझे मालूमहुई संसार के सब रत्न मेरे रत्नों के आगे तुच्छहैं न तो वैसे रँगदार और न उतने बड़े परन्तु बड़ा खेद है कि हम तुम दोनों उनके मोल को नहीं जानते मैं भलीभांति जानताहूं कि वह सब जवाहिर बादशाहोंकी भेंट देनेके योग्यहैं तुम उन सबको उठालाओ कि मैं उन सबको साफ़कर और हरएक प्रकार को अलग २ कर किसी साफ़ बर्तनमें लगाय रक्खूं फिर तुम उनकी सफ़ाई और चमक मालूम करोगी वह बहुत सुन्दर चीनी के भाजनमें उन्हें उठालाई और उनको सजाया फिर तो वह सूर्य चन्द्रमा के सदृश प्रकाश देने लगे और उन दोनों की दृष्टि उनपर न ठहरती थी अलादीन ने

नम्बर ४३ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ै ६३२ न॰ भा॰
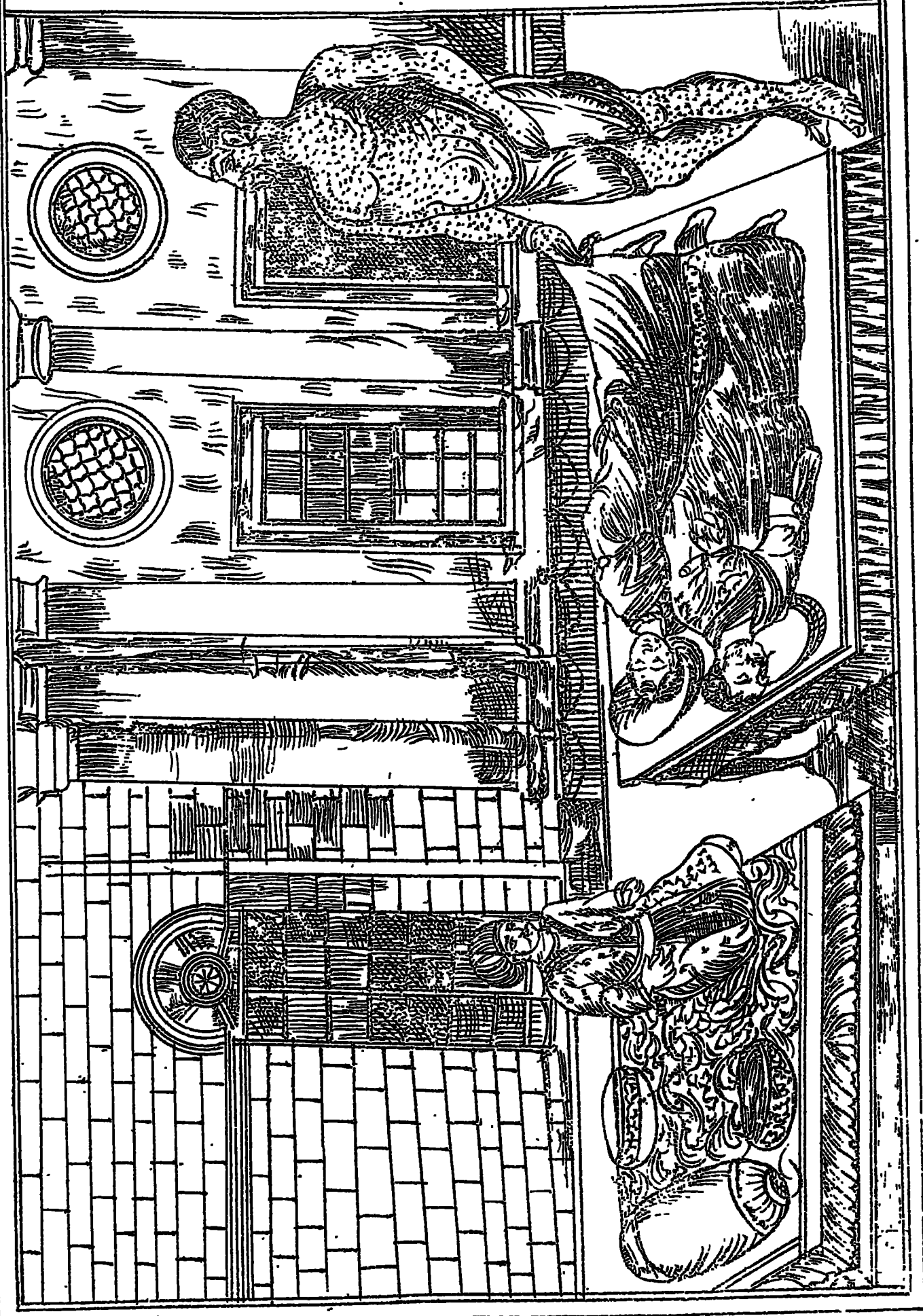
अपनी मातासे कहा यह बादशाहकी भेंटके लिये रक्खेहैं मेरे बिचार में इनसे उत्तम और कोई वस्तु भेंट देनेके योग्य नहीं अब जो कोई और बातहो सोभी कहो यद्यपि वह बड़े चमकदार और सुन्दर थे परन्तु उनका हाल मालूम न होने से फिर उसकी माता तकरार करने लगी कि तुम्हारी यह भेंट ऐसी नहीं कि बादशाह प्रसन्न हों और तेरी कामना पूरीहो मैं अर्थरहित लौटआऊंगी जो मैं तुमसे कहतीहूं वही होगा जो मैंने साहस कर अपना मनोरथ बादशाह से कहा तो वह मुझे बावली और बुद्धिहीन समझ मेरी बातोंसे हँसेगा और सिड़िन समझ दरबारसे निकलवा देगा अथवा कोपित होय मुझे और तुझे मरवाडालेगा निदान अलादीन की माता ने उसे बहुत समझाया कि यह बिचार छोड़देवे परन्तु वह ऐसा मोहितहुआ था कि कुछ न समझा और बड़ी कठिनतासे अपनी माताको जाने के लिये तैयार किया सो उसकी माता कहनेलगी मैंने माना कि मैं बादशाहके सन्मुख साहस कर गई और उससे बिवाहके लिये प्रार्थनाकी जो उसने मुझसे पूछा कि तुम कहां रहतीहो और कितना धन तुम्हारे पासहै और तुम्हारी जातिपांति क्या है तो उस समय मैं उसे क्या उत्तर दूंगी उसने कहा इस बिषय की चिन्ताभी मत कर पहिले देखो कि बादशाह तुझ से क्योंकर भेंट करता है और इस मनोरथ का क्या उत्तर देता है मुझे दीपकपर बड़ा निश्चय है और जानताहूं कि जो बस्तु मैं मांगूंगा वह मुझे तुरन्त उसके द्वारा प्राप्त होगी जैसा कि कई बर्षसे तुम देखतीहो उसकी माता यह सुन चुप होरही और समझी कि इसी दीपकके कारण मेरे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होजावेंगे उस समय तो उसे धैर्यहुआ और वह सब बातें जो उसे कठिन जानपड़ती थीं सुगम मालूम हुईं और अपने पुत्रसे जानेकी प्रतिज्ञाकी अलादीनने कहा कि इस भेद को किसीसे मत कहना और बादशाह से भी एकान्त में कहना इतना कह दोनों सोरहे परन्तु अलादीनको अपनी प्रियाके मोह में रात्रिभर निद्रा न आई तड़प २ रात्रि बिताई प्रातःसमय उठ अपनी माता से कहने लगा यह दरबार का समय है शीघ्र बस्त्र पहिन कर जा सो उस

बृद्धाने एक उज्ज्वल रूमाल में रत्नों से भरा पात्र लपेट पुनि दूसरे वस्त्र में बांध गिरह दे दरबारकी ओर चली उस समय राजमन्त्री आदिक सम्पूर्ण सभासद् बादशाह के सन्मुख विद्यमानथे इतने में वहभी पहुँची और उन मनुष्योंके साथ जो अपनी व्यवस्था और नीतिके लिये जातेथे उनके साथ दीवानख़ानेके भीतर जो बड़ा बिशाल था गई क्या देखती है कि बादशाह के सामने सब खड़े हुये अपना २ बृत्तान्त कहते और बादशाह उनकी व्यवस्थाको सुनता और यथोचित उनका निर्णय करता जब मुक़द्दमों का फ़ैसला हो चुका तो बादशाह वहां से उठ अपने ख़ास मकान में आया और सिवाय राजमन्त्रीके सबको विदा करके देश प्रबन्धके उपाय बिचारने लगा जब उससे भी निश्चिन्त हुआ तो अपने महल में गया जब अलादीनकी माताने देखा कि अब बादशाह दरबारमें नहीं आवेगा और सबलोगभी चलेजाते हैं तो अपने घर में लौटआई अलादीन उसके हाथमें रत्नोंका पात्र देख समझा कि मेरी माताको बादशाह से बिनय करनेका अवसर न मिला घबड़ाके पूछनेलगा हे माता! कुशल तो है उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त ब्यौरेवार बर्णनकर कहा मैंने बादशाहको भलीभांति देखा और बहुत काल पर्यन्त उसके सन्मुख खड़ीरही किसीने मुझे नहीं रोंका और बादशाह भी मुझे बहुत कालतक देखता था परन्तु उसे अवकाश न मिला कि मुझसे कुछ पूछता और मुझेभी अपने प्रयोजन के बर्णन करनेका अवसर न मिला परन्तु इतना मालूम हुआ कि बादशाह एक २ का हाल सुनके उसका उत्तर बहुत स्पष्ट देता है उसकी प्रजापालकता में सन्देह नहीं छोटे बड़े सब जाके उससे बातें करतेहैं किसीको बुरा भला नहीं कहता आज उसने बहुतसी व्यवस्था सुनी जब सब सुनचुका और समयभी होचुका तो उठकर अपने महल को पधारा कल फिर जाऊंगी अलादीन ने उसका बड़ा गुण माना और उसे बिश्वास हुआ कि यहभी निश्शङ्क और निर्भय होकर बादशाह से अपना मनोरथ कहेगी दूसरे दिन भोर होतेही वह फिर बादशाह के दरबार में गई परन्तु उसका जाना निपट व्यर्थथा क्योंकि दरबारका द्वार मुँदा

हुआ पाया और वहां के मनुष्यों से सुना कि दो दिनतक छुट्टी रहेगी इसलिये अपने घर लौटआई और अलादीनसे वह हाल कहसुनाया दो दिन पीछे फिर उसकी माता गई परन्तु उस दिन भी बहुत लोगों के होने से न तो बादशाह ने उससे पूछा और न उसने सावकाश पाया इसी भांति कई बेर उसकी माता बादशाह के सन्मुख जाती और कहनेका अवसर न पाती निदान एक दिन बादशाहने न्यायादि प्रबन्ध से निश्चिन्तहो वज़ीर से कहा कई दिन से मैं इस स्त्री को देखताहूं कि प्रतिदिन मेरे सन्मुख खड़ी रहतीहै और अपने हाथों में कुछ लपेटे लियेरहती और दरबारके छुट्टी पाने के पीछे कुछ कहे सुने विना चलीजातीहै तू उससे पूछ कि उसकी क्या इच्छा है मन्त्री ने भी कि उसके हालको न जानता था चाहा कि अपनी अज्ञानता को बादशाहसे प्रकट न करे इसलिये बिनय की कि ऐ हुजूर ! स्त्रियां थोड़ी थोड़ी बातके लिये निरर्थ नालिश करती हैं सो यहभी वैसेही आतीहोगी किसीने उसे मांस वा दूसरी वस्तु बुरी वा तौल में कम उसके हाथ बेंचीहोगी इस उत्तरसे बादशाहको बोध न हुआ दूसरे दिन बादशाह ने सभामें बिराजमान होकर मन्त्री को आज्ञा दी कि जब वह स्त्री मेरे दरबार में आवे तो उसे मेरे पास लाइयो कि मैं उससे पूछूं कि उसकी कौनसी इच्छाहै उसने कहा बहुत अच्छा और अपने शिरपर हाथ रक्खा अर्थात् यदि आपकी आज्ञापालन न करूं तो मेरा शिर काटाजावे इतनेमें अलादीनकी माता बादशाहके सन्मुख खड़ीहुई परन्तु मन्त्रीने उसे बादशाह के सामने न बुलाया बादशाहने आपही उसे देख मन्त्रीसे कहा वह स्त्री आईहै उसे मेरे पास लेआ कि मैं उससे कुछ पूछूं मन्त्रीने एक मनुष्य से कहा उस स्त्रीको बुलाके बादशाह के सन्मुख लेजाओ वह उसे तख़्त शाही के पास लेगया और अपनी जगहपर जाय खड़ा हुआ अलादीन की माताने औरोंकी भांति अपने शिरको पृथ्वी से लगाके स्वच्छ क़ालीन को जो तख़्तके नीचे बिछाया था चूमा और देरतक धरती से लगी पड़ीरही यहांतक कि बादशाह ने उठने की आज्ञादी वह उठ खड़ीहुई बादशाह ने उससे पूछा मैं तुझको बहुत दिनसे देखताहूं

कि तू हरदिन मेरी कचहरी में आतीहै अब अपना मनोरथ प्रकट कर कि तू किस अर्थ के लिये आयाकरती है उस वृद्धाने यह सुन फिर धरती चूमी और हाथ बांध बिनयकी हे बादशाह दीनप्रतिपालक! जो मुझे प्राणदानहो और मेरी ढिठाई क्षमाहो तो मैं अपना अर्थ वर्णन करूं परन्तु वह बात सबके सामने नहीं कहसक्ती बादशाहने सबको वहांसे बिदा किया केवल वज़ीरआज़म वहां रहा तब बादशाहने उससे कहा अब तू वर्णनकर उसने बादशाह को एकान्त में अपने ऊपर दयालु पाकर फिर बिनय की यह किंकरी आशा रखती है कि मेरी बिनती से आपको दुःख न हो मेरी ढिठाई क्षमा करो बादशाहने कहा मैंने क्षमा किया जो तेरे मनमें हो उसे निश्शङ्क और निर्भय होकर प्रकटकर पहिले उसने जिस तरह अलादीन ने उसकी कन्याको देखाथा वर्णन किया फिर कहनेलगी कि उस समय से वह उसपर मोहितहै अब उसकी यह इच्छा है कि आपकी पुत्री का उसके साथ बिवाह होजावे और इसीलिये मुझे आपके सन्मुख भेजा है बादशाह उसकी बिनती सुन कुछ अप्रसन्न न हुआ किन्तु कुछभी मुँह न मोड़ा और पूछनेलगा इस बस्त्रमें क्या बँधाहै उसने रत्नोंका पात्र खोल बादशाहको अर्पण किया वह अतिबिचित्र और उज्ज्वल और बड़े बड़े रत्नोंको देख आश्चर्यमें हुआ और प्रसन्नहो लेलिया और एक एक उठाय उठाय देखता और वाह वाह करके कहता कि ऐसे बहुमोल्य रत्न भी ईश्वरने संसारमें पैदा किये हैं फिर उसने उन रत्नों को एक ठौर रख मन्त्री को बुलाय दिखाये कि ऐसे तूनेभी कदाचित् रत्न देखे हैं उसने देखकर कहा कि मैंने कभी भी नहीं सुने पुनि बादशाहने मन्त्रीसे कहा कि यह मनुष्य जिसने यह रत्न भेजे हैं इस योग्य है कि उसका बिवाह अपनी कन्यासे करूं मन्त्री यह सुन महादुःखित हुआ क्योंकि उसे बिश्वासथा कि बादशाह सिवाय मेरे पुत्रके और किसीको कन्या न देगा अब ऐसे रत्न देख उसके बिपरीत कहता है सो एक बात मनमें ठान बादशाह के कानमें कहा हे स्वामी! यह भेंट आपकी कन्याकी अपेक्षा तुच्छहै आशा रखताहूं कि तीन महीने का सावकाश मिले कि मेरा पुत्र इस

से उत्तम भेंट देगा यद्यपि बादशाह जानताथा कि ऐसी सौगात जो अलादीनकी माताने दी और किसीको प्राप्त न होगी परन्तु उसके कहनेसे उसकी प्रार्थना स्वीकारकी और अलादीनकी मातासे कहा अब तुम अपने घर जाके अपने पुत्रसे कहो कि हमने उसकी इच्छा स्वीकारकी परन्तु अभी दहेज़ का असबाब जो हम अपनी लड़कियों को दिया करतेहैं तैयार नहीं किया तीन महीने के पीछे सब तैयार होगा तब तुम यहां आना वह अतिप्रसन्नहो अपने घर आई यह प्रसन्नता उसे कई हेतुओं से प्राप्तहुई एक तो आने जाने से छुट्टी और दूसरे अपनी इच्छानुकूल उत्तर पाया तीसरे इस भयसे कि ईश्वर जाने बादशाह इस बिनयसे कोपित होकर उसे और उसके पुत्रको न जानिये क्या दण्डदे अलादीन अपनी माताको देखकर अपनी बुद्धि से जानगया कि मेरी माता कार्य सिद्धकर आई क्योंकि दरबारसे शीघ्र चलेआनेसे यह बात उसे मालूम हुई और मुख उस का और दिनोंसे प्रसन्नथा जब निकट पहुँची अलादीनने पुकारके कहा हे माता! कुशल तो है उसकी माता दरबारके बस्त्र उतार कहने लगी हे पुत्र! अब प्रसन्न हो फिर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया और कहा मुझे बादशाहने अभी हां ना का उत्तर न दियाथा कि मन्त्री ने बादशाहके कानमें कुछ कहा तब मैं डरगई कि ऐसा न हो कि बादशाहको बहकावे परन्तु जब बादशाहने हँसके मुझसे कहा कि अब तुम जाके अपने पुत्रसे कहो कि मैंने तुम्हारा मनोरथ स्वीकार किया तीन महीने पीछे फिर आइयो तब मुझे भरोसा हुआ यह शुभ समाचार अपनी मातासे सुन अलादीन महाहर्षित होकर उसका गुणानुवाद करनेलगा परन्तु तीन महीने की अवधि जो बादशाहने की थी उस चन्द्रमुखीकी प्रीतिमें इतनी बड़ी मालूम हुई मानो तीन बर्षका अन्तरहै दिन और घड़ी गिननेलगा जब दो महीने बीते तो एक दिन सायंकालको अलादीनकी माताने दीपक जलानेकी इच्छाकी और यह देखा कि घरमें तेल नहीं सो तेल बाज़ारसे मोललेने गई वहां क्या देखती है कि चारोंओर बिवाहकी धूमधाम होरही है और दूकानदार दूकानें मूंद दीपमालामें लगे हैं

और बरातका सामान एक ओर से दूसरी ओर जाताहै और गली कूचोंमें प्रधान और अधिष्ठाता सुनहले बस्त्र पहिने स्वच्छ घोड़ोंपर जिनके रुपहले सुनहले सुन्दर साज़हैं सवारहैं और बहुतसे सेवक उनके साथ बड़ी धूमधामसे आतेजाते हैं अलादीनकी माताने उस तेलीसे जिससे तेल लियाथा पूछा आज यह कैसी धूमधामहै उसने कहा तुम कहांसे आईहो क्या तुम इस नगरकी रहनेवाली नहीं हो यह बात सब कोई जानताहै कि आज रातको यहांके वज़ीरआज़म के पुत्रसे शाहज़ादीका बिवाहहै अब एक घड़ी पीछे शाहज़ादी भी स्नान करनेको आवेगी इसलिये सब प्रधान उसके जलूसके वास्ते तैयारहोके महलबादशाही के तरफ़ जाते हैं वह यह सुनतेही अपने घर दौड़ीगई और अलादीनके निकट जाय कहनेलगी हे पुत्र! बड़ा खेदहै कि मेरा परिश्रम और वह सब रत्न बृथा गये बादशाहने बड़ा छल किया अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहा वह सुन चिन्तित भया और मातासे पूछनेलगा बादशाहने क्योंकर अपना प्रण तोड़ा उसने जो कुछ बाज़ारमें देखा और सुनाथा ब्योरेवार वर्णनकिया और कहने लगी आज रात्रिको तेरी प्यारी का राजमन्त्रीके पुत्रसे बिवाह ठहरा है सो इस समय वह स्नान करने को हम्माममें जावेगी अलादीन यह सुनतेही महाव्यथित भया कि जैसे किसीपर बिजली पड़े जिसके गिरने से वह मूर्च्छाको प्राप्तहो थोड़ी देरके पीछे जब सचेत हुआ तो मनमें बिचारा हा! बड़ी लज्जाकी बातहै कि बदरबदौरको सिवाय मेरे कोई दूसरा लेजावे अब इसमें देरी न करनी चाहिये कोई ऐसा यत्न करो कि मन्त्रीका पुत्र ब्याहके लेजाने न पावे सोचते २ दीपक को याद किया और मातासे कहनेलगा कुछ चिन्ता मतकर उस मन्त्री का पुत्र उससे भोग न करसकेगा तुम भोजन पकाओ मैं अपने मकानमें एक क्षणके लिये जाताहूं वह समझगई कि यह दीपक निकालेगा और उसीसे कोई ऐसा उपाय करेगा जिससे उनके बिवाहमें बिघ्नहो वह तो भोजन पकानेलगी और इधर अलादीनने अपने मकानमें जातेही उस दीपकको वहांसे निकालकर रगड़ा तो वही बीर प्रकट हुआ और अलादीनसे कहनेलगा मुझे क्या आज्ञा

है मैं और दूसरे बीर इस दीपक के अधीन उस कामको तुरन्त प्रतिपालन करेंगे अलादीनने कहा आजतक मैंने तुमसे खानेकी बस्तुके सिवाय और कोई काम नहीं कहा अब तुझसे एक काम कहताहूं वह यहहै मैंने यहांके बादशाहसे उसकी पुत्री बदरबदौरके साथ ब्याह करनेकी प्रार्थना कीथी उसने स्वीकार कर कहाथा कि तीन महीने पीछे मैं तुझे अपनी लड़की बिवाह दूंगा अब वह अपनी प्रतिज्ञाके बिपरीत उस अवधि के पहिले उसका ब्याह राजमन्त्रीके पुत्रसे किये देताहै सो इसी रात्रि को बिवाह नियत हुआ है अभी मैंने यह समाचार सुनाहै अब जो मैं कहूं सो तू कर अर्थात् जब दूलह दुलहिन इकट्ठे सोवें तू उन दोनों को बिछौने समेत मेरे पास लेआइयो उस बीरने कहा यह कितना बड़ा काम है और जो कोई आज्ञाहो तो वहभी कहो उसने कहा इस समय तो सिवाय इसके और कोई काम नहीं जो तुझसे कहूं यह सुन वह बीर गुप्त होगया इसके उपरान्त अलादीन वहां से निकल हँसी खुशीसे भोजन करने लगा जब भोजन करचुका तो अपनी मातासे बहुत कालपर्यन्त अपनी प्यारीकी वार्त्ता करतारहा फिर माता से बिदाहो अपने मकान में सोने गया परन्तु बीरकी बाट में उसे निद्रा न आई जब शाही महल में बिवाहकी रीतें होचुकीं और रात्रिभी बहुत बीती तो मन्त्रीके पुत्रको मकान में लेगये वह पहिले शय्यापर जाकर लेटा और दुलहिन को बांदियों समेत लेजाय रीतेंकर और उसके बस्त्र उतार रात्रि के बस्त्र पहिराय दूलह के पास सुलायदिया और आप अनुचरियों समेत बाहर निकलआईं और उस मकान का द्वार लौंड़ियों ने मूंदलिया द्वारके मूंदतेही वहीं बीर प्रकटभया और इससे पहिले कि दूलह कुछ दुलहिनसे बातचीत करे वा उसका मुख देखे उनदोनोंको शय्या समेत उठाय अलादीनके मकानमें लाया अलादीन जो बाट देखता था बीरसे कहनेलगा इस दूलहको लेजाय पाख़ानेमें बन्दकरदे भोरको फिर इसे यहां पर लेआइयो यह आज्ञा पाय वह बीर उसे शय्यासे उठाय लेगया और एक पाख़ाने में जिसमें महादुर्गन्धित मल भरा था बन्द किया जिसकी दुर्गन्धि से उसका

दिमाग फटाजाता था और इधर अलादीन ने दुलहिन से अधिक बार्त्ता न की केवल इतनाही उससे कहा कि हे मेरी प्रिया ! तुम कुछ भय मत करो तुम्हें यहां किसी भांति से दुःख न पहुँचेगा मैंने यह बात इस लिये की कि तुम्हें मन्त्रीके पुत्रसे बचाऊं क्योंकि तेरे पिता ने मुझसे प्रतिज्ञा कीथी कि मेरा बिवाह तेरे साथ करदे अब अपने बचनके बिपरीत तुझे मन्त्रीपुत्र के साथ ब्याहदिया वह बेचारी कि कुछ न जानती थी सुनके चुप होरही कुछ उत्तर न दिया किन्तु सहमि गई और घबड़ागई अलादीन ने उससे कुछ न कहा और अपने वस्त्र और पगड़ी उतारकर उसके साथ पीठ फेरके सोरहा और एक खड्ग उसके और अपने मध्य में रखदी कि वह सुन्दरी इस बात को जाने कि जो मैं उससे किसी कर्म की इच्छा रक्खूं तो इसी खड्गसे माराजाऊं इस उपायसे उसने अपनी प्रियाको दूसरे से बचाया और अत्यन्त प्रसन्न होकर रात्रिभर आनन्दपूर्बक सोया किया परन्तु उस सुन्दरीको वह रात्रि महादुःख और चिन्तामें कटी और अधिकतर मन्त्री के पुत्रकी रात्रि दुःख में बीती कि रात्रिभर सड़े पाखाने में बन्दरहा भोरको अलादीन को दीपक के रगड़नेकी कुछ आवश्यकता न पड़ी क्योंकि प्रभात होतेही वह बीर आपही आया और अलादीन से कहने लगा हे स्वामी ! मैं आयाहूं जो आज्ञाहो सो करूं अलादीनने कहा दूल्हेको उस जगहसे जहां तूने उसे बिदा किया है जाके लेआ और उसे शय्यापर सुलाकर शाहज़ादी सहित उसी मकानमें पहुँचादे यह कह उसने खड्ग बीच मेंसे निकाला वह बीर मन्त्री के पुत्र को पाखाने से बाहर निकाल उस सुन्दरीके पास उसे लिटाकर जहांसे लायाथा छोड़आया सबसे अधिक दुःख दूलह दुलहिन को उस महाबिकराल बीर के देखने से हुआ यदि बिछौना फटके वे दोनों मरजाते तो आश्चर्य न था निदान जब वह बीर छोड़आया तो उसी समय बादशाह ने अपनी पुत्री को देखना चाहा कि पूछे यह रात्रि उसकी क्योंकर बीती सो मकानके भीतर आय दूलह कि मलकी दुर्गन्धि और शीतसे अतिदुःख पाकर मृतकवत् होरहा था बादशाह का शब्द सुनतेही पलँग से कूद

बाहर निकलआया और दूसरे मकान में जहां रात्रिको अपने बस्त्र उतारकर सोनेके मकानमें गयाथा जाकर कपड़े पहिने जब बादशाह भीतर गया और अपने जातिकी रीतिके अनुसार मुसकराय अपनी पुत्री से पूछा तुम्हारी रात्रि क्योंकर बीती फिर जब आगे बढ़के ध्यान करके उसकी सूरत देखी और माथे को चूमा तो उसका मुख मलिन और उदास देख बिस्मित हुआ और कुछ न समझा कि यह दुःख उसे लज्जा से है वा किसी और कारण से चाहा कि उस से पूछे दुलहिन निर्बलता के कारण अपने दुःखका बृत्तान्त नहीं कहसकी बादशाह समझा कि लज्जाके कारण अपने दुःखका बृत्तान्त नहीं कहसकी वा कोई दूसरी बात रात्रि में हुई जो इसे नहीं भाई जिससे वह चुपहै निदान वह लौट मल्काके निकट गया और उस से शाहज़ादीका हाल बर्णन किया मल्काने कहा हे हुजूर! बादशाहज़ादी के इस हाल से मत घबड़ाओ क्योंकि बहुधा ऐसा दुःख नवसंगमके समय नई दुलहिनों पर होता है तीन दिन पर्यन्त उन की यही दशा होती है मैं आप जाकर उससे बृत्तान्त पूछ तुमसे कहूंगी फिर मल्का शाहज़ादी के मकान में गई और उसको कण्ठ से लगाया परन्तु उसे चुप और दुःख में उदास देख आश्चर्य में हुई और समझी कि इसे अवश्य रात्रिको दुःख हुआहै जिसे वह बर्णन नहीं करसकी तब मल्काने उसे बहुत समझाया और कहासुना वह ठंढीश्वास ले कहनेलगी हे मेरी माता! यदि इस हाल में मुझ से कोई बात ढिठाई की हो तो क्षमा करना क्योंकि एक ऐसा अद्भुत चरित्र रात्रिको हुआ जिससे मैं अबतक अपने होश में नहीं और उस भयसे काँपतीहूं पुनि अपना और अपने दूलहका सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया कि रात्रिको जब लौंड़ियोंने मकानका द्वार मूंदा तो तुरन्तही वह शय्या जिसपर मैं और मेरा पतिथा किसी ने उठा लेजाकर एक बड़े बिशाल कोठेमें रक्खा और मेरे भर्तार को मुझ से अलग कर और कहीं लेगया फिर मैं नहीं जानती कि उसके साथ क्या ब्यवहार किया फिर मैंने एक तरुण पुरुष को देखा कि मुझे धैर्य दे अपने और मेरे मध्य में खड्ग रख मेरी ओर से पीठ

फेर सोरहा प्रभातको फिर मेरे पतिको मेरे साथ लिटाया और यह शय्या किसी ने एक क्षणमें यहीं लाकर रक्खी जब मेरा पिता मेरे मकानमें आयाथा तब मैं ऐसे शोकमें डूबी हुईथी कि कुछ भी उत्तर न देसकी किन्तु डरतीहूं कि मेरे चुप रहनेसे पिताजी क्रोधित न हुये हों परन्तु मुझे निश्चयहै कि जब मेरा दुःख उनपर ज्ञात होगा तो निस्सन्देह मेरा अपराध क्षमा करेंगे उसकी माता यह सुन बिस्मित हुई और इन बातोंपर उसे बिश्वास न हुआ और कहनेलगी बहुत अच्छा हुआ कि तुमने यह बृत्तान्त बादशाह से न कहा अब किसी से यह हाल न कहना नहीं तो तुमको विक्षिप्त समझेंगे उसने कहा तुम निश्चय मानो कि मैं सावधानहूं और मेरी बुद्धि भङ्ग नहीं हुई यदि तुम्हें बिश्वास न होवे तो इस बृत्तान्त को मेरे पति से जाय पूछो वहभी तुमसे यही कहेगा उसने कहा भला मैं उससे भी पूछूंगी जो उसनेभी यही कहा तो मैं सच जानूंगी तबतक तुम उठो और इस चिन्ताको अपने चित्तसे टालो यह बिषय अद्भुत है क्या तुम नौबत और बाजोंका शब्द नहीं सुनती जो चहुँओर नगर में बजरहे हैं अपने मनको सावधान करो और यह दुःस्वप्न जो तुमने देखाहै अपने जीसे भुलाओ पुनि उसने उसका मुख धुलवाया फिर बादशाह के निकट गई और कहनेलगी कि आज रात्रिको तुम्हारी पुत्रीने कोई दुःस्वप्न देखाहै जिससे वह भयभीत हुई और मन्त्रीके पुत्रको बुलाय पूछा क्या तूनेभी वही दुःस्वप्न देखा जो तेरी स्त्रीने देखा है उसने कहा मैं नहीं जानता कि तुमने मुझसे कौनसा प्रश्न किया बादशाहने कहा जो स्वप्न तेरी स्त्रीने रात्रिको देखा तूनेभी वही देखाहै मन्त्रीका पुत्र तो बिवाह होनाही अतिकठिन जानताथा और इससे उसकी प्रतिष्ठा बृद्धिको प्राप्त हुईथी इसलिये उचित न जाना कि रात्रिकी वार्त्ता को बर्णन करे सो मल्का से कहा मैंने कोई स्वप्न नहीं देखा यद्यपि रात्रिको महाघोर दुःख भोगा था तथापि अपनी खुशी प्रकटकी मल्काको निश्चय हुआ कि केवल उसकी पुत्रीही ने दुःस्वप्न देखा है वह सम्पूर्ण वार्त्ता अलादीन को दीपक के अधीन बोरसे मालूम हुई और यहभी बिदित हुआ कि आज रात्रिको दुल-

हिन दुलहा इकट्ठे सोवेंगे सो रात्रिको भी उन्हें इकट्ठे सोने न देना चाहिये यह बिचार सन्ध्या को उसने दीपक मला तो वही बीर प्रकट भया अलादीनने आज्ञा दी कि आज रात्रिको फिर वही दूलह दुलहिन इकट्ठा सोवेंगे तू इससे पहिले कि वह बातचीत वा भोगादि करें पूर्ववत् शय्या समेत मेरे मकान में लेआइयो वह बीर उनको शय्यापर लेटतेही शय्यासमेत उठाकर अलादीनके मकानमें लेआया और मन्त्री के पुत्रको फिर उसी मलस्थान में बन्द करदिया और शाहज़ादी ने भी पूर्ववत् अपने साथ अलादीन को सोतेहुये पाया और खड्गभी बीचमें रक्खाहुआ देखा प्रभातको वह बीर राजमन्त्री के पुत्रको पाखानेसे निकाल और शाहज़ादी के पास लिटाय जहां से लायाथा वहीं रखआया बादशाह तो पहिली रात्रिका हाल सुन चिन्तामें थाही भोरहोतेही शाहज़ादीके मकानमें हाल पूछनेके लिये पहुँचा तो दूलह शय्यापर से शीघ्र उतर निकल भागा और दूसरे मकान में वस्त्र पहिनने को गया और बादशाह भीतर गया तो अपनी प्यारी पुत्रीको उसीभांति शोकवान् पाकर सन्तोष न रहा और पूछा हे प्यारी बेटी! तेरी क्या दशा है मैं तुझे प्रसन्न नहीं पाता शाहज़ादीने कुछ उत्तर न दिया बादशाहने जाना कि कलसे आज और भी उसका बुरा हाल है और रात्रि को कोई उपाधि हुई सो क्रोधितहो खड्ग खींच लाल नेत्रकर कहनेलगा जो तुझपर बीताहै सो कह नहीं तो मैं तुझे बध करडालूंगा वह लड़की खड्ग देख भयभीत भई और प्राणके भय से रुदनकर अपने पिता से कहनेलगी यदि कोई मुझसे अपराध होवे तो उसे क्षमा कीजिये और मुझे बिश्वास है कि जब मैं आज और कलकी रात्रिका हाल बिनय करूंगी तो आपका सब क्रोध शान्त होजावेगा बादशाह इस बातको सुन कुछ धीरा हुआ फिर शाहज़ादीने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त बिस्तारपूर्वक कह सुनाया पुनि कहनेलगी जो इसमें कुछ आपको सन्देह हो तो मेरे पति से जा पूछ लीजिये कि उसके बर्णन से मेरे बचन की सत्यता सूचित होगी उसने उसके धैर्य के लिये कहा जो तूने कहा उसपर मुझे बिश्वासहै परन्तु मैंने तुझे दुःख देनेको तेरा

बिवाह नहीं किया धैर्यरख आज रात्रिको यह उपाधि न होगी यह कह बादशाह अपने मकान में आया और मन्त्री को बुलवा भेजा और उससे कहनेलगा तूने अपने पुत्र को देखा और उससे कुछ सुना उसने कहा मैंने अबतक उसको नहीं देखा फिर सम्पूर्ण वृत्तान्त जो अपनी पुत्रीसे सुनाथा सबिस्तार वर्णन किया और कहनेलगा यद्यपि जो मेरी पुत्री ने कहा मैं उसे सत्य समझताहूं तथापि मेरी इच्छाहै कि मैं तेरे पुत्रसेभी सुनूं तू उससे सब हाल जाय पूछ मन्त्री ने वह हाल अपने पुत्रसे जा पूछा और जो कुछ बादशाहसे सुनाथा उससे भी सुना कि जो कुछ बादशाहज़ादी ने अपने पिता से कहा उसमें सन्देह नहीं दो रात्रि से कोई शय्याको उठाकर एक बिशाल मकानमें रखके मुझे एक सड़े पाख़ानेमें केवल एक पाजामे समेत जिसे मैं पहिने होताहूं लेजाकर छिपाता है वहां मुझे हाथ हिलाने की सामर्थ्य नहीं रहती और मुझे अपनी स्त्री का कुछ हालभी मालूम नहीं रहता कि कहां रहतीहै यदि दो तीन दिन मेरी यही दशा रही तो मैं दुर्गन्धि और सरदी से देह त्यागदूंगा यही दशा मेरी स्त्रीकीभी बिचारना चाहिये अब मुझे उससे अलग रहना अवश्य है मैं नम्रतापूर्बक बिनय करताहूं कि बादशाहको इस बातपर राज़ी करो कि मेरी निगाह से अपनी पुत्री अलग करे इस बात से मैं उनका बड़ा गुण मानूंगा नहीं तो शाहज़ादी अधिक दुःखित होगी मन्त्री ने जब यह सुना और समझा कि दो दिनमें तो उसकी यह दशा हुई कि मेरा पुत्र भय और दुःखसे बहुत दुबला होगयाहै जो दो चार दिन और शाहज़ादी के साथ सोवेगा तो उसके प्राणपर बनआवेगी अब उचित है इसे शाहज़ादी के पास न जानेदूं आगे समझलियाजावेगा इस बात को अपने मनमें ठान बादशाह के सन्मुख गया और कहा इस दासके पुत्रने वही कहा जो कुछ आपने अपनी पुत्रीसे सुनाथा अब मेरे बिचारानुकूल उचित है कि दूलह और दुलहिनको एक जगह न सुलावें जिससे दोनों कुशल से रहें और आज्ञा दीजिये कि बिवाह की रीतें सम्पूर्ण राज्यमें बन्द की जावें बादशाह इस बातपर राज़ी हुआ और बिवाहके उत्सवके बन्द

होनेके लिये आज्ञा दी घर घर और गली गली में जो मङ्गलाचार होताथा एकही बेर बन्द होगया और यह अशुभ समाचार सुनतेही पुरवाली चिन्तित हुये और कोलाहल पड़गया कि खुशीके बन्द होने का क्या कारणहै फिर सबने सुना कि मन्त्रीका पुत्र बादशाही महल से निकालागया परन्तु अलादीन के सिवाय इसका हेतु किसीको विदित न था जब अलादीन को निश्चय हुआ कि मन्त्री का पुत्र राजमहल से निकालागया तो उसने फिर दीपक को न रगड़ा और उसी तीन महीनेकी अवधिको जो बादशाहने उससे कीथी उसीको गिनतारहा जब वह अवधि बीती तो अलादीन ने अपनी माताको बादशाहके निकट भेजा कि वह उसकी प्रतिज्ञा की सुधि कराये वह दरबारमें जाके बादशाह के सन्मुख खड़ीहुई बादशाह ने उसे पहिचाना उसने चाहा कि वही प्रतिज्ञा स्मरण कराये इतने में मन्त्री कोई बात पूछनेके लिये बादशाहके निकट गया बादशाहने उसे ठहराके कहा वह स्त्री जिसने बहुमूल्य रत्न मुझे भेंट दिये थे फिर आई है उसे आगे बुलाके पूछ कि वह क्या कहती है मन्त्री ने चोबदार से कहा कि वह स्त्री जो सन्मुख खड़ीहै आगे बुलाला चोबदार उसे आगे लेगया उसने पूर्ववत् शीशझुकाय तख़्तका पाया चूमा बादशाह ने उससे पूछा तू क्या मांगती है उसने बिनयकी मैं आपको वह प्रतिज्ञा स्मरण करानेको आईहूं जो आपने कहाथा कि आप मेरे पुत्र के साथ जिसका नाम अलादीन है तीन महीनेके पश्चात् अपनी कन्या से बिवाह करेंगे अब वह अवधि बीतगई इसलिये आपको सुधि दिलाने आईहूं यद्यपि बादशाह उस बृद्धाको देखतेही जानगयाथा कि शाहज़ादीके मांगनेके लिये आई है और अब भी उसके कहनेसे यही बात मालूम हुई तो मनमें अतिचिन्तित हुआ कि इस स्त्री को क्योंकर साफ़ उत्तरदूं क्योंकि इससे बचन हारचुका हूं अब जो इन्कार करूं तो बड़ी अशीलता है जो राज़ी होऊं तो क्योंकर ऐसे अप्रकट मनुष्यको जिसे देखा भी नहीं अपनी पुत्री देडालूं इस बिषय में मन्त्रीसे सम्मत पूछा उसने बिनय की आपने जो कुछ सोचाहै सो सत्यहै यह बात कुछ कठिन नहीं आप अलादीन

को कहला भेजिये कि मेरी पुत्री का मेहर बड़ा है जो तुझमें उसके देने की सामर्थ्यहो तो मेरी कन्या को ब्याहलेजा नहीं तो फिर कभी नाम मत लीजियो जो और बड़ा काम आप समझें और वह ऐसा हो कि उससे पूरा न होसके उसीको आप कहिये बादशाहको यह सम्मत बहुत पसन्द हुआ और अलादीनकी मातासे कहनेलगा हे सुन्दरी! मैं तुझे बचन देचुकाहूं अपने बाक्य से नहीं फिरता मैं तैयारहूं कि अपनी पुत्री तेरे पुत्रको ब्याहदूं परन्तु शाहज़ादीने एक प्रतिज्ञा की है जो तेरा पुत्र उसे पूराकरे तो ब्याहदूं अब तू जाके उससे कह कि बादशाह अपने बचन पर दृढ़ है परन्तु तू पचास पात्र स्वर्ण के जिनमें उसी प्रकार के रत्न भरे हुये हों जो पहिले तुमने भेंट दिये थे चालीस समआयु हब्शियों के शिरों पर रक्खे और प्रति हब्शी के आगे एक एक गुलाम महासुन्दर और सुनहले बस्त्र और रत्न पहिरेहुये मेरे समीप भेजे सो तू जाकर यह प्रतिज्ञा उससे बर्णन कर जो कुछ इसका उत्तर दे मुझसे शीघ्र आनकर कह मैं तेरी राह देखतारहूंगा यह सुन वह तख़्त के पाये को चूम अपने घरकी ओर पधारी और मार्गभर अपने पुत्र की निर्बुद्धिता पर हँसती थी कि अब उसको क्योंकर वह रंग बरंगे शीशेके टुकड़े प्राप्त होंगे जो वह बादशाहको भेंटदेगा अब तो वह तहख़ाना भी तुपगया होगा और कहां से इतने दास हब्शी श्वेत रंगके और सुन्दर पावेगा उसने ब्यर्थ मुझे आवागमन का दुःख दिया यही चिन्तना करतीहुई अपने घरको पहुँची और अलादीन से कहनेलगी क्यों बेटा मैं तुझ से कहतीथी कि शाहज़ादीकी प्रीति अपने मनसे दूर कर यद्यपि बादशाहने अपनी सुशीलता से मुझ पर कृपा कीथी जिससे निश्चयथा कि तुझे अपनी पुत्री देडालेगा और तेरी मनोकामना सिद्ध होगी परन्तु मन्त्री ने उसे बहकाया क्योंकि जब मैं बादशाह के सन्मुख गई तो उसने मुझे अपने निकट बुलाय पूछा तू क्या मांगती है मैंने बिनयकी कि पूर्व में मैंने आपकी सेवामें अमुक बिषयके लिये कहाथा सो आपने स्वीकारकर कहाथा कि तीन महीने के पीछे बदरबदौरा का बिवाह तेरे पुत्रसे करदूंगा

अब वह अवधि बीतगई इस कारण मैं सुधि करानेको आईहूं उसने ऐसी एक शर्त मुझसे कही जिसे प्रलयतक तू पूरा न करसकेगा फिर उसने वही शर्त बिस्तारपूर्वक कहदी उसने कहा हे माता! यह कुछ कठिन नहीं बादशाहने धोखाखाया कि इसी प्रणपर अपनी पुत्रीको देता है यह जो उसने मांगे हैं उस शाहज़ादी की अपेक्षा जो रूप अनूपमें अद्वितीय है अतितुच्छ हैं मैंतो नाम शर्त का सुनकर उड़ गया था कि कोई कठिन होगी अब देखो क्योंकर यह बस्तु मुझे प्राप्त होती है अब तुम भोजन पकाओ वह यह सुन बाज़ारसे पाक मोल लेनेगई अलादीन ने दीपकको उतार रगड़ा तो वही बीर प्रकट भया और नम्रता की बातें कहने लगा अलादीन ने कहा बादशाह अपनी पुत्री देनेको तैयारहै परन्तु वह पहिले चालीसपात्र उन्हीं फलों के भरेहुये उस बाटिकासे जहां से मैं इस दीपकको लायाथा मांगताहै और चालीस दास हब्शी समआयु वैसे रत्नमयी पात्रों को शिरपर रख लावें और प्रति हब्शी के आगे एक २ हब्शी समआयु श्वेत बर्ण महासुन्दर भारी सुनहले बस्त्र पहिने हुयेहों अब तू जाके यह सब पदार्थ ला कि मैं उसे दरबार उठजाने के पहिले बादशाहके समीप भेजदूं वीरने अलादीन से कहा बहुत अच्छा अभी लाया तिसके उपरान्त थोड़े काल के पीछे वह सुनहले भाजन रत्नमय समआयु हब्शियोंके शीशपर धरे और चालीस दास श्वेत बर्ण महारूपवान् भारी भारी सुनहले स्वच्छ बस्त्र पहिरेहुये लाके प्रकट भया और अनेक प्रकार के महासुन्दर बड़े बड़े मोती हीरे और बिबिध भांति के मणि उन्हीं रत्नों के सदृश जो उसने पहिले भेंट दिये थे लाया और प्रतिपात्रपर तोड़ेपोश रुपहली और उनपर सुनहली चित्रकारियांथीं पड़ाथा जब वह बीर इतने अनुचरादिक लाया तो उस के छोटेसे घर में वे पात्र धूप पड़ने से ऐसे झलकते दिखाई देते थे मानो पुष्पबाटिका अनेक भांति के रंगबरंगे सुन्दर फूलों से खिल रहीहै फिर बीरने अलादीनसे कहा जो कुछ और भी आज्ञा हो तो प्रतिपालनकरूं उसने कहा अब तुम्हारा कुछ काम नहीं वह सुन गुप्त होगया जब अलादीनकी माता बाज़ारसे आई तो यह चरित्र

देख बिस्मितहुई फिर उसने वह भोजन जो बाज़ार से लाईथी रख कर चाहा कि अपने मुखसे वस्त्र उतार बैठे इतनेमें अलादीनने कहा हे माता! अवसर हाथसे जाताहै तुम तुरन्त यह पदार्थ दरबार के उठजानेके पहिले ही बादशाहके निकट पहुँचादो कि बादशाह मेरी प्रवीणता देख मुझे अपनी पुत्री के विवाहके योग्य जाने उसने कहा बहुत अच्छा तू यह पात्र यथाक्रम करदे और हरएक पात्रके आगे सफ़ेद रंगके हब्शी होलें जब यह पात्र अलादीन के घरसे निकले और पीछे पीछे उसकी माता चली तो अलादीन द्वार मूंदकर अपने मकानमें बैठरहा कि देखिये इस भेंटके लेने से बादशाह मुझे दामाद बनाताहै वा नहीं और हर एक हब्शी ऐसे स्वच्छ आभूषण पहिने था कि एकएक करोड़ रुपयेका माल समझना चाहिये जब वह सब बादशाह के महलकी ओर चले तो पुरबासी क्या देखतेहैं कि सूधी पंक्ति काले और सफ़ेद दासों की जाती है न तो उनकी दृष्टि चित्रित ढकनों और न उन सुनहले वस्त्र और रत्नोंपर ठहरती उनके देखने को हज़ारों तमाशाई चारोंओर से एकत्र होगये फिर जब वह बादशाहकी सभाके समीप पहुँचे तो हलकारोंने यह समाचार जाय बादशाह को सुनाया उसने आज्ञा दी कि उन सब को मेरे सन्मुख लाओ वह अस्सी दास दो पंक्ति बांधकर बादशाह के सन्मुख गये जब तख़्त के समीप पहुँचे तो अर्धगोलाकारके सदृश बादशाही तख़्तके आगे खड़े हुये फिर अनुचरोंने पात्रों परसे तोड़ेपोश उतार लिये और हाथ बांध तख़्त के आगे खड़े हुये फिर अलादीनकी माताभी बादशाह के सन्मुख आई और धरती चूम बिनय करनेलगी कि अलादीनने आपको दण्डवत्कर कहलाभेजा है यदि यह थोड़ा तोहफ़ा जो आपके योग्य नहीं पर आशा रखताहूं कि कृपा करके आप इसे स्वीकार कीजिये बादशाह वह सब बस्तु और दास भलीभांति देख आश्चर्यमें हुआ और मन्त्रीसे कहा जो मनुष्य ऐसी अलभ्य बस्तुके देनेकी सामर्थ्य रखताहो वह तेरे विचार में इस योग्य है कि मेरी पुत्री उसे ब्याहीजावे वा नहीं उसने डाहसे चाहा कि बादशाहका मन उसकी ओरसे हटावे सो बहुतसे

उपाय और यत्न किये परन्तु बादशाह ने उसका कुछ भी कहना न माना और भेंट बहुत पसन्द कर स्वीकारकी और अलादीन की माता से कहा तुम जाके अपने पुत्रको यहां लाओ मुझे उसके देखने की बहुत लालसा है और जो मैंने प्रतिज्ञा की है उसे पूर्ण करूंगा अलादीन की माता यह शुभ समाचार सुन अलादीन के बुलानेको घर दौड़ीगई और उधर बादशाह दरबारियोंको बिदाकर अपने महल में गया और अपनी पुत्रीके सेवकों को आज्ञा दी कि वह सब पात्र मेरी पुत्रीके मकानमें लेजाओ और आपभी उन रत्नोंके देखनेको वहीं गया और उन अस्सी गुलामोंको अपनी पुत्रीके घर में बुलवाय बराबर खड़ा किया शाहज़ादी दरवाज़ेकी दरारसे ऐसे पदार्थ और गुलामों को देख बिस्मित हुई जब अलादीनकी माता घरमें पहुँची तो अलादीन से कहा बेटा धन्य है तेरी सौगात बाद-शाहने पसन्दकी और सबने एकमत होय कहा कि तू योग्य है कि शाहज़ादी बदरबदौर तुझे ब्याही जावे सो बादशाहनेभी तुझे बु-लाया है कि अपनी पुत्रीका हाथ तेरे हाथ में पकड़ादे अलादीन यह शुभ समाचार सुन महाप्रसन्न हुआ और माता से कहनेलगा कुछ ठहरजा मैं अभी चलताहूं यह कह मकान में गया और दीपक को निकाल रगड़ा रगड़तेही वह बीर प्रकट हुआ और उसी बिधि से अधीनता करनेलगा अलादीनने कहा हे बीर ! मैं हम्माम किया चाहताहूं तू एक कपड़ोंका जोड़ा बादशाहोंके पहिरनेका मेरे डील के बराबर तुरन्त ला वह बीर इस बात के सुनतेही उसका हाथ प-कड़ एक संगमर्मर के हम्माम में जो बहुत सुन्दर और अनेक बिधिके रंगोंसे चित्रित और अलंकृतथा लेगया अलादीन तोशेख़ाने में वस्त्र उतार कर थोड़े गर्म जलमें गया और भलेप्रकार मल मल नहाया और भांति भांतिकी सुगन्धें अपनी देहमें मलीं और वहांसे निकल उसी तोशेख़ानेमें जहां पहिले वस्त्र उतारेथे आया वहां उसने अपने शरीरको पहिलेसे गोरा और कोमल पाया और मुख उसका चन्द्रमा के सदृश दमकनेलगा और सब शरीरके जोड़ोंमें चुस्ती और चा-लाकी आगई और उस स्थानमें एक जोड़ा बहुत भारी रक्खाहुआ

देखा सो उसने बीरकी सहायतासे उसे पहिना और प्रतिबस्त्रको देख आश्चर्यमें हुआ जब पहिनचुका तो बीरने उसे घरमें पहुँचाकर पूछा कुछ और आवश्यकताहो तो उसकीभी आज्ञा दो मैं उसको यहां लेआऊं उसने कहा एक घोड़ा बहुत सुन्दर ला कि वैसा किसी बादशाहकी अश्वशाला में न हो और उसका साज़ सामान एक करोड़ रुपयेकाहो इसके बिशेष बारह गुलाम मुख्य मेरी सेवाके लिये मेरे दहिने बायें और मेरे पीछे रहें और बीस सेवक मेरे आगे चलें और छः बांदियां अतिस्वच्छ और उज्ज्वल बस्त्र पहिने मेरी माताकी सेवाके लिये और दो लौंड़ियां और दो स्वच्छ जोड़े मेरी प्रिया और उसकी माताके लिये और दश तोड़े अशरफ़ियोंके मेरे वास्ते ला वह यह आज्ञा पातेही गुप्त हुआ एक क्षण पीछे वह सब बस्तु ले आया अलादीनने चार तोड़े तो अपनी माताको दिये कि आवश्यकता पर बादशाहके मकान में काम आवें और छः तोड़े छः दासों को देकर कहा तुम मेरे घरसे बादशाह के मकान तक मुट्ठीभरभर अशरफ़ियां भिक्षुकोंको फेंकियो और तीन बाईं ओर और तीन दाहिनी ओर रहना और बीस आगे २ चलना और छः बांदियां अपनी मांको देकर कहा कि यह दासियां तुम्हारी सेवाके निमित्तहैं और दो भारी जोड़े दुलहिन और उसकी माताके लिये देना फिर बीरको बिदा किया कि अब तुम्हारा कुछ काम नहीं आगे जो कुछ होगा तुमसे कहूंगा यह सुन वह गुप्त हुआ अलादीन ने एक दाससे पहिले अपने आगमनका समाचार बादशाहको कहला भेजा जब वह दास बादशाह के सन्मुख गया और यह पैग़ाम अलादीन के पास लाया कि बादशाह तुम्हारी बाट देखते हैं शीघ्र चलिये तो अलादीन घोड़ेपर सवार हुआ और सेवक उसके दायें बायें और आगे पीछे हुये यद्यपि अलादीन जन्मभर घोड़ेपर सवार न हुआ था तथापि घोड़ेपर सवारों के सदृश सवार होकर दौड़ाता कुदाता गलियोंसे निकल बाज़ार में पहुँचा हज़ारोंलोग चहुँओर से देखने को इकट्ठेहुये और वह छः दास अलादीनके दोनों ओरसे मुट्ठी भर भर अशरफ़ियां फेंकनेलगे भिक्षुकों ने अलादीनकी उदारता देख

आश्चर्य किया और परस्पर कहनेलगे आजतक कोई मनुष्य ऐसा
जाता इस मार्गसे नहीं गया और पुरबासी जिन्होंने अलादीन को
आगे फटेहालों से देखाथा इस सजधजसे उसे देखकर न पहिचान
सके और बिस्मिल थे कि यह कौन नवीन मनुष्य इस धूमधामसे
जाताहै जिसने बादशाहको ऐसी सौगात भेजी और आपभी ऐसेही
वस्त्र पहिने है कि कभी हमने बादशाह को पहिने नहीं देखा और
घोड़ाभी वैसाही बहुमोल्य जिसका साज और सामान भी बहुमोल्य
रत्नोंसे जड़ाहुआ है निदान यह समाचार सुनकर कि बादशाह ने
अपनी पुत्रीका बिवाह इससे ठहराया है अतिप्रसन्न हुये और एक-
मत होय कहनेलगे यह मनुष्य निस्सन्देह शाहज़ादीके बिवाह के
योग्यहै फिर जब बादशाह के महलमें पहुँचा और उधर से वज़ीर
आज़म और देशों देशों के सरदार उसकी अगवानी को आये
अलादीन ने दरवाज़ेपर पहुँचकर चाहा कि घोड़ेपर से उतरें पर
सबोंने उसे उतरने से मना किया और आगेभी उसे सवार लेगये
जब वह बादशाहके निकट पहुँचा तो वहांके लोग उसे घोड़े से उ-
तार दो पंक्तियों के मध्यमें बादशाह के समीप लेगये बादशाह उस
का स्वरूप और आभूषण वस्त्र देख अतिप्रसन्न भया अलादीनने
चाहा कि बादशाह के चरणोंपर गिरे परन्तु बादशाहने हाथ पकड़
तख़्तपर उसे चढ़ालिया और अपने और मन्त्रीके मध्यमें उसे बै-
ठाया अलादीन बादशाहसे कहनेलगा मैं यहींका बासीहूं और बदर-
बदौर के मोहसे मेरा जीना कठिनहै बादशाहने उसे कण्ठसे लगाय
उत्तर दिया हे पुत्र ! क्या तूने मुझे अन्यायी समझा और मेरे ब-
चनपर बिश्वास नहीं रखते और एक क्षणके लिये ऐसा कहतेहो मुझे
तुम्हारे प्राण बहुत प्यारे हैं जैसा कि मैं तुझे सुनता था वैसाही
पाया इतना कह बादशाह ने सैनकी तो चहुँ ओर से ढोल नफ़ीरी
और दमामे बजनेलगे इसके अनन्तर बादशाह अलादीन को अ-
पने महल में लेगया जहां सब असबाब न्योतेका तैयारथा सो उन
दोनोंने इकट्ठे बैठकर भोजन किया बादशाह क्षण पल पर अला-
दीनको देखता और हरतरहकी बातें उससे करतारहा निदान जब

तक वह भोजन करते रहे तबतक परस्पर बातें करते रहे बादशाह ने अलादीनको बाचालतामें बहुत चतुर पाया जब भोजनसे निश्चिन्त हुये तो बादशाह ने नगर के क़ाज़ी को बुलाया और निकाहनामा लिखने की आज्ञादी फिर मन्त्री और अधिष्ठाताओंके सामने अलादीन से बार्त्ता की अलादीनने ऐसा अच्छा उत्तर दिया कि सबने उसे पसन्द किया और उसकी बुद्धि और चातुर्यता और बाचालतापर सबने धन्य २ कहा जब बिवाह होचुका तो बादशाहने अलादीनसे कहा जो चाहो तो आज के दिन इसी महल में रहो कि सब बिवाहकी रीतें कीजावें उसने विनयकी कि यह बात मेरी ख़ुशी और इच्छापर रखिये मैं एक बहुत ख़ूबसूरत महल अपनी प्रियाके लिये बनवाया चाहताहूं बादशाहने कहा मेरे महल के सामने बड़ाभारी मैदान है जहां कहीं तुम चाहो अपना महल बनवाओ यह कह बादशाह ने हृदयसे उसे लगाय बिदा किया वह घोड़ेपर सवारहो उसी बिधि से अशरफ़ियां लुटाता हुआ गया और चारों ओर से धन्य धन्यका शब्द हुआ जब वह अपने घोड़े से उतर घर पहुँचा तो अपने मकान में गया और उस दीपक को रगड़ा तुरन्तही वह बीर प्रकट हुआ और जो वह बचन कहता था कहे अलादीन ने कहा आजतक जो मैंने कहा तूने किया अब मैं कहता हूं कि मेरे वास्ते एक महल अमुक मैदानमें बादशाह के महलके सन्मुख जितना अच्छा और जल्दी बनासके कि मेरी प्रिया उसमें आके रहे और जिस पत्थर का तू चाहे उसी पत्थर का बनाना और उसके ऊपर एक बड़ी बारहदरी गुम्बददार केवल सोने रूपेकी हो और हर तरफ़ छः छः दरवाज़े तैयारकर और उनमें हीरे लालआदिक जड़ियो परन्तु एक दरवाज़ह सादा रखियो उसमें रत्न मत जड़ियो प्रयोजन यह है कि वह बारहदरी ऐसी सुन्दर बने कि वैसी संसार भरमें न हो और मैं चाहताहूं कि आगे उस महल में एक दीवानख़ानाहो और एक बहुत बड़ी स्वच्छ पुष्पबाटिका और रसोईघर और ख़ज़ाना जिसमें असंख्य धन रुपये अशरफ़ीहों और उसमें वस्त्र हरऋतु के तैयारहों और एक अश्वशाला जिसमें अच्छे बहु-

सौल्य घोड़े और साईस और दारोगा समेत रहें और रसोई में बहुतसे रसोइये जो सब भांतिका भोजन पकासकें रहें और असंख्य अनुचरियां मेरी प्रिया की सेवाके लिये इसके बिशेष रहें जो कुछ मैं इस समय वर्णन करनेमें भूलगयाहूं वहभी सब शीघ्रही तैयारकर जब बनाचुके तो मुझसे कहदीजियो जिससमय अलादीनने यह आज्ञा दी उससमय सूर्यास्त होनेवाला था यह सुन बीर गुप्त होगया अलादीन रात्रिको उस महासुन्दरी कोमलाङ्गीकी सुधिमें महाचिन्तित रहा निदान पिछली रात्रिको कुछ उसकी आंखलगी और प्रभातको जागतेही बीरने आयकहा हे स्वामी! महल आपका बनगया चलके उसे देखिये कि तुम्हारी इच्छाके अनुसार बना वा नहीं पुनि वह बीर उसे उठाके क्षणभरमें उस नये महलमें लेगया अलादीनने उसे अपने बिचारके अनुसार पाया और हर मकानको देखा कि ठौर ठौरमें लाखों और करोड़ों रुपयेकी वस्तु लगी है इसके बिशेष उसमें हरप्रकारके दारोगा और काम करनेवाले स्त्री पुरुष लौंड़ीआदिक बहुत उत्तम उत्तम वस्त्र पहिने हुये और सब अपना अपना काम करतेथे और इसी भांति बहुत से कोष खज़ांची समेत देखे जिसमें बड़े बड़े सन्दूक भरेहुये और सुनहली थैलियां और बिबिध भांति की बस्तुओंको यथेच्छ बिद्यमान देखकर अतिप्रसन्न हुआ फिर वह बीर अलादीन को अश्वशाला में लेगया वहां नानाप्रकार के संसार के चुनेहुये घोड़े दारोगा और पालक समेतथे इसके अनन्तर वह उसे तोशेख़ाने में लेगया जहां प्रतिबस्तु आवश्यकताकी बर्तमानथी निदान सब मकान तहख़ानोंसे बालाख़ानोंतक अलादीन ने देखे बिशेष बारहदरी के जिसमें चौबीस दरवाज़े थे और उसमें असबाब और सामान सोने चांदी और चित्रके देख अतिप्रसन्न होय बीर से कहनेलगा जो कुछ मेरा बिचार था उससे मैंने अधिक पाया परन्तु एक बस्तु रहगई है जिसका वर्णन मैंने तुझसे नहीं किया था वह यह है कि एक बड़ाक़ालीन स्वच्छ मख़मलका लाकर बादशाह के महलसे इस घरतक बिछे चौड़ान उसका लम्बाई के समान हो कि बदरबदौर बादशाह से बिदा होती समय उसी क़ालीन पर होके

आवे उसने कहा बहुत अच्छा क्षणमात्र में उसेभी लाताहूं अला-
दीनने थोड़ी देरमें एक क़ालीन उतनाही लम्बा चौड़ा अपने घरसे
राजमन्दिरतक ठीक बिछाहुआ देखा फिर उस बीरने उसे नये म-
हल से उसके घर पहुँचायदिया और उस नये महल के दरवाज़ों
को जो बादशाही महलके सामनेथे खोलदिया द्वारपालकोंने प्रभात
को जब द्वार खोले तो उस मैदान में एक बड़ा बिशाल नया महल
तैयारदेख आश्चर्य किया और अधिकतर उनको इस बातका अ-
चम्भा हुआ कि एक बहुत बड़ा क़ालीन उस नये महल से बाद-
शाहके महल पर्यन्त बिछाहुआ है सो उनके द्वारा सम्पूर्ण महल में
यह बात बिख्यातहुई जब मन्त्री बादशाहके महलमें आया तो उस
ने भी अलादीनका घर देख अचम्भा किया और दौड़के यह समा-
चार बादशाह को दिया कि आपके मन्दिर के सामने बड़ा महल
धूमधाम का दृष्टिपड़ता है पुनि कहनेलगा स्वामी यह सब काम
जादूका जानपड़ता है बादशाह ने कहा ऐसा कदाचित् नहीं होगा
जैसा तुम कहतेहो यह महल अलादीन का है कल के दिन उसने
मुझसे बदरबदौरके अर्थ मन्दिर बनानेकी आज्ञा दीथी उसने अ-
संख्य धन ब्ययकर अतिशीघ्र बनवायाहै वह धनके बल प्रतिदिन
नये महल बनवासक्ता है परन्तु तू ईर्षासे उसके कामों को जादूका
सन्देह करता है यद्यपि दरबार का समय आनपहुँचा था इसलिये
उन्होंने इस बिषय में अधिक बार्त्ता न की और अलादीन अपने
घर पहुँच बीरको बिदा किया और माताको बस्त्र पहिनते देख पूछा
अब बादशाह दरबारसे निश्चिन्त हुआ होगा तुम इन बांदियों के
साथ जिनको बीर लाया था बादशाह के महल में लेजाओ और
दुलहिन को जाके दोनों जोड़े और आभूषणदो फिर कहना कि
बादशाहभी दुलहिनके साथ आकर मेरे भवन को पवित्र करें यह
सुन उसने बादशाहज़ादियों के सदृश स्वच्छ बस्त्र पहिने और दा-
सियां भी अच्छे अच्छे जोड़े पहिन और बुरक़ा मुखपर डाल बाद-
शाह के महल को सिधारीं और अलादीन भी उसी बिधि अश-
रफ़ियां लुटाता अपने नवीन मन्दिर की ओर चला जब अलादीन

की माता बादशाहके दरवाज़े पर पहुँची तो चोबदारों ने आगमन का समाचार बादशाह को पहुँचाया बादशाह ने सुनतेही बाजों के बजनेकी आज्ञादी सो चहुँओरसे खुशी और उत्सव के बाजे बजने लगे जिनसे नगर भरमें खुशी फैलगई ब्यापारियोंने अपनी अपनी दूकानें अलंकृत कर बन्दनवार बांधे और सुन्दर क़ालीन बिछाये और रात्रिको बड़ी रोशनी की कारीगर और नगरबासी अपना अपना काम छोड़ दुलहिनकी सवारी देखनेको उस मैदानमें जो बादशाही महल और अलादीन के महलके मध्यमें था एकत्र हुये और वह नवीन बिचित्र भवन देख आश्चर्य में हुये खोजियोंका सरदार अलादीनकी माताकी अगवानीकर शाहज़ादी के मकानमें लेगया और शाहज़ादीनेभी उसकी अगवानीकर उससे मिल भेंटकी फिर अलादीनकी माता ने बस्त्र और आभूषण उसे दिये और अनुचरियोंने शाहज़ादी को पहिनाये जब वह बस्त्र पहिनचुकी तो बादशाहभी वहीं आया और अलादीनकी माता का मुख खुला देख आश्चर्य में हुआ और मनमें कहने लगा कि मैं जानताथा कि यह बृद्धा होगी परन्तु यहतो अभी तरुण और सुन्दर और बुद्धिमान् है निदान सन्ध्यासमय दुलहिन बादशाह से बिदाहुई और परस्पर कण्ठ लग रोये वह उस दिब्य मन्दिर को पधारी अलादीनकी माता सौ बांदियां लेकर जो बहुत अच्छे चीर पहिनेथीं पीछे उसके होली जब बादशाही महलके बाहर आई तो एक ओरसे सौ सरदार और इतनेही खोजी दूसरी ओर बड़ी धूमधामसे शाहज़ादी के आगे हो लिये इसके पीछे बादशाहके चारसौ दास सुनहली बनातका पटका और रत्नजटित बस्त्राभरण और सुन्दर टोपियां पहिने चले फिर शाहज़ादी और उसके पीछे उनकी अनुचरियां और उन सबके पीछे चार तुरब सिपाहियों के हुये जिनके हाथोंमें प्रकाशके निमित्त एक एक दीपकथा जिसके प्रकाश से दोनों भवनों के मध्य में दिन प्रतीत होता था उस समूह के मध्य में शाहज़ादी चन्द्रबदनी उसी स्वच्छ क़ालीनपर हंसचाल से धीरे धीरे पैदल जाती थी और इधर उस बिचित्र मन्दिरकी डोमनियां छत्तों पर शाहज़ादीके सामने

मुबारकबादी के राग गातीं जिनके ताल और स्वरोंका शब्द दूर दूर पहुँचताथा जब दुलहिन इस सजधजसे उसी बिचित्र भवनमें पहुँची तो अलादीन प्रसन्न हो उसकी कुशल पूछनेचला अलादीन की माता ने उसे पहिचनवाया क्योंकि सैकड़ों बांदियां अच्छे २ उत्तम उत्तम बस्त्र पहिनेथीं निदान जब दूल्हा और दुलहिन ने परस्पर भेंट की तो शाहज़ादी अलादीन की सुन्दरताको देख महाप्रसन्न हुई और अलादीनने अतिनम्र हो उससे कहा अहो मेरे भाग्य! तुम ऐसी कोमलाङ्गी शाहज़ादी ने मुझ ऐसे अभागे के घरपर कृपाकी और ईश्वर ने संसार भरकी सुन्दरता तुम्हीको दीहै उसने कहा हे शाहज़ादे! मैं अपने पिताके अधीन और उनकी आज्ञापालक थी जो कुछ उन्होंने मेरे वास्ते बिचारा मैंने उसे स्वीकार किया परन्तु अब जो मैंने आपको अपने नेत्रों से देखा तो मन से प्रसन्न हुई अलादीन इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ और उसका खड़ारहना उचित न समझा क्योंकि वह इतनी दूरके चलने से थकगईथी इस लिये उसका हाथ चूम बारहदरी में जिसमें असंख्य मोमीबत्तियां काफ़ूरी जलतीं और असंख्य दासियां बिद्यमानथीं लेगया वहां भांति भांति के भोजनों के पात्र बिछे हुये थे और उनपर सुनहली रुपहली रकाबियां स्थान स्थान पर चुनी हुईं और अन्य भाजन सम्पूर्ण सुनहले और सुन्दर बनेहुये उचित उचित स्थानोंपर रक्खे हुये थे और वह बारहदरी और मकानों से बहुत अच्छी बनी हुई और करोड़ों रुपयेकी बस्तुसे अलंकृत और शोभायमानथी शाह-ज़ादी उसे देख अपने पति से कहनेलगी कि मैं यह जानतीथी कि मेरे पिताके महलके सदृश संसारमें कोई महल न होगा परन्तु इन मकानों के बिशेष कर इस बारहदरी के सामने बादशाह के महल तुच्छहैं फिर अलादीन ने उसे भोजनपर बैठाया और आप दूसरी ओर उसके सन्मुख हो बैठा और एक ओर उसकी माता बैठगई शाहज़ादी के बैठतेही सुन्दर गानेवाली उत्तम उत्तम साज़ बजाने लगीं और स्वर मिलाय मिलाय मीठे शब्दसे गान करनेलगीं जब भोजन से सुचित्त हुये शाहज़ादी कहनेलगी न तो मैंने जन्मभर

चित्र अलादीन के जादू के महल का और अफ़्रीक़ी को चिराग़ लेकर आना ।।
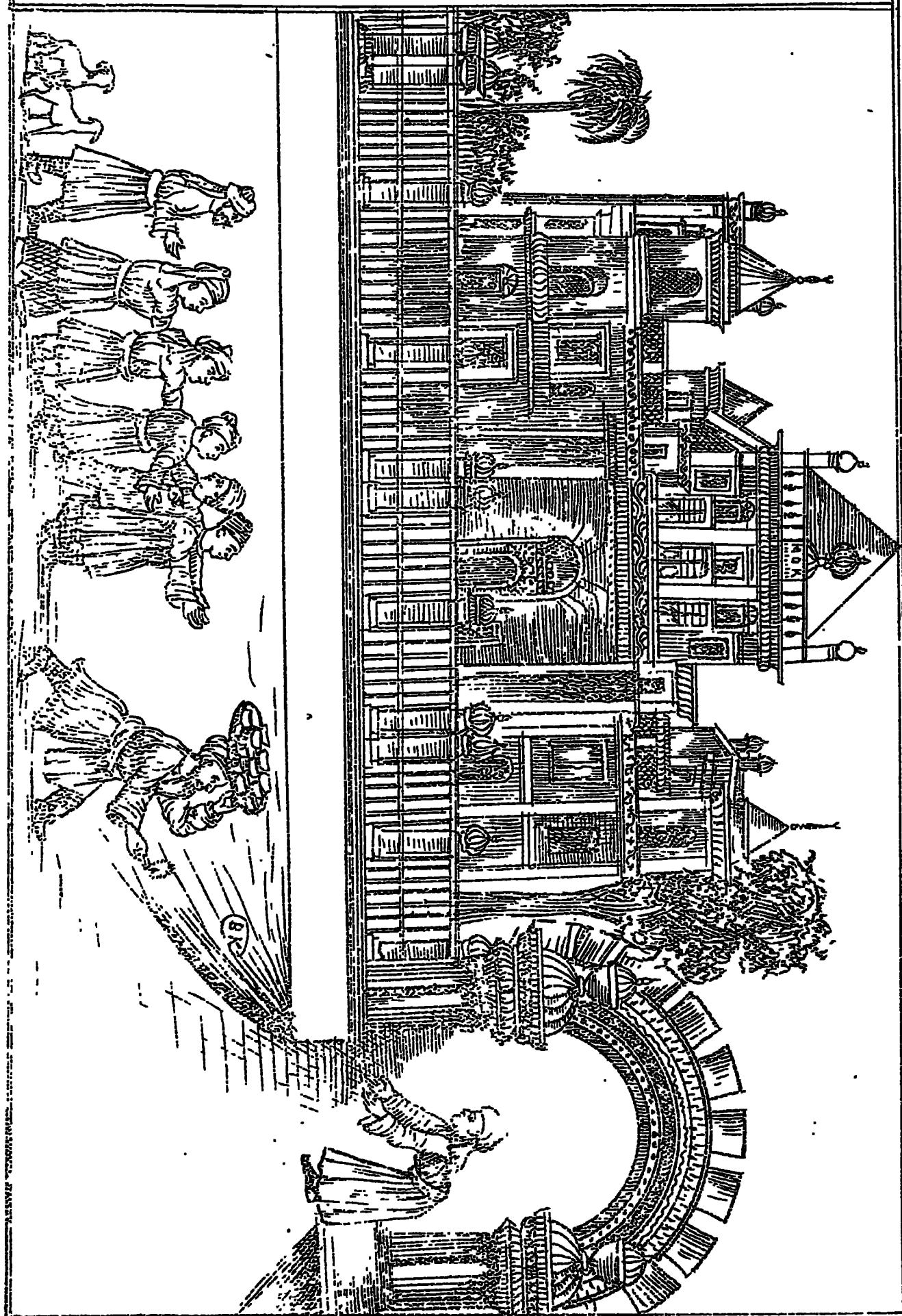
ऐसे साज़ सुने और न गाना वह यह न जानती थी कि यह गाय-
नियां अप्सराहैं जिन्हें बिचित्र दीपकका बीर पसन्द करके लायाहै
इतने में भोजन के पात्र झटपट उठगये और एक समूह नाचने-
वालोंका जिनमें स्त्री और पुरुष दोनोंथे आया और भांति भांति से
नृत्य किया और बिचित्र नक़लें उस नगरकी रीति के अनुसार कीं
जब इसी तरह आधी रात बीती तो वहांकी रीतिके अनुसार अला-
दीन और शाहज़ादी दोनों नाचे क्योंकि यह एक चीन में प्राचीन
रीतिथी कि दूलह दुलहिन आपभी नाचते निदान जब यह सब
रीतें होचुकीं तो अलादीन अपनी स्त्रीको सोनेके मकान में लेगया
वहां लौंड़ियोंने दुलहिनको रात्रिके बस्त्र पहिनाये और उसे छपरखट
में लेगईं और उसी भांति दासियोंने अलादीनके बस्त्र उतार सोनेके
कपड़े पहिनाये और सब वहांसे निकल आईं अलादीन रात्रि भर
आनन्दपूर्वक सोतारहा दूसरे दिन प्रभात को अलादीन जागा तो
बांदियां स्वच्छ बस्त्र उसके लिये लाईं यद्यपि वह कपड़ों का जोड़ा
पहिले दिनसे कुछ रंगतमें भिन्नथा परन्तु तैयारी उसकी वैसेही थी
और एक घोड़ाभी उसकी सवारीके लिये लाया सो अलादीन कपड़े
पहिन और बिजली के सदृश गतिके अश्वपर सवारहो बादशाहके
महलकी ओर चला एक बड़ा समूह दासों का उसके साथ हुआ
बादशाहने पहिले दिनके समान उससे भेंटकी और अपने तख़्त
पर अपने पास उसे बैठाया और भोजन मँगवाया कि अलादीनको
खिलावे अलादीनने बिनयकी आजके दिन मुझे न खिलाइये आज
आप मेरे घरमें सिधारिये अब मैं आपके लेनेको आयाहूं कि आप
इस किंकर के महल में मन्त्री आदि समेत चलके भोजन कीजिये
बादशाहने स्वीकार किया और सम्बन्ध के कारण इस भांति चला
कि दाहिनी ओर उसके अलादीन और बाईं ओर राजमन्त्री और
उनके पीछे सम्पूर्ण सभासद् और सबके आगे खोजियों का सरदार
निदान जब नवीन महलमें गये हरएक मकान के देखने से उनको
अधिक आश्चर्य होताजाता था यहांतक कि बारहदरीमें जहां अला-
दीन ने उनके बैठने की तैयारी की थी पहुँचा बादशाह उसकी

चित्रकारी और सुन्दरताको देख अधिक प्रसन्न हुआ कि उसमें हीरे और रत्नादिक भीतर बाहर जड़ेथे थोड़ीदेर पीछे बादशाहने मन्त्रीसे कहा ऐसा मन्दिर हमारे राज्यभर में नहीं और ऐसा स्वच्छ महल मैंने अबतक नहीं देखा उसने बिनयकी परसोंतक बिवाहके पहिले इस महलका चिह्न भी नहीं था केवल एक रात्रिमें यह ऐसा बिशाल और सुन्दर महल बनके तैयार होगया सो मैंने पहिलेही तैयार होनेकी ख़बर दीथी बादशाह ने कहा सत्य है यह बात मुझे भूली नहीं परन्तु मैं यह न समझाथा कि ऐसा उत्तम घर बनाहोगा जिस में संगमर्मर के बदले सुनहली और रुपहली ईंटें लगीहैं और सुन्दर द्वारों में लोहे और पीतलके बदले अनमोल रत्नादिक जड़े हैं इतने में दरवाज़ों को देखनेलगा सो उनमें केवल तेईस दरवाज़े जड़ाऊथे और चौबीसवां सादा था इससे अति आश्चर्य में होकर मन्त्रीसे कहनेलगा यद्यपि बारहदरी और इस मन्दिर में रत्न जड़े हैं पर एक दरवाज़ा सादा क्यों रहगया उसने कहा मालूम होताहै कि अलादीनको इसके बनवानेका अवकाश नहीं मिला होगा आगे उसे तैयार करावेगा सामान इसका उसके पास होगा जब चाहेगा बनवालेगा अलादीन उस समय किसी कामको गया था जब उस कामको करके बादशाहके पास आया तो बादशाहने अलादीन से पूछा तुम्हारी बारहदरी संसारभरमें अद्भुतहै परन्तु इसका क्या कारण है कि तुमने एक दरवाज़ा सादा रक्खा यातो कारीगर भूलगया वा उसके बनवाने का सामान नहीं निकला अलादीन ने कहा यह कोई कारण उसके सादा रहनेका नहीं किन्तु मेरीही आज्ञा से उस ने दरवाज़ेको सादा रक्खा इसलिये दया करके आप बनवा दीजिये बादशाह ने कहा जो तुम्हारी यही इच्छा है तो इसीकी तैयारी हो जावेगी जितने रत्न दरकारहों मैं दूंगा इतना कह उसने आज्ञा दी जितने चतुर रत्नपारखी इस नगर में हों सब आवें जब बादशाह बारहदरीसे नीचे उतरा तो अलादीन बादशाहको मकानमें लेगया जहां अपनी प्रियाको भोजन करायाथा एक क्षण पीछे वह चन्द्रमुखी भी आई बादशाह ने उसे बहुत प्रसन्न पाया वहां नानाभांति के

सुवर्ण और हीरोंके पात्र बिछेथे एक ठौर पर बदरबदौरा और अलादीन बादशाह समेत बैठे और दूसरी जगह मन्त्री आदिक सम्पूर्ण अधिष्ठाता बैठकर रुचिपूर्वक भोजन करनेलगे जब बादशाह भोजन से निश्चिन्त हुआ तो सब भोजनोंकी प्रशंसाकर कहने लगा कि मैंने कभी ऐसे स्वादिष्ठ भोजन नहीं चक्खे फिर बारहदरी के चहुँ ओर नाचरंग होनेलगा बादशाह सुनके महाप्रसन्न हुआ जब सब काम होचुके तो इतनेमें मन्त्रीने बादशाहसे बिनयकी कि रत्नपारखी आगये हैं बादशाहने उनको बारहदरी में लेजाके किवाड़ दिखाये और कहनेलगा कि मैं चाहताहूं कि यह दरवाज़ाभी औरों के समान रत्नोंसे जड़ाजावे तुम सब दरवाज़ोंका काम अच्छी तरह देखो और चौबीसवें को भी शीघ्र बनाओ उन्होंने उसे भलीभांति देख कहा हम आपके प्रताप से बनासक्ते हैं परन्तु ऐसे रत्न हमारे पास नहीं बादशाह ने कहा जितने रत्न तुमको आवश्यक होंगे मैं दूंगा जब मैं अपने महलमें जाऊं तुम मेरे पास आना मैं तुमको बहुतसे रत्न दिखाऊंगा उनमेंसे अच्छे अच्छे चुनलेना निदान बादशाह अपने भवनमें आया उन रत्नपारखियोंको बुलाय अपने जवाहिरात जो अलादीनकी माताने भेंट दियेथे दिये उन सबने एक महीने में उन सबको उस दरवाज़ेपर जड़दिया तोभी आधा दरवाज़ा न बना जब अलादीनने देखा कि सब रत्न मन्त्री और बादशाहके ख़र्च हो गये और वह दरवाज़ा औरों के सदृश तैयार न होसका तब उन कारीगरों से कहनेलगा यह सब रत्न बादशाह के जो तुमने लगाये हैं उखाड़के लेजाओ बादशाह और मन्त्रीको दो वह थोड़ेही काल में उखाड़के लेगये जब अलादीन एकान्त में हुआ तो उसी बिचित्र दीपकको रगड़ा तो बीर प्रकट हुआ और वही अधीनता के बचन कहे अलादीन कहनेलगा हे वीर! मैंने तुझसे आके कहा था कि चौबीसवें दरवाज़ेको तू सादा रखियो सो तूने वैसाही कियाथा अब मैं तुझे आज्ञा देताहूं कि तू उस द्वारको भी रत्नों से जड़ दे बीर यह सुनतेही गुप्त होगया और अलादीनभी वहांसे कहीं चलागया फिर जो कोई क्षणके पीछे आया तो क्या देखता है कि वहभी औरों के

सदृश बनगया है फिर उन्हीं कारीगरोंने जाय बादशाह से यह स-म्पूर्ण समाचार कहसुनाया और वह रत्न जो बादशाह और मन्त्री ने दिये थे उसके सन्मुख लेगये बादशाह यह सुनतेही सवार हुआ और अलादीन के महल में शीघ्रही पहुँचकर घोड़े से उतरा और अलादीनको ख़बर दिये बिना बारहदरीपर चढ़गया जब अलादीन ने सुना कि बादशाह अकस्मात् आही पहुँचा तो घबरा के चाहा कि उसकी अगवानी करें परन्तु बादशाहने उसे आनेका अवसर न दिया और तुरन्तही उस स्थानपर जहां अलादीन था पहुँच गया और कहनेलगा हे पुत्र ! मैं केवल यह हाल पूछने आयाहूं कि तुमने क्यों इस किवाड़को बनने न दिया और मेरे कारीगरोंको रत्नों समेत क्यों लौटाया इसका क्या कारणहै उसनेकहा आपने पहिले उस दर-वाज़ेको सादा देखाथा परन्तु अब वहभी और दरवाज़ोंके सदृश बन गयाहै बादशाहने जाकर देखा कि वह दरवाज़ा औरोंके समान बना हुआहै अन्तको न पहिंचानसका कि सादा किवाड़ कौनसाथा तब उसने अतिहर्षसे अलादीन को कण्ठसे लगाया और उसके भाल को चूमा और आश्चर्यितहो यह कहनेलगा हे पुत्र ! तुम अद्भुत मनुष्यहो तुमने बराबर ऐसे काम किये जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहरहैं तुम्हारे समान जगत् में कोई मनुष्य न होगा अलादीनने बादशाह की प्रशंसा करने से अपना शिर नीचे झुकालिया और कहनेलगा यह सब आपकी बड़ी कृपाहै जो आपने ऐसा कहा नहीं तो मुझ ऐसे अयोग्यके बनालेनेकी क्या सामर्थ्यथी इतना सुन वह तो चलागया और अपने भवनमें पहुँच राजमन्त्रीसे यह सब काम कहे मन्त्रीने यह सब काम जादूके समझकर बिनयकी कि यह सब काम जादूके मालूम होतेहैं सो ऐसाही इस दासने पहिलेभी बिनय कियाथा बादशाहने कहा तू ईर्षासे कहताहै अभी तू मेरी पुत्रीका बिवाह अपने पुत्रके साथ होना भूला नहीं मन्त्री समझा कि बाद-शाह महामूर्ख और धोखेमें है कि इस बिषयमें किसीकी बात नहीं मानता फिर कभी इस बिषयमें उसने बार्त्ता न की बादशाह बहुधा प्रभात को जागके उस सुन्दर मन्दिरको देखता और प्रसन्न होता

और अलादीनने यह नियम कियाथा कि सप्ताहमें एक दिन बाज़ार में जाता और हरतरफ़की सैर करता कभी कभी मस्जिदमें निमाज़ पढ़नेजाता और कभी कभी मन्त्रीकी भेंटको जाता और कभी अपने बिचित्र भवन में दरबार करता और कदापि अमीरों और सरदारों के घरमें जाता और वहभी उसके मन्दिरमें आकर भोजन करते और अलादीनने दो दासोंको इस कामके लिये नियत कियाथा कि जब मैं सवार होकर बाहर जाऊँ तो तुम मार्गमें दोनों ओरसे अशर्फ़ियां लुटाना इसलिये बड़ा समूह मनुष्योंका उसकी सवारीके चहुँ ओर इकट्ठा होजाता और बहुतसे लोग उसकी सवारी और धूमधाम के देखनेको आते और जो भिक्षुक और निर्धन शिथिल और निर्बलथे और उसके मन्दिरतक पहुँचनेकी सामर्थ्य न रखतेथे वह सब नगरमें ही रुपये पाते इसके बिशेष प्रतिसप्ताह में वह एकबेर शिकार को जाता और कभी नगरके बाहर शिकार खेल शीघ्रही चलाआता और कभी नगरसे बहुत दूर निकल जाता और नगरनिवासियोंको अपनी उदारता से धनवान् बनादेता उसकी उदारतासे पुरबासी उसे आशीर्बाद दियाकरते और ऐसा प्यारा जानते कि उसके शिर की सौगन्दखाते और अलादीन बादशाहको भी अपनेसे प्रसन्न रखता इन गुणोंके बिशेष महापुरुषार्थीथा और चाहताथा कि इस गुणसे भी बादशाह को ज्ञात करें दैवयोगसे क्या सुना कि बादशाह किसी नगरके लेनेके लिये सेना इकट्ठी करताहै यह सुनतेही अलादीन ने बादशाहसे कहा इस युद्धको मेरी मतिपर रखिये और मुझको उस का अधिकार दीजिये बादशाहने स्वीकार किया अलादीन कुछ सेना साथ ले अकस्मात् नगरसे बाहर गया और थोड़ेही कालमें अपने उपाय और यत्न और थोड़े कटकसे अपने बैरीको परास्त किया बादशाह यह जयका शुभसमाचार सुन अतिप्रसन्न हुआ और इस कामसे उसका नाम दूर दूरके देशोंमें प्रसिद्ध हुआ और अलादीन फिर अपने शहर में लौटआया बहुत बर्षपर्यन्त इसी भांति उदारता और सत्कर्मपूर्वक उस नगरमें रहा वह आफ़्रीक़ी जादूगर जो चीन देश से आफ़्रिक़ा में पहुँचाथा समझा करताथा कि अलादीन उस

गढ़े में क्षुधा तृषा और घबराहटसे निश्चय मरगया होगा उन दिनों वह यह बिचारा कि यद्यपि उसका जीतारहना कठिनथा तथापि रमलसे उसका हाल मालूम करनाचाहिये सो उसने दालानमें बैठ के एक चौकोन सन्दूक़चा जिसमें रमलकी पुस्तक और उसके बिधानकी बस्तुथी खोला और एक बस्तुको जिसमें रेत भरी हुईथी उठाकर उससे अलादीनके ग्रह देखनेलगा कि अलादीन अमुक स्थानपर मुवाहै वा नहीं बड़े बिचारसे ज्ञात हुआ कि अलादीन जीताहै और बड़ा धनवान्है उसका बिवाह चीनकी बादशाहज़ादी के साथ हुआहै इस बातके मालूम होतेही उसका मुख डाहके कारण लाल होगया और मारे क्रोधके रुधिर टपकनेलगा और कहने लगा बड़ा खेद है कि वह दुष्ट सूचीकारका छोकरा दीपकके कारण यह आनन्द भोगे और मज़े लूटे और मेरे जन्मभर का श्रमफल उसे प्राप्तहो अब जाके ऐसा उपाय करना चाहिये कि उससे वह बिचित्र दीपक लेलूं वा वहां उसे मारडालूं दूसरे दिन शीघ्रगामी घोड़े पर चढ़ चीन की ओर चला और मार्ग में सिवाय दम लेने घोड़े के कहीं न ठहरा नगर नगर देश देश लांघता चीनमें पहुँचा और किसी सराय में उतर एक घर किरायेपर लिया केवल एकही रात्रिमें बिश्रामकर दूसरे दिन अलादीनके ढूंढ़ने को निकला निदान ढूंढ़ते ढूंढ़ते एक समूह में पहुँचा जहां बहुत से मनुष्य बैठे चाय पीतेथे उन्हों ने एक पात्र भरके इसे पिलाया वह उनकी बातोंपर ध्यान रखनेलगा वहां सब परस्पर अलादीन का बखान करते थे आफ़्रीक़ी ने अवसर पाय एक मनुष्य से पूछा तुम किस मन्दिरका बर्णन करतेहो उसने उत्तर दिया तुम बिदेशी जानपड़तेहो तुमने क्या अलादीन का बिचित्र मन्दिर नहीं देखा और न उसका हाल सुना जबसे बदरबदौरा शाहज़ादीका बिवाह उसके साथ हुआ है सबकोई उसे शाहज़ादा कहते हैं उसका बिचित्र भवन संसारभरमें अद्भुतहै अर्थात् जगत् भरमें ऐसा अपूर्व मन्दिर न होगा तुमनेभी कि दूर दूर देशोंसे आतेहो निश्चयहै कि ऐसा मन्दिर कहीं न देखा न सुना होगा जब तुम उसे देखोगे हमारी बातका बिश्वास मानोगे

उसने कहा हां मैं बिदेशीहूं कलके दिन आफ्रिकाखण्डसे यहां आयाहूं अब मैंभी उस बिचित्र भवनको देख अपने मनको प्रसन्न करूंगा आप दया करके उसका पता बतादीजिये सो उन्होंने बतादिया जब उस आफ्रीकीने उस अपूर्व भवनको चहुँओर से भलीभांति देखा तो उसे निश्चय हुआ कि यह भवन उसी बिचित्र दीपकके द्वारा अलादीन ने बनवायाहै और यह धन ऐश्वर्य उसीके कारण प्राप्त हुआ क्योंकि वह बीर जो उस दीपके अधीनहै प्रति बिषयको निस्सन्देह करदेता है और यही बादशाहसे सम्बन्ध का कारण हुआ इतना बिचार उसी सरायमें जहां वह उतराथा लौट आया और यह बृत्तान्त बिदित करनेलगा कि अलादीन उस बिचित्र दीपकको अपने साथ रखताहै या किसी और स्थानपर इसको रमलकी पुस्तक निकाल बिचारने लगा सो उसे मालूम हुआ कि वह दीपक उसी मन्दिर में है उसे महाहर्ष हुआ कि अब वह दीपक लेकर अलादीनको दुःख दूंगा और अलादीन अहेर खेलनेको नगरके बाहर आठ दिनके लिये गयाथा केवल तीनही दिन उसको गये बीते थे यह सम्पूर्ण बृत्तान्त वह दुष्ट आफ्रीकी मालूमकर सरायके मालिक के पास गया और उससे उस बिचित्र भवनका बखानकर कहनेलगा मैं चाहताहूं कि जैसे मैं इस महलके देखने से प्रसन्न हुआ उसी भांति से उस मन्दिरके स्वामीको भी देखूं जबतक उसे न देखूंगा तबतक यहां से जाने की इच्छा न करूंगा सरायवालेने कहा यह बात कुछ कठिन नहीं वह मनुष्य बहुधा अपने घरमें रहताहै अब तीन दिन बीते कि वह आठ दिनके लिये अहेरको गयाहै निश्चय है कि वह पांच दिनके पीछे लौट आवेगा उसने इस बिषय में अधिक बार्त्ता न की और उठकर अपने मकानमें आया और मनमें कहनेलगा यही समय काम करनेकाहै इसको हाथसे खोना न चाहिये फिर वहां से उठकर कँसेरेकी दूकान पर जो नवीन नवीन दीपक बनाता था गया और कहनेलगा कि तू तांबेके बारह दीपक शीघ्र मुझे बना देसक्ता है उसने कहा आज तो मैं नहीं देसक्ता परन्तु कल के दिन निस्सन्देह जब तू चाहेगा बनादूंगा उसने कहा बहुत अच्छा कल हो

बनादेना परन्तु उनको उज्ज्वल कररखना और जो मोल उनका मां-
गेगा सो मैं दूंगा यह कहकर वह अपने भवनको आया और दूसरेदिन
बारह दीपक उसी दूकानसे मोलले एक उज्ज्वल टोकरीमें रख और
उसको बगलमें दाब अलादीनके बिचित्र भवनकी ओर चला जब
समीप पहुँचा तो बड़े शब्दसे कहनेलगा कि पुराने दीपकों के बदले
नये दिये बेचताहूं नगरकी गलियोंके बालक उसका शब्द सुन दौड़े
आये और उसको बिक्षिप्त समझ उसके चहुँओर खड़े होके हँसने
और कोलाहल करनेलगे इसी भांति जो कोई आता जाताथा उस
के शब्दको सुन हँसता और कहता कि यह महामूर्ख और बिक्षिप्त
है कि नवीन दीपकोंको पुराने दियोंसे बदलताहै वह जादूगर न तो
बालकोंके शब्दसे खेद मानता और न पुरबासियों के कहने से उसे
व्यथा होती अनुक्षण यही पुकारता था कि नये दियों को पुराने से
बदलताहूं इतनेमें उसका शब्द बदरबदौराने जो बारहदरी में बैठी
हुईथी सुना परन्तु भलीभांति न समझसकी कि वह क्या कहता है
क्योंकि उसके पीछे लड़केभी घोरशब्द मचाते थे निदान शाहज़ादी
ने एक लौंड़ीसे कहा कि तू जाके इस शब्द और कोलाहलका हाल
मालूमकर कि वह कैसाहै थोड़ेही काल में वह दासी वहांसे बारह-
दरीको हँसतीहुई लौट आई शाहज़ादीने उससे पूछा कि हे मूर्खा!
तू अपने आप क्यों इतना हँसती है उसने कहा कि हे स्वामिनी!
एक मूर्ख मनुष्य अच्छे २ नवीन और उज्ज्वल तांबेके दीपकोंका
टोकरा लियेहुये है वह उन्हें बेंचता नहीं किन्तु उनको पुरानों से
बदलताहै और उसके चहुँओर बहुत से बालक उसकी अज्ञानता
और निर्बुद्धिता पर हँसते और उसको मसखरा बनाकर छेड़ते हैं
दूसरी लौंड़ीने कहा कि एक बहुत पुराना दिया इसी भवन में का-
नस पर धराहै जो आप आज्ञा देवें तो हम उसको बदललावें यह
वही दीपकथा जिसके कारण अलादीनको यह आनन्द और सुख
प्राप्त हुआथा यद्यपि अलादीनने अपने बिचारसे उसकी रक्षा बहुत
कीथी परन्तु उसे उचितथा कि ऐसी अपूर्व और अद्वितीय बस्तुको
अपनी देहके साथ यन्त्रके सदृश बांधके रखता और कदापि उसको

अपने पाससे अलग न करता परन्तु मनुष्य जो भूलका भरा हुआ है और उसे इस बुरे दिन और ऐसे बैरीकी आशा न थी और शाहज़ादी न तो उसका गुण जानतीथी और न कभी अलादीनने उस की रक्षा के लिये उससे कुछ कहा था उस दासी के कहने से उसने हँसकर एक सेवक से कहा वह पुराना दीपक लेजा नवीन उज्ज्वल दीपक से बदल ला सेवकने यह आज्ञा पातेही वह दीपक लेजाय आफ़्रीक़ी से कहा कि इस पुराने दीपक के बदले मुझे नया दिया बदलदे वह मायावी उसे देखतेही समझगया कि यह वही बिचित्र दीपक है उसे लेकर अपनी जेब में रख टोकरे को बढ़ाकर सेवक से कहनेलगा कि जौनसा दीपक चाहे छांटकर लेले वह उनमें से एक उज्ज्वलसा दिया उठाय शाहज़ादी के निकट लेआया जब यह व्यवहारहोचुका तो फिर बालक उसी भांति शोर करनेलगे उसने कुछ उनके शब्दपर ध्यान न किया और अलादीन के भवनसे दूर निकल कर चुपहोरहा उसके चुपरहनेसे बालकभी इधर उधर चलेगये जब वह मैदानको जो महलों के मध्यमेंथा नांघचुका और अप्रकट गलियोंसे राहली तो उसने उन शेष दीपकोंको टोकरी समेत किसी ओर फेंकदिया और जल्दी जल्दी चलनेलगा कि नगर के द्वार से बाहर निकल जाय जब वह नगरसे निकल अपने प्रयोजनके सिद्ध करनेके लिये ठहरा तो अपने घोड़े और वस्तुको जो सराय में थी छूटने का कुछ खेद न किया क्योंकि वह जानता था कि अब मुझे ऐसी वस्तु मिलीहै कि जिसके द्वारा असंख्य धन प्राप्तहो यहांतक कि आधी रात्रि बीती तब उसने दीपकको अपनी जेबसे निकालकर रगड़ा रगड़तेही वह बीर प्रकट हुआ और कहनेलगा मैं आपकी आज्ञापालन में दासवत् हूं और उस मनुष्य के अधीनहूं कि जिस के पास यह बिचित्र दीपकहै आफ़्रीक़ी ने कहा मैं चाहताहूं कि वह अद्भुत भवन जो तूने और इस दीपकके अन्य अधीन बीरोंने इस नगरमें बनायाहै उसको सम्पूर्ण वस्तु और मनुष्यों समेत और मुझे आफ़्रिक़ा में लेजाय रखदो उसने तुरन्त उसके बिचारानुसार किया अब अवश्यहै कि चीनके बादशाहके खेदका भी बृत्तान्त वर्णन करूं

दूसरे दिन प्रभातको जब बादशाह निद्रासे जगा और अलादीनके विचित्र भवनके देखनेको गया तो उसने अथाह मैदान के सिवाय महलका कोई चिह्न न देखा समझा कि मुझे कुछ धोखाहुआहै फिर उसने अपने नेत्रोंको भलेप्रकार मल कर देखा फिरभी उसे निर्जन मैदान दृष्टिपड़ा तब उसने कहा कि वायु साफ़ और आकाश भी निर्मल है और सूर्य उदय हुआ चाहतेहैं इन सब बातों के होनेपर भी किसलिये मैं नवीन भवनका चिह्न नहीं पाता पुनि उसने भली भांति चहुँओर देखा परन्तु कुछ उसे दिखाई न दिया बहुत काल पर्यन्त आश्चर्य में खड़ेहो उसी मैदानको देखता रहा और मन में सोचा कि बड़े अचम्भेकी बातहै कि ऐसा बड़ा चमकता अद्भुत भवन जिसको मैं प्रतिदिन सूर्य के समान देखता था अकस्मात् गुप्त होजाय उसका तो कोई निशान दिखाई नहीं देता यदि धरती में धसजाता तोभी कुछ न कुछ निशान दीखता और जो गिर पड़ता तोभी पत्थर काष्ठादिक दिखाई देते जब उसे भलीभांति निश्चयहुआ कि वह भवन यहां नहीं तोभी भ्रमके सन्देहसे किसीसे यह हाल न कहा और यह सोचा कि शायद मेरे देखने में कुछ फ़र्क़ हो इस से बार बार उधर को देखता निदान निराशहो किसी ओर चलागया और वज़ीरआज़म को बुलवाया वह शीघ्रही सन्मुख आया और बादशाहसे कहनेलगा कि हे स्वामिन्! आज आपने अपनी रीति के विपरीत मुझको इस समय क्यों बुलाया जानपड़ता है कि कोई नई बात हुई है और क्या आपको मालूम नहींहै कि आजका दिन कौंसलका है सम्पूर्ण मन्त्री और सभासद् विद्यमानहैं मुझे अवश्य है कि आपके सिधारने के पहिले व्यवस्थाओं को यथाक्रम लगा रक्खूं अब जो कुछ आपको आज्ञा देनी हो कहिये बादशाहने कहा वास्तवमें ऐसी ही बात हुई है जैसी तूने कहीहै मुझे बता कि अलादीन का भवन क्या हुआ उसने बिनतीकी कि मैं तो आपके भयसे दौड़ाआया किसी और बातका विचार न किया जानताथा कि वह अपनी जगह पर होगा बादशाह ने मन्त्री से कहा तू मेरे कोठेपर जाकर उस महलको देख कि दिखाई देताहै या नहीं मन्त्रीने बाद-

शाहकी आज्ञानुसार वहां जाकर देखा तो उसेभी सिवाय निर्जन मैदान के कुछभी दिखाई न दिया जब उसको भलेप्रकार निश्चय हुआ कि अलादीनका भवन कहीं गुप्त होगया और उसका कुछभी चिह्न नहीं पायाजाता तो बादशाहके सन्मुख आया बादशाहने उस से पूछा कि तूने अलादीन के भवनको देखा मन्त्रीने बिनय की कि महाराज इस दासने पहिलेही से बिनती कीथी वह सुन्दर मन्दिर जादूके बलसे बनाहुआ है परन्तु आपने मेरी बातका कुछ बिचार न किया बादशाहने महाक्रोधित होकर पूछा कि वह धूर्त और छली कहां है मैं उसका शीश काटे बिना न रहूंगा मन्त्री ने बिनयकी कि वह कई दिन बीते आपसे बिदा होकर शिकार खेलनेगयाहै मैं उसे ढूंढ़ताहूं इतना सुन बादशाह ने क्रोधितहो यह आज्ञा दी कि हमारे अरदली के तीस सवारों को आज्ञा दीजावे कि उस दुष्टको जंजीर में बांधकर मेरे सन्मुख लावें उसने तुरन्त तीस सवार चुन उनके अधिपति से ताकीदकर कहा कि उसको अच्छी तरह ढूंढ़ियो ऐसा न हो कि किसी ओरको निकलजावे वे लोग अलादीन के शिकार खेलनेकी ख़बर सुनकर उधर चले और उसको नगर से पांच छः कोसपर कि अहेर खेलकर लौटा आता था पाया प्रधानने उसे प्रणामकर कहा बादशाहने तुम्हें शीघ्र बुलवायाहै और हमको आज्ञा दी है कि तुम्हारे साथ रहें अलादीनको सूचित हुआ कि ये सवार बादशाहकी अरदलीके हैं और मुझे क़ैद करने को आयेहैं सो वह उसी भांति शिकार खेलतेहुये अनुमान नगरके आधे कोस पर पहुँचा सवारोंने उसे चहुँओरसे घेरलिया और प्रधानने आगे बढ़के उससे कहा कि हमें बादशाहने आज्ञादी है कि तुम्हें अपराधियोंकी तरह जंजीरमें बांधकर बादशाहके निकट लेजावें इसमें हमारा कुछ अपराध नहींहै हमको अवश्यहै कि बादशाहकी आज्ञा मानें उसने इस बातको सुन अचम्भा किया कि बादशाह ने मुझे निर्दोष क़ैद करनेकी क्यों आज्ञा दीहै फिर सवारोंसे पूछनेलगा मैंने न तो कोई अपराध बादशाहका किया और न प्रजाका उन्होंने उत्तर दिया यह तो हम कुछ नहीं जानते हमें बादशाह की आज्ञा है कि तुम्हें बांध

कर लेजावें फिर उन्होंने एक बड़ी ज़ंजीर उसके गले में डाल उसे उसमें ऐसा जकड़ा कि उसे हाथ हिलानेकी शक्ति न रही फिर उस का प्रधान आगे होलिया और उसके पीछे अलादीन पैदल ज़ंजीर में बँधा हुआ जिसका एक शिरा एक सवारके हाथमें था लेचले जब शहरपनाह के भीतर पहुँचे तो जिस मनुष्य ने उसकी यह दशा देखी कि उसको अपराधियों के सदृश बांधे हुये लियेजातेहैं उसको इसके मारेजानेका बिश्वास हुआ और जो कि वह सबका प्याराथा और हरएक उसका गुण मानताथा इस लिये सब नगरबासी शस्त्र धर धर और बहुधा शस्त्र उठाउठाकर सवारों के पीछे चढ़धाये वे इस धावेको देख भयभीत हुये कि ऐसा न हो जो ये सब अलादीन को हमसे छीनलेजावें इसलिये वे उसे बड़ी रक्षा से बादशाही महल में लेगये द्वारपालोंने सवारोंके प्रवेश होतेही बादशाही महल को मूंदलिया कि कोई झगड़ा उठानेवालोंमें से भीतर न जानेपावे जब अलादीनको बादशाहके सन्मुख लेगये तो बादशाहने बधिक को पहिलेही से खड़ाथा आज्ञा दी कि इसका अभी शिर काटडाल बधिकने अलादीनकी कमरसे ज़ंजीर खोल उसको एक ठौरपर बैठाया और उसके नेत्रों में पट्टी बांधी और तीन बेर खड्ग हवापर चलाके केवल बादशाहकी बाट देखनेलगा कि एकही हाथ में खड्ग से शिर जुदा करडाले इतने में मन्त्री पहुँचा और क्या देखा कि बहुतसे लोग बाहर की ओर मैदानमें शस्त्रसमेत एकत्र हैं बहुतसे दीवारोंपर चढ़ेहुये भीतर कूदना चाहतेहैं जब बादशाहने चाहा कि अलादीनके मारने के लिये सैन करे इतने में मन्त्री ने बादशाहसे बिनयकी कि आप क्या काम करते हैं इस मनुष्य के मारडालने से आपके बैरियोंको महादुःख होगा क्योंकि मन्दिरके चहुँओर हज़ारों लाखों मनुष्य शस्त्रादिक लियेहुये खड़ेहैं बादशाहने कहा किसीकी सामर्थ्य है कि इतना साहस करे उसने कहा आप उस दीवार को जो उस मैदानकी है कि देखिये निदान बादशाह असंख्य मनुष्योंको दीवारपर चढ़े और कूदनेको तैयार देख डरगया और तुरन्त बधिक को आज्ञा दी कि तू अपनी तलवार हाथसे फेंकदे और अलादीन

के नेत्रोंसे पट्टी खोल उसे छोड़दे और एक प्रधानको आज्ञा दी कि बड़े शब्दसे आवाज़कर कि बादशाहने अलादीनका अपराध क्षमा किया और उसे छोड़ दिया सो बधिक ने अपने स्वामीकी आज्ञानुसार तलवार फेंकदी और प्रधानने भी डौंड़ी पिटाई यह समाचार सुन वे मनुष्य जो दीवारपर चढ़े थे अलादीन को छुटा हुआ देख और डौंड़ी सुन प्रसन्न हुये और इधर उधर कूदपड़े इसी भांति से सम्पूर्ण नगर में यह हाल प्रसिद्ध हुआ और सबलोग अपने २ घरको लौटगये जब अलादीन छूटा तो बादशाह के सन्मुख दूर से धरती चूम बिनती करने लगा हे स्वामिन्! जैसे आपने मुझे प्राण दान दिये आशाहै कि मेरा अपराधभी मुझे बतला दीजिये बादशाहने कहा अय अभागे, दुष्ट! अभीतक तुझे तेरा अपराध मालूम नहीं हुआ मेरे पास चला आ तो मैं तेरा अपराध तुझे बताऊं अलादीन जब ऊपर चढ़गया तो बादशाह अपने कोठेपर लेगया और कहा इस किवाड़ को खोलकर देख कि तेरा बनवाया हुआ मन्दिर क्या हुआ और चहुँओर भलीभांति देख मुझे बतला कि वह महल कहां चलागया अलादीनने देखा परन्तु निर्जन मैदानके सिवाय उसे कुछ भी सुझाई न दिया और कुछ न समझसका कि उस बिचित्र मन्दिरको कौन उठालेगया यह तमाशा देख चुपचाप सुन्न होके उसी स्थानपर खड़ा रहगया बादशाह ने कहा तूने देखा अब मुझे बता कि तेरा मन्दिर कहांहै और मेरी पुत्री किधर चली गई अलादीनने कहा बास्तवमें मेरा मन्दिर कि जिस स्थानपर था नहीं है न जानिये कहां चलागया परन्तु इसमें मेरा कुछ अपराध नहीं है और न मेरे कारण यह बात हुई है बादशाह ने कहा मुझे तेरे मन्दिरके खोजानेकी कुछ चिन्ता नहीं मुझे अपनी पुत्रीका दुःख है जो तू अपनी कुशल चाहताहै तो शीघ्र उसे ला यही न समझ कि अब तू छूटगया उसने कहा मुझे चालीस दिनका सावकाश दीजिये यदि इस अवधि में आपकी पुत्री को ढूंढ़कर लाया तो उत्तम है नहीं तो ईश्वरकी सौगन्दहै कि मैं अपना आपही शिर काट तख़्त के नीचे डालदूंगा बादशाहने कहा बहुत अच्छा मैंने तुझे चालीस

दिनकी छुट्टी दी अब तू जाके जहां से पावे वहां से ढूंढ़ला नहीं तो जहां कहीं तू होगा मैं तुझको पकड़वा सक्ताहूं अलादीन बादशाह से बिदाहोकर इस बुरी दशासे शिर नीचे कियेहुये रोता हुआ निकला जिस प्रधान और सरदार के आगे से होकर वह जाता वह अलादीन पर दयाकरके अपना मुख उससे छिपालेता कि उसे अधिक दुःख न हो और जब वह बादशाहके महलसे रोताहुआ बाहर निकला आश्चर्यमें था कि क्या करूं और कहां जाऊं और किस जगह अपनी स्त्रीको ढूंढूं निदान इसी चिन्तामें बिक्षिप्तकी नाईं हर एक दरवाज़े पर जाकर घरके मालिकसे पूछता कि तुमने कहीं मेरा बिचित्र मन्दिर देखा है वा उसका समाचार मुझसे कहसक्तेहो इस प्रश्नसे वे सब अलादीनको विक्षिप्त समझते और कई मनुष्य उस की बातों पर हँसते और जो उस के साथ प्रीति रखते थे उसकी दुर्दशा देख कुढ़ते निदान तीन दिनतक वह उस नगर में रहा और हरएक गली कूचे में फिरा करता जो कोई उसे कुछ भिक्षा देता तो उसे वह भोजन करता और कोई उसे उपाय न सूझता जिस से उस महल का ठिकाना लगे निदान बिचारा अलादीन उसी कुदशा से उसी नगर में जहां ऐसी धूमधाम से रहता था अधिक न ठहरसका और उसी आपत्तिकालमें एकओर बनकी सूधपर निकल गया दिनभर चला निदान एक नदीके कूलपर पहुँचा वहां बिचारा कि अब मेरी प्रिया काहेको मिलेगी इस से उत्तम है कि इसी अथाह जल में डूबमरू जो इस कष्ट और रात दिन की चिन्तासे छूटूं यह बात मन में ठान नदीकी ओर चला परन्तु अतिधर्मिष्ठ था सोचा कि ईश्वरकी कृपासे निराश होके अपने प्राणदेना मनुष्यको उचित नहीं उत्तम यह है कि अपने अर्थकी सिद्धिके लिये मैं ईश्वर की बन्दना और प्रार्थना करूं सो ज्योंही स्नान करने नदी में गया त्योंही उसका चरण फिसला और डूबने लगा परन्तु उसने एक पहाड़ की शिला को जो वहां से अनुमान दो पगके थी पकड़कर अपने को थांभलिया और उसमें लटकरहा यह बात उसके वास्ते बहुत अच्छी हुई क्योंकि उस छल्ले को जिसे आफ्रीकी मायावी ने

उसी बिचित्र दीपकके मँगवानेके समय उसको पहिनायाथा शिला के पकड़नेसे उसमें रगड़लगी रगड़खातेही वही बीर जो उसी गढ़े में आयाथा और अलादीनको गढ़ेमेंसे निकालाथा प्रकट हुआ और कहनेलगा तेरी क्या इच्छाहै मैं उसके पूर्ण करनेके लिये उद्यतहूं तेरी आज्ञाका पालन मुझे अवश्य स्वीकारहै किन्तु उस मनुष्यकाभी जिसके हाथमें यह छल्ला होगा मैं और दूसरे बीर इसी छल्लेके अधीन हैं अलादीन यह हाल देख कुछ सावधान हुआ और उससे कहा पहिले तू डूबते से मुझे बचा और फिर यह बतला जो मन्दिर मैंने बनवायाथा वह कहांहै और उसको कौन लेगयाहै और अब तू उस भवनको उसी स्थानपर लाकर जहां पहिले था स्थापित करसक्काहै उस बीरने कहा उस महलका लाना मेरा काम नहींहै वह दीपकके बीरोंका कामहै फिर उसने अलादीनको वहांसे उठाकर नदीके तटपर बैठाय दिया और हाथ बांध उसके सन्मुख हुआ अलादीनने कहा जो यह कार्य तुझसे नहीं होसक्का तो मुझे उस मन्दिरमें जहां कहीं कि हो लेजाकर बदरबदौर के पास छोड़ आसक्काहै उसने कहा निस्सन्देह यह काम मैं करसक्काहूं इतना कह उसने अलादीनको कूलपरसे उठाया और तुरन्त आफ्रिकाखण्ड में लेगया और उसी मन्दिर के समीप जो किसी उज्ज्वल नगर के मैदान के मध्य में था पहुँचा दिया यद्यपि बहुत रात्रि बीतनेके कारण अँधियाराथा परन्तु अलादीनने अपने मन्दिरको पहिचान लिया उस समय भवनमें सम्पूर्ण मनुष्य सोतेथे अलादीन वहांसे उठकर एक बृक्षके नीचे जाबैठा और ईश्वरकी बन्दना और प्रार्थना कर कहनेलगा उस ईश्वर सर्बोपरि पर निछावरहूं कि जिसने मुझे निराशहोनेपरभी फिर अपनी स्त्रीतक पहुँचाया और जो पांच छःदिन तक महादुर्दशा में अन्नजल बिना फिरा किया था अब प्रसन्न होकर निद्राके बेगसे वहीं सोरहा दूसरे दिन प्रभातको जब सूर्य उदयहुये तो वह पक्षियों की प्रियबाणी सुननेसे जगा और उस बृक्षके नीचे से उठ सघन रूखोंके नीचे जाबैठा और वहांसे अपने प्यारे मन्दिर को भलीभांति देखनेलगा यह बिचारकर कि अब मैं फिर इसी

भवन और उसी सुन्दरी से मिलूंगा फिर वहांसेभी उठ अपनी स्त्री के मकानके पास गया और इस आशासे दरवाज़े के भीतर टहलने लगा कि शाहज़ादी निस्सन्देह जगकर मुझे देखेगी टहलती समय उसने बिचारा कि इस महल के यहां आनेका क्या कारण है निदान भली बिधि सोच उसने जाना कि वह दीपक अवश्य खोगयाहै पुनि अपने को धिक्कार दिया कि मेरेही ध्यान न रखने से वह दीपक खोगया मुझे उचितथा कि उसे क्षणमात्र अपने से न्यारा न करता और जो छल्लेके वीरसे सुनाथा कि यह मन्दिर आफ़्रिक़ामें है इससे उसे मालूम हुआ कि बैर उसी आफ़्रीक़ी मायावीने मुझसे लियाहै वह शाहज़ादी बहुत दिन चढ़े जगी क्योंकि रात्रिभर उस दुष्ट आफ़्रीक़ी से बचने के लिये जगी और चिन्ता और महाशोकमें रहती और उस जादूगरके साथ उसने ऐसा उपकार कियाथा कि उस महलमें रह न सक्का निदान शाहज़ादी जगकर वस्त्र पहिननेलगी तो एक बांदीने द्वार में से अलादीन को देखा और दौड़कर उसने उसी मन्दिर में अलादीन के आनेका समाचार दिया यह सुनतेही उसे अलादीनके पहुँचने का निश्चय हुआ और आप जाकर उसे अपने नेत्रोंसे देखा और दरवाज़ेको खोला अलादीन ने किवाड़ खुलनेका शब्द सुन शिर अपना ऊपर को उठाया और अपनी प्रियाको पहिचान अति संतुष्ट भया शाहज़ादी ने उसी समय अपनी लौंड़ियोंको आज्ञा दी कि मेरे पतिको तुरन्त चोरदरवाज़ेसे मेरे पास लाओ और तुरन्त ही उस द्वारको जिसमेंसे अलादीनको देखाथा मूंदलिया अलादीन उसी चोरदरवाज़ेसे जो बारहदरी के पासथा अपनी स्त्रीके निकट गया जो प्रसन्नता और आनन्द उसको भेंटसे प्राप्त हुआ उसका बर्णन नहीं होसक्का बहुत कालतक वह कंठसेलग रुदन करतेरहे फिर हरएक ने अपनी अपनी दुर्दशा और परस्पर बियोगका बृत्तान्त जो कुछ कि उनपर बीता था बर्णन किया फिर एक जगहपर बैठगये अलादीनने अपनी स्त्री से पूछा तुम्हें ईश्वर और अपने पिताकी सौगन्द है कि तुमने उस प्राचीन दीपकको जिसे मैं बारहदरी के कानसपर रक्खा करता था क्या किया उसने बिनयकी

बड़ा खेद है कि यह सब दुःख और आपदा जो हमपर पड़ी उसका मैंही कारण हुई वह दीपक यहां नहीं है अलादीनने कहा वह अपराध तू अपनी तरफ़ मतकर वह मेरा ही अपराध है कि मैंने उसे रक्षासे अपने साथ न रक्खा भला जो कुछ हुआ सो हुआ अब उस दीपक के मिलनेकी युक्ति करनी चाहिये बताओ कि वह दीपक अब किसके हाथ लगा है उसने अपने पति से सम्पूर्ण बृत्तान्त उस नवीन दीपक से इसी विचित्र दीपकके बद-लनेका सबिस्तर बर्णन किया और कहनेलगी कि दूसरे दिन मैंने अपनेको इस मन्दिर समेत इसी नगर में जिसे मैं नहीं जानती देखा उस दुष्ट अन्यायी जादूगर के मुखसे मैंने इसका नाम आ-फ़्रिक़ा सुनाहै और उसने ऐसा जादू किया कि यह भवन चीन से यहां आया यह सुन अलादीन ने अपनी स्त्रीसे कहा हमें मालूम हुआ कि हम आफ़्रिक़ाखण्ड में हैं परन्तु सत्य कहो कि तुम उस धूर्तके हाथसे अबतक बची हो व नहीं उसने कहा अबतक ईश्वरने मुझे बचाया है पुनि अलादीन कहनेलगा वह जादूगर महादुष्ट है समय पाकर उसका बृत्तान्त तुझसे कहूंगा परन्तु यह मुझे बतला कि वह उस दीपकको कहां रखता है शाहज़ादी ने कहा वह दीपक बड़ी होशियारीसे वस्त्रमें लपेटकर अपनी छातीमें रखताहै एक दिन उसने मेरे सामने निकालाथा अलादीनने कहा हे चन्द्रमुखी! तुम इस पूछनेसे अप्रसन्न न होना वह दुष्ट हमदोनों के प्राणोंका बैरीहै और तुमसे वह क्योंकर व्यवहार रखता है और तुम क्योंकर उससे बातें करती हो उसने उत्तर दिया जब से मैं यहां आईहूं एकबेर रात्रिको मेरे निकट आता है उसने बहुत चाहा कि तेरी प्रीति से मेरा मन फेरकर मेरा पति वही बने और तुझको बुरी तरहसे याद करताहै और हज़ारों गालियां दे कोपित होकर ऐसी बातें कहताहै जिनको मैं बर्णन नहीं करसक्ती परन्तु जो मुझे अपने देश और पिता और पतिके बियोग में पाता है इससे कुछ अधिक न कहके चलाजाताहै और समझता है कि अन्तको धीरे धीरे सबको भूल मन वचसे उसकी प्रीतिमें फँसूंगी मैं तो अपने मनमें ठानचुकी थी

कि यदि मुझसे बलात्कार से किसी दूसरी बातकी इच्छा करेगा तो मैं तुरन्त देह त्यागदूंगी इतने दिनों में उसीके डरसे भयभीत रही परन्तु अब तुझे देख मुझे धैर्य हुआ अलादीन ने कहा मुझे बिश्वास था कि तुम उसके छलमें न आवोगी अब मैं उसके उपायमें जाताहूं मध्याह्नपर्यन्त फिर आऊंगा जो तुम मुझे दूसरे बस्त्र और अन्य बेष धरेहुये देखना तो आश्चर्य न करना और मैं चोरदरवाज़े से आऊंगा एक मनुष्य उसपर नियत करो कि जब मैं आऊं तुरन्त उस दरवाज़े को खोलदे इसने द्वारपर उस लौंड़ी को उस कार्य के लिये नियत किया अलादीन उसी चोरदरवाज़ेसे निकलकर बाहर गया और चहुँओर देखनेलगा अकस्मात् एक किसानको देखा कि वहभी नगर में जानेकी इच्छा रखता है अलादीनने दौड़कर उससे भेंटकी और कुछ उसको देके इस पर राज़ी किया कि अपने बस्त्रों को अलादीनके बस्त्रोंसे बदले अलादीन ने एक कोने में जाके अपने चीर उतार उस किसान को दिये और उसके आप पहिनलिये और एक दूसरेसे अलग होकर अपनी अपनी राहलगे अलादीन उस नगरके बड़े बाज़ार में जहां भांति भांति की सम्पूर्ण बस्तु बिकती थीं गया और एक पंसारीकी दूकानपर जिसके पास सब प्रकार की औषधेंथीं जाकर खड़ाहुआ और दूकानदारसे पूछा अमुकबस्तु तेरे पासहै दूकानदार उसके मलिनबस्त्र देख समझा कि इसके पास इतना धन कहां होगा जो उसका मोल देगा इसलिये उससे कहा बस्तु तो मेरे पास है परन्तु तुमसे उसका मोल न दिया जावेगा अलादीनने थैलीसे अशरफ़ियां निकाल दिखाईं उसने अशरफ़ियां देखतेही उसी बस्तुकी पुड़िया बांध अलादीन को दी और उसका मोल एक अशरफ़ी ली फिर अलादीन ने कुछ भोजन मोल लेकर खाया और चलदिया और चोरदरवाज़ा खुलापाके भीतर गया और वहां से सीधा अपनी स्त्री के पास गया और उससे कहनेलगा मैंने उस दुष्टके दूर करनेका एक अच्छा उपाय बिचार रक्खा है परन्तु अब तुम कुछ साहस करो जिससे फिर तुम अपने पिता से जाके मिलो और मेरेभी प्राण बचाओ फिर अलादीनने बदरबदौर से कहा

तुम आज दिव्यवस्त्र और आभरण पहिन और सुगन्ध लगा और मुसकराकर बैठो जिस समय वह दुष्ट तुम्हारे पास आवे तो प्रसन्न होकर उससे इस प्रकारकी बातें करना कि अब मैंने तेरी प्रीतिमें सबको भुलादिया तेरे सिवाय और किसीकी ओर मेरा ध्यान नहीं आजकी रात्रि मैं चाहतीहूं कि हम तुम बैठके एक जगह भोजन प्रीतिपूर्बक करें और हमदोनों परस्पर बैठकर सुरापान करें निश्चयहै कि वह इस बातको सुन आपही मद्य लेनेको नगरमें जावेगा और जब वह मद्य लेनेजावे तुम इस वस्तुको जिसे मैं तुम्हें देताहूं एक गिलास में डालकर और गिलासों से कुछ दूर रखना और मद्यपान करती समय एक बांदी तुम्हारी सैनके करतेही उसी गिलासमें मद्य भरके तुमको देवे और तुम वह पात्र प्रथम अपने हाथ में ले उसके गिलास से बदलके देना वह उसको तुम्हारे हाथसे ले प्रसन्नतापूर्बक सबका सब पीजावेगा सो पीतेही वह औंधा होकर गिरपड़ेगा और तुमभी उसके गिलासको उसके हाथसे लेकर दिखानेके वास्ते मुख में लगालेना उसके पीतेही उसे इतना चेत न रहेगा कि वह तुम्हारा पीना न पीना मालूम करे शाहज़ादीने अलादीनकी ये बातें सुनकर कहा जैसा कि तुमने मुझसे कहाहै वैसाही करूंगी यह कह अलादीन वहां से चुपके एक मकान में बैठरहा जब रात्रि भई तो वह चोरदरवाज़ेसे बाहरको निकलगया बदरबदौर जबसे अपने पिता और प्रियतमसे अलग हुईथी न तो उसने चिन्तामें बस्त्र बदले थे और न कभी शृङ्गार कियाथा उन्हीं मलिन बस्त्रों को जिन्हें चीनसे पहिनेथी पहिनेरही केवल उस दिन उसने अपने पतिकी आज्ञानुसार बहुत भारी जोड़ा और रत्न पहिन भलीभांति अपना बनाव और शृङ्गार किया और एक पटुका जिसमें भांति भांतिके अतिस्वच्छ हीरे जड़ेथे कमरमें बांधा और एक बहुत भारी बड़े बड़े मोतियोंका हार गलेमें पहिना और मणि और हीरेजटित सुन्दर कड़े हाथोंमें पहिने जब वह बस्त्र और आभूषण पहिनचुकी तो बारहदरी के भीतर उस आफ़्रीक़ीके आनेकी राह देखनेलगी इतने में आफ़्रीक़ीभी अपने नियत समयपर आया शाहज़ादी ने उस समय तक उसका

अकुशलरूप आंख उठाकर न देखाथा परन्तु अपनी बांदीसे सुना कि यह वही मनुष्यहै जो नवीन दीपकसे पुराना दीपक बदलकर लेगयाथा जब जादूगर बारहदरीके दरवाजेमें पहुँचा तो शाहज़ादी उसकी अगवानीके लिये मुसकरातीहुई उठी और उसका हाथ पकड़ लेआई और अपने निकट उसे बैठाया वह धूर्त जादूगर उसके दिव्य रूप और स्वच्छ बस्त्र भूषणको देख मोहित होगया उसको इतना साहस न था कि उस चन्द्रमुखीके बराबर बैठे परन्तु शाहज़ादीने उसे बैठायलिया फिर शाहज़ादी उससे कहने लगी आज तुमने मुझे प्रसन्न पाया है उसका कारण नहीं जानते वह यह है कि मैं अपने कुटुम्बके बियोगमें बिशेष अपने पति अलादीन और पिताके बिछुड़ने में अहर्निश चिन्तामें डूबी रहतीथी अब मुझे सन्तोष हुआ और सम‍झी कि अलादीनको मेरे पिताने अवश्य मारडाला होगा अब उस के लिये चिन्ता करनी ब्यर्थ है मैं अपने को क्यों मारूं इस निमित्त मैंने अपने चित्तसे यह बिचार निकाल डाला मन बचसे तुमपर मोहित हुई आज मेरा चित्त चाहताहै कि तुम हम मिलके भोजन करें परन्तु जब तक भोजन निकालाजावे और चुनाजावे तब तक थोड़ीसी उत्तम मदिरा मेरे वास्ते मँगवावो वह इस बातको सुन अतिआनन्दमें हुआ और अपने भाग्यपर प्रसन्नहो कहनेलगा ब‍हुत अच्छी सुरा इस नगरमें नहीं मिलतीहै परन्तु मेरे घरमें सात बर्षकी पुरानी मदिरा रक्खी है यदि आप मुझे आज्ञा देवें तो मैं जाकर उसमेंसे कई शीशे भरलाऊं शाहज़ादी ने कहा मुझे तुम्हारा जाना असह्यहै किसी और को भेजकर मँगवालो उसने कहा बिना मेरे गये वह नहीं आसक्ती न तो वह मन्दिर किसी दूसरेको मालूम है और न किसीको उसकी कुंजी मिलेगी शाहज़ादीने कहा यदि तुम आपही जातेहो तो शीघ्र लौट आना तुम्हारे पीछे मैं भोजन न करूंगी आफ्रीक़ी जादूगर उस मन्दिरसे सुरा लेनेको दौड़ागया और शाहज़ादीने उसके जाने के पीछे उस बस्तुको जो अलादीनने उस को दीथी एक गिलासमें रख उसे एक ओरको धरदिया इतनेमें आफ्रीक़ी स्वच्छ मद्य लेके आपहुँचा और वह परस्पर सन्मुखहो

बैठे शाहज़ादी उत्तम २ और स्वादिष्ठ भोजन अपने हाथसे उठा कर जादूगरके आगे रखती जातीथी पुनि शाहज़ादीने उससे कहा जो तुम्हें ललित गान सुननेकी इच्छाहो तो मैं गाऊं परन्तु मैं अकेलीहूं इससे परस्पर वार्त्ता करनीही अच्छी है आफ़्रीक़ी इस बाक्य को सुन अधिक मोहगया और मारे प्रसन्नताके फूलगया फिर बदरबदौर ने एक मद्यका पात्र उस आफ़्रीक़ीकी यादमें पिया और सुरा की बहुत सी प्रशंसाकर कहनेलगी तुमने जितनी प्रशंसा इस मद्य की कीथी यथार्थमें यह वैसीहीहै फिर शाहज़ादीने एक पात्र मद्यका भरकर आफ़्रीक़ी को दिया उसने वह पानकर कहा मैंने कभी इस आनन्द से मदिरा नहीं पीथी जब वह दोनों भोजनकर तृप्तहुये और तीन गिलास परस्पर पिये तो बदरबदौरने एक लौंडीको सैन दी कि उस पात्रको जिसमें वही बिष रक्खाथा मद्यसे भरके मुझे दे और दूसरा आफ़्रीक़ी को उसने दोनों गिलासभर बिषका गिलास शाहज़ादीको और दूसरा आफ़्रीक़ी को दिया तब शाहज़ादी ने आफ़्रीक़ी से कहा हमारे चीनदेश में यह रीति है कि मद्यपान करती बिरियां वह दोनों मनुष्य जिन्हें परस्पर अत्यन्तप्रीति हो अपना २ पात्र एक दूसरे के हाथसे बदल आपसकी आरोग्यताके लिये पीते हैं यह कह अपना गिलास आफ़्रीक़ीको दिया और दूसरे हाथसे उसका गिलास लेलिया आफ़्रीक़ीको यह भाव अच्छा मालूमहुआ और इस बात से अत्यन्त प्रेम समझकर कहनेलगा हे मृगनयनी, चन्द्रमुखी ! जो सुन्दरता और स्नेह और प्रीति तुम्हारे चीनदेशमें है वह हमारे आफ़्रिक़ाखण्ड में नहींहै आज इस भावको मैंने तुम से सीखा और तुम्हारा मन बचसे गुण माना अब मैं कभी इसको न भूलूंगा शाहज़ादीने कहा अब तुम इसको पीजाओ इतना कह शाहज़ादीने अपने गिलासको मुखसे लगाया अभी उसके ओठ तक गिलास न पहुँचाथा कि आफ़्रीक़ी एकही बेर वह गिलास बिषमयी घुट २ कर पीगया और बूंदभरभी उसमें न छोड़ी उस हलाहलके पीतेही वह पीठके बल गिरपड़ा जब शाहज़ादीने देखा कि उसकी आंखें फिर गईं और बिना हिलेझुले सुन्नसा पड़ाहै तब

उसने एक लौंड़ीसे कहा कि चोरदरवाज़ेसे तुरन्त अलादीनको बुला ला वह लौंड़ी दौड़ीगई और चोरदरवाज़ेको खोल अलादीन को बुलालाई अलादीन जब बारहदरी पर चढ़गया तो आफ्रीक़ी को मराहुआ पाया शाहज़ादीने अपने पतिको धन्यबाद दिया और अत्यन्त सन्तुष्ट हुई अलादीनने अपनी स्त्रीसे कहा एक क्षणमात्र के लिये तुम अपने मकान में जाओ तो मैं तुम्हें इस भवन सहित चीनमें लेजानेका उपाय करूं सो शाहज़ादी उस मकानसे अपनी लौंड़ियों समेत निकलके दूसरे मकानमें गई अलादीन ने उस मकानके दरवाज़ेको मूंद उस आफ्रीक़ीकी लोथके पास जो बारहदरी में पड़ीहुई थी गया और उसके बस्त्रको खोल वही दीपक निकाल लिया और उसको जैसा कि शाहज़ादीने कहाथा बस्त्रके कई तहमें लपेटाहुआ पाया अलादीनने उस दीपकको निकाल रगड़ा तुरन्त वह बीर प्रकट हुआ और उसी भांति उसने अपनी अधीनता प्रकट की अलादीन ने कहा मैंने तुझे इसलिये बुलाया है कि इस अद्भुत मन्दिरको इसी क्षण उठालेजाकर चीनमें जहां कि पहिलेथा स्थापित करदे उस बीरने शिर हिलाया अर्थात् यह सैनकी कि बहुत अच्छा फिर गुप्त होगया और एक क्षणमात्र में उसी भवनको आफ्रिक़ा से उठालेजाकर चीनमें जहांसे कि वह उठालेगयाथा लेजाय रक्खा केवल वह भवन धीरेसे दोबेर हिला एक तो उठाती समय और दूसरे रखती समय अलादीन अतिप्रसन्न होकर कहनेलगा हमारी पूरी ख़ुशी कल होगी और अभी शाहज़ादीने संध्याका भोजन न किया था और अलादीनभी क्षुधितथा इसलिये शाहज़ादी ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि शीघ्र वह सब भोजन उस बारहदरी से जो अभी तक वहीं रक्खेहुये थे लाओ फिर वह दोनों भोजन से निश्चिन्तहो और उसी जादूगरकी मदिरा लाई हुई बड़े आनन्द से पीकर अपनी शय्यापर सोरहे चीनका बादशाह उस दिनसे कि अलादीनका महल उसकी पुत्री समेत गुम होगया था बहुत बेचैन रहता न तो रात्रिको सोता और न दिनको प्रसन्न रहता और सदैव अपने मकान में जाके अकेला अपनी प्रियपुत्रीकी सुधि

कर रुदन करता और उसीके बिचारमें रहता जब भोर हुआ और सूर्योदयके पश्चात् पूर्ववत् बादशाह उसी कोठे पर गया और बड़े खेदसे उस ओर को जहां अलादीनका बिचित्र भवनथा अपने धैर्य के लिये देखा तो उसे वह भवन देखपड़ा और उसको भलीभांति देख शीघ्रही वहां से उतर घोड़ेपर सवारहो अलादीनके महल को सिधारा और अलादीननेभी प्रभात को जब वस्त्रादिक पहिन बारह-दरी में जाने की इच्छा की कि अकस्मात् बादशाहको देखा कि अ-केला चला आता है अलादीनने दौड़के बादशाह की भुजा पकड़ घोड़ेपर से उतारा बादशाहने अलादीनसे कहा मैं अभी तुझसे कुछ बात न करूंगा जबतक कि मैं अपनी पुत्रीको न देखलूंगा अलादीन उसे जहां कि उसकी पुत्रीथी लेगया और उसे बादशाह के आनेका हाल बताया वह तुरन्तही वस्त्र पहिने बादशाहके सन्मुख आई बादशाह उसे देख महाहर्षित भया और अपने कण्ठ से लगा के कहनेलगा कि अपना समाचार कहे कि तुम क्योंकर यहांसे उस बिचित्र भवन समेत गुप्त होगई थीं उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सु-नाया कि मैं इस कष्टसे अपने प्रिय अलादीनके कारण छूटी और मुझे अपने प्राणपति के बियोग का बड़ा दुःख बिशेष इस बातका कि तुमने उसे कोपमें मारडाला होगा इस बातमें वह निर्दोषहैं पुनि कहनेलगी कि मैं उस प्राचीन दीपकके गुणको न जानतीथी हँसीके लिये उसे बदलाथा फिर अलादीनने बारहदरीका दरवाज़ा खोल उस जादूगरकी लोथ बादशाह को दिखाई और कहनेलगा मैंने अपनी प्रतिज्ञानुसार तुम्हारी पुत्री को यहां पहुँचादिया बादशाह यह सम्पूर्ण बृत्तान्त सुन अत्यन्त बिस्मित हुआ और उस दुष्टकी लोथ देखी कि मुख उसका काला होगया है और झाग उसके मुख से निकलेहुयेहैं बादशाहने अलादीनसे कहा उस क्रोध से जो मैंने तुमपर चिन्ता में कियाथा उसका कुछभी बिचार अपने मनमें मत रखना और तुम मेरे पुत्रहो बहुधा माता पिता अपनी सन्तानपर क्रोध करतेहैं फिर उसे अत्यन्त प्रीतिसे हृदयमें लगालिया अला-दीनने कहा मुझे उस बात में कुछ शिकायत नहीं है यह आफ़्रीक़ी

जादूगर बड़ा दुष्टथा उसीके कारण यह उपाधि मची जब कभी आपको सावकाश होगा तो मैं कुछ औरभी उसके कपट और ईर्षाका वृत्तान्त आपसे कहूंगा ईश्वरने अपनी परिपूर्ण अनुग्रहसे मुझे बचाया बादशाहने कहा इस कहानीको मैं फिर सुनूंगा अब तुम इस की लोथ यहांसे फेंकवादो अलादीनने एक अपने नौकरको आज्ञा दी कि उसकी लोथको दूर निर्जन बनमें फेंकआओ कि पक्षी आदि इसका मांस नोचकर भक्षण करें इसके अनन्तर बादशाहने हर्षित हो आज्ञा दी कि नौबत बजे सो चहुँओर गाने बजाने का शब्द हुआ और दश दिनतक सम्पूर्ण नगर में नाच गाना और अनेक प्रकार के आनन्द और मङ्गलाचार उनके आगमनके लिये हुये दो बेर परमेश्वरने अलादीन को आफ़्रीक़ी जादूगरके हाथ से बचाया तीसरी बेर फिर आपदामें पड़ा सो कहतेहैं उस आफ़्रीक़ी जादूगर का एक छोटाभाई था वहभी जादूकी बिद्या में निपुण था वह दोनों भाई कभी एक नगरमें नहीं रहते थे यदि एक पूर्बमें होता तो दूसरा पश्चिममें परन्तु प्रतिबर्ष में वह दोनों एकबेर अपनी रमलबिद्यासे एक दूसरेका हाल मालूम करते कि किस नगरमें हैं और कौनसा काम करते हैं निदान एक वर्षके पश्चात् जादूगरके भाईको अलादीनके हाथसे जादूगरके मारेजानेका हाल मालूम हुआ और उसने चाहा कि अपने बड़ेभाईका वृत्तान्त मालूम करूं तो उसने एक चौकोन संदूक़्चा कि वह अपने बड़ेभाई के सदृश अपने निकट रक्खा करता था खोलकर अपने भाईका हाल देखा तो उसे मालूम हुआ कि एक मनुष्यने चीनकी राजधानीमें बिष पिलाके उसे मारडाला और वह मनुष्य प्रथममें अत्यन्त निर्धनथा परन्तु अब वह उस देशके बादशाह की कन्याके साथ व्याहागयाहै इस हालके मालूम होतेही वह बहुत रोया और साथही उसके यहभी सोचा कि वह तेरे रोने से जी न उठेगा अब इससे उत्तम है कि उसके मारनेवाले से चलके बदलालें यह मनमें ठान अपने घोड़ेपर सवारहो चीनदेश को सिधारा बहुत दिनोंमें बड़े बड़े बन, पहाड़, नदी, नद नांघता हुआ चीनकी सीमा में आन पहुँचा और वहां से चीनकी राजधानी में

पहुँचा और एक घर किराये पर लेके वहां उतर रात्रिको विश्रामकर प्रभातको जगा और नगरकी सैर करनेलगा निदान एक पुरबासियों के समूहमें पहुँचा और वहांपर ध्यानधर नगरनिवासियों की बार्त्ता सुननेलगा वह ऐसा स्थानथा कि जहां एक समूह बड़ा लुंगाड़ों का एकत्रहो रात्रि दिन बार्त्ता आदिक करता और वे लोग इकट्ठे मिलके भोजन करनेको बैठे थे और नगरभरकी कहानी और भांति भांतिकी बातें और हरएक का बृत्तान्त परस्पर कहते उसने सब कुछ सुना उस समय वह सब फ़ातिमा नामक स्त्रीकी प्रशंसा और उस की प्रकृति आचार और महिमाका बर्णन करते थे यह सुन उसने शोचा कदाचित् इसमें मेराभी अर्थ सिद्ध हो फिर उस जादूगरने उस समूहमें से एक मनुष्यको किनारेपर लेजाके पूछा कि वह बृद्धा कैसी है और उसका क्या माहात्म्य और गुणहै उसने कहा तुमने नहीं देखा और नहीं सुना कि वह इस समय में अद्वितीय है जन्म भर उसने ईश्वरकी बन्दना की वह अपने घर से सिवाय सोमबार और शुक्रवार के बाहर नहीं निकलती उसने कई करामातें की हैं और करती है उनमें से एक यह है कि जिस किसी को कितनीही ज़ोरसे शिरमें पीड़ाहो तो उसके हाथ के स्पर्शसे उसकी पीड़ा जाती रहती है उस जादूगरने केवल इतनीही बात सुन फिर उससे कुछ न पूछा और उससे पता पूछलिया दूसरे दिन उसी बृद्धा का घर पूछते पूछते ढूंढ़निकाला और उसको भलीभांति पहिंचान वहां से लौटआया आधी रात्रिको उसी फ़ातिमाके घरकी ओर सिधारा जब उसके घर पहुँचा तो बाहरके दरवाज़ेको जो भीतरकी ओरसे मुँदा हुआ था किसी यत्नसे खोला और चुपचाप भीतर गया तो क्या देखा कि वही बृद्धा चन्द्रमा की चांदनी में शय्यापर एक पुराना बोरिया बिछाये कोठेके आगे सोरही है यह देख उसने एक हाथमें नङ्गी तल-वार लेकर दूसरे हाथसे उसे जगाया उस बिचारीने आंखेंखोल क्या देखा कि एक मनुष्य खड्ग लिये उसकी छातीपर मारना चाहता है परन्तु जब उस जादूगर ने देखा कि वह जागी है तो कहनेलगा यदि तू चिल्लाई तो तुरन्त तुझको बध करडालूंगा जो अपना भला

चाहती है तो उठ जो मैं कहूं सो कर फ़ातिमा कि रात्रिके वस्त्रों से सोतीथी उठके भयभीतहो कांपनेलगी उस दुष्टने उससे कहा डर मत केवल मैं तेरे पहिनने के वस्त्र मांगताहूं उनको मुझे दे और मेरे वस्त्र तू ले उसने तुरन्त अपने वस्त्र उसे देडाले उस मायावीने उसे पहिनकर कहा जो चिह्न तेरे मुखपर हैं उन सबको मेरे मुखपर बनादे मैं चाहताहूं कि तुझसा बनजाऊं वह भयभीतथी कुछभी उत्तर न देसकी जादूगरने कहा तू डर नहीं मेरा अपनासा रूप बनादे मैं तुझे प्राणसे न मारूंगा फ़ातिमा को इस बातसे कुछ धैर्य हुआ और उसे भीतर लेजाके दीपक जलाया और एक प्रकार का तेल उस दुष्टके मुखपर लगाके अपनीसी सूरत उसकी बनादी और कहा अब मेरे और तेरे रंग और रूपमें कुछभी अन्तर नहीं है फिर उसने अपने शिरका मुडासा उस जादूगर के शीशपर बांधा और उसको बुरक़ा उढ़ाके सब बातें उसे सिखाईं कि इस इस भांति से नगरबासियों से अपने मुख और बदन को छिपाइयो फिर एक दिव्यमाला और एक तसबीह अपने पहिनने की उसके गलेमें पहिनादी और एक दिव्य लकड़ी जिसे वह सदा अपने हाथमें पकड़ नगरमें फिरा करतीथी दी और उसके हाथ में एक शीशा देकर कहा कि अब तू देख कि मुझमें और तुझमें कुछ अन्तरहै कि नहीं निदान जब उस दुष्टने अपने को फ़ातिमासा बनाहुआ पाया तो सौगन्दके खानेपर भी उसका गला घोंटकर मारडाला क्योंकि जो उसको कटार मारता तो उसके रुधिरसे इस भेदके खुलने का उसे संदेहथा और उसकी लोथ एक कुण्ड में जो उसी कोठेमें था डालदी और आप भोरतक वहीं रहा दूसरे दिन प्रातःकालको यद्यपि वह दिन फ़ातिमाके निकलने का न था यह बिचारकर कि कदाचित् नगरनिवासी कोई उससे प्रश्न करेंगे तो मैं उनको बहाना कर सुगमतासे उत्तर दूंगा सो वहां से निकल अलादीन के भवन की ओर चला मार्ग में मनुष्य उसे फ़ातिमा जान उसके चहुँओर आन आन कर खड़े हुये उस बिचित्र भवन तक बहुतसे मनुष्य इकट्ठे होगये कोई उससे शुभ आशीर्वादकी प्रार्थना करता और कोई उसके हाथ चूमता और कोई

उसके वस्त्रको चूमता और कोई उसके सन्मुख खड़ा होता कि उन के शिर पर हाथ रखके उनके शिरकी पीड़ाको दूर करे वह धूर्त माला हाथ में लिये कुछ बुड़बुड़ा रहा था कि मनुष्य जानें कि यह बृद्धा कोई नियमित मन्त्र जपती है यहांतक कि सबने उस दम्भीको फा-तिमा समझा और बहुधा वह जादूगर उन मनुष्योंकी प्रीतिसे जो उनके भले बुरेसे कुछ प्रयोजन नहीं रखतेथे मार्ग में खड़ा होजाता इसी भांति जब वह उसी भवनके समीप पहुँचा फिर तो वहां इतनी भीड़ हुई कि उसतक पहुँचना कठिन होगया और लोग आपसमें झगड़नेलगे हरकोई यही चाहताथा कि मैंही फातिमाके पास खड़ा होऊं और उसके वस्त्रके स्पर्श से दोनों लोकका आनन्द उठाऊं नि-दान इतना कोलाहल मचा कि यह शब्द बदरबदौर तक पहुँचा शाहज़ादी ने पूछा यह शोर क्यों होताहै जब कोई पड़ोसियों में से बता न सका तो उसने एक लौंडी को आज्ञा दी कि तुरन्त जाके इस शब्दका हाल मालूमकर मुझे बता उस लौंडीने हाल मालूम कर शाहज़ादीसे कहा कि उस बृद्धाके चहुँओर जिसका नाम फा-तिमा है असंख्य मनुष्यों की भीड़ है वही शब्द तुम्हारे कानोंतक पहुँचा शाहज़ादी तो पहिले से उसकी प्रशंसा सुन उसके दर्शनकी लालसा रखती थी इसलिये एक खोजी को भेज उस फ़ातिमा को बुलवाया जब खोजी उसके निकट गया तो सब पुरबासी खोजीको देख अलग अलग होगये वह जादूगर खोजीको देख प्रसन्न हुआ खोजी ने झुकके दण्डवत् की और कहनेलगा हे बृद्धा ! शाहज़ादी को तुम्हारे दर्शनकी बड़ी लालसा है मेरे साथ चलो उसने उत्तर दिया शाहज़ादी ने मुझपर बड़ी कृपाकी जो मुझे बुलाया मैं च-लतीहूं सो वह उसके साथ होके भीतर गया और वहां बारहदरीमें जाकर उसे बहुतसे आशीर्वाद दिये और संसारकी असत्यता और ईश्वरके आराधनके बिषयमें उसे बहुतसे उपदेश किये शाहज़ादी ने उसकी बातें सुन और उसको ईश्वरको पहुँची हुई समझ उत्तर दिया हे मेरी माता ! मैं चाहतीहूं कि तुम यहां बैठके मुझे ईश्वरके पहुँचने का मार्ग बताओ वह शाहज़ादीके निकट बड़ी लज्जा से शिर

नीचे कियेहुये बैठगई पुनि बादशाहज़ादी ने उससे कहा हे माता! मुझे अत्यन्त अभिलाषाहै कि तुम मेरे पास रहाकरो कि मैं तुमसे बहुधा बार्त्ता कियाकरूं और मुक्तिकी बिधि सीखूं फ़ातिमाने कहा यहांके रहने से मेरा ईश्वरका आराधन न बनपड़ेगा इसलिये मेरा यहां रहना नहीं होसक्ता शाहज़ादीने कहा जो तुम मेरे पास न रहो तो इस बिचित्र भवन में बहुत मकान ख़ाली हैं उनमें से किसीको पसन्द करके तुम उसमें रहो वह इस बात से अतिप्रसन्न हुआ क्योंकि वह यही चाहताथा कि किसी भांति मैं अलादीन के घरमें घुसूं तो अवसर पाय शाहज़ादी से छल करके अपना कार्य सिद्ध करूं फिर वह शाहज़ादी से कहनेलगा कि मुझे ऐसे स्वच्छ मन्दिर में ऐसी शाहज़ादी की संगतिमें रहना क्या उचितहै मैंने तो संसारका माया मोह त्याग दियाहै परन्तु लाचारी है तुम्हारी आज्ञा भङ्ग नहीं करसक्ती जिसमें आपकी प्रसन्नता हो मुझे अवश्य करना चाहिये शाहज़ादी उसका यह उत्तर सुन उठ खड़ीहुई और कहा मेरे साथ चलके ख़ाली मकानोंको देखो और उनमेंसे एकको पसन्द करो उस दुष्टने उसके साथ मकानोंको देखा सो उनमेंसे एकको पसन्द किया फिर शाहज़ादीने बारहदरीमें उसे लाके चाहा कि अपने साथ उसे भोजन कराये उस समय उस जादूगरने बिचारा कि ऐसा न हो कि भोजन करते समय मेरा मुख शाहज़ादी देख पहिंचानले कि वह फ़ातिमा नहीं है और भेद मेरा खुलजावे इस निमित्त कहा मैं तो सूखी रोटीके टुकड़े अथवा शुष्कफलों के गूदेके बिशेष और कुछभी भोजन नहीं करती अपने मकान में भूख लगने पर खालिया करूंगी शाहज़ादीने थोड़ेसे सूखे फल और रोटी के टुकड़े उसके मकानमें भिजवादिये और कहनेलगी तुम अपने मकानमें जाके कुछ थोड़ा बहुत खाके मेरे पास चलीआना मैं तुम्हारे आगमनकी बाट देखती रहूंगी वह दुष्ट उससे बिदा होकर अपने मकानमें आया और एक खोजीको जिसको उसकी सेवाके लिये नियत किया था कहा कि जब शाहज़ादी भोजनकर निश्चिन्तहो तो तुरन्त मुझे समाचार दीजिये सो जब शाहज़ादी भोजन करचुकी तो उसी समय उस खोजी ने

ख़बरकी सो वह शाहज़ादीके सन्मुख गया शाहज़ादी ने कहा मुझे अत्यन्त अभिलाषा है कि ऐसी पवित्र बृद्धा की सेवामें जैसी कि तुमहो रहूं और वार्त्तालाप करूं इस वार्त्तामें बदरबदौरने उस जादूगरसे कहा कुछ आंखें खोल इस बारहदरीकी तैयारी को देखो कि कैसीहै फिर शाहज़ादीने उस बारहदरीकी सम्पूर्ण बस्तु और उसके मकानोंको उसे दिखाया उसने देखके कहा बास्तवमें यह बारहदरी प्रशंसाके योग्य है और उसके सदृश संसारभर में कोई महल नहीं परन्तु एक बस्तु इसमें नहीं यदि वहभी होती तो हज़ार हिस्से यह बारहदरी शोभा देती शाहज़ादीने कहा मुझे बताओ वह कौनसी बस्तुहै उसने कहा यदि इस बारहदरीके मध्यमें रुख़नामक पक्षीका अण्डा लटकायाजाता तो अधिक शोभा होती और चारों दिशा में अपना दूसरा न रखती शाहज़ादीने उससे पूछा रुख़ कैसा पक्षी होताहै और उसका अण्डा कहां हाथ लगेगा उसने कहा कि रुख़ बड़ा पक्षी है और सिवाय पहाड़की चोटीके और कहीं बास नहीं करता जिसने इस भवनको बनाया है उसको यह सुगमता से मिल सक्ता है फिर उस जादूगरसे बहुकाल पर्यन्त वार्त्ता करतीरही परन्तु रुख़के अण्डेको न भूली और अपने मन में यह बिचारा कि जब अलादीन शिकारसे आवेगा तो मैं अवश्य उससे मांगूंगी अलादीनको अहेर खेलनेको गये हुये छःदिन हुयेथे उसके पीछे आफ़्रीक़ी जादूगर के भाई ने अपने सर्वकार्य करलिये अकस्मात् उस दिन सन्ध्याको अलादीनभी घर पहुँचा उसके आने से वह दुष्ट शाहज़ादी से बिदाहोकर अपने मकान में गया जिस समय अलादीन अपने भवनमें पहुँचा और स्त्रीसे मिला तो उसने उसे और दिनों के सदृश प्रसन्न न पाया तो पूछा कुशल तो है मेरे पीछे तुम कैसी रहीं तुम मलिनरूप क्यों दिखाई देतीहो ईश्वरके वास्ते मुझसे मत छिपावो अपने मन का हाल कहो जहांतक कि मेरी सामर्थ्य और शक्ति होगी वहांतक मैं अवश्य करूंगा जब अलादीन ने उसकी बहुतसी बिनती की तब शाहज़ादी ने कहा मेरा भवन मुख्य करके बारहदरी संसारभर में अद्वितीय है और भाति भांति की स्वच्छ बस्तुओं से

अलं[illegible]त है परन्तु एक बस्तु मैं चाहतीहूं कि वहभी इसी में हो वह यह है कि बा[illegible]हदरी के मध्य में रुखपक्षी का अण्डा लटकायाजावे तो इसकी अधिक शोभाहो अलादीन ने उत्तर दिया यह तो कुछ बड़ी बात नहीं है मैं बारहदरी में उस अण्डे को लटकवा दूंगा सो अलादी[illegible] अपनी प्रियाको वहीं छोड़ बारहदरीके भीतर आया और उस दीपक को छाती में से नि[illegible]ाला क्योंकि जबसे उसने जादूगर से दुःख उठायाथा तबसे दीपकको अपनी छाती से अलग न करता निदान उसको रगड़ा तो वही बीर जो उसके अधीनथा आया अलादीन ने कहा हे बीर ! एक अण्डा रुखपक्षी का बारहदरी में लटकादे जिससे इसकी अधिक शोभाहो मैं तुझे आज्ञा देताहूं कि इस [illegible]ीपकके दास जिसके कि तूभी अधीनहै शीघ्र यह मेरा मनोरथ सिद्ध करें अभी अलादीन अपनी बात पूरी न करचुकाथा कि वह बीर ऐसा घोर [illegible]ादकर बोला कि वह सम्पूर्ण मन्दिर कांपनेलगा और अलादीन भी डरके कांपा फिर बीरने क्रोधित होय अलादीन से कहा [illegible] भाग्यहीन ! मैं और मेरे साथियों ने जो कुछ कि तूने कहा तुरन्त किया कभी तेरी आज्ञा भङ्ग न की परन्तु तूने हमारा गुण न माना किन्तु उसके बिपरीत [illegible]मको आज्ञा देताहै कि हम अपने स्वामी को तेरे पास लावें और उसको इस बारहदरी में लटकावें अब तू और तेरी [illegible] इस मन्दिर समेत योग्यहैं कि टुकड़े २ होकर बिनाश को प्राप्त होवें प[illegible]न्तु तेरा भाग्य अच्छाहै इसलिये कि तूने यह इच्छा अपनी अभिलाष से नहीं की और यह आज्ञा तेरी कामनासे नहीं हुई मालूमकर कि यह सब उपाधि उस आफ्रीकी के भाई के कारण हुई जिसे तूने प्राण से मारा है और वह इस बिचित्र भवन में फ़ातिमा नामक बृद्धाके बेषमें छिपाहुआहै उसने फ़ा[illegible]माको मारडाला और उसी दुष्टने तेरी स्त्रीको यह उपदेश कियाहै इस बात से उसका य[illegible] प्रयोजन है कि तू और तेरी स्त्री इसी अद्भुत भवन समेत नष्ट होजावें जो तू अपने को न बचावेगा तो वह तुझको मारडालेगा चैतन्य रह उसके छल और धूर्ततासे बचारहियो वह बीर यह सब बातें [illegible]लादीनको समझा बुझाके [illegible]लागया अलादी[illegible] तो फ़ातिमा

का माहात्म्य पहिले से जानताथा और यह भी भलीभांति जानता था कि उस वृद्धाके फूंकने से शिरकी पीड़ा जाती रहती है इससे बहानाकर अपने शिरको लपेट शाहज़ादी के मकान में गया परन्तु जो बातें कि वीरने उससे कहींथीं शाहज़ादी से न कहीं और अपनी प्रियाके निकट बैठ अपना शिर पकड़लिया और कहनेलगा कि मेरे शिरमें पीड़ा होतीहै शाहज़ादीने इस दशाको देख अपने सेवकोंको आज्ञा दी कि फ़ातिमाको बुलालाओ जब सेवक फ़ातिमाको बुलाने गये तो शाहज़ादी ने उसके बुलाने और भवन में रखनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त अलादीन से कहदिया इतने में वह जादूगर भी आया अलादीन ने उसके आतेही कहा कि हे माता! मैं तुम्हारे दर्शन से अतिप्रसन्न हुआ और तुम्हारा होना इस स्थानपर मेरे वास्ते अत्यन्त लाभकारी हुआ इस समय मैं शिरकी पीड़ा से अत्यन्त बिकलहूं चाहताहूं कि तुम अपनी कृपासे मेरे शिरकी पीड़ा शान्त करो और फूंको मुझे बिश्वास है कि तुम्हारे आशीर्वाद और झाड़ने से मेरे शीशकी पीड़ा जाती रहेगी और मैं अच्छा होजाऊंगा अलादीनने इतनी बात कहके अपने शिरको उसके आगे किया वह अनुकरण फ़ातिमा भी आगेको बढ़ी और उसी समय उसने अपने हाथको तलवार पर रक्खा जिसको अपने वस्त्रमें छिपाये था अलादीनने इस बातको मालूमकर तुरता से इससे पहिले कि वह उसे मियान से निकाले पकड़लिया और उसी के खड्गको लेकर उसीकी छाती में ऐसा मारा कि उसी क्षण वह दुष्ट धरती पर गिरके नरकवासी हुआ शाहज़ादी यह दशा देख चिल्लाई और अलादीन से कहनेलगी हे मेरे प्रियतम! तुमने क्यों ऐसी पवित्र वृद्धाको बध किया अलादीन ने कहा हे सुन्दरी! मैंने फ़ातिमा को नहीं मारा परन्तु एक महादुष्टको कि मेरे प्राणका बैरीथा मारा है यह मेरे बध करने को आयाथा यदि मैं यह उपाय न करता तो वह मुझे कभी जीता न छोड़ता यह एक दुष्ट है जिसे तुम फ़ातिमा समझती थीं फिर उसके मुखको खोलकर दिखाया और कहनेलगा इसी दुष्टने फ़ातिमाका गला घोंट मारडाला और छलसे फातिमा बना कि अव-

सर पाय मुझे मारे परन्तु मैंने इसके बिचारको पहिलेसेही जान इसको नरकमें भेजा यह दुष्ट उसी जादूगरका भाईथा जो तुमको इसी भवन समेत आफ्रीक़ा में लेगयाथा फिर अलादीन ने बीर से सुनाहुआ सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी प्रियाको कह सुनाया और उसकी लोथ वहांसे फिंकवाकर आप ईश्वरकी अनुग्रहसे उन दोनों जादूगरों के छलसे बचारहा कईबर्ष पश्चात् चीनका बादशाह बहुत बृद्ध होकर मरगया यद्यपि सिवाय बदरबदौर के और कोई उसकी सन्तान न थी इसलिये वही तख़्तपर बैठी और फिर वह राज्य अलादीनके हाथ लगा निदान अलादीन और बदरबदौर ने बहुत बर्षों तक चीनके राज्यके सुख भोगे॥

इति श्रीसहस्त्ररजनीचरित्रे परिडतप्यारेलालउल्थाकृत तृतीयभागस्सम्पूर्णतामगात्॥

दोहा॥

श्रीबिश्वम्भर की कृपा, पूरण भो अभिराम॥
सहसरजनिबर शुभद को, तृतियभाग सुखधाम १
ईश्वरके सुमिरण करत, प्यारेलाल सुजान॥
देत अशीश सुसज्जनन, पढ़िहैं जे बुधिमान २
सर्ब मनोरथ सफल हों, और होय शुभकाज॥
धन पुत्रन से सब फलें, और होयँ शुचिसाज ३

———*———

चतुर्थभागप्रारम्भः

दो० द्विरदबदन सुषमासदन, बिघनहरण बिश्वेश ।
उमानँदन मोदकअदन, मङ्गलकरण गणेश ॥
ता पद पद्म मनायके, प्यारेलाल सुजान ।
करत सुभाग चतुर्थ को, उलथाअतिसुखदान ॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीद और बाबा अब्दुल्ला की कहानी ॥

मलका शहरज़ादने ईरानके बादशाहसे कहा किसी समय मनुष्य का चित्त ऐसा प्रसन्न होताहै कि सब मनुष्यों को उसका हर्ष बिदित होजाताहै और इसी भांति पुरुषका मन अत्यन्त प्रसन्न होजाताहै जिसका कारण किसीके बिचारमें नहीं आता किन्तु यदि वही मनुष्य जो आपही चाहे कि अपने चित्तका हाल मालूम करे तो उसे भी एकही वेर मालूम नहीं होता सो एक दिन ख़लीफ़ा हारूंरशीद आपही कुछ चिन्तित होकर अपने महल में बैठाथा कि बादशाह का भेदी वज़ीर जाफ़र आया और ख़लीफ़ा को चिन्तित पाके चुपका हाथ बांध खड़ाहोरहा थोड़ी देर पीछे ख़लीफ़ाने आंखें खोल उसकी ओर देखा और कुछ वार्त्ता न की फिर उसी बिधि चिन्तामें चुपका बैठरहा मन्त्री ने अपने स्वामीको इस दशामें देख बिनयकी हे बादशाह ! आशा रखताहूं कि यह दासानुदास आपकी इस चिन्ता का हाल मालूम करे ख़लीफ़ा हारूंरशीदने उत्तर दिया तूने सत्य कहा मुझे कभी कभी चिन्ता आजाती है परन्तु मैं चाहताहूं कि तू कोई ऐसी बात बिचार जिससे यह चिन्ता मेरी निवृत्तहो मन्त्री ने बिनयकी मुझे मालूमहै कि आपका सदा से यह नियमहै कि बहुधा आप बेष बदल अन्यायियों और दुष्टोंके हाल मालूम करनेको नगरकी सीमाओं और गलियोंमें घूमा करतेथे और आजके दिनको आपने इसी कार्य के लिये नियत कियाहै उत्तमहै कि अपने नियमानुसार वही कार्य कीजिये जिससे यह आपके मनका सम्पूर्ण शोच

जातारहे और प्रजाके हाल मालूम करने से निश्चय है कि चित्त आपका सन्तुष्ट होजावेगा ख़लीफ़ा ने कहा सत्य है मैं इस बातको भूल गयाथा इस समय तूने स्मरण कराया तूभी शीघ्रही अपना बेष बदलकर आ मैंभी बेष बदलताहूं फिर वे दोनों बेष बदलकर बागके चोरदरवाज़े से निकलकर प्रथम नगरके चहुँओर घूमे तद्नन्तर नावपर सवारहो नदीके पार जाकर वहांकी बस्ती देखनेलगे उस पारसे फिरते समय पुलकी ओर आये वहां एक अन्धे भिक्षुक ने ख़लीफ़ासे भिक्षा मांगी ख़लीफ़ाने एक अशरफ़ी जेबसे निकाल उसके हाथमें रखदी उस अन्धे ने ख़लीफ़ाका हाथ पकड़ ठहराया और आशीर्बाद देकर कहनेलगा हे सत्पुरुष, उदार! तूने मुझे अशरफ़ी दान दी तू मुझे एक धौलभी मार क्योंकि मैं इसी दण्ड के योग्यहूं किन्तु इससे अधिक क्या यह कहके उसने ख़लीफ़ाका हाथ छोड़दिया और फिर कपड़ा ख़लीफ़ाका पकड़ा कि ऐसा न हो कि बिना मारे धौलके चलाजावे ख़लीफ़ा उसकी इस इच्छासे आश्चर्य में हुआ और कहा हे भलेमानस! मुझसे इस बातकी आशा मतरख मैं क्योंकर अपने पुण्यका फल नष्टकरूं यह कहके ख़लीफ़ा ने चाहा कि वस्त्र अन्धेसे छुड़ाकर चलाजावे उसने इस बातको मालूम कर दामनको ज़ोरसे पकड़ा और कहनेलगा कि मेरी इस ढिठाईको क्षमाकर और जो मैं कहताहूं सो कर अर्थात् एक धौल मेरे शिरपर मार नहीं तो अपनी अशरफ़ी फेरले कि मुझे धौल मारे बिना तेरी अशरफ़ी लेना स्वीकार नहीं क्योंकि जो मैंने ईश्वर से प्रतिज्ञाकी है उसे उल्लङ्घन नहीं कर सक्ता जो तू इसका कारण सुने तो जाने कि मेरा बहुत बड़ा अपराध है ख़लीफ़ाने लाचारहो धीरे से एक धौल उसके शीशपर मारी वह भिक्षुक वस्त्र छोड़कर शुभ आशीर्बाद देनेलगा निदान ख़लीफ़ा और वज़ीर दोनों आगे बढ़े और थोड़ी दूर जाय ख़लीफ़ाने वज़ीर से कहा मैं चाहताहूं कि इस भिक्षुक से इसकी प्रतिज्ञा का कारण पूछूं तू जा और उससे कह वह मनुष्य जिसने तुझे अशरफ़ी दीथी ख़लीफ़ा है कल भोरको ख़लीफ़ा की सभामें जाना वह तुझसे कुछ पूछेगा सो मन्त्री ने अन्धे

भिक्षुक के पास जाकर पहिले एक अशरफ़ी उसे दी उसने उससे भी धौल मारनेको कहा वज़ीरने धीरेसे उसे धौल लगा ख़लीफ़ाकी आज्ञाको सुनाया और ख़लीफ़ाको जा मिला फिर वह दोनों नगर में गये तो क्या देखा कि मैदान में एक तरुण मनुष्य दिव्य वस्त्र पहिने घोड़ीपर सवार है और अत्यन्त निर्दयतासे घोड़ीको चाबुक और ऐड़ें मार दुःख देताहै और उस घोड़ी के दौड़ते दौड़ते मुख में रुधिर और झाग भरगया है ख़लीफ़ा उसके कठोरचित्त और निर्दयताको देख आश्चर्य में हुआ और इस बातके मालूम करनेको वहां खड़ा होगया और तमाशाई जो वहां प्रथम से खड़ेहोके देख रहेथे उनसे घोड़ी के इतना मारने और दौड़ानेका कारण पूछा उन्हों ने कहा हम हरदिन इसको इसी मैदान में इसी समय देखते हैं कि अपनी घोड़ीको इसी बिधि मार मारकर सैकड़ों चक्कर देताहै परन्तु हमें इसका हेतु कुछ मालूम नहीं कि यह मनुष्य कौन है और इस घोड़ी के मारने और दौड़ाने से उसे क्या प्रयोजन है ख़लीफ़ा ने यहसुन जाफ़रसे कहा मैं आगे जाताहूं तू इस सवारको जाके आज्ञा दे कि कल उसी समय जो भिक्षुकके लिये नियत कियाहै मेरी सभा में आवे उसने वही किया फिर वज़ीर और ख़लीफ़ा एक गली में गये जिसमें कई बेर पहिलेभी गये थे वहां बड़ा भारी अतिस्वच्छ महल वनाहुआ देख ख़लीफ़ा ने उसे सोचा कि यह महल किसी मेरे सेवकका बनाया हुआ होगा तो वज़ीर से पूछा यह घर किसका है उसने बिनयकी मुझे कुछ इसका बृत्तान्त मालूम नहीं जो आज्ञा हो तो मैं यहांकें वासियों से पूछूं निदान वज़ीरने वहांके रहनेवालों से पूछा कि यह नवीन और सुन्दर महल किसकाहै उन्होंने कहा यह महल ख़्वाजहहसन हब्बालका है हब्बाल रस्सी बटनेवालेको कहते हैं यह मनुष्य सदैव रस्सी बटा करताथा और रस्सी बेंचकर कठिनता से अपना निर्बाह करता था परन्तु यह नहीं जानते कि क्योंकर उसे यह बहुतसा द्रव्य प्राप्त हुआ जिससे उसने इतना बिशाल महल बनवायाहै अब वह बड़े आनन्द से अपना कालक्षेप करता है ख़लीफ़ा ने यह बातसुन वज़ीर से कहा मैं चाहताहूं कि

ख़्वाजहहसन हव्वालको देखूं और यह समाचार पूछूं तू जाके उससे कह कि कल के दिन उस कालमें जो उन दोनोंके लिये नियत किया है मेरी सभा में आवें उसने तुरन्त अपने स्वामी की आज्ञा प्रतिपालन की दूसरे दिन प्रभातको जब ख़लीफ़ा निमाज़ भोर की पढ़ तख़्तपर सुशोभित हुआ वज़ीर तीनों मनुष्यों को उसके सन्मुख लेगया उन्होंने पहिले तख़्तके पायेको चूमा ख़लीफ़ा ने पहिले उस अन्धे भिक्षुकसे पूछा तेरा क्या नामहै उसने उत्तर दिया मेरा नाम बाबाअब्दुल्ला है ख़लीफ़ाने कहा मैंने कल तुझे एक अशरफ़ी दी तूने उसे लेकर क्यों कहा कि मुझे एक धौल मारो या अपनी अशरफ़ी लौटालो और तूने यह क्यों प्रतिज्ञा की अब मैं चाहता हूं कि इस प्रतिज्ञाका कारण मालूमकरूं अब्दुल्लाने अपना शिर ख़लीफ़ा के तख़्तके सामने पृथ्वी से लगाया और उठकर कहनेलगा अय शाहन्शाह ! प्रथम मेरी यह बिनय है कि वह ढिठाई जो कल मैंने आपसे कीथी क्षमाहो क्योंकि मैंने आपको न पहिचाना अब मैं बिस्तारपूर्बक इस प्रतिज्ञाका बृत्तान्त आपके सन्मुख बर्णन करताहूं उससे आपको अवश्य बिदित होगा कि मैं निस्सन्देह ऐसे दण्डके योग्यहूं ॥

अन्धे बाबा अब्दुल्लाका बृत्तान्त ॥

बाबा अब्दुल्ला ने खलीफ़ा के सन्मुख अपना बृत्तान्त इस बिधि बर्णन किया कि मेरा उत्पत्तिस्थल बुग़दादनगर है जब मेरे माता पिता मरगये तो उनका द्रव्य मेरे हाथ लगा यद्यपि उतना द्रव्य मेरे जन्मभर को बहुतथा परन्तु मैंने उसकी कुछ भी क़दर न की थोड़ेही कालमें उसे लम्पटता में खर्च करडाला जब थोड़ासा बचा तो उस धनके बढ़ने के लिये रात दिन परिश्रम करता यहांतक कि धीरे धीरे मैंने अस्सी ऊंट इकट्ठे किये और उन्हें सौदागरों को दियाकरता हरबेर में उन ऊंटों के किराये से जो मुझे लाभ होता तो और ऊंटोंको लेकर राज्यमें मैं लिये फिरता और आप उन ऊंटों के साथ रहता थोड़ेदिनों के लाभ से मैं समझा कि थोड़ेही काल में मैं महा धनवान् होजाऊंगा सो मैं एकबेर बांसरानगरसे जहां ब्यापारियोंने

नम्बर ४५ मुतअल्लिक़े सफ़े ६९२ च·भा·

चित्र क़बरिस्तान में स्त्री का जंगली समूह के साथ मुरदे का मांस खाते हुये और सादी नै सान का गुप्त देखना·

अपनी बस्तुको हिन्दुस्तानके लेजाने के इरादे से लादाथा असबाब को पहुँचाके खाली ऊंट लियेहुये बुग़दाद को लौटा आताथा कि मार्गान्तरमें मैंने अपने ऊंटोंको एक बनमें जो बस्तीसे दूर था चरने के लिये छोड़दिया और सुन्दर हरियाली घास देख उनके पांव रस्सी से बांधदिये इतने में एक योगी जो पैदल बांसरानगर को जाताथा वहां आया और मेरे पास बैठा मैंने उससे पूछा तुम किधरसे आते हो और कहां जाओगे उस योगीने भी मुझसे यही प्रश्न किया निदान हमने परस्पर अपने आवागमन का हाल बर्णन किया और भोजन निकालकर खानेलगे भोजनान्तरमें उससे मेरी बहुत बार्त्ता हुई सो योगी ने मुझसे कहा एक स्थानपर जो यहां से बहुत दूर नहीं असंख्य द्रव्यका कोषहै जो तुम अपने अस्सी ऊंटोंको केवल अशरफ़ी और रत्नोंसेही भरलोगे तथापि उसमें से कुछ कम न होगा और वह बेप्रमाण कोष वैसाही भराहुआ दीखेगा इसके सुनतेही मैं अतिप्रसन्न हुआ और उस योगी का बेष देखकर यह बिचारमें न आया कि वह छलसे कहताहै इससे उठके उसके गले मिला और कहा हे महात्मा! तुमको संसारी धनकी कुछ परवाह नहीं और जगत् के सब कार्य से तुम कुछ काम नहीं रखते आश्चर्य नहीं कि आपको उस द्रव्यका हाल मालूम हो मुझे वह स्थान बताओ तो मैं अस्सी ऊंटोंको वहांसे भरकर आपको श्रमफलमें एकऊंट दूं और मैं जानता हूं कि आपको उसकी कुछ इच्छा नहीं कहने को यह बात कही परन्तु मनमें इस बातका बड़ा खेद हुआ कि अशरफ़ी और रत्नोंका भरा हुआ एक ऊंट देना उचित नहीं फिर सोचा कि उन्नासी ऊंट मेरे वास्ते बहुत हैं निदान कभी मैं पश्चात्ताप करता और कदापि अपने मनको समझाता सो उस योगीने मुझे कमहिम्मत और लोभी विचार के कहा मैं एक ऊंट के वास्ते द्रब्य नहीं बताता परन्तु एक बात से कि तुम सब ऊंटोंको लेचलो और हम तुम उस द्रब्यको उनपर लादें उसके आधे मुझको दो और आधे तुम लो चालीस ऊंटोंसे तुम हज़ारों ऊंट पैदा करसक्ते हो मैंने कहा बहुत अच्छा मैं आपकी प्रसन्नतासे बाहर नहीं जो आप आज्ञा दें मुझे स्वीकार है

और मैंने यह सोचा यदि चालीस ऊंट द्रव्यके मुझे मिलें तो वह कई पीढ़ियों को काफ़ी होंगे जो अङ्गीकार नहीं करता तो जन्मभर पछताता रहूंगा निदान उस योगीकी बात मान उसके साथ हुआ और थोड़ी दूर जाकर एक पहाड़के दरह में पहुँचे जिसका मार्ग अति सूक्ष्मथा ऊंटोंकी पंक्ति बांध वहांसे लेगये थोड़ीदेर के पीछे मार्ग कुछ चौड़ा मिला वहांसे सब आनन्दपूर्वक निकल गये इसके अनन्तर दो पहाड़ दृष्टिपड़े जिनका वह दरहथा उस मार्ग में उँचान निचान बहुतथा कोई मनुष्य वहां न था जो हमको देखता इसलिये निश्शङ्क होकर वहां पहुँचे योगीने कहा अब यहांपर ऊंटोंको बैठाकर मेरे साथ आओ मैं ऊंटोंको बैठाकर वहां गया थोड़ी दूरपर जाके योगीने पथरी और लोहा अपने पाससे निकाल आग झाड़ी और कुछ थोड़ासा काष्ठ एकत्रकर उसको जलाया और अग्नि प्रबलकर उसपर कोई सुगन्धित बस्तु डाली और कोई मन्त्र पढ़ा जिसको मैं न समझताथा उसके पढ़तेही एक बड़ा धुंधाकार धुवां उठा और ऊपर जाके फटगया और उस धुवेंमें जो दोनों पहाड़ों के मध्यमें था एक टीला दृष्टिपड़ा और हमारी जगह से वहांतक एक रस्ता बनगया और द्वार खुलाहुआ दृष्टि पड़ा उसके भीतर एक बड़ी कन्दरा दिखाई दी जिसमें एक विशाल महल जिन्नोंका बनाया हुआ दिखाई दिया मनुष्य ऐसा भवन नहीं बनासक्ते जब उस महल में जाकर देखा तो उसमें असंख्य द्रव्य भराहुआथा मैं अशरफ़ियों के ढेरको देख ऐसा झपटा जैसे गृध्र अपने शिकारपर झपटता है और जितना चाहा मैंने ऊंटोंकी खुरजियों में भरलिया वह योगी भी इसी काममें लगा परन्तु वह केवल रत्नोंको उठाकर भरता और मुझसे भी रत्न भरने को कहता सो मैंभी अशरफ़ियों को छोड़ बहुत मौल्य रत्न भरनेलगा निदान जब हम बहुतसा धन खुरजियों में भर ऊंटोंपर लादचुके और बाहर निकलने की इच्छा की तो वह योगी फिर द्वार खोलकर उसी कोषके भीतर जहां हज़ारों बस्तु अतिसुन्दर सुबर्ण की नवीन प्रकारकी रक्खी हुईथीं गया और वहां से एक लकड़ी की डिबिया जिसमें मर्हमथा एक सन्दूकचे में से

निकालकर लेली और मुझको दिखाकर उसने अपनी जेबमें रखली।
फिर वह अग्निमें सुगन्धित बस्तु डालकर मन्त्र पढ़नेलगा जिससे
वह द्वार मूंदगया और वह टीला जैसा कि पहिले दीखताथा वैसाही
दिखलाई देने लगा फिर हमने परस्पर उन ऊंटों को आधे २ बांट
लिये और उसी सूक्ष्म मार्ग मेंसे एक एक ऊंट करके निकाले जब
उस पहाड़के दरह से बाहर निकले और खुला बन पाके बिदाहुये
तब वह योगी बांसरा को सिधारा और मैं बुगदादको चला और
बिदा होते समय मैंने उस योगी का बहुत सा गुणानुबाद किया
क्योंकि उसने करोड़ों का द्रब्य दिलाया निदान जब बिदा भये तो
मैं ऊंट लेकर कई पग आगे गयाथा कि शैतान ने मेरे मनमें यह
बात डाली और लोभसे यह बिचार किया कि यह योगी अकेला
है अर्थात् इसकेकुटुम्बआदि नहीं और संसार के कामों सेभी कुछ
प्रयोजन नहीं रखताहै इतने धनके भरे हुये ऊंट क्या करेगा किन्तु
रखवारी करनेसे उसको ईश्वरकी बन्दनामें बिघ्न पड़ेगा उत्तमहै कि
कुछ ऊंट इससे और लिया चाहिये इस बातको मनमें ठान अपने
ऊंटोंको बैठाया औरउनके पांव बांध वहांसे उसी योगी को पुकारता
हुआ चला वह मेरा शब्द सुन ठहरगया जब मैं निकट पहुँचा तो
उससे कहा कि मैंने आपको बिदा करके सोचा कि तुम योगी हो
जगत् से बिरक्त और ईश्वर की बन्दना में अहर्निश रत तुम्हारे इस
द्रव्य के लेजानेसे भजन स्मरण में बिघ्न पड़ेगा इसकी रक्षा करनी
पड़ेगी इससे उत्तमहै कि वह ऊंट मुझको देडालो उसने कहा तू
सत्य कहताहै इतने ऊंटोंके रखने से अवश्य बिघ्न होगा जितने तू
चाहे इनमेंसे लेले मैंने प्रथम से यह बात न विचारीथी वह ईश्वर
परमात्मा तुझेआनन्द रक्खे तूनेमुझे बहुत अच्छी बात बताईसो
मैं दश ऊंट उसयोगीके भागमें से चाहताथा कि लेकर आगे को च-
लूं अकस्मात् फिर मेरे मन में यह आई कि योगी को दश ऊंटके दे-
ने से कुछ खेद न हुआ दश ऊंटऔर इससे लेने चाहियें फिर उस
योगी के समीप जाय मैंने कहा तीस ऊंटों की रखवारी और सेवा
तुमसे बन न पड़ेगी उत्तम है कि दश ऊंट मुझे और दो योगी ने

कहा अच्छा बाबा जो तेरी यही इच्छाहै तो दश इनमेंसे और ले बीस ऊंट मेरे वास्ते बहुत हैं सो मैं दश ऊंट और योगीके भागमें से ले गया जब उन बीसों को मैंने अपनी पंक्तिमें मिलाया तो मुझे लोभ अधिक हुआ और चाहा कि दश ऊंट और उससे लूं निदान फिर उसके पास गया और कहसुनके दश ऊंट और किन्तु शेष दश ऊंट भी उससे ले दम दिलासा देके चला आया योगीने सबके सब ऊंट हँसी खुशीसे मुझको देदिये और वस्त्र झाड़कर उठ खड़ाहुआ और चलनेकी इच्छा की परन्तु तृष्णाने मुझे न छोड़ा कि मैं उन ऊंटोंको जो सबके सब अशरफ़ी और रत्नोंसे भरेहुयेथे सन्तोष करके अपने महल में आता सो यह शोच पैदाहुआ कि वह मर्हम की डिबिया भी योगीसे लेनी चाहिये निदान फिर मैंने ठहरकर उस योगी से कहा तुम इस डिबिया को जिसमें मर्हमहै अपने पास रखकर क्या करोगे उसे भी मुझे कृपा करो उसने उसके देनेका इन्कार किया इससे मुझे अधिक अभिलाषा हुई और मैंने अपने मनमें ठाना कि यदि वह योगी प्रसन्नता से डिबिया देवे तो भला नहीं तो ज़ोर से उससे लेलूंगा उस योगीने यह बात समझकर डिबिया को अपनी जेबसे निकाला और कहने लगा भाई जो तुम्हारी प्रसन्नता इसीके लेनेमें है तो लेलो परन्तु तुझे उचित है कि इस मर्हमका गुण मुझसे पूछले मैंने उस डिबिया में मर्हम भरा देख उस योगी से कहा जहां तुमने इतनी कृपा और उपकार मुझसे किया है तो इसका गुणभी मुझे बताय दीजिये उसने कहा इसके गुण अद्भुत और बिचित्रहैं जो तुम इस मर्हममें से थोड़ासा अपने बायें नेत्र में लगाओ तो तुम्हें संसार भरके कोष दिखाई देवें और जो इसी मर्हम को अपनी दाहिनी आंखमें लगाओ तो तुम दोनों आंखों से अन्धे होजाओ मैंने परीक्षा के लिये उस डिबियाको योगी के हाथ में देकर कहा तुम इसके गुणको भलीभांति जानतेहो अपने हाथ से मर्हम मेरे बायें नेत्रमें लगादो उस योगी ने मेरी आंख बन्दकरके थोड़ासा मर्हम उस डिबिया से ले मेरे पलकपर लगादिया मर्हम लगातेही मैंने नेत्रखोल चहूंओर देखा कि हजारों गड़ेहुये कोष

जैसा कि उस योगी ने कहाथा दृष्टि पड़नेलगे तब मैंने दाहिनी आंखको मूंदकर कहा कि अब तुम मेरे इस नेत्र में भी मर्हम लगादो उसने कहा मैंने तुझे पहिलेही बतादिया कि इस नेत्र में लगानेसे तुम अन्धेहोजावोगे यद्यपि वह योगी सत्य कहताथा परन्तु तृष्णा से मैंने उसके बाक्यको झूठ समझा और बिचार किया कि दाहिने नेत्रके लगाने से कुछ अधिक लाभ होगा यह योगी मुझे बहँकाकर चाहता है कि मुझे वह लाभ उठाने न दे मैंने मुस्कराके उससे कहा तुम मुझे धोखा देतेहो उसने कहा मुझे ईश्वर की सौंगन्दहै कि इस मर्हम में यही गुणहै हे प्यारे भाई! मेरे बचन को सच जान मैंने तुझसे झूठ नहीं कहा मैंने उसकी बातको न माना और यही जाना कि छल से मुझको उसके अपूर्व गुण से निराश रखता है यह बिचार मैंने फिर उससे मर्हम लगाने को कहा उसने न माना और कहनेलगा कि मैंने तेरे साथ भलाई की है अब बुराई क्यों करूं निश्चय जान कि इस बातसे जन्मभर तू दुःख और कष्ट भोग करेगा इस वास्ते इस बिचार को छोड़दे और मेरे कहने को मान जितना २ वह योगी यह बातें कहताथा उतनाही मेरी लालसा अधिक होती जातीथी निदान मैंने उसे परमेश्वर की सौगन्द दिलाकर कहा हे प्यारे योगी! जिस बस्तुको मैंने तुझसे मांगा वह सब पाया यह मेरी अन्तकी प्रार्थनाहै दयाकर इस इच्छा को भी पूर्णकर और जो कुछ मुझपर दुःख होगा उससे तुम अलग हो तुम्हें दोष न लगाऊंगा उसने कुछ न माना परन्तु मेरे पीछे पड़ने से लाचार होकर थोड़ासा वह मर्हम मेरी दाहिनी आंख की पलकपर लगादिया जब मैंने आंख खोली तो दोनों आंखों से अपने को अन्धा पाया अँधियारे के सिवाय कुछ भी प्रतीत न हुआ तबसे अबतक मैं अन्धाहूं फिर उस योगी से मैं बोला हे योगी! जो तू कहताथा सोई हुआ और उसे बहुतसी गालियां देकर कहा कि जो तू मुझे यह द्रव्य न दिलाता तो उत्तमथा अब यह सब द्रव्य और रत्नादिक मेरे किस कामके हैं तू चालीस ऊंट अपने भाग के लेजा और मुझे अच्छाकर योगी ने उत्तर दिया मेरा इसमें क्या

अपराध है मैंने तेरे साथ ऐसी भलाई की थी कि कभी किसी ने किसीके साथ न कीहो परन्तु तूने मेरा उपदेश न माना तेरा मलिन मन इतने द्रव्य के पाने से भी न भरा और तेरी इच्छा न गई और मेरे बचन को न माना छल समझा अब इसका क्या उपाय है अब तू सुजाखा नहीं होसक्ता फिर मैंने अत्यन्त बिनय करके कहा हे योगी! इन अस्सी ऊंटोंको जो अशरफ़ी और रत्नों से लदेहैं लेजा मैंने प्रसन्नतासे तुझे दिये जो तुझसे होसके तो ईश्वर के वास्ते मेरे नेत्रों में ज्योतिदे उस योगीने फिर मेरी बातका उत्तर न दिया और मुझे उसी दुर्दशा और कष्टमें छोड़कर और वह अस्सी ऊंट लेकर बांसरा देशकी ओर चलदिया मैं कितनाही चिल्लाया किया कि मुझे भी इस बनसे अपने साथ लेचल मार्ग में किसी दूसरे व्यापारी के साथ होलूंगा परन्तु उसने कुछ भी मेरी बात न सुनी निदान मैं उस योगी के चलेजाने के पीछे अपने नेत्रोंकी ज्योति और धन खो-कर क्षुधा और तृषा से मरनेलगा संयोग वश दूसरे दिन बांसरा देशके व्यापारियोंका समूह जो बग़दाद को जाताथा उधर निकला मुझको इस आपत्ति में देख दया से बग़दादमें लेआये मुझसे इस नगरमें सिवाय इसके कि भीख मांगकर अपना कालक्षेप करूं और कुछ न बनपड़ा निदान भीख मांगनी आरम्भ करके यह प्रतिज्ञा की कि इस तृष्णाका यह दण्डहै कि जो कोई मुझपर दयाकर कुछ दे तो उचित है कि एक धौल भी मेरे शिरपर मारे यही कारणथा कि मैंने आपसे कल इस बात में तकरार कीथी जब उस बृद्ध अ-ब्दुल्ला ने अपना बृत्तान्त समाप्त किया तो ख़लीफ़ा ने उससे कहा हे भिक्षुक! तेरा अपराध बड़ाहै ईश्वर उसको क्षमाकरे अब तुमको उचित है कि अपनी जातिके फ़क़ीरों से अपने अपराधको कहो कि तुमको आशीर्बाद दें अब तुम अपने निर्बाह की कुछ चिन्ता मत करो तुम्हारे वास्ते मैं पांच रुपये रोज़ अपने कोष से नियत किये देताहूं वह जन्मभर तुमको पहुँचे जावेंगे अब तुम नगर में भिक्षाके लिये मत जायाकरो यहसुन उसने ख़लीफ़ा को प्रणाम किया और कहनेलगा जो कुछ आपने आज्ञाकी मुझे स्वीकार है

जब ख़लीफ़ा भिक्षुक की कहानी सुनचुका उस मनुष्य से जो हर दिन अपनी घोड़ीपर सवार होके उसे दौड़ाता और मारता था उससे उसका नाम पूछा उसने बिनय की मेरा नाम सीदीनैमान है ख़लीफ़ा ने कहा हमने बहुत से सवारों को देखा कि वह घोड़े की सवारी सीखने के लिये बहुत श्रम करते हैं बहुधा हमने भी घोड़ों पर सवारहो घोड़ों को फेरा है परन्तु मैंने किसी को नहीं देखा कि जैसा तुम अपनी घोड़ीको दौड़ाया करतेहो कल मैंने तुमको देखा कि तुम अपनी घोड़ी को चाबुक और एड़ें अत्यन्त निर्दयता से मारतेथे सब मनुष्योंको यह दशा देख अत्यन्त आश्चर्यथा और उन सबसे अधिक मैं आश्चर्यित था यहांतक कि मैंने उस समूह में खड़ेहोकर इसका कारण वहां के मनुष्यों से पूछा पर कोई न बता सका इतनाही मालूम हुआ कि प्रतिदिन इसी भांति तुम अपनी घोड़ीको कष्ट देतेहो अब मैं तुमसे इसका कारण पूछताहूं उचित है कि तुम सत्य २ कहो सीदीनैमान ने जाना कि ख़लीफ़ा इस हाल के सुनने के लिये बहुत हठ करता है और कहे बिना किसी भांति मेरा छुटकारा नहीं होसक्ता पहिले इस प्रश्नके सुनतेही उसके मुख का बर्ण बदलगया और ख़लीफ़ाके भयसे चुपचाप चित्रवत् खड़ा रहगया ख़लीफ़ाने कहा सीदीनैमान डर मत मुझसे कारण उसका बर्णनकर और इस समय मुझे अपने मित्रों के समान समझ और जिस तरह उनसे बातचीत और अपना हाल कहता है मुझसे भी कह यदि उस भेदके बर्णन में किसी बातका भय तुझको हो तो मैंने उसे क्षमा किया सीदीनैमान को ख़लीफ़ाके धैर्य देनेसे कुछ बोलने का साहस हुआ सो हाथ बांध बिनय करनेलगा मैंने इस बिषय में अपनी जाति धर्म के बिपरीत कोई काम नहीं किया इसलिये मैं आपकी आज्ञानुसार इस बृत्तान्तको बर्णन करताहूं जो कोई अप-राध मुझसे हुआहो निस्सन्देह दण्डके योग्यहूं यह तो निस्सन्देह है कि मैं अपनी घोड़ीको जैसा कि आपने देखा हरदिन घुमाया करताहूं सो आपको इस घोड़ीपर बड़ी दया हुई और मेरा इस भांति से चक्कर देना आपको बुरा मालूम हुआ यदि आप इसका

कारण सुनेंगे तो यह दण्ड इसके लिये आप थोड़ा समझेंगे ॥

सीदीनैमान और उसकी घोड़ी की कहानी ॥

हे बादशाह! मेरे माता पिता अपने मरनेके पीछे इतना धन छोड़ गये थे कि वह मेरे जन्मभर को कम न था और आनन्द पूर्वक अपना निर्बाह करता किसी भांतिकी चिन्ता न रखता एक दिन तरुणावस्थाके बेगमें यह बिचार उपजा कि एक सुन्दर स्त्री से विवाह करूं परन्तु ईश्वरने न चाहा कि कोई अच्छी स्त्री मुझको मिले जो दुःख सुख की साथी हो संयोगबश मैंने एक स्त्री के साथ जो अति रूपवान् छबिधामथी बिबाह किया और दूसरे ही दिन से उसकी दुष्टता का हाल मुझपर खुलनेलगा हे स्वामी! आपको भलीभांति मालूम है कि हमारी जाति में बिवाहके पहिले स्त्रीके देखनेकी रीति नहीं है और बिवाहके पहिले पति स्त्री के रूप और अन्तःकरणकी अशुद्धता को किसी तरह नहीं कहसक्ता हरतरह उसी स्त्रीके साथ प्रसन्नता पूर्वक रहनाचाहिये चाहो वह सुशील हो वा अशील निदान पहिले उसके रूप छबिअनूप को देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और ईश्वरका धन्यबाद किया और प्रसन्नता से रात्रिभर उसके साथ सोया बिवाहके दूसरे दिन जब उसके और मेरे लिये भोजन लाया गया मैंने अपनी स्त्रीको भी बुलवा भेजा बहुत कालमें वह भोजन पर आबैठी संयोग से उससमय हम पुलाव भोजन करनेलगे और मैं अपने देशकी रीतिके अनुसार चमचे से खानेलगा और वह अपने जेब से कानकुरेदनी निकाल उससे चावलका एकएक दाना उठाकर खानेलगी यह देख मैं आश्चर्य में हुआ और उसका नाम लेकर कहा हे सुन्दरी! क्या तुमने भोजनकी यही रीति अपने सम्बन्धियों से सीखी है या तुम अन्न के दाने गिनतीहो दूसरे समय भोजन करोगी मैं जानता हूं कि तुमने इतने समयमें चावलके दश बीस दानों से अधिक न खाये होंगे जो तुम सरफ़े की राह से नहीं खातीहो तो ईश्वरनेमुझे बहुत कुछ दियाहै तुम उसका कुछ बिचार मत करो हे सुन्दरी! जो भोजनकरनेकी रीतिहै और जिस तरह से मैं खाता हूं भोजन करो परन्तु उसने उत्तर न दिया और उसीप्रकार

पात्रमेंसे एक २ दाना उठाकर खानेलगी किन्तु मेरे खिजानेके लिये एक २ दानाभी देरमें उठाकर खानेलगी जब शीरमाल और बाक़रख़ानी खानेलगे तो उसने थोड़ासा रोटी का छिलका तोड़कर बड़े नख़रेसे अपने मुख में डाला निदान इतना खाया कि उतने भोजन से चिड़ियाभी तृप्त न हो मैं उसकी हठसे अतिआश्चर्य में हुआ और बिचारा कि शायद इसे पुरुषके साथ भोजन करते लज्जा आतीहो आगे मेरे साथ खायाकरेगी और यहभी सोचा कि कदाचित् वह भोजन करचुकीहो इसलिये इस समय उसे रुचि नहींहै अथवा यह समझा कि उसको अकेले खानेका अभ्यासहै निदान इन सब बातों को बिचार मैंने उससे कुछ न कहा और भोजन करके मैदानमें घूमने को गया उसके खानेका सोच कुछ मेरे मनमें न रहा दूसरे समय जब भोजन करने का समय आया तो उसने उसी तरह खाया कि जैसा पहिले भोजन कियाथा किन्तु हरदिन उसी भांति भोजन करती मुझे उसकी यह दशा देख अधिक अचम्भा हुआ कि यह स्त्री बिना भोजन क्योंकर जीतीहै यहांतक एक रात्रिको वह मुझे अपने बिचारमें सोया हुआ जान मेरे पाससे चुपके उठी पर उस समय मैं जगता था क्या देखा कि वह बड़ी सावधानीसे उठतीहै कि मुझे उसका उठना जान न पड़े मैं आश्चर्य में हुआ कि यह इस समय क्यों अपना आराम छोड़ मेरे पाससे उठी मैंने चाहा कि इसके हालको मालूम करूं फिर और सोता बनके ख़र्राटे लेनेलगा इतनेमें वह वस्त्र पहिन चुपके से बाहरको चली मैंभी शीघ्र अपनी शय्यापरसे उठ वस्त्रों को कांधेपर डाल उसके पीछे चला और घरकी खिड़कीसे देखने लगा कि वह किधरको जाती है वह आगे बढ़के दरवाज़ेको जो गलीकी ओर था खोलकर बाहर गई मैंभी उसी द्वारसे जो उसने बन्द न कियाथा बाहर निकला और भलीभांति चन्द्रमा की चांदनीमें देखता हुआ उसके पीछे होलिया चलती २ वह श्मशान में पहुँची जो हमारे घरसे निकट था मैं भी वहां दीवारसे लग इस भांति खड़ा होगया कि उसे भले प्रकार देखूं और वह मुझे न देख सके निदान क्या देखता हूं कि वह एक प्रेतके साथ जाबैठी है हे प्रजापालक आप जानते हैं

कि प्रेत या तो शैतानकी सृष्टिहैं वा भूतके प्रकारोंमेंसे हैं जो अकेदुके यात्रीको पाते हैं तो उनका डराकर मारखाते हैं और जो वह किसी दिन बिदेशी नहीं पाते तो रात्रिको क़बरोंमें से मुर्दे निकालकर भक्षण करते हैं मैं अपनी स्त्रीको प्रेत के साथ बैठे देख भयभीत हुआ और आश्चर्यमें हुआ फिर उन्होंने मिलकर एक लोथ जो उसी दिन गाड़ी गई थी क़बरमेंसे खोदकर निकाली और वह दोनों अर्थात् मेरी स्त्री और प्रेत उस मृतक का मांस काट काटकर खाते और अतिप्रसन्नतासे परस्पर बार्त्ता करते परन्तु मैं दूर खड़ाथा इस निमित्त उनकी बातें भलीभांति न सुन पड़तीथीं और उनकी दशा देश कांपनेलगा जब वह सब मांस भक्षण करचुके उस मृतककी हड्डियां फिर उसी क़बरमें डाल फिर उसे मट्टी से तोपदिया मैं उन दोनोंको वहीं छोड़ कर तुरन्त अपने घर चला आया और उस द्वारको उसी प्रकार खुला छोड़ अपनी शय्यापर आकर वहानेसे सोरहा थोड़ी देरके पीछे उस स्त्रीने भी आकर अपने वस्त्र उतारे और मेरे साथ सोरही उसके हाल से मुझे मालम हुआ कि उसने मुझे नहीं देखा और उसको मेरा आना जाना मालूम नहीं हुआ पर ऐसी मुर्दों के खानेवाले स्त्रीके साथ सोना बहुत बुरा मालूम हुआ निदान उस समय तो मैं ग्लानि पूर्बक उस दुष्टाके साथ सोरहा इतनेमें भोर की बांग सुन मैं जग-पड़ा और दिशा और स्नानादि से निश्चिन्तहो निमाज़ पढ़ने को मसजिद में गया और निमाज़ पढ़ और नियमित कृत्यकर बाग़ों में गया और टहलती समय यह बिचारमें आया कि किसी भांति अपनी स्त्रीको इस असंगति से हटाऊं और मुर्दों के खानेकी प्रकृति उससे छुड़ाऊं सो इसी बिचार में मैं अपने घरमें भोजन के समय पहुँचा मेरी स्त्रीने मुझे देखतेही मेरे सेवकों से भोजन मँगवा रक्खा फिर जब हम खानेलगे तो वह उसी भांति एक २ दाना उठाकर खानेलगी मैंने उससे कहा हे सुन्दरी ! जो तुम्हें किसी भोजनकी रुचि न हो तो देखो ईश्वर की कृपासे नाना भांति के भोजन उप-स्थित हैं और इसके बिशेष प्रतिदिन भोजन बदलाये जाते हैं जि-सकी तुम्हें रुचिहो उसको खाओ और जो तुमको यह खाने पसन्द

न हों तो अपनी इच्छा के अनुसार भोजन पकवालिया करो इन बातों के सिवाय मैं तुमसे पूछताहूं क्या संसारमें कोई भोजन मुर्दे के माससे उत्तम नहीं जिसे तुम रुचिपूर्वक भक्षण करतीहो अभी मैंने यह सारी बात पूर्ण न कीथी कि वह समझगई कि रात्रिको मैंने उसका हाल देखा है इससे मारे कोपके उसका मुख लाल होगया और आंखें उसकी उभर आईं और मुखमें झाग भरलाई उसकी यह दशा देख मैं भयभीत हुआ और मेरी सुधि बुधि बिसरगई उसने उस क्रोधमें एक जलभर गिलास जो उसके पास रक्खा हुआ था उठालिया और उँगलियां जलमें डुबो कुछ शब्द जिनको मैं नहीं समझताथा पढ़नेलगी फिर उन उँगलियों से जल मुझपर छिड़का और कहा हे दुष्ट! तूने मेरा भेद खोला इस अपराधका दण्ड तू भुगत और कुत्ता बनजा उसके उतना कहतेही मैं कुत्ता बनगया वह लकड़ी उठा मुझे मारनेलगी इतना मारा कि मैं मरजाता परन्तु मैं अपने बचावके लिये घरभर में फिरा किया और वह लकड़ी लिये हुये मुझे खदेड़ती और मारती जाती थी जब वह मुझे मारते २ थकगई तो उसने दरवाज़ा खोलदिया मैं पीड़ा के मारे चिल्लाता हुआ बाहरको भागा यद्यपि बाहर निकल करके मारखाने से बचा परन्तु उस टोलेके कुत्ते मुझे दुःख देनेलगे भूकने और काटनेलगे वहांसे मैं पूंछ दबाके बाज़ारकी ओर भागा और एक दूकानदार की दूकान में जो बकरी के शिर पावँ और जीभ बेचताथा घुसगया और एक कोनेमें छिपके बैठरहा उस दूकानदार को मुझपर दया उपजी और उन कुत्तों से मुझे बचाया और उनको अपनी दूकान के आगे से मारकर दूर भगादिया मैं उन आपदाओं से छूटकर रात्रिभर उसकी दूकान में बैठरहा जब प्रभात हुआ तो वह दूकानदार बहुत सवेरे शिर पावँ लेने गया और बहुतसा सौदा इस प्रकारका मोल लेकर आया और अपनी दूकानपर उसे क्रम से रक्खा मैंने दूर से देखा कि बहुतसे कुत्ते मांसकी गन्ध पाके उसकी दूकान के चहुँओर हैं सो मैंभी उसके आगे जाके खड़ा होगया वह मुझे देख समझा कि इसने कलसे कुछभी नहीं खाया केवल मेरी दूकान में भूखा

छिपरहा फिर उसने बड़ा लोथड़ा मांसका मेरे सन्मुख डाल दिया मैं उस मांसकी ओर न देखकर उसके निकट जाकर अपनी पूंछ हिलानेलगा कि वह यह जाने कि मेरी इच्छा इसी दूकानपर पड़े रहनेकी है उसने मुझे तृप्त जान लकड़ीसे डराया और अपनी दूकान से निकाल दिया मैंने भी उसकी दूकान छोड़दी और फिरते २ एक नानबाई की दूकान पर जा खड़ाहुआ संयोगवश वह उस समय भोजन करताथा यद्यपि मैंने कुछ उससे मांगने की इच्छा न कीथी परन्तु उसने एक टुकड़ा रोटी का मेरे आगे फेंकदिया मैं उसे कुत्तोंकी भांति झपटा और पूंछ हिलाई वह मेरे स्वरूप को देख प्रसन्न हुआ और मुस्कराया यद्यपि मुझे क्षुधा न थी परन्तु थोड़ासा टुकड़ा तोड़कर भोजन किया उसको मेरा स्वरूप पसन्द हुआ और चाहा कि मैं उसकी दूकानपर रहाकरूं उसकी यह इच्छा पाके मैं उसकी दूकानकी ओर मुख करके बैठगया और सन्ध्या को वह मुझे अपने घरमें लेगया किन्तु सदा मुझको लेजाता परन्तु मैं उसकी आज्ञा बिना अपना पावँ उसके घरमें न रखताथा निदान अन्तको उसने मेरी एक जगह नियत की जिसमें मैं रात्रिको रहता और भोजन करते समय मुझे भली भांति खिलाता इसके विशेष वह मुझपर अत्यन्त कृपा रखता और मैं भी हर समय उसकी ओर देखा करता और उसके सैन करतेही उठता बैठता जब वह नानबाई अपने घरसे दूकानको अथवा और किसी जगहको जाता तो पीछे उसके होलेता जब वह मेरे सोनेके समय बाहर निकलता और मुझे अपने साथ न देखता तो मुझे गली में खड़े होके उस नामसे जो मेरा उसने रक्खाथा पुकारता मैं तुरन्त उसका शब्द सुन उसके पास जाता और उसके दरवाज़े के आगे दौड़ा और खेलाकरता और बाहर को जानेके समय कभी उसके आगे दौड़ाजाता और कभी उसके पीछे होलेता निदान प्रत्येक समय उसके मुखकी ओर देखा करता बहुकाल पर्यन्त मैं उसके घरमें अतिआनन्द से रहा एक दिन कोई स्त्री रोटियां मोल लेने उसकी दूकान पर आई और रोटी मोल लेकर उसने एक खोटी मुद्रा अपनी मुद्राओं में मिलाकर

उस नानबाई को दी नानबाई ने उनको परखकर खोटी मुद्रा उसे लौटादी कि इसके बदले अच्छी मुद्रा मुझे दे उस स्त्रीने उस खोटी मुद्राके फेरलेने में तकरारकी और कहनेलगी कि यह मुद्रा नवीन प्रचलित है नानबाई ने कहा कि यह खोटी है अभी इसका हाल तुझे मालूम होजावेगा यद्यपि मेरा कुत्ता पशु है परन्तु वह इस मुद्राको परख लेवेगा यह कह उसने मेरा नाम लेके पुकारा कि यहां आ मैं उसके शब्द सुनतेही कूदकर उसके सन्मुख गया नानबाई ने उन सब मुद्राओंको मेरे आगे फेंकदिया और कहनेलगा इसमें जो खोटीहो तू देखकर अलग करदे मैंने उन सबको एक २ करके देखा और जो खोटीथी उसपर मैंने अपना चरण रखदिया और अच्छों को एक ओर धर उस नानबाई के मुखको देखने लगा वह नानबाई मेरी बुद्धि पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वह स्त्री यह दशा देख आश्चर्य में हुई और खोटे मुद्राको बदल दिया जब वह स्त्री अपने घर चलीगई तो मेरे स्वामी ने अपने पड़ोसियों को बुला कर यह सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया उन्होंने मेरी परीक्षा के लिये अच्छे रुपयों में खोटे रुपये मिलाकर मेरे आगे डालदिये कि वह भी अपने नेत्रों से मेरी बुद्धिको देखें मैं शीघ्र अच्छोंमें से खोटोंको अलग करके उनपर अपने चरण रखता गया उन्होंने यह दशा देख अचम्भा मानकर बहुत मनुष्योंसे जो मार्ग में चलते थे यह हाल कहा थोड़े ही काल में यह समाचार नगरभर में प्रसिद्ध हुआ और मैं उस दिन सन्ध्यापर्यन्त मुद्राओं को परखता रहा उस दिन से वह नानबाई अधिक मुझपर दया करनेलगा और सब उसके पड़ोसी और इष्टमित्र यही उससे कहते थे कि तूने यह कुत्ता क्या एक सर्राफ़ रक्खाहै वह सब मेरे नानबाई के पास रहने से ईर्षा करनेलगे और चाहते थे कि मुझे वहांसे निकालदें इसलिये नानबाई क्षणभर भी मुझे अपने से अलग न करता कई दिनके पीछे एक स्त्री उस दूकान पर रोटी मोल लेनेआई और छः मुद्रा जिसमें एक खोटाथा नानबाईको दिया उसने परखनेको मुझे दिखाया मैंने तुरन्त उनमें से खोटा मुद्रा न्यारा करके चरण के नीचे दबालिया और उसकी

और देखनेलगा वह मानगई कि तू सच कहताहै यही खोटा मुद्रा था जो तूने परखा और नानबाई से छुपाके मुझे सैन करके बुलाया और अपने घरमें लेजानेकी इच्छाकी मैं ईश्वरसे सदैव यह प्रार्थना करता था कि किसी भांति फिर अपनी योनिको प्राप्त होऊं और फिर मनुष्य बनूं निदान उस स्त्रीके बेर २ देखने से मुझे निश्चय हुआ कि शायद कुछ मेरे हालको जानगईहो मैं उसीकी ओर देखा किया यहांतक कि वह कई पग जाके फिर लौटी और मुझे सैनकी मैं उसके अभिप्राय को समझगया और अपने स्वामी की दृष्टि बचाकर उस स्त्रीके साथ होलिया वह मुझे अपने साथ देख अत्यन्त प्रसन्नहुई और अपने घरमें लेगई निदान जब मैं घरके भीतर गया तो उस स्त्रीने द्वारको मूंद लिया और मुझको एक मकानमें लेगई जिसमें एक सुन्दरी कारचोबी वस्त्र पहिने बैठी हुईथी मैंने बुद्धि से मालूम किया कि वह इस स्त्रीकी पुत्री है और वह स्त्री जादूकी विद्या में अतिप्रवीण थी फिर उसी स्त्रीने जो मुझे बाज़ार से लाईथी उस सुन्दरी से कहा यही कुत्ता खोटे मुद्राओं को अच्छोंमें से परखता है मैं यह ख़बर पहिले सुनकर समझतीथी कि यह कुत्ता मनुष्य था किसी अभागे निर्दयी ने इसे जादूसे कुत्ता बनाया है आज मेरे मन में आया कि मैं जाकर उस नानबाईकी दूकानसे रोटी मोललूं और इस बातकी परीक्षालूं सो मैंने इसे परीक्षा में परिपूर्ण पाया हे पुत्री ! तुम इसे भलीभांति देखो कि कौन है वास्तव में पशु है वा जादू से पशु बनगया वह सुन्दरी मेरी ओर भलीभांति देख बोली हे माता! तुम सत्य कहती हो मैं इसका वृत्तान्त अभी तुमसे कहूंगी यह कहके वह सुन्दरी अपने स्थानसे उठी और एक जलका पात्र लेकर उसमें अपना हाथ डुबोया और मेरे ऊपर उस जलको छिड़क के कहा जो वास्तवमें कुत्ताहै तो तू कुत्ताही बनारह यदि तू मनुष्य है तो इस जलके प्रभावसे अभी पुरुष तनु को प्राप्तहोजा उसके कहतेही मैं तुरन्त पशुका शरीर छोड़ निजयोनि में आया और उस सुन्दरी चन्द्रमुखी के चरणों पर गिरकर उसके वस्त्रोंको चूमा और कहनेलगा कि तुमने मुझपर इतनी कृपाकी जिसका मैं गुणानुवाद

नहीं करसका सो उत्तम है कि आज से मैं तुम्हारी सेवकाई किया करूंगा फिर मैंने सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी स्त्रीका कहकर उस स्त्रीका जो मुझे अपने घर लाईथी गुणानुवाद किया उस सुन्दरी ने कहा हे सीदीनैमान ! इससे अधिक हमारा गुण बर्णन मतकर किन्तु हम आपही तुम ऐसे अच्छे मनुष्य के साथ उपकार करके प्रसन्न हुई तेरी स्त्री का हाल बिवाह होने के पहिले से जानती थीं और मुझे उसके जादूके सीखने और इस बिद्याके ज्ञानका हाल मालूम है किन्तु हम दोनों एकही गुरुआयल की चेली हैं आगे बहुधा हम्माम में उससे भेंट हुआ करतीथी परन्तु उसकी दुष्ट प्रकृति और दुःस्वभाव से मैंने उससे मिलना छोड़दिया और केवल तुम इतनाही न जानो कि मैंने तुम्हारा रूप बदल दिया किन्तु मैं उसे तुम्हारे अपकारके बदले कोई दण्ड तुमसे दिलवाऊंगी तुम भी घर में जाकर उसका शरीर बदल दो अब तुम यहां ठहरो मैं अभी आतीहूं यह कह वह सुन्दरी कोठरीमें गई और वह उसकी माताके निकट बैठकर उसी सुन्दरीका यश बर्णन करनेलगा उस की माताभी मुझ से बिचित्र जादूकी बातें कहनेलगी इतनेमें उस की पुत्री भीतरसे एक बोतल लियेहुये आई और कहनेलगी हे सीदीनैमान ! मैंने अपनी पुस्तक में देखा कि इस समय तेरी स्त्री घरमें नहीं है परन्तु एक क्षणमें आ-वेगी उसने तुम्हारे सेवकों से कि वह तुम्हारे न होने के कारण अ-त्यन्त बिकल थे कहा कि मेरा पति भोजन करते २ उठकर किसी आवश्यक कार्य के लिये गया और एक कुत्ता दरवाजा खुला पाके दालान के भीतर चलाआया मैंने उसे मारकर निकालदिया फिर उस सुन्दरीने एक जलका पात्र उसे देके कहा हे सीदीनैमान ! अब तुम अपने घर जाओ और यह बोतल अपने से अलग न करना और उसके आगमनकी बाट देखना वह दुष्टा शीघ्रही बाहरसे आ-वेगी और तुम्हें देख अत्यन्त व्याकुल होगी और चाहेगी कि तु-म्हारे आगेसे भागकर चलीजावे तुम थोड़ासा जल इस पात्रमें से लेकर उसपर छिड़क देना और यह शब्द पढ़ना इससे अधिक पढनेकी कछ आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम इस मन्त्रका प्रभाव

अपनी आंखों से देखलोगे मैं उस चन्द्रबदनी के सिखायेहुये शब्द यादकर उससे बिदाहुआ और अपने घर में आया और जो जो बातें उस सुन्दरी ने मुझसे कहीं सब देखने में आईं अर्थात् क्षण मात्रभी न बीताथा कि मेरी स्त्री वहां आई और चाहतीथी कि मेरे आगेसे भागजावे मैंने शीघ्रही उसपर वह अभिमन्त्रित जल छिड़क दिया और वही शब्द पढ़े जिसके प्रतापसे वह घोड़ी बनगई यह वही घोड़ीहै जिसको आपने कल देखाथा फिर जब मैंने उसको उस योनि में देखा तो आश्चर्यमें हुआ और उसके अयाल पकड़ अश्वशालामें लेगया और बागडोर से उसको बांधा और चाबुक से इतना मारा कि थकगया सीदीनैमानने यहांतक अपने बृत्तान्त को कहके खलीफ़ासे बिनयकी कि हे बादशाह! मुझे बिश्वास है कि आप मुझसे अप्रसन्न न होंगे किन्तु आप ऐसी कर्कशा स्त्रीके लिये अधिक दण्ड बिचारेंगे इतना कह वह चुप होरहा खलीफ़ाने जब देखा कि सीदीनैमान अपना बृत्तान्त पूर्ण करचुका तो उससे कहा कि बास्तवमें तुम्हारा बृत्तान्त अत्यन्त अद्भुत है और तुम्हारी स्त्रीका बड़ा अपराध है और तुम्हारा दण्ड देना मेरे बिचारमें बहुत ठीकहै परन्तु तुमसे पूछताहूं कि कबतक उसको तुम यह दण्ड दिया करोगे और पशु बनाके रक्खोगे मेरे बिचारमें यह उत्तम है कि अब तुम जाके उसी सुन्दरीसे जिसके मन्त्रके प्रभाव से तुमने उसे घोड़ी बनादिया कहो कि उसको फिर पूर्बवत् स्त्री बनावे परन्तु मुझे यह भय और शोचहै कि यह दुष्टा अपनी योनिको प्राप्त होकर ईश्वर जाने क्या अपकार तुमसे करे जिसका कोई उपाय न हो इसलिये खलीफ़ाने फिर कुछ इस बातमें तकरार न की और तीसरे मनुष्य से जिसे वज़ीरने बुलवायाथा कहनेलगा कल जब मैं अमुक गलीमें गया तो तुम्हारा बिशाल और बिचित्र महल देख मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ जो उस गलीके मनुष्योंसे पूछा कि यह बड़ा महल किसका है तो उन्होंने तुम्हारा नाम लिया और कहा यद्यपि ख्वाजेहसन जो पहिले बड़ी कठिनता से अपना निबाह करता था अब परमेश्वरने उसे इतनी सामर्थ्य दीहै कि उसने

ऐसा बिशाल और सुन्दर महल बनवायाहै परन्तु वह अपनी उस दशाको नहीं भूला और द्रव्यको व्यर्थ ख़र्च नहीं करता सो पड़ोसी तुम्हारे तुमको सब अच्छा और भला कहतेहैं कोई तुमसे अप्रसन्न नहीं अब मैं चाहताहूं कि तुम मुझसे बर्णन करो कि क्योंकर तुम को इतना धन प्राप्तहुआ इसीलिये तुमको मैंने बुलाया है मेरा कुछ भय मत करो मुझे केवल तुम्हारे बृत्तान्त सुनने के सिवाय और कुछ प्रयोजन नहीं है तुम अपने ईश्वर के दियेहुये धनको भोगो और ईश्वर तुम्हारे ऊपर सदैव कृपा करे ख़लीफ़ा ने इस भांति के बचन कह उसे धैर्य दिया ख्वाजेहसनने तख़्तके पायेको चूमा और क़ालीन जो तख़्तके नीचे बिछा था चूमकर बिनतीकी कि हे बादशाह! मैं सत्य सत्य अपना बृत्तान्त आपके सन्मुख बिदित करताहूं ईश्वर साक्षी है कि मैंने कोई बात अपनी जाति धर्मकी प्रतिपाल नहीं की केवल ईश्वरके अनुग्रहसे इस पदवीको पहुँचा फिर वह इस भांति अपना बृत्तान्त कहनेलगा॥

ख़्वाजेहसन रस्सी बेंचनेवालेकी कहानी॥

हे बादशाह! आपकी आज्ञानुसार बिनय करताहूं कि क्योंकर मुझे इतना द्रव्य मिला परन्तु प्रथम आप मेरे मित्रोंका हाल जो बग़दादके निवासी हैं सुनिये वह अबतक जीतेहैं और मेरे बृत्तान्त के जो मैं कहताहूं साक्षीहैं एकका नाम साद और दूसरेका नाम सादीहै सादीको यह निश्चयथा कि संसारमें कोई मनुष्य बिना द्रव्य के आनन्द नहीं उठाता और वह धन उद्योग किये बिना प्राप्त नहीं होता और साद का मत इसके बिरुद्ध था सो वह यह कहताथा कि जबतक भाग्य उदय नहीं होता तबतक धन नहीं मिलता साद सादी से ग़रीब था और उन दोनोंमें अत्यन्त स्नेहथा और कदापि परस्पर किसी बातमें तकरार न होती सिवाय इस बिवादके कि सादी उद्यमको श्रेष्ठ मानता और साद भाग्य को एक दिन उन दोनों में इसी बातके लिये बहुत बार्त्ता हुई सादीने कहा या तो मनुष्य दरिद्रतामें उत्पन्न होके सदैव दरिद्री रहताहै वा धन होनेकी अवस्थामें जन्म लेकर तरुणावधिमें अपने द्रव्यको व्यर्थ व्ययकर आपत्ति उठाताहै फिर

उसको इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि आनन्दमें रहाकरे अथवा किसी गुण वा उद्यमसे द्रव्य कमावे साद कहता कि उद्यम और पुरुषार्थ और गुण कुछ काम नहीं आता केवल अपनेही भाग्यसे धनवान् होताहै धनवान्ता और दरिद्रता संयोगिक हैं मनुष्यका उद्यम और उपाय कुछ काम नहीं आता सिवाय माल और उपायके अमीरीके असबाब बहुतहैं जो भाग्यसे सम्बन्ध रखतेहैं सादीने कहा तुम झूठ कहतेहो आओ हम तुम दोनों इस बातकी परीक्षालें किसी पेशेवाले को जो श्रम से कालक्षेप करता हो कुछ धन देवें वह निस्संदेह अपनी वस्तुको बढ़ावेगा तो वह अवश्य द्रव्यवान् हो आनन्द उठावेगा उस समय तुम्हें मेरे वाक्यका बिश्वास होगा सो वे दोनों मित्र सैर करते २ मेरे घरपर आये और जहां मैं रस्सी बटताथा पहुँचे और यह काम अर्थात् रस्सी बटनेका मेरी कई पीढ़ियोंसे था मेरे पिता और दादा यही काम करते थे मेरे घर और वस्त्र को देख उन्हें मेरी गरीबीका हाल मालूम हुआ सादने सादीसे मेरी ओर सैनकर कहा जो तुम्हें परीक्षाकी इच्छाहो तो कुछ अशरफ़ियां इसे देकर इसकी परीक्षा करो यह मनुष्य बहुत काल से यहां रहताहै मैं भलीभांति जानताहूं कि यह रस्सी बटके अपने कुटुम्ब समेत अतिकठिनतासे अपना निर्बाह करताहै सादीने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा परन्तु हम इस मनुष्यको भलीभांति देखलें फिर वे दोनों टहलतेहुये मेरी ओर आये मैंने अपना काम छोड़ उनको प्रणाम किया सादीने मेरा नाम पूछा मैंने कहा मेरा नाम हसन है परन्तु जो मैं रस्सी बटताहूं इस निमित्त मुझे हसनहब्वाल कहते हैं फिर सादी ने मुझसे कहा पेशेवाले को पेशा बहुत होता है मुझे निश्चय था कि तुम इस पेशे से सुखमें होगे और बहुतसी रस्सी बटनेके वास्ते तुम्हारे पास इकट्ठी होंगी किन्तु तुम्हारे बाप दादा कि वे भी सदासे यही काम करतेथे तुम्हारे लिये बहुत कुछ सामग्री छोड़गये होंगे और तुमने उनको यथाशक्ति बढ़ाया होगा मैंने उत्तर दिया मेरे पास कुछभी नहीं है जिससे मुझे सुखहो और पेटभर रोटी मिलें मेरा हाल यहहै कि भोरसे संध्यापर्यन्त मैं रस्सी बटताहूं एक क्षणभी

श्वास नहीं लेता फिरभी बड़ी कठिनतासे सूखीही रोटी मेरे कुटुम्ब को प्राप्त होतीहैं मेरे एक स्त्री और छोटे पांच बालकहैं उन लड़कों में से कोई इस योग्य नहीं कि मेरी सहायता करे मैं यथाशक्ति उनके भोजन आदि की ख़बर लेता हूं जो रस्सी बनाता हूं उसे बेंचकर कुछ तो खानेमें ख़र्च करताहूं जो कुछ बचताहै दूसरे दिन रस्सी मोल लाकर यही काम करताहूं इस दशापर फिरभी ईश्वरका धन्यवादहै कि उसने मुझे दूसरेके अधीन न किया जब मैं अपना परिपूर्ण बृत्तान्त सादी से कह चुका तो उसने मुझसे कहा मुझे तेरा बृत्तान्त बिस्तारपूर्बक बिदित हुआ यह बात तो मेरी समझ के प्रतिकूल दिखाईदी जो मैं तुझे दोसौ अशरफ़ियों की थैली दूं तो तू आनन्दपूर्बक अपना निर्बाह करसक्ताहै और इतने द्रब्य की प्राप्तिसे धनवान् होजावेगा वा नहीं मैंने सादी को उत्तर दिया इ-तनी अशरफ़ी कि आप मुझे देनेको कहते हैं इनसे मैं एकही बेर द्रब्यवान् नहीं होसक्ता परन्तु उपाय से मैं निस्सन्देह पेशेवाले के बराबर द्रब्य संचय करलूंगा सादीने मुझे बिश्वासित और सत्य-बादी देख अपनी जेब से दोसौ अशरफ़ियों की थैली निकालकर दी और कहा मैं तुझको यह थैली दान देताहूं तुम इसे लो और अपना ब्यवहार करो ईश्वर तुम्हें इस में बरकत दे तुम इसे बहुत समझबूझ के ख़र्च करना यह बृथा नष्ट होने न पावे तुम्हारे आ-नन्द से साद जो मेरा परमस्नेही है महाप्रसन्न होगा आगे यदि तुम्हें आनन्द में देखेगें तो हमको अतिहर्ष होगा मैंने वह अशर-फ़ियोंकी थैली लेके अपनी जेब में रखली और महाहर्षसे फूला न समाया और सादीका बहुतसा गुणानुबाद कर उसके बस्त्रको चूमा फिर वे दोनों मित्र मुझ से बिदा होके चलेगये हे स्वामी! उनके जानेके उपरान्त मैं फिर अपना कार्य करनेलगा और मनमें सोचने लगा कि इन अशरफ़ियों की थैली कहां धरूं घरमें कोई स्थान नहीं और न कोई सन्दूक़्चा है जिसमें मैं उसे रक्खूं फिर सोचा कि इस थैली को अपनी पगड़ी में बांधकर रक्खूं सो उसे घरमें लेगया और अपनी स्त्री व पुत्रों से छिपाकर दश अशरफ़ियां ख़र्चके लिये

निकाललीं और बाक़ी अशरफ़ियोंको थैलीमें डोरेसे दृढ़ बाधा और पगड़ीमें युक्तिसे थैलीको रखलिया और वह पगड़ी शिरपर बांधी और सब काम छोड़के पहिले बाज़ारमें सन मोललिया और मार्गमें लौटते समय थोड़ासा मांस कि बहुत दिनोंसे न खायाथा रात्रिके लिये मोललिया सो उसे हाथमें लिये हुये घर आताथा कि अकस्मात् एक चीलहने झपट्टा मार चाहा कि मेरे हाथसे मांस छीने मैंने उसे बचाया और दूसरे हाथसे उस चीलह को हटाया उसने दूसरी ओर आके फिर झपट्टा मारा सो फिर मैंने बचाया उस उछल कूद में मेरी अभाग्यता से शिरपर की पगड़ी गिरपड़ी और वह चीलह तुरन्त अपने पंजों में पगड़ी को पकड़ के ले उड़ी मैं बहुतही कूदा और चिल्लाया जिसके सुननेसे मुहल्लेकी स्त्रियां और बालक इकट्ठे हुये और उस चीलहको उड़ानेलगे परन्तु उसने पगड़ी न छोड़ी और ऐसी दूर लेके उड़ी कि हमारी दृष्टिसे गुप्त हो गई निदान मैं द्रव्यके जानेसे महाचिन्तित होके अपने घरमें आया और उन दश अशरफ़ियोंका जो आगे थैली से निकालीथीं सन मोललिया और कुछ अपने भोजनादिक गृहस्थी कार्यमें ख़र्चकीं इस लज्जा और शोकसे मरना उत्तम था और सोचा जब सादी मेरा उपकारी आवेगा और उस हालको सुनेगा तो उसे कदाचित् चीलह के लेजानेका निश्चय न होगा उसे मेरे मक्कर करनेपर सन्देह होगा फिर जबतक वह थोड़ी अशरफ़ियां मेरे पास रहीं तबतक मैं चैन में रहा और थोड़ेदिन पेटभर अपने स्त्री पुत्रों सहित भोजन किया फिर मैं वैसाही दरिद्री होगया फिरभी सन्तोष रख ईश्वरका धन्यवाद यह बिचारता कि उसी ईश्वरने मुझे ये अशरफ़ियां दीं और फिर उसने लेलीं जो कुछ उस परमात्मा सच्चिदानन्दने मनुष्य के लिये रचाहै सो उत्तम है इसी चिन्ता में था कि मेरी स्त्रीने जिससे मैंने अशरफ़ियों के पानेका हाल न कहाथा मुझे इस दशामें देखा और कई पड़ोसी मेरी दशा देख इकट्ठे हुये और चिन्ताका हाल पूछनेलगे परन्तु मैंने उनसे कुछ न कहा॥

दो० अपनोद्रव्यगँवायके, कहिंयेनाहींरोय। हँसैपड़ोसीबहुरितब, यामेंअचरजजोय॥

परन्तु जब उन्होंने बहुत पूछा तो मैंने सब हाल कहदिया वे सब मुझे झूठा समझ बहुत हँसे यहांतक कि बालकभी मेरी बातपर ठट्ठा मार कहनेलगे कि जिसने जन्मभर अशरफ़ी न देखी उसने इतनी अशरफ़ी कहांसे पाईं कि चील्ह पगड़ी समेत ले उड़ी परन्तु मेरी स्त्री सत्य जान बहुत रोई जब इस बातको छह महीने बीतेतो वे दोनों मित्र अर्थात् साद और सादी मेरी गलीकी ओर आये सादने सादीसे कहा यह तो वही गलीहै जिसमें हसन रहताथा चलके उसे देखना चाहिये कि उन दोसौ अशरफ़ियोंसे कितना उसका व्यापार बढ़ा निश्चयहै कि वह पूर्वसे धनवान् होगा सादीने कहा बहुत अच्छा उसे बहुकालसे हमने नहीं देखा मैंभी चाहताहूं कि उसे अच्छे हालमें देख प्रसन्न होऊं यह कह वे दोनों स्नेही मेरे घरकी ओर आये पहिले सादने सादीसे कहा मैं तो उसे उसी दरिद्रतामें पाताहूं कि वह फटे पुराने वस्त्र पहिने है परन्तु कुछ उसकी पगड़ी उजली दिखाई देती है और कुछ अन्तर नहीं तुमभी भलीभांति देखो कि जो मैं कहता हूं वह सत्यहै या झूठ सादीने आगे बढ़के जो मुझे देखा तो उसी दशा में पाया फिर वे दोनों मेरे पास आये पहिले साद ने पूछा हे हसन! तुम्हारी क्या दशाहै और तुम्हारा व्यापार उन दोसौ अशरफ़ियों से बढ़ा वा नहीं मैंने कहा मैं अपनी दुर्भाग्यताका बृत्तान्त तुमसे क्या वर्णन करूं न तो लज्जाके मारे कहसक्काहूं और न छिपा कर रखनेकी सामर्थ्यहै मुझपर अद्भुत बृत्तान्त हुआ उसे सुन कर विस्मित होगे मैं लाचार होकर वर्णन करताहूं फिर मैंने सम्पूर्ण बृत्तान्त उनसे कह सुनाया सादी को बिश्वास न हुआ और कहा हे हसन! तू हमसे हँसी करताहै और चाहताहै कि हमको छले जो तूने कहा वह निश्चय मानने के योग्य नहीं चील्होंका काम पगड़ी लेजाना नहींहै वह वही लेतेहैं जो उनका भक्ष्य होताहै और तुमने वह काम किया जो बहुधा तुम्हारे से मनुष्य करते हैं अर्थात् जब उनको कुछ कहीं मिलताहै और बहुतसा द्रव्य पातेहैं तो वह अपने कामको छोड़ लम्पटता में उस द्रव्यको ख़र्च करदेतेहैं फिर वह निर्धन होजाते हैं फिर अपने कामको करते हैं तुमनेभी ऐसाही किया

होगा क्योंकि तुमने इन्हीं थोड़े दिनों में सम्पूर्ण द्रव्यको व्यर्थ ख़र्च किया और जैसेथे वैसेही बनेरहे मैंने कहा जितना आप मुझे बुरा भला कहिये सो यथार्थ है और मैं इसी योग्यहूं परन्तु इस अद्भुत कहानी को जो मैंने तुमसे वर्णनकी क्या कोई मनुष्य यहां नहीं जो न जानताहो मैं तुमसे झूठ नहीं कहता और मुझेभी आश्चर्यहै कि चील्ह पगड़ी नहीं लेती परन्तु यह बात जो मुझपर बीती अपूर्व है सादने मेरा पक्ष करके सादी से कहा कि बहुधा देखासुना है कि चील्ह बहुतसी बस्तु अपने भक्ष्यके बिशेषभी लेजातीहै इसमें कुछ आश्चर्य नहीं सादीने यह सुनके अपनी जेबसे एक थैली अशरफ़ियों की निकाली और उसमेंसे दोसौ अशरफ़ी और मुझे गिनदीं और कहनेलगा हे हसन! अबकी बेर दोसौ अशरफ़ियां फिर तुमको देताहूं इन्हें बड़ी सावधानीसे रखना और पहिलेकी भांति मत खोना तुम इसका अच्छा व्यापार करो जिससे तुम्हें बहुत लाभ होवे और व्यापारको बढ़ाओ जैसा कि सबलोग करतेहैं मैंने सादीका अधिक गुणानुबाद किया और आशीर्बाद दिया फिर जब वह दोनों मित्र चलेगये मैं अपने कारख़ानेमें आया और वहांसे घर गया संयोग-बश उस समय मेरी स्त्री और पुत्र घरमें न थे मैंने एक ओर होके दश अशरफ़ियां निकालीं बाक़ी एकसौ नब्बे अशरफ़ियां एक बस्त्रमें बांधलीं और चाहा कि इनको ऐसे स्थानपर रक्खूं जहां मेरी स्त्री और पुत्रोंकी पहुँच न हो इतने में मैंने एक कोने में मिट्टीकी मठोर खड़ीहुई देखी जिसमें गेहूंकी भूसी भरीहुईथी मैंने उन अशरफ़ियों को गेहूंकी भूसीमें रखदिया और समझा कि यहां किसीका हाथ न पहुँचेगा इतनेमें मेरी स्त्री घरमें आई मैंने कुछ उससे न कहा और रस्सी मोल लेनेको बाजारमें गया मेरे जानेके उपरान्त एक मनुष्य शिर धोनेकी मिट्टी बेंचताहुआ वहां आया मेरी स्त्रीने मिट्टी मोल लेनीचाही परन्तु घरमें कौड़ीभी न थी तो उसने बिचारा कि भूसी की मठोर घरमें रक्खीहै उसको देके मिट्टी लेलेनी चाहिये सो मिट्टी वालाभी इस बातपर राज़ी हुआ और मिट्टीको भूसीसे बदललिया और मठोर समेत भूसी उठायलेगया इतनेमें मैंभी सन मोललिये

हुये और एक बोझ अपने शिररक्खे आया और पांचभार सनके मज़दूरोंसे उठवालाया वह बोझ उठवाके एक ओर रखदिये और मज़दूरों को मज़दूरी देकर बिदा करदिया मैं बिश्राम करनेके लिये एक जगह जाकर लेटरहा और जहां वह मठोर भूसीकी रक्खीथी दृष्टिकी तो उसे वहां न पाया इससे अत्यन्त ब्याकुल हुआ कि जिस का बर्णन नहीं होसक्ता और उठकर अपनी स्त्रीसे पूछा कि वह मठोर यहांसे क्या हुई उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त मिट्टीसे बदलनेका कह सुनाया यह सुन मैं चिल्लाकर बोला हे दुष्ट अभागी! यह क्या तूने किया कि तूने मुझे और मेरे बच्चोंको मारडाला और मिट्टी बेंचनेवाले को धनवान् कर दिया फिर मैंने सम्पूर्ण बृत्तान्त मठोरमें एक सौ नब्बे अशरफ़ियां रखनेका उससे कह सुनाया मेरी स्त्री यह बात सुनतेही शिर और छाती पीटकर रुदन करनेलगी और कहनेलगी कि उस मिट्टीके बेंचनेवाले को कहां पाऊंगी वह अभागा आजही इस टोले में आयाथा सिवाय आजके मैंने उसे कभी नहीं देखा फिर मुझसे कहनेलगी तूने बड़ा अनर्थ किया कि इस बातको मुझसे न कहा जो मेरा बिश्वास मान मुझसे कहता तो कदाचित् ऐसा न होता निदान उसने बहुत रोया पीटा मैंने उसकी यह दशा देख उससे कहा कि इतना मत चिल्ला कि पड़ोसी हमारी इस दुर्दशा को सुन मेरी और तेरी निर्बुद्धिता पर हँसेंगे अब उचित है कि ईश्वर की इच्छापर अपनेको छोड़ें और उन दश अशरफ़ियोंसे जो मैंने निकालीथीं थोड़ेदिन अपने बितायें और अपनी चिन्ताको जो मुझे दूसरीबेरकी हानिसे हुईथी आपके सन्मुख उसका कहांतक बर्णन करूं फिर शोच उठा कि सादीसे भेंट होते समय मैं क्या कहूंगा वह तो पहिलेही हालका निश्चय नहीं करता था अबकीबेर उसे निश्चय करके मेरे छल और लम्पटताका निश्चय होगा निदान एक दिन साद और सादी कुछ मेरेही बिषय में तकरार करते हुये मेरे घरकी तरफ़ आये मैंने उनको दूरसे देखकर अपना काम छोड़ दिया और चाहा कि कहीं जाकर छिपरहूं और उनके सन्मुख न हूं क्योंकि मेरी आंखें लज्जासे उनके सन्मुख न होंगी अभी मैं बाहर

नहीं निकलाथा कि उन दोनोंने पहुँच प्रणामकर मेरी कुशल पूछी मैंने अत्यन्त लज्जासे आंखें अपनी नीचे करके प्रणामका उत्तर दिया मुझको वैसाही टूटे हालों और दरिद्रतामें पाकर अत्यन्त आश्चर्य में हुये और पूछा कुशल तो है अब तुम क्यों इस दुर्दशा में हो उन अशरफ़ियों से क्या तुमने अपना व्यापार नहीं बढ़ाया मैंने उनसे कहा अशरफ़ियोंका यह हाल हुआ कि तुम्हारे जानेके उपरान्त मैं अपने घरमें गया और मैंने एक मठोरमें कि बहुत बड़ी और बहुतकालसे एक गेहूंकी भूसीसे भरीहुई एक ओर रक्खीथी दश अशरफ़ियां उस थैलीमेंसे निकाल बाक़ी एकसौ नब्बे अशरफ़ी थैली समेत अपनी स्त्री पुत्रोंसे छुपाकर रखदीं संयोगसे उस समय कोई घरमें न था सबलोग कहीं बाहर गयेथे फिर मैं उन दश अशरफ़ियोंको लेकर सन मोललेनेको बाज़ारमें गया मेरे पीछे जब मेरी स्त्री घरमें आई तो एक मनुष्य मिट्टी शिरधोनेकी बेंचता हुआ आया मेरी स्त्रीके पास उस समय कौड़ी पैसा न था और मिट्टीकी आवश्यकताथी बाहर निकल उससे कहा जो तू भूसीसे मिट्टी बदल दे तो मैं लूं वह इस बातपर राज़ी हुआ और मेरी स्त्री को बहुतसी मिट्टी देकर मठोरको भूसीसहित उठवायेहुये लेगया यदि तुम कहो कि तुमने अपनी स्त्रीसे अशरफ़ियोंके मठोरमें रखने का हाल क्यों नहीं कहा तो उत्तर उसका यहहै कि तुमने मुझसे कहाथा कि अबकी बेर उनको सावधानीसे रखना मैंने अपने बिचारसे वह अच्छी जगह जानीथी और रक्षाके लिये अपनी स्त्रीसे कहा कि ऐसा न हो जोकि बिना पूछे उसमेंसे ख़र्च करडाले तुम्हारी दीनपालकता और उपकारमें सन्देह नहीं परन्तु मेरे भाग्यमें दरिद्रता लिखीहै क्योंकर मुझे धन प्राप्तहो अब मैं तुम्हारे उपकारका जन्मभर गुण मानता रहूंगा और तुम्हारा यश गाऊंगा सादीने इस वृत्तान्तको सुनकर कहा मुझे तुम्हारी इस बातका परिपूर्ण निश्चय हुआ मैंने मित्रवत् चारसौ अशरफ़ियां तुमको दीथीं प्रयोजन यह था कि तुमभी धनवान् बन जाओ न यह कि तुम उसका उपकार मान मेरा गुण वर्णन करो निदान वह दोनों परमस्नेही मेरे दुर्भाग्य

पर अत्यन्त खेद करनेलगे निदान साद सत्पुरुषथा और मुझसे उसकी पुरानी जान पहिचान थी सो उसने एक पैसा सीसे का जेबसे निकाल सादीको दिखाया और मुझ से कहा कि इसी सीसे के टुकड़ेसे देख तो ईश्वर तुझको कैसी बरकतें देताहै सादी उसे देखकर हँसा और ठट्ठामारनेलगा और हास्यसे कहा कि यह सीसे का टुकड़ा हसनको बड़ा लाभ देसक्ताहै और उसका कौनसा काम निकलेगा सादने उस पैसे को देके मुझसे कहा कि तुम सादीकी बातोंका कुछ बिचार मत करो और इसको अपने पास रक्खो और सादीको हँसने दो एकही दिनमें तुमको इसका हाल मालूम हो जावेगा और ईश्वर चाहेगा तो इसीके कारण तुम धनवान् होजाओगे मैंने वह पैसा लेकर अपनी जेबमें रखलिया वह दोनों सखा मुझसे बिदा हो चलेगये और मैं रस्सी बटनेलगा रात्रि को जब मैंने सोनेके लिये अपने बस्त्र उतारे तो वह पैसा जो सादने दियाथा जेबसे गिरपड़ा मैंने उसको उठाके किसी ताक़पर रखदिया अकस्मात् उसी रात्रिको एक धीमर जो मेरे पड़ोस में था अपने जालके बनाने के लिये उसे एक पैसेकी आवश्यकता हुई कि सूत लाकर जालको बना कर प्रभातको मछलियां पकड़े और उन्हें बेंचकर अपने कुटुम्ब के लिये जीविका प्राप्त करे उसका यह नियम था कि सूर्योदय के एक मुहूर्त पहिले नदीपर मछलियां पकड़नेको जाता उसने अपनी स्त्री से कहा कि तू जाकर अपने पड़ोसीसे एक पैसा मुझे लादे वह स्त्री सबके घरगई परन्तु उसको कहींसे पैसा न मिला निराश होकर अपने घर आई धीमरने अपनी स्त्रीसे कहा जान पड़ता है तू हसन रस्सी बटनेवाले के घर नहीं गई उसने कहा कि सत्य है मैं उसके घर नहीं गई क्योंकि उसका घर और लोगोंसे दूरहै यदि मैं वहां जाती तो कुछ न कुछ वहांसे लेके आती उस धीमरने कहा तू अत्यन्त आलसीहै शीघ्र उसके घर जा वहां से अवश्य कुछ मिलेगा उसकी स्त्री बरबराती हुई मेरे घरमें आई और द्वारखुलवाकर कहा हे हसन! मेरे पतिको इस समय एक पैसे की आवश्यकता है कि अपने जालको बनावे मुझे स्मरण था एक पैसा जो सादने मुझे

दियाथा अमुक स्थानपर रक्खा है मैंने उसको पुकारके कहा कि ज़रा तू ठहरजा मेरी स्त्री पैसा लिये आतीहै मेरी स्त्री उसके शब्दसे जगी मेरे बतानेसे उसने पैसा लेजाकर अपनी पड़ोसिनको दिया वह स्त्री पैसा पानेसे अत्यन्त प्रसन्नहुई और मेरी स्त्रीसे कहा तूने और तेरे पतिने मेरे पतिपर बड़ा उपकार किया मैं प्रतिज्ञा करतीहूं कि जो पहिली बेर जाल डालके मछलियां पकड़ेगा वह सब तुझे दूंगी निश्चय है कि मेरा पतिभी इस प्रतिज्ञाको स्वीकार करे जब उस स्त्रीने वह पैसा लेजाकर अपने पतिको दिया और अपनी प्रतिज्ञाको कह सुनाया तो उसने प्रसन्न होकर उस प्रतिज्ञा को अङ्गीकार करलिया और अपनी स्त्री से कहा तूने बहुत अच्छा किया जो यह प्रतिज्ञा उनसे करके आई वह अपने जालको बनाकर दो मुहूर्त के तड़के मछली पकड़नेको नदीपर गया जब उसने पहिले पहिल जालडालकर खींचा तो एकही मछली कुछ एक बालिश्त से बड़ी उसके जाल में आई उसने उस मछली को अलग रखकर फिर कईबेर जालडाल और बहुत से मत्स्य पकड़े परन्तु पहिले वाली सब से छोटीथी जब वह धीमर अपने घर आया तो सब कार्यों के पहिले वह पहिली पकड़ी हुई मछली हाथमें लेकर मेरे पास आया और कहनेलगा हे मित्र रात्रिको मेरी स्त्रीने तुमसे प्रतिज्ञाकीथी कि जितनी मछलियां पहिलीबेर जालमें आवेंगी वह सब तुमको दूंगी सो एकही मछली पहिले पहिल आई सो वह यह है तुम इसे लेलो क्योंकि मेरी स्त्रीने जो तुमसे प्रातज्ञाकीथी मैंने उसको पूरा किया यदि पहिलीबेर में जालभरके आतीं तो उन सबको मैं तुम्हें लादेता परन्तु तुम्हारे भाग्य में यही एकहीथी मैंने बहुत कुछ उस मछली के लेने में तकरारकी परन्तु उसने मेरे हाथ में ज़ोरसे रखदी मैंने अपनी स्त्रीको वह मछली दी और कहा कि जो हमने रात्रिको धीमर की स्त्रीको एक पैसा दिया था उसके बदले यह मछली पाई परन्तु सादने तो हमसे प्रतिज्ञाकीथी कि इस पैसे के द्वारा तम धनवान् होजाओगे फिर मैंने अपनी स्त्रीसे उन दोनों मित्रों के आने और पैसे के देनेका हाल बर्णन किया मेरी स्त्रीभी उस मछली को

देखकर आश्चर्य में हुई और कहनेलगी मैं इसको क्या करूं फिर सोच विचारकर मन में कहनेलगी कि इसे बालकों के लिये भूनलूं क्योंकि मसाला नहीं है कि जो इसका शोरुवा पकाऊं निदान मेरी स्त्रीने उस मछलीको साफ़ करते समय उसके उदरसे एक बड़ा टुकड़ा हीरेका पाया उसने जाना कि यह टुकड़ा सीसे का है यद्यपि उसने केवल हीरेका नामही सुनाथा परन्तु आंखोंसे कदापि न देखा था तो उसे छोटे लड़कों के खेलनेको दिया वह उसे खेलरहे थे तो इतने में उसके और भाइयों ने देखकर उसे लेलिया और उसकी सुन्दरता और चमक देखकर सब उसके लेनेकी लालसा करनेलगे और हरएक उसे पारी पारी से अपने पास रखता जब रात्रि हुई और दीपक जलायागया तो बालक उसे दीपकके प्रकाशमें देखकर प्रसन्न होते और चिल्लाते इतनेमें मेरी स्त्रीने भोजन तैयार करलिये और हम सब भोजन करनेलगे बड़े पुत्र ने उस हीरेको एक ओर थाली के रखदिया और चुपके होके भोजन करनेलगा भोजन से निश्चिन्त होनेके उपरान्त फिर वह बालक पूर्ववत् हीरेके लिये झगड़नेलगे उनके शोर करने पर हमने कुछ ध्यान न किया निदान जब बहुत शोर किया तो मैंने बड़े लड़के को बुलाकर पूछा आज तुम किस लिये लड़तेहो उसने कहा हे पिता! हम एक सीसेके लिये कि वह अत्यन्त प्रकाशवान् है झगड़तेहैं मैंने उसे मँगवाकर देखा तो उसकी चमक दमक देख आश्चर्यमें हुआ और अपनी स्त्री से पूछा कि यह सीसेका टुकड़ा तुमने कहां से पाया उसने कहा मैंने उस मछली के साफ़ करते समय उसके उदरमें से पाया मैं समझा कि यह केवल सीसेका टुकड़ाहै फिर मैंने अपनी स्त्रीसे कहा दीपक को ओटमें बुख़ारीके भीतर रखदो जब दीपक हमारे आगेसे उठाया गया तो उस हीरेका प्रकाश इतनाथा कि हम सब कार्य दीपक बिना करसक्के थे फिर मैंने उस हीरे को बुख़ारी के एक ओर में रखदिया जिससे उजियालाहो उस समय मैं बिचारनेलगा कि साद के पैसे के कारण इतना लाभ तो हुआ कि रात्रिको दीपककी आवश्यकता न हुई तेलकी किफ़ायत हुई जब हमारे बच्चों ने देखा कि हमने

दीपकको बुझाकर प्रकाश के लिये उस सीसे के टुकड़े को रक्खा तो वह औरभी उछलने कूदनेलगे और शोर मचानेलगे इतना चिल्लाया कि पड़ोसियोंने सुनलिया निदान मेरे घुड़कने से चुपहोके सोरहे और हमभी अपनी शय्यापर सोरहे भोरको उठकर अपना काम करनेलगे और उस सीसेके टुकड़ेका बिचार मेरे मनसे जाता रहा मेरे पड़ोसमें एक यहूदी बड़ा जौहरी रहताथा उस रात्रिको जब वह दोनों स्त्री पुरुष सोनेकी इच्छा करते तो बालकोंके शब्दसे बेचैन होजाते और बहुकाल पर्यन्त उनको चिल्लाहट से निद्रा न आती प्रभातके समय उसकी स्त्री अपने पतिकी ओरसे शोरकी शिकायत करने को मेरे पास आई मेरी स्त्री उसे देखतेही उसके अन्तःकरण की बात समझ गई और उसका नाम लेकर कहा तुमको मेरे बच्चों के शोरके कारण रात्रिको निद्रामें विघ्न हुआ होगा सो उनका अपराध क्षमा करो और तुम जानतीहो कि बालक थोड़े में हँसदेते हैं और थोड़े में रो देतेहैं भीतर आओ मैं बालकोंके लड़ने झगड़ने का हाल कहूं जब वह भीतर गई मेरी स्त्रीने वह सीसेका टुकड़ा उसे दिखाया और कहा इसी कारण आपस में बालक शब्द करतेथे वह रत्नोंको पहिचानती थी उसे देख आश्चर्यमें हुई मेरी स्त्रीने सम्पूर्ण बृत्तान्त मछलीके पेटमेंसे निकलनेका उससे कहदिया उसने यह बृत्तान्त सुन कहा यह टुकड़ा सीसेका और प्रकार के सीसों से बहुत श्रेष्ठ है मेरे पास भी एक इसी भांतिका सीसेका टुकड़ा है जिसे मैं कभी २ पहिनती हूं जो तू इसे बेंचे तो मैं इसे मोललूं मेरे पुत्र बेंचने का नाम सुन अपनी मातासे रोकर कहनेलगे कि तू इसे मत बेंच फिर हम शोर न करेंगे उन बालकोंकी यह दशा देख वह दोनों स्त्रियां चुप होरहीं और यहूदीकी स्त्री बिदा होकर अपने घर चली और धीरेसे मेरी स्त्रीसे कहा कि चैतन्य रह कोई दूसरा मनुष्य इसको देखने न पावे और हमसे कहे बिना इसको दूसरेके हाथ मत बेंचना प्रभातको वह यहूदी चौकमें अपनी दूकानपर गया उसकी स्त्रीने वहीं जाकर उस सीसेके टुकड़ेका हाल उससे कहा यहूदीने यह सुन कर कहा अभी तू जाके उस सीसेके टुकड़ेको मोलले पहिले उसका

चित्र अली बाबा का अपने गधों पर नीचे अशरफ़ियां और ऊपर लकड़ी लाद के शहर को जाते हुये·

थोड़ा मोल कहियो जब वह न माने तो बढ़ा दीजियो जितने को हो लीजियो वह अपने पतिकी आज्ञानुसार मेरी स्त्री के निकट आई और कहनेलगी कि बीस अशरफ़ी उस सीसेके टुकड़े की देतीहूं मेरी स्त्री बीस अशरफ़ियोंका नाम सुनकर सोची कि यह इसका अधिक मोल देतीहै परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया इतनेमें मैं अपना काम छोड़कर भोजन करनेके लिये घरमें आया और उन दोनोंको द्वारमें बातें करते देखा मेरी स्त्री ने मुझे ठहराके कहा कि बीस अशरफ़ियां यह पड़ोसिन सीसेके टुकड़ेकी देतीहै मैंने अबतक कुछ उसका उत्तर नहीं दिया तुम्हारी क्या इच्छाहै मैंने सादके वाक्यको स्मरण किया कि उसने कहाथा कि यह सीसेका पैसा तुमको बहुत कुछ दिलवावेगा मेरे चुप रहनेसे पड़ोसिन ने जाना कि इस मोलपर यह राज़ी नहीं है उसने कहा हे हमसाये! जो तुम इतनेपर प्रसन्न नहींहो तो मैं पचास अशरफ़ी देती हूं मैंने देखा कि यहूदिन इतनी शीघ्र बीस अशरफ़ीसे पचास अशरफ़ीतक आई है इसका बहुत बड़ा मोल होगा मैं चुप होरहा और उसका कुछभी उत्तर न दिया उसने मुझे चुप देखके कहा एकसौ अशरफ़ी लो और यह बहुतहै मैं नहीं जानती कि मेरा पति इस मोलके देनेपर राज़ी हो या नहीं मैंने कहा तुम क्या कहतीहो मैं इस टुकड़ेको लाख अशरफ़ीसे कम न बेंचूंगा और इसी मोलपर तुम्हें और तेरे पतिको दूंगा क्योंकि तुम पड़ोसी हो यहूदिन बढ़ते २ पचास हज़ार अशरफ़ीतक आई और मुझसे कहा कि तुम इसे सन्ध्यातक मत बेंचना कि मेरा पति इस को एकदृष्टि देखले मैंने कहा बहुत अच्छा रात्रिको उसका पति भी मेरेमहलमें आया और मैंने उस हीरेको उसे दिखाया अभी दीपक नहीं जलाया गया था कि वह हीरा दीपकके सदृश मेरे हाथमें चमक रहाथा यहूदीको उस समय जो कुछ कि उसकी स्त्रीने कहाथा बिश्वास हुआ और उसी हीरेको अपने हाथमें लेके बहुतकाल पर्यन्त जांचतारहा और फेरफारके देखा किया और अत्यन्त आश्चर्यमेंहो कहनेलगा कि मेरीस्त्री पचास हज़ार अशरफ़ी देतीहै मैं उससे बीसहज़ार अशरफ़ी अधिक देताहूं मैंने कहा तुमको तुम्हारी स्त्री दे

मालूम हुआहोगा कि मैंने उससे जो मोल कहाहै कि लाख अशरफ़ी से कम न बेंचूंगा उसने कितनाही चाहा कि मैं लाख अशरफ़ी से कम लूं मैंने कहा जो तुम न लोगे तो मैं दूसरे जौहरी के हाथ इसे बेंचूंगा निदान वह यहूदी इतनेपर राज़ी हुआ और दो हज़ार अशरफ़ी बयानेके तौरपर देके मुझसे कहा कि मैं सब कल अशरफ़ियां तुझे लादूंगा और इस हीरेको लेजाऊंगा मैंभी इस बातपर राज़ी हुआ निदान दूसरे दिन उस यहूदीने अपने इष्टमित्रों से क़र्ज़ लेके एक लाख अशरफ़ियां मुझे गिनदीं तब मैंने वह हीरे का टुकड़ा उसे दिया और उसीसे मैं धनवान् होगया ईश्वरका धन्यबाद किया उसी ईश्वरके दिये हुये द्रव्यसे अपना गृहस्थीका असबाब धनवानोंके सदृश बनाया और मेरी स्त्रीनेभी बालकोंके वस्त्र बनवाये और मैंने एक बड़ा घर मोल लेकर उसकी छत परदे आदि सामग्री से दुरुस्त करली मैंने अपनी स्त्रीसे कहा अब हमें यह उचितहै कि अपने पुराने पेशेको न छोड़ें और कुछ द्रव्य उठा रक्खें और थोड़ीसी द्रव्य से कामकाज कियाकरें फिर मैंने नगरके सम्पूर्ण कारीगर नौकर रक्खे और उनको कई सौ रुपये देकर कई कारख़ाने रस्सीके जमाये और कई मनुष्योंको विश्वासित जान एक २ कारख़ाना उनको सौंपदिया अब बग़दादनगरमें ऐसी कोई गली नहीं जिसमें मेरा गुमाश्ता अथवा रस्सीका कारबारी न हो और इसीभांति प्रतिनगर और ज़िलओं में एक २ कारख़ाना नियतकर एक २ मुहर्रिर वहां नियत किया अब मुझे इस प्रबन्ध से बहुतसा धन प्राप्त होता है और अपने कारख़ानेके लिये मैंने एक बिशाल मन्दिर मोल लिया जिसमें ज़मीन बहुतथी परन्तु वह घर छिन्न भिन्न था अब उसे तुड़वाकर नये सिरे से उसे बिशाल स्वच्छ भवन बनवाया जिसको कल आपने देखा उसमें केवल मेरे कारिन्दे रहतेहैं और दफ़्तरका हिसाब किताब वहीं है और अपना और अपने कुटुम्बका असबाब वहीं रखताहूं फिर मैं अपने प्राचीन घरको जिसमें साद और सादी आतेथे छोड़कर नये घरमें जो कि वहां मैंने रहनेके लिये बनवायाथा आ रहा और कुछ दिनके पीछे मैं साद और सादी को स्मरण होआया और उन्होंने

चाहा कि फिर मुझे आकर देखें सो वे दोनों उसी पुराने घरमें आये मुझे और मेरे कुटुम्ब को वहां न पाकर आश्चर्यमें हुये फिर वहां के बासियोंसे पूछा कि अमुक रस्सीवाला कहांहै जीताहै वा मरगया उन्होंने कहा अबतो वह बड़ा व्यापारी बनगयाहै अब उसका नाम केवल हसन कोई नहीं लेता किन्तु उसे ख़्वाजे हसन हव्वाल कहतेहैं अब वह अमुक स्थानपर एक बिशाल महल बनवाकर उसमें रहता है सो वे दोनों स्नेही मुझे पूछतेहुये वहांआये परन्तु सादीको तनक बिश्वास न था कि यह द्रव्य और ऐश्वर्य मुझे उस पैसे के कारण प्राप्त भया इसलिये उसने साद से कहा यदि हसन मुझ से दोबेर झूठ बोला यहांतक कि उसने झूठ बोलकर मुझसे चारसौ अशर-फ़ियां लीं और उन्हीं अशरफ़ियों से इतना धन बढ़ाया परन्तु मैं उसे इस दशा में देखकर महाप्रसन्न हूंगा और वह सीसे का पैसा जो तुमने दिया है उससे किस भांति इतना द्रव्य पाता साद ने कहा यह जो कुछ तुम कहतेहो झूठहै हसन झूठा और धूर्त्त नहीं है जो उस ने तुमसे कहा वह सब सत्यहै और मुझे परिपूर्ण बिश्वास है कि उसी पैसे के कारण उसे यह ऐश्वर्य प्राप्त हुआ अभी तुमको हसनके बर्णन से मालूम होगा इसी भांति बार्त्ता करतेहुये वे दोनों मित्र उसी गलीमें जिसमें मेरा घर था आये और मेरे सुन्दर भवन की सजावट और बनावट देख पहिचान गये कि यह नवीन रचित भवन अवश्य ख़्वाजे हसनका होगा सो उन्होंने द्वारपर पहुँचकर झांकदी द्वारपालने दरवाज़ेको खोलदिया सादी बहुतसे सेवकों को देख भयभीत हुआ कि ऐसा न हो जो किसी अमीरका यह भवनहो निदान साहसकर उस द्वारपालसे पूछा क्या यह ख़्वाजेहसन हव्वाल का महल है द्वारपालने उत्तर दिया कि यह घर उन्हींका है भीतर जाओ हसन अपने दीवानख़ानेमें बैठाहै वहां बहुतसे उसके नौकर होंगे कोई उसे जाकर तुम्हारे आनेका समाचार देगा फिर वे दोनों मित्र वहां आये जहां मैं बैठाथा मैंने देखतेही पहिचान लिया और तुरन्त अपने स्थानसे उठ उनकी ओर दौड़ा और उनके बस्त्र चूमे वे बहुतेरा चाहतेथे कि मैं गले मिलूं पर मैं न मिलता निदान उनको

भीतर लेजाकर एक दालान में बहुत अच्छे स्थानपर बैठानाचाहा परन्तु उस स्थानपर वे चाहतेथे कि मैं बैठूं मैंने कहा कि हे सज्जनो! मैं अपनेको नहीं भूला मैं वही हसन रस्सी बटनेवाला हूं मैं सदा आपको आशीर्वाद देताहूं निदान वे एकस्थानपर बैठगये और मैंभी उनके सन्मुखहो बैठा सादीने कहा मैं तुम्हें इस दशामें देखकर महा प्रसन्न हुआ और ईश्वर ने जैसा कि हमारा मन चाहताथा तुम्हें उस पदवीको पहुँचाया और मुझे निश्चयहै कि उन्हीं चारसौ अशरफ़ियों से जो मैंने तुम को दीथीं यह सब धन ऐश्वर्य प्राप्तहुआ परन्तु सत्य कहो कि तुम क्यों पूर्व में दोबेर मुझसे झूठ बोले थे साद यह बात सादीसे सुनकर बहुत से पेचखाकर चुपके चुपके सुनाकिया जब सादी कहचुका तो वह बोला कि इसका उत्तर मैं तुम्हें देताहूं कि जो कुछ पूर्व में हसनने अशरफ़ियों के खोजानेका हाल कहाथा वह सब सच है उसमें कुछ अन्तर नहीं फिर उनमें परस्पर इसी बात पर तकरार होनेलगी मैंने कहा भाइयो इस बात को जानेदो मेरे वास्ते क्यों परस्पर खेद करतेहो आगे जो कुछ मेरे ऊपर बीताथा वह कह सुनाया उसको सच जानो या झूठ और अवभी जो कुछ हुआ है तुमसे कहताहूं सो उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त धीमरको पैसेका देना और मछलीके पेटमें से हीरेका निकलना जैसा कि हे खलीफ़ा! मैंने आपके सन्मुख अभी वर्णन कियाहै उनसेभी कहा सादीने उसे सुनके कहा हे हसन! इतने बड़े हीरे का मछली के उदरमेंसे निकलना वैसा है जैसा कि चील्ह तुम्हारे शिर परसे पगड़ी उड़ा लेगई और मठोर भूसीकी देके शिरधोनेकी मिट्टी ली शायद सचहो परन्तु मुझे विश्वास नहीं आता यह द्रव्य तुम्हें उन्हीं अशरफ़ियों से प्राप्त हुआ यह कह वे उठे और मुझसे विदा होने लगे मैं भी उठखड़ाहुआ और उनसे कहनेलगा भाइयो! आपने मुझपर बड़ा अनुग्रह किया कि इतना श्रमकर मेरे महलमें आये और इस घरको पवित्र किया परन्तु मेरी यह इच्छा है कि रात्रिको आप यहां भोजनकर यहीं निवास कीजिये प्रभातको मैं तुम्हें नदी और भवनकी सैरके लिये जो मैंने इसी शहर में हवाखाने के लिये

लियाहै लेचलूंगा उन्होंने न माना जब मैंने बहुत कहा तो उन्होंने मान लिया मैंने उनके लिये नाना प्रकार के व्यञ्जन पकवाये और उनको अपने भवनके सब असबाब दिखाये और परस्पर हास्य और हरएक भांतिसे प्रसन्नताकी वार्ता करते रहे इतनेमें दासी ने कहा कि भोजन तैयार है तब अपने उन दोनों मित्रोंको अपने भोजन करनेके कमरेमें लेगा। जिसमें अनेक भांति के स्वच्छ पाकथे और अति सुन्दर और उज्ज्वल दीपक उचित २ स्थानोंपर प्रज्वलित थे और एकओर मधुर स्वरसे गाना होरहाथा और एक तरफ़ स्त्रीपुरुष नृत्य करते थे इसके विशेष बहुतसे तमाशे उनको दिखाये और भोजन से निश्चिन्त होकर हम सोरहे प्रभातको उठकर हम एक किश्तीपर सवार हुये केवट उसको बहावमें खेतेहुये लेचले थोड़े कालमें हम अपने घरमें जो गांवमें था जा पहुँचे फिर किश्ती से उतर सैर करतेहुये एक घरके भीतर आये मैंने अपने रहनेकी जगह और कारखाने उनको सब दिखाये वह घर और उसकी तैयारीको देखकर हर्षित हुये इसके अनन्तर बागमें गये जिसमें सबभांतिके सघन वृक्ष लगेहुयेथे और नदीसे पक्की नहरोंके द्वारा निर्मल जल सब जगह पहुँचताथा और पकेहुये फल सुन्दर वृक्षोंमें लगेहुयेथे और सुन्दर पुष्पवाटिकामें अनेकभांतिके सुगन्धित फूल लगेथे जिनकी सुगन्ध से सारेबाग़ में चहुँओर सुगन्ध फैलरहीथी और स्थान २ पर पानी की चादरें और फ़व्वारे छूटरहे और अनेक भांतिके पक्षी उन्हीं सघन वृक्षोंपर अपनी ललितबाणी बोलते इसके बिशेष वहां बहुत सी वस्तु उपस्थित थीं जिन के देखने से मनको अतिआनन्द होता वे दोनों मित्र देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुये कभी मेरा गुण मान कर कहते कि तुमने हमको बहुत सुन्दर स्थानपर लाके सैर कराई और कभी यह आशीर्वाद देते कि ईश्वर करे यह बिचित्र भवन और बाग़ फलीभूतहो निदान मैं उनको एक बड़े सघन वृक्षके नीचे कि वह बाग़के किनारेपर लगाहुआ था लेगया और उसको दिखा कर उनको छोटेसे मकानमें भोजन करनेके लिये लेगया और दालान में जहां मसनद तकिया लगाहुआ था उनको बिठलाया इस

समयान्तर में मेरे दो पुत्र जिनको मैंने दो तीन दिन पहिलेसे उन के अध्यापक समेत उस बाग़ में जल बायु बदलनेके लिये भेजाथा पक्षियों का घोंसला ढूंढ़ते हुये एक बृक्षके नीचे गये सो उनको एक घोंसला मिला उन्होंने चाहा कि उस बृक्षपर घोंसला उतारने के लिये चढ़जावें परन्तु अभ्यास के न होने और कमज़ोरीसे उसपर चढ़नेकी शक्ति अपनेमें न पाई निदान अपने नौकरको जो उनकी सेवा किया करताथा उसपर चढ़ने को कहा वह सेवक उसपर चढ़ गया और उस घोंसलेको देख के आश्चर्यमें हुआ कि वह पगड़ीसे बना हुआथा और घोंसलेको उसी तरह बृक्षसे उतार लाया और मेरे पुत्रोंको वह पगड़ी दिखाई बड़ा बालक मेरे दिखानेको लेआया मैंने उसे दूरसे देखा कि अतिप्रसन्नतासे मेरी ओर चला आताहै और उसको मेरे सन्मुख रखके बोला हे पिता ! देखो यह घोंसला बस्त्रका बनाहुआहै साद और सादी उसे देख मुझसे अधिक आश्चर्यमें हुये जब मैंने अच्छीतरह उस घोंसलेको देखा तो अपनी पगड़ीको पहिचाना कि यह वही पगड़ी है जिसको पहिले चील्ह मेरे शिरपरसे झपट्टा मारके ले उड़ीथी फिर मैंने उन दोनों मित्रोंसे कहा तुमभी ध्यान करके देखो कि यह वही पगड़ी है कि जो उस दिन मेरे शीशपर थी जब आप पहिले पहिल मेरे कारख़ानेमें आये थे सादने कहा मैं तो पहिचान नहीं सक्ता सादी बोला यदि एकसौ नब्बे अशरफ़ियां इसमें हों तो जानिये कि यह वही पगड़ी है मैंने कहा निस्सन्देह यह वही मेरी पगड़ीहै जो उस दिन मेरे शिरपर रक्खीहुईथी जब मैंने हाथमें लेकर अनुमान किया तो बहुत भारी पाया और उसे खोला तो एक बस्तु भारीसी उसमें थी जब गिरह को खोला तो उसमें वही थैली अशरफ़ियों की निकली मैंने उस थैली को दिखाकर सादीसे कहा पहिचानो यह थैली तुम्हारीहै उस ने पहिचानकर कहा बास्तवमें यह वही थैली अशरफ़ियोंकी है जो मैंने तुमको पहिलीबेर दीथी फिर मैंने उस थैलीका मुख खोल सादी के सन्मुख अशरफ़ियोंका ढेर करदिया और कहा इनको गिनो उस ने गिनीं वह पूरी एकसौ नब्बे अशरफ़ियांथीं सादी देखतेही अति

लज्जित हुआ और कहनेलगा कि अब मुझको तुम्हारे बचन का बिश्वास हुआ परन्तु वह अशरफ़ियां जो तुमको दूसरीबेर मैंने दीहैं उनसे तुमको आधा धन प्राप्त हुआ है और आधा उस पैसे से मैं सुनके चुप होरहा परन्तु साद और सादीमें झगड़ा होनेलगा भोजन करने के उपरान्त हम तीनों बाग़में हवादार मकानपर सोरहे सन्ध्या को जब सूर्य अस्त हुआ तो जगे और घोड़ोंपर सवार हो कर बुग़दादको चले मार्ग में सम्पूर्ण सेवक हमसे अलग होके पीछे रहगये दाना घोड़ोंने नहीं खायाथा और नगर की सब दूकानें बन्द होगई थीं दो तीन दास जो हमारे सङ्ग चले आये थे दाना ढूंढने गये सो किसी सेवक ने भूसी की मठोर भरीहुई किसी बनिये की दूकानपर देखी वह उस बनियेसे मोल लेके मटुकी सहित मेरे पास उठवा लाया इस बातपर कि कल हम मठोर तेरी दूकानपर भिजवा देवेंगे फिर नौकर हरएक घोड़ेके आगे उस भूसीको मठोर में से निकालकर डालनेलगा अँधियारे में एक बस्त्र उसके हाथलगा और वह उसे बहुतभारी मालूम हुआ वह उसे उसी भांति मेरे पास लेआया और मुझे देकर कहा कि देखिये यह वही बस्त्र तो नहीं है जिसका हाल कई बेरतुमने हमसे कहा मैंने उसे हाथमें लेकर पहिचाना कि यह वही कपड़ाहै जिसमें एकसौ नब्बे अशरफ़ियां बांध के भूसी की मठोर में रक्खी थीं इससे अतिप्रसन्न होके मैंने अपने मित्रों से कहा भाइयो! ईश्वरने मुझे सच्चा किया और सादीसे कहा यह दूसरी एकसौ नब्बे अशरफ़ियांहैं जो तुमसे मैंनेपाई थीं और मैं इस पुराने चिथड़ेको कि जिसमें उनको मँडवायाथा भलीभांति पहिचानता हूं फिर मैंने उस मठोर को अपने सामने उठवामँगवाया और अपनी स्त्रीके निकट भेजा उसने कहलाभेजा यह वही मठोर है जिसमें भूसी रक्खी जातीथी सादीने यह दशा देख कहा कि मेरा बिचार अशुद्ध था और सादसे कहा अब मैंने तुम्हारी बातको सच्चा जाना और उसपर बिश्वास हुआ कि धन धनसे नहीं बढ़ता किन्तु ईश्वरकी अनुग्रहसे दरिद्री धनाढ्य होजाता है इतना कह हम सब सोरहे दूसरे दिन प्रभातको बिदा होकर वह दोनों मित्र अपने

महल को पधारे जब बादशाहने यह सम्पूर्ण कथा हसनसे सुनी तो कहनेलगा कि मुझे प्रथमसे तुम्हारे पड़ोसियोंके द्वारा बिदितहै कि तुम व्यर्थ खर्च नहीं करते और वह हीरा जिसने तुमको धनवान् करदिया मेरे कोष में है तू सादीको यहां बुलाला कि उस हीरेको अपने नेत्रसे आके देखे और उसे निश्चयहो कि रुपये पैसेसे सब निर्धन धनवान् नहीं होजाते और तू इस कहानी को मेरे कोषाधिप से भी कह कि वह इस चरित्रको लिखकर हीरेके साथ मेरे कोषमें रक्खे फिर बादशाहने सैनसे हसन को बिदा करदिया तत्पश्चात् सीदीनैमान और बाबाअब्दुल्ला भी तख़्तको चूम बिदाहुये मलका शहरज़ाद ने चाहा कि दूसरी कहानी आरम्भ करें परन्तु हिन्दुस्तानके बादशाह ने प्रातःकाल होजाने से कहा उस कहानी को मैं कल सुनूंगा ॥

अलीबाबा और चालीस ठगोंकी कहानी जो एक दासीके उपायसे मारेगये ॥

दूसरी रातको मलका कहानीको इस भांति बर्णन करनेलगी कि पारसदेशमें दो भाई थे एकका नाम क़ासिम और दूसरेका अलीबाबा था उन्होंने अपने पिताके मृत्युके पश्चात् थोड़े द्रव्य को आपस में बांटलिया और थोड़ेही समयमें दोनों भाइयोंने उसे खर्च करडाला क़ासिमने एक स्त्री के साथ जिसका पिता बड़ा धनवान् था बिवाह किया और अपने श्वशुरके कालके उपरान्त उसको श्वशुरकी एक दूकान मिली जिसमें व्यापारकी बहुमूल्य बस्तु भरीथी और बहुत सा द्रव्य जो पृथ्वी में गड़ाथा पाया इससे वह उस नगर में बड़ा व्यापारी बिख्यात हुआ अलीबाबाने जिस लड़कीके साथ बिवाह किया उसका पिता निर्धन और दरिद्रीथा वह दोनों छोटेसे घरमें रहतेथे अलीबाबा प्रतिदिन सूखा काष्ठ गधोंपर लादके नगरमें लाता और उसको बेंच अपना निर्बाह करता एक दिन अलीबाबाने काष्ठ अपनी आवश्यकताके अनुसार काटा और चाहताथा कि गधोंपर लादे अकस्मात् उसने दाहिनी ओर से धूलि उड़ती अपनी ओर आतीहुई देखी जब उसने भलीभांति देखा तो बहुतसे सवार उसे

दृष्टिपड़े जो पावँ उठाये उसीकी ओर चलेआते हैं वह उनको देख कर भयभीत हुआ कि कहीं लुटेरे न हों और मेरे गधोंको छीनलेजावें और मुझे मारडालें इससे भयवान् होके भागनेलगा परन्तु सवार पास ही पहुँचगयेथे इससे वह बनसे निकलकर न जासका इसलिये उसने जल्दी में गधोंको एक ओर हांकदिया और आप एक सघन बृक्षपर अपनेको छिपानेके लिये चढ़गया और ऐसे स्थानपर बैठा कि उस को वहां से सब कुछ दीखे और वह किसीको दृष्टि न पड़े वह बृक्ष एक पहाड़से लगाहुआथा परन्तु वह पर्वत बहुत ऊंचाथा वह सवार कि अत्यन्त बलवान् और चालाकथे उस पर्वतके नीचे पहुँचकर अपने अपने बाहनोंसे उतरे अलीबाबाने उनको भलीभांति देख मालूम किया कि वह निस्सन्देह लुटेरेहैं किसी बिदेशियों के समूहको अभी लूटकर उनकी बस्तु लायेहैं किसी अच्छे स्थानपर रक्षापूर्बक रक्खेंगे सो वैसाही हुआ उन चालीसों ठगों ने उसी बृक्षके समीप पहुँचकर घोड़ोंकी लगामें उतारडालीं और उनको बागडोर से बांध खुरजियां जिनमें सोना रूपाथा उतारीं फिर अलीबाबाने क्या देखा कि सब के आगे उनका सरदार अपने बोझको कांधेपर रक्खे हुये उसी बृक्ष के नीचे आया और कांटे और झाड़ियोंसे होताहुआ एक स्थान पर खड़ा होकर कहनेलगा (खुल अय समसम) इस बचन के कहतेही वहां एक किवाड़ खुलगया जब सब उसके साथ उस किवाड़के भीतर जाचुके तब वह आपभी उसी दरवाज़ेमें चलागया अलीबाबा लाचारी से उसी बृक्षपर छिपा बैठारहा इस भयसे कि वह ठग कहीं निकल न आवें और मुझे मारडालें और कभी यह बिचारता कि चुपकेसे नीचे उतर उनके एक घोड़ेपर सवारहूं और एकपर सब लगामोंको लाद अपने आगे गधोंकोकर नगरमें चला जाऊं इतने में वही दरवाज़ा खुलगया और वह चालीसों ठग वहां से निकले उनका सरदार पहिले आप निकला और दरवाज़े के पास खड़ाहो आप देखाकिया फिर उस के साथी वहां से निकले अलीबाबाने फिर सुना कि वह सरदार कहताहै (बन्दहो समसम) इस बातके कहते ही वह किवाड़ मुँदगया सब अपने अपने घोड़ों

को लगाम दे सवार हुये जब सरदारने देखा कि सब चलनेको तै
यार हैं तब वह सब के आगे होलिया और जिस ओरसे वह आये
थे उसी ओर चले गये अलीबाबा उनके जानेके उपरान्त कई क्षण
उस बृक्ष पर से न उतरा और यह सोचा कि ऐसा न हो कि वह
फिर आवें और मुझे देखलेवें जब वह दूर निकल गये और दृष्टिसे
लोप होगये तब उसने बृक्षसे उतर परीक्षाकी इच्छाकी कि मैंभी वही
शब्द पढ़कर देखूं कि वह किवाड़ खुलता है वा नहीं अथवा बन्द
होताहै वा नहीं सो उस द्वार के पास पहुँच उसने कहा (खुल अय
समसम) इस बचन के कहतेही वह खुलगया और उसमें जाकर क्या
देखा कि वह बड़ी विशाल और स्वच्छ कन्दरा है इससे वह अत्यन्त
आश्चर्य में हुआ कि ऐसा मन्दिर पहाड़को खोदकर क्योंकर ब-
नाया परन्तु छत उसकी एक मनुष्यकी उँचाई के बराबरथी और
पर्बत के शिखर से रौशनदानों के द्वारा उस कन्दरा में प्रकाश पहुँ-
चता था तो उसने उजियाले में देखा कि बहुतसी बस्तु धरी हैं और
हरएक भांतिकी माल की गठरियां रक्खी हैं और नीचे ऊपर भारी
भारी कमखाब चिकन आदिके थान ढेर पड़े हैं इसके बिशेष असंख्य
द्रब्य है कुछ तो ढेरों रक्खा है और कुछ बड़े बड़े चमड़ेकी बड़ी
बड़ी थैलियोंमें सीकर रक्खा है इतनी बस्तु और द्रब्य देख उसने
सोचा कि यह कन्दरा थोड़े बर्षोंसे नहीं भरी किन्तु सैकड़ों बर्षोंसे
ठगोंने इस बस्तुको लूट कर यहां इकट्ठा किया है फिर दरवाज़ा
आपही आप बन्द होगया अलीबाबा उसके बन्द होनेसे न डरा
क्योंकि उसे उसके खोलनेकाभी मन्त्र यादथा फिर वह इतनी अश-
रफ़ी उस कन्दरा से बाहर निकाललाया कि उसके गधे उठासकें
और गधाको एक ओर कर उनपर थैलियां अशरफ़ियोंकी लादीं
और ऊपरसे थोड़ा सा काष्ठ रख उसे चहुँओरसे छिपालिया जिससे
लकड़ियोंका गट्ठा जानपड़े जब वह लादचुका तो कहनेलगा (बन्दहो
अय समसम) यह कहतेही वह दरवाज़ा बन्द होगया और उस
दरवाज़ेका यह प्रभावथा कि जब कोई उसके भीतर जाता तो वह
आपसे बन्द होजाता और जबतक कोई (खुल अय समसम)

उच्चारण न करता कभीभी वह न खुलता अलीबाबा गधोंको आगेकर नगरको चला जब वह भीतर पहुँचा तो उन गधोंको अपने घरके भीतर लेगया और बाहरका किवाड़मूंद ऊपरकी लकड़ियां उतार और अशरफ़ियों की थैलियां उतार उतार अपनी स्त्रीके सन्मुख लेगया उसकी स्त्रीने टटोलके देखा कि उनमें अशरफ़ियां भरी हैं समझी कि उसका पति कहींसे चुराकर लाया है तो अपने भर्त्ताको दुर्बचनदे कहनेलगी तुझे यह कर्म उचित न था उसने कहा मैंने चोरी नहीं की मैं इस बृत्तान्तको तुझसे कहताहूं तू मेरे भाग्यके उदय होनेका हाल सुनकर हर्षित होगी फिर उसने थैलियों मेंसे अशरफ़ियां निकाल उसके आगे ढेर करदीं जिसके देखनेसे उसकी स्त्रीके नेत्र चौंधियाने लगे और उस हालको सुन अत्यन्त प्रसन्न हुई और उनको गिननेलगी अलीबाबाने कहा तुम क्या बेसमझ हो कहांतक गिनोगी अब मैं इसको गढ़ा खोद गाड़देताहूं उसकी स्त्रीने कहा बहुत अच्छा परन्तु मैं इनका अनुमान करना चाहतीहूं कि यह सब कितनी हैं अलीबाबाने कहा बहुत अच्छा परन्तु चैतन्यरह कि यह भेद खुलने न पावे सो उसकी स्त्री तराज़ू लेनेको क़ासिम के घरमें गई परन्तु क़ासिम को घरमें न पाया उसने उस की स्त्री से कहा अपनी तराज़ू एकक्षण के लिये मुझे दे उसने पूछा बड़ी चाहिये अथवा छोटी उसने कहा मुझे छोटीसी तराज़ू चाहिये उसकी जिठानी ने कहा ज़रा ठहरजा मैं ढूंढ़ कर लाती हूं इस बहाने वह दृष्टिकी ओट होकर तराज़ूके पलड़ो के ऊपर मोम और चरबी लपेटकर लाई कि मालूम करे कि कौन सी वस्तु अलीबाबाकी स्त्री तौलेगी कि चिकनाई से उसमें निस्सन्देह कुछ न कुछ लगरहेगा निदान अलीबाबाकी स्त्रीने उस तराज़ू को अपने घर लेजाके सम्पूर्ण ढेर अशरफ़ियोंका तौला और अली- बाबा गढ़ा खोदनेलगा निदान दोनों स्त्री पुरुषोंने मिलके उन अश- रफ़ियोंको गढ़े में गाड़दिया और अलीबाबाकी स्त्री क़ासिमकी स्त्री को तराज़ू देनेआई और जल्दीमें कुछ बिचार न किया एक अश- रफ़ी चर्बी की लससे उस तराज़ू में लगगईथी क़ासिमकी स्त्री वह

अशरफ़ी लगीहुई देख डाहकी अग्निसे जलनेलगी और समझी कि इस तराज़ूमें अशरफ़ियां तुलीहैं इससे अति आश्चर्य में हुई और सोचनेलगी कि अलीबाबा जो अत्यन्त निर्धन और दरिद्री था इतनी अशरफ़ियां कहांसे पाईं जिनको उसने तराज़ूपर तौला क़ासिम अलीबाबा का भाई सायङ्कालको जब अपने घरमें आया उसकी स्त्रीने कहा तू अपनेको बड़ा भाग्यवान् और धनवान् समझताहै परन्तु तुझसे तेरा भाई बड़ा धनवान्है उसकी स्त्रीने अशरफ़ियोंको आधिक्यतासे तौलकर रक्खाहै तू गिनकर रक्खा करता है क़ासिमने पूछा तुम क्योंकर जानतीहो उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया और वह अशरफ़ी जिसपर किसी प्राचीन बादशाह का सिक्काथा उसे दिखाई क़ासिमको रात्रिभर ईर्षासे निद्रा न आई भोर को उठकर अपने भाईके पास गया और उससे कहा भाई प्रकट में तुम अत्यन्त धनहीन जानपड़तेहो परन्तु तुम्हारे पास बहुत सा धनहै और इतनी अशरफ़ियांहैं कि तुम उनको तराज़ू में तौलतेहो अलीबाबाने कहा मैं तुम्हारे अभिप्रायको नहीं समझता उसे बिस्तारपूर्बक बर्णन करो क़ासिमने कहा अब तुम मुझे मत भुलाओ फिर उसने वह अशरफ़ी जो उसकी स्त्रीने दीथी अलीबाबाको दिखाई और कहनेलगा कि इस प्रकार की लाखों अशरफ़ियां तुम्हारे पासहैं मेरी स्त्रीने इसे तराज़ूमें पायाथा अलीबाबाने यह बृत्तान्त सुन जाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेदको जानगये अब इनसे छिपानेमें बैर होगा लाचारीसे उनसे ठगोंका बृत्तान्त कह सुनाया उसने यह सुन अलीबाबासे कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ियोंका हाल कोतवालसे जाकर कहदूंगा ब्यर्थमें तुम्हारी अशरफ़ियां जावेंगी और तुम क़ैद होजाओगे अलीबाबाने भयभीत होकर सब हाल उससे कह दिया और वह मन्त्र भी उसे बतादिये क़ासिम सब बातोंको सीखकर दूसरे दिन प्रभात को दश खच्चर अपने साथ लिये उसी ओरको जिधर अलीबाबाने बतायाथा सिधारा जब उस पर्बत और बृक्षके पास जिसपर अलीबाबा छिपा था पहुँचा तो उसे दरवाजा दीखा उसने कहा (खुल अय

समसम) उसके कहनेसे वह दरवाज़ा खुलगया और क़ासिम उस के भीतर गया वहां उसने बहुत सी वस्तु देखीं कि चारोंओर पटी पड़ीहैं फिर वह दरवाज़ा उसके भीतर जाने के उपरान्त बन्द होगया वह उस कन्दरा में चहुँओर फिरा किया और भांति २ की बस्तु और ख़ज़ाने देखतारहा निदान दश खच्चरों के बराबर अशरफ़ियों की थैलियां भरके द्वारके पास लाया और चाहा कि दरवाज़ेको खोल अशरफ़ियोंको खच्चरोंपर लादें परन्तु (समसम) अर्थात् तिलिस्मका शब्द भूलकर कहनेलगा कि (अपनबारले) तात्पर्य खोल हे जौ ! जब वह दरवाज़ा न खुला इस बात से वह अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और पारी २ से हर अनाज का नाम सिवाय (समसम) को पुकारा परन्तु वह किवाड़ न खुला (समसम) का शब्द उसे ऐसा भूला मानो उसने कभी इस शब्द को न सुनाथा निदान वह उन अशरफ़ियोंको ढेर करके अचम्भेमें उस कन्दरामें कभी आगे बढ़ता था और कभी पीछे को हटता और पहिले कि उसे उस असंख्य द्रव्यके देखनेसे खुशी हुईथी अब वही दुःख की हेतुहुई किन्तु वह अपने प्राणसे निराश हुआ अकस्मात् मध्याह्न के समय वे ठग वहां पर आये और दूरसे उस स्थानपर खच्चरों को देख अचम्भेमें हुये कि इनको कौन यहां लाया जब पास पहुँचे तो खच्चरोंके पीछे दौड़े प्रयोजन उनका यह था कि मालूम करें कि उन को यहां कौन लाया फिर सरदार अपने साथियों समेत घोड़ेसे उतर द्वारकी ओर चला और वहां पहुँच उसने वह मन्त्र पढ़ा कि वह किवाड़ खुलगया क़ासिम घोड़ोंकी टापें सुनतेही धरतीपर गिरपड़ा और उसको निश्चय हुआ कि यह वही ठगहैं अब मैं निस्सन्देह माराजाऊंगा तौ भी सँभल बैठा कि दरवाज़ेके खुलतेही निकल कर भागे उसके दौड़ने से ठगोंका सरदार जो आगेथा किसी सदमे से गिरपड़ा सो किसी सवारने क़ासिमको देखतेही खड्ग ऐसा मारा कि वह दो टूक होगया फिर वह सवार सब भीतर गये और वह अशरफ़ियां जो क़ासिमने लेजानेके लिये द्वारेके पास रक्खीथीं भीतर लेजाकर कोष में रखदीं और घबराहटमें उन थैलियोंके न होनेसे जो अलीबाबा

लेगयाथा कुछ ध्यान न किया सबके सब इसी चिन्ता में पड़े कि यह मनुष्य किधरसे आया रौशनदानोंसे तो कोई नहीं आसक्ता क्योंकि इतने ऊंचे पहाड़ पर क्योंकर चढ़सक्ता यदि द्वार से आता तो अवश्य था कि उसे खोलने और बन्द करनेका मन्त्र मालूम होता फिर उन्होंने क़ासिमकी लोथ के चार टुकड़े किये और कन्दराके बाहर उन्हों ने बाईं ओर दो टुकड़े और दाहिनी ओर दो रक्खे कि औरोंको वह लाश देखकर उपदेश हो और गुफामें जानेकी इच्छा न करें फिर वह कन्दरा का द्वार मूंद घोड़ों पर सवार हो चलेगये जब क़ासिमकी स्त्रीने देखा कि रात्रि होगई और क़ासिम लौटकर घरमें नहीं आया तो घबड़ाकर अलीबाबा के निकट दौड़ीगई और रोकर कहनेलगी भाई! अबतक क़ासिम घरमें नहीं आया तुमको अवश्य मालूम होगा कि वह किस बन में गया है ऐसा न हो जो उसपर कुछ दुःख पड़ाहो अलीबाबा समझा कि कुछ न कुछ विघ्न हुआहै जो क़ासिम वहांसे नहीं आया सो उसकी स्त्री को धैर्य देकर कहा कि क़ासिम अतिचतुर है वह नगरमें से होकर नहीं आवेगा नगर के बाहर से होकर आवेगा इसीलिये उसे बिलम्ब हुआ इस बातके सुनतेही उसकी स्त्रीको कुछ धैर्य हुआ और अपने घरमें आई जब आधी रात बीती तो अपने पतिके लिये अधिक व्याकुल हुई परन्तु भयसे चिल्ला नहीं सक्तीथी कि उसके पड़ोसी उस भेदको जान न लें अपने मनहीमनमें रुदन करती और धिक्कार देतीथी कि क्यों मैंने इस भेदको कहा और अलीबाबासे ईर्षा ठानी निदान वह रात्रि उसे रोते कटी जब प्रभात हुआ तो अलीबाबा के पास दौड़ी गई अलीबाबा अपनी भाभी को धैर्य दे तुरन्त अपने गधों समेत उसी बनको सिधारा जब उस पर्वतके नीचे पहुँचा तो वहां रुधिर बहा देख आश्चर्यमें हुआ न तो उसने अपने भाई को देखा और न दश खच्चरोंको इससे अति आश्चर्यमें हो सोचने लगा कि यह कुछ बुरा शकुन मालूम होताहै फिर उसने उसी मन्त्रका उच्चारण किया तुरन्त वह दरवाज़ा खुलगया तो वहां दरवाज़ेके दाहिने बायें अपने भाईकी लोथको टुकड़े टुकड़े हुआ देख अत्यन्त भयभीत

हुआ उसने अपने भाईकी लोथको चादरमें बांध एक गधे पर लादा और उसको काष्ठसे चहुँओर छिपालिया और दो गधों पर अशरफ़ियों की थैलियां लाद उनपरभी छिपानेके लिये लकड़ियां रक्खीं जब निश्चिन्त हुआ तो उसने द्वारको उसी मन्त्रसे मूंददिया और नगरको सिधारा और बड़ी रक्षासे अपने घरमें पहुँचा और वह गधे अशरफ़ियोंके लदेहुये घरमें लेजाकर अपनी स्त्री से कहा कि यह अशरफ़ियां उतारले परन्तु उससे कुछभी क़ासिमके मारेजाने का वृत्तान्त न कहा और उसी गधे के सहित जिसपर क़ासिम की लोथथी क़ासिमके घरमें आया और दरवाज़े पर हांकदी मरजीना नामक एक लौंड़ीने जो अत्यन्त चतुर और समझदारथी आकर किवाड़ खोला अलीबाबा उस गधेको महलके भीतर लेगया और क़ासिमकी लोथको उतार मरजीना से कहा हे मरजीना! शीघ्र तू इस लोथ के गाड़नेका उपाय कर मैं अभी अपनी भावज को एक बात कहके तेरा साथ देताहूं क़ासिमकी स्त्रीने अलीबाबाको दूर से देख पूछा हे अलीबाबा! मेरे पतिको क्या समाचार लाये परन्तु खेद है कि मैं तेरे मुखसे दुःख के चिह्न पाती हूं अलीबाबाने उससे उसके पतिका ठगोंके हाथसे मारेजाने और उसकी लोथके लानेका वृत्तान्त वर्णन किया और कहा हे सुन्दरी! अब जो कुछ होनाथा वह हुआ परन्तु यह भेद छिपारखना उचित है जिससे हमारे प्राण बचें इतना कह फिर अलीबाबाने अपनी भावजसे कहा कि ईश्वर की इच्छा में किसीका उपाय नहीं चलता अब सन्तोष रक्खो अब तुम को उचित है कि शोकके दिन पूर्ण होनेके उपरान्त मुझसे बिवाह करलो अति आनन्दमें रहोगी मेरी स्त्री अतिसुशीलहै तुमसे वह बैर न करेगी क़ासिमकी स्त्रीने रोकर कहा मैं तुम्हारी इच्छा से बाहर नहीं फिर उसने पतिके लिये महाबिलाप किया और शिरके बाल नोचे अलीबाबाने उसे वहीं छोड़ मरजीना से आकर अपने भाईके कफ़नके लिये बातचीतकी जो कुछ समयके अनुकूलथा उस बांदी से कहकर गधोंसमेत अपने घरमें आया अलीबाबाके जानेके उपरान्त मरजीना अत्तार की दूकान पर गई और उस भेद के

छिपानेके लिये ऐसी औषध मांगी जिसे मरणप्रायके समय बीमारको देते हैं अत्तारने औषध देकर उससे पूछा तेरे घरमें कौन ऐसा बीमार है उसने रोकर कहा मेरा स्वामी क़ासिम बहुत बीमार होगया है न तो कुछ खाता है और न कुछ बात करता है इसलिये सब उसके जीने से निराश हैं दूसरे दिन मरजीना फिर उसी दूकानपर गई और उससे वह औषध और सुगन्ध मांगी जो अन्तसमयमें रोगी को देते हैं कि उस औषधके प्रभावसे कुछ बीमारको आराम होता है जब अत्तारने उसे वह औषध दी तो मरजीना उसे लेकर रोई और हाहाखाय कहनेलगी मैं नहीं जानती कि औषधके खानेकोभी अवसर मिले वा न मिले अथवा मेरे जातेहीजाते देहान्त होजावे इस तरफ़ तो अलीबाबा बाट देखताथा कि जिस समय रोने पीटने का शब्द क़ासिमके घरसे सुने तो शीघ्र जाके शोककरे दूसरे दिन प्रभात को मरजीना मुँहअँधेरे एक बूढ़े दरज़ीके पास जिसका नाम मुस्तफ़ाथा गई वह दरज़ी बहुधा कफ़न सिया करताथा सो उसी समय उसने दूकान खोलीथी मरजीनाने एक अशरफ़ी उसको दी और कहा अपने नेत्रों में पट्टी बांधकर मेरे घरतक चलो मुस्तफ़ाने कहा मैं इस तरह नहीं चलूंगा मरजीनाने एक और अशरफ़ी उसके हाथमें रखके बहुतसी बिनतीकी यहांतक कि वह दरज़ी अशरफ़ियों के लोभ से चलनेके लिये राज़ी हुआ फिर मरजीना उसके नेत्रोंपर रूमाल बांध और हाथ उसका पकड़ उसी मकान में जहां उसके स्वामीकी लाश पड़ीहुईथी लेगई और क़ासिमकी लोथको क्रम से रख और उसपर चादर डाल अँधेरी कोठरी में मुस्तफ़ाकी आंखें खोलदीं और कहा तुम इस लोथ के बराबर कफ़न सीकर तैयार करदो तुमको एक अशरफ़ी और दूंगी जब मुस्तफ़ाने सीकर तैयार करदिया तब मरजीनाने तीसरी अशरफ़ीभी उसे देडाली और फिर उसकी आखों में पट्टी बांधकर उस कोठेसे हाथ पकड़ लेआई जहां पहिले उसने उसकी आंखों पर रूमाल बांधा था और उसको बिदा कर अपने घरमें लौट आई और जल गरमकर उसने और अलीबाबाने मिलकर कासिमकी लोथको स्नान कराया और उसको

कफ़ना कर स्वच्छ स्थानपर रक्खा मरजीना एक मसजिदके इमामके पास गई और उससे कहा एक अरथी तैयार है चलके उसपर निमाज़ पढ़ो और उसको फ़लाने क़बरिस्तान पर लेजाकर गाड़दो उस मसजिद के इमाम और वहांके रहनेवाले जिनका यही काम था उसके साथ आये और चार मनुष्य उसके पड़ोसी उसके जनाज़ेको अपने कांधे पर उठा उसे निमाज़ पढ़नेके स्थान पर लेगये निमाज़ पढ़नेके उपरान्त और चार मनुष्य अरथीको क़बरिस्तानसे लेचले मरजीना जनाज़ेके आगे शिरनंगी रोती पीटती विलाप करती चली यहांतक कि अलीबाबा पड़ोसियों के साथ जनाज़ा लेकर क़बरिस्तान में आया और उसको गाड़ अपने भ्राताके शोकमें चालीस दिन तक बैठारहा और नगरकी रीति के अनुसार महल्ले के घरकी स्त्रियां घड़ीभर के वास्ते एकत्रहो क़ासिमकी स्त्री के साथ रोईं और उसको धैर्य दे चलीगईं और अलीबाबा और उसकी स्त्री और क़ासिम की स्त्रीके विशेष नगरका कोई मनुष्य इस भेदको न जानता था चालीस दिन के उपरान्त अलीबाबाने क़ासिमकी स्त्री के साथ विवाह किया अलीबाबा का एक पुत्र था वह किसी बड़े व्यापारी के साथ रहाकरता था और व्यापार के कार्य को भलीभांति जानता सो उसके पिताने क़ासिमकी दूकान उसे सौंपी सो वह दूकानपर बैठने लगा॥

अब उन्हीं चालीसों ठगोंका वृत्तान्त वर्णन किया जाताहै॥

एक दिन वह ठग अपनी कन्दरा में आये और वहां क़ासिमकी लोथका कुछभी चिह्न न पाकर अत्यन्त आश्चर्यमें हुये इसके सिवाय देखा कि उस ख़ज़ाने से बहुतसी अशरफ़ियांभी निकल गई हैं उनके सरदारने कहा यदि इस बातका खोज नहीं करते तो आगे को हमें अधिक दुःख होगा और सिवाय इसके धीरे धीरे यह सम्पूर्ण द्रव्य जो हमने और हमारे पुरुषोंने बड़े श्रमसे बहुकालमें सञ्चय किया है नष्ट होजावेगा फिर सबोंने सोचा कि इसमें सन्देह नहीं कि वह मनुष्य जिसे हमने वध किया दरवाज़ेके खोलने और बन्द करनेके मन्त्र को जानताथा इसके विशेष कोई और मनुष्यभी इस भेदको

जानता है जो दरवाज़ा खोलकर बहुतसा धन और मुर्दे को उठाले-गया अवश्यहै कि हममें से एकमनुष्य अतिचतुर और प्रवीण नगर में बिदेशी के वेषसे जावे गली गली महल्ला महल्ला फिरके मालूम करे कि कौन मनुष्य नगरमें इन दिनों मराहै और वह कहां रहताहै जब इतना मालूम होगा तो उस समय कोई और यत्न किया जावेगा उनमेंसे एक ठगने कहा मैं इस कार्य के निमित्त नगर में जाताहूं या तो उस मनुष्य का ठिकाना मालूम कर तुमसे कहूंगा या अपने प्राण दे डालूंगा निदान वह ठग रात्रिको नगर में आया और भोरको चौकमें गया तो मुस्तफ़ाकी दूकानके सिवाय सब दूकानें बन्द पाईं वह दरज़ी अपनी दूकान में अपना काम हाथमें लियेहुये मोढ़ेपर बैठा हुआ था इसने जाके उसे प्रणाम किया और कहा अभी अँधि-याराहै तुम इस समय अपना कार्य क्योंकर कर सक्ते हो मुस्तफ़ाने कहा जानपड़ता है कि तुम बिदेशी हो इस बुढ़ापे के व्यापने पर भी मेरी दृष्टि अबतक ऐसी तीव्रहै कि अभी कलके दिन अँधियारे घर में एक लोथ का कफ़न सिया यह बात सुनकर ठग अपने मन में समझा कि इस बृद्धका उत्तर मेरी अभिलाषाके अनुकूल है फिर इस भेदके अधिक खुलने के लिये कहा कि मालूम होता है कि तुम कफ़न सिया करतेहो मुस्तफ़ाने कहा जो कुछ कि हो मुझसे कुछ और अधिक मत पूछो ठगने एक अशरफ़ी उसी दरज़ीके हाथमें रखके कहा मैं कोई भेद तुमसे नहीं पूछता केवल इतनाही चाहताहूं कि मुझे पतेसे या अपने साथ लेजाकर उस घरको बतादो जिसमें तुम कफ़न सीनेको गये थे मुस्तफ़ाने लालचके बश कहा उस घरको तो मैंने अपनी आंखोंसे नहीं देखा मुझे एक स्त्री एक महल में लेगई थी उसे मैं निस्सन्देह जानता हूं वह मेरे नेत्रों में पट्टी बांध एक घर में लेगई और एक अँधियारे मकान में मेरी आंखें खोलकर मुझे वह लोथ दिखलाई और उसका कफ़न सिलवाया फिर मेरे नेत्रों में पट्टी बांध उसी स्थानमें जहां से कि लेगई लाकर छोड़गई और पट्टी खोलदी भला मैं क्योंकर तुझे उस मकानको दिखाऊं ठग ने कहा मुझे वहां लेचल जहांसे तेरी आंखें बन्दकी थीं कि मैं तेरी आंखों को

रूमाल से बांधूं और तेरे साथ रहूं तू उसी विचारसे चलियो जैसा कि पहिले पट्टी बांधकर चला था शायद इस उपायसे ही मुझे वह घर मालूम होजावे यदि आप मुझपर इतनी दया करोगे तो मैं एक अशरफ़ी और तुम्हारी भेंट करूंगा इतना कह एक अशरफ़ी और मुस्तफ़ाके हाथमें धरदी मुस्तफ़ाने उन दोनों अशरफ़ियोंको जेबमें रख ठगसे उसी प्रकार से जानेकी प्रतिज्ञा की फिर उसने अपनी दूकान इसी भांति खुली छोड़ी और उसको उस जगहपर लाकर कहा यह स्थान वहीहै जहांसे मुझे वह स्त्री आंखें बन्दकरके लेगई थी ठग ने रूमाल उसकी आंखों में बांधा और उसके साथ सिधारा मुस्तफ़ा उसीभांति उस ओरको चला जिधर पहिले मरजीनाके साथ गया था और इतनाही चलकर खड़ा होगया कि यहींतक पहिलेभी आया था उस ठगने शीघ्र एक चिह्न खड़ियाका उसपर करदिया और मुस्तफ़ा की आंखें खोल पूछा यह किसका घरहै उसने कहा मैं नहीं जानता मैं इस महल्लेके लोगोंको नहीं जानता ठगने जाना कि इससे अधिक मुस्तफ़ासे हाल मालूम नहीं होसक्ता तो मुस्तफ़ाका अतिगुण मान कर कहा तुमने मेरे लिये अतिपरिश्रम किया फिर वह ठग उससे बिदा हो बनको गया और मुस्तफ़ा अपनी दूकान पर आया उसी समय मरजीना अपने घरसे बाहर किसी कामके लिये गईथी जब वह अपने घर पहुँची तो दरवाज़े पर चिह्न देख आश्चर्य में खड़ीरहके सोची कि मेरे स्वामीको किसी वैरीने पहिचानने के लिये यह निशान किया न जानिये क्या उपाधि मचे सो उसने महल्लेभरके पड़ोसियों के दरवाज़ोंपर वही निशान खड़ियाके करदिये और यह भेद किसी से न कहा वह ठग अपने समूहमें गया और सम्पूर्ण वृत्तान्त सरदार से वर्णन किया वह सबलोग पृथक्२ होकर सरदारसमेत उस नगर में आये और जब वह मनुष्य जो अलीबाबा के घरपर निशानकर गया था अपने सरदारको पहिचनवानेके वास्ते लाया तो पहिले सरदारने एक दरवाज़े पर खड़ियाका निशान पाया इससे वह समझा कि यह घर उसी मनुष्यका है जिसको हम ढूंढ़ते हैं फिर जब उसकी दृष्टि दूसरे और तीसरे किन्तु महल्लेभरके दरवाज़ों पर पड़ी

तो वही ठीक चिह्न सब द्वारोंमें पाकर आश्चर्यमें हुआ कि हम क्योंकर उस घरको मालूम करें वह पहिला ठग इस हाल से अत्यन्त लज्जित हुआ और उसको उत्तर देते न बनिआया निदान सौगन्द खाके अपने सरदारसे कहा कि मैंने उसी एक दरवाज़े पर निशान किया था परन्तु मैं नहीं जानता कि क्योंकर और दरवाज़ोंपर एकर चिह्न बनाहुआ है इससे उस दरवाज़े को भलीभांति नहीं पहिचान सक्के फिर वह सरदार वहांसे चौकमें आया और अपने साथियों से जो वहां मिलतेगये कहनेलगा हमारा परिश्रम व्यर्थ गया और वह द्वार न पासके इस वृत्तान्तको अपने सब साथियों से कहदेना अब मैं बनमें जाताहूं जो उसे मिलेथे अपने सरदारके साथ उसी कन्दरा की ओर लौटगये जब सब ठग वहां एकत्रहुये सरदारने उस ठग को जो निशान कर आया था और उसकी बात झूठ हुई थी सब के सामने दण्ड दिया और सबसे कहा जो तुम सब में से नगरमें जाकर मेरे चोरका ठीक पता लगाकर लावे और मुझ से आकर कहेगा मैं उसके साथ बड़ा उपकार करूंगा यह सुन उनमें से एक मनुष्यने उस समूहमेंसे निकलकर कहा मैं नगरको जाताहूं और उसका घर मालूम कर उसका समाचार लाय तुमको देता हूं सरदारने उसे पारितोषिकादि देकर बिदा किया वहभी पहिले मुस्तफ़ा दरज़ी के पास आया और पहिले ठगकी सदृश दरज़ीको अशरफ़ियां दे उसे राज़ी किया और नेत्रोंमें पट्टी बांध अलीबाबाके घरतक लेगया और उसके द्वारपर लाल चिह्न किया क्योंकि श्वेत चिह्नोंमें लाल चिह्नवाला घर प्रतीत होसक्का है उसके चलेजाने के उपरान्त मरजीना लाल देख सोचित हुई और उसने वैसाही चिह्न और दरवाज़ों पर भी करदिया और चुपकी होरही उस ठगने अपने समूहमें अपने सरदार से कहा मैं द्वारे पर चिह्न करआयाहूं अब वह दरवाज़ा औरोंसे स्पष्ट प्रतीत होताहै वह सरदार कई ठगोंसहित वहां आया तो उसने पूर्ववत् सब द्वारों के एकसे चिह्न पाये इससे खिसियाना हुआ और अपने घरको लौटकर उस दूसरे ठगकोभी यथोचित दण्डदिया फिर सोचनेलगा कि दो मनुष्यों से चूक भई और दण्ड पाया निश्चयहै

कि अब कोई मनुष्य इस काममें पग न डालेगा इससे उत्तम है कि आप नगर में अकेले जाके बैरीका घर मालूम करूं फिर आपही अकेला नगरमें आके उसी दरज़ी के बतानेसे जिसको बहुत कुछ दियाथा अलीबाबाके घरतक पहुँचा उसपर कोई चिह्न न किया किन्तु दोबेर भीतर बाहरसे उस द्वारेको देख और उसके निशानों को भलीभांति ध्यानमें रख फिर बनमें गया और अपने समूहसे कहा मैं उसको भलेप्रकार देख आयाहूं उसके पहिचानने में अब धोखा न पड़ेगा परन्तु तुम एक काम करो कि उन्नीस खच्चर मोल लो और एक कुप्पा तेलका और सैंतीस कुप्पे ख़ाली इकट्ठे करो कि हरएक कुप्पे में एक मनुष्य तुम में से मेरे और उन कैदी दो मनुष्यों के सिवाय शस्त्रसहित बैठें और दो कुप्पे एक खच्चरपर लादे जावें उन्नीसवें खच्चरपर एक मनुष्य और दूसरी ओर उसके कुप्पा तेल का रक्खाजावे और हम भठियारों के बेषमें नगरके भीतर खच्चरों समेत जावें और रात्रिको उसी दरवाज़ेपर पहुँच उसके धनी से रात्रिके रहने के लिये कहें फिर वहां रहकर रात्रिको सब मनुष्य कुप्पों में से निकलकर उसे मारडालें और जितना कि द्रव्य वह यहां से उठाकर लेगया है उन खच्चरों पर लादकर लेआवें यह मत सब ने माना और गांवमें जाकर खच्चर और कुप्पे मोल लाये और जिस भांति उसने कहाथा एक एक ठग उस कुप्पे में बैठा और कुप्पों के ऊपर तेल मल दिया कि सब कुप्पे तेलके कुप्पे दिखलाई देवें फिर उस सरदारने अपना बेष तेल बेंचनवालोंका बनाया और उन्नीस खच्चरोंपर सैंतीस कुप्पे जिनमें एक एक ठगको बैठाया था और तेल का कुप्पा लादके नगर में ऐसे समय लाया कि अलीबाबाके घर सन्ध्याको पहुँचा संयोगबश उस समय अलीबाबा भोजनकर अपने दरवाज़े पर टहलताथा सो ठगों के सरदारने उसे दण्डवत् करके कहा मैं अमुक गांवका रहनेवाला हूं और तेलका बहुधा ब्यापार करताहूं परन्तु आज सन्ध्या होगई इसलिये शोचित हूं कि रात कहां विताऊं जो आप कृपाकर मुझे खच्चरों सहित अपने घरमें जगह दें तो मैं कुप्पे उतारूं और घोड़ों का दाना घास करूं अलीबाबा उस

दुष्ट का शब्द पहिचानकर भी कि वह उसने बृक्षपर से कन्दरा के भीतरसे सुना था उसे भठियारेके स्वरूपमें देख पहिचान न सका कि वह ठगों का सरदारहै सुशीलतासे उसकी बातको स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा आजकी रात्रि मेरे घरमें रहो कि एक बिशाल कोठा ख़ाली करके उसे बतला दिया कि इसके भीतर तुम उतरो और अपने खच्चरोंको बांधो और एक सेवकको दाने घासके लिये नियत किया और मरजीनासे कहा एक मेहमान मेरे घरमें आया है उसके लिये जल्दी भोजन बना और स्वच्छ शय्या बिछाकर तैयार रख जब ठगों का सरदार कुप्पे उतारचुका तो अलीबाबाने उसका बड़ा सन्मान किया और उसके सन्मुख मरजीना को बुलाके आज्ञा दी कि मेरे मेहमानकी बड़ी सेवा कीजियो जिससे कि उसे किसी प्रकार का परिश्रम न पड़े और भोरको मैं हम्माम करूंगा गर्म जल तैयार रखियो और एक जोड़ा बस्त्रका निकाल अब्दुल्ला नौकरको दे कि उसे स्नान के उपरान्त मैं पहनूंगा और मेरे पीने के लिये भोरके वास्ते शोरुवा रातहीको तैयार रखियो मरजीनाने कहा बहुत अच्छा जिस२ कामकी आपने आज्ञा दी है उसे मैं समयपर करूंगी अली-बाबा यह आज्ञा मरजीनाको दे अपने सोनेकी जगह में जाय सोरहा और ठगों का सरदार भोजन करने के उपरान्त अश्वशाला में गया और खच्चरों और साथियोंको भोजन खिलाया फिर हरएक कुप्पेके पास जिसमें मनुष्य थे गया और धीरे से अपने साथियोंको समझा बुझाकर कहा आधी रात्रि को जब मैं तुमको बुलाऊं तो तुम तुरन्त कुप्पेको मुँहसे पेंदी तक छुरी से काटकर निकलआना फिर वह सर-दार आज्ञा देकर रसोई के दरवाज़ेसे सोने की जगह में आया मर-जीना दीपक लिये उसके साथ थी उसने उस सरदारसे पूछा कोई वस्तु तुमको और आवश्यक हो तो मुझ से कहो उसने कहा अब मुझे और कुछ नहीं चाहिये यह कह उस दीपकको बुझादिया और शय्यापर जाय लेटा और अपने मनमें कहा एक नींद सोके उठूंगा और अपने साथियोंको अपने कार्य के लिये बुलाऊंगा मरजीना ने स्वामीकी आज्ञानुसार एकजोड़ा सफ़ेद कपड़ोंका निकाल अब्दुल्ला

नौकर को कि वह उस समय तक जागता था दिया फिर उसने शोरुवा पकाने के लिये भाजन चूल्हेपर रक्खा और आंच करदी थोड़ी देर के पश्चात् उसको शोरुवा देखनेके लिये दीपककी आवश्यकता पड़ी अकस्मात् दीपक सब बुझगयेथे और तेल घरमें न था और कोई मोमकी वत्तीभी उस समय उसे न मिली वह दासी दीपक जलानेके लिये अतिशोचित थी अब्दुल्ला सेवकने उसे चिन्तित पाके पूछा तू क्यों इस समय शोचमें है उस मकानमें बहुतसे कुप्पे तेलके रक्खे हैं जितना तुझे चाहिये लेआ यह कहके सेवक तो इस बातको बिचारकर सोरहा कि प्रभातको अपने स्वामीके साथ मुझेभी हम्माम जानाहोगा इस समय अवश्य है कि सोरहूं और मरजीना अकेली तेलका लोटा उठा उस मकान में जहां तेल के कुप्पे बराबर रक्खेथे गई जब वह एक कुप्पे के समीप पहुँची तो उसमें ठग जो अपने सरदारके आगमनकी बाट देखताथा आहट पाके धीरेसे पूछने लगा क्या हमारे निकलनेका समय है मरजीना उसका शब्द सुन यद्यपि उसने बहुत धीरे से पूछाथा भयभीत हुई और उनकी धूर्तता को समझगई और उसके प्रश्नका उत्तर सरदारकी भांति यह दिया कि अभी नहीं अर्थात् अभी तुम्हारे निकलनेका समय नहीं पहुँचा फिर वह दूसरे कुप्पेके पास गई वहांसेभी यही शब्द सुना और उसने वही उत्तर दिया निदान इसीभांति सब कुप्पों पर गई तो सोची हे ईश्वर! सबठगों को मेरे स्वामीने तेल बेंचने वाला समझकर उतारा और यह सब चोर हैं कि लूटनें और उसके बध करने के लिये तेल बेंचने वालेका बेष धरआये हैं निदान मरजीनाने तेलवाले कुप्पेसे कुल्हड़ा तेलका भरलिया और रसोई में जाकर दीपक में तेल डाल उसे जलाया और बड़ी एक देग निकाल उस कुप्पे में से तेल लाकर भलीभांति गर्म किया जब खूब गर्म होगया तब मरजीना उस में से एक देगचीभर एक सिरे से कुप्पों में डालनेलगी वह सब ठग उन्हीं कुप्पों में जलभुन के रहगये और उस चतुर और बुद्धिमान् बांदी के उपायसे झगड़े और शोरके बिना वह सबके सब मरगये फिर मरजीना उस देग समेत रसोई में दरवाजा मूंदके बैठरही और अली-

बाबा के लिये शोरुवा पकाने लगी एक घड़ी न बीतीथी कि ठगों का सरदार जागा और दरवाज़े को खोलकर क्या देखा कि चहुँओर अँधियारा है उसने हांकदी परन्तु वहांसे आवाज़ न आई क्षणभरके उपरान्त उन सबको फिर पुकारा तथापि कोई उत्तर न आया तीसरी बेर फिर बड़ेज़ोर से आवाज़ दी फ़िरभी कुछ न सुना तब व्याकुल हो उसी मकानमें गया जहां वह सब कुप्पे रक्खेहुयेथे उसने बिचारा कि यह सब अचेत सोगयेहैं वहां जाय सबको जगाऊं जब एक कुप्पे के पास गया तो उसमें से जलेहुये मनुष्य की दुर्गन्ध आई और उसे बहुत गर्म पाया इसीभांति सम्पूर्ण कुप्पोंके निकटगया और यही दशा देखी तब आप भी भयसे दीवारपर चढ़ बाग़की ओर कूदपड़ा और वहांसे भागा जब बहुत देर हुई और वह सरदार वहां से न लौटा तो मरजीनाने जाना कि वह दुष्ट पिछवाड़े से कूदभागा क्योंकि बाहर के दरवाज़ेपर दो क़ुफ़ुल लगे हुयेथे फिर मरजीना उन ठगोंसे सुचित्तहो सोरही दो घड़ीके तड़के अलीबाबा उठ हम्माम में गया अबतक उसे रात्रिका समाचार मालूम न हुआ जब अलीबाबाने सूर्योदयके प्रथम हम्माम किया तब उन कुप्पों को अपने घरमें रक्खा देख आश्चर्य्यमें हुआ कि क्या अबतक वह व्यापारी अपनें ख़च्चरोंपर कुप्पे लादकर बाज़ार नहीं लेगया उसने मरजीनासे इसका हेतु पूछा उसने उत्तर दिया कि ईश्वर आपकी १२० बर्षकी आयु करे मैं इस व्यापारीका बृत्तान्त आपसे एकान्त में कहूंगी अलीबाबा उसके साथ एकान्तमें गया मरजीना दरवाज़ेको मूंद उसे एक कुप्पेके निकट लेगई और कहनेलगी कि देखिये इसमें तेलहै जब उसने कुप्पेमें देखा तो उसे मनुष्य दृष्टि पड़ा वह चिल्ला और भयखा भागा उसने कहा तुम इस मनुष्यसे मत डरो यह तुमको कष्ट नहीं देसक्ता यह मरा पड़ाहै अली बाबानेपूछा कि यह मनुष्य क्योंकर मरागया उसने कहा इसहालको आपसे कहूंगी अब चुपके होरहिये कि तुम्हारे पड़ोसी इस भेदको जान न लें अब तुम एक सिरे से दूसरे सिरेतक देखते जाओ उसने एकसिरेसे दूसरे सिरेतक देखा सबको मराहुआ पाया महाआश्चर्यसे कभी मरजीनाको देखता और कदापि कुप्पोंकी ओर दृष्टिकरता फिर मरजीना

से पूछा वह व्यापारी क्या हुआ उसने कहा वह व्यापारी नहीं था उसका हाल भी तुमसे कहूंगी कि वह कौनथा और क्या हुआ अब तुम हम्मामसे आयेहो ईश्वरने कुशल की शोरुवा तैयार है उसको पीजिये उसने कहा इस हालको मुझसे वर्णनकर जिससे मुझको धैर्यहो उसके सुनने के लिये अत्यन्त बिह्वल होरहा हूं सो वह इस प्रकारसे कहनेलगी हे स्वामी! जब आप मुझे शोरुवा पकानेके लिये आज्ञा देकर सोगये मैंने एक वस्त्रोंका जोड़ा निकाल अब्दुल्ला को दिया और शोरुवा पकानेकेलिये चूल्हेमें आंच करती रही जब शोरुवा पकचुका तो उसको साफ़ करने के लिये मैंने चाहा कि दीपक जलाऊं घरमें तेल होचुका था अब्दुल्लाने मुझे चिन्तित पाके कहा कि उस मकान में बहुत से कुप्पे तेल के भरे रक्खे हैं जितना तेल चाहिये जाकर लेआ मैं तेलका पात्र लेकर एक कुप्पे के पास गई उसमें से एक शब्द सुना कि यह समय निकलनेकाहै मैं वह शब्द सुन कुछ न डरी और तुरन्त जानगई कि इस महादुष्ट व्यापारी ने तुम्हारे मारने के लिये यह उपाय किया है मैंने उत्तर दिया कि अभी निकलने का समय नहीं पहुँचा फिर दूसरे कुप्पेके निकटगई वहांभी यही शब्द सुना उसेभी यही उत्तर दिया और इसी भांति पारी २ से सब कुप्पोंके निकट गई और पूर्वोक्त उत्तर देती रही वह सब अपने सरदारकी आज्ञाकी बाट देखतेथे जिसको आपने व्यापारी समझकर अपने घरमें उताराथा और उसका भलीभांति सन्मान किया था वह दुष्ट अपने लोगों को तुम्हारे मारने और घर लूटनेके लिये लायाथा और चाहताथा कि तुमको मारे परन्तु मैंने उसे अवसर न दिया शीघ्रही अन्तके कुप्पेमेंसे तेल भरलाई और दीपक जलाया फिर मैंने रसोईमेंसे एक बड़ा बर्तन तेलसे भर उसे चूल्हेपर रक्खा और उसके नीचे प्रचण्ड अग्नि जलाई जब वह तेल औंट गया तो इतना कि हरएक मरजावे तेल डालतीगई और क्षणमात्रमें उनको मार रसोईमें आई और दीपकको बुझाके खिड़कीमें से देखनेलगी कि देखूं वह दुष्ट व्यापारी अब क्या करताहै कुछ काल के उपरान्त वह जगा और कई बेर उसने अपने साथियोंको बुलाया

जब उसने किसीका शब्द न सुना तो वहांसे नीचे आके उन कुप्पा के पास गया और वह दशा देख मुझे अँधियारेमें मालूम हुआ कि वह किसी ओर को भागकर चलागया जब बहुत काल बीता और वह न फिरा तब मैं समझी कि वह बागसे फाँदकर भागगया फिर मैं सो रही इतना कह मरजीनाने अपने स्वामी से कहा जो कुछ सच २ था मैंने कहसुनाया और दो तीन दिन आगे मुझे इस बात के चिह्न मालूम होगयेथे परन्तु मैंने आपसे नहीं कहा अब वहभी कहतीहूं उसको मन लगाकर सुनिये एक दिन प्रभातको जब मैं बाहरसे घरमें आती थी एक सफ़ेद निशान मैंने अपने दरवाज़ेपर देखा और दूसरे दिन लालचिह्न उस श्वेतचिह्न के पास देखा दोनों बेर मालूम करनेके लिये मैंने अपने सब पड़ोसियोंके किवाड़ों परभी वही निशान करदिये जिसमें हमारा दरवाज़ा प्रतीत न होवे तुम निश्चय समझो कि यह दुष्टता उसी बनके ठगोंकी थी पहिचानने के लिये तुम्हारे द्वारपर निशान करगयेथे परन्तु उन चालीसों में से न जानिये कि दोको क्या हुआ अब उन दो ठगों और सरदार से जो बचकर गयेहैं निश्चिन्त न रहना वह अवश्य तुम्हारे पीछे लगे र-हेंगे और अवसर पाकर निस्सन्देह तुमको बध करडालेंगे और जो कुछ तुम्हारे प्राणकी रक्षाके लिये मुझे बनपड़ा सो मैंने किया और आगेभी यथोचित प्रबन्ध करूंगी अलीबाबा यह बृत्तान्त अपनी लौंड़ीसे सुनकर हर्षित हुआ और कहनेलगा मैं तुझसे बहुत प्र-सन्न हुआ अब जो कुछ तू अपने लिये कहे मैं अपने जीतेजी उसे करदूं मरजीनाने कहा अब पहिले अवश्यहै कि शीघ्र इन लोथोंको अपने बाग़में गाड़दो जिससे किसी को यह भेद मालूम न हो अली-बाबा अपने नौकरोंको अपने साथ ले बाग़में जो बहुत बड़ाथा गया और बृक्षों के नीचे बहुत बड़ा और गहरा गढ़ा खोद उन सम्पूर्ण मुर्दों के शस्त्र छीन और उनको बाग़में लेजाकर गाड़दिया और ऊपरसे पृथ्वी कूटपीट बराबर करदी कि जिससे कुछ चिह्न जान न पड़े और सब कुप्पे और हथियार छिपा कर एक २ दो २ खच्चर अपने सेवकके हाथ बाज़ारमें भिजवाकर बिकवादिये और अली-

बाबा बड़ी होशियारीसे रहता कि उसके धनवान् होनेका किसी को हाल मालूम न होनेपावे और वह ठगों का सरदार भागकर उसी बनमें अत्यन्त बिकलतासे गया और बिचारने लगा कि अब कोई ऐसा यत्न करूं कि उस मनुष्य अर्थात् अलीबाबा को बध करूं नहीं तो इस कोषका सम्पूर्ण द्रव्य निकालकर लेजावेगा अब किसी दूसरे को अपना साथी न करूं अपने आप जिस प्रकारसे होसके अली-बाबाको मारूं फिर अपने मतलबके मित्र रख वही कार्य जो पीढ़ियों से चलाआता है कियाकरूं यह मन में ठान रात्रिको वहीं सोरहा प्रभातको जगकर कोई अपना नवीन बेष किया और वहांसे आ-कर एक सरायमें उतरा और वहां यह सोचा कि इतने मनुष्योंके मरनेका हाल निस्सन्देह बादशाहको पहुँचा होगा और अलीबाबा पकड़ागया होगा और उसके धन और उसके घरकोभी बादशाहने छीनलियाहोगा यह बृत्तान्त निस्सन्देह नगरभरमें बिख्यात होगया होगा सरायवालेसे पूछा यहांके रहनेवालोंका कोई अद्भुत समाचार तुमने सुनाहो तो कहो उसने जो बातें दो तीन दिन के समयान्तर में हुई थीं और उसने देखी और सुनीथीं बर्णनकीं परन्तु उस सर-दारने अपने प्रयोजनकी कोइ बात न सुनीं और समझा कि वह मनुष्य अर्थात् अलीबाबा अत्यन्त बुद्धिमान्है इतनी द्रव्यके ले-जाने और मनुष्यों के मारने परभी अपनी होशियारीसे अबतक बचाहै ऐसा न हो जो तूभी उसके हाथसे माराजावे इस चिन्तापर भी उसने अलीबाबाके धोखा देनेके लिये उत्तम २ बस्तु ब्यापारकी अपने स्थानसे लाकर एकत्र की और चौकमें एक दूकान किराये पर मोल लेकर उस असबाब को लेजाकर उसमें रखदिया और उस दूकानपर बैठ बेंचनेलगा संयोगवश वह दूकान अलीबाबाके पुत्रके सन्मुखथी उस दुष्टने अपना नाम ख़्वाजेहसन बिख्यात किया और दूकानदारों और ब्यापारियोंसे उसने मित्रताकी और हरएक से अच्छा स्वभाव वर्तने लगा बिशेष अलीबाबाके पुत्रसे जो अति तरुण और स्वरूपवान् और सुन्दर बस्त्र पहिनताथा बड़ी मित्रता की और बहुधा उसीके पास उठता बैठता तीन चार दिनके उपरान्त

अलीबाबा जो बहुधा अपने पुत्रके देखनेके लिये दूकानपर आया-जाया करताथा आया वहां ठग ने उसेदेख पहिचाना और उससेपूछा कि यह मनुष्य तुम्हारी दूकानपर कौन आया करताहै उसने कहा यह मेरा पिताहै इस बातके सुनतेही वह महाधूर्त क़ासिमको धोखेसे बहुत प्यार करनेलगा और बहुतसी सौगातें मित्रवत् देता और बहुधा उत्तम २ भोजन बनाकर उसे अपने साथ खिलाता अलीबाबाके पुत्रनेभी चाहा कि एक दिन उसको न्योतें यदि उसका घर बहुत छोटा था इसलिये उसने यह बात अपने पिता से कही उसके पिताने कहा बहुत अच्छा तुमभी अपने मित्रकी ज्यवनार करो जिस भांति उसने तुम्हारा आदर कियाथा करना कल शुक्रबारहै तुम बड़े व्यापारियोंके सदृश अपनी दूकान मूंद दोपहरके उपरान्त टहलते हुये मेरे घरमें लेआओ मैं मरजीनाको आज्ञादेरखताहूं कि वह भोजन तैयार रक्खे निदान दूसरे दिन शुक्रबारको ठग और अलीबाबा का पुत्र टहलने को निकले लौटते समय अलीबाबाका पुत्र उसको उसी कूचेमें जिसमें अलीबाबा रहताथा लेआया जब घरके द्वारपर पहुँचे तो उसने ठग को वहां ठहराकर द्वारखुलवाया और ठगसे कहा वह महल मेरे पिता का है जबसे उसने मेरे साथ तुम्हारे अधिक स्नेह का बृत्तान्त सुना तबसे तुम्हारे साथ भेंट किया चाहताहै यदि भीतर चलके उनसे भेंट कीजिये तो मुझे हर्ष होगा यद्यपि ठग की यही इच्छाथी कि किसी भांति मेरा आवागमन अलीबाबाके घरमें हो तो अवसर पाकर अपना कार्य साधूं परन्तु उस समय वह न गया और अलीबाबाके पुत्रसे चाहा कि कोई बहाना करके चला जावे फिर अलीबाबाके नौकरने द्वार खोला तो वह उसकी बहुतसी बिनतीकर उसको भीतर लेगया जब वह घरमें गया तो वह अलीबाबासे प्रसन्नतापूर्वक मिला जिससे जानपड़े कि वह अपनी प्रसन्नतासे आयाहै अलीबाबाने भेंटकर आनन्दितहो उससे कुशल पूछी और कहनेलगा तुम मेरे पुत्रसे अत्यन्त स्नेह रखतेहो और उसपर बहुत दया करतेहो इस लिये मैं तुम्हारा बहुत गुण मानताहूं और मुझे भलीभांति सूचित है कि जितनी मैं उससे प्रीति रखता हूं उससे अधिक तुम उससे

चित्र खलीफ़ का वेष बदले हुये खेलते हुये लड़कों में जो काज़ी के फ़ैसले की नक़ल करते थे-

स्नेह रखतेहोगे ठगनेभी बहुत सी बातें प्रसन्न करनेकी कहके कहा तुम्हारे पुत्रसे मैं राज़ी हूं यद्यपि अभी वह छोटाहै परन्तु ईश्वरने उसे सुबुद्धि दीहै और बड़ा सुपूतहै फिर वह बड़ी प्रीतिसे वार्त्तालाप करनेलगा थोड़ी देरके पीछे ठगने विदा मांगी कि अब मैं जाताहूं अलीबाबाने उसे ठहराया कि तुम कहां जातेहो मैंने तुम्हें न्योताहै कृपा करके भोजन करके जाना यद्यपि वह भोजन ऐसे नहीं कि जिनको आप रुचिपूर्वक ग्रहण करें परन्तु मुझ पर अनुग्रहकर थोड़ासा भोजन कीजिये उसने कहा मैं आप की दयालुतासे मन बचसे कृतज्ञ हुआ और तो कुछ चिन्ता नहीं परन्तु एक कार्य ऐसा है जिससे मैं अधिक नहीं ठहरसक्ताहूं और न भोजन करसक्ताहूं अलीबाबाने पूछा वह कौनसी बात है उसने कहा मुझे ऐसा रोग होगयाहै कि जिससे मैं नमकदार भोजन नहीं करसक्ता अलीबाबा ने कहा जो यही कारणहै तो अभी सब भोजन नहीं बना मैं रसोइये से कहेदेताहूं कि किसी भोजनमें नोन न डाले ठहरजाइये मैं अभी आताहूं फिर अलीबाबाने रसोईमें जाकर मरजीनासे कहा कि थोड़ा सा भोजन बिना नमक पकाइयो वह यह सुनकर आश्चर्य में हुई और अलीबाबासे पूछा कि ऐसा कौन मनुष्यहै कि जो बिना नमक के भोजन करेगा अलीबाबा ने कहा कोई मनुष्यहो तुझे इससे क्या कामहै जो मैं कहताहूं वही कर मरजीनाने उनसे तो यही कहा कि बहुत अच्छा मैं वैसाही भोजन पकाऊंगी परन्तु अपने मनमें सोचने लगी वह मनुष्य कैसाहै जो नोन नहीं खाता मैंभी चलकर देखूं और भोजन पकाकर अब्दुल्ला दासके साथ भोजनके लिये भोजनके पात्र बिछानेगई यद्यपि वह ठग व्यापारियोंके वस्त्र पहिने था और अपनी सूरत बदली थी तथापि उसको देखतेही उसने पहिचानलिया फिर मरजीनाने ध्यान धरके मालूम किया कि वह ठग एक खड्ग अपने कपड़ों में छिपायेहै और यह सोची कि यह दुष्ट इसीलिये मेरे स्वामी का नमक नहीं खाता कि उसे छलसे मार डाले यह उसका बड़ा शत्रुहै फिर मरजीनाने अपने मनमें कहा कि जो तू सन्ध्याको मेरे स्वामीके मार का इरादा करेगा मैं भोरहीको

तुझे मारडालूंगी निदान वह पात्र बिछा और भोजन परसकर चली गई फिर जब अलीबाबा और ठग भोजन करचुके तो अब्दुल्लाने मरजीनासे कहा कि अब सूखे मेवे लेचल मरजीनाने वहांके पात्र उठालिये और फलों की तश्तरियां लेगई फिर उसने एक छोटी चौकी मद्यकी अलीबाबा के पास बिछाकर उसपर तीन गिलास रक्खे और आप अब्दुल्ला समेत रसोई जेवनेके बहाने दूसरे मकान में गई ख्वाजेहसन अर्थात् ठगोंका सरदार अवसर पाकर प्रसन्न हुआ और सोचा इसी समय अलीबाबासे अपना बैर लूं और एक खड्ग मार उसे बधकरूं फिर बागमेंसे निकलजाऊं उसका पुत्र मुझे इस काममें रोक नहीं सक्ता यदि थोड़ाभी हाथ पावँ हिलावेगा तो उसे भी मारके एक ठिकाने लगाऊंगा परन्तु यह कार्य उस समय सिद्ध करना चाहिये जिस समय अलीबाबाका दास और उस की रसोइन जाकर भोजन करें मरजीना उसकी तेवरी देख परखगई और समझगई कि ऐसा न हो कि यह दुष्ट मेरे स्वामीको दुःख पहुँचावे उत्तमहै कि चलके प्रथम उसीको किसी भांतिसे मारूं फिर उसी हितैषी लौंड़ीने तुरन्त नाचनेके वस्त्र पहिने और एक पगड़ी शिरपर धरली और सुन्दर रूपेके मुलम्मे का पटका कमरमें बांधा और उसमें एक खड्ग रख अपने मुखको छिपानेके लिये अतिस्वच्छ दुपट्टा ओढ़ा जब वह बेष बदलचुकी तो उसने अब्दुल्लासे कहा कि अपना बाजा उठाले कि हमदोनों मिलकर अपने स्वामीके मेहमान को नाच गाकर प्रसन्न करें अब्दुल्ला तबला बजाताहुआ मरजीना के आगे चला फिर वह दोनों उस मकानमें जिसमें अलीबाबा और उसका मेहमानथा आये और उन्होंने नाचने गानेकी आज्ञा ली अलीबाबा ने आज्ञा देकर कहा कि ऐसे तमाशे और नक़लें कर जिससे ख्वाजेहसन देखकर सन्तुष्ट होजाय अब्दुल्ला पास जाकर बाजा बजाने लगा तो मरजीना उसके आगे होकर नाचनेलगी और नानाप्रकारके सुन्दर नाच दिखाकर सबको आनन्दित किया फिर मरजीना कमरसे खड्ग निकाल हाथमें ले नाचनेलगी सब नाचोंमें से उनको एक भांतिका नाच अच्छा मालूम हुआ कि नाच

करते कभी मरजीना खड्गको बगलमें रखती और कभी पेटपर थोड़ी देरके उपरान्त मरजीनाने तबला अब्दुल्लासे लेकर अपने बायें हाथ में पकड़ा और खड्ग को दाहिने हाथमें रख पारितोषिक लेनेको अलीबाबाके पास गई उसने उसे एक अशरफ़ी दी फिर वह अली-बाबाके पुत्रके पास गई उसनेभी एक अशरफ़ी दी ख़्वाजेहसनभी समझा कि वह मेरे पासभी आवेगी तो वह एक अशरफ़ी निकालनेलगा मरजीनाने अवसर पाके बड़ी होशियारी और साहससे बड़े वेगके साथ खड्ग उसके हृदयमें मारा कि ख़्वाजेहसन उसीसमय मरगया अलीबाबा इस दशाको देख भयभीत हुआ और मरजीना पर क्रोध करके कहनेलगा हे अभागिनी! तूने यह क्या कामकिया कि जिस से मैं माराजाऊँ उसने कहा मैंने यहकाम आपके मारेजाने का नहीं किया किन्तु आपके प्राणकी रक्षाकीहै इसके वस्त्रोंको खोल कर देखो जब उसने उसके कपड़े खोले तो उसमें एक छोटीसी पैनी छुरी पाई फिर उसने अलीबाबासे कहा कि यह तुम्हारे प्राणका बैरी था और भलीभांति देखो और पहिचानो कि यह वही तेल बेंचने-वाला ठगहै वा नहीं जो तुम्हारे मारनेको आयाथा इसीलिये नहीं चाहताथा कि तुम्हारा नोन खावे जिस समय आपने बेनमक भोजन पकानेकी आज्ञा दीथी उसी समय मैंने आकर उसको देखा और पहिचाना और समझी कि वह तुम्हें मारना चाहताहै ईश्वर का धन्यवाद है कि वही मेरा बिचार सत्य हुआ और आपके प्राण उसी परमात्मा सच्चिदानन्द ईश्वरने बचाये अलीबाबाने मरजीना का बड़ा गुण माना कि तूने दूसरी बेर उसके हाथसे मुझे बचाया फिर उसे कण्ठसे लगाकर दासीत्व से उसे छुड़ाया और कहनेलगा कि इस हितके बदले तेरा विवाह अपने पुत्रके साथ करताहूं सो उसने अपने पुत्र से कहा मैं जानताहूं कि तुम सुपूतहो जो मैं कहूंगा वह तुम मानोगे मुझे अभिलाषाहै कि मरजीनाको तुमसे ब्याहदूं वह अत्यन्त हितैषी है अब यह निश्चय मानो कि ख़्वाजेहसनका तुम्हारे साथ मित्रता करने से यही प्रयोजनथा कि वह मुझे मारे परन्तु मरजीनाने अपनी बुद्धिमत्ता और यत्नसे उसे मारकर सबको

बचाया इतना सुन वह इस बात पर राज़ी हुआ फिर अलीबाबा और उसके पुत्रने इस होशियारी से उस बाग़ में ठगकी लोथ को गाड़ा कि बहुत बर्षोंतक यह वृत्तान्त किसी को बिदित न हुआ फिर अलीबाबाने अपने पुत्रका विवाह मरजीनाके साथ बड़ी धूम धामसे किया और अपने पड़ोसियों और इष्ट मित्रों को निमन्त्रण कर यथोचित सत्कार किया और बड़े नाच रंग दिखाये और अलीबाबा ठगोंके भयसे उस दिनके सिवाय कि अपने भाई क़ासिमकी लोथ कन्दरासे उठालायाथा उस ख़ज़ानेमें न गया परन्तु एक दिन वह अपने घोड़ेपर सवार होकर उस कोषकी ओर गया मार्ग में मनुष्य और घोड़ोंके चरणचिह्न न देखकर अतिप्रसन्न हो गया और दरवाज़ेके पास जाकर घोड़ेसे उतरा और घोड़ेको वहीं बांधदिया और उस दरवाज़ेके पास जाकर वही मन्त्र पढ़ा तुरन्त दरवाज़ा खुलगया और उसके भीतर जाकर देखा कि वह सब धन और वस्तु उसी भांति रक्खीहै इससे उसे बिश्वास हुआ कि अब कोई भी ठग जीता नहीं इसके सिवाय कोई दूसरा उस द्रव्यके भेद को न जानताथा फिर वह कई बार अशरफ़ियां वहांसे भरके घरमें लाया और अपने पुत्रको वही कन्दरा दिखाई और खुलने और मूंदनेकाभी मन्त्र उसे सिखादिया निदान वह दोनों उस असंख्यद्रव्य से जन्मभर आनन्दमें रहे मलकाशहरज़ादने इस कहानीको भोर होते पूर्ण किया और दूसरी रात्रि को और एक कहानी कहनेलगी॥

बुग़दादनगरके निवासी अलीख़्वाजह ब्यापारीकी कहानी॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीदकी सल्तनत में एक ब्यापारी बुग़दाद में रहता था और थोड़ीसी बस्तुसे ब्यापार करता और अपने दादे परदादेके बनायेहुये घरमें रहता उसके कुटुम्बमेंसे कोई न था उस ब्यापारीने बराबर तीन रात्रि स्वप्न देखा कि कोई सत्पुरुष कहताहै कि मक्केकी यात्रा जो तुझपर उचितहै क्यों नहीं करता अलीख़्वाजह इस स्वप्नको देख बहुत डरा और उस सत्पुरुषका बचन उसके मनमें ऐसा गड़ा कि अपना सब असबाब और दूकान बेंचकर मक्केके जानेकी इच्छा की और अपने घरमें एक किरायेदारको रख

बिदेशियोंके साथ जो मक्के को जातेथे होलिया और अपने जाने के पहिले एक हज़ार अशरफ़ी जो राहख़र्चसे अधिक बचरहीथीं एक ठिलियामें रख और ऊपर उसके ज़ैतूनका तेलभर उसका मुख भलीभांति बन्द किया और एक सौदागर जो उसका पुराना मित्र था उसके घरमें लेगया और कहने लगा कि आपने सुनाहोगा कि इन दिनों मैं मक्केकी यात्राको जाताहूं सो एक ठिलिया ज़ैतूनके तेल की तुम्हारे पास रखनेको लायाहूं मिहरबानी से इसको मेरे लौटने तक अपने पास रखियो उस व्यापारीने अपने गोदामकी कुंजी अलीख़्वाजे को देकर कहा तुम आप गोदामको खोलकर जहां कि तुम चाहो उसको रखदो और लौटकर आपही आकर लेलेना अलीख़्वाजे ने उस ठिलियाको एकमकानमें रख और उसका ताला बन्दकर उसकी कुंजी उसी व्यापारीको सौंपदी और अपने व्यापार की वस्तुको एक ऊंटपर लादकर सवार हुआ और यात्रियोंके साथ चला जब वह मक्केमें कुशलपूर्वक पहुँचा और ज़िलहिजके महीनेमें कि हज़ारों मुसल्मान वहां पहुँचकर मक्केकी परिक्रमा करते हैं उसने भी परिक्रमा की जब वह निश्चिन्त हुआ तो असबाब बेंचने को निकला अकस्मात् दो व्यापारी सैर करतेहुये अलीख़्वाजह की दूकानपर गये और उसकी बस्तुको देख प्रसन्न हुये और पसन्दकर परस्पर कहनेलगे कि यह व्यापारी इस असबाबको कैरूमें जो मिसरकी राजधानीहै लेजावे तो बड़े मोल से बिकेगा अलीख़्वाजह कि पहिलेसे मिसरकी प्रशंसा सुन मनमें देखनेकी लालसा रखताथा इस बातको सुन अधिक प्रसन्न हुआ और बुग़दादका इरादा छोड़ कर मिसरके जानेकी दृढ़ इच्छाकी और यात्रियोंके समूहके साथ उधरको सिधारा जब वहां पहुँचा तो उस बिचित्र देशमें सैर कर अतिहर्षित हुआ और अपने असबाबको वहां बेंच बहुतसा लाभ उठाया और दूसरा असबाब मोल लेकर दमिश्कमें जानेकी उसे इच्छाहुई और एक मास पर्यन्त कैरूमें रहकर अहरामकी सैरकी जो नीलनद के तटपर कई मंज़िलोंसे दीखतेहैं और २ भी नीलनदके कूलके बसे नगर देख दमिश्ककी ओर चला मार्गमें रोदस-

लेम आदिक मसजिदोंका जो मुसल्मानों ने बनाईथीं दर्शन किया फिर दमिश्क नगरमें गया उस नगरको बहुतसा बसाहुआ और अनेक भांति से अलंकृत पाया और उसमें कुण्ड बहुत देखे और खेती और बाग़को खिलाहुआ और फल समेत देख बुग़दाद को भूलगया फिर वहांसे हलब मवस्सल और शीराजको गया और वहां से आनन्दपूर्वक सात बर्ष के उपरान्त बुग़दाद में पहुँचा अब धूर्तता उस बुग़दादी व्यापारीकी सुनिये कि इस सात बर्ष के समयान्तरमें उसने अलीख़्वाजह और उसकी बस्तुकी कुछभी सुधि न की अकस्मात् एक दिन सन्ध्याको अपनी स्त्रीके साथ भोजनकरताथा तो उस समय ज़ैतून के तेलकी बार्त्ता चली उसकी स्त्री ने कहा मेरा मन उसके खानेको बहुत चाहताहै उसने कहा तुम्हारी इस बार्त्ता से मुझे अलीख़्वाजह स्मरण होआया कि सात बर्ष बीतेहैं कि मक्केकी यात्राको गयाहै और जाते समय एक ठिलिया ज़ैतूनके तेलकी मेरी अमुक कोठरीमें छोड़गयाहै परन्तु न जानिये अब वह कहांहै पूर्व में एक यात्री से सुनाथा कि अलीख़्वाजह मिसरकी ओर मक्केसे गयाहै ईश्वर जाने मरगयाहै या जीताहै यदि उसका तेल बिगड़ न गयाहो तो उसमेंसे थोड़ासा निकालकर चक्खें मुझे एक बर्तन और दीपकदो कि उसमेंसे तेल निकालकर चक्खूं उसकी स्त्री कि अत्यन्त धर्मिष्ठाथी कहनेलगी ईश्वरके वास्ते ऐसा बुराकर्म मत कर कि किसीकी धरोहरमें चोरी करे भला तुमको क्योंकर निश्चय हुआ कि वह मिसरसे जीतेजी लौटकर नहीं फिरेगा क्या तुमने किसीसे उसके मरने का समाचार सुना क्या आश्चर्य है कि वह कल अथवा परसों कुशल पूर्बक लौटआवे उस समय तुमको इस चोरीसे अत्यन्त लज्जा प्राप्त होवेगी जो तुम उसकी बस्तु उसे पूरी न दोगे तो हमारी अत्यन्त निन्दा होगी मैं इस कामकी साथी नहीं और न उस तेलको चक्खूंगी इसके बिशेष तुम बिचारो कि सात बर्ष का पुराना तेल कब भोजन करनेके योग्य होगा मैं तुझे सौगन्द देती हूं कि यह काम मत कर उस धर्मवतीने अपने पतिको बहुत समझाया और उसे निषेध किया इतना समझाया कि उस समय तो

नम्बर ४८ मुतख़्लिके सफ़े ७५४ च·भा·

चित्र फ़ीरोज़ शाह का जमीन पर वायु से उतरते हुये·
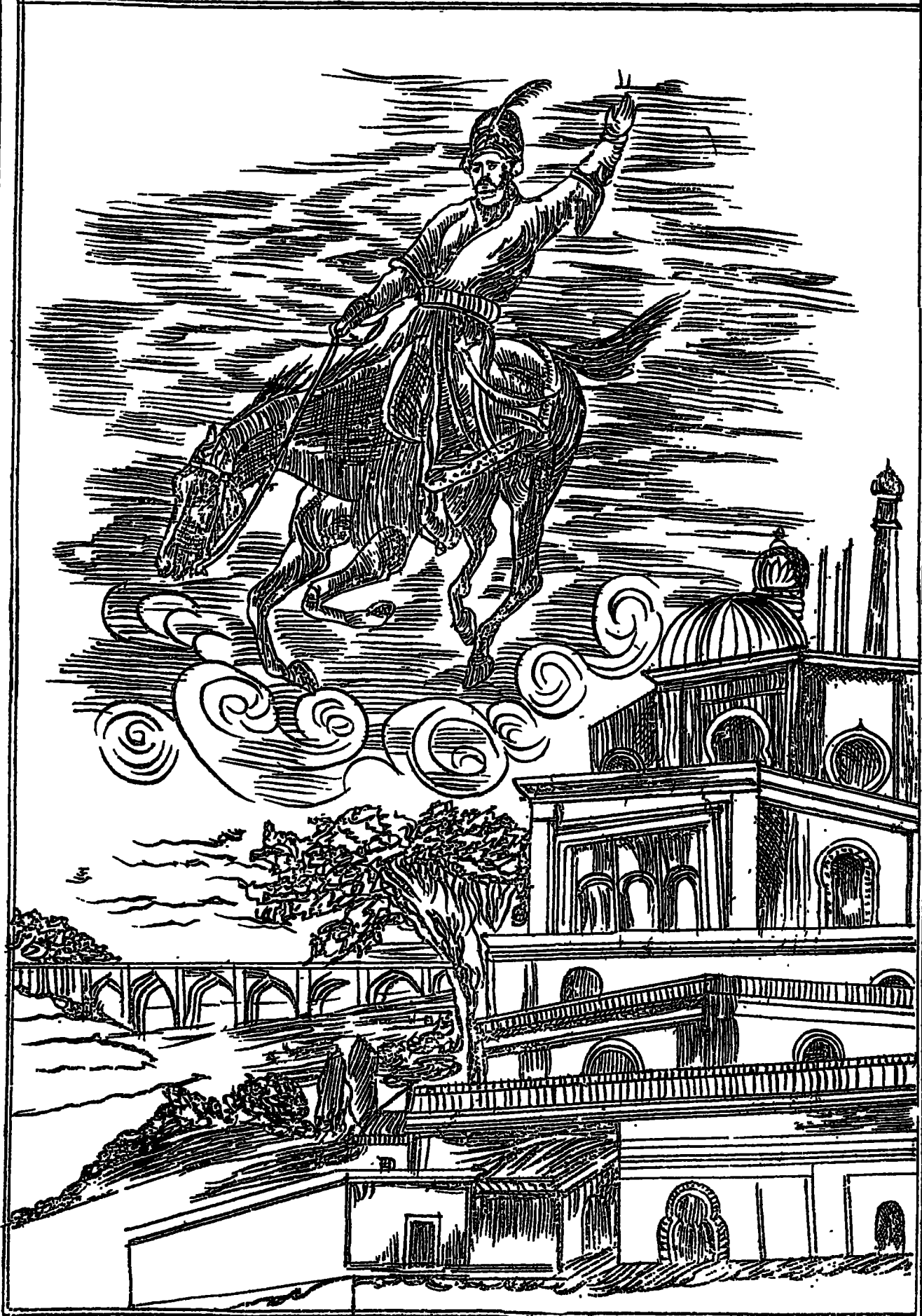
उसने वह इच्छा छोड़दी परन्तु दूसरे समय फिर वह व्यापारी रि-
काबी ले तेलकी कोठरी में चला उसकी स्त्रीने कहा मैं इस काममें
तेरे साथ नहींहूं इससे तुझपर अवश्य कोई न कोई उपाधि फैलेगी
उसने कुछ न माना और कोठरी में जाकर उसने उस ठिलियाको
खोला यद्यपि वह तेल सड़कर बहुत ख़राब होगयाथा तथापि उसने
उस ठिलियाको हिलाकर एक बर्तन उस तेल से भरलिया संयोगसे
एक अशरफ़ी तेलके साथ निकल आई व्यापारी ने अशरफ़ी को
देखतेही लोभवश सम्पूर्ण तेल उड़ेलके देखा कि अशरफ़ियां भरीहैं
उस समय उसने उस तेलको फिर ठिलियामें डालदिया और मुख
उसका बन्दकर कोठरीसे निकल आया और अपनी स्त्रीसे कहा तू
सत्य कहतीहै मैंने इस तेलको बहुत बदबूदार पाया और उसी
भांति उस ठिलियाके मुखको बन्दकर चला आया परन्तु वह दुष्ट
इसी शोचमें रात्रिभर न सोया कि किसी भांति वह अशरफ़ियां
अलीख़्वाजेकी लेलूं फिर भोरको उसने अशरफ़ियां निकाल और
नवीन स्वच्छतेल बाज़ारसे मोल लाकर उस ठिलियामें भर और
उसका मुख बन्दकर कोठरीमें रखदिया ईश्वरकी मायासे एक मही-
नेके उपरान्त अलीख़्वाजह बुग़दादमें आकर अपने मित्र बुग़दादी
व्यापारीकी भेंटको गया उसने उससे भेंटकी और प्रकटमें अत्यन्त
प्रसन्न हुआ निदान कुशल पूछने के पश्चात् अलीख़्वाजहने अपनी
वस्तु मांगी और कहा ज़ैतून के तेलकी ठिलिया देदीजिये व्यापारी
ने उत्तर दिया भाई! मैं नहीं जानता कि तुमने कोठरीमें कहां रक्खी
है कुंजी लो और अपनी वस्तु निकालकर लेजाओ अलीख़्वाजह
कोठरीमें जा अपनी ठिलिया को कोठरीमें से निकाल लाया और
उस व्यापारीसे बिदा होकर अपने घरगया जब उसने ठिलियामें
अशरफ़ियां न पाईं तो अत्यन्त चिन्तित हुआ और बहुत रोया
और उस व्यापारीसे जाकर कहा हे मित्र! मैं ईश्वरको साक्षी देता
हूँ कि मैं यात्रा करते समय एक हज़ार अशरफ़ियां ठिलियामें रख-
कर गयाथा अब उनको नहीं पाता इसका क्या कारणहै यदि तुमने
किसी कामकी आवश्यकतासे उनको ख़र्च कियाहो तो कुछ हानि

नहीं जब चाहना देना उसने अशरफ़ियोंके लेनेसे इन्कार किया और कहनेलगा भाई! जातेसमय ठिलिया ज़ैतूनके तेलकी अपने हाथसे मेरी कोठरीमें रखगयेथे क्या मैं जानताथा कि उसमें अश-रफ़ियांथीं वा तेल सो तुम उस ठिलिया को उसी भांति उठाकर लेगये अब तुम मुझपर झूठ कलङ्क किस वास्ते लगातेहो यह भले मनुष्यकी बात नहीं भला रखते समय तुमने अशरफ़ियोंके बिषय में मुझसे कहाथा तुमने तो केवल तेलका बर्णन कियाथा देखो वह तो रक्खाहै यदि अशरफ़ियां होतीं तो वह भी आकर पाते उसने उसकी बहुतसी बिनती की और बहुत रोकर कहा कि मेरी जन्म-भरकी कमाई वही हज़ार अशरफ़ियांथीं आशा रखताहूँ कि मुझ पर दयाकर उनको देदीजिये उसने मुँह लाल कर कहा तुम बड़े अधर्मी हो भाई! यहांसे चलेजाओ मेरे घर फिर न आना तुम्हारा हाल मालूम हुआ कि तुम महाधूर्तहो यही वार्त्ता अलीख़्वाजह और ब्यापारीसे होतीथी कि उस मुहल्लेके बहुतसे मनुष्य एकत्र होगये और उनके झगड़ेका बृत्तान्त बग़दादभरमें प्रसिद्ध होगया और हरएक भलेमानस ने सुना निदान ख़्वाजह अत्यन्त ब्याकुल होकर ब्यापारीको न्यायाधीशके पास लेगया और सम्पूर्ण बृत्तान्त सुनाया न्यायाधीशने अलीख़्वाजहसे पूछा तेरा कोई साक्षी है उसने कहा मैंने भेदखुलनेके भयसे किसी को साक्षी नहीं किया और मैं इस ब्यापारीको अपना मित्र और बिश्वसित समझेथा तब न्यायाधीश ने उस ब्यापारीसे सौगन्द खानेको कहा उसने सौगन्द खाकर कहा कि अलीख़्वाजहकी अशरफ़ियोंको मैं नहीं जानता न्यायाधीशने ब्यापारीको निर्दोष समझ छोड़दिया अलीख़्वाजह न्यायाधीशके न्याय से निराश हुआ और दूसरे दिन एक अर्ज़ी लिखकर ख़लीफ़ा हारूंरशीदको जिस समय कि वह शुक्रबारकी निमाज़ पढ़ने के लिये मसजिदमें जाताथा निवेदनकी ख़लीफ़ा ने उसकी अर्ज़ी को पढ़ और अभिप्राय समझ आज्ञा दी कि कल दोनों मनुष्य मेरी सभामें आवें और इस ब्यवस्थाको मैं आप निर्णय करूंगा और सन्ध्यासमय अपने नियमके अनुकूल नगरका हाल मालूम करने

को बेषबदल निकला और दूरसे देखा कि चन्द्रमाकी ललित चाँ- दनी में दश अथवा बारह बालक परस्पर खेलते हैं ख़लीफ़ा वहां जाकर खड़ाहोगया सो एक बालकने जो उन बच्चोंसे अत्यन्त स्व- रूपवान्था और बालकों से कहा आओ हम तुम सब मिलकर न्यायाधीशकी नक़ल करें मैं न्यायाधीश बनताहूं और तुममेंसे एक बालक अलीख़्वाजह और दूसरा ब्यापारी बने जिसके पास वह हज़ार अशरफ़ी रखकर यात्राको गया था फिर तुममेंसे कोई दोनोंको मेरे सामने लावे ख़लीफ़ा उन दोनोंका नाम सुन आश्चर्यमें हुआ कि कल इसी बिषय की अर्ज़ी मार्गमें किसीने दीहै और मैंने उसे पढ़ा देखूं तो यह बालक क्या निर्णय करता है फिर ख़लीफ़ा ध्यान धर देखनेलगा और बिचार किया यह बात इतनी नगरमें बिख्यात हुई कि हरकोई जानताहै किन्तु बालक परस्पर उसीकी नक़ल करके खेलते हैं निदान उन लड़कों ने अपनेमेंसे एकको अलीख़्वाजह और दूसरेको बुग़दादी ब्यापारी नियतकर उसी बालकके पास ले गया जो बड़ी धूमधामसे न्यायाधीश बनके बैठाथा उस बालकने कल्पित अलीख़्वाजहसे पूछा तू इस ब्यापारीसे क्या चाहताहै उसने अपना बृत्तान्त बिस्तारपूर्बक बर्णन किया कल्पित न्यायाधीश ने इतना सुनकर उस ब्यापारीसे पूछा तूने अशरफ़ियां उसकी नहीं लीं उस ब्यापारीने वही उत्तर दिया जो शहरके न्यायाधीशको दियाथा किन्तु सौगन्द खानेलगा न्यायाधीशने कहा पहिले मैं वह ठिलिया देखना चाहताहूं जिसमें नालिशी ने ज़ैतूनका तेल भरकर तेरे घरमें रक्खीथी कल्पित अलीख़्वाजह उसे लाया और न्याया- धीशने उन दोनोंसे पूछा कि यह ठिलिया वहीहै जिसको अली- ख़्वाजह ब्यापारीके घरमें रखकर गयाथा उन दोनोंने कहा यही ठिलियाहै फिर न्यायाधीशने कहा उसे खोलकर थोड़ासा तेल मेरे पास लाओ कि इसका स्वाद देखूं कि कैसाहै निदान थोड़ासा तेल चखकर कहा इसका स्वाद बहुत अच्छाहै मैं जानताथा कि सात वर्ष के उपरान्त इसका बुरा स्वाद होगयाहोगा और सड़गया होगा फिर उस न्यायाधीशने आज्ञा दी कि दो तेलके बेंचनेवाले बाज़ार

से बुलाला वह बालक अपने समूह मेंसे दो लड़कों को तेल बेंचने वाले नियतकर न्यायाधीशके निकट लेगये उसने उनसे पूछा कि तुम तेल बेंचनेवाले हो उन्होंने कहा हां हमारी यही जीविका है उसने उनसे पूछा कि ज़ैतूनका तेल कबतक अच्छारहता है और बदमज़ा नहीं होता उन्होंने कहा साहब! यदि कोई कितनाही उपाय करे तो तीन बर्ष के पश्चात् उसके रंग और गन्धमें अन्तर पड़जाता है किन्तु उसे फेंकदेते हैं फिर उस बालकने उनसे कहा इस ठिलिया के तेलको देखकर मालूम करो कि यह तेल कितने बर्षोंका है और उसका स्वाद कैसाहै उन्होंने उस ठिलियामेंसे झूठ मूठ निकालकर देखा और चखकर कहा यह तेल बहुत अच्छा और स्वादिष्ठहै न्यायाधीशने कहा तुम झूठ कहतेहो अलीख़्वाजह सात बर्ष हुये कि यह तेल रखकर यात्रा को गयाथा उन्हों ने कहा आप चाहिये जो कहिये परन्तु यह तेल एक बर्षसे अधिक का नहींहै इसी बर्षका बनाहुआ है कोई ब्यापारी बुग़दादमें न होगा जो इस बातको न जानताहो निदान उस बुग़दादी ब्यापारीने उस तेलको सूंघ और चख इसबातको माना तब कल्पित न्यायाधीशने अनुकरण बुग़दादीसे कहा तू चोरहै तूने यह कर्म फांसी पानेका कियाहै इतना सुन सब बालक कूदने और तालियां बजाने लगे और उस कल्पित बुग़दादी ब्यापारीको पकड़के दण्ड देनेके लिये लेगये ख़लीफ़ा हारूंरशीद उस बालककी बुद्धि देख अतिप्रसन्न हुआ और अपने मनमें ठहराया कि कल इसी भांति इस ब्यवस्थाको निर्णय करूंगा फिर ख़्वाजहने जाफ़रको जो वहीं खड़ाथा आज्ञादी इस बालकको जिसने इस समय न्यायाधीश बनकर ब्यवस्थाको निर्णय कियाहै पहिचान रख कल इसको मेरे पास लाइयो कि इसी भांति मेरे सन्मुख इसी ब्यवस्थाका निर्णय करे और नगरका न्यायाधीशभी आकर इसी बालकसे सीखे और अलीख़्वाजहको कहलाभेजा कि कल इस ठिलियाको अपने साथ लेताआवे और दो तेल बेंचने वाले भी आवें ख़लीफ़ा यह आज्ञा मन्त्रीको मार्गमें देकर अपने महल में गया प्रभातको मन्त्री उसी मुहल्लेमें जहां बालकोंने खेल

खेलाथा गया और उनके गुरुसे पूछा उसने कहा वह सब बालक अपने २ घर को गये हैं मन्त्री ने उनके माता पिता को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम तुरन्त अपने २ पुत्रों को लाओ सो वे उनको लाये मन्त्रीने उनसे पूछा तुममें से रात्रिको किस लड़केने न्यायाधीश बनके खेल खेलाथा उनमेंसे एक बालकने कहा मैं न्यायाधीश बनाथा मन्त्रीने कहा मेरे साथ चल ख़लीफ़ाने तुझे बुलायाहै उस लड़केकी माता डरगई और रोनेलगी मन्त्रीने उसे धैर्य देकर कहा कुछ चिन्ता मतकर एक घड़ी के उपरान्त तेरे पुत्रको पहुँचादूंगा उसकी माता प्रसन्न हुई और उसको वस्त्र पहिनाकर मन्त्रीके साथ करदिया और मन्त्री उसे ख़लीफ़ाके पास लेगया ख़लीफ़ाने सभा के समय उस बालक को अपने पास बैठाया फिर जब नालिशी आये तो ख़लीफ़ाने उनसे कहा तुम अपने अपने हालको इस बालक से कहो यही इस व्यवस्था को निर्णय करेगा अलीख़्वाजह और व्यापारी ने अपना २ बृत्तान्त वर्णन किया और वह व्यापारी इन्कार करनेके उपरान्त सौगन्द खानेलगा उस बालकने कहा अभी सौगन्द खाने की कुछ आवश्यकता नहीं पहिले उस ठिलियाको लाकर दिखाओ सो वही ठिलिया बालक के सन्मुख रक्खीगई ख़लीफ़ाने उसका मुख खुलवाकर उस तेलको चक्खा और तेल बेंचनेवालोंकोभी दिखाया और चखाया उन्होंने कहा इस तेलका स्वादु अभी बिगड़ा नहीं यह तेल इसी बर्षका बना हुआ है तब उस बालक ने व्यापारी से कहा तुम झूठ कहते हो क्योंकि सात बर्ष हुये कि अलीख़्वाजह ने इस ठिलिया में भरके रक्खा रहे इस बर्षका तेल इसमें क्योंकर आगया तेल बेंचनेवालों ने वही उत्तर दिया जो बालकोंने खेलते समय दिया था निदान बुग़दादी व्यापारी ने हार मान अपने अपराधको मानलिया इतना कह उस बालकने ख़लीफ़ासे कहा हे स्वामी! कल हमने यही खेल खेलाथा हमको अपराधीके दण्ड देनेकी सामर्थ्य न थी अब यह व्यवस्थाका निर्णय आपके सन्मुख हुआ उसको दण्ड देकर हज़ार अशरफ़ी अलीख़्वाजहको दिलवा दीजिये ख़लीफ़ाने

आज्ञादी कि इस ब्यापारीको फांसी दो और उससे पूछो कि हजार अशरफ़ी अलीख़्वजहकी कहांहैं जहां बतावे वहांसे लाकर अली-ख्वाजह को देदो और उस बालकको अपने कण्ठसे लगाकर एक हज़ार अशरफ़ी पारितोषिक दीं और घरको पहुँचादिया मलका शहरज़ादने इस कहानी को पूर्णकर शहरयारसे कहा अभी बहुतसी उत्तम २ और ललित कहानी हैं कलकी रात्रिको मैं बर्णन करूंगी ॥

कल के घोड़ेकी कहानी ॥

आपको भलीभांति मालूम होगा कि हज़ारों बर्ष से पारस के निवासी नौरोज़ अर्थात् बर्ष का प्रथम दिन जानकर खुशी करते थे बिशेष अग्निपूजक उस दिन नृत्य और अनेक भांतिके तमाशे देखते और अतिउत्तम और बिचित्र २ बस्तु बड़े २ बादशाह और धनवानोंको भेंट देते और दूरसे नानाप्रकारके गुणवान् महासुन्दर और दिब्यबस्तु बादशाहके सामने लाते और हज़ारों रुपये पारितो-षिक पाते सो किसी काल में नौरोज़को कोई पारसका महातेजस्वी बादशाह जो उदारतामें अतिविख्यात था तमाशा देखनेको नगरके बाहर गया और सम्पूर्ण सभासद् और नौकरोंने आन आनकर अपनी २ भेंटदी और बड़े २ गुणवान् कारीगरों ने नानाप्र-कारकी बस्तु दीं उनमें हिन्दुस्तानका निवासी एक गुणवान् हिन्दू आया और कर जोड़ दण्डवत्कर एक कलका घोड़ा बादशाहको भेंट दिया और बिनय की कि इस सेवकने इसको अत्यन्त श्रम और यत्नसे बहुत दिनोंमें आपके लिये बनायाहै निश्चयहै कि ऐसी अद्भुत बस्तु अबतक किसीने आपको न दी होगी बादशाहने कहा यह घोड़ा केवल काष्ठ का बना है उसपर तूने सुनहली रुपहली सामग्री लगाकर सजा है इससे इस नगर में उत्तम बन सक्ताहै इस सामग्री के बिशेष और कोई अपूर्ब बस्तु मैं इस घोड़े में नहीं देखता उसने बिनय की हे हुजूर ! मैं इस घोड़े के रूप और सामग्री की प्रशंसा नहीं करता किन्तु मैंने इसमें बड़ी कारीगरी रक्खी है कि मेरे सिवाय दूसरा कोईभी इसे नहीं बनासक्ता हे स्वामी ! इस घोड़े में ऐसी कल है कि यदि मैं अथवा कोई दूसरा मनुष्य जिसे मैं उस

कलको बतादूं चढ़कर उसको घुमाये तो तत्कालही यह घोड़ा पक्षी के समान बायुपर उड़ेगा और एक घड़ीमें कल के बलसे सौ दोसौ कोस जावे और फिर वहींपर फिर आवे यदि आज्ञाहो तो मैं इसपर चढ़कर इसका प्रभाव दिखाऊं बादशाह यह सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और इच्छाकी कि कारीगरके सच झूठकी परीक्षा लें तदनन्तर उसे चढ़नेकी आज्ञादी हिन्दी अपना एक चरण घोड़ेकी बाईं रिकाब में दे उचककर जीनपर जाबैठा और दूसरे चरण को दूसरी रिकाब में रख लिया और बादशाहसे बिनयकी मुझे किधर जानेकी आज्ञा होती है शीराज़नामक राजधानीसे डेढ़ कोसके प्रमाणपर एक बहुत ऊंचा पर्बतथा जो बादशाहकी सभासे दिखाई देताहै बादशादने कहा यद्यपि वह पर्बत दूर नहीं परन्तु तेरी परीक्षा को बहुत है वहांतक जा और एक खजूरबृक्षका पत्ता जो उस पर्बतके नीचे लगा है तोड़कर ले आ अभी बादशाह कह न चुका था कि उस हिन्दीने घोड़ेकी गर्दन के निकटका पेंच मरोड़ा तो तत्कालही वह घोड़ा धरती से आकाश की ओर वायुमें बिजली के समान उस पर्बत की ओर उड़ा और दूर होनेकेकारण दृष्टिसे गुप्तहोगया सम्पूर्ण सभासद् इस बिचित्रचरित्र को देख महाआश्चर्य में हुये और वाह२ का शब्द होनेलगा पाव घड़ी के अनन्तर में वह घोड़ा फिर उन्होंने देखा और क्या देखा कि खजूर के बृक्षकी डाली उस हिन्दीके हाथ में है हिन्दी घोड़ेको पृथ्वीपर लाया और वही टहनी बादशाहकोदी बादशाह उसको देख अत्यन्त प्रसन्न और बिस्मत हुआ और उस घोड़ेका मोल पूछा उसने कहा हे स्वामी! मैं इसको नहीं बेंचता परन्तु एक प्रतिज्ञा से इसको मैं आपको भेंट देताहूं कि जो इच्छा मैं आप से करूं उसको स्वीकार कीजिये बादशाहने कहा तू जानताहै कि ईरानदेश अत्यन्त सुन्दर और बसाहुआ है और इसके सम्पूर्ण नगर एक २ देश के तुल्य हैं यहां के अधिपति बादशाहों के सदृश रहते हैं जिस नगरको तू पसन्द करे मैं तुझे उसका बादशाह बनादूं हिन्दीने कहा मुझे धन और नगर आदिक का लोभ नहीं मेरा अभिप्राय कुछ औरहै यदि मेरा अपराध क्षमाहो तो उसे बिनय करूं बादशाहने कहा मैंने तेरा

अपराध क्षमा किया उसने कहा जो आप मेरा बिवाह अपनी पुत्रीसे करें तो मैं आपको यह घोड़ा दूं अभी बादशाहने कुछ उत्तर नहीं दिया था कि उसके सब सभासद् यह बात सुनकर उसपर अत्यन्त कोपित हुये परन्तु बादशाहके भयसे उसे कुछ न कहा और चुपके होरहे इतने में बादशाहका बड़ा पुत्र फ़ीरोज़शाह जो युवराज था इस बातको सुन महाअप्रसन्न हुआ और मनमें सोचा कि इस दुष्ट हिन्दीकी क्या सामर्थ्यहै कि शाहज़ादीसे जो मेरी बहिनहै बिवाहहो यह सोचकर बादशाह से बिनयकी यदि आप हिन्दीकी इस इच्छा को स्वीकार कीजियेगा तो बड़ी जगहँसाई होगी बादशाहने कहा यद्यपि यह बात बड़ी लज्जाकी है पर ऐसा घोड़ा संसारभर में नहीं मिलसक्ता जब फ़ीरोज़शाह समझा कि बादशाह तो इस बातपर प्रसन्नहै कि घोड़े के बदले अपनी कन्याको दे और इस नीच हिन्दी को अपना दामाद बनावे तो उस हिन्दी से कहा भला मैं इस घोड़े पर सवारहो परीक्षा लूं यदि यह मेरी परीक्षा में उत्तम ठहरा तो ख़रीदनेकी इच्छा बादशाहकोहै यह सुन हिन्दीने कहा बहुत अच्छा आप इसपर सवारहो परीक्षा ले लें इतना कह घोड़ेको शाहज़ादे के पास लेगया फ़ीरोज़शाह निश्शङ्क उस घोड़े पर चढ़ा और दोनों पांव अपने रकाबों पर जमाकर घोड़े की गर्दनका पेंच मरोड़ा जैसा कि हिन्दीको मरोड़ते देखा था घुमातेही वह बाण के सदृश आकाश को उड़ा थोड़ेही कालमें वह घोड़ा शाहज़ादे समेत बादशाह और उसकी सभाकी दृष्टिसे लुप्तहोगया तब उस हिन्दीने अत्यन्त चिन्तित होकर बादशाह से बिनयकी कि हे स्वामी! शाहज़ादेने जल्दी की और इतना सावकाश न दिया कि मैं उसे सब कलें बतादूं कि किस पेंचके घुमाने से वह चलता है और किस पेंचसे ठहरजाता है और किससे नीचे को उतरता है एकही कलके घुमाने से कि वह चलता है मुझे देखकर समझा कि केवल एकही कलसे वह घोड़ा सब काम करता है और उसने वह कल कि जिस से वह घोड़ा जहां से कि चलाहै वहीं आताहै मुझ से नहीं पूछा जो ईश्वर न चाहे कोईदुःख शाहज़ादेको पहुँचे तो उसमें मेरा अपराध नहीं बादशाह इसबातको

नम्बर ४८ मुतअ़ल्लिक़े सफ़े ७६२ च· भा·

चित्र शहज़ादे का कलदार घोड़े पर लश्कर में

सुन अतिचिन्ता को प्राप्त हुआ और समझा कि मेरे पुत्रको अवश्य कुछ दुःख होगा इस बातको सोच हिन्दी से कहा तूने क्यों नहीं लौट आनेकी कल मेरे पुत्रको बताई उसने उत्तर दिया आप देखते थे कि शाहज़ादे ने मेरा घोड़ा लातेही निश्शङ्क उसपर बैठकर उड़नेकी कल मरोड़ी जिससे घोड़ा तुरन्त आकाशपर वायुके समान बढ़गया मैंने बात कहनेकाभी सावकाश न पाया कि सब कलों का हाल उसे बतादेता परन्तु एक आशाहै किकदाचित् बहुत दूरजाकर शाहज़ादे का हाथ संयोगसे दूसरे पेंचपर पड़जावे और उसे मरोड़े तो निस्सन्देह वह घोड़ा धरती पर आसक्ता है बादशाहने कहा मैंने माना जो शाहज़ादे को पेंच मिलजावे और वह उसे घुमावे तो ईश्वर जाने वह घोड़ा उसे लेकर पहाड़ पर उतरे अथवा नदी में गिरे हिन्दीने कहा इस बातका आप भय न कीजिये जो वह नदीमें उतरे और उस नदीका पाट चाहे कितनाही चौड़ाहो वह पैरके अपने सवारसहित पृथ्वी पर निकल आवेगा और जिधर उसका सवार चाहेगा उधर उसको लेजावेगा और यह नहीं होसक्ता कि शाहज़ादा उस पेंचको पाकर पर्वत वा बनमें उतरे बस्तीके सिवाय कहीं न उतरेगा बादशाह ने कहा मुझे तेरे बचन का निश्चय नहीं मैं तीन महीने का तुझे सावकाश देताहूं यदि इस समयान्तरमें मेरा पुत्र कुशलसे आया वा मैंने उसके कुशल का समाचार सुना तो अच्छा नहीं तो मैं तुझे प्राण से मरवाडालूंगा इतना कह बादशाहने आज्ञादी कि इस हिन्दी को लेजाकर क़ैद करो तदनन्तर महाशोचित होकर अपने मन्दिरमें गया और नौरोज़ का उत्सव बन्द करदिया॥

अब फ़ीरोज़शाह का बृत्तान्त सुनो कि वह आकाशकी ओर वायुमें ऊंचे होताथा सो एक घड़ी में वह इतना ऊंचाहुआ कि कुछभी धरती न देख पड़ती थी और पर्बत उसको मिट्टी के ढेले के सदृश दीखता था तब उसकी इच्छा हुई कि जहां से मैं चढ़ाहूं वहींपर उतरूं फिर उसने उसी पेंचको कि जिसको पहिले घुमायाथा उलटा मरोड़ा कि वह घोड़ा नीचे को उतरे परन्तु कुछ फल न हुआ किन्तु उस पेंचको चहुँओर घुमाया किसी उपायसे घोड़ा नीचे को न उतरा ऊपरहीको

चढ़तागया फ़ीरोज़शाह इस दशाको देखकर बहुत घबड़ाया और अपनी जल्दी और पेंचों के हाल न पूछने से लज्जित हुआ और कहनेलगा बड़ा खेदहै कि तेरे प्राण ब्यर्थ गये तदनन्तर निराश होकर उसने घोड़े के शिर और गर्दनको भली भांति टटोला निदान बहुत ढूंढ़ने के उपरान्त उसने दाहिने कानके नीचे एक पेंच पाया जिसके मरोड़ने से वह घोड़ा नीचे को उतरने लगा उस समय डेढ़ घड़ी रात बीतगई थी वह उसके उतरने से प्रसन्न हुआ और जाना कि अब प्राण मेरे बचेंगे और इच्छाकी कि किसी नगर अथवा बस्ती में उतरूं निदान वह घोड़ा आधी रातको धरतीपर उतरा फ़ीरोज़-शाह बहुत भूंखाथा घोड़े से तुरन्त उतरपड़ा क्योंकि उसने दिनभर नौरोज़के तमाशे देखनेमें कुछ भोजन न कियाथा सो उतरतेही उसकी इच्छाहुई कि इस जगहका हाल मालूम करूं कि कैसी है फिर उसे मालूम हुआ कि वह किसी बिशाल महलकी छत है जिसके चहुँओर की मुड़ेरें दिब्य संगमर्मरकी बनी हैं तो वह उस छतके चहुँओर घूम कर मार्ग उतरनेका ढूंढ़नेलगा एक ओर को उसने एक सीढ़ी भीतर को पाई जिसके किवाड़का एक पट खुला हुआथा और एक बन्द वहां वह सोचने लगा कि ईश्वर जाने अँधियारे में किसी बैरी से भेंटहो वा किसी मित्रसे फिर सोचा कि मैं यहां किसी को दुःख देने नहीं आया यदि कोई मुझे बिना शस्त्र के देखेगा तो मेरे मारनेकी इच्छा न करेगा इतना सोचकर वह धीरे २ किवाड़ खोलकर दबे पांवों नीचे उतरा तो एक बड़े दालान में पहुँचा पहिले शाहज़ादा वहां कान रखकर सुननेलगा कि वहांके रहनेवालों का हाल मालूम करे परन्तु सिवाय खुर्राटों के शब्द के उसे कुछ सुनाई न दिया फिर वह कई पग आगे बढ़ा उसने दीपक के प्रकाश में देखा कि हब्शी और नौकर कमरों में सोरहे हैं उनको देखकर वह समझा कि यह खोजी किसी मलका के मन्दिर के रक्षकहैं और बास्तव में वहां एक बादशाह की पुत्री रहती थी और उसके सोनेका स्थान उस दालान के पास था और वहां उजियाले में क्या देखा कि उसके द्वारेपर एक महीन रेशमका परदा लटका है वह कुछ और आगे बढ़के उस परदे

के पास ऐसा दबेपांवों गया कि खोजियों को उसके पांव का आहट मालूम न हुआ और उसीप्रकार सोतेरहे फिर उस परदेको उठाकर भीतर गया तो वहां महासुन्दर दालान पाया जिसमें बहुतसी स्त्रियां और लौंडियां अपनी २ शय्यापर पड़ी सोरही हैं फिर जब आगे बढ़ा तो क्या देखा कि एक जड़ाऊ महास्वच्छ छपरखट पर शाहज़ादी सोती है शाहज़ादा उसके रूप छबि अनूप को देखकर मोहित होगया और सोचने लगा यदि यह सुन्दरी मुझपर प्रसन्न होजाय तो अपने को धन्य मानकर इसके पाससे कहीं न जाऊंगा यदि इस सुन्दरीकी प्रीति में मेरे प्राणभी जावें तो शोच नहीं फिर वह उसके पास गया और आस्तीन जो मृगनयनी के दिव्य चन्द्र-मुखपर पड़ीथी धीरेसे उठाकर उसको नयनभर देखनेलगा इतने में वह जागपड़ी और एक परपुरुष को अपनी शय्या के पास जो अ-त्यन्त रूपवान् और शाहीवस्त्र पहिनेहुये है देखतेही भयभीत होगई और अत्यन्त विस्मित होकर चुप होगई फ़ीरोज़शाहने अतिनम्रता पूर्वक विनयकी आप मुझको देखकर भय न कीजिये मैं ईरान देशका शाहज़ादाहूं प्रभातको मैं अपने पिताके पास नौरोज़ के तमाशे में था और इस समय मैं परदेश में हूं जिसमें प्राणका भय है जो तुम्हारी कृपा मुझपर न हो तो निश्चय है कि मैं माराजाऊंगा आशा है कि कृपाकरके मेरी दशापर दयाकर सब उपाधियों से मेरी रक्षा करो वह सुन्दरी जिससे फ़ीरोज़शाहने अपना हाल कहा था बंगाल देश की शाहज़ादी थी और उसकी कई बहिनें उससे छोटी थीं और उस विशाल मन्दिर को बादशाहने मुख्य उसी के लिये बनवाया था निदान उसने फ़ीरोज़शाह का वृत्तान्त सुनकर कहा हे शाहज़ादे! तुम धैर्यरक्खो तुम्हें किसीप्रकार का दुःख न होगा जिस तरह तुम अपने देश में रहते थे उसी तरह यहांभी रहोगे मैं तुम्हारी क्या सहायता करूंगी तुमकोही इतनी सामर्थ्य होगी कि औरों के सहा-यक होगे तुमको केवल मेरेही भवन में अधिकार न होगा किन्तु सम्पूर्ण बंगालदेश में होगा फ़ीरोज़शाहने उसकी बहुतसी प्रशंसा की और उसका गुणानुवाद कर अपना मस्तक धरतीपर रखने लगा

सो शाहज़ादीने रखने न दिया और कहनेलगी कि अब तुम कहो कि तुम्हारा आना यहां क्योंकर हुआ और तुम्हें राजधानीको छोड़े हुये कितना काल व्यतीत हुआ और किस उपाय या मन्त्रके बलसे तुम मेरे मन्दिर में पहुचे और क्योंकर मेरे रक्षकों से बंचकर यहां तक तुम आये जानपड़ता है कि तुम भूंखेहो अब रात्रि है और इस भवनके सम्पूर्ण नौकर और दासियां अचेत सोरहे हैं जो ईश्वर चाहे प्रभात होतेही दासियों को आज्ञादूंगी कि तुम्हें अलग मकान में जाकर रक्खें और वहां सम्पूर्ण बस्तु तुम्हारे लिये तैयार करें जिससे तुम भोजनकर बिश्राम करो मैं दूसरे समय तुम्हारा बृत्तान्त सुनूंगी अभी वह भलीभांति बार्त्ता न करचुके थे कि इतने में मन्दिरकी सम्पूर्ण दासियां जागउठीं फ़ीरोज़शाह को शाहज़ादी के सन्मुख खड़ा देख अत्यन्त आश्चर्य में हुईं और मनमें कहनेलगीं कि यह मनुष्य क्योंकर राक्षसों के पहरे से फांदकर यहां आया कि किसीको ख़बर न हुई और फ़ीरोज़शाह को एक मकानमें लेगईं और उसके आराम करनेके लिये नानाप्रकार की बस्तु रक्खीं और दिव्य शय्या बिछादी और रसोईमें जाकर शीघ्र भोजन पकाया अभी फ़ीरोज़शाहने हाथ पांव न धोये थे कि नानाप्रकारके भोजन वहां तैयार होगये उसने रुचिपूर्बक भोजन किया तदनन्तर उसे शय्यापर लोटाया बंगालदेश की शाहज़ादीभी फ़ीरोज़शाहके रूपअनूपको देखकर मोहित हो गई थोड़ी देर में वह सब दासियां फ़ीरोज़शाह के पास से उठकर शाहज़ादी के पास आईं और भोजन करने का हाल उससे कह सुनाया उनमेंसे कोई दासी शाहज़ादी की बहुत मुँहलगी थी उसने शाहज़ादे के रूपकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा यदि ऐसे सुन्दर और नवकिशोर से तुम्हारा बिवाह हो तो क्या अच्छी बातहै शाहज़ादी इस बातको सुन मन में अतिप्रसन्न हुई प्रकटमें कहनेलगी चुपरहो बृथा मत बको अपनी जगहपर जाकर सो रहो और मुझेभी सोने दो यह कहकर वह सोरही शाहज़ादी प्रभात को उठतेही बहुकाल पर्य्यन्त दर्पणमें अपना मुख देख शृङ्गार करतीरही उसने अपने दिव्य भुजङ्गी लटों में मोती पिरोकर अतिशोभायमान हीरे और मोतियों

की माला अपने गलेमें डाली और बहुमौल्य बाजूबंद अपनी भुजा में पहिना और रत्नमयी पटका कमरमें बांधा और बहुतभारी रेशमी वस्त्र जो हिन्दुस्तान में केवल शाहज़ादी के लिये बनताथा पहिना निदान दिव्य वस्त्र भूषणादि से उसका रूप महासुन्दर कामदेवकी स्त्री के समान होगया जब वह अपना शृङ्गार करचुकी तो एक लौंड़ी के द्वारा शाहज़ादेको कहलाभेजा कि तुम यहां आनेकी इच्छा न करना मैं आपही तुम्हारे पास आती हूं उधर फ़ीरोज़शाह ने भी जगकर और वस्त्र पहिनकर दासियों से पूछा कि शाहज़ादी अभी जगी हैं वा नहीं मुझे बतलाओ कि मैं उनके पास जाना चाहताहूं दासियों ने कहा आप श्रम न कीजिये वह आपही आतीहोंगी फिर शाहज़ादी शाहज़ादेके पास आई और उसकी कुशल पूछ परस्पर देखकर अति प्रसन्नहुये शाहज़ादेने कहा मैंने रात्रिका आकर तुम्हारी निद्रामें विघ्न किया सो मेरा अपराध क्षमाकीजिये उसने कहा मुझे इस बातसे कुछ रंज नहीं किन्तु तुम्हारे दर्शन करके मैं बहुत प्रसन्न हुई अब कहो कि क्योंकर अपने देशसे यहां आये और रात्रिको किसभांति मेरे मन्दिरतक पहुँचे किसीकी सामर्थ्य नहीं कि मेरी आज्ञा बिना मुझ तक पहुँचे मुझे तुम्हारे हाल के सुनने की अतिलालसा है फ़ीरोज़-शाह इसभांति बिस्तारपूर्वक अपना हाल कहने लगा कि कल मैं नौरोज़ के उत्सव में था सब कारीगर और शिल्पी अनेक भांतिकी वस्तु लेकर मेरे पिताकी सभा में जो फ़ारसका बादशाहहै उपस्थित थे सो एक कारीगर हिन्दुस्तानका बासी एक कलका घोड़ा बनाकर लाया और मेरे पिता से कहने लगा कि यह घोड़ा केवल कल से उड़ता है सो बादशाह ने उसका उड़ना देखकर इच्छाकी कि जिस मोल का हो लेलें इसलिये हिन्दी से पूछा इस घोड़े का क्या मोल है उसने कहा कि इस घोड़ेको एक बातपर देताहूं कि आप मेरा बिवाह अपनी पुत्रीसे करदें सभासद् इस बातको सुनकर उसकी निर्बुद्धिता और ढिठाईपर बहुत हँसे और मुझेभी उसकी इस इच्छा से बहुत दुःख हुआ और बादशाहको उस घोड़ेकी अधिक लालसा पाकर समझा कि ऐसा न हो जो बादशाह हिन्दी की इच्छा स्वीकार करे

इसलिये इस बिषय में मैंने बादशाहको बहुत समझाया कि इस घोड़ेके कल और पुर्जों को इस हिन्दीके सिवाय कोई नहीं जानता जबतक और आदमी न जाने तबतक यह घोड़ा कुछ कामका नहीं हिन्दीने कहा ऐसा नहीं है किन्तु जो मनुष्य चाहे उसपर सवार होकर परीक्षा लेले उस समय बादशाहने मुझसे कहा तूही चढ़कर इसका हाल मालूम कर सो बादशाहकी आज्ञानुसार कल मालूम करनेके बिना उसी पेंचको घुमाया जिससे घोड़ा बहुत ऊंचे आकाशकी ओर उड़ा वह कल मैंने उसके कारीगरी से सीखीथी वह घोड़ा इतना ऊंचेको उड़ा कि पृथ्वी मुझे न दिखाई देतीथी जब आकाश से जाकर मिला तो उस समय मैं अत्यन्त भयवान् हुआ और इच्छाकी कि किसी भांति घोड़ा नीचेको उतरे तो उस कीलको उलटा फेरनेलगा परन्तु कुछ लाभ न हुआ ऊपरकोही चलाजाता था निदान बहुत ढूंढ़कर दूसरी कीलको मरोड़ा सो उसके मरोड़ने से वह घोड़ा नीचे उतरनेलगा इतने में रात होगई मैं बहुत भयभीतथा कि न जानिये यह घोड़ा मुझे कहां उतारे संयोगसे वह तुम्हारे भवनकी छतपर ले उतरा वहां एक सीढ़ी देखी जिसके किवाड़ का एक पट खुलाहुआथा और एक बन्द मैं उस सीढ़ी से धीरे २ नीचे को आया वहां मैंने झिलमिलाता प्रकाश देखा और सब खोजियोंको सोतेहुये पाया अपने सामने के मकान में बहुत उजियाला देखा जिसके दरवाज़ेपर रेशमीपरदा लटक रहाथा यद्यपि मुझे वहां बहुत भय हुआ कि कोई खोजी जगकर मुझको देखेगा तो निस्सन्देह मारडालेगा तथापि आगे बढ़ा और समझा कि उस स्थानपर अवश्य कोई शाहज़ादी सोतीहोगी फिर तो सब आपको मालूमहै और जो आपने ऐसे समय मुझपर कृपाकी उसका सहस्र जिह्वा से गुणानुबाद नहीं करसक्ता अब मैं मन बचन से तुम्हारा सेवकहूं और मनके विशेष और कोई वस्तु मेरे पास भेंट देनेको नहीं है परन्तु कठिनता यह है कि वहभी मेरे अधिकारमें नहीं उसे भी तुम्हारी प्रीतिने आकर्षण करलियाहै अब जो कुछ मुझे आज्ञा हो उसे करूं शाहजादी यह प्रीतिकी वार्त्ता सुन अत्यन्त प्रसन्नहुई

और इकबारगी उत्तर दिया तुमने अपना अतिबिचित्र बृत्तान्त सुनाया और मुझे प्रसन्न किया अब तुम बताओ कि तुम बहुधा इस घोड़ेपर सैर करतेहोगे संयोगसे आज मेरे यहांभी आनिकले इससे तुम्हारे बचनपर बिश्वास करना और अपने मनको तुमसे लगाना बृथाहै और ईरानदेश तुम्हारी जन्मभूमिहै तुम्हें वहां जानेकी अवश्य लालसा होगी फ़ीरोज़शाहने हरएक प्रश्नका उत्तर यथार्थ देकर अपनी ओरसे उसे धैर्य दिया इतने में एक दासी ने आकर कहा कि भोजन तैयार है शाहज़ादी फ़ीरोज़शाहका हाथ पकड़कर लेगई और उसको बैठाया और आपभी उसके सन्मुख जाबैठी यद्यपि शाहज़ादीके भोजनका समय न था परन्तु यह बिचारकर कि रात्रिको फ़ीरोज़शाहने भलीभांति भोजन नहीं कियाहोगा आपभी उसके मनरखनेको भोजन करनेलगी दासियोंने अतिस्वच्छ पात्रों में अनेक प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन परसे जब वह खानेलगे तो उसी समय सब बांदियां जो महारूपवान् थीं मिष्टस्वरोंसे गान करनेलगीं और नानाभांति के दिब्य बाजन बजानेलगीं और शाहज़ादी अत्यन्त प्रीतिसे फ़ीरोज़शाहको भोजन कराती और परस्पर के हावभावसे दोनोंका हृदय कामरूपी अग्निसे दहकता जब भोजन से निश्चिन्त हुये तो शाहज़ादी उसे पकड़के और कमरे में लेगई जिसमें अतिशोभायमान सुनहली और लाजवर्द की अति बिचित्र चित्रकारियांथीं और उसकी सम्पूर्ण सामग्री सुनहली रुपहली बस्तुकीथीं वह दोनों एक दिब्य दालानमें जाकर बैठे जिसके सन्मुख महासुन्दर पुष्पबाटिका थी जिसमें अनेक भांतिके रंगोंके फूलोंकी लपटसे मनुष्योंका मन लोभता और ठौर ठौर पर मिष्ट फलोंके घने बृक्ष फलेहुये जिनपर भांति भांतिके पक्षी मीठी मीठी बाणीसे बोला करते फ़ीरोज़शाह उस बाटिका और दिब्य सामग्री को देख महाप्रसन्न हुआ और कहनेलगा मैं जानताथा कि जो जो भवन और बाग हमारे फ़ारसदेशमें हैं वैसे पृथ्वीमण्डल में न होंगे परन्तु अब सूचित हुआ कि वहांके सब मन्दिर इसके सामने तुच्छहैं शाहज़ादीने कहा यह भवन जिसकी तुम प्रशंसा करतेहो

ऐसा उत्तम नहीं यदि मेरे पिताका भवन जो यहांका बादशाह है देखोगे तो निस्सन्देह प्रसन्न होगे तुम मेरे पितासे अवश्य भेंट करो वह तुम्हारा भलीभांति सत्कार करेगा फ़ीरोज़शाहको इस बातके सुननेसे राजमन्दिरके देखनेकी अतिलालसा हुई और शाहजादी का यह बिचारथा कि जब उसका पिता ऐसे रूपवान् और सुशील शाहज़ादेको देखेगा तो अतिप्रसन्न होगा और मुझे उसे बिवाह देगा और फ़ीरोज़शाह कई दिन उसके पास रहा उसका मन वहां ऐसा लगा कि और जगहपर जानेका उद्योग न करताथा फिर इस हेतु वहांके बादशाहके निकट न गया एक दिन फिर शाहज़ादीने अपने पिताके निकट जानेकी रुचि दिखाई परन्तु फ़ीरोज़शाहने कुछ सोच बिचार उससे कहा कि हे सुन्दरी! जो कुछ तुम कहतीहो मुझे स्वीकारहै परन्तु बादशाही सामग्री बिना ऐसे चक्रवर्ती बादशाहके पास जाना उचित नहीं यद्यपि वह मेरे कुलका नाम सुन प्रसन्न होगा परन्तु इस दशामें मैं उसकी दृष्टिमें तुच्छ होजाऊंगा शाहज़ादी ने कहा यहां सब कुछ उपस्थित है इस जगह बहुत से ब्यापारी तुम्हारे देश और जातिकेहैं तुम उनसे सब सामग्री जो कुछ तुमको आवश्यकहो मोललो और एक अलग मन्दिर में रहकर अपनी प- दवी समान सामग्री इकट्ठी करो उसने कहा बहुत अच्छा अब एक अभिलाषा यहहै उसे मन लगाके सुनो कि मुझे अपने पिता का हाल मालूम नहीं कि उसकी मेरे बियोग में क्या दशा हुई मुझे अत्यन्त भयहै कि ऐसा न हो जो शोकके कारण उसका देहान्त हो- जावे इसलिये आपकी कृपासे आशाहै यदि प्रसन्नतापूर्बक मुझे आज्ञा दो तो तुरन्त जाकर अपने पितासे भेंट करूं और उनको धैर्य दूं और बिवाहको जो तुम्हेंभी स्वीकारहै अपने पितासे बर्णन करके उनसे आज्ञा लेआऊं शाहज़ादीने यह बचन सुन पसन्द किया परन्तु उसी समय यह बिचार पैदाहुआ यदि यह शाहज़ादा फिर अपने देशसे न आवे और अपने माता पिताकी प्रीतिमें वहीं रह जावे और मुझे अपने बिरहमें तड़पता छोड़े तो मैं उसका क्या करसकूंगी इससे उत्तमहै कि थोड़े दिन और यहां इसे रखना

चाहिये कदाचित् यहां रहनेसे मुझसे प्रीति अधिकहो और अपने देशमें जानेका उद्योग न करे निदान यह बिचार मनमें ठान फ़ीरोज़-शाहसे कहा कि थोड़े दिन और ठहर जाइये उसने स्वीकार किया फिर बहुत काल पर्यन्त फ़ीरोज़शाह शाहज़ादीके साथ रहकर नाना भांति के तमाशे देखता और मनमानता आनन्द उठातारहा और प्रतिदिन बनमें जाकर अहेर खेलता और शाहज़ादी उसके मन बहलानेको नक़्लें दिखाती और सन्ध्या को उसी दिव्य मन्दिरमें जिसमें नाना भांतिके अतिसुन्दर बिछौने और उत्तम २ तकिये रक्खेहुये थे आनन्द भोगते और हरएक प्रकार की बार्त्ता करते बहुधा फ़ीरोज़शाह फ़ारसदेशके कोषों और सेनाका बर्णन करता जब दो महीने बीते उसका मन शाहज़ादी के प्रेम और अमृत-रूपी बातोंमें ऐसा फँसा कि उसका बियोग क्षणमात्र उसको न सुहाता बहुत काल के पश्चात् उसने अपने पिताका स्मरण कर शाहज़ादी से जानेके लिये आज्ञा मांगी और कहा यदि तुमको मेरे बचन पर निश्चय न हो तो तुमभी मेरे साथ चलो वह इस बात से प्रसन्न हुई दूसरे दिन रातको जब सारे मन्दिर के नौकर और दासियां सो गईं तब फ़ीरोज़शाह शाहज़ादी को छतपर लेगया और उसको अ-पने आगे घोड़ेपर चढ़ालिया और घोड़ेका मुख फ़ारसदेशकी ओर कर चलनेके पेंचको घुमाया सो वह घड़ी भरमें शीराज़में जो फ़ारस की राजधानीहै जायपहुँचा फ़ीरोज़शाह न तो अपने मन्दिरमें उतरा और न अपने पितासे मिलनेको गया किन्तु एक ग्राममें जो शीराज़ के पास था घोड़ेसे नीचे उतरा और शाहज़ादीको एक बादशाही महलमें जो उस गावँ में बनाहुआथा उतारा और शाहज़ादी से कहा अब मैं जाकर अपने पितासे तुम्हारे आनेका समाचार देकर तुम्हारे पास चला आताहूं फिर उस मन्दिरके प्रबन्धक को आज्ञादी जो २ बस्तु शाहज़ादीके लिये आवश्यकहों संग्रहकर और एक घोड़ा मेरेलिये ला और दिव्यपात्रों में स्वादिष्ठ पाक लाकर शाहज़ादीको भोजनकरा मैं अभी शीराज़से लौटकर आताहूं यह आज्ञा प्रबन्धक को दे घोड़ेपर सवार हुआ मार्गमें पुरबासी उसे देखकर प्रसन्न होते

क्योंकि वहांके रहनेवाले उसके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करते कि ईश्वर उसे कुशलपूर्बक यहां पर पहुँचावे जब शाहज़ादा अपने पिताके पास गया तो बादशाहको उसके देखनेसे अतिप्रसन्नता हुई और महाप्रीतिसे अपने कण्ठमें लगाया और अत्यन्त हर्षसे बहुत रोया और बृत्तान्त पूछा उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया तदनन्तर बंगाल देशकी शाहज़ादीका हाल बर्णनकर कहा मैं उसे अपने साथ बिवाह करनेकी प्रतिज्ञाकर कलके घोड़ेपर लाया हूं और अमुक गावँके मन्दिर में उसको छोड़कर पहिले आप आया कि आपकी आज्ञा पाकर उसे सन्मानपूर्बक लेआऊं इतना कह फ़ीरोज़शाह अपने पिताके चरणों पर गिरपड़ा और उसको लाने और उसके साथ बिवाह करनेकी आज्ञा मांगी बादशाहने उसको अपने चरणोंसे उठाकर फिर अपने हृदयसे लगाया और कहा हे पुत्र ! मैं तुम्हें केवल बिवाह करनेकी आज्ञा नहीं देता किन्तु मुझे इच्छा है कि मैंही जाकर उसका सत्कार करूं और फिर उसको सवार करके अपने मन्दिर में लाऊं और आज सब रीतें बिवाहकी करूं फिर बादशाहने आज्ञादी कि मेरी सवारी शीघ्र तैयारहो और सब मनुष्य खुशी करें और बिवाहके बाजे बजें और आज्ञा दी कि उस हिन्दीको जो क़ैद मेंहै मेरे सामने लाओ सो उस हिन्दी को तत्काल बादशाहके निकट लेगये बादशाहने उससे कहा यद्यपि तू मारडालने के योग्यथा परन्तु ईश्वरका धन्यवाद कर कि मेरा पुत्र मुझसे कुशलपूर्बक मिला इस लिये मैंने अब तुझे छोड़दिया इसी समय अपना घोड़ा लेकर यहां से चलाजा फिर कभी मेरे पास न आइयो उस हिन्दी ने बंदीखाने से निकलतेही सुना था कि फ़ीरोज़शाह उस घोड़े पर एक शाहज़ादी महारूपवती अपने साथ लायाहै और उसे अमुक गावँ में बादशाहके महलमें छोड़कर आप अकेला यहां आया बादशाह ने वहां जाने की तैयारी कीहै कि उस गावँमें जाकर शाहज़ादी को ले आयें सो हिन्दी बादशाहके जाने के पहिले उस गावँको चला और उस भवनके प्रबन्धकसे जाकरकहा कि बादशाह और फ़ीरोज़शाहने मुझे बंगाले की शाहज़ादी के लेजाने के लिये आज्ञा दी

है कि उस कलके घोड़ेपर उसको सवार करके लेजाऊं अब वह दोनों शाहज़ादी की बाट देखतेहैं क्योंकि बादशाहकी इच्छा है कि इस घोड़ेके चरित्रको सब शीराज़के बासीभी देखें प्रबन्धक उसके क़ैदके छुटने का हाल तो सुनचुकाथा उसकी बातको निश्चय समझा और उस शाहज़ादीके पास लेजाकर कहा कि बादशाहने तुम्हारे लेजाने के लिये इस मनुष्यको भेजाहै वह प्रसन्न होकर जाने के लिये तैयार हुई वह हिन्दी पहिले आप कलके घोड़ेपर सवार हुआ फिर शाहज़ादीको अपने आगे बैठाकर कलको मरोड़ा सो वह घोड़ा आकाशकी ओर उड़ा और उसी क्षण बादशाहभी बड़ी धूम-धामसे उस गावँकी ओर चला उस समय फ़ीरोज़शाहकी यह इच्छा हुई कि बादशाहके पहुँचनेके पहिले शाहज़ादीको बादशाहके पहुँ-चनेका समाचार दें कि वह चलनेकी तैयारी करे जब वहां पहुँचा तो प्रबन्धकसे शाहज़ादीके लेजानेका हाल सुन महादुःखित हुआ जिसका वर्णन नहीं होसक्का और बादशाह और सभासद् इस समा-चार को सुन अतिव्यथित होय अपने महलको लौटगये परन्तु फ़ीरोज़शाह बहुतकाल पर्यन्त मूर्च्छित रहा जब सुधि सँभाली तो उसी समय प्रबन्धकने आकर फ़ीरोज़शाहके चरणोंपर शिर रक्खा और कहा इस सेवकसे यह अपराध अज्ञानतामें हुआ अब जो चाहिये दण्ड दीजिये फ़ीरोज़शाहने उससे कहा उठ तुझसे मेरीही ग़फ़लत से अपराध हुआ अब बिलम्ब मतकर शीघ्र मेरे लिये यो-गियों के वस्त्र ला उस मन्दिरके पास एक योगी और उसके कई चेले रहतेथे सो रक्षकने जाकर कहा कि बादशाह एक रईससे अप्र-सन्न हुआ है और उसकी इच्छाहै कि उसे पकड़कर मारडालें सो वह ऐसी दशामें अप्रतिष्ठाके कारण मुझसे कहनेलगा यदि मुझे योगियोंके वस्त्र मिलें तो मैं बेषबदल इस नगरसे निकलजाऊं सो उस योगीने अपने वस्त्र उसे दिये वह लेकर फ़ीरोज़शाहके पास लाया फ़ीरोज़शाह उन वस्त्रों को पहिन और अपने बेषको बदल और उत्तम २ रत्नों का सन्दूक़चा राहख़र्चके लिये लेकर रात्रिको अँधियारेमें वहांसे बन को चला और मनमें यह ठाना कि जबतक

बंगालेकी शाहज़ादी मुझे न मिलेगी तबतक इधरको मुख न करूंगा अब यहांसे उस हिन्दीका हाल बर्णन करतेहैं कि उस कलके घोड़े ने दो अथवा तीन घड़ीके समयमें उनको कश्मीरकी राजधानी में पहुँचादिया उस समय उस हिन्दी को भूखलगी और समझा कि शाहज़ादीभी भूखी होगी फिर वह सघन शीतल छायादार बृक्षों के नीचे जहां निर्मल जलका दिब्य सरोवरथा उस घोड़े परसे उतरा और भोजनकी कोई बस्तुके ढूंढ़ने के लिये एक ओरको गया उसके जानेके उपरान्त शाहज़ादी महाकुरूप मनुष्यके अधिकारमें अपने को देखकर अतिचिन्तित हुई और उसे इच्छा हुई कि किसी भांति मेरा पतिब्रतधर्म बचे और कहीं जाकर उससे छिपें परन्तु बहुत देर से भोजन न कियाथा और मार्गके श्रमसे निर्बलता के कारण इतनी सामर्थ्य अपनी देहमें न पाई कि वहांसे उठकर छिपे और ईश्वरसे प्रार्थना करतीथी कि मरजाऊं निदान वह इन्हीं बिचारोंमें थी कि इतनेमें हिन्दीने आकर उसे कुछ भोजन कराया भोजनके उपरान्त उस दुष्टने उससे भोगकी इच्छा की जब उस पतिब्रताने इन्कार किया तब वह दुष्ट उसे धमकानेलगा और उस मारनेलगा वह बिचारी लाचार होके चिल्लाने और रोनेलगी उसके रोने से उस बनमें कोलाहल मचगया संयोगबश मनुष्यों के बड़े सवारों के समूह ने आकर उन दोनों को घेरलिया वह सवार कश्मीर के बादशाह के साथथे जो अहेर खेलकर लौटते समय शाहज़ादीके भाग्यसे उधर को हो निकले और रोनेका शब्द सुनकर वहां दौड़े आये निदान कश्मीरके बादशाहने हिन्दीसे पूछा तू कौनहै और तेरा क्या नाम है और यह स्त्री तेरी कौनहै और इसके आंसू क्यों नहीं थमते हैं उस हिन्दी ने कड़े होके कहा यह मेरी जोरू है किसीको क्या सामर्थ्य है कि हम दोनोंमें बोलसके शाहज़ादीने कश्मीर के बादशाह से कहा ईश्वर तुमको केवल मेरे धर्मके बचानेके लिये लायाहै यह झूठा है इसकी बातको निश्चय न करना ईश्वर मुझे इसकी स्त्री न बनावे यह जादूगर मुझे फ़ारसके शाहज़ादेके घरसे चुराकर जादू के घोड़ेपर बैठाकर लेभागा है बादशाहको उस शाहज़ादी के रोने

पर दया आई और उसके रूप अनूप चन्द्रमुख को देख आश्चर्य में हुआ और उसके बचनपर बिश्वासकर सवारोंको आज्ञादी कि इस दुष्टको ऐसे कुकर्म के पलटे बध करडालो सो उसीसमय सवारों ने उस हिन्दीका शिर तनसे काटडाला अब वह शाहज़ादी एकसे छूट दूसरेके फंदेमें पड़ी फिर कश्मीरका बादशाह उसको एक घोड़ेपर सवारकरा अपने नगरमें लेगया और महाबिशाल भवन उसके रहनेके लिये नियत किया और बहुतसे दास, दासियां उस की सेवाको दीं और उसको बहुत धैर्य देकर कहा हे सुन्दरी! तुम थकी मालूम होतीहो इसलिये बिश्राम करो इतना कह बादशाह चलागया शाहज़ादी ऐसे अयोग्य और दुष्ट मनुष्य की संगति से अतिचिन्ताको प्राप्तहुई थी आराम पाकर सोरही जब जगी तो सोचनेलगी कि कश्मीरके बादशाहने प्रयोजन बिना मुझे उस दुष्टसे छुड़ाया और मेरा भलीभांति सत्कार किया दो तीन दिनके उपरान्त बादशाहने उससे विवाहकी इच्छा की और तैयारी करनेकी आज्ञा दी और चारों ओर नौबतें बजने लगीं और सल्तनत भरमें यह समाचार फैलगया कि हर मनुष्य अपनी शक्तिभर तमाशा देखकर खुशी करे जब बादशाहको यह इच्छा हुई कि बंगालेकी शाहज़ादी से जाकर यह कहें कि वह शृङ्गार कर मेरे आगमनकी बाट देखे इतनेमें शाहज़ादीकी आंखें बाजोंके शब्दसे खुलगईं उसने दासियों से पूछा बाजे क्यों बजतेहैं उन्होंने कहा तुम्हारा बिवाह बादशाहके साथ होगा यह सब उसकी धूमहै इतना सुनतेही शाहज़ादी मूर्च्छा खाकर गिरपड़ी बांदियोंने यह दशा देखकर बादशाह कश्मीरको यह हाल कह सुनाया वह सुनतेही उसकी औषध आदि यत्न करने लगा पर शाहज़ादी उसी दशामें पड़ी रही जब चैतन्य हुई तो उस ने मरनेकी इच्छा की क्योंकि उसको फ़ारसके शाहज़ादे के सिवाय किसीसे बिवाह करनेकी इच्छा न थी तदनन्तर उसने आपको बिक्षिप्त बनाया और बादशाहको हज़ारों गालियां देनेलगी और धाधाकर मारनेलगी बादशाह उसकी यह दशा देखकर अत्यन्त चिन्तित हुआ और उसके पास से उठकर बाहर आया और

दासियोंको आज्ञा दी इसका घड़ी २ का हाल मुझसे कहो और यह समझा कि इस सुन्दरीको कोई भूतबाधा हुई है इसलिये आज्ञादी कि बैद्य और फूंकने और झाड़नेवाले आवें और इस शाहज़ादी को हज़ार यत्न और मन्त्र इत्यादिसे चंगा करें पहिले नगरके बैद्यों ने उसकी औषध की फिर सब सयानोंने यत्न आदिक किये और नाना प्रकारके अभिमन्त्रित जल पिलाये और धूनी दी पर वह कुछ अच्छी न हुई किन्तु सन्ध्याको औरभी उसकी बुरी दशा होगई जिस से बादशाह रात्रिभर बेचैन रहा दूसरे दिन प्रभातको भी वही दशा उसकी रही तो बादशाहने यह इश्तिहार दिया जो कोई शाहज़ादी को अच्छा करेगा तो उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा फिर बैद्यों ने परस्पर सम्मतकर बादशाहसे बिनय की यदि यह रोग शाहज़ादी को नवीन उपजाहोगा तो निस्सन्देह साध्यहै यदि प्राचीनहै तो असाध्य होगा यह बात बिना देखे रोगीके स्पष्ट बिदित नहीं होसक्ती बादशाहने खोजियोंको आज्ञा दी कि इन बैद्योंमें से एक अथवा दोको लेजाकर शाहज़ादीकी नाड़ी दिखाओ वह लेजानेलगे शाहज़ादी यह बात सुनकर मनमें बिचारनेलगी यदि बैद्य मेरी नाड़ी देखेंगे तो उनको मालूम होगा कि मुझे कुछ रोग नहींहै मक्कर से बिक्षिप्त बनगई है तो मेरी बनावटका हाल खुलजावेगा अब ऐसा हाल अपना बनाना चाहिये कि कोई मेरे पास न आसके जो कोई उसके पास जाता तो वह उसको काटने और मारने दौड़ती इस भयसे कोई उसके पास न जासक्ता फिर उन सब बैद्योंने यह दशा देख नाड़ीके देखे बिना अनेक भांतिकी औषध और क्काथ बिक्षिप्तताको हटानेवाले उसके पीनेको दिये शाहज़ादी उन्हें तत्काल पीजाती फिर वह मनुष्योंके दिखानेके लिये बिक्षिप्त बनजाती और एकान्तमें अच्छी होजाती निदान बादशाहने देश देशके बैद्य शाहज़ादी के लिये बुलाये परन्तु किसीसे वह अच्छी न हुई और फ़ीरोज़शाह योगियों के बस्त्र पहिन अपना बेष बदल बंगाल देशके नगर २ ढूंढ़ता फिरता और उसके सब अङ्ग सूखगये इसीभांति घूमता २ एक नगरमें पहुँचा जो हिन्दुस्तानसे सम्बन्धितथा उसने

वहांके निवासियोंसे सुनाकि कश्मीरमें एक बंगालदेशकी शाहज़ादी है जिससे वहांका बादशाह विवाह करना चाहताहै वह ऐसी विक्षिप्त होगईहै कि किसी भांति अच्छी नहीं होती यह सुनतेही फ़ीरोज़-शाह समझगया कि वही शाहज़ादी है जिसको मैं ढूंढ़ता यहांतक पहुँचा तो वहांसे सिधारा और बहुतसा मार्गका कष्ट उठाकर कश्मीर में जा पहुँचा और एक सराय में जा उतरा और दिनभर शाह-ज़ादीका हाल सुनाकिया और उसकी यह भी इच्छाहुई कि उस हिन्दी दुष्टका हाल जो शाहज़ादी को लेभागाथा मालूम करे परन्तु उसका वृत्तान्त किसीने उसे न सुनाया फिर वह समझगया कि शाहज़ादी ने अपने बचावके लिये यह उपाय कियाहोगा निदान फ़ीरोज़शाहने योगियों के वस्त्र उतार साङ्गोपाङ्ग बैद्योंके वस्त्र जैसा कि उस देश में प्रचार था पहिनलिये और दूसरे दिन वह बैद्योंकी भांति गलियोंमें फिरने लगा एक दिन बादशाहको दरवाज़े पर जा-कर उसके रक्षकसे कहा कि मैं शाहज़ादीको अच्छा करनेके लिये बहुत दूरसे आयाहूं उसने घृणासे उत्तर दिया अपना मुख तो देख तू क्या शाहज़ादीको अच्छा करेगा हज़ारों बुद्धिमान् बैद्योंसे तो कुछ बन न आया तुझसे क्या होसकेगा उसने कहा मैं कुछ बाद-शाहसे नहीं मांगता केवल भाग्य की परीक्षाके लिये यहां आयाहूं और बहुतसी लाभकारी औषधोंको मैं जानताहूं रक्षकको उस पर दया आई और उसको ठहराकर बादशाहसे जो शाहज़ादीके अच्छे होनेसे निराश होचुकाथा जाकर विनती की कि एक बैद्य बहुत दूरसे आयाहै और उसके पास बहुत अच्छी दवाइयां हैं इतना सुनते ही बादशाहने आज्ञा दी उसको मेरे पास लाओ सो वह बादशाह के पास गया बादशाहने सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे वर्णन करके कहा वह अपने पास किसीको आने नहीं देती परन्तु तुम उसे दूरसे देख करके औषध ऐसी दो जिससे वह अच्छी हो इतना कह उसे एक मकानमें जो शाहज़ादीके भवनमें लगा हुआथा लेगया फ़ीरोज़शाह ने उस मकानमें जाकरदेखा कि शाहजादी अपनी अभाग्यताके गीत गा रही है जिसके सुननेसे मनुष्य का मन फटजाताहै फ़ीरोज़शाह ने

उसे देखकर पहिचाना और ध्यान धरकर देखा कि उसने अपनेको विक्षिप्त बनायाहै वास्तव में उसे कोईभी रोग नहीं तदनन्तर शाहज़ादेने उस मकानसे आके कहा कि मैंने उसे भलीभांति देखा उस का रोग साध्य है यदि आज्ञा हो तो मैं उससे कुछ पूछूं और हाल मालूम करनेके उपरान्त यत्न उसका अतिसुगम होजावेगा क्योंकि फ़ीरोज़शाह भलीभांति जानताथा कि मेरा शब्द सुनतेही अपनी बनाई हुई विक्षिप्तता को छोड़ देगी और जो मैं कहूंगा वही करेगी बादशाहने आज्ञा दी कि उस मकानका किवाड़ खोलदो और इस बैद्य को उसके पास जाने दो जब शाहज़ादा उस मकानमें गया तो शाहज़ादी उसे बैद्यके बेषमें देख क्रोध करने और गालियां देनेलगी परन्तु वह न हटा और उसके पास चलागया निदान नम्रतापूर्वक धीरे से उससे कहा " बैद्य नहीं हूं मैं फ़ीरोज़शाह फ़ारस देशका शाहज़ादा हूं तेरे लिये मैंने अपनी यह दशा बनाई यद्यपि शाहज़ादेने अपना वेष बदला और लम्बी दाढ़ी रक्खी हुईथी पर वह शब्द और रूपसे पहिचानकर सावधान होगई और अति प्रसन्न होकर उसका मुख देखनेलगी जैसे कि कोई मनुष्य किसी बस्तुकी इच्छा करे और उसे बहुकाल के उपरान्त अतिपरिश्रम कर पावे फिर फ़ीरोज़शाहने उससे सब हाल पूछा और अपना बृत्तान्त भी संक्षेप में वर्णन किया कि नगर २ देश २ फिर तेरा यहां ठिकाना लगा अब प्रसन्नहो मैं तुझे यहां से निकाल लेजाऊंगा शाहज़ादी ने यह बृत्तान्त सुन कहा कि मैंने अपने धर्म के बचाने के लिये यह उपाय किया उसका सब हाल सुन फ़ीरोज़शाह ने कहा तुझे मालूम है कि उस कलके घोड़ेको बादशाहने कहां रक्खाहै उस ने कहा मैं नहीं जानती फ़ीरोज़शाहने बिचारा कि बादशाहने उस घोड़ेको रक्षापूर्वक रक्खाहोगा फिर उसे धैर्य देकर कहा अब तुझे यह उचितहै कि तू अच्छी बनजा कि बादशाह जाने कि तू मेरी दवा से अच्छी हुई इस कारण जो कुछ कहूंगा वह मानेगा उसने कहा अच्छा दूसरे दिन शाहज़ादी बस्त्र बदल अपनी सुधिमें आई और सबसे भली भांति यथोचित ब्यवहार करनेलगी बादशाह उसको

...लीचंगी देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वैद्यकी बहुतसी प्रशंसा ... फीरोजशाहने जो कुछ उचितथा कहकर कहा यह बंगालदेशकी ...ज़ादी क्योंकर यहां आई प्रयोजन उसका इसके पूछने से यह ... कि बादशाह कलके घोड़ेका बृत्तान्त बर्णन करे परन्तु बादशाह ...के अभ्यन्तरको कुछ न समझा निदान उसने शाहज़ादीके आगमनका हाल जैसा फ़ीरोज़शाहसे शाहज़ादीसे सुनाथा कहा और यहभी कहा घोड़ा काष्ठका जो उसके पास रक्खा हुआथा मैंने उसे रक्षापूर्वक रखदिया है शाहज़ादेने यह सब सुनकर कहा इससे मालूम होताहै कि यह शाहज़ादी उस जादूके घोड़ेपर चढ़के आईथी उतरते समय उसे कोई सुगन्ध और धूनी नहीं दीगई इसी कारण उसे प्रेतबाधा हुई यद्यपि मैं उसे जादूके बल सुधिमें लाया परन्तु अभी वह भली भांति अच्छी नहीं हुई यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि वह अच्छी होजाय और फिर कभी उसे भूतबाधा न हो तो आप सब नगरनिवासियों को बड़े मैदान में इकट्ठा कीजिये और उस जादूके घोड़ेको भी वहां मँगवाइये कि मैं शाहज़ादी को उसपर चढ़ाकर उसे धूनी दूं कि कदापि बीमार न हो परन्तु उस दिन शाहज़ादी को उत्तम २ वस्त्र पहिनने उचितहैं बादशाहने अपने सम्पूर्ण सभासदों को आज्ञा दी कि जिस बातकी यह वैद्य आज्ञा करे उसे तुरन्त प्रतिपालन करो निदान दूसरे दिन कलके घोड़े को उठा लाके एक बड़े मैदान में जो राजभवन के आगे था रक्खा और डौंड़ी पिटवाई कि नगर के सब लोग अमुक मैदान में इकट्ठे हों और सेना भी घेरा बांधकर खड़ी हो जब नगरबासी इकट्ठे हुये और बादशाहका कटक भी वहीं आया तो वैद्यने आज्ञा दी कि किसीको उस घोड़ेके पास न जानेदेना और बादशाहभी अपने डेरे में विराजमानहो और उसके चारों ओर सम्पूर्ण सभासद् खड़ेहों और बंगालदेशकी शाहज़ादी अपनी लौंडियों समेत उस घोड़ेपर सवार हो जब उसके कहने के अनुसार सब होचुका और दासियां शाहज़ादी को घोड़ेपर सवारकर घोड़े की बाग पकड़ के खड़ी हुईं तो उस वैद्यने घोड़े के आस पास बहुतसी अग्नि की अंगीठियां

रखवाईं और उसमें तेल और मिट्टी भरभर सुगन्ध डाल तीन बेर उसकी परिक्रमाकी और कुछधोखा देनेको पढ़नेलगा तब अँगीठियों से ऐसा धुआं निकला कि वह शाहज़ादी घोड़े समेत छिपगई तो वह अवसर पाकर उसके पीछे चढ़ा और चलने के पेंचको घुमाया तो वह घोड़ा तत्काल आकाशकी ओर उड़ा तब फ़ीरोज़शाहने बड़े शब्द से कहा हे कश्मीर के बादशाह ! तूने शाहज़ादीसे विवाहकी इच्छा कीथी अब तू जान कि यह शाहज़ादी फ़ारसके शाहज़ादेका माल है जो अपने साथ लिये जाताहै बादशाह कश्मीर और उसके सभासद् यह बात सुन अतिआश्चर्यमें हुये सो उस दिन फ़ीरोज़-शाह कई घड़ी के उपरान्त बंगालेकी शाहज़ादीको लेकर फ़ारस देश में पहुँचा और बादशाहके पास गया बादशाह अपने पुत्रको देखकर अतिप्रसन्न हुआ और कई दिनके पश्चात् उसका विवाह बड़ी धूमधामसे करदिया विवाहके उपरान्त बादशाहने बंगालेके बादशाहको यह संदेशा भेजा कि तुम्हारी बेटीके साथ मैंने अपने बड़े बेटेका विवाह करदिया और तुम्हारी बेटी यहां अतिप्रसन्नहै बंगालेके बादशाहको इस बातसे अतिहर्ष प्राप्त हुआ और उसका उत्तर यथोचित लिख असंख्य द्रव्य और रत्नादिक भेजे शहरज़ाद यह कहानी पूर्ण कर दूसरी रात्रिको अहमद और परीबानूकी कहानी कहनेलगी ॥

अहमदशाहज़ादा और बानूपरीका वृत्तान्त ॥

स्वामी पूर्वकालमें एक तेजवान् हिन्दुस्तानके बादशाहके तीन पुत्र थे बड़ेका नाम हुसेन दूसरे का नाम अली तीसरेका नाम अह-मद और नूरुल्निहार उसके भाईकी पुत्रीथी सो बादशाहने अपने भाईके मरनेके उपरान्त अपनी भतीजी को अपने मन्दिरमें लाकर रक्खाथा और बड़े २ विद्वानों और गुणवानों से उसको पढ़वाया वह अपनी हमजोलियों और निजकुटुम्ब और बादशाह के परि-वारसे अधिक रूपवान् और बुद्धिमान्थी और बाल्यावस्थासे उन पूर्वोक्त शाहज़ादों के साथ खेलती बादशाहने विचारा कि तरुणा-वस्थामें इसका विवाह किसी दूसरे शाहज़ादेके साथ करूंगा परन्तु

जब उसको मालूम हुआ कि तीनों मेरे पुत्र उसपर मोहित हैं और प्रत्येककी यह लालसाहै कि बिवाह उसका मेरे साथ हो तो वह अतिचिन्ता करनेलगा और शोचा कि यदि इसका बिवाह उन तीनों में से जिसके साथ करूंगा तो दूसरे अप्रसन्न होंगे और मैं किसी की अप्रसन्नता नहीं चाहता यदि किसी दूसरे शाहज़ादेको ब्याहदूं तो सबके सब अप्रसन्न होंगे न जानिये कि उसके मोह में मग्न होकर अपने प्राण त्यागदें अथवा किसी दूसरे देशमें चलेजावें यह बात उपाधि उठाये विना न रहेगी ऐसा कोई उपाय करना चाहिये कि चाहे जिसके साथ उसका बिवाहहो दूसरे दो भाई अप्रसन्न न होवें इसी भांति वह बादशाह बहुकालपर्यन्त सोचता रहा अन्तको उसने एक उपाय बिचारलिया और तीनों अपने पुत्रोंको बुलाकर कहा कि मेरे बिचारमें तुम तीनों बराबरहो मैं एकको तुममेंसे बड़ा समझकर नूरुल्निहारका बिवाह नहीं करसक्ता और यहभी नहीं होसक्ता कि उसका विवाह तुम तीनोंके साथ करदूं परन्तु एक बात मैंने विचारी है इस कारण किसी न किसी के साथ उसका बिवाह होजावेगा और कोई तुममेंसे अप्रसन्न न होगा और तुम तीनोंकी प्रीति स्थिर रहेगी और तुममेंसे कोई आपसमें डाह और बैर न करेगा वह यह है कि तुम तीनों पृथक् २ यात्राकरो और एक २ विचित्र वस्तु मेरे लिये लाओ जिसकी वस्तु अद्भुत होगी उस के साथ नूरुल्निहारका बिवाह करूंगा और जो कुछ तुमको उस वस्तुके लानेके लिये द्रब्य आवश्यक हो मेरे कोषसे लेजाओ इतना सुन उन तीनोंने इस बातको स्वीकार किया और हरएक अपने मनमें प्रसन्न हुआ कि सब भाइयोंमें मैंही अच्छी वस्तु लाकर नूरुल्निहारके साथ विवाह करूंगा तदनन्तर बादशाहने सबको उनकी इच्छानुसार द्रब्य देकर आज्ञा दी कि अब शीघ्र यात्राकी तैयारी करके सिधारो सो वह ब्यापारियों का बेष धर कुछ वस्तु और दासों को साथ लेकर साथही अपने पिता की राजधानीसे चले और कई मंज़िलों तक इकट्ठे गये फिर वह एक ऐसे स्थानपर पहुँचे जहां देशोंके मार्ग भिन्न २ थे वहां एक सरायमें उतरे उन्होंने परस्पर

मिल भोजन किया और यह प्रतिज्ञा की कि अबतक हम तीनों भाइयोंकी एकही राह थी कल हम भिन्न २ होकर भिन्न २ देशों में जावेंगे उचित है कि हम तीनों भाई एक बर्ष से अधिक यात्रा न करें और इतनी अवधिके उपरान्त इस सरायमें आवें और यहां परस्पर भेंटकर पिताके निकट जावें और जो एक भाई पहुँचे वह यहां बैठकर दोनों भाइयोंके आगमनकी राह देखे निदान दूसरे दिन वह तीनों भाई परस्पर कण्ठलग बिदाहो घोड़ों पर सवारहो न्यारे न्यारे देशोंमें गये हुसेन शाहज़ादा जो सबसे बड़ाथा सदा बिष्णुगढ़की प्रशंसा सुनता और उसके देखनेकी अति लालसा रखता सो वह उस नगरकी ओर यात्रियोंके समूहके साथ जहाज़पर चढ़ा तीन मास पर्यन्त जलकी यात्राकी उपरान्त पृथ्वी पर बहुतसे नगर और दिव्य देश लांघकर बिष्णुगढ़ में जापहुँचा और एक सरायमें उतरा जहां बिशेषकर व्यापारी उतरा करतेथे वहांके निवासियों से मालूमहुआ कि वहां एक बाज़ारहै जहां अति विचित्र और उत्तम वस्तु बिकती हैं दूसरे दिन शाहज़ादा उसी बाज़ारमें गया उसकी लम्बान चौड़ान और परिधिको देख आश्चर्य्यमें हुआ उसमें हज़ारों दूकानें अतिस्वच्छता पूर्वक बनीथीं और प्रत्येक दूकान के सामने सायबान गर्मीके बचावके लिये इस शोभा और उपायसे लगाहुआ था कि दूकानोंपर तनक अँधियारा न होता प्रतिबस्तुकी दूकानें भिन्न २ थीं और भांति २ के दिव्य वस्त्र रंग बरंग बूटेदार दूकानों पर क्रमसे रक्खेहुयेथे बृक्ष और सुन्दर पुष्पों के बिचित्र चित्र इस उत्तमतासे उन कपड़ोंपर कढ़ेहुये थे कि उनके देखने से यही ज्ञात होताथा कि बास्तवमेंही यह बृक्ष और पुष्प हैं इसके बिशेष रेशमी और कमख़ाब, चिकन, साटन और अतलश आदि ईरान और चीनके बनेहुये असंख्य थानथे कहीं तो शीशे और चीनी आदिक के दिव्य पात्र दूकानों पर भरेहुये और हज़ारों प्रकारके सुन्दर क़ालीन आदिक बिकतेथे जिनके देखनेसे वह अचम्भेमें हुआ फिर वहांसे उन दूकानों पर आया जिनमें सुनहले रुपहले भाजन और रत्न हीरे आदिकथे जिनकी चमक दमकसे दूकानें प्रकाशित होरही

नम्बर५०मुतअल्लिक़ैसफे७८२व·भा·

चित्र शाहज़ादे अली और अहमद का पलंग के निकट बीमार शाहज़ादी को देखते हुये

र्थी हुसेन एकही बाज़ारमें इतना असबाब और रत्न देख मनमें स-
मझा ईश्वर जाने नगर भरमें कितना माल और असबाब होगा
और वहांके ब्राह्मणों को देख अधिक आश्चर्यमें हुआ कि सबके
सब द्रव्यकी आधिक्यतासे दिव्य आभूषणों से अलंकृत होकर फि-
रतेहैं और उनके दासभी सुवर्णके कड़े और कण्ठे और अनेक
भूषण पहिने रहतेथे और प्रत्येक बाज़ारमें हरएक भांतिके फूलोंके
ढेरकेढेर और वहांके वाली दिव्य पुष्पोंकी माला कोई तो हाथों में
लिये और कोई बद्धियां कण्ठों में बांधे नगरमें घूम रहेहैं और हाट
बाटपर दूकानदार फूलोंके गुलदस्ते चुनरखते इस सुगन्ध से बाज़ार
भर सुगन्धित होरहाथा हुसेन बहुकाल पर्यन्त फिरा फिर थककर
कहीं बैठनेकी इच्छाकी सो एक दूकानदारने अपनी बुद्धिसे जानकर
प्रीति पूर्वक उसको अपनी दूकानपर बैठाया एक घड़ी के उपरान्त
एक दल्लालको देखा कि एक गलीचा चार गज़का चौकोन लियेहुये
कहता फिरता है कि यह गलीचा तीस हज़ार अशरफ़ीको बिकता
है जिसका मन चाहे मोल लेले शाहज़ादे ने यह शब्द सुन आ-
श्चर्य किया और उस दल्लालको बुलाया और गलीचे को देखकर
कहा ऐसा गलीचा एक रुपये को बिकता है इसमें कौन ऐसा गुण
है जिसकी तू तीस हज़ार अशरफ़ी मांगताहै उसने शाहज़ादे को
व्यापारी समझकर कहा भाई क्या तुम इस गलीचे का बहुत मोल
जानतेहो इसके स्वामीने मुझसे कहा है कि मैं चालीस हज़ार अश-
रफ़ी से कम न बेंचूंगा शाहज़ादेने कहा इसमें कोई बड़ा गुणहोगा
जिसका इतना बड़ा मोल है उसने कहा इसमें बड़ा गुण है जिस
समय तुम इसपर बैठकर किसी स्थानपर दूर हो अथवा निकट
जानेकी इच्छाकरो तो तत्कालही तुम उसी स्थानपर पहुँचजावोगे
शाहज़ादा यह सुन समझा कि इससे संसार में कोई भी विचित्र
वस्तु न होगी ईश्वरका धन्यबाद है कि इस यात्रा का मुझेजो प्रयो-
जन था वह प्राप्त हुआ निश्चय है कि इसको बादशाह देख अ-
त्यन्त प्रसन्न होगा और पसन्द करेगा तदनन्तर शाहज़ादे ने
मोल लेनेकी इच्छासे दल्लाल से कहा यदि इसका यही गुण है

इतने मोलपर मैंही लिये लेताहूं दल्लाल ने कहा जो तुम्हें मेरे बाक्य पर सन्देह हो तो इसकी परीक्षा करलीजिये और इसी पर बैठकर सरायमें चलिये वहींपर मोल इसका देदीजियेगा निदान दल्लाल ने उस दूकानके पीछे ग़लीचेको बिछा शाहज़ादेको उसपर बैठा आपभी उसपर बैठकर जानेकी इच्छाकी वह ग़लीचा तत्कालही देवताके बिमानके सदृश बायुमें उड़ा और शीघ्रही सरायमें पहुँचगये शाहज़ादेने चालीस हज़ार अशरफ़ियां उस ग़लीचेका मोल और बीस अशरफ़ियां उस दल्लालको इनआम दीं और बड़ा प्रसन्न हुआ और निश्चयहुआ कि अपने पिताकेनिकट यह ग़लीचालेजाने से अवश्य मुझे नूरुलनिहार ब्याही जावेगी और ऐसी अद्भुत और अपूर्ववस्तु मेरे भाइयोंको चाहो वह संसारभरमें फिरें प्राप्त न होगी तदनन्तर यह शोचा कि उस ग़लीचेपर बैठकर उसी सरायमें जहां से वह तीनों भाई अलग हुये थे जाकर उतरें और सब भाइयोंके आनेकी राहदेखें परन्तु साथही यह शोचा कि मुझे उस जगह बहुत ठहरना होगा और अकेला घबड़ाऊंगा इससे उत्तमहै कि यहांके निवासियों और बादशाहको भलीभांति देखलूं और इस नगरकी भली भांति सैर करूं इसलिये कई महीनेतक वहां रहा वहांके बादशाहका यह नियमथा कि प्रतिसप्ताह में एक दिन परदेशी ब्यापारियोंकी व्यवस्था सुनने और न्याय चुकानेकेलिये विराजता हुसेन उसको इस कारण भलीभांति देखता परन्तु हुसेनको अपने प्रकट करनेकी इच्छा न थी और शाहज़ादा कि अत्यन्त रूपवान् अतिचतुर बाचाल तीव्रबुद्धिथा इस कारण बिष्णुगढ़का बादशाह और ब्यापारियोंसे उससे अधिक प्रीति करता और बहुधा उससे हिन्दुस्तान के राज्य का बृत्तान्त पूछता फिर शाहज़ादा अतिबिख्यात मन्दिरके देखने को गया सो एक देवालयको अतिसुन्दर और पीतलका बनाहुआ था देखा जो भीतरसे दश गज़ चौकोन था और उसके मध्यमें एक देवता मनुष्यके डीलके समान इस भांति रक्खा हुआथा कि चहुँओरके देखनेवाले उसे अपनी ओर देखतेहुये समझते और उसके नेत्र बहुमूल्य रत्नों से जड़े थे तदनन्तर दूसरे

गाँव में देवालय देखा कि वहभी अतिबिचित्र पहिले के समान बना हुआ था उस जगह एक मैदान अनुमान आधे बीघे के चौड़ा था जिसमें अतिसुगन्धित पुष्पादिके बृक्ष अतिसुन्दरतासे लगे थे और उस पुष्पबाटिका के चहुँओर दीवारें अनुमान तीन गज़के ऊंचीथीं जिससे कोई पशु उसके भीतर न जासके और उस मैदानके मध्यमें एक चबूतरा एक मनुष्यकी उँचाईके अनुमान पत्थरका बनाहुआथा और उसके पत्थरों को इस कारीगरी से जमायाथा कि वह एकही पत्थरका मालूम होताथा और उस चबूतरे पर एक देवालय पचास गज़ का ऊंचाथा कि चारों ओर कोसों से दीखता लम्बान उसका तीस गज़का चौड़ाई उसकी बीस गज़की थी वह निपट संगमर्मर का बनाहुआथा और उसका पत्थर ऐसा साफ़ और चिकनाथा कि शीशे के सदृश उसमें मुख दीखता था मण्डप उसका अतिबिचित्र बनाहुआथा उसमें देवताओं के सैकड़ों चित्र रक्खे हुयेथे प्रतिदिन भोर और सन्ध्या को ब्राह्मणोंकी स्त्री पुरुष और बालक आते और नानाभांति की पूजाकर कुतूहल करते कोई तो मग्न होकर नाचता और कोई प्रसन्नता से गाता बजाता और स्थान स्थान पर इन्द्रके तुल्य सभा लगाकर नाच तमाशे देखते और दूर २ से लाखों मनुष्य भेंट देने को एकत्र होते और नानाभांति की असंख्य बस्तु और बहुतसी द्रव्य उस देवालय में चढ़ाते शाहज़ादे ने वहांका बार्षिक मेला भलीभांति देखा मेलेके दिन सब नगरों के प्रधान और मुख्य मुख्य नगरनिवासी उस देवालय में पूजनकर परिक्रमा करते बिशेष एक महाबिशाल देवालय में बड़े बड़े पण्डित षट्शास्त्री चार पांच महीने की राहसे वहां आकर यथाबिधि बन्दना करते निदान हिन्दु-स्तानभर के निवासी पूजनके निमित्त इतने इकट्ठे होते जिनको देख शाहज़ादा आश्चर्य में हुआ उस मैदानके एकओर चालीस स्तम्भों पर नौखण्डा एक बड़ा बिशाल सुन्दरभवनथा जिसमें बादशाह और उसके मन्त्री और प्रधान परदेशियों के न्यायके लिये बैठाकरते वह मन्दिर भीतरसे बहुतसी दिव्य सामग्रीसे अलंकृतथा और बाहरसे नानाप्रकार के देशों और बिशेषकर पशु पक्षी के महासुन्दर चित्रों से

बिचित्र था वह चित्रकारियां इस सुन्दरता और कारीगरी से खिंची थीं कि सचमुचकी मालूम होतीं दूसरे देहाती गँवार महाबिकराल पशु पक्षी जैसे कि सिंह आदिक का चित्र देखकर डरजाते और इस मैदान के तीन ओर काष्ठ के अतिबिचित्र मन्दिर उसी भांति भीतर बाहरसे सजेहुये इस कारीगरीसे बनेहुये थे कि जिस ओरको चाहें घुमाने से मनुष्यों समेत फिरते सो मनुष्य तमाशा देखने के लिये काष्ठके मन्दिरों को घुमाते और प्रतिस्थानपर अनुमान एक हज़ारके मस्तहाथी जो सुनहली झूलों और रुपहले हौदोंसे सुशोभितथे दृष्टिपड़े उनपर गवैये गाते और नक़ाल नक़लें करते और हाथियों के पाठे नानाभांति के रंगों में चित्रित थे हुसेन शाहज़ादा हाथियोंका तमाशा देख अधिक आश्चर्यमें हुआ अर्थात् एक बहुत बड़ा हाथी चार तिपाइयोंपर जिनके नीचे पहिये लगेथे उनपर चारों चरणधरे खड़ाहुआ सूंड़से बांसुरी बजाता जिसके सुनने से सब लोग वाह वाह करते और उस हाथी को जिधर चाहते खींचकर लेजाते और दूसरा हाथी पहिले से कुछ छोटा एक काष्ठ के बड़े शहतीर के एक सिरेपर खड़ाथा और वह शहतीर एक ऊंची तिपाईपर जो अनुमान आठ गज़केथी रक्खाथा और उस शहतीरके दूसरे सिरे पर लोहा हाथी के बोझ के समानथा कभी वह हाथी ज़ोर करने के कारण धरतीपर आलगता और कभी वह उठकर ऊपरको आजाता वह गज उस अवस्था में हावभावकर अपना नाच दिखाता और सूंड़से तानके साथ गाता और हाथीभी उसके साथ गान करते और मनुष्य उसको इसी दशामें इधर उधर लिये फिरते यह हाथियों का तमाशा बादशाहके सन्मुखहोता हुसेनशाहज़ादा ऐसे अनूठे तमाशों के देखने के लिये एक बर्ष पर्यन्त बिष्णुगढ़ में रहा तदनन्तर एक दिन सरायके पिछवाड़े जिसमें वह रहताथा जाकर उस ग़लीचेको बिछाया और उसपर अपने सेवक समेत जिसको वह अपने साथ लायाथा बैठा और मनमें उसी सरायमें पहुँचनेकी इच्छा की जिस में उसके भाइयोंने पहुँचनेकी प्रतिज्ञाकी थी इतना बिचारतेही वह तत्काल वहां पहुँचगया और ब्यापारियों के बेष से वहां ठहरकर

अपने भाइयों के आनेकी राह देखने लगा और शाहज़ादा अली जो हुसेन से छोटा था एक यात्रियों के समूह के साथ ईरानदेश को सिधारा चार महीने के उपरान्त शीराज़में जो फ़ारसकी राजधानीथी पहुँचा और अन्य ब्यापारियोंके साथ जिनसे अतिप्रीति होगई थी एक सरायमें उतरा और अपनेको रत्नपारखी प्रसिद्धकर उनके साथ प्रीतिपूर्बक रहने लगा जब ब्यापारियोंने लेनदेनका उद्योग किया तब शाहज़ादा भी अपने बस्त्र बदल वहांके बड़े बज़ाज़े में गया वह बाज़ार सब पक्काथा दूकानें सब मण्डपाकार गोल स्तम्भों पर बनी हुईथीं हुसेन उस बाज़ारकी सैरकर अचम्भा करने लगा कि एक बाज़ार में तो करोड़ों रुपयों की बस्तुहै तो नगर भरके द्रब्यकी क्या गिनती कीजावे दल्लाल प्रति बस्तुके नमूने दिखाते फिरतेथे उनमेंसे एक दल्लाल आधे गज़की लम्बी और पौन गज़की चौड़ी दिब्य हाथीदांत की दूरबीन हाथों में लिये हुये कहता फिरता है कि इस दूरबीनका मोल तीसहज़ार अशरफ़ी है शाहज़ादा अलीने यह सुन बिचारा कि यह दल्लाल बिक्षिप्त होगा तदनन्तर शाहज़ादे ने एक दूकानदार के समीप जाकर पूछा क्या यह दल्लाल बिक्षिप्तहै कि तीस हज़ार अशरफ़ी एक हाथीदांत की कहता फिरता है भला कोईभी दीवाना होगा जो इस छोटी बस्तुको इतनी अशरफ़ियोंपर मोल लेगा उस दूकानदारने कहा भाई यह दल्लाल और दल्लालों से अधिक चतुर और बिश्वासित है इसके द्वारा हज़ारों रुपयोंका ब्यवहार होता है कलतक चंगाभलाथा आजका हाल मालूम नहीं कि बिक्षिप्त हो गयाहो यदि वह इस दूरबीनकी तीस हज़ार अशरफ़ी कहता है तो वह अवश्य इसी मोलकी होगी अभी इसका हाल मालूम हुआजाता है ज़रा यहां आनेदो तबतक आप मेरी दूकानपर ठहरिये सो वहां ठ-हर गया इतनेमें वह दल्लाल वहां पहुँचा उस ब्यापारीने उसे निकट बुलाकर कहा कि इस दूरबीनका गुण कह कि बहुधा मनुष्य इसका मोल सुनकर आश्चर्य करते हैं बिशेषकर इसने तुझे बिक्षिप्त बनाया है उसने उत्तर दिया आप इसका मोल सुनकर मुझे बिक्षिप्त बनाते हैं जब मैं इसका गुण बर्णन करूंगा तो इसी समय इसको मोल

लेलीजियेगा आपही नहीं किन्तु नगरके और आदमीभी इसकी क़ीमत सुनकर हँसते हैं फिर उसने वह दूरबीन अली शाहज़ादेको दिखाकर कहा इसके देखनेका प्रकार मैं तुमको बताताहूं इसके दोनों सिरोंपर शीशे के दो टुकड़े लगेहुये हैं तुम अपनी दृष्टि को उन दोनों शीशोंके सामनेकरो यद्यपि वह बस्तु हज़ारकोसपर क्यों नहो पर वह इसभांति तुमको दिखाई देगी जैसे तुम्हारे निकट रक्खीहुई है शाहज़ादेने कहा मुझे तेरे कहनेका विश्वास नहीं जबतक कि मैं इस दूरबीनकी परीक्षा न लेलूं दल्लालने दूरबीन शाहज़ादे के हाथमें दी और देखनेकी बिधि उसको बताकर कहा जिसको तुम देखना चाहो अपने मन में उसका सङ्कल्प कर देखो अलीने अपने पिताके देखनेके बिचारसे दूरबीन को अपनी दृष्टि के सामने किया तो उसने अपने पिताको कुशलपूर्बक तख़्तपर बैठेदेखा फिर अपनी प्रिया नूरुन्निहारको भी देखा कि वह भी अपनी शय्यापर कुशलपूर्बक बैठी है और उसकी दासियां उसकी शय्याके चहुँओर हाथ बांधे खड़ी हैं इस अपूर्ब दूरबीनको देख बहुत अचम्भे में हुआ और मन में कहनेलगा यदि दस बर्ष पर्यन्त देशों देश घूमता और ढूंढ़ता तो इस बिचित्र दूरबीन सी कोई बस्तु प्राप्त न होती तदनन्तर उस दल्लालसे कहा बास्तव में जैसा तुमने इसका गुण कहाथा वैसा हमने इसमें पाया तीसहज़ार अशरफ़ी मुझसे लो दल्लालने कहा भाई इसके स्वामीने प्रण किया है कि चालीसहज़ार अशरफ़ीसे कम न लूंगा शाहज़ादेने दल्लाल को सच्चा जान सरायमें लेजाकर चालीस हज़ार अशरफ़ियां उसको गिनदीं और दूरबीन को जो बास्तव में संसारदर्शकथी मोल लेकर अतिप्रसन्न हुआ और समझा कि इस दूरबीन के कारण मुझे अवश्य नूरुन्निहार मिलेगी तदनन्तर वह फ़ारसदेश की सैर करने लगा एक बर्ष के अनुमान वहां रहकर यात्रियों के साथ हिन्दुस्थानको सिधारा और कुशलपूर्बक उसी सराय में पहुँचा जहां हुसेन बैठा हुआ था और हुसेन के साथ रहनेलगा तीसरा शाहज़ादा जिसका नाम अहमद था अपने भाइयों से बिदा होकर समरक़न्द की ओर गया और वहां पहुँचकर एक सराय में उतरा दूसरे दिन उस नगरके चौक में

गया वहां उसने एक दल्लालको देखा कि वह सेब हाथमें लियेहुये कहता फिरता है यह सेब पैंतीसहज़ार अशरफ़ियों का विकता है अहमदने उसको निकट बुलाकर पूछा मुझको यह सेब दिखाकर इसका गुण कह दल्लालने वह सेब अहमद को देकर कहा आप इसको देखिये और इसका इतना मोल सुनकर अचम्भा न कीजिये इसके गुण सुनिये मनुष्य कितनाही रोगी होगया हो अथवा मृत्यु निकट पहुँचे इसकेसूंघतेही तत्कालआरोग्यहोजावेगा मानो कदापि उसे रोग न व्यापाथा और तुरन्त उसकी देह में बल आजाताहै फिर जन्मभर रोगी न होगा अहमदने कहा जो यह सत्यहैं तो मैं इसे इसी संख्यापर मोललेताहूं दल्लालने कहा भाई! इस बातको यहांके सब व्यापारी जानते हैं यह सेब एक बड़े वैद्यने कई बूटियां और औषधं संयुक्तकर बहुत वर्षों परिश्रम करके बनाया था और ओषधियों की प्राप्तिके लिये बहुतसा धन व्यय किया और सैकड़ों रोगियों को केवल सुँघाने सेही अच्छाकिया परन्तु वह अकस्मात् कालवश हुआ और इस सेबको आप सूंघने न पाया मरनेके उपरान्त कुछभी द्रव्य न छोड़ा उसके परिवारमें बहुतसे असमर्थ बालक हैं अब उसकी स्त्रीने लाचार होकर इस सेबको बेंचनेके लिये निकाला है दल्लालकी बातें सुनकर बहुतसे मनुष्य एकत्र होगये संयोगवश उस समूहमें से एक मनुष्यने आगे बढ़कर कहा कि मेरा मित्र बहुत कालसे रोगी होगया है और अब वह अपने जीवनसे निराशहै तुम चलके ज़रा यह उसे सुँघादो तो मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानूंगा और जन्मभर तुम्हारा यश बखानूंगा अहमदने यह बचन सुन कर दल्लालसे कहा जो वह रोगी इस सेब के सूंघने से नीरोग हो जायगा तो अभी चालीस हज़ार अशरफ़ी देताहूं उसने कहा बहुत अच्छा आप इसकी परीक्षा लेलीजिये मैंने तो इसकेद्वारा अनेक रोगियोंको नीरोग किया निदान वह रोगी उस सेबके सुँघातेही नीरोग होगया तदनन्तर अहमद ने चालीसहज़ार अशरफ़ियां उसको गिनदीं और वह सेब मोल लिया और इच्छाकी जोकोई यात्री हिन्दुस्थानके जानेवाले मिलें उनके साथ यहां से चलूं और जब तक न मिलें तबतक इधर उधरकी सैर करूं

कितने दिनोंके उपरान्त अहमद यात्रियोंके साथ हिन्दुस्थानको चला और कुछ काल में कुशलपूर्बक उसी सरायमें जहां दोनों भाई उतरे थे जा पहुँचा निदान तीनों भाई परस्पर भेंटकर अत्यन्त प्रसन्न हुये और ईश्वर का धन्यबाद किया हुसेनशाहज़ादेने जो सबसे बड़ा था कहा अब हम अपनी२यात्राका हाल और अपनी बस्तुका हाल कहते हैं और उसका गुणभी बर्णन करते हैं मैंने एक ग़ालीचा जिस पर बैठा हूं मोल लिया यद्यपि यह प्रकट में कुछ बस्तु नहीं परन्तु इसमें बहुत बड़ा गुण है जब कोई मनुष्य इसपर बैठकर किसी दूर व निकट देशके जाने की इच्छा करे तो उसी समय वहां पहुँच जावे मैंने इसे चालीस हज़ार अशरफ़ी को मोल लिया और मैं इसपर बैठ यहां चला आया अब पांच महीने से तुम्हारे आगमन की बाट देखता हूं जिसका मन चाहे परीक्षा लेले जब हुसेन बड़ा शाहज़ादा कहचुका तो अली कहने लगा कि भाई! सच है तुम्हारी बस्तु अतिअपूर्ब है तदनन्तर उसने हाथीदांत की दूरबीन को निकालकर दिखाया और कहा मैंने भी इसे इसी संख्या पर मोल लिया इसका गुण यह है कि सैकड़ों कोसों की बस्तु इस प्रकार दिखाई देती है जैसे कि सामने रक्खी है जिसका मन चाहे परीक्षा लेले मैं तुमको इसकी बिधि बताताहूं हुसेनने उस दूरबीनको उससे लेकर जिस बिधान से उसने उसे बताया था नूरुल्निहार के देखने की इच्छा की दूरसे दोनों भाई उसकी ओर देखरहे थे कि देखें वह क्या कहता है अकस्मात् उन्होंने उसके मुखका रंग बदला पाया उसे चिन्तायुक्त देखकर आश्चर्य में हुये हुसेनने कहा कि हम तीनोंने जो इतना परिश्रम नूरुल्निहारके लिये कियाथा सब बृथागया अब मैंने इसको देखा अत्यन्त रोगी मृत्युके निकट पाया उसके चहुँओर दासियां और ख़्वाजे खड़े रोरहे हैं यदि तुमभी चाहो तो उसका अन्तका दर्शन करलो शाहज़ादा अलीनेभी देखा वही दशा पाई तदनन्तर वह दूरबीन अहमदको दी तो उसनेभी उसे उसी दशामें देखा तब अपने भाइयोंसे कहा यद्यपि नूरुल्निहार पर हम सब मोहितहैं परन्त मैं उसे इसी समय नीरोग करसक्ताहूं इतना कह उसने उसी

सेबको जेबसे निकालकर उन दोनों को दिखाया और कहा यहभी गलीचे और दूरबीनके मोलसे कम मोलका नहीं है अब इसकी परीक्षाका यही समय है इसमें बड़ा यह गुणहै जो मनुष्य चाहे कैसाही रोगीहो इसके सुँघातेही नीरोग होजाता है अब तुम इसका गुण नूरुल्निहारको सुँघाते समय देखलेना परन्तु इसी समय वहां पहुँच जावें हुसेनने अहमद से कहा यह कुछ कठिन नहीं हम गलीचे पर बैठकर तत्कालही नूरुल्निहार के समीप पहुँचसक्ते हैं अब बिलम्ब मत करो मेरे साथ तुम दोनों बैठजाओ कि बातकी बात में वहां पहुँचजावें और सेवकोंको यहीं छोड़ो पीछेसे वहां पहुँचरहेंगे निदान वह तीनों उसी गलीचेपर बैठे और सबने पहुँचनेकी इच्छा की सो तत्कालही वह नूरुल्निहार के समीप पहुँचगये सेवक उनको देखकर डरगये और कहनेलगे कि यह तीन मनुष्य क्योंकर यहां घुसआये पहिले उन्होंने चाहा कि उनको मारकर निकाल दें फिर पहिचानकर आश्चर्यमें हुये सब से पहिले शाहज़ादा अहमदने आगे बढ़कर वह औषधमय सेब नूरुल्निहार को सुँघाया थोड़े कालके उपरान्त उसने अपने नेत्र खोलदिये और अपना मुख इधर उधर फेरकर उन सबको देखा तदनन्तर अपनी शय्यासे उठ वस्त्र मांगे और यह समझी कि सोकर अभी उठी हूं इतनेमें दासियोंने उससे कहा यह तीनों तेरे चचेरे भाई अभी आये हैं और अहमदने तुम्हें कोई बस्तु सुँघाकर अच्छा किया है वह उनको देखकर अतिप्रसन्न हुई और अहमदका गुण माना और तीनों शाहज़ादे भी उसके आरोग्य होनेसे प्रसन्न हुये तदनन्तर वह नूरुल्निहारसे बिदा होकर बादशाहके समीप गये उनके पहुँचनेके प्रथम सेवक सम्पूर्ण वृत्तान्त कहचुकेथे बादशाहने उठके सबको प्रीतिपूर्वक अपने कण्ठसे लगाया और नूरुल्निहारको इन शाहज़ादोंके द्वारा नीरोग होनेसे अतिआश्चर्य किया तदनन्तर उन्होंने अपनी २ बस्तु बादशाह को दी और उनके गुण बर्णन किये और कहा इन तीनों बस्तुओंको देखकर जो सबसे उत्तम और बिचित्र हो अपने प्रणके अनुसार उस के लानेवालेका नूरुल्निहारसे बिवाह करदीजिये यह सुन बादशाह

अति चिन्ता करने लगा और मनमें सोचा यदि मैं नूरुल्निहार अहमदको बिवाहदूं तो औरोंपर अन्याय होगा जो अली के निकट दूरबीन न होती तो क्योंकर उसके बीमार होने का हाल बिदित होता इसी प्रकार जो हुसेन का ग़लीचा न होता तो किस प्रकार से नूरुल्निहारके समीप पहुँचते और उसको आरोग्यकरते मेरे बिचार में तीनोंकी बस्तु तुल्यहै यदि एक बस्तु न होती तो उसका अच्छा होना असम्भवित था फिरभी इसका निर्णय न हुआ अभी वहीं कठिनता है परन्तु अब चाहताहूं कि आज कोई दूसरा यत्न बिचारकर उसमें जिसको श्रेष्ठ पाऊं उसे नूरुल्निहार ब्याहदूं इतना सोचकर उनसे कहने लगा तुम तीनों भाई घोड़ोंपर सवारहो और अपने साथ धनुषबाण लेकर असुक मैदानमें घुड़दौड़के लिये जाओ और मैंभी अपने सभासदों सहित आताहूं तुम तीनों भाई मेरे सामने एक २ तीर फेंको जिसका तीर दूर जावेगा उसी को नूरुल्निहार मिलेगी वह सब अपने पिताकी आज्ञानुकूल उसी मैदानमें गये और बादशाहभी उन्हीं बिचित्र बस्तुओंको कोषमें भिजवाकर वहां पहुँचा पहिले हुसेनने जो सबसे बड़ाथा तीर छोड़ा फिर अलीने सो इसका तीर थोड़ी दूर आगे गया इसके उपरान्त अहमदने तीर चलाया परन्तु उसका तीर किसीको दृष्टि न पड़ा कि वह कहां गिरा निदान सबने यही बिचारा कि वह तीर यातो इतना दूर गया कि किसी को दिखाई नहीं देता अथवा अहमद के हाथमेंही रहगया सो बादशाहने इस बातका अधिक बिचार न करके अलीके साथ नूरुलनिहारका बिवाह ठहराया और कुछ दिन के उपरान्त बड़ी धूमधामसे बिवाह कर दिया परन्तु हुसेन शाहज़ादा डाहसे उस समाज में संयुक्त न हुआ क्योंकि वह और भाइयों की अपेक्षा नुरुल्निहारकी बहुत प्रीति रखताथा सो लज्जासे उसने योगियोंके सदृश गेरुवे बस्त्र पहिने और संसारका मायामोह जो सदा स्थिर नहीं रहता परित्याग किया अहमदकोभी बड़ी डाह उपजी और अत्यन्त लज्जासे बिवाहमें न गया परन्तु योगी का बेष धारण न किया और सदैव अपने तीरको ढूंढ़ता रहताथा एक दिन वह अकेला उस तीरके ढूंढ़ने के लिये

चला और वहांसे सूधा दाहिने बायें देखता हुआ आगे बढ़ा और कई बड़े २ पर्वतों के शिखरपर ढूंढ़नेलगा तो उसे एक बड़े टीले पर पड़ाहुआ पाया आश्चर्य में होकर मन में बिचारनेलगा कि इतनी दूर तीरका आना असम्भवित है और उस तीरको देखकर और अचम्भे में हुआ कि पत्थर पर छिपकाहुआहै बिचारा कि इसमें कोई भेद अवश्य है फिर आगे बढ़कर एक कन्दरामें जो उसी शिखरपर थी गया और थोड़ी दूर जाकर एक लोहेका दरवाज़ा उसे दृष्टिपड़ा उसके भीतर जाकर उसने कुछ ढलाव पाया जिसमें वह तीर समेत चला और समझा कि वहां अधिक अँधियारा होगा परन्तु वहां दिव्य उजियालाथा और वहांसे पचास व साठ पगपर महासुन्दर बिशाल घरथा जिसमें उसने क्या देखा कि एक स्त्री अतिरूपवती राजसी स्वच्छ बस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत अपनी अनुचरियोंके मध्य में धीरे धीरे द्वारकी ओर चली आती है शाहज़ादा उसे प्रणाम करने लगा उसने आपही निकट आकर अत्यन्त प्रीति और मीठीबाणी से आगत स्वागत और शिष्टाचारकर कहा हे अहमद! कुशलसे तो हो शाहज़ादा अपना नाम सुन आश्चर्य में हुआ कि यह मृगनयनी जिससे मेरी कभीभी भेंट नहीं मेरा नाम क्योंकर जानती है फिर उसके चरणको छूकर कहा हे मृगनयनी! मैं तुम्हारे सत्कार करनेसे गुण मानता हूं परन्तु आश्चर्य में हूं कि तुमने मेरा नाम क्योंकर जाना उसने कहा अब हम और तुम चलके बारहदरी में आनन्द भोगें वहां पहुंचकर तुम्हारे प्रश्नका उत्तर दूंगी इतना कहकर वह चन्द्रमुखी शाहज़ादेको अपनेसाथ लेकर बारहदरीमें गई शाहज़ादा वहां पहुँचकर उसको देखनेलगा जिसके सुनहली गोल मण्डपाकार गुम्बदपर लाजवर्दसे चित्रकारियां थीं और नानाभांतिकी दिब्य सा-मग्रीसे अलंकृत देख आश्चर्यमें हुआ इससे परीने कहा यह मकान और मकानों से कि वास्तवमें तुम्हारे हैं तुच्छ है जब उनको देखोगे तो अतिप्रसन्न होगे फिर अहमदको अपने निकट बैठाकर कहने-लगी तुम मुझको नहीं जानते परन्तु मैं तुमको भलीभांति जानतीहूं अब मैं अपने कुलका हाल कहती हूं तुमने पुस्तकों में पढ़ा होगा कि

धरती पर कहीं जिन्नभी रहते हैं मैं एक बड़े प्रतिष्ठित जिन्नकी पुत्री हूं और मेरा नाम परीबानूहै अब तुम अपने पिता का वृत्तान्त जो बादशाहहै मुझसे सुनो नूरुल्निहार तुम्हारी चचेरी बहिनहै और तुम तीन भाईहो और प्रत्येकको यह इच्छाथी कि नूरुल्निहार मुझे मिले तुम तीनोंने अपने पिताके बिचारके अनुकूल बहुत दूरकी यात्राकी और तुम पूर्वोक्त प्रयोजनके निमित्त समरक़न्दमें जाकर औषधियोंका सेब जिसका कारण मैं हुई लाये और इसी भांति तुम्हारा बड़ाभाई बिष्णुगढ़में जाकर ग़लीचा लाया और अली हाथी दांतकी दूरबीन बस इतना वर्णन बहुतहै कि तुम जानो कि मैं तुम्हारे हालको परिपूर्ण जानतीहूं अब तुम सत्य कहो मैं अच्छीहूं या नूरुल्निहार के साथ तुम्हारा मन विवाहको चाहता है जब तुमने तीर फेंकनेका इरादा कियाथा उस समय मैंने बिचारा कि तुम्हारा तीर हुसेनसे आगे न जावेगा तो तुम्हारे छोड़ते ही मैंने उसे बायुमें पकड़ा और दृष्टि बन्दकर इस शिखर पर डालदिया इसलिये कि तुम उसे अवश्य ढूंढ़ने आओगे और इसी बहाने मेरी तुमसे भेंट होगी जब इतना हाल कहचुकी तो प्रीतिकी दृष्टि से उसने अहमदको देखा और लज्जित होकर नयन नीचे करदिये और शाहज़ादा यह सब बातें सुनकर अतिप्रसन्न हुआ यह तो जानताही था कि अब किसीभांति नूरुल्निहार नहीं मिलसक्ती और परीबानूभी अतिसुन्दरीहै उसके रूप अनूप मनहरणको देखतेही मोहित होगया कि नूरुल्निहारकी प्रीति भूलगया निदान उस सुन्दरीको अतिसन्तुष्ट पाकर कहनेलगा अब मुझको यही इच्छाहै कि जन्मभर तुम्हारी सेवामें रहूं मैं मनुष्यहूं और तुम जिन्नकी पुत्री हो तुम्हारे गुरुजन इस सम्बन्धको क्योंकर स्वीकार करेंगे उसने कहा मैं इस बिषयमें स्वाधीनहूं जिसके साथ चाहूं अपना बिवाह करलूं परन्तु जो तुमने कहा कि मैं तुम्हारी सेवामें रहूं यह अनुचितहै तुम मेरे पति और इन सब बस्तु और भवनादिकके स्वामी हो मुझेही अपनी दासी समझो और मुझे तुम्हारे साथ बिवाहकी अतिलालसाहै और मुझे तुम्हारी बुद्धि और प्रवीणतासे परिपूर्ण आशाहै कि तुम इस बातसे

इन्कार न करोगे और मैं तो कहचुकी कि मैं स्वाधीनहूं इसके विशेष हमारे कुलमें यह रीतिहै कि तरुण अवस्थापर हरएक परी जिन्न अथवा मनुष्यपर जिससे उसका मन लोभायमानहो उसके साथ अपना विवाह करले इससे जन्मभर स्त्री पुरुष में परस्पर प्रीति रहतीहै जब बानूपरीने यह सब बातें कहीं शाहज़ादा उसके उत्तर में अत्यन्त कृतकृत्य होकर उसके वस्त्रको झुककर चूमनेलगा परन्तु बानूपरीने उसे झुकने न दिया और उस के पलटे अपना हाथ दिया जिसे शाहज़ादेने अतिप्रीतिसे वहांकी रीति के अनुकूल चूमा और अपने नेत्र और हृदय में लगाया बानूने मुस्कराके कहा अब इस हाथ पकड़नेकी लाज रखकर बचनघात न करना और इसी बात पर मैंभी स्थिरहूं अहमदने कहा उस मनुष्यकी जो तुमपर मोहित हो क्योंकर प्रीति भङ्गहोसक्ती है मैंने अपने को तुम्हें सौंपा जैसा तुम्हारा मन चाहे करो उसने कहा तुम मेरे पतिहो और मैं तुम्हारी भार्याहूं यही प्रण जो परस्पर हुआ है विवाह है और जो कुछ रीतें विवाहकी होती हैं सब व्यर्थ हैं अब हम तुम सन्ध्याको एक दिव्य भवनमें आनन्द भोगेंगे जिसको तुम देखकर अतिप्रसन्न होगे तद-नन्तर दासियां नाना प्रकार के दिव्य व्यञ्जन लाईं और उन दोनों ने भोजन किये इसके उपरान्त शराब उड़ी जब निश्चिन्त हुये तब बानूपरी शाहज़ादे को अपने मुख्य भवन में लेगई जो मुख्य उसके सोनेका था वहां शाहज़ादा हरजगह रत्नों के ढेर देख विस्मित हुआ और बानूसे कहनेलगा कि ऐसा स्वच्छभवन और यह अलभ्य सामग्री संसार भरमें न होगी उसने कहा तुम मेरा बासस्थान देख-कर उसकी इतनी प्रशंसा करतेहो यदि जिन्नोंके घर देखोगे तो क्या कहोगे मेरे बागकोभी देखकर तुम अतिहर्षित होगे परन्तु अब उसके देखने का समय नहीं रहा पुनि वह उसे और मकानमें लेगई जहां रात्रि में भोजन करतीथी उसकी सजावटभी औरों से न्यून न थी उसमें सैकड़ों सुगन्धित दीपक उचित २ स्थानों पर प्रकाशित थे और बिल्लौर के बर्तन जिनमें बहुरत्न जटितथे और अतिशोभायमान गुलदस्ते और अनेक भांति के दिव्य पात्र धरेहुयेथे और कई गाने

वाली स्त्रियां अतिरूपवान् जो अतिउत्तम बस्त्र पहिने हुये थीं वह सब आन२ कर मिष्टबाणी से गान करनेलगीं फिर वह दोनों भोजन करनेलगे बानूपरी दिव्य और स्वादिष्ठ भोजन अपने हाथसे उठाकर अहमद के आगे रखती और उन पाकोंका नाम बतलाकर शाहज़ादे को चखाती और जो २ पाक अहमदने कदापिभोजन नहीं किये थे उनके बनानेकी बिधि बतलाती इसके उपरान्त उन्होंने मद्यपान की और मिठाई और फलादिक खाये जब इससे भी निश्चिन्त हुये तो वह दोनों एक बड़े दालानमें जिसमें अच्छी मसनद और सुनहले तकिये रक्खेहुये थे जाकर बैठे उनके बिराजमान होतेही बहुतसी परियां वहां आईं और बिचित्र नृत्य और मीठे स्वरों से गानेलगीं सो वे दोनों उनके अद्भुत गानसे अतिप्रसन्न हुये और वहां से उठ कर और मकानमें गये जहां रत्नजटित छपरखटथा और सब बराती वहां से छिन्नभिन्न होकर इधर उधर चलेगये कि दूलह दुलहिन आराम करें कई दिन इसी भांति आनन्द मङ्गल रहा यदि अहमद शाहज़ादा हज़ारोंबर्ष मनुष्योंमें रहता तोभी ऐसा आनन्द न देखता निदान छः महीने तक उस परी के साथ अनेक भांति के सुखोंको भोगता रहा और उसका मोह उसके मनमें ऐसा समाया कि उसके देखने बिना उसे क्षणमात्र न चैन पड़ता और इसी भांति बानूपरी भी उसकी प्रीतिसागर में मग्नथी प्रतिक्षण उसीके शिष्टाचार और आदरमें रहती सो अहमद उस प्रीतिमें अपने कुटुम्बको भूलगया परन्तु कभी२ उसे पिताके दर्शनकी लालसा होती और इच्छा उपजती कि किसी प्रकार अपने पिताका कुशल मालूम करे और यह सम्भव न था कि अपनी प्रियाकी आज्ञा बिनाजावे निदान एकदिन उसने बानूसे इसबात के लिये आज्ञा मांगी कि यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं अपने पिताके दर्शन करआऊं बानूपरी को इस बिचारसे कि शाहज़ादा यहांसे बहाना करके जानाचाहता है अतिचिन्ताहुई और उससे कहनेलगी तुमने मुझसे पहिले क्या प्रतिज्ञाकी थी अब उसके बिपरीत कियाचाहते हो जानपड़ताहै कि तुम्हारे हृदयसे मेरी प्रीति उठगई अहमदने उत्तर दिया मेरा प्रयोजन यह नहीं कि यहां

से उदास होकर चला जाऊं और फिर न आऊं मेरे बुड्ढेपिता को मेरे बियोग से अतिदुःख हुआ होगा यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो दर्शन करके शीघ्र तुम्हारी सेवा में आऊं कदापि और कोई बात तुम्हारी इच्छाके बिरुद्ध न होगी किन्तु मेरी ईश्वरसे यह प्रार्थना है कि जन्मभर तुम्हारी सेवा में रहूं निदान इसप्रकार की बार्त्ता से उसे प्रसन्न किया और उससे बिदितहुआ कि शाहज़ादाभी मुझे बहुत ही चाहताहै फिर उसे आज्ञा दी जाओ अपने पिताके दर्शन करके शीघ्र लौटआना अधिक न ठहरना अब यहांसे हिन्दुस्थानके बादशाहका हाल बर्णन किया जाताहै जब उसने विधिपूर्वक अली-शाहज़ादे का नूरुल्निहारसे बिवाह करदिया उसदिनसे हुसेन और अहमदको न देखकर अतिशोकवान् रहाकरता था एक दिन उसने दोनों का हाल पूछा सभासदोंने बिनय की कि हुसेन तो योगी बेश धारणकर तपस्या करता है और अहमद शाहज़ादा किसी ओर को निकलगया सो बादशाहने यह बात सुनकर अहमदके ढूंढ़ने के लिये पत्र अपने गुमाश्तों को लिखे कि जहां कहीं उसको पाओ स-म्मानपूर्बक मेरे निकट लाओ बहुत ढूंढ़नेपरभी उसको न पाया नि-दान जब सम्पूर्ण सभासदोंने बादशाहको अहमदके खोजानेसे बहुत बिकल पाया तो इस बिषयमें अतिचिन्ता करनेलगे एकको स्मरण हुआ कि इस नगरमें एक जादूगरनी अतिचतुर रहती है तो बाद-शाहके पास आकर उसकी प्रशंसाकी और बिनयकी कि आप उसको बुलवाकर शाहज़ादेका हाल पूछलें बादशाहने कहा अच्छा तुम उसे अपने साथ लेतेआना निदान वह जादूगरनी आई बादशाहने उस से कहा जबसे मैंने अली अपने कुँवरका नूरुल्निहारसे बिवाह कर-दिया तबसे अहमदका कुछ पता नहीं लगता तू अपने जादू के बलसे उसका हाल मालूमकरके मुझसे कह कि जीता है वा नहीं यदि जीता है तो कहांहै और किस दशामेंहै उससे मेरी भेंट होगी वा नहीं उसने उत्तर दिया मैं आपके प्रश्नका उत्तर इसी समय नहीं देसक्ती यदि आज सावकाश मिले तो कल मैं ठीक२ इसका उत्तर दूंगी बादशाह ने कहा यदि तू मेरे प्रश्नका उत्तर देगी तो मैं तुझे बहुत कुछ दूंगा

दूसरे दिन प्रभातको वह जादूगरनी बादशाहके निकट आई और विनय की मैंने अपनी जादूकी वियासे मालूम किया कि अहमद जीताहै इस समय इस बात के सिवाय और कुछ नहीं बतलासक्ती कि वह कहां है बादशाह यह बात सुनि अति प्रसन्न हुआ और उसके मिलनेकी उसे आशा हुई अब अहमदका बृत्तान्त फिर वर्णन करते हैं जब वह परीबानू से आज्ञा लेचुका तो परीबानूने उससे कहा मेरे इस उपदेशको न भूलना वह यह है कि अपने पिता और निवासियों से अपने बिवाहके सिवाय किसी बिचित्र बस्तुका वर्णन न करना केवल अपने पिताके धैर्य के लिये यही कहना कि वहां अतिप्रसन्नतासे रहता हूं आपके दर्शन के निमित्त आया इतना कह बानूपरी ने यात्राकी तैयारी की आज्ञा दी जब सामग्री तैयार होचुकी तो बीस सवार उसके साथ किये और दिव्य घोड़ा जो अति उत्तम रत्नोंकी सामग्री से सजाथा शाहज़ादे के चढ़ने को दिया और उसे कण्ठसे लगाकर बिदा किया और शाहज़ादा सिधारते समय उसी प्रतिज्ञाको दृढ़ाकर घोड़ेपर सवार हुआ और बीस सवारों सहित जो जिन्नथे बड़ी धूमधामसे नगरकी ओर चला शाही महल पासही था क्षणमात्र में पहुँचगये बादशाहके सम्पूर्ण सभासद् और नगर निवासी अहमदको देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुये और निज काज तज झुक २ कर प्रणाम करने और आशीर्वाद देनेलगे और बड़ी भीड़ दोनों ओरसे उसके साथ बादशाहीमहल तक गई शाहज़ादा सभामें उतर अपने पिताके चरणों पर जायगिरा बादशाहने खड़े होकर उसे अपने हृदयसे लगाया और बहुत प्यार किया और कहनेलगा हे पुत्र! तुम नूरुन्निहारसे निराश होकर ऐसे गुप्त होगये कि बहुत ढूंढ़नेपरभी तुम्हारा ठिकाना न लगा और मैं तुम्हारे बियोगमें इस दशाको प्राप्त हुआ इतने कालतक कहांथे और किस भांति कालक्षेप किया अहमदने बिनती की जबसे नूरुन्निहार बिवाही गई मुझे अतिखेद प्राप्त हुआ आपको भलीभांति स्मरण होगा जिस दिन हम तीनों भाइयोंने आपकी आज्ञानुसार तीर चलाये बड़े मैदान होनेपरभी मेरा तीर दृष्टिसे लप्त होगया सो मैं उसी

नम्बर ५१ मुतअल्लिक़े सफ़े ७९८ च. भा.

चित्र शहज़ादे अहमद का शेरों को मांस देकर चश्मे से सुनहरा पानी भरते हुये.
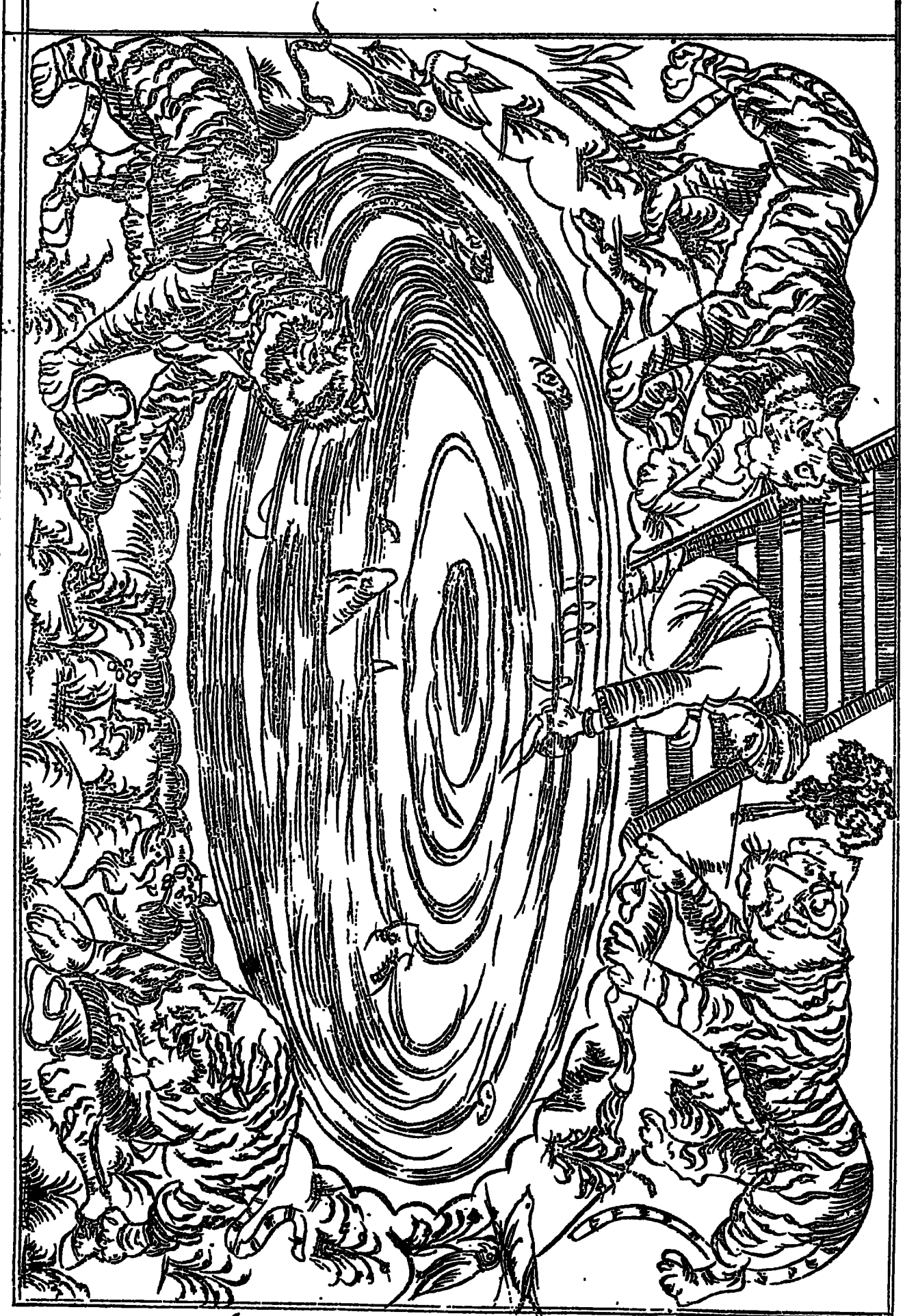
चिन्ता में अपना तीर ढूंढ़ते २ अकेला गया और दाहिने बायें इधर उधर ढूंढ़नेलगा परन्तु वह तीर कहीं न दीखा सो उसको ढूंढ़ते २ दूर निकलगया और निराश होकर मनमें विचारनेलगा इतनीदूर मेरा तीर काहेको आयाहोगा किन्तु तीर चलानेवालेकाभी तीर यहां नहीं आसक्ता निदान इसी चिन्ता में मैंने अपने तीरको एक ऊंचेपर्वत के शिखरपर जो यहांसे अनुमान चार कोस के है पाया फिर मन में सोचा इतनी दूर आना तेरा बिना किसी भेदके नहीं है यह शोच वहांसे ऐसे स्थानपर पहुँचा जहां मैं अबतक अतिआनन्द से रहा इसके विशेष और वृत्तान्त नहीं कहसक्ता केवल आपके धैर्य देने के लिये यहां आया अब मुझे आज्ञाहो तो फिर मैं वहां जाऊं कभी२ आपके दर्शन को आया करूंगा बादशाह ने कहा मैंने प्रसन्नता से आज्ञा दी और मुझे भरोसा हुआ कि तुम आनन्द पूर्वक मेरे नगरके पास रहतेहो यदि तुम्हारे आने में कुछ देर हुई तो मैं किसभांति तेरे कुशलका समाचार पाया करूंगा अहमद ने विनय की आप चाहते हैं कि मेरे भेदको मालूम करें मैं तो पहिलेही विनय करचुकाहूं जो कुछ मैंने कहा इस से अधिक वर्णन आपकी शरणमें नहीं करसक्ता आप धैर्य रखिये मैं बहुतदफ़े आया करूंगा बादशाह ने कहा बेटा मेरा प्रयोजन तो केवल यही है कि तुम्हारा समाचार मालूम हुआ करे मुझे तुम्हारे भेदके पूछने की कुछ आवश्यकता नहीं अब मैंने तुमको विदा किया कि यहां शीघ्र आकर मुझसे मिलजाना सो अहमद तीन दिनतक वहां रहा चौथे दिन भोरको वहांसे सिधारा और अपनी प्रियाके निकट पहुँचा वह उसके जल्दी लौटआने से अतिप्रसन्न हुई फिर दोनों प्रिया प्रियतम अत्यन्त प्रीति और सम्मानपूर्वक अनेक भांति के भोग और विलास करने लगे जब एक महीना बीता और शाहज़ादा अपने पिताके दर्शन को न गया तो उसकी प्रियाने कहा कि तुमने पूर्व में कहा था कि मासके प्रारम्भ में अपने पिताके निकट जाऊंगा सो अब क्यों नहीं जातेहो तुम्हारा पिता तुम्हारा रास्ता देखताहोगा शाहज़ादेने कहा सत्य है परन्तु आपकी आज्ञा बिना मैंने वहांका उद्योग नहीं किया

उसने कहा प्यारे ! तुम मेरी आज्ञा पर मतरहो महीने के आदि में तुम मेरे पूछने के बिना भेट करआयाकरो सो शाहज़ादा दूसरे दिन प्रभात को बड़ी धूमधाम से अपने पिताके पास गया फिर तो उसने एक नियम बांधलिया कि प्रतिमासके आरम्भ में अपने पिताके पास जाकर और वहां तीन दिन रहकर चौथे दिन चला आता दिनपर दिन उसके साथ धूमधाम अधिक होती जातीथी अन्तको एक दिन एकप्रधान जो बादशाहका मुँहलगाथा शाहज़ादे की सवारीकी धूम अधिक देख बिस्मित हुआ और सोचनेलगा कि शाहज़ादेका हाल कुछ जाना नहीं जाता कि कहां रहताहै और यह ऐश्वर्य इसको कहांसे प्राप्त हुआ सो उसने ईर्षा से बादशाह को बहका कर कहा तुम अपने पुत्रसे अचेतहो और यह नहीं देखते कि उसका ऐश्वर्य दिन २ बढ़ता जाता है ऐसा न हो जो तुमको अवसर पाकर दुःख दे और तुमको क़ैदख़ाने में डालकर आपका तख़्त छीनले और जबसे तुमने नूरुल्निहारको अली से ब्याहदिया तबसे हुसेन और यह अर्थात् अहमद अत्यन्त अप्रसन्न हैं इतना कि एक ने संसार कोही परित्याग किया और अहमद जो अतितेजवान् है ऐसा न हो कि आपसे अपना पलटा ले बादशाह अत्यन्तनिर्बुद्धि था उस प्रधानके छल में आगया और अहमद के रहनेका हाल खोज करने लगा एक दिन वज़ीर के पूछे बिना जो अहमदका हितैषी था उसी जादूगरनी को चोरदरवाज़ेसे निज शयनस्थानमें लेगया और उस से कहा जैसे तूने अपनी विद्यासे कहाथा कि अहमद जीताहै उस बातको यथार्थ पाकर मुझे तेरा बिश्वास हुआ सो अब यह इच्छा है कि कुछ औरभी उसका बृत्तान्त बर्णनकर यद्यपि प्रकट होकर प्रतिमास मेरी भेंटको आता है परन्तु अबतक मैं उसके रहनेकी जगहको नहीं जानता मैं इस बातको उससे अधिक पूछ नहीं सक्ता अब तू मेरे सेवकों से छिपकर उसके रहनेकी जगह मालूमकर अब वह नियमके अनुकूल आयाहुआ है और मेरे पूछने के बिना थोड़ी दूर आगे जाकर गुप्त होजावेगा आज तू मार्ग में ऐसे स्थानपर छिपकर बैठ जिससे उसके जाने का हाल मालूम होजावे और फिर

आकर मुझसे कहियो वह बादशाहसे बिदा होकर वहां गई जहां अहमदने अपना तीर पायाथा और किसी कन्दरामें छिपकर अहमद के आगमनकी बाट देखतीरही अहमद भोरको उठकर नगर से सिधारा जब उस गुफाके समीप पहुँचा तो जादूगरनीने क्या देखा कि वह और उसके सेवक बड़े बड़े टीलों और शिखरों पर चढ़कर दूसरी दिशाको जातेहैं और वह भयानक स्थानहै कि कोई मनुष्य सवार अथवा पैदल वहां नहीं जासक्ता निदान वह सोची कि उन शिखरोंके दूसरी ओर कोई बिशाल कन्दराहै जिसमें जिन्न और राक्षस आदि निवास करतेहैं वह इसी बिचारमेंथी अकस्मात् शाहजादा निजसेवकों सहित वहांसे गुप्त होगया फिर वह जादूगरनी उसी गुफासे बाहर निकली और चहुँओर दूर दूर अपनी सामर्थ्यभर फिरी परन्तु ठिकाना न लगा और वह लोहेका द्वारभी उसे न मिला क्योंकि वह द्वार और भवन उस मनुष्य के सिवाय जिसको बानूअप्सरा चाहतीथी दूसरेको न मिलताथा उस जादूगरनी ने मनमें कहा मैंने इतना ब्यर्थ परिश्रम किया जिस कामके लिये आईथी मालूम न हुआ फिर बादशाहके पास गई और वहां का सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया और कहा मैंने बहुतसा श्रम उस के निवासके ढूंढ़ने के लिये किया परन्तु कुछ लाभ न हुआ यदि मुझे आप सावकाश दीजिये तो फिर जाकर जिस भांति होसके मालूम करूं बादशाहने उसे आज्ञादेकर कहा जिस प्रकार चाहे उसे प्रकटकर मैं तेरे आनेकी बाट देखता रहूंगा इतना कह बादशाह ने एक हीरेका बड़ा टुकड़ा बहुमौल्य उसेदेकर बिदा किया और कहने लगा जिस दिन उस बातको मुझे सुनावेगी मैं तुझको अतिप्रसन्न करूंगा फिर वह जादूगरनी अपने घरमें बैठकर अहमदके आगमन की बाट देखनेलगी क्योंकि उसे मालूमथा कि उक्त शाहजादा प्रतिमास के आरम्भ में एक बेर अपने पिताकी भेंट को आया करताहै निदान जब महीने के बीतनेमें एक दिन शेष रहा तो वह उसी शिखर पर सीढ़ीके समीप बैठरही दूसरे दिन जब शाहजादा अपने सेवकों समेत जो उसके साथ सदा रहाकरते थे उसी लोहेके

द्वारेसे उसी जादूगरनी के निकट होकर निकला तो उसे गुदड़ी ओढ़ेहुये देखकर समझा कि यह कोई शिला फूटकर गिरीहै परन्तु जब उस जादूगरनीने अहमदको अपने निकट चलते देखा तब वह महारुदन करनेलगी जैसे कोई दुखिया किसीसे सहायता की इच्छा करे अहमदको उसके रोने पर अतिदया उपजी और खड़े होकर सैनसे पूछा तू क्या कहती है वह जादूगरनी जो अत्यन्त धूर्ता और चतुराथी अधिक बिलाप करनेलगी शाहज़ादे को उसपर अधिक दया आई जब उसने शाहज़ादेकी अपने ऊपर अधिक कृपा पाई तब ठंढीश्वासभर धीरे शब्दसे अपना बृत्तान्त इसभांति बर्णन करनेलगी कि मैं अपने घरसे किसी आवश्यक कार्यके उद्योग से अमुक ग्रामको जातीथी अकस्मात् मुझे ज्वर और शीत बड़े बेगसे आया जिससे मेरी शक्ति जातीरही और बेबश होकर गिर पड़ी शाहज़ादेने कहा कोई ऐसा स्थान नहीं जहांपर तुझको भिज-वादूं परन्तु एक मकान अतिसमीप है जो तू कहे तो तुझे वहां भिजवादूं वहां तू शीघ्र नीरोग होजावेगी तू उठकर मेरे पास आ उस दुष्टाने एक और श्वास भरकर कहा कि मैं ऐसी निर्बल होगई हूं कि उठ नहीं सक्ती तब शाहज़ादे ने एक सवारसे कहा इस बृद्धा को अपने साथ घोड़ेपर चढ़ाले उसने तुरन्त उसको अपने घोड़े पर बैठालिया और अहमद वहांसे लौटकर लोहेके द्वारको गया और भवनमें प्रवेशकर अपनी प्यारीको बुलवाया वह उसके पास आई और उससे पूछा कुशल तोहै तुम क्यों मार्गसे लौटआये और मुझे क्यों बुलवाया उसने बृद्धाका बृत्तान्त बर्णन किया कि मार्गमें इसे मैंने बीमार पाया और दयासे उसको अपने साथ लेआया अब तुम इसको यहीं रक्खो और इसकी औषध करो बानूअप्सरा ने अपनी अनुचरियोंसे कहा इसे लेकर किसी अच्छे स्थानमें रक्खो और इसकी औषध करो जब उसे लेगईं तो बानूअप्सरा ने उससे उपदेशकी भांति कहा हे प्राणप्यारे! मैं तुम्हारी दयालु प्रकृति से अतिप्रसन्न हुई और तुम्हारे कहने के अनुसार उसकी सुधि लेती रहूंगी परन्तु भयवती हूं कि ऐसा न हो कि तुमको भलाई के पलटे

बुराई मिले क्योंकि मैं इस बृद्धा को ऐसा रोगयुक्त नहीं पाती जिस से वह इस दशाको प्राप्तहो मुझे मालूम होताहै कि किसी तुम्हारे बैरीने तुमसे छल कियाहै अच्छा अब तुम सिधारो अहमदने यह सुन कहा हे मेरी प्यारी! ईश्वर तुमको जीतारक्खे तुम्हारी कृपासे मुझे कोई दुःख न देगा और मुझे भली भांति मालूम है कि मेरा कोई बैरी नहीं मैं सबके साथ भलाई करता हूं इससे किसी से बुराईकी आशा नहीं इतना कहकर बिदाहुआ और अपने पिता के मन्दिरमें पहुँचा बादशाह जो अशुद्धसूचक प्रधान के बहकाने से भयवान् था जाकर भेंटकी वे लौंड़ियां जो उस बृद्धा की सेवा के निमित्त नियतथीं उसे एक दिव्य भवनमें लेगईं जो अति उत्तम सामग्रीसे अलंकृतथा और एक सुन्दर शय्यापर उसे लिटादिया एक दासी उसके पास बैठी और दूसरी शीघ्रही उठकर चीनीके पात्र में एक अर्क़ लाई जो बिशेष करके ज्वरका हटानेवालाथा फिर उन दोनोंने उसे पकड़कर बैठादिया और कहा इसको पीजा इसके पीने से किसी भांतिका रोग शरीरमें नहीं रहता जादूगरनी वह औषध लेकर पानकरगई और फिर लेटगई उन्हों ने उसे लिहाफ़ ओढ़ाकर कहा अब सोरह थोड़ेही कालमें तू नीरोग होजावेगी उसने यह छल केवल इसीलिये किया था कि अहमद का बासस्थान मालूम पड़े जब उसे भली भांति बिदित होगया तो वह उठके बैठी और उन दासियों से कहा मुझे उस औषधके पानकरने से शरीर भरमें पसीना छूटा अब मैं निपट नीरोग होगई और मेरी देह में बलभी आगया अब यही समाचार अपनी स्वामिनी से जाय कहो कि मैं उसके पास जाऊं और उनसे बिदा होकर अपने घर को सिधारूं फिर वह जादूगरनी को हरएक मकान दिखाती हुई उस बारहदरी में लेगई जो अति सुन्दर दिव्य बस्तुओं से सजीथी वहां उसने उसी परी को दिव्य तख़्तपर बिराजमान देखा जो उत्तम उत्तम हीरों और मणियों से जटित था और उस तख़्त के चहुँ ओर बहुत सी दासियां अतिरूपवती सुन्दर बसन पहिने हाथ जोड़े खड़ी थीं जादूगरनी उस भवन को बिशेष करके

अद्भुत रत्नमयी स्वच्छ तख्त को देखा अतिविस्मित हुई और बानू के भयसे कोई बचन मुखसे न निकाला तब वह उसके चरणों पर गिरपड़ी बानूपरीने उसे भरोसा देकर कहा हे बृद्धा ! तेरे यहां आने से मैं अतिप्रसन्न हुई तुम मेरे महल को भलीभांति देखो मेरी दासियां सम्पूर्ण महल और सामग्री तुम्हें दिखावेंगी जादूगरनी उसके नीचे की धरती को चूम बिदाहुई फिर वह भवन के हर मकानको देख भाल और उसको यथोचित बिचार वहांसे चली दासियोंने उसे लोहे के द्वारसे बाहर लेजाकर जहांसे अहमद उसे लायाथा छोड़दिया और कहा अब तू अपने घरजा वह आगे बढ़ी तदनन्तर थोड़ी दूर जाकर उसने लोहेके द्वारके देखने की इच्छाकी कि उसे पहिचान रक्खे वह द्वार उसकी दृष्टिसे गुप्त होगया वह वहां चहुँओर फिरी परन्तु कुछभी उसका ठिकाना न लगा निदान लाचार होकर नगरमें आई और गुप्तमार्गोंसे बादशाह के महल के चोरदरवाज़े से भीतर गई और बादशाह के किसी सेवक से बादशाहको अपने आगमन का संदेशा कहलाभेजा बादशाहने उसको भीतर बुलवाया वह उसके सम्मुख चिन्तित होकर गई बादशाह समझगया कि आजभी प्रयोजन सिद्ध न हुआ होगा निदान उसने उससे पूछा वह काम कर आई वा नहीं उसने उत्तरदिया कि उस बातको भलीभांति मालूम कर आई हूं सो मैं वर्णन करतीहूं परन्तु चिन्ताके चिह्न जो मेरे मुखपर हैं उसका दूसरा कारणहै फिर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया और कहा उस परी और अहमदमें पुरुष स्त्रीका व्यवहार है शायद आप उस परी के ऐसे व्यवहारको सुन प्रसन्न हुये होंगे और यह समझाहोगा कि अहमदको उसके साथ सांसारिक सुख प्राप्त हुआ परन्तु मेरे बिचारमें यह सब बातें आपके लिये दुःखदायी जान पड़ती हैं कि ऐसा न हो जो आपका पुत्र आपसे कुछ बैरठाने जो यह समझे कि अहमद सपूतहै कि ऐसा काम उससे बन न पड़ेगा यह सचहै परन्तु इस समय वह परीकी प्रीति में फँसाहै क्या आश्चर्यहै कि उसके उपदेशके अनुकूल किसी अनुचित कर्मका उद्योग करे तात्पर्य यह शङ्काका स्थानहै उसका उपाय आप अवश्य

कीजिये इतना कह वह बादशाहसे बिदा होनेलगी बादशाहने चलते समय उससे कहा मैं तुझपर दो प्रकारसे प्रसन्न हुआ एक जो तूने इतना परिश्रम उस बृत्तान्तके मालूम करने के लिये उठाया और दूसरे तेरे अतिहितकारक उपदेशसे जब बादशाहने समझा कि वह मन्दिरमेंसे जा चुकी तब उसने अपने प्रधानको जिसने उसके मनमें शङ्काडाली थी बुलवाकर सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया और उससे सम्मत पूछा कि इस बातका क्या उपाय कियाजावे उसनें कहा इसका उपाय अति सुगमहै अहमद अभी यहींहै उसे क़ैदमें डालदीजिये मारडालना उसका उचित नहीं इस सम्मतको उसने पसन्द किया उस समय तो वह चुपहोरहा दूसरे दिन फिर उसने जादूगरनीको बुलवाकर अहमदके क़ैद करने के लिये सम्मत पूछा उसने कहा मेरे बिचारसे यह उपाय अनुचितहै क्योंकि जब आप उसे क़ैद करेंगे तो यहभी अवश्य है कि उसके साथियों को भी क़ैद करें वह सबके सब जिन्नहैं उनको सब कुछ सामर्थ्यहै ऐसा न हो जो वह बन्दीख़ानेसे निकलकर उस परीको जाय पुकारें तो वह अपने पति की दशा सुनकर एक उपाधि मचावे जिसका निवारण आपको कठिनहो यदि आपको मेरा बिश्वासहो तो मैं एक ऐसा यत्न बताऊं जिससे आपको बहुत लाभहो और किसी भांति की हानि न हो बहुधा आपको अहेर आदिक में खेमेकी आवश्यकता पड़ती है और उसके बनाने में बहुतसा द्रव्य ब्यय होताहै अब आप अहमद से कहें कि एक बड़ा डेरा कहीं से मुझे लादे जिसमें मेरी सम्पूर्ण सभा और सेना समावे और वह ऐसा हलकाहो कि एक मनुष्य उसे जहां चाहे उठालेचले जब वह आपकी यह मांग लादेवे तो बहुत सी वस्तु मँगानेके योग्य आपको बताऊंगी निदान वह आपकी मांगोंसे बहुत तंग होजावेगा और इसी उपायसे जिन्नोंकी अद्भुत बनाई वस्तु आपको प्राप्त होंगी और अहमद दिक़ होकर मारे लज्जा के कदापि आपकी देहरी पर पग न धरेगा और आप उसके छल और बैरसे बचेंगे और ऐसे कुपूतके मारने अथवा क़ैद करनेकी आप को आवश्यकता न पड़ेगी फिर बादशाहने यही बात अपनी

सम्पूर्ण सभासे कह सम्मत पूछा वह सुन चुपके होरहे बादशाह इस सम्मत को अच्छा समझ चुप होरहा दूसरे दिन जब अहमद बादशाहके निकटगया और बहुकालपर्यन्त परस्पर वार्त्ता रही तब बादशाहने अवसर पाकर कहा पूर्वमें मैं बहुत दिनतक तुम्हारे वियोगसे चिन्ता में रहा जब तुम मेरे पास आये तो मुझे तुम्हारे देखने से अति प्रसन्नता हुई यद्यपि मुझे तुम्हारे रहनेकी जगह मालूम न थी तथापि मैंने उसके पूछनेमें तुमसे हठ न किया परन्तु अब मुझे यह भेद मालूम हुआ कि तुमने महाऐश्वर्य और अतिरूपवान् परी के साथ अपना बिवाह किया इससे मैं अधिक प्रसन्न हुआ परन्तु यह कहो जो मैं तुमसे कोई बस्तु मांगूंतो तुम परीसे वह लासक्तेहो और उसको तुम्हारा इतना पक्षहै कि जो बस्तु मैं तुमसे मांगूं उसको निश्शङ्क देदेगी तुम्हें खूब मालूमहै कि बहुधा मैं अहेरको जाया करता हूँ मुझे डेरोंकी आवश्यकता हुआ करतीहै जिसके उठाने के लिये बहुत से ऊंट दरकार होतेहैं मैं चाहताहूं कि ऐसा डेरा मुझको मिले जिसमें मेरा सम्पूर्ण कटक समाजावे और वह इतना हलका हो जिस को तुम अथवा कोई और एक मनुष्य उठालावे तुम उस परीसे मुझे लादो अहमदने कहा बहुत अच्छा मैं अपनी भार्यासे जाकर कहता हूं परन्तु मैं नहीं जानता कि ऐसा उत्तम डेरा उसके पासहै वा नहीं यदि है तो वह देगी नहीं तो नहीं इस हेतु उसके लानेकी प्रतिज्ञा आपसे नहीं करता बादशाहने कहा जो तू वैसा डेरा न लावेगा तो मैं तेरा मुख न देखूंगा और तुम कैसे उसके पति और वह कैसी तुम्हारी पत्नीहै कि ऐसी तुच्छ बस्तुभी तुम्हारे कहनेसे न देगी जान पड़ताहै कि तुमको वह तुच्छ और दासवत् समझतीहै जो तुम उस से डेरा मांगोगे उसने दिया तो जानना कि वह तुमसे अतिहित रखतीहै नहीं तो नहीं मुझे निश्चयहै कि वह तुमसे बहुत प्रीति रखतीहै जो कुछ उससे मांगोगे वह प्रसन्नतासे तुमको देवेगी शाहज़ादा इस नियमके बिपरीत कि तीन दिन रहकर चौथे दिन जाता था केवल दोही दिन रहकर तीसरे दिन उधरको चला जब भवनमें पहुँचकर बानूपरी के पासगया तो उसने उसे चिन्तित देख पूछा

कुशल तोहै आज क्यों तुम उदास होकर अपने पिताके पाससे आये हो शाहज़ादेने सम्पूर्ण बृत्तान्त कहदिया बानूने इतना सुनकर उत्तर दिया तुम धैर्य रक्खो मैं तुमको अवश्य डेरादूंगी परन्तु मुझे मालूम हुआ कि उसका काल निकट पहुँचा अहमदने कहा ईश्वर मेरेपिता को बहुकालपर्यन्त जीतारक्खे हे सुन्दरी! वो कुछ रोगी नहीं अभी उन को कुशलपूर्बक छोड़ आयाहूं परन्तु आश्चर्यमेंहूं कि मैंने कुछ हाल यहांका उससे नहीं कहा उसको सब हाल क्योंकर मालूम हुआ बानू परीने उत्तर दिया हे प्रियतम! तुमको स्मरण होगा कि मैंने उस बृद्धाको जिसे तुम रोगी समझकर यहां उठालायेथे देखकर क्या कहाथा वह बीमार न थी उसने केवल तुम्हारा हाल मालूम करनेको बहाना कियाथा उसीने जाकर वहां यह सब हाल कहा जब तुम उस को यहां छोड़गयेथे मैंने उसको औषध पिलाई बहाना करके वह अच्छी होगई और मेरे पास बिदा होनेको आई मैंने उसके साथ दा-सियां करके उसे सब सामग्री इस भवनकी दिखाई फिर वह देखभाल कर बिदाहुई इसके बिशेष किसीकी सामर्थ्य नहीं जो यहांतक पहुँचे क्या आश्चर्य है कि यहांका सब भेद जानगईहो शाहज़ादेने उसकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा अब मेरी इच्छाहै कि तुम्हारी कृपासे वैसा डेरा अपने पिताके पास लेजाऊं उसने कहा इस तुच्छ बस्तुके लिये इतनी चिन्ता क्यों करतेहो उसे मैं अभी मँगवातीहूं इतना कह उसने एक दासीको जो ख़ज़ांचीथी बुलवाकर कहाकि फ़लाना डेरा शीघ्र लेआ वह दौड़ीगई और उसीडेरेको लाई और बानूकी सैनकेअनुकूल उसे अहमद शाहज़ादेको दिया अहमद उसे मुट्ठी में दबाकर समझा कि हमारी प्यारीने मुझसे हास्य कियाहै बानू इस बातको जानकर ठट्ठामारके हँसी और कहनेलगी हे प्यारे! तुमने अपने मनमें स-मझा होगा कि मैं तुमसे हँसतीहूँ फिर नूरजहां अपनी दासीसे कहा कि इस डेरेको लेकर एक बड़े बनमें खड़ाकर जिससे अहमदको इस का गुण मालूमहो तदनन्तर वह दासी उस डेरेको लेकर भवनसे बहुत दूर चलीगई और वहां उसने वही डेरा खड़ाकिया शाहज़ादेने उसेऐसा बड़ा पाया कि दो बादशाहभी सेना समेत वहां भलीभांति

बैठसकें और किसीको एक दूसरेसे कष्ट न हो उस दासीने फिर उसे तहकर शाहज़ादे अहमदको दिया यह उसी समय उसे लेकर सिधारा और अपने नियमित सवारों सहित अपने पिताके सन्मुख गया और उस डेरेको दिया बादशाहभी उसे देख समझा यह तो बहुत छोटाहै जब वह खड़ाहुआ उसको बहुत बड़ा देख आश्चर्य किया और ऐसी अद्भुत बस्तु लादेनेसे अहमदका अतिगुण माना फिर उसने अपने सेवकोंको आज्ञा दी इसे रक्षापूर्वक रक्खो और इस अपूर्व बस्तुकी प्राप्तिसे उसे भय और शङ्का अधिक हुई और बिचारा वह परी बास्तव में अहमदको बहुत चाहती है अपने द्रव्य और ऐश्वर्यसे बड़े २ काम करसक्ती है मेरा राज्यलेना कौन बड़ी बातहै फिर उसने जादूगरनीको बुलवाकर इस बिषय में सम्मत पूछा उसने कहा शाहज़ादे से पानी चश्मेशेरोंका मांगो जब बादशाह सन्ध्या के समय अपने सभाके समूहके मध्यमें बैठाथा कि अहमद आया और चरण चूम बादशाहके पास बैठगया बादशाह ने उससे कहा मैं तुम्हारे डेरेके लानेसे अतिप्रसन्न हुआ निस्सन्देह कोई ऐसी बिचित्र बस्तु हमारे ख़ज़ाने में नहीं परन्तु एक बस्तु मुझे और चाहिये यदि उसेभी लाओ तो मैं अतिप्रसन्न हूंगा तुम्हारी प्रियाके पास पानी चश्मेशेरोंकाहै जिसके पीतेही सर्वभांतिके ज्वरादिक रोग नाश होजातेहैं मुझे निश्चयहै कि मेरी आरोग्यता तुझको स्वीकार होगी थोड़ासा जल मेरेलिये लाओ कि आवश्यकतापर उसको पियाकरूं शाहज़ादा इस बातको सुनकर चुपहोरहा और सोचने लगा कि डेरेको जिस तरह मैंने जाना उस तरह लादिया ऐसा न हो जो उस जलके मांगनेसे परी अप्रसन्न होजावे और अहमदको यह भलीभांति बिदित था कि जो बस्तु मैं उससे मांगूंगा नाहीं न करेगी इस चिन्तनाके उपरान्त उसने उत्तर दिया मेरे अधिकार में कोई बस्तु नहीं परन्तु मैं उस जलकोभी मांगूंगा यदि उसने दिया तो लाऊंगा आपसे प्रतिज्ञा नहीं करसक्ता आपकी मांगी हुई बस्तु लानेमें अपनी सपूती समझताहूं परन्तु इस बस्तु के मांगनेमें कष्ट अवश्यहै निदान दूसरे दिन वह बादशाहसे बिदा

होकर अपनी प्रियाके निकट आया और कुशल पूछने के उपरान्त कहा मेरा पिता आपकी कृपासे बड़ा गुण मानता है परन्तु उसने सिंहरक्षित सरोवर का जल मांगाहै यदि तुमको उसके देने में कष्ट न हो तो मुझे मँगवादो मैं उसको जाकर देआऊं बानूपरी ने कहा जान पड़ता है कि तेरा पिता तुम्हारी और हमारी परीक्षा लेता है जो कुछ जादूगरनी उसको सिखातीहै वही वस्तु वह मांगताहै अच्छा वहभी तुमको मैं दूंगी इसमें भी मुझे कुछ हानि नहीं परन्तु कुछ भयहै अब मैं उसे वर्णन करतीहूं चित्त धर सुनो अमुक मैदान में एक दिव्य सरोवर है जिसकी रक्षाके लिये अतिबलवान् चार सिंह हैं उनकी उसपर चौकी रहतीहै पारी २ से दो सिंह जागतेहैं और दो सोतेहैं और किसी मनुष्य को जलके पास जाने नहीं देते मगर मैं ऐसी तदबीर तुमको बताऊंगी कि जिसके सबबसे तुम्हें कुछ नुः क्सान और आसेब उन शेरोंसे न पहुँचेगा इतना कह उसने सुई और धागा निकालकर कई गेंदें अपने हाथ बनाईं एक गेंद शाह-ज़ादेको देकर कहा पहिले तुम इस गेंदको रक्षापूर्वक रक्खो दूसरे यह कि तुम दो घोड़े अतितीव्रगामी लेना एकपर तुम चढ़ना और दूसरे पर एक भेंड़के चार टुकड़े करके लादना वह भेंड़ मैं आज काट रक्खूंगी तीसरे यह कि तुमको मैं एक पात्र देतीहूं तुम उसमें जल भरना अब भोरके सवारहो और दूसरे घोड़ेकी बाग पकड़ उसी मैदानकी ओर जाना जब उस मैदानके निकटवर्ती भवन के लोहे के द्वारपर पहुँचो तो इस गेंदको आगे डालदेना यह गेंद आपही लुढ़कता हुआ उस भवनके द्वारतक पहुँचेगा तुम उस गेंदके पीछे चलेजाना जहां कहीं यह गेंद ठहरे वहींपर तुम उन चारों सिंहों को देखोगे और द्वार खुलजावेगा वह दो सिंह जो जगे होंगे तो सोते हुओं को भी जगा देवेंगे फिर वह चारों तुमको देखकर नाद करेंगे परन्तु तुम उनसे भय न करना भेंड़ के चारों टूक तुम उनके सन्मुख डालदेना घोड़ेपरसे न उतरना और एँड़ मारकर भवनके भीतर पैठकर सरोवर पर पहुँचजाना और वहांसे नीरभर लौटआना वह सिंह तो भोजन करतेहोंगे तुमसे कुछ न कहेंगे

शाहज़ादा भोरकोउठ उधर को चला और उसी भवनके निकट पहुँच पात्र जलसे भरा जब कुछ दूर निकल आया तो दो सिंह उसके पीछे दौड़े उसने उनका भय न किया और अपने बचावके लिये तलवार गिलाफ़से निकाल ली सो एक सिंह उसे जातेहुये देख लौटगया और दूसरे ने शाहज़ादे को शिर और पूंछसे सैन की कि तू अभय चलाजा परन्तु दूसरा सिंह उसके साथ लगाहुआ जाताथा इतने में शाहज़ादा नगर में पहुँच बादशाह के महल में चलागया और वह सिंह जो पीछे चलाआता था अहमदको मन्दिरमें प्रवेश करतेदेख लौटगया उसे कुछ दुःख न दिया फिर बहुतसे मनुष्य अहमद को अकेले देख उसके साथ होगये और वहां पहुँच उसे घोड़े से उतारा उस समय बादशाह सभामें बैठ अपने देशके प्रबन्धकी वार्त्ता करता था शाहज़ादेने उसे प्रणामकर वही जलका घट उसे भेंटदिया और विनय की यह वहीजल है जो आपने मांगा था यहजल अलभ्य है ऐसी अपूर्व बस्तु आपके निकट कदाचित् न होगी जो ईश्वर न चाहे आपकी देहमें किसी भांतिकी व्यथा हो तो थोड़ासा इसको पीली- जियेगा तत्काल निवृत्त होजावेगी बादशाहने अतिहर्ष से उसका हाथ पकड़ उसे अपने दाहिनी ओर बैठालिया और कहनेलगा तुम इस जलको अति भयानक स्थानसे लायेहो इससे मैं तुमसे अतिप्रसन्न हुआ और इस भयानक स्थानका हाल जादूगरनी ने बादशाहसे कहाथा फिर बादशाहने अहमदसे पूछा तुम वहां क्यों- कर गये और शेरोंसे बचकर क्योंकर जल लाये शाहज़ादे ने कहा आपके प्रतापसे कुशलपूर्बक वहां पहुँचा फिर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया जब बादशाह ने अपने पुत्रका इतना साहस देखा तो प्रथमसे अधिक डरा और दशगुणा बैर और भय उसके मन में समाया तब उसे शीघ्र बिदाकर मन्दिरमें गया और उस जादूगरनी को बुलाभेजा और सम्पूर्ण समाचार उससे कहा वह तो पहिले यह सब हाल सुनचुकीथी अब बादशाह से सब वृत्तान्त सुन अत्यन्त विस्मित हुई फिर विनयकी अब की बेर अहमदसे इस भांति की बस्तु मांगिये विश्वासहै कि वह बस्तु न लासकेगा बादशाहने उस

को बिदा किया जब अहमद दूसरे दिन बादशाह के निकट आया तो उसने कहा हे प्रियपुत्र ! मैं तुम्हारी सेवा से अतिप्रसन्न हुआ अब तीसरी बातभी मुझको अवश्यहै यदि तुम उसेभी करो तो जन्मभर तुमसे प्रसन्न रहूंगा शाहज़ादेने बिनयकी वह कौनसी बात है आप कृपाकर कहिये बादशाहने कहा मेरे पास एक मनुष्य लाओ जिसका डील एक गज़से अधिक न हो और उसकी बीस गज़की दाढ़ी हो साढ़े छः मनकी ज़रीब कन्धे में लेकर चले और वह उसे इस भांति घुमाये जैसे कोई काठके सोंटेको घुमाताहै अहमदने बिनयकी इस भांतिका मनुष्य संसार भरमें उत्पन्न न हुआ होगा निदान जब वह बानूपरी के निकट गया तब उससे यह हाल वर्णन किया और बानूकी ओर देखकर कहा ऐसा मनुष्य जगत भरमें न होगा बादशाह समझे बूझे बिना यह आज्ञा मुझको देचुका यदि ऐसा मनुष्यभी मिला तो इतनी भारी जरीब अपने कन्धेपर क्योंकर उठासकेगा इतना कह फिर कहनेलगा मेरे बिचारमें तो कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो तुम जानतीहो तो बताओ उसने कहा इस बातमें तुम कुछ चिन्ता न करो तुमने तो बड़े भयानक स्थानसे अपने पिताको जल लादिया यह बात उससे कठिन नहींहै इस गुणवाला मेरा भाई शब्बर है यदि वह और मैं एकही माता पिता की सन्तानहूं परन्तु ईश्वरने उसका स्वरूप ऐसाही रचाहै और वह बड़ा धीर और साहसी है और अमुक स्थानका बादशाहहै और एक लोहेकी जरीबके सिवाय और शस्त्र अपने पास नहीं रखता अब मैं उसको बुलातीहूं तुम उससे कदाचित् न डरना शाहज़ादे अहमदने कहा जो शब्बर तुम्हारा भाई है और उसका स्वरूप अद्भुत है मैं उसको देखकर अतिप्रसन्नहूंगा जैसा कि कोई शख़्स अपने मित्र और भाई बन्धुके देखने से प्रसन्न होताहै उसे देखकर क्यों डरूंगा फिर परी बानू ने सुनहली अँगीठी मँगवाकर उसमें अग्नि जलाई और एक सुवर्णका सन्दूक़चा मँगवाकर उसने खोला और उसमें से कोई सुगन्ध निकाल उसमें डाली जब उसका धुवां घना उठा तो कई क्षणके उपरान्त उसने कहा मेरा भाई शब्बर आया

तुम उसको देखतेहो वा नहीं शाहज़ादेने शिर ऊपर उठाके शब्बरको देखा कि बास्तवमें उसकाडील गज़भरकाथा और बड़ी तमक झमक से आता था उसके कन्धेपर लोहेकी साढ़ेछःमनकी जरीब रक्खी हुई थी और उसकी दाढ़ी बहुत घनी बीसगज़की लम्बीथी परन्तु उसको इस उपायसे रखताथा कि धरतीमें नहीं लगतीथी और मूछें उस की कानोंतक पहुँचतीं जिससे उसका मुख छिपाहुआथा और नेत्र उसके शिर में घुसेहुये थे और शिर उसका जिसपर अतिउत्तम मणिजटित मुकुटथा आगे और पीछे कुबड़ाथा अहमद शब्बरको देख न डरा और उसी भांति अपनी प्रियाके निकट बैठारहा शब्बरने आगे बढ़कर उसको एक दृष्टिसे देख पूछा कि तुम्हारे निकट यह कौन बैठा है बानूपरीने कहा यह अहमद नाम मेरा पति हिन्दुस्तान के बादशाहका पुत्रहै भाई! मैंने अपने बिवाहमें तुमको इसलिये नहीं बुलाया कि तुम उन दिनों बड़े युद्धमें प्रबृत्तथे अब तुमने ईश्वरकी कृपासे अपने बैरियोंको परास्त किया इसलिये मैंने तुमको बुलाया इतना सुनतेही उसने अहमदको प्रीतिसे देखा और अपनी बहिन से कहा कोई ऐसा काम इस शाहज़ादेका अटकाहै कि मैं उसे करूं उसने उत्तर दिया हिन्दुस्तानका बादशाह अर्थात् इस शाहज़ादेका पिता तुम्हारे दर्शनोंकी इच्छा रखता है कृपा करके तुम इसके साथ वहां जाओ उसने कहा मैं इसी समय जानेको तैयार हूं बानूने कहा भाई! आज तुम दिनभरके थकेहो कल भोरको जाना और सन्ध्या को मैं सम्पूर्ण बृत्तान्त अहमदका तुमसे बर्णन करूंगी तदनन्तर बानूपरीने बादशाह और उसके मन्त्री आदिक सम्पूर्ण सभासदोंका बिशेष जादूगरनीका बृत्तान्त बर्णन किया दूसरे दिन प्रभात को शब्बर अहमदके साथ चला मार्गमें मनुष्य शब्बरके बिकराल स्वरूप को देखकर भयसे दूकानों और घरोंमें छिपकर बैठरहे और अपने अपने किवाड़ोंको बन्द करलिया और कोई घबराहटसे पगड़ियों और जूतियोंको छोड़कर भागगये फिर वह शाही दरबार में गया जहां बादशाह अपने सम्पूर्ण सभासदों और मन्त्रियों सहित बैठाथा वहांभी मनुष्य शब्बरको देख छिपगये शब्बर ने अतिग्लानि और

अहंकारसे बादशाहके तख़्तके निकट जाकर कहा तूने मेरे दर्शनकी अभिलषाकीथी सो मैं आया कह मुझसे क्या इच्छारखताहै बादशाहने उसके बिकट रूपके देखतेही उत्तर देनेके बदले अपने दोनों हाथ आंखोंपर रक्खे और वहांसे भागने की इच्छाकी शब्बर बादशाहकी अशीलतासे अतिअप्रसन्न हुआ कि मैं तो इतना परिश्रमकर उसके बुलाने के अनुकूल यहां आया और वह मुझे देखकर भागताहै निदान लोहेकी जरीबको उठा उसके शिरपर मारी कि शिर उसका खण्ड २ होकर चूर्ण होगया उस समयतक अहमद वहां नहीं पहुँचाथा उसके पीछे यह उपद्रवहुआ इतनेमें अहमदभी पहुँचा फिर शब्बरने राजमन्त्री को मारना चाहा परन्तु शाहज़ादे अहमद ने उसको बचाया कि यह मेरा अतिहितैषी मित्रहै इसने कोई अनुचित बात मेरे लिये नहीं की और सब मेरे बैरी हैं इतना सुनतेही सब प्रधान और मन्त्री जो दोनों ओर पंक्ति बांधकर खड़ेथे उन लोगोंके सिवाय जो भागगयेथे कोई जीता न बचा सब के सब मारेगये फिर शब्बरने सभा से राजभवन में आकर राजमन्त्रीसे जिसके प्राण शाहज़ादे के कहने से बचगये थे कहा उस जादूगरनीको जो मेरे बहनोई की बैरिनहै और उन बादशाहके सम्मतियों को बुलाला कि उनको इस दुष्टकर्मका दण्डदूं इतना सुनतेही मन्त्री पहिले उस जादूगरनीको और तिसके उपरान्त सब सभासदोंको जो शाहज़ादेके बैरीथे बुलालाया शब्बरने उनकोभी लोहेकी जरीबसे मारा और उस जादूगरनीसे कहा कि तेरे बुरे उपदेशका फल यहीहै जो तुझको अब मिला तदनन्तर शब्बरने नगरभरके मनुष्योंके मारने का इरादा किया परन्तु शाहज़ादेने सबको बचादिया फिर शब्बर ने अहमद को शाही बसन पहिनाकर तख़्तपर बैठाया और उसके नामकी नगरभरमें डौंड़ी पिटवादी नगरके सम्पूर्ण मनुष्य अहमद से प्रसन्न थे उसके तख़्तपर बैठने से अतिसन्तुष्ट हुये और अपनी अपनी सामर्थ्यभर भेंट देकर बड़े नादसे उसको आशीर्बाद देने लगे जब शब्बर यहां यथेच्छ प्रबन्ध करचुका तो अपनी बहिन कोभी वहां लेआया तिसके उपरान्त शब्बर बिदा होकर अपने भवनको

सिधारा अहमद्ने अली और नूरुलनिहारको बहुत कुछ देकर एक नगरका अधिपति करके बिदा किया और एक प्रधान को हुसेन शाहज़ादेके पास भेजकर कहलाभेजा जिस देशको तुम चाहो उसका बादशाह तुमको बनादें परन्तु हुसेन उस दशा में अति प्रसन्नथा उसने राज पाट स्वीकार न किया और उसी प्रधानके द्वारा अहमद्की कृतज्ञता कहलाभेजी और अपना जन्म ईश्वरके आराधन और तपस्यामें बिताया शहरज़ाद इस कहानीको सम्पूर्ण करके दूसरे दिन तीन बहिनोंके परस्पर ईर्षाकी दूसरी कहानी कहनेलगी ऐसेही बिचित्र चरित्र कहकर अपने प्राणको बादशाहसे बचाती॥

तीन बहिनों की कहानी ॥

पूर्बकाल में फ़ारसदेशका शाहज़ादा खुसरोशाह नाम बहुधा रातों को बेष बदल एक सेवकको अपने साथ ले नगरकी सैर किया करता और संसार के अद्भुत बिषय जिनका बर्णन बिस्तार से है देखता निदान जब शाहज़ादेके पिताका बृद्धावस्थाके प्राप्तहोने से देहान्त होगया तो शाहज़ादा तख्तपर बैठा और उसने अपनानाम कैखुसरो जारी किया और उसी भांति सन्ध्या से वज़ीरको साथ ले और बेष बदल नगरके बाज़ारों और गलियों में फिरनेलगा अकस्मात् एक गलीमें जापड़ा वहां उसने एक घरमें दो तीन स्त्रियोंको बातें करतेहुये सुना बादशाह ने पास जाकर दरवाज़े की दरार से झांककर देखा कि तीन बहिनें एक दालान में बैठी हुई आपस में बातेंकरती हैं वह कान लगाकर उनकी बातें सुननेलगा तथाच बड़ी बहिन ने अपना इस भांति मनोरथ प्रकटकिया कि मैं चाहती हूं कि मेरा बिवाह बादशाह के रोटी पकानेवाले से हो कि अतिउत्तम और स्वादिष्ठ रोटियां खाकर तुम दोनों को तरसायाकरूं मँझली बहिनने कहा कि मेरी इच्छा यहहै कि मेरा बिवाह बादशाहके बावर्ची से हो कि उत्तम २ भोजन कि जिनके आगे बादशाह की रोटियां तुच्छहैं मेरे खानेमें आयाकरें तीसरी बहिनने जो सबसे छोटी और चतुर और बाचालथी अपनी पारीमें कहा कि मेरी तुम दोनों कीसी छोटी इच्छा नहीं है किन्तु मेरी बड़ी इच्छाहै मैं चाहतीहूं कि

इस देशके बादशाह से मेरा ब्याहहो और उस बादशाहसे एक पुत्र उत्पन्नहो जिसके एक ओरके बाल स्वर्णकेहों और दूसरे तरफ़ के रूपेके और जब वह बालक रोवे तो उसकी आंखों से मोती झड़ें और हँसते समय उसके लाल ओष्ठ कलीके सदृश खिलेहुये मालूम होवें बादशाह उन तीनों बहिनों के बिशेष उस छोटी बहिन का मनोरथ सुन अति आश्चर्यमें हुआ और इच्छाकी कि उन तीनों वहिनों की इच्छा पूर्ण करें इस बातको अपने मनमें ठान मन्त्री से कहा कि तू इस घरको खूब पहिचान रख और सुबह को इन तीनों बहिनोंको मेरे पास लाइयो निदान दूसरे दिन भोरको मन्त्री उन तीनों बहिनों को उनके घरसे लेजाके बादशाह के सन्मुख लेगया बादशाहने उनसे कहा कि कल रात्रिको तुम क्या कहतीथीं उन सब बातोंको मुझसे बर्णन करो पर चैतन्य रहो उस बातमें अन्तर न पड़े क्योंकि वे बातें मुझको मालूमहैं और अपने कानों सुनचुकाहूं इस बातको सुनकर वे तीनों बहिनें मारे लज्जाके कुछ उत्तर न दे सकीं और अपने अपने शिर नीचे करके चुप होरहीं बादशाह छोटी बहिनको जो महासुन्दर और नखशिख से बहुत अच्छी थी देखकर मोहित होगया जब बहुत पूछा तो उन्होंने इन्कार किया बादशाहने उनको दिलासा देकर कहा कि तुम कुछ भय मत करो और लाज छोड़ जैसी कि रात्रिको बार्त्ता करतीथीं मुझसे बर्णनकरो कि मैं तुम्हारे मनोरथों को सिद्ध करूं निदान उन्हों ने अपने २ मनोरथोंको प्रकट किया बादशाहने सुनकर बड़ी बहिनका बिवाह अपने रोटी पकानेवालेके साथ और मँझलीका बिवाह बावर्ची के साथ उसी दिन करदिया और अपने विवाहकी तैयारी की आज्ञा दी तैयारी होनेके उपरान्त बादशाहोंके समान बड़े धूमधामसे बिवाह किया और बादशाहने उसको मलका बनाया और बड़ी दोनों वहिनों का बिवाह उन रसोईदारों की प्रतिष्ठा के अनुसार अर्थात् बिना धूम धाम के कियाथा उन सबको उचित था कि अपनी २ अभिलाषाको पाकर प्रसन्न होतीं पर अपनी छोटी बहिनके बिवाह की धूमधाम और प्रताप देखकर ईर्षा हुई और रात्रि दिन जला

करतीं एक दिन बड़ी और मँझली बहिन हम्माममें नहाने के लिये आईं तहां बड़ीने मँझलीसे कहा छोटी बहिन हमसे ऐसी सुन्दर न थी कि मलका होती मुझको यह बात बुरीमालूमहुई मँझली बहिन ने उत्तर दिया बहिन मैंभी इस बातसे बहुत अप्रसन्नहूं मैं नहीं जानती कि बादशाहने उसे क्या देखकर पसन्द किया वह तो मलका होनेके योग्य न थी मेरे बिचारसे बहिन तूही बादशाहके बिवाहके योग्यथी बादशाह को उचित था कि तुझे ही मलका बनाता बड़ी बहिनने उत्तर दिया कि मैं अतिआश्चर्य में हूं जिसका बर्णन नहीं करसक्ती यदि बादशाह तेरा सौन्दर्य पसन्दकर तुझसे बिवाह करता तो उस छोकड़ीसे हज़ार हिस्से अच्छाथा निदान बादशाह की अनीतिसे हम बड़े खेदमें रहतीहैं अब कोई ऐसी यत्न किया चाहिये कि जिससे वह छोकड़ी बादशाहकी दृष्टिसे गिरजावे सो वे दोनों बहिनें इसी चिन्तामें रहकर भेंट होनेपर यही बातें कियाकरतीं और उसके मारडालने और कष्टका उपाय सोचतीं पर कुछ न बनपड़ता और छोटी बहिन उन दोनोंका अति सत्कार करती और जिस भांति उसको उन दोनोंसे पहिले प्रीतिथी अबभी वही प्यार रखती संयोग से कितने महीनोंके उपरान्त उसके गर्भ रहा और बादशाह इस ख़बरको सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और अपने सम्बन्धित सम्पूर्ण नगरों में ख़ुशी करनेकेवास्ते आज्ञादी वे दोनों बहिनें अवसर पाके बादशाह के महल में गईं और मलकासे कहा कि हमको ईश्वर ने यह दिन दिखाया हम चाहती हैं कि जब प्रसूतिका समयहो तो हमहीं जनवायें और चालीस दिनतक कामकाजके लिये उपस्थित रहें मलकाने कहा बीबियो! बहुत अच्छा तुमसे और कौन अधिक बिश्वासित होगा कि जिनका हम ऐसे काममें बिश्वास करें पर मैं बादशाह की आज्ञापालकहूं उनकी आज्ञाके बिना कोई काम नहीं कर सक्ती इससे उत्तमहै कि तुम्हारे पति बादशाहसे इस आज्ञाको लेलें निश्चयहै कि बादशाह रिश्तेदारी के सबबसे रहनेकी आज्ञा देदेंगे फिर उन दोनोंके पतियोंने अपनी स्त्रियोंका कहना मानकर बादशाहसे अपनी स्त्रियोंके रहनेकी प्रार्थना की बादशाहने कहा कि मैं

पूछकर उत्तर दूंगा फिर बादशाहने अपनी स्त्रीसे पूछा तुम्हारी इच्छा हो तो तुम्हारी बहिनें प्रसूतिके समय तुम्हारे पास उपस्थित रहें मेरे विचारसे बेगानोंसे उनका रहना ऐसे समयपर उत्तम होगा मलकाने कहा कि यह बात मेरे विचारसेभी बहुत अच्छीहै तथाच मलकाकी दोनों बहिनोंके रहनेकी आज्ञा दी और वे दोनों उसी समयसे बादशाहके महलमें रहनेलगीं अब उनको अपने मनोरथ के अनुसार अवसर मिलगया जब मलकाकी प्रसूतिका समय पहुँचा तो उसके अतिसुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके देखने से उन दोनों के मन में ईर्षा बढ़गई और मलकाकी दृष्टि बचाकर उस पुत्रको एक कम्मलके टुकड़े में सावधानी से लपेट और एक पिटारी में बन्दकर नहरके बहावमें जो मलकाके महलमें जारीथी डालदिया और उसकी जगह एक कुत्तेका मुवाहुआ पिल्ला लेकर लोगोंको दिखाया कि मलका यह जनीहै यह खबर बादशाहको पहुँची इससे अतिक्रोधित हुआ और मलका के मारडालने का इरादा किया परन्तु मन्त्रीने जो संयोग से उपस्थितथा बादशाहको कह सुनकर शंका और मलकाकी निर्दोषता बहुतसे प्रमाण देकर प्रतीतकराई अकस्मात् वह पिटारी बहते बहते बागोंकी नहरमें गई और बागके दारोगाकी दृष्टि जो नहरके किनारे पर टहलरहाथा उस पिटारीपर पड़ी उसने तुरन्तही एक बागबानको पुकारा और उस पिटारीको दिखाकर कहा कि शीघ्र जाके उस पिटारी को मेरे पास ला कि मैं देखूं उसमें क्या है बागबान दौड़कर नहर किनारे गया और किसी लकड़ी से खींचकर पिटारीको बाहर निकाल कर दारोगा के पास लाया दारोगा उसी समय का पैदा हुआ अति सुन्दर लड़का कम्मल में लिपटा हुआ उस पिटारीमें देखकर अति आश्चर्य में हुआ वह दारोगा निष्पुत्रथा और संतान के लिये सदैव ईश्वरसे प्रार्थना करताथा उस बालकको देखतेही पिटारी समेत घर को लेगया और अपनी स्त्री से कहा कि ईश्वरने मुझको यह लड़का दिया है अभी एक दाई बुलवाकर दूध पिलवा और इसको अपने उदरका पुत्र जान बड़ी सावधानी से पालन पोषण कर उसकी पत्नी अतिप्रसन्न होकर उसका पालन करनेलगी दारोगाने इसबालककी कुछ

तलाश न की कि वह बालक कहांसे आया और मनमें समझा कि वह लड़का निश्चय करके मलकाके महलसे आयाहै दूसरेवर्ष मलका के एक और पुत्र उत्पन्न हुआ और उसकी दुष्ट बहिनोंने ईर्षासे उस बच्चे के साथ वही बर्ताव किया अर्थात् उसकोभी कपड़े में लपेट और पिटारी में बन्दकर उसी नहर में डालदिया और यह बात प्रसिद्ध की कि अबकी बेर मलकाके बिल्लीका बच्चा पैदाहुआ संयोगसे वह लड़का भी दारोगा के हाथ लगा उसने वह बच्चाभी लेजाकर अपनी भार्याको दिया और कहा इसको पाल बादशाह इस हालको सुनकर आगे से अधिक अप्रसन्न हुआ और मलकाके मारडालनेकी इच्छाकी परन्तु मन्त्रीने कह सुनके इस बेरभी मलका को बचाया और बादशाहके क्रोधको समझा बुझा कर निवृत्त किया तीसरी बेर मलका के लड़की पैदा हुई और वहभी अपने भाइयोंके सदृश पिटारीमें बन्द करके नहरमें डालीगई और वह लड़कीभी उसी दारोगाको मिली और उसने उसकोभी अपनी स्त्री को देकर कहा उन दोनों लड़कों के साथ पाल उन दोनों बहिनोंने प्रकट किया कि अबकी बेर मलका के छछूंदर पैदा हुई बादशाहको इसबेरका क्रोध न थँभा और इसके सुनतेही कहा कि ऐसी स्त्रीको जो जीताछोडूंगा तो मेरे महल को ऐसे ऐसे जन्तु पैदा करके भरदेवैगी अब उचित है कि उसको मैं मारडालूं राजमन्त्री और सभासद् जो उपस्थित थे बादशाहके चरणकमलों पर गिरपड़े और क्षमा मांगी और मन्त्री ने हाथ बांधके बिनय की कि हे बादशाह! ऐसे मनुष्य का मारडालना जो निर्दोष हो उचित नहीं बिधाताकी रचना में कोई उपाय नहीं चलता जो आप उससे ऐसेही अप्रसन्न हैं तो उसके पास न जाया कीजिये और कुछ दान पुण्य कीजिये फ़ारसका बादशाह ऐसी ऐसी बातें सुनकर समझा कि वास्तवमें मलकाका मारना अनुचित है तब मन्त्रीसे कहा कि मैं उसको न मारूंगा पर एक दण्ड उसके लिये मैंने विचारा है वह मारडालने सेभी बुराहै एक क़ैदखाना जामअ मसजिद के दरवाजे के पास बन-वाया जावे और मलका काठके पिंजड़े में क़ैद होकरके उसमें रक्खी जावे जो मुसल्मान निमाज़ पढ़नेको आवे तो पहिले मलकाके मुख

पर थूककर अपना पग मसजिदके भीतर रक्खाकरे कदाचित् कोई मनुष्य ऐसा न करे तो वहभी ऐसा दण्ड पावे बादशाहसे यह बात मन्त्री सुनकर चुप होरहा और यह आज्ञा मानी कदाचित् यह दण्ड जो बादशाहने निर्दोष मलकाके लिये बिचाराथा इन दो दुष्ट बहिनों को दियाजाता तो उचितथा निदान क़ैदख़ाना तैयार होगया और वह बेचारी मलका उसमें क़ैद कीगई और नगरबासी जो मसजिद में निमाज़ पढ़नेको जाते तो पहिले उस मलकाके मुँहपर थूकते वह बेचारी सन्तोष करके इसदुःखको सहती और जो कोई उसके अपराध को जिसके सबबसे बादशाहने यह दण्ड नियत कियाथा सुनता तो उसको निर्दोष समझ दया करता और उसके इस दुःख से छूटने के लिये ईश्वर से प्राथना करता दारोग़ा और उसकी स्त्री उन दोनों शाहज़ादों और शाहज़ादीको बड़े प्यारसे पालते और ज्यों ज्यों वह बढ़ते त्यों त्यों उन दोनों प्राणियोंको हर्ष होता जब वे तीनों सयानेहुये तो दारोग़ाने बड़े का नाम बहमन और छोटे का नाम परवेज़ और लड़की का नाम परीज़ाद रक्खा जब शाहज़ादे पढ़नेके योग्य हुये तो दारोग़ाने उनके लिखाने पढ़ाने के लिये बड़े २ बिद्वान् नियत किये और शाहज़ादीकोभी जब लिखने पढ़नेकी इच्छा पाई तो उसकोभी उन्हीं बिद्वानोंको सौंपा कई दिनोंमें परीज़ादभी अपने भाइयों की भांति लिख पढ़के निपुण होगई और बिद्वानों से कबिता इतिहास और बहुतसी बिद्यायें उन तीनोंने सीखीं थोड़े दिनों में वे ऐसे पढ़ लिख कर प्रबीणहुये कि उनके अध्यापकों को आश्चर्य हुआ और कहने लगे कि ये तो हमसेभी निपुण हैं फिर उन तीनोंने घोड़ेकी सवारी, तीरन्दाज़ी और सिपाहगरी और नेज़ह चलाने की प्रक्रिया आदि सीखीं इन गुणों के बिशेष परीज़ादने गाना बजाना हरएक साज़का भी सीखा दारोग़ा इन तीनों संतानोंको सब बिद्या और गुणों में सम्पन्न पाकर अतिप्रसन्न हुआ और जो कि उसका घर उनके रहने के योग्य न था इसलिये नगर से बाहर जाकर उसने थोड़ी दूरपर जंगल और हरियाली के निकट जगह मोल लेकर वहां बहुत बड़ा महल बनवाना प्रारम्भ किया और आप दिन रात उसके बनवाने में

प्रवृत्त रहता जब वह मकान बनगया तो उसने बड़े बड़े चित्रकारों से भीतर बाहर बड़ी सुन्दरतासे चित्रकारियां बनवाईं और अच्छीर वस्तुओं से उसे सजाया और उसके पास एक अति सुन्दर पुष्प-बाटिका बनाई जिसमें सबप्रकारके फूल और मेवों के वृक्ष लगाये और सिवाय इसके एक बड़ा रमना तैयार किया जिसके चहुँओर ऊंची दीवारें खिंचवाकर उसमें सबप्रकारके शिकारी जानवर पशु पक्षी पाले कि वे दोनों शाहज़ादे और शाहज़ादी उसमें अहेर खेला करें जब वह मकान सब तरहसे तैयार हुआ तो दारोग़ाने बादशाहसे जाकर उसी महलमें रहनेकी आज्ञा मांगी बादशाह कि उससे अति प्रसन्न रहता था उसे प्रसन्नता से आज्ञा दी सो दारोग़ा बादशाह से बिदा होकर उन तीनों समेत उस महलमें रहनेलगा उसकी स्त्री कई बर्ष पहिले मरगई थी और वह महल में आने के पांच छः महीने के उपरान्त अकस्मात् बीमार होकर मरगया और इतना सावकाश न पाया कि उन तीनों संतानों के उत्पन्न होनेका हाल बतलाये पर केवल इतनाही कहने पाया कि बाबा! तुम प्रतिष्ठापूर्बक बहिन भाई मिले रहना उसके देहान्तके उपरान्त बहमन और परवेज़ और परीज़ाद ने यथोचित उसका कर्म किया और परस्पर प्रीति पूर्बक रहने लगे शाहज़ादे कि बड़े उद्योगी और हौसलेवर थे इससे वह बड़े दरजेको पहुँचे एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलने को गये और परीज़ाद शाहज़ादी अपने घरमें अकेली रही संयोगसे एक धर्मिष्ठ बृद्धा उसके दरवाज़ेपर आई और उसने शाहज़ादीसे इच्छा की कि जो आज्ञा हो तो मैं मकानके भीतर आकर निमाज़ पढूं क्योंकि मेरा निमाज़का समय जाताहै शाहज़ादीने उसे भीतर आने की आज्ञा दी जब वह बृद्धा अपने नियमित बन्दना और आराधन से निश्चिन्त हुई तो दासियां शाहज़ादीकी सैनके अनुकूल उसे सारे महल और बाग़में फिरालाईं और उसने अच्छी तरह वह महल और बाग़ असबाब सामान को देखा और अतिप्रसन्न हुई और मन में सोची कि जिस मनुष्यने इस मकानको बनायाहै वह मकानों के बनानेमें अतिनिपुण था फिर लौंडियां उस बृद्धाको परीज़ादके पास कि वह बारहदरी में

बैठी थी लाई शाहज़ादीने उसको देखकर कहा कि हे माता! आओ और मेरे पास बैठो ऐसी धार्मिष्ठ और आचारवती जैसी कि तुम हो संगति करके अपने को कृतार्थ समझती हूं तुमने ईश्वर के आराधन का ऐसा आचार स्वीकार किया है कि सब कोई उसी मार्ग की इच्छा करते हैं बृद्धाने चाहा कि उस मकानके नीचे बैठें परन्तु शाहज़ादीने सुशीलता से उठकर उसका हाथ पकड़ अपने साथ बैठालिया उस बृद्धाने कहा बीबी! तुमसी शीलवती मैंने किसी स्त्रीको नहीं पाया यद्यपि मेरी ऐसी पदवी नहीं कि मैं तुम्हारे पास बैठूं पर आपकी आज्ञा प्रतिपालन की फिर वह बृद्धा परीज़ादसे बातचीत करनेलगी इतने में लौंड़ियों ने बर्तन बिछाकर उनमें नानाभांति के भोजन कुलचे रोटियां और सूखे हरे मीठे मेवे तश्तरियों में रक्खे और कई प्रकार की मिठाई लाकर चुनी शाहज़ादीने एक रोटी उठाकर उस बुढ़िया को दी और कहा हे माता! इसको भोजन कर और जो मेवे तुमको अच्छे लगें उनको खाओ क्योंकि तुम बड़ी देर की घरसे निकलीहो राहमें भोजन करनेका संयोग न हुआ होगा उस तपस्विनी बृद्धाने कहा मुझे ऐसे स्वादिष्ठ भोजनोंके भोजन करने का अभ्यास नहीं है पर जो अब खाऊं तो हानि नहीं क्योंकि ईश्वर ऐसी उदार स्त्रीके हाथसे भोजन खिलवाता है जब उस बृद्धा और शाहज़ादीने थोड़ा सा भोजन खाया तो शाहज़ादीने ईश्वरकी बन्दनाका प्रकार उससे पूछा उसने अपनी बुद्धि के अनुसार उसे बताया फिर उस बुढ़ियासे पूछा कि यह महल कैसा बनाहै सब मकान और असबाब रीति के अनुसार रक्खाहै कोई बस्तु इस मकान और बाग़ में दरकार है या नहीं बृद्धाने कहा हे सुन्दरी! इस बातको मुझसे मत पूछ यद्यपि यह बाग़ और मकान खूब बनाहै और हरतरह से अलंकृतहै परन्तु मेरे विचारसे तीन बस्तुओंकी इसमें ज़रूरत है अगर वेभी इस बाग़में हों तो सबतरहसे यह उत्तम होजावे परीज़ादने सौगन्द देकर उससे पूछा कि वे तीन चीज़ें कौनहैं मैं उनके इकट्ठे करने में अतिपरिश्रम करूंगी निदान शाहज़ादी के बहुत तकरार करने से बृद्धा ने लाचार होके कहा हे सुन्दरी! पहिले एक पक्षी है जिसको बुलबुल हज़ारदास्तां

बोलते हैं और वह नायाब है कहीं नहीं मिलता जब वह प्रियबाणी से बोलता है तो हज़ारों जानवर उसकी सुन्दर बाणी सुनने के वास्ते आते हैं और उसकी आवाज़ के साथ अपनी आवाज़ मिलाते हैं दूसरे एक बृक्ष है जिसके पत्ते बहुत चिकने हैं और पवनके लगने से जब एकपत्ता दूसरे पत्ते के साथ रगड़ताहै तो अच्छी आवाज़ और भांति भांतिके गान सुनाई देते हैं जिसके सुननेसे मनुष्य बिह्वल हो जाता है तीसरे सुनहले रंगका पानी कि जो एक बूंद उसकी किसी ठिलियामें डालकर बाग़में रक्खे तो थोड़ी देरमें वह बर्तन भरजावेगा और फिर फ़व्वारेके समान उछलता और छूटता रहेगा कभीभी बन्द न होगा और पानी उठकर फिर उसी बर्तनमें पड़ता है शाहज़ादीने कहा निश्चय है कि तुमको ऐसी बिचित्र बस्तुओं का हाल मालूम होगा कि कहां हैं मुझको उस जगहका पता बतला बृद्धाने कहा ये तीनों चीज़ें हिन्दुस्तानसे पृथक् देशों अर्थात् और विलायतों में मिलेंगी और इस जगहसे अमुक ओरको बीस दिनकी राहपर है बीसवें दिन जाके पूछना कि गानेवाली चिड़िया और गानेवाला बृक्ष और सोनेके रंगका पानी कहांहै वह मनुष्य जिससे तुमको पहिले भेंट होगी इन तीनों चीज़ोंका ठिकाना बतायेगा यह कहकर बृद्धाने शाहज़ादीसे बिदा होकर अपनी राह ली परीज़ादने वे बातें जो उस बृद्धासे सुनीथीं खूब याद रक्खीं बृद्धा यह समझतीथी कि शाहज़ादी ने साधारण इन चीज़ों का पता पूछाहै न यह कि आपही वहां जाने का इरादा करेगी इसलिये उसने साफ़ पता बता दिया और परी- ज़ाद उसको खूब याद रख इन चीज़ों की प्राप्तिका उपाय बिचारने लगी इसी चिन्तामें थी कि उसके भाई शिकारसे लौटआये परीज़ाद को इस दशा में देखकर अतिबिस्मित हुये निदान बहमनने उससे पूछा कि बहिन! आज तुम क्यों शोचितहो ईश्वर न चाहे क्या तुम कुछ बीमार होगईं अथवा कोई बात तुम्हारी मरज़ी के प्रतिकूल हुईहो तो हमसे कहो कि हम उसका कोई उपाय करें शाहज़ादीने थोड़ी देर तक कुछ उत्तर न दिया फिर अपना शिर उठा दोनों भाइयोंकी ओर देखा और फिर नीचे आंखें करके कहा कि कुछ नहीं बहमनने कहा

कोई बात अवश्य है जो हमको नहीं बताती हो अब हम तबतक तुम्हारे पाससे न जावेंगे जबतक तुम अपने रंजका हाल प्रकट न करोगी जब परीज़ादने देखा कि दोनों भाई बड़े अधीर हैं तो लाचार होकर कहा यद्यपि इस चिन्ताका हाल प्रकट करना तुमकोभी रंज देना है परन्तु बेकहे नहीं बनता इसलिये बर्णन करती हूँ कि यह घर हमारे पिताने हमारे लिये निर्माण किया था और बहुत सजाहुआ है पर आज मुझे मालूम हुआ कि जो तीन चीज़ें इस महल और बाग़ में होतीं तो यह अपूर्व था और संसारमें इसके सदृश कोई मकान न पायाजाता वे तीन चीज़ें यहहैं एक चिड़िया बोलनेवाली और दूसरा गानेवाला बृक्ष तीसरे सोनेके रंगका पानी जबसे मैंने इन तीनों चीज़ोंका हाल सुना तबसे मुझको इनकी अतिलालसा हुई कि जिस तरहसे होसके इन चीज़ों को पैदा करके अपने घर में रक्खूं जो तुमसे होसके तो तुम इन चीज़ों के ढूंढ़ने में मेरी सहायता करो बहमनने कहा तुम उस जगहका जहां ये तीनों चीज़ें पाई जाती हैं नाम और निशान मुझको बतादो कि मैं कल सुबहको उधर जाऊं परवेज़ने जब देखा कि बड़ा भाई सफ़र करनेको तैयार है तो कहा भाई! तुम हम सबसे बड़े हो तुम्हारा घरमें रहना उचित है मुझे आज्ञा दो तो मैंही सफ़र करूं और तीनों चीज़ोंको ढूंढ़कर अपनी प्यारी बहिनके लिये लाऊं बहमनने कहा भाई! मुझे तुम्हारे साहस और हिम्मतपर निश्चयहै कि जो काम मुझसे न होसकेगा उसको तुम्हीं सिद्धकरलोगे पर जो मैं जाऊं तो अच्छी बातहै तुम अपनी बहिनके पास रहो दूसरे दिन शाहज़ादा बहमनने उस जगहका नाम और निशान जहां ये तीनों बस्तुयें थीं परीज़ाद से पूछकर बिदा मांगी और शस्त्र बांधकर घोड़ेपर सवार हुआ उस वक़्त परीज़ादको अपने भाई के बियोगसे बड़ा दुःख हुआ और रोकर कहने लगी भाई! मुझे तुम्हारा बियोग असह्यहै मैं नहीं चाहती कि तुम मझसे और अपने भाई परवेज़से अलगहो मुझे इन तीनों चीज़ों के न पाने से इतना दुःख न होगा जितना तुम्हारे बियोगसे है कदाचित् हररोज़का हाल तुम्हारा मालूम होता तोभी कुछ न कुछ हम दोनोंको धैर्य होता शाहज़ादेसे बहमनने

कहा मैं इस सफ़रका पक्का इरादा करचुकाहूं और बहुत जल्दी इस काम को करके आन मिलताहूं कुछ चिन्ता मतकरो कदाचित् मेरे जानेके उपरान्त तुमको मेरे हाल के मालूम करनेकी इच्छाहो तो मैं तुमको अपना निशान दियेजाता हूं उससे मेरा बुरा भला हाल मालूम हो जावेगा यह कहकर बहमनने अपनी कमरसे एक क़रौली निकालकर परीज़ादको दी और कहा तुम इसको अपने पास रक्खो जिसदिन वा जिसवक़ तुमको मेरी कुशलका हाल मालूम करना हो तो तुम इसको निकालकर देखना जो उसको साफ़ और चमकता हुआ पाना तो समझना कि मैं कुशलपूर्वकहूं जो उसमें लहू टपकताहुआ देखना तो मुझे जीता न समझना सो शाहज़ादा इस तरहसे परीज़ादको धैर्य देकर सिधारा और सीधी राह ली कहीं रास्ता न भूला जब बीस दिनकी राह फ़ारस देश से लांघ चुका तो उसने एक वृद्धको जिसका स्वरूप अतिभयानक और बिकराल था देखा कि एक वृक्षके नीचे बैठाहै और उस दरख़्तके पास एक झोपड़ा पड़ा हुआ देखा कि उसके सबब वह उष्णता और शीतसे बचा रहता वह इतना बूढ़ा था कि भौंहें मूछें और डाढ़ीके बाल बर्फ़ के समान सफ़ेद थे और इतने लम्बे और गुंजान थे कि उसके सारे मुँहको छिपालिया था और डाढ़ी उसकी पैरोंतक पहुँची थी और हाथ पांवके नाख़ून बहुत बढ़गये थे वह बूढ़ा अपने शिरपर एक टोपी लम्बीसी पहिने और सारे शरीर में एक चटाई लपेटे हुये था वह कोई सिद्ध था जो बहुत दिनों से संसारका माया मोह छोड़ ईश्वरकी वन्दना में प्रवृत्त हुआ था इस लिये उसका ऐसा स्वरूप बनगया था बहमन उस दिन प्रभात से ढूंढ़ताथा कि किसी मनुष्यको देखूं कि जिससे उन तीनों चीज़ोंका ठिकाना पूछूं उस सिद्धको कि पहिले वही इसबीस दिनके पीछे मिला था देखकर उसके पास आखड़ा हुआ और समझा यह वही मनुष्य है जिसको उस बुढ़ियाने बताया था फिर शाहज़ादे ने घोड़े से उतर के उस सिद्धको दण्डवत्‌कर आशीर्वाद दिया कि हे पिता ! ईश्वर तेरी आयु अधिक करे और सब तेरे मनोरथ सिद्ध करे सिद्धने उस शाहज़ादे को दण्डवत्‌का उत्तर दिया पर कुछ शाहज़ादेकी समझ

चित्र बहमन परवेज और परीज़ाद का गाने वाले दरख़्त की शाख़ बुलबुल के पिंजड़े और सुनहरे रंग के घड़े और शाहज़ादों समेत ॥

में न आया शाहज़ादे ने मालूम किया कि मूछोंने इस सिद्धका मुँह ऐसा बन्द कररक्खाहै जिससे कुछ समझमें नहीं आता फिर शाह-ज़ादे ने घोड़ा दरख़्त में बांधकर मिक़राज़ निकाली और कहा हे सिद्ध! तुम्हारी मूछें इतनी बढ़गईहैं कि सारे मुँहको बन्द कररक्खा है जो मरज़ीहो तो मैं तुम्हारी मूछें और भौंहें कतरडालूं कि उनके बढ़नेसे तुम्हारा स्वरूप रीछके समान बनगयाहै कि मनुष्य नहीं मालूम होते उस सिद्धने इशारे से कहा बहुत अच्छा शाहज़ादे ने क़ैंचीसे उसकी मूछें और भौंहें कतरडालीं सो उस वृद्धका चेहरा जवानोंके मुखकी सदृश मालूम होनेलगा शाहज़ादेने कहा यदि मेरे पास शीशा होता तो मैं तुमको तुम्हारा स्वरूप दिखाता कि तुम ज-वान मालूम होतेहो और पहिलेसे अब तुम्हारा मनुष्यकासा स्वरूप मालूम होताहै ऐसी स्वार्थकी बातोंसे वह सिद्ध मुस्कराया और कहा मैं तुम्हारी सेवासे प्रसन्न हुआ जो सेवा मुझसे होसके मैं करूं तु-म्हारा क्या अर्थ है मुझसे कहो तो मैं अपनी सामर्थ्यभर उसमें परिश्रम करूं शाहज़ादे ने कहा हे सिद्ध! मैं बहुत दूरसे बोलती चिड़िया और गानेवाले वृक्ष और सुनहले पानीके लिये यहां आया हूं और मुझे मालूम है कि यह तीनों चीज़ें निकटहैं परन्तु उस स्थानको नहीं जानता जो तुम जानतेहो तो दया करके मुझे बताओ शाहज़ादेकी यह बात सुन सिद्धके मुखका रंग उड़गया और नीचे आंखें करलीं और कुछभी उत्तर न दिया शाहज़ादे ने फिर सिद्धसे कहा हे पिता! मैंने जो कुछ तुमसे कहा तुमने समझा या नहीं जो तुम इस हालको नहीं जानते तो वैसाही मुझसे कहो कि मैं किसी और मनुष्यसे जाकर पूछूं सिद्धने बहुत देरके पीछे उत्तर दिया उस जगहको जिसे तुम ढूंढ़तेहो उसे मैं जानताहूं पर तुमने मेरी बहुत सेवा कीहै इस वास्ते तुमसे प्रीति होगईहै इसलिये नहीं चाहता कि इस राह और स्थानको तुम्हें बताऊं शाहज़ादेने कहा क्या कारण है कि तुम मुझसे उस स्थानको छिपातेहो सिद्धने कहा उस मार्गमें बहुतसे भयहैं सिवाय तुम्हारे और बहुतसे मनुष्य इस जगह आये और मुझसे उस मकानकी राह पूछी मैंने उस राहके बतानेमें बहुत

ढील की पर उन्होंने मेरी बात न मानी निदान मैंने लाचार होके उस रास्तेको बताया अब तुम निश्चय मानो कि वह सबकेसब उसी राह में मारे गये कोई मनुष्य जीता बचकर इधर न आया जो तुम को अपनी जान प्यारीहै तो मेरा उपदेश मानो और आगे मत जाओ यहींसे अपने घर फिरजाओ शाहज़ादेने कि अपने इरादेपर दृढ़था उस सिद्ध से कहा तुमने अतिप्रीति से जो ये हितकारक उपदेश किये मैंने उनको सुना इसका मैं अतिगुण मानताहूं चाहे इस मार्ग में कितनेही भयहों पर मैं अपने इरादे से हट नहीं सक्ता यदि मुझ पर कोई चढ़भी आवेगा तो अपने शस्त्रोंसे जो मेरे पासहैं अपनी रक्षा करूंगा और मुझे निश्चय है कि कोई मुझसे अधिक साहसी और पुरुषार्थी न होगा सिद्धने कहा तुम्हारे सामने होके उस मकान में जानेके बाधक न होंगे किन्तु वह दिखाई न देंगे फिर तुम क्योंकर उनसे बच सकोगे शाहज़ादे ने कहा मुझे उनका भय नहीं तुम मुझे राह बताओ सिद्ध ने जब उस शाहज़ादे को इस इरादे में दृढ़ पाया तो उसने अपनी थैलीमें हाथ डालकर एक गेंद निकाला और कहा खेदहै कि तुमने मेरे उपदेशको न माना अब मैं लाचार हूं इस गेंदको लो और जब तुम सवारहो तो इस गेंदको अपने आगे डालदो वह लुढ़कताहुआ आगेको जावेगा तुमभी उसके पीछे जाना जब गेंद एक पहाड़के नीचे ठहर जावे तो तुम घोड़ेसे उतरना और घोड़ेकी गर्दनपर बाग डालकर छोड़देना वह घोड़ा वहां से जबतक कि तुम फिर न आओगे कहीं न जावेगा फिर तुम उस पहाड़पर चढ़ोगे तो अपने दाहिने बायें बड़े २ काले पत्थर देखोगे और अपने चारों ओर बुरे २ शब्द सुनोगे जो तुमको कोप और भ्रम दिलावेंगे और तुम्हें पहाड़के शिखरपर जाने न देंगे पर चैतन्यरहो तुम आवाज़ों से मत डरना और मुँहफेरके पीछे न देखना जो तुम डरोगे अथवा मुँहफेरके पीछे देखोगे तो उसी समय काले पत्थर बनजाओगे जो तुमको मार्गमें पहाड़ मिलेंगे वे सब मनुष्य थे वे सब तुम्हारी तरह उन्हीं तीन चीज़ोंके लेनेके लिये गये और राहमें उन आवाज़ोंसे डरके काले पत्थर होगये जब तुम कुशलपूर्बक पहाड़के

सिरेपर पहुँचोगे तो वहांपर एक पिंजड़ा पाओगे जिसमें बोलती चिड़िया उसके भीतर बैठी बोलतीहोगी तुम उस चिड़ियासे पूछना कि गानेवाला बृक्ष और सुनहले रंगका पानी कहांहै वह चिड़िया दोनों चीज़ें तुमको बतावेगी फिर जब तुम उन तीनों चीज़ों को पाओगे तो फिर कुछ भय न रहेगा फिर भी तुमसे कहताहूं कि अभी कुछ नहीं भया मेरा कहना मानके तुम इस उद्योगको छोड़दो और अपने घर चलेजाओ बहमनने सिद्धसे कहा अब तो मैं अपने प्रयोजन को सिद्ध किये बिना नहीं फिरता अब मैं उस तरफ़को सिधारताहूं यह कहके शाहज़ादेने घोड़ेपर सवार हो उस गेंद को अपने आगे फेंकदिया वह गेंद जल्दी २ लुढ़कता हुआ आगेको चला शाहज़ादा उसके पीछे उसी गेंदकी तरफ़ देखता हुआ जाता जब वह गेंद उस पर्वत के नीचे जिसका उस सिद्धने बर्णन कियाथा पहुँचा तो ठहरगया शाहज़ादाभी उसी जगहपर जाकर उतरा और घोड़े की लगाम गर्दनपर डालकर वहीं छोड़दिया और आप पहाड़पर चढ़नेलगा जहांतक उसकी दृष्टि उस पर्बतपर पड़तीथी काले पत्थर पड़ेहुये उसको दिखाई देतेथे अभी चार पांच क़दम ऊपर चढ़ा था कि वहां चहुँओरसे शोर जैसा कि सिद्धने कहाथा सुना पर शाहज़ादेने किसीको वहां न देखा कभी सुनताथा कि कौन यह अहमक़ है किधरको जाताहै इसको न जाने दो और कभी वहांसे यह आवाज़ आतीथी कि इसको पकड़कर ठहराओ और बध करडालो और तीसरी ऐसे ज़ोर से आवाज़ आई कि जैसे बादल गर्जता है और उसमें कोई कहताहै हे चोर! हे खूनी! हे क़ातिल! और कभी यह आवाज़ धीरे से उसके कानों में पहुँचती इसे कुछ न कहो इस मनुष्य कि अच्छा शिकारहै जानेदो यह वही मनुष्य है जो पिंजड़े और चिड़ियाको लेआवेगा बहमन इन बातोंको सुनकर कुछ न डरा और पूर्बवत् बड़े साहस और दिलावरीसे पहाड़पर चढ़ता गया परन्तु जब पास और चहुँओरसे आवाज़ें उसको पहुँचनेलगीं तो वह ऐसा भयभीत हुआ कि उसके पांव कांपने और थर्रानेलगे और ठहर न सका सिद्धकी सब बातें मारेभयके भूलगया और मुखफेरके देखने

लगा उसके मुखफेरतेही काला पत्थर बनगया जबसे परीज़ाद से बहमन शाहज़ादा बिदाहुआथा तबसे वह उस छुरीको गिलाफ़ समेत अपनी कमरमें रखती और जब चाहती उसको निकालके शाहज़ादेका हाल मालूम करलेती और उस दिनके पहिले जिसमें कि शाहज़ादा पत्थर होगया था कई बेर छुरीको देखा तो उसे साफ़ और उज्ज्वल पाया पर उस दिन परवेज़ शाहज़ादेने परीज़ाद से कहा बहिन ! मुझे छुरीदो तो मैं उसमें अपने भाईका हाल देखूं परीज़ाद ने छुरी निकालकर परवेज़के हाथमें दी जब परवेज़ने उसको मियान से खींचकर देखा तो उस छुरीसे रक्तकी बूंदें टपकनेलगीं यह देखतेही उसने छुरी हाथ से फेंकदी और रोनेलगा जब परीज़ाद को भी यह हाल मालूम हुआ तो रोके कहनेलगी बड़ा खेदहै कि भय्या ! मेरे लिये तूने अपने प्राण दिये मुझ अभागिनने बोलती चिड़िया, गाते दरख़्त और सुनहले रंगके पानीका तुमसे क्यों बर्णन किया और क्यों मैंने उस बृद्धासे इस घरके अच्छे बुरे होनेका हाल पूछा जिसके उत्तरमें उसने इन बस्तुओं का बर्णन किया कदाचित् वह बुढ़िया न आती वह बड़ी मक्कार और दुष्टाथी मैंने उसका बड़ा सम्मान किया और उसने मेरे साथ यह अपकार किया और तूने क्यों उन बस्तुओंका रास्ता उससे पूछाथा जो वह चीजें अब मेरे हाथ भी लगें तो मेरे भाईके मरनेके पीछे किस कामकीहैं और उन्हें लेकर क्या करूंगी निदान शाहज़ादी उसके गुण वर्णनकर बहुत रोई परवेज़ भी अपनी बहिनके सदृश अतिखेदको प्राप्तहुआ फिर शाहज़ादीसे कहा अब मुझे अवश्यहै कि मैंभी सफ़र करूं कि मालूमहो कि मेरा भाई अपने कालसे मुवा या किसीने उसको मारा मैं उसके मारनेवाले से जाकर बदलालूंगा परीज़ादने उसे बहुत समझाया कि तुम वहांका इरादा मत करो और समझो कि इस राहमें बड़े भयहैं ऐसा न हो कि दूसरा भाई भी मेरे हाथसे जावे परन्तु परवेज़ने उसका कहना न सुना और दूसरे दिन तैयार होके अपनी बहिन से बिदा होकर चाहा कि सिधारूं परीज़ादने कहा मुझे छुरीके देखने से बहमन का बरा भला हाल मालूम होताथा तुम्हारा हाल क्योंकर मालूम होगा

परवेज़ने एक मरवारीदकी माला उसे देकर कहा जब इस मालाके दाने अलग अलग देखना और देखना कि चलते हैं तो जानना कि मैं जीताहूं और जब कि इसके दाने एक दूसरेसे चिपट जावें तो मालूम करना कि मैं जीता नहीं परीज़ादने उस मालाको लेकर अपने गले में डाललिया और हररोज़ उसे देखकर परवेज़की कुशल का हाल मालूम करलेती निदान दूसरे दिन शाहज़ादा परवेज़ उस तरफ़को सिधारा और बीस मंज़िलें लांघकर उसी सिद्धसे उसी जगह पर जहां बहमनने भेंटकीथी मिला और उसको प्रणाम करके पूछा जो तुम्हें मालूमहो किस जगहपर बोलती चिड़िया और गाता दरख़्त और सुबर्णके रंगका जलहै वे क्योंकर मिलेंगे तो मुझको बताओ सिद्धने वहांके सब ख़तरे उसे बताकर कहा एक मनुष्य तुम्हारी ही शक्ल और आयुका थोड़े दिन हुयेहैं कि उसने मुझसे इसी बातका प्रश्न कियाथा मैंने उसे बहुत समझाया पर उसने न माना अन्तको मेरे बतानेसे वह उन्हीं तीनों चीज़ों के तलाश करने को गया फिर वहां से न लौटा मालूम हुआ कि वहभी औरों के सदृश जो इन्हीं चीज़ोंके ढूंढ़नेके लिये गयेथे मरगया परवेज़ने कहा मैं उस मनुष्यको जिसका तुमने बर्णन किया ख़ूब जानताहूं वह मेरा भाईथा मुझे निश्चय हुआ कि वह मारागया पर यह मालूम नहीं कि क्योंकर मारा गया सिद्धने कहा इस हालको मैं तुमसे ख़ूब बर्णन करसक्ताहूं वह औरों के सदृश पत्थर बनगया जो तुम मेरा उपदेश न सुनोगे तो तुमभी वैसेही बनजाओगे अब उत्तमहै कि तुम इस इरादेको छोड़ दो परवेज़ने कहा जो कुछ तुम मेरी भलाईके वास्ते कहतेहो उसे मैं गुण मानताहूं पर आशा रखताहूं कि मुझे उसका रास्ता बताओ मेरा इस बिषयमें ऐसा इरादा नहीं कि इससे हटजाऊं सिद्धने कहा जो तुम मेरी बात नहीं मानते तो मैं लाचार हूं और बृद्धावस्था के व्यापनेसे मैं तुम्हारे साथ राह बतानेको नहीं जासक्ता इसलिये मैं तुमको एक गेंद देताहूं वह तुमको रास्ता बतावेगा जब परवेज़ सवार हुआ तो सिद्धने अपनी झोली से गेंद निकालकर उसको दिया और उससे कहा तुम उन शब्दों से जो पहाड़पर सुनोगे और

आवाज़ करनेवाले न देखोगे तो डरना नहीं और पहाड़पर चढ़े चले जाना बोलनेवाली चिड़िया और गानेवाला बृक्ष और सोने के रंग का जल तेरे हाथ लगेगा इतना कह उस सिद्धने शाहज़ादेको बिदा किया शाहज़ादेने घोड़ेपर सवारहो गेंदको अपने आगे डालदिया और घोड़ेको ऐंड़मार उस गेंदके पीछे चला जब वह पहाड़के नीचे पहुँचा और गेंदभी ठहरगया तो वहभी घोड़ेसे उतरकर ठहरगया और उन बातों को जो सिद्धसे सुनीथीं एक एक अपने दिलमें ज़-माईं फिर बड़े साहससे पर्बतके शिखर पर जाने का इरादा किया और उसपर चढ़नेलगा पांच छः पग न गया होगा कि अकस्मात् मनुष्यका शब्द पाससे सुना जो उसको डराता और दुर्बाद देता है कि हे भाग्यहीन! आपत्तिके मारे खड़ा होजा कि मैं तुझे इस ढि-ठाईका दण्ड दूं जब परवेज़ने बुरी गाली सुनी तो मारे लज्जाके क्रोध में आगया और सिद्धकी सब बातें भूलकर एकही बेर मियान से तलवार निकाल पीछे फिरा कि उस मनुष्यको जो गाली देता है मारें पर उसने वहां किसीको न देखा और साथही शाहज़ादा और उस का घोड़ा काले पत्थर बनगये परीज़ाद परवेज़ के जानेके उपरान्त हरवक़्त मोतियोंकी मालाको देखा करतीथी और उसके मोती गिना करती और रात्रिको वह माला गलेमें डालकर सोजाती निदान उस बुरे दिनको जिसमें परवेज़ अपने भाई के सदृश पत्थर बनगयाथा मालाको देखा तो उसके मोती एक दूसरे से ऐसे मिले चिपटे पाये कि किसी तरह एक दूसरेसे अलग न हुये इससे परीज़ादको निश्चय हुआ कि परवेज़ शाहज़ादेकेभी प्राण गये उसने अपने मनमें कहा कि ऐसे दोनों प्यारे भाइयोंके मारे जानेके उपरान्त मेरा जीना बृथाहै अब जो हो सो हो अब तूभी यहांसे चलदे फिर दूसरे दिन मर्दाने कपड़े पहिनकर नौकरों चाकरोंसे कहा मैं थोड़े दिनोंके लिये किसी ओर को जाती हूं तुम मकान और असबाबकी ख़बरदारी करना फिर शस्त्र बांध घोड़ेपर सवार होके अकेली उसी ओरको चली शाह-ज़ादी घोड़ेपर खूब सवार होतीथी और शिकारभी खूब करसक्तीथी इसलिये मार्गके कष्ट उसे कुछ मालूम न हुये जब शाहज़ादी उस

रास्ते को लांघ कर उस सिद्धके पास पहुँची तो घोड़ेसे उतर उसके पास जाबैठी और उससे पूछा कि यहां इधर उधर कौन ऐसी जगहहै जिसमें बोलती चिड़िया औरगानेवाला बृक्ष और स्वर्णके रंगका जल है दयाकर मुझे बतादीजिये सिद्धने कहा तुम्हारे शब्द से मालूम होताहै कि तुम स्त्री हो मैं उस जगहको जहां वे तीनों चीजें हैं खूब जानताहूं तुम क्यों पूछती हो परीज़ादने कहा मैंने तीनों चीज़ोंका बिचित्र बृत्तान्त सुना है मैं चाहतीहूं कि उनको अपने घरमें लेजा-कर रक्खूं सिद्धने कहा बास्तव में वह ऐसेही बिचित्र और अपूर्व बस्तुहैं और तुम्हारे पास रहनेके लायक़हैं परन्तु तुम्हें मालूम नहीं कि उन चीजों के प्राप्त करने में कैसे २ भय हैं तुम्हारे वास्ते यही उत्तम है कि तुम उनका बिचार मत करो और यहीं से अपने घर लौटजाओ परीज़ादने कहा हे पिता! मैं बहुत दूरसे आईहूं मैं अपने मनोरथ को सिद्ध किये बिना नहीं जासक्ती अब तुम वहांके डर मुझे बताओ कि कहां से वे आरम्भ होते हैं और वे किस तरह के हैं उनको सुनकर सोचूं कि मैं उनको सह सकूंगी वा नहीं उस सिद्धने वहां के डरावने हाल जैसे कि बहमन और परवेज़से कहे थे इससे भी कहे और कहा कि वे सब ख़तरे पर्वतके आरम्भसे शिखरतक रहतेहैं पहिले बोलनेवाली चिड़िया मिलेगी और चिड़ियाके बताने से गानेवाला दरख़्त और सोने के रंगका पानी भी प्राप्त होगा उस पर्वत के चढ़ने में बड़े भयानक शब्द सुनपड़ेंगे और चारों ओर जितने काले पत्थर देखोगी वे सब मनुष्य थे बड़े साहस से इसी मतलब के लिये वहां गये और मार्ग में भय खाकर पत्थर बनगये हाल उसका यहहै जब उन भयानक और दुर्वादों को सुनकर क्रोध में आया और डरकर मुखफेर अपने पीछे देखने लगा तो मुँहफेरने के साथ ही वह और उसका घोड़ा पत्थर बनजाता है जब वह सिद्ध इस हालको बिस्तारपूर्वक बर्णन करचुका तो परीज़ाद ने कहा मुझे खूब मालूम हुआ कि वह आवाज़ें केवल डराने और धमकाने के वास्तेहैं इनके बिशेष और कोई भय नहीं कि कोई मनुष्य सामने होकर उस पर्वतपर चढ़ने से रोके हे सिद्ध! यद्यपि मैं स्त्रीहूं परन्तु

मैं ऐसी दिलेर और बेभटक हूं कि सब बातों को सहलूंगी न तो आवाज़ोंको सुनकर क्रोध करूंगी और न मुझको भय होगा इसके सिवाय मैं ऐसा उपाय करूंगी कि वह आवाज़ें मुझे कुछभी सुनाई न देंगी मैं अपने कानों में खूबसी रुई भरलूंगी सिद्ध ने कहा बीबी! मुझे मालूम होता है कि वे चीज़ें तेरेही भाग्यमेंहैं क्योंकि किसीको आजतक यह उपाय न सूझा पर ध्यानरख उन भयानक आवाज़ों से न डरना परीज़ादने कहा ऐसाही होगा मेरा मन साक्षी देता है कि मेरा मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा तुम दया करके उस मार्ग को बताओ सिद्धने फिर उसे समझाया कि अपने घरको लौट जाओ पर परीज़ादने कुछ न माना जब सिद्ध समझा कि शाहज़ादी अपने उद्योग पर दृढ़है तब उसे एक गेंद अपनी झोलीसे निकालकर दिया और कहा इसको अपने आगे लुढ़कादेना और उसके पीछे चली जाना जब वह गेंद पहाड़के नीचे पहुँचकर ठहरजावे तुम घोड़े से उतर पहाड़पर चढ़ना शाहज़ादी गेंद लेकर घोड़े पर सवार हुई और जिस तरह सिद्धने कहाथा अपने आगे गेंदको फेंककर उसके पीछे घोड़े को तेज़ किया निदान वह गेंद पर्वतके नीचे पहुँचकर ठहरगया शाहज़ादी क्षणमात्र वहां ठहर अपने कानोंको रुईसे खूब बन्दकर पहाड़पर चढ़नेलगी जब कई पग ऊपर गई तो चारों तरफ़से आवाज़ें आनेलगीं परन्तु रुईके सबबसे जो कानोंमें भरी हुईथी आवाज़ें न सुनाई दीं फिर भयानक शब्द हुये इससे भी उसे ख़बर न हुई फिर वे गाली जो स्त्रियों के लिये हैं उसको सुनाई देनेलगीं शाहज़ादीने उन्हें थोड़ा बहुत सुनकर हँसदिया और कुछ बुरा न माना और मन में कहा इन दुर्वादों और बुरी बातोंसे क्या मैं अपने मतलबसे न हटूंगी इस बकनेसे क्या होताहै निदान शाहज़ादी ऐसे भयानकस्थान से जहां रुस्तम आदि योद्धाओंका ज़हरपानी होताथा बड़ेसाहस से लांघकर शिखरपर चालाकीसे पहुँची वहां उसने एक पिंजड़ा रक्खा हुआ देखा जहां एक चिड़िया अतिमनोहर बाणीसे बोल रहीथी पर शाहज़ादीको देखकर अपने छोटे डीलके होनेपरभी बादलके समान गर्जनेलगी और कहनेलगी पीछेको फिर जा मेरे पास न आ शाह-

ज़ादी उसकी यह बात सुन हिम्मत बांध वहांसे दौड़ शिखर पर चढ़गई वहां पृथ्वी बराबर पाई और जल्दी जाकर उस पिंजड़े पर अपना हाथ रख दिया और कहा अब मैंने तुझको पाया कभी तू मेरे हाथसे न छूटेगी फिर शाहज़ादीने अपने कानोंसे रुई निकाललो और उस चिड़ियासे उत्तर सुना हे अतिसाहसवान् बीबी! धैर्य रख अब मुझसे तुझे कुछ कष्ट न होगा जैसा कि और लोगोंको पहुँचा यद्यपि मैं इस पिंजड़े में बन्दहूं पर मुझे बहुतसे छिपेहुये अहवाल मालूमहैं अबसे मैं तुम्हारी लौंड़ी हुई और तुम मेरी स्वामिनी मुझे तुम्हारा हाल खूब मालूम है और तुम नहीं जानतीं एक दिन मैं तुम्हारे काम आऊंगी अब जो कुछ आज्ञा दो तो मैं उसे करूं इन बातोंको चिड़ियासे सुनकर शाहज़ादी अतिप्रसन्न हुई परन्तु साथही अपने भाइयोंको याद करके बहुत रंज किया और उस चिड़ियासे कहा मैं बहुतसी बातोंकी इच्छा रखती हूं सबके पहिले मेरा यह प्रश्न है कि यहां कहीं सोने के रंगका पानी है जिसके अतिविचित्र गुण मैंने सुने हैं यदि तुझे मालूमहो तो मुझे बता उस चिड़ियाने वह जगह जिसमें वह पानी था बताया तथाच वह वहां जाकर एक चांदी की ठिलिया जो अपने साथ लेगई थी उस जलसे भरलाई फिर उस चि-ड़ियासे कहा मैं गानेवाले वृक्षको भी ढूंढ़तीहूं मुझे बता वह कहां है चिड़ियाने कहा तुम्हारी पीठके पीछे एक जंगल है जिसमें तुम उस वृक्षको पाओगी और वह जंगल बहुत दूर नहींहै परीज़ाद उस जंगल में गई वहां जाकर उस दरख़्तसे बहुत अच्छा गाना सुना वह दरख़्त बहुत ऊंचाथा फिर उस चिड़ियासे कहा मैंने उस दरख़्तको तो पाया पर उसको उखाड़कर नहीं लासकी चिड़ियानेकहा तुम एक छोटीसी टहनी उसकी तोड़कर लेआओ और अपने बागमें लेजाकर लगादो वह शाख़ तुम्हारे लगातेही तुरन्तही जड़ पकड़के लगजावेगी और अतिसुन्दर वृक्ष जैसा कि तुम इस जंगलमें देखतीहो होजावेगा सो शाहज़ादी एक टहनी तोड़लाई इन तीनों वस्तुओं के प्राप्त होने से अतिप्रसन्न हुई फिर उस चिड़ियासे कहा यह मतलब तो पूरा होगया परन्तु दो भाई मेरे यहां इसी अर्थकेलिये आये और अब वह काले

पत्थर होके यहां पड़े हैं चाहतीहूं जो वेभी जीजावें तो अपने साथ घर लेजाऊं अब कोई ऐसा उपाय बता कि जिससे मेरी यह इच्छाभी सिद्ध हो। चिड़ियाने कहा तू ठिलियासे थोड़ासा सोने का पानी लेकर उन सब काले पत्थरों पर जो इधर उधर पर्वतपर पड़े हैं छिड़कदे सब इस जलके प्रभावसे जीउठेंगे उन सबके साथ तुम्हारे दोनों भाईभी जीउठेंगे फिर वह शाहज़ादी चिड़ियासे इसबातको सुनकर प्रसन्नहुई और वहां उन तीनों चीज़ोंको लेकर पत्थरों के निकट आई उसने उस चांदी की ठिलियासे थोड़ासा पानी लेकर ज़रा ज़रा सब पत्थरों पर छिड़का छिड़कतेही वे सब पत्थर जिनमें उसके दोनों भाई भी थे घोड़ों समेत जीकर उठ खड़े हुये शाहज़ादी अपने भाइयों को पहिचानकर उन के गले लगी और आश्चर्य में होके उनसे कहा तुम यहां क्या करते थे उन्होंने कहा हम यहां सोते थे परीज़ादने कहा तुमको मेरे बिना सोना अच्छा मालूम हुआ और तुम्हें याद नहीं कि तुम बोलती चिड़िया और गानेवाले बृक्ष और सुनहले पानी के लानेको यहां आयेथे और तुमने इस जगह पर काले पत्थर देखे थे अब तो देखो कोई उनमें से यहां बाक़ी है ये आदमी जो तुम्हारे चहुँओर खड़े हैं तुम्हारे घोड़ोंसमेत पत्थर बनगयेथे अब वे जी के तुम्हारी राह देखते हैं जो तुम पूछाचाहो कि किस करामात से तुम जीगये तो मैं तुमसे कहतीहूं मैंने इस ठिलियासे पानी लेकर सबपर छिड़का उसके प्रभाव से सब जीगये इस पिंजड़े, बोलती चिड़िया और गानेवाले बृक्षको जिनकी टहनी मेरे हाथमें हैं और सुनहले रंगके पानीको प्राप्त कर के यह चाहा कि बे तुम्हारे यह तीनों चीज़ें लेकर घरमें न जावें इस लिये मैंने इस चिड़िया से पूछा कि क्योंकर मेरे भाई जीवेंगे कि मैं उनको घरमें लेजाऊं उसने कहा इस पानीके छिड़कनेसे जीजावेंगे मैंने थोड़ा थोड़ा पानी सबपर छिड़का इस बात के करतेही वे सब जीगये यह सुनकर बहमन और परवेज़ अपनी बहिनकी अतिप्रशंसा और गुण बर्णन करने लगे और इसी भांति सब लोग शाहज़ादीको आशीर्वाद देनेलगे और हरएक कहता बीबी! हम तुम्हारे दासहैं जन्मभर तुम्हारे अहसानमन्द रहेंगे अब जो आज्ञा हो उसको

नम्बर५३ मुतअल्लिके सफ़े ८३५ च॰ भा॰

शाहज़ादीका अपने भाइयों समेत बादशाहको सैर दिखाती हुई जिसमें गानेवाला दरख़ और फ़व्वारह था॥
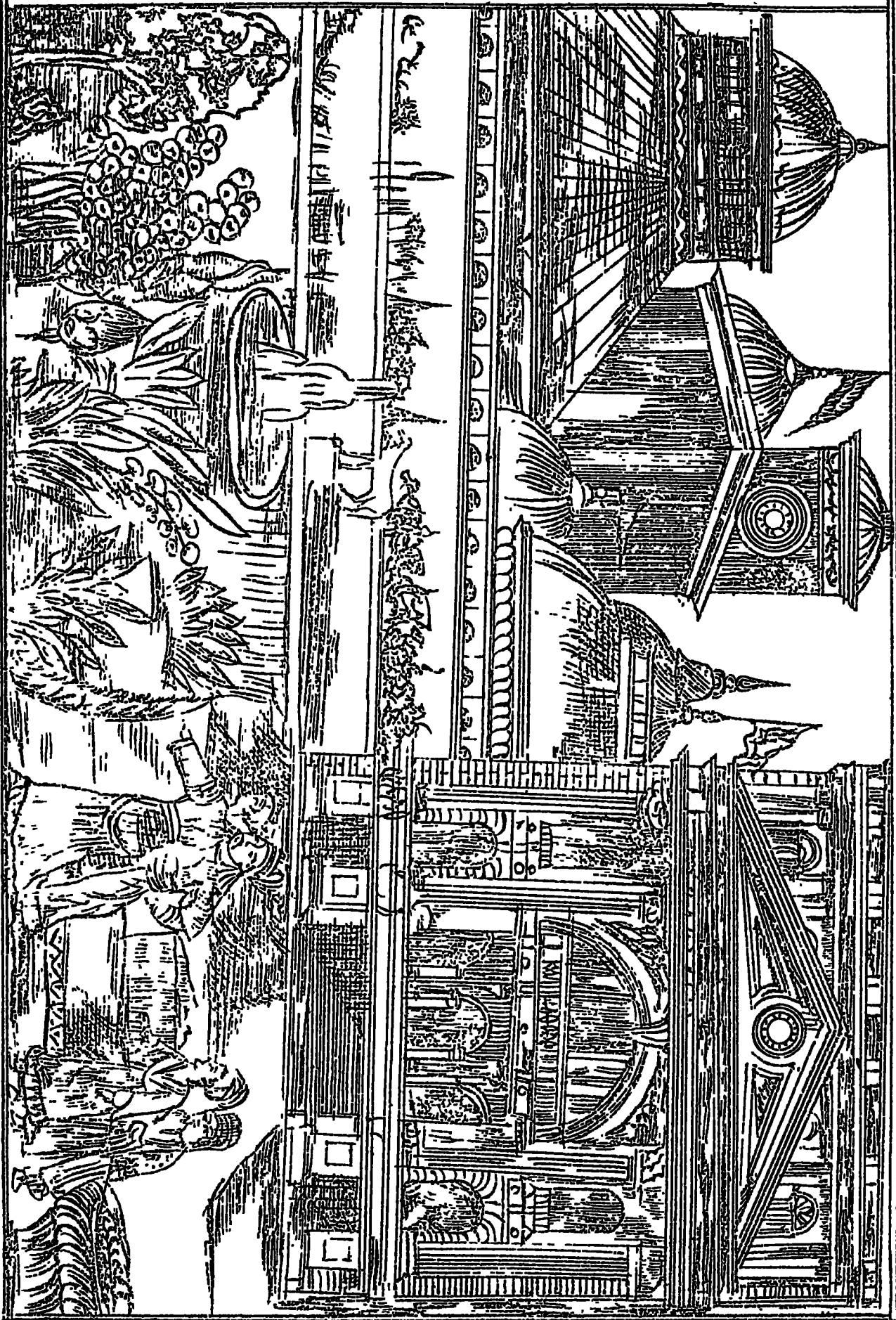
प्रतिपालन करें परीज़ादने कहा मुझको अपने भाई के जिलाने का प्रयोजनथा इसमें तुमको भी लाभ हुआ मैं तुम्हारी कृतज्ञता से अतिप्रसन्न हुई अब तुम अपने अपने घोड़ों पर सवार होके जिधर स आये थे उधर को चलेजाओ परीज़ादने उन सबको बिदाकरके अपने घोड़ेपर सवार होने का इरादा किया बहमनने उसके पहिले सवार होके कहा जो आज्ञा हो तो मैं इस पिंजड़े को उठाकर तुम्हारे आगे आगे चलूं परीज़ादने कहा यह चिड़िया मेरी लौंड़ी है मैं इस को आपही लेचलूंगी जो तुम्हारी खुशी हो तो तुम गानेवाले बृक्ष की शाख़ लेचलो और जबतक मैं घोड़े की पीठपर सवार हूं तुम इस पिंजड़ेको थाँभो फिर जब वह सवार हुई पिंजड़े को अपने आगे ज़ीनपर रखलिया और परवेज़से कहा कि तुम उस ठिलियाको कि जिसमें सोने के रंगका पानी है सावधानी से उठा लेचलो परवेज़ने उसको उठा लिया फिर जब और लोगभी जो परीज़ाद के पानी छिड़कने से ज़िन्दा होगये थे घोड़ोंपर सवार होकर तैयार हुये तब परीज़ादने ठहरके कहा कि भाइयो! जो मनुष्य तुममें से श्रेष्ठहो वह आगे चले सबोंने कहा हे सुन्दरी! हममेंसे कोई इस योग्य नहीं जो तुम्हारे आगे चले जब परीज़ादने देखा कि कोई मनुष्य उनमें से आगे चलनेका इरादा नहीं रखता और चाहते हैं कि मैंही सबके आगे चलूं तब उसने इन्कार करके कहा भाइयो! मेरी किसी तरह से आगे चलनेकी पदवी नहीं पर जो तुम सब आज्ञा देतेहो इससे लाचारहूं यह कहके वह आगे चली और उसके पीछे दोनों शाहज़ादे और उनके पीछे सम्पूर्णमनुष्य होलिये फिर उन सबलोगोंने कहा कि उस सिद्धको देखते और उसके राह बतानेका गुण मानते पर उन्होंने उस सिद्धको उस जगहपर जहां वह रहता था जीता न पाया और न मालूम हुआ कि वह कितनी बड़ी आयु के प्राप्त होने से मुवा था इस वास्ते कि वह इन चीज़ों के राह बतानेवाला था और अब शाह-ज़ादीने उनको पाया इसलिये मरगया सो वह समूह वहांसे सिधारा मार्गान्तरमें जिस मनुष्यके देश और देशके मार्गपर ठहरते वह परीज़ाद और शाहज़ादी से बिदा होकर उधर को चलाजाता यहां

तक तीनों बहिन भाई अकेले रहगये और मंज़िलें लाघकर अपने घर पहुँचे परीज़ादने वहां जाकर उस चिड़िया का पिंजड़ा बाग़में उस तरफ़ जो बारहदरी के पासथा लटकादिया उस चिड़ियाके बोलतेही बहुतसी चिड़ियाँ जैसे कि बुलबुल,हज़ारदास्तां,अगन,पिद्दा, तोता आदि मनोहर बाणी बोलनेवाले उसकी आवाज़ सुनने को दूर दूरसे आकर इकट्ठे हुये इसके उपरान्त उसने गानेवाले बृक्षकी डाली उसी बाग़में एक जगह पर जो उस बारहदरी के पास थी लगा दी वह डाली तुरन्तही जड़ पकड़के हरी होगई और जल्दी से बढ़ कर एक बहुत ऊंचा दरख़्त होगई और उसके पत्तों से गानेकी आवाज़ उस बड़े बृक्षके सदृश जिसकी यह डाली थी आनेलगी फिर शाहज़ादीने संगमर्मरका एक अतिउत्तम हौज़ बनवाकर चमनमें रक्खा और उसमें सोने के रंगका पानी भरा वह तुरन्त बढ़ने लगा यहांतक कि वह बर्तन भरगया और एक फ़व्वारा उबलकर बीस फ़ुट तक ऊंचे होकर छूटने लगा और वह पानी ऊपर से उसी बर्तन में गिरता और किसी तरफ़को न बहता उन बिचित्र बस्तुओंका बृत्तान्त तीनही दिनमें मशहूर होगया उस शहरके रहनेवाले उस बाग़ और घर में आते जिनका दरवाज़ा सदा खुला रहता था जाके तमाशा और सैर देखते और अतिप्रसन्न और आश्चर्य में होते कितने दिनोंके उपरान्त जब उन तीनों भाई बहिनोंकी सफ़रकी मांदगी गई तो बहमन और परवेज़ पूर्बवत् शिकार खेलने को जानेलगे तात्पर्य एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलनेको कोस भरके फ़ासले पर गये इतनेमें फ़ारसका बादशाहभी संयोगसे उसी जगह पर शिकार खेलने को आया शाहज़ादोंने सवारों की भीड़ देखकर चाहा कि अपने को बादशाहकी दृष्टि से बचा घरको फिर जावें इस इरादे से उन्होंने शिकारको छोड़कर घरकी राह ली संयोग से वह उस मार्ग से चले जिधर से बादशाह की सवारी आती थी उन्होंने कितनाही चाहा कि इस राह से फिरके और तरफ़ को जावें पर राह तंग होने से न फिरे और बादशाह के सामने होगये लाचार हो घोड़ों से उतर बादशाहको दण्डवत् की और देरतक पृथ्वी पर झुके रहे बादशाह

उनके घोड़े और वस्त्र सब अच्छे देख समझा शायद मेरे न
होंगे और उनकी सूरत देखने की लालसा की और वहां ठहरा,
और उनको उठनेकी आज्ञा दी वह दोनों शाहज़ादे उठकर बाद
शाहके आगे दृष्टि नीचे किये खड़े होगये बादशाह उनके रूप अ-
नूपको देख आश्चर्य में हुआ और देरतक उनको देखा किया फिर
उनका नाम पूछा और कहा तुम कहां रहतेहो बहमन शाहज़ादे ने
उत्तर दिया कि हुज़ूर ! हम दोनों आपके बागों के रक्षक जो स्वर्ग-
बासी हुआ उसके पुत्रहैं उसने अपने जीतेजी शहरके बाहर एक
नया मकान तैयार कियाथा कि हम उसमें रहें और बड़े होकर हुज़ूर
की सेवाके योग्यहों बादशाह ने कहा कि तुम शिकार खेलनेके वास्ते
क्यों आया करतेहो शिकार खेलना तो बादशाहोंका धर्म है न प्रजा
और नौकरोंका बहमनने बिनय की कि हे बादशाह ! हम कम उमर
के होनेसे राजनीति नहीं जानते बादशाह इस उत्तरसे अतिप्रसन्न
हुआ और कहा कि मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखना चाहता हूं
तुम चाहो जिस तरह शिकार खेलो फिर वह दोनों शाहज़ादे अपने
अपने घोड़ों पर सवार होकर बादशाहके साथ हुये जब जंगल में
गये तो बहमनने शेरको और परवेज़ ने रीछको अतिबीरता और
चालाकी के साथ बरछी से मारा और बादशाह के सन्मुख रक्खा
थोड़ी देरके उपरान्त फिर बनमें जाके बहमनने रीछ और परवेज़ने
शेरका अहेरकिया और उनको बादशाहके सामने लाये फिर उन्होंने
शिकारका इरादाकिया पर बादशाहने उनको मनाकिया और बुलवा
के कहा तुम अब क्या मेरे सब शिकारी जानवरों को मार डालोगे
मुझे केवल तुम्हारी दिलावरी की परीक्षा लेनी थी बादशाह उनकी
बीरता और साहस से अतिप्रसन्न हुआ और कहा कि तुम दोनों
मेरेसाथ चलके भोजन करो बहमनने कहा कि हुज़ूरने हमारा अति
सत्कार किया आज हम नहीं चलसके और दिन जो आज्ञा होगी
प्रतिपालन कीजावेगी बादशाहने इन्कार करने से अति आश्चर्य में
होकर पूछा इसका क्या कारण है बहमन ने बिनय की हमारी एक
छोटी बहिनहै हम तीनों बहिन भाइयों से अति प्रीति है इससे सलाह

...ना कहीं नहीं जाते और वह भी हमसे बे पूछे कोई काम नहीं
...ती बादशाहने कहा हम तुम्हारी प्रीतिको सुनकर अति प्रसन्नहुये
अच्छा आज तुम अपने घर जाओ और अपनी बहिन से सलाह
करके कल तुम इसी जगहपर शिकार खेलनेको आओ और मुझसे
इस बातका उत्तर कहना वे दोनों शाहज़ादे बादशाह से बिदाहोकर
अपने घर आये पर बहिन से पूछना और बादशाह से भेंटहोने का
हाल कहना भूलगये दूसरे दिन जब शिकार में गये तो शिकार से
लौटने के वक्त बादशाहने पूछा क्यों तुमने अपनी बहिनसे मेरे साथ
जानेका सम्मत पूछाथा और उसने तुम से तुम्हारे जाने को कहा वा
नहीं वे दोनों शाहज़ादे डरगये और उनके मुखका रंग बदल गया
और एक दूसरे की तरफ़ देखने लगा अन्त को बहमन ने कहा कि
स्वामी हम दोनों भूलगये किसीने हममें से इस बातको न कहा बाद-
शाहने कहा आज पूछना और कल मुझसे आकर कहना संयोगसे
उस दिनभी वे दोनों भाई अपनी बहिन से पूछना भूलगये तीसरे दिन
भी बादशाह उनके भूलजानेपर कुछ अप्रसन्न न हुआ और सोनेके
तीन गेंद बादशाहने अपनी जेबसे निकाल एक कपड़ेमें बांध बहमन
को दिये और कहा कि तुम इनको अपनी कमरमें रखना इनसे अब
तुम मेरी बात न भूलोगे कदाचित् जो तुम्हें यादभी न रहेगी तो जब
तुम अपनी कमर खोलोगे तो यह तीनों गेंद तुम्हारी कमरसे पृथ्वी
पर गिरपड़ेंगे उनकी आवाज़ से तुमको यह बात याद पड़जावेगी
इस ताकीदके करनेपरभी उस दिन भी वह दोनों शाहज़ादे अपने घर
में जाकर उस बातको भूलगये पर शाहज़ादा बहमन जब कपड़े उतार
कर आराम के लिये जानेलगा तब वे तीनों गेंद उसकी कमरसे धरती
पर गिरपड़े उनकी आवाज़से उसको बादशाहकी बात याद आगई
सो वे दोनों शाहज़ादे परीज़ाद के मकानमें गये अभी उसने आराम
न कियाथा उससे सम्मत पूछा परीज़ादने भाइयोंकी भूलपर कि तीन
दिनतक बादशाह की बात भूलगये थे अति पश्चात्ताप किया और
कहा यह तुम्हारा बड़ा भाग्यथा कि तुमको इस तरहसे बादशाह से
भेंट होगई इस बातसे तुमको बड़ा लाभ होगा पर मुझे बड़ा खेदहुआ

ने बादशाहकी आज्ञाको न माना किन्तु तुम सोचो तो तुमको अधिक रंज हुआ होगा तुमने बड़ी ढिठाई की बादशाहकी न मानकर उसके घरतक न गये अब मैं इस बातको बोलती पासे पूछतीहूं देखूं वह क्या कहती है जो कुछ वह कहे उसको । जब परीज़ादने बोलती चिड़िया को उतारकर अपने पास ा तो पूछनेलगी हे चिड़िया! तुझको गुप्तभेद मालूमहै और अतितीव्र बुद्धिहै एक बात मैं तुझसे पूछतीहूं कि संयोग से मेरे नों भाइयोंकी बादशाहसे भेंट होगई बादशाह उनपर अतिदया-हैं किन्तु उसको इच्छाहै कि उनको अपना मेहमान बनाये नि-र सब बीताहुआ हाल शाहज़ादीने वर्णन किया और कहा अब ा क्या सलाहहै चिड़ियाने कहा हे स्वामिनी! शाहज़ादों को बाद-की आज्ञा अवश्य माननी चाहिये क्योंकि वह इस समयक पतिहै उनके मेहमान बनने में कुछ हानि नहीं रुचिपूर्वक बा के महल में पधारें किन्तु शाहज़ादों को उचितहै कि बादशाह न्त्रणके लिये बड़ी धूमधामके साथ सामान तैयारकरें और अप बुलावें जिससे कि परस्पर प्रीति हो परीज़ादने कहा हे चिड़िया प्रीति से नहीं चाहती कि शाहज़ादे एक घड़ीभरभी मेरी दृष्टिकी ट हों उस चिड़ियाने कहा यह बात सचहै पर उनको वहां जानेमें डर नहीं परीज़ादने कहा बहुत अच्छा पर यह बता जब बादशाह घर में आवें तो मुझको अवश्य बादशाह के सामने निकलना गा कदाचित् मैं सामने न आऊं तो नाहक़को बादशाह अप्रसन्न गा क्योंकि बादशाह अपनी प्रजाको संतानके समान समझताहै र प्रजा उसको अपने पिताके समान जानती है जब प्रभातहुआ दोनों शाहज़ादे शिकारमें पहुँचे इतने में बादशाहभी वहां आन चे और बहमनसे पूछा तुम्हारी बहिनने हमारे प्रश्नका क्या उत्तर ा आजभी कलकी तरह भूलगये बहमनने आगे बढ़कर विनय हे शाहंशाह! हम आपके आज्ञापालक हैं हमारी छोटी बहिनने हमको आज्ञा देदी है किन्तु उसने बहुत से दुर्वाद कहे कि क्यों मने बादशाहकीआज्ञा न मानी.बादशाहने यह बचन सुनकर कहा

मैं तुमसे किसी तरह से अप्रसन्न नहीं किन्तु मनसे प्रसन्नहूं निदा
वे दोनों शाहज़ादे अपने ऊपर बादशाह की ऐसी प्रसन्नता पाकर
लज्जित होगये इधर बादशाह शिकार खेलने लगा जब थोड़ी देर
उपरान्त बादशाहने उन शाहज़ादों को अपने साथ अहेर खेलते
देखा तो पास बुलवाकर बहुतसा धैर्य दिया और तुरन्तही अ
महलको सिधारा वे दोनों शाहज़ादेभी बादशाहके साथ थे निद
बादशाह उनको अतिप्रीतिसे अपने साथ महलमें लेचला और
की अतिप्रतिष्ठाकी बादशाहके सब नौकर यह दशादेख डाहकी आग
से भस्म होगये और नगरके रहनेवालेभी उनकी इतनी प्रतिष्ठा देख
कर आश्चर्यमें थे और आपसमें कहतेथे ये दोनों मनुष्य कौनहैं कि
जिनकी बादशाह इतनी प्रतिष्ठा करताहै हमलोग इनको नहीं जानते
किन्तु उनकी प्यारी २ सूरत देखकर कहतेहैं कि ऐसे सुन्दर शाहज़ादे
श्रामलकाके उदरसे जो बादशाहके कोषमेंहै उत्पन्न होते तो इतन्ही
बड़े होते जब बादशाह शाहज़ादों सहित अपने महलमें आयातो
भोजनका समय होगया दासोंने दिव्य थालियां आदि पात्र बिदय
अनेक प्रकार के भोजन परसे जब बादशाह भोजनपर बैठा तो उ
दोनों शाहज़ादोंको भी बैठनेका इशारह किया बहमन और परवे
कि बादशाहसे बर्तावकी रीति को न जानते थे प्रणाम करके भोजनप
बैठगये और बादशाहके साथ भोजन किया बादशाह की इच्छा हु
कि इनकी बुद्धि और बाचालताकी परीक्षा लें सो बादशाह हरए
बात को उनसे छेड़कर पूछता वे दोनों शाहज़ादे कि सम्पूर्ण बिा
और हुनरों को खूब सीखेहुये थे उन्होंने सबके यथार्थ उत्तर दि
जिससे बादशाह अतिप्रसन्न होगया और अपने मन में सोचनेल
कदाचित् ऐसे दो पुत्र ईश्वर मुझको देता तो बहुत अच्छा हो
और उनकी अतिप्रीति होगई और देरतक भोजनपर बैठकर उन
बातें सुनतारहा जब सुचित्त हुआ तो बादशाह उन दोनों भाइयों
अपने साथ लियेहुये अपने केलिगृह में लेगया और उसका उ
उनके मीठे बचनों से न भरा देरतक बोलता रहा अन्तको अति
शंसा करनेलगा फिर बादशाहने गाने बजाने की आज्ञा दी सो गा